

प्रश्न : 1

बौद्ध धर्म के सिद्धांतों में

से चर्चा

1. धर्म का अर्थ है जिसका अर्थ है
इसका अर्थ है प्रादेशिक भाषाओं के
विचार का अर्थ है अर्थ है अर्थ है

प्रश्न का अर्थ है

मूल्य १२ ५०

छापय

जुरजोधन जाणियौ, पाठ हथणापुर बैठू ।
एहड़ी कद जाणतौ, जाय जल भीतर पैठू ॥
सह कौरव लै साथ, कियौ भारलै मुदा सू ।
मन रीखै मन माह, मुझी भीम री गदा सू ॥
त्रयलोकं नाथ होतब तणा, अलप करै कुण अखरां ।
कवि 'ओप' अग्यांनी नरकहै, नौवां री तेरह करा ॥
—ओपी आढौ

संस्था की ओर से—

चौपासनी शिक्षा समिति, राजस्थान में शिक्षा के काम में ठेठ सूँ लगाय नै आज ताई आगीवाण रैवती आई है। पछिमी राजस्थान में जठे “अणभरिया घोडा चढे भरिया मार्गे भीख” ईज सईका ताई नारी रियौ उठे आ समिति आपरा लगौलज जतना सूँ ग्यौन रा दीपईज नी चासियौ, घर घर में ग्यान री गगा नै भी पूगती कीवी। राजस्थान के पुराण इतिहास, संस्कृति नै समाज रा मान—मूल्या नै जीवतां राखण खातर नै नवी पौध नै राजस्थान री जूनी सम्यता नै समझण, परखण, अजमाण ताई ‘राजस्थानी शोध संस्थान’ री थरपना कीवी। घणा अणमोल ग्रथा नै भेला किया। पछे शिक्षा समिति रा जाग्रत लोग साहित्य इतिहास नै राजस्थानी भासा री रक्षा नै बढौतरी रै खातर ‘राजस्थानी सबद कोस’ री घणी जरूरत समझी। आज के विग्यान सूँ खवा—ठौरी करता सम में अंडा लूठा कामा में समे, स्रम, धीरज नै धन री घणी जरूरत पडे। घणा फोडा देखणा पडे घणी अवकायां भेलणी—उठावणी पडे। राजस्थानी सबद कोस रा काम में भी अंडा घणा उतार—चढाव आया, परण जठे चाह उठे राह। सो, कोस के छपण री काम डकरां भरता रथ री भात चालतौ ईज रियौ।

राजस्थानी सबद कोस रा चौथा खड री प्रथम जिल्द री साहित्य ससार घणौ, आधमान कियो इण मारथे म्हने घणौ मोद है नै आज उणी लडौ में श्री “व” आखर री चौथा खड री दूजी जिल्द साहित्य रा पिंडता के आगे अरपण करतां म्हारौ मन हरख सूँ वासां उछलै है।

आ, सवा सोलै आना खरी बात है कै रपिया री काम रपिया सूँईज सरै। कोस जंडा ठाढा कामा में अणूतौ द्रव चायोजे। राज सरकार नै केंद्र सरकार भरपूर मदत करै जद भी कोस कारयालय में घनाभाव इज रेवै इण अभाव नै मेटण ताई घणा जुगाड बैठावणा पडे। समिति रा सदस्य गाढी भागा—दौड करै, जद जाय नै कठेई कोस री जिल्द छपावण री जोग वणै। इण खातर समिति नै आपरी बीजो योजनावां में कटौतरी भी करणी पडे। परण, फेर भी, कोस री छपाई के काम में लाची नी आवण देवा, इण काम री मदत खातर राजस्थान राज रा राज्यपाल महामहिम जोगेंद्रसिंहजी, राजस्थान रा मुख्य मंत्री श्रीमान् हरिदेव जोशी, शिक्षा आयुक्त श्रीमान् जगन्नाथसिंहजी मेहता, जोधपुर रा जिलाधीस श्रीमान् कल्याणकुमारजी भटनागर रा म्है घणा गुण माना जिका जद भी कोस के छपण री गाढी अरथाभाव रा कोच में कलोजतौ दीठौ म्हारौ मदत कराय नै चीला मारथे दौडतौ करता रिया। अं महानुभाव इण काम री कीमत आकी, परख कीवी नै साधना री अभाव टालियौ।

राजस्थानी साहित्य नै संस्कृति रा खभ ठोक पुजारी नै साचा हेतालु राणी लक्ष्मीकुमारीजो चूडावत, राजस्थान रा मोची पूत, साहित्य रा कोडीला सन्नथ मानवी लक्ष्मीमलजी सिधवी, सरुगेत सूँ ईज कोस रा मेढी गोरधनसिंहजी मेडतिया खानपुर के सहयोग री स्मरण नी करणी क्रतघणता ईज कहीजै। अं लोग देस, समाज नै आपरा घर घराऊ कामा में समे काढ नै, कोस के काम खातर सदा उछाव के साथे तयार मिल्या। राजस्थानी रा जाणीता अर मानीता साहित्यकार श्री कोमलजी कोठारी, श्री महेशजी अदुल, श्री कपूरचन्दजी कुलिस, श्री रेवतदानजी चारण नै श्री सोहनदानजी चारण के प्रति आभार परगट करणी म्हारौ धरम है, आ लोग री नेक सलाह सूँ काम नै आगे बधावण में घणी मदत मिली है। कोस रा सगला बीजा हेत—प्रीत पालणिया री भी म्है घणैमान आभार मानू।

सगला सूँ घणौ तौ म्हने श्री हरख है कै इण साल कोस रा सपादक श्री सीतारामजी लालस री तपस्या नै जोधपुर विश्वविद्यालय आकी अर साहित्य रा इण ग्यानी गौरख नै डी० लिट् री मानद पदवी देय नै साहित्यसाधका री उछाह बघायौ। राजस्थानी साहित्य रा प्रेमिया नै समिति रा सदस्या सारा खातर श्री लालस री श्री मान गौरव री बात है।

इण जिल्द री छपाई के काम नै भली तरें समे मारथे पूरौ करावण खातर श्री सुमेर प्रिंटिंग प्रेस रा प्रबधक श्री हरिदत्तजी थानवी री भी म्है आभार मानू। शिक्षा समिति रा सदस्या नै तौ रग है ईज जिका इण काम री महत्ता नै समझ बरौबर मदत करता रेवै।

कागद के मूघा परण नै छपाई री दरा री बढौतरी के कारण इण खड री कीमत ६२) रिपिया राखणी पडी है।

चौपासनी शिक्षा समिति,
बसत पचमी सवत् २०३२

— नारायण सिंह माणकलाव
सचिव

उप समिति राजस्थानी सबद कोस, जोधपुर.

अपनी बात

राजस्थानी शब्द कोश के चतुर्थ खण्ड की प्रथम जिल्द का देश - विदेश के विद्वानो ने स्वागत, सम्मान कर हमारा उत्साह बढ़ाया है। इससे हमारा उत्साह ही नहीं बढ़ा, अपितु कार्य की महत्ता और गुस्ता का बोध भी हुआ है। सभी जानते हैं कि कोश जैसे दुष्कर और अभिनव कार्य में अनेक प्रकार के बाधा - व्यवधान उपस्थित हुआ हो करते हैं, पर साहसी और लग्नशील व्यक्ति बाधाओं के बारिधि को बिना विचलित हुए पार भी करते हैं। हमने भी कोश के प्रकाशन और मुद्रण के व्यवधानों के समक्ष बिना अवनत हुए आगे और आगे ही बढ़ना अपना लक्ष्य रखा। फलतः कोश के चतुर्थ खण्ड की द्वितीय जिल्द आज हम विद्वानो को समर्पित करने में समर्थ हुए हैं।

आशा करते हैं कि विद्वत् समाज कोश के पूर्व खण्डों की भाँति ही इस जिल्द का भी स्वागत कर हमारा उत्साह - वर्द्धन करेंगे।

इस अवसर पर मुझे यह जानकारी देते हुए भी अतीव गर्व, और आल्हाद की अनुभूति हो रही है कि जोधपुर विश्वविद्यालय ने हमारे विद्वान् संपादक श्री लालस को इस अवधि में मानद डी. लिट् की उपाधि से विभूषित किया है। चौपासनी शिक्षा समिति, उप समिति राजस्थानी शब्द कोश तथा भारती के उपासक सभी लोगों के लिए यह सम्मान गौरव का प्रतीक है। इस प्रकार शिक्षा समिति तथा डॉ. लालस की ऋषि तुल्य साधना फलवती हुई है।

मुझे विश्वास है कि शिक्षा समिति के लग्नशोल सदस्यो, डा. लालस और राजस्थान सरकार के सतत सहयोग से यह कार्य यथा - समय संपन्न हो सकेगा।

प्रह्लादसिंह

अध्यक्ष

उप समिति राजस्थानी शब्द कोश

व

कोषाध्यक्ष, चौपासनी शिक्षा समिति
जोधपुर.

दिनांक ५-२-१९७६

॥ श्री ॥

✽ निवेदन ✽

— दूहा सोरठा —

नारायण भूले नहीं, अपणी माया ईश । रोग पैल घोखद रचें, जगवाळा जगदीश ॥१॥
साच न बूढो होय, साच अमर संसार में । कैतो घोवो फोय श्री सेजट प्रकटे 'उदय' ॥२॥
सेवा देश समाज, घरती मे साचो घरम । इण सृ पूरें आस सकल मनोरथ सावरो ॥३॥
साहित री सेवाह, सेवा देश समाज री । आवे इण एवाह ईशर किरपा मू उदय ॥४॥
खत ऊजळा सदेश, उदयराज ऊजल अखें । दीप वारा देश, ज्यारा माहित जगमगें ॥५॥

भारत ससद मे सन् १९५० रे करीव देशरी दूसरी सगला प्रान्ता री भासावा मानी गई उणा रे सामल राजस्थानी भाषा ने नही मानी तो कुदरती तीर सू राजस्थान मे अपणी भाषा राजस्थानी ने मान्यता दिरावण सारु आन्दोलन पत्रो मे शुरू हुवो ।

राजस्थानी रें विरोध मे अक्सर आ वात कही जाती के इण रो कोई आधुनिक कोश नही हो । ओ घाटो मिटावण सारु म्हें सीतारामजी लालस ने कयो क्योकि हूँ जाणतो हो के डिंगल रा सग्रह रो उणा ने काफ़ी अनुभव है । श्री सीताराम जी इणा काम सारु तैयार हो गया ने म्हे दोनु सामिल होय ने पूरा सहयोग सू मंनत सू कोश रो काम शुरू कियो ने इण मे खर्च री मदत री जरूरत हुई तो उसा वावत म्हें स्वर्गीय ठाकुर श्री भवानीसिंहजी साहव वार एटला पीकरण ने अरज की । इणा कृपा करने मजूर करी ने तारीख १-५-५१ सू रूपीया री मदत देणी चालू कर दीवा । सीतारामजी मथाणिया मे लेखक राख ने काम शब्द सग्रह री स्लिप कोपिया लिखावण रो चालू कर दीयो और म्हें दोनु तारीख १-५-५१ सू सन् १९५२ रा आखिर तक सामिल कोम कियो जिण सू कुल शब्द ११३००० स्लिप कोपिया मे लिखीजीया फेर समय रा हेरफेर सू श्री पीकरण ठाकुर साहव री सहायता वद हो गई, इण सू सन् १९५३ लगायत सन् १९५६ तक ४ साल तक कोश रो काम वद रेयो ।

इण कोश ने पूरो करण री म्हां दोनु री लगन ही । म्हें करनल श्री स्यामसिंहजी रोडला ने जून सन् १९५६ मे कोश मे सहायता देवण सारु कागद लिखियो उण रो जवाव उणा तारीख २९-६-५६ रा कागद मे म्हेने लिखियो के कोश सारु मावार रु. ५०) ३ या ४ साल तक या कोश पूरो होवे जठा तक दे सकूला । परन्तु उणारा पिता करनल श्री घनोपसिंहजी बीमार हो गया इण वास्ते सहायता चालू होणे मे देरी हुई । उणा रे स्वर्गवास होणे रे वाद मे नवम्बर रा अन्त मे ने दिसम्बर रा शुरू मे जोधपुर मे ही जद करनल श्री सामसिंहजी कोश री मदत वावत वातचीत करणने दौयवार म्हारे मकान पर आया और फिर सहायता देणी चालू कर दीवी ।

कोश रो काम उणा री सहायता सू सन् १९५७ री जनवरी सू सीतारामजी जोधपुर मे चालू कर दियो क्योकि जद उणा रो तवावलो जोधपुर मे हो गयो हो । जो एक लाख तेरह हजार शब्दो की स्लिप कोपिया पेली वणी हुई ही । इणतरे सब शब्द अक्षरवार किया जाय ने उणा अक्षरवार रजिस्टर मे लिख लिया गया इणतरे कोश सन् १९५८ री माह मई तक पूरो हो गयो । म्हे पंली री तरे सीतारामजी रे साथ हर तरह रो सहयोग ने मदत राखी ने काम कियो ओ कोश करनल श्री सामसिंहजी री रूपीया री सहायता सू पूरो हुवो ।

इणरे वाद प्रेस कापी बणावण रो काम चालू हुवो । उणरे खरचे रो प्रबन्ध ठाकुर श्री गोरघनसिंहजी मेडतिया खानपुर वाला श्री भालावाड दरवार सू श्री नीवाँज ठाकुर साहव सू रूपीया री सहायता लेने करायो ने तरे छपण रो प्रबन्ध राजस्थानी सोध सस्थान चोपासनी जोधपुर सू हुवो ने तारीख ११-३-५६ ने सीतारामजी ने इण मोघ सस्थान शिक्षा विभाग सू लोन पर ले लिया जद सू वे इण सस्थान मे काम करण लागा ।

इस कोश ने तैयार करावण मे व्युत्पत्ति विभाग पूरो करावण मे स्वर्गीय प० नित्यानन्दजी शास्त्री जोधपुर की घणी मतद ही इण वास्ते बैकूँठवासी निदवान ने घणा धन्यवाद देवा हा । तारीख २२-५-५७ ने लिख दय्या नीचे मुजव हो —

चांद बाबडी
ता० २२-५-५७

सीतारामजी लालस ने राजस्थानी कोश की रचना की है। यह भारी कठिन कार्य का यत्र श्री उदयरामजी उज्जवल यत्रो (मेकेनिकल) के बल संचालित हुवा है। मैंने इसे देखा, इन्होंने प्रत्येक शब्द और धातु को जाचकर उनके प्रयोज्य मत्र प्रकार के प्रयोगो को प्रदर्शित किया है क्योंकि इन्होंने सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश विविध भाषाओं के बल पर यह कार्यभार उठाया है। बीच बीच में हर समय मेरे साथ विचार विमर्श करते हुए आपने पूर्ण परिश्रम करके इसे रचा है। ऐसे कठिन कार्य को पार करने में श्री सीतारामजी की ही पूर्ण कृपा ने महायता की है। आशा है राजस्थान की जनता इससे लाभ उठाकर इस कोश की त्रुटी की पूर्ति से सतुष्ट होगी और श्रम को समझने वाले विद्वान कार्य की प्रशंसा करेंगे। फकत-नित्यानन्द शास्त्री।

इस तरे ननरा विद्वविद्यालय सूं डा० डब्लू० एम० एलन जो ससार री करीब चालीस भाषाओं री जानकार है ने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती रा भाषा शास्त्री है वे राजस्थानी भाषा रे ध्वनि विज्ञान सबधी जाच वो शोध री काम सार सन् १९५२ मे राजस्थान आया हा ने जोधपुर मे दीय मास ठहरिया हा ने भाषा रे सिलसिले मे म्हारे कने घणा आता उगाने म्हे ने सीतारामजी दोनू कोश वाली स्लिप कोपिया राय रे वास्ते म्हारे मकान पर दिखाई ही उणा म्हारो उत्साह बघायो उणा री सम्मति नीचे मुजब है —

Thinity College Cambridge

26 Feb., 1960

It is excellent news for Indo/Aryan Linguistics that the Rajasthan Dictionary of Shri Udayraj Ujjawal and Shri Sitaram Lalas is now to be published Rajasthan has long presented a serious gap in the comparative study of the vocabulary of the Indo-Aryan Languages and now at Last it is filled by the devoted work of two Rajasthan Scholars and the support of their distinguished Sponsors I know well the difficulties that have beset the undertaking of this task and its Completion is therefore all the more a monument to the courage of these who conceived the project and brought it to fruition With this work added to the grammar by Shri Sitaramji, the status of the Rajasthan language can no longer be denied

Sd. W S Allen M A, P H d.
Professor Comparative Philology
In the University of Cambridge

कोश दीय दातार राजपूत सरदारो री रूपया री मदत सूं शुरु होय ने पूरो बणिओ इण वास्ते पुरानी प्रथा रे माफत म्हे ता० २६-६-५७ ने इण वावत काव्य गीत, कविता, रचियो ने सीतारामजी कने भेजोया वो अठे दिया जावे है इण मे दोनू सरदारा री धन्यवाद रे तौर पर वर्णन है। इण गीत री सीतारामजी पत्रो मे तारीफ की है।

“गीत” राजस्थानी मे

कोम मरु बाणरी सुणे बण्यो नह किये सू लाख शब्दो तखी बडो लेखो गया भूगत, कवराज गुण गावता, दियो नह ध्यान इण हेत देखो ॥१॥
खूटगा खजना नरेसो देखता, गया तजमाल ठकरेत गाढा । सेव साहित्य री बखी न कियो सू लागता पय घन छोड लाडा ॥२॥
मेव साहित्य ही रहे ससार मे, सुजसफल लगावे घणी सरमे । गिले सुखलाघ हितकरचित समाजां, दिनो दिन कितां सनमान दरसे ॥३॥
पाण मरु बांन है प्रात री परपर, वेण परताप राजस्थान ऊचो । रखो नह पढण मे भावखां प्रांत री, निरक्षता जाय है प्रात नीचो ॥४॥
वणई चारणो व्याकरण विधोविध, बरोगो कोश ही लाखसबदो । ‘सीत’रो परिश्रम अथग फलियो सिरे, रेटियो‘उदय’मिल सकल सबदो ॥५॥
पोकरण भवानीसिंह चापे प्रथम कोश रे हेत घन खर्च कियो । पढता लाच इण समेरा फेर सू, स्यामसी रोडले काम सीधो ॥६॥
रोडले स्यामसी सपूतो सिरोमण कमधज आज अखियाज कीधी । वार विपरीति मे हजारों खरचने, दाद उजल ‘उदे’ देम दीघो ॥७॥
चारणो दीय मिल व्याकरण कोश रचि, बण्या नह बडो कवराज मिलियो । कमधा दीय मिल कियो सुभ काम जो, महीयो कियो नह बीस मिलियो ॥८॥

कवित

सूर्यमल मिशण ने बनाया वस भास्कर, वूदी नृपराम ने खजाना खोल करके ।
सावल कविराज ने लिखाया इतिहास त्योही उदीयापुर रान के कोप बल घर के ।
सीताराम लालस ने की राजस्थानी कोश उदयराम उज्जवल के योग शक्ति भरके ।
पोकरण भवानीसिंह स्यामसिंह रोडला के कोप हित कोप बने दानी घन घर के ।
प्रात की प्रबल भाषा प्रतिष्ठित परपरा बिबुधन दीनमाल वीरपद वाला है ।
शिक्षा को माध्यम निज प्रान्त हूँ मे रखी मही होय कोटि जनता को दास गति डाला है ।
दूबत है मात्र भाषा वीर राजस्थान केरी, प्रान्त का भविष्य याते दक्षित बिदाजा है ।
जीवित उट्टेगी प्रीय राजस्थानी आशामात्र, व्याकरण कोश याके बनेमे जिशासा है ।

Compared by
Sd Bhawar Singh
Sd. लक्ष्मीप्रकाश गुप्ता

Sd. ह० उदयराम उज्जवल
Sd Nami Chand Jain
Civil Judge, Jodhpur

संकेत और चिह्न

सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम	सांकेतिक रूप	पूर्ण नाम
अ०	अंग्रेजी भाषा	भू० का०	भूतकाल
अ०	अरबी भाषा	भू० का० क्रि०	भूतकालिक क्रिया
अक०	अकर्मक	भू० का० कृ०	भूतकालिक कृदन्त
अक० रू०	अकर्मक रूप	भू० का० प्र०	भूतकालिक प्रयोग
अनु०	अनुकरण	म०	मराठी भाषा
अप०	अपभ्रंश	मह० महत्व०	महत्त्ववाची शब्द
अल्प०, अल्पा०	अल्पार्थ रूप	मा०	मागधी भाषा
अव्य०	अव्यय	यू०	यूनानी भाषा
इ०	इस्रांती भाषा	यी०	योगिक शब्द
उप०	उपसर्ग	रा०, राज०	राजस्थानी भाषा
उभ० लि०	उभयलिङ्ग	रा० प्र०	राजस्थानी प्रत्यय
कर्म वा०, कर्म वा० रू०	कर्मवाच्य रूप	लै०	लैटिन भाषा
क्रि०	क्रिया	व०	वर्तमानकाल
क्रि० अ०	क्रिया अकर्मक	व० का० कृ०	वर्तमान कालिक कृदन्त
क्रि० प्र०	क्रिया प्रयोग	वि०	विशेषण
क्रि० प्रे०	क्रिया प्रेरणार्थक	विलो०	विलोम
क्रि० वि०	क्रिया विशेषण	व्या०	व्याकरण
क्रि० स०	क्रिया सकर्मक	शक०	शकन्वादि
गु०	गुजराती भाषा	स०	संस्कृत
गो० रा०	गोरादि	स० उ०	सज्ञा उभयलिङ्ग
ची०	चीनी भाषा	स० पु०	सज्ञा पुल्लिङ्ग
जा०	जापानी भाषा	स० स्त्री०	सज्ञा स्त्रीलिङ्ग
डि०	डिगळ	स०	सकर्मक
टु०	तुर्की भाषा	स० रू०	सकर्मक रूप
पं०	पंजाबी भाषा	सर्व०	सर्वनाम
पा०	पाली भाषा	स्त्री०	स्त्रीलिङ्ग
पु०	पुल्लिङ्ग	स्पे०	स्पेनिश भाषा
पुस्तं०	पुस्तंगाली भाषा	उ०	उदाहरण
पृप०	पृषोदरादि	कहा०	कहावत
प्र०	प्रत्यय	कृव० प्र०	कृचित प्रयोग
प्रा०	प्राकृत	ज० लि०	जग्गी खिडियो
प्रे०	प्रेरणार्थक	ज्यो०	ज्योतिष सम्बन्धी
प्रे० रू०	प्रेरणार्थक रूप	दे०	देखी
फा०	फारसी भाषा	प्रा० प्र०	प्राचीन प्रयोग
फ्रा०	फ्रांसीसी भाषा	प्रा० रू०	प्राचीन रूप
ब० व०	बहुवचन	मि०	मिलाश्री
भाव वा०	भाव वाच्य	मु० मुहा०	मुहावरा
भाव वा० रू०	भाव वाच्य रूप	वि० वि०	विशेष विवरण

चिह्न

चिह्न का स्वरूप

अ
'
—
' . '

स्थान

शब्द के आगे ---
शब्द के अक्षरों के बीच में सिर पर ---
शब्द के नीचे ---
शब्द के दोनों ओर सिरों पर ...

प्रयोजन

यह शब्द कविता में ही प्रयोग होता है।
यह ध्वनी-लोपिक चिह्न है, जहाँ 'ह' की ध्वनी लोप होती है वहाँ आता है।
उच्चारण की ध्वनी भिन्नता बतलाता है।
व्यक्ति वाचक सज्ञा का सूचक (इनव टैंड काँमाज)

संदर्भ ग्रंथ-सूची

संक्षिप्त नाम

अनेक० अनेका०

अमरत

अ० मा०

अ० वचनिका

ऊ० का०

उ० र०

एका०

ऐ० जै० का० स०

क० कु० बो०

का० दे० प्र०

गी० रा०

गु० रु० व०

गो० रु०

डि० को०

डि० ना० मा०

ढो० मा०

द० दा०

द० वि०

देवि०

ध० ध० प्र०

ना० मा०

ना० दि० को०

ना० द०

नी० प्र०

नैरासी

प० प० च०

प० च० बी०

पा० प्र०

पि० प्र०

पी० प्र०

पे० रु०

बा० दा०

बा० दा० ख्यात

बी० दे०

म० मा०

मिषपू०,

मि० द्र०

मा० का० प्र०

पूर्ण नाम

अनेकारी काव

अमरत सागर

अवधान माळा

अचलदास खीची री वचनिका

ऊमरकाव्य

उचित रत्नाकर

एकाक्षरी नाम माळा

ऐतिहासिक जैन काव्य समूह

कविकुल बोध

कान्हडदे प्रवच

गीत रामायण

गुण रूपक बंध

गोगादे रूपक

डिगल कोश

डिगल नाम माला

ढोला मारू

दयालदास री ख्यात

दळपत विलास

देवियाण

धर्म वदंन ग्रन्थावलि

नाम माळा

नागराज डिगल कोश

नागदमण

नीति प्रकाश

नैरासी री ख्यात

पंच पदक चरित्र

पद्मिनी चरित्र चौपाई

पादू प्रकाश

पिगल प्रकाश

पीरदान ग्रन्थावलि

पेमसिंह रूपक

बाकीदास ग्रन्थावलि

बाकीदास री ख्यात

बीसलदे रासी

भक्तमाल

भिवखु दृष्टान्त

माघवानल काम कदला प्रवच

रचयिता का नाम

उदयराम बारहठ

महा० प्रतापसिंह जयपुर

उदयराम बारहठ

शिवदास गाडण

ऊमरदान साळस

साधु सुन्दरगण

धीरमाण रतनू उदयराम बारहठ

सपा. अग्ररचन्द नाहटा

उदयराम बारहठ

पद्मनाभ

अमृतनास माधुर

केसोदास गाडण

पंहाडखी श्रादी

कविराजा मुरारोदान, वूदी

हरराज कवि

सम्पादकत्रय रामसिंह तेंवर, सूर्यकरण पारीक व नरोत्तमदास स्वामी

दयालदास सिढापच

सम्पादक रावत सारस्वत

ईसरदास बारहठ

सपा० अग्ररचन्द नाहटा

अज्ञात

नागराज विगल

साइया भूला

सगरांसिंह मुहणोत

मुहणोत नैरासी

सालिभद्र सूरि

कवि लब्धोदय

मोडजी घासियो

हमीरदान रतनू

पीरदान साळस

प्रतापदान गाडण

बांकीदास

बाकीदास

कवि नाहट

अह्लादास

भीखणजी

”
कवि गणपति

मा० म०
 मा० वचनिका
 मीरा
 मेघ०
 मे० म०
 र० ज० प्र०
 र० रू०
 र० वचनिका
 र० हमीर
 रा० जै० रासी
 रा० जै० छद
 रा० रा०
 रा० रू०
 रा० व० वि०
 रा० सा० स०
 ल० पि०
 ला० रा०
 लो० गी०
 व० भा०
 ष० स०
 वि० कु०
 वि० सं० सा०
 बि० स०
 धी० मा०
 धी० स०
 धी० स० टी०
 धेलि०
 धेलि टी०
 बृस्त०
 धा० हो०
 धि० व०
 धि० सु० रू०
 स० कु०
 सू० प्र०
 ह० ना० मा०
 ह० पु० वा०
 ह० र०
 हा० भा०

मारवाड मर्दुमशुमारी रिपोर्ट
 माताजी री वचनिका
 मीरा बाई
 मेघदूत
 मेहाई महिमा
 रघुवर जसप्रकाश
 रघुनाथ रूपक
 रतनसिंह महेसदासोतरी वचनिका
 रतनाहमीर री वारता
 रास जंतसी री रासी
 रास जंतसी री छद
 राम रासी
 राज रूपक
 राठौड वसरी विगत
 राजस्थानी साहित्य संग्रह I
 लखपत पिगल
 लावा रासी
 राजस्थानी लोक गीत
 वषा भास्कर
 वरुणक समुच्चय
 विनय कुमार कृति कुसुमाजलि
 विष्णोई संप्रदाय और साहित्य
 विद्वद सिणगार
 वीरमाथण
 वीर सतसई
 वीर सतसई री टीका
 वेलि किसन रुकमणी री
 वेलि किसन रुकमणी री टीका
 वृहत्स्तवनावली
 शालि होत्र
 शिखर वशीत्पति
 शिवदान सुजस रूपक
 समयसुंदर कृति कुसुमाजलि
 सूरज प्रकाश I, II, III
 हमीर नाम माला
 श्रीहरिपुरुषजी की वाणी
 हरिरस
 हाला भाला रा कुडळिया

भुंशी देवीप्रसाद
 जती जयचन्द
 मीरा
 नारायणसिंह भाटी
 हिंगळाजदान कवियी
 किमनी आढी
 मच्छागम
 जगती खिडियो
 महाराजा मानसिंह
 अज्ञात
 वीठू सूजी नगराजोत
 माघीदास दधवाडियो
 वीर माण रतनू
 अज्ञात
 सम्पादक स्वामी नरोतमदास
 हमीरदान रतनू
 गोपालजी कवियी
 अज्ञात
 सूर्यमल मिसण
 सपादक भोगीलाल साडेमरा
 कविवर विनयचन्द्र
 डॉ० हीरालाल माहेस्वरी
 कविराजा करणीदान कवियी
 चहादर ढाढी
 सूर्यमल मिसण
 किसोरदान वारहठ
 पृथ्वीराज राठौड
 अज्ञात
 संग्रह
 अज्ञात
 गोपालदान कविया
 जालदान वारहठ
 महाकवि समय सुदर
 कविराजा करणीदान
 हमीरदान रतनू
 श्री हरिपुरुषजी
 ईसरदास वारहठ
 ईसरदास वारहठ

राजस्थानी सबद कोस

[राजस्थानी हिन्दी वृहत् कोश]

[चतुर्थ खण्ड]

(द्वितीय जिल्द)

व

व—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवा व्यजन-वर्ण जो उकार, विकार और अतस्थ अर्द्ध व्यजन माना जाता है। इसका उच्चारण दत्योष्ठ है। उच्चारण में जिह्वा-पश्च उकार के समान-सवृत्त या अर्ध-सवृत्त स्थान तक उठता है और तुरंत परवर्ती स्वर के स्थान पर पहुँच जाता है। इसमें व्यञ्जनात्मकता से अधिक स्वरात्मकता ही पाई जाती है।

वक-स. पु — १ गर्व, अभिमान, घमण्ड।

उ०—१ विपै रघुनायक दीन दयाळ, पुणा खळ घायक सेवग पाळ।
चहें दसमाथ विभजण वंक, लखीवर देण भभीखण लक।

—र ज. प्र.

उ०—२ वेहु सायवी पगा राखीवै, वाळी घरा वचूटो वक। सबळा
अनडा वेहु तरौ सर, आवु अनड तुहाळो अंक। —दुरसी आढी

२ देखो 'वाक' (रू भे)

उ०—दरपइ वीठइ दोरडइ, साप न आणइ सक, बीहइ बिलाडा-
वच्चडइ, वाघिणो वालइ वक। —मा. का. प्र

३ देखो 'वाकी' (मह, रू भे.)

४ देखो 'वक' (रू भे)

५ देखो 'वक' (रू भे.)

उ०—दीहा पाधर वंक गय, भुज धरिये कुळ-भार। —गु रू व

वकड—१ देखो 'वाकी' (मह, रू भे)

२ देखो 'वाक' (मह, रू भे)

३ देखो 'वक' (मह, रू भे)

वकडी—देखो 'वाकी' (अल्पा, रू भे)

उ०—कटि-तटि हूँती वकडी, काढी करि करवाल्। तव अगीठ
आवी करी, करि बलगु ततकाल्। —मा का प्र

वकडी—देखो 'वाकी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ 'वीरम' भाई वकडी, ज्यू वेटी जगमाल। दत क्यावर चावा
दुनी, साहा उर रा साल। —वी. मा

उ०—२ भडा दुवाहा वकडा, हुई सनाहा सत्थि। सेघ निवाहा
सूरग, राहा वेघ अरत्थि। —रा. रू.

(स्त्री वकडी)

वकट—देखो 'वकट' (रू भे) (ना मा)

वकति—देखो 'वक' (रू भे)

उ०—छट सुदर वीख सतेज घणा, तन ओप ववै गढ़ रूप तरा।
दुति वकति तुंड लगाम दिया, कुळवतिय घूँघट जाणि किया।

—रा रू

वकनाळ, वकनाळि, वकनाळी—देखो 'वकनाळ' (रू. भे)

उ०—१ वंकनाळ घर अमरा भरि हें, अरध उरध घर निरभर भरि
है। —अनुभववाणी

उ०—२ अजरामर का मारग श्रीळा, सीळा सत पिछारौ। वक-
नाळि मेर सचरि कैं, भवरगुफा सुख मारौ। —अनुभववाणी

उ०—३ पलटि पूरव अपूरव पाणा, करि वकनाळी ले मेर थारा।
—अनुभववाणी

वकनाडी—देखो 'वकनाळ' (रू भे)

वकि, वकी—१ देखो 'वक' (रू भे)

उ०—वकि पटा फूलहथा, सोरि खिलकार कुसत्री। तस कसीस
लेजमा, जजर गती जाजत्री। —सू. प्र.

२ देखो 'वाकी' (रू भे)

उ०—वारण सिर तोई खग वकी। तारौ स गणि अदारह टकी।
—सू. प्र.

वकीनाळि, वकीनाळी—देखो 'वकनाळ' (रू. भे.)

उ०—वकिनाळि चढाव वाटा, घण अटकैं हीरामण घाटा।

—सू प्र

वकेण—१ देखो 'वाकी' (मह रू भे)

उ०—दिन वकैं वकेण, वाणी मत्र तत सा बुद्धी। दुरजण सज्जण
थाने सज्जन होइ दुज्जणाकारे। —रा रू.

२ देखो 'वक' (मह, रू भे)

वकी—देखो 'वाकी' (रू भे)

उ०—१ ढकैं जस जेती धरण, वडपण अके वार। इण वकैं
'पातल' अगैं, सह सकैं ससार। —जैतदान वारहठ

उ०—२ वदै अगदेस हुवा जोध वका। लगा भोकरैं भोक प्राजाळ
लका। —सू प्र

उ०—३ मिळिया वका राठवड चितहित राख वचाव। सुख गाडी
कीधी सर्गैं, रीधी हाडी राव। —रा रू

उ०—४ पेखेवा पतिसाह नू 'अजन' धयौ असवार, गति वंकी दिन
पाधरैं, छत देखे ससार। —रा रू.

वक्रत—देखो 'वक्र' (मह, रू भे)

उ०—माहा जटीयळ भ्रूगट भेक वक्रत मयक, अलक्रत तेस मेचळ
ऊथाळी। करण पत प्रमा परभात रा समोकर। तेज पुज नाथ रा
तरौ ताळी।

—भीमसिंह जी री गीत

वग-स पु. [स] १ जस्ता या रांगा नामक घातु।

२ उक्त धातु का भस्म ।

३ प्रेम, मुहूर्त्त ।

४ अधिकार, कब्जा ।

५ वश ।

६ सीधा व सरल होने का भाव ।

७ विना कष्ट के, आसानी से होने वाला कार्य ।

८ अवसर, मौका ।

९ एक चंद्रवशी राजा । १० कपास । ११ वैगन ।

रू भे — भग

१२ देखो 'वग' (रू भे)

उ०—मगघ मढळ अग वंग कर्लिंग कासी (कोसल कुरु) कुसट्ट पचाल जागल । —व. स

वगर-वि — एकाकी, अकेला ।

वगस, वगसी, वगस्स — देखो 'वगस' (रू. भे)

वगा — देरो 'वगाल' (रू. भे.)

वगार — देखो 'वगार' (रू. भे)

उ०—भोल भे तो मुसाला, पाणी अर वगार धी री है । मा'राज आ री ती थाने सोगन दिराई कोनी । —फुलवाडी

वगारणी, वगारवो — देखो 'वगारणी, वगारवो' (रू. भे.)

वगारणहार, हारी (हारी), वगारणियो — वि० ।

वगारिओडो, वगारियोडो, वगारयोडो — भू० का० क० ।

वगारीजणी, वगारीजवो — कर्म वा० ।

वगाळ, वगाल — देखो 'वगाळ' (रू. भे)

उ०—वरहार, मथुरा, अवध्या, वणारसी, चदेरी मल्लिकाल, महोब, हरियाणउ, भयाणउ, रत्नपुर, कामरू, आडियाण, जलधर, आरव, वगाल, त्रिहूण, भोट, महाभोट, चीण, महाचीण । —व स

वगाळी, वगाली — देखो 'वगाळी' (रू. भे.)

वगास्टक — स. पु. [स वगाष्टक] रागा आदि आठ धातुओ के योग से बना एक रसोपध ।

वगेस्वरी — देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे)

वगेस्वर — स पु [स वगेस्वर] एक रसोपध । (वैद्यक)

वगेस्वरी — १ देखो 'वगेस्वरी' (रू. भे)

२ देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे)

वगोचन — क्रि वि — यथास्थान, उचित स्थान ।

२ व्यवस्थानुसार ।

३ उपयुक्त, यथोचित ।

वच — स. पु [स] १ मूयं ।

२ तोता ।

रू भे — वच ।

वचक-वि — [स] १ छल, प्रपच से जो दूसरो को ठग लेता है, ठग, धोखेबाज । २ धूर्त खल ।

उ०—१ विभचारी वैरी बढ वचक, छल बळ कपटी छानी । महामोह हिसक मूरख सू, मरणी उत्तम मानी । —ऊ का

उ०—२ 'वाका' वचक वाणियो, नहि जाण्या नहि राह । त्यां हदा धन ताणिया, या आण्या घर राह । —बा दा.

३ पढने वाला, पाठक ।

उ०—परधन हरण परायण पामर, वचक वाणी रे । ते भूठी बुगला री वाता नाहक ताणी रे । —ऊ का

रू भे — वचक, वचक

४ सोधियार, चोर ।

वचकता — स स्त्री. [स वचक + प्र. ता] १ छल-प्रपच से दूसरो को ठगने का कार्य, ठगी, धोखावाजी, धूर्तता ।

२ चोरी ।

रू भे — वचकता

वचणा — देखो 'वचना' (रू. भे)

वचणी, वचवो — क्रि. स [स वचनम्] १ ठगना, धोखा देना ।

२ चालवाजी करना, बेईमानी करना ।

३ देखो 'वाचणी, वाचवो' (रू. भे)

उ०—इम कागद आणियो, पेखि वचै 'गजपती' । अग पौरस ऊफणी, भाहि छित जेम-विभती । —सू प्र

४ देखो 'वचणी, वचवो' (रू. भे)

उ०—१ हरिया नारी नागणी, सब जुग लीया लाय । जे कोई वचै बापडी, गुर का मतर पाय । —अनुभववाणी

उ०—२ है मुह फाड्या बाघनी, दाड्या सब ससार । जो वचै भाज करि, लख चौरासी जेर । —अनुभववाणी

वचणहार, हारी (हारी), वचणियो — वि० ।

वचिओडो, वचियोडो, वचयोडो — भू० का० क० ।

वचीजणी, वचीजवो — कर्म वा० ।

वचणी, वचवो — रू० भे० ।

वचत — १ देखो 'वाचित' (रू. भे)

२ देखो 'वचित' (रू. भे.)

वचना — स स्त्री. [स] १ ठगी, धोखा, जाल, फरेब ।

उ०—लोग प्रिय उत्तम आचार थी, वचना रहित अकूरी जी । पाप करम थी जे डरता रहइ, कपट थकी रहइ दूरी जी ।

—स कु

रू भे — वचणा, वचणा ।

वचनाणी, वचनावो — क्रि. स. [वचणी] क्रि. का प्रे. रू] १ ठगवाना, धोखा दिराना ।

२ चालवाजी कराना, वेईमानी करवाना ।

३ देखो 'वचाणी, वचावी' (रू भे)

उ०—१ हिर्वं म्हानु वचावी, ताहरा बालक हसियो वामण छुडाया ।

—देवजी बगडावत री वात

उ०—२ लक्ष्मी नै कुण नीतरै, गगोदक कुण पवित्र करै हसनै गति कुण सिखावै, ब्रह्मस्पति नै कुण वचावै । क्रपण नै कुण सचावै । तिम सज्जन नै स्वभावै जाणवौ । —रा सा स.

वचाणहार, हारो (हारी), वचाणियो—वि० ।

वचायोडो—भू० का० कृ० ।

बंचाईजणी, बंचाईजवो—कर्म वा० ।

वचावणी, बंचाववो—रू० भे० ।

वचायोडो—भू का कृ—१ ठगवाया हुआ, धोखा दिराया हुआ

२ चालवाजी या वेईमानी करवाया हुआ ।

३ देखो 'वचायोडो' (रू भे)

(स्त्री वचायोडो)

वचावणी, बंचाववो—१ देखो 'वचाणी, वचावी' (रू भे)

२ देखो 'वचाणी, वचावी' (रू भे)

उ०—हस नै गति कुण सिखावै, ब्रह्मस्पति नै कुण वचावै क्रपण नै कुण सचावै । —रा सा. स

वचाणहार, हारो (हारी), वचाणियो—वि० ।

वचाविओडो, वचावियोडो, वचाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वचावीजणी, वचावीजवो—कर्म वा० ।

वचावियोडो—१ देखो 'वचायोडो' (रू भे)

२ देखो 'वचायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वचावियोडो)

वचित्त-वि [स] १ जो ठगा गया हो, धोखा खा गया हो ।

२ जो किसी की कृपा या सहायता प्राप्त करने से अलग रह गया हो, दूर रह गया हो ।

३ जो अभीष्ट फल या लाभ न पा सका हो ।

४ विमुख ।

५ हीन ।

रू भे.—वचत, वचित्त, वचत ।

वचियोडो—भू का कृ—१ ठगा हुआ, धोखा दिया हुआ २ चाल-

वाजी किया हुआ, वेईमानी किया हुआ ।

३ देखो 'वचियोडो' (रू भे)

४ देखो 'वचियोडो' (रू भे)

(स्त्री वचियोडो)

वछक-वि (स्त्री वछकी) १ चाहने वाला, इच्छा करने वाला ।

२ कामना करने वाला ।

३ देखो 'वचक' (रू भे.)

रू भे.—वछक

बंछणी, वछवो—क्रि अ. [स वाछय] १ चाह होना, इच्छा होना ।

उ०—हरि समरण रस समझण हरिणाखी, चात्रण खळ खगि खेत्र चढि । वंसै सभा पारकी बोलण, प्राणी वछइ त वेलि पढि ।

—वेलि

क्रि स—१ चाहना इच्छा करना, अभिलाषा करना ।

उ०—१ आकास राता, मेह करि माता । क्या किरण नीला, क्या किरण पीला । नाना प्रकार ना रग, भला सुरग । वावै अनग, जगी करै जग, भोगी पीयै भग, स्त्री वछै सग आदि ।

—रा सा स.

उ०—२ माघव करि माहरू कहिच, जु मुझ वछइ खेम । सास लगइ सेवा करिसि, सीत दमयती जेम । —मा का प्र

उ०—३ औ अत्रसाण सूरमा आयो, पूरा नरा वछता पायो । असमर हथा घणी मुख आगै, लडता गयण भुजा डड लागै ।

—रा रू

२ जिज्ञासा करना ।

३ प्रेम करना ।

वछणहार, हारो (हारी), वछणियो—वि० ।

वछिओडो, वछियोडो, वछयोडो—भू० का० कृ० ।

वछीजणी, वछीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

वचणी, वचवो वछणी, वचवो—रू० भे० ।

वछत, वछती, वछती—देखो 'वाछित' (रू भे)

उ०—१ नर नप अमर चद्र त्रयनेता, क्रम क्रम चाहा करी सकाज । सफल करण वछत सगळा रा, तो हाता रघुकुळ सिरताज ।

—र. रू

उ०—२ जग मुगति भुगति दाता जगा, दान मान वछत दिये । पारर्थ किसू मेळग कुपह, प्रभू नाथ पारत्थियो । —ज. वि

वछना—देखो 'वाछना' (रू भे.) (ह ना मा)

वछाणी, बंछावो—क्रि. स ['वछणी' क्रि का. प्रे रू] १ चाह कराना, इच्छा कराना ।

२ कामना कराना, अभिलाषा करवाना ।

वछाणहार, हारो (हारी), वछाणियो—वि० ।

वछायोडो—भू० का० कृ० ।

वछाईजणो, वछाईजबो—कर्म वा० ।

वछाणो, वछावो—रू० भे० ।

वछायोडो—भू का कृ—१ चाह कराया हुआ, इच्छा कराया हुआ।

२ कामना कराया हुआ, अभिलाषा करवाया हुआ ।

(स्त्री. वछाय डी)

वछासुर—देखो 'वत्सासुर' (रू भे)

वछित्त—देखो 'वाछित्त' (रू भे)

उ०—महि सुइ खट मास प्रात जळ मज्जे, आप अवरस अरु जित इद्री । प्रागं वेलि पठता नित प्रति, श्री वछित्त वर पछित्त श्री ।—वेलि

वछियोडो—भू का कृ— १ चाहा हुआ, इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ। २ जिज्ञासा किया हुआ ३ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री वछियोडी)

वजण—स. पु [देशज] १ घास ।

उ०—१ ताहरा सात-वीस भैंसा दिया । भैंसा लै-नै घरै प्रायो ।

चारणी सखरा आसरा घताया . भैंस्यां व्याया नै वजण पडिया ।

फोफाणद रै आणद हुवा । —फोफाणद री वात

उ०—२ तैरी वेटी पण लियो छै । जियै रै सात वीस भैंस्या नै

वजण पडै तियै चारण नू परणीजूं । —फोफाणद री वात

२ शरीराग, अग-उपाग ।

३ शरीर के जन्मजात या स्वाभाविक वे चिह्न जिनके द्वारा मनुष्य की पहचान की जाती है । (जैन)

उ०—ए थारी सरीर छै रै, वजण लखण उदार । रोग रहित दोष को नहीं रे, जीवन कला अपार । —जयवाराणी

४ देखो 'व्यजन' (रू भे)

रू भे—वजन ।

वजणो, वजवो—क्रि अ [स वज्=गति] १ पराजित होना, भागना ।

उ०—रजपूत भुइ भागियं, दळ मूका छळ देस । 'वीहारी' वजे नही, सूना मेल्ले नेस । —गु रू व

२ चलना ।

वजणहार हारो (हारी), वजणियो वि० ।

वजिओडो, वजियोडो, वज्योडो—भू० का० कृ० ।

वजोजणो, वजोजबो—भाव वा० ।

वभणो, वभवो—रू० भे० ।

वजन—१ देखो 'वजण' (रू भे)

२ देखो 'व्यजन' (रू भे.)

वजियोडो—भू का कृ—१ पराजित हुवा हुआ, भागा हुआ २ चला हुआ ।

(स्त्री वजियोडी)

वभ—देखो 'वध्या' (रू भे)

वभणो, वभवो—देगो 'वजणो, वजवो' (रू भे)

उ०—वडियो मुयेस 'पती' वाढानी, वंक्रियो 'भुरजन' देस वट । गढ चित्तौट गन्व तण गरजे, गाटी गो रणायम गढ ।

—पत्ता चूटावत री गोन

वभ्रि—देखो 'वध्या' (रू. भे)

उ०—माई हई माइ हई काइ नवि वभ्रि, अह जाया नवि भूमा तुम्हे राजु काई देवि दिदव । —प. प च

वभ्रियोडो—देगो 'वजियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वभ्रियोडी)

वट—स पु [स] १ वटवारा करने की क्रिया या भाव ।

२ विभाजन ।

उ०—ये सूना फूकने लोक हसायता हा सो प्रावी उरा अवं प्राज इण दिन बरावर वट होवै हे । —वी स टी.

३ विभाजन द्वारा होने वाला हिस्सा, भाग ।

उ०—अवं प्राज इण दिन बरावर वट होवै हे सो प्राछी वट वट्टे वो प्राप लेलीजो । —वी स. टी.

४ अक्ष ।

५ पीसने की क्रिया या भाव ।

६ विचुर ।

७ हुसिया नामक उपकरण का वेंट या दन्ता ।

रू भे—वट, वाट, वांट, वाठ ।

वटणो, वटवो—देगो 'वटणो, वटवो' (रू भे)

उ०—अव घर अघर कीया मन भाई, वागा मनहद वटी वपाई । नाव अखडत पडै नाही, सुरति सवद कं मडी माही ।

—अनुभववाराणी

वटणहार, हारो (हारी), वटणियो—वि०

वटिओडो, वटियोडो, वट्योडो—भू० का० कृ० ।

वटोजणो, वटोजबो—कर्म वा० ।

वटवाडो, वटवारो—देखो 'वटवारो' (रू भे)

वटाइत—देखो 'वटावत' (रू. भे)

वटाई—देगो 'वटाई' (रू भे)

वटाडणो, वटाडवो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे.)

वटाडणहार, हारो (हारी), वटाडणियो—वि० ।

वटाडिओडो, वटाडियोडो, वटाड्योडो—भू० का० कृ० ।

वटाडोजणो, वटाडोजबो—कर्म वा० ।

वटाडियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू भे)

(स्त्री वटाडियोडी)

वटाणो, वटावो—देखो 'वटाणो, वटावो' (रू भे.)

वटाणहार, हारी (हारी), वटाणियो—वि० ।

वटायोडी—भू० का० कृ० ।

वटाईजणी, वटाईजबौ—कर्म वा० ।

वटायत—देखो 'वटायत' (रू भे)

वटायोडी—देखो 'वटायोडी' (रू. भे)

(स्त्री वटायोडी)

वटारी—देखो 'वटारी' (रू भे)

वटावणौ, वटावबौ—देखो 'वटाणी, वटावौ' (रू भे)

वटावणहार, हारी (हारी), वटावणियो—वि० ।

वटाविओडी, वटावियोडी, वटाव्योडी—भू० का० कृ० ।

वटावीजणी, वटावीजबौ—कर्म वा० ।

वटावत—देखो 'वटायत' (रू भे)

वटियोडी—देखो 'वटियोडी' (रू भे)

(स्त्री वटियोडी)

वटौली—वि [स वट+आलुच् प्र] (स्त्री वटौली) ? जिसका किसी हिस्से, भाग या अंग पर अधिकार हो । हकधारी ।

२ हिस्सेदार, भागीदार ।

३ सामीदार

वठ, वठी—वि [स वठ] (स्त्री वठी) ? उहण्ड ।

२ अविवाहित, कुंआरा ।

३ बोना ।

४ पगु, अगहीन ।

स पु [स वठ] ? अविवाहित व्यक्ति ।

२ नौकर, सेवक ।

३ भाला, वछाँ, शूल ।

वड—देखो 'वडौ' (मह, रू. भे)

वडणौ, वडबौ—क्रि स —पीसना ।

उ०—भोरे-भोरे तन करे, वड कर कुरवाण । मिठ्ठा कोडा ना लगै, दादू तोह साण । —दादूवाणी

वडणहार, हारी (हारी), वडणियो—वि० ।

वडिओडी, वडियोडी, वड्योडी—भू० का० कृ० ।

वडौजणी, वडौजबौ—कर्म वा० ।

वडियोडी—भू का कृ —पीसा हुआ ।

(स्त्री वडियोडी)

वडौ—वि [स वण्ड] ? वह पुरुष जिसके लिंगेन्द्रिय के अग्रभाग पर चमडा न हो, जो सुन्नी किया हुआ हो ।

२ वधिया किया हुआ, आस्ता किया हुआ ।

३ अग-भग, पगु ।

४ अविवाहित ।

रू भे—वडौ ।

मह,—वड, वयड, वड, वयड ।

वतळ—स स्त्री [स वर्तनम्] ? चित्त का किसी कार्य में लग जाना, मनबहुलाव ।

उ०—नी कोई वूढी-ठाडी डोकरी ई अर वतळ करण सारु आई । —फुलवाडी

२ वातचीत, वार्तालाप ।

उ०—दीवाणजी रौ एक खास सुभाव के वै लुगया स घणी वतळ नी करता । —फुलवाडी

रू. भे.—वतळ, वतळ, वतोळ, वतोल, वतळ ।

अल्पा,— वतकली ।

वतूळियो—देखो 'वथूळी' (अल्पा, रू भे)

वतूळी—देखो 'वथूळी' (रू भे)

वतोळ, वतोल—? देखो 'वथूळी' (मह, रू भे)

उ०—चिहुदिसि चमकइ वीजळी, वादलवा वतोळ । दुग्व-दरिया-माहा हु गई, टळवळनी द्रहि वोळ । —मा का. प्र

२ देखो 'वतळ' (रू भे)

वतोळियो, वतोलियो, वतोलौयो, वथूळियो—? देखो 'वथूळी' (अल्पा, रू भे)

उ०—? मफ जावा तुफ तेडवा, विमासिउ निसि दिन्न । वैसाखि वंतोलीया, मरडी नाखइ मन्न । —मा का. प्र

उ०—? उडइ रेणु अवीर नी, सुरतर नइ सींदूर । गयणि गुलाल वतोलिया, छलर विछाहिउ सूर । —मा का प्र

वथूळी—देखो 'वथूळी' (रू भे)

वद—देखो 'वद्य' (रू भे) (डि ना मा)

वद—देखो 'वदन' (रू भे) (डि. को)

उ०—ताण मूँछ तोले तिजड, विमन सकति कर वद । कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचद । —सू प्र

वदगण—स पु—? पत्थर । (अ मा)

२ बन्दीजन ।

वदगी—देखो 'वदगी' (रू भे.)

उ०—तद ठाकुरजी फुरमायो कै थारी जात मानी । ये धरे जावौ ।

ये ती अठेई घणी वदगी करी छौ । सू जाना सू इधकी माना छा ।

—द दा

वदण—? देखो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—कवि वेदव्यास बलमीक कवि, करि अस्तुनि वदण कियो ।
—सू प्र.

२ देखो 'वदिण' (रू. भे)

उ०—रच सदन चित्र सरूप, अति रग रग अनूप । जसवारिण
वदण जीह, उचरत विरद सईह ।
—रा रू.

वदणा—देखो 'वदना' (रू. भे)

उ०—हीहू तुरक नही को इसउ, रिणि राउतवटि लखणउ जिसउ ।
जे समरगणि साम्हा भरइ, ते सुर सिद्ध वदणा करइ ।
—का दे प्र

वदणो, वदवो—कि स [स वदनम्] १ नमस्कार करना, प्रणाम
करना, अभिवादन करना ।

उ०—१ कमधज्ज मिळं सू कमधजा, हीया परफुल्लत हुवै ।
वदियो 'गजण' विय चदवरि, ताम तुरवकी हिदुवै ।
—गु रू व

उ०—२ सेतुज वदिस्र तीरथराउ, गुरु या गणहर करउ पसाउ ।
वाग वारिण हउ समरउ देवि, चिहुगति गमण कहउ सखेवि ।
—वस्तिग

२ स्तुति करना, प्रार्थना करना ।

३ पूजा करना, अर्चना करना ।

४ प्रशंसा करना, तारीफ करना ।

वदणहार, हारो (हारी), वदणियो—वि० ।

वदिणोडो, वदियोडो, वदचोडो—भू० का० कृ० ।

वदोजणो, वदोजवो—कर्म वा० ।

वदणो, वदवो, वधणो, वधवो, वदेणो, वदेवो विदणो, विदवो,
विदणो, विदवो—रू० भे० ।

वदन—स पु [स] १ नमस्कार, प्रणाम, अभिवादन ।

उ०—१ राजा वदन कीध उभै कर । आली-वाच विप्रा इम
उचर ।
—गु रू व

उ०—२ इम सिध वयण सुणै उदमदियो, वदन करे नरेसुर
वदियो ।
—सू प्र.

२ प्रार्थना, स्तुति ।

३ पूजा, अर्चना ।

रू. भे.—वदण, वदन, वदिण, वदिन, वद, वदण ।

वदनमाळ, वदनमाळा, वदनवार—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—प्रथोनाथ गढपीळि, प्रथम 'अमसाह' पघारे । तोरण वदन-
माळ प्रगट उछव अणपारे ।
—रा रू

वदना—स म्त्री [स वदन] १ नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम ।

उ०—कर कहू नइ करू वदना हु वारी । पहिलउ प्रत्येक बुद्ध रे
हु वारी लाल ।
—स कु

२ स्तुति, प्रार्थना ।

३ पूजा, अर्चना ।

रू. भे.—वदणा, वदना, वदणा, वदनी ।

वदनी—स. स्त्री. [स वन्दनी] १ जीवातु नामक औषधि, जो मृतक को
जीवित कर सकती है ।

२ गोरोचन ।

३ तिलक ।

४ बटो ।

५ याचना कर्म ।

६ देखो 'वदना' (रू. भे)

वदनीक, वदनीय—वि [स वन्दनीय] १ प्रणाम या नमस्कार करने
योग्य ।

उ०—वदनीक पाय रा गाय रा दुजा विसावीस । आसुरा भजणा
आडे घाय रा अमाव ।
—र. ज प्र.

२ स्तुति व प्रार्थना योग्य ।

३ पूजा व अर्चना करने योग्य ।

वदर—१ देखो 'वदर' (रू. भे)

२ देखो 'वानर' (रू. भे)

वदरगाह—देखो 'वदरगाह' (रू. भे)

वदरमाळ, वदरमाळा, वदरवाळ, वदरवाल, वदरवाळा—देखो 'वादरमाळ'
(रू. भे)

उ०—१ पाणिग्रहण-तणउ परियाण, माळवो विहु भूपति मडाण ।
महोछव तोरण वदरमाळ, वधि वाघइ बारणइ विसाळ ।
—ढो मा

उ०—२ वेलि जु एक रूख थें दूसरें रूख जाइ लागि छै । सु
वदरवाळ वधाणी छै ।
—वेलि टी

उ०—३ चारू घट जुअल दीप प्रदीप मणिमाळा प्रवाल वदरवाल ए
द्रव्य मगलीक स्त्रीदेवपूजन गुरू वदन प्रमुख भाव-वदन मगलीक ।
—व स

उ०—४ तिणि वेला नऊइ कोरणा बाधीयइ तोरण, बाधीयइ
वदरवाल, उत्सव विसाल वाग्विलास ।
—व स

वदरियो—१ देखो 'वदर' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो 'वानर' (अल्पा, रू. भे)

३ देखो 'वदरियो' (रू. भे.)

वदाडणो, वदाडवो—देखो 'वदाणी, वदावो' (रू. भे)

वदाडणहार, हारी (हारी), वदाडणियो—वि० ।

वदाडियोडो, वंदाडियोडो, वदाडघोडो—भू० का० कृ० ।

वदाडोजणो, वदाडोजवो—कर्म वा० ।

वदाडियोडो—देखो 'वदायोडो' (रू भे)

(स्त्री वदाडियोडो)

वदाणो, वदावो—कि स [स. वदनम्] १ स्वागत करना, सम्मान पूर्वक, अगवानी करना ।

उ०—ताहरा राजा वरदाईसेनजी साम्हा जाय कुवर नू वदाय धरे ले आया छै । —नैणसी

२ अभिवादन कराना, नमस्कार कराना ।

उ०—१ जागळू रा लोक ऊचा चढ चढनें जोवै छै । राजलोक पिएण गोखा चढि-चढिनें जोवै छै । इण जुगत करिनें तोरण वदायो छै । —लाली मेवाडी री वात

उ०—२ विवध उतारै वीनती, धारै निजर तुरग । लगन वदायो तूवरा, पायो समै सुरग । —रा. रू

उ०—३ तरै पुरोहितजी नै आषा ले'र कान मे पूछियो—कॅ नाळेर कियाने वदायो ? मै थानै काहु कहि नै मेलिया था ।

—राव रिणमल री वात

४ स्तुति कराना, प्रार्थना कराना ।

५ पूजा कराना, अर्चना कराना ।

वदाणहार, हारी (हारी), वंदाणियो—वि० ।

वंदायोडो—भू० का० कृ० ।

वंदाईजणो, वदाईजवो—कर्म वा० ।

वदाडणो, वदाडवो, वदाणो, वंदावो, वदावणो, वदाववो, वघाडणो, वघाडवो, वघाणो, वघावो, वघावणो, वघाववो, वदाडणो, वदाडवो, वदावणो, वदाववो—रू० भे० ।

वदायोडो—भू० का० कृ०—१ सम्मान पूर्वक अगवानी कराय हुआ, स्वागत कराय हुआ. २ अभिवादन कराय हुआ, नमस्कार कराय हुआ. ३ स्तुति व प्रार्थना कराय हुआ. ४ पूजा व अर्चना कराय हुआ ।

(स्त्री वदायोडो)

वदावणो, वदाववो—देखो 'वदाणो, वदावो' (रू. भे.)

वदावणहार, हारी (हारी), वदावणियो—वि० ।

वदावियोडो, वंदावियोडो, वदावयोडो—भू० का० कृ० ।

वदावोजणो, वंदावोजवो—कर्म वा० ।

वदिण—देखो 'वदिन' (रू. भे)

वदित—वि [स] १ जिसको नमस्कार किया गया हो, अभिवादित, सम्मानित ।

२ जिसकी प्रार्थना की गई हो, स्तुत्य ।

३ जिसकी पूजा या अर्चना की गई हो, पूजित ।

वदिन—देखो 'वदिन' (रू भे)

वदियोडो—भू० का० कृ०—१ नमस्कार किया हुआ, प्रणाम व अभिवादन किया हुआ २ स्तुति व प्रार्थना किया हुआ. ३ पूजा व अर्चना किया हुआ.

(स्त्री वदियोडो)

वदीखानो—देखो 'वदीखानो' (रू. भे)

वंदीप्रह, वदीघर—देखो 'वदीघर' (रू भे)

वदीजण, वदीजन—देखो 'वदीजन' (रू भे)

उ०—सुम खमा खमा जय सद् री, कोळाहळ वदीजणां ।

—रा रू.

वदोदाव—स. स्त्री —पारसी लोगो की एक धार्मिक पुस्तक ।

वदेणो, वदेवो—देखो 'वदणो, वदवो' (रू भे.)

वदोकडो, वदोखडो, वदोगडो—देखो 'वदोकडो' (रू भे)

वंदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वदोळो—देखो 'वदोळो' (रू भे)

वदोवस्त—देखो 'वदोवस्त' (रू भे)

उ०—पण उणारी चौडे लडणारी आसण हुई नही । तद वरसध नू लाळच देय अजमेर बुलायो, अर खातरी करनें वीटली चाडियो । पीछे वदोवस्त कियो । —द दा

वदो—देखो 'वदो' (रू भे)

उ०—वदा करिये वदणी, आतम तं आधीन । जनहरिया । धम धम घटै, यो तन होसी छीन । —अनुभववाणी

वध—वि [स] १ नमस्कार, प्रणाम व अभिवादन करने योग्य ।

२ पूजा, अर्चना व स्तुति करने योग्य स्तुत्य, पूज्य ।

३ प्रार्थना व निवेदन करने योग्य ।

वंद्रवाळप—देखो 'वादरमाळ' (रू भे.)

वद्रावनवासी—देखो 'वद्रावनवासी' (रू भे)

उ०—वीयो टमरियो वद्रावनवासी, वणराय भार अठार सख्या, विस्णु वाणी ऐह । —रूमणी मंगळ

वध—देखो 'वध' (रू. भे.)

वधणो, वधवो—देखो 'वधणो, वधवो' (रू भे)

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू भे)

वधन—देखो 'वधन' (रू भे)

उ०—काळ का भै वधन कापै, जाप भजपा भाप भापै ।

—ह पु वा.

बंधव—देखो 'बंधु' (रू भे.)

उ०—होय कै निकासी बनौ बंधवां समेत हल्यो । ऊफल्यो सामुद्र
सेना हळीतो उदार । —बादरदांन दधवाडियो

बधाणो, बधावो—देखो 'बधाणो, बधावो' (रू. भे.)

बघायोडो—देखो 'बघायोडो' (रू भे.)

(स्त्री बघायोडो)

बघियोडो—देखो 'बघियोडो' (रू भे.)

(स्त्री बघियोडो)

बघेज—देखो 'बघेज' (रू. भे.)

बघ्या—देखो 'बघ्या' (रू भे.)

बघ्याचळ, बघ्याचळि—देखो 'बघ्याचळ' (रू भे.)

उ०—करपूर कावेरी तीरि, कुकुम कास्मीरि, चदन मजयाचलस गि,
कस्तूरी कुरगि, गजराज बघ्याचलि, मोती जयकजरि । —व स

बघ्यापणो—देखो 'बघ्यापणो' (रू भे.)

बनर—देखो 'बानर' (रू भे.)

बनरमाळ—देखो 'बादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—बणै ग्रहि बनरमाळ सुत्रिद ।

—रामरासो

बनोलो—देखो 'बदोळो' (रू भे.)

बस—देखो 'बरण' (रू. भे.)

उ०—मारवणी मुंह-बस, आदित्त हू उज्जळी । सोह भांखउ
सोवंस, जो गळि पहिरउ रूपकउ । —ढो मा

बसर—देखो 'बानर' (रू भे.)

बवाळी—देखो 'बवाळी' (रू भे.)

बवि, बवी—देखो 'बवी' (रू भे.)

उ०—गुर का सवदळे भौरा जगायबा । सरप बवि तजि अगम तहों
जायिवा । —ह पु वां

बभ—१ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.) (जैन)

२ देखो 'ब्राह्मण' (रू भे.)

बभर, बभार—देखो 'बवार' (रू भे.)

उ०—फर फाटस नाह सनाह फडै । भाअलोड बभार करत भडै ।

—पा. प्र

बभि, बभी—देखो 'बवी' (रू भे.)

बबक—देखो 'बबक' (रू भे.)

बवाळी—देखो 'बवाळी' (रू भे.)

बस—स. पु [स बस] १ किसी जीव, प्राणी या मनुष्य की सतान
परम्परा, कुल, खानदान, गोत्र ।

उ०—१ सीह-छतीसी सामळ, छाकै बस छतीस । 'बाकै' पाटो
वीर रस, बरणी विसवावीस । —वा दा.

उ०—२ देवी गजता दैततां बस गमिया । देवी नवै खड थिभुवन
तूक नमिया । —देवि

२ सतान, सतति, परिवार ।

उ०—हिव एकु अम्ह मानु, दियउ विहु पखउ तु छडि । कउरव बस
बिणासिया, काई वूडु म माडि । —प प च.

३ वेडा ।

४ समुदाय, समूह ।

५ रीढ की हड्डी, मेरूदड ।

६ खडग के बीच का भाग जो अधिक चौड़ा होता है ।

७ युद्ध की सामग्री ।

८ गांठ ।

९ गन्ना, ऊल ।

१० साल का पेड़ ।

११ शहतीर, बल्ला, लट्टा ।

१२ पुष्प, फूल ।

१३ विष्णु का एक नाम ।

१४ पुरुषो की बहतर कलाओ मे से एक । (बस)

१५ बस लोचन ।

१६ बारह हाथ का एक नाप ।

१७ देखो 'बास' (रू भे.) (ना मा.)

उ०—यो चिंता उद्वेगो, लग्गी अग बस घासाण । —रा. रू

१८ देखो, 'बसी' (मह, रू भे.)

उ०—तती ताल टबकडा, महल बस विसाल । निरति करइ नव
रागमा, माडी मस्तक थाल । —मा का प्र.

रू भे —बस, वास ।

अल्पा —बंसी ।

बंसक—वि. [स. बस + प्र क] बस का, बस सम्बन्धी ।

स पु [स बसक] १ वाम का पेड़ ।

उ०—सू डाळो घालम ढल्ल सिरै । नसाविध बंसक नदगिरै ।

—गु रू. व.

२ बास की गांठ ।

३ अग्र की लकड़ी ।

४ मछली ।

रू भे —वसक ।

वसकर—स. पु. [स. वशकर] जिस से किसी वश, कुल या गोत्र का प्रारम्भ होता हो, मूल पुरुष ।

वसकार—स. पु.—राजवर्ग विशेष

उ०—कवि काठीया, मसूरिया, दीवटीया उपाध्याय वङ्कार कर-
डिकार आलविणिकार वीणाकार वंसकार आउज्जी पखाउजी
पास्वात्यपक्षे तारकिक ज्योतिषी वैद्य महावैद्य । —वस

वसछेतर—स पु. [स. वशछेत्] १ किसी वंश का अंतिम पुरुष ।

२ एक सर्प विशेष । (शेखानाटी)

रू भे —वसछेतर ।

वसज—स. पु. [स. वशज] जो किसी कुल, वश या गोत्र में उत्पन्न हुआ हो, सतान, सतति, श्रीलाद ।

वि —वास का बना ।

रू भे —वसज ।

वसजा—स स्त्री [स. वशजा] १ कन्या, पुत्री ।

२ वंसलोचन ।

वसघर—सं पु [स. वशघर] १ वश-परंपरा व वश की मर्यादा को धारण करने वाला, वशज । वंश की मर्यादा को उज्ज्वल करने वाला ।

२ सन्तान, सतति ।

रू. भे —वसोघर, वसोघर,

वसनास—स पु [स. वशनाश] १ शनि और राहु का सूर्य के साथ एक लग्न में पडने, विशेषतः पचम लग्न में पडने पर होने वाला एक योग जो वश—नाश का कारण माना जाता है। (फलित—ज्योतिष)
२ एक भयकर विपला सर्प जिसके किसी एक व्यक्ति को काटने से शनै-शनै उस (व्यक्ति) के पूर्ण वश का नाश हो जाता है ।

वसपरिपाटी—स स्त्री [स. वश+परिपाटी, वशपरम्परा] १ वश की मर्यादा, गौरव ।

उ०—राज्य-द्रग-दुरग-देस वैभवज सुख हेय । राखी द्रढ वस-
परिपाटी की प्रभत्ता को । —बालावक्ष वारहूठ

२ क्रमशः चलने वाली वश-परंपरा, पीढी, शृंखला ।

वसव्रक्ष—देखो 'वसव्रक्ष' (रू भे)

वसभाई—स पु [स. वश+भ्रात] कुटुंबी, सम्बन्धी, वधु, बाधव, सगीत्री ।

रू. भे.—वसभाई ।

वसरी, वसळी—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

उ०—गावणहार माडइ (अ) र गाई । रास कह (भम) यइ वसली
वाई । —वी. दे

२ देखो 'वसावळी' (रू. भे.)

३ देखो 'वासरी' (रू भे)

वसलोचन वसलोचन—स पु [सं. वशलोचन] लम्बी पोर वाले बड़े बासों की गाठों को जलाने पर निकलने वाला बास का सार भाग जो सफेद रंग के छोटे छोटे टुकड़ों के रूप में होता है । वश-शुकरा, वशकपूर ।

रू भे —वंसलोचन ।

वसव्रक्ष—म पु [स. वशवृक्ष] १ किसी वश का, उसके मूल पुरुष में से लेकर परवर्ती वशजों का, वृक्ष के रूप में, बनाया हुआ रेखा चित्र या नक्शा ।

२ किसी वश का क्रमशः दिया गया, विवरण ।

रू भे —वसव्रक्ष, वसव्रक्ष ।

वसस्थ—स पु [स. वशस्थ] वारह वर्णों का एक वर्ण-वृत्त ।

रू भे —वसस्थ ।

वसा—स पु —१ शकरि प्रभा नामक नर्क । (जैन)

२ देखो 'वास' (रू. भे) रू भे वसा ।

वसावळीयो—देखो 'वसावळीयो' (रू भे.)

वसाळी—देखो 'वसावली' (रू. भे.)

वसावळीयो—देखो 'वसावळीयो' (रू. भे)

वसावली—स. स्त्री [स. वशावली] १ किसी वश या कुल में उत्पन्न व्यक्तियों की पूर्वोत्तर क्रम से सूची, विवरण ।

उ०—१ वसिष्ठ कहै वसावळी, राज ख्यात दसरथ । —रामरासी

उ०—२ पाछलै पानै वसावळी छै ।

—नैणसी

२ वस, कुल, गोत्र ।

रू भे.—वसावळी, वसळी, वसाळी वासावली ।

वंसावळीयो—स. पु [स. वश+राज आवळीयो] वशगुरु, कुलगुरु ।

वि —वंश का, वश सम्बन्धी ।

रू भे —वसावळीयो, वसावळीयो, वसावळीयो, वंसावळीयो, वसावळीयो ।

वसि, वसी—वि [स. वंशी] किसी वश विशेष में उत्पन्न । वश का ।

उ०—१ लागढ पाय माजीया आसू, जणणी दीइ असीस । वसि
अम्हारइ तु अजरामर, प्रतिपे कोडि वरीस । —का दे. प्र.

उ०—२ वसि तू सूर वसि भू पीक । नेजे सू वह घातउ निभीक

—रा ज सी

उ०—खटतीस वस राजकूळी सिरोमणि सूरज वंसी राजान मारवाडि

रा नव कोटारी ठकुराई जम्बोळ राज पदी भोगवै ।

—रा सा स.

स स्त्री—१ वास की नलिका मे छेद करके (स्वर बनाकर) बनाया हुआ एक बाजा जो मुह से फूँक हाथ की अंगुलियों द्वारा बजाया जाता है । मुरली, वासुरी ।

उ०—१ तिसा वैण स्त्रीमडळ जत्र ताल । सहनाय वसी अनै सीस ढाल ।

—रा रू

उ०—२ दोय वजावइ ताल दोय वीणा वसी, दोय वजावइ वासली ए ।

—स कु

२ रक्त वाहिनी सिरा, नस ।

३ चार कर्प या आठ तोले का एक मान ।

४ वशलोचन ।

५ घोडे का नथुना ।

रू भे—वसरी, वसली, वसी, वनसी, वासरी, वासळी, वासुरी, वासुळी, वसरी, वसीय, वसु, वसू, वनसी, वासरी, वासी, वाहली ।

मह—वस, वस ।

वसीघर, वसीघरण, वसीधारी— स. पु [म. वशीघर वशीधारिन्] १ श्रीकृष्ण । (अ.मा.)

उ०—वसीधारी ब्रज वासी विहारी ।

—पि प्र

२ ईश्वर । (ना मा)

वि—वसी बजाने वाला ।

रू भे—वसीघर, वसीघरण,

वसीय— देखो 'वसी' (रू.भे.)

वसीवट— स. पु. [स वशीवट] वृन्दावन का वह वट-वृक्ष जिसके नीचे बैठ कर श्रीकृष्ण वासुरी बजाया करते थे ।

रू भे—वसीवट, वसीवट

वसीवाळी—स.पु—१ श्रीकृष्ण ।

उ०—गाया ग्वाळी वानी काळी वसीवाळी वेहारी ।

—पि प्र.

२ वह जिसके पास वसी हो ।

वसु, वसू—देखो 'वसी' (रू.भे.)

उ०—धुरताळा विकखणी, घणी लगी धायासा । नह सुरिजै नीसाण, वसू बाजी वरहासा ।

—गु रू व

वसं—देखो 'वासं' (रू.भे.)

उ०—तद राणी कही धाने जे वास्तं वसै राखिया हुता मु विद्या सीयी क नही

—चीवोली

वसोघर—देखो 'वसघर' (रू.भे.)

उ०—मिणघर मेछ कमळ मह-मेहण, चाच वसोघर दे चलण ।

—नैरासी

वसो—१ देखो 'वास' (अल्पा, रू.भे.)

उ०—वसो वधति बहुअ, अतर गति गठि वेध उत्तपन्नी । सजोगि अगनि पतगी, प्रजळय अप मज्जेण ।

—गु. रू व.

२ देखो 'वस' (अल्पा, रू.भे.)

व-स. पु [स] १ वरुण । २ वायु, पवन, हवा । ३ वाण, तीर । ४ शिव । ५ उपमा । ६ सुखी । ७ अव्यय । ८ अर्थ ९ वरुण देव । १० समुद्र । ११ राहु का नाम । १२ कल्याण मंगल । १३ सात्वना । १४ तुष्टि साधन । १५ वस्ती । १६ वास, निवास । १७ सम्बोधन । १८ मन्त्रणा । १९ बाहु २० वस्त्र । २१ शार्दूल । २२ चीता । २३ कलश से उत्पन्न ध्वनि । २४ वदन । २५ वृक्ष । २६ मूर्वा-लता । २७ अस्त्र । २८ खडगधारी पुरुष । २९ सेरकी नामक कद । ३० जल-कद, शालूक । ३१ मद्य । ३२ प्रचेता । (एका.) अव्य [फा.] १ धीर, तथा । सर्व—२ 'वह' का सक्षिप्त रूप ।

वअ—देखो 'वय' (रू.भे.) (जैन)

वइगण, वइगणीउ, वइगणु—स पु—१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पटसाउल मेघाडवर सभारावउ रावेउउ कणवीर सीवन्न-च्छलेउ मनेत्र नीलउ नेत्र रात कडाहुउ वइगणीउ कल्ही ।

—व स.

२ देखो 'वंगण' (रू.भे.)

वइ—देखो 'वय' (स.भे.) (जैन)

वइड—देखो 'वितड' (रू.भे.)

उ०—तिआ चोपडै तेल सिदूर तन्न, वइडां वणारवै धणू स्याम प्रन्न । नोडी भीडिआ अग लग्गा निहण, जटाजूट सणाहू जे कोड जग ।

—वचनिका

वइअर—देखा 'वैर' (रू.भे.)

देखो 'वैर' (रू.भे.)

वइठणी, वइठवो—देखो 'वैठणी, वैठवो' (रू.भे.)

उ०—मारू वइठी सेज-सिर, प्री मुख देखइ तास । पूनिम-केरे चद ज्यू, मदिदर हुवउ उजास ।

—ढो मा)

वइठियोडी—देखो 'वैठियोडी' (रू.भे.)

(स्त्री. वइठियोडी)

वइठणी, वइठवो—देखो 'वैठणी, वैठवो' (रू.भे.)

उ०—रुखमइयो नइ राजा भीमक, मत्र करेवा वइठ्या ।

—रुकमणी मगळ

वह्नियोडी—देखो 'वैठियोडी' (रू भे)

(स्त्री. वह्नियोडी)

वहण—१ देखो 'वचन' (रू भे)

उ०—सो सखेस्वर 'पास' जी रे लो, सुणिए वारू दोइ वहण रे सनेही ।
—वि कु

२ देखो 'बहन' (रू भे.)

वहताळ—देखो 'वैताळ' (रू भे)

उ०—कानि कुडल सिरि मुगट, मुत्ताहलि गलि माल । दिव्य वस्त्र दीसइ भला, वीर जिके वहताळ ।
—मा. का प्र

वहदड - देखो 'वैद्यक' (रू भे)

उ०—बह्या वीण वाइ, पवन बुहारइ, गणपति गादह चारइ, क्तात कोट राखइ, सनीस्वर रसोइ चाखइ, मगल स्त्रीखड घसइ, बुघ सौनउ कसइ, अढार भार वनस्पति फूलपगर भरइ, घन्वतरि वहदड 'करइ ।
—व स.

वहन—देखो 'वचन' (रू भे)

उ०—त्यु सदुपदेस विसेस दे कइ विमल एकइ वहन । वृभव्यी सो रहनेमि विसयी गई जहा यदुपति सइन ।
—वि कु.

२ देखो 'बहन' (रू भे)

वहर—१ देखो 'वैर' (रू भे)

उ०—चउड रा वहर ले चतुरग देवरा मारि ढाहिय दुरग ।
—रा ज मी

२ हेखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—पाखरि पलाणि काळउ पहाड । वरिजाग चडिय वहरा विभाड
—रा ज सी.

३ देखो 'वैर' (रू भे)

वहरतमाण—देखो विरहमाण (रू भे.)

वहरसेन—देखो 'वीरसेन' (रू भे.)

वहराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—१ जेती जउ मनमाहि, पजर जइ तेती पुळइ । मनि वहराग न थाइ, वालभ वीछुडिया तणी ।
—ढो मा

उ०—२ आगइ वार विचारि हराव्या, तुरकि न लाघउ लाग । मोटे राजि लाज अन्ह आवी, एहवु हईइ वहराग । का दे प्र

उ०—३ चित्त विचारि समाचरइ रे लाल, वलि मरकट वहराग रे ।
—वि कु

वहरागर—स पु —१ एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जादर हीरागर वहरागर फूलपगर चौर वलगर चुतार पीतावर चादर रक्तावर, नेत्रावर ।
—व स
रू भे —वयरागर, वयरागरि ।

२ देखो 'वैरागर' (रू भे.)

उ० उडीसा री नइ नाहूली, चीण भोट चभेरी । गवड देस वहरा-गर सागर, जाळ घर भभेरी ।
—रूकमणी मगळ

वहरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे)

उ०—१ माली तबोली हरमेखलीया जोगी भोगी वहरागी नट विट सुट खरड लाठा रगाचाग्घ ।
—व. स

उ०—२ वहरागी थिउ विस्तरइ, रामा सू पि राग । कारत कांटे काकरि, पुलतु अणूहाणि पाग ।
—मा का प्र

वहराट—१ देखो 'विराट' (रू भे) (व स.)

२ देखो 'वैगट' (रू भे)

वहरि, वहरी—१ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—१ वहरिया तणइ सिरि मिरी वाटि । पह मलइ कू भ वइ-सारि पाटि ।
—रा ज सी

उ० २ साद करं किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्के पाव । सयरो धाटा वरळिया, वहरि जु हूआ वाव ।
—ढो. मा

२ देखो 'वैर' (रू भे)

३ देखो 'वैर' (अल्पा रू भे)

वइवस्तु—देखो 'वैवस्वत' (रू भे)

उ०—सुत कासिप सूरज तप असाधि । वइवस्तु सूर सुत तेज वाधि ।
—सू प्र

वइस—देखो 'वैस्य' (रू भे)

उ०—वाणिज्य वइस फवि जेण वैर । कोटेक जाण वप घर कुमेर ।
—सू प्र

वइसणो, वइसवो—देखो 'वैठणी, वैठवो' (रू. भे)

उ०—कणक सिंहासण स्वामी वइसण ।
—स कु

वइसनव—देखो 'वैस्नाव' (रू भे)

उ०—वइसनव ग्यान केवल वियाप । छक प्रेम त्रुलिसिका तिलक छाप ।
—सू प्र

वइसाख—देखो 'वैसाख' (रू भे) (उ र)

वइसाणो, वइसावो—देखो 'वैठाणी, वैठावो' (रू भे.)

उ०—अपरापति चडि चाल्यो राय । ली अस्त्री अरधग वइसाय ।
—त्री. डे

वइसायोडी—देखो 'वैठायोडी' (रू भे)

(स्त्री 'वैठायोडी' (रू भे)

वइसाह—देखो 'वैसाख' (रू भे)

उ०—सव्वे भला मासडा, पण वइसाह न तुल्ल । जे दवि दाधा रू खडा, तीह माथइ फुल्ल ।
—रा सा. स

वहसियोडो—देखो 'वैठियोडो, (रू भे)

(स्त्री. वहसियोडो)

वहहनडी—देखो 'वहन' (अल्पा., रू भे)

उ०—भूरइ रा वहहनडी अकन कुवार । महाजन भूरई राई साधार ।
—बी दे

वहहरमाण—देखो 'विरहमाण' (रू. भे)

वई—देखो 'वैई' (रू. भे)

उ०पछे आ वात रावळ मालंजी रं हजूर हुई जु खाध रं वई एक
जरपूत रजपूताणी छोडी ।
—नैरासी

वईअर—१ देखो 'वहीर' (रू भे)

उ०—दले कबीला देसने, वईअर कीघा वेग । साथे बघव सातही,
तिकं उरस री तेग ।
—बी. मा.

२ देखो 'वैर' (रू भे.)

वईकुंठ—देखो 'वैकुंठ' (रू भे)

वईजयती—देखो 'वैजयती' (रू भे) (घ मा)

वईदराज—देखो 'वैदराज' (रू. भे)

उ०—वईदराज के विसाल, श्रीखडी उपाइक । तई रसायणी
स्वघातु, स्वच्छय रसायक ।
—सू. प्र

वईद्रभा—देखो विदरभा (रू भे)

उ०—बलिभद्र बघव तेडीयोजी, धीजउ प्रमनकुमार । वईद्रभा
नयरी वीवाह छइ जी, रहीय म लावो वार —रुकमणी मगळ

वईभ्रत—देखो 'वैभ्रत' (रू भे)

वईयर—१ देखो 'वैर' (रू भे)

उ०—वईयर वाले रुसणी सखि भाखे देवी वाणि ।
२ देखो 'वहीर' (रू भे.)
—वि. कु.

वईर—देखो 'वहीर' (रू भे)

उ०—हुब मेटरण पोट कबीर घरा दिस । हाकळ कीघ वईर हरी ।
—भगतमाळ

वईस—देखो 'वैस्य' (रू. भे) (जंन)

वईसवण—देखो 'वैसवण' (रू भे)

वउ—देखो 'वहू' (रू. भे.)

वउबदोळी—देखो 'बहुवदोळी' (रू भे)

वउरात—देखो 'बहुरात' (रू भे)

वउलण—१ देखो 'बोलण' (रू भे)

२ देखो 'बोलणी' (रू भे)

वउळणो, वउळवो, वउलणो, वउलवो—देखो 'बोळणो, बोळवो' (रू भे)

उ०—१ साद करे किम सुदुर है, पुळि पुळि थक्कं पाव । मयणे
घाटा वउळीया, वइरि जु हूया थाव ।
—ढो मा

उ०—२ अशिलास द्रायन कठ समानत, मउज मानत लोग ।
वैसाख मइ वयसाख वउलत, कहा पीछइ भोग ।
—वि. कु.

वउलसरी—देखो 'बोलसरी' (रू भे.)

वउळणो, वउळवो, वउलणो वउलवो—देखो 'बोळणो, 'बोळवो'
(रू भे.)

उ०—सजणियां वउळइ कइ, मंदिर वइठी प्राउ । मंदिर
काळउ नाग जिउ, हेलउ दे दे वाइ ।
—ढो मा.

वउळायोडो, वउलायोडो—देखो 'बोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री वउळायोडो)

वउळायणो, वउळायवो वउलायणो, वउलायवो—देखो 'बोळायणो,
बोळायो' (रू भे)

उ०—१ तत तणकइ पिउ गियइ, करहउ ऊगाळेह । भल
वउळायो दीहडा, दई वउळायण देह ।
—ढो मा.

उ—२ कु ती मुद्री जाइ वउलायेवा नदणह ।
—प प च

वउळायियोडो—देखो 'बोळायोडो' (रू भे)

(स्त्री वउळायियोडो)

वउळायू वउळायो—देखो 'बोळायू' (रू भे)

उ०—१ वउळायू सगळा विलविलइ, डोलउ किरही पाछउ
वळइ । साथी मारु द्राण-भणी, धणु कहइ पति न रहइ धणी ।

उ०—२ जिरिण वेळा डोलउ नीकळइ, केता वउळायवा साधइ
करउ । सोभ करेवउ इण वात रउ, पडिम्यइ रखे तुम्हा पात-
रउ ।
—ढो मा

वउळियोडो, वउलियोडो—देखो 'बोळियोडो' (रू. भे)

(स्त्री० वउळियोडो, वउलियोडो)

वउलसिरी - देखो 'बोलसरी' (रू भे)

उ०—जइ सूकी तउ वउलसिरी, त्रूटी तउ मोतीसरी, जइभागउ
तउ वारहउ, थार्कउ तउ सेराह, जइ खाडउ तोइ चद्र. .. ।

—व स

वऊ—देखो 'वहू' (रू भे)

वऊबदोळी—देखो 'बहुवदोळी' (रू भे)

वऊरात—देखो 'बहुरात' (रू भे)

वएसा—देखो 'वैस्या' (रू. भे)

उ०—सभै खाडस ल गार सुतनी । वएसा भूल चली रिखवनि ।

—रामरासी

वक—देखो 'वक' (रू भे.)

उ०—सुकवि तजै सुदतार नूँ, जिण मुख कुकवि प्रसस । जळद
अग्र वक देख जूँ, व्है प्रछन्न कळहस । —वा दा
(स्त्री वकी)

वकट—देखो 'विकट' (रू भे)

उ०—हले थाट दखणाद लग टळ तोपा हमत, खसत मद मीळ रा
नरा खागा । मरट तिरावार राखी वकट मोसरा, सुपेती चौसरा
तणी 'सागा' । —सग्रामसिंह सक्तावत री गीत

वकणो, वकबौ—देखो 'वकणो, वकबौ' (रू भे)

उ०—१ बाणा बाण वाजै गोळा चोसरा सवीर वकै, वाहा हार
मील भाजै छाजै पखा वोळ । जठी-तठी भार पडै मीरजा ओहटै जठी,
तठी-तठी राजा आडो ओडजै सतोळ । —अमरदास बारहठ

उ०—२ अक्की वयण अहीर, उठतै तंहिज आखियो । वकियो
मैं पिए वीर, वात न जाणा वीकरा । —वीकरैअहीर री वात

वकणहार, हारो (हारी), वकणियो—वि० ।

वकियोडो, वकियोडो, वकयोडो—भू० का० कृ० ।

वकीजणो, वकीजबौ—कर्म वा० ।

वकत—१ 'वक्त' (रू भे)

२ देखो 'वखत' (रू भे)

वकतर—१ देखो 'वकत्र' (रू भे) (डि को)

२ देखो 'वखतर' (रू भे)

वकतरियो—१ देखो 'वखतरियो' (रू भे)

२ देखो 'वखतर' (अल्पा रू भे)

वकता—स स्त्री [स वक्तु] १ जिव्हा, जीभ, रसना । (ह ना मा)

रू भे—वगता ।

२ देखो 'वक्ता' [रू भे]

उ०—मकल प्रताप सुरसरी, हरिपद रूद्र सहित । सुरता राम
सूमित्रसुत, वकता विसवामित्र । —रामरासो

वक्तावर—देखो 'वखतावर' [रू भे]

वकत्र—स पु [सं वकत्र] १ मुख, मुह, वदन । [अ मा.]

उ०—देवी भाव स्वादे हसतै वकत्रे । देवी पाणपाणा पिये मद्य
पत्रे । —देवि

२ जानवरो का थूथन ।

३ पक्षियो की चोच ।

४ अग्रभाग या नौक ।

५ आरम्भ ।

६ अनुष्टप छद ।

७ जिव्हा, जीभ ।

रू भे—वकत्र, वकतर ।

वकपचक—देखो 'वकपचक' (रू भे)

वकफ—स पु [अ. वकफ] १ देवी-देवताओ या ईश्वर वो भेंट करने
अथवा धार्मिक कार्यों के लिये दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या
वस्तु ।

२ उक्त प्रकार का उत्सर्ग या भेंट करने की क्रिया ।

३ दान ।

४ वर्षात में छत के टपकने या चूने की अवस्था ।

५ दो घटनाओं के बीच का समय, विराम, मध्यान्तर ।

६ फुरसत, अवकाश, छुट्टी ।

७ देर, विलम्ब ।

रू भे—ववफ ।

वकफनामो—स पु [अ वकफनाम] दान या उत्सर्ग की हुई सम्पत्ति या
वस्तु का दान-पत्र ।

रू भे—वकफनामी ।

वकवाद—देखो 'वकवाद' (रू भे)

वकवादी—देखो 'वकवादी' (रू भे)

वकवादी—देखो 'वकवादी' (रू भे)

वकर—स पु—१ बलिदान, वध ।

उ०—उठै देवी आगे भंसी वकर करणा नू तयार कियो छै ।
—नैणसी

२ देखो 'वक्र' (रू भे)

उ०—तरण तप जुळण अगीट रा सरोतर, सत्रा रिण रीठ रा
खगा सालै । कर मकर कर घीट रा वचन ना काढै, चकर अणदीठ
रा वकर चालै । —महाराजा मानसिंह जी री गीत

वकरगति, वकरगती—देखो 'वक्रगति' (रू भे)

वकरगामी—देखो 'वक्रगामी' (रू भे)

वकरगुल्फ—देखो 'वक्रगुल्फ' (रू भे)

वकरणो, वकरबौ—देखो 'वकरणो, वकरबौ' [रू भे]

उ०—डायण चढी जिया परि डकरै । वाणी विकट भयकर वकरै ।
—सू प्र.

वकरवरस्टी—देखो 'वक्रव्रस्टि' (रू भे)

वक्रव्रस्ट—देखो 'वक्रव्रस्ट' (रू भे.)

वक्रव्रस्टी—देखो 'वक्रव्रस्टि' (रू भे.)

वकरपूछ—देखो 'वक्रपुच्छ' (रू भे)

वकराग—देखो 'वक्राग' (रू भे)

वकराणो, वकराबौ—देखो 'वकराणो, वकराबौ' (रू भे.)

वकरायोडो—देखो 'वकरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वकरायोडी)

वकारियोडो—देखो 'वकारियोडो' (रू भे)

(स्त्री वकारियोडी)

वकरी—१ देखो 'वक्री' (रू भे)

२ देखो 'वकरी' (रू भे)

वकरोगति—देखो 'वक्रोक्ति' (रू. भे.)

वकरो—देखो वकरी' (रू. भे)

(स्त्री वकरी)

वकळ—१ देखो 'विकळ' (रू भे)

उ०—करि अण वकळा हुआ रीस जळाकरी, अणं प्रकळा करी भगत अमळा । करी चक्रवाह तन ग्राह तडळा करी, करी राखण गयी धरी कमळा ।
—हुकमीचद खिडियो

२ देखो 'व्याकुळ' (रू. भे)

३ देखो 'वकळ' (रू भे)

वकवाद—देखो 'वकवाद' (रू भे)

उ०—सुक-पिक लर्ग सवाद, भल थोडो ही भाखणों । ब्रथा करे वकवाद, भेक लवै ज्यू 'भैरिया' । —रतलाम नरेस वळवतसिह

वकव्रत, वकव्रत्ति—देखो वकव्रत्ति' (रू भे)

वकसणो, वकसबो—देखो 'वकसणो, वकसबो (रू भे.)

वकसियोडो—देखो 'वकसियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वकसियोडी)

वकाण, वकान—१ देखो 'वखाण' (रू भे)

२ देखो 'वकायन' (रू भे)

वकाई—देखो 'वकाई' (रू भे)

वकाईण, वकायण, वकायन—देखो 'वकायन' (रू भे)

उ०—अरक आउल तिणासिरा, सिम रोहिडो रोहिण । इद्रोख अवरस आसिद्रो, अरम्यज वकाईण ।
—रुमणी मगळ

वकार—देखो 'वाकार' (रू. भे)

वकारणो, वकारवो—देखो 'वाकारणो, वाकारवो' (रू भे)

उ०—१ बार हजार वगाळ, 'विलद' तिण वार वकारे । करि कवाण टकार, धाव सामा पग धारे ।
—सू प्र

उ०—२ नाई री आ बात राजाजी रे ई सोळ आना हीयें बूकी । बोल्या - हा, आ बात तो थारी साव साची । पोहरी देवणीया टाळ ती वो किरणी नै वकारिया ई नी ।
—फुलवाडी

उ०—३ उई रीठ अरणपार, पीठ लगा लाखा पिसण । वेढीगार वकार पंठी उदियाचळ 'पती' ।
—अज्ञात

वकारणहार, हारो (हारो), वकारणियो—वि० ।

वकारिओडो, वकारियोडो, वकारघोडो—भू० फा० कु० ।

वकारीजणो, वकारीजवो—फर्म वा० ।

वकारियोडो—देखो 'वाकारियोडो' (रू भे)

(स्त्री वकारियोडी)

वकाळ—१ देखो 'वकाल' (रू भे)

उ०—विसायतो वकाळ श्रीर सहर के लोग, इस वजह से गुजारा करे । केतेक भाडभूंजे केतेक भीस भाग पेट भरै ।

—दुरगादत्त वारहठ

२ देखो 'वकील' (रू. भे.)

वकालत—स स्त्री [फा] १ न्यायालय या कचहरी में किसी मुकदमे में किसी की तरफ से की जाने वाली वहस, पेरवी या अभिमापण ।

२ वकीलो का कार्य व व्यवसाय ।

३ किसी का स्थानापन्न होकर किया जाने वाला कार्य या उसके पक्ष का मडन ।

वकालतन—कि वि [फा] वकील के द्वारा, वकील के जरिये ।

वकालतनांमो—स पु [फा वकालतनाम] किसी न्यायालय या कचहरी में किसी के मुकदमे पर विधिवन वहस या अभिमापण करने का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र ।

वकासुर—देखो 'वकासुर' (रू भे)

वको—देखो 'वकी' (रू भे)

वकील—स पु [फा.] १ वह व्यक्ति जो कानून की परीक्षा पास हो श्रीर जिसको न्यायालय या कोर्ट में किसी मुकदमे की वहस या कार्यवाही करने का अधिकार पत्र प्राप्त हो ।

२ किसी के कार्य में उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य करने वाला व्यक्ति ।

३ सदेश वाहक, दूत ।

४ किसी के पक्ष को युक्तियुक्त अभिवाचन करने वाला व्यक्ति ।

रू भे —वकाल, वकाल, वकाल, वकाल ।

वकुल—देखो 'वकुल' (रू भे)

उ०—अन्न उदक पय परिहरी, आभरणो ऊवेसि । वकुल-त्वचा वीटि करि, तरुणी तापस वेसि ।
—मा का प्र

वकुलो—स पु [अ वकुलो] १ प्रकटीकरण ।

२ देखो 'वाको' (रू. भे)

३ देखो 'वाको' (रू भे)

४ देखो 'वाकियो' (रू भे)

वकूफ—१ देखो 'वाकफ' (रू भे)

२ देखो 'वेवकूफ' (रू भे)

वक्कत्तण—१ देखो 'वक्रता' (रू भे)

उ०—हा हा दसम कालवतु, खल वक्कत्तण जोइ । नामेण्णइ सुवि-
हिय तण्णइ, मित्तु वि वयरीय होइ । —पण्डित्त शतक-प्रकरण

वक्कर—१ देखो 'वकरी' (रू भे)

२ देखो 'वकर' (रू भे)

३ देखो 'वक्र' (रू भे)

उ०—तव राकस रूपै रवी, ददुर पग घूजवै । हुँकार वक्कर हुल-
सीयो, कुवर खडग करि पूजवै । —रीसालू री वात

वक्करणी, वक्करवी—देखो 'वकरणी, वकरवी' (रू भे.)

उ०—अचळेस कहै अहमद्-सूँ, वदै न कथयण, वक्करै । पतसाह
पुत्री परणी नही, कवर वीर करियागारै । —अ वचनिका

वक्कराणी, वक्करावी—देखो 'वकराणी, वकरावी' (रू भे)

वक्करायोडी—देखो 'वकरायोडी' (रू भे)

(स्त्री वक्करायोडी)

वक्करियोडी—देखो 'वकरियोडी' (रू भे)

(स्त्री वक्करियोडी)

वक्काल—देखो 'वक्काल' (रू भे)

वक्त—स स्त्री [अ०] १ समय, काल, वेला ।

मुहा—१ वक्त काटणी—समय गुजारना, किसी तरह निर्वह
करना । २ वक्त गमाणी—समय नष्ट करना । ३ वक्त री
चीज—समयानुसार मिलने वाली चीज, ऋतु के अनुसार
गाना या राग ।

२ किसी कार्य का उपयुक्त समय, अवसर मौका ।

मुहा.—१ वक्त पर—समय पर, यथा समय । २ वक्त रा
वाया मोती नीपज—समय पर किया काम उचित लाभ
देता है । ३ वक्त हाथ सूँ गवाणी—अवसर चूकना,
मौके का फायदा न उठाना ।

३ विशिष्ट कार्य के लिये निश्चित किया हुआ समय ।

४ पल, घडी, दिन । (ज्योतिष)

५ किसी कार्य में लगने वाली समय की मात्रा, विलंब, देर ।

६ अवकाश, फुरसत, टाइम ।

७ मृत्यु का समय, मौत की घडी ।

रू भे — वक्त, वखत, वस्त, वगत, वकत, वखत, वखत्त, वस्त,
वगत ।

वक्तव्य—वि. [स] १ व्यक्त करने योग्य, निरूपण करने योग्य ।

२ वह जिसके लिये कुछ व्यक्त किया जावे, कहा जावे ।

स. पु—१ किसी घटना विशेष या विषय विशेष पर, लोगों की
जानकारी के लिये दिया जाने वाला लिखित या कथित स्पष्टीकरण,
मन्तव्य, टिप्पणी ।

२ वक्ता का कथन,

वक्ता—वि. [स वक्त] १ कहने या बोलने वाला, भाषण देने वाला ।

२ जो किसी बात या घटना को ठीक ढग से व्यक्त कर मकता हो,
कह सकता हो, भाषण पटु ।

स पु—१ कहने, बोलने या भाषण देने वाला व्यक्ति ।

२ उपदेशक, शिक्षक ।

३ पठन पाठन करने, स्तवन करने व उच्चारण करने वाला
व्यक्ति ।

उ०—उज्जीण नगरी रै माही देव सरमा नामे बिरामण निवास
करै । उवो च्यार वेद री वक्ता, सठ सास्त्र री जाण हार, बडी
पडित थी । —साई री पलक री वात

४ विद्वान, पण्डित ।

रू भे — वक्ता, वकता, वखता, वगता ।

वक्क—देखो 'वक्क' (रू भे)

वक्कदार—वि [फा] वक्क प्राप्त करने वाला ।

वि वि—जिस प्रकार भविष्य में की जाने वाली सेवा के लिये
जागीरदारों को जागीरें दी जाती थी उसी प्रकार पिछली जानदार
सेवा या कार्य करने के बदले पेंशन के तौर पर अथवा पहलवानों,
विद्वानों, कलाकारों आदि को जीवन-यापन के लिये जागीरें दी
जाती थी उन्हें वक्क कहते थे । अत उक्त प्रकार की जागीर प्राप्त
करने वाला ।

वक्कनामी—देखो 'वक्कनामी' (रू भे)

वक्क—वि [स.] १ सीधा का विपर्याय, डेढा, तिरछा वाका ।

२ भुका हुआ, मुडा हुआ, नत ।

३ घुघराला, छल्लेदार, गोल-मटोल ।

४ कुटिल, घूर्त, बेईमान, छलिया ।

५ निष्ठुर, बेरहम ।

६ दीर्घ । (छन्दशास्त्र)

स पु—१ मुख । (ह ना मा.)

२ रुद्र ।

३ मंगल ग्रह

४ शनि,

५ त्रिपुर-नामक राक्षस, त्रिपुरासुर ।

६ नदी का मोड ।

७ प्रथम गुरु के रागण का नाम (र. ज. प्र)

रू. भे.—वक्क वक्क, वाकौ, वक, वकनि, वकेण, वंक्रत, वक, वक्कर ।

वक्रकोटी—स. पु. — एक वस्त्र विशेष ।

उ०—घोट पट्ट, राजपट्ट, गजवडि, हंसवडि, बोरिआवडी, ऊमावडि, भूमावडि, पूमावडि, सिलहटी, कपूरीया, चउकपडीया, पोतिया, वक्रकोटां नागवटा***। —च स.

वक्रगति, वक्रगती—वि. [स वक्रगति] १ जिसकी गति तिरछी हो, टेढी चाल चलने वाला ।

२ जिसके आचार-विचार व व्यवहार सीधा-सादा न हो ।

३ विपरीत दशा में चलने वाला ।

४ कुटिल ।

स. पु.—१ सूर्य से पाचवे, छठे, सातवें व आठवें ग्रह ।

(ग्रह लाघव)

वि वि.—मंगल ३६ दिन, बुध २१ दिन वृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ वक्री होते हैं ।

२ मंगल ग्रह ।

३ सर्प, साप । (हं. ना. मा.)

रू. भे.—वक्रगत, वक्रगति ।

वक्रगामी—वि. [स. वक्रगामिन्] तिरछी चाल चलने वाला ।

रू. भे.—वक्रगामी ।

वक्रग्रीव—स. पु. [स वक्रग्रीव] ऊट ।

वक्रता—स. पु. [स] १ वक्र होने की दशा या अवस्था ।

२ टेढ़ापन, तिरछापन ।

३ साहित्य रचना की एक शैली जो रचना को सौन्दर्य व उत्कृष्टता प्रदान करती है ।

रू. भे.—वक्रकत्तण ।

वक्रति—देखो 'विक्रति' (रू. भे.)

उ०—इम करतइ कूबड हवु भूप, कालु कुछित प्रतिहि करूप ।

दँवगति आहवी सपनी, एवली वक्रति किहा थी ऊपनी ।

—नळ दवदती रास

वक्रतुड—स. पु. [स वक्रतुण्ड] १ गणेश ।

२ तोता ।

रू. भे.—वक्रतुड, विक्रतड, विक्रतुड ।

वक्रवस्त्र—स. पु. [स वक्रवस्त्र] सूअर, शूकर, बराह ।

रू. भे.—वक्रवस्त्र ।

वक्रदृष्टि—वि [स वक्रदृष्टि] १ जिसकी दृष्टि में दुष्टता भरी हो, जिसकी दृष्टि पढ़ने पर कुछ अमंगल होता हो ।

२ जिसकी दृष्टि में क्रोध भरा हो ।

३ मन्द, दृष्टि वाला ।

४ ईपल्लु, डाही ।

स. स्त्री—१ टेढी दृष्टि, तिरछी नजर ।

२ क्रोध पूर्ण नजर ।

३ मन्द दृष्टि ।

४ ऐंजाताना ।

रू. भे.—वक्रदरस्टी, वक्रदस्टी ।

वक्रपुच्छ—स. पु. [स.] कुत्ता, दवान ।

रू. भे.—वक्रपुच्छ ।

वक्रांग—वि—जिसका अंग सीधा न हो, बूज्ड वाला ।

स. पु.—१ हंस ।

२ वक्रवाक, वक्रवा ।

३ सर्प, साप ।

रू. भे.—वक्रांग ।

वक्री—वि [स वक्रिन] १ अपना मार्ग छोड़ कर विपरीत दिशा में चलने वाला । (ग्रह)

२ टेढ़े मेढ़े अंगो वाला ।

३ क्रोधी ।

४ विपरीत, उल्टा ।

रू. भे.—वक्री, वकरी,

वक्रोक्ति—स. स्त्री [स] १ एक काव्यालंकार जिसमें काकुत्स्थ से किसी वाक्य या वात का प्रारंभ और अर्थ निवृत्तता है ।

२ चमत्कार पूर्ण कथन ।

३ काकूक्ति ।

रू. भे.—वक्रोक्ति, वक्रोगति ।

वक्रोदर—देखो 'अक्रोदर' (रू. भे.)

वक्ष—स. पु. [स. वक्षम्] १ पेट और गले के बीच का भाग, छाती । सीना ।

२ स्त्रियों के कुच, स्तन, चूचियों व पुरुषों के स्तन चिन्ह ।

रू. भे.—वक्ष, बक्ष, वक्षल, बक्ष, वक्ष, वक्ष, वक्ष, वक्ष ।

वक्षस्थल—स. पु. [स] १ छाती, सीना, उर-स्थल ।

उ०—अरु आदमी तरवारा वाय मा'राज नूँ छेई किया तो हेई जादू-राय मूषी लाघी वा कटारी सूघी हाथ मा'राज री जादूराय री वक्षस्थल मायां सू काठियो । —द दा.

२ कुच, स्तन, चूचिया ।

रू. भे.—वक्षस्थल, वक्षस्थल ।

वक्षोज—स. पु. [स वक्षोज] १ छाती, सीना ।

२ कुच, स्तन, चूचिया ।

रू. भे.—वक्षोज

वक्षमाण—वि [स वक्षमाण] १ जो कहने योग्य हो, वक्तव्य, वर्यानीय २ जो कहा जा रहा हो ।

बल—१ देगो 'बिस' (रु. भे.)

उ०—अह् दाटक थका कमण भण भेरै, जेरै कुण हासै बल जाण । फाळ तरौ टेरै जायै कुण, फेरै कुण धारा फुगमाण ।

—पसजी तिडियो

२ देगो 'बग' (रु. भे.)

उ०—अरु बीकानेर सूं मूघटै रघनाथ वा चोरटिये मान जगत्पसिप बिहारीदास जी नूं हसी निखावट करी धी कं मोहनी यान् मारण नूं आहूणी सूं हुकम लेप नै भायो है, सूं पे घणा संडा रहज्यो, तथा धारो बल लागै तो मुहने नूं धग्म-भरम देय नं चूक कर मारज्यो ।

—द दा.

३ देगो 'बल' (रु. भे.)

बलबी—देगो 'बलबी' (रु. भे.)

बलत—१ देगो 'बल' (रु. भे.)

उ०—१ पय बलत निग्गाज ताज गुनराह मोहद, गोजा गान वजीर मलिज उमरै मन मोहद ।

—ब म

उ०—२ फोज तह्दरगान री, आधी ऊं मू । बलत यगो रिण नदरा, नरा गरा भुग नूर ।

—रा रु

२ देगो 'बगत्' (रु. भे.)

उ०—ताहरा पागनी ना लोर लोटी गी मा नु गमभावण लागी हिवे ती शीजी परखीज्यो कीर्द नही । दण रा बलत मे इमटी होज लिगीयो । —कालबी जोइयो नै तीही मरळ गे वात ।

बलतबत—देगो 'बलतबत' (रु. रु.)

उ०—बिसम वाणि मिसाद, बिसमग्म अगि न बाधद, बलतबत बर बिबुध बांन दिन प्रति बाधद ।

—ऐ जै. का. म

बलतबदाळ—देगो 'बलतबदाळ' (रु. भे.)

उ०—तरु केहू मकमगाय मांगळराय तुगेग । भूपाले भूपाल भाटीवटी बलतबदाळ ।

—नंणसी

बलतबापरी—देगो 'बलतबापरी' (रु. भे.)

उ०—'बलता' बलतबापरा, तं मारपी 'अजमाळ' । हिंदवाणी री वादना, तुगकाणी गे फाळ ।

—कविगजा करणीदान

बलतबिन्द—देगो 'बलतबिन्द' (रु. भे.)

बलतसर—कि वि —उपयुक्त समय पर, टीक समय पर ।

उ०—मोटा ताजा नै टील सारु यसाई री गोरसी भौळाव । पोसगिया पीसै राषणिया राषे बलतसर न्हावी घोवी अर तिअ्या गीय री वासा सावै ।

—दसदोग

बलता—देगो 'बलता' (रु. भे.)

बलतावर—देगो 'बलतावर' (रु. भे.)

उ०—धग्म्यांन पिगु तजि धरै, महु बलतावर सीर । इद्र चेदा

नै अरगिणी, भयो कोणिक री भीर ।

—ध व. प्र.

बलतावरी—देगो 'बलतावरी' (रु. भे.)

बलतावर—देगो 'बलतावर' (रु. भे.)

उ०—बिद्याधर बड बलतावर महियान नै हो महिमा महिमाय ।

—ध. व. प्र

बलती—देगो 'बलती' (रु. भे.)

उ०—ताहरा राजा सो जैत अरज करण लागी, 'राज बदे माहे कोण गामी जु महाराज अतरा (नाराज) हुवा ?' तद राजा जैत नूं वहीयो" जू मै ती यान् सगळो ऊपर फीयो धी, तिकी तूं वाहर चर नै वाणीया री हण्णा बलती माल छोड भायो ।

—जैतमाल प्रमार री वात

बलतत—देगो 'बलतत' (रु. भे.)

बलत—१ देगो 'बकत्' (रु. भे.)

उ०—सपदा विहीण गीर कन्यका सतीगियो क, निसाभू मोखियो क सुधा नै घणी नगत् । राजियो विमत्र' री सनह रोकियो क, बिजा 'किमत्र' री विलोणियो बलत ।

—साहिबो मूग्ताणियो

२ देगो 'बक' (रु. भे.)

३ देगो 'बगत्' (रु. भे.)

बलमी—देगो 'बिसम' (रु. भे.)

उ०—जिय जायत पाग बिना जगमी । वनटा आज वार घण्ण बरमी ।

—पा प्र

बलर—देगो 'भग्यारी' (मह, रु. भे.)

उ०—जवाईटा मेरी गुदटां मे रोटी मार्ग, रे क लाटी मेरी ना चलै । सासूडी मै कलेवे का बलर भदा चू, ए क तेरी लाटी ले चलूं ।

—लो. गी.

बलसीस—देगो 'बकसीस' (रु. भे.)

उ०—बादसाह री मारी बलसीस श्रीर वीरमजी दिया सी सगळा आगे मेल्हिया ।

—ठाकुर जैतसी री वारता

बलसाण—देगो 'बगाण' (रु. भे.) (अ. मा, ह ना मा.) (उ र)

उ०—१ धण्ड बलाण किसु हिंद कीजइ, अभिनव सारद देवि । तेह तण्ड जे कउतिग वीनवउ, ते निसुण्ड सनेविइ ।

—हीराणद सूरी

उ०—२ भिगार मोट मै सजुत सुदगे बलाण ए । पयच आगुळी जु पाण, काम पच वाण ए ।

—गु रु. व.

उ०—३ सोल महस पणि सामटी, परण्या पुगस पुराण । तु हि गोकुल-गोलिणी, विनस्या-तण्ड बलाण ।

—मा का. प्र

उ०—४ मालव-देग विगोडिया, मारु किया बलाण । मारु सोहा-गिरा थई, मुंवरि सगुण भुजाण ।

—ढो मा.

उ०—५ ऐ प्रोहित दीदारु सखरा पण । अर वीण आछी वजावं । तद सहर माहै वखाण हुवी । —नैरासी

वखाणण—देखो 'वखाणण' (रू भे.)

वखाणणी, वखाणनी—देखो 'वखाणणी, वखाणनी' (रू भे) (उ. र.)

उ०—१ भडा मंत्रिया जूथ भारा, सजे निज दरवार सारा । भला पाता जूथ भेळा, वखाणण पह जेण वेळा । —सू प्र.

उ०—२ पचविघ पाचू पच उभै पण, पिंड ताहूरें तरणा प्रकार । 'जैता' हरा वदीता जग मे, हारें नही वखाणणहार । —द. दा वखाणणहार, हारो (हारी), वखाणणियो—वि० ।

वखाणणियोडो, वखाणणियोडो, वखाणणियोडो—भू० का० कृ० ।

वखाणणियोडो, वखाणणियोडो—कर्म वा० ।

वखाणणसद—देखो 'व्याख्यानसद' (रू. भे)

वखाणणियोडो—देखो 'वखाणणियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वखाणणियोडो)

वखाणणिवू—वि. [स. व्याख्यातव्य] १ जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो । (उ र)

[स व्याखेय]—२ जिसकी व्याख्या होने को हो । (उ र)

३ व्याख्या करने योग्य (उ र)

वखाणणु—देखो 'वखाणण' (रू भे)

उ०—ऊपनु केवल नाणु सामीय ए नेमि जियोसरह ए । सामली सामि वखाणणु विरता ए सावयवतु धरइ ए । —प. प च

वखाणणो—देखो 'वखाणण' (रू भे)

उ०—तो चौथे धन धन छै जिके राजा ईसरादिक जाणी रे । ली-वीर समीपे जाय नै, नित नित का सुणै वखाणणो रं । —जय वाणी

वखाणणत—देखो 'विखाणणत' (रू भे)

उ०—एकरसूं मोटे नप आगे, पण तज वखो दियो अण पार । जण दन तो 'गोपळ' जीवाया, लोघो वखो वखाणणत लार । —ठाकुर सवाईसिंह रो गीत

वखारो—देखो 'भखारो' (रू भे)

उ०—चोर नै इण बात रो सुराग हो के वखारो मे रूई पडो हे । —फुलवाडी

वखिस्थळ—देखो 'वखिस्थळ' (रू भे.)

उ०—महावर कष पचाइन मड, वखिस्थळ जड हरावळि वड । —रामरासो

वखेडो—देखो 'वखेडो' (रू भे)

उ० वखेडिया रो टोळी घर रं सामी हाको करण लागी-काढी तुरक नै बारं, काढी तुरक-नै बारं । —वरसगाठ

वखे—देखो 'पखे' (रू. भे.)

उ०—तठै ऐक महावेल खाडी । तकरा रो पाखती सेखा वनर असे नाम नगर रं वखे आय नीसरियो ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल रो वात

वखेर—देखो 'विखेर' (रू. भे.)

वखेरणी, वखेरनी—देखो 'विखेरणी, विखेरनी' (रू. भे)

उ०—१ 'अजन' नमी तप तेज राजा 'गजन' अमनमा, चीत ही दुधरम रीत चाही । पत जका राखती पातसाही पगा । सुत जका वखेरी पातसाही । —तेजसी खिडियो

उ०—२ म्है तो आगण भूग वखेरस्यां, म्हारा साजन रा कोडा । चोखी रं मादळ घुळ रखी, रग रातो रं मादळियो, थारी रं सबद सुवावणी । —लो गी

वखेरियोडो—देखो 'विखेरियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वखेरियोडो)

वखो—देखो 'विखो' (रू भे)

उ०—१ मरणी हुवं जके पग माडो, ऊबरणी हुवं जिके अखी । दिल धवरीज मौन सूं डरपो, वळं कही किय भात वखो ।

—जादूरामजी आढी

उ० - २ राज जनमिया ईज हुता, तरं घरती माहै वखो हुवी ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल रो वात

उ०—३ महवेचा' वखो करता 'मधकर', मछर तरणा गढअवळी-माण । सोहडा गलै न ऊतरं सलहा, पमगा न उत्तरं पलाण ।

—माघीसिंह महेचा रो गीत

वखत—देखो 'वक्त' (रू भे)

वखतर—देखो 'वखतर' (रू. भे)

उ०—तिका सस्त्र विद्या घोडा रो सवारी व वखतर पहरण रो विद्या सिखावं । —नी प्र

वग—१ देखो 'वाग' (रू भे)

उ०—कविता टुक सुण सुख अधिक, लीमुख हुकम सहत । पं जस अस वग भुक 'पता', रुक पग नीठ रहत ।

—जैतदान बारहठ

२ देखो 'वरग' (रू भे)

उ०—१ वगां वीचळं काढिया, हुड जिम पग भल्लं । ऊभी मेली साहवी, गढ गढ महल्लं । —कैसीदास गाडण

उ०—२ जिके घरती रा घणी पताल वासी भुयग नै अण रा घणी दीलतवत औ विन्है एकं वग हुता सु घरती रो पुड भेद नै विमरं पेठा । उठै रहण लाग । —रा सा स

वगड देखो 'वगड' (रू भे)

उ०—मीझालइ जल माहि सरि, उन्हालइ पचागि । वरमालइ वगटइ, वसइ कामकदला-काजि ।
—मा फा प्र.

वगडइ—देखो 'वगड' (रू भे)

वगडणी, वगडवी—देखो 'विगडणी, विगडवी' (रू भे)

वगडावत—म. पु [देवज] १ गोठण निवासी चाप नामक क्षत्रिय के बंज जो २५ विभिन्न जाति की कन्याओं में उत्पन्न हुए थे । ये बड़े धूरवीर और दानी थे ।

वि वि—चाप ने उक्त कन्याओं के साथ जंगल में गधर्व-विवाह कर लिया, जब यह बात प्रगट हुई तो कन्याओं के माता-पिता ने इनका चाप के साथ विवाह कर दिया । अन्त में इन कन्याओं की संख्या २५ थी परन्तु विवाह के लिये आये हुए प्रोहित ने एक कन्या को विवाह करने के उपनक्ष में मान लिया । इस प्रकार दोष चौबीस की मनाम वगडावत बन गई

रू भे—वगडावत, वघडावत ।

२ उनकी प्रशंसा में गाया जाने वाला लोक गीत ।

वि—बहादुर, वीर ।

वगट—म पु [म भूकुट] विग, मस्तक ।

वगट—देखो 'वगड' (रू भे)

वगणो, वगवो—१ देखो 'वगणो, वगवो' (रू भे)

२ देखो 'वाजणो, वाजवो' (रू भे)

वगणहार, हारी (हारी), वगणियो—वि० ।

वगिओढो, वगियोढो, वग्योढो—भू० का० कृ० ।

वगीजणी, वगीजवी—भाव था० ।

वगत—१ देखो 'वक्त' (रू भे)

उ०—१ राजाजी तो मूर्ख रं दृष्टान्त की बात जीवता जीवता पूरा आती आयिया ह । मेवट मूर्ख नै ती वगत मार्ये डडखो ही इज ।
—फुलवाडी

उ०—२ कवर नै ऐडी अणुचीती जीत नी आम नी ही । वो आणती ही के उणने पाधरी सणक करणा मे की वगत लागला ।
—फुलवाडी

२ देखो 'वगत' (रू भे)

वगत—देखो 'वगत' (रू भे)

उ०—वाही राण प्रतापसी, वगत में वरछीह । जाणक भीगर-जाळ में, मुँह काढ्यो मच्छीह ।
—अज्ञात

वगतरियो, वगतरी—१ देखो 'वगतरियो' (रू भे)

उ०—धीरज रण म्हारा घणी, ओठ लयू असमान । वगतरिया पोर्वे वरम, पीपळ हदा पांन ।
—पा प्र.

२ देखो 'वगत' (अल्पा, रू भे)

वगता—देखो 'वकता' (रू भे) (म. मा)

२ देखो 'वक्त' (रू भे)

वगतावर—देखो 'वगतावर'

वगतो—म पु—लूटा गया माल या धन दौलत ।

उ०—१ ताहरा वाणीये पुकार घाती । ताहरां नरो राजा कने वेठी हुती । सु राजा कहीयो 'एवर करो कोण पुकारे ? ताहरा नरो गहण लागी, 'राज जैत वाहर चढियो हुती । एवर भगाव छू ।' ताहरा वाणीये कहीयो । राज जैन चाप न चढियो, रजपूत चढीया हुंता । तिका म्हारो वगतो माल छोड ने प्राया ।
—जैत पुमार नी वात

उ०—२ राजा देटे वारट नू पूछजे छै । ताहरा राज देटे नू तुलायो । सु देढो महाराज रे हजर प्राय कहीयो, 'जु महाराज मै ती इहा नू तहीयो, वगतो माल दीलो मता करी ।
—जैन पुमार री वात

रू भे—वगती ।

वगर—१ देखो 'वगर' (रू भे)

उ०—दूभर पेट भरण नु दन दन दस रडवटसा वडसा देस वदेम । पागा वगर वीया पारेवा, जाता नुरग वीया 'जगतेम' ।
—जवानजी आढी

२ देखो 'वगत' (रू भे)

उ०—मावरी लगन लगापत मे मा, फाहू कछु काम वहाने कोई, अपने वगर मे आवत मे मा ।
—रसीलै राज रा गीत

म पु—एक देस विशेष जहा के ऊट बढिया होते है ।

वगर—देखो 'वगर' (रू भे)

उ०—तू ऊठ कुण-कुण दिमावर रा छै ? काछी वोदला, छपरी, जालोरी, वगर वलोची, सियवाढिया, और ही अनेक जात-भात रा ऊठ छै ।
—रा सा. स

वगळ, वगल—देखो 'वगल' (रू भे)

उ०—छुरी वगल में हाथि गेडियो, छाने वेसर' गळी छोडियो
—अनुभववाणी

वगलवदी, वगलवधी—देखो 'वगलवधी' (रू भे.)

वगळाणा—देखो 'वगळाणा' (रू भे.) (वां. दा. न्यात)

वगलामुखी—देखो 'वगलामुखी' (रू भे)

वगसणी, वगसवी—१ देखो 'विकसणी, विकसवी' (रू भे.)

उ०—पीहण वगसीया गहक करे पण, पागरीया वन नीला पान । राव 'पीथल' वाळी गर रुडी, आवूडी लागी असमान ।
—आवू परवत री गीत

२ देखो 'वकसणी, वकसवी' (रू भे)

वगसणहार, हारी (हारी), वगसणिया—वि० ।

वगसिओडी, वगसियोडी, वगस्योडी—भू० का० कृ० ।

वगसीजणी, वगसीजवी—कर्म वा० ।

वगसर—देखो 'वगसर' (रू भे)

वगसरिया—देखो 'वगसरिया' (रू भे)

वगसरियो—१ देखो 'वगसरियो' (रू भे)

२ देखो 'वगसर' (अल्पा, रू भे)

वगसाणी, वगसावी—देखो 'वकसाणी, वकसावी (रू भे)

वगसियोडी—१ देखो 'वकसियोडी' (रू भे)

२ देखो 'वकसियोडी' (रू भे)

(स्त्री. वगसियोडी)

वगसी—देखो 'वकसी' (रू भे)

उ०—तद पातसाह जी वगसी नू फुरमायो के इसका रोजगार चढया है जितना लेखी कर चुकाय देवी । पीछे वगसी यांसू लेखी कियो जिएमे तलब रा रिपिया पनरा लाए हुवा । —द दा

वगहरा—देखो 'वगहर' (रू भे)

उ०—सो बडा ही गाढ सू केसरीसिंहजी नै नागोर मेलियो । हजार तीस री पटी, सावा ओडीट वगहरा लिख दिया अर रिपिया दस थाळी रा कर दिया । —अमरनिह गजसिंहोत री बात

वगाणी, वगावी—१ देखो 'वगाणी, वगावी' (रू भे)

उ०—१ इतरा मे भीतर सू माई-मा पधारया । हाथ पकड धुजी ने परा रे वगाया । —लो गी

उ०—२ छोटा छोटा गुलाबी होठ फरकण लागा । पग पटकन एक काकरी उठाई । पछे उए कागा रं साम्ही वगाई । —फुलवाडी
२ देखो 'वगाणी, वगावी' (रू भे)

वगायोडी—१ देखो 'वगायोडी' (रू भे)

२ देखो 'वजायोडी' (रू भे)

(स्त्री वगायोडी)

वगार—देखो 'वघार' (रू भे)

वगारणी, वगारवी—देखो 'वघारणी, वघारवी' (रू भे)

वगारियोडी—देखो 'वघारियोडी' (रू भे)

(स्त्री वगारियोडी)

वगावणी, वगाववी—१ देखो 'वगाणी, वगावी' (रू भे.)

उ०—बाप ती घडी एक ई बात कैवती के वै उएने छोडने कठे ई नी जावे । थोडा दिना ताई कमाई लारे धूळ वगावे ।

—फुलवाडी

२ देखो 'वगावणी, वगाववी' (रू भे)

वगावत—देखो 'वगावत' (रू भे)

वगावियोडी - १ देखो 'वगायोडी' (रू भे)

२ देखो 'वजायोडी' (रू भे)

(स्त्री वगावियोडी)

वगि—देखो 'वगर' (रू भे)

उ०—पेसे कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक वगि ।
एण कवण सुभ क्रम आचरता, जाणियं वेलि जपति जग ।

—वेलि

वगियोडी—१ देखो 'वजियोडी' (रू भे.)

२ देखो 'वाजियोडी' (रू भे)

(स्त्री वगियोडी)

वगीची—देखो 'वगीची' (अल्पा., रू भे)

वगीचो—देखो 'वगीचो' (रू भे.)

उ०—गदाळ सहर गढ कोट बाजार पीळि पगार वाग बावडी
वगीचा कूआ सगरां री बडा पीपळा री छिबि सहर री पाखती
विराजिन रही छे । —रा सा स.

वगूतणी, वगूतवी—देखो 'विगूतणी, विगूतवी' (रू भे)

उ०—बुधे तमारी ए अति वलिया वाघव बहु वगूता । नहि तरे चूत
रमता तमी तिवारा अमी पास हूता —नलाग्यान

वगूतियोडी—देखो 'विगूतियोडी' (रू भे)

वगेर—देखो 'वगैर' (रू भे)

वगेरे, वगेरं—देखो 'वगैरह' (रू भे)

उ०—पछे साचोर ऊपर माडवा री तथा वोगरा पातसा वगेरे केई
राज रया । —मारवाड री ख्यात

वगेलू—१ देखो 'वघेल' (रू भे)

२ देखो 'वाघेल' (रू भे.)

वगेसरी—देखो 'वागीम्वरी' (रू भे)

उ०—भरात स्त्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खंमायची पटगय,
वगेसरी विहगय । —रा रू

वगैर—देखो 'वगैर' (रू भे)

वगैरह—अन्य [फा वगैर] १ आदि इत्यादि ।

२ इसी प्रकार ।

३ सम्बन्धित ।

४ शेष ।

५ प्रभृति ।

६ प्रमुख ।

रू भे—बगहरा, बगहरा, बगेरै ।

बगोरणी, बगोरणी—वि स. [म विकुर्वम्] १ प्रघ्वजन करना, व्यक्त करना ।

उ०—गजेंद्र कुम्भरयन मीस डोलर, कोड हीडोला जिम मीस डोलर, तुरग मातंग ति नीद्र घोरई, न पक्षीया नीद्रलडी बगोरई ।
—सालिसूरि

० प्रगट करना, बताना ।

बगोरणहार, हारो (हारो), बगोरणियो—वि० ।

बगोरिओडो, बगोरियोडो, बगोरघोडो—भू० का० कृ० ।

बगोरीजणी, बगोरीजवो—कर्म वा० ।

बगोरणी, बगोरणी—रू० भे० ।

बग—१ देखो 'बग्' (रू भे)

उ०—१ धार्य हो जागावसो, भलो ज होमी बग । कै मांगिया दग्मावियां, कै उच्छ्रियां गगि । —हा भ.

उ०—२ माह्वि, म्हा का वापकद, छड गरहा कठ बग । जड करहड मोटड ह्वड, गदह डीजड दग । —डो मा

२ देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—१ प्राधारि बग प्रायासि लग । गुरिसाणि नेडि गिविया लडग । —रा ज नी

उ०—२ देरे बग तुरग री, तोने गग गरग । रिण पग उमगे लग, 'रिणायर' गयगग । —रा. रू

बगणी, बगणी—१ देखो 'बजणी, बजणी' (रू भे)

२ देखो 'बाजणी, बाजणी' (रू भे)

उ०—१ बग्मा भट मेवाट रा नीमोया ग्रह मार । ग्राहू दिस बळ सल्लळी, बळानळी मसार । —रा रू

उ०—२ तें जोघा छळ कल्लियो, घणी 'बजो' मिर धार । कळ सागं जाणं उवण, विण बग्गो तरवार । —रा रू

उ०—३ दण दिमिया अजमेर सुं, आयो तहवरखान । दण दिमि बग्गा मिघुवा, भुज लग्गा असमान । —रा रू

उ०—४ लग्गो मूर परकनणी, बग्गो धारा रीठ । —रा रू

३ देखो 'भागणी, भागणी' (रू भे)

बगणहार, हारो (हारो), बगणियो—वि० ।

बगिओडो, बगियोडो, बगघोडो—भू० का० कृ० ।

बगोरीजणी, बगोरीजवो—भाव वा० ।

बगय—देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—ऊपट बगय गाजवा लगय । गोम गयगगय, घृजिया नगय । —गु. रू व

बगियोडो—१ देखो 'बजियोडो' (रू भे)

२ देखो 'बाजियोडो' (रू भे)

३ देखो 'भागियोडो' (रू भे)

(स्त्री बगियोडो)

बग—१ देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—बयण गाढा बउ चड, मूठी गाढा लग । हाजरती दरवार में विरता वीयं बग । —गु. रू व

२ देखो 'बाग' (रू भे)

बग्रणी, बग्रणी—देखो 'बिग्रणी, बिग्रणी' (रू भे)

उ०—कहीया मुल बचन घणा अनहार, बग्रणीया लळ मतावण । नर ममजति तरं नरनहीया, रहीया 'चापा' तरं रण ।

—गोपाळदास चापावत री गीत

बग्रहियोडो—देखो 'बिग्रहियोडो' (रू भे)

(स्त्री बग्रहियोडो)

बघवर—देखो 'बाघवर' (रू भे)

उ०—बघवर जेम गिनं विकराळ । मटं गळिमाळ जिका रुडमाळ । —सू. प्र

बघवाय, बघवाय, बघवाय, बघवाह—देखो 'बघवाय' (रू भे)

उ०—१ विध बाप जिम बघवाय, पलटत गज पछ पाव ।

—सू. प्र

उ०—२ वाप करं नह कोट वन, वाघ करं नह वाड । वाघां रा बघवाय सुं, भिळं अगजी भाट । —बा. दा

उ०—३ दळ गयंद टाळा दिव्यं, वाघ तणी बघवाह । हील पडे प्रगणा हिये, गहन 'पती' गजगाह । —किसोरदान वारहठ

बघार—देखो 'बघार' (रू भे)

उ०—मोठ मटर चूला फली रे लाल, छमकारचा देड बघार । मुंल फूल फल पानडा रे लाल, अयाणा सुयकार । —प. च ची

बघारणी, बघारणी—देखो 'बघारणी, बघारणी' (रू भे)

उ०—तूररि नी दालि ना साक, उडवा ना साक, चिणा ना साक, राईता मिरिता ग्याटा यारा मीठा गल्या तीखा तमतमा तल्या बघारणां छमकारचा पुगारचा । —व स.

बघारणहार, हारो (हारो), बघारणियो—वि० ।

बघारिओडो, बघारियोडो, बघारघोडो—भू० का० कृ० ।

बघारीजणी, बघारीजवो—कर्म वा० ।

बघारियोडो—देखो 'बघारियोडो' (रू भे)

(स्त्री बघारियोडो)

बघूल—देखो 'बघूली' (मह रू भे)

बघूली—देखो 'बघूली' (रू भे)

घघेरी—देखो 'घघेरी' (रू. भे.)

उ०—जगल माहै रमता-रमता गया । ताहरा एक घघेरी
दीठी । —नैणसी

घघेल—१ देखो 'घघेल' (रू. भे.)

२ देखो 'घघेल' (रू. भे.)

घघेलखड—देखो 'घघेलखड' (रू. भे.)

घघ—१ देखो 'घघ' (रू. भे.)

उ०—घघ पीपल जाँव विरख, नीवू नीव पलास । आसूपाळा अति
सरस, आधो फरै अकास । —गज उद्धार

२ देखो 'घघी' (मह, रू. भे.)

उ०—हीय हूसीयार हथीयार गहि ऊठिया, भीर घघ वीर रियाधीर
रोसइ । —प च ची

घघछणी, घघछणी—रूि स—१ काटना, कतरना ।

उ०—आण पाखर भरण हजारी तडछिया, रोळ भुज घघछिया
रचण राडा । कर मछर घाढवी लियण वित कडछिया, घघचिया
'चड रज' भुजा घाडा । —रावत हम्मीरसिंह चुडावत रो गीत

घघणी, घघवी—देखो 'घघणी, घघवी' (रू. भे.)

उ०—१ डाढाळी अर भूडण चाचरा उठाय अठी उठी जोयी के
चाणचक डाढाळी रै लिलाड मे तच करती रो एक तीर घघयी ।

अर भूडण रै डावै पसवाडै सूसाड करती गोळी घघयी ।—फुलवाडी

उ०—२ गोगादेजी आप सिनान करण नू पंडा । पण वानर तेजी
तळाव माहै बडे नही । —नैणसी

घघणहार, हारी (हारी), घघणियों—वि० ।

घघिओडी, घघियोडी, घघयोडी—भू० का० कृ० ।

घघीजणी, घघीजवी—भाव वा० ।

घघवी—देखो 'घघवी' (रू. भे.)

घघली—देखो 'घघ' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—घेत में घघनीरडिया आयोडी, गहर टम्मर विहयोडी, जाणो,
घघला ऊमा । —रातवासी

घघवड—देखो 'घघवड' (रू. भे.)

उ०—तटफड सायक अति सत्राड, घघवड कालज घाव घराड ।
चडचट जोगगियां रतचोस, जुडे भिड 'धूहड' वाघ जोस ।
—गौ ह.

घघवडणी, घघवडवी—देखो 'घघवडणी, घघवडवी' (रू. भे.)

उ०—१ भडभडे के लडयडे भारथ, अडे के अखडेत । घघवडे के
हडहडे वीजळ, जट के जरदेत । —र ज प्र

उ०—२ बूर पडि जवूर विहु घघ, भुरज वीछडि पटै रवड भड ।
विरण धरि अड सुहड समवड घघवडे पिड चार । —रा रू.

घघवडियोडी—देखो 'घघवडियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री घघवडियोडी)

घघवा—१ देखो 'घघवा' (रू. भे.)

घघवाअगन, घघवाअनळ, घघवाग, घघवाग, घघवागि, घघवागि, घघवानळ,

घघवानल—देखो 'घघवानळ' (रू. भे.)

उ०—१ जडी असमर समर कवर 'सुवमान' ज्या, पडी घघवाअनळ
सीस पितणा । —महाराजा सुनमानसिंध हाडा रो गीत

उ०—२ सीर आग सपरस्स, किना घघवाग अकारी । माग हूत
सामद्र, घ्याग वरतण उर धारी । —रा रू

उ०—३ घघ प्रचड 'वखतेस' कियो कोडड कुमकरै । ओप वदन
ऊभरै, रूप घघवाग निरखै । ज्वाळाकार खतग, कीघ गुरण सग
तमकुं । प्रळवत सिव चकख, जाणि अमरकख भभकुं ।

—रा रू

उ०—४ मुखि 'माघव-माघव' जपइ, नयणै नीर प्रवाह । टक
नमइ नही टलवळइ, घटि घघवानळ दाह । —मा का प्र

घघवामुस—देखो 'घघवामुस' (रू. भे.) (अ मा.)

घघवाय—स. पु —घट वृक्ष की उपशाखा ।

उ०—'मान' महावड साख कर, आसी किर घघवाय । साह सभा वन
में खडी, छाया सू जग छाया । —वा. दा.

घघसावित्रीव्रत—स पु [स वट सावित्री व्रत] स्त्रियो द्वारा किया जाने
वाला एक व्रत जो ज्येष्ठ शुक्ला पूर्णिमा को किया जाता है, इस
दिन वड की पूजा होती है ।

घघसी—स स्त्री [स वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति का प्रति वर्ष आने वाला
मृत्यु का दिन ।

२ उक्त दिन को किया जाने वाला भोजन आदि का विशेष आयोजन

३ देखो 'घघी' (रू. भे.)

घघाणी, घघावी—देखो 'घघाणी, घघावी' (रू. भे.)

घघारण—देखो 'घघारण' (रू. भे.)

उ०—चौगडदा कनात खची छै । तैण समे अचूकी रा सुखपाळ
आण लवाई । तैण समे हुजी घघारणां खवासी उठै हीज वरजी ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाढेल रो वात

घघि—१ देखो 'घघ' (रू. भे.)

२ देखो 'घघी' (रू. भे.)

घघियोडी—देखो 'घघियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री घघियोडी)

घघियो—देखो 'घघियो' (रू. भे.)

बड़ी—देखो 'बड़ी' (रू भे)

बड़ी—१ देखो 'बड़ी' (रू भे)

उ०—उपाठ सेल अबदल्ल पर, राम भुजाबल रोपियो । बीधियो जाए तलियो बड़ी, ज्यलियो तन भोपियो । —रा रू

२ देखो 'बड़ी' (रू.भे)

उ०—रूटा रूडा उपदेत दे दे बडा बटा भूप, कीषा, धम्म, रूप, खडा तडा मेव पाय । —घ. व. प्र

बच—स पु [न वच्] १ वचन, वानय ।

स स्त्री.—२ मरस्थती, पारदा ।

[स. वचा] ३ भोपधि विशेष ।

रू भे—वच ।

४ देखो 'वच' (रू.भे)

५ देखो 'वीच' (रू.भे)

उ०—३ रभ मनवछन, वरि सुर घान बच, एळा मर गुजस द्य कडा भडियो । —माहसिह भाटी रो गीत

६ देखो 'वचन' (रू. भे)

वचकटा—स स्त्री [न वच पला] पढने का ढग या पला, तरीका ।

वचण—देखो 'विचणार' (रू भे)

उ०—१ धन्त्री परण राजा रो राण्या मू धनेक प्रमोय धाणु लगाए जाए । हेत धणी बाधो । या परण महावीर वचखण एम करता सांगणी रो दोहाणी प्रावियो ।

—परयाणसिध नगराजोत वाटेल रो वात

उ०—२ ओहदी धोर वचखण, महा चतर धामर दौकियो

—कल्याणसिध नागराजोत वाटेल रो वात

वचणी, वचनी—देखो 'वचणी, वचनी' (रू. भे)

उ०—१ मर सबळा धाणं निवळ, नीर धकं वानीर । धाय धकं प्रण जाय वच, नली नमण गुण भीर । —या दा

उ०—२ पूर लियो श्री चोतरफ, केयो वयण कहत । वाध केम छिपियो वचं, रुपिया धरम रहंत । —या दा

उ०—३ नारिन को पुरमा, चतर न मुरता, वेद न च्यारि वचंदा है । —अनुभववाणी

वचणहार, हारी, (हारी), वचणियो—वि० ।

वचिप्रोडी, वचियोडी, वच्योडी—भू० का० कृ० ।

वचोजणी, वचोजयो—कर्म वा० ।

वचत—१ देखो 'विचित्र' (रू भे)

उ०—पर धाफु नयारी पकत, भोताहळ वोह मत । धीरम ठग वाळा बफट, वाका वडा वचत ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाटेल रो वात

२ देखो 'वचत' (रू भे)

वचत्र—देखो 'विचित्र' (रू. भे)

उ०—वारध फुण धार्ध राधव वण, धरा सेस वण कवण धरं । धीकावत पाछे वचत्रा रा, कमण दूसरी तडळ करं ।

—तेजसी गिडियो

वचन—स. पु. [स.] १ बोलने की क्रिया या भाव, उच्चारण ।

२ मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाणी, वाक्य ।

उ०—१ कदाचित पाणी भाहि पावारा तरड, कदाचित मेर धूलिका चलड, कदाचित प्रहस्पति वचन तु स्कलड कदाचित सिलातलि ऊपरि कमल विकास लहड । —व. स

उ०—२ वैरी रा भीठा वचन, फळ भीठा किपाक । वे ग्याधा वे मानिया, हुवा फतात सुराक । —वा दा.

३. वही हुई बात, उक्ति, कथन ।

उ०—सामलि एहवा वचन कुमार, रागातुर हूवी तिरणवार ।

—वि कु.

४ प्रतिज्ञा या प्रण के रूप में दृढता पूर्वक कही हुई बात, वादा, प्रण ।

मुहा —१ वचन तोडणी = प्रण को तोड देना, वादे के अनुसार न रहना । २ वचन देणी=किसी के वचनी में वधजाना, वचन बढ होना, वादा करना, प्रतिज्ञा करना । ३ वचन भग करणी=देखो 'वचन तोडणी' ४ वचन राखणी=प्रतिज्ञा पूरी करना, दिये वचन निभाना, वादा पूरा करना । ५ वचन हारणी=प्रतीज्ञा पूरी करने में असमर्थ रहना । वादा न निभाना, वचन विमुख होना ।

५ धोपणा ।

६ उपदेश, निर्देश, मार्ग दर्शन ।

उ०—सील संतोस दया सत भक्ती, स्वधरम ग्यान वैरागी । सत्वगुण का पायक सब सार्य, गुरु वचनां का पागी ।

—श्री सुखरामजी महाराज

७ आदेश, आज्ञा ।

८ सलाह, परामर्श ।

९ वरान, वयान, उल्लेख ।

१० अभिव्यक्ति ।

११ पुनरावृत्ति ।

१२ वादधास्त्र में शब्द के रूप में वह विधान जिसके द्वारा एकत्त या अनेकत्व का बोध होता है ।

१३ नियम ।

१४ सरस्वती ।

१५ भाषा ।

२० भे — वच, वचन, वचान, वचण, वचन, वेंण, वेण, वैण, वैन, वेंग, वैन, वटण, वडन, वच, वचनि, वचन, वचन, वचण, वैण ।

छन्ना.—वचनटो, वचनटो ।

वचनका—देगो 'वचनिका' (२० भे) (द दा)

वचनकारी—वि. [म वचनकारिन्] १ वचन को मानने वाला ।

० चाशाकारी ।

वचनगुप्ति—मं स्त्री [म] वाणी म् मयम—जिममे वचन का निग्रह कर प्रयोजन, उचिा मय, तय्य य निर्दोष वचन का ही उच्चारण हो ।

(जैन)

उ०—गप कति मोमित लोम मद, क्रोधाग्नि वध्यापन पयपूर, मायागमन्यनी महरगपूर, मानगिरवरवलनदभोसि, त्यक्त पुत्रमित्र वचनगुप्तिवच, मनोगुप्ति वचनगुप्ति वचनगुप्ति प्रधान । —व. स.

वचापाटय—म.स्त्री. [मं. वचनपटुता] १ रत्नयो की चौमठ कलाओ मे से एक । (ग ग)

० बोलने की चतुराई, वाक्पटुता ।

वि [मं वचापटु] बोलने मे चतुर, प्रवीण ।

वचाप्रतिष्ठा—१ स्त्री [म. वचन+प्रतिष्ठा] वचनों की मर्यादा, कहे हुए वचनों की उपा, मर्यादा ।

उ०—प्राणि लोके, मृग नियम रामचंद्र, साहसि विक्रमादित्य, रत्नगमोसा वरुण, वचनप्रतिष्ठा मुचिष्ठर, धनुर्वेदि धरजुन, नवापचरणा मृगापीर, प्राण्यां धन्यपाल ।

—व स

वचापुट्ट—म प [म वचनपुट्ट] १ जवानी लडाई वाद-विवाद । वाग्पुट्ट

० वाग् वचनों मे से एक । (व. म)

वचाप्रयोग—वि [मं] सत्यामर भाषा वा उच्चारण करने की क्रिया या ढग । (जैन)

वचनप्रतिष्ठा—म स्त्री [म] यह पश्चीया नायिका जिमकी वात चीत मे लम्बे उच-वचि मे प्रेम लम्बि वा प्रगट होता ही ।

वचनविदग्धता, वचनविदग्धता—म स्त्री [म. वचाविदग्धता] बोलने की चतुराई, चरता ।

वचनविदग्धा—म स्त्री [म. वचनविदग्धा] १ पश्चीय नायिका जो धनमे वचन चतुराई मे साधक की प्रीति का साधन करती है ।

० मनुष्य भाषाओं का मंग-मोक्षिनी स्त्री ।

२० भे — वचा विदग्धा ।

वचनविदग्ध—वि [म वचनविदग्ध] यह महारता वा गिद-पुत्रय जिमने मृग व बोध मर्यादा मे ग गी है, वचा-गिदि प्राण्य महारता ।

स स्त्री — अपने वचने या बोल की सिद्धि ।

वचनात—स. स्त्री — राजा महाराजाओ द्वारा अपने छोटे को पत्र में लिखा जाने वाला शब्द ।

उ०—पछे महेशदासजी जाळोर पायी, गढपती हुवा जिणसूँ लिखा-वट भागै न रही । प्रयीराज रै मनसब धणौ हो जिण सूँ वचनात नही नै लिखावतू लिखीजती । —वा. दा ख्यात

वचनि—देगो 'वचन' (रु. भे)

उ०—चरण चारिहि हस हरावती । वचनि जिणसूँ जीती भारती ।

—सालि सूदि

वचनिका—स. स्त्री — १ गद्य और पद्य रचना का एक ढग विशेष ।

(२ वचनिका)

२ गद्य रचना में छोटे-छोटे युग्म रूप ।

३ कोई गद्य रचना ।

४ वृत्त-गयी नामक काव्य रचना का एक विधान । (२. रु)

५ चम्पू काव्य ।

रु. भे.—वचनका, वचनिका, वचनका ।

वचनीय—वि [स] १ कहने योग्य, वर्णन करने योग्य ।

२ प्रशमनीय ।

रु. भे —वचनीय ।

वचन — देगो 'वचन' (रु. भे)

उ०—१ सर्व 'मीम' वाका वचन तियार । 'वुमाणो' भाद्र जुद्ध सुँ नूँदकार । —गु रु वं.

उ०—२ वर विनद राय लिखिया वचन । वाचिया किया चख चोळ वचन । —वि स.

उ०—३ गादह द्राघ्यउ दग करि, सामू कहइ वचन । करहुउ ए पूडइ मनइ, गोउउ करइ यतन । —दो. मा.

उ०—४ भेइतिगो मुग ऊचरे, हैमतमिष वचन । मारी दुरजण मांग रा, कुण भाई कुण तन । —रा रु

वचा — देगो 'वाचा' (रु. भे)

उ०—वचा विराठ गिनाट वछ, वचळ भाद्रु चाडियो । 'पाल' कर कार समदां परं, कमध मूत नै काडियो । —वा प्र.

वचाइणी, वचाइयो—देगो 'वचाणी, वचायो' (रु. भे.)

उ०—जगवंत धोरगसात्रि जय, वेद कतेव वचाडि, वे छत्रपती वहुसिया, रवि दिन रादि । —वचनिका

वचाइण्टार हारी (हारी), वचाइणियो—वि० ।

वचाइणीही, वचाइयोही—भू० का० मृ० ।

वचाइणीजो, वचाइयोजो —मं व० ।

वचावियोडो—देखो 'वचायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वचावियोडो)

वचाणी, वचावी—देखो 'वचाणी, वचावी' (रू भे)

२०—तिएण नपरि जेसिगदे राउ, नवउ सणावइ तिहा सलाव ।
ते मणावता लिपि नीसरी, ते न वचाइ कुणहि सरी ।

—हीराणंद सूरि

२०—२ नेस वचाया कोनिया, पेस परे उप पाय । पाटण 'अजन'
पघानिया, अरि पागटं लगाय । —रा रू.

वचाणहार, हारी (हारी), वचाणियो—वि० ।

वचायोडो—भू० का० कृ० ।

वचाईजणी, वचाईजवी—कर्म वा० ।

वचायोडो—देखो 'वचायोडो' (रू भे)

(स्त्री वचायोडो)

वचार—देखो 'वचार' (रू भे)

२०—उहै मुदरि बहरणा, जासू वृड स वचार । मनुहरि गटि पळ
मेपळा, पग भंभर भग्णकार । —डो मा.

वचालं—देखो 'वचं' (रू. भे)

२०—अवमर नोय जेतना घाया, गोरी दळा वचालं गान । मेवाडे
गानी भोकळोयो, पोह महमद 'जसो' जग पात ।

—राणा वृभा री गीत

वचाव—देखो 'वचाव' (रू भे)

२०—पायका के हृमल्लं वांक पट्टं फून हृत्पू वा दाव । नजर वछेक
का हृप्रर अगूगा वचाव । हृणमत रूप जगजेठु नै भुजग दहूपर
दस्तताळ दिया । —सू प्र

वचावणी—वि —वचाने वाला, रखा करने वाला ।

२०—भुज दठ लीजे भंमणा, अघियावणा अनीत । विघ-विघ दास
वचावणा, नुय पावणा सजीत । —र ज प्र.

वचावणी, वचाववी—देखो 'वचाणी, वचावी' (रू. भे.)

२०—१ सप्रवट घरम सदा थां थोळं, श्री हृदवाण वचावी श्रीळं ।
—रा. रू

२०—२ आज न दीसं आपरी, प्राण वचावण हार । —पा प्र.

२०—३ सवता कुराण काजी तठे, अहम पुराण वचाविया ।
आसुग घरम मेटे 'अजे', सुरां घर्म दरसाविया । —सू प्र.

वचावणहार, हारी (हारी), वचावणियो—वि० ।

वचावियोडो वचावियोडो, वचावियोडो—भू० का० कृ० ।

वचावोजणी, वचावोजवी—कर्म वा० ।

वचावियोडो—देखो 'वचायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वचावियोडो)

वचिसण—देखो 'वचिसण' (रू भे)

२०—अनि वचिसण अम्नाय व्यापरिउ, करणवारनइ विसइ
कुसलीउ, वैरिजन अनाकलनीय, गुहिर गभीर । —व स

वचियोडो—देखो 'वचियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वचियोडो)

वचं—देखो 'वचं' (रू भे)

२०—अव म्नास वचं वाणस आछटी, कहूर 'पदम' घमजगर कर ।
'मुहण' मरण कीया मार हतै, एकाण पाय छट्टक यर ।

—सकर वारहठ

वचो—देखो 'वचो' (रू भे.)

वचंसी—वि [स. वचंस्विन्] किसी के छल कपट के बोल में न आने
वाला (जैन), प्रभावशाली वचन वाला ।

वचक—वि [स वाचक] लिगी हुई लिपावट को ठीक ढग से पढ़ कर
सुनाने वाला । वाचने वाला, पढ़ने वाला ।

रू. भे —वचक ।

वचणी, वचवी—क्रि स [स वच्, प्रा वच्] १ जाना, गमन करना,
यात्रा करना ।

२०—अट्टाअपमुह सवि नमीह तित्य जा धरि पहुचई । मणिवूडह
मित्तह भयणि राउ एकु परिहरीउ वचई । —प प च.

२ निर्वासित करना । होना ।

३ देखो 'वचणी, वचवी' (रू. भे.)

२०—आ सुणतां आलोचिया, 'सोनेगर' डुरोस । 'अजन' रहै,
सच्चे जतन, वच्चे मुरवर देस । —रा रू.

वचणहार, हारी (हारी), वचणियो—वि० ।

वचिओडो, वचियोडो, वच्योडो—भू० का० कृ० ।

वच्योजणी, वच्योजवी—कर्म वा० ।

वचन—देखो 'वचन' (रू. भे.)

२०—जेता बोल बोलै तेता दे सभाळ ली, वचने वचने दिए
द्रहू वाळी । —ता. द.

वचालइ—देखो 'वचं' (रू भे.)

२०—डोलइ करह विमासियउ, देखै वीस वसाळ । ऊचं थळइ ज
एकली, वचालइ एवाळ । —डो. मा

वचियोडो—भू का कृ. —१ गया हुआ, गमन किया हुआ, यात्रा किया
हुआ, २ निर्वासित ।

३ देखो 'वचियोडो' (रू भे.)

—(स्त्री. वचियोडो)

वच्छ—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

उ०—१ सदा मिल्ड विल स्याळ रं, वच्छ पुच्छ सुर चाम । मिल्ड
गया अराज बह, गज रद मोती-ग्राम —वां वा

उ०—२ तूं तो गंती है, वच्छी तो इया ही वचिमी-सुचियो दूध
बूप त्नी घर पास-भूम ग्या लेती । —वरस गांठ

उ०—३ वच्छा वत्सह तुम सणी, गिरुई रिद्धि समेठ ।
—स्त्रीपाल रास

२ देगो 'वटा' (रू भे)

उ०—रही प्रतच्छ रच्छनी, दुगच्छ गच्छ दच्छबनी । लगे विपच्छ
नच्छ वे, भुजाग वच्छ नच्छनी । ऊ का

वच्छा—देगो 'वत्स' (मल्पा, रू भे)

(स्त्री वच्छा, वच्छी, वच्छही)

वच्छाग वच्छनाम—देगो 'वत्सनाम' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ मुगट वच्छी मुमाग, ज बाधिया वच्छनाम । बदकसमी वेलारी
गंग बगमी रापारी । —गु रू व

उ०—२ अमरक अद् अला, सूरज रोळ रताल । वच्छनाम
वाकुभीया, भेदागारी भालि । —मा का प्र

वच्छर, वच्छरी—देगो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—नीपनठ नयर नादउदि वच्छरी ए पञ्चदहोत्तर ए ।
सदमयेपात्नीय मूत्र भाभिता ए भव अन्दि कपरया ए ।
—प प च

वच्छा, वच्छन—देगो 'वत्सल' (रू भे.)

उ०—१ नर रा दियग जगत रा वच्छल । नर रा रूप नमी
गुनाय । —र रू

उ०—२ जयत्र जयत्र जगदीश्वरी, धानदि धारत्रि । वकता स्रोता
वच्छती, गू राए तप-भाथि । —मा वा प्र

वच्छा—देगो 'वत्सला' (रू भे)

उ०—बमी ई प्रायती देग' र गाय हूर हूर वरती घर वै'री
धागियां में वरळता वच्छा घर वग्गा री मिलावट रा भाव साफ
प्रकट ह्या । — वरसगांठ

वच्छि—देगो 'वत्स' (रू. भे)

उ०—जीव जिना जिग देग्गी, कारि-जिना जिम मच्छि, पुग्ग जिना
जिन वरमिगी, मावू समनि वच्छि । —मा का प्र

वच्छा—१ देखो 'वत्स' (रू भे)

उ०—१ मग्गि मापन गोण वत्स तुं, वाम वदला वेग, धाई हणि
परि वपण्ड, मग्ग वरि परिदा वेग । —मा का प्र

उ०—२ वंजरी वळ पादि वृती, वई दागव पावि । मारू प्राण म
का—पूग्ग वत्स वरि वृग्गि । —रूग्गणि मगळ

उ०—३ खूप पराक्रम देखिने, विजयसेन राजान । तव धोल्या वछ
आपणो, प्रगटी रूप बलवान । —स्त्रीपाल रास

२ देखो 'वत्स' (रू भे)

उ०—उरध लिलाड नीर भव आखै, नाक कीर छिन्न न्यारी । दंत
भुजा वछ दीर धीर घर, उर तसवीर उतारी । —ऊ का.

३ देखो 'वत्स' (रू भे)

वच्छक—देखो 'वत्सक' (रू भे)

उ०—पीहती सुरग एम करि पीरिस, जगत विख्यात ब्रह्मवळ री
जस । त्रप जे सुत वरकिय कुळ नाइक, वच्छक वच्छ ते सुत वरदाइक ।
—सू. प्र.

वच्छी—देखो 'वत्स' (मल्पा, रू भे.)

(स्त्री वच्छी)

वच्छचोर—स पु [स वत्स=वच्छा+चोर] ब्रह्मा । (डि नां मा)
रू भे.—वच्छचोर,

वच्छवारस—स. स्त्री [सं वत्स-द्वादशी] भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की
द्वादशी जिस दिन स्त्रियें वछे सहित गाय की पूजा करती हैं ।
वि वि इस दिन प्राय मोठ व वाजरी का खाना ही खाया जाता है
गेहूँ का नहीं ।

रू भे—वच्छवारस ।

वच्छर—देखो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—बोल्या हिव वच्छर पूरा चोपन लाख सामी मुनि सुव्रत हूधा
सूत्रे माव । —घ. व प्र.

वच्छराज—देखो 'वत्सराज' (रू भे.)

वच्छरि - देखो 'वत्सर' (रू भे)

उ०—तेरह नउया एम जाणि जिण पउम गणीसक, लद्ध नाम
जिनलवद्ध सूरि चहदय सय वच्छरि । —ऐ. जै का सं.

वच्छळ—देखो 'वत्सळ' (रू. भे)

उ०—भगत वच्छळ ब्रद ताहरी, सव के सिरजनहार, सकट भेटो
सामजी, अबणा सुणी पुकार । —गज उद्धार

वच्छाणी, वच्छावी—देखो 'विच्छाणी, विच्छावी' (रू भे)

उ०—भासाढ़ उमय्या मेह, गया पयि आपणि मेह । हु पणि जोउ
प्रियु वाट, तांति वच्छाळ ग्याट । —स कु.

वच्छाणहार, हारी (हारी), वच्छाणियो—वि० ।

वच्छायोड़ी—भू० का० कु० ।

वच्छाईजणी, वच्छाईजघी—कर्म वा० ।

वच्छायत—देखो 'विच्छायत' (रू भे.)

वच्छायोड़ी—देखो 'विच्छायोड़ी' (रू भे)

(स्त्री वद्यायोडी)

वद्यावर्गो, वद्यावर्गी—देवो 'विद्याणी, विद्यावी' (रू भे.)

वद्यावर्णहार, हारी (हारी), वद्यावर्णयी—वि० ।

वद्याविप्रोडो, वद्याविप्रोडो, वद्याव्योडो भू० का० कृ० ।

वद्यावीजणो, वद्यावीजवी—कर्म वा० ।

वद्यावत—देवो विद्यावत (रू भे)

वद्याविप्रोडो—देवो 'विद्यावोटी' (रू भे)

(स्त्री वद्याविप्रोटी)

वद्युटो, वद्युटवी—देवो 'विद्युटणी, विद्युटवी' (रू भे)

उ०—द्वय वेई जगनीरु नरेमर, ममरय नामहृद प्रापिठ । वाणावली
विद्वृटने वद्युटो, उगु परि मवर रायव । —हीराणद सूत्रि

वद्युटिवोडो—देवो 'विद्युटिवोटी' (रू भे.)

(स्त्री वद्युटिवोटी)

वद्येह—देवो 'जिमम' (रू भे)

उ०—वदं इहवै घड देमि वद्येह, एपी भट 'ऊदक' व्ट घनेक ।
—सू प्र

वद्येदणो, वद्येदवी—देवो 'विद्येदणी, विद्येदवी' (रू भे)

उ०—१ सवा कमल नी इच्छा मरु, नीमनेनु तड वनि-वनि
फिरु । ममरए देवो वोनर राड, नीम पामि वद्येदिवि जाड ।
—प प च.उ०—२ मतीय वेड छद वामगि ग्नी, उद्रह प्राडगु तु गुम्ह ग्नी ।
मेनहृद पदर उद्रह वद्येदि, विगु हृथियागु वापा भेदि । -प. प च.

वद्येदिवोडो—देवो 'विद्येदिवोटी' (रू भे)

(स्त्री वद्येदिवोटी)

वद्येर—देवो 'वद्येरी' (मह, रू भे)

उ०—वद्येर देवम गवागि, फेरक फगवत, नटम नाटक विधान,
गाम्ना सफावत । —सू प्र

वद्येरियो—देवो 'वद्येरी' (शल्या, रू भे)

वद्येरी—देवो 'वद्येरी' (रू भे)

उ०—१ विसनदाम लेजाय नं घोटी वोर नं घोटी दिग्नायो । वरस
१ नू व्याई । वद्येरी जायो । —नैरुमीउ०—२ लोहा लकडा चामटा, पहला किता वग्गाण, वद वद्येरा
डोकरा, नीमटिया परवाण । —अज्ञात

(स्त्री वद्येरी)

वद्योडणी, वद्योडवी—देवो 'विद्योडणी, विद्योडवी' (रू भे)

वद्योडिवोडो देवो 'विद्योडिवोटी' (रू भे)

(स्त्री वद्योडिवोटी)

वद्योडणी, वद्योडवी—देवो 'विद्योडणी, विद्योडवी' (रू भे.)

उ०—सोसइ मइर महातपि, आतपि रहइ गभीर । मोह तणा
जगवधव, वंध वद्योडइ धीर । —जयसेखर सूत्रि

वद्योहणी, वद्योहवी—देवो 'विद्योहणी, विद्योहवी' (रू भे.)

उ० जइ करवत सिर ताहरइ, डीजत सिरजणहार । वर वद्योह्यां
साजणा रे, तड तड जाणत सार । —हीराणद सूत्रि

वद्योहिवोडो—देवो 'विद्योहिवोटी' (रू भे)

(स्त्री वद्योहिवोटी)

वद्यो—१ देवो 'वत्त' (रू भे)

२ देवो 'वच्चो' (रू भे)

उ०—रोयती य गप वधुअ निवारी, वद्यि रोयसि म मइ तू वारी ।
—सालि सूत्रि

(स्त्री वद्यि, वद्यी)

वजतरी, वजत्री—देवो 'वजत्री' (रू भे-)

वजद्व—म पु [स वच्च] कुलिग, वच्च ।

वज—स स्त्री [वजध] १ शरीर की बनावट, रचना ।

२ बनावट का ढग, प्रणाली, रीति ।

३ अरथा, दगा, हालत ।

४ देवो 'वज' (रू भे.)

वजड—देवो 'वच्च' (रू भे)

उ०—गोल्या खोल्या वजड कमाड ।

—लो. गी.

वजजत्र—देवो 'वाचयत्र' (रू भे)

वजण—१ देवो 'वाजण' (रू भे)

उ०—सरण असरण प्रदण सामण, टकर वण किय वजण दिन,
तिण वार तेर विसाळ । —सू. प्र

२ देवो 'वजन' (रू भे)

वजणो, वजवी—१ देवो 'वजणी, वजवी' (रू भे)

२ देवो वाजणी वाजवी' (रू भे.)

उ०—१ फठं वजं वडवोर, फठं भाडी मोटोडी । फठं वीरटी नाव,
वणी देवा री छोडी । —दसदेवउ०—२ काळवी कियो 'पाल' विनी कजियो, वसुधा पर नाम घणी
वजियो । —पा. प्रउ०—३ वजि म्दग चग रग उपग वारग, अनग छवि चग उमग
अग अग । —सू प्र

वजणहार, हारी (हारी), वजणयी—वि० ।

वजिप्रोडो वजियोडो, वज्योडो—भू० का० कृ० ।

वजीजणों, वजीजवों—भाव वा० ।

वजन—स पु [फा वजन] १ बोझ, भार ।

२ भार का परिमाण, तौल ।

३ भारीपन, गुस्ता ।

४ महत्त्व या मान का सूचक ।

उ०—यह सिकत कुतबुदीन साहजादे की पढें । बहुत ही वजन सुख से बढें ।
—कुतबीदीन साहजादे री वात

५ उत्तरदायित्व, जिम्मेदारी ।

६ दबाव, दाब ।

रू भे—वजन, वजण ।

वजनी—वि [फा वजनी] १ जिसमे वजन हो, भार हो, भारयुक्त, बोझिल ।

२ जिसमे अधिक बोझ या भार हो, गुस्तर ।

३ ठीस

४ महत्त्वपूर्ण ।

५ गभीर, महान ।

वजरग—वि. [स वज्राग] १ जिसका शरीर वज्र के सामान कठोर व मजबूत हो, सुदृढ ।

उ०—१ अति सुघट पीड वजरग श्रोप, अय पाक उलट चव जव अनोप ।
—रा. रू

उ०—२ वरियाम जणै जण वाजती, जोधपुरा जोधपुरी । वजरग हुश्री हणमत वरि, भली भीम' कल्याण री ।
—गु रू व

२ घूल से लथ पथ ।

स पु [स वज्र-अग] पवनसुत हनुमान का नामान्तर ।

(अ मा)

रू भे—वजरग, वजरगी, वजरअग, वजरअगी, वज्रगी, वजरगी, वजरागी, वज्र गी, वज्रागी, वजाग, वजागी ।

वजरगवळी, वजरगवली—देखो 'वजरगवळी' (रू. भे)

वजरगी—देखो 'वजरग' (रू. भे)

वजर—स पु [फा वजर] १ प्रात काल, प्रभात ।

२ देखो 'वज्र' (रू. भे)

उ०—१ मचियै काकळ मदत री, वीर न देखै वाट । एक अनेका सूं हिचै, छाती वजर कपाट ।
—वा दा

उ०—२ जरदेता श्रोरे असि जाळ, वजर वजर घण गजर वजाळ ।
—सू प्र

उ०—३ दातूसळ वजर वजर जमदाढा, वाढा ऊगाढा विहर । असपति नजर भली आफळिमी, कुजर नै नाहर कवर ।

—लिखमीदास गाडण

उ०—४ सुरताण हुरी भय भीत सपेख, गुडिया खान सू पडियेँ गाढ ।

'अमर' तरण भुज हुता अवर, जाणै वजर पडी जमदाढ ।
—केसोदास गाडण

वजरतुड—देखो 'वज्रतुड' (रू. भे) (डि को)

वजरदड—देखो 'वज्रदड' (रू. भे)

वजरदत—देखो 'वज्रदत' (रू. भे) (अ मा)

वजरदती—देखो 'वज्रदती' (रू. भे)

वजरधर—देखो 'वज्रधर' (रू. भे)

वजरनख—देखो 'वज्रनख' (रू. भे)

वजरपाण, वजरपाणि, वजरपाणी—देखो 'वज्रपाणि' (रू. भे)

वजरवांह—देखो 'वज्रवाहु' (रू. भे)

वजरमूठी—देखो 'वज्रमुष्टि' (रू. भे)

वजरवारक—वि [म वज्रवारक] वज्रप्रहार को रोकने वाला ।

स स्त्री.—देवी, दुर्गा ।

वजरसार—देखो 'वज्रसार' (रू. भे)

वजरागी देखो 'वजरग' (रू. भे)

वजराक, वजराग—देखो 'वजराक' (रू. भे)

वजरायुध—देखो 'वज्रायुध' (रू. भे)

वजरासन, वजरासन—देखो 'वज्रासन' (रू. भे.)

वजरेसुरी, वजरेस्वरी—देखो 'वज्रेस्वरी' (रू. भे)

वजरोळी—देखो 'वज्रोळी' (रू. भे)

वजवजणों, वजवजवों—कि स. [स भज्] १ प्रभाव या प्रतिष्ठा प्राप्त करना, प्रसिद्धि पाना ।

उ०—वारा बुध न ऊपजी, सोळा कळा न होय । बीसान वजवजियेँ भळपण वाट न जोय ।
—अज्ञात

२ वैभव प्राप्त करना ।

वजवजियोडी—भू का. कृ—१ प्रभाव, प्रतिष्ठा, व प्रसिद्धि प्राप्त किया हुआ । २ वैभव प्राप्त किया हुआ ।

(स्त्री वजवजियोडी)

वजह—स स्त्री [अ. वज्ह] १ कारण, हेतु, निमित्त ।

२ उद्देश्य, अभिप्राय, प्रयोजन ।

३ कोई असाधारण परिस्थिति ।

४ मुखाकृति, चेहरा ।

५ प्रकृति, तत्त्व ।

रू. भे.—वजह, वजै ।

वजाई—देखो 'विजाई' (रू. भे)

वजाडणी, वजाडवों—देखो 'वजाणी, वजावों' (रू. भे)

उ०—पाट हूती तिरा प्रयादा पाटपत, वजाडै वार समार वाजा ।
भाप री राम रज गुरग वगियो "घना," राज रिघ भोगवे महागजा ।
—र दा

वजाडणहार, हारी (हारी) वजाडणियो—वि० ।
वजाडिपोडी वजाडियोडी, वजाडपोडी—भू० का० कृ० ।
वजाडोजणी वजाडोजयो—कर्म वा० ।

वजाडियोडी—देगो 'वजापोटी' (रू. भे)
(स्त्री. वजाडियोडी)

वजाणी, वजायो—देगो 'वजाणी, वजायो' (रू. भे)

उ०—जिरा 'पवरंग' तरा दळ जीता, घातम मकति वजाई
भममर । मारि वतादरमाह मनाया, जोरै मुनक निया जोरावर ।
—सू प्र

वजाणहार, हारी (हारी), वजाणियो—वि० ।
वजापोडी—भू० का० कृ० ।
वजाईजणी, वजाईजयो—कर्म वा० ।

वजापोटी—देगो 'वजापोटी' (रू. भे)
(स्त्री. वजापोटी)

वजावणी, वजावयो—देगो 'वजाणी, वजायो' (रू. भे)

उ०—१ वेग वाम जामळी वजावण । घिनी मोहन राधिका घरण ।
—ह. नां मा

उ०—२ 'विजावत' उप्रमने घमि वाग । गयो गुर 'फन्न' वजावत
गाग ।
—सू प्र

वजावणहार, हारी (हारी), वजावणियो—वि० ।
वजाविपोटी, वजाविपोटी, वजाव्योटी—भू० का० कृ० ।
वजावीजणी, वजावीजयो—कर्म वा० ।

वजावियोटी—देगो 'वजापोटी' (रू. भे)
(स्त्री. वजावियोटी)

वजिप्र, वजिप्रि—देगो 'वाद्ययत्र' (रू. भे)

उ०—१ चतुरग वगाय गजराज चटि, वजिप्र अनेक वजाविया ।
—सू प्र.

उ०—२ होळी मीर घळा गज डवर, वजिप्रि नर हैमर कर वेम ।
भाऊगति हिंदुमा ऊपरि, दम सहसि नयसहसउ देस । —दूदी

वजियोटी—१ देगो 'वजियोटी' (रू. भे)
२ देगो 'वजियोटी' (रू. भे)
(स्त्री. वजियोटी)

वजीफादार—वि [फा वजीफ दार] जिमको वजीफा या सहायता मिलती
हो, महायता-वृत्ति पाने वाता ।

वजीफा—स पु. [फा वजीफ] १ वह आर्थिक सहायता या वृत्ति जो
विद्वानो, छात्रों, दीनों व विगडे हुए रईसों आदि को भरण पोषण
के निमित्त दी जाती है ।

२ निवृत्ति, वेतन, पेंशन ।

३ छात्र वृत्ति ।

४ नियम या श्रद्धापूर्वक किया जाने वाला मश-पाठ, जप ।

वजीर—म. पु [फा] १ बादशाह का प्रधान, शासक का मुख्य मलाह
वार, अमात्य, मन्त्री, प्रधान, सनिव, दीवान ।

उ०—१ हुकम वजीरो हुवा, फरो लसकर अघिमारा । तर कलमा
दफतरा, हुवे अन्नेक हजारा । —सू प्र

उ०—२ पच वपत निम्माज ताज कुनहराह सोहइ । लोजा खान
वजीर मलिक उवरे मन मोहइ । —व स

२ राजदूत ।

३ रावणा-राजपूतो का एक नाम ।

(भा म)

४ दातरज नामक खेल का एक मोहरा जो बादशाह मे छोटा व
अन्य मोहरों मे बडा होता ह ।

रू. भे.—वजीर, वजीर ।

वजीरात—स स्त्री. [फा] १ वजीर का पद, वजीर का कार्य ।

उ०—थाहरी दियातत सूं हू म्हारे राज री वजीरात तोनूं मौंवी ।
—नी प्र.

२ वजीर का कार्यालय, कचहरी ।

वजीरी—स स्त्री. [फा.] १ वजीर का कार्य व पद ।

२ उक्त पद की नौकरी ।

३ बल्चिस्तान मे पाई जाने वाली घोडो की एक जाति ।

वजुआत—स. स्त्री [फा] १ वजह का बहुवचनात्मक रूप ।

२ कारणों का समूह ।

रू. भे.—वजुआत ।

वजू—स पु [अ. वुजू] नमाज पढने से पहले हाथ-पाव धोने की क्रिया ।
(मुसलमान)

वजूआत—देगो 'वजुआत' (रू. भे)

वजूद—स पु [अ.] १ घरीर, देह ।

उ०—अलाहे सिजदा कुनद, वजूद रा चे कार । दाहू नूर दादनी,
आसिकां दीदार । —दाहूवाणी

२ सत्ता, अस्तित्व ।

उ०—दाहू इस्क अलह की जाति है, इस्क अलह का अग । इस्कक
अत्लाह वजूद है, इस्क अलह का रग । —दाहूवाणी

वजै—स. स्त्री.—१ तरह, भाति, प्रकार ।

उ०—सरद की चदणी चद्रवसी विमलू का उजास । रितराज के

विवम तथा सूरज वसी कवलू का प्रकास, इस वज्र खटारतु की क्रीला जल्ले गुलावू की छाक । —सू प्र

२ देखो 'वज्रह' (रू. भे)

वजोग—देखो 'विजोग' (रू. भे)

उ०—हर घर ध्यान कमध हेमाल, परिहा चाढेवा प्रभत । किसन वजोग चारणा कारण, गळियो जुजठळ राव गत । —वा. दा

२ देखो 'विजोग' (रू. भे)

वजो—देखो 'वजो' (रू. भे)

वज्जणो वज्जवो १ देखो 'वज्जणी वज्जवो (रू. भे)

२ देखो 'वाज्जणी, वाज्जवो' (रू. भे)

उ०—१ जिणिए देसे सज्जण वसइ, तिणिए विसि वज्जउ वाठ । उआ लंगं मो लग्गसी, ऊ ही लाख पसाउ । —ढो मा.

उ०—२ हाथी तुरिय तुसार सार अरिअण उतारइ, वज्जइ डोल नीसाण आण जगि सघळे जाणइ । —व स

उ०—३ रिणमल्लोत रिण वज्जियो, सुदर 'हरी' सुजाव । सहसा ले पडियो समर, घट सौ लग्गा घाव । —रा रू

उ०—४ या 'मघकर' हर वज्जिया, आद विखे अण रेह । ज्याउलटै भेघा रवि, सिद्ध पळट्टे देह । —रा रू

उ०—५ गुजारव भेरिया, घनक टका-रव वज्ज । —गु रू व

उ०—६ वागी खग्गा वे घडा, ज्या वज्ज घडियाळ । पाव न मडे राव पिड, गो छडे रिण ताळ । —रा रू

वज्जणहार, हारी (हारी), वज्जणियो—वि० ।

वज्जिओडो वज्जियोडो, वज्जयोडो—भू. का कृ ।

वज्जोजणो, वज्जोजवो—कर्म वा०/भाव वा० ।

वज्जपाणो वि [स वज्जपाणि] १ वह 'जिसके हाथ मे वज्ज हो ।

स पु—इन्द्र ।

वज्जमओ—देखो 'वज्जमय' [रू. भे]

उ०—रोपीड पवणिहि कलपतरो, सुमिणइ कुति दूयारि । पवणह नदणु वज्जमओ, भीमु सु भूयण मभारि । —प प व

वज्जया—देखो 'विजया' [रू. भे]

उ०—देवी दहणी देव वेरी उदडा, देवी वज्जया जया देता विखडा । —देवि

वज्जर—देखो 'वज्ज' (रू. भे)

उ०—१ करा खग तोल खडे कयकाण, पडे मनु वज्जर सीस, पठाण । —पे रू

उ०—२ वहु वहु गोळा वज्जर । धुआ-पार उठटा घोमर । —गु रू. व

वज्जरणो, वज्जरवो—क्रि स [स वज्जर] १ कहना, बोलना ।

२ क्रोध मे बहवडाना ।

उ०—काल रूप जम रूप, ग्रहे गयणागक उडळ । वासग वळ वज्जरं, भुज्ज धूणी वीज्जळ । —गु रू. व

वज्जरणहार हारी (हारी), वज्जरणियो—वि० ।

वज्जरिओडो, वज्जरियोडो, वज्जरयोडो—भू० का० कृ० ।

वज्जरीजणो, वज्जरीजवो—कर्म वा० ।

वज्जरणो, वज्जरवो वज्जरणो, वज्जरवो—रू० भे० ।

वज्जरियोडो—भू का कृ - १ कहा हुआ, बोला हुआ । २ क्रोध मे बहवडाया हुआ ।

(स्त्री वज्जरियोडी)

वज्जियोडो—१ देखो 'वज्जियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'वाज्जियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वज्जियोडी)

वज्जगी—देखो 'वज्जगी' (रू. भे)

उ०—वज्जगी किवाड मू मेवाड भुजा डडा वका, वरूया विभाड वीरभद्र सौ वेछाड । मातगा पछाड सेर ओछाड अहाड मेर, पिडगी पहाड मेर सावळो पहाड । —हुकमीचद खिडियो

वज्जद—वि [स वज्ज-इद्र] १ जवरदस्त, जोरदार, प्रचंड भयकर ।

उ०—अरावा तणी असबाव अपणावियो, भट किलकता तणी भागो । आड रोपी वज्जद भीक वागी असभ, 'लीक' टोप पटक पथ लागो । —कविराजा वाकीदास

२ महान ।

वज्ज-वि. [स] १ बहुत अधिक कठोर, कडा, सस्त ।

२ अत्यन्त मजबूत, दृढ ।

३ तीव्र, उग्र ।

स पु—१ इन्द्र का प्रधान शस्त्र जो दधीचि ऋषि की हड्डियो से बना हुआ माना जाता है । (पीराणिक)

पर्या—अतोड, अतोल, असनी, इदरससतर, इद्रावध, कुलिस, खटकूणी खयपत्रगिर, खळसाळ, गेत्रभेदी, जोतसुअ, दभोळ दधीचास्थी, पवि, पुरहूतजय, भिदुर ।

२ विष्णु का सुदर्शन चक्र । (ना मा)

३ कोई भी विनाशक शस्त्र, हथियार ।

उ०—मुग्दर, लगुड, गदा दड भिडमाल गाजीव विस्फोटक वज्ज तरवारि । —व स.

४ बरछा, भाला ।

५ शकर का शस्त्र, त्रिशूल ।

६ तलवार ।

७ विद्युत, बिजली ।

८ फौलाद नामक लोहा, स्टील ।

३०—चर्व मल हीक तुरी उर चोट । कळाहल भूम ह्वै प्रज कोट ।

—सू प्र

६ हीरा । (अ मा)

३०—घाभूगण वज्र तण घषाहै । मायागणा हार गळि माहै ।

—सू प्र.

१०—हीरा काटने का घोजार ।

११—एक मन्ना जिमके मध्य भाग होते हैं । (वास्तु-विद्या)

१२ चन्द्रमा की एक चलाचट ।

१३ झूह रचना विशेष ।

१४ विदपामित्र का एक पुत्र, वज्रनाभ ।

१५ श्रीकृष्ण के पौत्र अनिरुद का पुत्र जिमगी माता का नाम रचिना था ।

१६ बार व नक्षत्रों सम्बन्धी बनने पाने २८ योगों में से नया योग ।
(फलित ज्योतिष)

१७ फलित ज्योतिष के २७ योगों में से पन्द्रहें योग का नाम ।
(फलित ज्योतिष)

१८ कोकिलाक्ष नामक वृक्ष ।

१९ मकेद युग

२०—प्रपन्नवीर नामक पोषा ।

२१ झूह, मेंहुड ।

२२ वज्रपुष्प ।

२३ त्रिगोण । •

रू. भे—वज्र, वजर, वजरि, वजरी, वज्र, वज्रर, वज्र, वजट, वजर, वज्रर वज्रठ, वज्रह ।

वज्रधरणी—देगी वजरणी' (रू. भे)

३०—एम गणवाह नै प्राकामी वज्रधरणी । जेठो बीम वाहरे
धनम्मी इद्रजीत —मनमानमिध हाटा री गीत

वज्रठ—देगी 'वज्र' (रू. भे)

३०—मफुलिंग मट्ट वज्रमन्त्र ज्ञाना ना महन्न, भरतठ, देदीप्यमान,
दगण हृदि वज्रठ लड चरगमी, महन्न अति म्बच्छ निरमल वम्भ ।
—व. स.

वज्रककट—म. पु [म वज्रककट] १ हनुमान । (अ मा., ना मा)

२ हीर वशी ।

३ कोकिलाक्ष वृक्ष ।

४ झूह-मेंहुड ।

वज्रककटमारमनी—म. पु. [स वज्रककटमारमनी] अठ्ठाईस नरकी में से

एक नरक । (पौराणिक)

वज्रक—स. पु [स] १ हीरा ।

२ वज्रधार ।

३ सूर्य के आठ उपग्रहों में से एक जो सूर्य से तेजमवा नक्षत्र है ।
(फलित ज्योतिष)

४ चर्मरोग के लिये एक तेल विशेष । (वैद्यक)

वज्रकपाट—स. पु [स] दरवाजे पर लगे वे कपाट जो वज्र के समान
टूट और मजबूत हो ।

रू. भे—वज्रकपाट, वज्रहकिवाड, वजरकपाट, वजरकिवाड ।

वज्रकीट—स पु [स.] पत्थर में छेद कर देने वाला कीड़ा । बनरोह ।

वज्रकूट—म. पु [म] हिमालय पर्वत की एक चोटी का नाम ।

वज्रकेतु—म पु [म] नरक का राजा, एक राक्षस । (पौराणिक)

वज्रधार—स. पु [स] वैद्यक का एक रसायन योग, जो उदर रोगों में
फाम घाता है ।

वज्रगोप—स पु [म] वीरजहटी नामक कीड़ा, इद्रगोप ।

वज्रघट—म पु [स] लज्जा का एक राक्षस ।

३०—कर मूल विवटह मुभट कीचट, राम थट मट भणट गीभट ।
पछक वज्रघट कुषट ऊगट, रगट भट फुट भ्रकुट मरकट ।

—सू. प्र

वज्रतुंड—म. पु [स] १ गणेश ।

२ गरुड ।

३ गिद्ध ।

४ मच्छर ।

५ झूह-मेंहुड ।

रू. भे—वजरतुंड, वज्रतुंड, वजरतुंड ।

वज्रवट—स. पु [स] इद्र द्वारा धर्जुन को प्रदान किया जाने वाला
एक अस्त्र ।

रू. भे.—वजरदड ।

वज्रवत—स. पु [स] १ वन्य-सूकर, सूअर ।

२ घूहा ।

रू. भे—वजरदत, वजरदत,

वज्रवती—स स्त्री [स] १ श्रीपथि विशेष ।

२ उक्त श्रीपथि का पोषा ।

रू. भे.—वजरदती

वज्रधर—थि [स] वज्र या हथियार धारण करने वाला ।

स. पु.—१ इन्द्र ।

२ महायान शाखा के अनुसार आदि बुद्ध (बौद्ध) ।

रू. भे.—वज्रधर, वजरधर ।

वज्रधार-स पु [स वज्रधारिन्] इद्र ।

वज्रनख-स पु. [स] नृसिग ।

रु भे—वजरनख ।

वज्रनाभ, वज्रनाभ्र-स पु. [स. वज्रनाभ] १ श्री कृष्ण का चक्र ।

२ एक सूर्य वशी राजा ।

उ०—वाळ सुतन नृप सिधळ उवंवर । वज्रनाभ्र जिण सुतण भुपवर । —सू प्र

३ वज्रपुर नगरी का एक राक्षस राजा जो निकुंभ का भाई था ।

यह कृष्ण पुत्र प्रद्युम्न के हाथों से मारा गया था ।

४ एक दुष्ट राक्षस जो ब्रह्मादेव के हाथ में स्थित कमल के प्रहार से मारा गया ।

५ स्कंद का एक सैनिक ।

६ प्रद्युम्न का एक पुत्र ।

७ विश्वामित्र का पुत्र ।

रु भे—वज्रनाभ ।

वज्रपाणि-स. पु [सं. वज्रपाणिन्] १ इन्द्र ।

२ ब्राह्मण ।

३ एक देव-योनि । (बौद्ध)

रु. भे—वजरपाण, वजरपाणि, वजरपाणी ।

वज्रपात-स पु [सं] १ म्छिद्युत या विजली का आकाश से गिरने का आघात ।

उ०—तठे करि खीज वही तरवार, अकाळिय बीज तणी उणिहार । गजा करि सडळ तडळ गात, पवि जिम कीध हुवा वज्रपात ।

—सू प्र

२ उक्त प्रहार से विजली के गिरने से होने वाला क्षय, क्षति ।

३ कोई भयकर आपत्ति, दुःख, मुसीबत ।

४ शस्त्र-प्रहार ।

उ०—गुडे गजज प्राहाड, टूक ढहिया कुंभाथळ । वज्रपात करमाळ, गुडे तूटे कव्वं-मळ । —गु रु व

५ दुर्घटना ।

रु भे—वज्रपात,

वज्रपोस-स. पु—कवचधारी योद्धा ।

उ०—जोगायत 'ऊदल' ऊमल जोस । पछट्टत खाग हरुण वज्रपोस । विहारियदास अभग ब्रजागि । लडे सुत 'वीरम' अंवर लागि ।

—सू प्र

वज्रप्राणघातक-स. पु—एक प्रकार का शस्त्र विशेष ।

वज्रवाह-स पु [स] १ इन्द्र ।

२ इन्द्र ।

३ अग्नि ।

४ राम की सेना का एक वानर जिसका कुम्भकरण ने भक्षण किया ।

रु भे—वजरवाहु ।

वज्रभाखी-वि. [स. वज्र+भाषिन्] अपने वचनों पर कायम रहने वाला, दृढ प्रतिज्ञ ।

वज्रभास-वि.—वज्र के समान शरीर वाला, दृढ़ और मजबूत ।

रु भे—वज्रभास ।

वज्रमय-वि. [स] १ मजबूत और दृढ़, वज्र के समान ।

उ०—तररे देवी जी हुकम कियो—एक थारी पाकी ईंट, एक माहुरे नावे काची ईंट, इण भात री गढ कराय, वज्रमई दुरग अविचळ हुसी । —नैणसी

२ प्रबल, शक्तिशाली ।

वि—हीरे का, हीरे सम्बन्धी ।

रु भे.—वज्रमय ।

वज्रमारु-स पु [स वज्र-मार्ग] आकाश, अम्बर, व्योम । (डि को)

वज्रमुष्टि-स स्त्री [स. वज्रमुष्टि] १ इन्द्र ।

२ तीर चलाते समय की एक विशेष हस्त मुद्रा ।

वि—वज्र के समान मुष्टिका वाला ।

रु भे—वजरमूठी ।

वज्रविसन-स पु [स विष्णु+वज्र] सुदर्शन चक्र । (अ मा)

वज्रसरीर-वि [स वज्र-शरीर] जिसका शरीर वज्र के समान दृढ़ व मजबूत हो, शक्तिशाली, ताकतवर ।

उ०—गयणह वाणी आपोयउ आगइ वज्रसरीर । वाघइ पचइ चद जिम पडव गुण गभीर । —पं प. च

वज्रसार-वि [स] अत्यन्त कठोर ।

स पु—हीरा ।

रु भे—वजरसार ।

वज्रसोह-स पु—वज्र की चोट या प्रहार ।

वज्राग—देखो 'वजरगी' (रु भे.)

वज्रागी-स. स्त्री. [स] १ चोट पर लगाई जाने वाली हडजोड़ नाम की लता ।

२ देवी 'वजरगी' (रु भे)

वज्राग, वज्राग्नि—देखो 'वजराक' (रु भे)

उ०—१ 'अग्वा'हर वाहत खाग उनग । जुडे जिम भारय दाखण जग । वळोवळ लूवत रोद्र वज्राग । भिडे सुजि सूर हुवे दुय भाग ।

—सू प्र.

उ०—२ घट लाकड हूवै बळें हस मुमा, भाळ हूवी रणताळ कळू ।
वळगो माग भभाग वैरिया, वळती माग वज्राग 'बळू ।

—वैसोदास गाणण

वज्रागरा—स स्त्री —पृथ्वी, धरती, धरा । (दि ना. मा)

वज्रापुत्र वज्रासुधी—स पु [म. वज्रासुधी] इन्द्र । (ना मा)

रू भे —वजरासुधी ।

वज्रासन—स पु [स] योग के चौथी भ्रामर्षी भे से एक ।

२ गया भे जोधितर के नीचे की यह निता जिस पर बैठ कर बुद्ध ने सिद्धि प्राप्त की थी ।

रू भे —वजरासन, वजरासन ।

वज्री—म. पु. [म वज्रिन्] इन्द्र । (म. मा)

रू भे —वज्री

वज्रसुरी, वज्रसुरी, वज्रस्वरी—म स्त्री [म वज्र-स्वरी] १ देवी,
दुर्गा । (बौद्ध)

२ शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने का एक तांत्रिक अनुष्ठान जिसे वज्राहिनिष्ठा भी कहते हैं ।

रू भे —वज्रसुरी, वज्रस्वरी ।

वज्रोष्ठी—म स्त्री. [म.] १ अनुनियों द्वारा बनाई जाने वाली एक मुद्रा विशेष । (हठयोग)

० नाथ सम्प्रदाय की वज्रायनी शाखा की योग साधन की एक मुद्रा जिसमें स्त्री का मयोग होना प्रायदयक है ।

वि वि.—इय मन्त्र्य मे ऐमी किवदती हे कि साधक साधना करने समय एक माथ कई स्त्रियों का मयोग कर सक्ता है, निरोन्द्रिय द्वाग स्त्री के रज का शोषण कर भरता है, चीर्य का स्नान कर भरता है, इत्यादि इस प्रकार की कई चेटाग कर सक्ता है ।

रू भे —वज्रोष्ठी, वज्रोष्ठी ।

वज्रगो, वज्रगो—कि भ [सं वज्र=प्राश्रय लेना] १ कन्या, विन्वार होना ।

उ०—पागती अग्टा री भीगडि चीगण्टि पडि नै रही छै । दुहारी पटाकी लागिनै रहिग्री । पागती नीळ वकि नै रही छै ।

—रा सा म

२ देवी 'वज्रगो, वज्रगो' (रू भे)

३ देवी 'वज्रगो, वज्रगो' (रू भे)

४ देवी 'वज्रगो, वज्रगो' (रू भे)

वज्रियोडी—१ फंला हूया, विस्तार प्राप्त ।

२ देवी 'वज्रियोडी' (रू भे)

३ देवी 'वज्रियोडी' (रू भे)

४ देवी 'वज्रियोडी' (रू भे)
(स्त्री वज्रियोडी)

वज्री—देवी 'वज्री' (रू भे)

वट—स पु [स वट] १ वरगद का पेट, बड ।

उ०—१ ता मधि गजन एक वट, छाह रहतु ठहराय । सदा विराजत सारती, भ्रान-दिसा नह जाय । —गजउद्वार

रू भे —वट, वट्ट, वट, वड, वट, वटि, वड, वट्टु ।

अल्पा-वडली, वडली, वडली ।

[स वरमंक, प्रा वट्ट] अभिमान, गर्व, घमड ।

उ०—१ काय आटा पग आण, काय कर घात वटारिया ।
छोगाळा छळ छाड, राणा रावत वट तरणी । —नीणसी

उ०—२ रीश भाज उजळा रू का, वैर वाळ उजवाळ वट ।

पग मलग निरनग भग पाउं, भुज निरनग निरलग भ्रकुट । —द दा

मुना —१ वट ताडणी=अभिमान को समाप्त करना, मन की निरावना, २ वट निवलाणी=घमड समाप्त होना, मन की मुराद पूरी होना । ३ वट भरीजणी=गर्व करना ।

३ मर्यादा, गौरव, परम्परा, कायदा ।

उ०—१ आकुली कुळ वट लोपिय, गोपिय रमइ रगि । फास केसि चागूर ए, चूरण वे वट्ट भगि । —जयसेवर सूरि

उ०—२ ज्याग रा गीन गुण प्रीन न करी जिकै, प्रीत हृद चारणा हुन पाळी । चीत रं वाहू हूवी जिण वार मे, चीत रज रीत वट तरणी चात्ती । —गिरवरदान सादू

४ गुण, धर्म ।

उ०—कुळवट छोटे काण, छनै पाण गळ छोटियो । रजवट री वट राग, छाटोटी न रहियो निमन । —राक्षमीदान वारहठ

५ मीट, ऐंठन, बल ।

उ०—आ वात कैय राजाजी गुमान सू मूछ्या रं वट देवण लागा —फुलवाडी

मुहा —हाथा री वट काडणी=किसी को पीट कर अपने मन की निकालना ।

६ शृगला, साकन, लगर ।

७ एक वर्ग त्रिभुज ।

उ०—मामगर कठतिगीया कुहटीया नट वट गाछा छीपा परियटा मुद नाई तेली मोची मत्तुआरा वधारा चीतारा । —व स वि [म वट=शून्य] १ भयानक, भयावह ।

उ०—वट वाटे घाट श्रीघटे रण वन । जळ थळ महियळ अजर जरै ।
चेलक चाड थाप रया रण, फरणी सदा सहाय करै । —दोली

२ देवी 'वाट' (रू भे)

रू भे —वट, वट्ट ।

वटकणी, वटकवीं,—देखो 'वटकणी, वटकवीं' (रू. भे.)

वटकियोडी—देखो 'वटकियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वटकियोडी)

वटकी—देखो 'वाटकी' (रू. भे.)

वटकी—१ देखो 'वटकी' (रू. भे.)

उ०—ईतरे उमरा उपर कागला पाच आय बँठा। तद रजपूत लाकडी री वटकी वायो। जणी सू पांच कागला मुवा।

—पच मार री वात

२ देखो 'वाटकी' (रू. भे.)

वटक्कणी, वटक्कवीं—देखो 'वटकणी, वटकवीं' (रू. भे.)

वटक्कियोडी—देखो 'वटकियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वटक्कियोडी)

वटक्की—देखो 'वटकी' (रू. भे.)

उ०—वीर भटक्के वज्जिया, वे रणधीर दुवाह। अग वटक्के उडता, सेन भटक्के साह।

—रा रू.

वटचड—स पु [अनु] १ बँचेनी मे घीरे घीरे बोलने या बडबडाने की क्रिया या भाव।

२ उक्त क्रिया से उत्पन्न ध्वनि।

वटण्यो—देखो 'वटणी' (अल्पा., रू. भे.)

वटणी, वटवीं—१ देखो 'वटणी, वटवीं' (रू. भे.)

उ०—१ ताहरा भीतर सू कहायो—कुवर ने ले आवणी छे तो आप पधारी नहीं तो कोई आवे नहीं। जे साहूकार ने आदमी आया री खबर हुई तो कही परदेस मेल देसी। पछे क्यो ही वटसी नहीं।

—पलकदरियाव री वात

उ०—२ डाकण भल्ले न वाष अडोळ, दीधा वटं न कोडी वाम।

अस जो उरो लियो श्री "चूडै", गज दीघो काय दीघो गाम।

—ओपी आडो

२ देखो 'वाटणी वाटवीं' (रू. भे.)

उ०—गाय, भँस और ऊटा रा घाव भरै वट नीम दे घवसी पान उवाळ घोया, नव्य त्वचा सट सीम दे

—दसदेव

वटणहार, हारी (हारी), वटणियो—वि०।

वटिओडी, वटियोडी, वटघोडी—भू० का० कृ०।

वटोजणी, वटोजवीं—कर्म वा०।

वटत—देखो 'वटत' (रू. भे.)

वटतर—स पु [देशज] वेर, दुश्मनी।

उ०—तरै राजा वृष्णि तो कठा सू आया, असी कासू वटतर छे।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाडेल री वात

वटपत्री—स स्त्री [स. वटपत्र] १ रामतुलसी।

[स वटपत्रा] २ चमेली।

३ एक वनस्पती विशेष [जटी] जिसके रम मे पत्थर फूट जाता है। पत्थर फोड।

वटपाडी—देगो 'वटपाडी' (रू. भे.)

उ०—१ जम दळ घटपाडो तहू जामी, वामी नहीं विगाडो घारं। जगपत निस दिन नांग जपतां, मता मारा काज गुघारं।

—र. ज. प्र.

उ०—२ वटपाडी वगपाटा वाळी आभ जटा नायें ऊटाट। कोय न गाज सके किनियाणी, फीकळियाळ तुहाळा भाट

—वा दा

वटभरणी—स पु.—घनुपाहार एक काष्ट का बना छोटा यत्र जिमके मध्य के छेद मे लकडी का डटा गया रहता है, जिमकी महायना मे मोटी रमितियो या जेवडी के वट दिया जाता है।

रू. भे.—वटभरणी।

वटर—स. पु [स वट+घरन् वटर] १ चोर, डाकू।

२ बटेर पक्षी।

३ विन्तर, विछोना, चटाई,

४ पगडी।

५ मघाणी।

६ मुर्गा।

७ एक सुगंध युक्त घाम।

वटळणी, वटळणी—देगो 'वटळणी, वटळणी' (रू. भे.)

वटळणहार, हारी (हारी), वटळणियो—वि०।

वटळिओडी, वटळियोडी, वटळघोडी—भू० वा० कृ०।

वटळीजणी वटळीजवीं—भाव वा०।

वटसावत्री-पूनम—स स्त्री—जेष्ठ मास की पूर्णिमा। इम दिन कवीर जयती भी मनाई जाती है।

वटसावत्री-व्रत वटसावित्री व्रत—स पु—जेष्ठ शुक्ल त्रयोदशी के दिन किया जाने वाला व्रत जिममे तीन दिन निराहार रहा जाता है और वट की पूजा होती है।

वि वि—मतान्तर से जेष्ठ वदी अमानस्या को भी यह व्रत किया जाता है।

वटाउ—देखो 'वटाऊ' (रू. भे.)

उ०—जु सोरभजी रै घाट थी गगादिक आणने देवरं पाटण सोमइयं ऊपर चाई, सु सातमी वार रागोदक कावड भरी नै आणतो हुतो सु किएहेक सहर वटाउ थकी किए हेक रे चोतरं उतरियो हुतो।

—नैणसी

वटाउडी—देखो 'वटाऊ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—मारग चालनी एक वटाउडी बोल ऊठयो-तेरे मन कुछ और है करता के कछु और।

—रातवासी

बटाऊ—खरीददार ।

३०—किसतूरी भग्नी मई, केसर घटियो घाघ । सह बन्नु सुहगी
घई, गयी बटाऊ घाघ । —भासी वारठ

२ देखो 'बटाऊ' (रू. भे)

३०—रोतां भग रोवरावीया, वाट बटाऊ लोक। जाता जीव वई
नहीं, चीछढवा नी सोफ । —झीपाल रास

बटाऊडो—देखो 'बटाऊ' (भल्पा, रू. भे)

३०—नेवै नर सदीना मुरघर, मदा नीरोगी ही रवै । वूठे जारी
वातडी नै, भगत बटाऊडा कवं । —दस देव

बटाइणो, बटाइयो—देखो 'बटाणो, बटावी' (रू. भे)

बटाडियोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे)

(स्त्री बटाडियोडो)

बटाणो, बटावी—देखो 'बटाणो, बटावी' (रू. भे)

बटाणहार, हारो (हारी), बटाणियो—वि० ।

बटायोडो,—भू० का० कृ० ।

बटाईजणो बटाईजवो—कर्म वा० ।

बटायोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे)

(स्त्री बटायोडो)

बटारक—स स्त्री [म.] टोरी, रस्सी ।

रू. भे—बटारक ।

बटाळ—देखो 'बटाळो' (मह, रू. भे)

(स्त्री बटाळो)

बटाळणो, बटाळवो—देखो 'बटाळणो, बटाळवो' (रू. भे)

बटाळणहार, हारो (हारी), बटाळणियो—वि० ।

बटाळियोडो, बटाळियोडो, बटाळयोडो—भू० का० कृ० ।

बटाळीजणो, बटाळीजवो—कर्म वा० ।

बटाळी—वि [स्त्री बटाळी] दुष्ट, नीच, धूर्त ।

बटाव—देखो 'वाट' (रू. भे)

३०—तेजमी तासली लेने टेरं भायो । रावजी बुरी मानियो । वास
झूटो, बटाव माहुं लोग कहुं छै-याळी तेजसी ली-नु दण भास
लीधी । —राघ रिहमल री वात

बटावणो, बटाववो—देखो 'बटाणो, बटावी' (रू. भे)

३०—मव कोइ प्रीत बटावतं, सब कोइ करतं भाव । सम्मन वै
कुण रूंगटा, ज्या न झळोळं वाव । —सम्मन

बटावणहार, हारो (हारी), बटावणियो—वि० ।

बटावियोडो, बटावियोडो, बटावयोडो—भू० का० कृ० ।

बटावीजणो, बटावीजवो—कर्म वा० ।

बटावियोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे)

(स्त्री बटावियोडो)

बटावू—देखो 'बटाऊ (रू. भे)

३०—१ जमला जोवन फूल है, फूलत ही कुम्हलाय । जाण बटावू पय
सिर, वई भी उठ जाय । —जमाल

३०—२ मस्तक नी नी लूग, घरण री घूड ठरावै । खेजट खेवा खाय,
मद मे छान एवावै । भगत बटावा हेत, गेत किरसाणा ताई, वन
में पसवा प्रेम, हमीरा ग्राम ह्यणई । —दसदेव

बटियोडो—देखो 'बटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बटियोडो)

बटियो—१ देखो 'वाटियो' (रू. भे)

२ देखो 'वाटी' (भल्पा, रू. भे)

३ देखो बटभरणो ।

बटो—न पु [स] १ रस्मी, डोरी ।

२ गोली या टिकिया ।

३ उपवन, बगीचा, उद्यान ।

रू. भे.—बटो ।

बटु, बटुक—स पू. [म. बटुक] १ बालक, लटका ।

२ ब्रह्मचारी, माणवक ।

३ धर्म ग्राम्म पढने वाला विद्यार्थी, छात्र ।

४ एक भंगव ।

वि—भूयं मूढ ।

रू. भे—बटुक, बटुया, बटुय ।

बटुकणो बटुकवो—देखो 'बटुकणो, बटुकवो' (रू. भे)

३०—कया करक न छोटियै, हिरण कसा धी लाय । भ्राक बटुकं,
पवन भग्नें, घोडा भ्रागळ जाय । —भ्रजात

बटुकणहार, हारो (हारी), बटुकणियो—वि० ।

बटुकियोडो, बटुकियोडो, बटुकयोडो—भू० का० कृ० ।

बटुकीजणो, बटुकीजवो—कर्म वा० ।

बटुकरण—स. पु—उपनय मन्थार, यज्ञोपवीत सस्कार । (हिं. को)

रू. भे—बटुकरण ।

बटुकियोडो—देखो 'बटुकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बटुकियोडो)

बटेबाहु—देखो 'बटाऊ' (रू. भे.)

३०—इकि डोकरि तिरिण दीसि पाच पूत्र इकि बहूय सउ । कुंती
नड भ्रावासि बटेबाहु वीसमिया । —प. प. च.

वटंत—देखो 'वटाऊ' (मह, रू. भे)

वटी—देखो 'वट्टी' (रू. भे)

घट्ट—१ देखो 'वाट' (रू. भे)

उ०—अति आणुद ऊमाहियउ, वहइल पूगळ वट्ट । श्रीइ पुहृरि
उलाघियउ, आडवळा रउ घट्ट । —ढो. मा

ऊ०—२ कूच नगरा वज्जिया, गिर गज्जिया गहीर । समद उलट्ट
जिम सजळ, वट्ट लग वहीर । —सू प्र

२ देखो 'वट' (रू. भे)

उ०—कट थट्ट गयी खग भट्ट कहं, रण थट्ट घणा भट पास रहै ।
घर वट्ट पहट्ट गहट्ट घड, पिड खड विहड पमग पड । —पा प्र

घट्टि—देखो 'वाट' (रू. भे)

उ०—हरि हयीआर हलावता, मुकत्यह रु घी वट्टि । ते मुझ-लीघड
आविज, नाकि घणा जिणि घट्टि । —मा का प्र

घट्टी—स पु [स वट प्रा वट्टुल] १ गोला, गोली, कोई गोल मोगरा ।

उ०—आणे खवर फिरे ओहट्टा । वाटा दूत थया नट घट्टा, अति
सोचं पतसाह अछानं, खिण सज्या खिण तारतखानं । —रा रू.

२ आर्यावर्त का एक जनपद, एक देश ।

उ०—विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स वरण दसारण चेदी सिधु
सूरसेन भग वट्टा कुणाल लाट केकयमडलारद इत्यरद पच विंशति
जनपदा आरया । —व स.

४ देखो 'वट्टी' (रू. भे)

घठ-पु—१ अनुसार, अनुरूप ।

उ०—रसा रूठी रूठी अलख इक रूठी मत रहै । हमारी देखे ना
विरुद निज लेखे वठ वहै । —ऊ का

२ देखो 'वठै' (रू. भे)

घठल—वृक्ष विशेष ।

उ०—कल्प द्रूम नइ केतकी, कठल वठल ककुस्ट । कमरख अनइ
कालुवरी, केसर सुर सतुस्ट । —मा का प्र

घठाऊ—फि वि.—वहा से, उघर से ।

घठी—देखो 'वठै' (रू. भे)

रू. भे—वठी, वठीनं ।

घटे, वठै—फि वि—वहाँ, उघर ।

उ०—अर्व ईणा वामण रा वेटा नै कनात माहै लीघी । कया
वचाणी माडी । वठै वामण रूपवत असतरी देखे नै मन डीग्यी
यकी कया वाचवा लागी । —गाव रा घणी री वात

र. भे—वठैई वठै, वठैई, वटै, वठ ।

वड—स. पु—१ गिर ढापने या घूघट निकालने के लिये स्त्रियो द्वारा
खीचा जाने वाला ओढनी का पल्ला, छोर ।

उ०—घरती माहै नै थारं दरवार माहै इण सरीखी दातार कोई
नही । तिणसू लोवडी री वड माथा ऊपर खैच्यी ।

—जगदेव पवार री वात

२ देखो 'वडी' (मह., रू. भे.) (ह ना मा.) (उ र.)

उ०—१ हरि मन हरिखि हकारिय नारिय स्यउ निजजाति ।
वइसिइ वड लहुडाईय, भाई जिम ते पाति । —जयसेखर सूरि

उ०—२ वड जगड विसतारै, निधि मेघा तुभौ नभ ।—रामरासी

उ०—३ दीसंत दुयग पटदेवगति । दीवाण वडो वड देसपति ।

—गु रू. व.

३ देखो 'वट' (रू. भे) (उ र)

वडउ—देखो 'वडी' (रू. भे) (उ० र०)

उ०—तु ही रावत गोरल्ल, तु हीज दल माही वडउ, तु ही रावत
गोरल्ल, तु हीज मोरउ भाईडउ । —प च. ची.

वडकवार—१ देखो 'वडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—तरै किणही कहघो-काइक वडकवार वेटी वरस १५ तथा १६
री वर हुवै तिका जो च्यार पोहर छाती स लगाय सोवै ती बाहुडै ।
बीजू तो जीवै नही । —नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे)

वडकारण—वि [देशज] १ वडाई करने वाला, प्रससा करने वाला ।

उ०—केहर वाघ आद वडकारण, चक्रवत पगे एक सौ चारण ।
पति ची प्रीत धारिया पूरी, हेमराज अवदार हज्जरी । —रा. रू.

२ स्तुति व यशोगान करने वाला ।

वडकुवार—१ देखो 'वडकुमारी' (रू. भे.)

उ०—जेसळमेर सोढा रे विच मे कोटेचा रजपूत रहै । कोटेचा रै
वडकुंवार दीकरी सु पडिहारै रो मोहिल परणीजणानू आयी ।

—नैणसी

२ देखो 'वडकुमार' (रू. भे)

वडकौ—देखो 'वडकौ' (रू. भे.)

उ०—कामती त्वात्रै घन कूडा, पडिया दुख भुगतै रजपूत । यौं
वडकौ था वडका आगी, वटका हुय भडिया भगवूत ।

—ऊमरदान लाळस

(स्त्री वडकौ)

वडगात—वि—१ वीर, शक्तिशाली, बहादुर ।

उ०—१ प्रथम 'अभैपति' पूछियी, भूप करण्ठी भ्रात । अब भगडी
कीजै किसू, वसतसिध वडगात ।

—सू प्र

उ०—२ बाणी अवरळ सुध वचरण, गुण सागर बडगात । डोली पुगळ धावता, पय मळं कविपात । —डो. मा
रू भे—बडगात ।

बडगूजर—मं. पु.—एक धार्मिक वन या इम वन का व्यक्ति ।

उ०—भजि जात प्रजा मय घात भगेळा, पाटण तूअर कपपुरे ।
बडगूजर जाट प्रहीर तजें वळ, दाट लगा पुर राट दुरे । —रा. रू.
रू भे—बडगूजर ।

बडगोतण—देगो 'बडगोतण' (रू. भे.)

बडगोळी—स पु [म वट+राज गोळी] वट वटा का फल ।

बडवट—वि १ दुराप्रही, जिद्दी, हठी ।

२ विरुद्ध धाचरण करने वाला ।

बडचोत—वि.—१ दानवीर, उदार चित्त, महान ।

उ०—१ त्याग तियाग, रसण रूमाणा, सगराहा हिंदू मुप्रयोत ।
सिक्कमी न मिळें 'प्रहमी' सुत, चीतोडो गामद बडचोत ।

—जादुगाम प्राढी

उ०—२ लगधीर वटो लस लूट यणी वपि लाज । बडचोत
वरीसण वाज गरीव निवाज ॥ —ल पि

२ वीर, साहमी ।

उ०—तहारो मुजस अमर 'करणागत' वामुर जग वट्ट ह्वे वितोत ।
वाधारियो पाघटो विवर्त, चंगाडियो नही बडचोत । —द दा.
रू. भे—बडचोत, बडचीन ।

बडजांनी—म पु—बारात में वर के दादा, पिता, चाचा आदि मुनिय्या
पुरुष ।

उ०—वेली सहि चिगटैत, जेठी 'गोवरघन' जिसा, "कग्नाजळ"
अणवर वन्दे, बडजांनी वानैत । —वचनिका

बडणो, बडवी—देगो 'बडणो, बडवी' (रू. भे.)

उ०—कमळ वीय समिवळा, कळा घटती जग वदे । कळाहीण गळ
हुवे, जेम निस् पूनिम चदे । —गु. रू. व

बडणहार, हारो (हारी), बडणियो—वि० ।

बडिपोडो, बडियोडो, बडपोडो—मू० का० कु० ।

बडीजणो, बडोजवो—भाव वा०

बडत्यागो—वि.—दान वीर, त्यागमूर्ति ।

उ०—आवेर उदपुर मुरधर आबु, पूगो जस गुजरात परे । ताहरो
मुजम सदा बडत्यागो, "भगवन" बुदो साव भरै । —ओपो आढी

बडनाळ—स, स्त्री तोप ।

उ०—भुरजां भुरजां भिरडगड, बडनाळ गुडवकी, सोर धुआ रव

घोर सज, घर अवर टक्की, घाई चीज अचीत की, असमान कडवकी,
भूप तुराटा भेल्लिया, जुध कारण जक्की । —वी मा.
रू भे—बडनाळ, बडीनाळ, बडीनाळ ।

बडपण, बडपणो, बडप्पण, बटप्पणो—देगो 'बडप्पण' (रू. भे.)

(उ० र०)

उ०—१ हायी हीडत देख, वूकर लव-लव कर मरै । बडपण तरै
विवेर, क्रोध न आणै किसनिया । —अज्ञात

उ०—२ राणै प्रताप राव-भालदे सन्नजीता चाळा सटै । परण वाध
विगो भांजो यो पिमण, विगा बडप्पण नह घटै । —रा रू

बडफर, बडफरि, बडफरर—वि. [स वट्ट+फलक] रक्षा करने वाला,
रक्षक ।

उ०—कहर हर निज धरहर ऊपर कायरा, अतर सर सोक जरहर
अगत । जो वग 'तेज' हर इसी मोसर जठै, होऐ बडफर मोहर खुद
हत । —कवि करणीदान

स पु. [स वट्ट+फलक] ढाल ।

उ०—१ प्रति मीजें सुरण सुरण अमुर, जण जण छीजें प्राण ।
अटलगा चडियो अक्रम, कस बडफर केवाण । —रा रू

उ०—२ गज वाधा वहे उपगार पम्नी गुर, वदन वहे खग आकविया ।
(ते), ऊवारिया बडफरां मोटा, फोटा पावण हार किया ।
—महाराजा गजसिंह री गीत

उ०—३ मरिग्यां सू बलभद्र लोह माहिरे, बडफरि उछजतै विरधि ।
भलामली सति तोईज भजिया, जरासेन सिसुपाळ जुधि । —वेलि

उ०—४ बडफर टूक ऊऐ गजवाज, तडपफड मच्छ जिही सिरताज ।
मरद जरद पडे अनमध, कहवकह वीरह नाचि कमध ।
—वचनिका

रू भे—बडफर ।

बडवडगो, बडवडवो—देगो 'बडवडगो, बडवडवो' (रू. भे.)

उ०—वरियांम विडोवा बडवडत । जमदूत जोध सिलहा जडत ।
—गु रू व

बडवडियोडो—देगो 'बडवडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बडवडियोडो)

बडवेहडो—देगो 'बडवेहडो' (रू. भे.)

उ०—कोई मिरदार ते सयुधो नै मार भगाया सो सिरदार री फतै
हुई । पाछा आया तरै बडवेहडां सू वधाया, वधावा ठावा २ आदमी
तिका रा नाम सू गावीजण लागा । —वी स टी

बडबोर—देगो 'बडबोर' (रू. भे.)

उ०—कठे वजें बडबोर, कठे भाडी मोटोडी । कठे बोरटी नाव,
वणी देवा री छोडी । —दसदोल

घडवोरडी, घडवोरी—देखो 'वडवोर' (१) (अल्पा., रू. भे)

उ०—खेत मे घडवोरडियां आयोडी, गहर डम्मर न्हियोडी, जाणै
वडला ऊभा । —रातवासो

घडभाग—१ देखो 'वडभाग' (रू. भे)

२ देखो 'वडभागी' (रू. भे)

उ०—दोनू देरावर तणी, भटियाणी घडभाग । ओपे वर वरदळ
अभो, सोभे अचळ सुहाग । —रा. रू.

वडभागी—देखो 'वडभागी' (रू. भे.)

उ०—ए वडभागण राधका, कवण तपस्या कीन । तीन लोक तारण
तरण, सो थारै आधीन । —अज्ञात
(स्त्री. वडभागण, वडभागणी, वडभागिण)

वडमन—वि —१ उदार चित्त, दयालु ।

उ०—अति उत्तम दीजे उकति, सरसति हू सुप्रसन । गात्रा 'लखपत्ती'
गुण, महि पत्ती वडमन । —ल पि

२ विधाल हृदय, महान, श्रेष्ठ, ।

वडम—स पु —१ यश, कीर्ति, बडाई, विरुद, महत्व, विशेषता ।

उ०—१ कनक जडाव दयण 'करणावत,' ती कौघी कुण करै तम ।
आठ पोहर मोटा आथाणा, वाखाणा थारी वडम ।

—किसनो आढी

उ०—२ फव खट अन चहु फेर, घेर रावता सुभटा । करण जेर
केविया, वाय समसेर विकटा । मारू जैसलमेर, बळ आवेर वखाणू
नागद्र वीकानेर हेर दीठी हिव वाणू । रैणवा दियण कुमेर रिघ
वडम सुमेरज विसतरै । घज, वध 'सेर' रिया घणी, अक वेर फेर
अवतरै । —पहाडखा आढी

२ पूर्वज, वुजुगं ।

३ वडप्पन, महानता, सज्जनता ।

उ०—१ हिव चाली प्रवहण पूरी नै, करि जल तणी सभाई ।
चद्रदीप मांहे वैठा किम, आवै वडम वडाई । —वि कु

उ०—२ लछवर तास वारणा लीजे, वडम तणा कीजे वाखाण ।
—ह ना मा

उ०—३ प्रसण वखाण करै जोघापत, वडम तुहाळी साख वळ ।
अे जो जिके वडै ऊपेडा, वेडा तले राखिया खळ ।

—महाराजा गजसिंह री गीत

४ देगो 'वडी' (मह., रू. भे)

उ०—१ वडम पराक्रम वीर वर, विहर निडर वळ वाह । सर
"प्रताप" केई सुखी, छत्र घर तो कर छाह । —जैतदान वारहठ

उ०—२ वडम सुदातार हर भगत ताळा वीळद, सरसरी ऊवार

गुण अरत सरसै । वरसता सदन कर इद जिम 'वगतसी,' दरस ता
इता साभाव दरसै । —महाराजा वगतसिंह री गीत

रू. भे —वडम, वडिम, वडिमि वडमि, वडिव, वडिम, वडिमि,
वडीम, वाडम, वाडव, वाडिम ।

वडमन, वडमनौ, वडमन्न—देखो 'वडमन' (रू. भे)

उ—१ दिन छोटा मोटी रयण, थाढा नीर पवन्न । तिण रित नेह
न छाडियइ, हे वालम वडमन्न । —ढो मा

उ०—२ विघी-विघ घूहड दाख वचन्न । मेले नह चाल राणी
वडमन्न । —गो रू

वडमपण, वडमपणो—स. पु —१ वृद्धापन, वुजुगियत ।

२ देखो 'वडप्पण' (रू. भे)

उ०—विया जैचद छत वडमपण वेखता, लेखता छत्रपति भोक
लागं । तीसरी थयो ईसाण नप ताहरी, अभग "वीक" "जैतसी"
कीघ आगै । —द दा.

वडमि—देखो 'वडम' (रू. भे)

उ०—गढपति गहगीर हद विहद हेल हमीर । घरपति लखधीर
वडमि घण बावन वीर । —ल. पि

वडराग—स स्त्री.—देखो 'वडी-राग' (रू. भे)

उ०—घकै सिसोद मेवास चडिया घटा, गोळिया गाज वडराग
गवता । —दरली मोनीसर

वडरूप—देखो 'विडरूप' (रू. भे)

वडलाज—वि स्त्री —जिसको बहुत लाज आती हो, जो, लज्जाशील हो,
लज्जालु ।

उ०—रूप नरुकी राणिया, वडभागणि वडलाज । पाधारै आया
प्रथम महिल जिके महाराज । —रा रू

वडवडाळो—वि [अनु] बडे से वडा, सव से वडा ।

उ०—अवै अछाया दैतराय रोद्र काया रूप ए । अन्नड कराळा
वडवडाळा भड भुजाळा भूपए । —गु रू व

वडवानळ—देखो 'वडवानळ' (रू. भे)

उ०—आगलि रही करि अरदास, चाहूआण राउ लीलविलास ।
जउ सायर वडवानळ समइ, तउ कान्हउ तुरकानइ नमइ ।

—का दे प्र

वडवार—देखो 'वडवार' (रू. भे)

उ०—लगर वध दुलावत 'लाला', सुपह दात फरसी भळ सार । सर
डूचण दुसहा नवसहसा, वड करसण भोका वडवार ।

—लालसिंह राठीड वडली री गीत

वडवामुख—स पु [स वडवा+मुख] पाताल । (डि. को)

रू. भे.—बडवातु ।

बडवातु, बडवाती—स. पु.—बट वृक्ष का फल ।

उ०—बडवातु नइ धुणिल वली, वास वणसरी वेलि । चाकुमा
वाघइ भला, वकुल भद्रतरु वेलि । —मा का प्र.

बडवड—क्रि वि.—बट बड कर ।

उ०—बडवड वीजळ घार वहत । लटवड सकर सीस लहत ।
—गु रू व

बडस—देतो 'बिडस' (रू. भे.)

बडहठ—गुद, लडाई, जग ।

उ०—वीरम पहली वीरवर इतरें यह भाया । साहं राग वळ
सांगलें, बटहठ रचाया । —वी मा.

रू. भे.—बटहठ ।

बडहत्, बडहत्प, बडहत्प—वि [स बडहन्त] ? भाजानवाह ।

उ०—१ विदा किया भाटी गगवाहा, वेली सार्थ कमय दुवाहा ।
भारण दुयण करल महवेचें, बटहत्प 'नापी' धमर घवेचें । —रा रू.

उ०—२ भदल प्राण वरती इळा, जमराज जमाया । बटहत्प
पूगळ जिएवगत, भाटी मन नाया । —द. दा

रू. भे.—बटहत्, बटहत्प, बटहत्प, बटहत्प ।

बडहर—वि. [स बट्+हर ?] उच्च पुल का ।

स. पु.—पाउर से मिलता जुलता पत्तों वाला एक वृक्ष विशेष ।

रू. भे.—बडहर, बटहार, बटहर ।

बडहार—देखो 'बटहार' (रू. भे.)

बडां—वि वृद्ध (सामान)

बडांबडी—वि. स्त्री.—१ महान, बडी, समर्थ ।

उ०—बडांबडी किनियांणी बांका' पोप पूजगा पाळें । देस
विदेस माय धाळाळो, राज दरवार खळाळें । —कविराजा बाकोदास
२ देखो 'बडांबडी' (रू. भे.)

बडाई—देखो 'बडाई' (रू. भे.)

उ०—१ बडा बडाई ना करे, बडा न जोलींजोल । हीरा मुग से
ना कहे, लाम हमार मोल । —अज्ञात

उ०—२ कहें प्रोहित 'केहरी' अम्हा घरखट अधिकाई । साम
मुछळ सत्र बाळि, बडा जुघ तरें बडाई । —सू प्र

उ०—३ जिकी पवारा री आदमी आवें तिए आगें पवारा री पणी
बडाई करे । —नैणसी

बडाळ—देखो 'बटाळी' ।

बडाक—स. पु.—भेटिया ।

उ० ताहरा जान नू माय मे जावती बडाकां री सवण हुवी ।

ताहरा सवणिया कही—राज । सवण भला न हुवा छे, पाछा
फिरी —नैणसी

रू. भे.—बडाक, बडाक ।

बडापण, बडापणी—देखो 'बडप्पण' (रू. भे.)

बडार—देखो 'बटहार' (रू. भे.)

बडारण—स स्त्री [स अयदरिका, भाटकारिणी=भडारण] दासी
सेविका, बादी, दरोगा जाति की स्त्री ।

उ०—१ हाडा राव 'रतन' री हवेली कर्न डेरी हुती । राणी
राठीव वीकावतजी सत कियो । बडारण पातर खयास ऐ ११ बळी
—वां दा ख्यात

उ०—२ ताहरा बडारण पूजा करण नू आई । ताहरा मूळ,
बडारण नू पकड आपरी दोयड भाई पोट बाध अर उवैरा कपडा
पंहरन वोट ऊपर चडियो । —नैणसी

उ०—३ दात रा चुटा विना बडारण राखण री आखडी ।

—रा. सा स.

रू. भे.—बडारण, बडारण, बडारण ।

बडाळ—स. पु.—१ रप । (हि ना. मा.)

२ देखो 'बडी' (मह., रू. भे.)

उ०—'वरसिप देव' राजा बडाळ । वूंदेल चडें चम्मर बवाळ ।

—गु रू. व

रू. भे.—बडाळ ।

बडाळी—देखो 'बडी' (मह., रू. भे.)

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळी, वेद-धरम, चौ बघव बडाळी ।

—सू प्र.

उ०—२ हाडा गीठ जादव्व भाला हठाळा । वळें थस छत्रीस सार्थ
बडाळा । —वचनिका

उ०—३ सोळहस समत हूमी जोगण पुर चाळें । सम्मै एकासिथें
मास काति बडाळें । —गु रू वं.

उ०—४ 'करण' तरण परणतें बधावर, कर मुक्ता कवि विर्य
गल्याण । बटहर कहियो पथ बडाळी, जागळवा कहियो जेसाण ।

—द दा.

(स्त्री बडाळी)

बडाळीराग—देखो 'बडीराग' (रू. भे.)

उ०—रुडे बडाळीराग, हूर अछर सिव हरलिया । —गो. रू.

बडाचड, बडाचडी—१ देखो 'बडाचडी' (रू. भे.)

उ०—राव मालदे री कूपी जी सिरें चौकी हुवा । वीकानेर
डीडवाना सरीखा तपत पटें हुवा । तोही तद रिणमला रें घरें
इसडी बडाचड हुती ।

—राव मालदे री वात

२ देखो 'बडाबड' (रू. भे.)

वडिब, वडिम, वडिमि-स. पु.—देखो 'बडम' (रू. भे.)

उ०—घन वडिम गोवरघन धारण । चख यक सूर वियो चख चद ।
—ह ना. मा.

उ०—२ रथि हाथ रूक सम थर रेखगि, महिपति पग तिस एक एक मण । प्रम कमघज जिण वडिम पूजती, आप वडिम सुजि आचरण ।
—जैमल राठीड री गीत

उ०—३ धारण सलज चला चद धार । आच उठाया वडिम उच्चार । विच पुर घसे विजय वजि वाजा, जगपत सुता वर चद राजा ।
—सू प्र

उ०—४ उदह वेळा बडिम महारस दानेत, जीति जळ अचळ सीतळ प्रबळ जाण । कोक जळचर निजर दमगचर पाळ कव, मीन सागर गिरद चद छुमाण ।
—महाणा जगतसिंह सीसोदिया री गीत

उ०—५ भिडे पतसाह सै हाथि जिण भाजिया, वडिम विधि जास दरगह विराजे, इसै विरदै लिये श्री जगति ऊपरा 'सूर' सुत तपै खत्रवाट साजे ।
—केसोदास गाडण

वडियासधुर-स पु (स्त्री वडियासासु) धवसुर का बडा भाई ।

वडिस-स. पु [स वडिष, बलिष] मछली पकडने का काटा, वशी ।
(डि को)

रू भे वडिस ।

वडी देखो 'वडी' (रू भे)

वडीतीज-स स्त्री —भाद्रव मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया ।

वि वि —देखो 'तीज' ।

रू. भे.—वडीतीज ।

वडीदेव-स. स्त्री —१ श्री करणी देवी ।

उ०—सग वीतज आया उरा सार, किये वृव करनला कर पुकार ।

दरसण दिये ताछिन वडीदेव, साजो किये करही फली सेव ।

—रामदान लालस

२ भगवती, दुर्गा ।

वडीनाळ—देखो 'वडनाळ' (रू भे.)

उ०—वडीनाळ दस विखम, धोम सतपच मुहर धर । तीन राडि विच जीत, आयो रेवा नदि ऊतर ।
—सू प्र.

वडीम—देखो 'वडम' (रू. भे.)

वडीमां-स. स्त्री —पिता की भोजाई, ताई ।

वडीराग- स. स्त्री —देखो 'वडीराग' ।

बडु—१ देखो 'बडो' (रू भे) (उ० र०)

उ०—लक बडु घूटी लहु, पीडी चढतई मांसि । घूटण पणि घाठा जिस्या, काई न कीजइ पांसि ।
—मा. का. प्र.

२ देखो 'वट' (रू भे) (उ० रा०)

बडुआर—देखो 'बडो' (मह., रू. भे)

उ०—१ वड पह बडुआर भुजि कुळिभार धर सिएगार तपै लखधीर । विलसण गजवाज कुआर सकाज वसघा राज करे वर धीर ।
—ल पि.

उ०—२ साख सिएगार बडुआर सामी, नवें खड जास जसवास नांमी ।
—स. पि.

बडुजा—देखो 'विडुजा' (रू भे.)

बडुजावाह—देखो 'विडुजावाह' (रू. भे.)

बडेर-स पु [स. बडू-रा प्र अरे] १ बडा धर ।

२ 'कूटे' एव माटी से बनी हुई अनाज डालने की कोठी

(गोडवाड)

रू भे.—बडेर ।

बडेरउ, बडेरौ—देखो 'बडेरौ' (रू भे.)

उ०—१ बडउ बडेरउ भाइगु जाणि,सावक नइ धरि चडइ प्रमाणि । करम ना जोइ एवडा फेर, धरम घाडा छइ काठिआ तेर ।

—वस्तिग

उ०—२ ताहरा गोगंजी कही—थे बडेरौ छो, छोटा तोई सुसरा छो, पग बडा छो, थे वंसी, हू ले भाईस ।
—नैणसी

उ०—३ ताहरा बडेरौ लोक एकठा हूवा । दावड्या तेडीया । वात पूछी ।
—दैवजी बगडावता री वात

उ०—४ हेमी कहे-कूभा । धारं अजेस पिंड लोह नही लागी छे, वालक छे । तूं घाव कर । हू बडेरौ छू, घाव क्यू करू ? कूंभी कहे-हेमाजी । वरसे थे बडा पण पंगं म्हे बडा । था माहरी धान पलं मे लियी, थे माहरा चाकर, तै मे बडा, थे घाव करो ।
—नैणसी

२ देखो 'बडो' (अल्पा., रू. भे)

उ०—नान्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग बडेरौ रे । नास.करइ रवि नान्हडी, अघकार बहुतेरौ रे ।
—प च चौ.

बडे—समान, बराबर ।

बडेरौ—देखो 'बडेरौ' (रू भे)

उ०—सु 'जंती' 'कूपी' 'ती बडी वेड काम आया था, नै तद बडेरौ ठाकुरा में रावजी कहै जेसी भैरवदास हुती, तरं जेसंजी रावजी सु कह्यी ।
—राव मालदै री वात

बडोडी—देखो 'बडो' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ आ ती उण डाढाळा रा मन में सुहावै नही वे वारा भाला

तो ऊगिड-सूर बढोडो घाप री डाटा प्रळा रूपी दिव्वाय भाज
न्हाकनी । —वी स टी

उ०—२ चाररही, रे मारू पारं बढोडं चीरंजी ने मेल, राय
भरिये रे भाद्रवं रे, म्हारा गाडा म्हारू घर बसो । —लो गो.

बढी—देखो 'बढी' (रू. भे.)

उ०—१ बढिहण 'करनोन' घटा काळ नळ, 'भेडक' 'नापू' निवड
भड । सतयाट करं दहवाट 'सयमण', पण घाए वर त्रिधि
धिपट । —गु. रू वं.

उ०—२ ब्रज रासियो विगोयो वासय, बढी घवर कुण विसन
बड । —ह ना मा

उ०—३ छाजू, गिबी बडा रजपूत, नै कर्न बढी चित, तिरा घर
२० तथा २५ रजपूता रा वसाया । बढी बसती हई । —नैणमी

उ०—४ पुर त्रुटियो बढी मिघ पाई । सभिया मुज मारिया
धिपाई । —रा रू.

उ०—५ ते बढी चिटो नही जे बडड पडहउ, ते बढी नइ नही
जे बडड पड हड । —ब स

(स्त्री बढी)

बढी-डूहो-न पु —दोहे नामक छंद का एक भेद जिसके प्रथम व चौथे
चरण में ११-११ तथा दूसरे व तीसरे चरण में १३-१३ मात्राएँ
होती हैं । —वा दा.

उ०—त्रिधियां बढाराग माहं बढादूहा गवाडो । —वचनिका

बढी-बाप—देखो 'बढी-बाप' (रू. भे.)

बढी-बाव-स. पु —हाथी का एक रोग (मोनीजरा) जिसके कारण
उसका शरीर सूक जाता है और वह गाना पीना बंद कर देता है ।
वि वि —इस रोग में अगर हाथी को पृथ्वी चोरी जाय तो उसमें
शून के म्यान पर पानी निकलता है ।

बढी-राग—देखो 'बढी-राग' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिधिया रा बढा राग माहं बढा दूहा गवाटी ।
—वचनिका

उ०—२ नोवति भीगडी पढी नै रही छै । भेर नफेर, करनाळ
भमक नै रही छै । सुरणया री क्रहक पडि नै रही छै । बढी-राग
मिपवी वागि नै रहीमी छै । —रा. सा सं

बढी-राज-स पु [स. बद्र राज्य] राजा का राज्य, बड़ा राज्य ।

उ०—मोटी भायप होय, पिंठा हुवे पूजता, बढाराज रो गाथ लोग
सोह बुभना । नह को लोपे लीह, क घरे घबोलणा, एता दे
किरतार फेर नहीं बोलणा । —भोमिया वचन

बढी रावळी-स. पु.—गाव के ठाकुर का घर ।

रू. भे.—बढी रावळी ।

बढी-साट—देखो 'बढी-साट' (रू. भे.)

बढी-सांणीर-स पु—एक प्रकार का ढिगल-गीत जिसके-प्रथम व तृतीय
विषम चरणों में २०-२० मात्राएँ तथा द्वितीय व चतुर्थ सम
चरणों १८-१८ मात्राएँ होती हैं, साथ ही प्रथम द्वाले के प्रथम
पद में २३ मात्राएँ होती हैं । (रू.)

वि वि —इसका दूसरा नाम 'शुद्ध-साणोर' भी है ।

बहुवहुी-स. स्त्री.—सर्वं शक्तिमान देवि, दुर्गा ।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय, बढी । देवी बीहळा भन्नळा बहुवहुी
—देवि.

बहुाक, बहुात—देखो 'बढाक' (रू. भे.)

उ०—बंताळ चीर मिळिया विहद, सीकीतरि साकणि महासद् ।
मिळ समळ ग्रीध आमय भकय, जवकक रीछ बहुाक जकळ ।

—गु. रू व.

उ०—२ जरख रीछ बहुात, सिवा सत लस मलका । साकणि
ढायणि सकति, काळ भैरव काळका । —गु. रू व

बढी-स पु—१ देखो 'बढी' (रू. भे.)

२ देखो 'बढी' (रू. भे.)

रू. भे.—बढी ।

बढुडणी, बढुडणी—देखो 'बढुगी, बढुवी' (रू. भे.)

बढिडयोडी—देखो 'बढिडयोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बढिडयोडी)

बढ-स पु [स. वर्ष] १ घाय ।

उ०—बढियो मुखेस 'पती' बाढाळी, बढियो 'सुरजन' देख बड ।
गड चित्तोड गरव तण गरजं, गाढी गौ रणयभ गड ।

—पत्ता चूडावत री गीत

२ कटाव ।

उ०—तासणी री बाडी री नीपनी इकतीस ताडी री, नाळेर सी
मोटी, थोपरा बड री, गरी रं दळ री, हाथ सू छूट पडं तो काच री
सीसी ज्यूं किरचा-किरचा हुय जाबं । —रा. सा स.

३ काट-छाट ।

४ देखो 'बढ' (रू. भे.)

५ देखो 'बढी' (रू. भे.)

रू. भे.—बढी बढुड ।

बढणी-स स्त्री—१ आमातिसार में होने वाला पेट का दर्द, ऐंठन ।

२ काटना क्रिया का भाव ।

बढणी, बढवी—१ देखो 'बढणी, बढवी' (रू. भे.)

उ०—१ बड पडू विहर थाटा विळ द, भुजलग भट सेला भचडि ।

सुग वरुं कहै 'हटमल' सुतन, "अमूनि" जिम खाटै अचडि ।

—सू प्र.

उ०—२ रजपूता रँ स्त्रिया री तो घरम पती रँ लारँ काठ
चढ जाणी तँ रजपूता री घरम स्याम घरम सारू तथा निजकुळ
सारू तरवारा री घाग स चढ जावणी । —वी स टी

२ देखो 'बघणी, बघवी' (रू रू)

बढणहार, हारी (हारी), बढणियो—वि० ।

बढियोडी, बढियोडी, बढियोडी—भू० का० कृ० ।

बढीजणी, बढीजवी - भाव वा० ।

बढवार—देखो 'बढवार' (रू भे)

बढाणी, बढावी—देखो 'बढाणी, बढावी' (रू. भे.)

उ०—पण म्हारी मन ती श्री इज कँवँ कँ खुदा रा इण रामतिया
री अय काई जरुरत है, इण ती अणगिण मिनखा रा गळा बढाय
दिया बढावतो इ जावँला । —फुलवाडी

बढाणहार, हारी (हारी), बढाणियो—वि० ।

बढायोडी—भू० का० कृ० ।

ढाईजणी, बढाईजवी—कर्म वा० ।

बढायोडी—देखो 'बढायोडी' (रू भे)

(स्त्री बढायोडी)

बढाळ, बढाळी, बढाली—स स्त्री.—तलवार ।

उ०—१ बढाळ सेल के बणाय, कीघ ओपमँ कळा । जिके कुमार
वीज जाणिए, चचळा अचचळा । —सू प्र.

उ०—२ वीजली परि अलकती, तीन्ही घाराळी बढाली अणी आळी
—व स

बढावणी, बढाववी—देखो 'बढाणी, बढावी' (रू. भे)

उ०—२ इण ती अण गिण मिनखा रा गळा बढाय दिया, बढावतो
इज जावँला । —फुलवाडी

बढावणहार, हारी (हारी), बढावणियो—वि० ।

बढाविओडी, बढावियोडी, बढाव्योडी—भू० का० कृ० ।

बढायोजणी, बढायोजवी—कर्म वा० ।

बढावियोडी—देखो 'बढायोडी' (रू. भे)

(स्त्री बढावियोडी)

बढियोडी—१ देखो 'बढियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'बघियोडी'

(स्त्री बढियोडी)

बढूलियो—देखो 'बढूलो' (अल्पा, रू भे)

उ०—घुळि जु ऊठी छै । त्यँ छेह माहँ । सूरज किसी देखिजँ छँ ।
जैसे बढूलिया (बढूलिया) माहँ पात दीसँ । —बेलि टी

बढू—१ देखो 'बढ' (रू. भे.)

उ०—सग्राम खडग वाहत सनड्ड । वपँ पळ तडळ ऊळळ बढू ।
—गु रू व.

२ देखो 'बढ' (रू. भे.)

३ देखो 'बढो' (मह, रू भे.)

बढूणो, बढूवो—१ देखो 'बढणी, बढवी' (रू. भे.)

उ०—अरण कियो उछाह, वीरातन बढियो । मारू लोहमराट,
चमू सक बढियो । —किसोरदान वारहठ

२ देखो 'बघणी, बघवी' (रू. भे.)

बढियोडी—१ देखो 'बढियोडी' (रू भे)

२ देखो 'बघियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बढियोडी)

बढी—स पु—१ रूपये पैसे के अभाव में अणमुक्त होने के लिए दिया
'जाने वाला सामान, पशु आदि ।

२ 'बघन के कारण शरीर मे तस्सी का होने वाला निशान ।

३ देखो 'बढ' (मह, रू भे)

४ देखो 'बढ' (मह, रू भे)

बण—सर्व.—१ उस, उन ।

उ०—१ आप वण ठोड कर जोडि कीधी अरज । वीकपुर पघारी
इद्र बाई । —भे. म.

उ०—२ खेल भुजा बळ खेलणी, आहव मन ऊमेल । वरदायक
दीठा वणँ, वण फुळ री वार्धल । —पा. प्र.

२ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—बण दीपक मंदिर कसी, वण पूता परिवारः। कसी महेली
कत वण. घत वण अळप अहार । —ढो मा.

३ देखो 'वणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ चदण नीरू वण चरँ, वण नीरूँ सण खाय । ए हर ढीलो
करहली, जित वरजू तित जाय । —जलाल बूबना री बात

उ०—२ खेत कवळा । वाजरी मोट मुग वण घणी । —नैणसी

३ देखो 'अण' (रू भे.)

४ देखो 'वत' (रू. भे)

उ०—जिण दाहे वण हर घरइ, नदी खळकइ नीर । तिण दिन
ठाकुर किम चलइ, घण किम वाघइ घीर । —ढो मा.

रू भे.—वण, विण, वण, विण ।

अल्पा, —वण, वणी, वणी ।

बणक—देखो 'वणिक' (रू भे.)

उ०—कँ पूजँ लोकत नूँ, कँ पूजँ अरिहत । 'बांका' मत विस्वास
कर, ए सह वणक असत । —बा दा.

बणकर—देखो 'बुनकर' (रू भे)

उ०—सोइ नइ मराणी भा, कसारा तिहा कोडि । बणकर नइ
बालंद पणि, घसता हाया जोडि । —मा. का. प्र

बणकल—देखो 'बणिक' (भ्रत्पा, रू भे)

बणगत स म्त्री—१ मेल जोल ।

२ कपडे चुनने का ढग या प्रकार, चुनाई ।

रू भे —बाणक ।

बणचरि—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—सूयर देखी मेलिहउ गारु, प्ररजुन सिउ कुणु करउ गघारु ।
तिण्णि भिण्णि मेलिहउ बणचरि बांगु, ऊडिउ गयण्णि हुउ अग्रमारु ।
—प प च

बणज—१ देखो 'बिण्णज' (रू भे)

२ देखो 'बाणज्य' (रू भे)

बणजणी, बणजयो—देखो 'बिण्णजणी, बिण्णजयो' (रू भे)

बणजणहार, हारी (हारी), बणजणियो—वि० ।

बणजिप्रोटी, बणजियोटी, बणज्योटी—भू० का० क० ।

बणजोजणी, बणजोजयो—भाव वा० ।

बणजार—१ देखो 'बिण्णजार' (रू भे)

२ देखो 'त्रिण्णजारी' (मह, रू भे)

बणजारा—देखो 'बिण्णजारा' (रू भे)

बणजारी—देखो 'बिण्णजारी' (रू. भे)

बणजियोटी—देखो 'बिण्णजियोटी' (रू भे)

(स्त्री बणजियोटी)

बणठण—देखो 'बणठण' (रू भे)

बणठणी, बणठयो—देखो 'बिण्णठणी, बिण्णठयो' (रू भे)

बणठणहार, हारी (हारी), बणठणियो—वि० ।

बणठिप्रोटी, बणठियोटी, बणठयोटी—भू० का० क० ।

बणठोजणी, बणठोजयो—भाव वा० ।

बणठियोटी—देखो 'बिण्णठियोटी' (रू. भे)

(स्त्री बणठियोटी)

बणणी, बणवो—देखो 'बणणी, बणवो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ करे तिकारा काठला, कठ चपत कुयराह । बघनहिपा
ज्या सिर बणै, कीरत जेण कराह । —बा. दा

उ०—२ सगो अमीणो माहिबो, मदन मनोहर गात । महाकाळ
भूरत बणै, करण गयदा घात । —बा दा

उ०—३ भाण उदय इव विधि बयण, कुण तिण क्खण करेह ।
त्युही हुकम 'पातल' तणो, बणवो त्युही बरोह । —जंतदान वारहट

उ०—४ आमा रूप जोम ऊफणिक । बणियो अनक दूसरै वाणिक ।
—सू. प्र.

उ०—५ साजिहानजो रं वेटा ४ हुवा । द्वारासाह, साहसुजी, श्रीरग-
जेव, मुरादवगस । सू इणा रं आपस मे बणै नही । —द दा.

उ०—६ श्रीरगसा अजमेर सु, कूच करता वार । बणी अनायत गान
सू, काने मुणी पुकार । —रा र

उ०—७ अग नयणी अगपति-मुग्गि, अगमद तिळक निलाट ।
अगरिपु-वटि म्दर बणी, मारु अइहइ घाट । —डो मा.

उ०—८ वसूमल केसरिया हरी मरज सपताळू मोसनिया नारगिया
सपेता जाणै तिजारा की वाडी फूनी छै । ऊपर उणहीज बणता
हुधियार बाघजै छै । —रा सा. स

बणणहार, हारी (हारी), बणणियो—वि० ।

बणिप्रोटी, बणियोटी, बणयोटी—भू० का० क० ।

बणोजणी, बणोजयो—भाव वा० ।

बणता—देखो 'बनिता' (रू. भे)

बणराह, बणराई बणराज, बणराय,—१ देखो 'वनराज' (रू भे)

उ०—१ निसिह आविउ वगत हुठ मीत तणउ अत । दक्षिण दिसि
तणउ, सीतल वाठ वाइ विहमइ बणराह । —रा सा. स.

उ०—२ थळ भूरा वन अगारा, नही सु चपठ जाइ । गुणै सुगधी
मारयो, महकी सह बणराह । —डो. मा

उ०—३ बणराय भार अदार सग्या, विग्णु वाणी एह । जेजु
जाण्यु तेतनु, बसाण्यउ, भणद पदम विसल । —रुकमणी मगळ

उ०—४ अत तपिये तन अवन, दिये परजन सरदाई । सुधा पाय
ससि करे, जेम बणराय सवाई । —रा रू

उ०—५ विद्या सवि मिद्धिहि गई, जा पेग्द पणराह । आहेटी
आरोटीउ ता एकु सूमर घाह । —प प. च.

बणराय—देखो 'वनराज' (रू भे)

बणरावमुनी—स पु—नारद मुनि ।

बणवास, बणवासु—देखो 'वनवाम' (रू. भे.)

उ०—वारह ए वरस बणवासु नाठे हीडिवु तेरभई ए । अम्हि किम
ए जाणिसु तुहितउ वनवासु जु तेतनु ए । —प. प. च.

बणवीरोत—म पु—राठीड वश की एक उण धार्या या इस धार्या का
व्यक्ति ।

बणसटी—देखो 'बणस्टी' (रू भे.)

बणसणी, बणसवो—देखो 'बिण्णसणी, बिण्णसवो' (रू भे.)

उ०—गाटा मे नाव नाव मे गाडी, लेख तणा कुण भेद लदे । 'श्रोपा'
राम तणी गत अवळो, बणसै दची' र दखण यदे । —श्रोपी आढी

वणसणहार, हारो (हारी), वणसणियो—वि० ।

वणसिओडो, वणसियोडो, वणस्योडो—भू० का० कृ० ।

वणसीजणो, वणसीजबो—भाव वा० ।

वणसियोडो—देखो 'वणसियोडो' (रू भे)

(स्त्री वणसियोडी)

वणस्टी—स. पु [स वणयष्टि] कपास के पौधे का डठल ।

रू. भे.—वणस्टी, वणस्टी, वनसटी, वणसटी।

वणस्सइ—देखो 'वनस्पति'

उ०—सात लाख जीव प्रथवी माहि, साते उप साते तेउ माहि ।

वाउकाई जीव साते विचारि, दस लाख वणस्सइ मभारि ।

—वस्तित

वणाक—१ देखो 'वणाक' (रू भे.)

२ देखो 'विनायक' (रू भे.)

वणाकियो—देखो 'वणाक' (अल्पा., रू भे)

वणाडणो, वणाडबो—देखो 'वणाणो, वणाबो' (रू. भे)

वणाडियोडो—देखो 'वणाणियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वणाडियोडी)

वणाणो, वणाबो—देखो 'वणाणो, वणाबो' (रू भे)

वणाणहार, हारो (हारी), वणाणणियो—वि० ।

वणायोडो—भू० का० कृ० ।

वणाईजणो, वणाईजबो—कर्म वा० ।

वणायतो—वि—१ प्रभाव पूर्ण व्यक्तित्व वाला ।

उ०—तरं सहाणी लायक ठावी वणायतो डील देखि उठि मिळियो ।

—जगदेव पवार री वात

२ सुन्दर, तेजस्वी ।

वणायोडो—देखो 'वणायोडो' (रू भे.)

(स्त्री वणायोडी)

वणारसी—१ देखो 'वनारसी' (रू भे)

२ देखो 'वनारस' (रू भे)

उ०—वरहार मथुरा अवध्या वणारसी चदेरी वल्लिवाल महवर महोव हरियाणउ भयाणउ ।

—व स.

वणारिस—स पु [स वाचनाचार्य] वाचनाचार्य (उ र)

वणाव—देखो 'वणाव' (रू भे)

उ०—१ श्राव कठ चव अक्खरा, अत दोय ठहराव । यो सुवच घट अक्खया, विगडे कठ वणाव ।

—र ज प्र

उ०—२ मन हरखे तन उच्छव मोटे, कियो वणाव 'अभे' नवकोटे ।

सुरग वसन सुदर तन सोहे, वेखि रूप रति भूप विमोहे । —रा रू.
उ०—३ जुद्ध रा भागळ मरियोडा घरे आया सो पति मरिया पछे
विधवा रे काई वणाव । —वी स. टी

वणावटी—देखो 'वणावटी' (रू. भे)

उ०—कोई वीर पुरुष की स्त्री वणावटी सूरवीराने कहे हे वणावटी
रावता सीह मत वाजो थारे माहे सीह वाजो जेडी सकती नहीं ।
—वी म टी

वणावणो—वि—१ जो बनाने योग्य हो, बनाने वाला ।

२ जो बनाने का माध्यम हो, जिससे कुछ बनाया जाय ।

उ०—घाव काळजे घला निजरं, भिनखा घर वणावणो । पर कारजा
देव सधेडो, अह निस आडो आवणो । —दसदेव

वणावणो, वणावबो—देखो 'वणाणो, वणाबो' (रू भे)

उ०—१ वेह समत्य वणावियो, वाघ डाच जम वत्य । जिए माभल
लग जाडिया, माय जाय गज मत्य । —वा. दा.

उ०—२ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, पुन उग्र तप करि पाविया ।
सार 'जसवत' आदि स्रुतिवर, विविध ग्रथ वणाविया ।

—सू प्र.

वणावणहार, हारो (हारी), वणावणियो—वि० ।

वणावणोडो, वणावियोडो, वणाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वणावोणो, वणावोणबो—कर्म वा० ।

वणाविवि—देखो 'वणाव' (रू भे)

उ०—गयण दास खवास अणै, अवर मन भारणी । घर वाल्ही
आप री तिके पट घूघट ताणी । उण वणावि आमसि प्रभू दरसाव
न पास । सुख छूटी सभारि दीह कट्टी ते सासे । —रा. रू

वणावियोडो—देखो 'वणायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वणावियोडी)

वणास—१ देखो 'विनास' (रू भे)

उ०—१ 'पाल' तरणै ग्रह पागडो, आखी म्हे अरदास । अव
सूरजमळ आवियो, वधे न वर वणास । —पा प्र

उ०—२ वणाय खाग चाढि वाढ, ओपवे उजास रा । वणत वीच
नीर वाधि, रूप मे वणास रा । —सू प्र

२ देखो 'वनास' (रू. भे.)

वणासणो, वणासबो—देखो 'विनासणो, विनासबो' (रू भे.)

उ०—सु आनै रे देस माहे काळ पडे, तद थोरीए एक जिनावर
वणासियो । —नैणसी

वणासणहार, हारो (हारी), वणासणियो—वि० ।

वणासिओडो, वणासियोडो, वणास्योडो—भू० का० कृ० ।

वणासीजणो, वणासीजबो—कर्म वा० ।

वर्णासिपोडो—देतो 'विनासिपोडो' (रू भे)

(स्त्री. वर्णासिपोडो)

वर्णिक-स. पु [स वर्णिक] (स्त्री वर्णिमाणी, वर्णिगोणी) १ व्यापार

द्वारा धरणा जीवन निर्वाह करने वाला, बनिया, व्यापारी।

उ०—करै वर्णिक कुल पन्ध कर, हित माहे त्रित हाण । वर्णिक
दनी दे विरचियो, उर इचरज मत भाण । —वा दा

२ व्यापारी नमुदाय।

उ०—महेगदत नामं धनवंत, सहु वर्णिक माहे सोभत ।
—वि कु

३ वेदक।

उ०—वर्णिघांरो न्हनी नही, रुहनी मूपापी । मोनारी जामी पगे,
(पह) भावज वृमानी । —प्रजात

रू. भे—वर्णिक, वर्णिग, वाणिक, वर्णिक, वर्णिक, वाणिक, वर्णिक, वर्णिक ।
धना—वर्णियो, बनियो, वाणियो, वर्णियो, वाणी, वर्णियो,
वर्णियो, वाणी ।

वर्णिबपरा-स पु. [स वर्णिक+पर] १ वर्णिवा या व्यापारी होने का
भाव ।

२ बनिये का स्वभाव ।

वर्णिग्यो-स. पु.—सुत मोनने के परीते के ऊपर या टट। जिसमे मतुल
रहता है ।

रू. भे—वर्णिग्यो ।

वर्णिज-देतो 'वर्णिज्य' (रू. भे) (उ. र)

उ०—गज वृंग नर पादगी, पाच गया प्रत्येक । फोटा जेहन
पाच सी, वनी वर्णिक मुविकेक । —वि कु

वर्णिजारी-देतो 'वर्णिजारी' (रू. भे)

उ०—जगमिष नउ आधिठ दुउ, कालकुमार जई लगद मुउ ।
वर्णिजारी नी वात भात्रली, जरासिधु भावट तूमू भणी ।
—प प च.

वर्णिज-देतो 'वर्णिज्य' (रू. भे)

उ०—करै वर्णिज एक हट्ट, रूप सवकनत ए । सागा चीतार
मुवगमल्ल, देममी वमत्त ए । —गु. रू व

वर्णिगोणी-स स्त्री १ एक वर्मानी कीटा ।

२ एक पीषा विशेष ।

३ वर्णिक जानि की स्त्री, वर्णिक की स्त्री ।

रू. भे—वर्णियाणी, वर्णियाणी, बनियाणी, वाणिक वाणिकी,
वर्णियाणी, विराणी, वर्णिक, वाणिकी, विराणी ।

वर्णियो—देतो 'वर्णिक' (रू. भे)

उ०—जग अपजस देव नही, देव स्वारय दाय । जिम तिम कर
वर्णियो रहे, वर्णियो तेण कहाय । —वा दा

वर्णो-स स्त्री. [सं. वनज प्रा वरणी] १ कपास का पोषा ।

१ कपास का टोटा ।

२ करघा ।

४ देतो 'वनी' (अल्पा, रू. भे) (उ. र)

५ देतो 'वनी' (रू. भे)

६ देतो 'वणी' (अल्पा, रू. भे)

७ देतो 'वणी' (रू. भे)

रू. भे.—वर्णिक वर्णो ।

वर्णा, —वर्ण, वर्ण ।

वर्णोग्यो—देतो 'वर्णोग्यो' (रू. भे)

वर्णोठणी-वि स्त्री. [धनु] १ जो वन-ठन कर तैयार हो, सुमजिन,
तैयार ।

२ किसी निर्णायक स्थिति में भाई हुई, व्यवस्थित ।

ज्यू—वर्णोठणी वात विगठणी ।

वर्णोमग-स पु [स वनीपक, वनीपक,] १ गिदुन, भिगारी (उ. र)
२ याचक ।

वर्णोमगट्टो-स पु—एक प्रकार का दोष जो दानशाला का भोजन
ग्रहण करने में लगता है । (जैन)

वर्णोमगदोस-स पु—भिगारी जैसी दीनता दिलवाने पर लगने वाला
दोष । (जैन)

वर्णोपण-वि—१ आतक फेंकने वाला, आतकित करने वाला ।

उ०—'तेजो' नेजा ऊगरा, थोरै तेज तुरग । कहर वर्णोपण 'चदकी'
मुहर अणी रण जग । —र. रू.

२ वनाने वाला ।

वर्णोच-स पु—प्राभूपण । (अ. मा.)

वर्णोपडी-देतो 'वर्णोपडी' (रू. भे)

वर्णोडो-देतो 'वर्णोडो' (रू. भे)

वर्णोद-देतो 'विनोद' (रू. भे)

वर्णो-वि—१ अचल, अटल, शाश्वत ।

२ देतो 'वर्णियोडो' (रू. भे)

वत्-वि [सं. वत्] १ किसी वस्तु की सम्पत्ता प्रगट करने के लिये सजा
शब्दों के आगे लगाया जाने वाला प्रत्यय ।

२ समान, तुल्य ।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य । आरण्य-रुदन वत् भी अयोग्य ।

अव्य—१ कण्ट ।

—ऊ. का.

२ दया ।

३ विस्मय ।

४ सुखी ।

५ आमत्रण ।

६ देखो 'वित' (रू भे)

उ०—सत रा हरचद सुमत रा सागर, चित रा विलंद मुदत रा चाव ।

वत रा व्रवण प्रभत रा वाधण, नत रा तार मुकत रा नाव ।

—र. ज प्र

७ देखो 'वात' (रू भे)

उ०—वद रिख स्र ग लीमंजर वत ।

—राम रासी

अल्पा —वती ।

वतक—देखो 'वतक' (रू भे)

उ०—आवि विदेसी वल्लहा, छळ करि छेतरियाह मतवाळा री
वतक ज्यू, पिय नइ परहरियाह ।

—ढो मा

वतकली—देखो 'वतल' (अल्पा, रू भे)

वतका, वतडी—देखो 'वात' (अल्पा, रू भे)

उ०—वतका जग जाहर हुई, साप्रत आसुर आय । तनुजा सांम दैन
तजी, मिळी देवगत माय ।

—पा प्र.

वतकाव, वतगाव—देखो 'वतळाव' (रू. भे)

उ०—आयी साथ निवाव रै, कोटै हदी राव । मिळिया स्त्री महाराज
सू, साह कियो वतकाव ।

—रा रू

वतन—स पु. [फा] १ जन्म-भूमि, स्वदेश ।

उ०—सो एक समय उठै काळ पडियो सी पेट भरणी री जरूरत सू
वतन छोड नीसरयो ।

—नी प्र

२ देश, राष्ट्र ।

उ०—ईराण वतन हिम्मत अयाह । सिरविलद तुज सिरला
सिपाह ।

—वि स

वतरणो—देखो 'वतरणो' (रू भे)

वतळ—देखो 'वतल' (रू भे.)

वतळाणी, वतळावी—१ ललकारना ।

उ०—तद रेवारिया कही, साहिबी कुवरसी साखल री छै । तिरण
कही म्हाारा रजपूत था पल्लू में मारियो । तेरे वर भे ले जावा छां
अर थाना मारा छा । तद अँ मोटियार था सताव खड कोसा पाचा
साता आय पोहता । आण वतळाया अँ घिरिया सो रीठ वागो ।

—कुंवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वतळाणी, वतळावी' (रू भे)

उ०—ताहरा पचाइण तीसा असवारां सू वीरमदेजी रै ऊपर आयी ।
नै वीरमदेजी नू वतळायी ।

—नैणसी

३ देखो 'वताणी, वतावी' (रू. भे.)

वतळाणहार, हारो (हारी), वतळाणियो—वि० ।

वतळायोडी—भू० का० कृ० ।

वतळाईजणी, वतळाईजयो—कर्म वा० ।

वतळायोडी—१ ललकारा हुमा ।

२ देखो 'वतळायोडी' (रू भे.)

३ देखो 'वतायोडी' (रू. भे)

(स्त्री. वतळायोडी)

वतळाव, वतळावण, वतळावणी—देगो 'वतळावण' (रू भे)

उ०—१ निवाव थटैरी, दूसरी भोवतगा ठिकाणा मूँ-इणामूँ चूक
री वतळावण थी ।

—द. दा.

उ०—२ पछै रामदासजी वरछी फेरनं बुढी री दीधी इका रै छाती
में । सो सास जाती रयो । तरं बीजा इका रै ने रामदासजी रै
वतलावण हुई ।

—रा सा सं.

वतळावणी, वतळावयो—१ देगो 'वतळाणी, वतळावी' (रू भे)

उ०—मुण एम वचन प्रजळ असुर, इसी तेज दरसावियो । वमरीर
वाष वतळावियो, जाणै नाग सिजावियो ।

—सू. प्र

२ देखो 'वताणी, वतावी' (रू भे)

वतळावणहार, हारो (हारी), वतळावणियो—वि० ।

वतळाविओडी, वतळावियोडी—भू० का० कृ० ।

वतळावीजणी, वतळावीजयो—कर्म वा० ।

वतळावियोडी—१ देखो 'वतळायोडी' (रू भे.)

२ देखो 'वतायोडी' (रू. भे)

(स्त्री वतळावियोडी)

वतसर—देखो 'वत्सर' (रू भे)

वतहा—स पु [फा] अरव के मदीना नामक शहर का नाम ।

उ०—मदीना री नाम वतहा ।

—वा दा. ब्यात

वतागर—स पु—सलाह मशविरा करने वाला, परामर्श करने वाला,
सलाहकार ।

उ०—जरा आपरा उमराव वतागरां नै तेडीया । पूछयो-थाने ती
म्हाका राज की काई चित्ता फिकर नही अर नानो मामोजी करै सो
हुवै छै ।

—राव त्रिणमल री वात

वताणी, वतावी—देखो 'वताणी, वतावी' (रू भे)

उ०—जिम ककण विघ भूप जताई । वीर अग्र तिम जती वताई ।

—सू प्र

वताणहार, हारो (हारी), वताणियो—वि० ।

वतायोडी—भू० का० कृ० ।

वताईजणी, वताईजयो—कर्म वा० ।

वतायोडी—देखो 'वतायोडी' (रू. भे)

(श्री वतायोटी)

वतावणी, वतावणी—देगो 'वताणी, वतावी' (रू भे)

उ०—तमासी वतावण वीन हत तैलीया, लार रिजवार गोरीं सहत तं लीया । भट भुजा ईस डेरू भजव भेलिया, या गजव रीस गिए मीस भलवैलीया । —महादान महद्द

वतावणहार, हारी (हारी), वतावणियो—वि० ।

वतागिओटी, वतावियोटी, वताव्योटी—भू० का० क० ।

वतावीजणी, वतावीजयो—भमं वा० ।

वतावियोटी—देगो 'वतायोटी' (रू भे)

(श्री वतावियोटी)

वती-वि —१ श्रेष्ठ, उत्तम, वटिया ।

० बहुत, अधिक ज्यादा ।

३ अक्षय, स्थायी ।

स पु.—१ मरवागी मवानों मे रोगनी के निमित्त प्रजा मे लिया जाने वाला कर ।

० देगो 'वती' (रू. भे)

उ०—नही तार, नहि टैम है, नही वती मे तेन । आ वाल मन रे मते, मारवाड नी जेल । —अशात

३ देगो 'वान' (रू भे)

उ०—विसभर जिजा भा वेम माना वती, उटपति गमीनट प्राप वाळ । —रू

वतीशर-म पु.—कपट । (अ मा)

वतीत—देगो 'व्यनीन' (रू भे)

उ०—आया वगियां प्रापणी, श्रीगम भई वतीत । १७३६ गुण वाळी लागी वरम, चाळी सरम मजोत । —रा रू

वतीतणी, वतीतवी—देगो 'व्यतीतणी, व्यतीतवी' (रू भे)

उ०—सी थाग नट उगिया, किता वतीता काळ । श्री जायल गमा वर, गोया चाफू गाळ । —पा प्र.

वतीतणहार, हारी (हारी), वतीतणियो—वि० ।

वतीतिओटी, वतीतियोटी, वतीत्योटी—भू० का० क० ।

वतीतीजणी, वतीतीजयो—भाव वा० ।

वतीतियोटी—देगो 'व्यनीतियोटी' (रू भे)

(श्री वतीतियोटी)

वतूळियो—देगो 'वतूळी' (अत्पा, रू भे.)

उ०—१ जिसे एक वतूळियो आयी सू रेत सू कपडा भरीज गया । —द दा

उ०—२ रेढा नै माईता री वात मन परवारी मानणी र्हे पठी । दुमक्या भरता वै येह सू वारं निकळिया भर निकळतां ई वतूळिया

रे वेग जैमार्ण री सीव कानी दडवडा सोकट मनाई । — फुलवाडी वतूळी—देगो 'वतूळी' (रू भे)

उ०—एक भरपी ए वतूळी घावी विनायक, विणजारा के वेल ज्यूं । —लो गी

वतेरी—देगो 'वतेरी' (रू भे)

उ०—गारी मीटं सू सरस है, भळं वतेरा पानडा । देस विदेस दुवाया वरुं, मुमी डाकधर पानडा । —दसदेव

वतं-स पु—प्रकार । (वाकीदास)

वतोपट-वि [श्री वतोकी] १ अत्यधिक बोलने वाला, वाचाल ।

२ अधिक बात बनाने या कहने वाला ।

रू भे —वतोकट ।

वती—१ देगो 'वत' (अत्पा., रू भे)

० देगो 'वती' (रू भे)

वत्त—देगो 'वात' (रू भे)

उ०—१ मुग्धी कमधा ऊधरा, उत मेवाळा वत्त । सार्ये साहम भल्लियो, चाते हात परत्त । —रा रू

उ०—२ इणिए परि ऊमा देवडी, जाणी मारु वत्त । सु प्रभाति गहिवा भणी, पिगळ पाणि पहुत्त । —दो मा

उ०—३ मरदिया जेग जगमत्त मत्त, वढोळि डल्ल मारिय मुगल्ल । रळनळइ रत्त गोगट मपत्त, मम्मळइ सत्त विसथरइ वत्त ।

—रा ज सी.

उ०—४ राइ नट नैराविया, नही विथरथा, वत्त । वाडव को वेन्या जपड, टालि पडते रत्त । —मा का प्र

वत्तडी—देगो 'वात' (अत्पा, रू भे)

उ०—१ सूरा पूरा वत्तडी, सूरा कान सुहाय । भागल अदवा राजवी, मुगता ही टळ जाय । —राव रिणमल री वात

उ०—२ रेह घनी चौटं हुगा, अममर करा अदोस । डेरा डेरा वत्तडी, डेरा डेरा जीम । —रा ह

२ देगो 'वाती' (रू भे)

वत्ती—१ देगो 'वत्ती' (रू. भे)

वत्तीस - देगो 'वत्तीम' (रू भे)

उ०—वत्तीस आबडी री निवाहणहार, वैरिया विभाडणहार । —रा सा स.

वत्ती-वि० [श्री वत्ती] अधिक, बढकर ।

उ०—१ साच रे पखे वधण गी दुख दुनिया रे सरव सुखा सूं घणी वत्ती है । —फुलवाडी

उ०—२ थारं-सूं वत्ती लिखमी श्रीर कुण हुमी । —बरसगाठ

रू. भे —वती, वती ।

वत्सपुत्र—स पु [स. वस्त्र-पुण्य] वस्त्र-दान से होने वाला पुण्य । (जैन)

वत्सिरि—क्रि वि —विस्तार से ।

उ०—अजितनाथ वर भवण नदि मडिय गुरु वत्सिरि ।

—अभयतिक

वत्सु—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—जिम गगाजल जलइ मभि सुपवित्त भणिज्जइ । जिम सोह
गह वत्सु मभि ससहरू वन्निज्जइ । —ए जै. का. स

वत्नी—देखो 'वात' (अल्पा., रू भे)

उ०—दुगम पिनाक सहल तो दीसँ, विगत हर्म सुण वत्नी । उडँ मै
वसुधा विण सत्री, कीधी वार इकीसँ । —र. रू

वत्नीस—देखो 'वत्तीस' (रू भे)

वत्स—स पु [स] १ वेटा, पुत्र ।

२ गाय का बछड़ा ।

३ किसी जानवर का वच्चा ।

४ छोटा वच्चा, शिशु, बालक ।

५ सतान, श्रीलाद ।

६ इन्द्र ।

७ कस का एक अनुचर ।

८ एक प्रचीन देश जहाँ का राजा उदयन था । इसकी राजधानी कौशाधी थी ।

रू भे —वच्छ, वछ, वछक, वाच, वाछ, वच्छ, वच्छि, वछ, वाच, वाच्छि, वाछ ।

अल्पा —वच्छडी, वच्छ, वछडी, वछरी, वछवी, वछियी, वछी
वाछडियी, वाछड, वाछडी, वाछरु, वाछियी, वाछी, वचौ, वच्छडी,
वच्छ, वछडी, वछी वाछडउ, वाछडी, वाछरु, वाछरी,
वाछी ।

वत्सक—स पु [स वत्सक] १ छोटा बछड़ा, वच्चा ।

२ कुटज का पीघा ।

३ एक इक्ष्वाकुवंशीय राजा ।

४ एक यादव वंशीय राजा जो वसुदेव का भाई था ।

[स वत्सक] ५ पुष्प कसीस ।

६ कुटज ।

७ निर्गुण्डी ।

८ कस के अनुचर वत्स का नामांतर ।

रू भे —वछक, वछक ।

वत्सनाभ—स पु [स] १ हिमालय की तराई में कम उँचे भागों में पैदा होने वाला बछनाभ नामक एक प्रकार का पीघा ।

२ उक्त पीघे की जट से निकलने वाला विष विशेष जो गीठा होता है, गीठा विष ।

रू भे —बच्छनाग, वच्छनाभ, वछनाग, वछनाभ, वच्छनाग, वच्छनाभ ।

३ एक महर्षि । (चरित्र कोष)

वत्सर—स. पु [म. वत्सर] १ द्वादश मास की एक अयधि, वर्ष ।

२ विष्णु का एक नाम ।

३ एक राजा जो ध्रुव गजा का छोटा पुत्र था ।

[स वत्सतर] ४ वह बछड़ा जो जवान व जोतने योग्य हो गया हो ।

रू भे —वच्छ, वच्छर, वत्सर, वत्सर, वच्छर, वच्छरी, वच्छरि, वत्सर ।

वत्सराज—स पु. [स. वत्स., + राज] १ गाय का बछड़ा ।

२ गौतम बुद्ध का ममकालीन कौशाधी का प्रसिद्ध राजा, उदयन ।

३ कौशल देश का एक राजा जो द्रोपदी स्वयंवर में उपस्थित था, वत्स ।

४ सवत् १५६० के लगभग हुए अजमेर के प्रसिद्ध दानवीर गौडवंशीय राजा का नाम ।

रू भे —बछराज बछराज ।

वत्सल वत्सल—वि. [म वत्सल] (स्त्री वत्सला) १ जो पुत्र या सतान के प्रति स्नेहालु हो प्रेम में परिपूर्ण हो ।

२ जो अपने छोटे के प्रति कृपालु दयालु हो ।

स पु [स वत्सल] १ अनुराग, प्रेम ।

२ वात्सल्य रस ।

रू. भे —वच्छल, वछल, वच्छल, वच्छल, वछल, वाछल ।

वत्सलता—स स्त्री —१ स्नेहालु या कृपालु होने की अवस्था, भाव ।

२ अनुराग, प्रेम ।

३ कृपा, दया, अनुग्रह ।

रू भे —वच्छलता ।

वत्सासुर—स पु [स] वत्स नामक असुर जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया ।

रू भे —वत्सासुर, वत्सासुर, वत्सासुर, वत्सासुर ।

वथ—देखो 'वाथ' (रू भे)

उ०—रथ छाडि राजन उतरया, रूखमण्यी साहिउ वथ । दड दोट
वाजई कोट भाजई, वेग वाल्या हथ । —रुक्रमणी मगळ

वथवी, वथुवउ—देखो 'वथवी' (रू भे) (उ र) (अमरत)

वथूळीयो—देखो 'वथूळी' (अल्पा. रू. भे)

वथूळी—देखो 'वथूळी' (रू भे)

बद-स. पु — १ किसी विषय का विशेषतः धार्मिक या प्राध्यात्मिक विषय का वास्तविक ज्ञान ।

२ वृत्त ।

३ चारों वेद ।

४ किसी भास का अर्धभाग, कृष्ण पक्ष, जिसमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता है और पूर्व निशा में अर्धकार बढ़ता जाता है ।

५ एक रोग विशेष । (भाव प्रकाश)

६ देवो 'बद' (रू भे)

रू भे.—बद ।

बदक-वि [न बद] कहने वाला, बक्ता ।

बदकी-वि — १ श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया ।

२ सञ्जन, भला ।

३ अधिक, बहुत ।

रू भे.—बदकी ।

बदखोर, बदखोरी—देवो 'बदखोर' (रू भे.)

उ०—कर जुष घग रह्यो बग्नाणो । बदखोरी प्रायो चढ बाढ ।

—द दा.

बदगढ-स पु.—दिल्ली का एक नामान्तर ।

बदणी, बदवी—कि न [न बद] १ कहना ।

उ०—१ महा सुगण रूप है सुचित सार आचार मे, सरा कवण जोड़-जं, अघट आज ससार मे । यळा मह बवं यसी, सुजन राम माघार है । पूणा लम जिवे पडो, मुज कया स असार है । —र ज प्र.

उ०—२ सुनण 'नाय' 'नितमी' बवं मांडू गग वाहण । 'वपती' गिडियो वंदे, रबू 'अमरा' जेही रण । —सू प्र

२ उच्चारण करना, बोलना ।

३ बर्णन करना, उल्लेख करना, निरूपण करना ।

उ०—मात सहम नव मी सकळ, ऊपरि रूप अढार । जजसन लघु गुर जाणिएजं, बदि गुण रतन विचार । —ल. पि.

४ बात करना ।

५ सूचना देना, बताना ।

६ पुकारना, चिल्लाना ।

७ महत्त्व देना, बड़ा मानना, मान देना, इज्जत करना ।

उ०—१ मु रावळ घटमी जगमालनू कहे छे-ऐ हर्षया पोहूड द्रेग वसं छे, तिके ऐ म्हाणू लिंगार माथ बवं न छे । ए जठा ताई जैसल-री घरती मे छे तितरं म्हाणू घरती री आस काई नही ।

—नैणसी

८ किमी प्रकार की मान्यता देना, मानना, किमी श्रेणी में गणना करना ।

उ०—१ सो ए पाच दड हुवं तिए नै राजा बदा ।

—पच दडी री वारता

उ०—२ बविषी स्वान वनचरा, नहि लाज निहारं । मुख भल ग्रामज भेल्लिजं, मस्तक पर मारं । —सू. प्र

६ मानना, स्वीकार करना ।

१०—आशा देना, निर्देश देना ।

उ०—१ सापन्ना मूक हवं सुख मात, बदी जो हि देव कट सो ही वान । माप्रत सामी मी मज्ज मरीर, गोविंद गदाधर ग्यान गहीर ।

—ह र.

उ०—२ पांवा रहण बदी पतसाहा सिर दावा धावा सहण । दारण रूप बाजिया दारण, वारण नै वारण बहण ।

—लिखमीदास गाढण

११ बाजी लगाना, धर्म बदना, होष्ट लगाना ।

उ०—समद फाल मूद हणू, जहर जारं सकर, सेस ही भुजा घर भार साहै । 'करण' रै 'पदम' जिम साह रै फटै, धवू जो कोई तरवार वाहै । —द दा

१२ प्रतिस्पर्धा करना ।

उ०—धवि रुद्र माग स्त्रीहया वाहै । सूर यभि रय हाथि सराहै ।

—सू. प्र.

१३ बढ बढ कर धार्तं करना, डींग हाकना ।

१४ बहस करना, जिद्द करना ।

१५ परस्पर निश्चय करना, नियत, मुकरंर या तय करना ।

१६ परिश्रम करना, उद्योग करना ।

१७ देवो 'बघणी, बघवी' (रू भे.)

बदणहार, हारो (हारी), बदणियो—वि० ।

बदिश्रीडो, बदियोडो, बघोडो—भू० का० कु० ।

बदीजणो, बदीजवी—कर्म वा० ।

बदणो, बदवी, बघणो, बघवी—रू० भे० ।

बदन-स पु. [स] १ मुख, मुह । (प्र मा.)

२ चेहरा, शफल, मूरत ।

उ०—१ अति रूप क्रांति उजास, प्रफुल्ल बदन प्रकास । आविषी पढ उण वार, मिदरा राज मभार । —सू प्र.

उ०—२ पूछ्या विना पयपं पापी, घट विच कहै लात सिर थापी । बदन मत दिवाळं वस द्रोही वळे । —र रू.

उ०—३ विळखीजं तरणी बदन, कय न आयो तीज । मावडिया आया मुहम, बदन जाय विळमीज । —वा. दा.

३ रूप, आभा ।

४ अग्र भाग, अगला हिस्सा ।

५ प्रथम सख्या ।

६ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

७ देगो 'वदन' (रू. भे)

रू. भे —वदन, वदन्न, वदनि, वदन्न, वदीन ।

वदनारविद—स पु. [सं वदन+अरविद] फगल के ममान मुग,
मुखारविद ।

वि —उक्त प्रकार के मुख वाला ।

वदनि—देगो 'वदन' (रू. भे)

उ०—वदन चद महारस लेद घडिउ प्रमीय गहू तगो रगा
जडिउ । पवन चदनगघ हरायतउ, वदनि वासि वगद दिमि यागय ।

—सातिमूर्ति

वदनीत—देगो 'वदनीयत' (रू. भे)

उ०—वदनीत पाप चल घरम बाघ, गव तजे घरम कत दुष्ट साध ।

मिट पूज देव भरजाव भूक, चळ विणळ धमर सत्र यान चूक ।

—मि रू.

वदन्न—देगो 'वदन' (रू. भे.)

उ०—गुण निवाव ममसत्त, जाव छत्रपति जयन्ना । मूर मोर
सोचिया, नूर खचिया वदन्ना ।

—स रू.

वदपल—स पु. [स वदि-पक्ष] किसी मास का वृष्य पक्ष ।

उ०—मधि हिमरित वर अघण माग । समि चतुरदम वदपण
सकाज ।

—गू प्र.

वदरग—देखो 'वदरग' (रू. भे.)

वदरगी—देखो 'वदरगी' (रू. भे.)

वदरा—स स्त्री —घन, दीलत, वित्त ।

रू. भे —वदरा ।

वदरीनाथ—देगो 'वदरीनाथ' (रू. भे)

वदळ—देखो 'वादळ' (रू. भे)

उ०—मिदि वच्च सिखर चकर इम भळकै । भीण वदळ मागळ
रवि भळकै ।

—सू. प्र

वदळणी, वदळघो—देखो 'वदळणी, वदळघो' (रू. भे)

वदळाडणी, वदलोडघो—देगो 'वदळाणी, वदळाघो' (रू. भे)

वदळाणी, वदळाघो—देगो 'वदळाणी, वदळाघो' (रू. भे)

वदळावणी, वदळावघो—देखो 'वदळाणी, वदळाघो' (रू. भे.)

वदळायत—देखो 'वदळायत' (रू. भे)

उ०—वदळायत नायक अग वजै, भय आणव पायक नोज भजै ।

बोहू चाल भालाळ विचाल लियो, किरणालर भाल कुडाल लियो ।

—पा प्र

वदळी—१ देखो 'वादळ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—भेरे गिया के देग मरम वदळी, भेरे गिया ने । —गो. गो.

२ देगो 'वदळी' (रू. भे)

वदळे, वदळे—देगो 'वदळे' (रू. भे)

उ०—रात गमाई मोयकर, दिग गमायो गाय । हीरा जमम
घमोन या, पीयो वदळे जाय ।

—समा

वदळी—देगो 'वदळी' (रू. भे)

वदान्य—वि. [म. वदान्य] १ जो मृदु भागी हो, शिर्षी कोनी ममूर हो ।

२ जो बहुत उदार विन हो, दयावु ।

३ बान चीत करने पर मनुष्टि देगे गाय ।

रू. भे —वदान्य ।

वदान्यता—म. स्त्री [म वदान्यता] १ वदान्य होने की अवस्था का
भाव ।

२ उदारता, कृपा ।

वदान्य—देगो 'वदान्य' (रू. भे)

वदान्य—१ देगो 'वदान्य' (रू. भे)

२ देगो 'वदान्य' (रू. भे.)

वदान्यी—देगो 'वदान्यी' (रू. भे)

वदान्य—१ देगो 'वदान्य' (रू. भे)

२ देगो 'वदान्य' (रू. भे)

वदान्यदार—देगो 'वदान्यदार' (रू. भे)

वदान्य—देगो 'वदान्य' (रू. भे)

वदान्य, वदान्य—देगो 'वदान्य' (रू. भे.)

वदान्यी—देगो 'वदान्यी' (अल्पा, रू. भे)

वदान्यणी, वदान्यघी—देगो 'वदान्यणी, वदान्यघी' (रू. भे)

वदान्यणहार, हारी (हारी), वदान्यणघी—वि० ।

वदान्यघोटी, वदान्यघोटी, वदान्यघोटी—भू० ता० ट० ।

वदान्यजणी, वदान्यजघी—समं वा० ।

वदान्यघोटी—देगो 'वदान्यघोटी' (रू. भे)

(स्त्री वदान्यघोटी)

वदान्यी, वदान्यी—वि स [वदान्यी] क्रिया का प्रे रू] १ कहलाना ।

२ उच्चारण कराना, बोलाना ।

३ वर्णन कराना, उल्लेख कराना, निरूपण कराना ।

४ बात कराना ।

५ सूचना दिराना, बतलाना ।

६ अवाज दिराना, चिल्लाहट कराना ।

७ महत्व, मान व इज्जत दिराना, बड़ा मनराना ।

८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दियाना, मनवाना, किसी श्रेणी में गणना करवाना

९ स्वीकार कराना ।

१० आज्ञा या निर्देश दिलवाना ।

११ बाजी लगवाना, शर्त लगवाना, होड लगवाना ।

१२ प्रतिस्पर्धा कराना ।

१३ बढ़-बढ़ कर बातें करवाना

१४ निश्चय, नियत या तय कराना ।

१५ बहस या जिद्द कराना ।

१६ परिश्रम कराना, उद्योग कराना ।

१७ देखो 'वधाणी, वधावो' (रू. भे.)

वदाणहार, हारो (हारी), वदाणियो—वि० ।

वदायोडो—भू० का० कृ० ।

वदाईजणो, वदाईजवो—कर्म वा० ।

वदाणो, वदावो, वदावणो, वदाववो, विधाणो, विधावो, वदाडणो, वदाडवो, वदावणो, वदाववो—रू. भे. ।

वदायोडो—भू का कृ —१ कहलाया हुआ २ उच्चारण कराया हुआ, बोलाया हुआ. ३ वर्णन कराया हुआ, उल्लेख कराया हुआ, निरूपण कराया हुआ. ४ बात कराया हुआ ५ सूचना दियाराया हुआ, बतलाया हुआ ६ आवाज दियाराया हुआ, चिल्लाहट कराया हुआ ७ महत्व, मान व इज्जत दियाराया हुआ, बड़ा मनवाया हुआ ८ किसी को किसी प्रकार की मान्यता दियाराया हुआ, गणना कराया हुआ ९ स्वीकार कराया हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिलवाया हुआ ११ प्रतिस्पर्धा कराया हुआ १२ बढ़-बढ़ कर बातें करवाया हुआ १३ बाजी, शर्त या होड लगवाया हुआ १४ निश्चय, नियत या तय कराया हुआ. १५ बहस या जिद्द कराया हुआ. १६ परिश्रम कराया हुआ, उद्योग कराया हुआ ।

१७ देखो 'वधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वदायोडो)

रू. भे —'विधायोडो' ।

वदारो—देखो 'वधारो' (रू. भे.)

वदावणो, वदाववो—१ देखो 'वधाणी, वधावो' (रू. भे.)

२ देखो 'वधाणी, वधावो' (रू. भे.)

उ०—ल्याई मालण सेहरी हे सहेली, पनाजी रे मीस गुलाब री । रसीलाराज उण राजकवर नं श्रीर वदावण वेहरी ।

—रसील राज रा गीत

वदावणहार, हारो (हारी), वदावणियो—वि० ।

वदाविओडो, वदावियोडो, वदाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वदावीजणो, वदावीजवो—कर्म वा० ।

वदावन—सं स्त्री —१ स्वागत, सत्कार ।

२ श्रगवारी ।

रू. भे.—वदामण, वदावण, वदावन, वदामण, वदावन, वदामणी ।

वदावियोडो—१ देखो 'वदायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वदावियोडो)

वदि—अव्य [स. वदि] किसी मास के कृष्ण पक्ष की ।

उ०—१ दीसं न न्याय भोगवि दसा, पडछो सुदि वदि पख री देखं नं साच दालं दुनी, खाडी चादी ए-खरी । —घ. व ग्रं.

उ०—२ सतरइ, सतसठ, वरीसइ, मिगसर वदि दुतिया दीसइ हो ।

—घ. व. ग्र

रू. भे.—वदि, वदी, वदी ।

वदियोडो—भू का कृ —१ कहा हुआ । २ बोला हुआ, उच्चारण किया हुआ । ३ वर्णन किया हुआ, उल्लेख किया हुआ, निरूपण किया हुआ ४ बात किया हुआ. ५ सूचना दिया हुआ, बताया हुआ ६ पुकारा हुआ, चिल्लाया हुआ. ७ महत्व, मान व इज्जत दिया हुआ, बड़ा माना हुआ । ८ किसी प्रकार की मान्यता दिया दिया हुआ, किसी श्रेणी में गणना किया हुआ. ९ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ. १० आज्ञा या निर्देश दिया हुआ ११ बाजी, शर्त या होड लगाया हुआ. १२ प्रतिस्पर्धा किया हुआ. १३ बढ़ बढ़ कर बातें किया हुआ, डींग हाका हुआ. १४ बहस या जिद्द किया हुआ १५ निश्चय, नियत या तय किया हुआ १६ परिश्रम किया हुआ, उपयोग किया हुआ १७ देखो 'वधियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वदियोडो)

वदी—१ देखो 'वदि' (रू. भे.)

२ देखो 'वदी' (रू. भे.)

उ०—सासण अँ उथपिया साभळ, विरड कुमत्री करं वदी । जादव कानी दिये नह जग, जादव थाभो दिये जदी —कविराजा वाकीदास

वदीत, वदीतउ—१ देखो 'व्यतीत' (रू. भे.)

उ०—येहडो जाग आहाडा हुऐ, तुळ घर बीया न होय । दत देता श्रीखम दरसाणी, सीत वदीत हुई सगळीय ।

—जोगिदास कवारीयो

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

उ०—१ राउल स्त्री भोग कहइ जी, जादव वसि वदीत रे । पधारी जेसलमेरु नइजी, प्रीति घरी निज चित्त रे । —ऐ जं का स.

उ०—२ वसुधा वीर वदीतउ जीतउ जिण जरासधु । तहि हरि अरिवल टालए पालए राज सुवधु । —जयसेखर सुरि

वदीतं—१ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

२ देखो 'विदित' (रू भे)

वदीती—वि [स. विदित] (स्त्री वदीती) १ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—१ जर्पियो सिध जिण विघ जुघ जीता, वघ वस खैरींद
थदीता । असुर हणं प्रद वणं अयागा, वर सिधकरि खैरोदा वागा ।

—सू प्र

उ०—२ वीजा पुरी संन वीती, वजाए जेआई वाजा । जीती जीती
महाराजा वदीती जगति ।

—दूदो सुरताणीत वीठू

उ०—३ पूज्या सह इच्छा पूरइ, दुख दालिद नासै हूरं हो । जिण
चोसट योगिनी जीती, वरतइ ए वार वदीती हो ।

२ देखो 'व्यतीत' (रू भे)

वदूळ—देखो 'वादळ' (रू भे)

उ०—सो कंसे सांमळं वदूळ पर वीजूजळा का सिळाव । ऐसे
भयाणक एकलगिह वराह ढाए ।

—सू. प्र

वदूसणो, वदूसवो—देखो 'विदूसणो, विदूसवो' (रू. भे)

वदूसियोडो—देखो 'विदूसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वदूसियोडी)

वदेस—देखो 'विदेस' (रू भे.)

उ०—वहु घघाळू, आव घरि, फासू करइ वदेस । सपत सघळी
सपजं, श्रं दिन कदी लहेस ।

—ढो. मा

वदोतर—वि. [स वृद्धोत्तर] १ बडा हुआ, अधिक ।

२ बढ़ने योग्य ।

३ समाप्त प्राय ।

वदोवद, वदोवदि—स पु. होठ, प्रतिस्पर्धा ।

रू. भे — वादोवदी ।

वदूळ—देखो 'वादळ' (रू. भे)

उ०—गिरि जाणि चरण लहि लखत गोम, वदूळ इळ दरसै छाडि
व्योम । जघाळस वदण चित्र जास, किरि जळद इद्र धानुख-प्रकास ।

—रा. रू

वदूळो, वदूळी—देखो 'वादळ' (अल्पा, रू भे)

वदणो, वदवो—देखो 'वघणी, वघवो' (रू भे.)

उ०—जोय लोयण दळं अमिउ वरसतउ वदए सुद्ध जिम
वोय चदो ।

—ऐ जै का. सा

वदमांण—देखो 'वरदमान' (रू भे)

वदामणो—म स्त्री —१ देखो 'वघामणी' (अल्पा., रू भे.)

उ०—जोतठ कान्ठ वात इम गुणी, नगर लोक घइ वदामणो ।

मदनभेरि भूगळ भरहरइ, वरण अठारइ जय-जय करइ ।

—का. दे. प्र.

२ देखो 'वदावण' (रू. भे.)

वदामणो—देखो 'वघामणी' (रू. भे.)

वदाणो, वदावो—देखो 'वघाणी, वघावो' (रू भे.)

वदापन—देखो 'वृढापण' (रू भे.)

वदायोडो—देखो 'वघायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वदायोडी)

वदावणो, वदाववो—देखो 'वघाणी, वघावो' (रू. भे)

उ०—वगु विणासी बगु विणासी भीमु आवेइ, वदवावइ जणु सयलु
जोव दानु तइ देव दिद्धळ केवलिवयणु जु सच्चु किरि त्रिहु भुयणि
जसवाउ लिद्धठ ।

—पं. प. च

वदावियोडो—देखो 'वघायोडो' (रू भे)

(स्त्री वदावियोडी)

वद्वियोडो—देखो 'वघियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वद्वियोडी)

वघ—स. पु [स] १ जान-वूक कर किसी को मारने की क्रिया या
भाव, हत्या ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ विरोध, वैर, वैमनस्य ।

उ०—राणी कुभो पाट छै । माहोमाहि भाइया ग्रासि वघ लागो ।
—नैणसी

४ आघात, प्रहार ।

५ युद्ध ।

रू. भे — वघ, प्रघ ।

वघक—स पु —१ मछली पकडने का काटा । (अ. मा.)

२ देखो 'वधिक' (रू. भे)

उ०—हाणि कह्या कोई न पतीजं, निहचै अग वघक कू धीजं ।
जमनिति सदा वघक न हिरणा, चौरासी में दौडघाई फिरणा ।

—ह पु वा.

रू भे.—वघक ।

वघण—सं. स्त्री. [स वृद्धि] बढ़ने की क्रिया या भाव, वृद्धि, बढ़ोतरी ।

उ०—वघण सरस वरसा वरस, दरस कमघ कुळदाप । अरस लगी
छक ऊफणै, पीरस तूक 'प्रताप' ।

—जैतदान वारहठ

वघणो, वघवो—देखो 'वघणी, वघवो' (रू भे)

उ०—१ आभा रूप जोम ऊफाणिक, वणियो अनग दूसरै वाणिक ।

वीर तदिन कीरति वाधारी, भरथ साख वधियो कुळ भारी ।

—सू. प्र

उ०—२ पाण जोड रिणछोड पूजजै, प्रथी चौगणै वधै प्रमाण ।

—ह ना. मा

वधरणहार, हारी (हारी), वधणियो—वि० ।

वधिम्रोडो, वधियोडो, वधयोडो—भू० का० कृ० ।

वधीजणो, वधीजवो—कर्म वा० ।

वधतीवेस—देखो 'वधतीवेस' (रू भे)

वधतेरो—देखो 'वधती'

वधती—देखो 'वधती' (रू भे)

उ०—१ तद पूलै नू कयो 'चौधरी इसी दातारणी कर सू पाहू गोदारै सू नाम वधती हुवै ।

—द दा.

उ०—२ 'पातळ' दत वीरत पराँ, समदर तराँ सभाव । वधती सूँ वधती वराँ, चढती लहर चढाव ।

—जैतदान वारहूठ

(स्त्री. वधती)

वधरणो, वधरवो—क्रि अ. [स वर्धनम्] १ आगे वढना, अग्रसर होना ।

उ०—जेसळ आप वडइ असवार, कोस वधरइ वारा वार । जोयण एक घडी मइ जाइ, हारइ नही न थाका थाइ ।

—ढो मा

२ वृद्धि को प्राप्त होना, वृद्धि होना ।

३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु का वृद्धि होना, दूटना ।

४ काटा जाना ।

५ किसी देवता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोडा जाना, तोडा जाना ।

६ विस्तार होना, विस्तृत होना, लम्बा होना ।

७ बोला जाना ।

वधरणहार, हारी (हारी), वधरणियो—वि० ।

वधरिम्रोडो, वधरियोडो, वधरयोडो—भू० का० कृ०

वधरीणो, वधरीजवो—भाव वा० ।

वधरणो, वधरवो—रू० भे०

वधराणो, वधरावो—क्रि स [वधरणो क्रि. का प्रे रू] १ आगे वढाना,

अग्रसर कराना

२ वृद्धि कराना/करना ।

३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडाना ।

४ कटवाना ।

५ देवताओ को नारियल आदि फोडकर चढवाना ।

६ विस्तार कराना, लवा कराना ।

७ बोलाना, बुलवाना ।

वधरणहार, हारी (हारी), वधराणियो—वि० ।

वधरायोडो—भू० का० कृ० ।

वधराईजणो, वधराईजवो—कर्म वा० ।

वधराणो, वधरावो, वधरावणो, वधराववो, वधरावणो, वधराववो

—रू भे

वधरायोडो—भू का कृ [स्त्री वधरायोडी] १ आगे वढाया हुआ, अग्रसर किया हुआ. २ वृद्धि कराया हुआ/किया हुआ. ३ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडाया हुआ. ४ कटवाया हुआ. ५ देवताओ को नारियल आदि फोड कर चढवाया हुआ. ६ विस्तार कराया हुआ, लवा कराया हुआ. ७ बोलाया हुआ, बुलवाया हुआ ।

वधरावणो, वधराववो—देखो 'वधराणो, वधरावो' (रू भे.)

वधरावणहार, हारी (हारी), वधरावणियो—वि० ।

वधराविम्रोडो, वधरावियोडो, वधरावयोडो—भू० का० कृ० ।

वधरावीजणो, वधरावीजवो—कर्म वा० ।

वधरावियोडो—देखो 'वधरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वधरावियोडी)

वधरियोडो—भू का कृ—१ आगे वढा हुआ, अग्रसर हुवा हुआ.

२ वृद्धि को प्राप्त हुवा हुआ ३ वृद्धि हुवा हुआ, दूटा हुआ

(चूडी आदि) ४ कटा हुआ ५ फोडा हुआ, फूटा हुआ, तोडा

हुआ. (नारियल आदि) ६ विस्तारित, विस्तृत ।

(स्त्री वधरियोडी)

वधरोम, वधरोमो—स पु—सुअर, वराह । (अ मा, ह ना मा)

रू भे—वधरोम ।

वधामण, वधामणउ—देखो 'वधामणी' (रू भे)

उ०—जाय हुइ वेउउ, तउ भावइ लोक भेटउ, कीजइ वधामणउ,

सकल लोक आणदणउ ।

—व स

वधामणी—स स्त्री—देखो 'वधामणी' (अल्पा., रू भे)

उ०—मागइ मात वधामणी, धव धव घाया लोक । ताहू माधव

आवीउ, आज समाविन सोक ।

—मा. का प्र

उ०—२ आवी नै वन पालक दीध वधामणी रै, गुरु आगमन

प्रघोस । वादिवा चाल्यो निज परवार सु रै, ही अण तेहर्न सतोस ।

—वि कु.

उ०—३ राजडीउ भाथाइत जेउ, नइ केल्हण रइवारी वेउ । राउल

भणी गया परि सुणी, वेगइ मागइ वधामणी ।

—का. दे प्र.

वधामणी—स पु [स वद्धमानकम्] १ स्वागत, अगवानी ।

उ०—तउ उपराति करि नै राजान सिलामति राजान राजावत

अंराव रै रिणखेत हाथी आयो छै । रिण जीत नगरा धुवै छै ।

फतै रा सैदाना वागा छै । जस जैत रा डका वाजिआ छै । कुसळसेम आणद रा वधाइदार दौडिया छै । घरा साम्हा फौजा रा घहूस चालीआ छै । आवै छै सु किए भात बखाणीजै छै । पातसाह रा डेरा हसम रखत तखलुआ हूता सु आणि थाणै दाखलि कीआ छै । अजमेर रा थाण री जमीत कीजै छै । धरि धरि मगळाचार आणद वधामणा कीजै छै । घणा माल निजराति उवारीजै छै ।

—रा सा स

२ आदर, सत्कार, मान सम्मान ।

३ आनन्द, उत्साह, खुशी । (उ र)

उ०—१ अम्हारइ है, आज वधामणा, सहेली है गावउ मगल-च्यार । पहिलउ है मगल माहरइ, सहेली है गावउ अरिहत देव । तिथ्यकर त्रिभुवन तिली, कर जोडी है । करि सुरनर सेव ।

—स कु

उ०—२ निवोजी फतै करे नै गाव धिएलै पधारिया, वधामणा हूवा ।

—वीरमदै सोनगरा री बात

४ किसी के स्वागत मे या आनन्द या खुशी में गाया जाने वाला गीत ।

उ०—नरनाथ कोडि मथुरा नगर, वाजै सुसर वधामणा । वाजअ सुतान खटनीस वगि, सोभै ग्यान सुहामणा ।

—रा रू.

५ शुभ समाचार या शुभ सन्देश सुनाने की क्रिया या भाव ।

६ उक्त समाचार सुनाने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार ।

रू भे.—वदावणी, वधामणी, वधावणी, वद्धामणी, वधामण, वधामणउ, वधावणी ।

अल्हा,—वधामणी ।

वधामणी, वधामणी—देखो 'वधाणी, वधाणी' (रू भे)

वधाअणी, वधाअणी—देखो 'वधाणी, वधाणी' (रू भे.) (उ. र)

वधाइ—देखो 'वधाई' ।

उ०—वधाइ वधाई जसोदा वधाई ।

—नागदमण

वधाइदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—फतैरा सैदाना वागा छै । जस जैत रा डंका वाजिआ छै । कुसळसेम आणद रा वधाइदार दौडिआ छै ।

—रा सा. स.

वधाई—देखो 'वधाई' (रू भे)

उ०—सिवी नदी तिरनै साहजादी नू ले नीसरियो । सारै वधाई वाटी । साहजादी सिवै सू बहोत राजी हुई । बहोत वधाई दीवी । घोडी सिरोपाव दियो ।

—नैणसी

वधाईदार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—विळकुलै वधाईदार वधि, आणद उछय अथाह सू । आगम्म खवर 'अभसाह' री, जाय कहै 'जैसाह' सू ।

—सू प्र

वधाउ—देखो 'वधाऊ' (रू भे.)

उ०—महि वीता दस मास, जाम नप कुंवर जनम्म । वधाउवा जिएवार 'अजै' बहु दरव उघमै ।

—सू प्र.

वधाउडौ, वधाऊडौ—देखो 'वधाऊ' (अल्पा, रू भे.)

वधाऊ—देखो 'वधाऊ' (रू भे)

उ०—ए उछाह करता आया, आगे जनक वधाऊ आया ।

—रामरासी

वधाऊहार—देखो 'वधाईदार' (रू भे)

उ०—इसी आणद देखि के कटक माहै थै वधाऊहार आगे वदोवदि दीड्या ।

—वेलि टी

वधाणी, वधाणी—देखो 'वधाणी, वधाणी' (रू भे)

उ०—१ इसा रग उच्छाह सू, राम आया । वधै मात कौसल्या आए वधाया ।

—सू. प्र

उ०—२ साथ सारी अमला सू लालहरती थकी वहै छै । वधाईदार आगे वधाइया छै । सू वधाई प्राण दीवी छै ।

—रा. सा. स

वधाणहार, हारी (हारी), वधाणियो—वि० ।

वधायोडौ—भू० का० कृ० ।

वधाईजणी, वधाईजवी—कर्म वा० ।

वधापण—देखो 'वृद्धापण' (रू भे)

वधापी—देखो 'वधापी' (रू भे)

वधायक—वि [स वृध्-वर्धयते] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला ।

उ०—वधै राज सुख विहद, वधै हित सपत वधायक । अवर वधै दिन इती, वधै पल पल वरदायक ।

—सू प्र.

२ देखो 'विधायक' (रू भे)

३ देखो 'विधेयक' (रू भे)

वधायोडौ—देखो 'वधायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वधायोडी)

वधारण—वि [स वृद्धि-कार] १ बढ़ाने वाला, वृद्धि करने वाला ।

२ खींचने वाला, लम्बा करने वाला ।

३ त्रुटित करने वाला, तोड़ने वाला ।

वधारणी, वधारणी—क्रि. स ["वधरणी" क्रिया का प्रे'रू] १ आगे बढ़ाना, अग्रसर करना, आगे जाने के लिये प्रेरित करना ।

उ०—'रूपा' 'पाता' 'धाघळा' छळ जोघाण नरिद । वस छत्रीसा भल्लिया, घस वधारण दुद ।

—रा. रू

२ वृद्धि करना, बढ़ाना । (उ र)

उ०—१ वनि वनि विकसइ, वेउल खेउ लगाडइ चीति । दीठा
द्राखह मडव मड वधारइं प्रीति । —जयसेखरसूरि

उ०—२ देवर माहरि घरि नही, ऊठी गिउ आखेति । प्रीऊडा-पजरि
पापीइ, जलण वधारिउ जेठि । —मा का प्र

३ विस्तार करना, फँलाना, लम्बा करना ।

उ०—१ वधि रा' ए सुवप वधारियो, असमाण छिवती आवियो ।
—सू. प्र

उ०—२ सिखा फरहरती, उत्तरासगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ,
तूरीउ जनोइ सिर मद्रिउ तिलक वधारिउं, गायत्री साधनु ।

—व. स

उ०—३ ऊणी राजा जोवा गयु, दीठू खडग रलिया अति थयु ।
वेगि लेई वधारू चीर, पिहिरी खड नीसरयु वीर । —नळास्थान

उ०—४ राज गरीव निवाज, जेण प्रहळाद उवारें । राज गरीव
निवाज, द्रोपदा चीर वधारें । —गजउडदार

४ मान देना, इज्जत देना, सम्मान ।

उ०—१ सु पछे रावळ घडसी घरती वाळी, तरें सारा विखायता
नू वधारिया तरें महिपा नू कही—थे माहरी वडी चाकरी पोहता
छो, सु थे मागी जितरी घरती म्हे थानू दा । —नेणसी

उ०—२ पाछे जिण दिन तस्त वँठियो छत्र धारियो त'हरा
वहराम कवी से ने तेड पूरी वधारियो । —नी प्र.

५ काटना, कतरना, टुकडे करना ।

६ किसी वचता को चढाने के लिये नारियल आदि को फोडना,
तोडना ।

७ चूडी आदि शुभ मानी जाने वाली वस्तु को तोडना, समाप्त
करना ।

वधारणहार, हारो (हारी), वधारणियो—वि० ।

वधारिओडी, वधारियोडी, वधारयोडी—भू० का० कृ० ।

वधारीजणो, वधारीजवो—कर्म वा०

वदारणो, वदारवो, वधारणो, वधारवो, वदारणो, वदारवो, वधारणो,
वधारवो, बनारणो, बनारवो, वाधारणो, वाधारवो, वाधारणो,
वाधारवो । —रू भे ।

वधारियोडी-भू का कृ—१ आगे वढाया हुआ, अग्रसर किया हुआ,
वढने के लिए प्रेरित किया हुआ २ वृद्धि किया हुआ, वढाया हुआ
३ विस्तार किया हुआ, फँलाया हुआ, लम्बा किया हुआ ४ मान,
सम्मान व इज्जत दिया हुआ. ५ काटा हुआ, कतरा हुआ, टुकडे
किया हुआ ६ फोडा हुआ, तोडा हुआ (नारियल) ७ तोडा
हुआ, समाप्त किया हुआ (मागलिक पदार्थ)
(स्त्री वधारियोडी)

वधारी—देखो 'वधारी' (रू भे)

उ०—१ दिआ वधारा देस दे, हँवर द्रव्व हसति । पतिसाही था
ऊपरा, यू कहिओ असपति । —वचनिका

उ०—२ थया हरख सौ गुणा, भडा चौगुणा वधारा । साज हूत
गजराज, किताइ धजराज सिरा रा । —रा रू

उ०—३ आविया सेव पावो उतल । घर सहत वधारा विगुण
धल । —सू. प्र.

वधाव—देखो 'वधाव' (रू. भे)

उ०—नितु नितु जोसी पूछीइ, नितु नितु सुकन भुभाव । नित नित
निरति विहूणडा, आविइ वली वधाव । —मा का प्र.

वधावणो—देखो 'वधामणो' (रू भे.)

उ०—महाराय स्त्री कल्याणमलजी जन्म महोच्छव मागलिक-वधावण
कराया । —द वि

वधावणो, वधाववो—देखो 'वधाणो, वधावो' (रू भे) (उ. र.)

उ०—१ भली भली सारी जग भाखै, कही न लाई वात कई ।
मागज धरा वधावण मोटा, मोटी पाघ ससार मई । —द दा.

उ०—२ सहू महाजन हरखीया, कोण देस कही कुण ठामि ?
रावळी पोळ आवीया, पीळघा वेगी वधावउ जाह । —वी दे

उ०—३ इणि परि राउ वधावोइ, मनि आण्या हे परमाणंद ।
नयर लोक आसाचरीजि' जउ इम बोलइ ए 'हीराणंद' ।
—हीराणंद सूरि

वधावणहार, हारो (हारी), वधावणियो—वि० ।

वधाविओडी, वधावियोडी, वधावयोडी—भू० का० कृ० ।

वधावीजणो, वधावीजवो—कर्म वा० ।

वधावधि, वधावधो—देखो 'वधावधो' (रू भे)

उ०—वधावधि राडि करे खगवाह । सत्रा 'परसावत' 'माहवसाह' ।
—सू प्र

वधावियोडी—देखो 'वधायोडी' (रू भे)

(स्त्री. वधावियोडी)

वधावो—देखो 'वधावो' (रू. भे)

उ०—१ तद वीर पुरस री स्त्री नै आ वात रुची नही, तिण सूं
कहै है कि हे सखिया फगत ऊजळा कपडा राखण वाळा रा थे
वधावा गाओ पण वीर पुरम नै पिछारणो नही । —वी स टी
उ०—२ धणी रस रहियो वडा वधावा हुआ ।

—गौड गोपाळदास री वारता

वधिक—स पु [स. वधक] १ हत्या करने वाला, हत्यारा, वध करने
वाला ।

२ प्रहार, घात व चोट करने वाला, घातक ।

३ जल्लाद ।

४ शिकारी, व्याध ।

५ मृत्यु ।

रू. भे.—वधक, वधिक, वधक ।

वधियोडी—देखो 'वधियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वधियोडी)

वधिर—देखो 'वधिर' (रू. भे.)

वधिरपणी—देखो 'वधिरपणी' (रू. भे.)

वधु, वधू—स. स्त्री. [स वधु, वधू] १ ऐसी युवती जिसका विवाह तुरन्त ही हुआ हो, दुलहिन, नव विवाहिता ।

२ पुत्र-वधू ।

३ सम्बन्ध की दृष्टि से छोटे की स्त्री ।

४ पत्नी ।

५ स्त्री, श्रीरत ।

रू. भे.—वधु, वधू ।

वधूवर—स पु [स वधू-वर] १ दूल्हा । (उ. र.)

२ पति ।

वधेती—देखो 'वधती' (रू. भे.)

वधेपी—देखो 'वधपी' (रू. भे.)

वधेवधि—देखो 'वधावधी' (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'दीप' हिंदाळ' सधीर । वधेवधि लोह करै नर वीर ।

—सू प्र

वधोतरी—देखो 'वधोतरी' (रू. भे.)

वधोवधू, वधोवधू—स पु—मवेशी को चरने के निमित्त हाकते समय किया जाने वाला शब्द ।

वधी—देखो 'वधी' (रू. भे.)

उ०—ध्रम सनेह कुळ मारण धारा । प्राण हूत वधि आप पियारा ।

—सू प्र

(स्त्री वधि, वधी)

वध्याणी, वध्यावी—देखो 'वधाणी, वधावी' (रू. भे.)

वध्याई—देखो 'वधाई' (रू. भे.)

वध्याईदार—देखो 'वधाईदार' (रू. भे.)

उ०—सुणिए अविद्या वह सुधन, दुःखळ वध्याईदारा । सभै अवासा डवर, चित्र अवेछाडि बजारा ।

—सू. प्र.

वध्याधणी, वध्यावधी—देखो 'वधाणी, वधावी' (रू. भे.)

उ०—सुमत्रा अन केकेई मात साई । भली भात वध्याविया च्यार भाई ।

—सू. प्र.

वध्यावियोडी—देखो 'वधावियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वध्यावियोडी)

वध्यार—स पु.—शाक विशेष

उ०—वालु नई वेलातर, वेळ वेतस वाणिए । वध्यार वाहलु लीउ, वाउलीउ वखाणिए ।

—मा. का. प्र

वनचर—देखो 'वनचर' (रू. भे.)

उ०—वधियो स्वान वनचरा, नई लाज निहारै । मुख भल ग्रसज भेल्लिहै, मस्तक पर मारै ।

—सू प्र.

वन—स. पु [स] १ जगल, विपिन ।

उ०—कूजर ज्यू जो केहरी, तू लेती तालीम । कळ में रखवाळत कवण, सपूरण वन सीम ।

—वा. दा

पर्या०—अटवी, अरण्य, आरण, ऊल, कतारक, कखवा, कछ, कातार, कानन, खड, गहन, भक, रन, रिख, विपन, ब्रिखवात ।

मुहा०—वन मे जाणी—दिशा (मैदान) जाना, (साधु के लिये)

२ जल, पानी । (ह ना मा)

३ जल का स्रोत ।

४ वाटिका, वगीचा ।

५ कमल ।

६ कमल के फूलों का दस्ता ।

७ आवास स्थान, घर ।

८ काष्ठ, लकड़ी ।

उ०—आतुर चित्त आगळी, धाम विसराम सुधारे । वन चंदण वावना, अंगर घणसार अपारे । महल-काठ चुणिए विमळ, पहल, रूई धत पूरित । शोप सदळ औछाड, अमळ परिमळ आकूरित । उण भवण वसण राजा 'अजन' आप सुखासण ऊतरी । लखि वरत सुरी अचरज लगी, नार पन्नगी किन्नरी ।

—रा. रू.

९ किरण, रश्मि ।

१० शकराचार्य के अनुयायी दशनामी सन्यासियों की एक शाखा ।

रू. भे—वण, वन, वन्न, वण, वनु, वन्न ।

अल्पा.—वनी, वणी, वणी, वन्नि, वन्हि ।

मह.—वनाळ ।

वनअमावस्या—स. स्त्री—आवण मास की अमावस्या, हरियाली अमावस्या ।

वनउक, वनशोक—स पु [स वन+शोकस्, वनीक] १ वानर, वदर । (अ मा, ह ना मा)

२ वन्य-पशु ।

३ वानप्रस्थाश्रमी, तपस्वी, मुनि ।

वि—वन मे निवास करने वाला, वनवासी।

रू भे—वनउक, वनओक।

वनकर—स. पु. [स. वन्यकर] सूर्य, भानु।

रू. भे.—वनकर।

वनखड—स. पु. [स. वनखड] वन, जगल।

उ०—१ जिण रित नाग न नीसरइ, दाभइ वनखड दाह। जिण रित मालवणी कहइ, कृण परदेसा जाह। —डो. मा

उ०—२ वनखड गिर भगर नह वसियो, हू आ देख कतूहळ हसियो। —सू. प्र.

रू. भे.—वणखड, वनखड।

वनखडी—स. पु [स वनखड + रा प्र ई.] १ साधु, सन्यासी, तपस्वी।

२ वनवासी।

रू भे.—वणखडी, वनखडी।

वनगव, वनगाय, वनगाव—स स्त्री [स. वन + राज गव] १ नीलापन लिये हुए भूरे रंग का गाय के आकार का एक वन्यपशु, नीलगाय।

२ एक प्रकार का तेंदू वृक्ष।

रू भे.—वनगव, वनगाय, वनगाव।

वनडी—देखो 'वनी' (अल्प, रू भे)

वनडी—देखो 'वनी' (अल्पा, रू. भे)

उ०—होय रग हबोळोय माडहडी। वळियो जनवास हमें वनडी।

—पा प्र

वनचर, वनचरी, वनचर, वनचारी—वि. [स वनचर] (स्त्री वनचारण, वनचारिण) १ वनमे विचरण करने वाला।

उ०—हाडा, कूरम राठवड, गोला जोख करंत। कहज्यो खाना खानन, वनचर हुवा फिरत। —महारणा अमरसिंह

२ वनवासी, उदासी।

उ०—अरजुन वनचर लागउ वादु, करउ भूभु उतारउ नादु।

—प प च

स. पु —१ जगली प्राणी, जगली पशु।

उ०—जळचर वनचर आतरी, जळचर जळ मे जोर। वनचर अति वेडीमणी, जो कछु लाभ कोर। —गज उद्वार

२ बदर, वानर। (अ मा., ना मा)

३ हनुमान, वजरगी।

उ०—हणु मिलत घुर हर दीघ सिर ह्य, रिधु वजरग हुवी समरथ। चवै रघुवर वयण वनचर, सीत सुघ साजै। —र. रू

४ हरिण।

५ शरभ नामक जगली जतु।

६ एक प्रकार का जगली घास।

रू. भे.—वणचर, वनचर, वनचरी, वनचारी, वणचरि, वनचर, वनेचर।

वनज—वि. [स. वन + जन्य, वनज वनज] वन मे उत्पन्न होने वाला।

स. पु.—१ कमल २ वृक्ष ३ वनस्पति ४ हाथी। ५ सुगन्ध युक्त तृण। ६ नील कमल का पुष्प। ७ जगली कपास का पौधा।

रू भे—वनज।

वनभगर—सं पु—वन की भांडी समूह।

उ०—इण भात रा वनभगरा माहै हरिण, सूअर, सावर, रोज, खरगोस, गैडा, खग भाति भाति रा जानवर चरै छै।

—रा सा. स.

वनडकारण—देखो 'दडकारण्य' (रू भे)

वनता—देखो 'वनिता' (रू. भे) (ह ना. मा)

वनतुळसी—स स्त्री [स वन + तुलसी] तुलसी के समान मजरी व पत्तियो वाला बरंर नाम एक पौधा विशेष, बरंरी।

वि वि—यह चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वात रोग और नेत्र रोग नाशक है तथा सुख पूर्वक प्रसव कराने वाली है।

रू भे—वनतुळसी।

वनद—स पु [स वनद] मेघ, बादल।

रू भे—वनद।

वनदरसाव—स पु.—इन्द्र। (अ. मा)

वनदेव—स पु [स. वनदेवता] (स्त्री. वनदेवी) वन का अधिष्ठाता देवता।

वननाथ—स पु. [स.] १ समुद्र।

२ मलय-वन।

वननिधि—स पु [स.] समुद्र।

रू. भे.—वननिधि।

वनपत, वनपति, वनपती—स पु. [स. वनपति] वन का राजा सिंह, शेर। (अ मा)

उ०—१ कोरण सुअट घटा घट कटका, त्रजडा ह्य वामणी तप। 'सूर' तणी घरहरै नरेसुर, वनपत यर खैगरै वप—देवराज रतनू

उ०—२ लक वन पति हसगति को करमण, मनमत —डो. मा. रू भे.—वनपत, वनपति, वनपती।

वनपाळ, वनपाळक—सं पु [स वनपालक] वन या वगीचे का रक्षक, वागवान, माली।

रू भे—वनपाळ, वनपाळक।

वनफळ—स पु. [स. वन + फल] वन के फल-फूल।

रु. भे.—वनफळ ।

वनविलाव—स पु [स. वन+विडाल] १ विल्ली की जाति का परन्तु कुछ बड़े आकार का एक जगली हिंसक जतु ।

वि वि—इसके शरीर का रंग मटमला होता है और कानो का बाहरी भाग काला होता है । यह प्रायः झाड़ियों में रहता है और चिड़ियों को पकड़-पकड़ खाता है ।

२ उक्त प्रकार के जन्तुओं का वर्ग ।

रु. भे.—वनविलाव ।

वनभ्रग—स पु. [स वनभृग] वन का भ्रमर ।

उ०—जिम केतकी वनभ्रग, तिम सुगुरु सु मुझ रग ।

—समय सुदरगणि

वनमय—वि [स. वन+मय=युक्त] वनो से युक्त या परिपूर्ण ।

रु. भे.—वनमय ।

वनमानस, वनमानुस—स पु [स वन+मानुप] १ एक जगली जतु जो बन्दर से कुछ उन्नत और मनुष्य से कुछ मिलता-जुलता होता है ।
२ उक्त प्रकार के जतुओं का वर्ग जिसमें गोरिल्ला, चिंपंजी, औरंग उदग आदि जतु हैं ।

रु. भे.—वनमानस, वनमानुस ।

वनमाळ, वनमाळा—स पु [स वनमाला] वन के पुष्प एव पल्लवों की गुथी हुई कठ से पाव पर्यन्त लटकने वाली माला ।

रु. भे.—वनमाळ, वनमाळा, वन्नमाळा ।

वनमाळी—वि [स] वनमाला धारण करने वाला ।

स. पु—१ ईश्वर । (ना. मा)

२ विष्णु ।

उ०—पर प्रह्लाद तणी प्रतप्राळी । वळ धू अखी कियो वनमाळी ।

—र. ज. प्र

३ श्री कृष्ण । (अ. मा)

उ०—भीमकराय भणइ रुखमइया, वर वनमाळी जाणु । छपन कोडि जादव नी राजा, वस विसुध वखाणु । —रुक्मणि मगळ ४ वागवान, माली ।

उ०—वन माळी रै पुत्तर जायो । जिण तुळछा री वन रोपायी ।
—लो गी.

रु. भे.—वनमाळी, वनमाळी, वनवारी, वनवारी, वन्नमाळी, ।

वनमुरगी—सं पु यी [स वन+फा. मुर्ग] जगली मुर्गा जो साधारण मुर्ग की अपेक्षा कुछ बड़ा होता है, वन-कुक्कुट ।

रु. भे.—वनमुरगी ।

वनमूत—स पु [स वनमूत] बादल, मेघ ।

वनर—देखो 'वानर' (रु. भे.) (ना. मा)

वनरमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रु. भे.)

वनराइ, वनराज, वनराय, वनराव—स पु [स. वनराज] १ सिंह, शेर ।

उ०—पद वनराव न पामियो, दुरद दिखाल्लं दात । सीह थयी वन साहिबो, ठीगारी सकरात ।
—वा दा.

२ बड़ा जगल, विशाल वन ।

[स वनराज] ३ वृक्ष, पेड़, वृक्ष समूह ।

उ०—१ धमक खोद घरणी सहै, काट सहै वनराय । फुटक वचन असली सहै, ओरा सहया न जाय । —श्री हरिरामजी महाराज

उ०—चैत्रइ विचित्र थइ रही, अरु तरणी वनरायो जी । थुड साखा अकुरित थइ, सोह वसतइ पायो जी ।
—वि. कु.

४ वृक्ष पत्ति ।

५ पेड़ पीधे, वनस्पति आदि ।

उ०—२ पोस मे ओस पडै निस, रुदन करै वनराय । दोस विना पिउ रोस करै, तै सोस ज थाय ।
—घ. व. अ.

६ वन, जगल ।

उ०—कीधी परतग्या इसी, मन सेती महाराय । पदमणि परणु ती धरि रहु, नहिं तौ गिरि वनराय ।
—प. च. चौ.

७ वनखण्ड ।

रु. भे.—वणाराइ, वणाराइ, वणाराज, वणाराव, वणाराव, वनराइ, ।
वनराज, वनराय, वनराव, वणाराइ, वणाराइ, वणाराई, वणाराज, वणाराय, वणाराव ।

वनरवाल, वनरवालि—देखो 'वादरमाळ' (रु. भे.)

उ०—तलिआ-तोण्ण ऊभीआ धरि-धरि वाधीआ ए वनर वालि ।
मुहण्ण मादन रण कीआ तिहिं नाचइ ए नवरणि वाल ।
—हीराणद सूरि

वनरावन—देखो 'व्र दावन' (रु. भे.)

उ०—आस्रम चौथे आयकै इक वनरावन जावै । आस्रम चौथे आयकै इक तीरथ दिस धावै ।
—अरजुनजी बाहरठ

वनरुह—स पु [स वनरुह] कमल का फूल ।

वनरोई, वनरोही—स. पु—१ वन, जगल ।

२ वीहडवन, दुरुह जगल ।

रु. भे.—वनरोई, वनरोही ।

वनलक्ष्मी—स स्त्री [स] १ वन की शोभा, वनश्री ।

२ केला ।

वनलौ—देखो 'वनौ' (अल्प, रु. भे.)

उ०—बरसता सहरा वीटाणी, नमख न हुए नराळी । डारण आज लगी डुगरियो, वनलौ काठळ वाळा ।
—अज्ञात

वनवारी—देखो 'वनमाळी' (रू भे)

उ०—सोधन पीवजी साज सवारी, अब वेगि मिळी तन जाइ

वनवारी ।

—दादूवाणी

वनवास—स. पु [स] १ घर, नगर व वस्ती छोड कर जगल का निवास ।

उ०—वस राज (जी) रौ राखणी, कुण घणी आयत होयवै ।
वनवास अती दुख घणा, क्या जाणा क्या जोय वै ।

—रीसालु री वात

२ उक्त प्रकार के निवास की क्रिया, दशा, व्यवस्था, विधान ।

मुहा —वनवास देणी=घर से दूर जगल मे उदासी बन कर रहने की आज्ञा देना ।

रू. भे.—वनवास, वनवास, वनोवास ।

अल्पा —वनवासी, वणवासु, वनवासु, वनवासी, ।

वनवासी—वि [स वनवासिन्] १ वन मे निवास करने वाला, वसने वाला ।

२ उदासी, तपस्वी ।

स पु —१ ऋषि-मुनि, सन्यासी, २ वानप्रस्थी ।

रू भे —वनवासी ।

वनवासु, वनवासी—देखो 'वनवास' (अल्पा., रू भे)

उ०—१ बारह ए वरस वणवासु नाठे हीडिवु तेरमई ए । अम्हि किम ए जाणिसु, तुहितउ वनवासु जु तेतशु ए । —प प च

उ०—२ वनवासी चवदै वरसा री, वामा सग विळावै । वीते पलही कलप वरावर, जिकं दिवस किमि जावै । —र रू.

वनविळासिणी—स स्त्री — वन मे विलास या विचरण करने वाली देवी ।

वनवीरोत—स पु —राठीड वश की एक उपशाखा या उस शाखा का व्यक्ति ।

वनसण—स स्त्री. [स वनशण] शण-पुष्पी नामक औषधि विशेष । (निघटु)

रू भे.—वनसण ।

वनसपति, वनसपती—देखो 'वनस्पति' (रू भे.)

उ०—१ वनसपति फूली फली, नाना रग घरति । तिम तू योवन जाणीजै, खिण एक-माहि खिरति । —मा का प्र

उ०—२ वनसपती पुहपति विसतारै । भवर गुजार करै सुर भारै । —सू प्र

उ०—३ वनसपती सू बेला लपटनै रही छै । —रा सा स

वनसी—१ देखो 'वसी' (रू भे) (अ मा)

२ देखो 'वसी' (रू भे)

वनासपति, वनासपती—देखो 'वनासपति' (रू भे.)

वनस्थळि, वनस्थली—स. पु. [सं वनस्थली] १ वनो से घिरा हुआ प्रदेश । अरण्य देश ।

२ वन का भाग ।

रू. भे.—वनस्थळी, वनस्थळी ।

वनस्पति—स स्त्री [स. वनस्पति.] १ जमीन से अकुरित होकर उत्पन्न होने वाले पेड, पौधे, लताए, घास आदि ।

२ बडा जगली वृक्ष जिसमे पुष्प लगे विना ही फल लगते हो ।

३ वृक्ष, पेड ।

रू भे —वनमपति, वनसपती, वनस्पति, वनस्थली, वनासपति, वनासपती, वनसपति, वनसपती, वनासपति, वनासपती ।

वनस्पतिसास्त्र—स पु [स वनस्पति+शास्त्र] वह शास्त्र जिसमें पेड-पौधो की उत्पत्ति, गुणधर्म तथा जातियो का वैज्ञानिक ढग से विवेचन किया हो, वनस्पति-विज्ञान ।

रू भे —वनस्पति-विद्या ।

वनागनी, वनाग्नि—स स्त्री यी [स वन+अग्नि] वन मे लगने वाली आग, दावानल ।

रू भे —वनागनी, वनाग्नि, वनिअग्नि ।

वनात—देखो 'वनात' (रू भे)

उ०—घणी रग रग री वनात मुखमल कळावूती सोने रूप रा वणिया जीण हाजर कीजे छै । —रा मा. स.

वनाती—१ देखो 'वनाती' (रू. भे)

उ०—वनाती भूला घातिया रहकला, इकां, खडसला बूता छै । सू हालिया थका घोडा री माम पाडे । —रा सा. स.

२ देखो 'वनात' (रू भे)

उ०—घोडी तो भीजै, पिया, नवलखौरै, कोई भीजे रे वनाती, भीजे रे वनाती, रे साज । —लो गी

वनाधिप, वनाधिपति—स पु [स वन+अधिपति] सिंह, शेर ।

रू भे —वणाधिप, वणाधिपति ।

वनापार—वि —अत्यधिक, अपार ।

उ०—मोसरा ताण धमसाण रे मागडे, पागडे जैत खाटे वनापार । जोघपुर नाथ कर कोप पुठे जका, ऊतन छूटे तका हुए आघार ।

—जवान जी आढी

वनायु—स पु [स] १ एक प्रचीन देश जहा के घोडे प्रसिद्ध होते थे ।

२ उक्त देश का निवासी ।

३ पुंश्रवस् राजा का सर्वश्री से उत्पन्न पुत्र ।

४ एक दानव जो कश्यप एवं दनु के दस प्रधान पुत्रों मे मे एक था ।

वनायुज—स पु [स] १ उक्त देश (वनायु) का घोडा । (डि को)

२ घोडा (डि को)

वनाळ-स. स्त्री [स वन+अलिका] १ सूरजमुखी ।

२ देवदाली घघरवेल, वदाळ । (अमरत)

३ देखो 'वन' (मह., रू. भे)

वनास—देखो 'वनास' (रू. भे)

उ०—चढती सुहाससर, वनास फळती छोळा, सुभ्र गीडुलती बीरा करीरा सुवास । समीरा हलती वेस गहीरा तरा री साखा, कमोद फूलती नीरा चीगणी प्रकास । —महाराजा मानसिंह

वनासपति वनासपती—१ देखो वनस्पति' (रू. भे.)

उ०—गिरा खळकक नीर नदि, भरणा भरै अपार । वनासपति पापर वणी, विविध अठारै भार । —गज उद्धार

२ देखो 'वनासपति' (रू. भे)

वनि-स स्त्री [स वह्नि] १ अग्नि, आग । (ना हि. को)

[स वनि] २ अभिलाषा, कामना ।

३ याचना ।

४ देखो 'वनी' (रू. भे)

उ०—१ पथी एक सदेसडइ, लग डोलइ पहंच्याइ । विरह-वाप्र वनि तनि वसइ, सेहर गाणइ आइ । —ढो मा

उ०—२ (इसी) जु मालिण छै सु वनि वनि रै विलै केसरि चुणै छै । —वेलि टी

५ देखो 'वनी' (रू. भे)

रू. भे.—वनि, वह्नि, वन्ही वहनि वहनी वेहनि, वेहनी, वनी, वनि, वह्नि, वन्ही ।

वनिअगनी—देखो 'वनागनी' (रू. भे)

उ०—आवै सगण अचीत, जेम वनिअगनि सिळगगा । सरप विकल सोगवा, मत्र आवै सुखमगा । —रा रू

वनिता-स स्त्री. [स] १ पत्नी, भार्या ।

उ०—वनिता-पती विदेस गय, मदिर-मभै अद्वरयणीए वाळा । लिहइ भुयगी, कहि सुदरि कवण चुज्जेण । —ढो मा

२ स्त्री, श्रीरत, नारी, रमणी ।

उ०—वनिता रूपै रात्रि आमणी । —धरम-पत्र

३ प्रियतमा, प्रिया, प्रेयसी ।

४ स्वामिनी, मालकिन ।

५ वैश्या ।

६ दो सगण युक्त छै वणों की एक वृत्ति ।

रू. भे —वनता, वनिता, वणता, वनता, वनित्ता, वनीता ।

वनितामुख-स. पु.—मनुष्यों की एक जाति । (मारकण्डेय पुराण)

वनिता सुत-स पु [स वनतय] गरुड । (हिं ना मा)

वनिता—देखो 'वनिता' (रू. भे.)

उ०—वप सोळह सिणगार वनित्ता, लखण वतीस मजुगत ललित्ता ।

सोभा सारिण किरण मवित्ता, दीपै मदर राज दुहित्ता ।

—गु. रू. व.

वनिस्पत—देखो 'वनिस्पत' (रू. भे.)

वनी-स स्त्री [स] १ छोटा वन, वाटिका ।

उ०—वैरि मदिरि स लाछि सामही, आत्म पीरस वनी समई दही । भू टि भूवि भुभ नारि विनोई, आयमिउ मिहर मू मुह जोई ।

—सालि सूरि

२ बीहड व भयावह जंगल ।

३ वनस्थली, भाडी, कुज ।

४ देखो 'वनी' (रू. भे)

५ देखो 'वनि' (रू. भे.)

रू. भे —वणी, वनि, वनी, वन्नी, वह्नि, वन्ही, वणी ।

वनीत—देखो 'वनीत' (रू. भे)

वनीता—देखो 'वनीता' (रू. भे)

उ०—सोहत वाम दिसा निज सीता, वादळ वीज प्रभाव वनीता ।

—र. ज. प्र.

वनीपक, वनीपक-स. पु [स] भिखारी, भिक्षुक, याचक । (ह ना मा)

वनीसिख-स स्त्री. [स वह्नि-सिख] केसर । (ह. ना मा)

वनु—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—दह दिसि इम जा वनु आरोडइ । जीव विण्णासइ तरुवर मोडइ । जा इम दलवइ पारवि लागई तांम अ भमु पेखइ आगइ ।

—प. प. च.

वनेचर—देखो 'वनेचर' (रू. भे)

वने—देखो 'वने' (रू. भे)

वनोक-स पु [स वनीकस्] वानर ।

रू. भे —'वनोक'

वनोडा - देखो 'वणोडी' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हेमी वोलियो-कूभा मालाणी । कटक वाळ वनोडा मता नाखै । साइया मिळी । ताहरा कूभी घोई हू उतरियो ।

—नैणसी

वनोत्सरण-स पु [स वन+उत्सर्ग] १ देव मन्दिर, वापी, कूप उपवन आदि वनवा कर सार्वजनिक उपयोगार्थ, शास्त्र विधि से दिया जाने वाला दान, उत्सर्ग ।

२ उक्त प्रकार के दान की शास्त्रोक्त विधि ।

वनोद-स पु [स वनोदय] १ कमल ।

२ देखो 'विनोद' (रू. भे)

वनोदनैणी—वि स्त्री. — जिसके नैत्र कमल के सदृश्य हो, कमल-नयनी ।

उ०—नाहरा नु करै जेर जाहरा बिनोदनैणी, प्रचा दोग राहरा ।
नु देर लेणी पेस । दिल्ली ईस जिसा केर नरा नू ऊयाप देणी, दीना
नाथ 'सैणी' बीस करा नू आदेस । —नवलजी लालस

बनोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बनोळी—देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

बनोवास—देखो 'वनवास' । रू. भे.)

उ०—किसा दीह आणुद-विन्नोद कीधा । लहै भूप आग्या बनोवास
लीधा । —सू. प्र.

बनौ—देखो 'वनौ' (रू. भे.)

उ०—१ रहियौ एकज रात, कोलूमड पावू कमद । पमंग चढे
परभात, वरवा धण खडिया बनौ । —पा. प्र.

उ०—२ दुखा रौ डेरियो वीकानेरियो दिना रौ दादौ, दीठा सीस
डेरियो हेरियो जरादूत । झूटे लोव लाग बनौ हेरियो वखाकभड,
पीडी सात भात पाणी फेरियो कपूत । —उदैभाग वारहठ

बनोकस—स पु [स] १ वदर, वानर ।

२ वनवासी ।

बनौखद बनौसद—स. स्त्री [स वन+श्रीषधि] १ जगल मे पैदा होने
वाली श्रीषधि, जडी, बूटी ।

बन—देखो 'वन' (रू. भे.)

उ०—सीहा देस विदेस, सम, सीहा किसा उतन्न । सीह जिक्के वन
सचरै, सो सीहा रौ वन्न । —वा. दा.

बन्नमाळ—देखो 'वनमाळा' (रू. भे.)

बन्नमाळी—देखो 'वनमाळी' (रू. भे.)

उ०—तिसी तंत ताती बजी ताल ताळी, मडघौ पाव आरभियो
बन्नमाळी । —ना. द

बन्नर—देखो 'वानर' (रू. भे.)

उ०—मूगले कहिय मुहि मारि मारि, घूणियउ कोट काळइ कघारि ।
पतिसाह तणै भालिय पखाण, जुधि चडिय लक बन्नर जाण ।

—रा. ज. सी

बन्नरमाळ, बन्नरमाळा, बन्नरवाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—१ दिल्ली नगरी-रै साज-रौ आज काई कैणी । घर घर
फरिया अर बन्नरमाळावां बाघीचै है । चारू कानी बाजा बाजे है ।

—वरसागठ

उ०—२ अति अर भोर तोरण अजु अजुज, कळी सु मगळ कळस
करि । बन्नरवाळ बघाणी वल्ली, तरवर एका विर्य तरि । —वेलि

बन्नि—१ देखो 'वन' (अल्पा रू. भे.)

उ०—१ केमरि कथिन्न साभळि कन्नि, वाउळि कि वन्नि लागउ

वहन्नि । 'वीकाहर' राजा ए वखाण । जाळोवळि सीतर धित
जाण ।

—रा. ज. सी

उ०—२ एकइ वन्नि वसतडा, एवड अतर काई । सीह कवड्डी
नह लहइ, गइवर लखि विकारि ।

—अ. वचनिका

२ देखो 'वनि' (रू. भे.)

बन्निजणौ, बन्निजबौ—देखो 'वरणणी, वरणवौ' (रू. भे.)

उ०—जिम चिंतामणि रयण मन्नि, उत्तम सलहिज्जइ । जिम
कणयाचल गिरिह मन्नि, किरि घुरहि ठविज्जइ । जिम सोह गह
वत्थु मन्नि, ससहर वन्निज्जइ, जिम तरुह मन्नि वळित कर, सुरतर
महिमा महमहइ ।

—अभयतिक यति

२ देखो 'विणजणी, विणजवौ' (रू. भे.)

बन्निजियोडौ—१ देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

२ देखो 'विणजियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बन्निजियोडी)

बन्नीयणौ, बन्नीयबौ—देखो 'वरणणी, वरणवौ' (रू. भे.)

उ०—तीणइ थापिउ तिह यण सारौ, वीजउ अमरापुरि अरतारौ ।
हयिणाउरपुरु बन्नीयण ।

—प. प. च

बन्नीयोडौ—देखो 'वरणियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री बन्नीयोडी)

बन्नि-वि [स] १ वन का, वन सम्बन्धी, जगळी ।

२ जगल मे उत्पन्न, जगल की पैदाइश ।

३ बर्वर, हिसक ।

४ असभ्य, अशिष्ट ।

स. पु १ जगली सूरन ।

२ क्षीर विदारि ।

३ वाराही कन्द ।

४ राख ।

बन्निकर—देखो 'वनकर' (रू. भे.)

बन्न्या—स स्त्री [स.] १ बडा वन, अनेक वन ।

२ जल की वाढ ।

३ अश्वगध ।

६ गोपाल ककडी ।

(४) मुद्गपर्णि ।

(५) गुजा ।

बन्नमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू. भे.)

उ०—पूजा-पाठ निराठ, वरै बन्नमाळां मोळी ।

जागण राती जगा, दसुटण दायजा चोळी ।

—दसदेव

बन्नि—१ देखो 'वनि' (रू. भे.)

२ देखो 'बनी' (रू. भे)

३ देखो 'बन' (अल्पा, रू. भे)

४ देखो 'बह्नि' (रू. भे.)

उ०—सीत न तावड मनि गण्ड, दिवस न रयणी सक । भूख
पिपासा न बह्नि जल, केवल यथा करक । —मा का प्र

बन्ही—१ देखो 'बणी' (रू. भे)

उ०—सबकी सीर सपूत मे, सब कोई मित सपूत । कुळरी ढाकण
होत है, ज्यू बन्ही को सूत । —अज्ञात

२ देखो 'बह्नि' (रू. भे.)

बन्ही—देखो 'बनी' (रू. भे)

वप—देखो 'वपु' (रू. भे) (हं. ना. मा)

उ०—पेखियो सहर जोधाण-पत, सब जण घणी सपेखियो । वप
आम परख च्यारु वरण, लाभ नयण पण लेखियो । —रा. रू.

उ०—२ राम लगण सत्रघण भरथ, सूरज वस सिंगार । एक अस
चन वप अवधि, ऐ चत्रघा अवतार । —सू. प्र.

वपणी—स. स्त्री—१ नाईयो के हजामत करने का स्थान

२ देखो 'विपणी' (रू. भे)

वपन—स पु [स] १ बीज बीने की क्रिया या भाव ।

२ शिर-मुडाई, हजामत ।

३ वीर्य ।

वपराणी, वपरावी—क्रि स. [स व्यापरणम्] १ अपने उपयोग के लिये
किसी वस्तु की व्यवस्था करना, उस वस्तु को किसी तरीके से प्राप्त
करना । उपलब्ध करना ।

उ०—मन कन्ती जणा ई मासी सिरै गाय वपराय लेती गायी री
ई एक छोटी-मोटी धाग वणगी ही । —फुलवाडी

२ व्याप्त करना, मचार करना, फँसाना ।

उ०—वपराती ठाडोळ, तूठजै वार नेगाळा । दुखिया मेठण दुखव
विहड घण सपत बाळा । —मेघ

३ उपयोग करना, उपभोग करना, इस्तेमाल करना ।

वपराणहार, हारी (हारी), वपराणियो—वि० ।

वपरायोडो - भू० का० कृ० ।

वपराईजणो, वपराईजवो—कर्म वा० ।

वपराणो, वपरावो, वपरावणो, वपरावणो—रू. भे ।

वपरायोडो—भू. का. कृ.—१ उपयोग या आवश्यकता पूर्ति के लिये किसी
वस्तु की व्यवस्था किया हुआ, प्राप्त किया हुआ उपलब्ध किया
हुआ २ व्याप्त किया हुआ, मचार किया हुआ, फँसाया हुआ।

३ उपभोग किया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ ।

(स्त्री वपरायोडी)

वपरावणो, उपरावणो—देखो 'वपराणी, वपरावी' (रू. भे.)

वपरावणहार, हारी (हारी), वपरावणियो—वि० ।

वपराविओडो, वपरावियोडो, वपरावयोडो—भू० का० कृ० ।

वपरावीजणो, वपरावीजवो—कर्म वा० ।

वपरावियोडो—देखो 'वपरायोडी' (रू. भे)

(स्त्री वपरावियोडी)

वपरीत—देखो 'विपरीत' (रू. भे)

उ०—'केहर' 'कादळ' मारकी, ऐ अगलूणी रीत । 'कादळ' 'केहर'
मारियो, रीत कना वपरीत । —हरराम आसियो

वपरुच-स पु [स वपु + रुचि=कृति] खून, रक्त । (अ. मा)

वपा—स स्त्री [स] १ चर्ची ।

२ मेद ।

३ गुफा ।

४ चीटियो या दीपक द्वारा बनाया हुआ मिट्टी का टीला । बल्मीक

५ वावी ।

रू. भे—वपा ।

वपि—देखो 'वपु' (रू. भे)

उ०—वपि—केसरिया साज वणाया । उभै सहस सिंधुर धुज
आया । —सू. प्र

वपु—स पु [स वपुस] १ शरीर, देह, अण, काया ।

उ०—१ खग नीर घोर अतर खरा मद कुजर वपु जिम मयण ।
मन वसै तेम तू माहरै, मी मन वसियो महमहण । —ह. र.

उ०—२ वपु दस गुणै, जोर नप वधियो । सौ गुण अनत पराक्रम
सधियो । —सू. प्र.

२ रूप, सौन्दर्य, वरण ।

३ आकार आकृति ।

रू. भे—वप, वपु, वपुस, वप्प, वप्पु, वप, वपि, वपुख, वप्प ।

वपुस—देखो 'वपु' (रू. भे)

उ०—सिर नासा कान दसन आसै, नप गाळ वपुख ना मल नासै ।
भिलणी लेखी करै मशणी, विहचण अपणी करि घन घरणी ।

—वृ. स्त ।

२ देखो 'वपुस' (रू. भे)

वपुस—म पु [स. वपुस] देवता ।

रू. भे.—वपुख, वपुस ।

वपुस्टमा—म स्त्री. [स वपुस्टमा] काशिराज सुवर्णवर्मन् की कन्या जो

जन्मेजय को व्याही गई थी ।

वि वि — इसके शतानीक व शकुकर्यं नामक दो पुत्र थे ।

वपुष्मती—स स्त्री [स. वपुष्मती] १ सिन्धुराज की पुत्री जो राजा मरुत्त की पत्नी थी ।

२ स्कद की एक अनुचरी ।

वप्प—देखो 'वपु' (रू भे.)

उ०—देवी वाहन नाम कं वप्प-वाली । देवी खग्न सूलधरा खप्पर वाली । —देवि

वप्र—स पु [स वप्र, वप्र] १ मिट्टी की दीवाल ।

२ शहर-पनाह ।

३ मिट्टी का टीला ।

४ चौटी या शिखर ।

५ नदी तट ।

६ किसी भवन की नींव ।

७ पहाड का उतार ।

८ शहर-पनाह का द्वार या फाटक ।

९ खाई की मिट्टी का उसके किनारे बना हुआ धुस्स ।

१० वृत्त का व्यास ।

११ खेत ।

१२ मिट्टी, धूल, रेणु ।

[स वप्रिन्] १३ प्रजापति ।

१४ द्वापर युग के व्यास ।

वप्रवरण—सं पु [स वप्रवरण] गढ, किला । (अ मा, ह. ना मा)

वप्रौढी—स पु [स. विवोढी] १ पति । (ह ना मा)

२ दूल्हा, वर ।

वफा—स स्त्री [फा] १ निर्वाह, पालन, अमल ।

२ सद्ब्यवहार, वर्ताव ।

३ प्रेम, मोहव्वत ।

४ निष्ठा, आस्था, भक्ती ।

५ सुशीलता, सज्जता ।

वफादार—वि [फा] १ अपनी प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, वचन निभाने वाला ।

उ०—हर बात मे कौल पालणो वडी बात छै । वफादार साच रौ सग करजै, साचौ कोल पाळणो —नी प्र.

२ स्वामी भक्त, नमक हलाल ।

३ कर्त्तव्य-निष्ठ ।

४ सच्चा ।

रू भे —वफादार ।

वफादारी, वफेदारी—स स्त्री. [फा. वफादारी] १ वफादार होने की अवस्था या भाव ।

२ प्रतिज्ञा पालन करने की क्रिया या भाव ।

उ०—तो गोपालदास नवाव नू कहाई जे बात ती म्हासूं ही मालुम हुई छै । नवाव तुम हम सृ सलाह करौ तो वफेदारी है । —गौड गोपालदास री वारता

३ स्वामी भक्त ।

उ०—तद गोपालदास कही वादशाह री चाकरी मे वफेदारी काई नही । —गौड गोपालदास री वारता

४ कर्त्तव्य निष्ठा ।

५ सच्चाई ।

रू भे —वफादारी, वफेदारी ।

वफारी—देखो 'वफारी' (रू भे)

वढभीखण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

वढभीखणौ—देखो 'विभीसण' (अल्पा, रू भे)

उ०—उवै वार वढभीखणौ चालि आयौ । लखै ते हगुमान पावा लगायो । —सू. प्र

वमक—देखो 'भमक' (रू भे)

वमकणौ, वमकवौ—देखो 'भमकणौ, भमकवौ' (रू भे)

उ०—१ चहक पावक वमक चहु चक । तद अरक रथ धरक कौतिक, उदधि रण अण थाह । —सू. प्र

उ० - २ जळ बडवानळ जिको जळार्वे, ऊहो तिको समदचे आवे । वात एम कहता नग वाणी, पहाड फोडि वमकियो पाणी ।

—सू. प्र

उ०—३ घड फूटत तूटत सीस धार पडनाळ खोण वमक अपार ।

उ०—४ डील ऊकळी वमकि ऊठै, मरद शवाळा आ गिरै । जाल झाली देय बुलावे सुखद छांय सरजित करै । —इमदेव

वमकरणहार, हारौ (हारी), वमकणियो—वि० ।

वमकियोडौ, वमकियोडौ, वमकयोडौ—भू० का० कृ०

वमकौजणौ वमकौजवौ—भाव वा ।

वमकाणौ, वमकावौ—देखो 'भमकाणौ, भमकावौ' ।

वमकाणहार, हारौ (हारी), वमकाणियो—वि० ।

वमकायोडौ—भू० का० कृ० ।

वमकाईजणौ, वमकाईजवौ—कर्म वा०

वमकायोडौ—देखो 'भमकायोडौ' (रू भे)

(स्त्री वमकायोडौ)

वमकार—देखो 'भमकार' (रू भे)

उ०—तिर आयो तीरू, गज हमगीरू, चवै सरीरू, कर चीरू ।
वभकार गहीरू, आयो भीरू, होय कठीरू, हडडतू । —भगतमाल

वभक्तियोडी—देखो 'वभक्तियोडी' (रू भे)

(स्त्री. वभक्तियोडी)

वभक्ती—देखो 'वभक्ती' (रू. भे)

उ०—हील ऊरळ वभक्ती उठे, मरद भ्रंवाळा आ गिरै । जाळ
आली देय बुलावै, सुखद छाय सरजित करै ॥ —दसदेव

वभक्ती, वभक्ती—देखो 'वभक्ती, वभक्ती' (रू भे)

उ०—१ लोही घलघक्क वभक्कत लाल । पडै घर जाणिए पतग
पसाल । —सू प्र

उ०—२ रोळ गजा गंधडा वभक्कं घाव चोळ रस्ता । सळाबोळ
गीघा आयो वेताळीम क्रोध । —हुकमीचद खिडियी

वभक्कणहार, हारो (हारी), वभक्कणियो—वि० ।

वभक्कणोडी, वभक्कणोडी, वभक्कणोडी—भू० का० कृ० ।

वभक्कणोडी, वभक्कणोडी—भाव वा० ।

वभक्कणो, वभक्कणो—देखो 'वभक्कणो, वभक्कणो' (रू. भे.)

वभक्कणहार, हारो (हारी), वभक्कणियो—वि० ।

वभक्कणोडी—भू० का० कृ० ।

वभक्कणोडी, वभक्कणोडी—कर्म वा० ।

वभक्कणोडी—देखो 'वभक्कणोडी' (रू भे)

(स्त्री वभक्कणोडी)

वभक्कणोडी—देखो 'वभक्कणोडी' (रू भे)

(स्त्री वभक्कणोडी)

वभक्कणो—स पु [स. इन्द्रिय-विभु] इन्द्र । (भ्र. मा)

वभक्कणो—देखो 'वभक्कणो' (रू भे)

उ०—पतसाहा हु अमेल परठीयो, भरीयो सुरत अनत वभाड ।
अमर "अमर" तणो ऊगाडी, छत्र घारीया तणो श्रीछाड ।
—अमरसिंह रो गीत

वभाडणी, वभाडणी—देखो 'वभाडणी, वभाडणी' (रू. भे)

वभाडणीहार, हारो (हारी), वभाडणियो—वि० ।

वभाडणीोडी, वभाडणीोडी, वभाडणीोडी—भू० का० कृ० ।

वभाडणीोडी, वभाडणीोडी—कर्म वा० ।

वभाडणीोडी—देखो 'वभाडणीोडी' (रू भे)

(स्त्री वभाडणीोडी)

वभोपण, वभोपण—देखो 'वभोपण' (रू भे)

उ०—अवि वभोपण लक राज रघुवर आविया अवचेस । —सू प्र

वभुत—१ देखो 'वभुता' (रू भे)

२ देखो 'वभुति' (रू भे.)

वभुत—देखो 'वभुति' (रू भे)

उ०—धू परि आड वभुत तिलक घरि । कदळी पत्र दीघ राजा
करि । —सू. प्र.

वभुतासिद्ध—देखो 'वभुतासिद्ध' (रू. भे)

वभुति—देखो 'वभुति' (रू भे)

वभुतीक्षण—देखो 'वभुतीक्षण' (रू. भे.)

उ०—उरघ अवर उदरण, वेद ब्रह्मा गावाळण । दळ दाणव
निरदळण, अरव रामण चौ गाळण । वभुतीक्षण जण करण, सबळ
देता सधारण । नवनाथ निमधियण, त्रिविध लोका ऊपावण ।
—ज खि

वभु—देखो 'वभु' (रू. भे.)

वभुपिपळा—स स्त्री—शनि । (भ्र. मा)

वभुवाहन—देखो 'वभुवाहन' (रू. भे.)

वभुवो, वभुवो—कि. स. [स. वमनम्] १ कै करना, वमन करना ।
(उ. र)

२ धूकना ।

३ उडेलना ।

४ उगलना, प्रकट करना । (उ. र.)

५ फंकना ।

६ खारिज करना, अस्वीकार करना, त्यागना ।

उ०—हिव मिथ्यात्व वभीयउ, मन उपसमियो अति घणु । दुरदम
दिल दमियउ, समकित रभीयउ गुण धुणु । —वि कु.

वभुवोहार, हारो (हारी), वभुवोयो—वि० ।

वभुवोडी, वभुवोडी, वभुवोडी—भू० का० कृ० ।

वभुवोडी, वभुवोडी—कर्म वा० ।

वभु, वभु—स पू. [स. वभु] १ हाथी की सूड का पानी ।

२ कै, उलटी ।

वभन—स पु. [स.] १ कै या उलटी करने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

२ कै, उलटी ।

३ धूक ।

४ उडेलना क्रिया ।

५ उगलना क्रिया ।

६ फंकना क्रिया ।

७ त्याग छुटकारा, अस्वीकृति ।

वभर—देखो 'वभर' (रू. भे.)

उ०—एक महामोटी प्रवत छै । तण ऊपरा देवळ छै । तडै वमर
छै । सो गुपत गेली आपा रा घर वीच नीसठे छै ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाढेल रो वात

कन्नियोडी—भू. का. कृ—१ कै किया हुआ, वमन किया हुआ ।
२ धूका हुआ. ३ उडेला हुआ ४ उगला हुआ, प्रगट किया हुआ
५ फंका हुआ । ६ खारिज किया हुआ, अस्वीकार किया हुआ,
त्यागा हुआ ।

(स्त्री. वमियोडी)

वमुख, वमुह—देखो-‘विमुख’ (रू भे.)

उ०—१ घर कारण वेहू आवडे छत्रघर, पाछट खग दाखवीयी
पाण। कुंभलभेर न दीघी कुंभ, सेवा वमुख गयी सुरताण ।
—महाराणा कुभा री गीत

उ०—२ सुजड भडता वाड नप वेहू अडतां समर, खत्री अन देख
सत वमुह खडता । अंगाडी तणा भड खडे अस आवीया, पछाडीं
ऊपर भार पडता । —पहाडखा भाडी

वमेक—देखो ‘विवेक’ (रू भे)

उ०—इसी वमेक सद्रढ मत ऐही । जोगेसुरा दुलभ अति जेही ।
—सू. प्र.

वम्मरी—देखो ‘विवर’ (अल्पा, रू भे)

उ०—देवी वम्मरे डूगरे रन्न वन्न । देवी थूवडे लीवडे थन्न थन्न ।
—देवि

वयड—देखो ‘वितड’ (रू भे.) (अ मां, हे. ना. मा)

उ०—१ तूटा गज सिर करे ववाका, दातूसळा बजावै डाका ।
गत नत करि सिधु सुर गावै, वयड सूड ची भेर वणावै । —सू. प्र.

उ०—२ पटहसति सूडि फेरइ प्रचड, श्रिख दिसा वोम नाखइ
वयड । पटहसती छाया पकखरेह, पाहाड जाणि हालइ पगेह ।
—रा ज सी

उ०—३ निपट खळा ची नार कथे कहे नित नाह नै, वयड खळ
भाड ती देख हथवाह नै । रोस इळ छोड जावै अगम राह नै,
समर मत छेडजे कवर “रणसाह” नै ।

—रणसिंह सीसोदिया री गीत

उ० देखो ‘वडी’ (मह, रू भे)

वयडकनी—वि. स्त्री [स वड+कणिक] कटे कान वाली ।

वयडचर—स. पु. [स वितड+चर] अनलपक्षी ।

उ०—वयडका घडा आडा-खडा वाडत, गाढमल जाजमा घकै गाहै ।
मभी समर वीर नारद अछर माहिहया, माहिहया वयडचर समर
मोहै । —राव बुधसिंह हाडा री गीत

वयडमुख—देखो ‘वितडमुख’ (रू भे)

वयड—देखो ‘वियत’ (रू भे) (ना मा)

वय—स स्त्री. [स] १ बीता हुआ जीवन-काल, उम्र, अवस्था ।
—(अ. मा)

उ०—१ अग सो लियो कनिक उराहारं । सोळ वरस वय सोळ
सिगारं । —सू. प्र.

उ०—२ वय किसोर उतरै, जोर जोवन परगट्टै । अणमायी अत्र
में ति किरि रतनाकर तट्टै । —रा रू.

२। जवानी, युवावस्था ।

३ समय, फाल । (ह ता मा) (अनेका.)

उ०—पलटै वय पलटै प्रकत, रिनु दिन पलटै रेस । पलटै नही
“प्रतापसी,” विछुटे जे मुख वणै । —जैतदान वारहठ

४ क्रम । (अनेका)

५ विस्तार । (,)

६ बल, शक्ति । (,)

७ पक्षी, विहग । (,)

[स वच्] न वचन, वाणी, बोल ।

उ०—१ भुक वहणी नह जाणियो, दीयण वय मुख दव्व । “पातल”
हदा उरथ पण, सघा अनम सरव्व । —जैतदान वारहठ

उ०—२ जाणमती वय ससौ राजिद, तात कहू विष तोनू । सीपत
सेस उधारण, सता, देह घरी नर दोनू । —र. रू.

९ स्वर, आवाज ।

उ०—इहत केळि डाळय, उपति वद्रवालय । वहत दुदभ वय
जपत देव जै जय । —सू. प्र.

१० छप्पय छंद का एक भेद जिसमें, ४८ गुरु व ५६ लघु कुल १५२-
मात्राएँ होती हैं ।

उ०—गुर अडचासा गाइजै, लघु कर छप्पन लेख । वय छपय
वाखाणीय, सेसौ कहे विसेख । —पिंगळ सिरोमणि

११—जुलाहा ।

१२ वसिष्ठ कुलोत्पन्न एक गोयकार ।

वि [स वयस्य] समान ।

उ०—वावर वीखरिया ओढणिये आडे, डावर नयणा री टावर वय
डाडे । —ऊ का.

रू भे—वय, वय, वइ ।

वयअनीत—स पु [स अनीत-वय] युधिष्ठिर । (अ. मा)

वयकुंठ—देखो ‘वैकुंठ’ (रू भे)

वयगरणु, वयगरणी—देखो ‘व्ययकरणिक’ (रू भे) (उ र)

उ०—मन्नि महामनि राणा श्रीगरणा वयगरणा रायगरणा
घरमाधिगरणा देव गरणा नायक दडनायक अग लेखक भाडा
गारिक । —व स.

वयगरणी—देखो ‘व्ययकरणिक’ (रू. भे.)

उ०—क्षण एक नाइ वयगरणी, क्षण एक जाइ राजगारणि, क्षण

एक जाड़ हस्ति साला, क्षण एक जाड़ आयुष साला, क्षण एक जाड़ वाहरिण, क्षण एक जाड़ राजकुलि । —व. स.

ट्टणी, वयट्टणी—देखो 'वैठणी, वैठणी' (रु. भे.)

उ०—सेज रमता मारुवी, खिण मेल्हणी मजाइ । जाणिक विकसी केतकी, भमर वयट्टण आई । —ढी. मा.

वयट्टियोडी—देखो 'वैठियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. वयट्टियोडी)

वयण—देखो 'वचन' (रु. भे.)

उ०—१ धूर लियो ओ चौतरफ, केवी वयण कहत । वाघ केम छिपिया वच, रुपिया धरम रहत । —बा. दा

उ०—२ गाठि री कोइन लगं गरथ, सिगला हुइ जिया थी सयण । धरम नै करम सह मे धुरा, बडी वस्तु मीठी वयण । —घ. व प्र

उ०—३ धयण गाढा वडचढे, मूठी गाढा खण । हजरती दरवारमे, विरतावीये वघ । —गु. रु. व.,

वयणडी—देखो 'वचन' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—बलिहारी गुरु वयणडे, बलिहारी गुरुमुख चद रे । बलिहारी गुरु नयणडे, पेखहता परमाणद रे । —स. कु.

वयणडूठ—वि —अपने वचनो पर हठ रहने वाला ।

उ०—साम धरम रत्ता पण साचै । वयणडूठ मुख झूठ न वाचै । —रा. रु.

वयणपुल्ल—स. पु [स वचन+पुण्य] मुख से शुभ वचन बोलने पर होने वाला पुण्य । (जैन)

वयणसगाई—स स्त्री.—डिगल काव्य का एक शब्दालंकार विशेष जिसमे, किसी छन्द के प्रथम चरण के प्रथम शब्द के आदि मे जो वर्ण आता है वही वर्ण उस चरण के अन्तिम शब्द के आदि मे आता है ।

उ०—वयणसगाई वेस, मिल्या साच दोखण मिटे । किरायक समे कवेस, थपियो सगपण ऊपे । —र. रु.

वि. वि —वयण सगाई के प्रमुख तीन भेद माने गये हैं—

(१) शब्द-वर्ण वयण सगाई, (२) वर्ण सख्यक वयण सगाई व (३) मिश्र वर्ण वयण सगाई ।

(१) शब्द-वर्ण वयणसगाई—के र. ज. प्र के अनुसार व र रु के अनुसार तीन भेद हैं ।

“वयण सगाई तीन विधि, आद मध्य तुक अत । —र. ज. प्र

(१) आदिमेल—इसमे छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के आदि में होती है ।

(२) मध्यमेल—इसमे छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के मध्य मे होती है ।

(३) अन्तमेल—इसमे छन्द चरण के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति

चरणान्त शब्द के अन्त मे होती है । इनके अतिरिक्त इसकी तीन श्रेणिया भी मानी गई है —

(१) अत्युत्तम आदि मेल ।

(२) अत्युत्तम मध्य मेल ।

(३) तथा अत्युत्तम अन्त मेल ।

(२) वर्ण सख्यक वयण सगाई—इसमे छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द के नियम से न होकर चरणान्त वर्ण सरया के हिसाब से होती है । इसके निम्नलिखित पांच भेद माने गये हैं—१ अत्युत्तम २ उत्तम ३ मध्यम ४ अग्रम ५ अग्रमाग्रम ।

(३) मिश्र-वर्ण वयण सगाई अथवा अलरोट—इसके अन्तर्गत छन्द चरण के प्रथम शब्द के आदि वर्ण की पुनरावृत्ति चरणान्त शब्द में होने के स्थान पर उस वर्ण के मिश्र वर्ण की आवृत्ति हो जाती है । मिश्र वर्ण निम्न लिखित हैं—

(१) अधिक मिश्र—आ, ई, उ, ए, य, व, ।

(२) सम मिश्र—ज-झ, व-व, प-फ, न-ण, ग-घ-ङ ।

(३) न्यून मिश्र—त-ट, ध-ढ (ठ), द-ड ।

डिगल काव्य मे वयण सगाई का प्रयोग व्यापक रूप से हुआ है । परन्तु इसका निर्वाह अनिवार्य हो ऐसा नहीं है । इसका निर्वाह न होने से किसी छन्द मे दोष आ जाता हो ऐसी बात नहीं है । गीतों मे इसका प्रयोग अनिवार्य माना गया है । १४ वीं शताब्दी की रचना मे इसका प्रयोग देता जाता है । संभवत इसकी शुरुआत इससे पूर्व मे हो चुकी थी ।

रु. भे.—वयणसगाई, वैणसगाई, वैणसगाई

वयद—१ देखो 'वियत' (रु. भे.)

२ देखो 'वैद्य' (रु. भे.)

उ०—विध सव करि जिम ग्रथ वतावै । ओखद ज तू कहै सुजि आवै । सुराँ राज दत हुकम सनेही । अरज वयद कीधी फिर एही ।

—सू. प्र

वयवधना—स. स्त्री —चौहान वंश की एक शाखा ।

वरकरार—देखो 'वरकरार' (रु. भे.)

उ०—राठोहा सोह वधी, वधी सोह हिंदुस्थाना । वरकरार नवकोट, हसम राखिया खजाना । —गु. रु. व.

वयर—देखो 'वैर' (रु. भे.)

उ०—१ म्हाराजा ग्रहा ससत्र भुज मुदारा, सो-गुराँ जोस पडा कथन सुधारा । आन री वार लेसी वयर ऊधारा । देखजै आच काण सर धरै दुधारा । —पदमसिंह आढी

उ०—अग्नि करै कुण इण भाति, खित वयर काडण खाति । इक वयर घरा अवीह, सुजि वस दूजी 'सीह' । —सू प्र

वयरणीयो—[स. पु] शत्रु, वैरी ।

उ०—वयरणीयो रहु वेगली, मुक्क-सिउ म करु बात । आठ दीवाली आज थी, भमु लगी भव सात । —म का प्र

वयराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—१ घर ध्यान सुजाय लिये धिप भे । वयराग सुमाग हूवी विप भे । —पा प्र

उ०—२ वयराग इ मन वालियउ रे, सयम पालइ सुद्ध रे । —स कु

वयरागर—१ देखो 'वैरागर' (रू भे.)

उ०—१ किहा करीतरु, किहा गुजाफल, किहा लोहागर, किहा

वयरागर, किहा गुजाफल, किहा मुक्ताफल । —व. स.

उ०—२ उत्तम भौमधि, सप्त धातुनी खाणि । परवत गधक हीगली, वयरागर वखाणि । —मा का. प्र

२ देखो देखो 'वदरागर' (रू भे)

उ०—१ वामसऊआ मुगवना मागलिया वयरागरां हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडवर नेत्रपट्ट घोटपट्ट राजपट्ट । —व. स.

वयरागरी—१ देखो 'वैरागरी' (रू भे)

उ०—गजराज वध्यावलि, मोती जयकुंजरि, पदम पदमाकरि, तेजस्विता दिवाकरि, हीरा वयरागरि, प्रधान, स्वरणमदिरि, विवेक गूरजरि, विधि विवेकिया तणुइ धरि । —व. स.

२ देखो 'वदरागर' (रू भे)

वयरागियो—१ देखो 'वैरागियो' (रू भे)

उ०—देश्य धन जामात नै, कन्या परणावेह । व्रत लेम्ये वयरागियो मन धरि परम सनेह । —वि कृ

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा, रू भे)

वयरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे.)

उ०—साहेली हे वयरागी गुरु बालहा, साहेली हे वाचइ मूत्र सिद्धात । —स कु

वयराडी—स स्त्री—एक प्रकार की रागिनी विशेष ।

उ०—गावत वयराडी रागइ, अलापत लीसथ आगइ । —स कु

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रू भे)

वयराजीउ—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—नागवटा सारनाला खासटा अग्निहिल कवीच सजरामा मदवी फूलपगरीया सारीपी तिलवास गरुडभसुत्र राजिउ वयराजीउ महिद उरउ । व स

वयराट—१ देखो 'वैराट' (रू. भे.)

२ देखो 'विराट' (रू भे)

उ०—वयराट राणी मनि देवि आणी, गई तेइ नड लेविणु मछ पाणि । —सालिसूरि

वयरि, वयरी—देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—१ राउ दामरण ना वयरि मारइ । —उ र

उ०—२ वयरि वारिउ ऊगता, वली वधारि वयर । रोसि रथ राखी रहिउ आदित थै कुण पडरि । —मा का प्र.

उ०—३ जिया दीहे पावम भरउ, समनेहा सुख होइ । तिणि दिन वयरी वल्लहा, सेज न मुक्कइ कोइ । —ढो. मा

उ०—४ हू क्षणि क्षणि क्षीगी थइ, वाधी वयरणि आस । वाघइ वली वक्षस्थली, निशि नइ उर-निमास । —मा. का प्र

उ०—५ मोटउ कूडउ मागसिरि, वली विचारी जोइ । दिन थोडिउ रयणी घणी, वयरणी काइ विगोइ । —मा का प्र

(स्त्री वयरण, वयरणि, वयरणी)

वयळ—देखो 'वयळ' (रू भे) (अ. मा)

उ०—१ घण खळ असि मीकं खग धाक । वयळ-मडळ नट कुडळ वणाळ । —सू प्र.

उ०—२ हूकहा रायपाळा दुकळ, वयळ घरा सिर दुंद वण । ऐ कहे करी खग भट इसी, रवि वालाणो हाथ रिण । —सू प्र.

वयसधि—स पु. [स] दो अवस्थायो के बीच की स्थिति ।

उ०—मु इत ती न वाळक अवस्था माहे सूपे छै । नै यीवण आये जागै छै । इहि विधि की सधि सु वयसधि कहावै । —वेलि टी.

वयस—स पु [स वयस्] (स्त्री वयसा) १ उत्र ।

२ जवानी ।

[स वयस्य] ३ साथी मित्र ।

४ सहयोगी ।

५ हम-उत्र ।

रू भे—वयस, वेस वैस वयस्य, वेस, वै ।

वयसाळ—देखो 'वैसाळ' (रू भे)

वयसाही—देखो 'वैसाही' (रू भे)

उ०—वीवेइ दीवाली, कालू कात्तिकी, वरस वयसाही नितू वधामणुउं, पेटि पेटि आग्रहणी । —व स.

वयस्यविर—वि साठ वर्ष की अवस्था वाला । (जैन)

वयस्य—देखो 'वयस'

वयाणी—स पु [देशज] विवाह मे गीत गाने के लिये आई स्त्रियों में बाटी जाने वाली मिठाई ।

वयार—देखो 'वयार' (रू. भे.)

उ०—देखी वनरईया फूलन लागी मा, आगम वसत बहार कै ।
श्रीर की श्रीर भई छिव वन फी, कोउक भोले वयार कै ।

—रसीली राज

वयाळ—देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

वयोधर-वि [स. वयोधस्.] (स्त्री. वयोधरी) युवा, तरुण ।

उ०—निसास-रोज आननी उरोज धारनी नही । कसोदरीय कामिनी
विभा वयोधरी नही ।

—ऊ का

वयोम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—साहण समद ऊछळिय सारि, साइयर कउण सकइ सहारि ।
रहचडियउ आवइ रीस रोम, वाजा सबहि फाटइ व्योम ।

—रा ज सी

वयोवरध, वयोवद्ध वयोवध, वयोविध-वि. [स. वयोजुद्ध] जो अवस्था,
अनुभव और ज्ञान में बड़ा हो, वृद्धपुरुष, बूढा ।

वरग-स पु [स. वर+अगम्] १ शिर, मस्तक ।

२ उत्तम शरीराग ।

३ सुडौल शरीर ।

४ देखो 'वराग' (रू. भे.)

[स. वर+अगम्] ५ हस्ती, हाथी ।

६ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—फिता वप वरगा उडे कट किरमरा, सधर धर लडे उत्तवग
बोले सरा । चापडे मचै रिण निसाचर वनचरा, वीर कोतिक रचै
जाण वादीगरा ।

—र रू.

उ०—घषम शरीरठ घटा आवटे मथारण धारण, उडे फाड कूभाथळा
वरगा उरग । राकसा विभाडे पाडे आखाडे वजाडे रूक, 'नाथ'
री सूर रामाडे ऊपाडे निहा ।

—राव सत्रसाल री गीत

वरगन—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

उ०—वरगन कठ घरे वरमाळ, रूका उडी सीस चडे रुडमाळ ।
अपच्छर सूर जोडे हिज आय, जई रथ वैठि वसै सुगि जाय ।

—सू प्र

वरगी-वि —वरग का, वरग सम्बन्धी ।

रू. भे.—वरगी ।

वरक्ष-अव्य [स] १ अपितु, बल्कि ।

२ परतु, किन्तु, लेकिन ।

३ देखो 'विरचि' (रू. भे.)

वरड-स पु [स] १ समूह, भुण्ड ।

२ समुदाय ।

३ घास का ढेर, गट्टर ।

४ चेहरे पर होने वाले मुहासे ।

५ जेव, खीसा ।

६ बसी की डोर ।

[स. वितड] ७ फीलवाने में दो लडाके हाथियों के बीच बनाई
जाने वाली दीवार जो इनको लडने से रोके ।

८ हाथी, गज ।

९ देखो 'वरडो' (मह., रू. भे.)

रू. भे.—वरडक ।

वरडक-स पु. [स] १ हाथी पर रखी जाने वाली अवाडी, होदा ।

२ मिट्टी का टीला ।

३ दीवार ।

४ देखो 'वरड' (रू. भे.)

वरडा-स स्त्री [स] छुरी, खजर ।

२ सारिका पक्षी ।

३ लैप की बत्ती ।

वरडी—देखो 'मिडी' (रू. भे.)

उ०—१ पानि तणी पंगिरु देहरी तण उमहह, चउकी चउ खडे
भलहलइ, उआरे पाणी खलहलइ, पगथिआरा सारुन्यारा, वरडी
उदार लहरीमाला उच्छलइ, मत्तवारणा उपरि पाणी वलइ ।

—व स

उ०—२ भोवै मन माहे जाण्यो, वावडी माहे किसू करै छै । यो जाण
वरडी रा छेकडा माहे जोवै । तठे देखे तो अस्त्री छै ।

—जगडा भुगडा भाटी री वात

३ देखो 'वाडी' (रू. भे.)

वरडी-स पु [स. वरड] बरामदा ।

उ०—निवड लोह तणी ल खला तोडी, पुतार पाडी, कपाट संपुट
फाडी, पडिहार गाजी, चरण सबधीया त्रिगडा भाजी, वरडा
पाडतउ, माणस मारतउ राउत रसाडतउ ।

—व स

रू. भे.—वरडी, विरडो ।

मह.—वरड ।

वर-वि [स. वर] १ सर्वोत्तम, सर्व-श्रेष्ठ ।

२ उत्तम, बढकर, श्रेष्ठ ।

उ०—१ लाघे विखमी चालता होखी, वाट अनड वर वीर प्रवल
पराक्रमी ।

—वि कु

उ०—२ वामा अग वणी वर सुदरि, कनकलता जाणै कळप्पतरि ।

—गु रू. व.

३ चुनने योग्य, योग्य, लायक ।

४ दानी । (५) सुदर । (६) भला ।

स. पु. [स. वर] १ पति, भरतार । (अ मा , ह ना मा)

उ०—१ मारू नू आखइ सखी, एह हमारी बुझ्क । साल्ह कवर
सुहिणइ मिल्यउ, सुहरि सउ वर तुझ्क । —ढो मा

उ०—२ बेटी इतरी मोटी हुई नै इण रँ वर री खबर ही नही ।
न जाणा म्बो किना कठी ही जोगी सन्यासी हुय गयी । —नैणसी

उ०—३ वच्छे । सासुरा तरणी इसी स्थिति जाएवी, सुसरउ
उवेखइ, जेठ नीचउ देखइ, वर पुण लडइ, देवर नडइ, जेठारणी
कुसइ, देअराणी हसइ, नएद नरनरावइ सासु काम करावइ ।

—व. स

२ वधु-प्रार्थी ।

३ स्वामी, मालिक ।

उ०—वीर विच्चवण क्रीत तरणी वर, ढाहण खाग अरिदा हूको ।
'नाथ' तरणी 'सुरतेस' अन्न नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूकी ।
—ठाकर सुरतसिंह चहुवाण री गीत

४ दामाद, जमाता ।

५ देवी-देवताओ से अभीष्ट वस्तु पाने के लिये की जाने वाली
प्रार्थना, याचना, विनय, उपासना ।

६ उक्त प्रकार से प्राप्त होने वाली सत्पुष्टि ।

७ देवी-देवताओ से प्राप्त होने वाला आशीर्वाद, वरदान, अनुग्रह,
सिद्धि ।

उ०—१ मारण माहे पाणी नही । कटक मरण लागी । तद जनी न
कहघी-पाणी पैदा कर । सु जती नू खेतपाळ री वर हुती, रोडी
माहे जाइ खेत्रपाळ जी री आराधना करी । —नैणसी

उ०—२ इक धारण तो जिम चित आवै । पूजै भेव जिनी वर
पावै । —सू प्र

८ अभिलाषा, इच्छा कामना ।

९ भेंट, पुरस्कार ।

१० चुनाव य पसद करने की क्रिया या भाव ।

११ चयन, चुनाव ।

१२ वरण करने, अपनाने, की क्रिया या भाव ।

१३ दहेज ।

१४ लपट व्यक्ति ।

१५ गोरैया पक्षी ।

[स वर] १६ केसर । (डि को.)

१७ हल्दी ।

१८ दाल चीनी ।

१९ अदरक ।

२० सुगध तृण ।

२१ मौलसिरी ।

२२ सेंधा नमक ।

२३ मधु मक्खी का छाता ।

२४ गुग्गुल ।

२५ श्रीकृष्ण ।

२६ दो लघु के एगए के भेद का नाम । (डि को)

[देशज] २७ रहुट के माल की एक लडी ।

प्रत्य. [फा] १ मजा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

व्यू—ताकतवर ।

अव्य.—२ अगर, यदि, और ।

रू भे.—वर, वर ।

वरउमिया—स पु [स उमा-वर] महादेव, शिव ।

वरकठ—स पु [स] सुग्रीव ।

उ०—वरकठ वामा घरी घामा किता कामा वद किया । भय भेट
भारी धनुसधारी अरज सारी येह । —र. रू.

वरक—स पु [फा वरक.] १ सोने या चादी को कूटकर बनाया हुआ
बहुत पतला झिल्ली नुमा पत्तर जो मिठाइयों पर लगा कर खाया
जाता है तथा श्रौपधियों में काम आता है ।

२ पत्र, पृष्ठ, पन्ना ।

३ पत्ता, दल ।

४ टिकट, प्रयोग-पत्र ।

[स. वरक] ५ इच्छा, चाह, वर ।

६ चुग्गा ।

७ जगल में उत्पन्न होने वाला भूग, वन-भूग ।

८ तोलिया, दस्तर (डस्टर), भांडन ।

९ कपडा, वस्त्र ।

१० नाव के ऊपर की छाजन ।

११ देखो 'विरक' (रू भे.)

रू भे.—वरक, वरख, वरग, वरग ।

वरकरार—देखो 'वरकरार' (रू भे)

उ०—साकर प्रथीराजोत । समत १६७२ अरटियौ गाव २ सू
वरकरार । समत १६८४ पूनासर । —नैणसी

वरकिगकमेटी—स स्त्री. [अ] कार्य-कारिणी-समिति ।

वरक्ख—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—अौर्यै तेरस ऊजळी, माह उजाळी पक्क । 'ईदावत' ईजत
सटै, गी वासटै वरक्ख । —रा. रू.

वरक्रंतु, वरक्रत, वरक्रतू, वरक्रित—स पु. [स वरक्रतु] इन्द्र ।

(ना. मा , ह. ना मा.)

वरख—देखो 'वरम' (रू भे)

वरखणी, वरखवो—देखो 'वरसणी, वरसवो' (रू. भे.)

उ०—१ वरस वि च्यारि न मेह वरखि । पडे घर काळ लगी लगी पखि ।
—रामरासी

उ०—२ वेळ चतुर सुजाण, पेम-रग-रस पिया । वरखा-रति घण वरख जाणि कु हरखिया ।
—ढो मा

वरखणहार, हारो (हारो), वरखणियो—वि० ।

वरखिमोडो, वरखियोडो, वरखयोडो,—भू० का० कु० ।

वरखीजणी, वरखीजवो—भाव वा० ।

वरखम—स पु. [स वपमंन्] १ क्षरीर, देह । (अ मा)

२ ऊचाई, माप ।

वरखा—देखो 'वरसा' (रू. भे)

उ०—१ माळवणी ढोलउ कहइ, हिव म्हां मीग करेह । ऊन्हाळउ वरखा विन्दै, रहिया तुझ सनेह ।
—ढो मा

उ०—२ सुर तंतीसु साथ लै, सुरपत साम्हो आय । पोहपन की वरखा करी, लीघो ग्राह वघाय ।
—गजउद्वार

उ०—३ इसी समझयो वण रह्यो छै, वरखा मडन रह्यो छै । विजळी भिळमिळ करने रही छै, वावळा भड लायो छै ।
—रा सा स.

वरखामापक—स पु [स वर्पा+राज. मापक] वर्पा मापने का एक यन्त्र, रेनगेज ।

वरखारत, वरखारित, वरखारिति, वरखारितु वरखागत वरखारति—देखो 'वरमारितु' (रू. भे)

उ०—१ वरखारितु लागि विरहणी जागी आभा भरहरै बीजा आवास करै ।
—रा सा स.

उ०—२ वेळ चतुर सुजाण पेम-रग-रस पिया । वरखा-रति घण वरख जाणि कु हरखिया ।
—ढो मा

वरखियोडो—देखो 'वरसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वरखियोडो)

वरख्यात—स पु. सरोवर, तालाव । (ह ना मा.,)

रू. भे—वरख्यात

वरग—स पु [स. वर्ग] १ श्रेणी, जमात ।

२ जति, समुदाय, समाज ।

३ एक ही समान धर्म वाली वस्तुओ या प्राणियो का समूह, भुड, दल, टोली ।

उ०—१ इसे हीज तत मे कुवरसी चडियो सो जाय साढा रा वरग सरव वेरिया । रैवारी बीस पच्चीस हाथ आया सो मारिया ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ ताहरा पावूजी यहघो-वाई! इ तोनुं दोई मूगरे री साढा रा वरग आणु देईम ।
—नैणसी

उ०—३ सो इहा नै गाय भंग साढा रा वरग घण । मो साढा रै चार रैवारी रहे । सो अति अटावरा रहे, अपजोरा हाने । कही नू खातर में न आणै । मो जिके ही गाय जाय वग्गा री पीहो करै, तिके गांव च्यार पुहर री तिसवारी पडे ।

—कुवरमी साम्रता री वारता

४ किमी उद्देश्य विधेय के निचे बना दृष्टा कुछ व्यक्तियों का दल, पक्ष ।

५ निश्चित अधर समूह मे किमी एक वर्ग मे उच्चरित प्राणी का नाम जिसकी मान्यता पशु, पक्षी के नाम से की जाती है ।

(फनित ज्योनिप)

७ विभाग, भाग ।

८ न्याय शास्त्र के नी या सप्त पदार्थ विभाग ।

९ व्याकरण मे एक स्थान से उच्चारित होने वाले ग्यं व्यजन, वर्णों का समूह ।

१० अथ विभाग, परिच्छेद, प्रकरण, अध्याय ।

११ दो समान अको या राधियों का गुणफल ।

१२ वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौडाई ममान हो, ममरीण ।

१३ शक्ति, ताकत ।

१४ शत्रु दल ।

१५ पथ, पत्ता ।

१६ पाच री मण्या । (डि को)

वि.—पाच ।

रू. मे.—वग वग, वरग, वाग, वग वग, वरग, वाग, ।

वरगडो, वरगडु—स. पु —१ सिंह । (सभा)

२ देपो 'वरगडो' (रू. भे)

वरगफळ—स पु [स वर्गफल] किमी अक को उमी मे गुणा करने पर आने वाला गुणफल ।

वरगमूल—स पु [स वर्गमूल] किसी वर्गाक का वह अक जिसे यदि उसी से गुणन करें तो गुणन का वही वर्गाक हो ।

ज्यू०—४×४=१६ । १६ का वर्ग मूल ४ है ।

वि वि—ये वास्तविक और काल्पनिक दोनो प्रकार के होते हैं ।

वरगळणी, वरगळवो—क्रि. अ.—१ गुमराह, होना, भ्रम मे पडना ।

२ उत्तेजित होना, भडकना ।

वरगळणहार, हारो (हारो), वरगळणियो—वि० ।

वरगळिमोडो, वरगळियोडो, वरगळयोडो—भू० का० कु० ।

वरगळीजणी, वरगळीजवो—भाव वा० ।

वरगळणी, वरगळवो—रू० भे० ।

वरगळायी, वरगळायी—कि स [राज. 'वरगळायी' कि का प्रे. रू]

१ गुमराह करना, भ्रम मे डालना ।

२ उत्तेजित करना, भडकाना ।

वरगळायणहार, हारी (हारी), वरगळायणियाँ—वि० ।

वरगळायोडी - भू० का० कृ० ।

वरगळायीजणी, वरगळायीजवी—कर्म वा० ।

वरगळायी, वरगळायी—रू० भे० ।

वरगळायोडी—भू का कृ १ गुमराह किया हुआ, भ्रम मे डाला हुआ

२ उत्तेजित किया हुआ, भडकाया हुआ ।

(स्त्री वरगळायोडी)

वरगळायोडी—भू का कृ.—१ गुमराह हुआ हुआ, भ्रम मे पडा हुआ

२ उत्तेजित हुआ हुआ, भडका हुआ ।

(स्त्री वरगळायोडी)

वरगिरजा—स. पु [स गिरजा-वर] महादेव, शिव ।

वरगोत्तम—स पु [स वर्गोत्तम] राशियो के वे श्रेष्ठ अश जिनमे स्थित ग्रह शुभ होते हैं । (फलित ज्योतिष)

वरग—देखो 'वरग' (रू भे)

उ०—वर्द असुर गड न दू वरगा । कूची दे आपरा करगा ।

—सू प्र

वरघू—स पु देखो 'वरघू' (रू भे)

उ०—सवद उग्र करनाळ सवाई । सुर वरघू तुरही सहनाई ।

—रा. रू.

वरडणी, वरडवी—देखो 'वरडणी, वरडवी' (रू भे.)

उ०—अधपत "भीम" कुमत्री आर्ट, वरड तीजी वेळा । 'माधव' जिंसा खीजाया मांकी, मडीया ऊबळमेळा । —नवलजी लाळस

वरडणहार, हारी (हारी), वरडणियाँ—वि० ।

वरडिओडी, वरडियोडी, वरडयोडी—भू० का० कृ० ।

वरडोजणी, वरडोजवी—भाव वा० ।

वरडियोडी—देखो 'वरडियोडी' (रू भे)

(स्त्री वरडियोडी)

वरडी—स स्त्री [देशज] १ लाल रंग की मिट्टी विशेष जिस पर पानी बहा स्वच्छ दिखाई देता है ।

उ०—तिकी तळाव किए भात री छे । राती वरडी री । पाडरी नीर । पवन री मारियो फीण आछटती थकी भीला साय रहयो छे ।

—रा. सा स.

२ देखो 'वरडी' (रू भे)

उ०—दोय तो म्हाने छाळी दीज्यो दोय दीज्यो लरडी । काळी भूरी दोनू दीज्यो एक वणाला वरडी ।

—लो गी

वरच—देखो 'वरचस' (रू. भे)

वरचणी, वरचवी—देखो 'विरचणी, विरचवी' (रू. भे)

उ०—सवत चौद पच्यातीइ ए, वरचीउ चरी रसाळु ए, अचल वधामणु ए । —हीराणुद सूरि

वरचणहार, हारी (हारी), वरचणियाँ—वि० ।

वरचियोडी, वरचियोडी, वरचयोडी—भू० का० कृ० ।

वरचीजणी, वरचीजवी—कर्म वा० ।

वरचस—स पु [सं वर्चस्] १ प्रकाश, उजाला, तेज ।

(ना. मा., ह ना मा)

२ कान्ती, दीप्ति ।

३ रूप, शकल ।

४ शक्ति, पराक्रम ।

५ विप्लव ।

६ वृक्ष, पेड ।

रू भे —वरचस, वरच ।

वरचियोडी—देखो 'विरचियोडी' (रू भे)

(स्त्री वरचियोडी)

वरछणी, वरछवी—कि. स. [स वरचम्] १ घाव करना, काटना ।

उ०—धौम पिंड वरछियो, वेध माती घरा, खार खुद राम रिए हाथ लागा वरा । पाण तज मेलिया माण हुय पाधरा, मिळी वहुवाट ग्या थाट मडोवरा । —द दा

२ चीरना, फाडना ।

३ काट कर अलग अलग करना ।

४ देखो 'विरचणी, विरचवी' (रू भे)

वरछणहार, हारी (हारी), वरछणियाँ - वि० ।

वरछियोडी, वरछियोडी, वरछयोडी—भू० का० कृ० ।

वरछीजणी, वरछीजवी—कर्म वा० ।

वरछियोडी—भू. का कृ —१ घाव किया हुआ, काटा हुआ । २ चीरा

हुआ, फाडा हुआ । ३ अलग-अलग किया हुआ ।

४ देखो 'विरचियोडी' (रू भे)

(स्त्री वरछियोडी)

वरजण—देखो 'वरजन' (रू भे.)

उ०—महिपत वूढे मेलियो, वरजण कज असवार । वूक लोक जादा करे, हमें में खादी हार । —पा प्र

वरजणीक—देखो 'वरजनीक' (रू भे.)

वरजणी, वरजवी—देखो 'वरजणी, वरजवी' (रू भे)

उ०—१ खैर नाखे चुगल जोदपुर खजाने, दुजल हव जका न वरज

दीजे । क्रीत रा मडप री नीव गाडी करण, किसन रा पोतरा मदत्त कीजे ।
 —कविराजा वाकीदास

उ०—२ जोतिस सगुन विहू विष जाणै । पोह ज्या धरजे लेख प्रमाणै ।
 —सू. प्र.

उ०—३ दिन रयण सुख विधि धरजि, हिम दुग्ग गरजि करण रम गोहुए ।
 —रा रु.

उ०—४ एह विध्याता नीलज निसि दमयती नि सरजी । प्राकृत नारी नीपाईनि स्मिस्ट जेणि नवि धरजी ।
 —नलास्यान

धरजणहार, हारी (हारी), धरजणियो—वि० ।
 धरजिओडो, धरजियोडो, धरज्योडो—भू० का० कृ० ।
 धरजीजणो, धरजीजवो—कर्म वा० ।

धरजत—वि [स वज्ये] जो निपिद्ध हो, निषेध करने योग्य ।
 स. पु.—पाप । (अ मा)

धरजन—स. स्त्री [स. वर्जनम्] १ निषेध करने की क्रिया या भाव ।
 २ मनाही मुमानियत, निषेध, रोक ।
 ३ व्यवधान, बाधा, अवरोध ।
 ४ परित्याग, त्याग ।
 ५ वैराग्य, विरक्ति ।
 रु भे—धरजण ।

धरजनीक—देखो 'धरजनीक' (रु. भे)

धरजाग, धरजागी—देखो 'धरजाक' (रु. भे)

उ०—१ खाग भ्राग धरजाग, प्रिसण वाळै परजाळै । खप्रवाट कुळवाट, पाट परिया उजवाळै ।
 —गु. रु. व.

उ०—२ जोऐ जुध रीस चढो धरजागि । उठी धत सीचिया जाणिक भागि ।
 —सू. प्र.

धरजाणो, धरजावो—देखो 'धरजाणो, धरजावो' (रु. भे.)

धरजाणहार, हारी (हारी), धरजाणियो—वि० ।
 धरजायोडो—भू० का० कृ० ।
 धरजाईजणो, धरजाईवो—कर्म वा० ।

धरजायोडो—देखो 'धरजायोडो' (रु. भे)

(स्त्री धरजायोडो)

धरजियोडो—देखो 'धरजियोडो' (रु. भे)

(स्त्री. धरजियोडो)

धरजिस—स स्त्री [फा. वर्जिश] १ ऐसा कार्य जिसको करने में शारीरिक श्रम अधिक लगता हो ।
 २ कसरत, व्यायाम ।
 ३ अभ्यास, प्रयास ।

धरजोर—देखो 'धरजोर' (रु. भे)

उ०—'अजमाल' सुखिजे एह, कर जोट एम कहेह । शला माह की हुइ और, जग किया हुम धरजोर ।
 —सू. प्र.

धरजोरा—स स्त्री [देस] राठोट वंश की एम उपमाया ।

धरजोरी—देखो 'धरजोरी' (रु. भे)

धरज्या—देखो 'धरज्या' (रु. भे)

धरट—स. पु [म. धरट] (स्त्री धरटा) १ हुम ।
 २ चर्या ।
 ३ निर्वाचनाज ।
 ४ शुन्द का फल ।

धरटापति—स पु [स. धरटा+पति] हुम ।
 उ०—धरटापति सुदर ता दीठू कनक यगू सरोर । एक चरण पासमाहि (ली) धो, वाजु भवनी माठी ।
 —नलाग्यान

धरडो, धरडो—देखो 'धरडो' (रु. भे)

धरण—स पु [स धरण, धरण] १ इच्छा और रुचि के अनुसार किया जाने वाला चयन ।
 २ रज्या के योग्य वर के चुनाव की क्रिया ।
 उ०—सिरागारी मस्राह म, विस यामणि वरियाम । वरि धाई हाला धरण, करण, महा जुध कांम ।
 —हा. भा
 ३ उक्त चुनाव के पश्चात् कन्या द्वारा वर को धरमाला डालने की क्रिया, प्रगोकार, विवाह, शादी ।
 उ०—तरण रय धिकत घण वहे खागा भतर, मडर कर कर मरे धरण भवरी । पडे धड गजाणण कहे इम पचाणण, गजाणण कडे रिण सोभ गवरी ।
 —पीयो साहू

४ आदर, सत्कार ।
 ५ यज्ञ आदि के लिये उपयुक्त भ्रातृण का चुनाव व उसका आदर-सत्कार ।
 ६ उक्त वाह्यग को दिया जाने वाला दान ।
 ७ पूजन, अर्चना, धर्मानुष्ठान ।
 ८ याचना ।
 ९ ढकने या लपेटने की क्रिया भाव ।
 १० आवरण, आच्छादन ।
 ११ पर्दा, चादर ।
 १२ शहरपनाह की दीवार, प्राकार ।
 १३ नेरा ।
 १४ पुल, सेतु ।
 १५ आर्या गीति या स्कधारण (स्कधक) का भेद विशेष ।
 १६ गाने में स्वर विस्तार की क्रिया—इसके चार भेद स्थायी,

आरोही, अवरोही, व सचारी ।

१७ पवार वश की एक शाखा ।

[स अवरण-भागुरे अलोप] १८ कंट ।

[स वरिणी] १९ स्त्री, पत्नी ।

[स वरुण]—२० रगरूप ।

उ०—१ कथडा भालि किरमाळ कंडी करा । सार भड वरण सो सोक सैला सरा । —हा भा.

उ०—२ भुज विसाळ लकाळ, वरण भाळाहळ सुदर । भरि मातं भाद्रवै, जाणि ऊगो भासर । —गु रू व.

२१ अक्षर, स्वर ।

उ०—इक कहत गिरवर एह, दरसंत सब लघु देह । सब वरण वाण सरीर, इम कहत दुरत अधीर । —रा रू

२२ अकारादि शब्दों के चिन्ह या संकेत ।

२३ प्रार्थना, स्तुति ।

२४ गुण ।

२५ आर्य सस्कृति के अनुसार मनुष्य ममाज के चार विभाग । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र ।

२६ भेद, किस्म ।

२७ यश, कीर्ति । (अ मा.)

२८ देखो 'वरुण' (रू भे) (अ मा)

उ०—आवेरी "जैसाह" सूरसागर आस्रम, वरण दिसा वाग सूं, घणी वूंदी वड ध्रमै । 'अभा' आदि उमराव, राण वाळा मन रवही, वरण इद्र धनवत, इसौ 'अगजीत' निरखै । —रा रू

२९ देखो 'व्रण' (रू भे)

३० देखो 'वरणन' (रू भे.)

उ०—कान सुणण भागवत तरणी कथ । वरणव करि अवरण वरण । —ह ना. मा.

रू भे.—वरण, वरन, वरन्न, व्रण, व्रन, व्रन्न, वत, वरन, वरन्न,

वरणश्रद्धार—देवी श्रद्धारन्न

वरणखडमेह—स पु [स. वरुण-खडमेह] छन्द शास्त्र या पिगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाये वरुण-वृत्त व मानाएँ ज्ञात की जा सकती है ।

वरणजथा—स स्त्री.—डिगल गीत रचना का एक नियम विशेष जिसमे गीत के प्रत्येक द्वाले मे नवीन वरुण किया जाता है ।

वरणज्येष्ठ—स पु [स ज्येष्ठवरुण] सब वरणों से बडा, ब्राह्मण वरण ।

वरणण—देखो 'वरणन' (रू. भे)

उ०—१ वर विचार मनहू कहू, वरणण सुद्ध वणाय । तगसीरी छिम जोतका, 'किसन' कहै कविराय । —र ज. प्र

उ०—२ वही मिलाण सीता परसपर हर, घणा उत्तसव उमड धर घर ।

वसत जिण आमोद वरणण, को करै कवराज । —र. रू.

वरणणी, वरणणी—क्रि स [स वरणनम्] १ वरणन करना, (उ. र.)

उ०—१ सबळ करण अगे कुरुपत उच्चरण । कुळ राठोड वळ "मोडी" कव वरण । —पा प्र.

उ०—२ मानव मनसा यूं कहै वरण जरी जराय । रचना कहू (न) विरच की, उपमा कही न जाय । —गजउदार

२ उल्लेख करना ।

उ०—सोई ग्रथा थो सुण्यो, जोई वरणिय जाण । मोई जोई घर सुकवि, आदि अत अहिनाण । —डि. ना मा.

३ रचना करना, लिखना ।

उ०—गणपति मोहि सुमत्ति दे, सुभ अख्यर ततमार । मो मत सारु वरणवू, हरि गुण ग्रथ अपार । —गजउदार

४ व्याख्या करना ।

उ०—नारकीइ वरणवउं हउ, जेहा नारकीना दुल सभारता स्मरता हूता भव्वाण भव्य जीव हूइ हरि विस्णु. हर ईस्वर तेह नी रिद्धि सन्नद्धि लक्ष्मीनठ विस्तार उदोसं उद्वरसण रोमाच जणइ करइ । —पट्टीशतक प्रकरण

५ प्रशंसा करना, सराहना ।

६ निवेदन करना ।

७ चित्रण करना ।

वरणणहार, हारो (हारो), वरणणियो—वि० ।

वरणणोडो, वरणणोडो, वरणणोडो—भू० का० कृ० ।

वरणणोजणो, वरणणोजणो—कर्म वा० ।

वरणणी, वरणणी, वनिजणी, वनिजणी, वनीयणी, वनीयणी —रू भे ।

वरणत—देखो 'वरणन' (रू. भे) (ह ना मा)

वरणदूत—स पु—पत्र ।

उ०—इण रीति री आदेम सुणि टीले दूत रे माथ सत्कार री वरणदूत तो अगाळ भंजियो । —व. भा.

२ लिपि ।

रू भे—वरणदूत ।

वरणन—स पु [स वरणन] १ किसी विषय, व्यक्ति, घटना, इत्य आदि का विस्तार पूर्वक कथन, वृत्तान्त, हाल, वयान ।

उ०—अलख पुरुम प्रादेस, देस वचाय दयानिचे, वरणन करु विसेम, सुहृद नरेस 'प्रतापसी' । —दुरसी आढी

२ रगने की क्रिया या भाव, चित्राकन ।

३ व्याख्या, उल्लेख ।

४ निवेदन, स्तुति, प्रार्थना ।

५ प्रशंसा, श्लाघा, सराहना ।

६ बखान ।

७ लेखन ।

रू भे—वरणाण, वरणान, वरणाव, वरण, वरणाण, वरणत, वरणव, वरणाम, वरणाव ।

वरणनस्ट—स पु [स वरण-नष्ट] प्रस्तार के अनुसार वरण-वृत्तो के किसी रूप को लघु गुरु के विचार से जानने की, छन्दशास्त्र की एक क्रिया ।

वरणना—स स्त्री [स वरणंनम्] गुण कथन ।

वरणनास—स पु. [स वरणंनास] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी अन्य कारण से किसी शब्द के अक्षर या वर्ण के लुप्त हो जाने की अवस्था या स्थिति । (निरुक्तकार)

वरणपाताका—स. स्त्री [स. वरणपाताका] वरण वृत्तों के भेदों में से लघु-गुरु जानने की क्रिया । (पिंगल)

वरणपात—स पु. [स.] किसी वर्ण (अक्षर) का शब्द में से लुप्त होने की क्रिया, वरणनास ।

वरणपाताळ—स पु [स वरण-पाताळ] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिससे किसी सख्या के वर्ण के वृत्त और उन वृत्तों में से लघ्वादि, लघ्वत व गुर्वादि, गुर्वत एव सर्व लघु ज्ञात किये जा सकते हैं ।

वरणपास—स पु [स. वरण-पास वृद्धसभक्तौ=पाशवरण] १ वरुण देव, वरुण । (अ मा)

२ समुद्र में रहने वाला एक भयकर जलजतु जिसे अग्नेजी में शार्क कहते हैं ।

३ वरुण का एक अस्त्र ।

४ ऐसा पाश या फदा जिससे वचना बहुत कठिन हो ।

वरणपुर—स पु [स वरण-पुर] १ वरुणलोक ।

२ शुद्ध राग का एक भेद । (सगीत)

वरण प्रत्यय—स पु [स वरण प्रत्यय] छन्दशास्त्र या पिंगल की वह प्रक्रिया जिससे वरण-वृत्तों के भेद, स्वरूप तथा सख्याएँ जानी जाती हैं ।

वरणप्रस्तार—स. पु [स वरण प्रस्तार] छन्दशास्त्र की वह प्रक्रिया जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के वृत्तों के इतने भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे ।

वरणमरकटी—स. स्त्री [स वरणमरकटी] पिंगल या छन्दशास्त्र में एक क्रिया, जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और उनमें कितने लघ्वादि, लघ्वत तथा गुर्वादि

गुर्वत तथा सब वृत्तों को मिलाकर कितने वर्ण, कितने गुरु-लघु, कितनी कलाएँ और कितने पिंड होंगे ।

वरणमाता—स. स्त्री. [स वरणमातृका] १ सरस्वती ।

२ लेखनी ।

वरणमाळा—स. स्त्री [स वरणमाला] १ किसी भाषा या लिपि के वर्णों (अक्षरों) की श्रेणी या लिखित सूची ।

२ तैसठ की सख्या * (डि को)

[स. वरणमाला] ३ वह माला या पुष्पहार जो दुलहिन दुल्हे के गले में पहनाती है ।

वरणव—देखो 'वरण' (रू भे)

वरणविचार—स पु [स वरणविचार] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमें वर्णों के आकार, उच्चारण और संधि आदि के नियमों का उल्लेख हो ।

वरणविपरजं, वरणधिपरव्य—स. पु. [स वरणविपर्यय] निरुक्त के अनुसार किसी शब्द के वर्णों में उलट-फेर होने की स्थिति ।

(भाषा विज्ञान)

ज्यू—पकड़णी=कपड़णी ।

वरणव्यवस्था—स स्त्री [स वरणव्यवस्था] हिन्दुओं की समाज-व्यवस्था जिसके अनुसार समाज को चार भागों में विभाजित किया गया है । वे चारों भाग हैं—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र ।

वरणव्रत—स पु [स वरणवृत्त] वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की सख्या व लघु गुरु के क्रम में समानता हो ।

वि वि—मात्रावृत्त का उल्टा ।

वरणसकर—स पु [स. वरणसङ्कर] १ वह व्यक्ति, जाति या कुल जो विभिन्न जाति के स्त्री-पुरुष के संयोग से उत्पन्न हुआ हो । (दोगला) २ रंगों का मिश्रण ।

वरणसामान्याय—स पु [स वरण-सामान्याय] वर्ण माला ।

वरणसरिक—स पु [स वरण-सरिक] एक आभूषण विशेष । (व स)

वरणसूची—स स्त्री [स वरण-सूची] छन्दशास्त्र या पिंगल की एक क्रिया जिससे वर्ण वृत्तों की सख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आद्यत लघु और आद्यत गुरु की सख्या जानी जाती है ।

वरणश्रेष्ठ—स पु [स वरण-श्रेष्ठ] सब वर्णों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण ।

वरणाम—देखो 'वरण' (मह, रू. भे)

उ०—घर रूप भुजा असमान घरें । कव 'पाल' तर्णो वरणाम करै ।

—पा. प्र.

वरणा—स स्त्री. [स. वरणा] १ काशी के उत्तर में बहने वाली एक छोटी नदी ।

२ पजाव की एक नदी, वरुणा नदी ।

३ एक आर्य जन पद ।

उ०—विदेह सडिल्ल मलय वत्स मत्स [वरणा] दसारणा चेदी सिधु सूरसेन भग [वट्टा] कुणाल लाट, केकयमडल ।

—व. स.

वरणागियों—स. पु [स वरुण] रूप-रग, वरुण ।

उ०—तास वरणागिये दीठि मनह तरणी । मलफियो सामहो, कळह वेडीमणी ।

—दा. भा

वरणाधिप—स. पु [स वरुणाधिप] ब्रह्मादि वरुणों के अधिपति ग्रह ।

(फलित ज्योतिष)

वरणायद—स पु—१ सूर्य २ इन्द्र ३ वरुण ४ जल ।

वरणाव—देखो 'वरुण' (रू भे)

उ०—भमरी अळवामणी डाण भरै । कवराव किसी वरणाव करै ।

—पा. प्र.

वरणास्रम—स पु [स वरुणास्रम] १ आर्य सस्कृति के अनुसार समाज की

एक व्यवस्था जिसमे मनुष्य समाज को-ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र इन चार वर्णों मे विभक्त किया गया है और मनुष्य जीवन के चार आश्रम-ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ व सन्यास निर्धारित किये गये हैं ।

उ०—त्र म हरी मुख ग्र म विचारण, सो वरणास्रम कारिज सारण ।

—जयपुर री गीत

२ उक्त व्यवस्था के अन्तर्गत निर्धारित नियम या धर्म ।

उ०—वरणास्रम ध्रम मरजाद वेद । भाखा खट नवरस अरथ भेद ।

—वि. स.

रू भे—वरणास्रम, ।

वरणि—देखो 'वरुणी' (रू भे)

उ०—चद वरणि, चपक-वरणि, अहर अलत्ता रणि । खजर-नयणी, खीण कटि, चदन परिमळ चग ।

—डो मा

वरणियोडो—भू का कृ—१ वरुण किया हुआ, निरूपण किया हुआ

२ वयान किया हुआ, उल्लेख किया हुआ ३ रचना किया हुआ, लिखा हुआ ४ व्याख्या किया हुआ ५ प्रशंसा किया हुआ, सराहना किया हुआ ६ निवेदन किया हुआ ७ चित्रण किया हुआ ।

(स्त्री वरणिण्योडी)

वरणियों—स पु—डाभ का बना मोटा रस्ता । (पानी भरने के काम आता है ।

वरणी—वि [सं वरुण] १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धित ।

२ किसी वर्ण से सम्बन्धित ।

३ किसी रग से सम्बन्धित, रग वाला ।

४ रग रूप से सम्पन्न ।

स. स्त्री—१ किसी साधनीय कार्य के अनुष्ठान के लिये नियोजित कर बैठाई जाने वाली ब्राह्मणों की मंडली ।

उ०—कुंवरसी असवार हुवी, जिण दिन सू भरमल एक टक मध्यान ढळिया रोटी जवा री खाधी, जमी सूती, तीन वत्त री सिमान, आपरै इस्ट री भजन करती रहती । काजळ, तेल, तवूळ, कूकू सारो त्यागियो । दूध, दही, घिरत मीठी सारो छोडियो । ब्राह्मण पचास वरणी पर बैसाणिया ।

—कुंवरसी सायला री वारता

२ साधनीय कार्य के अनुष्ठान की विधि ।

[स वरुणी] ३ स्त्री, अर्धांगिनी, पत्नी ।

४ नियोजन की क्रिया ।

५ हल्दी ।

रू भे—वरणी, वरणि, वरुणी ।

वरणोद्दिष्ट—स पु [स वरुणोद्दिष्ट] छन्दशास्त्र की एक क्रिया जिसमे वर्ण वृत्त के रूप एव भेद की जानकारी की जाती है ।

वरणी—वि [स वरुणि] (स्त्री वरणी) १ वर्ण का, वर्ण सम्बन्धी ।

२ किसी वर्ण या जाति से सम्बन्धित ।

उ०—कि जोग जाग जप तप तीरथ किं, अत कि दानास्रम वरणा ।

मुख कहि कसन क्वमिणि मगळ, काइ रे मन कलपसि फपणा ।

—वेलि

३ किसी रग से सम्बन्धित रग का ।

उ०—१ वावळिया रै मोनल वरणा पीळा फूला सू गवाडी री छिव सवाई बघगी ही ।

—फुलवाडी

उ०—२ कंता-कंता हरी री मूडो तावे वरणी हुयग्यी अर होट फडकण लागग्या ।

—वरसगाठ

४ रूप-रग से सम्पन्न ।

स पु—वृक्ष विशेष जिमके पत्ते विल्व पत्र से मिलते भुनते होते हैं ।

रू भे—वरणी, वरणी, वरुणी ।

वरणी वरुणी—क्रि स [स वरुणम्] विवाह के लिये चुन कर वरण करना, अर्पणकार करना, शादी करना ।

उ०—१ 'अमपाल' आप छळि करि अचड, वप विहडाय रभा वरुं । जग करण महा भारय ज्युही, 'करण' नाम साची करुं ।

—सू प्र

उ०—२ परणू घी पतसाह री, रजवट लाग रोग । वर अपछर वीरम कहै, जाणी सुर पुर जोग ।

—वा दा.

उ०—३ कोई ऋगडा मे सूर वीर मारीजिया तिका नै अपछग्या

वरिया सो स्वरग वधावा हुता लारै री लारै सतिया पिय सत कर
नै गई सी अणछराम्रा रा वधावणा देख सतिया कहै ।

—वी स टी.

- २ चुनाव करना, पसंद करना ।
- ३ स्वीकार करना, मानना ।
- ४ निगलना, खाना । (उ र)
- ५ वरदान देना, आशीर्वाद देना ।
- ६ मागना, याचना करना ।

वरणहार, हारो (हारी), वरणिथो—वि० ।
वरिओडो, वरियोडो, वरयोडो—भू० का० कृ० ।
वरीजणी, वरीजवो—कर्म वा० ।
वरणी, वरवो—रू० भे० ।

वर'णी, वर'वो—देखो 'वरसणी, वरसवो' (रू. भे)

उ०—१ भली भाति सू अत्य वत्या भरै । विनै इद्र सामद्र 'जेही'
वरै । —ल. पि
उ०—२ अरि मुख पारथ बाण वरखिया एहि धगरा । ज्यू कमळा
पर मेघ वरै' थू अणगिण घारा । —मेघ

वरत—स. स्त्री. [स वरत्रा] १ चमडे का मोटा रस्सा जो हाथी को
वाधने, कूए से मोट खीचने तथा नट के नटक्रीडा मे काम आता है ।

उ०—१ रै चित व्रत द्रढ एम रख, मूरत स्याम मझार । मेल्ह
सुरत नट वास मे, प्रगट वरत व्है पार । —र ज प्र
उ०—२ एक वैर जावै छै । सु साठीको कोहर, तियै री वरत छै
सु वरत सावटिनै काख भाहे घाली छै । —नैरासी
२ देखो 'व्रत' (रू. भे)

उ०—१ कीजै वरत भजन पिये कीजै । भगत वद्वळ रीभै व्रज-
भूप । —ह ना मा.

उ०—२ आज भिरति भगळी, आज पति वरत सभाळै । ऊपची
जग अस, आज सुज वस 'उजाळै' । —रा रू

उ०—३ केहरि तण पण लडण अकूणी । लीधा वरत 'जोगपती'
'वृणी' । —रा रू

उ०—४ तठा उपराति देव जागिआ छै । काती मास रा वरत
महोखव कीजै छै । धरि धरि दीपमाळिका रा यणाव हुइ नै रहिया
छै । —रा सा स.

३ देखो 'धिरत' (रू. भे)

रू. भे —वरत, भरत, वरतर, वरता, वरत ।

मह —वरत्री ।

वरतण—२ देखो 'वरतण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरतन' (रू. भे)

उ०—सोर आग सपरस्स, किना वडवाग अकारी । माग हूत सामद्र,
ध्याग वरतण उर घारी । —रा. रू.

वरतण, वरतणी—देखो 'वरतणी' (रू. भे)

उ०—जोधपुर सुपह री चाड माडै जुडण, आपरा लिया परिग्रह
उजासै । 'पाल' री खूद वरतणि जूदी पामती, पूजियो विघन ची
वार पासै । —केसोदास गाडण

वरतणी—देखो 'वरतणी' (रू. भे)

उ०—पाच दोरा रे लेखणी पाच मसीजणा, वास कूपी रे कावी
वारु वरतणा । —स. कु.

वरतणी, वरतवो—देखो 'वरतणी, वरतणी' (रू. भे)

उ०—१ सुर तजी चित वरतौ असोक । लकेस हणू सुख करा
लोक । —सू. प्र

उ०—२ तथा लीभाभोजी आपरो वडो मुलायजी वरतै है सु हमार
फळीघी रा गाव ८४ खालसै किया है । —द. दा

उ०—३ देवावत 'लिछमण' जग दाता, हेळा करण खिताव हुवो ।
भिडजा भडा चारणा भाटा, मुहगा वरतणहार मुवो ।

—वा दा'

उ०—४ मुखरा माहि वरतिया भगळ । धण कितूहळ धरोधरि ।
—ह ना मा

उ०—५ रूक हू भरत रत, करती कोप धूहड, वेहडा घडा करती,
वरतौ दुवाह । —दूदो वीहू सुरताणोत

उ०—६ सवत मोल चिहुतरइ, पोस सुदि तेरस वरतई । साग
करइ सहि लोक, पूज पहुता परलोक । —कविवर स्त्रीसार

उ०—७ ससार चक्र तणउ इण परि ढालु, चडतउ पडतउ
वरतई कालु । वल्प द्रूम मनवछित होइ जुगलाधरम तिहा वरतइ
सोइ । —वस्तिग

उ०—८ जासी हाट वात रह जासी जग, अकवर, ठग जासी एका ।
रे राखियो खत्री ध्रम राणी, सारी ले वरतौ ससार ।

—प्रथ्वीराज राठीड

उ०—९ घर घर भगळचार, मीहन चडियो मडोवर । नाद वेद
वरतिया, सुकवि बोलै सुभ अखर । —गु रू व

वरतणहार, हारो (हारी), वरतणियो—वि० ।

वरतिओडो, वरतियोडो, वरत्योडो—भू० का० कृ० ।

वरतीजणी, वरतीजवो—कर्म वा० ।

वरतन—१ देखो 'वेतन' (रू. भे)

उ०—जगदेवजी कह्यो, सेर बाजरी नै हीज आयो छू । तरै राजा
कह्यो, पटी लेस्यी कै कोरी वरतन (वेतन) लेस्यी । जगदेवजी
कह्यो, कोरी वरतन लेस्यु । —जगदेव पवार री बात

२ देखो 'वरतन' (रू. भे)

वरतनी—देखो 'वरतणी' (रू. भे)

वरतमाण, वरतमान—वि [सं वर्तमान] १ विद्यमान, मौजूद ।

उ०—ज्यू लारलडा वह गया वरतमाण वह ज्याय । काळ-कळत मे कळ रह्या, ठीक न 'विसना' ठाय । —विसनी

२ जीव घारी, जिन्दा ।

३ जो अपने अस्तित्व व सत्ता मे हो ।

४ घूमने-फिरने वाला ।

५ सहयोगी ।

६ जो प्रभाव मे हो, लागू हो (नियम, विधान)

स. पु—[स वर्तमान] १ व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक जो किसी क्रिया का चालू होना सूचित करता है ।

२ वर्तमान काल, मौजूदा समय ।

उ०—त्रकाळग्यानदरसी निज ब्रमकू पहिचारुं । भूत भवस्त वरतमान जुगति सीं जयुं । —सू प्र

३ समय, वक्त, वेला, । (ह. ना. मा)

रू. भे—वरतमान ।

वरतमा—देखो 'वरतम' (रू. भे) (ह. ना. मा)

वरतर, वरता—देखो 'वरत', (रू. भे) (उ. र)

वरताडणो, वरताडयो—देखो 'वरताणी, वरतावी' (रू. भे)

उ०—वसती सु दळि वरताड, अनि गाम घाम उजाड । पह रोस जोस अपार, लेखवें मेळु लिंगार । —रा. रू.

वरताडणहार, हरो (हारी), वरताडणियो—वि० ।

वरताडिओडो, वरताडियोडो, वरताडयोडो—भू० का० कृ० ।

वरताडोडणो, वरताडोडयो—कर्म वा० ।

वरताडियोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वरताडियोडो)

वरताणो, वरतावी—देखो 'वरताणी, वरतावी' (रू. भे.)

उ०—नै किमनद्रासजी गढ में आया । राव कल्याणसिध जी री आण वरनायी । —द दा.

वरताणहार, हरो (हारी), वरताणियो—वि० ।

वरतायोडो—भू० का० कृ० ।

वरताईजणो, वरताईजयो—कर्म वा० ।

वरतायोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वरतायोडो)

वरतार—देखो 'वरतारी' (मह, रू. भे)

२ देखो 'भरतार' (रू. भे)

वरतारी—देखो 'व्रतारि' (रू. भे)

वरतारी—स पु [म वृत्तचार] १ प्रयोग ईस्तोमाल करने की क्रिया ।

उ०—पछें सवत १८४१ रं वरस नागोरी लूका रा गछ रा स्त्रीपूज हरखचद जिन मत रा टीपणा री वरतारी कियो ।

—वा. दा. स्यात

२ समय, वक्त ।

उ०—भ्रग जळ नीर सीग ससियेका, ज्यू वभया का वारा । दुख सुख जरा मरण सुपना मे, यू सतोगुण वरतारा ।

—सुखरामजी महाराज

३ किसी देवि-देवताओ या देव-योनि मे गई हुई मृतात्मा का किसी मनुष्य शरीर मे प्रवेश की अनुभूति एव तदनुसार होने वाली चेष्टाएँ ।

४ वह पद्य जिसमे कविता या छंदो के रचना सबधी नियमों का निरूपण हो ।

५ आघार, सहारा, आश्रय ।

रू. भे—वरतारी ।

मह. —वरतार

वरताव—देखो 'वरताव' (रू. भे)

उ०—ऐडो वरताव करती जाणै किणी पाडोसण री टावर व्है ।

—फुलवाडी

वरतावणी, वरतावयो—देखो 'वरताणी, वरतावी'

उ०—१ हिंदुस्थान का छत्र जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थान मे सूरज कवि कमळ-विकसावण । —रा रू.

उ०—२ स्त्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा वरतावी अमार । —स. कु

वरतावणहार, हारी (हारी), वरतावणियो—वि० ।

वरताविओडो, वरतावियोडो, वरतावयोडो—भू० का० कृ० ।

वरतावीजणो, वरतावीजयो—कर्म वा० ।

वरतावियोडो—देखो 'वरतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वरतावियोडो)

वरतियोडो—देखो 'वरतियोडो' (रू. भे)'

(स्त्री वरतियोडो)

वरतियो, वरतियो—देखो 'भरतियो' (रू. भे)

उ०—१ तरं वरतिया कना मेह वषावण री तलास कियो । तरं वरतियो व्हयो—एक हिरण मगावो । तरं हिरण, आणज कागळ ? मे जत्र लिपनं वरतियो कोरनं हिरण रं सीग माहे घात नं कोम २ भाग्यर थो तठं हिरण रं सहनाण कर छोट दियो ।

—नैरासी

उ०—२ हिंवा इया रं देम माहे धान घणा । वहवारीया रं लागे ग्यान हुवो । केलेकोट, वगं, काछ, पावर रा म्हाजन एषठा ह्या । होई नै एक वरतियो नु कल्पयो, जु "धान म्हाहरे घणो । ज्यु वरो

ज्यु धान रा पर्ईसा हवै ।" ताहरा महाजन मेह बघायी ।

—लाखें फूलाणी री वात

घर , वरतुल-वि. [सं वतुंल] चक्ररदार, गील ।

स. पु १ चक्र, गीला ।

२ चक्र ।

३ यातचक्र ।

रू भे.—वरतुल, वरतुल ।

अल्पा,—वरतुली, वरतुली ।

घरतेसरी—देखो 'घरतेसरी' (रू भे.)

घरती—देखो 'घरतणी' (रू भे)

घरत—१ देखो 'घरत' (रू भे.)

२ देखो 'घरत' (रू भे.)

घरतनी, घरतनी—देखो 'घरतणी, घरतनी' (रू भे)

उ०—१ भाण प्रताप पडे भूपती । विच गढ कमघा आण वरती ।

—सू प्र

उ०—२ घोपट्टे लीघ घरती । जिहगीरे आण वरती ।

—गु. रू. व.

घरतणहार, हारी (हारी), घरतणियाँ—वि० ।

घरतियोडी, घरतियोडी, घरतियोडी—भू० का० कृ० ।

घरतोजणी, घरतोजणी—भाव, कर्म वा० ।

घरतमान—देखो 'घरतमान' (रू. भे.)

घरतिकाविदु-म पु [सं. वरतिकाविदु] हीरे का एक दोष ।

घरतियोडी—देखो 'घरतियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री घरतियोडी)

घरतुल, घरतुल—देखो 'घरतुल' (रू भे)

उ०—हृदं मूल वरतुल धक होइ । दुहु वूखे लांवा ची दोइ ।

—घ व अ

घरतुली, घरतुली—देखो 'घरतुल' (अल्प, रू भे.)

उ०—दूजो लयी शीव परि, जहा घरिजे जोत । दो लवणी ची वरतुला, घ्यारे इहि विधि होन ।

—घ व. अ

घरतम-स. पु. [सं. घरतमं] १ मार्ग, पथ, रास्ता, राह ।

२ सडक ।

३ पगट्टी ।

४ पथ ।

५ न्यान ।

६ लीफ ।

७ घट्टि, रस्म, चलन, परम्परा ।

८ विनारा, तट ।

रू भे.—घरतमा ।

घरतारि—देखो 'घरतारि' (रू भे)

घरती—स स्त्री [सं. वरती] मार्ग, रास्ता, सडक, राह । (ह ना मा)

घरद-वि [सं] १ घरदान देने वाला, अभीष्ट की पूर्ति करने वाला,

घर-दाता ।

२ शुभ ।

स पु.[सं. घरद.] १ देवता (अ. मा)

२ देखो 'घरद' (रू. भे) (अ. मा)

रू भे—घरद ।

घरदवात-स स्त्री [सं. उदात घरद, घरद+उदात] सरस्वती, धारदा ।

(अ. मा.)

घरदपत, घरदपति,—देखो 'घरदपति' (रू भे)

उ०—हाथी वहु हेला दिये कर बाहर करतार । वेगा आवी

घरदपत मेरी भीर मुरार । —गजउद्धार

घरदल, घरदल, घरदलि, घरदलि—[स पु] १ दूल्हा, घर ।

उ०—१ बघव अनुज 'गर्ज' री वेटी, लाज सील गुण प्रीत लपेटी ।

घरदल लख घर मेळ सवायो, प्रकट तिकण री लगन पठायो ।

—रा रू

उ०—२ सरीखा खेड घरा खुरसाण, मरीखीं राउ अन सुरताण ।

घरदल वेढी वडे वीवाह, मिळी घण तुग महा-रिण माह ।

—रा. ज सी

उ०—३ दळपति कोइ न दूजो घरदलि । निरदळिया मात लोक

नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियो । राव तरुं घरि लहीस वर ।

—दूदो

२ घर-पक्ष ।

उ०—ढोलउ-माघ परणिया, घरदल हुवउ उछाह । आ पूगळ ची

पदमिणी, अठ नरवर चउ नाह ।

—ढो मा

३ वारात ।

घरदाणी—देखो 'घरदायिणी' (रू भे)

उ०—हण गमण अहमाणी हमा रूप हस आरुड । देवगुरु घरदाणी

निधि वाणी तुभ्यो नम । —देवि

घरदान-म, पु [म घरदान] १ किमी देवी, देवता या बडो द्वारा

अभीष्ट की पूर्ति के लिये दी जाने वाली मिट्टी । शुभ कार्य की

कामना की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला आजीविक ।

उ०—देवी माई हिगोळ पच्छिम माता, देवी देव देवाधि घरदान

दाता । —देवि

२ वह वस्तु, अवस्था या स्थिति जो मंगल दायिनी हो, अनुग्रह रूप

हो ।

रू भे—घरदान ।

घरवांनी-पि [सं घरदान+ग प्र. ई] १ घर देने वाला, मनोरथ सिद्ध

करने वाला ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो, सिद्धिधारी।

वरदा-स स्त्री [स] १ कुंवारी कन्या, लडकी।

२ असगंध।

३ अडहूल।

४ एक नदी का नाम।

५ सरस्वती, शारदा।

रू. भे —वरदा।

वरदाइ—देखो 'वरदाई' (रू. भे)

उ०—वरदाइ पढत गुण कवि वखारिण। मगळीक वयण मोसर प्रमाणि। —सू. प्र

वरदाइक—देखो 'वरदायक' (रू. भे)

उ०—वरदाइक 'जाखी' वसि वधारण वान। मनमोट महिपती। मेर जिसो अनमान। —ल पि

वरदाई-वि [स वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—नव दुरगा नव खेट वरदाई, करगि मगळीक रचए। वदिए जैकार विद कोळाहळ, विप्रा वेदउ वचचए। —गु रू. व
२ श्रेष्ठ, उत्तम।

उ०—मुदि अगसर सप्तमी चार मगळ वरदाई। अम परम "अभसाह" विमळ ग्रहि वस वडाई। —रा रू.

३ यशस्वी।

उ०—१ 'सूजा' पाट सकाज, 'वाघ' कमधज वरदाई। कर दन खग वह कवर, पिता पहिला न्त पाई। —सू प्र.

उ०—२ वीर पावू समराथ, वीर साची वरदाई। वीर खाग सिर वहन, वीर चारणिया भाई। —पा. प्र

४ वीर।

उ०—'सूरा' 'अहूवाळ' सुजड हथ 'साडा,' 'जैता' 'जगमल' जैत्राई। 'काधिळ' कळिपूळ सदा कळि चालण, 'वीरा' वेढक वरदाई। —गु रू व

उ०—२ वरदाई मुजे वडाई तमांण सवाई। सिधि पाई जुध जैत्राई सकति सहाई। —ल पि

५ वरदान या सिद्धि प्राप्त।

उ०—१ 'सावत' 'माहव' तणी सवाई। 'वीटल' री 'सकती' वरदाई। —रा रू

उ०—२ पावू पाट रै रूप राठवडा, सेवै तूभ सधीरा। वेगई पाल्ह लीया वरदाई, सिध तणा साठी रा।

—पावू राठीड घाघळीत री गीत

६ वरदान से उत्पन्न होने वाला।

उ०—पाण का कपिराज सूरज का वम। देवी का वरदाई दईव का अस। दिल का दलेळ लहरू का दरियाव। —सू. प्र.

८ अनुज्ञ, लाभप्रद।

रू. भे —वरदाई, वरदाइ, वरदायी, विरदाई।

वरदाचतुरथी, वरदाचोथ-स स्त्री [स वरदाचतुर्थी] माघ मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी।

वरदात-वि. [स वरदातृ] वर देने वाला, वरदाता।

स. स्त्री [स वरदात्री] १ सरस्वती। (अ मा.)

२ पार्वती गिरिजा (अ मा)

३ देवी 'वरदाता' (रू. भे)

वरदाता-वि [स वरदातृ] १ वर देने वाला, वरदायक।

उ०—दीनानाथ अर्भ वरदाता, त्राता सेवग तारणा। —र ज प्र.

स पु.—अज्ञा।

रू. भे —वरदाता।

वरदाय, वरदायक-वि —१ वर देने वाला, वरदाता।

उ०—जानुकी वर मरम जाणग, तेग अरेसा तायक। 'किमन' भज जन मान रक्थे, दान अर्भ वरदायक। —र ज. प्र

२ सिद्धि देने वाला।

३ यशस्वी, कीर्तिवान, विरुधारी।

उ०—वधे राज सुप्त विहद, वधे हित सपत वधायक। अवर वधे दिन इती, वधे पल पल वरदायक। —सू प्र.

४ श्रेष्ठ।

उ०—'सुरती' 'गागावता' 'नरा' 'पदमी'। नर नायक। अणभग 'वृडावता' 'त्रिजी' कमधा वरदायक। —सू. प्र

५ वीर।

उ०—उदर सुमित्र लक्षण जीपण अरि, धरे मेम अघतार धुरधर। विंयी सत्रपण सुजस सवायक, वीरघवाह वढी वरदायक। —र. रू

६ सिद्धि प्राप्त।

७ वर प्राप्त, वरदान धारी।

उ०—ग्रामो-सामहो ऋटका हचे उतरिआ। आप ररी रा वरदायक हूता। सो मद्य री दया वासत घणा सेहर रा लोक मद्य ऊपरा तरवारिआ वाडिया। —कल्याणमिह नगराजोत वाटेल री वात

उ०—२ वरदायक सकति री, कन क्रीत री वहावे। उरठ जोम अगरी, अवर पह मोड न आवे। —सू प्र.

८ फलदायक, नफनता देने वाला।

उ०—१ वरदाय 'ल' 'रगु' रगु मूर वीर। धारण प्रवीण अण घान धीर। —रा रू

उ०—२ इत्ता भड चारण क्रोध असाधि । विडे वरदायक वीर-
विराध । —सू. प्र

रू भे—वरदायक, विरदाक, वरदाइक, विरदायक
६ देखो 'विरुदायक' (रू, भे)

वरदायण, वरदायणि, वरदायणी, वरदायिणी, स स्त्री. [स्त्री. वर+
दायिनी] सरस्वती । (डि को)

उ०—ऐसा विराड ऊजळा, विध ऊजळ हस-वाहणी । ऊजळ
अडोल गाळ 'अमो', दीजे वर वरदायणी । —वखती बिडियी
वि—१ सिद्धि व सफलता देने वाली ।

उ०—पाण बुध 'अनावत' तणी जष पायणी, अेम बण बायणी, तेज
आनेक । मीर भक डायणी अख्खासा मही, असी वरदायणी कटारी
एक । —करनीदानजी कवियो

२ वर देने वाली ।
रू. भे—वरदायण, वरदायणि, वरदायणी ।

वरदायी—देखो 'वरदाई' (रू. भे)

उ०—नानण छावहुडी वरदायी हुवी । पोकरण आय वसियो ।
—वा दा क्यात

वरदाळ—देखो 'विरुदाळी' (मह, रू भे)

उ०—कप जेह छळ कूदिधी, फरु जडाळी, फाळ । एक कटारी
अगरुग वकट, कली वरदाळ ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाडेल री वात

वरदाळी—देखो 'विरुदाळी' (रू. भे)

उ०—जे हळ जठी, वही जुध जीपण, हठी मीम, कांरज हडमत ।
वृणीयी यळ राखण वरदाळ, झाडाळ, केवती इत ।
—किसती आदी

वरवी—स स्त्री. [अ. वृद्धि] किसी विभाग, संस्था या वर्ग के कर्मचारियो
के लिये निर्धारित मोक्षाक विशेष सूत्रिफार्म ।
रू. भे—बढी, वढी ।

वरवेत, वरवैत—देखो 'वरदायक'

उ०—१ कथ 'पाल' ते साची कही, वरवेत भूठान वात । आभा
कसमीरा भारिया, एकरसू क्रवोत्तपात । प्र.
उ०—२ अडा खळ खागा हणी वरवैत । जुडे इम भाण' समोअम
ताजैत । प्र

वरवैक—वि. [स. वृद्धि] १ वृद्धि करने वाला ।
[स-वर्धक] २ काटने वाला ।
३ विभाजन करने वाला ।

रू. भे—वरवैक, वरवैकि ।
वरवैन—स पु [स. वृद्धि] १ वृद्धि, बढोतरी ।

२ उन्नति ।
३ वृद्धि या बढोतरी, होने की अवस्था ।
४ काटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव ।
रू. भे—वरधन ।

वरद्धमान—वि [स. वृद्धमान] १ जो बढ रहा ही, वृद्धिशील हो, बढने
योग्य ।

२ बढने की प्रवृत्ति वाला ।
३ उन्नति के लिये उन्मुख ।
स. पु.—१ जैनियो के चौबीसवें तीर्थंकर, महावीर स्वामी ।
२ एक वर्णवृत्त जिसके पहले चरण मे १४, दूसरे मे १३, तीसरे
मे १८ व चौथे चरण मे १५ वर्ण होते है ।
३ वार व नक्षत्र सम्बन्धी २८ योगो मे से २८ वा योग ।
(फलित ज्योतिष)

४ देखो 'वरद्धमानतप'

रू. भे—वधमान ।

वरद्धमानतप—स. पु एक प्रकार का अत विशेष

उ०—स्थान पचमी, मुकुट सहामी, माणिक्य प्रस्तारिका, निकमण-
तप, वरद्धमानतप, इन्द्रियजय, कसायजय । —व स.

वरधक—स. पु [स. वर्धक वर्धकि] १ बढई, तक्षक ।

२ देखो 'वरद्धक' (रू. भे)
रू. भे—वरधकि, वरधकी, वरधकि ।

वरधका—सं स्त्री. [स वृद्धा] १ गाथा-छंद का एक भेद जिसमे विप्र का
(चार मात्रा के समूह) का प्रयोग बहुत होता है ।

उ०—भरण बहुत सी प्रौढा भणज । गण वोह विप्र वरधका
गिराण । —र ज प्र

२ देखो 'वृद्धा' (रू. भे)

वरधकि—देखो 'वरधक' (रू. भे)

वरधन—देखो 'वृद्धापन' (रू. भे)

वरधापन—देखो 'वृद्धापन' (रू. भे)

उ०—१ अस्त्रीयात कीद आसाव्रत, रोदा सु तेवई रिए । अप बढीयी
वरधापण वढता, पोरस मधुर जवानपण ।

—दुरगादास आसकरणोत री गीत

वरधु—अव्य [स.] १ बल्कि एसा नहीं ।

वरन—देखो 'वरण' (रू. भे)

उ०—१ पसरि पळ है-पाई, इल्ला उहुं आधतरि । जरद लाल
इक स्याह, वरन वामा विबहथरि । —गु । रू. ब.

उ०—द्विती सोभा दामणी, वरन आदीत वरनी । भाव-सिध सारधु,
देव कन्या उत्पत्री ।

उ०—३ जप जाप होम कीर्ज जिगन, वरन सट्ट प्राप्ति वरी ।
जोधपुर आज अजुधापुरी, राम राज कमधज्ज री । —गु रु व

वरनसन—स पु [स. वरुंSSसन] कवि, पठित । (अ. मा)

वरना—अच्य [फा वन] १ अन्यथा ।
२ नहीं तो ।
३ ऐसा नहीं हुआ तो ।

वरनोळी, वरनोली—देखो 'वदोळी' (रु भे)

वरनोळी, वरनोली—देखो 'वदोळी' (रु भे.)

उ०—ताजा नेजा गयणइ सोहइ, वरनोळइ इम मनमोहत ।

—कविवर शीसार

वरनौ—देखो 'वरणी' (रु. भे)

उ०—फौजा डेरा फाबिया, दीसी हद्द विहद्द । सबज वरना स्याह
अन, लाल सपेत जरद्द । —गु रु. व.

वरन्न—देखो 'वरण' (रु भे)

उ०—मारु मारइ पहियडा, जउ पहिरइ सोवन्न । बती, बूढइ
मोतिया, शीया हेक वरन्न । —डो. मा

उ०—२ वेध खळ सावळ चोळ वरन्न । कहै रवि भोक लई
'सुभक्रन्न' । —सू प्र

वरन्नी—देखो 'वरणी' (रु भे)

उ०—एक खडी मुख रूप नियाळ, एक खडी सिर चम्मर ढाळ ।
काम लता पिरण कणक वरन्नी, पाम खडी मुख रास पतन्नी ।
—गु रु व

वरन्नी—देखो 'वरणी' (रु भे)

उ०—विवह वरन्ना कप्पडा, विवह वरन्नी पाग ।
फजर हुवदी फूलिया, जाण मलूका वाग । —गु रु व.
(स्त्री वरन्नी)

वरपूर—देखो 'भरपूर' (रु भे)

उ०—तद तरवार म्यान सू लीची सू प्यादा भगडी वरपूर हुवो ।
—द वा

वरम—स पु [रु वरमंन्] १ कवच, वखतर ।

उ०—काटसी घणा अघ शोधवाला करम । वेव नह सके जम पहर
इसडी वरम । —र ज प्र.

२ घर, मकान ।

३ छाल, गूदा ।

४ पित्तपापडा ।

[फा. वरम] ५ किसी अग पर आने वाली सूजन, मोथ ।

६ घाव ।

७ देखो 'ब्रह्म' (रु भे)

रु. भे—वरम, वरम्म, वरम्म ।

वरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रु भे)

वरमा—स. स्त्री. [स वरमंन्] १ नाम के अंत में लगाई जाने वाली
सत्रियों की एक उपाधि ।

२ उपनाम ।

३ देखो 'ब्रह्मा' (रु भे) वरमा

वरमाळ—देखो 'वरमाळा' (रु भे)

उ०—१ करण अखियात चडिया मला फाळमी, निवाहण वयण भुज
वाधिया नेत । पवारा सदन वरमाळ सू पूजियो, गळा फिरमाळ
सू पूजियो खेत । —वा. दा.

उ०—२ रामायण भारथ तरण रग, जाणियो अभायण विकट जग ।
गठ-जोड अछर भूलान गठ । कदगा अत्रळ वरमाळ कठ ।
—वि सं.

वरमाळणी, वरमाळणी—फि स १ दुलहिन द्वारा वर के गले में माला
डालना, वरमाला डालना ।

उ०—विध जुत कूरमराज विचारे, सीफळ कचन रतन मिंगारै ।
सुम दिन लगन घडी ले सुदर, वरमाळियो 'अभी' प्रथमी-वर ।
—रा रु

२ जयमाला डालना ।

३ वरण करना विवाह करना, शादी करना ।

उ०—वीरम ना वरमाळतां, मिटियै रे 'किसमीर' । 'वृकण' री घर
बूडसी, नदी वहुते नीर । —वी मा
४ स्वीकार करना, अंगीकार करना ।

वरमाळणहार, हारो (हारो), वरमाळणियो—वि० ।

वरमाळणोडी, वरमाळियोडी, वरमाळचोडी—भू० का० कृ० ।

वरमाळीजणी, वरमाळीजणी—कर्म वा० ।

वरमाळा, वरमाला—स स्त्री [स वर+माला] १ दुल्हन द्वारा दुल्हे
को पहनाया जाने वाला पुष्पहार, हार ।

उ०—१ विच गळ रभ वरु वरमाळा । श्रोयण मकि उमळता
अत्राळा । —सू. प्र

उ०—२ इसी बात मुण ल'डी वरमाळा लेप पणा लोगा री भीड
सू उछाह करती आई वरमाळा गळे पहराई ।
—पच दहि री वारता

उ०—दसण सयण रयण छळ दमगगळ, राछ गळो वळ भीच
रहे । धड आरती ऊतरै घारा, वरमाळा फिरमाळ वहे । —दूदो
१ जयमाळा ।

रु भे—वरमाळ, वरमाळा, वरमाळ, वरम्माळ, वरम्माळा ।

वरम्म—१ देखो 'वग्म' (रु भे)

उ०—नमगवार मूरा नग, विरद नरेम वरम्म । रिजक उजाळ
साम गै, पाळी मगधरम्म । —वा दा

वरम्मा—देगो 'ग्रन्था' (रू भे)

२ देगो 'ग्रह्य' (रू भे)

वरमाळियोडी—मू का ७—१ वरमाला डाला हुआ २ जयमाला पहनाया
हुआ ३ वरणा किया हुआ, विवाह किया हुआ, शादी किया
हुआ ४ स्वीकार किया हुआ, अंगीकार किया हुआ ।
(स्त्री वरमाळियोडी)

वरम्माळ, वरम्माळा—देगो 'वरमाळा' (रू. भे)

उ०—१ कवी छद गोलें प्रभू अग्रकारी । धरणी कठि सीता वरम्माळ
घोगी । —सू प्र

वरयता—ग पु [म वरयिता] स्त्री का पति, भर्तार, स्वामी ।

(घ. मा, ह ना मा)

वि—वरण करने वाला ।

रू भे—उरयिता ।

वरयात्रा—स स्त्री [म वर+यात्रा] १ वर का विवाह के लिये वधू के
गहाँ बरात सहित किया जाने वाला गमन ।

२ वगा ।

वरयेचा—स स्त्री—गठोड वध की एक उप-शाखा ।

वररमा—मं पु [स रमा+वर] १ रामचन्द्र ।

उ०—तोड गळ जमा चौ आच उग तोलिया, ईम गण नाच घम-
पमाचो भोप । गजव री तमाचो भजव री थकी गण, कना सर
वररमा चो कोप । —बद्रीदास सिडियो

वररुचि—म पु [म] १ एक प्रसिद्ध प्राचीन पंडित जो व्याकरण और
गायत्र के ममन थे । मुदिन्यान प्राकृत व्याकरणकार ।

२ एक प्रसिद्ध नाट्यशास्त्र प्रणेता ।

रू भे—वररुचि ।

वरळ—म पु [म रळ] १ मूरे, मूज । (ना. मा, ह ना. मा)

२ हम ।

३ वरैया ।

४ प्रमाण, उजाला, चोगाती ।

रू भे—वरळ ।

वरळत—म पु [म वरळत+म प्र क.] उजाना, घमक ।

उ०—मं ध्रिपिो धरगत मठा बळि ताकं, गिगावट 'कृपा' म्य रमा ।

वरळत धरे धरे सौगरगि, धरि जिम धारी तून 'धसा' ।

—नांदग वारठट

वरलच्छि—स. पु. [स. लक्ष्मी-वर] विष्णु ।

रू. भे.—वरलच्छि, वरलाछ ।

वरळणो, वरळवो—देवो 'विरळणो, विरळवो' (रू भे)

उ०—दाहू म्वाद लाग समार सव, देखत वरळय जाय । इत्री
स्वारथ साच तज, सवै वधारणै आई । —दाहूवाणी

वरला—म स्त्री. [स] मादा हस, हसिनी ।

वरलाछ—देगो 'वरलच्छि' (रू. भे.)

वरळियोडी—देवो 'विरळियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वरळियोडी)

वरळू वरलु—देवो 'विरळो' (रू भे)

उ०—जनम लगड विहडइ नही, भली नारी जे होइ । एतला
ऊफरू सार नथो, राखइ ज वरलु कोइ । —नळदवदती रास

वरवछक, वरवछत—वि—बुरा चाहने वाला, दुश्मन ।

उ०—आसीस दीर्य 'सुरताण' अछरा, त्रप हा वडा वधारण नेह ।
वरवछत लाघा तो वडता, छत्र पतीया सु वाधा छेह ।

—दुरसी आढी

वरवडी—स स्त्री. [देशज] चारण वशोत्पन्न एक देवी जिसने महा-
राणा हमीर को राज्य प्राप्त कराया था ।

वि वि.—यह चखडा की पुत्री थी ।

रू भे—वरवडी, विव्वड ।

वरवती—वि. (स्त्री) १ मौभाग्य शालिनी, सुहागन ।

२ जिसको वरदान प्राप्त हो ।

स स्त्री—१ वह स्त्री जिसका पति जिन्दा हो, सुहागन स्त्री ।

रू भे—वरवती ।

वरवर—देवो 'वरवर' (रू भे)

वरवरण—स. पु [स वरवरण] १ अच्छा वरण, सुन्दर वरण ।

२ स्वर्ण, सोना ।

वरवरणी—स स्त्री [स वरवरिणी] १ लक्ष्मी ।

२ दुर्गा ।

३ सरस्वती ।

४ मुन्दर स्त्री ।

५ उत्तम स्त्री ।

६ लाभ ।

७ हल्दी ।

८ प्रियगुलता ।

वरवरणो, वरवरवो—देगो 'वडवडणो, वडवडवो' (रू. भे)

उ०—वरवरती वेध वग्द बीमाळा, ठहती गळा घाल तो ठाळ ।
आपुदमा आवती आनू, वेगीया दळ दीटो 'विजपाल' ।

—दुरसी आढी

घरवरियोडो—देखो 'वडवडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वरवरियोडो)

घरवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)

घरवासण, घरवासणी—स स्त्री. [स. वरवासिनी] कछवाहो की कुल देवी ।

उ०—पछे मलीरणा रे गाव भूपडा खेड सोहड भगवतगढ सेस भारिज्ये मलीरणा रे वीछ् देन हुय जीरोतरी गाव हाडोती रो हुय-नें आगं खडारगढ चावळ मेळी हुई तठे देवी वरवासण रो थान छे ।
—नैणसी

घरवीर—स पु. [स वर-वीर] १ श्रेष्ठ वीर, श्रेष्ठ योद्धा ।

उ०—वडो वडआर भुजे कुळ भार, घरा सिणगार इसी लसधीर ।
वहै खत्रवाट नमावण नाट, विधासण थाट सत्रा वरवीर ।
—ल पि.

२ श्रेष्ठ विद्वान, सुयोग्य पंडित ।

उ०—हू भू घ र घ न ख भ होय, अक अठ दगध अधीरह ।
आखर दग्ध अठार वदे, कवसल वरवीरह ।
—र. रू

३ बुद्धिमान, विवेकी ।

उ०—तुरातुर नीमरजा भव तीर, विसे-विस वीसरजा वरवीर । हमे गुरु वायक मा बुघहार, सभे निज नायक की सुघ सार ।
—ऊ का

४ एक छन्द विशेष ।

उ०—चव कळ उरोज थळ च्यार वोज । घरवीर छद, कह यम कव्यद ।
—र ज प्र

घरवेरण—स पु [स वडवा-रमण] घोडा । (ना. हिं को)

घरसद, वरसति—स पु [स वर्ष-अत] किसी वर्ष या साल का अन्त या समाप्ति ।

उ०—इम करता हूउ प्रभात, राय भणइ सुणि मुहता वात । ईणि पुरि देवि जईवत, तेह नी जात्र हुई वरसति । —हीराणद सूरि

घरस—स पु [स वर्ष] १ काल-क्रम के अनुसार वह अवधि जिसमें मव ऋतुओं की आवृत्ति हो जाती है । बारह महीनों की एक अवधि, वर्ष, साल ।

उ०—१ एता दीह न जाणिया रे, निरगुण जाणी कत । हिच सिण जातउ वरस सड रे, जाइ मुफ विलवत । —हीराणद सूरि

उ०—२ कुंभसुति ते आचमन कीधू, कोटि वरस रहु ठालु । अनेकि कुभि ऊलेचता ए घरि नही सर चालु । —नळारयान

२ किसी सवत्सर की निर्धारित दिन से क्रमश चलने वाली अवधि ।

उ०—आया वसिया आपणी, श्रीसम थई वतीत । १७३६ गुण-चाळी लागी वरस, चाळी सरस सजीत ।
—रा रू.

३ पुराणानुसार सप्त द्वीपों का एक विभाग ।

४ भारत वर्ष ।

५ वादल ।

उ०—सर्जे फौज काठळ घरर घणा निसाण घुर, अनल घुआ रवण रण ऊजाथे । वहण दळ दिलेसुर तणा फाटा वरस, मेरगिर 'गजण' रा तणे माथे ।
—अजवी वारहूठ

६ एक व्याकरणाचार्य जो पाणिनि का गुरु था ।

७ वसुदेव व उपदेवी के पुत्रों में से एक पुत्र ।

८ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र, एक राजा ।

रू. भे —वरख, वरस, वरिस, वरीस, वरकस, वरख, वरसि, वरमी, वरसस, वरिस, वरिसि, वरीस ।

अल्पा,—वरसडो वरसडी ।

वरसफटो—स स्त्री [स वर्ष+कट्य=समूह] १ ऋणी और ऋणदाता के मध्य तय होने वाली वह शर्त जिसके अनुसार निश्चित अवधि तक ऋणी की भूमि का उपभोग ऋण दाता कर सकता है ।

२ ऋण के ऊपर लगने वाला व्याज या सूद जिमें व्याज पर भी व्याज जोडा जाता है ।

वरसगाठ—स स्त्री [स वर्ष+ग्रन्थि] १ प्रत्येक वर्ष या साल में आने वाला किसी के जन्म का दिन या तिथि, सालगिरह ।

२ उक्त दिन को मनाया जाने वाला उत्सव ।

रू. भे वरसगाठ ।

वरसट, वरसठ—स पु [स वरिष्ठ] तात्र, तावा । (ह ना मा)

रू. भे —वरसट, वरसट ।

वरसण—स पु [स वर्षण] वादल, मेघ । (अ मा, ह ना मा.)

वि —१ वरसने वाला ।

२ दानी, दातार ।

रू. भे —वरसण, वरसणी, वरीसणा ।

वरसणी—स स्त्री [न वर्षणि] १ वृष्टि ।

२ व्यवहार, वर्ताव ।

३ यज्ञीय क्रम, यज्ञ ।

४ क्रिया ।

५ एक महाविद्या ।

उ०—आवासगामिनी मौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवन-क्षोभिनी कामरुपिणी मनन्तभिनी जलर्त्नभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कौमारी गृगरुपिणी तमोरुपिणी विधातकारिणी गिरिदारणी भवलोकिनी भुजगिनी . . . इत्यादि महाविद्या ।

वरसणो, वरसणो—क्रि अ [स वर्षण] १ बादलो से पानी का बूदो के रूप मे पृथ्वी पर पडना, वर्षा होता ।

उ०—१ यहू तन जारी मसि कर्त्त, घूआ जाहि सरगि । मुफ प्रिय बढल होइ करि, वरसि बुभावइ अगि । —ढो मा.

उ०—२ उत्तग गिरिवर प्रवर फरसत, मेघ वरसत जोर । दमकती वामिनी बहुर भामिनी, चमकती तिहि ठोर । —वि कु

मुहां —१ आग वरसणी बहुत तेज घूप होना, कर्कस वाणी निकालना (ऊ का) २ दूध री मेह वरसणी=

आनन्दोत्सव होना, आनन्द ही आनन्द होना । ३ पुमपा री वरसा करणी महान कार्य करने पर उसके स्वागतार्थ उस पर फूल उछालना ।

२ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणो या टुकडो के रूप मे बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना ।

३ आखो से लगातार आसू बहना, अश्रुओ की झडी लगना ।

४ मुख से मधुर वाणी निकलना, मुख से मधुर भाषा का प्रयोग होना ।

उ०—कमला कहउ कि सरसति, वरसति अमीरस वाणि । कचणु कुणि किर जाविय, पाविय सारगपाणि । —जयसेखर सूरि

५ घन या दौलत का चारो ओर से आना, थोडे से परिश्रम से खूब लाभ होना, अच्छी आमदनी होना ।

मुहा —दूध री वरसा होणी=आनन्द मगल होना ।

६ चहरे की कान्ति और ओज का अच्छी तरह से झलकना ।

ज्यू—उणरी चेहरी तो अवार वरसै, सिखगार करया पछै तो बात ई छोडी ।

७ क्रोध और आवेश के कारण किसी के द्वारा डाटा जाना, फट-कारा जाना ।

८ लगातार अस्त्र-शस्त्र प्रहार होना ।

उ०—१ अयी समर सर वरसता अमर नर ऊचरै, आवघा ठेल-फीळा अराणी । पाळि रूपे अवर तूटि पडै, पडग गमियो नही ताम पाणी ।

—राव छत्रसाल हाडा री गीत

९ तुष्ट मान होना (देने के लिये)

१० दान देना ।

वरसणहार, हारी (हारी), वरसणियो—वि० ।

वरसिओडी, वरसियोडी, वरस्योडी—भू० का० कू० ।

वरसीजणो, वरसीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

वरसाणो, वरसावो—सक० रू० ।

वरखणो, वरखवो, वरीसणो वरीसवो, वरखणो, वरखवो ।

वरखणो, वरखवो वर'णो, वर'वो, वरीसणो, वरीसवो ।—रू० भे० ।

वरसधर—स पु [स वर्ष-धर] बादल, मेघ ।

वरसप, वरसपत, वरसपती—स पु [स वर्षप, वर्षपति] वर्ष के अधिपति ग्रह । वह ग्रह जो सवत्सर के वर्ष का अधिपति हो ।

(फलित ज्योतिष)

वरसवियाणि, वरसवियावणी—देखो 'वरसव्यावणी' (रू. भे)

वरसव्यावणी—स. स्त्री.—जिसके प्रति वर्ष प्रसव होता हो (प्रायः गाय, भैंस)

रू. भे.—वरमव्यावणी, वरसवियाणी, वरसवियावणी ।

वरससत—स पु [स. शत-वर्ष] सौ वर्ष । (उ र)

वरसा—स. स्त्री. [स वर्षा] १ वरसने की क्रिया या भाव ।

२ आकाश के मेघो से पानी का वरसना, वारिस, वरसात ।

उ०—करि पाण सुताण कमाण कसै । वरसाण सराण तणा वरसै । —सु प्र.

३ वरसात का मौसम, वर्षा ऋतु ।

पर्या —वरसण, व्रस्टी ।

४ किसी चीज का अधिक मात्रा मे ऊपर से गिरना, वृष्टि ।

क्रि. प्र —करणी, हीणी ।

५ लगातार चलने वाला कोई क्रम, बीछार ।

क्रि प्र —आणी, पडणी, होणी ।

६ किसी वस्तु की बहुतायत होने की अवस्था ।

रू भे —बरखा, वरसा, वरिखा, विरखा, विरखा, वरखा, वरिखा, वरिखा ।

वरसाऊ—वि [स वर्षा-रा प्र ऊ] १ वरसने वाला ।

२ वरसने योग्य ।

३ आभा और कान्ति वाला ।

उ०—जोया धर कर जग, पीहव वीरम जग पडियो । तद मिल् सळखा तणी, जरु चदनीमो जुडियो । कहर विखो काडियो, कमघ चूडै काळाऊ । "आली" जद ओळख्यो, सही ताळै वरसाऊ । मेहवै जाय 'आली' मिळै, मलीनाथ राखो मदत । आपणो गाम चूडो उठै, सुत वीरम री सापरत । —राव चूडा री छप्पय

रू. भे —वरसाऊ ।

वरसाकरण—स पु —इन्द्र ।

रू भे —विरखाकरण ।

वरसाकाळ—स पु [स वर्षा-काल] वरसात का मौसम, वर्षा ऋतु । (उ र.)

वरसागम—स पु [स वर्षा-आगम] वर्षा ऋतु का आगमन, वर्षारंभ । वरसाणो, वरसावो—क्रि. स —१ किसी पदार्थ का छोटे-छोटे कणो या टुकडो के रूप मे बादल के पानी की तरह ऊपर से नीचे गिरना ।

- २ आगो से लगातार आसू बहना, अश्रुओं की झड़ी लगाना ।
- ३ मुट से मधुर वाणी निकालना, मुट से मधुर भाषा का प्रयोग करना/कराना ।
- ४ घन या दीलत को चारों ओर से प्राप्त करना, थोड़े से परिश्रम से खूब लाभ कमाना, अच्छी ग्रामदनी करना/कराना ।
- ५ क्रोधवशा या आवेग-वशा किसी को डाटना, फटकारना ।
- ६ निरन्तर अन्ध-अन्ध का प्रहार करना/कराना ।
- ७ ग्वर्च करना/कराना ।
- ८ दान देना, दिलवाना ।

बरसाणहार, हारी (हारी), बरसाणियों—वि० ।

बरसायोटी—भू० का० कृ० ।

बरसाईजणी, बरसाईजवी—कर्म वा० ।

रू. भे.—बरसाणी, बग्गावी, बरसाणी, बरसावी बरसावणी, बरभाववी बरीसाणी, बरीसावी ।

बरसात—म स्त्री [स वर्षा+रा प्र त] २ आकाश के मेघों से पानी की वर्षा जल वृष्टि ।

उ०—हरियाळी वारे वास्त ई विकसै । वारे वास्तई वादळा गरजै, बीजळिया खिंवे अर बरसात व्है ।

—फुनवाडी

२ वह रात या दिन जब वर्षा हो रही हो । (उ र)

३ वर्षा ऋतु, वर्षा काल ।

उ०—तरै बरसात रा दिन था । काचं खडै पखाळद थकी राव धीणोद री पाखती थी ।

—नैणसी

रू. भे.—बरसात, बरसाद, बरसायत, बरसाति, बरसाती, बरसायत, बरात ।

बरसाति, बरसाती—वि [स वर्षा+रा प्र ति ती] १ बरसात का बरसात सम्बन्धी ।

२ बरसात की मौसम में होने वाला ।

स स्त्री—१ प्लास्टिक या मोमजामे का बना हुआ एक बड़ा कोट जिमको पहनने में शरीर व वस्त्र वर्षा के पानी से भीगने में बच जाते हैं ।

२ घोड़ों का एक रोग । (गा हो)

रू. भे.—बरमाती ।

३ देखो 'बरसात' (रू. भे)

उ०—१ आगनि थी प्रनीशारडी, हाथमा मोवन कय । गिदय कमल विकाम हुइ जिम बरसाति गदव ।

—नळ दवदती राम

उ०—चंद्र भूरय पायलि कूडालू थाई छि बरसाति ।

—नळाव्यान

बरसातीबुझार—स पु—वर्षा काल में मच्छरों के काटने से फैलने वाला एक प्रकार का ज्वर विषय जिसमें शरीर में जाटा लगता है, शीत-ज्वर ।

बरसाधिप—देखो 'बरसपती' ।

बरसानू—सं पु [स. वर्षाभू] १ मेढक ।

२ इन्द्रगोप या वीरवहूटी नामक कीड़ा ।

३ रक्त पुनर्नवा ।

रू. भे.—बरमाभू ।

बरसायत—देखो 'बरसात' (रू. भे.)

उ०—बरसायत आवण की धारी छै, आपक जावण की त्यारी छै । जमी नीला सिणगार धारसी, 'जसा' सिणगार उतारसी । मोरिया महकसी, डेढरा बहकसी, भिनीगन भणकसी, भमरा भणकसी मीतळ पवन बाजसी, मुघरो मेह गाजमी —मयाराम दरजी री बात रू. भे.—बरसायत ।

बरसायोटी—भू का. कृ—१ किनी पदार्थ को छोटे-छोटे कणों वा टुकड़ों के रूप में वादन के पानी की तरह ऊपर में नीचे गिराया हुआ २ आखों में लगातार आसू बहाया हुआ, अश्रुओं की झड़ी लगाया हुआ ३ मुख से मधुर वाणी निकाला हुआ, मुट से मधुर भाषा का प्रयोग किया हुआ ४ घन या दीलत को चारों ओर में प्राप्त किया हुआ, थोड़े परिश्रम से अधिक लाभ कमाया हुआ, अच्छी ग्रामदनी किया हुआ ५ क्रोध या आवेग के वशीभूत होकर किसी को डाटा हुआ, फटकारा हुआ. ६ निरन्तर लाठी या अन्ध-अन्ध प्रहार किया हुआ, कराया हुआ. ७ ग्वर्च किया हुआ, कराया हुआ (स्त्री. बरमायोडी)

बरसारितु—स स्त्री [सं. वर्षा-ऋतु] वर्षा काल, बरसात का मौसम, वर्षा ऋतु ।

रू. भे.—बरिखारत, बरगारत, बरसारित, बरगारित, बरखारत, बरवारत, बरिगारित, बरिखारित, बरिगारत, बरिखारत ।

बरसाळ, बरसाळ—म स्त्री [स वर्षा+आलुच] १ वर्षा, वृष्टि, बारिस ।

उ०—१ खाळ रत खळहळै जाण बरसाळ नदी जळ । गज तुरग गुडिया, गुडे भड हुवा गूछळ ।

—गु. रू. व.

उ०—२ तोपू का जजींग चौतरफ फेरे । दोळ तरफ दगो तोपू अताळ । भाजूका भनहळ गोळू का बरमाळ । घोमू का अघार ।

—सू प्र

२ वर्षा ऋतु ।

रू. भे.—बरमाळ, बरसाळ, बरमाळ, बग्माना ।

बरसाळइ, बरमानळ—देखो 'बरसाळी' (रू. भे) (उ र.)

उ०—सीआलइ जल-माहि सरि, उन्हालइ पचागि । वरसालइ वगडइ वसड, कामकदला-काजि । —मा. का. प्र.

वरसाळा, वरसाला—देखो 'वरसाळ' (रू भे)

उ०—वरसाला ऋतु सोहामणी, जलधर वरसइ मेह । कदव रूढा वन बहिसीइ, विरहीआ जागइ नेह । —नळदवदती रास

वरसाळी—वि [स. वर्षा—आलुच्] १ वर्षात का वर्षा सम्बन्धी ।

२ वर्षात की मौसम मे होने वाला ।

स. स्त्री.—१ वर्षात के मौसम की फसल, खरीफ की फसल ।

उ०—उदैपुर री हवेली रा गाव नजीक त्तारो हँसो भोगरी वरसाली हँसो ३ लाग सूधी आधा उनाळी हँसो ३ आध पडै ।

—नैरासी

२ उक्त उपज का मुआवजा, हिस्सा, भाग, अंश ।

उ०—दौलतावाद रो हुकम आयो सु स्त्रीजी पीस वदइ असवार हुवा तद गुजरात रा परगना री वरसाळी स्त्रीजी नु दिराई । —नैरासी ३ देखो 'वारसाली' (रू. भे)

रू. भे.—वरसाळी, वरसी ।

वरसाळ, वरसाळ—वि—१ जो वरसने की स्थिति मे हो, वरसने योग्य ।

२ जो वरसता हो, वरसने वाला ।

उ०—गोरी तो भीजें ढोला गोलडै जी, कोई आलीजी भीजें, आलीजी भीजें फौजा माय, हाजी ढोला माय, अब घर आयजा, वरसाळू वादळा हो जी । —लो. गी,

३ वर्षा ऋतु सम्बन्धी ।

४ उक्त ऋतु की फसल के लिये चलने वाला (व्यक्ति, हळ)

उ०—कसबै सोजत हळ २०१ दरबार हासलीक वरसाळू जुपै छै ।

—सोजत रे मडळ री वात

स स्त्री—१ वर्षा, वारिस ।

उ०—मोतिया री लडिया उची सोवै बुगला विसाळ, रसरज पिया पपिया रे कारण आई वरसाळू । —लो गी

२ वर्षात की मौसम ।

३ उक्त मौसम में होने वाली फसल, खरीफ ।

४ उक्त मौसम में होने वाला बुखार, विपमस्वर ।

रू. भे—वरसाळू ।

वरसाळी—क्रि वि—वर्षा ऋतु मे ।

उ०—सुदर स्वाम सरीर, बाधी कट राम पीत पीतवर । काळं वादळ सू कै, बीटाणी बीज वरसाळं । —र. ज. प्र.

वरसाळी—स पु [स वर्षा—आलुच्] १ वर्षा ऋतु, वरसा का मौसम ।

उ०—१ ऊनाळी उत्तरियो, वरसाळी उत्तरियो, सीयाळी आयो ।

—नैरासी

उ०—२ वरखा छूर गोळिया वाळं, वरिणी मेघ जाण वरसाळं । समटै मुडै मुडै समडावै, असुर सजोस रोस उफणावै । —रा. रू.

२ वर्षा ऋतु के चार मास की अवधि, चातुर्मास ।

३ वर्षा ऋतु मे गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

वि—वरसने वाला, वरसने योग्य ।

रू. भे.—वरसाळी, वरसाळइ, वरसाळउ ।

वरसावरस, वरसावरसी—स. पु. [स वर्ष—वर्ष] प्रति वर्ष, हर साल ।

उ०—१ सीदी उदियासिंघ सू कीधी राम करार । सोभत ली वरसा वरस, रुपिया सात हजार । —रा. रू.

उ०—२ पछें जाम वात कर मेळ कियो । घोडा ५ जाम दिया । घोडा १० री जमै आगै की, सु वरसावरस छै । आय मिळियो । अभीखान दिसिया कह्यो-मार ल्यो, थाहरी गुनगार छै । हमें घोडा ६० वरसावरस छै छै । —नैरासी

रू. भे—वरसावरस, वरसावरसी ।

वरसि—देखो 'वरस' (रू. भे)

उ०—का कलपात ज आदरइ ? गूभू कहू गुण-रेस । इणि घटि माघव मेलवसि, वरसि दीह विसेखि । —मा. का. प्र.

वरसिघ—स पु—भाटी वंश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (वा दा ख्यात)

रू. भे—वरसिघ, वरसिह, वरसिह ।

वरसि—१ देखो 'वरस' (रू. भे)

उ०—कान्हडदेवि कही परि घणी, किसी वात समीयाणा तणी । केहउ गरव तुम्है मनि घरउ, सात वरसि लीघउ डगरउ ।

—का. दे. प्र.

२ देखो 'वरसी' (रू. भे)

वरसिण—देखो 'वरसण' (रू. भे)

वरसियोडी—भू का कृ—१ वूदो के रूप मे पृथ्वी पर पडा हुआ-

(पानी) २ वादलो के पानी की तरह छोटे-छोटे कणों के रूप मे गिरा हुआ. (कोई पदार्थ) ३ आखो से वहा हुआ.

(आसू) ४ मधुर वाणो निकला हुआ, मधुर भापित ५ चारो ओर से आया हुआ, थोडे परिश्रम से मिला हुआ (घन, लाभ)

६ अच्छी तरह से भलकित (कान्ती) ७ किसी को किसी के द्वारा डाटा जाना, फटकारा जाना ८ अस्त्र-शस्त्र प्रहार हुवा हुआ, अस्त्र-शस्त्र प्रहारित । ९ दान दिया हुआ ।

(स्त्री. वरसियोडी)

वरसीघोत—देखो 'वरसिघ' (रू. भे)

वरसी—स स्त्री [स. वार्षिकी] १ मृत व्यक्ति के पीछे किया जाने वाला प्रथम वार्षिक श्राद्ध, ग्राह्यण भोजन, दान पुण्यादि ।

उ०—तद फूलमती कही- राजा जो तू मोनु हाथ लगायी ती हू पण मरीस अर तनेई मारीस । अर एक वरस ताई हर हेके हू जदेह महल रहीम एतै वरस दिन ताई पुन्य कर कुंवर री वरसी कर पछे थारै ढोलीये भाईस इतरै मने छेडे मती । —चीवोली

२ मृत व्यक्ति के पीछे प्रति वर्ष मृत्यु के दिन किया जाने वाला श्राद्ध, ब्राह्मण भोजन, दान ।

३ प्रति वर्ष आने वाली मृतक की मृत्यु तिथि ।

४ द्वादशी तिथि ।

५ देखो 'वरस' (रु. भे)

उ०—रिसभदेव वरसी तप कीघउ, छमासी कीघउ वरघमान ।
—स. कु

रु. भे —वरसी, वरसि ।

वरसूचलिया—स स्त्री —राठीड वश की एक उपशाखा ।

वरसेस—स. पु [स वर्ष—ईश] किसी सवत्सर के किसी वर्ष का अधिपति ग्रह । (फलित ज्योतिष)

वरसोत, वरसोद—स स्त्री. [स वार्षिक वर्षोत्थ, वर्षोदय] १ किसी कार्य के बदले दिया जाने वाला वार्षिक वेतन, साल भर की मजदूरी जो एक साथ दी जाती है ।

उ०—इयै नै म्हा चाकर रायियो छै, श्री कहे छै-मने साहूकारा कन्हा वरसोद कराय देवी, पछे चोरी काई हुवण देऊ नही ।

—राजा भोज व खाफरा चोर री बात
२ राजा या शासक को प्रति वर्ष भेंट के रूप में दिया जाने वाला लगान, कर ।

उ०—पूनिर्घ रै परगने मे हळगणत-मावै । डीडवाणे रा साहूकारा री वरसोत भावै । परवतघर चौरासी मारोठ री दाळ भावै
१. और च्यारू पासा री माल खायजै । —सुरे खीवै काधलोत री बात
३ प्रति वर्ष दी जाने वाली सहायता, अनुदान ।

४ वार्षिक पुरस्कार ।

उ०—वारोटी, देण री, कवल पैला तं कीधी । वचन करे वरसोद, रुकी हाथा लिख दीधी । रुपीया दोय हजारा, धान मण तीन हजारा, ज्याज पाप री जेम, सोय पीदै जळ घारा । —अरजुनजी वारहठ

रु. भे.—वरसोद, वरसोद, वरुद, वरुष, वरोद, वरोप ।

वरसोदण—वि. स्त्री. [स वर्षोदयन] १ जो प्रति वर्ष फल दायिनी हो । जो प्रति वर्ष फल देने के लिये आती हो ।

उ०—ल्यावणवाळा ने लिचुपिच लापसी, जी क काटणवाळा ने गुडळी खीर । श्री क वरसं वरसोदण होळी पावणी जे । —लो. गी

२ वर्ष भर निभने वाली, वर्ष भर चलने वाली ।

३ प्रति वर्ष उत्थान या उन्नति करने वाली ।

रु. भे —वरसोदण ।

वरसोदियो, वरसोदीयो—वि. [स वर्षोदयन] (स्त्री. वरसोदण) १ प्रति वर्ष प्राप्त होने वाला ।

२ प्रति वर्ष उन्नति देने वाला ।

३ वर्ष भर तक मौजूद रहने वाला, निभने वाला, चलने वाला ।

४ प्रति वर्ष आने वाला ।

रु. भे —वरसोदियो, वरसोदियो, वरसोदीयो ।

अल्पा.—वरसोदी ।

वरसोदी—वि —प्रति वर्ष ।

अल्पा —वरसोदी ।

वरसोळी—स पु. [स वर्षोपल.] १ वर्ष की वृंदी के साथ गिरने वाला छोटा हिम खण्ड, शीला । (उ. २)

२ एक खाद्य पदार्थ विशेष ।

३ बढई का लकड़ी छीलने का एक उपकरण, श्रोजार ।

रु. भे —वरसोळी, वरसोली ।

वरसोह—स पु —[स. वर्गमन्] विवाह के समय दूल्हा व दुल्हन के चेहरे तथा शरीर पर आने वाली आभा या कान्ती ।

उ०—करियरि ककण चुकरि, नैथ बाघी सिखराळह । वीररस्स वरसोह, कठ लज्जी वरमाळह । विकट रूप वीदणी, खुरम घड कीघ आडवर । लगन प्रव्व रणताळ, धमळ-मगळ सिधू-सुर । अघपति व्हूतरि ऊमरा, सतरि खान सुरताण रा । दळ थम 'गजण' दुल्लह हुश्री, जान सेन जोगणपुरा । —गु. रु. व.

वि वि —देखो 'सोळी' (१)

रु. भे —वरसोह ।

वरसट—देखो 'वरसट' (रु. भे.) (अ. मा.)

वरस्वरग—स पु —१ मुक्ति । (अ. मा.)

२ जीना ।

३ निश्चयेणी ।

वरस्स—देखो 'वरस' (रु. भे.)

उ०—आयी जाळ घर 'अजो' सुव ऊपनी सरस्स । सुज तिए ऊपर सपनी, पचावनी वरस्स । —रा. रु.

वरस्सोह—देखो 'वरसोह' (रु. भे.)

उ०—तुरा तोळें मेलवा लोह वाती । मरेवा तय्यी होट री कोड माती । वरस्सोह वघ्यावळें आक आडो, लवै याट जानी हुश्री 'मीम' लाटी । —गु. रु. व.

वरह—स पु. [स. गहं] १ मोर की पछ ।

२ मोर की पूछ या चढोवा ।

३ पत्नी की पूँछ ।

४ पत्र, पत्ता (अ. मा)

५ अनुचर वर्ग ।

६ देखो 'विरह' (रू भे)

उ०—वरह दावानल आकुली, सखी प्रिय प्रिय भावइ रे । भाखइ नइ दाखइ, कत किहा गयु ए । —लन दवदती रास रू भे.—वरह, वरहण ।

वरहण—१ देखो 'वरह' (रू भे) (ना. मा)

२ देखो 'विरहण' (रू भे)

वरहमुख—स पु. [स. वहिमुख] देवता, देव (ह ना मा)
मि—अग्नि-मुख ।

वरहार—स पु—एक प्राचीन देश ।

उ०—पचाल गोरजर नागद्रह ऊच वरहार मथुरा श्रवध्या वणारसी चदेरी । व. स

वरहास—स. पु [स. वर+भास] १ घोडा, श्रव । (ह ना. मा)

उ०—१ वरहास दौड़ वेगला, किरि खडै नम उर मडला । हुइ हमस घम घम हैखुरा, वाजत घम-घम पाखरा । —गु रू व.

उ०—२ वरहास नास चाचर विखेरि, फारक्का जेम असि, फिरइ फेरि । आसिरा तणउ ऊजळ इ आसि, वेताळि केल्ह चडियउ व्रहासि । —स ज. सी.

२ ऊट, उष्ट ।

उ०—१ कमळा किया कतार, भर बुडी तग भार । लेह देह छोडीजे लास, विलोहणै वरहास । —गु रू व

उ०—२ ढोलो कहै म साहणी, वाळी अतुळ ग्रास । साकै पुगळ पुजवै, कोई एहडी वरहास । —ढो. मा.

रू भे.—वरहास, वरास, व्रहास, भ्रहास, वरास, व्रहास ।

वरही, वरही—देखो 'वरही' (रू भे)

उ०—कोकल परिया गान वणकिया, ग्रीषा भमर भणकिया गाढ । वरही कणण ढणकिया चहुवळ, विविध सुवास खणकिया वाढ । —राव चापा रो गीत

वरहीवाह—स. पु. [सं. वही-वाह] स्वामी कार्तिकेय । (ना मा)

वरह—देखो 'विरह' (रू. भे)

उ०—वार घडी जीणइ उधउ लीध, वार वरस तीणइ वरह कीध । पुत्र राजि बइसारी करी, नल दवदती समय वरी ।

—नळ दवदती रास

वरांग—स. पु [स वर+अंग,] १ हाथी ।

[स. वर+अंगम्] २ सिर, मस्तक ।

३ सुडौल शरीर ।

४ विष्णु जिन के सब अंग श्रेष्ठ माने गये हैं ।

५ ३२४ दिनों का एक नक्षत्र वत्सर ।

६ दाल चीनी ।

७ वृक्ष की शाखा, टहनी ।

८ गुदा ।

९ भग, योनी ।

वि [स. वर+अंगी] १ सुन्दर अंगो वाला ।

२ उत्तम, अवयव ।

रू. भे—वरंग, वर-अंग, वरग, वरागी ।

वरागना—देखो 'वारगना' (रू. भे.)

वरांगी—स. स्त्री. [स. वर+अंगी] १ हल्दी ।

२ मजीठ ।

३ देखो 'वराग' (रू. भे)

वरांसइ, वरासउ, वरासिउ, वरांसीयइ—वि [स विपर्यस्त] १ परिवर्तित, बदला हुआ । (उ र.)

२ भ्रामक ।

स पु.—१ अभाव, अनस्तित्व ।

उ०—फरस राम आपणी माइ तणउ सिर-कमल छेदइ । माघ जेवडी विद्वास पग सूजि भूखि मूठ. नागारजुन स सिद्धि पूठिठ, गागेय जेवडी सुभट पुत्र नइ वरासइ पडइ । —व स

२ प्रतिकूलता, उलटापन, विषद्वता । (उ. र)

३ अदल-वदल, उलट-पलट । (उ. र)

वरा—सं स्त्री. [स.] १ पार्वती । २ लक्ष्मी । ३ हल्दी । ४ त्रिफला ।

५ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य । ६ ब्राह्मीवृष्टि । ७ मजीठ ।

८ मदिरा, शराब । ९ गुडच । १० विडग । ११ चित्रकला

१२ मेदा ।

वराक—वि. [स. वराक] १ तुच्छ, नगण्य ।

उ०—काट जिका कुळ ऊवटे, आठ-वाट इतफाक । वा सबळा ही पुरसडा, वैरी गिरौ वराक । —बा दा.

२ नीच, पामर, हीन ।

३ अभागा, दीन, गरीब, बेचारा ।

स पु [स वराक] १ शिव महादेव ।

२ युद्ध, लड़ाई ।

३ पापड, पर्यट ।

४ दूध भरने से उभरे हुए स्तन ।

५ योनि । (पशु)

६ वगला ।

रू भे—वराक ।

बराह-स पु [स. वरऽऽर] १ विचार ।

२ चदा ।

उ०—विणज हृषी विछडती वेळा, वळीयो कर आपरो बराह ।
विणज कर केईक वावडिया, गया कतायक मूळ गमाड ।

—श्रोपां श्राढी

३-देखो 'बराह' (रू भे)

बराहणो बराहवो—देखो 'बराणी, बरावो' (रू. भे)

बराहणहार, हारो, (हारो), बराहणियो—वि० ।

बराहणोडो, बराहणोडो, बराहणोडो—भू० का० कृ० ।

बराहणोणो, बराहणोणो—कर्म वा० ।

बराहक, बराहख, बराहक—देखो 'बराहक' (रू भे)

उ०—हुवा रण छेह हठे न हनोज, कटे हथणापुर शीर कनोज ।
अणी सिर नाखत खंग अमीर, बराहख खूभत पावुअ वीर ।

—पा प्र

बराह बराहक-स पु [स] १ कौडी ।

२ रस्सी, डोरी ।

३ कमलगट्टा ।

रू. भे.—बराह, बराहक ।

बराहिका-स स्त्री. [स] १ कौडी ।

२ तुच्छ वस्तु ।

बराणो, बरावो—क्रि स ["बराणी" क्रि का प्रे रू] १ विवाह के लिये

चुनकर बरण कराना, अगोकार कराना, शादी कराना ।

२ चुनवाना, पसंद करवाना ।

३ स्वीकार कराना, मनवाना ।

४ निगलवाना, पिलाना ।

५ बरदान दिलाना, आशीर्वाद दिलाना ।

६ याचना करवाना ।

बराणहार, हारो (हारो), बराणियो—वि० ।

बराणोडो—भू० का० कृ० ।

बराणोणो, बराणोणो—कर्म वा० ।

बराहणो, बराहवो—रू० भे० ।

बरात—देखो 'बरात' (रू भे.)

उ०—'पाल' री बराती बरन पाल, सभरी हाय ग्रहिया चडाल ।
बाचत खत आयी वडे वेव, दाखू बरात मरु गोगदेव । —पा प्र

बरात—देखो 'बरसात' (रू भे) (डूगरपुर)

बराती—देखो 'बराती' (रू. भे)

उ०—'पाल' री बराती बरन पाल, सभरी हाय ग्रहिया चडाल ।

बाचत खत आयी वडे वेव, दाखू बरात मरु गोगदेव ।

—पा. प्र.

उ०—२ कोई तावडियं वळंगा जान-बरातियां ।

—लो. गी.

बरापूर—देखो 'बरापूर' (रू. भे.)

उ०—मिळी जंत माळा मुदी वेल माळा । बरापूर सूर घजा संगि
वाळा । अणी सामि आगे इस काम इंदा, वणू ऊहडे वकडा क्रीत
विंदा ।

—रा. रू.

बरारक-स. पु [स बरारक] हीरा ।

रू. भे—बरारक ।

बराळ, बराल-स. पु [स वाण्य+राज. राळ] १ अग्नि की लपट

उ०—धुवि भाळ बराळ पुरा धूंवाडे, ज्वाळ कराळ विसाळ जळी ।
इक सूर लडे रिण चूर हुवं, अरि पूर घकै इक दूर पुळी ।

—रा. रू.

२ वाण्य ।

३ तीव्र उष्णता ।

रू. भे.—बरळ, बराळ ।

[स. बराळ, बरलका] ४ लींग, लवण ।

बरावणो, बराववो—देखो 'बराणी, बरावो' (रू. भे.)

उ०—समोभ्रम 'भाडण' दाखण सूर । हठी पळ भीर बरावत हूर ।

—सू. प्र.

बरावणहार, हारो (हारो), बरावणियो—वि० ।

बरावणोडो, बरावणोडो, बरावणोडो—भू० का० कृ० ।

बरावणोणो, बरावणोणो—कर्म वा० ।

बरास—देखो 'बरहास' (रू भे.)

उ०—बराह देस रा के बरास, हालता भाप भरता हुवास । पीडा-स
चाक अरु तन प्रचड, हरडा स बाज ताजी हुमड ।

—पे. रू.

बरासन-स पु [स. बर+आसन] १ उच्च व श्रेष्ठ आसन ।

२ बर के बैठने का आ आसन । (विवाह)

३ दरवान ।

४ अडहुल ।

५ नपुंसक ।

बराह-स पु [स] १ शूकर, सूअर ।

उ०—१ केहर री हाथळ करी, कीधी दात बराह । सूर काज कीधी
मुजड, विघ करतापण वाह ।

—बा दा.

उ०—२ केताएक दिन पीछे बीसल महाराज कुमार सिकार गया ।
तहा एक बराह री पीछी नियो । सग बीछुडियो । अकेला दूर गया ।

—सिपागण बत्तीसी

२ विष्णु के दश अवतारों में से तीसरा अवतार ।

उ०—सिर हल्लिय अघ सेस, हहर चित्त कछप हल्लिय । हल्लिय दाढ वराह, दुसह हल हल्ल दहल्लिय । —र ज प्र.

३ मेढा ।

४ साड ।

५ वादल ।

६ युधिष्ठिर की सभा का एक ऋषि ।

७ अष्टादश पुराणों में से एक ।

८ शूकर के रूप का व्यूह ।

९ घडियाल, नक्र, मगर ।

१० एक प्राचीनपर्वत ।

११ वाराही कन्द ।

रू भे —वराह, वाराह, वराहउ वराहै, वराहा, वारा, वाराह, वाराहउ, वाराहर ।

वराहउ—देखो 'वराह' (रू. भे.)

उ०—जइ सूकी तउइ वउलसिरी, जइ वीधी तउ मोतिसिरी, जउ भागउ तउ वराहउ, जइ थाकउ, तउइ सोराहउ, जइ छाडउ तउ चद्र । —व स

वराहक—स. पु. [स] १ कुवेर सभा में उपस्थित एक यक्ष ।

२ घृत 'राष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग जो जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ था ।

वराहजयती—स स्त्री —भाद्री सुदि तृतीया की तिथि ।

वराहजी—स पु [स. वराह+रा प्र. जी] १ विष्णु का वराह अवतार ।

२ देखो 'वाराही' (रू भे)

उ०—भीनमाल नगर रतन महैसदासोत रं समै स्वप्न दे नै स्त्री वराहजी प्रथी वाहर आया । —वा दा. ह्यात

वराहद्वही—स. पु —दूहा नामक छद का एक भेद जिसमें २१ गुरु व ६ लघु होते हैं । इसको आमर या सुभामर भी कहते हैं ।

उ०—विस्व दुगण मुनि कहि वरण, रस मुनि त्रिगुण रहोइ । नाम वराह सु छद वद, जिण फिरि लघु गुर जोइ । पि प्र

वराहमिहिर—स पु [स] बृहत्सहिता, पंच सिद्धांतिका और बृहत्पजातक नामक ग्रंथों के रचयिता ज्योतिष के प्रधान आचार्य ।

रू भे —वराह मिहिर ।

वराहमोती—स पु [स वराह+मोक्तिक] एक प्रकार का मोती जो सूअर के मस्तक में से निकलता है ।

वराहसहिता—स. पु —वराहमिहिर द्वारा रचित बृहत्सहिता नामक ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रंथ ।

वराहावतार सं पु. [स] विष्णु का तीसरा अवतार जो हिरण्यश नामक असुर का वध करने के लिये हुआ था ।

रू. भे —वाराहावतार, वाराहावतार ।

वराही—देखो 'वाराही' (रू. भे.)

उ०—देवी नारसिंधी वराही विद्याता, देवी इळा आघार आसूर हाता । —देवि

वरि—क्रि. वि [स उपरि] १ ऊपर, पर ।

उ०—१ कठि निगोदर अवसर नवसर उर वरि हार । कचण कँकण चूडिय रूडिय बाहु स गार । —जयसेखर सूरि

उ०—२ अणियाळा नयण वाण अणियाळा, सजि कुडळ चुरमाण सिरि । वळ वाढ दे सिळी सिळी वरि, काजळ जळ वाळियो फिरि । —वैलि

२ फिर, पुन, वाद में ।

वि —१ समान, अनुरूप ।

उ०—वदन कळा सोळह मिसहर वरि, कोमळ वप्प वरत्री केसरि । वामा अग वणी वर सुदरि, कनकलता जारण कळपतरि । —गु रू व

स स्त्री —तरह, भाति ।

उ०—१ संसव तनि सुम्भपति जोवण न जाप्रति, वेस सधि सुहिण्ण सु वरि । हिव पल-पल चढती जि होइसँ, प्रथम ग्यान एहवी परि । —वैलि

उ०—२ मावीप्र अजगद भेटि बोले मुचि, मुवर न की सिसुपाळ सरि । अति अरु कोपि मुवर ऊफणियो, वरसाळू वाहळा वरि । —वैलि देखो 'वरी' (रू भे)

रू भे —वरि ।

वरिआंन—स पु —१ एक वर्ण वृत्त जिसमें प्रथम एक दीर्घ, फिर चार ह्रस्व वर्णों के क्रम की तीन वार रसकर अंत में गुरु लघु कुल सत्रह वर्ण होते हैं । —ल पि.

२ देखो 'वरियाण' (रू भे)

३ देखो 'वरियाम' (रू भे)

वरिआम—देखो 'वरियाम' (रू भे.)

उ०—'प्राग'हर मोटा प्राक्रम जाचणा बगसणी जगम । अलविधण हीदू ओपम वीरवर वरिआंन । —ल. पि.

वरिखला, वरिखा—देखो 'वरसा' (रू भे.)

उ०—१ प्रजा राज आणद पूगी परखा । वधे देवता कीध फूला वरिखला । —सू प्र.

वरिखारित, वरिखारितु, वरिखास्त, वरिखारति—देखो 'वरसारितु' (रू भे.)

उ०—१ दसराहा लग भी रहयउ, मालवणी री प्रीत । वरिखावति पाछी बळी, आवी सरद सुचीत । —ढो मा.

उ०—२ श्रीध चात्रिग वीरघटा दादुर बोले, मुगळ लाल ममोला सा निजरि आवे । वरिखारित वरणी । सरदरित कहणी । —वचनिका

वरिष्ठ—देखो 'वरिष्ठ' (रू. भे.)

उ०—आणद वरत्या हुया उच्छव, वसुह माहि वरिष्ठ ओ । सो गुरु क्षीजिणचद सूरि, घन नयण दिठु ओ । —स. कु

वरियण—स. स्त्री पृथ्वी, भूमि । (दि. ना मा.)

वरिया—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ समभाय एक वरियां सकाज, रण हता असुर वनीत-राज —शि. रू.

उ०—२ नून चाहजे सो पद सो नहि, पद निकमो है अधिक पद । पद इक है वरियां सु कथित पद, हव सुण पतत प्रकर्स हद । —वा. दा

वरियांण—स पु. [स वरियाण] १ ज्योतिष के २७ योगो भे से अठारवें योग का नाम । (फलित ज्योतिष)

रू. भे—वरिष्ठाण, वरीयाण ।

२ देखो 'वरियाम' (रू. भे.)

वरियांम—वि [स वरेण्य या वरीयस्] १ श्रेष्ठ, उत्तम, शिरोमणि, सर्वोत्तम ।

उ०—१ सहकोय साजत करी सुभडा, विरद भल वरियांम । कुळ जनक कुमरी व्याह करसी, रिधू वरसी राम । —र. रू

उ०—२ अखरती मदा करेवा अचडा, वैर वाराह कमध वरियांम । आभं दळ सामही आयो, रूक भुगत करवा बळराम । —बळराम राठीड री गीत

उ०—३ चड वेळ वरियाम, सुजळ ते आगळ चचळ । गरजि नाद गमीर, रोडि रिणतूर अबागळ । —गु. रू. व

२ प्रवीण, चतुर ।

३ वरण करने योग्य ।

उ०—“भासकन्न” वडो एकाघपति, नीवउत्त नमो आतम सकति । ओपमा करन्न अण-नीद, वरियांम कुंभारी घडा-वीद, । —गु. रू. व.

४ सुन्दर, रूपवान ।

उ०—१ वरियांम लगाण पलाण वणावी, एस उपाडे ऊकडता । परचड हुसड किया तहि पक्कर, अबर सामा ऊछळता । —गु. रू. व.

उ०—२ निज कौसल्य केकइ सुमिया नाम । वरियांम तणुं अति हेत वाम । दसरत्थ विभै इम नजर दीघ । कामना पुत्र धरि जिगन कीघ । —सू. प्र.

उ०—३ सिणगारी सन्नाह सू, विसकामिणि वरियांम । वरिआई हाला वरण, करण महाजुध काम । —हा. भा. ५ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—१ ऐ वरियाम निहृस्सिया, दोय घडी इक जाम । “अजवी” वीठळदास री, पडियो संत दुगाम । —रा. रू.

उ०—२ सनमुख साह निविद्वियो, कीघो नारद काम । कळि लगी रट्ठीड हर, मरसी के वरियाम । —गु. रू. व.

उ०—३ ‘सूरजत’ सुकर करिमाळ सज्जिम् । मुळकियो मछरि घण रोस मज्जिम्, कमघज कहै कर घूणि तेग । वरियांम विडगा चडी वेग । —गु. रू. व

६ जोरावर, जवरदस्त ।

उ०—१ आरव मारघो ‘अमरसी,’ वड हृथ्ये वरियांम । हूठ कर खंड हारणी, कमघज आयो काम । —द. दा.

उ०—२ राजकुळी वस छतीसेइ रावत, वीरति वका वरियाम । मारुधर साम तणुं छळि मिळिया, करण करणगिरि संग्राम । —गु. रू. व

७ प्रमुख, मुख्य ।

उ०—१ रहच खळा दळ रोळणा, वीर उभे वरियाम । ‘किचनर’ ‘पातल’ रे करा, लदन तणी लगाम । —किसोरदान वारदूठ

उ०—२ सू किसा-एक सरदार जुवान छे ? पाका पाका वरियांम नू, अजरायला नू खीवरा नू डाण हुला, डाकिया नू । —रा. सा. म. स पु—मत्री, वजीर । (दि. ना. मा.)

रू. भे—वरयाम, वरियाम, वरीयाम, वारियाम, वारीयाम, वरिआम वरीग्राम, वरीयान, वरीयाम ।

वरियोडो—भू का कृ—१ विवाह के लिये चुना हुआ, वरण किया हुआ, अंगीकार किया हुआ, धादी किया हुआ. २ पसद किया हुआ, चुना हुआ ३ स्वीकार किया हुआ, माना हुआ ४ निगला हुआ, खाया हुआ ५ वरदान दिया हुआ, आशीर्वाद दिया हुआ. ६ मागा हुआ, याचना किया हुआ । (म्यो वरियोडो)

वरियोवेस—स पु—राठीडों की प्रसिद्ध तेरह शाखाओ में से एक । (वा. दा स्यात)

वरियो—देखो 'वडियो' (रू. भे.)

वरिस—देखो 'वरस' (रू. भे.)

वरिसणी, वरिसवी—१ देखो 'वरणी, वरवी' (रू. भे.)

उ०—इक भव अथवा दोइ भव अतर रे, वरिस्यो सिवगति नार ।
—वि कु.

२ देखो 'वरसणी, वरसवी' (रू भे.)

वरिसि—देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—वार वरिसि गोदावरी, श्रेहवी श्रेक जिवार । हम हवइ छाडइ
नही, गुण केहा गमार ।
—मा का प्र

वरिसियोडी—१ देखो 'वरियोडी' (रू भे)

२ देखो 'वरसियोडी' (रू भे)
(स्त्री वरिसियोडी)

वरिष्ठ—वि. [स वरिष्ठ] १ श्रेष्ठ, उत्तम, उच्च ।

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर घरना । वर
वरीयान वरिष्ठ पदवी, पोथा सोई तिरना ।

—स्त्रीसुखराम जी महाराज

२ पूजनीय, पूज्य ।

३ पुराना, वृजुर्ग ।

४ तुलना मे किसी से बढकर ।

५ सबसे बडा ।

६ सब से अधिक लवा ।

७ सबसे अधिक भारी ।

स पु [स. वरिष्ठ] १ तित्तिर या तीतर पक्षी ।

२ नारंगी का पेड ।

[स वरिष्ठ] ३ ताम्र, तावा ।

४ मिर्च ।

५ चाक्षुप मनु के पुत्रो मे से एक ।

६ धर्म सावणि मन्वतरो के सप्त ऋषियो मे से एक ।

७ उरुत्तम ऋषि का एक नाम ।

रू भे—वरिट्ट, वरिष्ठ, वरिट्ट ।

घरीस—स्त्री [स] १ सूर्य पत्नी छाया का नाम ।

२ शतावरी का पौधा ।

३ विवाह के समय वर पक्ष की ओर से बधू के लिये भेजी जाने
वाली विशेष पोशाक ।

४ दुल्हे व दुल्हन की पोशाक ।

५ फुए से पानी निकालने की छोटी रस्सी ।

देखो 'वरि' (रू भे)

उ०—उई पग हात किरका हुई अग रा, वई रत जेम सावण बहाळा
आप आपी घरी जोयने आडिया, लई रिण भल-भला निराताळा

—रू

रू. भे—वरी, वरि, भरी ।

घरीआम—देखो 'वरियाम' (रू. भे)

उ०—इण भाति री घघळी तजारी, वाघळीतजारी मो किणून्
जी पाका पाका घरीआमा जोघारा करडवता ।

—रा. सा म.

घरीयां—देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—१ दुपहरा की घरीयां यमी बीजण होय गयी छै जु कोई
मनुम्य फिर डोलै न छै कंसी भाति जैसी माहू की राति होय ।
—वैलि टी

उ०—२ तद राजा कहि गावास आहीज आहीज घरीया ले आयो ।
—चीवोली

घरीयाण—१ देखो 'वरियाम' (रू भे)

२ देखो 'वरियाण' (रू भे),

घरीयान, घरीयांम—देखो 'वरियाम' (रू भे.)

उ०—मिथ्या मनण मती कर मन तू, सत् विचार उर घरना । वर
घरीयान वरिष्ठ पदवी, पोथा सोई तिरना ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ वस विमुद्ध घरीयाम साम्ही विदण । घणा विमि दोइयो
म्हालियो विरद घण ।
—हा. भा

उ०—३ 'पाल' हरा काल रूपी बीज जिही सीज बडे, अडे भुजा
भला गो इसी घरीयांम ।
—मारवाड ग अमरावा री वारता

घरीस—स पु [स. वारि—ईया] १ समुद्र, सागर ।

उ०—'भीम' भाण सारीस, 'कगन' सिवदान सरीमा । जोघा छळ
जोघाण, बोल दळ वेळ घरीसा ।
—रा रू

२ देखो 'वरीसण' (रू भे)

उ०—१ वीस च्यार घुर वरणवी, सुण घरीस ससार प्रघवी सीस
पचीसमो, ईस 'पती' अघतार ।
—जंतदान वारहठ

उ०—२ माहण समद मेन मीमोदा, रांणा तीसू राम रिम । अरय
घरीस करै सिर ऊपर, कळह वरीस न करै किम ।

—महराणा कुमा भोकळोत री गीत

उ०—३ गढपत्ती मासण गजा, आपण लाख पसाव । अमी प्रतप्यी
कोटि जुग, कोडि वरीस सुभाव ।
—रा रू

उ०—४ विरुदावली हमती घरीस अघनीस, लाग्य सामण कोडि
घरीस । अडड डडण अगजी गजण, अनमी असूत ताहि नमी भूत
करण ।
—रा रू.

३ देखो 'वरस' (रू भे)

उ०—१ जोड विराजै वर तरणि, मोड विराजै सीस । कव आसीस
लोड घन, जीवी कोड घरीस ।
—रा रू

उ०—२ राजा तुम्ह रुई हजो, इम माहरी आसीस । परिकर सहू
परिवार सिड, जीवै कोडि घरीस ।
—मा का प्र

रू भे—वरीस ।

वरीसण, वरीसणौ—वि [स. वर्षणम्] १ दान देने वाला, दातार, उदार-चित्त ।

उ०—१ लख घोर वडो लख लूट वणी वपि लाज, वड चीत वरीसण वाज गरीबनिवाज, जदुवस उजाळ महागुण जाण, तप तेज दिनकर जेम तपै तुडिताण । —ल. पि

उ०—२ आहुई वडो राठीड विसरामिया, तज गया दूमरा न मायत टेक । हसत नित वरीसण न कौ झळ रायहर, हसत वध कवि नही जगत में हेक ।

—द्वारकादास घघवाडियो

उ०—३ कोडि वरीसणौ लखघोर वडाकर, राजिद रूपक रजणौ । वैर वराहळि आदळ वादळ, भूप खळा दळ भजणौ । —ल पि २ दान ।

३ उत्सर्ग, त्याग ।

रू भे —वरीस, वरीसण, वरीस ।

वरीसणौ, वरीसणौ—देखो 'वरसणौ, वरसणौ' (रू भे)

उ०—लाख वरीस भोज तू, कवित नवा कहणाह । लडालूव वणिया विहद, गढपत जस गहणाह । —वा दा

वरीसणहार, हारौ (हारौ), वरीसणियाँ— वि० ।

वरीसणौडो, वरीसणौडो, वरीसणौडो—भू० का० कृ० ।

वरीसणौजणौ, वरीसणौजणौ—कर्म वा० ।

वरीसणौडो—देखो 'वरसणौडो' (रू भे)

(स्त्री. वरीसणौडो)

वर—देखो 'वर' (रू भे)

उ०—१ जो अम्हारू वयणु सुणोसिद्ध, निश्चि सो वर मइ परिणो मिइ । खेचर भूचर भूमिधरो । —प प च

उ०—२ सूटा अरजुन मवि हथियार, माल भूक वेड करइ अपार । साहिउ अरजुनि वनचर पाणि प्रकटु हुई वोलइ वर माणि ।

—प प च.

वरुणौ—स. पु. [स वटुक, प्रा वडुअ] १ ब्रह्मचर्यावस्था, वटुक, ब्रह्मचारी ।

२ उपनयन सस्कार, यज्ञोपवीत ।

३ उक्त सस्कार के अवसर पर गाया जाने वाला गीत ।

४ ब्राह्मण वालक ।

५ प्रोहित कर्म करने वाला विद्वान् ब्राह्मण ।

रू भे —वरुणौ ।

वरुण—स. पु [स.] १ सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता जो जल का अधिष्ठाता,

दस्युओं का नाशक व देवताओं का रक्षक माना गया है ।

उ०—१ वरुण जाय दीन्हा तहा, रतन पदारथ जाय । आय प्रवति-

का सी रतन, ब्राह्मण दीघा आय । —निधासण बत्तीसी

उ०—२ ता पुर मे जैतै वसै, सब ही वरुण समान

—गजउद्वार

२ आठ दिक्पालो मे से एक, पश्चिम दिशा का दिक्पाल ।

३ पश्चिम दिशा ।

४ मित्र देवताओं के साथ रहने वाले बारह आदित्यों मे नीवें आदित्य का नाम ।

५ समुद्र ।

६ पानी, जल, नीर ।

उ०—वरुण येतो कठा सूं आण सूं विचारै, चवै द्रम तरण सूं मूंहे चडियो । करण दरियाव री रीत लख केनपुर, पुरदर भरण री चीत पडियो । —महाराणा राजसिंह री गीत

७ सूर्य ।

८ आकाश ।

९ सौर जगत का सब से दूरस्थ ग्रह (नेपचून)

१० एक मरुत, जो मरुतो के तीसरे गण मे शामिल था ।

११ एक देव गधर्व, जो कश्यप एव मुनि के पुत्रो मे से एक था ।

रू भे —वरुण, वरण, वारुण ।

वरुणग्रह—स पु —१ घोडो का एक रोग, जिसमें घोडे की जीभ, तालू, आख और लिंगेद्रिय आदि अंग काले पड जाते हैं । (शा. हो)

२ देखो 'वरुण' (रू भे)

वरुणदेव—स पु [स] जल के अधिष्ठाता, सर्व श्रेष्ठ वैदिक देवता ।

उ०—सै प्रमत्त होय आमीस देय विदा हुआ । जद समय देव वरुणदेव प्रसन्न होय राजा नूं कही-राजा, तू वडो उदार, घोर-वीर, हू तोसूं प्रसन्न हुवौ । —सिधासण बत्तीसी

वरुणपुरी, वरुणलोक—स स्त्री [स] वरुण देवता का निवासस्थान, वरुणलोक ।

उ०—वडै महल हैं वरुण कं, वडै हाट वाजार । जोजन भढी हजार में, वरुणपुरी विसतार ।

—गजउद्वार

रू भे —वरुणपुरी ।

वरुणालय—स पु [स] समुद्र, सागर ।

वरुण—देखो 'वरुण' (रू भे)

वरुणौ, वरुणौ—देखो 'वरुणौ' (रू भे)

वरुणी—देखो 'वरुणी' (रू भे)

वरुण—स पु [स वरुण] १ लोहे की चदर या जाली का बना रथ का आवरण जो पशु के आघात ने रथ की रक्षा करता है ।

२ कवच, वज्रतर ।

३ टाल ।

४ संन्यदल, नेना ।

५ समूह, समुदाय ।

[स वरुथिन्] ६ रथ ।

वि.—१ कवचधारी ।

२ रक्षक ।

३ रथासद ।

रु. भे.—वरुथ, वरुथी, वरुथ्य, वरुथ, वरुथी, वरुथ्य, विरुथ
वरुथ, वरुथी, विरुथ, विरुथ ।

श्रुत्या,—विरुती, वरुथी ।

वरुथणी, वरुथनी वरुथिनी—स. स्त्री [स वरुथी] संज्ञा, फीज ।

(ह. ना. मा)

रु भे —वरुथणी, वरुथनी, वरुथिनी, वरुथी, वरुथ, वरुथणी,
वरुथनी, वरुथिनी, विरुथणी, विरुथणी, विरुथनी, वरुथणी,
वरुथनी वरुथी ।

वरुथिनी-एकादशी-स. स्त्री.—वैशाख कृष्ण एकादशी ।

वरुथी—१ देवी 'वरुथ' (रु भे)

२ देखो 'वरुथणी' (रु भे)

वरुथी-वि [स वरुथिन्] १ प्रचड, भयकर, जगदस्त ।

२ वीर, योद्धा ।

३ कवचधारी ।

स पु —१ सेनापति ।

२ देखो 'वरुथ' (श्रुत्या, रु भे.)

रु भे —वरुथी, विरुथी, विरुथ, विरुथी, विरुती ।

वर, वरं—क्रि. वि.—१ अधिकार मे, कब्जे मे ।

वि.—माफिक, अनुकूल ।

उ०—कुतव, गोस, अवदाळ सूफी अनै कळ दर, पीरजादा मिळीं
साफ परमात । कान पातसाह रा भरै एक राह कज, वरै न पडे
'जसवत' जिते वात । —नरहरदास वारहूठ

रु. भे —भरै ।

वरोळ-स पु. [स. वहं] १ वरं ।

२ देखो 'विरोळ' ।

वरोलण-वि [राज वरोळ] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—जग करण घमजगर हुए 'तेजळ' जुही, राव रावळ रजा राण
रोदा । आवसी नजर जण दन वळीं आरासा, हजारो वरोळण वजर
होदा । —ठाकुर कुसळसिंहजी री गीत

वरोळणी, वरोळणी—क्रि. स.—देखो 'विरोळणी, विरोळणी' (रु भे)

उ०—१ चातुरगी वरोळ याटक आवळा चमु, भू काज वावळा खळा
दाटकं भनेव । आराण छेडिया चला भाटकं व्रजाग आग, भाटकं
वचाळीं अवा हेडीया जनेव । —जयानजी आढी

उ०—२ घटा वरोळ मार चौधारा, फाळ वहंता कमण फळ । रोळं दळ
वोळं वद्रायण, वळीयी जेम समद वळं । —महेशदास आढी

उ०—३ देवी मेरगिर रूप सायर वरोळं । देवी सायरं रूप गिर
मेर वोळं । —देवि.

उ०—४ 'माल' हरै वध सुछळ महारिण, आगं मह मानव सुर-ईम ।
पाणी असुर वरोळं पीधी, भारी दूध तरणी 'गज' 'भीम' ।
—कल्याणदास महदू

वरोळणहार, हारी (हारी), वरोळणियो—वि० ।

वरोळिओडी, वरोळियोडी, वरोळयोडी—भू० का० कृ० ।

वरोळीजणी, वरोळीजयो—कर्म वा० ।

वरोळणी, वरोळणी—रु भे

वरोळियोडी—भू का कृ—देवी 'विरोळियोटी' (रु भे.)

(स्त्री वरोळियोडी)

वरो-स. पु [स. वराट] १ कूप, वापी आदि मे पानी निकालने
की रस्ती ।

२ हाथी को बाधने या गर्दन मे टालने का मोटा रस्सा ।

उ०—तथा उपराति करि न राजान सिलामति कपोळा रं मदघ
करिनें भोरा रा भीर पखनं रहीआ छं । गौरा नूं वैठा सासहे
नही, सूडीर वरां वळाका ग्राइ नं रहीआ छं । —रा. सा स
३ आश्रय ।

उ०—जप जाप होम कीजं जिगन, चरन खट्टं प्रामं वरी । जोधपुर
अजुघापुरी, राम राज कमधज री । —गु रु व

वळ-स पु—१ भोजन, खाना ।

उ०—१ हाथी १ घोडा १ मोना रूपा सू महिया नाळेर देनं
प्रोहित कामदार धार मेलिह्या । तिकं धार आया । तद सगळा नं
खबर हुई, गोडा रा नाळेर आया । तदि डेरी दिरायो वळ री चारा
री जावती करायी । —जगदेव पवार री वात

उ०—२ किसतुरी विना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीरण
री आखडी । साथ नं वळ हुआ विना जीमण री आखडी । वावडी
री पाणी पीवण री आखडी । वेहती नदी री पाणी पीवण री
आखडी । —रा सा स

२ भोजन की सामग्री ।

उ०—उठी नू दिन पाच कुवरसी टिकियो मोजू ही ती भुजाई
हुवें ज्यू ही अळ तुलं । लोग सारी आय भेळी हुवें ।
—कुंवरसी साखला री वारता

(गि पेटियो)

३ बलि ।

उ०—१ ताहिरा भैमी राकस रूप कर बोल्यी । कहियो वडा रजपूत ।
श्री राजा तो केहि काम री न छै । अर तूं वरदाईसेन री वेटी छै,
सो तूं म्हनं सी वाकरा, सी भंसा अर सी मण दाहू री म्हनं वळ
दं ती तोनं हू वर देऊ । —नैणसी ।

उ०—२ सु उठे कोई कसवण हुवी, तरें क्यु' पग ठागिया, उठे उतरिया सवणी घुलायी, तरें सवणी कह्यो-एक आदमी अठे वळ दियो जोईजे । तरें रावळ साथ आदमी १२ मास-साख रा था, नै एक रतनू आसराव वेटी सूधी थो, तरें वारठ विचारियो, विचारनै कह्यो-सिगळी ही साख री एकूकी छै, नै म्है दोग जगा छ्या, सु म्हा माहिली एक जणी वळ चाडी । —नैणसी

४ गोण्ठी, भोज ।

उ०—इतरी थोरिया विचारी । ताहरा पावूजी तो कारणीक मरद । तद पावूजी ईया रै जीव री लयी । ताहरा पावूजी बोलिया । कही—रै थोरिया । थे आ साढ लै जावी, आज री वळ करी । —नैणसी

५ भोज या वलि पर लिया जाने वाला कर । (नैणसी)

६ ददं के कारण ऊरु-मूल, काख या कर्ण मूल मे से किसी स्थान पर होने वाली ग्रन्थी, शोथ । (अमरत)

वि वि.—ऐसा सधि स्थलो का खुल कर कार्य न करने के कारण होता है ।

७ घुमाव, मोड ।

८ टेढापन, लचक

९ ऐंठन, मरोड, वाक ।

उ०—वळ काढि गासिया, परा चाढिजे पखाळा । वाढ अणी करि वळक, आव कीजे अणियाळा । —सू प्र.

१० दिशा ।

११ मेघ, वादल ।

१२ एक असुर ।

१३ पार्श्व पहलू ।

१४ सिक्कुडन ।

१५ भुकाव ।

सर्व—उन ।

उ०—तूटै कमळ वहे वळ तेगा, नेगी अरपत करण रिण नेगा । पहिले घके पाच सी पडिया, भुगला प्राण चका सै मुडिया । —रा रु

क्रि वि [स वलन्] १ फिर, और ।

उ०—१ घुर तुक मत चौवीस घर, वळ दूनी अकवीम । ती चौवीसह चतुरथी, कळ अकवीस कवीस —र ज प्र

उ०—२ सट वहन प्रथम जनमी विसैक, दिल थयी दुविन वळ सुना देव । मन विकता पडौ नह कुटव माय, अवतरी जोग माया जु आय । —रागदान लालम

२ और, नरफ ।

३ दे'गे वळ' (रु भे)

वलउ, वळक, वलक-स स्त्री [रा वलक] १ प्रकाश, चमक । (उ. र)

उ०—वळ काढिजे गासिया, परा चाढिजे पखाळा । वाढ अणी करि वळक, आव कीजे अणियाळा । —सू प्र.

२ आभा, कान्ति, तेज ।

३ किरण, रश्मि ।

४ शत्रु दुश्मन ।

उ०—वैर वारह वाहरु वैरा, वळका कर करवा दईवान । सत्र घर गणै नसा जसवारी, मनखा री लागै मरुमान ।

—रावत अरजणसिंह री गीत

५ आवेश, तेजी ।

६ काण्ठ का लट्टा ।

७ तामस मन्वन्तर के सप्तपियो मे से एक ।

८ कटि, कमर ।

उ०—हार थोडती, वलक मोडती, आभरण भाजती, वस्त्र गाजती, किकिणीकलापुच्छोडती, माथउ फोडती, वक्ष स्थल ताडती, कुंतलकलाप रोलती, प्रथ्वीतलि लोलती, मरुज्जल वास्पजलि कचुक सिचती । —व स

रु भे—वळक वलक ।

वळकणी, वळकवी—क्रि अ—१ वादलो के बीच विजली का बल खाते हुए चमकना, दमकना ।

उ०—१ डोहत सूडाडड ए, स्त्रीसड सरपक हिड ए । गज-वाग मर्त्ये मैगळा, वळकत वीजक वहळा । —गु रु वं.

उ०—२ तिमै कूंत अदभूत, भडा वाका भूडडे । वादळ वादळ वळकि, वीजलत्ता ग्रहमडे । —गु रु व

२ किसी वस्तु का चमकना ।

उ०—१ वळके वीजूजळ फुटके कम्मळ, सूसर सावळ भळहळ ए । अडडे काछूसळ फुटके कम्मळ सोणी रळ-चळ सळहळ ए । —गु रु. व.

उ०—२ वाजी हाक वाहदरा, होय वीर हकारा, वळवळ वाढ वळकिया खुरसाण दुघाग । —वी मा

३ आभा, कान्ती, या तेज का झलकना, शोभा देना ।

४ प्रकाशमान होना, प्रकाशित होना ।

वळकणहार, हारी (हारी), वळकणियो—वि० ।

वळकियोडी, वळकियोटी, वळकियोटी—३० का० कु० ।

वळकीजणी, वळकीजयी—भाव वा० ।

वळकणी, वळकवी—रु भे ।

वळकती-वेळ-स पु—नाला, वल्लम । (ना टि को)

बलका—स स्त्री.—सजीवनी घूटी । (अ. मा.)

बलकियोडो—भू. का कृ—१ चमका हुआ, दमका हुआ । २ भलका हुआ, शोभित । ३ प्रकाशमान हुवा हुआ ।
(स्त्री बलकियोडी)

बलकी—देखो 'बलकी' (रू. भे.)

बलकणी, बलकबौ—देखो 'बलकणी, बलकबौ' (रू. भे.)

उ०—१ भिदै जाळिया रूप सोभा भळकी । वणो वीजळी जाण
आमं बळकणी । —सू प्र

उ०—२ वाराह धडके दाढ खडके कध कडके कूरम । सम्मूह
सळके कूत बळकके खेग खळके कौजम्म । —गु रू व

बलकियोडो—देखो 'बलकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बलकियोडी)

बलक—स. पु. [स अवलक्ष] १ उज्वल, शुभ्र । (अ. मा.)

२ श्वेत, सफेद ।

बलगणी, बलगबौ—क्रि अ [स. वलग] १ लूवना, लटकना, झूमना ।

उ०—बल करी बलगइ बाहडी, तई आपी तस बाह । रग वघारइ
बली बली, ते तूठउ तनि ताह ।

—मा का प्र

२ लिपटना ।

उ०—गोरी गलि बलगी रही, बेलि चढी जिम ब्रक्षि । विनय
करीनइ विलपती, विधि-विधि थई विलक्षि । —मा का प्र

३ उछलना, कूदना ।

४ पकडना ।

उ०—कटितटि हूती बकडी काढी करि करवाल । तव अगगीउ
आवीकरी, करि बलगु ततकाल । —मा. का प्र

५ छलाग मारना ।

६ व्यर्थ की उछल कूद करना ।

७ ऊछल उछल कर चलना ।

८ अवलबन करना ।

९ उलझना, फसना ।

उ०—बलता ब्रह्दस्व [ऋत्वि] वोलि, साभलि राजा घरम । प्राणि
सरव सदायि ब्रुखिया, [येन्हि] बलगा करम । —नळाख्यान

बलगणहार, हारो (हारी), बलगणियो—वि० ।

बलगियोडो, बलगियोडो, बलग्योडो—भू० का० कृ० ।

बलगोजणो, बलगोजबौ—भाव वा० ।

बलगणी, बलगबौ—रू० भे० ।

बलगत, बलगताऊ—क्रि वि [स वलित] राह चलते हुए ।

बलगा—देखो 'बलगा' (रू. भे.)

बलगार—स पु.—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—जादर हीरागर वइरागर फूलपगार, चीर बलगार चुनार,
पीताबर चादर रक्तावर नेत्रावर । —व स

बलगियोडो—भू. का कृ.—१ लूँवा हुआ, लटका हुआ, झूमा हुआ, झूला
हुआ २ लिपटा हुआ ३ उछला हुआ, कूदा हुआ ४ पकडा हुआ
५ छलाग गारा हुआ ६ व्यर्थ की उछल-कूद किया हुआ. ७
उछल उछल कर चला हुआ ८ अवलबन किया हुआ ९ उलझा
हुआ, फसा हुआ ।

(स्त्री बलगियोडी)

बलगणी, बलगबौ—देखो 'बलगणी, बलगबौ' (रू. भे.)

उ०—रवि किरणे हू बलगि चडिय अट्टावय तित्यहि । निय २
वन्न पमाण विव वदिय, जिण भतिहि । —अभयतिक यति

बलगियोडो—देखो 'बलगियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बलगियोडी)

बलगण, बलगि, बलगणी—स पु. [स बल] १ प्रस्थान, गमन ।

उ०—मेहा बूठा अन बहळ, थळ ताढा जळ रेम । करसण पाका
कण खिरा, तद कउ बलगण करेस । —ढो मा

२ लौटना क्रिया ।

उ०—सेवगा रगरळी भेट वसीयो सुरग, रैण सर ऊजळी क्रीत
राहै । बळण करवा तरणी हूस पाछी बळी, मिळी जळ वूंद दरियाव
माहै । —चिमनजी आढो

३ आगमन ।

४ घूमने या चक्कर लगाने की क्रिया या भाव ।

५ घूमने या मुडने की क्रिया या भाव ।

६ बक्र गति, बक्र चाल, टेढी-भेढी चाल ।

उ०—नदी दो तड पाडती, कचवर उपाडती, रूख उन्मूलती,
कुभिशि घातती, सीव ज हएति, जडि मूलि खणती, मारग लोक
खलती, बळणी चलती, तरु तोखती, नीचड जोअती, महापूरि कल-
कलती, कल्लेलि उच्छलती । —व स

७ भुगतान ।

८ ग्रह, नक्षत्रादि का सायनाश से हट कर चलना (ज्योतिष)

रू. भे.—बळण, बलन ।

बलगणी, बलगबौ—क्रि अ [स. बल्] १ वापस लौटना, लौट कर जाना,
जाना ।

उ०—१ कमधज वर मार्ग जोडं कर, हुवै दान चाहीं सुज हाजर ।
तथास्तु कहि मुनिद बळं तुर, राका दिन मिळसी राजेस्वर ।

—सू प्र

उ०—२ लै 'श्रोपा' कय कीरत लाडी, बड पीवार वजाडै । इया माहूँई कई आला आला, बल्लिया डोल वजाडै । —श्रोपी आढी

उ०—३ एक काठिया रै वास थी, तठै रावळ वाड माहै कूद पडियो । लाएँ दीठी-जु जु जाइ (?) तरै पाळसेट तरवार वाही, सु गुदडी माहै आगळ वँ वैठी । लाखी पाछी बल्लियो । रावळ काठिया मामा माहँ गयो । —नैणसी

उ०—४ कहियो श्री ठाकुर सुएँ, श्री लोक सुएँ श्री नीली रू र छै, छै छै मास ताई नाथी ती तँ कहियो न मैं सुणियो, मैं कहियो न तँ सुणियो, वाचा अवाचा छै । ताहरा बीजाएद आधी हालियो । सयणी पाछी बळी । —सयणी री वात

२ प्रस्थान करना, गमन करना ।

३ लोट कर आना, वापिस आना ।

उ०—१ पछै आण सिधमुख डेरी कियो । पाछा फर्त कर बल्लिया । पाछा आवता नँ दासू वैहणीवाळ आय मिलियो । दासू कहथो—राज म्हारी वर छै । जो लरावो ती घरती थाहरी छै, सो लेवो —नैणसी

उ०—२ भला पधारी भीचडा, गरक मिलहूँ मैं गात । केहर वाळा कळह री, बळता कीजी वात । —वा दा

४ प्राप्त होना, आना । (बृद्धा अवस्था) ।

उ०—सरधा घटगी सँग, वेग विरघापण बल्लियो, निकळण री रथ नही, कळण ऊडी मैं कळियो । मगरपचीसी माय, डोकरी वरणो डाकी, डागडिया निठ डिग, थिगँ टागडिया थाकी । —ऊ का

५ घूमना, फिरना, चक्कर लगाना । (व्यायाम)

६ घूमना; मुडना ।

उ०—जुडै जरद नहूँ साथी जोवँ, परदळ दीठा पचमुद । वाच न क्यू परगहूँ चोळुवँ, रावत बल्लियो तेण रुप । —द दा

७ बल गाना, वक्रगति चलना ।

८ आगँ वहना ।

उ०—हाथी लख मन हेत, बल्लियो वेढ लगाय कँ । चित उत धरियो चेत, मिळवा कामण माणवा । —गजउद्वार

९ ढलना ।

उ०—१ छाह गुआळ बळती छाया, जकी पटतर देख जुए । चुवस वसीजँ सहर सितारी, हथणापुर मे वेढ हुए । —श्रोपी आढी

उ०—२ मन जाणँ वडली हुसा, (ऊगा) वेणण री थळियाह । वीभाँ डाळँ डोलियो, बळती छाहडियाह ।

—वीभा सोरठ री वात

१०—प्राप्त होना, मिलना ।

उ०—१ तरै देवराज कहथो—भनी वात । म्हारै मायँ भाग, जो

राज रा हाथ मायँ ऊपर हुसी । कती हूँ मोटी हुईस, नँ माहरी घरती गई छै सु वाळीस । माहरी दावी वरिहाहा माहै छै, सु बळसी । राज री मँहर था माहँरँ सोह वात भली हुसी ।

—नैणसी

उ०—२ तरै जोगी खुसी हुय, दवा दीनी कस्यो—थाहरी ठाकुराई दिन दिन वधसी, थाहँरँ पग सू आ घरती कदँ नही जाय, थाहरा दावा बळसी । —नैणसी

११ आकषित होना ।

१२ अकन होना, लिखा जाना ।

उ०—मन जाणँ पीवूँ पँ-मिमरी, छाछ सुवरणी मिळँ न छाट । बल्लिया सी पाछा कुण वाळँ, उण घर री लेमण रा आट ।

—श्रोपी आढी

१३ आना ।

१४ लगना, पडना ।

उ०—सैणा ठरिया नयण, हिया प्रमणा परजळिया । जस प्रताप बाधियो, घात्र नीसाणा बल्लिया । —गु रू व.

१५ प्रवेश होना, घुसना ।

उ०—दरवाजी तूटण सू किला मे खळबळी माचगी । जेज विहया नाकावदी होवण री भी ही सी भीमडी विजळी रँ पळाका रँ ज्यूँ किला रँ मायनँ बल्लियो । पण ड्योडी पूगता-पूगता चाफेरँ सुँ घेरीजग्यो । —अमरचूँनडी

क्रि स —१६ ढकना, लपेटना ।

१७ लीटाना, देना ।

उ०—इण गौरवधियँ रँ कारणँ मैं ती नव दिन निरणी रह गई रँ । म्हारी गौरवघ बळनी कर । —जो गीः

१८ प्रत्युत्तर करना, उत्तर देना ।

१९ भरपाई करना, चुकता करना ।

२० देखो 'बळणी, बळवो' (रू भे)

उ०—१ करहा लवी धीस भरि, पवना ज्यूँ वहि जाह । ऋभ बळतइ दीवळइ, घण जागती जाह । —डो मा.

उ०—२ सूरज ना किरण पच्छिम ढळघा, पथी सगा नहूँ मिळघा । विरही ना हीया बळघा, गोवाळ परँ बळघा । —रा सा स.

घळणहार हारी (हारी), बळणियो—वि० ।

बळियोडी, बळियोडी, बळघोडी—भू० का० कृ० ।

बळीजणी, बळीजवो—भाव/कर्म वा० ।

बलणी, बलवो, बललणी, बल्लयो—रू. भे ।

बलणी, बलवो—देखो 'बळणी, बळवो' (रू. भे)

उ०—१ दानि धरमि एण वीर विचारँ, मछ नरेंद्र न बलइ

अणामारै । हेम नी गजवडिइ पताका, करण्ण जाणिन किसिउ सिराका ।
—सालि सूरि

उ०—२ करि लज्जा बलती कहै रै हां, घर मन अधिक उमग ।
महाराज इण पापीयै रै हा, कीघउ मुझ घर भग । —वि कु.

उ०—३ तुरगम त्रासवतउ, पवन जिम चालतउ, सरप जिम बलतउ मद्यप जिम पदि पदि स्कलतउ, लीला चालतउ, रभसि मालहतउ, क्रीडा येणतु, सूत्कार मेल्हतउ ।
—ब. स

उ०—४ ब्रह्मदस्व रसि शोचरै साभलि, कुतातन । पुण्य स्तोत्र एम बलतु वदि रै सुणीनि वचन ।

बलणहार, हारौ (हारौ), बलणियो—वि० ।

बलिओडौ, बलियोडौ, बल्योडौ—भू० का० कृ० ।

बलीजणौ, बलीजवौ—भाव/कर्म वा० ।

बळतपूछ—स पु [स बलित-पुच्छ] ध्वान, कुत्ता । (अ मा)

बळतासख—स पु —बह छप्पय छद जिसमे प्रथम कही हुई तुक की पुनरावृत्ति लाटानुप्रास शब्दालकार के समान होती है । (र ज प्र)

बलद—देखो 'बळद' (रु भे)

उ०—हाली नइ भवि हल खडचा, फाडचा प्रथिवी पेट । सूउ निदाण किया घणा, दीधी बलद थपेट ।
—स कु

बळदार—वि —जो मुडा हुआ हो, घुमावदार, ऐंठा हुआ ।

रु भे—बळदार ।

बळदियो—देखो 'बळद' (अल्पा, रु भे)

उ०—मूळ गळथी रोहण गळी, आद्रा वाजी वाय । हाळी वेचो बळदियो, खेती लाभ नसाय ।
—वर्षा-विज्ञान

बळद्विख—स पु [स बलद्वक] इन्द्र ।

बलन—देखो 'बळण' (रु भे) ।

बलनास—स. पु [स. बलनास] अयनाश से किसी ग्रह के बलन अर्थात् हटकर चलने की दूरी का अश । (स्योतिष)

बळपूरण—वि [स बल=भोजन+पूरण] १ भोजन देने वाला ।

स स्त्री —२ अन्न-पूरण ।

३ बरवडी देवी का नाम ।

उ०—हू इण बूंट वेछरा वीसहथी हू वाजू । बळपूरण बरवडी हू इण सिंह वण अग्राजू ।
—पा प्र.

रु. भे—बलापूरण ।

बळबड—देखो 'बळबड' (रु भे)

बलभ—देखो 'बल्लभ' (रु भे) (अ मा)

बळभउतग—देखो 'बलभी उतग'(रु भे) (अ मा)

बलभउजन, बलभउजन—सं. पु [स बल्लभ+जन] १ श्रीकृष्ण ।
(अ मा.)

२ मित्र-वर्ग, मित्रगण ।

३ बचवजन ।

रु भे—बळभजन ।

बलभतन—स. पु. [स बल्लभ-तनु] मित्र । (ह. ना. मा)

बळमद्र—देखो 'बळमद्र' (रु. भे.)

बळमद्रोत—स पु —कछवाहा वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति (वा दा स्यात)

बळभन—स पु [स बल्लभ] भोजन । (ह. ना मा)

बलभा—देखो 'बल्लभा' (रु. भे) (अ मा, ह ना मा)

बलभाचारी—देखो 'बल्लभाचार्य' (रु भे)

बळभि, बलभी—म स्त्री [स बलभि] १ घर के ऊपर बना हुआ मडप, गुंबज, गुमटी ।

२ घर का सब से ऊपरी भाग, हिस्सा ।

३ छत ।

४ छप्पर ।

५ शिखर ।

६ झोपडी । (हि को)

७ काठियावाड की एक प्राचीन नगरी ।

रु भे—बळभि, बळभी ।

बलभीउतग—स पु यी [स बलभी-उतग] इन्द्र का हाथी, ऐरावत ।

रु भे—बळभउतग ।

बलम - १ देखो 'बल्लम' (रु भे)

२ देखो 'बल्लम' (रु भे)

उ०—सो एका-एक बेटौ, फेर कुवर सरव राजा री भार सभाळ लियो । तेथी राजा न घणौ बलम । —पलरु दरियाव री बात

३ देगो 'बालम' (रु भे)

बलय—स पु [स बलय, बलय] १ ककण, कण ।

उ०—ललाट पट्ट मध्यविभागिक्त कस्तूरिकातिलक, बाहुवल्लरी पहिरित रत्नमय बलय, स्रवण तारस्फार भलकता कुडन ।

—ब स

२ सघवा के धारण करने की कलाई की चूडी ।

उ०—डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय । मायड साय दिखाय थण, घण परण बलय बताय ।

—वी. स

३ बाजूबध ।

उ०—१ ललाट तिलक, कने भलक, बाहे वलय अगुलि अगुलियक
कठि कठिका, गलइ हार । —व स

उ०—२ जी हो एक वलय मंगल भणी, जी हो राख्या रमणी वाह ।
—स कु.

४ कडा, छला ।

५ घेरा, कुज ।

६ वृत्त की परिधि ।

७ व्यूह रचना विशेष ।

८ वेष्टन ।

९ कमरपेटी, इजारवध ।

१० किनारा, छोर ।

११ गल-गड नामक एक रोग ।

१२ ढगण के प्रथम भेद आदि ह्र स्व मात्रा का नाम (र ज. प्र.)

१३ गुणण के प्रथम भेद दीर्घ मात्रा का नाम (र ज. प्र.)

१४ देखो 'विलय' (रु भे.)

रु भे —वलय, वला ।

बलयावलि-स पु.[स वलय+अवलि] हाथो मे धारण करने के कगन ।

उ०—बलयावलि हथ मे यी दसतान दिपाया । —व भा.

बलयोडी—देखो 'बलियोडी' (रु भे)

(स्त्री बलयोडी)

बलराव—देखो 'बलराव' (रु भे)

उ०—वीडा भले ऊठीयो, लगा असमाणा । जाँरो श्रीकम वाधिया,
बलराव छलाया । —द दा

बलवड—देखो 'बलवड' (रु भे.)

बलवत, बलवती—देखो 'बलवत' (रु भे)

उ०—जाधपुरो जोगणपुरो, जग जेठी बलवत । लेण क लका
रामचद, ह-कारे हणमत । —गु रु व.

बलवत्त-स. पु - १ एक देश का नाम ।

उ०—देस सख्या आदिइ अयोध्या नगरी, उसा मडाल ग्राम च्यारि
कोडि, बलवत्ता देम ३ कोडि —व स.

२ देखो 'बलवत' (अरपा, रु भे)

बलवळ-स पु [स वल] १ विलाप, रुदन ।

२ प्रकाश, चमक ।

३ भलक ।

४ जलन, दाह ।

५ कपन ।

कि वि (अनु) १ चारो ओर, चहुओर ।

उ०—बलवळ कठ विलास, हार भुजग गग सिर मळहळ ।
—रामरासी

२ फिर-फिर कर, रह-रह कर, पुन पुन. ।

उ०—ग्राह गयद विडवा लागा, बळवळ दाखे पाण । उदघ छीळ
यवर लगा, फेर मयं महाराण । —गजउद्वार

३ क्रमश ।

४ निरन्तर ।

रु भे —बळवळ, बलवळ, बलवळा, बळवळा, बळविळ, बळावल,
बली-बली, बत्वल ।

बळवळणो, बळवळवो—क्ति अ —१ चमकना, प्रकाशमान होना ।

उ०—सळहळ रत खाल भवकि सग मळ हळ, कठल बळवळ
वीज कळा । कळ ऊकळ हुए गळोम (ळ) कदळ, आफळ घाया उभै
दळा । —गु रु व.

२ धीरे-धीरे जलना, धने-धने जलना ।

३ जलन होना, दाह होना ।

४ भिलमिलाना, भलकना ।

५ कम्पायमान होना, कम्प-कम्पाना ।

बळवळणहार, हारो (हारी), बळवळणियो—वि० ।

बळवळिओडो, बळवळियोडो, बळवळयोडो—भू० का० कृ०

बळवळीजणो, बळवळीजवो—भाव वा० ।

बळवळणो, बळवळवो, बलवलणो, बलवलवो—रु० भे० ।

बलवलणो, बलवलवो—देखो 'बलवलणी, बलवलवो' (रु भे)

उ०—१ टलवलइ जिम निरजलि माछिली, बलवलइ अति अगि
बली बली । भलड लासइ लावर आकुलउ, बिरहि विव्हल वातर
वाउलउ । —मालि सूरि

उ०—२ बलवलती विव्हल वदनि, बलती वदइ उदार । 'राजा रुठउ
मनाविमु, सुपी सपति सार ।' —मा. का. प्र

बलवलणहार, हारो (हारी), बलवलणियो—वि ।

बलवलिओडो, बलवलियोडो, बलवलयोडो—भू० का० कृ०

बलवलीजणो, बलवलीजवो—भाव वा० ।

बळवळा—देखो 'बळवळ' (रु भे)

उ०—१ वण उतग बळवळा छटा घण अदभुत धाजे । जाळी
विद्रुम जडत विवध मण नगा विराजे —भोपालदान मांडू

उ०—२ बळवळा अजस वधे, भडा खळ छक भारियो मुत । 'बाध'
तगो उदरग मभे, गगगव अप्राजियो । —गू प्र

बळवळाट-म पु —१ चमक, प्रकाश, रोमनी ।

२ भलक ।

३ जलन, दाह ।

४ भिनमिलाट ।

५ कान ।

६ व्यर्थ का प्रलाप, बकभ्रम ।

बलवलिघोडी—भू. का कृ — १ चमका हुआ, प्रकाशमान हुआ हुआ.

२ शनै-शनै जला हुआ ३ जलन हुआ हुआ, दाह हुआ हुआ.

४ भिल-मिलाया हुआ, भलका हुआ ५ कपायमान हुआ हुआ ।

(स्त्री बलवलिघोडी)

बलवल्लियोडी—देखो 'बलवलिघोडी' (रू भे)

(स्त्री बलवल्लियोडी)

बलवण—देखो 'बलवान' (रू. भे)

उ०—'नरहर' जोगीदास निर्भे नर, आणदसुत कुळ रीत उजागर ।

बधव वरण आगळ बलवाणे, 'अखड' हरा बधे अवसाणे ।—रा रू.

बलबिळ—देखो 'बल-बल' (रू भे)

बलसणी, बलसवी—देखो 'बलसणी, बलसवी' (रू भे)

उ०—ठगीया देवता नर नाग ठगारी, हे लछमी सुण वात हमारी ।

बलसणहारी 'कमी' बहारी, घूत ती जाणू घूतारी ।

—कमा विहारी री गीत

बलसणहार, हारी (हारी), बलसणियो—वि० ।

बलसिघोडी बलसियोडी, बलस्योडी—भू० का० कृ० ।

बलसोजणी, बलसोजवो—कर्म वा० ।

बलसदन—देखो 'बलसदन' (रू भे)

बलसाडणी, बलसाडवी—देखो 'बलसाणी, बलसावी' (रू. भे)

बलसाडणहार, हारी (हारी), बलसाडणियो—वि० ।

बलसाडिघोडी, बलसाडियोडी, बलसाड्योडी—भू० का० कृ० ।

बलसाडीजणी, बलसाडीजवो—कर्म वा० ।

बलसाडियोडी—देखो 'बलसायोडी' (रू भे)

(स्त्री बलसाडियोडी)

बलसाणी, बलसावी—देखो 'बलसाणी, बलसावी' (रू भे)

बलसाणहार, हारी (हारी), बलसाणियो—वि० ।

बलसायोडी—भू० का० कृ० ।

बलसाईजणी, बलसाईजवो—कर्म वा० ।

बलसायोडी—देखो 'बलसायोडी' (रू भे)

(स्त्री बलसायोडी)

बलसावणी, बलसाववी—देखो 'बलसाणी, बलसावी' (रू भे)

बलसावणहार हारी (हारी), बलसावणियो—वि० ।

बलसाविघोडी, बलसावियोडी, बलसाव्योडी—भू० का० कृ० ।

बलसावीजणी, बलसावीजवो—कर्म वा० ।

बलसावियोडी—देखो 'बलसायोडी' (रू भे)

(स्त्री. बलसावियोडी)

बलसियोडी—देखो 'बलसियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बलसियोडी)

बलसूदन—स. पु [स बल+ल्यु-घन] इन्द्र ।

बलहता—स. पु.—इन्द्र ।

बलहट—स. पु [राज. बल=भोजन+स. हट] १ हट पूर्वक कराया जाने वाला भोजन ।

उ०—बलहट देवे 'कुवरसी,' आर्य वरण अदार । पंतीसू राजा कुळी साख-साख सरदार । —कुवरसी सापला री वारता

२ देवडा (चौहान) राजपूतो का विरद ।

३ सोलकी वश की एक दाया व इस दाया का व्यक्ति ।

रू भे—बलहट ।

बलहटमल, बलहटमल्ल—स पु [राज बल+हट+स मल्ल] १ हट पूर्वक भोजन कराने वाला व्यक्ति ।

रू भे—बलहटमल, बलहटमल्ल ।

बलहळ—स स्त्री—चमक, दमक, चमचमाट ।

उ०—कुडळा कान बलहळ करत, सुव कळा लोवडी सिर सोहत । —रामदान लाळस

बलहणी, बलहवी—क्रि अ—बढना ।

उ०—रस वन फळ वोह पाय रसाळी, पुत्रा हेत करे रिगपाळी । वणि ससिवेस रमे माळळ वन, ते बलहती वेल सोन्न तन । —सू प्र

बलहियोडी—भू का कृ —बढा हुआ ।

(स्त्री बलहियोडी)

बलहो—देखो 'बल्लम' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ वेगाह बलजो बलहा, सपत लच्छी सहैत ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाहेल री वात

बल्लां—क्रि. वि —१ ओर, तरफ ।

उ०—१ भिड फौजा गज दहें बळा । निज घोर नगरा । —द. दा

उ०—२ बलबळा जोगण खपर चढवै, सिभं कमळा रग । जग गीत चिहूवै—बळा जाहर, सुजस हुवै सुदग ।

—र ज प्र.

२ दफा, मत्तवा, वार ।

रू. भे.—बळा, बळाई ।

बल्लाणी—देखो 'बल्लाणी' (रू भे)

उ०—दसरावा री डूगली, गणगोरी री सिरपाव, 'बल्लाणी घोडी सलूवरसू भीडर महाराज पावै । —वा. दा ख्यात

बर्णापुरण—देखो 'बलपुरण' (रु. भे.)

उ०—नित बळा अन्नबळ दियण नर ही, बर्णापुरण विरवडी मा
बळापुरण विरवडी । —विरवडी देवी रा छद

बळांमण—स पु—ढग, तरीका, रीति ।

बळा, बला—कि वि—१ श्रीर, तरफ ।

उ०—उठे चयकोट बळा उजवाळ, करे जुष नाह इहा कळिवाळ ।
—सू प्र

उ०—२ किलवाइण चचळ पाय कळा, वध, सोच खडम्भड आठ
बळा । —रा रु

२ बार, दफा, मरतवा ।

उ०— वा दो तीन बळा मासी रे मूडा साम्ही जोयी तो उराने
ऐडी लखायी जाएं उगरी आख्या होठा माथे चिप्योडी व्हे ज्यू ।
—फुलवाडी

१ खलिहान ।

२ अफगानिस्तान का निवासी, अफगान ।

[अ बला] ३ लोभ, लालच ।

४ आसक्ति, मोह ।

५ इश्क, प्रेम ।

६ देसो 'बलय' (रु. भे.) (उ र)

बळाको—स पु [स बल्ल+राज. प्र को] १ एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु
अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान तक लगाया जाने वाला चक्कर,
चक्कर, फेरा, ट्रिप ।

उ०—दीवारणजी नगर री गळिया मे टपाटप बळाका देवण लागा
उण वेळा पूरो सोपो पडचो ही । —फुलवाडी

२ घुमाव, मोड टेढापन ।

३ ऐंठन, मरोड, बट ।

उ०—मछा रा बळाका दीघा सीमोद गनीमा मार्ये, धू हाम तमासे
मुनिद्र रीघा धीर । म्यान हू उखेलताई कीघा खाग तेढीमणै, वंढी-
मणै मेलताई कीघा महावीर । —वद्रीदान लिडियो

४ मोच ।

५ कसक ।

रु. भे—बळाको, भळाको ।

बळानाय—म पु [राज बळा=त्रायली पर्वत+स नाथ] हाडा
गजपूतो की विरुद, उपाधि ।

रु. भे—बळानाय ।

बळाबध—स पु.—अरावली पर्वत का नाम ।

उ०—ले पाए घातिया, मेर माग्य कर वाढे, बळाबध ढढोल, 'कमी'
अळगा हू फाडे । भड तुरण वीणार, चडे माझी गज केनर फीज
लगे फूलिये, दीघ परराठां पस्नर । —गु रु व

रु. भे—बळाबंध ।

बलायत—देसो 'विलायत' (रु. भे.)

उ०—तो बडका दिल्ली तखत, रक्खी पत केइ वार । ते जुय मदत
बलायतां, सह जस कथ ससार । —जंतदान वारहठ

बलारा—स पु [देशज] अनाज सहित कुचले हुए भूसे के ढेर के दोनों
शोर के किनारे ।

बलालो—देखो 'विलालो' (रु. भे.)

उ०—चत लागी जा री हर चरणो, करे न प्रेत भजन अघकार ।
मुकव बलाला अने सेवीयो, सेवू कम बीजा सरदार ।

—किसनजी आढी

(स्त्री बलाली)

बळाव—स पु.—१ दिशा ।

उ०—बळकति खग चहुवे बळाव । सिहरे क जाए वीजा सिळाव ।
—गु रु व

२ खलिहान ।

३ वह भूमि जहा खलिहान बनाया जाता है ।

बळावणो, बळाववो—देखो 'बोळाणो, बोळावो' (रु. भे.)

उ०—तत तरणकइ पिउ पियइ, करहठ ऊगाळेह । भल बरळावो
दीहडा, दई बळावण देह । —ढो मा

बळावळ—देखो 'बळवळ' (रु. भे.)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणिया पधारण, वधारण नवडग घड
करणवा वार । बळावळ वाज ने महारिण वाजियो, साद रणै सिर
साधणो मार । —गोरधन गाटरण

बळावियोडी—देसो 'बोळावियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री बळावियोडी)

बळावो—देसो 'बोळाव' (रु. भे.)

बळाहक—देसो 'बळाहक' (रु. भे.) (मभा)

बळि, बलि—कि वि [स बलति] १ फिर, श्रीर ।

उ०—१ बळि मालवणो वीनवड, हू प्री दामी तुम्ह । का चिता
चित अतरे, सा प्री दाखर मुम्ह । —ढो मा.

उ०—२ पडिउ भीमु आसामिउ राइ गदा लेउ बलि साम्हउ घाइ ।
अरजुनु जा भूमेवा जाड राव सु भीमि रहाविउ ठाइ ।

—प प. च.

२ पुन दुवारा ।

उ०—गढ छडइ गहिलउ हणउ, पूछइ बळि पूछन । मार तरण
संदेमडइ, डोलउ नहु घापन । —ढो मा.

३ इस पर भी ।

उ०—सीह अनइ बलि पाखरयउ, कहू किम जीपणउ जाय ।
—सहज कीरति

४ तब ।

उ०—लहरी सायर-सदिया, वूठठ-सदउ वाव । वीळुडिया साजण
मिळइ, बळि किउ ताढउ ताव । —डो. मा.

५ ओर, तरफ ।

उ०—जातो किण ही न दीठी तेह, फिर पाछो ना' थो बलि गेह ।
—वि. कु.

६ बार, दफा, मर्तवा ।

स स्त्री—१ रेखा, लकीर ।

२ झुरी, सिकुडन ।

३ छप्पय नामक छद का एक भेद जिसमे ४६ गुरु व ५४ लघु
मात्राए होती हैं ।

४ देखो 'बळि' (रू भे)

उ०—सपहुता सज्जण मिळया, हूता मुझ हीयाह । आऊणइ दिन
ऊपरइ, वीजा बळि कीयाह । —डो मा

उ०—२ बळि राजा छलि जैण बाधियो । नमो पराक्रम नारिअण ।
—ह. ना. मा

रू भे—बळि, बलि, बलिय, बळी, बली, बलीय ।

बलित-वि [स.] १ गतिशील ।

२ घूमा हुआ, मुडा हुआ ।

३ गुथा हुआ ।

४ लिपटा हुआ, वेष्टित ।

५ झुरी पडा हुआ ।

बळिभद्र—देखो 'बळभद्र' (रू भे)

उ०—बळिभद्र बघव बघव तेडीयो जी, वीजउ प्रसन कुमार ।
वईद्रभा नयरी वीवाह छइजी, रहीय म लावी वार ।
—रुकमणी मगळ

बलिमधु-स पु—मधुप ।

बळिमुख-स पु [स] वानर, वदर । (डिं. को)

बलिय—१ देखो 'बलि' (रू भे)

उ०—वरतरणा वारु बलिय कमली, पाच भलमलि अति भली ।
थापना चारिज पाच ठवणी मुहुपती पुड पाटली । —स कु.

२ देखो 'बलित' (रू भे.)

बळियोडो-भू का कृ—१ वापस लौटा हुआ, लौट कर गया हुआ,
गया हुआ २ प्रस्थान किया हुआ, गमन किया हुआ ३ लौट
कर आया हुआ ४ घूमा हुआ, फिरा हुआ, चक्कर लगाया हुआ ।

५ घूमा हुआ, मुडा हुआ. ६ बक गति या बल खाकर चला हुआ.
७ आगे बढा हुआ. ८ ढला हुआ. ९ प्राप्त हुआ हुआ, मिला
हुआ. १० आकषित हुआ हुआ. ११ ढका हुआ, लपेटा हुआ.
१२ लौटाया हुआ, दिया हुआ १३ प्रत्युत्तर किया हुआ, उत्तर
दिया हुआ ।

१४ देखो 'बळियोडो' (रू. भे)
(स्त्री. बळियोडी)

बळियोभव-स पु—रेगिस्तान की वह भूमि जिसमें चलते समय
मनुष्य घस जाता है ।

बळियो-स पु—१ समय ।

२ अवसर ।

३ बैलो के सीगो पर लपेटने की रगीन डोरी ।

४ बल खाई हुई कोई वस्तु ।

५ देखो 'बळियो' (रू भे.)

६ देखो 'बळि' (२) (अल्पा., रू. भे.)

बळिराज, बळिराजा, बळिराव—देखो 'बळिराजा' (रू भे.)

बळिहारी, बलिहारी—देखो 'बळिहारी' (रू. भे)

उ०—साग काछि माया मड्या, हरि विचि श्री भारी । जन हरिदास
माया तज, ताकी बळिहारी । —ह पु. वा

बळिवड—देखो 'बळवड' (रू भे.)

बळोड—देखो 'बळोड' (रू भे)

बली-स स्त्री [स] चर्म या चमडी की सिकुडन, झुरी ।

२ पेट के दोनो ओर पेटि के सिकुडने से पडी हुई लकीर ।

३ पक्ति ।

४ रेखा, लकीर ।

५ उत्तराधिकारी, वारिस ।

रू भे—बळि ।

बळी, बली-स स्त्री [देशज] १ पहाड के नीचे की भूमि, लम्बी
भूमि ।

उ०—पवारा री पंतीस साख, त्या माहै एक साख भायला री,
भायला री भायासरी गाव रोहीसी मगरा नीच बळी छं तठे नं
मिवाणचीनू । —नैणसी

२ रेतीले टीवें पर प्राकृतिक रूप से बनी लहरनुमा उभरी रेखाए ।

३ रीढ की हड्डी, मेरूदड ।

४ सीधा रोपा जाने वाला वह काष्ठ का डडा जिस पर धनुषाकार
लकडी रख कर उस पर बैठ कर चक्कर काटा जाता है ।

वि वि—देखो 'चकचूदियो'

५ रुपया-पैसा ।

स पु [अ] ६ वह धर्मिमा श्रीर महात्मा व्यक्ति जो ईश्वर की दृष्टि मे प्रिय श्रीर मान्य हो ।

७ शासक, वादशाह ।

उ०—प्रकवर साह जलालदी, खितवा वली खुदाय । वाजदार कर वदगी, ताजदार हुय जाय । —वा दा

८ हाकिम ।

९ देखो 'वळि' (रू भे.)

उ०—१ एक सुयलध इण्डि अग नउजी, वरग छइ घाठ अभिराम । घाठ उद्देसा छइ वली जी, सख्याता सहस पद ठाम । —वि कु.

उ०—२ अगनि मे वाण छूटा असख, वळी वीठ चिहूँ वळी । पछि वाण हुवी पूठीरुखी, 'गजण' ताम दिल्ली दळा ।—गु रू व

उ०—३ जासक कटक आंपणइ ठामि, गूजराति आवसइ अनामि । करि वीवाह मनि आणी रली, छपन कोडि धन देमइ वली । —का दे प्र

रू भे—वळी, वली ।

वलीग्रयव, वलीग्रहद—स पु [अ वलीग्रहद] १ वादशाह के वाद होने वाला उत्तराधिकारी, वारिस, युवराज ।

२ राजकुमार, शाहजादा ।

३ सतान ।

उ०—पातसाह साजिहानजी र वलीग्रयव सायजादा च्यार हुवा । —द दा.

वळीगण—स पु [स अवलिगण] ताप पर चढाये जाने वाले रसोई के बर्तनों के पेंदे पर लगाया जाने वाला मिट्टी का लेपन ।

वळोट, वळीठ—देखो 'वलिण' (रू. भे.)

उ०—वरु थोय जोयग अवर वाथ, हुवी हव पावुए एरुण हाय । वराचक ढाकिय कोट वळोट, परा थट वीठ उगाडिय पीठ । —गा प्र.

वलीय—देखो 'वळि' (रू भे.)

उ०—वाहण जेह न पाच सँ, वलीय पाचसइ हाट । घर गाकुल पिए पाचसँ तितला सकट सुघाट । —वि कु

वली-वली—देखो 'वळ-वळ' (रू भे.) (उ र)

वळू-वि —१ मददगार, सहायक ।

२ रक्षक ।

३ पक्षका, तरफ का ।

रू. भे—वळू ।

वळे, वले—देखो 'वळ' (रू भे.)

उ०—१ मगळ बुद्ध मयक, वळे सनि सुक ग्रहस्पति । राहु केत रिश अरण, नवँ ग्रह साति करँ नित । —ह र.

उ०—२ श्री हव वळे तक्षक हुय आवँ । पाण हूत तो जाण न पावँ । —सू प्र.

उ०—३ ढोलइ करह चलावियउ, करि सिणुगार अपार । आस्या तउ मिल्हस्या वळे, नरवर कोट जुहार । —ढो मा.

उ०—४ मागी दू वघावणी तोने, पथीडा लाखपसाव हो राज । वले सघ जोता वाटवी, थे तो आवीआज सुणाय हो राज । —राज

उ०—५ आयत इळा अनळ पुड आयत, समद आयता वळे ज सात । लाग्ना तेथ वहचिया लाखँ, वडा वडा जुग रहसँ वात । —महाराणा लासा री गीत

वळेरण—स पु [देशज] छत पर वनी मुढेर ।

वळेवडो—स. पु [देशज] १ ऊट या बँल की गर्दन पर कपदिका गूया हुआ, वाघने का आभूषण ।

उ०—इसा ऊट भेकजे छै, हाथ फेरजँ छै । पीतळ रा गिरवाण रूपे रा फडा छै । ता माहे मोहरा वेळची मोहरा घातजँ छै ल्वा कवडाळा वळेवडा घातजँ छै । —रा. सा स

२ बँलो के दोनो सींगो को लपेटते हुए बाधी जाने वाली डोरी ।

वळँ—क्रि वि.—१ फिर, और ।

उ०—१ सिव नँ सिसहर निलँ सकति नँ सीह चइन्नी । वामण अनियँ वळँ वाच वळराजा दीनी । —गु. रू व.

उ०—२ कुटवा सहेता हुती नाव कीरँ । वळँ पाय रँणा नरी रगघुवीर । —सू प्र

उ०—३ खुशी भेळी एक वळँ गुमी । उच्छव भेळी एक वळँ उच्छव । —फुलवाडी

२ पुन, दुबारा ।

उ०—१ स १६७७ पछै अमरसिधजी सार्यँ गयी । पछै वळँ आय वसियो तरँ लवेरा री पटी दियो । —नँणसी

उ०—२ तरँ सोच घारँ कपी देह त्याग । वळँ आवियो आदि आसोक वाग । —सू प्र

३ पीछै, वाद मे ।

वि—प्रतिरिक्त, अन्य ।

स र्त्री—तरह, भाति, प्रकार ।

रू भे—वळे, वले, वळँ, विळँ वळ, वळे, वने, मळ, मळे, नळँ ।

वळोवळ, वळोवळी—स. पु [राज वळ] भोजन ।

उ०—सामँ भूग्ना सोई, करँ परमात वळोवळ । हापळ कृत उपाधि, मान हाहँ मोताहळ । —राव रिणमन री वान

क्रि. वि — १ चारो तरफ, चहु ओर ।

उ०—१ वाजि घमस ऊडड, वाजि प्रवाळ चहुवळ । द्रोण वाजि है
खुरा, वाजि दळ सोक घळोवळ —सू. प्र.

उ०—२ आगरें तपत सु 'डूगरी' आणता । घळोवळ लिखांणा
जगत वाका । जुहारीसीध का टाळिया जगत मे, डाकुवा रूप रा
सुजस डाका । —बुधजी आसियो

२ जिघर-किघर, यत्र-तत्र, इघर-उघर ।

उ०—तद जाता री सारोई साध भांगो सू घळोवळी मूरा लेय नै
पाप पुनै गया नै कवर स्त्री वीकैजी री वडी फतै हुई । —द दा

३ पृथक-पृथक ।

४ अपने अपने मन से ।

५ पुन पुन, बार-बार ।

उ०—करामति देखि छति 'नीवदे' कळोघर, रळ्या भुज घळोवळ
जितू खाडे । चाळवधै जिफै लडता चापडै, मागवा वाणरी चाळ
भाडै । —दुरगादास राठोड आसकरणोत री गीत

६ निरन्तर, लगातार ।

रू भे.—घळोवळ, वळोवळी, घळोवळ, वळोवळी, वळीवळ, वळीवळी

घळी-स पु — १ अरावली पर्वत ।

उ०—घर हरै पाखरा वाजतै घूघरै, दीह सूभै नही खेहरै डवरै ।
रुधियो घळी रायांसघरै लस्करै, डूगरै घणा श्रीलाडिया डूगरै ।

—द दा.

२ पर्वत श्रेणी ।

३ स्तभ, खम्भा ।

४ वास ।

५ कच्चे मकानो की छाजन के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी,
फडी ।

उ०—खूटा खडा चळा डूचिया, हाला सू हळ ठाटिया । सिरघर
अर सेंतीर साळा, खूड भूण थम, पाटिया । —दमदेव

६ हुधकै की नै के ऊपरी भाग पर लगाया जाने वाला सोने या
चादी का छल्ला ।

रू भे — वळी ।

घळोवळ, घळोवळी — देखी 'वळोवळ' (रू भे)

उ०—१ ग्रीध हळवळ समळ गळळ पळउळ गरा । तिसळ सळ
घळोवळ फळळ हूकळ तुरा । —महादान मेहहू

उ०—२ घळोवळि ऊछळै सोर साहा विठरा, वील जागी विचै
असत वूडे । उडाडै लोह एका सिरै 'अरा' री, 'अरा' रा ऊपरा
लोह ऊडे । —कमा अरावत पडियार री गीत

वल्कल-स पु [स वल्कल] १ वृक्ष की छाल ।

२ उक्त छाल का वस्त्र जिसे ऋषि, मुनि महात्मा, अप्स्यवागो
पहनते थे ।

३ ऋषि मुनि महात्माओं व तपस्वियों के पहनने का वस्त्र ।

४ छिलका ।

५ ऋग्वेद की याष्कन नामक धारा ।

रू भे.—वकल, वकल, वलकल वकल ।

वल्गन-स स्त्री. [स वल्गन-गती] १ घोडे की एक चान जिमें घड़
उछलता कूदता चलता है, दुलनी । (सा ही.)

[स वल्गन], २ उछाल, फलांग, छनाग ।

वल्गा-स. स्त्री [स] लगाम, राग, वाग-घोर ।

रू भे — वल्गा, वल्गा ।

वल्गित-स स्त्री [स वल्गित] १ घोडे की गरपट चान ।

२ ढींग, शोली ।

वल्द-स पु [घ.] पुत्र, तनय, सुत, बेटा ।

वल्दियत-स. स्त्री. [घ] १ पिता के नाम का परिचय ।

२ पुत्र होने की अवस्था या भाव ।

वल्ल-स. पु [स] १ गिलाफ, आवरण ।

२ चादर ।

३ तीन घघची के बराबर की तील ।

४ वर्जन, निषेध ।

५ गमन, चाल ।

वल्लकी-स. स्त्री. [स] १ नारद की वीणा का नाम ।

२ वीणा ।

३ सलई का पेड़ ।

रू भे — वलकी, वल्लकी, वलकी ।

वल्लणो, वल्लयो — देखो 'वळणी, वळवी' (रू भे.)

उ०—सज्जण वल्ले गुण रहे, गुण भी वल्लणहार । सूकण लागी
वेलढी, गया ज सीचणहार । —डो मा

वल्लणहार, हारो (हारो), वल्लणियो — वि० ।

वल्लिओडो, वल्लियोडो, वल्लयोडो — भू० का० क० ।

वल्लीजणो, वल्लीजयो — भाव वा० ।

वल्लभ-वि [स] (स्त्री. वल्लभा) १ प्रिय, प्यारा, स्नेही, प्रेमी ।

उ०—अति वल्लभ तेहने पुत्री इक, जास मदालसा नाम रे ।

रूपे करि जीति जाणै रति, अपछर जिम अभिराम रे । —वि कु

२ सुख प्रद, सुखद ।

उ०—वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सूर कर हुइ सीतळ ।

उण-किरण सिस निस जेम श्रीराम विखम हिम द्रुम विज्जळ ।

—रा रु

३ बाछनीय ।

४ सर्वोपरि, उत्तम ।

५ सुन्दर ।

सं पु—१ पति, स्वामी, प्रियतम ।

२ प्रिय व्यक्ति, प्रेमी ।

३ स्वामि, मालिक ।

४ मित्र, दोस्त ।

५ अध्यक्ष ।

६ पर्यवेक्षक ।

७ प्रधान या मुख्य ग्वाला, गोप ।

८ वैष्णव सम्प्रदाय का एक आचार्य ।

९ सुभ लक्षणो वाला घोडा, अश्व ।

१० पाण्डव पुत्र भीम का एक नाम ।

उ०—दूत लक्षण कला सवि जाणू , मू हरइ हसि राज पराणउ
ए युधिष्ठिर नरेंद्र सूयार, नामि बल्लभ भुजा बलि, सार ।

—सालि सूरि

११ ज्योतिष मे कर्ण ।

रु. भे—बलभ, बलम, बल्लभ, बल्लम, बलभ, बलम, बल्लव,
बल्लह, बल्लहउ, बल्लहु, बल्लह, बल्लहम, बालंभ, बालम, बालिभ ।

बालिभि, बालिम, बाल्हम ।

श्रत्या,—बल्लही, बलही, बलही, बल्लही, बलही, बालमियो ।

बल्लभा—वि स्त्री [स. बल्लभ] प्यारी, प्रिय ।

उ०—'जग रूप' सधू 'जगनाथ-कुळ,' पदमणि किरि सूरज प्रभा ।

बनीती कुलीरा कुरम बडी, परम लछि पती बल्लभा ।

—गु रु. व.

स स्त्री—पत्नी, स्त्री, प्रिया ।

रु. भे—बल्लभा, बल्लहा, बल्लही ।

बल्लभाचार्य—स पु [स बल्लभ-आचार्य] चार वैष्णव सम्प्रदायो मे
से एक सम्प्रदाय के प्रवर्तक ।

रु भे—बल्लभाचारी ।

बल्लव—देखो 'बल्लभ' (रु भे)

उ०—कथ सभर वेड नरेंद्र बही । मन मधिय बल्लव जोद सही ।

—पा प्र

बल्लवसिया—स. पु [स शिवा-बल्लभ] चदन । (श्र मा)

बल्लह, बल्लहउ—देखो 'बल्लभ' (रु भे)

उ०—१ वच्छा । बल्लह तुम तणो, गिरुई रिदि समेउ मासर्म्मि-
तर निच्छइएण, मिलम्यं धरो म वेउ ।

—श्रीपाल रास

उ०—२ ठविउ नेमि जिण्णइ जग बल्लहउ । परमतेजिहि तेजलु ते
कहउ ।

—जयमेखर सूरि

बल्लही—देखो 'बल्लभा' (रु भे.)

उ०—बहु गुणवती गोरडी, कठि विलाइ कत । मम-पाहि तुम
बल्लही, ते कहीइ कुण कत ।

—मा का प्र.

बल्लहु—देखो 'बल्लभ' (रु भे)

उ०—मुभनइ ते श्रति बल्लहु, सदा न तजतु' सगं । ते देसता तुम-
सिउ, रमता न रइइ रग ।

—मा का. प्र.

बल्लही—देखो 'बल्लभ' (श्रत्या, रु भे)

उ०—१ जीव उहा पिजर इहा, हिवडे हूला-हेल । रे परदेमी
बल्लहा, वेल विहूणा फूल ।

—जलाल बूवना री वात

उ०—२ हा । बाधव हा । बल्लहा, हा । मुअ जीवन प्राण ।
पाणी मे पडती थको, इम स्यु थयो अजाण ।

—वि. कु.

बल्लह—प्रव्य [अ] १ ईदवर की शपथ ।

२ सचमुच ।

बल्लियोडी—देखो 'बल्लियोडी' (रु भे)

(स्त्री बल्लियोडी)

बल्ली—स स्त्री [स. बल्लि, बल्ली] १ लता, बल्लरी, बेल ।

उ०—१ सर सरिता सुभ भरी, रसा सुभ करी हरीतन । अण
बल्ली विमतरी, वणं ग्रह वरी दिसा वन ।

—रा रु.

उ०—२ बल्ली तसु बीज भागवत वायी, महि थाणी प्रियु दास
मुअ । मूळ ताल जड अरथ मडहे, सुधिर करणि चडि छाह सुअ ।

—बेलि

२ पृथ्वी ।

३ मिट्टी ।

४ शाल-वृक्ष ।

५ अग्नि-दमयती ।

६ केवटी मोथा ।

७ काली अपराजिता ।

रु भे—बल्लि, बल्ली ।

बल्लुर, बल्लूर—म पु [म बल्लुर, बल्लूर] १ लता कुज, लता मण्डप ।

२ पवन ।

३ मजरी ।

४ अनजुता नेत ।

५ रेगिस्तान ।

६ वीरान जगल, वन ।

७ उपवन ।

[स चल्बूर.] ८ जगली शूकर का मास ।

९ सूखा मास ।

घत्वल—स पु —१ बलराम द्वारा मारा जाने वाला एक दैत्य ।

२ देखो 'वलवल' (रू भे.)

घल्ह घल्हम—देखो 'वल्लम' (रू भे.)

उ०—मानवणी जाण धणुं, मारु माथे सल्ल । पिण ढोली जाण
नही, बीछडीया वे वल्ह । —ढो मा

उ०—२ ये आदर देण कू आणही ऊभा हुआ छै । जेसं कोई और
भी वल्हम हितू थावै छै । त्यो ते ऊभा हुज्यै छै । —वेलि टी

घल्ही—देखो 'वल्लम' (अल्पा, रू. भे.)

घव—स पु [स] ग्यारह करणो मे एक करण जिसमे जन्म लेने वाले
मनुष्य को बलवान, वीर-गभीर और विचक्षण होना माना जाता
है । (फलित ज्योतिष)

रू भे —वव, वव ।

घवकणो, घवकवो—देखो 'भभकणी, भभकवो' (रू भे.)

उ०—१ मेछ तडफड मारका, ग्रीघाण गहककी । पत्र भरै रत
पूरिया वीराण घवककी । —वी मा.

उ०—२ सुण इम वचन सधीर, वीर रणधीर घवकक । मतवाळा
मदमत्त, घोम भ्नाळा घकघकक । —पे रू

उ०—३ माहा ओघगी गनीमा हुता हुचकै नरीद 'माघो' ।
भूचकै भुलोक वाढी चकै कोम भार । वीमगी अरावा भ्नाळ
वंताळ घककै वकै, वांजद्रा 'वाहदरेस' हकै जैण वार ।

—हुकमीचद खिडियो

घवकणहार, हारो (हारो), घवकणियो—वि० ।

घवकियोडो, घवकियोडो, घवकियोडो—भू० का० कृ० ।

घवकीजणो, घवकीजवो—भाव वा० ।

घवड—देखो 'वधू' (मह, रू. भे.)

घवडी—देखो 'वधू' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—म्हारी भे घवडिया सरवणती, आ सासड रँ हुकमा मे चालै
ववडिया सरवणती । —लो गी

घवज—स पु —१ व्यवधान, बाधा ।

उ०—सदेसाहि घवज पडयो, लाध्या परवत दुरघट-वाट । परिदेसा
परि-भूमि गयउ, वीरी जण हन चालइ वाट । —वी दे

२ कारण ।

घवणो, घववो—क्रि अ [स वपनम्] बोवाई होना, बोया जाना ।

उ०—केहर रा नख रघ सूं, गज मोतिया निपात । सूरत कीरत
वेल रा, वीज ववै अघदात । —वा. वा.

घवयण—स पु [स वि-वचन] यण, कीर्ति, प्रशसा । (अ मा.)

घवळाणो, घवळावो—देखो 'वोळाणी, वोळावो' (रू भे.)

उ०—सज्जणिया घवळाई कइ, गउखे चढी लहुक । भरिया नयण
कटोर जयउ, मुंघा हुई डहुक । —ढो. मा.

घवळाणहार, हारो (हारो), घवळाणियो—वि० ।

घवळायोडो—भू० का० कृ० ।

घवळाईजणो, घवळाईजवो—कर्म वा० ।

घवळायोडो—देखो 'वोळायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री घवळायोडो)

घवहाणो, घवहावो—देखो 'वहाणी, वहावो' (रू भे.)

उ०—घवहाय घणी घण रग वही, सेखराव पडियो समर ।
दोलत्तिइ पाव तजि गो जदिन, गगाराव घरियो गुमर । —सू. प्र

घवहायोडो—देखो 'वहायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री घवहायोडो)

घवहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

घवहाररासि—स. पु —जीवाणु समूह का एक अणु ।

उ०—किमइ निगोदइ जीव नीसरइ, घवहाररासि ते जाई नय
वरइ । असख सइर तणउ करइ सहार, जीवह जीव करइ आहार ।

—वस्तिग

घवाण—देखो 'विमान' (रू भे.)

उ०—'माले' वेस ववाणा माई, क्रीत जुगा ताई कहलोत । अपछर
परण गयो इकदाई, गळवाई कीदा गहलोत । —महादान मेहइ

घवासीर—देखो 'ववासीर' (रू भे.)

घसग—देखो 'वासुकि' (रू भे.)

उ०—इद्र वज्ज है एक कडक सारी घर धूजै । गुरड एक घसग
अनेक पस आपाण न पूजै । —पा प्र

घसत—स पु [स] १ पट ऋतुओ मे प्रथम एव प्रमुख मौसम जिसका
समय चंद्र व वैशाख मास हाता है ।

वि वि—इस मौसम के आगमन के पूर्व पेठ पोषो के सब पत्ते
झड जाते हैं । और सारी वनस्पती पुन फलने-फूलने लगती है ।
इसलिये यह ऋतुओ का राजा माना है । यह शिक्षिर और ग्रीष्म
के बीच का मौसम है, जो अत्यन्त सुहावना होता है ।

२ मूर्तिमान ऋतु जो कामदेव का सखा माना है ।

३ सगीत मे छै रागो मे से दूसरा राग ।

उ०—कीजइ अवसरि अवसरि नवरसि रागु वसत । तरुणी दल
दोलारस सारस भमइ हसत ।

—जयसेखर सूरि

४ एक ताल । (सगीत)

५ माघ सुदी पचमी को आने वाला पर्व ।

वि. वि.—इस दिन से इस ऋतु का प्रारम्भ माना जाता है ।

६ फूलों का गुच्छा ।

७ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—अनेक एक पेखियति, रूप मे विरत्त ए । वसंत पट्टण विसाळ, जोति मे नखत्त ए । —गु रू व.

८ अतिसार रोग ।

९ शीतला या चेचक की बीमारी ।

१० मसूरिका नामक रोग ।

११ पीला रंग । (हिं को)

रू. भे.—वसत, वासंत ।

अल्पा.—वसतडो, वसती ।

वसतजा—स स्त्री [स] १ वासन्ती या माघवी लता ।

२ सफेद जूही ।

३ वसन्तोत्सव ।

वसतडो—वि —१ वसने वाला, रहने वाला ।

उ०—अेकइ वनि वसतडड, एवड अतर काइ । सीह कवड्डी नह लहइ, गइवर लखिख विकाइ । —अ. वचनिका

२ देखो 'वसत' (अल्पा, रू. भे)

वसततिलक—स पु [स] १ वसत का आभूषण ।

२ देखो 'वसततिलक' (रू. भे)

वसततिलका—स पु [स. वसततिलक, वसततिलका, वसततिलकं] चौदह वर्यों का एक छन्द जिसके, प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, जगण भगण और दो गुरु होते हैं ।

रू. भे —वसततिलक ।

वसतदूत—स पु [स] १ कोयल ।

२ चैत्र मास ।

३ आम का वृक्ष ।

४ पचम राग ।

वसतदूती—स. स्त्री. [स] १ कोयल ।

२ पाडर वृक्ष ।

३ माघवी लता ।

वसतपचमी, वसतपाचम, वसतपांचिम—स. स्त्री [स. वसतपचमी] माघ शुक्ला पचमी, माघ मास के शुक्ल पक्ष की पचमी, इस दिन वसत तथा रति सहित कामदेव की पूजा करने का विधान है ।

उ०—प्रथमादि आग वसतपाचिम, राग फाग परोखिये । हित घाम-घाम घमाळ सुए ह्य, उरघ भीमळ ईगिये । —रा रू

वि. वि.—आज कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है ।

रू. भे.—वसतपचमी, वसतपाचम, वसतपाचिम, वसतपांचिमी, वसतपाचम, वस्तपाचम ।

वसतवधु—स. पु. [स] कामदेव ।

वसतभरवी—स. स्त्री. [स.] एक रागिनी का नाम । (सगीत)

वसतमारु—स. पु.—सब शुद्ध स्वरो का सपूर्ण जाति का एक राग ।

(मगीत)

वसतमालतीरस—देखो 'सुवरण-मालिनी-वसत' (बंधक)

वसतरत—देखो 'वसतरितु' (रू. भे)

उ०—मचियी रसवीर वसंतरत मातो, त्रवघ पवन पोह गोळा तीर ।

कुसुम पात तर जठे 'कूसळ' हर, गहरापण कीषी गजगीर ।

—अभैराम महीपारियी

वसतरमण, वसतरमणि, वसतरमणी—स. पु —एक छंद (गीत) विशेष

जिसके प्रथम चरण मे १६ मात्राएँ होती हैं तथा शेष तीनों चरणों मे १६-१६ मात्राएँ होती हैं तथा अत भगण आता है । इसकी तुकात मिलती है ।

उ०—१ आद पाय उगणीस मत, बीजी सोळ वग्याण । अत भगण जिण गीत न, वसतरमणि वखाण । —र. ज. प्र.

उ०—२ कर कर आद मे हिंक नगण सुभकर, धुर उगणीस मत नहचै धर । वे लघु होय तुकत वरावर, सुसवद राम कहै मळ सुंदर । गीत वसतरमण किंव गावत, सोळह पद-प्रत मात सुभावत

—र. ज. प्र.

रू. भे.—वसतरमणी ।

वसतरित, वसतरितु—देखो 'वसत' (१)

उ०—ऊपर तिठा वसतरित आई, सीत वितीत हुई अमुहाई । सोभे अ्रव आद तर सारा, वर्यौ नीत जिम प्रज चा वारा । —रा रू.

रू. भे —वसतरितु, वसतरत ।

वसतवाक—स पु. [म वसतवाक्] मगीत दामोदर के चौदह तालों में से एक ।

वसतसख, वसतसपा—स. पु [स वगत मय] कामदेव का एक नाम ।

वसति, वसती—वि [स वसन्ती] १ वसत ऋतु का, वसत ऋतु सम्बन्धी ।

२ वसत ऋतु मे होने वाला, चलने वाला ।

उ०—अवा डार कोयलिया वीले, बहत वसती बयार मा । कुज-बुज रमराज दपत जहा, भवरन ज्यू मिळ डोले ।

—रमोले राजरा गीत

३ वसती (गीले) रंग का ।

म स्त्री —१ वसत ऋतु की देवी, सरस्वती ।

उ०—दस मास समापित गरभ दीघ रित, मन व्यापुळ मधुकर मुराणति । कठिण वेगणि कोकिल मिमि तूजति, वनमपनी प्रमवनी पसति । —वेनि

२ सरसो के फूल के समान हल्का पीला रंग ।

३ जूही ।

रू भे —वसती, वासती ।

वसतोत्सव—स पु [स] १ वसतपचमी के दिन मनाया जाने वाला एक उत्सव ।

२ प्राचीन काल में वसतपचमी के दूसरे दिन मनाया जाने वाला एक महोत्सव ।

३ होली का उत्सव ।

वसतो—देखो 'वसत' (अल्पा, रू भे)

उ०—खैलें अति ही उलसती, बालभ विनु कैसी वसती हो लाल ।
—घ. व अ

वसधरा—देखो 'वसुधरा' (रू. भे)

उ०—असुराण आण मिटसी इळा, सुर वध पाण वसधरा ।
नवकोट नाथ निसचो निजर, डर धारो हरि ऊपरा । —रा रू

वसभर—देखो 'विश्वभर' (रू भे)

उ०—भीर म्हैं जका भीरू वसभर, गाज कुण सकै 'जसवत'
रा गाव । राव एक थाप ऊथापीया रडमला, रडमला पुडवडी
राखीया राव ।
—दुरसी आढी

वस-वि. [स वश] १ नियन्त्रण या काबू में आया हुआ, अधीनस्थ ।

२ आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी ।

३ विनम्र ।

४ किसी किसी प्रकार के जादू-टोने के प्रभाव में आया हुआ, वशीभूत ।

मुहा—वस में होणो=काबू में होना, अधिकार में होना, मुग्ध होना, मोहित होना, मोहजाल में फंसना, अमित होना ।

स. पु. [स वश] १ अभिलाषा, कामना सकल्प, इच्छा चाह ।

२ नियन्त्रण, काबू, अस्त्यार ।

उ०—वस राखी जीभ कहै इम 'बाको', कहवा बोल्या प्रमत किसी ।

लोह तणी तरवार न लागै, जीभ तणी तरवार जिसी ।—बा दा

३ किसी विषय या बात को अपने अनुकूल घटित करने की सामर्थ्य, शक्ति ।

४ प्रभाव, प्रभुत्व, धाक ।

५ पहुँच ।

६ गति, वेग । (अ मा)

मुहा—१ वस चालणो=स्थिति काबू में होना ।

२ वस में होणो=कोई कार्य अपने अधिकार-क्षेत्र में होना ।

३ वस री बात=वह स्थिति जहा पर अपनी पहुँच हो, प्रभाव हो ।

७ उदपत्ति, जन्म ।

८ रडियो का चकला, रडी खाना ।

९ देखो 'विस' (रू. भे)

रू भे —वस, वसि ।

वसविक, वसख—देखो 'विसिख' (रू भे.) (ह ना मा.)

उ०—वसविक भवविक वळवके सार । घावा मिळ तिमर घोर
अघार ।
—गु रू व.

वसट-अव्य [स वपट्] यज्ञो में अग्नि में आहुति देते समय उच्चारण किया जाने वाला एक शब्द ।

वसटकार-स. पु [स वपट्कार] १ उक्त शब्द उच्चारण करने वाला व्यक्ति ।

१ एक देवता ।

३ देवताओं के उद्देश्य से किया जाने वाला यज्ञ ।

वसटक्रत-वि [स वपट्कृत] हवन किया हुआ, होमा हुआ, हुत ।

वसटक्रत्य-स पु [स वपट्कृत्य] हवन, यज्ञ, होम ।

वसण—१ देखो 'वसन' (रू भे)

उ०—१ खघ वसण रण हाथ खग, घोडा ऊपर गेह, घर रखवाळी
विन घरण, गिणै न त्रण सम देह ।
—जैतदान वारहूठ

उ०—२ आज भगडा ऊपर जावता भेस करियो छै—कुसुम फूला
री मोड अनै वसण कपडा रगिया है ।
—बी स टी

२ देखो 'वसण' (रू भे)

वसणो—१ देखो 'वसणो' (रू भे)

२ देखो 'वसन' (अल्पा, रू भे)

वसणो, वसवो—देखो 'वसणो, वसवो' (रू भे) (उ र)

उ०—१ हसतो नप देखे सिध हसियो । विअम ताम नपति उर
वसियो ।
—सू प्र

उ०—२ पेड दिये अममेद रा, मरे खडग ची मोच । अछराँ वाहडियो
गळै, वसै विमरणा बीच ।
—बा दा

उ०—३ समत १६११ अमरसिधजी साथी गयी । पछै समत १६—
१६ वळै वसियो । काठमी पटै ।
—नैणसी

उ०—४ जिरौं देसे सज्जण वसइ, तिणि दिसि वज्जउ वाउ । उआ
लगै मो लगसी, ऊ ही लाखपसाउ ।
—ढो मा

उ०—५ पवन चदनगघ हरावतउ, वदनि वासि वसइ द्विसी
वासतु ।
—शालि धूरि

वसणहार, हारो, (हारी), वसणियो - वि० ।

वसिओडो, वसियोडा, वस्योडो—भू० का० कृ० ।

वसोजणो, वसोजवो—भाव वा० ।

वसत—देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—१ रत घृति चदरा कपूर, सभै समसाण सभाई । विविध
श्रमित सुचि वसत चेहृगि निमति चलाई । —रा रु

उ०—२ वराक कहै आवै वसत, कै कूढे कै गूण । चेळै पडै सो
होय सुघ, सैभर पडै स लूण । —बा दा

उ०—३ इतरी वसत कनक घट आणौ । सपुट दियै कियै सहनाणौ ।
बाळजती पतिवरता वेवै । सपत निसा जाग्रण करि सेवै ।
—सू. प्र

२ देखो 'वस्र' (रु. भे)

वसतपांचम—देखो 'वसतपांचमी' (रु. भे)

वसतर—देखो 'वस्र' (रु. भे) (प्र. मा., ह ना मा)

उ०—पीढै ताम उठावै ऊपरि । केसर चदण भीण वसतर करि ।
—सू प्र

वसति, वसती—स स्त्री [स वसित्व] १ अष्ट सिद्धियों मे से एक जिससे
सब को वश मे करने की शक्ति आजाती है । (डि को)

२ देखो 'वस्ती' (रु. भे)

उ०—१ श्रोपी आढी कहै ईसवर, नित राखूं चित थारो नाम ।
तूं छती माय देवण सुख तूही, रणा तरणी वसती तू राम ।
—श्रोपी आढी

उ०—२ वसती माय मिळी नही वासी, खरच पला री खासी ।
साणण सैण सीरवी सुख रा, जीव हेकली जासी ।

—भीखजी रतनू

उ०—३ ऊडा जळ सूकै अवस, नीली वन जळ ज्याय । चुगल-तरणा
पग फेरसूं, वसती ऊजड ज्याय । —बा दा

उ०—४ ऊग्यो इव अफीम, नीमरी रूख निरोगी । वसती होड
हकीम, नीमडी जगम जोगी । —दसदेव

वसतु—देखो 'वस्तु' (रु. भे)

उ०—ताखी, ताव तमाम, पीनणी भर पुसलाई । नैडी थैडी तरणी
जाळ वसतुवा वण्णई । —दसदेव

वसती—देखो 'वसती' (रु. भे)

वसत्त—१ देखो 'वस्तु' (रु. भे)

उ०—हुता सज्जण-हीयडे, सयणा हदा हत्त । जउ सोहणौ साचइ
होमइ, मोहणौ बडी वसत्त । —ढो मा

२ देखो 'वस्र' (रु. भे.)

उ०—करै वणिज्ज एक हट्ट, रूप सक्कलत्त ए । सान्ना चीतार
मुक्कमल्ल, रसमी वसत्त ए । —गु रु व.

वसत्र—देखो 'वस्र' (रु. भे.)

उ०—आमी वसत्र सेत तन भासत, वसन लाल खिन्नणो सुवासत
—र ज प्र

वसदे—१ देखो 'वसुदेव' (रु. भे.)

२ देखो 'वासदे' (रु. भे)

वसदेराव—देखो 'वसुदेव' (रु. भे)

वसदेव—देखो 'वसुदेव' (रु. भे)

उ०—१ सेत अस्व सुमद्रेस करण सत्र । सखा तास वसदेव सुत ।
—ह. ना. मा.

उ०—२ धन वसदेव तरणै गरधारी, जमदग रै धर फरस जपै ।
सकर रै गणपत सारीखी, दूजी 'फतमल' असो दपै ।
—मेगराज आढी

२ देखो 'वासदेव' (रु. भे)

उ०—रुइ ध्रत पूछ लपेट कर, वसदेव जगाया । देता का एवास
सव, जद आग जळाया । —कैसोदास गाडण

वसधा—देखो 'वसुधा' (रु. भे)

उ०—वड पह वहुआर भुजि कुळिभार, धर सिणगार तपै लखधीर ।
विलसण गजवाज कुंभर सकाज, वसधा राज करै धरवीर ।
—स पि.

वसधापत, वसधापति—देखो 'वसुधापति' (रु. भे.)

उ०—'जगतेस' फवज्ज प्रवधु करै, भुव कपित भार दिगीस हरै ।
मन आन महीपन के प्रजरे, किन पं वसधापति कोप करै ।
—वा. रा.

वसन—स पु [स वसन] १ वस्र, कपडा, परिधान । (प्र. मा, ह ना
मा.)

उ०—१ भूटि भूंविण्य महीतलि रोली । काठिवा वसन कीध ।
हीयाली —सालि सूरि

उ०—२ तन स्याम अबुद रूप तडिता, वसन पीत विचार । वासत्र
पीत विचार सरवर, धनुष सायक धार । —र. ज. प्र.

२ कफन ।

३ आवरण, गिलाफ, आच्छादन ।

४ स्त्रियों के कमर में धारण करने का एक आभूषण, करधनी ।
रु. भे — वसना ।

५ देखो 'विस्तु' (रु. भे)

६ देखो 'वसण' (रु. भे)

रु. भे — वसण, वसन, वसन्न, वसण, वसन्न, वासत्र ।

अल्पा—वमणी, धमणी ।

वसनस—म. पु. [स वसनसा] स्नायु, रग, नाडी ।

वसना—देखो 'वसन' (३) (रु. भे.)

वसन्न—देखो 'वसन' (रु. भे)

उ०—वर्ण सागळी गात भीर्ण वसन्नं । तिसी भूखणे जोत मोती रतन्नं । —रा रू

वसमगत, वसमगति—देखो 'विसमगति' (रू भे.)

उ०—हीर्ण घारीया खान जुवान छवती नहग, अवर नर वीसरै तण अछभा । वसमगत देख 'जसराज' खग वाहर्त, रही रथ साह गजगाह रभा । —महाराजा जसवतसिंह री गीत

वसरामणो, वसरामवो—१ देखो 'विसरामणो, विसरामवो' (रू. भे.)

उ०—वडो सूर दातार रायसीग वसरामियो, वडण कुण वड वडो घडा वरसी । कुजरा तणी मोताज करसी कमण, कमण कोडा तणी रीक करसी । —दुरसो आढो

२ देखो 'विस्रामणो, विस्रामवो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसराणो, विसरावो' (रू. भे.)

वसरामियोडो—१ देखो 'विसरामियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'विस्रामियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'विसरायोडो'

(स्त्री वसरामियोडो)

वसराळ—देखो 'विसराळ' (रू. भे.)

उ०—त्रवक वाग वसराळ गंणाग जग आतसा, खाग दावायता आव खूटी । लाय वूदी तगत लयता लगाई, आग जैपुर नगर जाग ऊटी । —दुरजणसिंह री गीत

वसव—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—सरखी कमद वरी सायजादी, गार नार पड जना सगार । वसव ऊपरं येक वखाणा, माणं बीजे सुरग मकार । —मेसदास आढो

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

उ०—वसव छांडे भुजग, गग, ऊलट वहावे, कहावे वेद कुण साच करसी । लख दीया 'भीम' आखर जकं गुपावे, ऊदे रव न थावे वीया 'अरसी' । —जवानजी आढो

वसवान—देखो वसीवान' (रू. भे.)

उ०—१ घर डुल्लिय परिभार, पहूमि वसवान उचल्लिय । हल मिल्लिय परि जोर, सेस अहि फन पर सल्लिय । —ला रा

उ०—२ सुतण दासरथ रूप लसवान कौटक समर, समर जसवान त्रप, सियासामी । तवता नाम नसवान अथ भव तणा, भव तणा हिया वसवान भामी । —र. ज. प्र.

वसामध—स पु.—पाटल नामक वृक्ष । (अ. भा.)

वि वि—देखो पाडळ'

वसा—स स्त्री [स वशा] १ श्रौत, नारी, स्त्री ।

२ पत्नी, भार्या, जोरू ।

३ लडो, पुत्री ।

४ पति की वहन, ननद ।

५ वध्या स्त्री ।

६ गी, गाय ।

७ बाभगी ।

८ हथिनी ।

[स वशा] ९ भेद । (हि को)

१०—चरवी, मास ।

११ मस्तिष्क ।

रू. भे.—वसा ।

वसाकेतु—स पु [स] पश्चिम मे उदय होने वाला एक धूम केतु, तारक-पुंज ।

वसाडणो, वसाडवो—देखो 'वसाणो, वसावो' (रू. भे.)

उ०—जादम जाडा वजिया, 'रामो' न ऊदल्ल । विच सुरपुरा वसाडिया, अछरा तणा महल्ल । —रा रू

वसाडणहार, हारो (हारो) वसाडणियो—वि० ।

वसाडणोडो, वसाडियोडो, वसाडयोडो—भू० का० कृ० ।

वसाडोजणो, वसाडोजवो—कर्म वा० ।

वसाडियोडो—देखो 'वसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वसाडियोडो)

वसाणो, वसावो—देखो 'वसाणो, वसावो' (रू. भे.)

वसाणहार, हारो (हारो), वसाणियो—वि० ।

वसायोडो—भू० का० कृ० ।

वसाइजणो वसाइजवो—कर्म वा० ।

वसायोडो—देखो 'वसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वसायोडो)

वसारेळ—स पु [स वसु=पृथ्वी+राज रेळ=तरवतर] इद्र ।

उ०—घटा वाध चमराळ पगराळ फोजा वसण, दुजड तडिताळ छिबभाल दखतो । आण अणगाळ री गिरा अणजियो, वैरिया काळ वसारेळ 'वसतो' । —करणीदान कवियो

वसाळ—स पु—भेद ।

उ०—ढोलइ करह विमासियउ, देखे वीस वसाळ । ऊचे थळइ ज एकलो, वच्चाळइ एवाळ । —ढो मा

वसाव, वसावट—देखो 'वसाव' (रू. भे.)

उ०—नस महल न पोडे प्रसण नचीता, वमरे गिरै वसाव कीया । वस तणी ऊडाव बीडरे, सीमोदा बक रास कीया ।

—मेपजी वारहठ

वसावणो, वसाववो—देखो 'वसाणो, वसावो' (रू. भे.)

उ०—१ मुलक वसावणहार, चिणावै चेजा भारी । हुँडा पडवा
साळ, भखारी भीत तिबारी । —दसदेव

उ०—२ घर आणण माहे घणा, त्रास पडिया ताव । जुघ आणण
सोहे जिणे, वालम वास वसाव । —वा दा.

यसावणहार, हारी (हारी), वसावणियो—वि० ।

वसावियोडो, वसावियोडो, वसावियोडो—भू० का० कृ० ।

वसावोजणो, वसावोजवो—कर्म वा० ।

वसावियोडो—देखो 'वसायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वसावियोडो)

वसाह—स पु—नगर या शहर के चौहटे का नाम । (सभा)

वसि—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

२ देखो 'वस' (रू. भे.)

उ०—अगथीया चदन घुओ, देह माहारानि कसि । प्रत्यक्ष जूथी
पारख, विसघर जेरिण बहु वसि । —नळाख्यान

वसितव, वसिता—देखो 'वसित्व' (रू. भे.) (ना. मा)

वसितागाथा—स स्त्री—गाथा छद का एक भेद जिसमे आठ गुरु व ४१
लघु होते हैं । (पिंगल सिरोमणि)

वसित्व—स पु [स. वसित्व] १ वशता, अधीनता ।

२ एक प्रकार की सिद्धि ।

रू. भे.—वसितव, वसिता, वसीता ।

वसिमा—देखो 'वसि' (रू. भे.)

वसियकरण—देखो 'वसीकरण' (रू. भे.)

उ०—मूरति तोरी हो दिल चोरी नइ रहीं, वसियकरण कियो
कोइ । रग दिखालइ हो रालइ जे दुख आपयो, ते गुण रसिया
जोइ । —वि कु

वसिया—देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

वसियोडो—देखो वसियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वसियोडो)

वसिष्ठ, वसिष्ठ—स पु. [स वसिष्ठ] १ एक प्रचीन एव प्रसिद्ध ऋषि,
जो स्वयंभुव मन्वतर मे उत्पन्न हुए ब्रह्मा के दम मानसपुत्रो मे
से एक माना जाता है ।

उ०—१ होता प्रभु करना जग हरता, कहता गुर वसिष्ठ जिम
करता । धरि गुर वचन वचन पित धारं, प्रभु सिय जुत वनवाम
पधारं । —सू प्र

उ०—२ वसिष्ठ भादि ब्रह्मय, वरत जातक्रमय । हळइ कुकम हरी,
करत छोह केसरी । —सू प्र

वि. वि—वसिष्ठ नामक सुविख्यात ब्राह्मण वश का मूल पुरप भी
इसे ही माना जाता है एव यही वश त्रयोध्या के वैदिक-कालीन
सूर्यवशी (इशवाकु वशी) राजाओं का सदियो तक पौराहित्य करता
रहा था । इन्हें ही ऋग्वेद के सातवें मंडल के रचयिता माना जाता
है ।

२ एक स्मृतिकार ऋषि ।

३ एक ऋषि जो भरतवशीय सम्राट रतिदेव साकृत्य का पुरोहित
था ।

४ रैवत मन्वतर का एक ऋषि ।

५ सार्वणि मन्वतर का एक ऋषि ।

६ आद देव का प्रोहित एक ऋषि ।

७ सप्तपि मंडल का एक तारा ।

८ आठवा वेद व्यास, जिसे इन्द्र ने ब्रह्माड पुराण सिखाया था ।

९ एक शिल्प शास्त्रज्ञ ।

१० अगस्त्य ऋषि का छोटा भाई विदेह-राज निमि का प्रोहित था ।

रू. भे.—वसिष्ठ, वसीठ, वासिष्ठ, वासिष्ठ, वसीठ ।

वसिष्ठपुराण—स. पु [स वसिष्ठपुराण] एक उपपुराण, जिसे लिंग
पुराण भी मानते हैं ।

वसी—स पु [सं. वसि] १ गृह, घर, निवासस्थान । (अ. मा)

उ०—आया वसियां आपणों, ग्रीखम थई वतीत । १७३९ गुण
चाळी लागो वरस, चाळी सरस सजीत । —रा रू.

२ वस्त्र ।

[स वस्य] ३ नौकर, चाकर, दास, अनुचर (परिग्रह)

उ०—१ रावळ नू डूंगरपुर नेडीहीज ठीड पाघर मे वताई तठे ऐ
आपरा गाडा आण वसी सूषा छोडिया । —नैणसी

उ०—२ ताहरा एक दिन ऐ चढन घूघरोट रा पाहवा माहे राव
मालदेजी री वसी हुती, तिकं नू वध कीवी । —नैणसी

५ जागीरदारो द्वारा लिया जाने वाला कर विशेष जो प्रजा की
रक्षा करने के कारण लिया जाता था ।

६ वह व्यक्ति जो जागीरदार का विशेष कृपा पात्र होता था और
सभी प्रकार के कर व लागो से मुक्त होता था ।

उ०—हुवं वसी री वाणियो, पातर हुयै खवास । हुवं कीमियागार
ठग, निध हर जावं नास । —वा. दा.

वि वि—उक्त कृपा व स्वतन्त्रता के साथ ही इसे जागीरदार की
इच्छा का हर वक्त ध्यान रखना पडता था ।

७ वसने के लिये दी जाने वाली जागीरी, स्थान ।

उ०—सहसी तेजसी वरनिध जोघारत री पोत्री मेढतीयो वास
राखीयो थो तिणनु रोया वसी नुं दीनी थो ।

—राय मासदे री बात

८ नियाम ।

उ०—जंतो जोगपुर चाकरी करै । कूपी सोभन चाकरी करै । सु
जंतै री घसी वगडी माहँ । सु वगडी वीरमदं रं वाटं मे आई ।

—नैणसी

[म. वशि] ८ अधिकार, कवजा ।

६ अधीनता ।

१० मनमोहकता ।

वि—१ वसाया हुआ, २ आकर वसा हुआ, ३ वश मे रहने
वाला ।

रू भे.—वमि, वसी, वस्सी, वसि ।

वसीकर-वि [स वशीकर] १ वश मे करने वाला ।

उ०—मथ घसीकर महली, वाणी वोयलियाह । कुरजडिया गरदन
कहू, कठा कोयलियाह ।

—पा प्र

२ मोहित करने वाला, मुग्ध करने वाला ।

रू भे—वसीकर ।

वसीकरण, वसीकरणि-स पु [स वशीकरण] १ वश में करने की
क्रिया या भाव ।

२ एक मन्त्र, जिसके प्रयोग से किसी को वश मे किया जा सकता
है । (तन्त्र)

३ अष्ट सिद्धियो मे से एक सिद्धि । (ह ना मा)

४ कामदेव के पाच बाणो मे से एक ।

उ०—आकरसण, वसीकरण उनमादक, परठि द्रविण सोवण सर
पच । चितवण हमण लसण गति सकुचण, सुंदरी द्वारि देहरा
सच ।

—वेलि

५ वश मे करने का कोई साधन ।

उ०—वाजिन्तर गय वसीकरण बीजा सहु अकयथ्य । जिण चड्या
दळ उत्तरइ, तरणि पसारइ हृथ्य ।

—व स

उ०—२ रसायनप्रयोगरसिक, प्रदरसितवलयलित, वसीकरणि अमूढ
लक्ष खडी ।

—व स

रू भे.—वसीकरण, वसियकरण ।

वसीका-स स्त्री [अ वसिका] अंगर की लरुडी ।

वसीको-वि [अ वसिक] १ धून्य, रहित ।

२ रीता, खाली ।

[अ वसीक] ३ पेशान पाने वाला ।

[स पु] (१) ऋण पत्र । (२) दस्तावेज । (३) इकरार
नामा ।

४ सरकारी खजाने मे जमा कराया जाने वाला धन जिसका सूद
जमा कराने वाले के सम्बन्धियो को मिलता है ।

रू भे—वसीको ।

वसीकृत-वि [स वशीकृत] १ मोहित, मुग्ध ।

२ वश मे किया हुआ ।

वसीटाळू—देखो 'विस्टाळू' (रू भे)

वसीटाळी—१ देखो 'विस्टाळी' (रू भे)

२ देखो 'विस्टाळू' (रू भे)

वसीट्टी-स. पु.—१ दूत ।

उ०—पचे मिलि वात पतीठी, परगच्छी हुआ वसीट्टी ।

—कविकनक सोम

२ देखो 'वसीठी' (रू भे)

वसीठ-स. पु—१ सदेशवाहक, दूत ।

उ०—हे सखी म्हारै पती कोई जोधार नें मारण री इच्छा न
होवै तद उरणें उर छाती मे भाला री वूडी दे अटकावै-रोकै-पण
काळ तो उठा सू प्राण लेण नें वसीठ दूत भेज देवै ।

—बी स टी.

३ राज दूत ।

४ देखो 'वसिष्ठ' (रू भे.)

रू भे—वसीठ ।

वसीठी-स स्त्री—१ वसीठ का कार्य ।

२ सदेश लाने-लेजाने का कार्य ।

रू भे—वसीठी, वसीट्टी ।

वसीता—देखो 'वसित्व' (रू भे)

वसीतुनीर-स पु.—तीर, बाण । (अ. मा)

वसीभूत-वि [स वशीभूत] १ वश मे या कावू मे किया हुआ, निय
त्रित, अधीन ।

२ दूसरो की इच्छा के अधीन रहने वाला ।

३ मोहित, मुग्ध ।

रू भे.—वसीभूत ।

वसीयत-स स्त्री [अ.] १ विदेश गमन या मरणासन्न व्यक्ति द्वारा
अपनी सम्पत्ति के विभाग उपयोग के लिये की जाने वाली
व्यवस्था ।

२ मरणासन्न व्यक्ति का अपनी सम्पत्ति के व्यय एव प्रबंध के
लिए अंतिम आदेश, निर्देश ।

३ मरने वाले का अंतिम कथन ।

४ सम्पत्ति की व्यवस्था के लिये लिखा जाने वाला दस्तावेज ।

रू भे—वसीयत ।

वसीयतनामो-स पु [अ वसीयतनाम] १ अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था
के लिये लिखा जाने वाला कानूनी दस्तावेज ।

२ इच्छा-पत्र ।

सोरी-स पु. [स. सिच क्षरणे-+क्त=श्रवसिक्त या शीकृ सेचने-+क्त
=श्रवशीकित। भागुरी के मत से श्र का लोप सिक्त अथवा
शिकित=वसीकी=वसीरी] प्रजा ।

उ०—१ राव सुरताण रै वसीरा रजपूता रा गाव छै, तिणा
ऊपर फौज १ पैलीजै ज्यू रजपूत जुदा जुदा विखर जाय, पछै
सुरताण नू कूट मारिस्या । —नैणसी

उ०—२ चौपदौ घण । सो ईया री घण लोका रा खेत खावै ।
वसीरा लोकारा खेत ऊभा खाईजै । सु लोक वसीरी भाखरसी आगै
नित-प्रत पुकार धालै । —नैणसी

वसीली-स. पु. [फा वसील] १ आश्रय, सहारा ।

उ०—सावळ सत तरणी सुण सामी, ढळवळ सहज न धारै ढील ।
वचन वसीला तरणी वसीली, वढ दरवारा तरणी वकील ।
—श्रीपो आढी

२ सम्बन्ध, लगाव ।

३ साधन, जरिया, माध्यम ।

उ०—अग असीला हो लाल, तुफ नइ दीठा आणदा । मुगति
वसीला हो लाल, समता सुरतरु कदा । —वि. कु.

४ उपकरण ।

५ विचौलिया ।

रू. भे —वसीली ।

वसीवान-वि. [स वसि-+प्र वत्] १ बसने वाला, निवास करने, वाला,
निवासी ।

२ वश परम्परा के अनुसार जो स्थायी रूप से निवास करता हो ।

रू. भे —वसीवान, वसवान, वसवान ।

वसुधरा-स. स्त्री. [स] पृथ्वी, भूमि ।

उ०—एक तीन वसत निभाइयो विनायक, पवन-पाणी-वसुधरा ।
—लो गी

रू. भे —वसदरा, वसधरा, वसुधरा, वसधरा, वसुधर, वसुधरा ।

वसु-स. पु [स] १ धन, दौलत, द्रव्य । (अने)

२ प्रकाश, तेज ।

३ देवता, सुर ।

४ रत्न ।

५ स्वर्ण, सोना ।

६ एक ही श्रेणी के आठ देवताओं का एक गण (समूह)

उ०—तहा वेदपाठी आहारा विधिपूरवक मय-वळ करि प्रह्लादि
रिखीस्वर इद्र आदि देवता अठसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु,
अष्ट परवत दसो दिग्पाल आदि सै आवाहन करि आहुति कर
प्रसन्न किया । —सिंघासण वत्तीमी

वि वि —आठ देवताओं के नाम इस प्रकार है —आप (अह),
ध्रुव, सोम, घग् या घव, अनिल, अनल, प्रत्युप और प्रभास ।
७ कुवेर । (ह ना. मा)

(८) इन्द्र । (९) मेघ, बादल । (ना. हि. को.) (१०) सूर्य ।
(११) विष्णु । (१२) शिव, रुद्र । (१३) जल, पानी । (१४) वायु ।
(१५) प्रजापति । (१६) तालाव, सरोवर । (१७) मरुद्गण ।
(१८) पदार्थ, वस्तु । (१९) लवण विशेष । (२०) अगस्त्य
का वृक्ष । (२१) वक-वृक्ष । (२२) छप्पय छन्द का एक भेद
जिसमें ३ गुरु व १४६ लघु होते हैं । (२३) साधु पुरुष, सज्जन ।
(२४) अधिकार, कब्जा, वश । (२५) आठ की सख्या । (१४
(हि. को) (२६) दीप्ति, चमक । (अनेका) (२७) अग्नि,
आग । (अ) (२८) किरण, रश्मि । (२९) पृथ्वी, धरती ।

उ०—कछव कछवाह वासी पलट करै किम, वसु-ह चौं माड विह
भडा वार्म । —मिरजा राजा जयसिंह री गीत
(३०) उपा । (३१) अश्वी । (३२) इन्द्र की अमरा-
पुरी । (३३) कुवेर की अलका पुरी । (३४) अमरा-
पुरी व अलका पुरी मे बहने वाली एक नदी । (३५) दक्ष
प्रजापति की कन्या का नाम । (३६) मौलश्री । (३७)
वृद्धि नामक औषधि, जड़ी । (३८) लगाम, रास बागडोर ।
वि —१ जो सव मे निवास करता हो ।

२ जिसमे सबका निवास हो ।

३ अधीन, अवलम्बित ।

क्रि वि —अधिकार मे, कब्जे मे, अधीन ।

उ०—माल-वित सारो सभाळनै हाथ वसु कियो । —नैणसी
रू. भे —वसु, वसू, विसू, वसुह, वसू ।

वसुचरण-स पु —डगण के चतुर्थ भेद का नाम, इसमे आदि गुरु, फिर
दो लघु (Ja) होते हैं ।

वसुद-स पु. [स वसु-+प्र द] १ विष्णु । २ कुवेर ।

वसुदरम-स पु. [स वसुधर्म] इन्द्र ।

रू. भे —वसुदरम ।

वसुवा—देतो वसुधा' (रू. भे.)

उ०—'जुजा' सुतन जमायो जगरी, मयहा ऊपर इसी सधीर ।
वसुवा संग वळा नै वादै, वादै वळी तोनै नर वीर ।

—ठाकुर उंदरसिंह री गीत

यमुदेव-स पु [स] श्रीकृष्ण के पिता एव यदुवशियों के राजा ।

(ह. ना. मा)

उ०—अगळा वाळत एक, अरज कळ ऊनी घटै । टाचर ध्रुव
री टेक, तै राणी वसुदेव तण । —गमनाथ कवियो

रू भे—वसुदेव, वसुदेव, वसदे, वसदेव ।

वसुधर, वसुधरा—देखो 'वसुधरा' (रू भे.) (डि ना मा, ना मा.)

वसुधान, वसुधा—स स्त्री [स वसुधा] पृथ्वी, धरती, धरा । (अ मा, डि को, डि ना. मा, ना डि को, ना मा, ह. ना मा)

उ०—१ हिचै मरै खळ हात, खगधारा कुळ खोवणा । सूर्प हेकरा साथ, सिर वित धर वसुधा सुजस । —वा. दा.

उ०—२ दत देता घन माणता, जगि सुणता जसवास । वसुधा इण पर वौळिया, नव कोटी षट-मास । —गु रू. व

रू भे.—वसुदा, वसुधा, विसुधा, वसधा, वसुध्या, वसुह, वसुहा, वसूधा ।

वसुधाधर—स पु [स] १ विष्णु ।

२ शेषनाग ।

३ पर्वत ।

वसुधाधिप, वसुधाधिपति—देखो 'वसुधापति' (रू. भे)

वसुधाधोख—स पु. [स वसुधाधुक्] पानी, जल । (अ. मा)

वसुधापति—स पु —राजा, नृप ।

रू भे—वसुधाधिप, वसधापत, वसधापति, वसुधाधिप, वसुधाधिपति ।

वसुधारा—स. स्त्री. [स] १ कुवेर की राजधानी, अलकापुरी ।

२ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

३ जैनों की एक देवि, शक्ति ।

वसुधेश—स. पु. [स. वसुधा+ईश] १ ईश्वर ।

२ राजा, नृप ।

रू. भे—वसुधेश ।

वसुध्या—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—वसुध्या वट्ट । पैमाळ पहट्ट । गोवूळ गरद् । पालै गय-मद् । —गु रू व.

वसुधय—स पु —डगण के चतुर्थ भेद का नाम । (र. ज प्र)

वसुधसून—स. पु [स विसप्रसून] १ कमल ।

रू. भे—वसुधसून ।

वसुधता, वसुधति, वसुधती, वसुधती—स स्त्री [स. वसुधति] पृथ्वी, धरती । (डि ना मा, ना मा., ह. ना मा)

उ०—१ डारण समर अडोल, मारण चढ्यो मैवासिया । तिए कारण खग तोल, बोल उवारण वसुधती ।

—प्रतापसिंघ म्होकर्मसिंह री बात

उ०—२ रजनीचरण करन निरमूळहि, सारदूळ चढि गहिय तिसूळहि । अगपति चलिय हलिय वसुधती, स्त्रीकरनी जयजयति

सकती ।

—मे. म

रू. भे.—वसुधति, वसुधती, वसुधती ।

वसुधेता—स पु [स वसुधेतस्] १ अग्नि ।

२ शिव ।

वसुधेती—स. पु —शिव ।

वसुह—१ देखो 'वसु' (रू भे)

उ०—जिम धायो जोगेस, वसुह दिख ज्याग विदुसण । जिम धायो ग्रह बाण, पत्य गी ग्रह छाडावण । —गु रू. व.

२ देखो 'वसु' (२६) (रू भे) (ना. मा.)

उ०—परचड पराक्रम दाववे, पित्त वीवने पच दिन । 'गजसाह' वसुह राखी पग, डहे भुज्ज डिगिया गिगन । —गु. रू व.

वसुहा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—१ बामा देवीउ अर सुत्ति मजुल मुत्ताहल । सयल कलावलि कलिकाय कलिमलि वसुहा हल । —स कु

उ०—२ वसुहां वर वड वीर धीर दुज्जणजण गजण, सुमट पणइ सुरताण स्त्रीय महिमूद मनरजण । —व स

वसूलौ—देखो 'वसूली' (रू भे)

वसू—देखो 'वसु' (रू भे) (अ मा, ना मा., ह. ना मा)

उ०—१ वडी विपत सह वीर, वडी क्रीत खाटी वसू । धरम-धुरधर धीर, पोरस धिनी प्रतापसी । —दुरसी आढी

उ०—२ धुजा फरक्की घूहडा, बहरक्की गज वोह । वसू धरक्की कावली, मुरधर छक्की मोह । —किसोरदान बारहठ

उ०—३ पछै पताई रावळ रै साळी सइयी वाकलियो तिकै री वडी मामली, वडी इतवार गढी री कूची तै वसू । —नैणसी

उ०—४ कटोरा माहे फूल लीजे छै । वाकरा होसनाका वसू कीजे छै । —रा सा. स

उ०—५ तिए कारण मरवी भली रे, तिरसारत इण ठाम । पिण न हुवा तेह ना वसू रे, लोक वदे सह आम । —वि कु

उ०—६ मुरधर सखीधार, लियो लोहा बळि ईडर । वसू लाख छतीस, पूठि कलोज वडी धर । —गु रू व

वसुधा—देखो 'वसुधा' (रू भे)

उ०—वसुधा प्रगट दीसती वेस्या, भूकै भूप भुजग सु भूठ । —घ. व. अ

वसुधसून—देखो 'वसुधसून' (रू भे) (अ. मा)

वसुधती—देखो 'वसुधती' (रू भे.) (अ मा)

वसूल—वि. [अ] १ वसूलौ करने पर जो प्राप्त हुआ हो, जो लिया गया हो, 'लब्ध' ।

२ जो व्यव या श्रम के प्रति फल में मिला हो ।

स पु.—१ आय, प्राप्ति ।

२ प्राप्ति की रकम ।

बसूली—स स्त्री [अ.] १ बसूल करने या जगाही करने की क्रिया या भाव ।

२ लोगो से प्राप्य घन लेकर एकत्र करने की क्रिया या भाव ।

वि.—जो बसूल के लिये हो ।

रू भे —बसूली, बसोली ।

बसुली—स पु [स वासि] १ लकड़ी छीलने का, बढई का एक औजार ।

उ०—रदोही होवें मती, मती बसुली मित्त । होवें करवत सारिसी, वाटरण-पाटरण वित्त । —अज्ञात

२ इंट काटने का एक औजार विशेष ।

रू भे.—बसूली, बसेली, बसोली, बायली, बासोली, बाहोली, भसाली, भासोली, भोयली, भौहली बसूली, बसोली, बायली, बासोली, बाहोली, बासूली ।

अल्पा.—बसूली, बसोली, बासोली, बाहोली, बायली, बासोली ।

बसेक, बसेख—देखो 'बसेस' (रू भे)

उ०—१ पावूजी अर हरियो थोरी असवार हुयन सगदिया देने कोळू आया । ताहरा बसेक हुवा । —नैणसी

उ०—२ दुवार हे मरब दास, जे बसेख दुज्जय । अतीत ग्रेह तप्य आय, प्रीत हूत पुज्जय । —सू प्र.

बसेखी—देखो 'बसेस' (अल्पा, रू भे)

उ०—मुजरी छै पारख मरदा री, वीरत अग यत्रवाट बसेखी । आया खग भटका ईसर सु दिय दिय बटका देखी । —पहाडवा आढी

बसेरी—देखो 'बसेरी' (रू भे)

बसेस—देखो 'बसेस' (रू, भे)

उ०—प्रिव माळवणी परहर, हाल्यठ पुगळ देस । ढोला म्हा विच भोकळा, वासा घणा बसेस । —ढो मा

उ०—सकारा चुरसा थारा जाणीयो जेहान सारा वाखाणीयो छत्र घारा जोडरा बसेस । आडवरा भडाळा सावरा साज ओछा-डीया, अगाछाळा वागंवरा पूजीया महेश । —करणजी मईयारीयो

बसोप—स पु [स विशिखा] राजमार्ग, राजपथ, आमरास्ता ।

उ०—बाजार हाट वाटा बसोख, इण भात दान द्रव ओपत अनोख । हिम मणि जटत मव ग्रह होय, पुर अवर वताओ जोड कोय । —शि रू

बसोली—देखो 'बसूली' (रू भे)

बसो—क्रि वि.—१ बैसा, तैसा ।

उ०—आप पोडिया था सो हू ती म्हारे मन री सुसी सूं जसी दरसाव देखियो बसो कहियो । —कुवरसी साखला री वारता

२ लिये, निमित्त, हेतु ।

बस्त—स. पु. [स वस्त, वस्त] १ वासा, डेरा ।

२ गमन ।

३ मागना क्रिया ।

४ घायल करना, मारना क्रिया ।

५ नाभि के नीचे का हिस्सा, मूत्राशय ।

६ परवस्ती, कृपा ।

उ०—अतरजामी, तु अछे हो लाल, वाल्हेसर सुवीदीत जि० । साहिव बस्त तिका करो हो लाल, जिण करि करि भावे चीत जि० ।

—वि. कु

[स. वस्त] ७ बकरा ।

[अ] ८ बीच का भाग, मध्य ।

९ देखो 'वस्तु' (रू भे)

उ०—१ जन हरिदास मन गहि पवन ग्रह्य अगनि विसवन दही । अगम वस्त अतरि अग्रह तहा उनमनि लागा रही । —ह. पु. वा

उ०—२ मिळता राण घरं महाराजा, ऊछत्र प्रगटं मिटं अकाजा । जिती वस्त नित अत्रत जोडा, राजं नव नवभांत रसोडा ।

—रा रू

उ०—३ घणी प्रीति सू, अविजाजी आपणा हाथ सू पूजि । जु वस्त आपणा मन नइ प्यारी थी । सु वस्त अपणी हाथि की । पूजा की फळ हाथि आयी । —वेलि टी.

उ०—४ जे नगर माहइ दानसाला, पौसघसाला, घरमसाला, गढ मदिन प्रकार, चुरासी चुहुटाणी हटनेणी, माहइ वस्त संपूरण वरतइ ।

—च स.

उ०—५ सचा बस्त अनेकी तणा, का न रहइ मननी कामिणा । ऊचा तीरण महल अनेक, एक-एक थी अधिका एक ।

—प. च ची

वस्तपाचम—देखो 'वमतपचमी' (रू भे)

वस्तर—देखो 'वस्त्र' (रू भे)

उ०—घर घर ग्वालन दही विलोवै, कर कगन बनकारं । वस्तर भूमण तन पर घारी, पगिया पेच सवारं । —मीरा

वस्तवत—वि [स वस्तु-वत्] जा वस्तुओ से भरपूर हो, वस्तुओ से परिपूर्ण, वस्तु युक्त, सामग्री युक्त ।

उ०—वन ते जे वसवत, नदी ते जे नीरवत, कटक ते जे वीरवत, देस ते जे प्रजावत, प्रामाद ते जे घ्वजावत, वाट ते जे सूयवत, हाट

ते जे वस्तवत, वचन ते जे सत्यवत अस्य ते जे विनयवत, प्रधान ते जे बुद्धिवत, राजा ते जे न्यायवत, तिम घरम ते जे दयावत ।

—व. स

वस्ति—स स्त्री [स वस्ति] १ निवास, ठहराव ।

- २ नाभि के नीचे का पेट का भाग ।
- ३ कोख ।
- ४ मूत्राशय ।
- ५ पिचकारी ।
- ६ योग की एक क्रिया जिसमें उदर-शुद्धि होती है ।

उ०—नाभि प्रमाण सु वारि मे, उत्कट आसन लाय । नळि दे गुद सकोच कर, वारि उदर ले जाय । कर सुनोळि फिर त्याग दे, यह ही वस्ति कहाय । वात पित्त कफ जन्य जे, गुल्मादिक गद जाय ।

—स्वामी नारायणदास

रू भे —वसति, वसती, वसती, वस्ति, वस्ती, वस्ती ।

७ देखो 'वस्ती' (रू भे)

वस्तिकरम—स पु. [स वस्ति-कर्म] १ पिचकारी देने की क्रिया ।

- २ पेट की आतें साफ करने या रेचन करने के लिये गुदा मार्ग से पानी चढाने की क्रिया (एनिमा) ।
- ३ उदर शुद्धि के लिये की जाने वाली योग-साधना ।
- रू भे —वस्तिकरम ।

वस्तिमळ—स. पु [स वस्ति-मल] पेशाब, मूत्र ।

रू. भे.—वस्तिमळ ।

वस्ती—१ देखो 'वस्ती' (रू भे)

उ०—बडी साहिबी हुती । तद सँहर वस्ती घणी हुती । हमे ही जेतारण सारीखी सहर वसे छे । मुदो वस्ती रो वाणिया ऊपर छे ।

—नैरासी

२ देखो 'वस्ति' (रू भे)

वस्तु—स स्त्री [स] १ वह चीज या पदार्थ जिसका अस्तित्व ही, सत्ता हो, जिसको देखा व छुआ जा सकता हो, जो अपनी वास्तविकता रगता हो ।

- २ मारधान चीज, घन, दीलत ।
- ३ साधन व सामग्री जिसमें कोई चीज बनती हो ।
- ४ सार, तथ्य ।
- ५ खाका, ढाचा ।
- ६ श्रम द्वारा निमित्त कोई चीज ।
- ७ विषय-वस्तु जिम पर चाद-विवाद व विचार विमर्श किया जा सकता है ।

८ किमी नाटक की कथावस्तु, कथानक ।

रू. भे —वसत, वस्त, वस्तु, वुसत, वुस्त, वत्थु, वसत, वमत्तु, वसत्त

वस्त, वुसत, वुस्त ।

अल्पा.—वसतडी ।

वस्तुनिरदेस—स. पु. [स वस्तु-निर्देश] नाटक के मगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दिया जाता है ।

वस्ती—देखो 'वस्ती' (रू. भे.)

वस्य—स पु. [स वश्य] १ अनुचर, नौकर, दास ।

२ देखो 'वस्या' (रू भे)

उ०—कहिन वहिन बाईं कुरा नई एह जाई, करिन मझ पसाईं ताहरउ हउ जिभाई । कहइ हिव सुद्रस्या वस्य देवग त्रस्या, मझ तणी ए सिलिंद्री स्त्रीसमाणी पुरिंद्री । —सालिसूरि

वस्यकरम—स पु [स वस्यकर्म] ७२ कलाश्रो मे से एक ।

वस्या—स. स्त्री. [स वश्या] आज्ञा कारिणी स्त्री ।

रू भे —वस्य ।

वस्त्र—स. पु [स] १ ऊन, रई, रेशम आदि के धागो से बुन कर बनाया हुआ कपडा जो अनेक प्रकार से उपयोग में आता है । (उ. र.)

२ शरीर पर धारण करने का कपडा, पोशाक, परिधान । (उ. र.)

रू भे —वसत्र, वस्तर, वस्त्र, वसत, वसतर, वसत्त, वसत्र, वस्तर ।

अल्पा,—वासती, वासत्यो, वास्ती ।

वस्त्रकार—स पु. [स] १ वस्त्रो के आगार का अधिकारी ।

उ०—उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार, करणीकार रसकार क्षीरकार सस्यकार वस्त्रकार विभूषणकार, पुतार, अस्वसिक्षाकार, रथकार । —व. स.

२ वस्त्रो का व्यापारी, वजाज ।

वस्त्रगाठ, वस्त्रगाठि—स. स्त्री [स वस्त्र ग्रथि] ३ कपडे की गाठ, बडल । (उ. र.)

वस्त्रगोपना—स पु —१ वस्त्रो की रक्षा ।

२ स्त्रियों की ६४ कलाश्रो मे से एक ।

वस्त्रपरिधायक—वि [स] वस्त्र धारण कराने वाला, पहनाने वाला ।

उ०—गज वैद्य, वृत्रिवायक, वहीवायक, आचायक, त्रिहायक अग्ररक्षक चलक वस्त्रपरिधायक, काठिया लोहटिया —व. स.

वस्त्रागार—स पु [स वस्त्र-आगार] १ वह स्थान, मकान या कक्ष जहाँ कई प्रकार के बहुत से वस्त्र ही, वस्त्र भण्डार ।

२ घर का वह कक्ष जहाँ पहनने के कपडे रहते हैं (ड्रेसिंग रूम)

वहग—देखो 'विहग' (रू भे)

उ०—रग रळां दहू नमे अढग मे जगन रण, कमव अणभग ऊळ-रग कीधी । सोहीयो पलग जग हूचें वांटेत मुत, दुगम उतवग वहग त्याग दीधी । —ठाकुर जोगीदास रो गीत

बहंगपत बहंगपति—देखो 'बिहंगपति' (रू. भे)

उ०—थाळ सारण न खेग सख बज पलग थत, बहंगपत न पूगो चाल वासं । हाल उगो लगा नहंग छवती हरी, पाल अरघग गयी मतग पासं ।
—हुकमीचद गिडियो

बहंगराज, बहंगराजा—देखो 'बिहंगराज' (रू) भे'

उ०—१ पतग ऊगतं रहै थाकै बहंगराज पंथ, जाय गग वमुह खाय नहंग भाली । सेस घर तजै पथ भजै वागा समर, देगग डगै ती चगी 'दोली'
—नाथजी वारहठ

उ०—२ राहा सकाजा अळग सग्र दौड भे बहंगराजा । ताव तेज भौड में नहंग राजा तास । रूप रग घाट थाट देख रीकै रावराजा, वाग माहाराजा असो मौजीयो ब्रहास ।
—हुकमीचद बिडियो

बहडणो, बहडवो—देखो 'बिहडणी, बिहडवो' (रू भे)

उ०—जद वारग कहै 'जोगावत', घडा बहड सुरलोक गयी, मह जोघा सळखा रडमाळा, कमदा कुळ ऊजळी कियो ।
—हटैसिंग पातावत रो गीत

बहडणहार, हारी (हारी), बहडणियो—वि० ।

बहडिओडी, बहडियोडी, बहडयोडी—भू० का० क० ।

बहडोजणो, बहडोजवो—कर्म वा० ।

बहडियोडी—देखो 'बिहडियोडी' (रू भे)

(स्त्री. बहडियोडी)

बहत—स पु [स बहन्त] १ हवा, पवन । (२) वच्चा ।

बह—सर्व [स बह.] कर्तृ कारक प्रथम पुरुष सवनाम जो किसी सदर्थ का अनुमान देता है ।

स पु [स बह] १ परोक्ष या दूर की वस्तुओं का संकेत करने का एक निर्देशकारक शब्द ।

२ समर्थन, सहमति ।

३ लेजाने की क्रिया ।

४ वाहन, सवारी ।

५ घोडा ।

६ हवा, पवन ।

७ मार्ग, सडक ।

८ नद ।

९ वेल का कघा ।

१० कघा, स्फघ ।

११ चार द्रोण भर का एक नाप ।

१२ देखो 'बाह' (रू भे)

उ०—हरामचोरा नू नैडा आधण देवो । जाहारा तीर बह माहे भासी, ताहारा म्है हुंकारी करसा ।
—राजा नरसिंघ रो वात

रू. भे.—बह, वहै ।

बहकणी, बहकवो—देखो 'बहकणी, बहकवो' (रू भे)

उ०—मंच अति मच तणी रचना हई । स्वरगपुरी तणी सोभा लई । ध्वज पताका लहकई, पुष्प परिमल बहकई नाचई पात्र ।
राजभवन आवई अक्षत पात्र ।
—बाग्विलास

बहचरा, बहचराय—देखो 'बहचराय' (रू भे)

उ०—बहीचरा देवी अरथ कुक्कटबहणी लोक बहचरा कहै ।
—वा दा स्यात

बहजावणो, बहजाववो—देखो 'बजाणी, बजावो' (रू भे)

उ०—रामण इद्रजीत खर दूखर, गजै कूण गिणारै । खात लगै केता खळ खाघा, बळ दात बहजावै ।
—र. ज प्र

बहण—वि —१ वार करने वाला, मारने वाला ।

२ चलने वाला, गमन करने वाला ।

उ०—उड्डि महाभर कघ, भार भलपण सव्वाहै । वेगट वामी बहण प्रथी प्राप्ती पति साहै ।
—गु. रू. वं.

३ धारण करने वाला ।

स पु [स बहन] १ वाहन, सवारी ।

२ रथ ।

उ०—जाय जोगण बद जाजा, प्रजुण वन्ही करै प्राजा । बहण आवघ होम बाजा, रुपि दरजा रोस ।
—र. रू.

३ नाव नौका ।

उ०—बहण पोत (भव महण लघावण, तरण उदय हरि नाम तराज) ।
—ह. ना. मा.

४ नदी, सरिता ।

उ०—जुग जवदा जोझ्या जिम बहण वहाई । —केमोदाम गाडण

५ समय । (अ. मा.)

६ वार, प्रहार ।

७ चाल, गति ।

८ देखो 'बहन' (रू भे)

९ भे—बहण, बहणी ।

बहणी—स स्त्री —१ चलने की क्रिया या भाव ।

२ आचार-व्यवहार, चाल-चलन ।

३ वर्ताव ।

४ तेज चलने वाली, घीघ्र गामी ।

५ चाल, गति ।

६ बहने की क्रिया या भाव ।

रू. भे—बहणी, बहनि, बहनी, बह्णिण, बहणी ।

बहणी—वि. [म बह.] (स्त्री बहणी) १ चलने वाला, गतिशील ।

२ घूमने वाला, टहलने वाला, विचरण करने वाला ।

उ०—भार अठारा पसरि न पोखै, नभ वहणि पवन धरती नहिं सोखै । निरभै भया भरम सब भागा, ल्यो की डोरी उनमनि लागा ।

—ह० पु वा

३ तेज चाल वाला ।

४ वहने वाला ।

वहणी, वहबी—कि अ [स वहन] १ चलकर कही जाना, गमन करना, चलना, किसी की ओर निरन्तर चलना ।

उ०—१ धवल न अटकै घुर वहै, कासू पाणी कीच । इण री जननी तारही, वंतरणी रं वीच ।

—वा दा

उ०—२ मारवणी मनि रगि, वाटइ तिरिण आवी वहइ । कुम्भी एकणि सग, तालि चरती दिहिया ।

—ढो मा

उ०—३ वायक वामाना सुणी, आकासमारगि अणसरी । वेगि वही नि तं गयु रं हस नलरानी पुरी ।

—नळाख्यान

उ०—४ वहै क वाज पत्यए, अकास मं क रत्यए । सीरम साह नस्सहै, विवाण उहिया वहै ।

—गु रू. व.

२ पास से गुजरना, निकट से होकर चलना ।

३ द्रव्य पदार्थ या पानी का धारा रूप में वहना, प्रवाहित होना ।

उ०—तठे समुद्र माहै पैठा । पैस अर एक वडो पाटली तिरिण ऊपर भाणेज नू बैसाण अर पाटला नू धकाय अर वह तैपाणी माहै वहाय दियो ।

—नैणसी

मुहा—वहती गगा मे हाथ धोया—अवसर का लाभ उठाना, सहज मे ही कार्य साधना, अवसरानुसार परोपकार करना ।

४ ऊक्त प्रकार की धारा के साथ वहना, प्रवाहित होना ।

उ०—ऊमळ नौर पताळा एहा, जळनिध प्रबळ घटा घण जेहा । राजा दास कुसळहु घट रहिया, वैरी सकळ सुजळ महि चहिया ।

—सू प्र.

५ इधर-उधर घूमना, भटकना ।

६ गतिमान होना ।

७ घूमना, मडराना ।

उ०—१ रहियो रवि कौतिग ताण रत्य, सिव सुरा कोडि तेतीस सत्य । अपछर विवाण ऊपरि वहत, हुय औसर नारद हड हडत ।

—गु रू व.

उ०—२ वहै क वाज पत्य ए अकास मं क रत्य ए । सीरम साह नस्स है, विवाण उहिया वहै ।

—गु रू व

८ आचरण करना ।

उ०—रहणी एकण रग, वहणी वीरत ढग विच । सदा स्याम धम सग, ताहरै अग 'प्रतापसी' ।

—जैतदान वारहठ

६ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चल पडना ।

उ०—प्रचडै गोळं नाळ प्रचड, वहतै हिकपियो ग्रहमड । जुटत घुरम अनै जिहगोर, तिडा फिरि अवर उहूँ तीर ।

—गु रू व.

१० गोली, तीर आदि का छूटना, निकलना ।

११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन करना ।

१२ कीर्ति या विरुद धारण करना ।

१३ स्वाभिमान व अभिमान रचना ।

उ०—नलै जाण्यु 'हू जीतीस सही, ए अरम हारवा आव्यु अही । कहि 'भालण' 'अभिमान ज वहि, परि काल तणी गति की नवि लहि ।

—नळाख्यान

१४ घुसना, घसना ।

उ०—कह्यो—'यही' । यूँ कही नै राव बीजी कानी जोयो । तरं लाडक राव नू पाछा सू अटकी वाहो । राव रं मोरं लागो । घणी बूहो । सु राव लाडक नू गावड मू भालनै नीचं दियो । —नैणसी

उ०—जावता एकं जायगा अरहट वहतौ दीठो तेथ आया । आय अर घोडा पाया । घोडा रा मुह छाटिया । हाथ धोया । आख्या छाटी अर अमल कियो । पंणी पियो ।

—नैणसी

[स वह्.] १६ प्रचलित होना, फैलना ।

१७ भरना, टपकना ।

उ०—पटा वहत मद् ऐ, (कि) धरा में जळद ऐ । नेजा वरक फन्न ऐ (सु) ताड त्रिकल पन्न ऐ ।

—गु रू. व

१८ खेत में अनाज बोया जाना ।

उ०—मुहारा रं खडीण री उनाव जंसळमेर सू कोस ६ तथा ७ दिखण नू वडी ठोड कोस ५ माहै उनाव भरीजं । पाखती रा भाखरा री पाणी आवं । माहै गोहूँ मण ५००० बीज वहै तितरी भोग अखं । पाणी निठे जदी वेरा माहै २० तथा २५ वयायोडा, पाणी घणी मोठी

—नैणसी

[स वध] १९ शस्त्र प्रहार होना, आघात होना, वार होना ।

उ०—१ वाहै खग 'केहर' रोस वघत, वकी खग 'केहर' सीस वहत । फिरं खळ गेहरिया जिम फाग, खिवं घण 'केहरिया' पर खाग ।

—सू प्र

उ०—२ सग्राम खडग वाहत सनड्ड, वपे पळ तडळ ऊखळ वड्ड । वडै जरदंत जडाळ वहति, तुटत गडा फिरि सात्रिण तति ।

—गु रू व

२० वीर गति प्राप्त होना ।

उ०—वारा दुहा अभिनमै वीरम, कायर नह जिम कीध किता ।

वहि दुरवेम दुरग कीयी वसि, दीन्हो बहियँ दुरबेसा ।

—दूदी वारहठ

२१ उछलना ।

उ०—विपरीत विस्सम घात, किरि वाण वच्चहे पात । वरजाण वृग वहति, किरि अगिग द्रस्टि हुवति । —गु रू. व.

२२ वध करना, मारना, समाप्त करना ।

उ०—कृग्र पयपै 'केहरि', करि मोसु रिणताळ । 'गोइद हूतो साधि मी, मं बूहो 'पोपाळ' । —गु रू. व.

उ०—२ ऊघम किर राळं घर अदर, वाग असोक लागडै वानर । दहुवै जुवा भडा खळ बहिया, बीरोचन अमर दळ बहिया ।

—सू प्र.

उ०—३ केवी भरडै वाहि कटारी, केवी दिम उठियो कहै । वळं किरिणी रा पिता वहे तू, वळं किरिणी रा चचा वहे ।

—राठीड भरडा वूडावत री गीत

उ०—४ वळ थियो दित हरणाक्ष्य अग्रवळ, तेज मीहर घर रसातळ ताम । ग्रहम पुकार रघुपत करण मुख कहै । गरुडधुज विप धाम 'गिड, प्रळय जळ मग गध सुघ पड । आण घरघर देत अणघट, विकट अर वहे । —र ज प्र

२३ प्रहार करना, वार करना, आघात करना ।

२४ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन करना, धारण करना ।

२५ धारण करना ।

उ०—हु निज बीती हो बात सी दासव जी, जाणउ छउ जिनराय । तारक विरुद ही बहियइ आपणो जी, वाह ग्रह्यानी लाज । —वि. कु

२६ लाद कर ले जाना, डोना ।

उ०—करणाराइ आपणो जीभइ घोडउ वाध्यउ, विक्रमादित्य काग खाघउ पुण अजरामर न हुउ, नलिराइ रसोइ पची, हरिस्वद चाडाल तणइ धरि पाणी बह्यउ, पुरुसरामि जननीवधु कीघउ । —व स

बहणहार, हारी (हारी), बहणियो—वि० ।

बहिघोडो, बहियोडो, बहघोडो—भू० का० कु० ।

बहीजणो, बहीजबो—भाव वा०/कमं वा० ।

बहणो, बहवो, बहवणी, बहववो, बुवणो, बुववो, बुहणो, बुहवो, बूहणो, बूहवो, बे'णो बे'वो, बेवणी, बेववो, बँ'णो, बँ'वो, बँवणी बँववो, बँहणो, बँहवो, बहणो, बहवो, बे'णो, बे'वो, बँ'णो, बँ'वो, बँवणी, बँववो—रू० भे० ।

बहत—स. पु [स बहत] १ यात्री ।

२ बेल ।

रू भे—बहत, बहत्त ।

बहतिक—१ देखो 'बहिक' (रू भे.) (ह. ना. मा.)

देखो 'बोहित' (रू भे)

बहतीवाण—स पु—१ सीमा मे होकर चलने का महसूल ।

उ०—बीकानेर रँ देस था वहे तिएणूँ ६० ॥१॥ देस मे बहतीवाण नूँ लागे । घोडे १ दीठ ६० ४ बहतीवाण कारवान नै लागे सरब ६० १५००० री ङोड वरस १ री तुलावट विकरी । —नैणसी २ देखो 'बँतियाण' ।

बहत्तर, बहत्तरि—देखो 'बगोत्तर' (रू भे)

उ०—पातिसाह अजमेर, आप आयो गुडि पकलरि, सतरिखान खीटिया अन उवरा (व) बहत्तरि । —गु रू व.

बहन्नक—देखो 'बहिक' (रू भे)

बहद—देखो 'बेहद' (रू भे)

उ०—है वह हीर्य सेल थारो हद, बहद लटक पच वगत । लोह जसो दूखे नह लागी, अण लागी दूखे अखत । —सगराम सादू

बहन—स पु. [स.] १ ग्रहण करने या धारण करने की क्रिया या भाव २ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी सम्भालने की क्रिया या भाव ।

३ भार या बोझा लादकर लेजाने या ढोने की क्रिया ।

४ सवारी ।

५ नाव या वेडा ।

६ ध्वजा ।

७ तबे के नी भागो मे से सब से नीचे वाला भाग (वास्तुकला)

८ देखो 'बह्लि' (रू भे) (ना डि फो.)

९ देखो 'बहन' (रू भे.)

रू भे—बहण, बहन, बहण ।

बहनट—देखो 'बहनट' (रू भे.)

बहनि, बहनी—१ देखो 'बहणी' (रू भे)

२ देखो 'बहन्य' (रू भे)

उ०—जिएण नप बहनि मुजाव कृतजय । जिएण मुजाव नरेस रणजय —सू. प्र.

३ देखो 'बह्लि' (रू भे) (प्र मा., ह ना मा.)

उ०—अठजाट नाद वँराट आज, घट्ट जाणिए दूजो घडे । घरनाळ काळ गोळा बहनि, प्रळं काळ छोळा पडे । —नू. प्र

बहनीसिता—देखो 'बह्लिसित' (रू भे) (प्र मा.)

बहन्न, बहन्नि—१ देखो 'बह्लि' (रू भे)

उ०—१ फपि जेम सुदिद पड तीख वन्न । बाजिन्न जेम कन्ह

वहन्य । साह्याह दीवउ बाण साहि । मडलेसर चडियउ थट्ट माहि
—रा ज. सी.

उ०—२ केसरि कथिन्न सामळि कनि, वाउळि कि वनि लागउ
वहनि । वीकाहर राजा ए वखाण, जाळोवळि सीतउ ध्रित्त जाए ।
—रा. ज सी

२ देयो 'वहन' (रू भे.)

वहन्य—स पु.—एक सूर्य वंशी राजा, जिसका पुराणों मे शुद्ध नाम वहि
मिलता है । दूसरा नाम घर्मा भी मिलता है ।

ऊ०—जे सुत ब्रह्म भोज जगजाहर । ब्रह्मभोज सुत वहन्य श्रीतवर ।
—सू प्र.

रू. भे —वहनि, वहनी ।

वहम—स पु [अ] १ किसी प्रकार के अनिष्ट या हानि के प्रति मन मे
उठने वाली निराधार कल्पना, सभावना या धारणा ।

२ भ्रम, भ्राति ।

३ शक, सदेह, शका ।

उ०—दरवार ती आप रे माथै पूरा महरवान है । आप नै नाराजगी
रो फरत वहम है । आप निसक हीयनै किलै पघारो ।
—अमरचूनडी

रू. भे.—वहम, वेम, वैम, वैम ।

वहमी—वि [अ] १ वहम करने वाला, शक करने वाला ।

२ उक्त प्रकार के स्वभाव वाला, शककी मिजाज ।

रू. भे —वहमी, भहमी, वैमी ।

वहरणो, वहरवो—देखो 'वैरणो, वैरवो' (रू. भे)

उ०—मोरघुजो महाराज था जन सचा हर का । करवत हत्या वहर
कै दिय सोस कवर का ।
—दुरगादत वारहठ

वहरणहार, हारो (हारी), वहरणियो—वि० ।

वहरिओडो, वहरियोडो, वहरघोडो—भू० का० कृ० ।

वहरीजणो, वहरीजवो—कर्म वा० ।

वहरामसद—वि [फा वहगमद] घनाढ्य, मम्पन्न, भाग्यशाली ।

उ०—लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर
वहरामसद साहूगार घणा सुग चैन सूं वसै छै । —रा सा स

वहराडणो, वहराडवो—देयो 'वैराणो, वैरावो' (रू भे)

उ०—पाघरै खेत माराय रो पाडियो, माथ भूलाडियो रुघर सूरु ।

पागडो मगा वहराडियो मीम पर, भोयण वहराडियो नहीं भूरा ।

वादरमिह रो गीत

वहराडणहार हारो (हारी), वहराडणियो—वि० ।

वहराडोओडो, वहराडोयोडो, वहराडोयोडो—भू० का० कृ० ।

वहराडोजणो, वहराडोजवो—कर्म वा० ।

वहराडियोडो—देयो 'वैरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वहराडियोडी)

वहराणो, वहरावो—देखो 'वैराणो, वैरावो' (रू भे)

वहराणहार, हारो (हारी), वहराणियो—वि० ।

वहरायोडो—भू० का० कृ० ।

वहराईजणो वहराईजवो—कर्म वा० ।

वहरायोडो—देखो 'वैरायोडो' (रू भे)

(स्त्री, वहरायोडी)

वहरावणो, वहराववो—देखो 'वैराणो, वैरावो' (रू भे.)

वहरावणहार, हारो (हारी), वहरावणियो—वि० ।

वहराविओडो, वहराविओडो, वहराव्योडो—भू० का० कृ० ।

वहरावीजणो, वहरावीजवो—कर्म वा० ।

वहरावियोडो—देखो 'वैरायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वहरावियोडी)

वहरियोडो—देखो 'वैरियोडो' (रू भे.)

(स्त्री वहरियोडी)

वहरूपियो—देखो 'वहरूपियो' (रू. भे)

वहळ, वहल—१ देखो 'वहल' (रू भे)

उ०—१ मोरी सइया ए, एण भुएण वहळ जुडायी —लो गी

उ०—२ पछे कलो नाडुल वहळ वैस नै गयी ।

—राव चद्रसेण री वात

उ०—३ भरमल आप री तरफ रो कपडो वसत सारी मगाई, सो
ऊठ वीस भरीया । दस वहला तयार कीवी । दस घोडा तयार किया
इव कर इए री सखरो महरत देल भार सभावण लागौ ।

—कुंवरसी साखला री वारता

२ देयो 'वहळ' (रू भे)

उ०—मडे सरट ललाटी जमल, सयर गहर घु वेद ससार , वहळा
सपत विपत वैरीया, सुज 'सुरत्ताण' कळोघर सार ।

—भीमो आसियो

३ देखो 'वळद' (रू भे)

वहलवान—देखो 'वहलवान' (रू भे)

वहलि—स म्त्री—१ हाथी या घोडे को हाकने की छडी (उ. र)

२ देखो 'वहल' (अल्पा, रू भे)

३ देयो 'वहली' (रू. भे.)

वहलियो—१ देयो 'वळद' (अल्पा, रू भे)

उ०—मोटी, हासल छोटी दीवो छै और मारणै पेरणै दासदासी नै
रोजगार रथ नै वहलिया ऐ समाचार छै । —जगदेव पवार री वात

२ देवो 'बहलियो' (रू भे)

बहली—स स्त्री, [स. बहला] १ बडी इलायची ।

[सं. बहल'] २ ऊब विशेष ।

रू. भे.—बहलि ।

३ देवो 'बहल' (अल्पा, रू भे)

बहल - देवो 'बह' (रू भे)

उ०—रामापीर ऊजी रुणेचा रे माहि मागू पूत रत्नो री जोड कुळ मे
बहवा री जाजी झूलगे —रामदेवजी तुवर री गीत

बहवारियो—देवो 'ब्यवहारीयो' (अल्प, रू भे)

उ०—लिथमी रा लाडिला लोक बडा वापारी बहवारिया सोदागर
बहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू बसै छै ।

—रा सा. स

बहाडणो, बहाडवो - देखो 'बहाणो, बहावो' (रू भे)

उ०—आहवि बाहि बहाडि असिस्मर, महाराज ले जाव्यो मधुकर ।

—बचनिका

बहाडणहार, हारी (हारी), बहाडणियो—वि० ।

बहाडिओडो, बहाडियोडो, बहाडयोडो—भू० का० कृ० ।

बहाडोजणो, बहाडोजवो—कर्म वा० ।

बहाडियोडो—देखो 'बहायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. बहाडियोडो)

बहाणो, बहावो—क्रि. स. ['बहणो' क्रिया का प्रे रू] १ कही जाने के

लिये प्रेरित करना, भोजना, गमन कराना, चलाना ।

२ द्रव पदार्थ या पानी को धारा के रूप में बहाना, प्रवाहित करना ।

३ उक्त धारा में बहाना, प्रवाहित करना, तिराना ।

उ०—तठै समुद्र माहे पैठा । पैस अर एक बडी पाटली तिए
ऊपर भारोज नू वैसाण अर पाटलानू घकाय अर बहलै पाणी
माहे बहाय दियो । —नैणसी

४ भटकाना, घूमाना ।

५ गतिमान करना, गति देना ।

६ घूमाना, टहलाना ।

७ आचरण कराना ।

८ अलग हटाना, दूर कराना ।

९ शस्त्र प्रहार कराना, आघात कराना, वार कराना ।

१० वध कराना, मरवाना, वीर गति प्राप्त कराना ।

११ उछालना ।

१२ प्रचलित कराना ।

१३ टपकाना, भरवाना ।

१४ खेत में ग्रनाज बोमाना, बोवाई कराना ।

१५ किसी उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी को बहन कराना, धारण कराना, जिम्मेदारी डालना ।

१६ लदवा कर ले जाना, ढोवाना ।

१७ शपथ दिलवाना ।

बहाणहार, हारी (हारी), बहाणियो—वि० ।

बहायोडो—भू० का० कृ० ।

बहाईजणो, बहाईजवो—कर्म वा० ।

बहाडणो, बहाडवो, बहाणो, बहायो, बहावणो, बहाववो, बुवाणो,
बुवावो, बुहाणो, बुहावो, बूहाणो, बूहावो, बंवाणो, बंवावो, बहाडणो,
बहाडवो, बहावणो, बहाववो—रू० भे० ।

बहानो—देखो 'बहानो' (रू. भे)

बहायोडो—भू का कृ —१ कही जाने के लिये प्रेरित किया हुआ, चलने

के लिये प्रेरित किया हुआ, भेजा हुआ २ बहाया हुआ, प्रवाहित

किया हुआ ३ भटकाया हुआ. ४ गतिमान किया हुआ.

५ घुमाया या टहलाया हुआ ६ अलग हटाया हुआ, दूर किया

हुआ ७ शस्त्र प्रहार कराया हुआ, आघात या वार कराया हुआ.

८ वध कराया हुआ, मरवाया हुआ. ९ उछाला हुआ. १० प्रच-

लित कराया हुआ. ११ टपकाया हुआ, भरवाया हुआ. १२

बोवाई कराया हुआ, बोवाया हुआ. १३ उत्तरदायित्व या जिम्मे-

दारी बहन कराया हुआ, धारण कराया हुआ १४ भरवाया

हुआ (स्त्री बहायोडो)

बहार—देखो 'बहार' (रू भे)

उ०—मिळी सव्हेली महल मे, वणी किसीक बहार । चुतर सरद नै
चद्रमा, नवल चानणी नार । —र हमीर

बहाळो—देखो 'बाळो' (रू भे)

बहालो—देखो 'बालो' (रू. भे.)

(स्त्री. बहाली)

बहाव—देखो 'बहाव' (रू. भे)

बहावणो बहाववो—देवो 'बहाणो, बहावो' (रू भे)

बहावणहार हारी (हारी), बहावणियो—वि० ।

बहावियोडो, बहावियोडो, बहाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बहावोजणो बहावोजवो—कर्म वा० ।

बहावियोडो—देवो 'बहायोडो' (रू भे)

(स्त्री बहावियोडो)

बहिचणो, बहिचवो—देवो 'बंवाणो, बंचवो' (रू भे)

उ०—जाइ उरें तळाव पर घोडा बहिचिया ।

—रूपमें बळोच री वात

बहिचियोडी—देगो 'बं'चियोडी' (रू. भे)

(स्त्री बहिचियोडी)

बहि—देगो 'बही' (रू. भे)

बहिउ—बि [म यूड] १ फँला हुआ, चौड़ा, प्रशस्त । (उ. र.)

२ बृद्धि को प्राप्त । („)

३ बृद्ध, बृद्ध । („)

४ दृढ़, मजबूत । („)

५ विवाहित । („)

बहिचणो, बहिचवो—देगो 'बं'चणो, बं'चवो' (रू. भे)

उ०—ताहरा विजो बोलीयो जी हाली आधी आध बहिच लेस्या ।

—चीवोली

बहिचियोडी—देगो 'बं'चियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बहिचियोडी)

बहिण—देगो 'बहन' (रू. भे)

बहिणि—देगो 'बाहनि' (रू. भे)

२ देगो 'बहन' (रू. भे)

बहितिक, बहिण, बहिणक, बहिणिक—सं स्त्री [स. बहिणिक] १ नाव, जहाज । (ह. ना. मा)

२ बेठा, पोत ।

रू. भे —बहिण, बहितिक, बहिणिक ।

बहित्य—सं. पु [स. बाहित्य] हाथी का मस्तक ।

उ०—चिरं बहित्य हतिय के चिकार धूर धूर व्हे । भिरं मटाळि भाळ में, भिगार भूर-भूर व्हे ।

—ऊ का

बहिप्रो—सं. पु —नगर का चौहटा । (सभा)

बहिन—१ देगो 'बहि' (रू. भे)

२ देगो 'बहन' (रू. भे)

बहिनपुग—देगो 'बहिनपुग' (रू. भे.) (म. मा)

बहिनी—सं. स्त्री [स. बहिनी] १ नाव, नौका ।

२ बेठा, पोत ।

३ देगो 'बाहनी' (रू. भे)

४ देगो 'बहन' (रू. भे.)

५ देगो 'बहि' (रू. भे)

बहिया—सं. पु —पवार बदा की एक नाम ।

(वा दा. न्यात)

बहियोडी—भू वा वृ. (स्त्री बहियोडी) १ चलकर वहीं गया हुआ, गमन किया हुआ, चला हुआ, किसी की ओर निरन्तर चला हुआ ।

२ पाठ में होकर पुत्रग हुआ, निबट में होकर चला हुआ

३ द्रव पदार्थ या पानी का धारा के रूप में बहा हुआ, प्रवाहित हुआ हुआ ४ उक्त प्रकार की धारा के साथ बहा हुआ, प्रवाहित हुआ हुआ ५ इधर-उधर घूमा हुआ, भटका हुआ ६ गतिमान हुआ हुआ ७ घूमा हुआ, मडराया हुआ. ८ धारण किया हुआ ९ दूर तक मार करने वाले अस्त्र का चला हुआ १० गोली, तीर आदि का छूटा हुआ, निकला हुआ ११ उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी वहन किया हुआ १२ कीर्ति या विरुद्ध धारण किया हुआ १३ स्वाभिमान व अभिमान रखा हुआ १४ घुसा हुआ, घसा हुआ. १५ प्रचलित हुआ हुआ, फँला हुआ १६ भरा हुआ, टपका हुआ. १७ क्षेत्र में अनाज बोया हुआ १८ शस्त्र प्रहार हुआ हुआ, आघात हुआ हुआ, वार हुआ हुआ १९ वीरगति प्राप्त हुआ हुआ. २० उछला हुआ २१ बघ किया हुआ, मारा हुआ, समाप्त किया हुआ २२ प्रहार किया हुआ, वार किया हुआ, आघात किया हुआ. २३ किसी उत्तरदायित्व व जिम्मेदारी को वहन किया हुआ, धारण किया हुआ २४ धारण किया हुआ २५ जाद कर ले जाया हुआ, ढोया हुआ.

बहिरग—सं. पु [स] १ अतरंग का विपर्याय, उल्टा ।

२ शरीर का बाहरी भाग ।

वि —१ ऊपर-ऊपर का, बाहर का ।

२ अनावश्यक, फालतू ।

बहिरणो, बहिरवो—देगो 'बं'रणो, बं'रवो' (रू. भे)

उ०—थानक, नित्य पिंड कलाल री पाणी बहिरणो आदि छोड, नवो साधपणी पचस्यो, पिए सरघा तो बाहीज पुन री ।

—भि. द्र

बहिरलापिका—सं स्त्री [स. बहिरलापिका] वह प्रश्न या टेढा वाक्य जिसका श्रोताओ से उत्तर पूछा जाय, पहेली समस्या ।

बहिराणो, बहिरावो—देखो 'बं'राणो, बं'रावो' (रू. भे)

बहिराणहार, हारो (हारी), बहिराणियो—वि० ।

बहिराणोडी—भू० का० वृ० ।

बहिराईजणो, बहिराईजवो—कर्म वा० ।

बहिराणोडी—देगो 'बं'राणोडी' (रू. भे)

उ०—बहिराव्या तिण वस्त्र प्रधान जो, अनुकपा कीधी रे च्यारं भगना रे लो । धन धन तु प्रिय गुण निधान जो मुनि पडिलाभ्या वस्त्र मुचगना रे लो ।

—वि कु

बहिरावियोडी—देगो 'बं'रावोडी' (रू. भे)

(स्त्री बहिरावियोडी)

बहिरउ—देगो 'बहरी' (रू. भे)

उ०—बजिय ए सूर गभीर अउर बहिरिउ पडिरमन । नाचहि ए भवलयि बाव, रजिय मुर बयला मोहि । —श्रीधरम कलस मुनि ।

बहिरमाण—स. पु.—महादि देह क्षीत्र के तीर्थकर ।

उ०—बहिरमाण क्षीमघर स्यामि, सीधा वि आव्यठ सिर नामी ।
—ऐ. जै का. स

बहिरौ—देखो 'बहरो' (रू. भे.)

बहिल—१ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरात करि नै राजान कुमार री जान धरौ
आडवर सूँ हाथी घोडा बहिल सुग्रासण रथ पायक रा वणाव किया
थका बघेल जानिया रै साथ लिया धरौ मोती जडाव जरकसी सूँ
लडालव हुआ छै । —रा सा. स

उ०—२ तहरा भीवी भळवा लेनै हालियो । भरमल पासै आयी
अर कह्यो—यानै बाघोजी बोलावै छै । तद सहिनाण लेनै बहिल
बढ़ि चाली । —ऊमादे भटियाणी री बात

उ०—३ ताहरा साहूकार हुआ बडी लवेस करि थाहे रैस करि बहिल
उठ त्यार करि, कपडी लेनै चालीया । —चौवोली
२ देखो 'बैल' (रू. भे.)

बहिलउ, बहिलु—देखो 'बहिली' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ बहिलउ आए बल्लहा, नागर चतुर सुजाण । तुझ बिरा
धण बिलखी फिरद, गुण बिन लाल कमाण । —ढो. मा.

उ०—२ राइ कागल मोकलिउ, माधव बहिलु आवि । जिम जाणइ
तिम तूँ करइ, तेणि सदन सिधावि । —मा का प्र

बहिलो बहिली—कि वि [प्रा बहिल्ल] (स्त्री बहिली) १ शीघ्र, जल्दी,
चुरन्त ।

उ०—१ रूनी रने चढेइ, जाताही जोयो नही । बहिला बळण
करेइ, जुग जीवू जी जेठवा । —जेठवी

उ०—२ माधव बहिला आवज्यी, हु जोऊ धरि वाट । फल दल
जल अग्नि धरू, भूमि सयन नही खाट । —मा का प्र

उ०—३ किसै जबाने करै प्रघट दाखियो पहिली । दंत भएँ
अकरर विसन ना ल्याव बहिलो । —पी अ

उ०—४ मम ढील करी हल वार म लावो, वेग चढो बहिल्ला
बहिल्ला । —गु रू व

२ पहले, पूर्व ।

उ०—खट-दस-वीस वस त्रिय्या गुरु, सट दरसण आचार मरो ।
बासाणें ऊगा दिन बहिलो, हरि पहिला किलियाणहरो ।

महाराजा करणसिंह री गीत

त्रि—१ उदार, दानी ।

२ प्यारा, प्रिय ।

३ विरला ।

रू. भे—बहिलउ, बहिलु, बहिली, बहिली ।

बहिल्ल—१ देखो 'बैल' (रू. भे.)

उ०—उदर दर खण मरै पैस भोगवै भुवगह । हल बहि मरै
बहिल्ल, हरी जव चरै तुरगह । —नैणमी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

बहिस—अव्य —१ अच्छे समय पर ।

उ०—प्रथम दुतिय चवथे पदें, मोहरा बहिस भिळत । रह अमेल
पद तीसरी, जो ऋड लुपत भिलत । —र. रू.

२ देखो 'बहिस' (रू. भे.)

बहीं—अव्य [राज. वह] १ उसी स्थान या जगह पर ।

२ उसी विदु स्थान, समय या स्थिति पर ।

३ उसी व्यक्ति, वस्तु या पदार्थ के प्रति ।

रू. भे—बहि, बही ।

स स्त्री [स वयस्] आयु-उम्र ।

उ०—दूत हकीकत कहै छै, जु राजान कुंअर ऊठती बही री जुवान
आजानवाह राज हस लीलग छै । —रा सा. स.

बही—सर्व [राज. वह] १ किसी वस्तु या व्यक्ति के प्रति निश्चित रूप से
सकेत करने वाला सर्वनाम ।

उ०—करहा पीपल पान चर, आगं मरसि भुख । जासा उणहीज
देसडे, वे फळ बहीज रूख । —ढो. मा.

रू. भे—बहि, बाहि, बाही ।

२ देखो 'बही' (रू. भे.)

३ देखो 'बही' (रू. भे.)

उ०—तव गीतम आव्या तिहा बही, लोक सह हुरस्या गह गही ।
—झीपालरास

बहीण—देखो 'बहीन' (रू. भे.)

उ०—म्याराजी थे मुरघरा, बालम जाय बसाह । आप बहीणी एक
दन, जीवै नही 'जसाह' । —मयाराम दरजी री बात

(स्त्री बहीणी)

बहीणी, बहीवी—देखो 'बहणी, बहवी' (रू. भे.) (उ. र.)

बहीर—स पु—१ प्रस्थान, गमन, प्रयाण, दूच ।

उ०—१ अरु गढ में आदमी हजारदोय हा सूँ खरच घणो, सु
जोइया नूँ तथा दूजै माथनू तो धरनूँ बहीर कर दीना वा गढ मे
भाटी आदमी पाच सो रया । —द. दा

उ०—२ ताहरा विसनदाम फोज ले अर बहीर हुयी । —नैणसी
२ सदा साथ रहने वाले नौकर, अनुचर, परिजन ।

उ०—बेटो म्यान इनात री, गढ सू धयो तगीर । चाली महमद बेग
री, दिल्ली दिना बहीर । —रा. रू

३ कुटुम्बी, नातेदार, रिस्तेदार ।

उ०—गोकुळ हूत गयी ज्यू गिरघर, ऊभा छोड अहीरा । 'सगता' जेम गयी सग सासु, वास छोड वहीरा । —बुधजी आसियो ४ सेना ।

उ०—१ वहीती इसी पथि ओपे वहीर, नदी हेम थी ले चली जाणि नीर । कतारा कठठे चलै जूग काळा, वहै वादळा जाणि भाद्रव्वाळा । —वचनिका

उ०—२ वह रहि हिलै वहीर, पाइक ओठक पडतळा । मिळवा किर चाली महरण, नवसै नदि ले नीर । —वचनिका

उ०—३ एकणी नगरै थाट एम । हल्ले वहीर जिम सलित हेम । —सू. प्र

रू भे.—बहिर, वहीर, वईअर, वईयर, वईर ।

वहीली—देखो 'वहिली' (रू भे)

वहीवेस—स स्त्री [स वय-वयस्] १ युवावस्था, जवानी ।

उ०—सिण सू लीमाजी साहिब, हुकम करी तौ पातिसाहा री उळग करू । इण वहीवेस माहै सारी विवहार छे ।

—जखडा मुखडा भाटी री वात

[स वह्, + वयस्] २ अस्थाई अवस्था, वीतने योग्य उम्र ।

वहु—देखो 'वहू' (रू भे)

वहुअड—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

वहुअर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

वहुअडी—देखो 'वहू' (अल्पा, रू भे)

वहुअरी—देखो 'वहू' (अल्पा., रू भे)

वहुवदोळी—देखो 'वहुवदोळी' (रू भे)

वहुरात—देखो 'वहुरात' (रू भे)

वहुरावणो, वहुराववो—देखो 'वैराणो, वैरावो' (रू भे)

उ०—गुरु देखी हरसित थया, वहुराववो पुन रतन । घरम लाभ गुरु तव दीये, करजो पुत्र जतन । —कवियण

वहुरावियोडी—देखो 'वैरायोडी' (रू भे)

(स्त्री वहुरावियोडी)

वहुव—देखो 'वहू' (रू भे)

वहुअड, वहुअर, वहुवड, वहुवर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—१ आयो आयो अे वहुअड फागण मास, वहुअड फागण मास घर-घर होय रयी नीपणी अे । —लो गी

उ०—२ नीपो नीपो अे वहुअड चाकडली री चूळ, वहुअड चाकडली री चूळ नीपो चूली वेवणी । —लो गी

उ०—३ माय कहै वहुअर सहित, जीवो कोडि वरीस । अविचल जोडी तुम्ह तणी, इम दीधी आसीस । —लीपालरास

उ०—४ हे चार चतर, मिळ म्हारी जच्चा राणी ने, हे किस वहुवड किस धीय । —लो. गी

वहुवासी—देखो 'वहुवासी' (रू भे)

वहू—देखो 'वहू' (रू भे.)

उ०—१ वहू च्यार पगा लगै जेण वारै । सुमत्रा अनै केकई कोमल्या रै । —सू प्र

उ०—२ कद हू कवी कुमारडी, कहि नै कदि पररोसि । वद हू वाजिद कोटडै, वीजा वहू कहेसि । —सयणी री वात

वहुअर—देखो 'वहू' (मह, रू भे)

उ०—जीवडलु जाया करइ, जोई जोई जठ । वेदन वीनवीइ किमी, हू वहुअर तू जेठ । —मा का प्र.

वहुदक—स. पु [स] चार प्रकार के सन्यासियो मे से एक ।

वहुवदोळी—देखो 'वहुवदोळी' (रू भे)

वहुरात—देखो 'वहुरात' (रू भे)

वहुवत—देखो 'वहुवत' (रू भे.) (उ र)

वहेडो—देखो 'वे'डो' (रू भे)

उ०—हरड वहेडा आवळा, धी-शक्कर मे खाय । हाथी दावै खाख मे साठ कोस ले जाय । —अनात

वहेणो, वहेवो—देखो 'वहणी, वहवी' (रू भे)

उ०—सुदरि मो सारउ नही, कुअर वहेसी मग । साहिव चित्त उपाडियउ, जिम केकाणा वग । —डो. मा

वहेली—देखो 'वहिली' (रू भे)

उ०—विहारो नवे नाथ जागी वहेला, हुवा दोडिवा घेन गोवाळ हेला । —नागदमण

वहो—देखो 'वहुत' (रू भे.)

उ०—बुधवत वहो कथ साच कही, सुण लीध सहो ग्रह पथ गही । —रू

वहीत्तर—देखो 'वओत्तर' (रू भे)

उ०—देवळ एक खभ दोइ जाकै, पाच भाति रग दीया । दस दरवार वहीत्तर छाजा, गळी गाव 'वहो' कीया । —ह पु वा

वहीत—देखो 'वहुत' (रू भे)

उ०—वहीत जतन करि वाणिक वाण्या, ऊपरि कळस चढाया । ए दोइ रतन उजागर दीसै, वहीत भाति सू लाया । —ह पु वा

वहीडि, वहीडी—देखो 'वहुरि' (रू भे)

उ०—माया तजि भजि नाव निरजन, जीवन अजली नीर । यहू ओसर भी वहीडि न लाभै, जम का काटि जजीर ।

—ह. पु. वा.

वह्नि-स. स्त्री. [स] १ अग्नि, आग ।

उ०—त्रिभुवन माहे ए जिन तारण, धारण दुख वन वह्नि जी ।
—घ. व ग्र

२ अन्न को पचाने की शक्ति, पाचन-शक्ति ।

३ भूख ।

४ चिता ।

५ सवारी ।

स पु —६ राम की सेना का एक बन्दर ।

रू. भे —वहन, वहनि, वहनी, वहिन, वहिनी ।

वह्निकर-वि [स] १ जलाने वाला ।

२ भूय बढाने वाला ।

३ आग पैदा करने वाला ।

स स्त्री.—१ विद्युत्, विजली ।

२ चकमक ।

३ पथरी ।

वह्निबीज-स पु [स] १ सोना, स्वर्ण ।

२ नीबू ।

वह्निमुख-स पु. [स.] देवता ।

रू. भे —वह्निमुख ।

वह्निसिख-स स्त्री [स] १ केसर । (ना मा)

२ कुसुंम ।

[स वह्नि—सख] ३ पवन, हवा ।

रू. भे —वनीसिख, वहनीसिख ।

वह्न—देखो 'वहू' (रू. भे)

उ०—जितर साह री वह्न घर मे आयी ।

—राजाभोज अर सापरा चोर री वात

वां-सर्व —१ उल ।

उ०—१ काट जिका फुल ऊबटे, आठ वाट इतफाक । वा सबळा ही पुरसडा, वैरी गिणै वराक । —वा दा

उ०—२ ज्यारी जीभ न ऊपडे, सेणा माही सेत । वा रा कर किम ऊपडे, खळा धिरघा विच खेत । —वा दा.

उ०—३ लावो वो असवारा माहे हुप न भुज आयी । —नैणसी २ उन्हीने ।

उ०—१ कैरव ज्यूं आया कमघ, पाडव ज्यूं पतिसाह । या हरि नाम उचारियो, वां गहिमाण अलाह । —वचनिका

उ०—२ नारायण री नाम ज्या, नह लोधी निरणाह । वां जमवारी वोळियो, ज्यूं जगळ हिरणाह । —हरिरस

अव्य —५ वहा, उस जगह ।

रू. भे —वा ।

वाइटी—स. पु [स वात-घटो] १ शरीर मे वात-विकार के कारण होने वाली ऐंठन या शून्यता ।

२ पेटिस आदि के कारण पेट में होने वाली ऐंठन या मरोट ।

रू. भे —वाइटी, वाईटी, वायटी, वाइटी, वाइंटी, वाईटी, वाईंटी ।

वाई—सं स्त्री. [स वायी] १ सर्प का विल ।

२ खाट के पैताने की मोर आढा बाधा जाने वाला मोटा बघन जो खाट की बुनाई व वदावन का आधार होता है ।

वि वि —यह रस्सी साट बुनने वाली मूज की बगती है । मूज को पाच-सात बार आढी लपेट कर उस पर बिथडे लपेट दिये जाते हैं जिससे यह एक मोटे रस्से के समान हो जाती है ।

रू. भे —वाई, माई, म्याई ।

३ करघनी ।

वाईंटी—देखो 'वाइटी' (रू. भे)

स०—उण नै वूगी आयगी । डील थर थर धूजण लागी । मासी है जठे ई हेटे गुडगी । हाया पगा वाईंटा आवण लागी । —फुलवाडी

वांक—देखो 'वाक' (रू. भे)

उ०—१ रज्जव पारस परस कै, मिटगी लोह विकार । तीन वात तो ना मिटी, वाक धार अर मार । —सतकवि रज्जव

उ०—२ आप वन्तुआ नू तयार कर कट पर घाल गगाजळी पाणी री एक हानै घाली । वाक एरु पताके वाधी ।

—साह रामदत्त री वारता

उ०—३ आदित्य आखि ज विन्वनी, ऊघाडण ए आक । थाधिइ अघ उलूक तु, सूरि जनु स्यु वांक । —मा का प्र

उ०—४ तूं रुठइ छइ आपदा पूज जी, राय थका करइ राक । मेर थका सरसव करइ पूज जी, वाका काढइ वाक । —स कु

वाकउ—देवो 'वाकी' (रू. भे) (उ र)

देवो 'वाक' (मह, रू. भे)

वाकड—देवो 'वाकी' (मह, रू. भे)

उ०—घरि वडठा ही आविस्पइ, लाखे लिया लडग । तिरिण मइ लेस्या टाळिमा, वाकड मुहा विडग । —दो. मा (स्त्री. वाकी)

वाकटलो—देवो 'वाकी' (प्रता, रू. भे)

(स्त्री वाकटनी)

वाकडो—१ देवो 'वाकी' (प्रता, रू. भे)

उ०—१ भुअ मजोटे दीपे वाकडो कवाण नै जीपे हो । माही-माही न छीपे ते भान विमान ममीपे हो । —दि. कु

उ०—२ कमघजिजा लैरा चाला ली । मोही मोही वांकडी तरे
सु । —रसील राज री गीत

२ देखो 'वाकडी' (रू भे)

३ देखो 'वाकली' (रू भे)

वांकडीनाळ, वाकडीनाळी—देखो 'वाकली' (रू भे)

वाकडो—१ देखो 'वाकी' (अल्पा., रू भे.)

उ०—१ वांकडा कमघ वीर, साकडा धाया सघीर । ताम सोढि
देखि ताव, पालटें कुरग पाव । —सू. प्र.

उ०—२ परवाणी पतसाह री, लिख मूर्क मेलाण । इण गढ हिंदू
वाकडो, कर ग्रहिया केवाण । —नैणसी

उ०—३ दग तोफा बहे गोळा रोहळा मोरछा दोळा, जो लार सकें
सूता सेर नें जगाय । भुरजाळ वाकडो बीटियी दूजा गढा भीळ,
लोहा जाळ घसं कही नसंणी लगाय । —बा दा.

उ०—४ वारु थई विवहारीड, वाहणि घोडा साथ । पूरण पुहुंचा-
लंगि भरिउ, वेढि वाकडा हाथि । —मा का प्र.

उ०—५ कडियें कटारो घरमी रे वाकडो, सोरठडी तरवार औ ।
—लो गी.

(स्त्री वाकडी)

२ देखो 'वाकडी' (रू भे)

वाकम, वाकमि—देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—१ तेज तरह वाकम तोखारा, घर वाकम पाघर कर घूत ।
अग वाकम रग छें 'ऊदाणी', रग वाकम वाका रजपूत ।

—जोरावर सिंह ऊदावत री गीत

उ०—२ सखी अमीणी साहिबी, वाकम सूं भरियोह । रण विकसं
रितुराज मै, ज्यू तरवर हरियोह । —बा दा

उ०—३ राजीवाई राव आय नैडी ऊतरियो । करा झाल केवाण
वीद वाकम वळ भरियो । —द दा

उ०—४ ऊचा जोर अकास हू, पहला अप्रमाण । वाकम जोर
मरोर अग, एहे अहिनाण । —गजउदार

वाकल—स. स्त्री—देखो 'वाकल' (रू भे)

उ०—राय आगण चौपड रमो, महिला सरब सुदाह । रखसी वांकल
राज री, चूडो अमर सदाह । —पा प्र

३ देखो 'वाक' (मह, रू भे)

वाकस—देखो 'वाक' (रू भे)

उ०—कुचा पर फावें अलका री वाकस । —र हमीर

वाकिम, वाकिम्म—देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—१ नर नरिंद अणनिंद, विंद वाकिम्म वीरवर । सुत सुरिंद

हरचद, कद काढण केवी हर ।

—गु. रू. व.

उ०—१ 'ऊदी' 'अनी' विकट ऊदावत, जोड मोड दळ विन्है
जगावत । 'रतन' जगावत वाकिम राती, 'राम' सुभावत मेळ अराती ।

—रा. रू.

वांकियो—१ रयाग विशेष ।

उ०—जुं सहरी अहू नयण अग जूता, विसहर रामि कि अलक
वक्र । वाळी किरि वाकिया विराजें, चद रथी ताटक, चक्र ।
—वेलि

२ देखो 'वाकियो' (रू भे)

३ देखो 'वाक' (अल्पा, रू भे.)

वाकी—देखो 'वाकी' (रू. भे.)

उ०—खरगो, लुद्रवा कनै । घोडा, धाव, वडी वाकी ठोड, मुहारा
दिसी जैसळमेर था कोस १६, खडाळ मे । —नैणसी

वाकु—देखो 'वाकी' (रू भे) (उ र)

उ०—बल नी वामा बोलि मरम, वाकु छि अति मन नु घरम । मनि
मानु ते मानुम देव, जे पणि लपिणु करम निखेव । —नळास्थान
(स्त्री वाकी)

वाकी—देखो 'वाकी' (रू भे)

उ०—१ सोहिली भोमि वाक सुभट्ट । झुझार दियइ करिमाळ
भट्ट । —रा ज सी

उ०—२ 'वीकें' दुरग थापियो वाकी । काटा सरण उवेळ करी ।
—महाराजा करणसिंह

उ०—३ फुलांरा चौस पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठासिया
थका वाका नैणारी भोक नाखती पायलें रं ठमकें सू घुघरें रं घमके
सू विछोया रं छमकें सू रमभोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती
वाजारि चाली जाय छें । —रा. सा स

उ०—४ दुरजन जे वाका हता, नार कीया ते जंरी रे । जिम
अगपति नै आगली, न सकें गयवर फेरी रे । —वि कु

उ०—५ तूं रूकड छइ आपदा पूजजी, राय थका करइ राक । मेर
थका सरसव करइ पूजजी, वाका काढइ वाक । —स. कु.

(स्त्री. वाकी)

वाग—देखो 'वाग' (रू भे)

वागड—वि—वीर, बहादुर ।

उ०—अवळा रं आणेह, कासूं सबळा पण करे । वांगड जद वागेह
केवा लें खीची कने । —पा. प्र.

रू भे—वागड ।

वांगण-स पु. [सं. अवाञ्जन] १ वह स्निग्ध पदार्थ जो गाड़ी या रहट को आसानी से घूमने के लिये चक्रों की धुरी में लगाया जाता है ।

२ उक्त पदार्थ लगाकर वागने की क्रिया या भाव ।

वागणौ, वागवौ-क्रि. स. [स अवाञ्जनम्] १ गाड़ी या रहट के चक्रों की धुरी में स्निग्ध पदार्थ (ग्रीस आदि) लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाना ।

२ पीटना, मारना ।

३ सभोग करना, मँथुन करना । (बाजारू)

४ गमन करना ।

वांगणहार, हारौ (हारौ), वागणियो-वि० ।

वांगियोडौ, वागियोडौ, वाग्योडौ-भू० का० कृ० ।

वागीजणौ, वागीजवौ-कर्म वा० ।

वांगणौ, वागवौ-रू० भे० ।

वागरी-स. स्त्री — एक प्रकार की घास ।

वांगळी-स. स्त्री — १ रेगिस्तान के मैदान में धूल पर पडने वाली लहरें ।

२ पानी जाने की छोटी नाली ।

वागळी-देखो 'वाघळी' (रू भे)

उ०—चौल चख कीया घण वोल पजा चढत, भुज अटत आभ खळ घटत भाळी । वाहर रसा री फतै कर वावडै, वांगळी सीह 'वगतेस' वाळी । —मेगराज आढी

वागियोडौ-भू का कृ — १ सभोग की हुई, मँथुन की हुई (स्त्री)

२ ग्रीसादि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाई हुई (गाड़ी)

वांगियोडौ-भू का कृ — १ ग्रीस आदि स्निग्ध पदार्थ लगाकर अच्छी तरह चलने योग्य बनाया हुआ । (रथ, रहट)

२ पीटा हुआ, मारा हुआ ।

३ गमन किया हुआ ।

(स्त्री वागियोडौ)

वाणौ-स पु — १ प्रवाह, गति, चाल ।

२ पानी बहने की गति ।

३ पानी के बहने से भूमि पर पडने वाले चिन्ह ।

४ प्रथा, परंपरा ।

वाघळी-देखो 'वाघळी' (रू भे)

वांचणौ, वांचवौ-१ देखो 'वाचणौ, वाचवौ' (रू भे)

उ०—१ जिण वाच उच्छव नप जाणौ । आरभ समर करण घत जाणौ ।

—सू प्र

उ०—२ सदेसा मति भोकळठ, प्रीतम तू आवेम । आगलडौ ही गळि गया, नयण न वांचण देस । —डो. मा.

उ०—३ गीता री पाठ होवती । आनमा परमातमा एक है री चरचा चालती । रामायण वाचीजती । सगळें पूछण आवता पण दुणदुणी वजाय' र टरकत । —वरसगाठ

२ देखो 'वाछणौ, वाछवौ' (रू भे)

वाचणहार, हारौ (हारौ), वांचणियो-वि० ।

वाचियोडौ वाचियोडौ, वाच्योडौ-भू० का० कृ० ।

वाचीजणौ, वाचीजवौ-कर्म वा० ।

वाचियोडौ-१ देखो 'वाचियोडौ' (रू भे)

२ देखो 'वाछियोडौ' (रू भे.)

(स्त्री वाचियोडौ)

वाच्छित-देखो 'वाछित' (रू भे.)

वाच्छक-वि [सं.] इच्छा, अभिलाषा या चाह करने वाला ।

उ०—विधि वतावै छै मूआ इहै पाठक वकता हुआ । मारस छै स रस वाच्छक छै । —वेलि टी.

वाछणौ, वाछवौ-क्रि. स [स. वाछनम्] १ चाहना, इच्छा करना, अभिलाषा करना । (उ. र)

उ०—१ चित सू आगम चितवै, आ मजवूत उपाध । 'वंक' जुहै नही वाछियो, इण कारण है आध । —वा. दा

उ०—२ मनुस्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवै छै । अर रूखा की छाह वाछै छै । —वेलि टी.

उ०—३ जिह घडी नै घणु वाछता या घणा दिन लगै । सु घडी आण मिळी । —वेलि टी.

उ०—४ सध्या की समय हुआ छै । क्रस्णजी रति वाछै छै ।

—वेनि टी

२ जिज्ञासा करना ।

३ प्रेम करना ।

वाछणहार, हारौ (हारौ), वाछणियो-वि० ।

वाछियोडौ, वाछियोडौ, वाच्योडौ-भू० का० कृ० ।

वाछीजणौ, वाछीजवौ-कर्म वा० ।

वाचणौ, वाचवौ, वाछणौ, वाछवौ, वाचणौ, वाचवौ-रू० भे० ।

वाछना-सं स्त्री [स. वाछा] १ चाहना, चाह ।

२ इच्छा, अभिलाषा ।

३ कामना ।

४ जिज्ञासा ।

रू भे.—वाछना, वछना ।

वाङ्मनीय-वि. [स] १ जिसकी इच्छा, चाहना या कामना की गई हो ।

२ चाहने या इच्छा करने योग्य ।

बाछा—स स्त्री [स वाञ्छा] १ इच्छा, चाह ।

उ०—पछे बहु मोटी हुई सो या तो काम री बाछा करे ।

—राजा रा गुर रा बेटा री बात

२ अभिलाषा ।

३ कामना ।

उ०—वर प्राप्ति हुआ वर की बाछा करे छे तिहि समय परमेतर रा गुण भणिए जिकाई इच्छा उपनी छे । —बेलि टी.

४ जिज्ञासा ।

उ०—उवा कहीया म्हानु ही मिलण री बाछा हुतो आदन मिलीया । —चोबोली

रू. भे.—वछ्या, बाछा, विछ्या ।

वांछित—वि [स.] चाहा हुआ, अभिलषित, इच्छित ।

उ०—१ वांछित वर पाया पाछे । आप माहे प्रीति राति दिन इसी उपजे । —बेलि टी.

उ०—२ आया साध न देवे उत्तर, वांछित वस्तु बतावे । नै जेडी कर देवे हाजर, पद ऊचा जद पावे । —ऊ का

रू. भे —वचत, वछित, वांछित, वचत, वछत, वछती, वछती, वछित, वांछित ।

वांछियोडो—भू. का. कृ.—१ चाहा हुआ २ इच्छा किया हुआ, अभिलाषा किया हुआ ३ कामना किया हुआ ४ जिज्ञासा किया हुआ. ५ प्रेम किया हुआ ।

(स्त्री वांछियोडी)

वाभू—देखो 'वध्या' (रू. भे)

उ०—१ दूही रुपटी दाम, जोड्या सो ही खाणसी । व्यावर-तणी विराम, वाभू न जाएँ वीभूरा । —वीभूरा अहीर री बात

उ०—२ वांभूा सँ घर वास कर, कोई पुत्र खेलावे ।

—कैसीदास गाडण

वांभूगाई, वांभूगाय—स स्त्री [स वन्ध्या-गाँ] वह गाय जो वध्या हो, जिसके प्रसव न होता हो । (उ. र.)

उ०—सेवे क्रपण सरदार, करे दलाली कोयला । हे काई लेवणहार, वांभूगाय सू 'वसतिया' । —समेळजी बारहठ

वाभूडी, वाभूणी, वाभू, वाभूणी—देखो 'वध्या' (अंलपा., रू. भे)

उ०—विवेकी जुउ-जुउ वस्तु-स्वभाव, छते जोग जोवन वतीजी वाभूणी न जराँ बाल । मूछ नही महिला मुखेजी, करतल ऊँ न बाल । —वृ. स्त

वाभूयो—देखो 'वाभूडी' (रू. भे)

उ०—नारी विन तू वांभूयो ।

—धरम पत्र

वाट—देशो 'वट' (रू. भे.)

उ०—ताहरा हरदास कहै—एक जोधपुर रा कासु दो वाट करा ? —नैणसी

वाटणी, वांटवो—देखो 'वाटणी, वांटवो' (रू. भे) (उ. र.)

उ०—नूर सूर सम वदन निहावे, आप मात रतन घन आवे । सहर गळी प्रत गळी सुहावे, गुळ वाटे त्रिय मगळ गावे । —रा. रू.

उ०—२ चोर च्यार ही डूंगर मे वाटण नागा । तनरे देहलगद री घणी सकार रमती प्राय नीमरिणी ।

—फल्याणमिह नगराजोत वाडेल री बात

उ०—३ रुपिया पचास वडारण कनिया मगाय आप रे हाथ निछरावळ कर वडारण नूँ सौप फुरमायो 'परमात अतीत फकीर गरीव वाट दीजी । —कुंदरसी सांगला री वारता

वाटणहार हारी (हारी), वाटणियो—वि० ।

वांटियोडो, वांटियोडी, वाटचोडो—भू० का० कृ० ।

वाटीजणो, वाटीजवो—कर्म वा० ।

वांटियोडो—देशो 'वांटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वांटियोडी)

वांटी—देखो 'वाटी' (रू. भे.)

उ०—१ कटकका मिळें भेखळा मेर फाने, खडा ऊमरा खान दीवाण खाने । विडेवा कियो साहिजादी विचार, अणि फोज वाटी हुआँ अस्वार, । —गु. रू. व.

उ०—२ करदंत ताकड, त्रुटि कार अरिखिकार हाकड, वांटे चड्या योध ताकड उसरड, पडसरड, तीह वीरतणा नाभिप्रमाण बहुल कुंच । —व. स.

उ०—३ सुजते री वसी वगडी धीरमदेव रे वांटे में आन । —नैणसी

वाटचोडो—देखो 'वांटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वाटचोडी)

वाठ—१

उ०—द्रस्टि जाणइ क्षीर, मत्स्य जाणइ नीर, वाट जाणइ घोडा, स्त्री जाणइ मुह मुचकोडा, गरुडी जाणइ साप, मा जाणइ वाप, वणिण जाणइ माप, मन जाणइ पाप, मुख जाणइ मोठा, द्रस्टि जाणइ दीठा । —व. स.

२ देखो 'वट' (रू. भे.)

वाठि, वाठी—स स्त्री —अहकार, गवं ।

उ०—गुरधम खोया गाठिसू तन सू रखें साठि । हरिया ऐसे पतित की, मिटे न मन की वाठि । —अनुभव वाणी

रू. भे —वाठि ।

वाङ-स पु—खड, टुकडा ।

उ०—नाराजीमारी भाट पडि नै रही छै । वगतरा ऊपरा तरवा-
रीमारा वाङ दूटि नै रहीआ छै । —रा सा. स

वाङणो, वाङवो—क्रि. स—देखो 'वाङणो, वाङवो' (रू भे)

उ०—उगै पग लगा जाएँ भुजग डाँडियो, सुग्ग रग चडियो स्त्रोण
गारी । वार बरछी कही खळा विप चाडियो, वीनटी काडियो हाथ
वारी । —महाराणा भीमसिंह रे भाला रो गीत

वाङणहार, हारी (हारी), वाङणियो—वि० .

वाङणोडो, वाङियोडो, वाङवोडो—भू० का० कृ० ।

वाङीजणो, वाङीजवो—कर्म वा० ।

वाङियोडो—देखो 'वाङियोडो' (रू भे)

(स्त्री वाङियोडो)

वाङी, वाङी—वि [स वड] २ अविवाहित ।

उ०—कोई माई री लाल हुकारी भरती ती या ती पेला पाघडी
मागतो अथवा लुगाई टावरा वाळा नै तो राखण नै तैयार हो परा
म्हारै जिसा वाङो फुतका नै नही । —रातवासी

२ मूर्ख, वेवकूफ ।

स. पु—१ अविवाहित व्यक्ति ।

२ परिवारहीन व्यक्ति ।

३ अपने परिवार से अलग दूर कही अकेला रहने वाला व्यक्ति ।

रू भे.—वडो, वाङो ।

मह०.—वड ।

वाण-स स्त्री [स. वाण] १ बनावट, रचना ।

२ मूर्ति ।

स पु [स वाक्] ३ पंडित, कवि ।

उ०—वाण सराहै वाण, साग सराहै समर खळ । भोज उभळ
महराण, सारा है रघुवर सुकव । —र ज प्र

४ सिंह, शेर । (ना डि को)

[स यान] ५ गाडी ।

६ वायुयान, विमान ।

७ गाय-भैंस आदि मादा पशुओं का ऋतुमति होकर गर्भधारण करने
योग्य होने की क्रिया ।

क्रि प्र—आणी

८ बनावट मे काम आने वाली रस्सी, जेवरी ।

उ०—पचरग दीया डोलिया, पुतळी पागो जाए । सेरू सुहाली
अति भली, रसम वणीयो वाण । —ढो मा

९ एक प्रकार का वात रोग विशेष ।

क्रि. प्र—वहणी ।

१० देखो 'वाणी' (रू भे)

उ०—१ नाम है राम की, श्रीक धाराम की । साच गधो कया,
वाण दूजी प्रथा । —र ज. प्र

उ०—२ अनु आतुर चडियो 'अजन' रिम सुणि जाता राह । वांण
नगारा ऊधरो, सारा धरी सनाह । —रा. क

उ०—३ जग लोक वाण सीवै जवन, पढे ब्रह्म मुग्ग पारसी ।
हित देव सेव आघा हुआ, काई लग्गा आरसी । —रा रू

उ०—४ दिलीपति ढीली हगो, पहुचै कोई न पाए । अचरिज
आसगी न सकै, वोलै एहवी वांण । —प. च ची

११ देखो 'वाण' (रू भे)

उ०—१ बडा पुरस री नाण, अदना री आदर करै । घोछा रा
ऐलाए, चुभता वोलै चकरिया । —मोहन लाल साह

उ०—२ वाण्या थारी वाण, नर कोई जाणै नही । पाणी पीवै
छाए, लोही अणछाण्यो पिबै । —अग्यात

उ०—३ प्यारा पागर पेम की, काइ ज पहिरि अगि । वयए
खटकइ वाण ज्य, कोइ न लागइ अगि । —ढो मा.

वाणक, वाणक-स स्त्री—१ काती, शोभा, दीप्ति, आभा ।

उ०—१ वाणक दीठा ही वए आवै । —अग्यात

उ०—२ श्री मद हास किए नू न मोहै है, इए वत्तीसी री इमी
वाणक है । इए आका गेई मोती माणक है, हसता फूल भडै है ।

२ सुदरता, रूप, सौंदर्य ।

उ०—जिह वाणक फटाए, चपळ नयणी चद्राणणि । के कुरग
लोचना, काम अवली केकाणी । —गु रू वं.

३ सूरत, शक्ल, आकृति, स्वरूप, बनावट ।

उ०—१ ओपै हाट ओछाडिया, पाटवर अणपार । वाणक जाणक
वड्ला, इद्र घनुम उणहार । —रा रू.

उ०—२ तारागढ छापी रहै, सोर तएँ नीसार । आवू जाणक
ओपियो, वाणक वड्ल धार । —रा. क.

४ सजावट, ठाट-गाट ।

५ रग-ढग ।

६ ढग, प्रकार ।

उ०—तदि जोड राम लछमणतणी, विध वांणक विसतारिया ।
बह कळस वादि धर रजत वह, पह मेडतै पधारिया । —नू प्र

७ एक वर्ण-वृत्त जिममे सर्व प्रथम नगण फिर नगण और अत मे
भगण होना है ।

उ०—घाठ घाठ सो वजि उर्म, सहस रन मभ्रजावि । नगण
भगण स जगण निरगि, वाणक छद चतावि । —स पि.

८ देखो 'वणगत' (रू भे)

उ०—राव 'दुरगौ' जोरावर थकी रहै । राणा सूं मिलि नही ।
राणा नै राव दुरगै आपस में घाणक को नही । —नैणसी

रू. भे.—घाणक, वाणिक, वानक, वारिणक, वारणक ।

घाणण, बांणणी—देखो 'वणियाणी' (रू. भे.)

उ०—थळ कतार लाघण थटै, ले जिहाज जळ अत । भोळी ढाली
वाणणी, वेटा घुत जणत । —वा. दा.

वांणप्रस्थ—देखो 'वानप्रस्थ' (रू. भे.)

वांणरस—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—सजुत वसत घाणरस सोखा । नागलता मघई पत्र नोखा ।

—सू. प्र.

वांणवहण—स पु—१ नाव, जहाज । (अ. मा.)

२ देवी प्रकोप होने की अवस्था या भाव ।

वाणा—देखो 'वाणी' (रू. भे.)

उ०—सारद थे सु-प्रसन हुवी, दे अकखर वाणा । —द. दा.

वाणारसी—देखो 'वाराणसी' (रू. भे.)

उ०—पछै गाम रै घणी राजा रा गुर रा वेटा नै पूछ्यो थे
वाणारसी गया था सो का ही भण्या ।

—राजा रा गुर रा वेटा री वात

वाणाळ—१ देखो 'वाण' (मह, रू. भे.) (डि. ना मा.)

२ देखो 'वाणावळी' (मह, रू. भे.)

वाणावळी—देखो 'वाणावळी' (रू. भे.)

वाणावळी—स पु—रथ । (डि. ना मा.)

वाणास—देखो 'वाणास' (रू. भे.) (ना. डि. को.)

वाणि—देखो 'वाणी' (रू. भे.)

उ०—१ डीभू लंक, मराळि गय, पिक-सर एही वाणि । ढोला
एही मारुई, जेहा हभनियाणि । —ढो मा

उ०—२ वाणि अनादह फुड वयण, सुभ भाखा सरजिप्र । गाहा
करई घर रसाउला, दूहा छद कवित्त । —गु. रू. व

वाणिक—देखो 'वाणक' (रू. भे.)

उ०—१ तपत वाण कीघौ हर ताणिक । बांणी-वध एरसै वाणिक ।

—सू. प्र.

उ०—२ आमा रूप जोम ऊफाणिक । वणियो अनग दूसरै वाणिक

—सू. प्र.

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

वाणिज—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—वाणिज विण साह, सहर हाटा विण, जळ विण गाव वसै
जेहडौ । विण गाया न्निवम, सभा पडित विण, विण महमा तीरथ
तेहडौ । —आसी वारहठ

२ देखो 'वणिक'

वाणिजू—१ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

२ देखो 'वणिक' (रू. भे.)

उ०—लाव विच्चारि वाणिजू चालर, वार लाव उलगाणा ।
करकटीया हवसी भायाइत, फरसीघर सपराणा । —का. दे. प्र.

वाणिज्य—स पु. [स. वाणिज्य] वस्तुघो का क्रय-विक्रय, व्यापार,
व्यवसाय ।

उ०—वाणिज्य वइस फवि जेण वेर । कोटेक जाण वप घर कुमेर
—सू. प्र.

रू. भे.—वणज, वणिज, वनज, विनज, वाणिज, वाणिज्य, वनिज,
विणज, वणिज्ज, वाणिज, वाणिजू, वानिज, विणण, विणज ।

वाणिनी—स. स्त्री [स. वाणिनी] १ चान्नाक स्त्री, घुत्त औरत ।

२ नत्तकी, अभिनेत्री ।

३ दूती ।

४ स्वेच्छाचारिणी या व्यभिचारिणी स्त्री ।

५ धाराव के नद्ये में चूर स्त्री, मदोन्मत्त स्त्री ।

६ एक वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण होते हैं तथा
इनका क्रम नगण, जगण, भगण, जगण तथा रगण और एक गुरु
होता है ।

वाणिया फूटावणियो—स पु.—लुब्धक नामक तारा ।

वाणिया-री देवळ—स. पु—वर्षा ऋतु में होने वाला एक उद्भिज पदार्थ
जिसे 'लाकी-मूळी' भी कहते हैं ।

वाणियावटी, वाणियावाटी—स. स्त्री [स. वणिक-वृत्ति वणिक-पाटी]

१ एक प्रकार की गणित विद्या जो वनियो के व्यापार व लेन-देन
में काम आती है ।

२ एक प्रकार की भाषा एव लिपि जो वनियो की बहियो में लिखी
जाती है ।

३ वनियो का फर्म ।

वि—१ वनियो की, वनियो सम्बन्धी ।

२ महाजनी ।

रू. भे.—वाणियावटी, वाणियावाटी ।

वाणियो—देखो 'वणिक' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—गाहै सोदै ग्राहका, ढाहै जे गज ढल्ल । लाहो लोटै वाणियो,
आ है साची गल्ल । —वा. दा

वा'णी—देखो 'वाहणी' (रू. भे.)

उ०—घरती री जिती वार काळजी चीरीज वा'णिया लागै उती
वती नैपे व्हे, साख फळ । —फुलवाडो

वाणी—स. स्त्री. [स. वाणी] १ सरस्वती, शारदा । (अ. मा.)

उ०—भेत गुणा गाय भंव, भ्रामहै न भ्रहमेव, इंदसा सुरा भजेव,
साक तास सेव । कीरती बांणी कहैव, दिला घर समदेव, बाह जेण
चेत देव, देव देव देव । —२ ज प्र.

२ मुह से निकलने वाला सार्थक शब्द, वचन ।

उ०—१ सुरां न्रपति हित बात सुहाणी । विधिवत कहण लागी
मिष बाणी । सू प्र

उ०—२ मन री बात नै बांणी मिळता ही राजाजी नै चेतौ चिह्यो
—फुलवाडी

३ वाक शक्ति ।

उ०—अथाह सुख अर दुख दोनू ई निपट गुंगा व्हेगा । गळा री
बांणी वारी भार भेल नी सकै । च्यारु जणा त्वासी ताळ ताई
बोला-बोला एक दूसरा री मूडी जोवता रह्या ।

—फुलवाडी

४ स्वर, ध्वनि, आवाज, नाद ।

उ०—परम हम आणद मे प्राणी । ब्रह्म भकासि हुई तदि बाणी ।
—सू प्र

५ योग के अनुसार च्यार प्रकार की वाणियों मे कोई एक

उ०—चार अवस्था सत भूमिका, पच कोस विगनाना । चार सरीर
भाव पुनि च्यारु, बाणी चार सयाना ।

—श्रीमुखराम जी महाराज

वि वि—योग के अनुसार वाणी के च्यार भेद माने गये हैं:—
वैजरी, मध्यमा, पश्यती, अस्थता ।

६ भाषा, शब्द, वाक्य ।

उ०—चाद सूरज गळै मिळया । घरती रा कण कण मे हरख
समाययी । पान पान मे रस साचरयो । उण मिळण अर आणद
री कोई बाणी नी ही । —फुलवाडी

७ जिह्वा, जीभ ।

८ बोलने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ अतस रा भून मिळाय पछे बांणी री सुघ-बुघ वाचडी ।
होठ खुलता सा निर्ग आया । —फुलवाडी

९ साधु-सतो द्वारा कथित या रचित, उपदेशात्मक पदो, दोहो या
मीरठो का संग्रहित ग्रंथ ।

उ०—पाप चीकरणा भव पैलै मे, खूब करेलां स्वारिया । बाणी
लिखि गया साध विचारी, मुकति हवै मन मारिया । —ऊ का.

१०—प्राय 'तदूरा' पर गाया जाने वाला निर्गुण भक्ति का पद ।

११ साहित्यिक निबन्ध ।

१२ एक छंद ।

१३ केवट, नाविक । (भ्र मा)

१४ प्रसादा ।

१५ ध्रुपद की चार वाणियों मे से कोई एक या सब—गौरहारी,
नीहारी, डागरी, श्रीर सवारी (सगीत)

रू भे.—वाण, वाणि, वाणी, बानी, वाण, वाणा, वाणि ।

वाणीमंड-स पु [स वाणीमण्ड] दात । (भ्र मा)

वांणीरणजोधार-स पु.—पठित, विद्वान । (व. भा.)

वांणोतरौ-स पु—वनिक समाज ।

उ०—सो साहूकार री बहू मूई । पछै कितरैक दिने साहूकार नै
सहर रा बाणोतरां कही । साहूजी विवाह करी । तद साहू बाणोतरा
नै कहा । अवे हू बरस पचास री हुयो, हू विवाह करी नही ।

—साहूकार री बात

वांणी-स. पु [सं वाहन] १ पानी लाने के लिये गाडी पर रखे हुए
जल पात्रों का समूह ।

२ उक्त प्रकार से पानी लाने की क्रिया या ढग ।

३ रू भे—वाहणी ।

वांण्यो—देखो 'वाणिक' (अल्पा, रू भे)

उ०—बाण्यो मित्र न वेस्या सती, कागो हस न चुगली जती ।
—भ्रजात

वाति-सं. स्त्री. [स. वाति] १ वमन, ऊँ ।

२ उगाल ।

वाती-स पु—प्रतर, फर्क ।

वाय—देखो 'वाय' (रू भे)

उ०—तद कुवरमी दीठो माजी छेहडे आय गया । तद ठाढी वाय
धात कहण लागी, जी माजी जीव मन भी प्यारी छै ।

—कुंवरसी सांखला री धारता

वाद—१ देखो 'वादो' (मह, रू भे)

उ०—ऊचा नीचा वाक्य बोलइ, प्रही प्राहुणी टलइ, छोर चाकर
भिडइ, वाद गुलाम मूहि चटइ, यकी सीकउ थोडइ, बोलावी माधु
फोडाडइ, कुटव सदा दुखि पाडइ । —व. न.

२ देखो 'वाद' (रू भे)

वांदणी, वादबो—देखो 'वादणी, वादबो' (रू भे) (उ र.)

उ०—१ प्रायो चाहता भगद, मह सेन मकार । प्रभु पद वादे
जोड पाए, भ्रम मुकट भघार । —सू. प्र.

उ०—२ अर डाळ कुम आणि, विमळ वर तरणि वंदावे । वादि
कळस तिण वार, भूप द्रव रूप भरावे । —सू. प्र.

उ०—३ वांदण प्राव्या खेणिक राय, नगर लोक पिण वांदण
जाय । धारै प्रभु गणधर उपदेस, मज्ज जणद अनुगत विंग ।

—श्रीमान राम

उ०—४ बल दुधमार वयण वीणासुर, आर्य दिन न कीघ
घवार । बडा बडा गा तोरण चाद, नवल बना ग्रहकार निवार ।

—श्रीपी ग्राढी

उ०—५ क्रस्या चतुरदसी तराड दिनि चतुपथि स्नान करइ, सिद्धा-
यतनि ध्यान घरइ, अस्वत्थ प्रभ्रति वनस्पति चादइ, सकुनग्यानीया
आनदइ ।

—व. स.

घांदणहार, हारी (हारी), घांदणियो—वि० ।

घांदिओढी, घांदियोढी, घादघोडी—भू० का० कृ० ।

घादीजणो, घादीजवो—कर्म वा० ।

घांदर—देखो 'घानर' (रू भे)

घांदरपगो—स पु—वह बेल जिसके पिछले पैर के टखने भूमि को
स्पर्श करते हो ।

(भि —मोदीपगो)

घांदरमाळ—देखो 'घांदरमाळ' (रू भे)

घांदरी—स स्त्री [देशज] १ मोट की रस्सी के साथ जुडा हुआ एक
लकड़ी का उपकरण जिसमें कील डाल कर बेलो के साथ जोडा
जाता है ।

२ देखो 'घानर' (स्त्री.)

घांदरो—देखो 'घानर' (अल्पा, रू भे)

घादियोडी—देखो 'घादियोडी' (रू भे)

(स्त्री घादियोडी)

घांदी—देखो 'घांदी' (रू भे)

उ०—नं जीमण री वखत हुवो । तरा ठाकुरा घांदी सागं वीरमदे
जी री माजी सीसोदणी नू कहायो जीमण सारू । —द. दा

घांदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

घादोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

घाघणो, घाघवो—१ देखो 'घाघणो, घाघवो' (रू. भे)

उ०—ना हू सीची सज्जणै, ना वूठउ अगालि । मो तालि डोलउ
वहि गयउ, करहउ घाघ्यउ डालि । —ढो भा

घाघणहार, हारी (हारी), घाघणियो—वि० ।

घाघिओढी, घाघियोढी, घाघ्योढी—भू० का० कृ० ।

घाघीजणो, घाघीजवो—कर्म वा० ।

घाघियोडी—१ देखो 'घाघियोडी' (रू भे)

(स्त्री घाघियोडी)

घान—सं पु.—१ यश, कीर्ति, शोभा ।

उ०—१ कटा वेक्ष भाड भाडा पहाड सीलोड कीघा । वस राण
मेवाहा ग्रहाडा चाढे घान । —राजा उम्मेदासिह सीसोदिया री गीत

उ०—वाघारण हिंदुस्थान घान । 'अभमाल' जोड नह भूप आन ।
—सू प्र.

उ०—३ ऊभै करग जग ऊपरा, सखरा खरा सहज्ज । घान वघारण
वीरवर, सूर सधीर सकज्ज । —ल. पि.

२ ह्रीसला, साहस, जोश ।

उ०—२ घान वघारे कमघजा, आघारे असमान । 'गजवधी' नवसाहस,
भागा वारह खान । —गु रू व.

३ उमग, उत्साह ।

उ०—वाहै खग बींद जिही चढ़ि घान । घरा नवकोट सिरै परघान ।
—सू प्र.

४ प्रतिष्ठा, इज्जत, ।

उ०—नित पुडि साहिव खान हणमत ज्यू 'जैता' हरी, उरिण
वेळो लागी अरसि, वस वघारण घान । —वचनिका

५ तेज, कान्ति, दीप्ति ।

उ०—अळगी वे (जहै) जोहे अली, जोवण दीजी जान । माणीगर
म्याराम की, वेखण दीजी घान । —मयाराम दरजी री बात

६ वचन ।

उ०—वहिनी थई त्रिलोचना, वई परम्पर घान । —वि कु
७ स्वाद, जायका ।

उ०—वळी बीजा आण्या पकवान, जिमता घाघइ मुख नु घान,
ने कुण जाति, नव नवी भाति, दही बडा गुदवडा —व. स
[प्रत्य] ६ कुछ शब्दों के आगे लगने वाला एक सम्प्रतता सूचक
प्रत्यय ।

७ देखो 'बाद' (रू भे)

रू भे—घान ।

घानइत—देखो 'घानैन' (रू भे)

उ०—पतिसाह सल्ल ऊघाडि प्रोळि, ऊतेडि अखि आउघ इतोळि ।
घानइत जेस राणिंग देव । बोलिया घाघ विहु बाह वेव ।

—रा ज. सी

घानक—देखो 'घाणक' (रू भे)

घानगी—देखो 'घानगी' (रू भे.)

घानणी—देखो 'घानणी' (रू भे)

घानप्रस्थ—स पु [स घानप्रस्थ] आर्य सस्कृति के अनुसार मनुष्य-जीवन
के चार आश्रमों में से एक जो गृहस्थ आश्रम के बाद तथा सन्यास
आश्रम से पहले आता है । जीवन की तीसरी अवस्था ।

रू भे—वाणप्रस्थ, वानप्रस्थ, वानप्रस्थ, वाणप्रस्थ ।

वानर—स पु. [स. वानर] १ मनुष्य से मिलती-जुलती शकल का एक प्रसिद्ध प्राणी, बदर, कपि ।

उ०—ऊघम किर राळं धर अदर । वाग मसोक लागडे वानर ।

—सू प्र

पर्या—कपी, कीस, प्लवग, प्लवगम, वनचर मरकट माकड लंगूर साखाम्नग, हरि ।

२ दोहा नामक छंद का एक भेद विशेष ।

वि वि—देखो 'मरकट' (७)

३ राठीठ वष की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

उ०—'नारण' 'केसव' तरुण निर्भ नर । वध्नर नील जिसी वळ वानर ।

—रा. रू

४ भाटी वग की एक शाखा ।

५ बढई का एक श्रांजार विशेष ।

रू. भे—बदर, वनर, वन्नर, वादर, वानर, वनर, वन्नर, वनर वन्नर, वादर ।

अल्पा—वदरियो, वादरियो, वादरो, वानरडी, वादरो, वानरो ।

६ देखो 'बदर' (रू भे)

वानरमाळ—देखो 'वादरमाळ' (रू भे)

उ०—हे पान अणावो ए मारी जच्चा राणी रे ताम रा, हे जठे पूरवि छे वानरमाळ ए ।

—लो गी

वानरमुख—स पु—नारियळ । (अ मा)

वानरी—वि [स वानर—ई प्रत्य] १ बदर की, बदर सम्बन्धी ।

२ बदर के समान ।

उ०—रूखारा लूट रामचद री वानरी सैन्या ज्यो रीछा री जमात सा निजर आवं छे ।

—रा. सा स

स स्त्री.—१ कंवाच, कीछ ।

२ देखो 'वानर' (स्त्री)

वानरो—देखो 'वानर' (अल्पा., रू भे)

उ०—डाडू डोरी हरि के हाथ है, गळ माहि मेरे । बाजीगर का वानरा, भावं तहा फेर ।

—दादूवाणी

वानवासिका—स स्त्री. [स वानवासिका] सोलह मात्राओं का एक छंद विशेष जिसमें नवीं प्रारंभिक मात्रा लघु होती है ।

वांना—स. स्त्री [स] वटेर, लवा ।

वानायुज—देखो 'घनायुज' (रू भे) (डि ना. मा.)

वानावध, वानावधण, वानावधण—देखो 'वानावध' (रू भे)

वानो—स स्त्री—१ भम्म, विभूति, रास ।

उ०—१ वानि अग वळेठ, मेसळी भुज पर मेली । ले माछदर नाम, साह तन कया सेली ।

—पा. प्र

उ०—२ दूध पाय मूढा मे वानी री चिमटी भुरकाती ।

—फुनवाटी

२ काती, दीप्ति ।

उ०—जोम अनग सी गुणी जवानी । वप व्हे कनक सोळिमां वानी ।

—सू प्र.

रू भे—वाणी ।

वानोर—स पु [स वानीर] १ वंत ।

मर सबळा आगं निवल, नीर घर्क वानीर । वाय घर्क अण जाय वच, भलो नमण गुण भीर ।

—वां दा.

२ पाकर का पेड ।

(सभा)

वानि—क्रि वि—१ ओर, तरफ ।

उ०—हिंदवा छात दीय वात ले हानियो, वाळग्यो आक जुग चिह्न वाने ।

—दुरसी आढी

वानेत, वानेत—देखो 'वानेत' (रू भे)

उ०—१ मुख वानेत महीपती, करन' अर्न चद्रमांण । कियो सकोधा साम कज, या जोधा आराण ।

—रा रू.

उ०—२ तरं अजव' भड तंडिया, वड रावन वानेत । मार मार मुख मुख मुणी, वाह प्रळव वरदंत ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाटेल री वात

उ०—३ वेनी महि विरदंत, जेठी गोवरघन जिसा । 'करनाजळ' अणवर कन्है, वडजानी वानेत ।

—घचनिका

उ०—४ रिण पाळें भगडा विना दुमनी रहै लाज इतरी के चित में ही नही समावें भगडा री वेळा पाछा पग दे नही जाणें लाज रा लगर पडिया है । उण वीर नें वानेत रुहणी ।

—बी. स. टी.

वानोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वानोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

वानो—देखो 'वानो' (रू भे)

उ०—१ वानो देखे वादिये, वया करणी सू काम ।

—अग्यात

उ०—वाना श्रीं हद् विहद्, लाल सपेत न्याह जरद्ह ।

—गु रू वं.

उ०—३ वीर सिंगार चर्द वाना । पहरें अतर धरोर्ग पाना ।

—सू. प्र

उ०—४ वणिया गजा तरुं सिर वाना । मिलिया तुळ रजी असमाना ।

—रा रू

उ०—५ सत्रजे जरदाई लाल सिहाई वाने छापी प्रहमठ । पररा वरगका फावी कटकका जाणक फून वन-सठ ।

—गु रू व

उ०—६ इद्र समीवर जाणिये, रिद्धि वनी राजा नी रे । गुनह वमं निज प्रजा तणी, दिन दिन वधते वानी रे ।

—वि कु

उ०—७ जिक् चहीजै सू सरव थानू दिरावीस, थाहरा घणा वांना करीस, अर थे मागिस्यो सू राजा देसी । —सयणी री वात

वावासणौ, वावासवौ—क्रि स —जोश दिलाणा ।

वांवासियोडौ—भू. का कृ.—जोश दिलाया हुआ ।

(स्त्री. वावासियोडी)

वाम—देखो 'वाम' (रू. भे)

उ०—वसती री हुवै वाम, वेठ नह काढणी । कामेती हुकम हुवै घणी । बाकी किरण री बीह, खुसी से खेलणा, ऐता दे करतार फेर नई बोलणा । —अग्यात

वामण—१ देखो 'वामण' (रू. भे)

उ०—सवळ सेन साथइ बहु थट्ट, याचक मगण वामण भट्ट । —डो मा

(स्त्री वामणी)

२ देखो 'वामी' (स्त्री)

वामणी—स स्त्री —१ मेवाड की एक नदी ।

उ०—नदी तीन री विगत —१ चावळ, १ वामणी, १ पगघोई । —नैणसी

२ देखो 'वामण' (स्त्री.)

३ देखो 'वामी' (पु)

वामी—देखो 'वामी' (रू. भे)

(स्त्री. वामण)

वामण—देखो 'वामाण' (रू. भे.)

उ०—१ राठीड रचेवा रणाताळ, वामण डहे बीजळा भाळ । बावै कदीळ सधे विवाण, कोसीस भुजै दीना कवाण । —गु रू व

उ०—२ वडफर भुज वामण, सभे दक्खण भुज सावळ । जाम विक्ख भरि जमी, वहसि असि चडे अतुळवळ, । —सू. प्र.

वाम—स. पु [स वाम] १ शिव, महादेव ।

२ एक रुद्र ।

३ काम देव । (अनेक)

४ सूर्य ।

५ कृष्ण का एक पुत्र ।

६ चन्द्रमा के रथ का एक घोडा ।

७ जन्तु ।

८ सर्प ।

९ स्तन, फुच ।

१०—चीवीस अक्षरो का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होता है ।

११ छै मात्राओ का एक मात्रिक छंद ।

[म व्याम] १२ लवाई का एक नाप जो दोनो भुजाओ की दोनों

और फैलाने पर एक हाथ की उगलियो के सिरे से दूसरे हाथ की उगलियो के सिरे तक की लवाई का होता है । (उ र)

१३ घन, सम्पत्ति ।

स. स्त्री —१४ सर्पाकार चितकवरी मछली विशेष ।

१५ पृथ्वी, भूमि । (डि. ना मा)

वि. [स. वाम] १ बाया, दाहिने का विपर्याय ।

उ०—ऊससै घणै उछाह, चाप वाण धरै चाह । वाम हाथ लीध वाह, जीमणै कसीस जाह । —र. रू.

२ बाई और स्थित, वामभागस्थित ।

उ०—दिस दिक्खण खेडिया, पीठ उत्तराध विचारै । सकत वाम सुरराय, सोम दाहिणे सभारै । —रा रू

३ उल्टा, आँधा ।

४ विरुद्ध या विपरीत स्वभाव का ।

५ कुटिल स्वभाव का । (अ मा, अनेक)

६ दुष्ट, नीच ।

७ मनोहर, सुन्दर । (अ मा, अनेक.)

रू. भे —वाम ।

८ देखो 'वामा' (रू. भे) (अ मा, ह. ना. मा)

उ०—१ पास सहेली पीव रै, वण यू ऊभी वाम । निसरे चावक नेह रा, लोपै लाज लगाम । —अग्यात

उ०—२ सुंदर सोभत घणस्याम, तडिता पट-पीत छिव ताम । वाम अग सीना वाम, रूप अनग कौटिंग नाम । —र ज प्र

उ०—३ मणौ आप री देस री, और वाम री नाम । आमद कुण से देस ते, इत आये की काम । —पच दंडी री वारता

वामअरघपादासन—स पु [स वामार्घपादामन] योग के चौरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन विशेष ।

वि वि —इसमे वाये पाव की पिंडली दबाकर उसी पाव की दाहिने पाव के घुटने पर रख दिया जाता है, तथा दाहिने पाव की एडी दाहिने भाग की जघा के निम्न भाग के लगाकर बँटा जाता है । इसका विपरीत दक्षिणार्घपादासन होता है ।

वामजान्वासन—स पु —योग के चौरासी आसनो मे से एक ।

वि वि —यह दक्षिणजान्वासन से विपरीत होता है ।

वामण—१ देखो 'वामन' (रू. भे) (ह ना मा)

उ०—१ असनिकुमार अग्नि वन आखौ, देवनाथ महि वामण दाखौ । समद प्रजापति आदि सुरेसर, कमधा घणी तणी रक्षा कर । —रा रू

उ०—२ सखी अमीणी साहिबी, सूर धीर समरत्थ । जुष मे वामण डड जिम हेली वावै हत्थ । —बा. दा.

२ देखो 'वामण' (रू. भे)

४०—वामण वरण प्रताप विधि, हिम पित गौरी विहन ।

—रांमरासी

(स्त्री वामणी)

वामणदेव—देखो 'वामन'

वामणो—वि [स वाम] (स्त्री वामणी) १ विरुद्ध, प्रतिकूल ।

४०—सहू को देखो वामणो, न्यप कन्या स्त्रीपाल । कुमरी वर वरवा भणी, कठ ठवी वरमाळ ।

—श्रीपाल

२ तिरछा, टेढा ।

वामदक्षिणपादासन—स. पु—योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें बाये पांव को लंबा करके दाहिने पाव पर खड़ा रहना पड़ता है ।

वामदक्षिणस्वामगमनासन—स. पु—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि वि—इसमें दाहिने पैर के घुटने को दाहिने हाथ की बगल में रखकर शरीर का बोझ उसी पर दिया जाता है, तथा बाये पैर को घुटने से मोड़कर उसकी एड़ी उसी तरफ की जघा के निम्न भाग को लगाकर गुदा ऊंची करके बैठना होता है ।

वामदेव—स. पु. [स वाम+देव] शिव, महादेव । (ह ना मा.)

६ भे—वामदेव ।

वाम देवी—स स्त्री [स वाम+देवी] १ दुर्गा ।

२ सावित्री ।

वामन—स पु [स वामन] १ ईश्वर ।

२ विष्णु भगवान के पांचवे अवतार का नाम, जो बलि राजा को छलने के लिये लिया था । (अ मा)

४०—प्रीतावर मु प्रीति पहिलकी, ते ता मुद्ई जाणई । मछ कोरम वाराह नारसिध, वामन फरस वखाणई । —रुक्मणी मगळ

४०—२ मछ वाराह घरणीवर, नारसिह वामन करणा कर । —गजठडार

३ बीना या ठिगना आदमी ।

४ विष्णु ।

५ शिव ।

६ दक्षिणी दिग्गज का नाम ।

७ अठारह पुराणों में से एक ।

८ काशिका वृत्ति के रचयिता का नाम ।

९ अक्रोट वृक्ष का नाम ।

वि.—१ छोटे डील का, ठिगना, बीना, नाटा, सर्व ।

२ नम ।

३ नीच, कमीना, घाट ।

६. भे.—वामण, वामन, वावन, वावन्न, वामण ।

अल्या.—वावनियी, वावनी, वावन्यू ।

(स्त्री वामनी)

वामनजयती, वामनद्वादसी—स स्त्री—भाद्रपद मास के शुक्ल-पक्ष की द्वादसी ।

वि वि—यह वामन भगवान का जन्म दिन माना जाता है । इस दिन व्रत रखा जाता है व वामन भगवान की पूजा की जाती है ।

वामपदग्रपानगमनासन—स पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि वि—यह दक्षिणपादग्रपानगमनासन से विपरीत होता है ।

वामभुजासन—स पु—योग के चौरासी आसनों में से एक ।

वि. वि—इसमें बाये हाथ की टेढ़नी मोड़ कर भूमि पर रख दी जाती है तथा उम हाथ की हथेली को गाल पर लगा कर शरीर का बोझ डाल कर बैठ जाता है तथा पीछे दोनों पांवों को मंजु-चित्त करके बाये पाव पर दाया पाव रखकर दाहिना हाथ उस पर रख दिया जाता है ।

वाममारग—स पु [स. वाममार्ग] वेद विहित दक्षिण मार्ग के विरुद्ध एक तांत्रिक मत जिसमें मद्य, मांस, व्यभिचार आदि निषिद्ध तत्वों का विधान रहता है ।

६ भे—वाममग ।

वामराड—वि—देवी 'वावराड' (६ भे)

वामनोचना—स स्त्री [स वाम+लोचना] १ मुदर-स्त्री ।

२ स्त्री, नारी । (अ मा, ह. ना मा)

वामवक्रासन—स पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जो दक्षिण-वक्रासन के विपरीत होता है ।

वामसाखासन—सं पु—योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जो दक्षिणसाखासन के विपरीत होता है ।

वामसिद्धासन—स पु.—योग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें बाये पैर की पुढी सिवनी में लगाकर दाये पैर के सम्मुख लंबा करके बैठना होता है ।

वामसर, वामसुर—स पु [स वाम-सुर] महादेव, शिव । (ना. मा)

वामहयो—स. पु—अयान में अशुभ चोरी वाला घोटा ।

वामहस्तचतुस्तोणासन—स पु [स वामहस्तचतुस्तोणासन] योग के चौरासी आसनों के अन्तर्गत एक आसन जिसमें दाहिने पैर को घुटने से मोड़कर बैठना होता है तथा पीछे बाये पाव के पंजे को बाये हाथ की टेढ़नी में लगाना तथा दाहिने हाथ की उगलियों पर परस्पर बिठाना होना ।

वामहस्तभयकरासन—स पु.—योग के चौरासी आसनो मे से एक जिसमे बाये हाथ को ऊचा रखकर पलथी मार कर बैठना होता है ।

वांमाग-वि. [स वाम-अग] १ बायें अग का, बायें अग सम्बन्धी ।

२ बायें अग की ओर का ।

३ देखो 'वामागी' (रू. भे)

रू भे —वामाग, वामग ।

वांमागिनी, वामागी—स स्त्री. [स वामा + अगी] पत्नी, स्त्री ।

रू भे —वामाग ।

वामा—स. स्त्री [स वामा] १ धर्मपत्नी, स्त्री ।

उ०—देवी काम ही लोचना हाम कामा, देवी वासनी मेर माहेस वामा ।

—देवि

२ सरस्वती, शारदा ।

३ लक्ष्मी ।

४ रमणी, युवती ।

उ०—फूटै चीर सावळा नीसाण वार पार फूटै, माथा सत्रा तूटै जाणै हारा मोती लाल । छकै-पजै मेछा छळै वांमां हुवै अग्रामा छूटै, सग्रामा प्रजका लूटै वीजी रायासाल ।

—रावदेविसिंह सेखावत री गीत

५ सुन्दरी, स्त्री ।

६ पृथ्वी । (ना मा.)

८ दस अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगरण, यगरण और भगरण तथा अत मे एक गुरु होता है ।

रू भे —वामा ।

वाभाचार—स. पु [स. वामाचार] तांत्रिक मत का एक भेद, जिसमे पंच मकार—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मंथुन द्वारा उपास्य देव की आराधना की जाती है ।

वांमादेवी—स. स्त्री [स. वामदेवी] पारसनाथ जी की माता का नाम ।

उ०—अस्वसेन अग कुल तिली रे, वांमादेवी को नद । —वि. कु.

वामासर—स पु.—पाडल नामक वृक्ष । (अ. मा.)

वामी—क्रि वि [स वाम] बायी ओर, बाईं तरफ ।

उ०—महोदर वजर मुसटहु दाहैं मसत, दुरीमुख धूमनर धूम वामी दसत ।

—र. रू

स. स्त्री [स. वामी] १ घोड़ी ।

२ गधी ।

३ हस्तिनी ।

४ गीदडी ।

वि.—५ वाम मार्गी ।

रू. भे.—वामी ।

वांमीबद, वांमीबध—स. पु —१ राठीठों का विशेषण सूचक शब्द ।

२ राठीठ राजपूत ।

उ०—तपत वाण कीधी हर ताणिक । वांमीबध एरसै वाणिक । —सू प्र.

वि. वि —इनके साफ या पगडी का बध बाईं ओर होता है ।

३ गौड राजपूत ।

उ०—वापम वामीबध, कध अकध कहाणी, तान जिहा भजियो, पछ घर बतग पछाणै । —विनवरासी

रू भे.—बदवामी, बधवामी, वामीबद, वामीबध ।

वांमै—क्रि वि [स वाम] बाईं ओर ।

उ०—'दुरग' खडे' दक्खिण दिमा, अकअर सू हित प्राण्व । कर घर गुज्जर जीमणै, छप्पन वामै रास । —रा. रू

वांमौ—वि [स वाम] (स्त्री. वामौ) १ दाहिने का विपर्याय, बाया ।

उ०—सु लोहार की जु वांमौ हाथ । कस्तूजी री डील हुम्री ।

रुग्मइये की तरफ की देखै छै तव तपि प्रावै । रुग्मणीजी की तरफ देखै सीतल होय प्रावै । —वैलि टो.

उ०—२ पूठी वांमै दाहियै, आगळि अर्ग-वाण । राजा "गाजी साह" नू, राखदो रहमाण । —गु रू व.

२ प्रतिकूल, उल्टा, विरुद्ध ।

उ०—'वैणी' वहे जगत सू वामौ, नाहर अमर करण जग नामौ । सेरी घरा जावतौ सोयी, करणी मौज करारी कामौ ।

—वैणीदास साचोरा री गीत

३ दुष्ट, शठ, नीच ।

रू भे —वामी ।

वांयली—वि स्त्री. १ पिछली, पीछे की ।

२ देखो 'वसूली' (अल्पा, रू भे)

वादली—वि —(स्त्री वायली) पिछला, पीछे का, शेष ।

२ देखो 'वसूली' (रू. भे.)

वाये—देखो 'वासै' (रू भे)

वांरबो—स पु —वात रोग की एक प्राचीन चिकित्सा ।

वास-वि —१ वश का, वश सम्बन्धी ।

२ देखो 'वस' (रू भे) (उ र)

३ देखो 'वास' (रू भे)

उ०—१ चिगता उखेल पखरे चरित, रवले मेळ अमेळ कष । वध वेध बळ खळ वास ज्युं, दाह जळ उर साह दुख । —रा रू.

उ०—३ वेण बांस वासळी वजावण । धिनी मोहन राधिका घव ।
—ह. ना. मा.

बांसइ-प्रव्य —१ पीछे ।

उ०—१ के मेहल्या पूगळ दिसइ, किही भळाया भार । साल्ह कुंवर
करहइ चढचठ, बांसइ चाडि नार । —ढो. मा.

उ०—२ अस तरे सलीता अस्तराळ । कामाळा पूठी के कठाळ ।
ऊभारि तडगी पूरि अभ वासइ सहारि ब्रूहा विखभ । —रा ज सी

उ०—३ वादल कहे सह भलो, हइ आवीसीइ तुम नाम रे भाई ।
करपयी बांसइ कुमरजी, सवळी ऊपर सामि रे भाई ।

—प च चौ

२ निकट, समीप, पास ।

उ०—सूवा एक सदेसडउ, वार सरेसी तुझक । प्रीतम वासइ जाइ
नइ, मुई सुणावै मुझक । —ढो. मा.

बांसरी—१ देखो 'वसी' (रू. भे.)

२ देखो 'बासरी' (रू. भे.)

बांसली-वि स्त्री १ पीछे की, पिछली ।

उ०—१ रात पोहर १ वासली थी, सु सासरिया हालण दै नही ।
—नैणसी

उ०—तरै इण बांसली बात सोह माडनै कहयी । —नैणसी
रू. भे —वाहली ।

२ देखो 'वंसी' (रू. भे.)

उ०—१ क्षणु भुखि वाइ वासली, क्षणु करि वेणा ताळ । सीसि
मुगट पय घूचरी, गळि मोत्ताहळ माळ । —मा का प्र

उ०—२ बीणा ताल अदग वाज रहिआ छै । बांसली वाजि रही
छै । डोलका वाजि रही छै । —रा सा स

३ देखो 'बासरी' (रू. भे.)

वासळी, वासली-वि [स वश + रा प्र ली] (स्त्री वासली) १ वशज
सतान, वशके ।

उ०—१ तारा पातसाजी इण नू नरवर पटै दीनी । सू नरवर
आसकरण रा वासला राज करै है । —द वा.

उ०—२ सोम केहर री, देवडी लाछा रै पेट री । इण रै को दिन
विक्रूपुर हुती । तिण सोम रै बांसला सोम-भाटी छै । —नैणसी
वि —२ पीछे का, पिछला ।

उ०—१ गड बांसली भोमिया लीयो राणी । आंवावरी जात करने
गांव नांगदहै बाभणा रै आय डेरी कियो । —नैणसी

उ०—२ तिकी जखडी वासले आसण भीला सामी बंठी ।
—जखडा मुखडा भाटी री बात

३ शेष, अविशष्ट ।

उ०—राव दूदें सू लडाई कीवी । सु राव दुदी काम आयी । अर
आकृतसा पण काम आयी, घडी ५ तथा ६ दिन बांसले यकै ।

—नैणसी

रू. भे —वासली ।

वासा-स. स्त्री [देशज] १ घोडे की जीन ।

२ देखो 'वास' (रू. भे.)

उ०—१ कासम परखै जोस कमघा, एक घकै हुयगी ऊवंघा । भाजै
श्राप गयी मक भीता, वासा लोक लखै सुख बीता । —रा. रू.

उ०—२ वासा सू ऊदैजी तरवार काठ अर वाही सु विघड हूआ ।
—नैणसी

वासावळी—१ देखो 'वासावळी' (रू. भे.)

२ देखो 'वसावळी' (रू. भे.)

३ देखो 'वासवाळी' (रू. भे.)

वासियो-स पु —१ वास का वना अनाज बोने का एक उपकरण ।

(शेखावाटी)

वि वि.—देखो 'नाई' १

२ एक अर्द्ध चन्द्राकार गोल घडा हुआ पत्यर ।

रू. भे —वासियो ।

वासी-क्रि वि —पीछे ।

उ०—सो प्रोहित चाल जागळू आयी । माळी रै घर डेरी लियो ।
रात रही । परभात खबर लीवी । सो कुवर तो सिकार चढ गयो ।

तद प्रोहित पिण वासी चढ गयो । —कुवरसी साखला री वारता

२ देखो 'वसी' (रू. भे.)

वासै-क्रि वि —१ पीछे से, पीछे ।

उ०—१ केहर मत वाळक कही, देखी, जात सुभाव । वासै देखै
वाहरा, परत न छडे पाव । —वा दा

उ० - २ करही कथ कुवेरिया सुगणी मार सग । वासै उमर सुमरी,
ताता खडे तुरग । —ढो. मा.

उ०—हुरम कवीला रिठ तर, साथे भीर प्रचड । इण वासै कर-
चल्लियो, आसा खड विसड । —रा रू

२ पद्चात वाद में ।

उ०—१ 'सत्ती' चूण करणोत, राव रणमल साथे चीतीड काम
आयो । 'सत्ता' री राव रणमल सू बोल हुती—“था वासै हू नहीं
जीवू” । —नैणसी

उ०—२ ताहरा सयणी तो हीमाळ नू हाती । वासै छात मे दिन
बीजाणद आयी । —सयणी री बात

३ शेष, बाकी ।

४ समीप, पास ।

उ०— राणी अजमेर कितरा एक दिन रहसी । सवारे सोह साथ वांसी छै, तिकै भेळा करनै जाय अजमेर लेस्या ।

—राव मालदे री बात

५ साथ मे ।

६ मदद में, इमदाद में ।

उ०— वीकाणी देसाणी वांसी । करनादे पलटै किम कोट ।

—द दा.

वि—७ अधीन, अन्तर्गत ।

उ०—१ किसनावत भाटियां रा गाव आगे ती पृगळ वासै हुता हमें तो वीकानेर वासै छै ।

—नैणसी,

उ०—२ आ खरड विकूपुर सू जुदी जेसळमेर वांसी, जुदी चाकरी करै ।

—नैणसी

रू. भे.—वासा, वांसे बासै, वसै, वाये, वांसा ।

वांसीली—देखो 'वसूली' (अल्पा, रू भे.) (उ र)

वासोली—देखो 'वसूली' (रू भे)

वांसो—स पु—१ पीछा ।

उ०—१ सोनगरां अर राव तीडेजी रै वेढ हुई । सोनगरा रा पग छूटा । तरै राठीडा वासो कियो ।

—नैणसी

उ०—२ कान्हे नू मारियो । वित री वासो कियो । मेर ज्यू, ज्यू, लाघा, त्यु मारिया ।

—नैणसी

२ पीछे का भाग, पीठ ।

उ०—१ तरे राजा री वासै सु राठी फाडने वाळक काडियो ने पाटी वाड्यो ।

—रा. व वि

उ०—२ कछव कछवाह वासो पलट करै किम । वसुह ची माड विहै भडा वासै ।

—महियारियो पुरी

३ साथ ।

४ मदद, इमदाद ।

५ वेंट, दस्ता, मूठ ।

६ देखो 'वास' (अल्पा, रू भे)

रू भे—वासो ।

वांह—देखो 'वाह' (रू भे)

उ०—चाचर सूर पकर गह, चाचर चाडै देग । लख लहै दुहु वाह बलि, दुइ दुइ वर्ष तेग ।

—गु रू व

वाहडी—देखो 'वाह' (अल्पा, रू भे)

उ०—रतन मे राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक लोडै । स्वाति नौ विंदलो नासिका निरमयो, आज आल्यगन अस्त क्रोडै ।

—रूकमणी मगळ

वांहणी—देखो 'वाणी' (रू. भे.)

उ०—तिण गाव कूवी १ छै, तिण पाणी निपट मीठी पालर सारीली छै, उठारा वाहणा पाणी सहर आवै छै ।

—नैणमी

वांहळी—देखो 'वाळी' (अल्पा, रू भे)

वाहली—१ देखो वसी' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'वासली' (रू भे)

वाहोली—देखो 'वसूली' (रू भे)

वा—सवें स्त्री—१ वह ।

उ०—१ कुळवती सूं फीत रो, उलटो है आचार । वा न तजै घर आपरो, जग इण री सचार ।

—वा दा.

उ०—२ पडसी जद काम दोडसी पाळी, दाढघाळी अगुरा भुजडाण वा आवै ऊपर इकताळी, देसणोक वाळी दीवाण ।

—अग्यात

२ उस, उन ।

उ०—१ राज पद पावै या कहावै राजकुळ मे । गायो कवि गुन कै बतायो वा को महावीर ।

—ऊ का

उ०—२ म्हारी गळिया ना फिरै, वा के आगण डोले हो । म्हारी अगुळी ना छुवै, वा की बहिया मोडे हो ।

—मीरा

अव्य.—१ अथवा, या ।

उ०—सिधासणी वा इद्रासणी वा प्रियीपती वा सरगपती वा । अत्रित सुरी वा अत्रित नरी वा, दिलीसरी वा जगदीम री वा ।

—गु रू. व

२ श्रीर, तथा, भी ।

३ जैसा, सदृश ।

४ विकल्प या सन्देह वाचक ।

५ समाप्ति सूचक अव्यय, इत्यलम, वस ।

उ०—पेट रा आनरा गळै चढै जद वात कहीजै । लारला भी री थनै मागत चूकावू । कमसल रा मूडा सूं वा तौ निकळै ई कोनी ।

—फुलवाडी

स. स्त्री—१ अवा । (एका)

२ विकलय । (..)

३ प्रेम, स्नेह । (..)

४ अति । (..)

५ प्रहार, चोट । (..)

६ देखो 'वायु' (रू भे)

उ०—पछि चंद देस ता आवी, मि नवी जाणी मासी । वा वाइ तेह्ना ओलवा लीजि, थई रही तिहा वासी ।

—नळास्यान

रू भे.—वा ।

घा'—१ देखो 'वाह' (रु भे)

२—देखो 'वास' (रु भे)

घाघ्रणी—१ देखो 'वाहनी' (रु. भे.)

२ देखो 'वाहणी' (रु भे.)

घाघ्रणी, घाघ्रणी—१ देखो 'वाजणी, वाजवी' (रु. भे) (उ. र.)

उ०—सीयाळउ तउ सी पडइ, उन्हाळइ लू वाइ । वरसाळइ भुइ
चीकणी, चालण रती न काइ । —ढो. मा.

२ देखो 'वावणी, वाववी' (रु भे)

घाघ्रवी, घाघ्रवे—देखो 'वासवे' (रु भे)

घाघ्रळी—देखो 'वाळी' (अल्पा., रु भे)

घाघ्रली—देखो 'वा 'ली' (रु. भे.)

वाइटी—देखो 'वाइटी' (रु भे)

वाइवी—स. पु [दिशज] फूस, कचरा

वाइ—स स्त्री. [स वाद] १ आवाज, ध्वनि ।

उ०—कुम्हिया कळिअळ कियउ, सुणी उ पखइ वाइ । ज्याकी
जोडो वीछडी, त्या निसी नीद न आइ । —ढो मा

२ देखो 'वायु' (रु भे)

उ०—१ वदीवाळू घणा सीदाता, वीठा पाडइ ढाडि । दिसि अगासई
तावडि दाभइ, रातइ वाइ ताडि । —का दे प्र.

उ०—२ माघे वाइ माहावठी, सीत करइ सचार । माहरइ माघव
सरण थी, लागइ नही लगार । —मा का प्र

३ देखो 'वापी' (रु भे)

उ०—सरोवरा तटाक हौद, तीरथ प्रमाण ए । वावी अनूप रूप वाइ,
नीभरि निवाण ए । —गु रु व

४ देखो 'वादी' (रु भे)

उ०—वाइ करडि केसरि किसोर, जिणपत्ति जईसू । पुणवि
जिणेसर सूरि सिद्ध, आरंभिय सीसु । —धरम कलस मुनि

५ देखो 'वाई' (रु भे)

वाइक—स पु.—१ मित्र, दोस्त । (ह. ना मा)

२ देखो 'वाक्य' (रु भे)

उ०—तो 'केहर' कहिजे सताव, वाइक विगताळा । कूदि पडा गज
कदहडा, चडि गोल विचाळा । —सू प्र

३ देखो 'वायक' (रु भे)

वाइकचर—स पु. [स. वाक्य+चर] श्रवण, कान । (ह ना मा.)

रु भे.—वायकचर ।

वाइड, वाइडि—देखो 'वायड' (रु भे)

वाइडियो—देखो 'वायडियो' (रु. भे)

उ०—मेळी कहे—मिखराजी । हू तो वाइडियो छू । कह्यो—
उठी ठाकुर भमल करो । —ऊदे उगमणावत री वात

वाइडो—देखो 'वायडो' (रु. भे)

वाइणो, वाइवो—१ देखो 'वावणी, वाववी' (रु भे.)

२ देखो 'वाजणी, वाजवी' (रु भे.)

उ०—अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रम्य थइ, विली वाउ वाइवा लाग,
तलानी माटी ऊपरि आणइ । —व. स

वाइवी—देखो 'वादी' (रु भे)

वाइन—स पु [अ] शराव ।

वाइफ—सं स्त्री [अ.] पत्नी, जोरू, स्त्री ।

वाइमल्ल—स पु.—वादियो मे मल्ल ।

उ०—मिगसर वदी छट्ट प्रभारइ, मिलिआ पतिसाह संघातइ ।

वाइमल्ल वोलायउ पिछाणी, साहि वान सहू गुदराणी ।

—कवि कनकसोम

वाइयोडो—१ देखो 'वाजियोडो' (रु भे.)

२ देखो 'वावियोडो' (रु भे)

(स्त्री वाइयोडो)

वाइर—देखो 'वीर' (रु. भे)

उ०—कहियो जो म्हारा घर सु उठीया म्हारी वाइर थानुं मूकिया
तै म्हारी वडाई । —चौवोली

वाइरियो, वाइरी—देखो 'वायरी' (अल्पा, रु. भे)

वाइरी, वाइलउ—देखो 'वायरी' (रु भे) (उ र)

वाइस—१ देखो 'वायस' (रु भे)

उ०—ढोला, मिळिमि म वीसगिसि, नवि आविसि ना लेसि ।

मारुं-तणइ करकडइ, वासइ ऊडावेसि ।

—ढो. मा.

२ देखो 'वाईस' (रु भे)

वाइसचांसलर—स पु [स] किसी विश्व विद्यालय का उपकुलपति ।

वाइसचेयरमेन—स पु [अ] १ उपसभापति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसप्रेसिडेंट—स पु [अ] १ उपराष्ट्रपति ।

२ उपाध्यक्ष ।

वाइसराय—स पु [अ] अंग्रेजी शासन-काल का भारत का सबसे बड़ा

शासक, जो सम्राट का प्रतिनिधि होता था ।

वाइसी—देखो 'वाईसी' (रु. भे)

वाइटी—देखो 'वाइटी' (रु भे)

वाई—स. पु—युवा वेलो को कृपि कार्य व गाढी मीचने के निचे निश्चित
करने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया से शिक्षित वल ।

उ०—वाई पय प्रायं हुवं, चचल गति तिण नाहि । राय कहे वछ माहरं, तु वसीयो मन माहि ।
—वि. कु

क्रि प्र—करणी, काडणी ।

३ देखो 'वादी' (रु भे)

रु. भे—वाई, वाइ ।

३ देखो 'वायु' (रु भे)

उ०—सकसे का जंत वार, अकसे का वाई । रहणी में जोगेस्वर, वहणी में जगदीस ।
—रा. रु.

वाईदडी—देखो 'वायडो' (रु भे.)

वाईसी—देखो 'वाईसी' (रु भे)

वाड—देखो 'वायु' (रु भे) (उ र)

उ०—१ भिल्ले राग वागा मुठी वाड भल्ले । चतुरवाह रा रत्य ज्यू पत्य चल्ले ।
—वचनिका

उ०—२ वनिता समई न वेदना, करता कोडि उपाय । वाड विलोलइ वीजणइ, को चदन घसी लाय ।
—मा का प्र.

उ०—३ हेमत रित लागी पछिरी वाड फिरियो । उतराघो वाड, वाजियो ।
—रा सा. स

वाडकाय—स पु—वायु के जीव, वायु मे रहने वाले जीवाणु ।

उ०—जद स्वामीजी कहाँ—ओ पाणी कठै पडसी ? जद तिण कहाँ—हेठै पडसी । स्वामीजी कहाँ—इहा पाणी पडता वाडकाय आदि जीवा री अजयणा व्हे ।
—मि द्र

वाडघर—स पु [अ] हिंसाव के व्यौरै का कागज, प्रमाणक ।

वाडदेवता—देखो 'वायुदेवता' (रु भे)

उ०—जका राजधानि त्रिकुट परवत गढ जीणइ अत्यु बाधी पातालि घालिउ, नवग्रह खाट तणइ पाईइ बाध्या, वाड-देवता आगणउ बुहारइ, चउरासी देव छ डउ देइ ।
—व स.

वाडमडळ—देखो 'वायुमडळ' (रु भे)

उ०—मितलें खूरम 'भीमेण' अत दिन मछर, विठै वीछोडिया खागवाहे । पडे गज सबळ घरमडळ ऊपरा, मिळै गज-कमळ वाडमडळ माहे ।
—चतरी मोतीसर

वाडल—१ देखो 'वयूळी' (मह., रु भे) (उ र)

२ देखो 'वावळ' (रु भे)

३ देखो 'वावळ' (रु भे.)

वाडलउ—१ देखो 'वावळी' (रु भे.) (उ र)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा, रु भे)

वाडळि, वाडळी—१ देखो 'वावळी' (स्त्री) (उ र.)

२ देखो 'वावळी' (रु भे)

३ देखो 'वावळ' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—१ जीव जजाले उलझ्यो ज्यु जोगि जटा, पाचे पाम मभार ख्यूं भोमरमे भटा । नाणें मन मे घरम करे साटा नटा, घेरी ज्यासे षाल जेम वाडळि घटा ।
—घ व. प्र

उ०—२ केसरि कथन्न सामळि कनि, वाडळि कि वनि लागड वहनि । 'वीका' हर राजा ए चव्वाण, जाळोवळि सीतउ ध्रित जाण ।
—रा ज सी.

वाडलीउ—देखो 'वावळ' (अल्पा, रु भे)

उ०—वालु नड वेवानर, वेठ वेतस वाणि । वघाण वाहलु लीउ, वाडलीउ वखाणि ।
—मा का. प्र

वाडळी, वाडली—१ देखो 'वावळी' (रु भे.)

उ०—सरसती न सूभे वाडवा हुयो कि वाडळी । मन सरसती घावतो मूढ मन, पहि किम पूजे पाणुळी ।
—वेलि

२ देखो 'वावळ' (अल्पा, रु भे)

(स्त्री वाडळि, वाडळी)

वाडवी—वि [स वातिक] वात रोग अस्त (लवार) वाचाल ।

उ०—सरसती न सूभे ताइ त सोभे, वाडवा हुयो कि वाडली ।
—वेलि

वाडसू—देखो 'वावसू' (रु भे)

उ०—भारी कटकर घर धुसइ भारि, आविद्या वाडसू सरि उतारि । हलहलिय देस हइवइ हुवासि, तडवागे पडिया लोक आसि ।
—रा. ज. सी

वाएक—१ देखो 'वाक्य' (रु भे)

उ०—राइ-वाएक । —कल्याणसिध नगराजोत वाडेल री वात २ देखो 'वाक्य' (रु भे)

वाएरी—देखो 'वायरी' (रु भे.) (अ मा)

वाओकळी—स पु [स. वायुस्थलम्] हवादार व खुला स्थान ।

वाक—स स्त्री [स वाक्] १ सरस्वती, शारदा । (ह ना मा.)

२ जिह्वा, जीभ ।

उ०—कमघ-अगजी विभनी कहियो, वड दाता कीरत चौ वीद । वाक तुहाळी करडी वाळी, काळी भू वाळ कासीद । —ओपी आढी

३ वाणी, वचन, वाक्य ।

उ०—विदेह प्रतग्या कहै एम वाक । पुत्री जो वरै सो ज तारण पिनाक ।
—सू प्र.

४ आवाज, ध्वनि ।

५ देखो 'वाकी' (मह., रु भे)

रु. भे—वाक ।

बाकई—क्रि वि. [अ वाकिई] यथाथं मे, वास्तव मे, वस्तुतः ।

रू. भे.—वाकेई ।

बाकचपल—वि. [सं वाकचपल] बहुत बोलने वाला बातूनी, लवार ।

बाकप—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—वासा थी साहजादाजी सुं किराहीक मानम कीयो, कावी अयु मेडत वरस २ रह्यौ छै, उठा रो बाकप छै । —नैणसी

बाकपटु—वि [स. वाकपटु] वातो मे या बोलने मे चतुर ।

बाकपति—स पु [स. वाकपति] १ वृहस्पति ।

२ विष्णु ।

३ सत्य देवो मे से एक ।

बाकपतिराज—स. पु [स वाकपतिराज] १ भव भूति का समसामयिक एक कवि जो राजा यशोवर्मा का आश्रित था ।

२ सीयक का पुत्र मालवा का एक परमार राजा ।

बाकफ—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

बाकफियत—स. स्त्री [अ वाकफियत] १ जान कारी, परिज्ञान ।

२ अनुभव ।

रू. भे —वाकवियत ।

बाकब—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—रतना इमरती सुं भात भात पकी कीवी । भिन भिन बाकब कर दीवी । भात भात री बुराका चढाई, सूवा ने पढावै इण भात पढाई । —र हमीर

बाकबदार—देखो 'वाकिफकार' (रू. भे)

बाकवियत—देखो 'वाकफियत' (रू. भे.)

बाकबी—देखो 'वाकिफ' (रू. भे)

उ०—अबै करौं ज बाकबी हुगीगत अवेलेन । प्रचट जूझ मल्लन बुलाय वीर पाने । —पा प्र.

बाकयी—देखो 'वाकियी' (रू. भे)

बाकळ—स पु. [सं. वाक्पकल] १ बूए का पानी ।

२ पवार वसोत्पन एक देवी । (वा. दा न्यात)

[स वत्कल] ३ एक वस्त्र विशेष ।

उ०—रत्न कमल छाइल मकजल अराल सावला उगसाला वाला पदुला बाकला घनवेलि । —व स

रू. भे.—बाकळ ।

बाकळा—देखो 'बाकळा' (रू. भे)

उ०—बाकळा यळा सोह छोडसी वकायत, वायरा वकायत ठीक बहुथी । पला मत्र न माभी लियो पाप रो, राज मत्र खीलियो थकी रहसी । —भेरू दान वारहठ

बाकवाणी—स. स्त्री. [सं वाकवाणी] १ सरम्बती शारदा ।

२ वाणी ।

रू. भे.—बाकवाणी, बाकवानी ।

बाकसाळी—सं स्त्री. [स. वाक्+शालिन्] एक देवी जिसकी वाणी प्रभावशाली हैं ।

रू. भे.—बाकसाली ।

बाकानवीस—वि. [अ वाकिअ नवीस] १ घटना, वृत्तान्त वा हाल लिखने वाला ।

उ०—हलकारा बाकानवीस कुफियानवीस डाक चौक्या अरज लिखे दिन रात ।

—प्रतापमिध म्होकमसिध री वात

२ इतिहासकार ।

३ सवाद-दाता ।

बाकार—स. स्त्री —१ ललकारने की क्रिया या भाव ।

२ ललकार, वीरहाक ।

३ सम्बोधन करने की क्रिया या भाव ।

४ विरूदाने की क्रिया ।

५ पुकार ।

६ व अक्षर या वर्ण

रू. भे.—बकार, बाकार, वकार ।

बाकारणो, बाकारवो—क्रि स [स. वक्र आकारण] १ युद्ध के लिये ललकारना ।

उ०—१ वैह ती पेव पतसाह बाकारियो, टाळ अन करे मन जही टाळियो । —द. दा.

उ०—२ कर हथनाळ कलाइया दे घनुस टकार । सर गए ऊपर साधन, वळिया दळ बाकार । —पा प्र.

उ०—३ विळकुळियो वदन जेम बाकार्यो, सग्रहि घनुव पुणच सर सधि । क्रिसन रुकम अउघ छेदण कजि, वेतखि अणी मूठि द्विठि बधि । —वेलि

२ उत्तेजित करना, जोश दिलाना ।

उ०—वयणै बाकारियो ताम माभी गज केसरी । पवन पूर ऊफणै, जळण जाणै वन अतरि । —गु. रू. ब.

३ आबहान करना

४ सम्बोधन करना, पुकारना, बुलाना ।

५ प्रशंसा करना ।

बाकारणहार, हारी (हारी), बाकारणियो—वि० ।

बाकारियोडी, बाकारियोडी, बाकारयोडी—मू० का० टू० ।

बाकारोजणो, बाकारोजवो—कर्म वा० ।

धकारणो, धकारवो, धाकारणो, धाकारवो, भकारणो, भकारवो
भखारणो, भखारवो, धकारणो, धकारवो —रू भे

धाकारियोडो-भू का कृ —१ युद्ध के लिये ललकारा हुआ. २ उत्ते
जित किया हुआ, जोश दिलाया हुआ. ३ आह्वान किया हुआ
४ सम्बोधन किया हुआ, पुकारा हुआ, बुलाया हुआ ५ प्रशसा
किया हुआ ।

धाकावत-स. पु —कछवाह वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति
—बा दा ख्यात

धाकिक-स स्त्री. [अ] १ जानकारी, खबर, पता ।

२ ज्ञान, अनुभव ।

धि —१ किसी बात की जानकारी रखने वाला, जानकार ।

२ अनुभवी, ज्ञाता ।

रू भे.—वकूफ, वाकप, वाकफ, वाकव, वाकवी ।

धाकिकफार-धि [अ धाकिकेफार] १ किसी बात की जानकारी रखने
वाला, जानकार ।

२ अनुभवी, ज्ञाता ।

रू भे —वाकवदार ।

धाकिमि—१ देखो 'वाकम' (रू भे)

उ०—नर समद साहण समद नरियद । जुधि मयद धाकिमि विद
राजिद । —ल. पि

धाकियो-सं पु. [अ धाकिय] १ कोई घटना, दुर्घटना ।

२ वृत्तान्त, हाल, चर्चा ।

३ समाचार, खबर ।

रू —वाकूओ, वाकयो, वाको ।

धाकी—देखो 'वाकी' (रू. भे)

उ०—१ धरिया तन का क्या गुमान है, जम सूं कुरण धाकी ।
—केसोदास गाडण

उ०—२ तद कुवर कहाँ, कई तो मरदार था, बैर तो बडो
पडियो । इव जाणा हा ततो पूठो कर वाकी रा काहिरू जावण
देवा हा । —कुवरसी सासला रो वारता

धाकुंडिम-स स्त्री —सपं की कचुकी ?

उ०—अवसरि सुंभालइ गीत गाइ, मामउ जोइ फण मडावइ,
सरीर नी वाकुंडिम छडावइ इमा गारुही । —ध स

धाकुम-स. पु —वृक्ष विशेष ।

उ०—घडवालु नइ कुणि बली, वास वणसरी वेलि । वाकुमा
धाघइ भला, वकुल ध्रद्धतर वेलि । —मा. का प्र

धाकुंमोय-स पु —कद विशेष ।

उ०—अमर कद आदू अला, सूरण रोभ रताल । वच्छनाग
वाकुंमोय, भेडागारी भालि । —मां का प्र.

वाकुर-स पु —चौहान वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।
—बा. दा ख्यात

वाकेई—देखो 'वाकई' (रू भे)

वाकी-धि [अ धाकिय] १ जो घटित हो चुका हो ।

२ घटित होने वाला ।

३ देखो 'वाकियो' (रू. भे.)

उ०—१ सयदा (ण) इम साजिया, उडै धाका अणयाहै । सुणै
वहादरसाह, मगळ प्रजळ उर माहै । —सू प्र

उ०—२ धाको भूठो अखियो, दखण गयी सदूर । आप वडाई
आप री, आपी साह हजूर । —रा रू.

उ०—३ जवन पखी राजा उर जळिया, किळवा अनम सुणै विळ
कुळिया । इळ ईरान मकै लग धाकी, जवना सुण उर पई जराकी ।
—रा. रू.

उ०—४ आगरं तखत सू डंगरी आणता, वळी-वळ लिखाणा जगत
धाका । जुहारीसिध का वाळिया जगत भे, डाकुवा रूप रा सुजस
डाका । —बुधजी आसियो

४ देखो 'वाकी' (रू भे)

धाक्य-स. पु. [स] १ ऐमा शब्द या शब्द-समूह जो किसी एक विचार
या आशय को व्यक्त करता हो ।

२ भाषण, कथन ।

रू भे —त्राइक, वाएक, वाइक, वायक ।

धाक्यकर-स पु [म] १ एक की बात दूसरे को कहने वाला, सदेश-
वाहक, दूत ।

धि —बातें बनाने वाला ।

धाकयानवीस-स पु.—मुगल कालीन एक ओहदा या पद विशेष ।

धि धि —कभी-कभी सूबे के बख्शी को धाकयानवीस का कार्य
भी करना पडता था, वैसे आम तौर पर इस कार्य के लिए अलग
ही अधिकारी रखा जाता था । वह अधिकारी अपनी देख रेख में
सूबे भर में प्रमुख-प्रमुख स्थानों पर यहाँ तक कि सिपहसालार,
दीवान, काजी, फौजदार आदि अफसरों के कार्यालयों तक में
सवाद-लेखको और गुप्तचरो को नियुक्त करता था । ये लोग उसके
पास प्रतिदिन रिपोर्टें भेजते थे । इन रिपोर्टों का वह सूक्ष्म रूप
तैयार करता था और उसे शाही दरबार में भेज देता था ।
क्यों कि सम्पूर्ण शासन-प्रबंध की सफलता गुप्तचर विभाग के ऊपर
भी बहुत कुछ निर्भर होती है, इसलिये इस और विशेष ध्यान दिया
जाता था । कभी-कभी केन्द्रीय सरकार भी अपने सवाद-लेखको

श्रीर गुप्तचरो को सूयो श्रीर परगनो मे भेजती थी, जो उसी की आज्ञा-आदेशो का पालन करते थे ।

बाखर—देखो 'बाखर' (रू भे.)

उ०—१ जिसडे ही रामसिंघजी कुवरजी री कारी दीठी विपरीत तिसडे ही मूरछा आइ पडिया । तिसडे गोवळजी सवाहचा । पेट री बाखर सह भळकती दीठी । —द वि

उ०—२ सुकर घर सर बजर ससतर, गहर हर बह पथर तर गिर । बहर सिर कर देह बाखर । पहर चीसर सुवर अपछर ।

—र ज प्र

बाखळ—देखो 'बाखळ' (रू भे)

उ०—निकळ मिरडा लार, गठेळी सूकी साकळ । घरकोटा री ध्येय, पडी लद लकडचा बाखळ । —दसदेव

बाखाण—देखो 'बाखाण' (रू भे)

उ०—जस बाखाण राज पछ बाज, अखिल भुवेण सुगो इम । राणा अवर घणा दिन रहसी, जुग जुग पगी चग जिम ।

—राणा जगत्सिंह री गीत

बाखाणण—देखो 'बाखाणण' (रू भे)

बाखाणणी, बाखाणणी—देखो 'बाखाणणी, बाखाणणी' (रू भे.)

उ०—१ पनरै तेरैह मत्त पय, छद उल्लाल पिछाण । रघुनाथ सुजस सो छद रच, बीदग मुख बाखाणण । —र ज. प्र

उ०—२ दीना लका जे हाथा न कर्ज दीघा जग सारो जाणै । वेदा भेदा घाता बीठळ, वारवार रटै बाखाणै । —र ज प्र

उ०—३ द्भडा रायपाळा दुभळ, वयळ घरा सिर दुद वण । ऐ कहै करी खग भट इसी, रवि बाखाणै हाथ रिया । —स प्र

बाखाणणहार, हारो (हारो), बाखाणणियो—वि० ।

बाखाणणियोडो, बाखाणणियोडो, बाखाणणियोडो—भू० का० क० ।

बाखाणणियो, बाखाणणियो—कर्म वा० ।

बाखाणियोडो—देखो 'बाखाणियोडो' (रू भे)

(स्त्री बाखाणियोडो)

बागबर—देखो 'बागबर' (रू भे)

बाग—स स्त्री —१ मोट की सूड के नीचे का वह भाग जिमके रस्सी बाधी जाती है ।

२ देखो 'वरग' (रू. भे.)

उ०—बाछडिया रा बाग चरावै चढ चढ घोरा । गाया एवढ ज्वाळ अगीरै रागा छोरा । —दसदेव

३ देखो 'बाग' (रू भे)

उ०—१ ऊपडी बाग "अरजण" हरो, सूर धीर सत आगळ । तिया दीह रहै 'डूगर' तणी, राघव भाटी रिया खळ । —गु रू व

उ०—२ बाग घरि करि ताजणउ, राग-तरणइ रसि जाइ । प्रागलि न रहइ आगल्या, पाछै न नु मिलाइ । —मा. का. प्र.

उ०—३ रोज सिकारा खेलणी, देखै बाग तडाग । हूकळ दळ गज हैवरा, अमरख नरा अथाग । —रा. रू.

उ०—४ सर सरिता बहु बाग सडवर । मफि तिया सिंगी काम चित्र मदिर । —सू. प्र.

उ०—५ लेगी सिघ वा त्रिय बुगलाणै, उलट गयी आसम आपाणै । सुंदर त्रप चित्रमहल वसाई, बाग चद्रिका जेणिया वसाई । —सू. प्र.

५ देखो बाज' (५-८) (रू भे)

उ०—१ हुय हक किलकक समुख हला, भयंकार घडी वण वार भला । सिर ढाल कडकड रूक सदै, जिम बाग डडैहड फाग जदै । —रा रू

उ०—२ रंग राग बाग अगराग सू न रीजै, पातिसाह महमदसाह चिंता में छीजै । —रा रू.

बागड—स पु.—१ डूगरपुर-वासवाडा प्रदेश का एक प्राचीन नाम ।

उ०—१ ऐ रावळ करन रे वेटा राहप, माहप हुवा । तिया माहे राहप राणा रा चीतोड घणी । रावळ माहप रा बागड घणी । ऐ सदा चीतोड रा राणा री चाकरी करता । पछै सै दिल्ली रा पातिसाहा सू पिया रज्जुआत राखै छै । बागड नू गाव ३५०० सै लागै । आघा डूगरपुर वासै आघा वासवाहळा वासै हुवा । पेहली तो ठकुराई डूगरपुर मुदै हुती । पछै सू रावळ उदैसिह गागै रै सूधी तो बागड एक छत्र भोगवी । —नैणसी

उ०—२ बागड देस विदरा गर नाम, जिहा खट दरसन ना बिलाम । राजधानी नू रुठठ ठाम, देस मध्य गिरि पुर वली गाम ।

—जय विजय मुनि

२ वर्तमान शेखावाटी तथा बीकानेर-वाटी से मिले हुए प्रदेश (हिसार) का पुराना नाम ।

उ०—१ सोडस ज्वर लक्षण सहित, औसघ क्वाथ वसान । कहघा बागड देसाधिपति, त्रप स्त्री दठलतीमान —डुडलति विनोद सार

उ०—२ बीरा बागड लाट करणाट । —घरम पत्र

३ एक वैश्य जाति ।

उ०—सोनी नड सुतार पणिया, बागड बागड वस । तेली तवोली वली, दोमी तपरि डस । —मा. का प्र

४ खादर का विपर्याय, एक प्रकार का भू-भाग जो अपेक्षाकृत ऊंचा व कम आबाद होता है, पठार ।

उ०—नित वरसो, मेहा बागड में, मोठ बाजरी बागड निपजै । गेहूडा निपजै खादर में, नित घरनी मेहा, बागड में । —जो. गी.

५ फच्छ राज के एक भू-भाग का नाम ।

६ देखो 'वागड' (रू भे.)

उ०—जोवन कारमों रें चीहांसैं उठ जासी, आदर भजन तणी अभियास । प्राणिया न आवैं कदं प्रामणी, वळं न वीजं दागड वास ।
—ओपी आढी

रू. भे —वागड, वागड, वागर, वाघड, वागर ।
अल्पा —वागडियो ।

वागडणी, वागडवो—क्रि. अ —चलना, फिरना ।

उ०—भागडदि भूत जोगण गण भैरव, आगडदि अमर अपछर गण आण । पागडदि प्रबळ परचर पुर पेखत, वागडदि व्योम सुर-छाया विमाण ।
—रू

वागडणहार, हारी (हारी), वागडणियो—वि० ।
वागडिओडो, वागडियोडो, वागडचोडो—भू० का० कृ० ।
वागडीजणी, वागडीजवो—भाव वा० ।
वागडणी, वागडवो—रू० भे० ।

वागडिया—स. स्त्री —चोहानो की एक शाखा ।

रू. भे —वागडिया ।

वागडियो—वि —१ वागड का, वागड सम्बन्धी ।

स पु —१ वागड प्रदेश का निवासी ।
२ वागड जाति का वेद्य ।
३ रहट की माल मे छोटी-छोटी काष्ठ की कीलिया लगाने के समय माल को स्थिर रखने के लिये लगाई जाने वाली मोटी कीली, कील ।
४ वागडिया जाति का चौहान ।
रू. भे.—वागडियो ।

वागडी—स पु.—१ चौहान राजपूत वंश की एक शाखा ।

उ०—डाहळिया री छापर वडी साहिबी थी । नै वागडी रजपूता री भोम नागोर थी ।
—नैणसी
२ वावरियों के समान एक जगली जाति विशेष जो खेतों की रखवाली का काम करती है ।
३ इस जाति का व्यक्ति ।
रू भे —वागडी ।

वागडोर—देखो 'वागडोर' (रू भे)

उ०—१ करे पोस जरकसी, कडी सोमन कोतल कसि । वागडोर रेसमी, तरह पचरग घरे तसि ।
—सू प्र
उ०—२ जीण माडजै छे । केसवाळी रग-रग री गुथजै छे । अगाडी-पछाडी खोलजै छे । रेसम री वागडोरा सूं आण हाजर कीजै छे । किसा हेक घोडा छे ? वैपल भला, ऊचा अलला, कटोरनखा, आरसी सारीखा ।
—रा सा स.

वागडाल—स. पु.—घोडे की लगाम को ढीली करना, विश्राम करना ।

उ०—घोडा रा तग ढीला करी, वागडाल करीजै, माहे पाहरो चोर छे ती अवे जाय कठे ही नही ।
—राघ रिणमस री बात

वागणी, वागवो—१ देखो 'वाजणी, वाजवो' (रू भे)

उ०—१ लाल वदन अवर सिर लागी । विक्रमादित जवना ह धागो ।
—सू प्र.

उ०—२ असुर हर्ण अद चर्ण अयागा । वर मिघकरि वंगोदा वागा ।
—सू प्र

उ०—३ चारण ग्रहि चौवार, सम मारण अवमाण सिघ । वागो डाणण 'वैण उत' सिरदाग सिरदार ।
—वचनिका

उ०—४ हुवी अति सीघवो राग, वागो हका । थाठ आया पिसण घाट लार्ण थका ।
—हा भा.

उ०—५ जोम गाडावाळी प्रलय काळा री उनागी जठे । वागो हाडावाळी नराताळ री वांणस ।
—दुरगादत्त वारहठ

उ०—६ आढी अडि एकाएक आपडे, वाग्यो एम रुपमणी वीर । अवळा लेइ घणी भुंइ आयी, आयी हूं पग माडि अहीर ।
—वेलि

उ०—७ धीरवत कुवर नै निरखी, धीवर पाइ लागी । स्वामी परण थाप्यो सहू मिलनै, जस ना वाजत्र वागा ।
—वि. कु

उ०—८ गावय वयरडी रागइ, आलापइ सी सग भागइ । वासुरी मधुरी वागइ, सुख पावइ सयण ।
—स. कृ.

३ देखो 'भागणी, भागवो' (रू भे.)

वागणहार, हारी (हारी), वागणियो—वि० ।
वागिओडो, वागियोडो, वागयोडो—भू० का० कृ० ।
वागीजणी, वागीजवो—भाव वा० ।

वागमी—देखो 'वागमी' (रू भे) (अ. मा , ह ना मा)

वागर—स पु [स] १ विद्वान पंडित, गुणी ।

२ ऋषि, मुनि, महात्मा ।

३ शूरवीर, योद्धा ।

४ देखो 'वागड' (रू भे)

उ०—जवू द्वीप देस तहा वागर, नगर फतेहपुर नगरा आगर । आसि घासि तहा सोरठ मारू, भासा भल्ली भाव पुनि सारू ।
—रूपवती
३ देखो वागर' (रू भे)

वागरवाळ—वि [स वाग्वर-पालक] कवि, विद्वान, पंडित ।

उ०—१ ढाढी गुणी बोलाविया, राजा तिणही ताळ । नरवर गढ ढोलइ-कन्हैइ, जावउ वागरवाळ ।
—ढो. मा

उ०—२ वागरवाळ विचारीयउ, ए मति उत्तम कीघ । साल्ह-महल हू लूकडा, ढाढी डेरउ लीघ ।
—ढो. मा.

बागरी—देखो 'वागरी' (रू. भे.)

उ०—घर चगी, नर चोरटा, बागरिया रे देस । भालडिया
घिसता फिरें, अइ हो आबू देस । —अग्यात

बागळ—देखो 'वागळ' (रू. भे.)

उ०—कोचर अइ चमचेरा बागळ, और उलूक अग्याना हो ।
इनके रवी ब्रिस्टि नहिं आवै, तम का इन कू ग्याना हो ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

बागळी, बागली—१ देखो 'वागळी' (रू. भे.)

२ देखो 'बागळ' (रू. भे.)

उ०—वील्हा वायस विभला, आगलि ऊठी जाय । वाटइ दीसइ
बागली, ते ऊधी टंगाय । —मा का. प्र.

बागवाणी—स स्त्री [स बागवाणी] सरस्वती, शारदा ।

उ०—'नाल्ह' रसायण नर भएइ, राजा रह्यो उठीसई जाय ।
बागवांणी मो वर दीयो, अस्त्री-रसायण करू वरखाण ।—वी दे.

बागसणी, बागसबी—देखो 'बकसणी, बकसबी' (रू. भे.)

उ०—घनुस घरए अवनगुण नह घारै, सरण सघार कहै जग सारै ।
बागसं तन गुणी इण वारै, चित अयणी जो विरद विचारै ।

—र. रू.

बागसणहार, हारी (हारी), बागसणियो—वि० ।

बागसिओडी, बागसियोडी, बागस्योडी—भू० का० कृ० ।

बागसीजणी, बागसीजबी—कर्म वा० ।

बागसियोडी—देखो 'बकसियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बागसियोडी)

बागासपूर—देखो 'बागासपूर' (रू. भे.)

उ०—वाटका पोड वजर समान, घाटका नळी निघोटवान । सुभ
लछा अछा बागासपूर, लाग स रान वच्चा लगूर । —पे रू

बागाइत, बागायत—देखो 'बागायत' (रू. भे.)

बागी—देखो 'बागी' (रू. भे.)

उ०—साहुजादी खुरम पातसाह जहागीर सूं बागी हुवो ।

—बा दा ख्यात

बागीबी—देखो 'बागीबी' (रू. भे.)

उ०—फर हार घर घण फरहरत । बागीचा चादर जळ वहत ।

—सू प्र.

बागीस—स पु. [सं बागीस] १ ब्रह्मा ।

२ बृहस्पति ।

३ कवि ।

४ वक्ता ।

बागीसा—स स्त्री. [स. बागीसा] सरस्वती ।

बागीस्वर—स पु. [स. बागीस्वर] १ ब्रह्मा ।

२ बृहस्पति ।

३ कवि ।

बागीस्वरी—स स्त्री [स. बागीस्वरी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ एक रागिनी विशेष ।

३ एक महाविद्या ।

रू. भे — बगेमरी, बगेस्वरी, बागेसरी, बागेसुरी, बागेस्वरी, बगेसरी,
बगेस्वरी, बागेसरी, बागेस्वरी, बाघेसुरी, बाघेस्वरी ।

बागुर, बागुरि, बागुरी—स. स्त्री. [स. बागुरा] १ फटा, जाल ।

(उ. र.)

उ०—१ लागी विहूँ करे धूयण लीचें, केस पास भुगता करण ।
मन-अग चै कारण मदन ची, बागुरि जाण विसतरण ।

—वेलि

उ०—२ हस गतइ चालती, गज गतइ माहालती, काम कामनी
पालती, आखिनइ मटकारइ मदन नी बागुरा घालती कस्तूरी भल-
कत भाल पट्ट, तह (ए) तणा भाजइ मरट्ट । —व. स.

स. पु [स. बागुरिक] २ बहेलिया, शिकारी, चिडीमार । (उ. र.)

बागुळि—स. स्त्री. [सं. बलुगुलिका] १ मजूपा, पेटी ।

२ पिटारी ।

३ कत्यई रग का पतग जाति का कीट, तेलपायो । (उ. र.)

बागेली—स पु —गायो का समूह ।

रू. भे.—बागेली ।

बागेसरी, बागेस्वरी—देखो 'बागीस्वरी' (रू. भे.)

उ०—१ कमळापति तरणी कहेवा कीरती, आदर करै जु आदरी ।
जाणै वाद माडियो जीपण, बागहीण बागेसरी । —वेलि

उ०—२ बाखणी दारणी भास्करी, सकरी जया विजया घोरा
कोवेरी प्रवाही मदनसेना बलमथनी गौदिनी पेसानी बागेस्वरी
सिद्धावी अजरामरा इत्यादि महा विद्या । —व. स.

बागोल—देखो 'बागील' (रू. भे.)

बागोलणी, बागोलबी—देखो 'बागोलणी, बागोलबी' (रू. भे.)

उ०—वो होळें होळें हालतो वखारी रं भडोभड पूगग्यो । वखारी
रं भेक बाजू भेक भंस ऊनी बागोलती ही । वो भंस रं पावतो ई
रई बाधण सारू आपरो खेसलो विद्यायो । —फुलवाडी

बागी—देखो 'बागी' (रू. भे.)

उ०—१ वेहइ हइ बागे वणाव, चम्मीर हीर जामं जडाव ।

—गु. रू. बं.

७०—२ सो माथा पर किलमी अने सेवरी केसर में रगिया दकूळ-
कपडा वागो केसर में रग दी। आप रा सिरदार ने कहे ।

—बी स. टी

७०—३ वागा वेस सोहामणा, भुखण मोती माळ । कनक कचोळा
जडावरा, सुंदर सोवन थाळ ।

—ढी. मा

७०—४ पाग विण प्रीतम कहे, तपइ सूयण पाय । वागो कीनी
अरगजी, सुंदर नें वहीत सुहाय ।

—व स

वाग्नेयकार—स पु—सगीत एव पद रचयिता ।

वाग्देवी—स स्त्री, [सं वाक् + देवी] १ सरस्वती, शारदा ।

२ वाणी ।

वाग्दोष—स. पु [स. वाग्दोष] बोलने में व्याकरण सम्बन्धी चूटी ।

वाग्मद—स. पु. [स.] अष्टांग संहिता नामक वैद्यक ग्रंथ का रचयिता ।

वाग्मिता—स' स्त्री—वाक पदुता ।

७०—दान दुरभिक्षे, पीस रणे, स्त्री सील सगमे, धीरेय पये,
वाग्मिता सदसि, साहस दुरदासीय, मित्र व्यसने, कलत्रमायदि,
पुत्री ब्रह्मवे ग्यायते ।

—व. स.

वाग्मी—स पु [स वाग्मिन्] १ बृहस्पति ।

२ वाकपदु-व्यक्ति ।

वि—१ वाकपदु, अच्छा वक्ता ।

२ बातूनी, वाचाल ।

३ बहुवादी, बहुत बोलने वाला ।

४ पंडित, कोविद ।

५ कवि ।

वाग्मुद्ध—स पु. [स] १ 'केवल बोली से ही' की जाने वाली लडाई,
'जवानी-झगडा ।

२ पुरुषों की बहुतर कलाओं में से एक ।

वाग्बर—देखो 'वाग्बर' (रू. भे.)

७०—गज अत्राल हगा अणगिणिया । वाग्बरां चीर सिर
वणिया ।

—सू. प्र

वाघ—१ देखो 'वाघ' (रू. भे.) (उ र, अ मा)

७०—१ विण जुघ कारण, वाघ रें दूजी-नावे दाय । एक अनेका
ऊपरा, जुलम करेवा जाय ।

—बा. दा.

७०—२ सरप वाघ गज रीछ सरीखा, तुंड कुदाळ मगर सम
तीखा ।

—सू प्र

७०—३ हाका पीथळ हाक हक, हयपाह हडदें । वाघण व्याई
वेड में, कुण दूर करदें ।

—पा. प्र

७०—४ दरपइ दीठइ ठोरडइ, साप न आणइ सक-। बीहइ
विलाडा-वच्चडइ, घाघिणी वालाइ वक ।

—मा का. प्र.

(स्त्री वाघण, वाघणी, वाघिणी)

२ देखो 'वाग' (रू. भे.)

वाघचव, वाघचरम—देखो 'वाघचरम' (रू. भे.)

७०—जठा मुगट माहि गंगा दीठी, अगि भसमीअ धूल । वाघचव
पागुरणी दीठा, दीठव वळी त्रिसूळ ।

—का. दे. प्र.

वाघनख, वाघनखी—देखो 'वाघनख' (रू. भे.)

वाघनखी—देखो 'वाघनखी' (रू. भे.)

वाघमुखी, वाघमुखी—देखो 'वाघमुखी' (रू. भे.)

७०—वड चख ऊजळ वरन, स्रवण मोती वैद्वरज । मुगता फळ
गळ मई, कडा कर वाघमुखा कज ।

—पा प्र.

वाघमूत—देखो 'वाघमूत' (रू. भे.)

वाघूळ—स पु [स. वाहू=पानी + धूल] १ वादल, वारिद ।

७०—तूल जिम उठे खळ धूल गुरजां तडछ, झूळ चवसठ लगी
लेण भपा । सूळ धमकावता फिरें वावन सुभट, स्याम बाघूळ
विच जाण सपा ।

—वालावरस पाल्हावत

२ वात-चक्र ।

वाघेल—१ देखो 'वाघेल' (रू. भे.)

७०—डड लिया झाला दूर चूडासमा वल चूर । वाघेल
गोहिलवाड, रस कीध घाट वराड ।

—रा रू

वाघेला—देखो 'वाघेला' (रू. भे.) (वा दा ख्यात)

वाघेली—देखो 'वाघेली' (रू. भे.)

वाघेसुरी, वाघेस्वरी—देखो 'वागीस्वरी' (रू. भे.)

७०—मोर चढे खळ मारणी, महिप चढे भालाण । वाघ चढे
वाघेस्वरी, नाग चढे नागाण ।

—पा. प्र.

वाड—स स्त्री—१ आड, श्रोत

७०—१ बावें दयाणी भोजाया री वाड । —पावूजी रो पवाडी
२ देखो 'वाड' (रू. भे.)

७०—१ वाघ करे नह काट वन, वाघ करे नह वाड । वाघा रा
वधवाव सू, फिलें अगजी झाड ।

—बा दा.

७०—२ दिवी भोलावण तुम नें घणी, प्रदेसे चाल्यो मुक घणी ।
घर हुंती किम उठे वाड, चीभडला किम खाय वाड ।

घ व. प्र

७०—३ वैर हमेस विसावणा, वाड विना वसणीह । वाघा रें क्यूंकर
वणी, आरण आळसणीह ।

—बा दा.

बाडणी, बाडनी—देखो 'बाडणी, बाडनी' (रू भे)

बाडभेय—देखो 'बाडभेय' (रू भे) (अ. मा)

बाडलियो—देखो 'बाडली' (अल्पा, रू. भे)

उ०—अहडा ती बाडलिया म्हारं घर घरा रे, लजा ओठीडा ऐ
लो । लूट्या टक्या नवसरहार वाला जी । —लो गी.

बाडली—स स्त्री—देखो 'बाडली' (अल्पा., रू. भे)

उ०—तिमणिये रे वाद आई बाडली, कातरिया नै कडोलिया री
वारी । —रातवासो

बाडली—देखो 'बाडली' (रू. भे)

बाडव, बाडवा—१ देखो 'बाडव' (रू. भे)

उ०—१ वदन तेज कळपत री वयळ बाडव वणं, ऊफणं क्रोध
पोरस अमामो । मडाणी हेक राजा घणं मछर सू, साहजादा दहू
तरणं सामो । —महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ देवी कूरम रे रूप तू मेर पूठी । देवी बाडवा रूप तू आग
ऊठी । —देवि

२ देखो 'बाडवा' (रू. भे)

बाडवाग, बाडवाग्नि—देखो 'बाडवाग्नि' (रू. भे.)

उ०—१ भूम वहती को जण भाळं, बाडवाग निभ समद विचाळं ।
—रा रू

बाडवामुख—स पु—पाताल । (ह ना मा)

बाडवेय, बाडभेय, बाडिभेय—स पु [स बाडवेय] १ वंल,

२ साड । (ह ना मा)

रू भे—बाडभेय, बाडभेय ।

बाडि—देखो 'बाडी' (रू. भे)

उ०—नोवत टकोरा पडि नै रहिआ छै वाहरि डेरा कीआ छै ।
असपका खडी हुई छै । तवू समीआणा सिराइचा, रावटी, बाडि
समेत करणाटी, गूडर ताणीआ छै । —रा सा. स

बाडियो—देखो 'बाडियो' (रू. भे.)

२ देखो 'बाडी' (अल्पा., रू. भे.)

बाडी—देखो 'बाडी' (रू. भे)

उ०—१ सखि ए साहिब आविया, मन चाहदी मोइ । बाडी हुवा
वधामणा, सज्जण मिळिया सोइ । —ढो मा

उ०—२ सत्तम प्रहरं दिवस के, घण जु बाडिया जाइ । आणं
ब्राह्म-विजोरिया, घण छोलइ, प्रिउ खाइ । —ढो मा

उ०—३ वे अरथ छाह पथी विरथ, हेत कपट हरियावळी । मोकमा
कमथ मोटा भिनव, बाडी फूली रावळी

—अरजुणजी बारहूठ

उ०—४ नवाव खानचानी सारा वेडा हुता इण री वीगटीयो
कुही नही । सारा री खवरदार बीच नायक बाडी फिरता था ।
पोहोर २ पछे सारा उमराव आया तठे दळथभण नाम पायो ।

—नैणसी

बाडोटियो—देखो 'बाडो' (अल्पा, रू. भे)

बाडो—देखो 'बाडो' (रू. भे.)

उ०—सूवरा रे, आयं माल वधाया सूं बाडो एवड री गळाई
भरीजग्यो ही । —फुलवाटी

वाच—स स्त्री [म वाक्] १ मरुस्वती का एक नाम ।

२ जिह्वा । (अ. मा)

३ वाणी, शब्द, ध्वनि, वचन ।

उ०—१ इम वाच ज्वाव 'अममाल' रा, धरि व्रजाणि वळधाखियो ।

घत जेम आग सींची घणूं, उरस लाग उपडाखियो । —सू प्र

उ०—२ खावी—विलसो भोगवी, जो जग माहै किम जाणी
साच । स्वाद अछै इण वात मा, इम जपइ हो ते व्रदा वाच ।

—वि कु

उ०—३ काचा कुभ ज्यू काया जाणूं, परायी छठी जागं । रिडती

तेज, भूखियो लोह लिया रहै, काछ-वाच निकळंक ।—रा सा स.

४ वयान, वणंन, उल्लेख ।

५ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वाण पर्य वळि भीम, जिसी अहंकार हि रामण ।

जिसी वाच जुजठिल्ल, जिसी माणाहि द्रोजोवण । —गु रू व

६ प्रतिज्ञा, प्रण ।

उ०—१ जाय पूछची महल में, राणी भाव्यी साच । पदमणि

परणेवा सही, चाल्यो पालण वाच । —प च चौ

उ०—निस प्रथम जाम आलोभ नर, दारण 'सोनागिर' 'दुरण' ।

कर वाच वाद अकवर कुसळ, 'वीद' हरं सभिया विडग ।

—रा रू.

७ यश, कीर्ति । (ह ना मा.)

८ प्रशसा, स्तुति ।

उ०—जिका भला घन जोडियो, ऊषमियो निज आच । फीरत

पोहरं करन रे, वीदग ऊठे वाच । —वा. दा.

९ मछली ।

१० मदन नामक, पौधा ।

[अ] ११ घटिका, घडी ।

१२ देखो 'वत्स' (रू. भे) (ह ना मा)

रू. भे—वाच ।

वाचक—वि [स] १ कहने वाला, बोलने वाला ।

२ बताने वाला, बोध कराने वाला ।

३ वाचन करने वाला, पढकर सुनाने वाला ।

४ साधक ।

उ०—माया कथा मिलि नहि माया, यूँ वाचक तत् कूँ नहि पाया ।

दरद मिटै नहि कोई । —स्त्री सुखरामजी महाराज

५ द्योतक, सूचक, प्रतीक ।

[स. वाचिक] ६ वाणी सम्बन्धी ।

७ शाब्दिक ।

८ मौखिक ।

स पु [स वाचक] १ वक्ता, व्याख्याता ।

उ०—वाचक ग्यानी वृगल बराबर । लक्ष हस रहता सुख सागर,
हीरा चूण चुगोई । —स्त्री सुखरामजी महाराज

२ व्यञ्जक शब्द ।

३ पाठक ।

४ सदेशवाहक, दूत ।

५ समाचार, सदेश, खबर ।

६ भाषा विज्ञान के अनुसार तीन प्रकार के शब्दों में साक्षात्-
अर्थ बोधक शब्द, नाम, सज्ञा ।

रू. भे — वाचक, वाचिक, वाची ।

वाचकधरमलुप्त—स. स्त्री. [स वाचकधर्मलुप्त] १ एक प्रकार की
उपमा जिसमें वाचक शब्द और सामान्य धर्म का लोप हो ।
लुप्तोपमा ।

वाचकलुप्त—स. स्त्री [स.] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमा-
वाचक शब्द लुप्त होता है ।

वाचकवरु—स पु —उपाध्याय वर्य ।

उ०—तस सतीरथ्य वाचकवरु रे, हरस कुसल सुजगीस ।

—वि कु

वाचकोपमानधरमलुप्त, वाचकोपमानलुप्त—स. स्त्री [स वाचकोउप-
मानधर्मलुप्त] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें वाचक शब्द,
उपमान और धर्म तीनों लुप्त हो, केवल उपमेय ही ।

वाचकोपमेयलुप्त—स. स्त्री [स वाचकोउपमेयलुप्त] उपमा अलंकार
का एक भेद जिसमें वाचक शब्द व उपमेय का लोप हो ।

वाचडवायो—देखो 'वाछडवायो' (रू. भे.)

वाचणी, वाचवी—देखो 'वाचणी, वाचवी' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ स्त्री सुविहाण दीवाण सू हुकम फुरमायो, सेर विलद
गुजरात राज ठहरायो । दिली कौ नाम सुण कमान कूँ खार्च, मोरे
फुरमाण हासी तें वार्च । —रा रू

उ०—२ कारज कहीयै एह विसेस, हीयडै घरीज्यो वाची लेख

—वि कु

उ०—३ अगा नैणो वाचजो, सैण पत्र सनेह । वैण हीये बरतजै,
नैण हवी नेह । —अग्यात

वाचणहार, हारो (हारी), वाचणियो—वि० ।

वाचिओडो, वाचियोडो, वाच्योडो—भू० का० कृ० ।

वाचीजणो, वाचीजबी—कर्म वा० ।

वाचन, वाचना—स. पु [स. वाचन] १ पढ़ने की क्रिया या भाव ।

२ पढ़ने का ढग ।

३ पठन, पाठ ।

उ०—परित्त जेहनी वाचना रे जिनजी, सख्याता अनुयोग ।

—वि. कु.

४ कथन ।

५ घोषणा ।

६ प्रतिपादन, व्याख्या ।

७ बताना क्रिया ।

८ वाक्य, शब्द ।

रू. भे.—वाचण, वाच्यन ।

वाचनालय—स पु [स. वाचन+आलय] वह स्थान या कक्ष जहा समा-
चार-पत्र, पत्रिका आदि पढ़ने की व्यवस्था हो ।

वाचनिकळक—सं पु [स. वाच+निष्कलक] युधिष्ठिर ।

रू. भे —वाचनिकळक ।

वाचवाह—देखो 'वाहवोल' (रू. भे.)

उ०—कवर कहयो—स्त्री इकालिग जी री वाचवाह छै, ज्यो थे कह
वाळी कहस्यो ती परमाण छै । —राव रिणमल री बात

वाचलो—वि. [स. वात्सल्य] प्यार करने वाला, प्रेम करने वाला ।

उ०—वीदा तो रण वाचला, वीदा वेर बराइ । वीये दळ पयली
हुवै, वीदा री हथवाह । —मारवाड रा अमरावा री वारता

वाचसपति, वाचस्पति—स पु. [स वाचस्पति] १ वाणी के प्रभु देव
गुरु बृहस्पति की उपाधि । —अ. मा.

उ०—ज्योतिस सकुनसास्त्र वात्सायनसास्त्र गणितसास्त्र धनुर
वेदायुर वेदादि सास्त्र रत्नसागर कूरचालसरस्वती महायोगनाथ
सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वास । —व स.

२ प्रजापति, ब्रह्मा ।

३ सोम ।

४ बहुत बडा विद्वान ।

वाचा—स. स्त्री, व व [स.] १ वाणी, बोली ।

उ०—दाणवा तणा फाटिगा डाचा, वाचा नह ऊपडै विचार ।
अणभग 'सिवा' खाग ऊपाडै, हालियो लक लगावण हार ।

—जोगीदान चारण

मुहा—१ वाचा खुलणा—जवान खुलनी, बोलने की शक्ति आनी ।
२ वाचावद होणा—बोलने की शक्ति समाप्त होना, शारीरिक शक्ति शिथिल पडना ।

३ वाचा वद करणा, (दंणा) निरुत्तर करना, आतंकित करना ।

२ जिब्हा, जीभ । (ह ना. मा)

३ वचन, वाक्य, शब्द ।

४ बोलने की शक्ति ।

५ वादा, कौल, इकरार ।

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचद । साच के अज्ञातसत्र गात रति विद ।
—रा रु

उ०—२ ओलग चाहइ हो तोरी लाहइ कारणइ, अन्य उपरि रहै लीण । वाचा न काचा हो जे तुम्हणइक हइ, ते मूरख मतिहीण ।
—वि कु

उ०—३ समुद्र कना वाचा लीन्ही, लेय नँ छोड दीयो ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ घरिया नप दत्त खाग विरद घज, ग्रह तिए रँ इक रग सेतगज । सुरिण नप सचिव भेलिह्या साचा, वित वहु दियण कहै तिए वाचा ।
—सू प्र

उ०—५ इतरी सुण देवी कही—वर माग । राजा कही—वाचा पाऊ । देवी कही श्रि वाचा ।
—सिधासण वत्तीसी

७ प्रतिज्ञा, प्रण ।
उ०—१ इण भात 'पती' रावत अभाग, वाचा सिध आपे वयण ।
भेवास नास भेलूँ मुकर, गुमर धार लागी गयण ।
—प्रतापसिध म्होकमसिध री वात

८ उपदेश ।

९ सिद्धान्त या श्रुतिवाक्य ।

रु भे—वाचा, वाया, वचा, वाया ।

अल्पा,—वायी ।

वाचाइ—स स्त्री—चारण वशोत्पन्न वाचा की पुत्री एक देवी ।

उ०—लटीयाळ तू ही लख विरद लँण, वाचाइ धुंघी साच वँण ।
बँछरा काळका तू अवाय, मन रंग थळ चालकनैचराय ।
—रामदान लालस

वाचाइळ—वि—किसी के साथ वचन-वद्ध होकर घोखा देने वाला ।

स स्त्री,—चीहानो की एक देवी ।

उ०—चहुवाण धणखरा सारा राव लापण नाडूळ धणी तिए री पीढी आसराव हुषी । तिएरँ धरँ वाचाइळ देवी जी आया छी ।
—नैणसी

वाचावध—वि [स वाचा+वध] जो किसी प्रकार के वचन, कौल या प्रतिज्ञा में बधा हो, प्रतिज्ञावद्ध ।

उ०—चौईसा आखडी चालण, सु ती राव ताहूण । महाराज मागियो सी पायी, वाचावधी सुरताण पातसाह आयी ।

—प्र वचनिका

रु. भे.—वाचवध, वाचावध, वाचावधी, वाचावद्ध ।

वाचावधन—स. पु [स. वाचा+वधन] १ प्रतिज्ञा या वचन-वद्ध होने की अवस्था या भाव ।

२ वचन बद्धता ।

वाचावद्ध—देखो 'वाचावध' (रु. भे.)

वाचाळ, वाचाल—वि [स वाचाल] १ जो बोलने में चतुर हो, वाक्पटु ।

उ०—अधिक वाचाल मखराल स्रीपाल इम, धाव धमसाण हिराण कीधा । धाव ठामे रहिर विव धारा पडै, अरि तणा जीव कण फाडि लीधा ।
—स्रीपाल रास

२ जो अपने वचनों पर दृढ़ हो, दृढ़ प्रतिज्ञ ।

उ०—साचाळा वाचाळा बोल जगाळा साचा । भीछाळा ए हाळा हालँ हाडा रँ सुभाव ।
—सनमान हाडा री गीत

३ बहुत बोलने वाला, व्यर्थ बकने वाला, वक्तावादी ।

४ उद्वृण्डता पूर्ण बहुत बड़ बड़ कर बातें करने वाला ।

स. पु—बहुत बोलने का एक रोग जिसमें अप शब्द भी बोल दिये जाते हैं । (अमरत)

रु. भे—वाकचाळ ।

वाचाळता—स. स्त्री—१ वाचाल होने की अवस्था या भाव ।

२ वक्तावास ।

३ वाक्पटुता ।

वाचि—देखो 'वाचक' (रु. भे.)

वाचिक—देखो 'वाचक' (रु. भे.)

वाचियोडो—देखो 'वाचियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. वाचियोडो)

वाची—देखो 'वाचक' (रु. भे.)

वाच्य—वि. [स.] १ जो पढ़ने व वाचने योग्य हो ।

२ कहने योग्य, जो कहा जा सके ।

उ०—मन बुध अमान पहुचे न प्रान, वाचक न वाच्य वह पद अवाच्य ।
—ऊ. का.

३ जिसका शाब्दिक सकेत द्वारा बोध हो ।

४ जो अभिधा में जाना जाय, अभिधेय ।

५ निदनीय, तिरस्करणीय ।

स पु—१ कठोर शब्द ।

२ कलंक, दोष ।

३ भर्त्सना, निदा ।

४ क्रिया का वाचक ।

वाचिष्ठ—देखो 'वत्स' (रु भे)

वाचिष्ठल, वाचिष्ठल्य—देखो 'वात्सल्य' (रु भे)

उ०—१ कामसेन किकर थई, सेव करइ सुविचारी । विधि विधि वाचिष्ठल विस्तरइ, सयरि समप्यइ सार । —मा का. प्र.

उ०—२ वाडव वली विचारतु, लिखवा गाथा एक । सार सरस सोहामणी, वाचिष्ठल्य वचन विसैस । —मा कां प्र

वाच्यन—देखो 'वाचन' (रु भे.)

उ०—दल दूजा री पद दल दूर्जे, जाण अवे अभवन मत जोग । कवि वाछत पद वाच्यन करही, पढ अनभीहित वाच्य प्रयोग । —वा दा

वाछ—देखो 'वत्स' (रु. भे) (अ मा , ह. ना मा)

वाछड, वाछडो, वाछरू, वाछरो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रु भे.) (उ. र) (अ मा., ह ना मा)

उ०—१ सो खंचा ताण करी पण उठे हीज हचका खार्वे पण चले नही जद उण हीज वीर धवळा रो वाळक वाछडो तिकी हीज इण सकट रे रुघ लगाय नै ताहूकं छै । —वी. स टी

उ०—२ धवळ घेनुवे धवळइ वरणि, सारीखा वाछडा सुचरण । घोडा-तरणी कलि माहि आणि, पाइ गहइ वाघ्या तिरिण ठारिण । —ढो. मा

उ०—३ गाया नै घेरी, घरमी, वाछरू वाघ्या जाय गवाळ श्रो । —लो. गी

वाछळ —१ देखो 'वात्सल' (रु. भे)

उ०—देव राघव दीन पाळ दयाळ वछित दायक । नाम मानव देव नाम रटत सीय सुनायक । माथ-पच दुयेण भज अगज भूप महावळ । वद तू 'किसनेस' पात सुपाय जे जन वाछळ । —र ज प्र.

२ देखो 'वात्सल्य' (रु. भे)

वाछल्य—देखो 'वात्सल्य' (रु भे)

उ०—गोपाल गोव्यद खगेस-गामी, नागेस सज्या ऋत सैन नामी । हे जंग वागां दस-माथ हुता, माहेस वाछल्य सुकठ मीता ।

—र ज. प्र.

वाछांट—स. स्त्री. [स वात-छटा या वायुच्छटा] वायु के भोके से मकान या खिडकी से दरवाजे के अन्दर आने वाली चर्पा की बूँदे, बौछार । उ०—पण ओरी मे ई वाछाट सूं गिरिया-गिरियां तक पाणी भरीजग्यो अर सांमनै सू ठडी टीप वायरो आवती ही ।

—रातवासी

रु. भे —वाछाट ।

वाछिल—देखो 'वत्सल' (रु. भे)

उ०—१ पुत्र-पाहि प्रीछित मनु, वाछिल करि विवेक । परठिठ पाणी छाटवा, सही तिरिण दीघठ सेक । —मा का प्र.

उ०—२ कोई सग्यो कौतुक गणी, वाछिल जपइ वारिण । क्षमा करइ तु हू मरू, जपू जोडी पाणि । —मा का प्र.

वाछोड—स पु [सं वात्सकम्] गायो के वछडों का ममूड ।

वाछोडयो, वाछोलियो, वाछोलौ—स पु—१ गाय या भंस का मरा हुआ वच्चा जिसमे मसाला भर कर रक्खा गया हो ।

२ गाय के वछडे का चमडा ।

३ देखो 'वत्स' (अल्पा, रु. भे)

वाछो—देखो 'वत्स' (अल्पा., रु भे.)

उ०—मेरा वाछा रमे छै गो-ठाण कूण चुघावे, वाबल तेरी धीय विना । —लो गी

वाजत वाजत्र—देखो 'वाजयत्र' (रु भे)

उ०—१ हुकम लेर मड हालिया, साहू करा समसेर । जेऊ न कीधी जादवां, वाजत्र दिया विसेर । —वी. स. टी

उ०—२ मंगळ घमळ उदमाद, वजे वाजत्र जिण चेळा । ग्रहि ग्रहि उडि गुडिया, मिळै सज्जण घण मेळा । —सू. प्र

उ०—३ आरभ काज गज आरुहै, अनमित सेन उलटियो । सुणियो प्रचड वाजत्र सुर, किर वरुमड पलटियो । —रा. रु

वाजव, वाजद्र—देखो 'वाज' (मह, रु. भे)

उ०—अनि लोक सपति इद, जिण मांहि दळ वाजव । दइवाण सोवादार, पाठाण सूर अपार । —सू. प्र.

वाज—स. पु [स.] १ सग्राम, युद्ध ।

२ ध्वनि, नाद ।

३ धृत, धी ।

४ यज्ञ ।

५ अन्न ।

६ जल ।

७ बल ।

८ पलक ।

९ मुनि ।

[फा वा'ज] १० धार्मिक उपदेश ।

११ सीख, नसीहत ।

वि. [फा. वाज] १ स्पष्ट, खुला ।

२ व्यक्त, प्रकट ।

३ देखो 'वाज' (रु भे) (अ मा , ना. हि को.)

उ०—१ वहै क वाज पत्यए, अकास में क रत्यए । सीरम साह नस्स है, विवाण उड्डिया वहै ।
—गु. रू. व.

उ०—२ डैच ढालव्वळा, अस्सि ऊतामळा । वहै वेगागळा, वाज वाहै नळा ।
—गु. रू. व.

उ०—३ दिल्लीचें सुरताण, वाज वका वेगागळ । सूटी ले मेल्लीया पूह मद वहता मिंगळ ।
—गु. रू. व.

उ०—४ तरें सरव ठाकुर आरोगें छै-श्री ठाकुर हाथ नीची करे तो वाज नही । तरें श्री वोलियो-ठाकुरें अजू वाज ही नही आयी छै काहू आरोगा ।

वाजण—देखो 'वाजण' (रू. भे.)

वाजणी—देखो 'वाजणी' (रू. भे.)

उ०—सुराही गळारें घाटि सभा सला पोडी भीगें गिरीए ऊपरि वाजणी पायाल रा घूघरा रमभोळ भणकिआ जाणें कळहस रा वच्चा वकोर करि रहिआ छै ।
—रा. सा स

वाजणू, वाजणी—देखो 'वाजणी' (रू. भे.)

उ०—१ रगीली चग वाजणू म्हारें वीरेंजी मढायी चग वाजणू ।
—लो गी

उ०—२ म्हारी मा री ए जायी विछिया घडा छूं ए बाई तने वाजणा ।
—लो गी

वाजणी, वाजणी—देखो 'वाजणी, वाजणी' (रू. भे.) (उ. र.)

उ०—१ सी पडिया दूजा सुहड, अन ऊपडिया खेत । अग नत्रीठा वाजिया, आद 'दुरग' सचेत ।
—रा. रू.

उ०—२ तठें भगडो हुवी ठाकर जगरूपसिध विहारीदास दोनू वाज भूवा ।
—दा. दा.

उ०—३ गहगहिय थाट वेळें गरीठ राठउडि रउद्रि वाजियउ रीठ । सूर सघीर वाजइ सरोस, पडिफाळें ऊडइ जिरहपोस ।
—र. ज सी.

उ०—४ इम जीवें आवियो, गग' वाजता नगारा । सुजस वधे घर सिरें उछक छक वधे अपारा ।
—सू. प्र

उ०—५ आरती उतारीजें छै । वेसरि-चदण चरचीजें छै । अगर उखेवीजें छै । पचसबदा वाजि रहिआ छै । आलरिआ भणकार हुइ नें रहिआ छै ।
—रा. सा स

उ०—६ के जम नाम तणो तन सज कर, भें जमहू डर डर मन भाजें । किया सुनाथ हाथ ग्रह केता, वीठळनाथ अनाथा वाजें ।
—र. ज प्र

उ०—७ जिण दीहै पावस भरद, वाजइ ताढो वाय तिए रिति मेल्ले माळविण, श्री परदेस म जाय ।
—ढो. मा.

उ०—८ मोर सोर मडें, इद्र धार न लडें, आभी गाजें, सारग वाजें ।
—रा. सा म

उ०—९ जुव तणो भरीसी अग ही जाणत, कमध लग चाल घसचाल करता । 'मानडो' 'वेण' फौजा तणो मोहरी, वाजि वेकूठ गया डाण भरता ।
—जगो सादू

वाजणहार, हारो, (हारी), वाजणियो—वि ।

वाजिओडो, वाजियोडो, वाज्योडो—भू० का० कू० ।

वाजीजणी, वाजीजणी—भाव धा० ।

वाजत्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—१ वाजत्र वजत विभेक, त्रित गान करत अनेक । सोभत इद्र समाज, रविवस रवि महाराज ।
—सू. प्र.

उ०—२ धीरवत कुमर नें निरखी, धीवर पाइ लोगा । स्वामी पणें थाप्यो सह मिलन, जस ना वाजत्र वागा ।
—वि. कु.

वाजपत, वाजपति—स पु. [स. वाजपति] अग्नि, आग ।

वाजपेई, वाजपेय, वाजपेयो—स. पु. [स. वाजपेयो] १ कान्यकुब्ज आहाणो की एक उपाधि ।

उ०—जोसी जानी जेतला, पाठक पढ्या पाठि । वाजपेय दीक्षित दवे, राउल-सरसा राठि ।
—मा. का. प्र

२ अत्यन्त कुलीन पुरुष ।

[स. वाजपेय] ३ एक प्रसिद्ध यज्ञ ।

वाजव—देखो 'वाजिव' (रू. भे.)

उ०—अवै ही तो चूडी ऊवरें अन हू ई इण म्हारें सूरवीर घणी नें समभाय नें कहूँ की जगत मे वळें ही सूरवीर है सो आपने अवै मानणी वाजव है ।
—वी. स. टी

वाजवी—देखो 'वाजिवी' (रू. भे.)

वाजा—स पु.—राठीड वश की एक उपशाखा । (वा. दा. ल्यात)

वाजाळ—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.) (डि. ना. मा.)

वाजित्र—देखो 'वाद्ययत्र' (रू. भे.)

उ०—वजि थाळ सकळ वाजित्र घजें, कुसम सघण सुरियद किया । वेविया हीज भ्रावै वणें, उण दिन तणो अजोधिया ।
—सू. प्र

वाजिद, वाजिद्र, वाजिद्रक—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.)

उ०—१ नल नदिया बीजळ निमा, गिणें न जळ थळ घाट । आवै राजिद प्रीतवस, वाजिद मडिया वाट ।
—पना

उ०—२ धोर पीडा पग धम, गात जाणें गज'भ । सतेज रूप साहण, वाजिद राज वाहण ।
—गु. रू. व

उ०—३ धण जाणिक धट्टा साहण छुट्टा सातक फट्टा सामद्र । सणणी सीचाणा जेम विवाणा वानर डाणा वाजिद्र ।
—गु. रू. व.

उ०—४ डाणा किरि पाउ पलव डहे । वाजिद्रक वेग विवारण
वहे । —गु. रू. व.

वाजिदी—देखो 'वाजिदी' (रू. भे.)

वाजि—देखो 'वाज' (रू. भे.) (हिं ना. मा)

वाजित्र—देखो 'वाजित्र' (रू. भे.)

उ०—१ कर उघट कहत सगीत केक । नत करत वजत वाजित्र
अनेक । —सू प्र

उ०—२ चित्तीड दलीपत चढिया रे । गहरे सुर वाजित्र गुडिया रे ।
—रावत अचळदास सक्तावत री गीत

उ०—३ हुई सोपारी मनि हरख्यो छइ राध । वाजित्र वाजइ
नीसाणी धाव । —वी दे

उ०—४ पचसव्व वाजित्र वाजई छई । गल्या पीतल रताजणी
तया पखावज धोकार करइ छइ । —का दे प्र

उ०—५ इण परि उच्छव विस्तरइ, गीत नृत्य वाजित्र । पचाअत
पकवानि परिण, जिर्क जिमाडया मित्र । —मा का प्र.

उ०—६ वलि तेहनै चौ पाखती, विकट टुरग विराजै रे । घण
वाजित्र सदा घुरै, धन गरजारव लाजै रे । —वि कु

वाजिनी—स स्त्री [स.] घोडी ।

वाजिन—स पु [स वाजिन] १ घोडा, अश्व ।

उ०—सग्रहिय सुकरि नगराज सार । वाजिन चडिय रिराजग
वार । —रा ज सी

[स वाद्य] २ बाजा, वाद्य ।

उ०—जेसाणइ ऊपरि करनि जाइ । वाजिन लेय नीसाण वाइ ।
—रा ज. सी

[स वाज-इन] ३ शक्ति ।

४ होड ।

५ सघर्ष ।

वाजिव, वाजिवी—वि [प्र] १ ठीक, उचित, मुनासिव ।

२ आवश्यक, जरूरी, अनिवार्य ।

३ योग्य, लायक ।

रू. भे.—वाजव ।

वाजिया—स पु, व. व.—देखो 'वाजिया' (रू. भे.)

वाजी—१ देखो 'वाज' (रू. भे.)

२ देखो 'वाजी' (रू. भे.)

उ०—वाजीगर वाजी रची, माया विसतारा । —ह पु वा

वाजीकरण—देखो 'वाजीकरण' (रू. भे.)

वाजीगर—देखो 'वाजीगर' (रू. भे.)

उ०—वाजीगर वाजी रची, माया विसतारा । वाजी सूं वाजी रमं,
वाजीगर न्यारा । —ह. पु वा.

वाजूदो—देखो 'वाजिदी' (रू. भे.)

वाजू—देखो 'वाजू' (रू. भे.)

वाजूवद, वाजूवध—देखो 'वाजूवध' (रू. भे.) (प्र. मा)

वाजेंद्र—देखो 'वाज' (मह., रू. भे.)

उ०—भ्रम्व अठार भोजण भाणि, तयोळ मुख तरणि । वाजेंद्र
राह वाहणि आरूढ वळें । रिति वरखा सरइ हेमत संसर हद
वसत गीसम सह सुख सगळें । —गु रू. व.

वाजोट—देखो 'वाजोट' (रू. भे.)

उ०—वाजोट थो ततरि रममणिजी गादी आय बैठा । सिंगार कै
रसि इतरि इक सखी आरसी ले मुंह आगइ आय उभी हुई ।

—वेलि टी

वाजी—देखो 'वाजी' (रू. भे.)

उ०—दसवें द्वारि वसं मन राजा, सबद अनाहद वाजें वाजा ।

—ह पु वा

वाट—स स्त्री [स वाट, वाट] १ मार्ग, रास्ता, राह, सडक ।

(ह ना. मा)

उ०—१ सामठी हल्लकी, मंगळा सब्बळी । वाट ऊमी वहे, जाण
आढी-वळी । —गु. रू. व

उ०—२ पातरिया वाट न पी'रा पीहर, अबळा रें निरघारा आप ।
—ओपी आढी

उ०—३ नळ नदिया बीजळ निसा, गिर्ण न जळ थळ घाट ।
आचै राजिद प्रीत वस, वाजिद खडिया वाट । —पना

२ प्रतीक्षा, इतजार ।

उ०—१ ताहरा जेतसी ऊदावत बोलियो—सीख करो, लोग
आपणी वाट जोवें छे । —नैरासी

उ०—२ सखी सहेली सामळें म्हे मन वांध्या थाट । नव दिन
कीधा नोरता, सो प्रीतम हद वाट । —अज्ञात

उ०—३ माधव वहिला आवज्यो, ह जोळ घरि वाट । फळ दळ
जळ अग्नि घरू, भूमि सयन नही पाट । —मा का प्र.

उ०—४ तिए द्वारिकाजी माहें लोग चिततुर हुआ वाट जोयें छे ।
—वेलि टी.

३ दीपक की ली ।

४ दीपक की बत्ती ।

५ दिशा, कोण ।

६ चक्कर ।

- ७ घेरा, आहता ।
 ८ वाग, उद्यान ।
 ९ लतामण्डप ।
 १० समय, वक्त ।
 ११ कमर, कटि, कूल्हा ।
 १२ पेट में होने वाला मरोडा, ऐंठन ।
 १३ वस्तु ।
 १४ अन्न विशेष ।
 १५ इमारत ।
 १६ घोडे या घोडी का पेशाब ।
 १७ घोडी की योनि ।
 १८ तोलने के आधान, तोल ।
 १९ विवाह मण्डप में अग्नि की परिक्रमा (भावर) देने के पश्चात कन्या को उसके पिता द्वारा पहनाई जाने वाली पोशाक ।
 वि वि.—देखो 'घरममढ'
 रू. भे —बट, बट्ट, वाट, वाटी, बट, बट्ट, बट्टि, वाटि, वाटि वाटी ।
 अल्पा.—वाटहली, वाटही, वाटली, वाटहली, वाटही, वाटली ।
 मह —वाटह, वाटह ।
- घाटकड़ी—देखो 'वाटकी' (अल्पा., रू भे)
 उ०—घाटकड़ी नहीं जीमे घाटकड़ी नहीं जीमे । ऐ तो जीमे चारा कोडिला सालाजी रा मोटोडा थाळ मे । —लो. गी
- घाटकड़ी—देखो 'वाटकी' (अल्पा., रू भे)
 घाटकियो—देखो 'वाटकी' (अल्पा., रू भे)
 उ०—हरसा बीर भेरा रँ, एक आगण मे रँ दोन्यू खेलिया, एक घाटकिये पीयो हुष । —लो. गी
- घाटकी—देखो 'वाटकी' (रू भे)
 उ०—उपरि सोना ना थाळ अत्यत धरु विसाल, विचिमाहि चउ—सठि घाटकी लगार नही जाति काटकी । —व स
- घाटकीटाळ—देखो 'वाटकीटाळ' (रू भे)
 घाटकी—देखो 'वाटकी' (रू भे)
 उ०—सु न्वारा रँ चावळ मूगा री खीचडी तयार थी सु वाटका एकण माहे घात त्याया, माणकराव चढिये हीज खाधी । —नैणसी
- घाटह—स. पु —देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे)
 घाटहली—देखो 'वाट' (अल्पा., रू भे)
 उ०—लागं रँ भवरजी मेहूडा री छीटा, रावळी कटारी रा घाव । पधारी मारवण रा रसिया, मेला जोऊ घाटहली । —लो गी
- घा डा—स पु —राठीड वस की एक धारा । (वा दा. ल्यात)
 रू भे —वाटडा, वाटाडा ।

घाटकी—देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ घाटकी जोवता थई कन्यका जी, लावण्य गुरु रूप तरणी जाणं घाम ही ।
 —वि कु.

उ०—२ सज्जण चाल्या हे सती, वाजइ वाजारंग । जिण वाटइ सज्जण गया, मा घाटकी सुरग ।
 —डो. मा

घाटणी, घाटवी—देखो 'वाटणी, वाटवी' (रू. भे)

घाटवड—देखो 'वाटवड' (रू भे)

घाटपाडज, घाटपाडी—देखो 'घटपाडी' (रू भे)

उ०—१ चोर चरड नइ चाडिया, गाठीछोडा गाहाट । घाटपाडा नइ फासिया, नाडी थोडा नाट ।
 —मा. का प्र.

उ०—२ चोर चरड बहुल, घाटपाडा तरणा कलकल, घरम गुरु चपल पापोपदेस कुसल
 —व. स.

घाटभोजन—स पु [स वाट+भोजन] यात्रा मे मार्ग में, किया जाने वाला भोजन ।

घाटर—स पु [अ] पानी, जल ।

घाटरभूक—वि [अ] जिस पर पानी का असर न हो, जिसमें से पानी नहीं निकलता या छनता न हो ।

सं पु —उक्त प्रकार का कपडा ।

घाटरवरस—स पु. [अ वाटरवर्स] नगर मे पानी की व्यवस्था करने वाला विभाग, जलदाय विभाग ।

घाटलउ—देखो 'वाट' (रू भे-)

उ०—जातु सही जासइ हरी, चोर तरणी जिम चाल । वछित पामिउ घाटलउ, ने परिण घाटला काल ।
 —मा का प्र.

२ देखो 'वाटली' (रू भे)

घाटली—स. स्त्री. [स वत्तुलिका प्रा वट्टुली] १ भगूठी । मुद्रिका । (उ र)

उ०—१ मोती-जडी ज हाथि, सुरह-सुगंधी घाटली । सूती भाकिम रात, जाणू ढोलू जागवी ।
 —डो मा

उ०—२ छूणानी त्वाति वली, वली घाटली कोट । वाली परवाळी अघर, अमी तरणी तिहा ओट ।
 —मा कां. प्र

रू भे —वाटुली ।

५ देखो 'वाट' (अल्पा., रू. भे)

६ देखो 'वाटी' (अल्पा., रू. भे)

७ देखो 'वाटली' (रू. भे)

घाटलीयो—स पु —१ वस्त्र विशेष ।

उ०—हवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र घापइ, गुटीया तरणीया

कस्तूरीआ प्रतापीआ, कुसभीआ मोलीआ माडवीआ मीणीआ,
घाटलीआ जलोदरीआ मणीआ जोडदरीआ प्राणीआ । —व स.

२ देखो 'घाटली' (अल्पा, रू. भे)

घाटलु, घाटली—स. पु. [प्रा वट्ट] १ प्याला, पात्र ।

उ०—थाल कचोला घाटला, वासण चरवी चग । मग गोधूमादि
दिये, प्रथवी रतन सुरग । —वि. कु.

२ वृत्ताकार, गोल ।

उ०—ईस तुम्हारइ एतलउ, भलउ भणइ ते भूर । क्षिणु प्राऊउ
क्षिणु घाटलु क्षिणु कालु क्षिणु क्रूर । —मा का प्र.

रू. भे.—घाटलउ ।

अल्पा —घाटलियो ।

घाटवड—देखो 'घाटवड' (रू. भे)

उ०—तीतर लउवा घाटवड, वेदाणी बुगलाह । लसें पखीवण
उड रह्या, वा' वा' जी वा'-वाह । —गजउद्वार

घाटवागो—स पु.—विवाह मडप मे अग्नि परीकमा के पदचात कन्या
के पिता द्वारा कन्या को पहनाई जाने वाली पोशाक ।

घाटवालनु—स पु—१ राह चलने या यात्रा करने की क्रिया । (उ र.)

२ प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव ।

घाटा—देखो 'घाटा' (रू. भे.)

घाटाऊ, घाटाऊ—देखो 'घाटाऊ' (रू. भे)

उ०—१ सातमी वार गगोदक री कावड भरिनें आणती हुती
सु क्रिए हेक सह्र घाटाऊ थकी क्रिएहेक रे वारणै रे चातरै
उतरियो । —नैणसी

उ०—२ विदण वखाग करे घाटाऊ, अेती जागू आवडियो।
सत्रा सहेत 'महेवा' सामी, पाडि माभो रण पडियो ।

—राव धीरम राठीड री गीत

घाटि, घाटि—देखो 'घाट' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ सिविका वइसी सचरइ, घरि धी राउलि जाइ । घाटि वली
विलोकती, विनता विव्हल थाइ । —मा. का प्र.

उ०—२ डोला, मारवणी मुई, तइ सारडी न लध । दीवा-केरी
घाटि जिम, खोडी-खोडी दड । —ढो मा

२ देखो 'घाटी' (रू. भे)

घाटिका—स स्त्री [स] १ फूल, बगिया, बगीचा, उपवन ।

उ०—करणकार वेस्याकार, चरमकार, मल्लकार खलकार धान्य-
खलरु वाटक घाटिक वापी पुस्करिणी क्रीडातडाग सरोवर ।

—व स

२ इमारत ।

उ०—क्षण एक जाइ देवकुलि, क्षण एक जाइ राज-घाटिकां, क्षण
एक जाइ घाटिका, एसी क्रीडा करइ । —व. स.

३ वह भू-गट जिस पर कोई इमारत गटी हो ।

रू. भे —घाटिका, घाटी, घाडि घाटी ।

घाटी—स. स्त्री [स] अनाज पीसने की चक्की के चागे धोर का वह
घेरा जिसमे पीसा हुआ आटा गिरता रहता है ।

३ घेरा, आहता ।

३ कर, टेका ।

उ०—दाण पृच्छी हल मोल भाग भेट तनारक्षक वद्धापन मन्वरक
बल चचा चारिका गढ घाटी छत्र आलहण थोटक कुमारादि मुम्हदी
श्रुति क्रमेणास्तादसा करा जाता । —व. म.

४ कमर, कटि ।

रू. भे.—घाडि, घाटी ।

५ देखो 'घाटी' (रू. भे.)

उ०—तदनतर लाहता लडसहता इसा पुण्यवत, लीला कामदेव
जिसा, आरोगिवा बइठो । तदनतर प्राट घाटा घाटी कचोला
कचोलवटी सीप सूनवटी प्रगुणी हुई । —व स

६ देखो 'घाट' (रू. भे)

७ देखो 'घाटिका' (रू. भे)

घाटिइ—देखो 'घाटी' (रू. भे.)

उ०—क्षण क्षण साकर घाटीइ, क्षण क्षण कढीइ दूध । क्षण
क्षण बीडी आपीइ, मुख तवोलि सुध । —मा. का प्र.

घाटीकोळो—स पु —चर्पा ऋतु में होने वाला कुष्मांडु ।

घाटीपच—देखो 'पचवटी' (रू. भे.)

उ०—मारे व्याघ कवध अमाई, घाटीपच वसानूदा । रामण तद
हरी जानुकी राणी, भीली वेर भखानूदा । —र ज. प्र

घाटली—देखो 'घाटली' (रू. भे)

उ०—चौसठि व्यजन रूप आहार दइ, एक स्थाल विसाल घाटली
सीय कचचोला भ्र गारादिक भाजन सरवे समोपइ । —व स

घाटली—स पु.—पात्र विशेष, कठोरा ।

उ०—१ अथ पूग सोपारा, अति फारा, प्रधान रसनिधान, स्त्रीखडि
खरख्या, करपूर घबला प्रावावना घाटलीं सुरग सुभग चीकणा
कोचडीयाला, चाव्या रस मूकइ, इस्या अपूरवोत्तम पूग । —व स.

उ०—२ सूदम सकोमल रोमराइ, सधलाइ गुण वसइ जेह तराइ
काइ, जासीइ राखे ब्रम्हिलउ पाछउ थाइ, घाटला अकाई चोपख्या
तीन्हा इस्या ल ग, सुवद्ध मासल अग, जेह तरणी कृहदि चग, उज्ज्वल
दत, जेहनी सोभा अत सुभ इसउ असभ । —व स.

उ०—सौर्यव्रत्ति जेह नइ समग्र, मूस माहि फिरता सुवरण नी
परिइ वाटुलां, वीज सरीखा नयन तेह नइ भइ ऊपजइ गजनइं
रोगसयन । —ब स

वाटी—देखो 'वाटी' (रू भे.)

वाड—१ देखो 'वाड' (रू भे)

उ०—यत्र मत्र मसारा गीघ करका की वाड मही ।

—अ. वचनिका

२ देखो 'वाट' (रू. भे) (७)

उ०—जठे अमरसिंघजी घोडी कुदायी सी हमर्जे रै हाथी रै
दातूसळां ऊपर पग मेलिया । अर अमरसिंघजी री हावौ हाथ
हौदै री वाड में पडियो । —द दा

३ देखो 'वाड' (रू भे)

उ०—जभी खैद लाग प्रळ काल रूपी वीर जुटा, नीराताळा
वाण छूटा आतसा नीहाव । कँवाण वाड स सया भोकीया आरात
कूर्प, 'हरा' वालै जाडा थडा भोकीया हेराव ।

—विसनसिंघ री गीत

वाडगिरी—स. पु—पर्वतो मे श्रेष्ठ हिमालय पर्वत ।

वाडचर—स. पु.—सूअर, वराह । (अ मा, ह ना मा)

वाडणो—देखो 'वाडणो' (रू भे)

उ०—वाहरू घरा आटायता वाडणा, पखा जळ चाडणा अखाडे
पाथ । 'नाथ' री ऊपेर्पे जको राजा नही 'नाथ' री थपे
सुज जोघपुर नाथ । —हटौजी खिडियो

वाडणो, वाडबौ—देखो 'वाडणो, वाडबौ' (रू भे)

उ०—'विहदेस' पवगै वाडतै, खग नागपुर घर खाटतै । जीवता केहर
तणी जारौ, खाच काढी खाल । —रा रू.

वाडणहार, हारी (हारी), वाडणियो—धि० ।

वाडिघोडी, वाडियोडी, वाडघोडी—भू० का० कृ० ।

वाडीजणो, वाडीजबौ—कर्म वा० ।

वाडभेय—देखो 'वाडभेय' (रू. भे.) (अ मा)

वाडम—१ देखो 'वडम' (रू भे)

२ देखो 'वडो' (मह, रू भे.)

वाडली—देखो 'वाडली' (अल्पा, रू भे)

वाडली—सं. पु—१ ऊठ या घोडे को चुला छोडते समय उनके पावो
मे लगाया जाने वाला बघन, जिससे पशु चल सकता है पर भाग
नहीं सकता ।

उ०—तितरै मारग माहै डोलैजी नै चारण मिळीयो । कष्टी,
जे ठाकुरा, उठ खोडाव नै बेळ जणा ऊपर चढीया । सो इसी

करहा मे कासू खून छै । तारै डोलैजी छुरी कमर माहा काढनै
दीनी । तारै चारण उठ रै पग माहा वाडली काटीयो । ऊठ च्यारू
पगा हुवौ । —डो. मा.

२ देखो 'वाडली' (रू भे)

वाडव—स पु—[स वाडव्य] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ परिण वाडव बघवु नही, दीजइ देस-निकाल । वार विनव
न कीजइ, ते माटइ ततकाल । —मा का प्र.

उ०—२ दैवइ लिखिं ते नवि टलइ, वाडव रहिठ विचारि ।
धीर घरी घर उडितु, हईडा हवइ म हारि । —मा का. प्र

उ०—३ वाडव सभलि वीनती, सूर देवरावू साखि । यौवन मइ
इम जालविठ, रक रयण जिम राखि । —मा का प्र.

उ०—४ घरि घरि दो दो दीसीइ, चरसिइ आभि अगालि ।
लेई आर्वे लाख ते वाडव वाचा पालि । —मा का. प्र.

वाडवक—स पु—शृगार मे एक आसन विधेय ।

वाडवेय—स पु. [स.] १ साड ।

२ बँल ।

रू भे—वाडभेय, वाडभेय, वाडिभेय ।

वाडहोळी—स पु—भय का गोला ।

उ०—बँरिया री फौज रै म्हारी पती जावता ही दुसमणा री
छाती मे हील खाडा पडण बूक जावै वाडहोळा (भै रा गोटा उठे
छाती मे) निजर पडता ही अर सिपाही ओढी ओळा ताक ताक नै
कहै आयो आयो । —वी स. टी

वाडि—देखो 'वाटिका' (रू भे.)

उ०—माऊळि भूय मतगा, घण मद मोल खोल धूमता । ताकि
वाडि धिलगा काकीडा, ननै कूदति । —रामरासी

२ देखो 'वाटी' (रू भे.)

वाडिभेय—देखो 'वाडवेय' (रू भे.) (ह. ना मा)

वाडिम—१ देखो 'वडम' (रू भे)

उ०—देसा सिरामणि दीपणौ, जुघ जीपणौ जमराण । देसोत
वाडिम दामणौ, घर राखणी लखधीर । —स. पि

२ देखो 'वडो' (मह, रू भे)

वाडियोडी—देखो 'वाडियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वाडियोडी)

वाडियो—देखो 'वाडियो' (रू भे)

वाटी—स म्त्री—१ रथ ।

उ०—इक दिन इक अटवी में ऊनी, छवि सखरी तर छाया । वाटी
चडि राय दसारण, उणहिज वडि तलि प्राया । —ध व वं.

२ हाथी का हीदा, अवाडी ।

३ देखो 'वाटी' (रू भे) (उ र)

४ देखो 'वाटिका' (रू भे) (उ र)

उ०—वीर जइ बाहो महि वैगि कीठ विसाम । चपक-तलि चिंता
समी, निद्रा आवी ताम । —मा. का. प्र

बाहो—देखो 'बाहो' (रू भे)

बाह—देखो 'बाह' (रू भे)

उ०—१ वरणाथ खाग चाडि बाह, भ्रोपवं उजास रा । वरणात वीच
नीर वाधि, रूप मे वरणास रा । —सू प्र

उ०—२ भरद घमसाण पुह लिये भ्रालोमणा, वढण कज वाढ
भेरीजीये वीजळा । डोह घड चौवडा फतह जग खळा डळा, लत्री
गुर री छएल करे नत धूकळा । —अज्ञात

उ०—३ दातूसळ वजर घजर जमदाढा बाढा ऊगाढा विहर ।
असपति नजर भली आफळियो, कुजर नै नाहर कवर ।
—लखमीदास गाडण

उ०—४ घणी तरवारधा रा बाढ उछळ छे ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—५ लड पडे फूट छड छाक लोह, छड पकड जडे जमदढ
छछोह । भडियाल बाढ खग घजर भाट, घडियाल फजर गढ लक
घाट । —वि. स.

बाढण—देखो 'बाढण' (रू. भे.)

उ०—पायका पद खाग घणू पलकी, हव लागत 'पाल' तणी
हलकी । दोयणा सिर बाढण आन दुभ्री, हरणाखुर 'डेव' सवार
हुभ्री । —पा प्र

बाढणी—देखो 'बाढणी' (रू भे)

बाढणी, बाढवी—देखो 'बाढणी, बाढवी' (रू भे)

उ०—१ वहता रगत देखि खळ बाढे । चद्रप्रहास ग्रहे घक बाढे ।
—सू. प्र

उ०—२ सत्रु बाढि सीस पूजे सकति । बाढेल कहाया इण
विगति । —सू प्र

उ०—३ 'वीरम' सलखावत खगा वाग । जोइया बाढि विडियो
अजाग । —सू प्र

उ०—४ तरे गरीबनाथ कुहाडियो लेने आवा बाढण नू ऊठियो ।
तरे चेले १ कहायो—हाथा रा पाळिया काय बाढी । —नंगसी

उ०—५ राजाजी नै रीस ती ऐडी आई के डोकरा री माथी बाढ
न्हाक । पग पटकता वोल्या—थू भूठो नी है ती काई म्है भूठो
हू । —फुलवाडी

उ०—६ मिळग्यो ती कुचमादी री एक-एक रग सगळा सस्तरा सू
बाढेला । —फुलवाडी

उ०—७ वाक मुहा वाजिद विवाणां, दाढां पीस रीस लणाणां ।
घरती घमस तुरा घम घमी, घाढे साढ सेट सीरम्मी ।—गु. व.
बाढणहार, हारी (हारी), बाढणियो—वि० ।
बाढिभोडी, बाढियोडी, बाढपोडी—भू० का० कु० ।
बाढीजणी, बाढीजयो—कर्म वा० ।

बाढळ—देखो 'बाढळी' (मह, रू भे)

उ०—घोराडि जमदढ फाटि फट्टे घट, नीसर सुस्सर सेल नरा ।
बाढळ वहे रत साळ विघूटे, रभ वरे वरमाळ वरा । —गु. व

बाढाळी—देखो 'बाढाळी' (रू भे.)

बाढाळी—देखो 'बाढाळी' (रू. भे)

उ०—१ चाढा दहु वळ चाढवे, भळहळ भूलाळा । घुरवाणा दहु
दळ खिवे, वीजळ बाढाळा । —सू प्र

उ०—२ वडियो भुनेस 'पती' बाढाळी, वळियो सुरजन देख वड ।
गढ चित्तीड गरव तण गरजे, गाडी गी रणवभ गढ ।
अज्ञात ।

उ०—३ वीकानेर भोज बाढाळि, सारा मुह भोडवे सरीर । 'रुपा'
हरे राखियो रूठी, नेहवेई उतरती नीर । —द दा.

बाढियोडी—देखो 'बाढियोडी' (रू. भे)

(स्त्री बाढियोडी)

बाढेती—देखो 'बाढेती' (रू. भे.)

बाढेल-स. पु —१ राठीड वदा की एक उपशाखा ।

२ पवार वश की एक शाखा ।

३ देखो 'बाढेली' (मह., रू भे)

रू. भे.—बाढेल ।

बाढेली-वि —१ वीर, योढा, वहादुर ।

स. पु —२ पवार वश की 'बाढेल' शाखा का व्यक्ति ।

३ राठीड वश की 'बाढेल' उपशाखा का व्यक्ति ।

रू. भे.—बाढेली ।

मह —बाढेल, बाढेल ।

बाढोबाढ-स पु —प्रहार पर होने वाला प्रहार, घाव पर घाव ।

बा'णी—देखो 'बाहणी' (रू. भे.)

बा'णी, बा'वी—देखो 'बावणी, बाववी' (रू. भे)

उ०—पाछी री पाछी सुथरा पाणी री लोटी लेथ मासी रे गोडे
भाई । हाथ पग दवावण लागी । पछे नाक री फुरणिया भीच
मासी री सास रोक्की । पाणी रा छावका दिया । दो तीन तडाचा
बा'यने मासी थोडी सी आख्या खोली । —फुलवाडी

बात-स. पु [स] १ वायु के अधिष्ठाता, पवन देव, घाठ दिग्पालो मे
से एक ।

स. स्त्री.—२ वायु, पवन, हवा । (अ मा, ह. ना मा)

उ०—फागुन फरहरै वात प्रभात नी सीत अपार । नाह सु फागन रमै बहु राग, सुहागणि नारि । —घ. व. ग्र.

२ शरीरस्थ तीन तत्व-कफ, वात पित मे से दूसरा, जिसके कुपित होने से अनेक रोग पैदा होते हैं ।

उ०—आधि भूतक अधिदेव अध्यातम, पिंड प्रभवति कफ वात पित । त्रिविध ताप तसु रोग त्रिविध मे, न भवति वेलि जपतनित । —वेलि

३ शरीर की अपान वायु, अधो-वायु ।

रू. भे—वत, वात, वाय, वायइ ।

४ देखो 'वात' (रू. भे)

उ०—१ ग्रहै अत्रावलि, उडि चली ग्रीभणी । त्रिहू भुवण रही वात सोहडा तरणी । —हा भा

उ०—२ बरि हू आविसी थई रही, मझ लागी हू मात । मइ माधव-विण एक क्षण, जीव्यानी नहीं वात । —मा का प्र

उ०—३ पिता प्रणाम करू किस्यू, मोकलावउ किहा वात । करसिइ ते कलपात कलि, सवणि सुणता वात । —मा का प्र

उ०—४ रावळा आसापुरा जाणै, था थका वयु न जाणा । रावळ टीकै बँडे, तरं म्हा नै रावळ वात । —नैणसी

उ०—मास तीन चार री आवाघान छै । समुद्र मोहल मे बँटी छै । वाता एकायत करै छै । —कृवरसी साखला री वारता

वातकण्टक—स पु [स.] एक वायु रोग जिससे पावों की गाठों (ग्रथियों) में दर्द होने लगता है ।

वातकार—वि [स] १ वायु उत्पन्न करने वाला ।

२ वह खाद्य पदार्थ जिनका उपयोग करने से वायु उत्पन्न होती है ।

३ देखो 'वातकार' (रू. भे)

उ०—वसकार यत्रकार उलकार तलकार तालाकार भुगलकार आउजकार पलाउजकार गीतकार वातकार, नत्यकार पाडकार । —व स

वातकोप—स. पु [स] शरीर के अन्दर होने वाला वायु का प्रकोप । (वैद्यक)

रू. भे—वातप्रकोप ।

वातगर—देखो 'वातकार' (रू. भे.)

उ०—राजद्वारिक लेखक कथक वातगर कवि काठीया मसूरिया दीचटीया उपाध्याय बइकार । —व स.

वातगुल्म—स. पु [स.] १ वात विकार से होने वाला गुल्म रोग (वैद्यक)

२ वात चक्र, अघड ।

वातडली, वातडी—देखो 'वात' (अल्पा रू. भे)

उ०—१ था बीना सारी वातडी, सूनी होयसी सार वै । कुवर कहहै रै सूवटा, आइ राकस हार वै । —रीसाजू री वात

उ०—२ मात-पिता सै वीसरै, बधू बीसारंह, सूरु पूरा वातडी, चारण चीतारंह । —अग्यात

उ०—३ सेवै नर सदीना मुरघर, सदा नीरोगी ही रवै । वूठै जारी वातडी नै, वगत बटाऊडा कवै । —दसदेव

उ०—४ पथी नइ पूछ, वातडी रे, तुमे आया उग्रमेन पुर थी आज रे । तिहा दीठा अन्ह गुरु राजीया, स्त्रीजिनकुसल सूरि राज रे । —स कु.

वातचक्र—स पु [स] १ आपाठ मास की पूर्णिमा के सूर्यास्त को आने वाला ज्योतिष का एक योग ।

२ देखो 'बयूळी' (रू. भे)

उ०—ऊपडी रजी मझि अरक एहवौ, वातचक्र सिरि पत्र वसति । सद नीसह नीसाण न सुणिजै, वरहासा नासा वाजति । —वेलि

वातचीत—देखो 'वातचीत' (रू. भे) (उ र)

वातज—वि [स] वायु द्वारा उत्पन्न, वायुकृत ।

स पु—१ हनुमान ।

२ भीम ।

वातजात—स पु [स. वात-जायते] १ हनुमान ।

२ भीम ।

वातज्वर—स पु [स] वायु विकार के कारण होने वाला ज्वर ।

रू. भे—वायज्वर ।

वातप—स पु—हरिण, मृग । (ह ना मा)

रू. भे—वातप ।

वातपुत्र—स पु [स] १ हनुमान ।

२ भीम ।

वातपोत, वातपोथ—म. पु [स. वात पोथ] पलास का वृक्ष ।

वातपोस—देखो 'वातपोम' (रू. भे.)

उ०—राव जोधो पोडियो हुती । वातपोस वात करता हुता ।

राजविया री वाता करता हुता । —नैणसी

वातप्रकोप—देखो 'वातकोप' (रू. भे)

वातप्रकृति, वातप्रगति—वि [स वातप्रकृति] १ जिमकी प्रकृति मे वायु की प्रधानता हो ।

२ जिसके गाने मे शरीर मे वात-वृद्धि होनी हो, जो वायु

कारकहो ।

वातरक्त, यानरगत—स. पु [स वात-रक्त] कुपथ्य या अयुक्ताहार-विहार से वात विकार के कारण रक्त विकार होने का एक रोग ।

वातरोगिणी—स स्त्री [स] मुह मे होने वाला एक रोग ।

वि वि.—इस रोग में जीभ पर चारो ओर काटे के समान मास उभर आता है ।

वातल, वातली—स पु. [स. वाताल] १ चना ।

वि —१ वायु वर्द्धक ।

२ वात युक्त, वायु प्रधान ।

उ०—भक्ष्य भोजन निरास्वाद, स्त्री तणी जाति प्रमरयाद, रहस भेद, रसच्छेद, आक्रमा स्तोक निवाणज लोक देह वातली, अक्ति पातली, अल्प अत्यु, पणि पणि अक्रत्य, गप वेटा तणा गरथ सातद, आपणा छोर कुक्षेत्रि घातई । —व. व

३ देखो 'वातल' (रू. भे)

वातलङ्गी—देखो 'वात' (रू. भे)

वातपिगत—देखो 'वातपिगत' (रू. भे)

वातपैरी—स पु—वादा म ।

वातध्याधि—स स्त्री -गठिया रोग ।

वातहडा—स पु—कोई जाति या वर्ग विशेष । (सभा)

वाताट—स पु.—१ सूर्य का घोडा ।

२ मृग या हरिण ।

वातारमज—स पु [स] १ पवन-पुत्र हनुमान ।

२ भीम ।

वातापि, वातापी—म पु. [स वातापि] १ एक पीराणिक राक्षस जो

वातापि का भाई था ।

उ०—वातापी पीधू बली भ्रगइ भ्रणि भ्रगस्ति । इद्र तणा आयुष गली, दीघ दधीचिद्र अस्थि । —मा. कां. प्र

२ हरिण, मग ।

वातायण, वातायन—स पु [स वात+अयन] १ खिडकी ।

२ झरोका ।

३ रोगनदान ।

४ घर के दरवाजे के आगे की पटी हुई जमीन ।

५ फस, मय ।

६ जानी ।

[म वात+अयन] ७ घोटा, अय ।

रू. भे—वातायण ।

वातायनसन—म पु—योग के चौरासी आसनो मे मे एक ।

वि वि — एममे गमे पर की ऐधी दाहिने पर के जाध के मूल में मया कर, पुटना दाहिने पाव के घुटने पर लगाकर पठा रहना

होता है ।

वातायु, वातायू—स. पु. [स. वातायु] १ हरिण । (अ मा, ह. ना मा)

२ वारहसिंगा ।

वातारि—सं. पु [स] १ एरड ।

२ अजवायण ।

३ वायवडिंग ।

४ सतावर ।

५ वील का पोधा ।

वाताल—वि—वार्ते करने वाला, वातुनी ।

वाताळगो—स. पु—वात चीत, वातालाप ।

उ०—ताहरा भाटिये कहियो-पाणी पावो, ज्यु वाताळगो करा वर भाजां । —नेणसी

वाति—स स्त्री.—१ घोडे का मूत्र ।

उ०—घोडी मोल लैता डावो पग आघो करै सो न लीजै । जीमणी पग आघो करै सो लीजै । (शुभ) जकी घोडी मोल लैता हीसै और खता करै लाद करै सो लीजै । (शुभ) वाति करै सो न लीजै, लाद करै सो सुखदाई । —शा हो.

रू. भे—वाती ।

वातिपी—देखो 'वात्पी' (रू. भे)

वाती—स स्त्री—१ कच्चे मकानो की छाजन पर लगाया जाने वाला पतली लकडियो का बध ।

उ०—वाहं फोग खेतडा कढै, सीवा वाड वणावता । टापी टाटा टेर वाती, फलसा छाट छवावता । —दसदेव

२ देखो 'वाति' (रू. भे)

३ देखो 'वाती' (रू. भे)

वातुनी, वातूनी—देखो 'वातूनी' (रू. भे.)

वातुल, वातूल—वि [स वातुल] १ उन्मत्त, मस्त । २ पागल ।

३ सनकी । ४ वायु से पीडित, गाठिया का रोगी ।

रू. भे—वातूल ।

वातोकळी—१ देखो 'वातूनी' (रू. भे.)

२ देखो 'वारतालाप' (रू. भे)

वातोदर—स पु [स] एक रोग विशेष जिसके कारण हाथ-पाव, नाभि,

काख, पसली पेट, कमर और पीठ मे पीडा होती है, तथा सूखी खासी आती है और शरीर भारी रहता है ।

उ०—महोदर जलोदर कठोदर वातोदर भगदर अतिसार ।

—व. म

वातोदमी—स स्त्री. [स वातोमी] एक वरुण वर्त्त जिसमें ग्यारह अक्षर होते हैं, जिसका क्रम मगण, भगण तगण और अत मे दो गुरु होते हैं ।

बातोल-स. स्त्री —रबी की फसल में बोवाई से पहले की जाने वाली खेत की जुताई ।

बातौण-स. पु —बातचीत ।

उ०—वरी सू बातौण, कासूँ हव भरडा करै । इए सात्रव हाथाए, केवा लं जमडा कर्न । —पा. प्र.

बात्रक-स. स्त्री —ईडर राज्य की एक नदी ।

वि वि.—यह दक्षिण-पूर्व में मेघराज के पास से निकल कर दक्षिण-पश्चिम में जाकर माझम नदी में मिलती है तथा बोथा स्थान पर सावरमती से मिलती है ।

बात्सल्य-स पु [सं. घासल्य] १ सतान के प्रति होने वाला स्नेह, ममत्व ।

२ प्रेम ।

रू भे —बाछळ, बाछल, वाच्छिल, वाच्छिल्य, वाछल, वाछल्य ।

बात्सायन-स पु [सं] १ कामसूत्र के रचयिता एक ऋषि ।

२ न्याय सूत्रों पर भाष्य रचयिता ।

बात्सायनशास्त्र-स पु —वात्सायन ऋषि द्वारा रचित कामशास्त्र ग्रंथ (व स)

बाद-स पु [स] १ हठ, जिद्द ।

उ०—१ कूबर मत कर बाद, राव कहै सो सामळी ।

—कुंवरसी साखला री वात

उ०—२ तरै सारै चाकरै नागही रा देवातन री वात राव कर्न कही, पए मडळीक मानै नही । बाद लागी । —नैणसी

उ०—३ दुथणों री जाई नै कितो कहचो के दोना नै जगाय नै सिधावती वेळा मिळाय दां । चोज राख्या वातडी विगडैला । पए वादीली मानो ई नी । श्रीई कोई बाद है । —फुलवाडी

२ वादा, कौल, वचन ।

उ०—वाकिम्म वीद दिन वाकडै, बाद न छडै वकपए । वाकडो सेर उठै विडेण, वडै जीह वका वयए । —गु रू व.

३ विवाद, प्रतिवाद ।

उ०—१ किसी बाद रिख सू करी, सामळी जनक सुगात्र चाप दिखाळो रामचद, भएँ लिखमए भ्रात । —राम रासी

उ०—२ कियो बाद हाथे जिका वात इतरी कही । दादि जिण वात री जगत दीधी । —कवर नरपाळ देवल री गीत

४ तर्क, दलील, वहस ।

उ०—साधन काव्य कला सुर साधत, बाद विवाद करै मत वाधत । —अर्यात

५ युद्ध, झगडा ।

उ०—१ राजा रांणा भेलिया, कीष उकीला वत्त । बाद वडा सु छडियै, एहस भाद् मत्त । —गु. रू. व.

उ०—२ माणस २ रुडा भेलनै रायांसिध नू कहाडियो—थे नै जस बेई बाद कियो छै थै स्याणा छी, जसो भोटियार छै । —नैणसी

६ प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ वीरा रस हेक न मेलहै बाद । निहस्से हेक करै सिंह नाद । —गु रू. वं.

उ०—२ आप लोगा नै समभावण री बाद भगवान ई करै तो उए नै हार माननी पडैला । —फुलवाडी

७ बातचीत, कथन ।

८ वाणी ।

९ शब्द, वचन, वाक्य ।

१० बयान, वरुण, निरूपण ।

११ टीका, व्याख्या, भाष्य ।

१२ उत्तर ।

१३ अफवाह, किंवदन्ती ।

१४ तर्क शास्त्र ।

उ०—बाद भणी विद्या भणी जी, पर रजए उपदेस ।

—धरमपत्र

१५ शास्त्रार्थ ।

उ०—छ तरकि चेस्टानुवाद अरथानुवाद सरवानुवाद पंचावयवि दसावयवि वादीसिउ बाद लिह छए भासा वोल्ह । —व. स.

१६ किसी पक्ष के तत्वज्ञों द्वारा निश्चित किया हुआ कोई सिद्धान्त १७ किसी अभियोग या मुकद्दमें पर विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला मन्तव्य ।

१८ दुराग्रह ।

१९ सज्ञा शब्दों के आगे लगने वाला एक प्रत्यय ।

२०—७२ कलाओं में से एक ।

२१ भेंस के चर्म की पतली रस्ती ।

उ०—खालडी भे लूए भराय घाणी में घाल पीलावैला के सूळी वाढ मारैला के माथा रै बाद वंधाय प्राए काडैला इएरी की ठाँ कोनी । —फुलवाडी

२२ भेंस का चमडा ।

२३ देखो 'वाद्य' (रू. भे.)

रू भे —वाद, वाध, वादि, वादी, वाध ।

वादक-स. पु [स] १ गवैया, गायक ।

२ वाद्य बजाने वाला, संगीतज्ञ ।

३ तर्क या बहस करने वाला ।

४ वक्ता ।

रू. भे.—वाद्यक ।

बादण-स. पु [स. वादन] १ वाद्य श्रजाने की क्रिया भाव ।

२ कहने या बोलने की क्रिया या भाव ।

३ बाजा, वाद्य ।

४ भंस के चमडे की रस्सी जो गाडी के हिस्से को वाघने के काम आती है ।

उ०—दाता भाले डाढिया खीर्जे गउ खाणाह । थे राणा अरवगा थयो बादण दो वाणाह । —पा. प्र.

५ वादी जाति की स्त्री ।

रू. भे.—बादण ।

बादणो, बादबो—क्रि. स [स. वादन] १ वाद-विवाद या बहस करना ।

२ वादन करना, बजाना ।

३ युद्ध करना ।

४ देखो 'बाजणी, बाजबो' (रू. भे.)

उ०—तिम सयल वादि निय निय घरि हि, ताम गत्व पटावइ चडइ । जिन भद्र सूरि गुरु तणीय, हथुन जा कन्नि हि पडई । —जिन भद्र सूरि

बादणहार, हारो (हारो), बादणियो—वि० ।

बादिप्रोडो, बादियोडो, बाद्योडो—भू० का० कृ० ।

बादीजणी, बादीजबो—कर्म वा० ।

बादणो, बादबो—रू.भे. ।

बादप्रतिवाद-स पु—१ वाद या तर्क मे होने वाला परस्पर कथोपकथन,

बहस ।

२ वाद-विवाद ।

बादरग-स पु [स] १ वट वृक्ष ।

२ अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल ।

बादरायण-स पु.—वेदव्यास का एक नाम ।

रू. भे.—बादरायण ।

बादरायणि-स पु—१ व्यास के पुत्र शुक्रदेव मुनि ।

२ देखो 'बादरायण' (रू. भे.)

बादरो-स स्त्री—चमडे का तस्मा जो घोडे के चारजामे के साथ रकाव

मे कसा जाता है ।

बादळ, बादळउ—देखो 'बादळ' (रू. भे.)

उ०—१ उडतां जिका ओप कचि आणो । अनळ दक्षिण बावळ अहिनाणो । —सू. प्र.

उ०—२ एक सोर सारत्ति घोर घूवा रवि डबर । ज्यो वावळि बावळ विसाळ ओपे मग अवर । —रा. रू.

उ०—३ कोट भुरजा रा कोसीस नै घमळहर घमळागिर पहाड ज्यो बावळा रा कीरण सारीखा ऊजळा सीकोट सों निजरि आबै छै । —रा सा. स

बादळावाळो—देखो 'बादळावाळो' (रू. भे.)

बादळियो—देखो 'बादल' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—सावण आयो सायवा, कही य तो पीवर जाय । पग-पग पाणी पालरो, बादळिया रो छाय । —ली. गी.

बादळो—देखो 'बादळ' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—आयो-आयो सावण भादबो, कोई काळो घटा घिर आय । आज म्हारी बादळो घरसेगी । —लो. गी

बादळो—१ देखो 'बादळो' (रू. भे.)

उ०—१ इसी देख भीवे कह्यो, क्यू पाणी छै तो कही ज्यूं सजळाई करा । तरै कह्यो, म्हारा घोडा रै हानै बादळो जळसू भरियो छै; सो ल्यो । —जखडा मुखडा भाटी रो बात

उ०—२ अतलस थरमा ऊमदा, तास बादळा त्यार । जसडा कसीया जानीया, कसीयो राजकुमार । —मयराम दरजी रो बात
२ देखो 'बादळ' (अल्पा, रू. भे.)

बादविवाद-स. पु.—१ तर्क वितर्क, बहस ।

उ०—दारू पीलै पदमणी, मत कर बादविवाद । दारू में मारू दूसरो, पी कर देख सवाद । —लो. गी.
२ शास्त्रार्थ ।

बादबो-स स्त्री. [स वाद+बो= 'बो गति व्याप्ति-प्रजने'] सेना, फौज । (अ. मा.)

बादसाह—देखो 'बादसाह' (रू. भे.)

उ०—पछे बादसाह जी दिखण मे खानजहा लारै बुरहानपुर गया । —बा दा ह्यात

बादसाही—देखो 'बादसाही' (रू. भे.)

बादांम—देखो 'बादाम' (रू. भे.)

बादांमी—देखो 'बादामी' (रू. भे.)

बादानुवाद—देखो 'बादविवाद' (रू. भे.)

बादाळ, बादळक-स पु. [स. वादाल] १ सहस्रदण्ड नामक मछली ।

रू. भे.—बादाळक ।

वादासिर-स पु—वादा, कौल, प्रतिज्ञा के अनुसार ।

उ०—राण वणवीर री बडी रजपूत हुवो, जिणनू कवर वीरमदे
श्रोल पातसाह कने राखने आप आयो, पछे वीरमदे वादासिर
आयो नही । —नैणसी

वादि-वि [स] १ विद्वान ।

२ निपुण, दक्ष ।

३ देखो 'वादी' (रू भे)

४ देखो 'वाद' (रू भे)

उ०—पहुवी पयउ पमाण लखण वर वखाणइ, वादि विवादि
विनोदि सक निय चित्त न याणइ । —जिनभद्र सूरि

वादित्र-स. स्त्री.—१ चौसठ कलाओ मे से एक । (व. स)

२ देखो 'वाद्ययत्र' (रू भे)

उ०—१ अर घणा महोचत्र सेती गीत वादित्र, नाटिक, मगळा-
चार करि डूलह-डुलहणि रा सोहला गाईजता वीकानेर पधारिया
छे । —द वि

उ०—२ जिम नरेंद्र माहे राम, जिम रूपवन माहे काम, जिम
स्त्री माहे रमा जिम वादित्र माहे भमा । —वाग्बिलास

वादियोडी-भू का. कृ —१ वाद-विवाद या वहस किया हुआ २ वादन
किया हुआ, वजाया हुआ ३ युद्ध किया हुआ ।

४ देखो 'वाजियोडी (रू भे)

(स्त्री वादियोडी)

वादियों-स पु—सोने-चादी के आभूषणों पर चमक (पालिस) करने
का एक औजार विशेष ।

वादीसिउ-स पु.—छे प्रकार के तर्कों मे से एक ।

उ०—छ तरकि चेष्टानुवाद, अरथानुवाद, सरत्रानुवाद, पचावयवि,
दसावयवि, वादीसिउ वाद लिइ —व स

वादी—देखो 'वादी' (रू. भे)

उ०—१ एरिस जि केवी भुवणिहि भलइ वादी मयगळ गउयडइ ।
जिनभद्र सूरि केसरि उरिहि त छुज्जवि धरणिहि पडइ ।

—जिनभद्र सूरि

उ०—२ तिए भाग री काई देखा अमरसिहजी इसे वादी अह-
कारी हुवा । —ठा राजसिह री वारता

उ०—३ सो सूरजी री वेटी वेरसी- वरस आठ री खीवे री वेटी
जागर वरस दस री सो सयाणी अर वेरसी री सुभाव वादी, रीसट
सो सारा जाणै । —सूरे खीवे काघलोत री वात

वादीकर—देखो 'वादीकर' (रू. भे)

वादीगर—देखो 'वाजीगर' (रू. भे)

उ०—जरमनी जोघार मिटावै मारका । ज्यू वादीगर वाग अछता
आरखा । —किसोरदान वारहठ

वादीलौ—देखो 'वादीली (रू भे)

उ०—१ पग-पग काटा पाथरै, वादीलौ वनराव । होणौ ज्यू त्यू
होवसी, दियै न हीणी दाव । —वा. दा

उ०—२ दुयणी री जाई नै किती कह्यो के दोना नै जगाय सिघावती
वेळा मिळाय दा । चोज राख्या वातडी विगडैला । परण वादीली
मानी ई नी । ओई कोई वाद है । —फुलवाडी
(स्त्री वादीली)

वादीवाय-स. पु [स. वातविकार] ऊठो का एक रोग जिसमे उनका
चलना फिरना बद हो जाता है ।

वाडू—देखो 'वाधू' (रू भे)

वाडूमाळा—देखो 'विद्युन्माला' (रू. भे)

वादैं-कि वि [स वाद] शास्त्रार्थ मे, विवाद मे ।

उ०—ब्राह्मण वादैं हराविया * ।

—धरमपत्र

वादोधुनि—देखो 'वेदधुनी' (रू भे.)

वादोवदि—देखो 'वदोवदि' (रू भे.)

उ०—इसी आणद देखि कै कटक माहे थै वघाऊहार भागं वादोवादि
दौळ्या । —वेलि टी

वादोवाद—देखो 'वादोवाद' (रू भे)

वादी-स पु [फा वाद] १ किसी कार्य के लिये निश्चित किया जाने
वाला समय, नियत समय ।

२ किसी कार्य को पूरा करने के लिए किया जाने वाला सकल्प,
प्रण, प्रतिज्ञा ।

उ०—जो इण भाति नहीं करै छै, सो वादी खोटी छै । —नी. प्र.
३ कौल, वचन, इकरार ।

रू. भे — वादी, वाइदी, वायदी ।

वाद्य-स. पु [स] १ वाद्ययत्र, वाजा । (सगीत)

२ उक्त यत्र की ध्वनि ।

३ वहोत्तर कलाओ मे से एक ।

४ चौसठ कलाओ मे से एक ।

रू भे.—वाद ।

वाद्यक—देखो 'वादक' (रू भे.)

वाद्यकळा—स स्त्री [स वाद्यकला] वाद्य वजाने की कला ।

(सगीत) (व स)

वाद्ययत्र-स. पु. [स] वह यन्त्र जिसको विविध तरह से वजाकर विविध
प्रकार की ध्वनिया निकाली जा सकती है, साज-बाज, वाजा ।

रू भे — वाजत्र, वाजत्र, वाजत्र, वाजित्र, वादत्त, वादित्र, वाद्यत, वाद्यत्र, वजजत्र, वजित्र, वजित्रि, वाजत, वाजत्र, वाजित्र, वाजत्र, वाजित्र, वादित्र ।

बाघ-वि — १ विशेष, अधिक ।

उ०—वीसा सात नगद वाटै वण, वळै एक रिपिया दस बाघ ।
दसराव दसरावै दीर्घ, अणफट खत मामली असाघ । —द वा.
२ बढकर, बढती हुई ।

उ०—महाराज कुमार आप जे फरमावै था तीसूं सो विस्वा बाघ
नीकळी । —कुवरसी साखला री वारता

३ देखो 'बाद' (रू. भे)

उ०—तरै कह्यो—राज ! आदमिया नू हुकम करी, हू भायसी
भिजोय चीराइनै बाघ कढाईस, तिया हेठै आवसी तितरी लेईस ।
—नैणसी

बाघक-वि — १ वृद्धि कर्ता ।

२ बढिया ।

३ देखो 'बाघक' (रू. भे)

बाघण-स स्त्री.— १ वृद्धि होने की क्रिया या भाव ।

२ वृद्धि होने की अवस्था या दशा ।

३ वृद्धि कारक ।

बाघणी, बाघवी— १ देखो 'बघणी, बघवी' (रू. भे.) (उ र)

उ०— १ बयणै नेह बघइ नही रे ली, नयणै बाघइ नेह रे सनेही ।
—वि कु

उ०— २ क्रोध करइ कर कूटता, कायर करडइ मुंछ । विधिविधि
जाइ बाघता, जाणै हनुमत-पुंछ । —मा का प्र

उ०— ३ मारुवै रावता गाजता मैणला, बाघियो वाद सुं इद्र री
वादळा । —गु. रू व

उ०— ४ विरहानल बाघ्यो गौविद । —घरम पत्र

२ देखो 'बाघणी, बाघवी' (रू. भे)

बाघणहार, हारो (हारी), बाघणियो—वि० ।

बाघिओडो, बाघियोडो, बाघ्योडो—भू० का० कृ० ।

बाघीजणो, बाघीजवी—कर्म वा० ।

बाघरी-स स्त्री.— भंस के चमडे की डोरी ।

उ०—आगं जायने देखै तो ऊदोजी पोढिया छै । ताहरा मेलै जायने
हथियारा रा बाघरचा वाढी । सेजवघ वाढिया । अस्त्री री चोटी
वाढी । —नैणसी

बाघामणी—देखो 'बघावी' (रू. भे.)

बाघामणी, बाघामवी—देखो 'बघाणी, बघावी' (रू. भे.)

बाघामणहार, हारो (हारी), बाघामणियो—वि० ।

बाघामिओडो, बाघामियोडो, बाघाम्योडो—भू० का० कृ० ।

बाघामोजणो, बाघामोजवी—कर्म वा० ।

बाघामियोडो—देखो 'बघायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बाघामियोडो)

बाघा—देखो 'बाघा' (रू. भे.)

बाघाऊ—देखो 'बघाऊ' (रू. भे.)

उ०—सहिए साहिव आविस्यइ, मो मन हुई सुजाण । आगम
बाघाऊ हुया, अण तरा अहिनाण । —ढो मा

बाघारणो, बाघारवी—देखो 'बघारणी, बघारवी' (रू. भे.)

उ०— १ सौहियो 'अमो' इण विघ सकाज, रघुवस उजागर महा-
राज । बाघारण हिंदुसथान वान, 'अभमाल' जोड नह भूप आन ।
—सू प्र

उ०— २ आभा रूप जोम ऊफारिणक, वणियो अनग दूसरै वारिणक ।
वीर तदिन कीरति बाघारी, भरत साख बघियो कृळ भारी ।

—सू प्र

उ०— ३ त्हारो सुजस अमर 'करणावत', वासुर जग बहु हुवै
वितीत । बाघारियो पाघडो विढतै, चैराडियो नही बढचीत ।

—द दा.

उ०— ४ सदा सोह चाडै समाना मणो, अनमादै अणो जगमा
दान । तपै देस पत्ती तणो मू ला मारणो वस बाघारणो वान ।

—ल. पि.

बाघारणहार, हारो (हारी), बाघारणियो—वि० ।

बाघारिओडो, बाघारियोडो, बाघारयोडो—भू० का० कृ० ।

बाघारीजणो, बाघारीजवी—कर्म वा० ।

बाघारियोडो—देखो 'बघारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बाघारियोडो)

बाघारो—देखो 'बघारो' (रू. भे.)

उ०—राम राज जोघपुर, सहू हरचद वारी । मास पच खट मास,
साह आपै बाघारो । —गु रू. ब.

बाघावणी, बाघाववी—देखो 'बघाणी, बघावी' (रू. भे.)

उ०— १ गज वघ बाघाविजै, मोती उच्छाळ्ये । लूण उतारै राइ
धी, चडिये अट्टाळ्ये । —गु रू व

उ०— २ मथाण्यी भाग धिन कपा फुरमावियो, तोर बाघावियो
सुकव ताई । —खेतसी वारहठ

बाघावणहार, हारो (हारी), बाघावणियो—वि० ।

बाघाविओडो, बाघावियोडो, बाघाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बाघावीजणो, बाघावीजवी—कर्म वा० ।

वाघवियोगी—देखो 'वघायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वाघवियोगी)

वाघि—१ देखो 'वद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

३ देखो 'वाघी' (पु.)

वाघियोगी—१ देखो 'वघियोगी' (रू. भे.)

(स्त्री वाघियोगी)

वाघी—१ देखो 'व्याधि' (रू. भे.)

२ देखो 'बद्धी' (रू. भे.)

३ देखो 'वाघी' (पु०) ।

वाघु, वाघू—देखो 'वाघी' (रू. भे.)

उ०—१ वरुण रूप ब्रह्मदेव श्रोत्र वाघू, सदा सोवत देवत ब्रह्म साघू । तरा भार अङ्कुर नू भार तैसी, अनेका विराज ब्रह्मा रूप ऐसी । —रा. रू.

उ०—२ रिघू लाज 'पाता' 'भदा' काजि 'रूपा' । इका एक वाघू अनूप अनूपा । —रा. रू.

वाघपौ—देखो 'वघापौ' (रू. भे.)

वाघी—देखो 'वाघी' (रू. भे.)

उ०—नखत परमाणु वाखाण वाघी नरे । आवगी भूक री भार भुजि आपरे । —हा. भा.

(स्त्री वाघि, वाघी)

वापक—देखो 'व्यापक' (रू. भे.)

वापणी—वि स्त्री [स व्यापन] १ भीतर-बाहर, सर्वत्र व्याप्त होने वाली शक्ति ।

उ०—देवी मत्र मूल देवी वीजवाळा, देवी वापणी सख्ख लीला विसाळा । —देवि

२ व्यापने वाली ।

वापणी, वापनी—देखो 'व्यापणी, व्यापनी' (रू. भे.)

वापणहार, हारो (हारी), वापणियो—वि० ।

वापिओडी, वापियोडी, वाप्योडी—भू० का० कृ० ।

वापीजणी, वापीजनी—भाव वा० ।

वापरणी, वापरनी—कि स. [स. व्यापणम्] १ उपयोग में लाना, इस्तेमाल करना, काम में लेना ।— (उ र)

उ०—१ दाता लूण ज वापर, भोजन ऊनी खाय । डावे पसवाडे सूवे, जिण घर वेद न जाय । —अज्ञात

उ०—२ गोडीजी इस्त सोडा रे जिण सू वीरवाव कीट मे मद-मास वापर नहीं । —वा दा ख्यात

२ लेकर आना, लाना ।

उ०—अमारि करावी, सरवत्र मंगलाचार दीजइ, तूर वाजइ, अक्षतपात्र साचरइ, तवोळ वापरइ, अरथ व्यय नी सभाल नहीं । —व स

क्रि अ—३ व्याप्त होना, फैलाना ।

उ०—१ के रोळी वापरियो, वा'वा' रोळी वापरियो । देस मे अग्नेज आयी रे, के रोळी वापरियो । —लो गो

उ०—२ गोरसात भोजन, गजात दान, वाघवात वियोग, विपदात मंत्री गजात लक्ष्मी, वापरात दरिद्र नायकात युद्ध । —व स, ४ आगमन होना, आना ।

उ०—१ जग में ऊसरियो 'खापरियो जै'रो । वाल्हा वीछोडण वापरियो वैरी । —ऊ का.

उ०—२ अति विचक्षण, अन्नायक वापरिउ, करण वारनइ वखइ कुसलीउ वरजन अनाकलनीउ' । —व. स

५ उदय होना, पैदा होना ।

उ०—भटियाणी री निरोगी देह मे दिना परवाण केई केई माद-गिया वापरणी । —फुलवाडी

६ खुशी या दुख का संचार होना, अनुभूति होना ।

उ०—जीव में सोराई वापरी ती वा वापरी ! म्हारी बेटी री नाव परमेस्वर सू कोई कमती माया थोडी ई है । —फुलवाडी

७ शुरू होना, प्रारम्भ होना ।

उ०—निहसति जोष नत्रीठि । रिण रूक वापरि रीठ । वे निहस सेन निसक । किरि राम रामण लक । —गु रू. व

वापरणहार, हारो (हारी), वापरणियो—वि० ।

वापरिओडी, वापरियोडी, वापरओडी—भू० का० कृ० ।

वापरीजणी, वापरीजनी—भाव वा०/कर्म वा० ।

वापरणी, वापरनी, वावरणी, वावरनी, वावरणी, वावरनी—रू. भे

वापरियोडी—भू. का कृ.—१ उपयोग में लाया हुआ, इस्तेमाल किया हुआ, काम में लाया हुआ २ लेकर आया हुआ, लाया हुआ.

३ व्याप्त हुआ हुआ, फैला हुआ. ४ आगमन हुआ हुआ, आया हुआ ५ उदय हुआ हुआ, पैदा हुआ हुआ ६ खुशी या दुख का संचार हुआ हुआ ७ शुरू या प्रारम्भ हुआ हुआ ।

(स्त्री वापरियोडी)

वापस—वि [फा.] १ लौटा हुआ, प्रत्यागत ।

२ लौटाया हुआ, फँरा हुआ, प्रतिदत्त ।

३ छिपा हुआ ।

क्रि वि.—४ पुन, दुबारा ।

वापसी—स स्त्री. [फा] १ लौटने या वापस आने की क्रिया या भाव ।

२ लौटाने या फेरने की क्रिया या भाव ।

वि०—लौटने वाला ।

वापार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—पढ गहणा लीर्य दीर्य नह पाचा, सत्र खत्त नह दाखै प्रह सार । 'शोड' तणा वापार सारखी, वळ माडीयो 'अखै' वीपार ।

—दुरसी झाडो

वापारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—१ लिखमी रा लाडिला लोक वडा वापारी वहवारिया सोदागर वहरामसद साहूकार घणा सुख चैन सू वसै छै ।

—रा सा स.

उ०—२ जु आदमी खबर दी—जु वापारी लोक छै । पंडे जाय छै ।

—नैणसी

वापि, वापिका—देखो 'वापी' (रू. भे.)

वापियोडी—देखो 'व्यापियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वापियोडी)

वापी—स स्त्री. [स] एक चौडा कुआ, कुण्ड या जलाशय, जिसमे पानी तक पहुंचने के लिये सीढिया बनी रहती है । बावली ।

उ०—१ चाटिका वापी पुसकरिणी क्रीडातडाग सरोवर ।

—व. स

उ०—२ पीयार प्रिथी पुड उद्धरै, सर वापी उद्धरि वरण ।

'गजसाह' 'गागे' हर ऊठियो, पतिसाहा छळ उधरण ।—गु रू. व

रू. भे.—वापि, वापिका, वापी, विआपी, वाइ, वापि, वापिका, वाय वाव, वावि, वावी, वावीय, वाव्य विआपी ।

अल्पा —बावडी, वावडी, वावडी, वावळि, वावळी ।

वाफणी—देखो 'वाफणी' (अल्पा. रू. भे.)

वाफणी, वाफणी—देखो 'वाफणी, वाफणी' (रू. भे.)

वाफणहार, हारी (हारी), वाफणियो—वि० ।

वाफणोडी, वाफियोडी, वाफोडी—भु० का० कु० ।

वाफोजणी, वाफोजनी—कर्म वा० ।

वाफतो—देखो 'वाफतो' (रू. भे.)

उ०—तद नवाव हुकम दियो—जावो, तीसाखाने से वाफता लावो ।

—पदमसिंह जी री वात

वाफियोडी—देखो 'वाफियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वाफियोडी)

वाभरामूत—देखो 'भाभरामूत' (रू. भे.)

उ०—कावडी नै खुणा मे वगाय वा सिधणी ज्यू रीस मे वाभरामूत हियोडी बारै निकळगी ।

—फुलवाडी

वाभी—देखो 'भाभी' (रू. भे.)

उ०—पडे न पथ मे विघन विलखती वाभी मिळसी । गिणती दुख रा दिवस जीव रे जतना घुळती । —भेष

वाभीजी, वाभीसा—देखो 'भाभीजी' (रू. भे.)

उ०—दोराणी कहे वाभीजी भाज पुरस आपारा घरे नही नै वरीया री नगारी सामे काकड वाजतो सुणीजे छै । —वी. स. टी.

वाभी, वाभीनी—देखो 'भाभीजी' (रू. भे.)

उ०—१ तद राव सूर्जे आपरी माजी नूं कयी, 'माजी ये वाभेजी वीकंजी खने जावो, नै था गया वात सलटसी । —द दा

उ०—२ तीन चार वळा आडो भचेडियो, पण आगळ नी खुली नवी मा रे साथे वाभीजी वतळ करता वहेला, आ सोच थोडी ताळ ताई बोला बोला बारै ऊभा रिह्या । —फुलवाडी

वाभीसा—देखो 'भाभीसा' (रू. भे.)

उ०—कह्यो—के वाभीसा नै गाय चीथ न्हाकिया, माथे वंठगी । हाडका कुळै । —फुलवाडी

वायगणनेत्र—स पु—एक वस्त्र विशेष । (व स.)

वाय—स स्त्री [फा. वाय.] १ मनोकामना, मुराद ।

२ प्रतिदिन ली जाने वाली अफीम की खुराक, मात्रा ।

[स वाय] ३ धुनन, बुनावट ।

४ सिलाई ।

[स वायु] ५ पश्चिमोत्तर कोण, वायव्य कोण ।

[स वचन] ६ वाणी, वचन ।

उ०—१ भगवत बोल्या इसडी वाय । देवाणुपिया जिम सुख थाय । —जयवाणी

उ०—२ आय माता नै इम कहै, मैं सुण्या वीर ना वाय । घन शतरथ तुम पुता ! इम बोली छै माय । —जयवाणी

७ देखो 'वापी' (रू. भे.)

उ०—पाणी री गाव रे खडे दुख हीज छै, मुहे खारी कूवो सहर में तेजसी री वाय ऊपर छै, तिया तीण ६ वहे छै । —नैणसी

८ देखो 'वायु' (रू. भे.) (अ मा)

उ०—१ ऽवा माहि मिळै 'जसाह' आय । वंसदर जाणिक भोळ वाय । —सू प्र.

उ०—२ दिन ऊनाळै वोभर भट्टी, घोरा मीज प्रभात री । कास-भीर री ठड वखेरै, वाय ठगीरी रात री । —दसदेव

उ०—३ सुरै वाय वडी लघुनीत तणी । सग्या कुगुलिया दोस सुंणी । नख केस समारण रघिर क्रिया, चादीनी नाखे चावडिया । —व स्त

उ०—४ वायव कूरुण वण रहीं, पुरी वाय की जाण । अति प्रचड सोभा अधिक, को कर सकै बखाण । —गजउद्धार

उ०—५ पजरि पावक परजळड, जिम जिम नाखड् वाय । मूधि
न जाणउ एतल्लुं, तिम तिम अघिकु थाय । —मा का प्र.
रू भे—वाय ।

वायु-स पु [स वाति] १ सूर्य । २ चद्रमा । (उ र)

३ देखो 'वात' (रू भे)

वायक-स पु [स. वायक] १ जुलाहा ।

२ डेर, सग्रह ।

३ समुदाय ।

४ सदेश, खबर, समाचार ।

वि [स वाचक] १ सदेशा लाने वाला, सूचना देने वाला दूत ।

२ कहने वाला, वक्ता, व्याख्याता ।

३ पढने वाला, पाठक ।

४ देखो 'वाक्य' (रू भे)

उ०—१ वायक सतगुर वंद री, घणी करे हित धोस । रे ! इए
लालच रोग री, सद औसद सतोस । —वा दा

उ०—२ अद्रु वायक बोध दिये महिला, प्रति लागन काळ किये
पहिला । —ऊ का

उ०—३ वह वायक सिध जिम बोलता । तायक भुजा गयण
तोलता । —सू प्र

उ०—४ महाराजा रघुवसमण सुज रावण समथ रा धनु सर पाँणा
धारै । वायक सत सीतावरण नप नायक रघुनाथ तू सता तारै ।

—र ज प्र

रू भे —वाइक, वाएक, वायक, वाइक, वाएक ।

वायकचर—देखो 'वाइकचर' (रू भे) (अ मा)

वायकूडो, वायकूडो—स पु [स वात कुण्ड] १ चन्द्रमा के चारो ओर
फीका वर्ण युक्त विशाल वृत्त जो प्रचण्ड वायु का सूचक माना
जाता है ।

वि वि —इस वृत्त मे तारा नही होता है ।

२ सूर्य के चारो ओर कभी कभी होने वाला वृत्ताकार घेरा जो,
शकुन शास्त्र के अनुसार, वर्षा का अभाव सूचित करता है ।

उ०—कोपे कील तुडा कासवाणी छाया वायकूडा, गे अठाणी
भुसडा भमाय भूलै गाज । रथा गेण देव रभा अयोक अचूडा
रोके, राजा राडीगारी ऊडा भौके वाजराज ।

—हुकमीचद खिडियो

रू भे —वावकूडियो, वावकूडो ।

वायड—देखो 'वायड' (रू भे.)

वायडियो—देखो 'वायडियो' (रू भे)

वायडो—स. पु [स वात-कारक, वातल] १ पागल कुत्ता ।

२ उक्त कुत्ते के काटने से उत्पन्न रोग ।

३ दीवाना, पागल ।

४ वात-विकार से पीडित ।

५ ज्वर-प्रलाप ।

६ वात-कारक ।

कहा —किणी रे वंगण वायडा, किणी रे वंगन पच्च । किणी रे
चढे आपरै, किणी रे चढे मच्च । —अग्रयात

रू. भे—वायडो, वायडे, वायडो, वाइडो, वाईदडो ।

वायज्वर—देखो 'वातज्वर' (रू भे)

वायण, वायणि, वायणी—स स्त्री—१ दुर्गा या देवी का एक नाम ।

उ०—साकणि डाकणि सकति, सकति चवसठी समोसरि । समळ
महा सिध सकति, सकति वायणी सिकोतरि । —सू. प्र.

२ गहलोती की कुल देवी ।

उ०—गहलोता रे वायण चु डाय दीप देवी, तिलगापुर पाटण सू
उठिया । —वा. दा. ख्यात

३ वाद्य बजाने वाली ।

उ०—पोलि परठिया पोलीया, माहि माभव वभ । आगळि नाचड
उरवसी, गायणि वायणि रभ । —मा. का प्र.

वायणी—देखो 'वाजणी' (रू भे)

उ०—समुद्र खारउ, वाउल कटालउ, सरप कालउ, वाउ वायणउ
जन बोलणउ, सुणह भपणउ, ससउ, नासणउ राणउ लेणउ, स्त्री
स्वभाव लाडणउ । —व स
(स्त्री वायणी)

वायणी, वायवी—१ देखो 'वाजणी, वाजवी' (रू भे)

उ०—१ गुण कयीइ गाईइ सुसर, वाईइ चग अदग । पात्र
पचारा नाचता, अहनिसि इणी परि रग । —मा का. प्र

उ०—२ सेमनाग राज छत्र धरड, गगा यमुना चमर ढालड, ब्रह्-
स्पति घडिआलउ वायड, सुक मत्रि वडसड । —व स.

उ०—३ तीन गड जीत मन भीत चीथै मिल्या, पात्र पचीस मिळ
एक पाया । दास हरिराम कहै राज अणभ भया, नाद अनहद
नीसाण वाया । —अनुभववाणी

२ देखो 'वावणी, वाववी' (रू, भे)

वायणहार, हारो (हारी), वायणियो—वि० ।

वायोडो—भू० का० कु० ।

वाइजणी, वाइजवी—कर्म वा० ।

वायदो—देखो 'वादी' (रू भे)

उ०—१ यमन गी वादसाह मोनू माल मती गाव देणे री घणी
वायदो वियो छै । —नी प्र

उ०—२ वायवो पाळणी ओ छै न्याय गरीव रो अन्याई कना सू लेवै ।
—नी. प्र

वायनद—स पु [स वायु+नदन] १ पवन पुत्र हनुमान ।

उ०—नागैस पनगा सिरै, जतद्वीयो वायनद, चवा गोरखैस, जोगारवा सिरै चीत, ऊददा खीरीद सिरै जुधा गुडाकेस ओपै । ओपै खाग त्याग सिरै ऊदारी अदीत ।

—ठाकुर सावतसीग नीवाज रो गीत

२ पाहुपुत्र भीम ।

रू भे—वायनद ।

वायपुरी—स स्त्री [स वायु+पुरी] पवन देव की पुरी ।

उ०—जोजन अढी हजार में, वायपुरी विसतार । सो सब ही कचन मई, सोभत अधिक अपार ।
—गजउद्वार

वायव—देखो 'वायव्य' (रू भे) (अ. मा.)

उ०—कोस ६ वायव कूण माहै बडौवास भेळी छै । जाट विसनोई वाणीया वसै ।
—नैणसी

वायविडग, वायविडग—देखो 'वायविडग' (रू. भे.)

वायर—१ देखो 'वैर' (रू. भे.)

उ०—तरै भीवी बोल्यो, म्हारा देस एक कुरीत छै । कोई ठावी गामेती चासडियो तथा घररी घणी रजपूत मरै, मोटियार कै काम आवै, तो उण रो वायर गाघराणी करै ।

—जखडा मुखडा भाटी रो वात

२ देखो 'वायु' (रू. भे.)

उ०—सूरा नूर दरस्सिया, तोलै सेल करग । वायर ज्यों लगा विमुह, कायर आरू मग ।
—रा. रू

वा'यर—देखो 'वाहर' (रू. भे.)

उ०—अरु मोहती रायमल जाय वीरमदे रै ढोलियै प्रदक्षण देय नै वा'यर आयो ।
—द. दा

वायरियो—स. पु —१ वायु सम्बन्धी एक लोक गीत ।

२ लडको को विदा करते समय गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

३ देखो 'वायरी' (अल्पा, रू. भे.)

वायरी—स स्त्री.—देखो 'वायरी' (अल्पा., रू. भे.)

वायरी—देखो 'वायरी' (रू. भे.)

उ०—१ रात रा ई वायरी वाजती तो करसा चूकता कोयनी, कारण के सियाळा रो दिन ती पीसू जितोक व्है ।

—रातवासी

उ०—२ ताहरा राजा ताळी उखेलियो । देखै ती माहै मोर छै ।

मोर कही घन्य राजा तूं मोनु ससार रो घायरी लगायो ।

—चीवोली

वाय'री—देखो 'वा'यरी' (रू. भे.)

वायल—स स्त्री —१ स्त्रियो के पावों में पहनने की चूडी जिसके नीचे गुरिया या मनका लगे हुए होते हैं ।

२ बढिया किस्म का एक बारीक वस्त्र ।

अल्पा.—वायली ।

३ हल द्वारा बोया हुआ ग्वार आदि का खेत ।

रू. भे—वायल, बोयल ।

वायव—देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

उ०—वायव कूणै वण रही, पुरी वाय की जाण । अति प्रचड सोभा अधिक, को कर सकै बखाण ।
—गजउद्वार

वायविडग, वायविडग—देखो 'वायविडग' (रू. भे.)

वायवी—स. स्त्री —१ एक महाविद्या ।

उ०—आकास गामिनी सौदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवनक्षोभिनी कामरूपिणी मन स्तभिनी जलस्तभिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कोमारी*** ।
—द. स

२ वायव्य कोण सम्बन्धी ।

३ देखो 'वायव्य' (रू. भे.)

वायव्य—स पु. [स] १ उत्तर-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण ।

वि—वायु सम्बन्धी ।

रू. भे.—वायव, वायव, वायवी ।

वायस—स पु. [स. वायस] १ कौआ, काक ।

उ०—१ वील्हा वायस विभला, आगलि ऊठी जाय । वाटइ दीसइ बागली, ते ऊधी टगाय ।
—मा का प्र.

उ०—२ बायस वीजउ नाम ते, आगलि लल्लउ ठवइ । जइ तूं हुई सुजाण, तउ तू वहिलउ मोकळ ।
—ढो. मा

२ अगरू का वृक्ष ।

३ तारपीन ।

४ कौर, निवाला ।

५ सूर्य या चन्द्र ग्रहण ।

६ पकड या गिरपत ।

रू. भे.—बइस, वाइस, वायस, वाइस ।

अल्पा.—वायसडी ।

वायसडो—देखो 'वायस' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—उड वायसडा म्हारा पी'यर जा नूंत पि'यर रा भातवी जे ।

—लो गो.

वायससात्रव—स पु. [स वायसः+सात्रव] जल कौआ, जल काक ।
 वायसूळ—स पु [स वायु+सूळ] १ घोडो का एक रोग जिसमें उनका मलमूत्र रुक जाता है । (शा. हो)
 २ वायु के विकार से शरीर में उत्पन्न पीडा
 वाया—१ देखो 'वाचा' (अ मा, ह ना मा.)
 उ०—१ साचा सबद एक है सोई, दूजा काम सरै नही कोई । सो में सबद गरू तै पाया, फुरै मत्र इसरो वाया । —अनुभववाणी
 उ०—२ मुनिवर मिलि जिणद में आया, हाथ जोडी नै बोले वाया । प्रभु ! तमारी आग्या थाय, ती म्हा द्वारिका मे गोचरी जाय । —जयवाणी
 २ देखो 'वायु' (रू भे)
 उ०—सेलि बलइ जल ऊछलइ, सायर छडइ सीम । वाया विशा वाजइ सबद, महाभयंकर भीम । —मा का. प्र
 वायार—स पु [स वातार] वरुण । (अ मा)
 वायु—सं पु [स.] १ वायु के अघिष्ठाता, पवन देव ।
 २ पवन, हुवा, वात । (डि. ना मा)
 उ०—घरणी वीर तेज वायु नभ, सबै सता प्रकासी । निराकार आकार मे पूरण, नहि आवै नही जासी ।
 —स्त्रीसुखराम जी महाराज
 ३ त्रिदोषो में से एक ।
 उ०—१२ ज्वर, १३ सनिपात, १८ प्रमेह, ५००० ग्रामवात, ८४ वायु, ३६ महावायु दोस, ४५ खाधाविकार, १०८ कोडि ।
 रू भे —बाव, बाथ, वायु, बायू, वा, वाइ, वाई, वाउ, वाय, वाया, वायू, वाव । —व स
 वायुकाय—देखो 'वाउकाय' (रू भे)
 वायुकुमार—स. पु [स]—१ भुवनपति जाति के देव (जैन)
 २ हनुमान ।
 ३ भीम ।
 वायुघ्न—स पु [स] गुगल, गुगुल ।
 वायुदेवता—सं. पु [स वायु देव] पवन देव ।
 उ०—नवग्रह खाट तणई पाइ वाघा, वायुदेवता अगणइ बुहारइ ।
 —व स
 रू भे —वाउदेवता ।
 वायुमडल—स. पु [स. वायुमडल] पृथ्वी के चारो ओर का वाष्पीय वायुमडल आवरण या घेरा, वातावरण, भाव हुवा, क्लाइमेट ।
 रू भे —वाउमडल ।
 वायुवाह—स पु [स] धूआ ।

रू भे.—वायुवाह, वायुवाह ।
 वायुविरोधी—सं. पु.—गरुड । (ना. डि. को.)
 वायुसखा—स पु. [स वायु+सख] अग्नि, आग ।
 रू भे —वायुसखा, बायूसखा ।
 वायुसुत—स पु [स.] १ हनुमान ।
 २ भीम ।
 रू. भे.—वायसुत, बायुसुत ।
 वायुहन—स पु [स वायुघ्न] मकर ऋषि के पुत्र, एक ऋषि ।
 वायू—देखो 'वायु' (रू. भे.)
 उ०—१ इसडी छै आछी आयू, ज्यू ओस खिरं वागै वायू
 —जयवाणी
 उ०—२ तठा उपराति करिनै राजान सिलामति ग्रीखम रित माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी अप नै वायू अकास च्यारि तत पाचमै अगनी ।
 —रा. सा. स.
 वायेरो—१ देखो 'वायरी' (रू भे.) (ना. डि. को)
 उ०—१ वीरणा सू वायेरो लीजै छै सू किरा भातरा वीरणा छै ? लाहोर रा कियोडा छै ।
 —रा. सा. सं
 उ०—२ कहथी-भलो हो राजा मानघाता थारै विना ससार रो वायेरो कुरा दिखावै ।
 —चीवोली (स्त्री वायेली)
 वायेली—देखो 'आयेली' (रू. भे)
 उ०—नैणा रो सिणगर कागळ कूपळी मे रंगी रे, वाळापरण रो वायेली, पीवर मे रंगी रे परी बुलावो ।
 —लो. गो.
 वायोडी—१ देखो 'वाजियोडी' (रू भे.)
 २ देखो 'वावियोडी' (रू भे)
 (स्त्री वायोडी)
 वायो—वि [स वातल] १ उन्मत्त, मस्त ।
 उ०—इण पर तहवरखान अछायी । विचित्र हुवी लडता रस वायो ।
 —रा रू.
 २ वावरा, पागल ।
 वारंग—स स्त्री [स वारंग] १ तलवार की मूठ,
 २ छुरी का दस्ता ।
 सं पु —३ एक वृक्ष विशेष, जो तणछ से मिलता-जुलता होता है जिसके पत्ते न तो अधिक गोल होते हैं न लम्बे । मध्यम दर्जे का वृक्ष ।
 ४ देखो 'वारगना' (रू भे)
 उ०—१ भूभक्त वारंग फेर भूक्त, हुवै इम चूक मुनेस हसत ।
 —सू. प्र.

७०—२ वर अनेक धारग पाव वदै सुरपत्ती । पावण करि पारग त्रिपुर नारग सकती । —सू. प्र.

७०—३ वजि अदग चग रग उपग वारग । अनग छवि चग उमग अग अग । —सू. प्र.

७०—४ जद धारग कहै 'जोगावत' घडा विहड सुरलोक गयी । मह 'जोधा' 'सलखा' सुमाला, कमघा कुळ ऊजळी कियो ।

—हरिनाथ जोधा री गीत

वारगना, वारगा—स स्त्री [स वारगना] १ स्त्री, नारी, श्रीरत ।

(अ मा)

२ अप्सरा, परी ।

७०—१ वारगना रही धारै अत, अत स्यामावत तरै उमाह । पिडि खुरसाणै वीद परखियो, वळि कुडाणै हुवौ विमाह ।

—उदैभाण राठोड री गीत

७०—२ उधम होय इचरज घर असुरा । धम धम तखत जडाली धार । धम धम विखम अरि तरा घाटा । वारगना अमअम जुध वार । —लूणकरण

७०—हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा, गई छुग विवाण वेस इद्र आगळी, वुही वारगना विना वीदा ।

—महाराज जसवंतसिंह री गीत

३ देव कन्या ।

४ गणिका, नर्तकी ।

५ वेण्या, रण्डी ।

रू. भे.—वरगा, वरागना, वारग वारंगना, वारगा, वारागना, वरगन, वारग, वारागना ।

वारट—स. पु [अ.] १ आज्ञा-पत्र, अधिकार-पत्र ।

२ अदालत द्वारा पुलिस या किसी राज्य कर्मचारी को दिया जाने वाला वह अधिकार-पत्र जिससे किसी को गिरफ्तार किया जा सके या किसी की तलाशी ली जासके ।

३ साधारण माने में किसी को गिरफ्तार करने के लिये निकाली जाने वाली अदालती सूचना ।

वारटरिहाई—स पु [अ. वारट+फा रिहाई] गिरफ्तार व्यक्ति या वदी को मुक्त करने के लिये दिया जाने वाला अदालती-आज्ञा-पत्र ।

वारवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)

७०—लज्जा छोडी धारवार, ऊचइ स्वर ते करइ पुकार । मन में धारै अधिकी सोग, हीयडी फाटई नाह वियोग । —वि. कु

वार—स पु [स] १ दिन, दिवस ।

७०—१ जकै वार री अधि सीमा जगांणी, ब्रह्म सारदा होत जार्थ बसाणी । —सू. प्र

२ सप्ताह के सात दिनों में से कोई एक और सब ।

७०—१ धन दीहडी, धन घडी, धन धार, धन मोहरत धन वेळा जकी राज पधारिया ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाडेल री बात

७०—२ सतरै समत पोस पैत्रीसै, दसमी वार ब्रहस्पत दीसै । सुरधर छत्र 'जसी' महाराजा, सुरपुर गयी लिया ब्रद साजा ।

—रा. रू.

३ समय, वक्त ।

७०—१ वदै मुनेस जेण वार, देखि भूप वीनती । मख सहाय काज भेलि, पुत्र लै रघुपती ।

—सू. प्र.

७०—२ प्रायै छोरू न लहै सार, मावीत्रा नी किये ही वार । पिये मावीत्र तपे दिन राति, पाणी वल विरही न खमात ।

—वि. कु

७०—३ पिगळ राजा नू मिल्यत्र, सउदागर तिणिए वार । राज दुवारइ तेडियउ, आदर करै अपार ।

—ढो. मा.

४ देर, विलम्ब ।

७०—१ जगवासी न साभली, ए ससार असार । तिहा तन धन यौवन निफल, जाता न लहै वार ।

—वि. कु

७०—२ तरै कलियाणसिंध जाणियो अस्तरी ती बाहुडै नहीं, अर वार घणी लागी । तरा नैणा मे गद-गद कठ वेहा री हुओ । अप असवार होई हालिआ । अस्त्री घरै आवी ।

—कल्याणसिंध नगराजोत वाडेल री बात

७०—३ इतरा माहै बात करता वार लागै । वैकुठ री रोस गंव री इच्छा सरूप गढ कोट बाजार सतखणा सोवन में थावास गौख जोख चित्राम चित्रसाळा रचाई ।

—र० वचनिका

५ काल, युग ।

७०—१ द्रोणपुर, भारद्वाज री वेटी द्रोणाचारज नू थी, पाडवा कैरवा री वार माहै । पछै पमार डाहळिया नू हूँनी द्रोणपुर ।

—नैणसी

७०—२ सीयळ पवार लुदवा री रैत ज्यी भोग दे । मुद्दार रावळ भीम री वार माहै खेतसी मालदैओत नू थो । पछै रावळ मनोहर-दास मान खीमावतनू पटै दियो थी ।

—नैणसी

रू. भे.—बाहार ।

६ किसी शासन करने वाली जाति के नाम के अभाडी लग कर उसके अधीनस्थ भू-भाग का बोध कराने वाला शब्द । ज्यू-जोइया री वार, भाटिया री वार ।

७ ऋतु, मौसम ।

८ आघात, प्रहार, चोट ।

३०—१ पाच कलं परवार सूं, रावळ आलीचेह । आपें मर गढ
आपस्या, विजडा बार करेह । —नैणसी

३०—२ लोहरी लहरि नभ गहर परसै लगस, बार चक्रघार तिए
बार दीघा । विल वै बार समराथ जळ दळ विगरि, कु भसुत जेमि
सुत 'नाथ' कीघा । —राव सत्रसाल रौ गीत

३०—३ वीता अघूरा धारा पूरा वेध सूरा वच्चए । सेले प्रहार
घार सार मार मार मच्चए । —रा रू.

६ युद्ध ।

१० तीर, वाण ।

११ समुद्र, सागर ।

१२ नदी ।

१३ दशा, हालत, परिस्थिति ।

३०—जळ सह ऊतर जाय, नग सिर पर पावै नही । विगडी जारी
बार, वळै न पाछी 'वसतिया' । —समळोजी वारहठ

१४ किनारा, तट, कूल ।

३०—१ जोय प्रवळ अणपार जळ, बार रह्या भड आन । निडर
उलघण वारनिध, हुवौ त्यार हनुमान । —र रू

३०—२ अठी रमजानवेग पजाव री विजय करि महमद नू निरवळ
निहारि पाछी जाइ आरघावरत नू आगमण रै काज तँमूर नू
अटक नदी रै बार आणियो । —व भा

१५ इस किनारे ।

१६ उस किनारै ।

३०—आर्य आवता एक खाळ वारह हाथ की चौडौ, घणौ ऊडौ,
आडै आयौ जठै कुमार दूदौ ती सहज मै सावळिया नै भपाइ खाळ
रै बार आइ भाली ऊवाइ साम्ही खडौ रहियो । —व. भा

१७ अवरोध, रुकावट ।

१८ शिव, महादेव ।

१९ क्षण, पल ।

२० कुज नामक वृक्ष ।

२१ एक गज की लम्बाई का नाप ।

२२ सात की सख्या । # (हिं को)

[स. वार्.] २३ जल, पानी । (हं ना मा)

३०—नैणा पल पल निरखती, बार पीवती बार । विसरै उवा क्यू
विरहयो, अटक रही उणिहार । —अग्यात

२४ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें पन्द्रह मात्रा पर
यत्ति से कुल तीस मात्राएँ ही एव अन्त में मगण या रगण हो ।
(र. ज प्र) मतान्तर से अन्त में रगण हो (र रू)

२५ काम, कार्य ।

३०—सूवा एक सदेसड, बार सरेसी तुङ्ग । प्रीतम वासइ जाइ नइ,
मुई सुणावे मुङ्ग । —ढो. मा.

२६ दफा, मरतवा ।

३०—१ सुंदरी तह सच्चड कहिउ, तँ मुभ प्राण प्रीयार । तेणी-
करी जीव अम्हें, जनमिउ वीजी वार । —मा का. प्र.

३०—२ बार सत्त पचास, गुडै गैमर गळ गजै । लख एक
तोखार, ठिल्ल अरीयण घड भजै । —नैणसी

क्रि वि —२ इस ओर, इस तरफ ।

३०—आयो वू दी आपरी, अमल दरारै वार । वधियो रहसी जतन
विण, प्रतपण म्हारौ पार । —वै. भा.

प्रत्य [फा.] ३ क्रमशः, क्रमानुसार ।

४ देखो 'वार' (रू. भे) (१)

३०—इसै हीज तत मे कुंवरसी चढियो, सो जाय साढा रा वरग
सरव घेरिया । रैवारी बीस हाथ आया, सो मारिया । वाकी
केई था, सो वाठा में गया । सो नाठा, जाय वार घाती ।

—कु वरसी साखला री वारता

५ देखो 'वारी' (रू. भे.)

३०—१ और निघडक अभिमान देख रात मे सोवै जद नीद वस
असावधान होवै तद सत्रुआ रौ वार लागै । —वी स. टी.

३०—२ तजियै मान गुमान, रह्याय गुरु गम चली । सिवरी
सिरजनहार, बार आई भली । —स्त्री सुखरामजी महाराज ।

३०—३ बाळ मुकुद विरदाधिपति, क्यू नह सुणी पुकार । काहै
ऐती डील की, मोहन मेरी वार । —गज उदार

वार—देखो 'वाहर' (रू. भे)

३०—१ चौधरी चुपचाप आय'र वैठयो अर थाळी में सोगरी ने
लूण-निरच देखनै भट-भट खावण लाग्यो—जाणै लारै वार आवती
व्हे । —रातवासी

३०—२ चोर लारै वार वणाई, आव लारै उपाय वताई ।
—दसदोख

३०—३ आया वार निदान री, बीस हजार मुगल्ल । —रा. रू.

वारक-स. पु [स] १ निषेध करने वाला घोडा ।

२ घोडे की चाल ।

३ वह स्थान जहा पीडा होती हो ।

४ बाल छड ह्रीवेर ।

[स वारकिन्] ५ विरोधी, शत्रु ।

६ समुद्र ।

७ शुभ लक्षणो वाला घोडा ।

८ पत्ते खाकर रहने वाला तपस्वी ।

वि.—अडचन डालने वाला, रोकने वाला, अवरोध करने वाला ।

धारकन्या—स. स्त्री. [स] वेदया, रण्डी ।

धारण—देखो 'वारिख' (रू. भे)

धारणह, धारणह—स पु.—देखो 'वारिणह' (रू. भे.)

उ०—इभ कुभ अघारी कुच सू क चुकी, कवच सभु काम क कळह ।
मनु हरि आगमि मडे मडप, वघण दीध कि वारणह । —वेलि

धारिगरी, धारिगीर—वि.—देखो 'वारिगीर' (रू. भे)

उ०—अडा भीड आवधां, बाळ आवे पिडिहारा, किया त्यार साकुरा,
घात पाखरा अपारा । अत ताता ऊधरा, जात जात रा भिडजा,
धारिगीर वाटजे, साख साख रा सकाजा । —बखती खिडियो

धारड—स पु —देखो 'वारड', (रू. भे)

धारडी—१ देखो 'वार' (अल्पा., रू. भे)

उ०—धानतर मयंक हणू सुक धावी, नरपाळग रद रिख
निवड । एक वारडी 'करन' उठावी, अन खट तणी प्रीयागवड ।
—ईसरदास वारडठ

२ देखो वारी (रू. भे.)

उ०—निकमाळं निकमा फिरै ना, लगी कूवटा कारडी । भीरोदार
मजूरी करै, विच विच अपणी वारडी । —दसदेव

धारचर—स पु. [स वारिचर] १ जल में रहने वाला जतु, जल जतु ।

२ मत्स्य, मछली (अ मा., ह. ना. मा.)

धारज—देखो 'वारिज' (रू. भे) (अ मा., ह. ना. मा.)

उ०—वप घणस्याम नैत्र दुति वारज । कत अवतार सुरार्च
कारज । —सू. प्र

उ०—२ वारज द्रग वारद वरण, गहर धरण गुणगाथ । करुणा-
निध अकरण करण, नमी नमी रघुनाथ । —र. रू.

उ०—३ सस्त्र विद्या के आचारज । जळ रूप क्षत्रिया के वारज ।
—रा रू

धारड—स पु [अ. वाडं] १ रक्षा, हिफाजत ।

२ अस्पताल या जेल का कोई कक्ष या विभाग ।

३ किसी नगर या मोहल्ले का किसी विशिष्ट कार्य के लिये नियत
किया हुआ समूह ।

धारण—स. स्त्री [स] १ निषेध, मनाही ।

२ रोक, रुकावट, अवरोध ।

३ बाधा ।

४ सुरक्षा. सहायता ।

५ न्योछावर होने या बलैया लेने की क्रिया या भाव ।

६ हस्ताल ।

७ सफेद गोरेया ।

स पु. [स] ८ हाथी, गज । (ह. नां. मा.)

उ०—१ मुल मद हास आणुदमय, आराधित अहि नर अमर । दड
अत तूक मारण दयत, वारण तारण लच्छिवर । —सू. प्र.

उ०—२ कहै तिया सुण कंत, किसी बात तोडूं कहूं । मौलाए गज
दत, वारण पाछो वळ गयो । —गज उदार

९ हाथी का अकुश ।

१० समय ।

११ कवच, बखतर ।

१२ आर्यगीति या स्कंधाण का एक भेद विशेष ।

१३ एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती
हैं ।

१४ छप्पय का ३० वा भेद जिसमें ४१ गुरु तथा ७० लघु कुल
१११ वरुं व १५२ मात्राएँ होती हैं ।

वि. वि.—मतान्तर से इसमें ४१ गुरु, ६६ लघु के अनुसार १०७
वरुं व १४८ मात्राएँ भी मानी जाती हैं ।

वि.—१ मिटाने वाला, निवारण करने वाला ।

उ०—घिन हो दुल वारण, काज सुधारण । भगत उधारण
भगवन तू । —भगतमाळ

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला ।

३ मना करने वाला, रोकने वाला ।

४ जवरदस्त ।

क्रि. वि.—५ रोकने हेतु ।

६ रक्षा करने हेतु ।

रू. भे.—वारण, वारणु, वारिण ।

वारणपति—स. पु [स वारण. + पति] १ महावत ।

२ हाथी ।

रू. भे.—वारणपति, वारणपती ।

वारणवासोत—स पु—भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

वारणा—स. पु, ब. व —१ बलिहारी जाने की क्रिया या भाव ।

२ बलैया, न्योछावर ।

उ० १ आखियां लाज लीघां अडर, सारा काज सुधारणा । मादक
अलीण भेलै न मुख, वारा लेळ वारणा । —ऊ का.

उ०—२ राजा अजीत दसरत्थ ज्यों, सुत सजीत परखै सही ।
वारणा लिए 'अभसाह' रा, जणणी कोसल्या जिही । —रा. रू.

उ०—३ अब वे हीज सिरदार भामणा वारणा लेवै है पण जेथ जठं
वाही भडा घोडा भे जै—फतै तो म्हारा कत घणी ने भिळी है ।

—बी. स. टी.

रू. भे.—वारणा ।

वारणावत-स. पु [स] गंगा किनारे का एक प्राचीन नगर या जनपद ।
—(महाभारत)

वारणी-स पु [स वारण] १ विवाह के समय दुल्हा-दुल्हिन तथा इनके सम्मुख नाचने वाली के ऊपर रुपये, पैसे आदि न्यौछावर करने की क्रिया ।
(एक प्रथा)

वि वि.—इस प्रकार की न्यौछावर के पैसे डोल-वाजा वाले या नाई को दिया जाता है ।

२ देखो 'वारणी' (रू भे)

उ०—चौरग पात फौज चौबडती, फूल धार वारणी करे । कुते हुलै मिळै करणावत, काळी भात मनवार करे ।

—बळराम राठोड री गीत

वारणीय-वि.—१ न्यौछावर योग्य, उत्सर्ग योग्य ।

२ निषेध योग्य ।

वारणू, वारणी-स. पु.—१ वारणा या वारीजाने की क्रिया या भाव ।

२ वारा जाने वाला या न्यौछावर किया जाने वाला पदार्थ ।

रू. भे —अवारणी

३ देखो 'वारणी' (रू. भे)

४ देखो 'वारण' (रू. भे)

उ०—१ बौम लागा वहै लोडता वारणू । हल्लवँ द्रोण ऊपाड जाणै हणू ।
—यु. रू. व

उ०—२ ताहरा वेणीदास, चदण चौपदार, हरदान, रामदान ओळ-खवा नै साथै ले वजार गयो । जाय हाट रे वारणै आया थका खडा रहि देखा किया ।
—पलक दरियाव री वात

वारणी, वारबो-क्रि. स. [स वारण] १ बलिहारी जाना, बलैया लेना, वारी जाना (उ. र.)

उ०—१ नर नारि द्वार नरपत्त रे, ईख करे तन वारणै । उमराव परस्सण उल्लसै, कोडा दरसण कारणै ।
—रा. रू.

उ०—२ हाथो रे हीदै मारियो पती ने देख बीर स्त्री कहै-वारी वालम वारणै जाऊ ।
—बी. स. टी.

उ०—३ देखै मुख वसुदेव देवकी वार-वार वारै पै वारि ।

—बेलि

२ न्यौछावर करना, उत्सर्ग करना ।

उ०—१ त्याग पर बाहू आपरी दातारगी री एक दूहै पर नव लाख रिपिया बगसिया ।
—द. दा.

उ०—२ चारो नाखू व्है खारी भर चारै, अपणी प्यारी पर प्राणा तक वारै ।
—ऊ. का.

उ०—इसडी आखडियाह किया भ्रग वारणै । सर मनमथ गा हारिक भ्रजण सारणै ।
—वा. दा.

३ देवी-प्रकोप, जादू-टोना या कष्ट निवारणार्थ कोई वस्तु या प्राणी को शरीर पर फेर कर वारना । (उ. र.)

उ०—सासुवा रूप और तरह देख घणी राजी हुई राई खूण व वारिया । धुथकारा नाखिया । —कु. वरसी साखला री वारता

उ०—२ क वरजी रो डील रुडी नहीं, तरै भाटी गोयददास मोहण दास नू क वरजी ऊपर वारियो । क वरजी रे डील समाघ हुई, मोहणदास राम कह्यो ।
—नैणसी

४ दूल्हे-दूल्हिन या उनके सामने नाचने वाली के ऊपर से रुपये पैसे आदि वार कर डोली, नाई आदि को देना ।

५ सामना करना, वाधा डालना, रोकना । (उ. र.)

उ०—ऊलटियो सिर आगरै, अबदुल्ला 'अजमाल' । आगै पीहत्त आगलौ, वारण खान दुफाल ।
—रा. रू.

६ रक्षा करना, सहायता करना, उबारना ।

उ०—साहिव रे सहि थारी सारो, बडा घिणी जम प्राप्त वारो । खोटी वात ससारीइ खारो, आतिमा मुना पारि उतारो ।
—पी. ग.

७ इनकार करना, मना करना । (उ. र.)

८ निवारण करना, छोड़ना । (उ. र.)

उ०—घणा नीदाळवा नीद वारी घणी । तू ग नह छै भली हीस घोडा तरणी ।
—हा. भा.

९ दूर करना, हटाना, मिटाना ।

उ०—तारै दासा त्रिकमाह, भय वारै जम भूप । हू बलिहारी स्त्रीहरी, रे । थाने निज रूप ।
—र. ज. प्र.

वारणहार, हारी (हारी), वारणियो—वि० ।

वारिओडो, वारियोडो, वारयोडो—भू० का० कृ० ।

वारीजणो, वरीजबो—कर्म वा०

अवारणी, अवारबो, वारणी, वारबो—रू० भे०

वारता-स. स्त्री [स वार्ता] १ जनश्रुति, अफवाह, किंवदन्ति ।

२ वार्तालाप, कथोपकथन, सवाद ।

३ कुशल-समाचार, हाल, खबर ।

उ०—१ रखी सुनमान दीघो । तरै आप रुजक पगै मेलियो । टहेल कीघो । रखी वारता पूछी-तरै आप सारा ही क्रम कथा कही ।
—कल्याणसिंह नगराजोत वाडेल री वात

उ०—२ जामण की ये जाई । मा बाबल वृजे ये थारी वारता
—लो. गो.

४ वात ।

उ०—हा ये गोरी । अब करस्या मनुवार । घर आय पूछा मनडे री वारता जी ।
—लो. गो.

५ किसी विषय पर होने वाली चर्चा, बातचीत ।

उ०—ब्रह्म वारता निसिदिन करत, गुरु भाव की हान । वा जन की सग कबू न करिये, पीते जो होय भगवान ।

—श्री सुधरामजी महाराज

६ मामला, विषय ।

७ घटना, वृत्तात ।

उ०—सती कहै ते वारता, पाडोसण न तेड । च्यार नगर ना थभ ते, मुके नही मुभ केड ।

—घ व. अ

८ कहानी, आख्यान ।

९ राजस्थानी का गद्य ।

१० क्रिया-कलाप ।

उ०—तरं चोदस रै दिन इतरी वारता उमादे करसी, थानु सपडा-वसी, वागा पहरावसी ।

—पचदडी री वारता

११ ऐतिहासिक आख्यान ।

रू भे —वारता, वारथा ।

वारतालाप—स पु. [स वार्तालाप] परस्पर की जाने वाली बातचीत, कथोपकथन, सवाद ।

वारतिक, वारतिकफ—स पु [स वार्तिकम्] १ किसी ग्रन्थ के उक्त, अनुक्त और दुरुक्त अर्थों को स्पष्ट करने वाला वाक्य या शब्द, व्याख्या ।

वि. वि —भाष्य में केवल मूल ग्रन्थ का आशय ही स्पष्ट किया जाता है परन्तु वार्तिक में वार्तिककार नई बात कहने के लिये भी स्वतन्त्र होता है ।

२ छद्म शास्त्र के नियमों से रहित एक प्रकार का तुकात गद्य पद्य मय छद्म ।

३ कात्यायन का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमें पाणिनि के सूत्रों की विद्वलेपरणात्मक व्याख्याएँ लिखी हुई हैं ।

[स. वार्तिक]—४ वृत्तात, हाल ।

५ जासूस ।

६ दूत, वर ।

७ किसान ।

वि. [स वार्तिक] १ वार्ता या सवाद सम्बन्धी ।

२ व्याख्याकार ।

३ खबर लाने वाला ।

वारतिय—स स्त्री [स वारस्त्री] वेद्या रण्डी ।

वारथा—देखो 'वारता' (रू भे)

उ०—म्हारी पती हाथल रै जोर हाथी मारै है सो श्री ताहर इया ने कहणा चाहीजै इती भा वारथा ।

—वी स टी

वारव—देखो 'वारिद' (रू भे)

उ०—१ सुदर तन म्याम स्याम वारव सम । कौटक भा रद काम सकाम ।

—र. ज. प्र

उ०—२ वारव विद्युत वरण, पीत ग्रर घरण नीलपट । तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट ।

—र. ह

वारवद्रू—स. पु. [स वारिद-द्रु] इन्द्र । (अ मा)

वारदा—देखो 'वरदा' (रू भे)

वारदात—स. स्त्री. [फा वारिदात] १ कोई सोचनीय काण्ड, दुष्टटना

उ०—ठोड ठोड पून अर कतल री वारदाता होवती अर रात-दिन करफ्यू लाग्योडी रैवती ।

—रातवासी

२ दगा फसाद, मारकाट ।

३ चोरी, डकैती ।

४ वृत्तात, हाल, हकीकत ।

उ०—सांहे देख पूछी—कयो, केसरिया कुवर किस तरह ? तद केसरसिंहजी सारी वारदात जाहिर की ।

—पदमसिंह री वात

वारद्व—स पु—१ देखो 'वारिद' (रू भे.)

२ देखो 'वारिधि' (रू भे)

वारद्वफ—स पु [स वारद्वेक्य] १ वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

उ०—किताक काळ पछै अठी ववावदा नै नरेस हालू १८२१ अनेक उपाय करि थाकी ती भी रण मरण न पायी जाणि प्रति-दिन वारद्वक नू वरदमांन देवि ।

—व भा

२ वृद्धि, बढोतरी ।

३ बुढ़ापे की विधिलता ।

रू भे —वारद्वक ।

वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस—देखो 'वारिधि' (रू भे)

उ०—वारधेस जोम गाज गाळीया त्रकूट वासी, राजचीळ जाळीया तारली तेज रूस ।

—हुकमीच द खिडियो

वारनारी—स स्त्री [स] रडो, वेद्या ।

वारनिध, वारनिधि—देखो 'वारिनिधि' (रू. भे) (अ मा, इ ना. मा.)

उ०—जोय प्रबळ अणपार जळ, वार रहथा भड आन । निडर उलघण वारनिध, हुवो ल्यार हनुमान ।

—र. ह.

वारनिस—स पु [अ. वानिस] लकडियो या लकडी के वने फर्निचर पर चमक लाने के लिए लगाया जाने वाला एक तरल पदार्थ ।

रू. भे —वारनिस,

वारनिसांगी—देखो 'वार' (२४)

वारपार—व पु [स अवर-पार] १ एक पार्श्व से दूसरे पार्श्व तक की पूरी चौड़ाई, मोटाई ।

२ पूरा या समूचा विस्तार ।

३ सीमा, मर्यादा ।

उ०—रूप न रेख अलेख है, कुछ वार न पारा ।

—कैसोदास गाढण

वि—१ पारगत, दक्ष ।

उ०—हाथ री उछाग नं पगा री फुरती अर गाढ पर अमट । तिकी सरदार री चातानो चार । सो म्होकर्मसिध तो च्याराही में वारपार ।
—प्रतापसिध म्होकर्मसिध री बात

अव्य—२ इस किनारे से उस किनारे तक ।

रू भे—वारापार,

वारवधू—देखो 'वारवधू' (रू भे.)

उ०—आगै वरवा अछ्छरा, उर धरता अनुराग । हुवणी का अलि-यळ हुआ, वारवधू वप लाग ।
—वा. दा.

वारवधू-वि. [स वारिवधू] तुच्छ, सुक्ष्म । (अ. मा.)

वारमुखी-स. स्त्री. [स] रण्डी, वेश्या ।

रू. भे—वारमुखी ।

वारमों—देखो 'वारमों' (रू भे)

उ०—वरस वारमह वड्ठठ राजि । अरि भाजइ सभळि आवाजि ।
—ढो मा

वारवधु, वारवधू-स स्त्री [स वारवधू] १ वेश्या, रण्डी । (अ. मा.)

२ नर्तकी, गणिका ।

उ०—वरवाजू के ततकार खटरागू के धीर, वारवधु के नतकार त्रिछायतू के वणाय अत अतरू के डवर .. ।
—र रू

रू भे—वारवधू, वारवधूटी, वारवधू ।

वारवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)

उ०—हुज रद रदन दसन मुख दीपन, ढळियी कस पकडि गज-दत । वारवार करतार बखाणी, सुर मिंगार सुधारण सत ।
—ह ना मा

वारवाह—देखो 'वारिवाह' (रू भे)

वारविलासणी, वारविलासनी, वारविलासिनी-स स्त्री [स वार-विलासिनी] १ वेश्या, रण्डी ।

२ नर्तकी, गणिका ।

उ०—चामरधारिणी वारविलासनी महल्लक महल्लिका उपाध्यान गावन . ।
—व स

रू भे—वारविलासिणी,

वारविलोवण-वि [स वारि-विलोवन] समुद्र मथन करने वाला ।

स पु—विष्णु, हरि ।

रू भे वारिविरोक्षण ।

वारस—१ देखो 'वारस' (रू भे)

उ०—आसू वद वारस दिन आसुर । भीत अचित गया कर समर ।
—रा. रू.

२ देखो 'वारिस' (रू. भे.) (मा. म)

उ०—दिस दिस 'जीदै' रोह उवै लोक सह ईखती । लड जिय लीवै रोह, वारस कोइय न आवियी ।
—पा. प्र.

वारसार—देखो 'वारिसार' (रू. भे) (अ. मा)

वारसिक-वि [स वार्षिक] १ एक वर्ष भर या एक वर्ष तक ।
रहने वाला ।

२ सालाना ।

३ वर्षा ऋतु या वर्षा सम्बन्धी ।

स पु—१ वर्ष के वर्ष दिया जाने वाला कर ।

२ वर्ष के वर्ष मिलने वाला लाभ ।

वारसिप-स पु [अ वारशिप] युद्ध पोत, जंगी वेडा ।

वारसी-स स्त्री—१ बाला, युवती ।

उ०—पहिलू परजापति-थिकी परठाइ ए मइरि । भोगवि सोडस वारसी, सुक सिधावीइ धिरि ।
—मा. का. प्र.

२ रक्षा, सहायता, मदद, पक्षपात ।

वि स्त्री—१ वर्ष की, वर्ष सम्बन्धी ।

२ देखो 'वारस्त्री' (रू भे)

वारसुदरी-स स्त्री [स] १ वेश्या, रडी ।

२ गणिका, नर्तकी ।

रू भे—वारसुदरी ।

वारसूळ-स पु यो [स वार-शूल] फलित ज्योतिष के अनुसार शूल का विशिष्ट वारो को विशिष्ट दिशाओं में होने वाला निवास ।

वि वि—इसका सोम, शनि को पूर्व दिशा में, गुरु को दक्षिण में, रवि, शुक्र को पश्चिम में तथा मंगल बुधको उत्तर दिशा में निवास रहता है । मतान्तर से रवि का उत्तर में भी ।

वारस्त्री-स स्त्री [स] १ वेश्या, रण्डी ।

२ नर्तकी, गणिका ।

वारही-स पु.—यवन, मुसलमान ।

उ०—असल दळ दिली रा भुजा उछवाळती, समर भर 'भीम' दीठी सबा ही । घेर विच वारही मंडीवर घातियो, मडोवर घेर आवेर माही ।
—द दा.

वारंगना—देखो 'वारंगना' (रू भे)

उ०—एक एक नं दोग दोग वारंगना धिनु हजार गिणती करी आमना ।
—जयवाए

वाराणसी-स. स्त्री [स. वाराणसी] बनारस का प्राचीन एव प्राधुनिक नाम ।

उ०-वाराणसी नगरी भली, राजा तिहा मकरध्वज नाम ए । तेह नी पुत्र पराक्रमी, उत्तमाभिष जाणै रूपै काम ए । —वि. कु.

रू. भे.—वाणारसि, वाणारसी, वाणारस, वाणारसी ।

वाराह—देखो 'वराह' (रू. भे)

उ०-साहिजादी सुरताण वी, रिण क्लमँ रिम राह । डार परिगह करि मुहरि, नीसरिथी धाराह । —गु रू व.

वारा-स स्त्री [स वार] १ मदिरा, शराब । (अ. भा.)

२ देखो 'वराह' (रू. भे.)

३ देखो 'वार' (रू. भे)

उ०-१ वीछुडता ई सज्जणा, राता किया रतन । वारा विहु चिहँ नाखिया, आसू मोती वन । —डो मा

उ०-२ न की मास पख न को तिथ वारा । —अनुभववाणी

वाराणसी-देखो 'वाराणसी' (रू. भे)

वाराधिप-स. पु. [सं. वारि-अधिप] समुद्र ।

उ०-वाराधिप सेता वधण री, कुळ राखस जूथ निकदण री । दिल तू 'किसना' जग वदण री, नहचौ रख कौसळ नंदण री । —र. ज प्र.

वारापार-देखो 'वारपार' (रू. भे)

उ०-उण मुख तै गगी कयी, इण कर घरी दुधार । वार कहण पायी नही, निकसी वारापार । —द. दा.

वाराह, धाराह, वाराहर-देखो 'वराह' (रू. भे)

उ०-१ घडहडै सात पयाळ धूर्ज, सेसनाग घडवक ए । खित भार दाढ वाराह खडवक, कोम कष कडवक ए । —गु रू. व

उ०-२ जइ भागड तो वाराह, जइ थाकड तो पारकरड घोडड जइ ठालड तोइ कपूर तण्ड दावडड । —व. स

उ०-३ हणै आप हथवाह, राव वाराहर भाली । ले छकडा सिर-लार, पुळै वाजू दळ पाळी । —पा प्र.

वाराहिकद-देखो 'वाराहीकद' (रू. भे)

वाराही-स. स्त्री [स.] १ ज्योतिष शास्त्र के अनुसार आठ देवियों मे से एक ।

२ पृथ्वी ।

३ सूधर के रूप मे विष्णु की एक शक्ति ।

४ सूधरी ।

५ सप्त मातृकाओं मे से एक जिसका वाहन बैल है ।

६ माप विशेष ।

रू. भे.—वाराही, वराहजी, वराही ।

वाराहीकद-स. पु. [स.] एक महाकद जो श्रीपवियों मे काम आता है और जिसे गैठी भी कहते हैं ।

रू. भे.—वाराहीकद, वाराहिकद ।

वारि-स. पु [सं] १ पानी, जल ।

उ०-१ बापरै तखत वैठी, वारि छन जोम धारि । वीजळा दिलेस देस, मारि कीव थाळ धारि । —सू प्र.

उ०-२ अहिलइ गयु भवतार, इम, कामकदला नारि । परवत-ल गि तलावडी, वथा रहिछ जिम वारि । —मा. का प्र.

उ०-३ वारि वसती पद्मिनी, ससीहर सूर आकासि । यहीपति । तिम महिला-तणा, मन ते माधव-पासि । —मा का. प्र

२ कोई तरल पदार्थ ।

३ सरस्वती, वाणी ।

४ निसानी छद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे ४ गुरु व १५ लघु वर्ण होते हैं ।

५ देखो 'वार' (रू. भे)

उ०-१ छाना नितु पुहचइ परधान, रळियात थ्या चिति परधान । भास दोह आगळि असवार, आया पूगळि नयरि ते वारि । —डो. मा

उ०-२ कहिस्या ती तुम मली करणाकर, वपि एकणि सह धरे विचारि । रावळ जाम सरोखी राजा, वळै घडिस जौ बीजी वारि । —ईसरदास वाराहठ

६ देखो 'वारी' (रू. भे)

रू. भे.—वारि, वारीय ।

वारिईस-देखो 'वारीस' (रू. भे)

उ०-जक्षेस वारिईस की, सुरेस नेस प्री जिता । 'अभी' त्रिलोक में अचभ, भोग भागवै इसा । —रा रू.

वारिख-स. पु [स. वार्क्षम्] वन, जंगल । (ह. ना. भा)

रू. भे.—वारख ।

वारिगह, वारिग्रह-देखो 'वारिगह' (रू. भे.)

उ०-जु मन वाघ्यो चाहिजै । त्ये कै कारण या वारिगह दीधी छै । —वेलि टी.

वारिचर-स. पु. [स] १ जल में विचरण करने वाले प्राणी, जल-जंतु ।

२ मछली, मत्स्य ।

३ शख ।

वारिज-सं. पु [स] १ कमल ।

उ०—रवि ऊगता जिसी मुख राजै वारिज प्रफुल्लित नैत्र विराजै ।

—सू प्र

२ शख । (ह. ना मा)

३ घोषा ।

४ मत्स्य, मछली ।

रू भे.—वारिज, वारज ।

वारिजपुंड्र—स पु [स] श्वेत-कमल ।

वारिजलोचन—स पु [स वारिजलोचन] परमेश्वर । (ह. ना. मा)

वारिजात—देखो 'वारिज'

वारिद, वारिद्—स. पु [स. वारिद] मेघ, बादल ।

उ०—१ रित सारिद वारिद रहित, आगम अघदण मास । 'अजन' विदा कीघी 'अमौ' निरखण ग्रह निवास । —रा रू

उ०—२ किना कध धारा भरै मद् काळा । वरुण जाणि वारिद् भाद्रव वाळा । —रा रू.

रू भे —वारद, वारिद, वारद ।

वारिद्र—स पु [स] चातक-पक्षी ।

वारिध—देखो 'वारिधि' (रू भे)

उ०—अगीकृत ईस्वरइ जहर पीघउ दुख हतइ । वारिध वाडव अगि वहे पाणी सासंतइ । —प च ची

वारिधर—स पु. [स] १ वादल, मेघ ।

२ समुद्र ।

३ नागरमोथा ।

४ एक ममवृत्त वरिणक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे रगण, नगण और दो भगण होते हैं ।

रू भे —वारिधर ।

वारिधि—स पु [स.] समुद्र, सागर ।

उ०—१ पदमणि स्यु पाणी ग्रहण, विचि वारिधि अतिकूर । ऊलाणी साचौ हुआ, वाघ नदी जल पूर । —प च ची

उ०—२ हू वारिधि माहे पढ्यो, भीनोदर रह्यो केम । गणिका धरि सुक किम थयो, भाखो जिम छै तेम । —वि कु

रू भे —वारध, वारधि, वारिधि, वारद, वारध, वारधी, वारधीस, वारधेस, वारिध वारध ।

वारिनाथ—स पु [स] १ समुद्र ।

२ वरुण देव ।

३ वादल ।

वारिनिधि—स पु [स] समुद्र ।

रू भे.—वारनिध, वारनिधि ।

वारियां—देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—वात वड साळ फरीया जकण वारियां, भाटी कह 'दान' 'सादळ' छक भारीया । घणी संपा सरण मरण सक धारीया, लाज मन धरै जेसाण गढ लारीया । —जसी आढी

वारियो—स पु —देखो 'वारियो' (रू भे.)

उ०—सार्क स्यारी जूप, ताकडे रात्यूं रेवै, करै कीलिया राग, वारियो दूहा देव । —दसदेव

वारिहू—स. पु [स] कमल ।

वारिवारि—१ देखो 'वारवार' (रू भे)

उ०—तु वारिवारि पथ साहानि कहुछी राजन । चरण त्यजवा तहारा किम चालि माहारु मन । —नळाख्यान

२ देखो 'वारीवारी' (रू भे)

वारिवाह—स पु [स] वादल, मेघ ।

रू भे —वाग्वाह, वारवाह ।

वारिविरोक्षण—देखो 'वारविलोक्षण' (रू भे.) (ना मा)

वारिस—स पु [फा] १ किसी की जायदाद का हकदार, जायदाद के लिये मनोनीत किया हुआ या कानूनन अधिकारी ।

२ उत्तराधिकारी ।

३ वह जिसने अपने आपको किसी अन्य के कार्यों के लिये योग्य बना लिया है ।

रू भे —वारस ।

वारिसार—स पु —चन्द्रगुप्त का एक पुत्र, अशोक का पिता, विदुसार ।

वारिसास्त्र—स पु [स वारिसास्त्र] गर्ग मुनि द्वारा रचित फलित ज्योतिष का एक ग्रथ ।

वारी—स स्त्री —१ अवसर, मौका, पारी ।

उ०—१ थावी केतली रे नर ऊमर थारी । भाखे मुख असहा वच भारी । वचस्यो नही आविया वारी, गावो रे गावो गिरवारी । —वक्सीराम लाळस

उ०—२ सेज सवारी छै तन री तयारी छै । श्रीर उवा री वारी छै आज । —रसीलै राज रा गीत

२ न्यौछार, उत्पन्न ।

उ०—१ हू वारी रे माघवा, विरह जलंती जाणि । तू तु तापइ हूरि थी, प्रेमि पसारी पाणि । —मा का प्र.

उ०—२ नीवूडे री गहरी गहरी छाग्य ओ था पर वारी रे सैया । ढोला नै मरवण सुख भर पोढिया ओ राज । —लो. गी.

३ निवारण, निवृत्ति ।

उ०—सदा सेवका लोक सानिध्यकारी । प्रभु 'पास' स्तमनी विघ्न वारी । —स. कु.

४ साधुवाद या घन्यवाद देने की क्रिया या भाव ।

उ०—हाथी रे हीदे मरियो पती नै देख वीर स्त्री कहै वारी वालम वारखै जाऊ धरणी री वाह हथ वाहनै वारणी । —वी. स टी.

[स वारी] ५ हाथी को बाधने की रस्ती या जजीर ।

६ हाथी को पकड़ने के लिये बनाया हुआ गड्ढा ।

७ हाथी को बाधने का स्थान ।

८ कंदी, वदी ।

९ जल-पात्र ।

१० तरल पदार्थ रखने का एक टोटीदार वर्तन ।

११ सरस्वती का नाम ।

१२ देखो 'वारी' (रू भे)

उ०—तद भरमल रे रहवासरे उण घडी खिडकी कराई । सो रात घडी च्यार गया भरमल हचूर आवै, उठै जीमै, सेभु विछावै । वारी होवै सो मोहल आवै । रात घडी च्यार पाछली रहा बहोड जावै ।

—कृवरसी साखला री वारता

रू. भे.—वारि, वारि ।

वारीय—देखो 'वारि' (रू भे)

वारीवारी—देखो 'वारी वारी' (रू भे)

उ०—दारूडा री मनवार आपस री, वण रही वारी वारी ।

—रसीली राजरी गीत

वारीस—स पु. [स वारि+ईस] १ समुद्र ।

२ जल के अधिपति वरुण देव ।

रू. भे.—वारिस, वारीस, वरीस, वारिईस ।

वारुवार—देखो 'वारवार' (रू. भे.)

वारु—१ देखो 'वारु' (रू. भे)

उ०—१ वेशाख वारु मास, नही ताढि तडकउ तास । उची चढि आवास, वइसयइ केहनइ पास । —स कु.

उ०—२ पहुआवर घनपुर तणा रे लाल, गुप चुप गढ र्वालैर । करणसाही लाहु भला रे लाल, वारु वीकानैर । —प. च. चौ

उ०—३ हुउअी [हुइती] समालु [मन] मारु ठारु । सोकागनीजवा [जा लागी] छि, सीतल [वचनि] वारु । —नळाख्यान

वारु—देखो 'वारु' (रू भे)

वारुण—वि. [स.] १ वरुण का, वरुण सम्बन्धी ।

२ वरुण को समर्पित क्रिया हुआ, दिया हुआ ।

[स पु] १ नव खण्डो मे से एक ।

२ शतभिषा नक्षत्र ।

३, देखो 'वरुण' (रू. भे.)

वारुणास्त्र—स. पु [स.] एक अस्त्र विशेष ।

ड०—नागास्त्र गुरुडास्त्र सवर्त्तकास्त्र मेघास्त्र प्रलयकालास्त्र रिखास्त्र आग्नेयास्त्र वारुणास्त्र दानवास्त्र माहुँदास्त्र तिमिरास्त्र डिभककारास्त्र नारायास्त्र अस्वग्रीवास्त्र ब्रह्मास्त्र मेघास्त्र इति अस्त्राणी । —व. स

वारुणि—स. पु [स. वारुणि] १ एक पैतृक नाम जो अगस्त्य, भृगु एव वाशिष्ठ आदि ऋषियों के लिये प्रयुक्त होता है ।

वि. वि —ये सब ऋषि ब्रह्मा के यज्ञ से उत्पन्न हुए और वरुण ने इनको पुत्र रूप में माना इसलिये इनका नाम वारुणि पडा ।

२ धर्म सार्वणि मनवन्तर का एक ऋषि ।

३ एक पक्षिराज, जो कश्यप एव वनिता के पुत्रो मे मे एक था ।

४ वानरो का एक राजा ।

वारुणी—स स्त्री [स] १ स्वायभुव मनवन्तर के वरुण की पत्नी ।

२ अरण्य प्रजापति की कन्या जो चक्षुप् राजा की पत्नी एव चक्षुप् मनु की माता थी ।

७ एक महाविद्या ।

उ०—वारुणी दारुणी भास्करी सकरी जया विजया घोरा कौबेरी प्रवाही मदनसेना । —व स.

८ उपनिषद विद्या ।

९ पश्चिम दिशा ।

१० मदिरा, शराव ।

११ शतभिषा नक्षत्र, जो चैत्र कृष्णा त्रयोदशी को पडता है ।

१२ उक्त दिन का माना जाने वाला पर्व ।

१३ दूर्वा, दूव ।

१४ घोडे की एक चाल ।

१५ मादा हाथी, हस्तिनी ।

रू भे —वरुणी, वरुणी, वारुणी, वारुणी, वारुणी ।

वारुध—देखो 'वारिधि' (रू. भे) (अ मा)

वारुसी—स पु —भाटी वश की एक शाखा व इस शाखा का व्यक्ति ।

(वा दा. ह्यात)

वारु वार—देखो 'वारवार' (रू भे.)

उ०—सकति गणेश नवै ग्रह सोई सुर तेतीस सहाय सकोई । वड पहि जतन सु वारुवारा, हुवौ घरम लख कोड हजार । —रा. रू

वारु—वि (स वर) १ वर, श्रेष्ठ, उत्तम ।

उ०—१ ती वारु राजा रे अहि उसीया पछी मांहरा साहिवा, अनगसेना इण नाम रे वेस्या विगताली । —वि कु

उ०—२ भीम परित्याग प्रव्रज्या परयवा जी, सूत्र परिग्रह वारु तप उपधान हो ।

३ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—१ तु गुण अनत करि गाजइ, तुम्ह रूप अनोपम राजइ रे ।
सुंदर तुम्ह मुख नउ मटकौ, बारु लोयण नउ लटकउ रे ।

—वि. कु.

उ०—२ ऊपेलइ मालि, प्रसन्नइ कालि, वारु मडप नीपाईउ,
पोइणि ने पानि छाइउ, ककूना छावडा मोतीना चडक । —व स
३ स्वादिण्ड ।

उ०—मोतीआ लाडू, दाखडिआ लाडू, दहीथरा तिलसाकली, फीणा
वरसोला, साकरीआ चणा, कोहलापाक, दूध पाक सेलडी पाक
खरगा पाजा जलेवी हेसमी, वारु पडसूधी तणा आछा माडा,
लगार नही खाडा । —व. स

स. पु —१ वह हाथी जिस पर विजय पताका रहती है ।

रू भे—'वारु' ।

वा'रु—देखो 'वाहुरु' (रू भे)

वा'रुगु वा'रुगौ—स पु —एक कारीगर ।

उ०—गलीआरा चीतारा घणा, ताई वणकर तेहनी नहीं मणा ।
कडीआ जडीआ गणीआ भला, लाभइ वारुगा रुडी कला ।

—नळदवदती रास

वारुवार—देखो 'वारवार' (रू. भे)

वारुवी—स पु —त्यागने, निवारण करने की क्रिया या भाव ।

उ०—राखी पारेवी हो लाल, तिण परि सारेवीही । सेवक तारेवी
हो लाल, नाकार वारेवी हो । —वि. कु

वारोत—देखो 'वारोत' (रू. भे)

वारोवार, वारोवारी—१ देखो 'वारवार' (रू. भे)

उ०—१ तिहा जिनवर मुनि सुव्रत स्वामिनै, देव ग्रह निज आया ।
वारोवार करे गुण वरणना, मन सुद्ध प्रणम रे पाय । —वि. कु

उ०—२ किम रिहिसि ए निरावार, वाष सध करसि ता आहार ।
एणी पिरि करता वारोवारि, कलियुगि मन प्रेरचू अपार ।

—नळाख्यान

२ देखो 'वारीवारी' (रू. भे)

उ०—तूटै सनाह फूटै तुरस, वाह सरस तरवारिया । सोहै निराट
हिंदू असुर, वाहै वारोवारिया । —रा. रू.

वारो—स पु —१ कूए से पानी निकालने का चरस, मोट ।

उ०—१ ताहरा पावूमी कोहर तेवण आप लागा । ताहरा एक
वारो काडियो । तंसू कोठा कूड्या खेळिया भरी । —नैणसी

उ०—२ सो नापी ऊपर खडी थी । कोहर तेबायी सो वारा आठ
नो नोसरिया । दसमो वारी खाचता नाकी खुस गयो । वरत डीली
पड गई । —नाप साखलै री वारता

२ कूए के पानी का मोट उडेलते समय गाया जाने वाला एक
लोक गीत ।

३ रात्रि के समय मादा ऊटो के भुण्ड के बैठने का स्थान ।

४ उजाड, जगल ।

५ लघुशका करने की क्रिया ।

६ समय, काल ।

उ०—१ राम राज जोधपुर, सहु हरचद वारो । मास पाच खट
मास, साह आप वाधारी । —गु. रू. व

उ०—२ दिन आया चक्कवै गया सक्कवै समाए । दिन आया हरिचद
गयो वारो वरताए । —रा. रू.

७ किसी काम या बात के लिए वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर
क्रम से आता है, पारी ।

उ०—१ ताहरा जियै वडू री वारो हुती, सु मारग रोकि ऊमी ।
ज्यू हृदास पाछली रात री वाहुडियो ताहरा कह्यो—सासूजी ।
हृदास वाहुडै छै । —नैणसी

उ०—२ घडी च्यार बंस पूछी वारो कैरो । तद अरज कीवी
भरमल री वारी ले असवार हुथा सो इहा री छै । तद आप उठि
भरमल रै मोहल पधारियो । —कृवरी साखला री वारता
८ चेचक ।

उ०—वणवीर आणि अर मूहते अचळै नू अर नाई लखमन
लाहोरी नू सूपियो । आग भोपतजी समाधिया हुथा हुता । काची
पाकी वारी ढळियो हुती । —द. वि.

९ स्कन्दापस्मारादि वालग्रहो से पीडित बच्चे के शिर के ऊपर
वारा जाने वाला जल जो किसी वृक्ष विशेष की जडो में डाला
जाता है ।

१० बडी तीज के रोज लडकी के पिता के द्वारा उसके ससुराल
भेजी जाने वाली मिठाई ।

वि. वि —इसमे बडे-बडे लडू भेजे जाते हैं ।

११ बडी तीज के रोज लडके के पिता के द्वारा (शादी होने के
पहले) पुत्र वधु के लिए भेजे जाने वाली मिठाई व वस्त्र आदि ।

१२ देखो 'वार' (अल्पा, रू. भे)

उ०—मरण तणो डर कोई नहीं, मरना है इक वारो रे । बहुत
निवाज वडा करु, बु बहु देस भडारी रे । —प. च. ची.

रू. भे—वारी ।

वालटियर—स पु [अ] निस्वार्थ भाव से किसी कार्य में योग देने वाला
स्वय-सेवक ।

वालध—स. पु —एक जाती या वर्ग विशेष ।

उ०—माली तबोली छोपा परीयट बघारा तूनारा सोनारा ठाठार लोहार चमार सुई बालध कडीया सिलवट उड गाछा कोनी टाटिया बाबर डेढ हू व । —व स.

बालभ—देखो 'बल्लभ' (रू. भे)

उ०—१ बालभ एक हिलोर दे, भाई सके तउ भाइ । बाहडिया वे थकिया, काग उडाइ उडाइ । —डो मा

उ०—२ प्रीतडी बालभ पालियइ, नवि दीजियइ छेह रे । कठिन हियु नवि किजियइ, कीजइ सगुण सनेह रे । —स फु

बाळ, बाल—स पु. [स बल्ल] १ चादर, गिलाफ । (उ र)

२ पर्वत की तलहटी ।

३ पर्वत की तलहटी मे स्थित खेत ।

४ घुडसाल, अस्तबल ।

५ घोडों का समूह ।

उ०—घन हाथा हिंदु धरणी, कीरत वरणी सकाज । बाल तरणी छोगी ब्रवी, 'रूपमणी' घजराज । —चिमनजी भाढी

६ तीन घूघची के बराबर एक तोल ।

७ निपेघ, बर्जन ।

८ वारीक खुदाई या जाली काटने का एक औजार ।

९ एक प्रत्यय ।

१० देखो 'बाल' (रू. भे) (ह ना मा.)

११ देखो 'बाला' (मह., रू. भे)

उ०—लौकिक न रहइ लोकमा रे लाल, विसय थकी मन बाल सुकुलणी रे । काम भोग भुड्या कह्या रे लाल, नरक ना दुख निहाल सुकु रे । —स कु

रू भे —बालइ, बालई, बालि, बाली, बाली, बाली ।

बालइ, बालई—१ देखो 'बाल' (रू भे)

उ०—कान्हडदे पाटनउ धरणी, बीजी भूमि भोगवई धरणी । राज-रिद्धि नू किसू वखाण, बालइ पच-वरण केकाण । —फा दे प्र.

२ देखो 'बाला' (रू भे)

बालउ—१ देखो 'बाल' (रू भे)

२ देखो 'बाली' (रू भे)

उ०—हु कित बालउ माय गहिरि गयदतउ खेलउ, हु कित बालउ माय, सेसफण विमुहा पिलहउ । —प च चौ

बाळक—स. पु [देशज] १ जगल मे स्वतन्त्र चरने वाले पशु, जिनके साथ चरवाहा नहीं होता ।

२ नव प्रसूता मादा ऊट'जो अपने बच्चे को छोड़ कर जगल मे चरने जाती है ।

३ हाथ मे पहनने का कगन, बाल छड ।

वि—१ बघन रहित, स्वच्छन्द, मुक्त (पशु)

बाळकी—१ देखो 'बाळी' (अल्पा, रू. भे)

२ देखो 'बालिका' (रू भे)

बाळकी—देखो 'बाळक' (अल्पा, रू भे.)

बाळछी—देखो 'बाळछी' (रू भे.)

बालढावोस—स पु —बालक के पाने के लिये बनाई हुई बन्तु फो लेने मे लगने वाला दोप । (जैन)

बाळण-वि [स बलन] १ रोकने वाला, सामना करने वाला ।

२ लौटाने वाला ।

३ वापिस लाने वाला ।

४ मोडने वाला, घुमाने वाला ।

५ प्रतिशोध लेने वाला ।

६ आने वाला ।

बाळणोत—देखो 'बाळणोत' (रू. भे.)

बाळणो बाळयो—क्रि. स. [स बलन] १ वापिस लौटाना, लौटा कर लाना ।

उ०—१ जुई तें वार कित्ता उदजीत, संहार दइत्ता बाळी सीत । —ह र.

उ०—२ बाळियो वरण गाया तरणी बीसहथ, सीर सभाळियो बीर सागी । अरण विच वरण विच घटा जिम ओवडी, लोवडी जाय असमान लागी । —गोपीनाथ गाडण

उ०—३ रतन मजरी रीस करि कहियो, राजा नर ब्रह्म री भाए दीवी छे । जु साठ पाछी बाळ । —पच दही री वारता

२ वापिस लेना, प्राप्त करना, अधिकार में करना ।

उ०—१ म्हारें मार्ये भाग, जो राज रा हाथ मार्ये ऊपर हुसी । कती हू मोटो हुईस, नै माहरी धरती गई छे सु पाळीस ।

—नैणसी

उ०—२ आपै वेढ सू अलाहिदा रहिस्या, नै आपा नू धरती बाळणी छे ।

—नैणसी

उ०—३ बाळण दक्खण वसुह, कटक बघ बढिया कोझण । भेरी पचसद्द ताम, सुणिये लग जोझण ।

—गु रू व

३ प्रति शोध लेना ।

उ०—सीसेरसाह राव स्त्रीजैतसिध जो रें वर बाळण रें किये राव मालदे ऊपरि आप पवारि अरु राव मालदे रा रजपूत उमराव घणा मारिया ।

—द. वि

४ रोकना, सामना करना ।

५ वापिस बुलाना ।

६ घुमाना, फिराना, चक्कर लगवाना ।

७ विदा करना, लौटाना ।

८ मोडना ।

उ०—१ विचं भावता बधवा बाह वाळ । रटै राम बाण जती छेदि राळ ।
—सू प्र

उ०—२ किए री ई रह्यो न हटकियो, निज हट कियो निभाव ।
बाळें ज्यूइ बळियो नही, वाळापर्यैइ सुभाव । —जैतदान वारहट

९ खारिज करना, निरस्त करना ।

उ०—जनम जनम में करज कियो है माथे करडो । मिनख कियो महाराज काट दे क्यू नहिं खरडो । यो खरडो करडो घणी, कीकर बणै बणाव, निस वासर सगराम कह, रामघणी नै ध्याव । रामघणी नै ध्याव, वाळदें खावद खरडो । जनम-जनम मे करज कियो है माथे करडो ।
—सगराम दास

१० मिटाना ।

उ०—मन जाणी पीवू पै भिसरी, छाछ सूवरणी मिळै न छाट ।
बळिया सी पाछा कुण वाळै, उण घर री लेखन रा आट ।

—ओपी आढी

११ भुकाना ।

१२ बसूल करना, लेना ।

१३ जेवरी गूथना ।

१४ हवाकरना, पवन डुलाना ।

१५ पशुओं को एक स्थान पर एकत्र करना ।

१६ देखो 'वाळणी, वाळवी' (रू भे)

वाळणहार, हारी (हारी), वाळणियो—वि० ।

वाळिओडो, वालियोडो, वाळोडो—भू० का० कृ० ।

वाळोजणो, वाळोजबो—कर्म वा० ।

वालणो, बालबो—रू० भे० ।

वालणो, बालबो—देखो 'वाळणी, वाळवी' (रू भे)

उ०—आळखा नै अतपक्ष, अणसरण पाली नै । सवत पनरपचीस, मन वैराग वाली नै ।
—ऐ जै का स

उ०—२ सद सु सव थई पाडइ, लेख न लिखिउ जाय । पिळ माहरु परदेसि थि, किणी-परि बालसि वाय ।
—मा. का प्र

उ०—३ माहरी मन पापी हो, कहै अवगुण किसा । मन पाछो बाल्यो ही, एम कहै मवालसा ।
—वि कु

बालणहार, हारी हारी), बालणियो—वि० ।

बालिओडो, बालियोडो, बाल्योडो—भू० का० कृ० ।

बालीनणो, बालीजबो—कर्म वा० ।

बाळध-स. पु —श्वान, कुत्ता । (प्र मा)

बालम—१ देखो 'बालम' (रू. भे)

उ०—१ हेटै दुसमण हाथी रै हीदें भरियो पती नै देख वीर स्त्री

कहै वारी बालम वारणै जाळ घणी री वाह हथ वाहने वारणै ।

—वी स. टी.

उ०—२ कहै कुमरी नै हो ताहरी भाग्य फल्यो । मन मानीतो हो बालम आयो मिल्यो ।
—वि. कु

बालमकाकडी—स स्त्री —लम्बे आकार की एक ककडी विशेष ।

रू भे —बालमकाकडी ।

बालमियो—देखो 'बालमियो' (रू भे)

२ देखो 'बालम' (अल्पा, रू भे)

बालमिक, बालमीक—देखो 'बालमीक' (रू. भे)

उ०—देवी बालमिक व्यास रूपे तु कर्त्त । देवी रामायण पुराणी भागवत्त ।
—देवि

बालर-स पु —हरिण, मृग ।

बालरकाकडी—स स्त्री [स. वल्लूर-ककटी] रेगिस्थान में होने वाली एक ककडी विशेष । (उ र)

बाळलियो—देखो 'बाळली' (अल्पा, रू भे)

बाळलो—स पु —स्त्रियो के गले मे पहनने का हसुली के आकार एक आभूषण ।

रू भे —बाळली ।

अल्पा —बाळलियो, बाळलियो ।

बाळव-ग पु [स बालव] फलित ज्योतिष मे दूसरा करण जिसमें शुभ कर्म वर्जित नही है ।

रू. भे —बालव ।

बाळस—देखो 'बाळस' (रू. भे.)

बालहउ—देखो 'बाली' (रू भे.)

उ०—सखे आतीस सामळी रे, भरम पडघउ भरतार । एहनउ अनेरउ बालहउ रे, मूंकी दडाकार ।
—स. कु.

बालहली—स. स्त्री [स वल्ल फलिक्रा] लता की फली ? (उ. र.)

बाळहो—देखो 'बाळो' (रू भे)

उ०—बळबळती रेत रै माथे ढाळीढाळ पाणी रळकण लागी ।
सूखा बाळहा खाळा जीवण साचरता ई भरणाटै दीवण लागी ।
—फुलवाडी

बालहो—देखो 'बाली' (रू भे.)

उ०—१ जिम सालूरा सरवरा, जिम घरणी भर मेह । चपावरणी बालहा, इम पाळीजइ नेह ।
—ढो मा.

उ०—२ माहरा बालहा, ताहरी न तजुलार तू हीयडा नु हार ।
तू योवन सियुगार, तू भीभी भरतार ।
—वि. कु.

उ०—३ मदन मजरी वेटी मुक्कने बालही रे, ए सरिखी वर जोइ ।
—क्रीपाल रास

(स्त्री. बालही)

बाला—स. स्त्री—१ पवार वंश की एक शाखा । (बा. दा. ह्यात)
२ वस्त्र विशेष ।

उ०—रत्न कवल छाइल मकवल अगल साउला उरसाला बाला
पटुला बाकला घनवेलि कमलवेलि । —व. स

३ वृद्ध व्यक्तियों द्वारा ससुराल में स्त्रियों के लिये प्रयुक्त किया जाने
वाला सम्मान सूचक शब्द विशेष ।

२ देखो 'बाला' (रू. भे.) (व. स., अ. मा.)

उ०—नह बाला नह तरणा, व्रध परण्या न कवारा ।

—कंसोदास गाडण

रू. भे.—वाल्हा, वाल्हा ।

बालावत—स पु—राडोड वंश की एक उपशाखा या उस शाखा का
व्यक्ति ।

बालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—हो बालिभ मह तुनइ वारियउ, वा' रे, हो जूयटइ रमिवा
तू म जाइ । —स. कु

बालिभि—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—कविन्याति कायस्थ वड, बालिभि विख्यात । पूरुए पद वधता
दीह थया दह सात । —मा. का. प्र

बालि—१ देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—१ कूकडा कध कालम्म फन्न, रेवत जोति दीवा रतन्न ।
पारोए पियइ जळ पोव पथ, सोहइ सरूप धुरि बालि सथ ।

—रा. ज. सी

उ०—२ पांडव दीइ चासणी खाण । बालि लेई बाध्या केकाण ।
—का. दे प्र

उ०—३ हइ बालि खभि सोहइ हसति । गढपति जइतसी अउव
गति । —रा. ज. सी

२ देखो 'बाली' (रू. भे.)

बालिद—स. पु [अ] पिता, जनक ।

बालिदा—सं स्त्री [अ] माता ।

बालिबध—स पु. एक प्रकार का घोडा जो उत्तम गिना जाता है ।

बालिभ—देखो 'वल्लभ' (रू. भे.)

उ०—बालिभ गरथ वसीकरण, बीजा सह अकयथ्य । जिए
चडया दळ उतरइ तरुणि पसारइ हथ्य । —ढो. मा

बाळियोडो, बालियोडो—भू. का. कृ. १ वापस लौटाया हुआ, लौटाकर

लाया हुआ. २ वापस लिया हुआ, प्राप्त किया हुआ, अधिकार में
किया हुआ. ३ प्रतिशोध लिया हुआ. ४ सामना किया हुआ,
रोका हुआ ५ वापस बुलाया हुआ. ६ घुमाया, फिराया
व चक्कर लगवाया हुआ ७ विदा किया हुआ, लौटाया हुआ,
८ निर्देश दिया हुआ. ९ मोटा हुआ, बल टाला हुआ १०
खारिज किया हुआ. ११ मिटाया हुआ. १२ कुगना हुआ.
१३ बसूल किया हुआ, लिया हुआ १४ जेयरा गूया हुआ.
१५ हवा किया हुआ, पवन डुलाया हुआ. १६ एक स्थान पर
एकत्र किया हुआ (पशु)

१७ देखो 'बाळियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बाळियोडो, बालियोडो)

बाळी—स स्त्री [स. बाळी] १ कान व नाक का प्राभूषण विशेष ।

प्रत्य.—२ सजा या क्रिया शब्दों के आगे लगने वाला मन्वन्व
बोधक प्रत्यय ।

३ देखो 'बाळी' (पु.) (रू. भे.)

बाली—वि स्त्री—प्यारी, प्रिया ।

उ०—बोह सिर दार सीला सुं सवायो । बाली सासढली रो जायो ।
—रसीले राज रा गीत

देखो 'बाल' (रू. भे.)

उ०—बाळिया—वधइ धरि-धरि ब्रहास । प्रासिया सपूरित प्रास
वास । —रा. ज. सी.

१ देखो 'बाळी' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बाली' (रू. भे.)

बाळिवेस—देखो 'बाळीवेस' (रू. भे.)

बालीसा—स. पु.—चौहान वंश की एक शाखा ।

उ०—सु लाले रे वर रा भाखरसी सादूळोत सू धो, तिण ऊपर
बालीसा री धरती में रहती । —नैणसी

बालीसा—स. पु—बालिसा शाखा का व्यक्ति ।

बालु—स पु—एक शाक विशेष ।

उ०—बालु नइ वेलातर, वेळ वेतस वाणि । धघार वाहलु लीउ,
बाउलीउ वखाणि । —मा. का. प्र.

बालुका—स स्त्री [स] १ फकडी विशेष ।

२ देखो 'बालु' (रू. भे.)

बाळुकाजत्र—देखो 'बाळुकाजत्र' (रू. भे.)

बालुकाप्रभा—स पु [स] एक नरक का नाम ।

बाळुकायत्र—देखो 'बाळुकाजत्र' (रू. भे.)

बाळुचो, बाळुछो, बाळूचो—देखो 'बाळुछो' (रू. भे.)

बालेय—देखो 'बालेय' (रू भे) (ह ना. मा)

बालेसर—देखो 'बाली' (मह, रू भे)

उ०—१ गाव सिघाया ओ अजमी कूण सोवसी ओ राज । थेई ओ मानेतरा राणी थेई ओ बालेसर राणी । —लो गी

उ०—२ बालेसर हो वली परभाते वात, कहस्यु आइ होसी जीसी जी । दिलीसर हो वाची चीठी वात, सीख करा जावा घरे जी । —प च ची

बालोच—स पु.—प्रेम, प्यार ।

बालोत—स पु [स्त्री बालोतणी] चौहान-वश की एक उपशाखा व इस शाखा का व्यक्ति । (वा वा ख्यात)

बालोळ—स स्त्री—सेम की फली जिसकी तरकारी बनती है ।

बाळी—स पु—१ बरसात में चलने वाला पानी का नाला, जल स्रोत ।

२ नेहरुवा नामक रोग व इसका कीड़ा ।

वि वि—देखो 'नारू'

प्रत्य [स आलुच्] (स्त्री. वाली) ३ क्रिया शब्द के आगे लग कर कर्तृवाचकसज्ञा का अर्थ बोध करने वाला शब्द ।

ज्यू—करण बाळी, मरण बाळी, बोलण बाळी ।

उ०—मारण बाळा सूं मरण बाळी वत्ती सूरवीर व्हे । मारण बाळी ती कायर ई विह्या करै पण कोडें सूं मरणिया कायर नो व्हे । —फुलवाडी

४ सज्ञा, पदार्थ या स्थान-वाचक शब्द के आगे लग कर सम्बन्ध वाचक अर्थ-बोधक शब्द । (ह ना. मा)

ज्यू—दूधवाळी, घर बाळी ।

उ०—१ साहिजादा अर्न रायजादा सगठा, बाधियो वळें दिखणाव बाळी । —सुभराम गीड री गीत

उ०—१ नाडी बाळी तोतक ती गर्जव इज रह्यो । आ ती सूळी चढणां बिचे ई सवाई व्ही । —फुलवाडी

रू भे—आळी ।

५ पळी विभक्ति चिन्ह, का ।

उ०—१ उदधि कछवाह बाळी उदक ऊकळें, रुक तरण भीम ज्वाळा तरण रोस । —राव दुरजणसाळ हाडा री गीत

६ देखो 'बाळी' (रू भे)

उ०—चमकें वूदा भमकें बाळा, ओर बुलाक मोती लटकन बाळा । —रसीले राज री गीत

रू. भे.—बहाळी, बाळी, बाहळी, बाहाळी, व्हाळी, वहाळी, वाळही, वाहळी, वाहली, बाहल्यो, बाहाळी, व्हाळी ।

बाली—स पु.—१ पति, खाँद ।

उ०—तून घूप खेवत के हरसधी, कर हेत । बाला वीछडिया मलें, मनवछत फळ देत । —कल्याणसिध नगराजोत बादेल री वात

२ स्वामी, मालिक ।

३ चूँवन, बोसा ।

उ०—बेटा आगें बाप नै फेर हार मानणी पडी । लुळन उण रा लिलाड मार्ये बाली दियो । —फुलवाडी

वि (स्त्री बाली) १ प्यारा, प्रिय, स्नेही ।

उ०—१ बाली लागें छें म्हारी देसडी ए ली । केम कर जावूं परदेस, बाला जो । —लो गी.

उ०—२ ज्या घरणूं बाली जीवणी, घट तिका डर व्यापें घरणी । महाराजा सूं धम द्वार मार्गें, सहर तजि ईंद्र साह । —रा. रू.

२ मनोहर, मोहक ।

३ मीठा, मधुर ।

रू भे—बहाली, बालही, बाली, बाल्ही, व्हाली, वहाली, बालर, बालहउ, बालही, बाल्ह, बाल्ही, बाहलर, बाहलु, बाहलू, बाहली, बाहल्यो, बाहुलु, बाहुली ।

अल्पा.—बालुडी, बालुडी, बालडी, बाहलकड्ड, बाहलकडी, बाहिलियो ।

मह.—बाल्हेसर, बालेसर, बाल्हेसर ।

बाल्मीक, बाल्मीकि—देखो 'बालमीक' (रू. भे)

बाल्हम—१ देखो 'बल्लभ' (रू भे)

उ०—ओ म्हारी भूपडी लूटनें पुळीजे न्हास जाओ विवेकं राख नै, बाल्हम जों म्हारी पती आय गयो ती अडव-अडव रुपीया री कर एक एक तिणखली ही वेचसी । —वी स. टी.

२ देखो 'बालम' (रू भे)

बाल्हा—देखो 'बाला' (रू भे)

बाल्हीक—स पु [स] १ भारत की उत्तर-पश्चिम की सीमा पर स्थित एक प्राचीन जनपद । (सभा)

२ आधुनिक बलख का नाम ।

३ बलख देश का घोडा ।

४ केसर ।

५ हींग ।

६ एक गधवें ।

रू. भे.—बालिक, बाल्हीक, बाहलीक, बाहलीकरण ।

बाल्हें—देखो 'बाली' (रू. भे.)

उ०—तुम्हें थो फुण मुळ नद बाल्हे, हु तव तुम हिज ऊपरि माल्हु हो ।
—वि कु

बाल्हेसर—देखो 'बाली' (मह, रू. भे)

उ०—१ बाल्हेसर सामी मानि नें तु अतरयामी, मानि नें सिधगति
गामी, वीनतडी मुळ मांनो वा ।
—प च चौ

उ०—२ प्रीतडिया न कीजइ हो नारि परदेसिया रे । खिण-खिण
दाभइ देह । वीछडिया बाल्हेसर मलवी दोहिलउ रे । सालइ सालइ
अधिक सनेह ।
—स. कु.

बाल्ही—देखो 'बाली' (रू. भे.)

उ०—१ हे नीला मो पहली जुद्ध भे कट पडण री उतावळ थनें नही
करणी ही म्है थनें घणा बाल्हा कवा खवाय पाळियो ही सो म्हनें
मरण देनं पडियो होवती ।
—वी स टी

उ०—२ गायण दास खवास भएँ अवसर मन भाँणो । घट बाल्ही
आपरो तिके पट घूषट नाणो ।
—रा. रू.

उ०—३ ईसाणद, वारट आरावे, भल गुण थारा व्यास भएँ ।
बालमीकू तू नां अति बाल्ही पीरदास अरदास पएँ ।
—पी अ

उ०—उणरा लिलाड माथे लुळने बाल्ही दियो । —फुलवाडी

उ०—५ भुज भरिनं भेळाह, मिळस्युं जदि मन मेळुवा । बाल्ही
साइ वेलाह, जनम सफल गिणस्युं 'जसा' ।
—जसराज

उ०—६ बाल्ही नै वलि विनय वहे, गुण संग्रह म्हारा लाल । वहे
धरम पमाई जेह जगत भे जस लहे म्हारा लाल । —स्त्रीपाल रास
(स्त्री. बाल्ही)

बाव—स. स्त्री [स. वात] १ पवन, हवा ।

उ०—१ चलत बाव वेग बाव बाव पाव चचळे । अही कपाळ
नीठ धीर, पीठ कोम आकुळ ।
—रा. रू

उ०—२ वेगा लीये मूठी बाव, राज रथ पखा राव । मैगळा
करघ मड, खेस आठ भीत खड ।
—गु. रू व

२ अपान वायु ।

उ०—पिणियारिया खैला, तनक सी तान, किरकाटघा सा रग ।
कागदी जवान, वचन का कहाव ऊट का वाव ।
—दुरगादत्त बाहरठ

३ पताका, ध्वजा ।

उ०—बाव फरुके वेढ बळन वापरें । पाँणा चडिया किलम जिंकें
'परताप' रें ।
—किसोर दान बारहुठ

४ देखो 'बापी' (रू. भे)

उ०—१ आदमी हजार ४००० जुहर हुवी । सरोवर, कुवा, बाव
एतला माहे सूं बाल्क ३००० जाळ नखावे काडिया । —नैणसी

उ०—२ देवी देव जाळं धरी सत दीप, देवी कदरे सक्षरें बाव
कूर्प ।
—देवि.

रू. भे.—बाव ।

बावफुडियो, बावफुंडी—देखो 'बावफुडियो' (रू. भे.)

बावड—देखो 'बावड' (रू. भे)

बावडणो, बावडवो—देखो 'बावडणो, बावडवो' (रू. भे)

उ०—१ बाह बाह 'बूसळा' लघु वेसां, 'हरा' सुतन भेळं वरहास ।
'अभा' सुद्धळ दुरवा आवटीयो, बावडियो रगीया बाणस ।
—ठाकुर कुसळसिंह री गीत

उ०—२ ताहरा कहघो—थे मोनू कोई द्रव्यवत बावडो ।
—सयणो री वात

उ०—३ ताहरां ऊदरी मा नूं बोलाई । कहघो—वीरम बावडो
नही तर उदें री छाल कढाळ छू, अर भुस भराळ छू । —नैणसी
बावडणहार, हारो (हारी), बावडणियो—वि० ।

बावडिप्रीडी, बावडियोडी, बावडयोडी—भू० फा० कृ० ।

बावडोजणो, बावडोजवो—भाव वा० ।

बावडियोडी—देखो 'बावडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री बावडियोडी)

बावडी—देखो 'बावडी' (रू. भे.)

उ०—गदाळ सहर गढ फोट बाजार पीळि पगार वाग बावडो
बगीचा कूआ सरवरा री घडा पीपळा री छिबि सहर री पावती
विराजि नें रही छै ।
—रा. सा स.

बावची—देखो 'बावची' (रू. भे)

बावणी, बाववो—१ देखो 'बावणी, बाववो' (रू. भे.)

उ०—१ मूळ मोळता मिनख, मिरडिया घणा घुमावे । हळ
बावतडी वेर फोगडा वीज तुपावे ।
—दसदेव

उ०—२ रावळजी तो पूखता छै नै नीवी तो मोटीयार छै । कदेस
भालो पकडने पूठे । रावळजी नै बावे तो म्है किसुंण करा ।
—वीरमदे सोनगरा री वात

उ०—४ सुघ क्षेत्र समकित वीज बावइ, सध आनद अति घणो ।
जिन सिध सूरि करउ चउमासउ, आवाण मास सोहामणो ।
—समय सुंदर

उ०—५ सचित पूरव करम ना, फल भोगवीइ पुण्य । जिहा बावड
तिहा ऊगमइ, अण—वागिउ तिहा सूय्य ।
मा. का प्र.

२ देखो 'बाजणी, बाजवो' (रू. भे)

उ०—१ घर लुकट मुकट वन वीधियां बावजे । बासरी बावजे
अहीरा बास ।
—बां दा.

उ०—२ मतसागर उन्नमत्ती, वीणा सुर मधुरे वावत्ती । वाहण हस विगत्ती, साय सुप्रसन हुआ सरसत्ती । —गजउद्धार

उ०—३ डफ ताल चग अदग वावत, उडावतहि गुलाल । इह मास फागुन सगुन खेलउ, निरखि मोहि वेहाल । —वि कु.

उ०—४ वरसिध वदि हूता छडावि, अजमेरि कोटि नीसाण वावि । —रा. ज. सी

वावणहार, हारी (हारी), वावणियो—वि० ।

वाविओडो, वावियोडो, वाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वावीजणो, वावीजवो—भाव वा०/कर्म वा० ।

वावडूक—वि [स] १ वातूनी, वकवादी ।

२ वक्ता ।

३ वाक्पटु ।

वावपोटी—स स्त्री -घोडे का एक रोग जिससे उसके पिछले पैरो मे नरम ग्रथिया हो जाती हैं । (शा हो)

वावरणो, वावरवो—देखो 'वापरणो, वापरवो' (रू भे)

उ०१ सूरवीर दोई साथ, वोळ चोळ लूथवाथ । वावरत्त रूप वीज, खजरा कटार खीज । —सू प्र

उ०—२ कृपावत पहिलै अणो, वावर खग करग । 'भीमाजळ' सारा मुहर, पडियो घारा लग । —रा रू

उ०—३ विसन समरजै भीठी वाणी, वावरजो घन देह वडाणी 'ओपा' आ ऊमर ओचाणी, परवत हूत विछूटा पाणी ।

—ओपो आढो

उ०—४ जउ दातार तउ वलि करण अवतार, जउ लक्ष्मी न वाउरइ तउ प्रच्छन्न पुण्य करइ, जो उरगु वोलि तो भोलउ ।

—व स

उ०—५ स्त्री सघ मन पुगि रूलीए, गुण गाइ गोरडी सवि मिलिए । दक्षीण देव सिरि महलावइए, साह सुपत्र खेत्रे घन वावरइए ।

—सिवचूला गरिण

वावरणहार, हारी (हारी), वावरणियो वि० ।

वावरिओडो, वावरियोडो, वावरचोडो—भू० का० कृ० ।

वावरीजणो, वावरीजवो—कर्म वा०

वावरवी—वि.—वग्दी सहित ।

उ०—माहाराजा जसवतसिध सात हजारो असवार तिरण मे पाच हजार दीसपा सेंसपा, दोय हजार वावरवी २५८० आसामी ५ कासमखान वगेरे । —नेणसी

वावरियोडो—१ देखो 'वापरियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'वावडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वावरियोडो)

वावरी—देखो 'वावरी' (रू. भे)

(स्त्री वावरण, वावरणी)

वावळ, वावल—स स्त्री [स वायुगुल्म, वातगुल्म] १ प्रचण्ड-हवा ऋणावात 'आधी' ।

उ०—वावळ आगे वीभूणी, की पावे सनमान । तूक रीक आगे तिसी, 'देवा' जग चौ दान । —वा. दा.

२ आधी ।

उ०—सिर सिधुर सेरखा, ओप अवर सिर लग्गा । उरड वडा ऊमरा वघे तुरही सुर वग्गा । कायमखान तरीम जोड चड तीन हजारो । अलीयार असवार हुवी, गज सिध प्रहारी । आरुहे गयद अवदळ अली, सैद महावळ सद्ळा । हाहुळि असख मिळि हल्लिया, जाणक वावळ वद्ळा । —रा. रू

३ वायु, हवा, समीर ।

वि—१ मस्त, मदोन्मत्त, उन्मत्त ।

क्रि वि—२ ओर, तरफ ।

उ०—'केहर' साहा भजणा, सक राखण कथ्या । विहु वावळ खागा अडे, भुज डड समथ्या । —द दा

रू भे—वउल, वाउल, वावल, वाउळ, वावल्ल ।

अल्पा—वाउलउ, वाउळउ, वाउळि, वाउळी, वाउली, वावळि, वावळी वावळी, वावली ।

वावळि, वावळी—१ देखो 'वावळ' (अल्पा, रू. भे)

उ०—१ एक सोर सारत्ति घोर धूवा रवि डवर । ज्यौ वावळि वादळ विसाळ ओपे मग अवर —रा रू

२ देखो 'वावडी' (रू. भे)

३ देखो 'वावळी' (रू. भे)

४ देखो 'वावळो' (स्त्री)

उ०—२ जोध जडाग अभनमी 'जैती,' सदा चलै आपरे सुभाय । लख दत दीर्ये भाजणो लाखा, खेडेचो वावळी खुदाय ।

—तेजसी खिडियो

वावळो, वावलो—१ देखो 'वावळी' (रू. भे)

उ०—१ सुण सुण मीठी बोलगत, वँठ न वैरी पास । वही भरोसे वावळा, खायै कदै कपास । —अज्ञात

उ०—२ धारण सलाह चित नह घरे, आरण करण उतावळी । वावळा गयद मसता विधी, वीफरियो रिण वावळी । —सू प्र.

उ०—३ वप गिणत वावळी कुंभ वार, जुध गिणै सती खीफळ जुम्भार ।

—पे. ह

(स्त्री वावळि, वावळी)

२ देखो 'वावळ' (अल्पा, रू. भे)

वावल्ल-स पु —१ एक आयुष या शस्त्र विशेष ।

उ०—चाप चक्र नाराच अरुद्र चद्र असिपत्र करपत्र क्षुरप्र क्षुरिका
करवाल कृत सल्ल वावल्ल भल्ल । —व. स

२ देखो 'वावल' (रू. भे)

वावसू-स पु [स वाह वसु] १ दूत, चर, सदेश-वाहक ।

उ०—साम्हा दौडै वावसू, घोडी डाक प्रमाण । साह अकव्वर
वयण सू खबर लियण सुरताण । —रा रू
२ जासूस ।

उ०—१ इतरे अस खड आविया, साथ वावसु सताव । अकवर
कहियो आवते, वहियो साह निबाव । —रा रू

उ०—२ तठा पछै रावळ देवराज धार ऊपर कटक कियो, सु पवारा
रा वावसू था त्या रावळ चढिया री खबर दी। —नैणसी
रू भे —वाउसू ।

वावार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—'पदम' मुख आगळी दखणिया पधारण, वधारण खडग घड
करण वावार । —गोरधन गाडण

वावि, वाविय—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—१ जिम वन माहि मालती, वास-विहारी वावि । तिम घट
माहरू पापीउ, एक कामि न आवि । —मा का. प्र.

उ०—२ कूआ वावि, सरोवर घणा, विवहारीयानी नही कोई मणा
तिण नयरी खेणिक नरनाह जिणवर आण धरै उच्छाह ।
—स्त्रीपालरास

उ०—३ गढ मढ मदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर कूआ खाड
आराम वन खड विभु इमा विभुइआ आवास । —व स

उ०—४ मुहि मुहि किय अड दत दतहि दतहि अड वाविय ।
वावि-वावि अड कमल कमलि दल लखु लख न (ना) विय ।

—अभयतिक यति

वावियोडो—१ देखो 'वावियोडो' (रू. भे)

२ देखो 'वाजियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वावियोडो)

वावी—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—सरोवरा तटाक हीद, तीरथ प्रमाण ए । वावी अनूप कूप
वाई, नीकरै निबाण ए । —गु रू. व.

वावीसेक—देखो 'वाईसेक' (रू. भे)

वावू, वावू—देखो 'वायु' (रू. भे)

उ०—डोलइ चडि परताळिया, डूगर दीन्हा पूठि । खोजै वावू
हथ्यडा, घुठि भरेसी मूठि । —डो. मा

वावेळी, वावेली—स पु [फा वावला] १ फोलाहल, धोर गुल ।

२ रोना-पीटना, ग्राहि-ग्राहि ।

३ चिल्लाहट ।

वावोफळी—स पु. [स वाताकुल्य] वह स्थान जहाँ खुली हवा आती हो ।

वायोड—देखो 'वावड' (रू. भे)

वाधी—स पु [स वपनम्] १ रबी की फसल में बोया जाने वाला बीज ।

२ रबी की फसल की बोवाई या जुताई ।

वाव्य—देखो 'वापी' (रू. भे)

उ०—वाव्य कुवा सरोवर जिहा ।

—धरम पत्र

वासत—स पु. [स. वासत] १ ऊट ।

२ हाथी ।

रू. भे —वासत ।

३ देखो 'वसत' (रू. भे)

उ०—देवी रूप वासत रे वज्र राजे । देवी आग रे रूप तू वज्र
दाके । —देवि

वासती—स स्त्री—१ एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चौदह वर्य
होते हैं और ६, ७, ८, ९ वा वर्य लघु होता है । शेष सभी
वर्य गुरु होते हैं ।

२ देखो 'वसती' (रू. भे)

वासदर—देखो 'वेस्वानर' (रू. भे)

उ०—उत्तर आज स उत्तरउ, पाळउ पडइ रवद । का वासदर सेवियइ'
कइ तरणी कइ मद । —डो मा

वास—स पु [स वास.] १ रहने की क्रिया, निवास, आवास ।

उ०—१ काळ है, अदेस ना सदेस औ करघो । देसत विदेस वास
थासत डरघो । —ऊ का

उ०—२ हर कोई जीव घालिया हाळी, वास सदा जिण माय वसै ।
परठण कज रोटी कपडा री, जिकी कमावै भोग जसै ।

—श्रीपौ आढी

उ०—३ लोग सारी कामरौ वडी दिलावर पण धूहड गवार लोग
सो उघाडो ही जे रहे । पछी ज्यू वास रहे ।

—डूलची जोइयेरी वारता

२ विश्राम, आराम ।

उ०—१ पण पावू स्त्री री मुख ही न दीठी नै तरवारा रं
धारातीरथ में स्नान कर सती सहेता सुरग वास कीधी ।

—वी स. टी

उ०—२ हे प्रभू इण आराम री ठीर रे बणावरो वाला नू वकुंठ
री वास देय आराम दीजे ।

नी. प्र

३ रहने का स्थान, डेरा ।

उ०—१ ढोलइ सूवउ सीख दइ, जा पछी ग्रह वास । उडियर
पाछउ आवियउ, माळवणी कइ पास । —ढो मा

४ घर, गृह । (अ मा, ह ना मा)

उ०—१- म्हारै ती माता श्री होज डायजी है म्हनै ती सुख रै वास
परणार्जै-अरथात ऐडी सुवस होवै किए सू इ लडे न भिडै गरीव
होवै ती सुख है । —वी स टी

उ०—२ अबै राघवदे सासरै गयी । दिन पाच रह्यौ । आणी
करि छिपियै आयो । तिकौ जैतसीजी रै वास बसियो ।

—जैतसी ऊदावत री वात

५ मोहल्ला ।

उ०—१ अगांठ पढीया री वास १ रायसळ री वास १ अचळा
जसड री वास । —नैणसी

अल्पा —वासडियो, वासेडी, वासडियो, वासडी ।

६ जगह, स्थान ।

उ०—नही तू अन्न नही त आस । नही तू वन्न नही तू वास ।
—ह. र

७ शरण, पनाह, आसरा ।

उ०—१ ताहरा हरदास उण वगत बीरमदेजी री वास छाडियो ।
नागौर नूँ हालिया, सरखेलखा रै वास रहण नू । —नैणसी ।

उ०—२ पछै कितराहेक दिने राठीड तेजसी राणा उदयसिंघ रै
वास बसीया । —राव मालदेव री वात

उ०—३ सहर अजमेर वडी गढ । तेथ राजा बीसलदे चहवाण
राज्य करे । बीसलदे रे वास हरराम चहवाण रहै ।

—देवजी बगडावता री वात

८ पास मे रखने या बसाने की क्रिया ।

उ०—ताहरा राजा हरराम नु कहै । हरराम तु आ घरै वास ।
घरै ले जाह ज्यु थारो दुहुवां री पण रहै ।

—देवजी बगडावता री वात

९ गध, दू ।

उ०—१ अबूझ वालक नै ती जाणै प्रीत री वास आवै ।

—फुलवाडी

उ०—२ जिए मारग केहर बुवी, लागी वास तिणाह । ते खड
ऊभा सूखसी, नह चरसी हिरणाह । —अग्यात

१० सुगध, महक ।

उ०—१ रवि भैरव जीवणी, घणै आणद चहक्की । सग वेळ
सूरमा, वास अगरेळ महक्की । —रा रू

उ०—२ सुहडा स्रव अग चग दिग्गवर' राइ अगण सोभ ए ।
मधुकर गुजार डबरी सामळ, परिमळ वास लोभ ए । —गु रू व.

उ०—३ जावसी देह सोमा न जावसी । वास रह जावसी फूल
वाळी । —भीखजी रतनू

अल्पा, —वासडी, वासडी ।

११ वस्त्र, परिधान, पोशाख ।

[स वास] १२ गर्जना, दहाडना क्रिया ।

१३ चिल्लाहट ।

१४ भूकने की क्रिया ।

१५ गुंजन, गुजार ।

१६ बुलावा, पुकार ।

१७ वस्तु, पदार्थ ।

१८ जागीर ।

रू भे —वास, वास, वासइ, वासई, वासउ, वासि ।

अल्पा, —वासडी, वासडी, वासडली, वासडो ।

वासइ, वासई, वासउ—देखो 'वास' (रू भे)

उ०—१ चितामणि निव्रत्ति करिवा आविउ, कल्पतरु जीणइ
कारण वेस्या तै काई भक्ति प्रकासइ, जीणइ पिरायु मन वासइ ।
—व स.

उ०—२ करहा तो वंसासडउ, मो विण-सारथा काज । अतरि
जउ वासउ हुवउ, मारू न मिळइ अज । —ढो मा.

उ०—३ बाबा म देइस मारुवा, सूधा एवाळाह । कधि कुहाडउ
सिरि घडउ, वासउ मभि थळाह । —ढो. मा

वासक—स पु [स वासक] वस्त्र, कपडा ।

रू भे —वासक ।

वि [स. वासक] १ बसने वाला, निवास करने वाला ।

२ बसाने वाला, आवाद करने वाला ।

[स वासक] ३ दहाडने वाला, गर्जने वाला ।

४ ध्वनि करने वाला ।

५ देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—बद्री वासक व्यास वेदा-त्रण । परम निरत मुक्ति सद
पावण । —ह र

वासडी—देखो 'वाम' (९, १० अल्पा, रू भे)

वासकसजा—स स्त्री [स] वह नायिका जो अपने नायक से मिलने
के लिये सज धज कर तैयार बैठी हो ।

रू भे —वासकसजा ।

वासकेट—स स्त्री [अ वेस्टकोट] विना आस्तीन व विना गले की पट्टी
की एक प्रकार की फतुही, जाकिट या बडी जिसके आगे-पीछे के
कपडे मे प्राय भेद होता है ।

वासग—देखो 'वासुकि' (रू भे)

उ०—१ रतन मे राखडी वेणी वासग जडी, सूभरा वाहडी लहक लोहै । स्वाति नौ विंदली नासिका निरमयी, आज आल्यगन क्रमन कोहै ।
—रुमणी मगळ

उ०—२ हामी-तमासी कर रहधा छै, माथै रा जूडा केसां रा छूटा छै । सू किसा नजर आवै जाणै काळा वासग तिरै छै ।

उ०—३ सरग इद्र सलहियै राव पायाळै वासग । मान लोक नू राव कहा हव ओपम कासग ।
—नैणसी

उ०—४ जैता तणी रीत अजवाळी, खागा मुहै पाडिया खळ । 'जग राजोत' ईढ रा जाता, जडिया वासग सर जुयळ ।
—तेजसी खिडियो

वासग नाग—देखो 'वासुकि'

उ०—सीस वण्णी ए नारेळ, मिरगानैणी जी राज । चोटी तो कहियै वासग नाग, की सी म्हारा राज ।
—लो गी

वासगेस—देखो 'वासुकि' (मह, रू भे)

उ०—लादा पाता वरंडा रूपगा राग नाही लुवै, सनातना दीधा त्याग इरादा कुसीक । वासगेस नाग 'मघा' कंड रा 'कुसाळ' वापौ, लोपे नोज सोभाग अजादा मशा लीक ।
—कविराजा करनीदान

वासडली—देखो 'वास' (६, १०) (अल्पा, रू भे)

उ०—कहा वसियो कान्हा रातडली । अरै तेरै मुख विच भावै मोहै वासडली ।
—मीरा

वासडियो—स पु [स. वास+रा प्र डियो] १ गाव के एक मुहल्ले (वास) का जागीरदार ।

उ०—कोई ठावो गामेती वासडियो तथा घररी घणो रजपूत मरै, मोटियार के काम आवै तो उणारी वायर गाघराणी करै ।
—जखडा मुखडा भाटी री वात

२ देखो 'वास' (अल्पा, रू. भे)

३ देखो 'वासी' (अल्पा, रू भे)

रू भे —वासडियो ।

वासडे—फि वि —निकट, समीप, नजदीक, पास ।

वासडो—देखो 'वास' (अल्पा, रू. भे)

उ०—वैरी वाहै वासडो, सदा खणवकै खाग । हेलो कै दिन पावणी, चूडो भाग सुहाग ।
—वी स

वासण—स.पु [स वासन] १ दुर्गन्धित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

२ सुगन्धित या सुवासित करने की क्रिया, भाव या अवस्था ।

३ निवास करने या बसने की क्रिया ।

४ घर, मकान ।

५ कोई पात्र, टोकरा, पेटी आदि ।

उ०—१ ताहरां वेलदारा ऊडा गिरणै काडिया । देवै ती भूंजाई रा वासण छै । चरवा, द्रेगा, कुंडिया थाळिया ।
—नैणसी

उ०—२ तठा उपरायत भोइया नै हुकम हुवो छै । भुजाई रा वासण तयार कर राती नाडी चालज्यो । सू वामण तयाग कीजी छै
—रा. सा स

उ०—३ थाल कचोला वाटला, वासण चरवी चग । मग गोधु-मादि दिर्यै, प्रथवी रतन सुरग ।
—वि कु

६ वस्त्र, परिधान ।

७ चादर, गिलाफ ।

८ आच्छादन ।

९ ज्ञान ।

रू भे —वासण ।

वासणी, वासवी—१ सुगंध लेना, सूंघना ।

उ०—कडिया सुवै पाणी मे पंस पगा रा नख भासै छै, दूध रै भौळावै विलाव वासीजै छै । ऊपर कूजा, सारमा गहकनै रही छै ।
—रा. सा स

२ देखो 'वासणी, वासवी' (रू. भे)

उ०—गोवर कीडउ किसिउ अमर जिम रण भरणइ, धवलउ वक किसिउ राजहस जिम चालइ, काग किसिउ कोकिला जिम वासइ, मयूर जिम किसिउ डेलि किगाइ ।
—व स.

३ देखो 'वासणी, वासवी' (रू भे)

उ०—देखो किरण एक भवि मुनि आन जी, निंदा कीधी रै तेहनी घणुं घणी रै ली । एतो मीनक नी परि म्लान जी, मछ जिम वासै गध देही तणी रै ली ।
—वि कु.

४ देखो 'वासणी, वासवी' (रू भे)

उ०—ताहरा ईयै वामण एक जाइन फूटरी देविनै टालि लीवी । वामण खोडी हुती तिकै आणिनै घर वासी ।
—देवजी वगडावता री वात

वासणहार हारी (हारी) वासणियो—वि० ।

वासणोडो, वासियोडो, वास्योडो—भू० का० कृ० ।

वासीजणो, वासीजवो—कर्म वा. ।

वासत—स पु [स] गधा ।

वासतपत, वासतपति—स. पु [स वास्तोपति] १ इन्द्र ।

२ वास्तुपति ।

वासते, वासतै—देखो 'वास्तै' (रू भे)

उ०—१ देस सिंध ऊनड दियो, दीधी सिर जगदेव । 'वाका' जस रै वासतै, दाता न कू अदेव ।
—वा दा.

उ०—२ ताहरा सुसरी-साळा कहण लागा-थे वाहिर निकळी नही, घर माहै बैठा रही सो किसै वासतै ।
—नैणसी

७०—३ ताहरा हरराम कहै । माहाराजा मो में दोस कोई छै
नहीं । स्त्रीपरमेस्वरजी जाएँ छै । हु किसै वासते ईयँ नु ले जाऊ ।

—देवजीवगडावता री वात

वासवी, वासदे—स पु [स विश्वे-देव, वैश्वानर] १ यज्ञ का अधिष्ठाता,
अग्नि देव ।

२ अग्नि, आग ।

७०—१ रामजी री माळा रँ वासवी लगाय घण्टी सू छानै
वचायोडी गूजी हाथ में राखती तो म्हूँ ऐ दिन नी देखणा पढता ।

—फुलवाडी

७०—२ खाफरा जइत वाहइ खडग, वासदे जाणि वन्ने विलग ।
ऊतरा सेनि 'जइतउ' अवीह, सीघरँ पईठउ जाणि सीह ।

—रा ज. सी

रू भे —वासते, वासतँ, वासवी, वासदे, वासदेव, वास्ती, वास्ते,
वाहदी, वसदे, वसदेव, वाअदी, वाअदे, वामदेव ।

वासदेव—१ देखो 'वासदे' (रू भे)

७०—साहरा खापरँ नीचँ वासदेव जगायी, खाड रा कावा माहै
घात पाणी घातियो । —राजा भोज अर खापरा चोर री वात
२ देखो 'वासुदेव' (रू भे) (अ. मा , ना मा)

७०—वसदेव पिता हुआ तँके घर वेटी हुआ ती वासदेव स्त्रीरूप
हुआ । —वेलि टी

वासदेवा—देखो 'वासुदेवा' (रू भे.)

वासना—स स्त्री [स] १ अभिलाषा, इच्छा, मनोकामना, चाह ।
(ह ना मा)

२ जन्मान्तर के जमे हुए सस्कारो से उत्पन्न मानसिक दु ख-सुख के
भाव, विचार ।

७०—दाहू देह यतन कर राखिये, मन राख्या नहीं जाइ । उत्तम
मध्यम वासना, भला बुरा सब खाइ । —दादूवाणी

३ भावना, ख्याल, धारणा ।

७०—प्रभणति पुत्र इम मात पिता प्रति, अम्हा वासना वसी
इसी । ग्याति किसी राजविया ग्वाळा, किसी जाति कुळ पाति
किसी । —वेलि.

४ न्याय के अनुसार देहात्मक बुद्धि जन्य मिथ्या सस्कार, विचार ।

७०—विमळ हुवँ मन मिटँ वासना, रहि एकत समरिये राम ।

—ह ना मा

५ कल्पना ।

६ स्मृति ।

७ ज्ञान ।

८ दुर्गा का एक नाम ।

६ अर्क नामक वसु की पत्नी का नाम ।

१० भोग-विलास, विषय ।

११ गघ, वू ।

७०—१ तद राजा सारा सरदारा ने कही—या किसी वासना है ।
जद सारा ही कही, महाराज या ती सागँ हो मछी री वासना
आवं है । —साहुकार री वात

७०—२ तिहा वली सबळी सिंह विकूरवी रे, ते कहै में दीठी इक
सीह रे । माणस नी लेतो वासना रे, आवँ छै इण वार अवीह रँ ।
—वि कु

१२ सुगघ महक ।

७०—१ फूला मर्क वासना, तिल तेल विलोये ।

—कैसीदास गाडण

७०—२ पछे ढोलीजी ने मारवण ढोलीयँ पोढीया छै । तिए सर्म
मारवणीजी रँ वासना कस्तूरी सरीखी वास रही छै । विहु जणा
सुख मे पोढीया छै । —ढो मा.

रू. भे —वासना ।

वासनी—स. स्त्री —घराव, मदिरा ।

वि. स्त्री —निवास करने वाली, वसने वाली ।

७०—देवी कामही लोचना हाम कामा । देवी वासनी मेर माहेस
वामा । —देवि.

वासन्न-वि.—१ सुगधित, सुवासित ।

२ देखो 'वसन' (रू भे.)

७०—वामन्न पीत विचार सरवर । धनुख सायक धार ।

—र. ज. प्र.

वासपुञ्ज, वासपुज, वासपूज्य—देखो 'वासुपूज्य' (रू भे.)

वायमती—स. पु.—सफेद चावलों की एक जाति व इस जाति के
चावल जो ऊँचे दर्जे के व स्वादिष्ट होते हैं ।

७०—छूटा चावल राघण रँ पगा वासमती मगायजँ छै ।

—रा. सा. स

वासर—स पु [सं वासर, वासर] १ दिन, दिवस । (अ मा)

७०—१ हुवँ जेम हरहस सू वासर कमळ विकास । एम घरम
जस व्हे उर्म, दत सू वाकीदास । —वा दा.

७०—२ वासर चित्त न वीसरइ, निसि भरि अवर न कोइ । जड
निद्रा-भरि भोगवूँ, तउ सुपनतरी सोइ —ढो. मा

७०—३ इम वासर ऊगता ढाक वागी दसदेसा । जुध जीता
'अग्रजीत' सुर्ण जवनेस नरेसा —सू प्र.

२ प्रात काल, सबेरा ।

रू. भे.—वासर, वासुर, वासुरी, वासुर, वासूर ।

वासरकर, वासरकिरण—स. पु. [स वासर + कर, वासर + किरण]
सूर्य, भानु ।

रू. भे.—वासरकर, वासरकिरण ।

वासरमणि—स. पु. [स] सूर्य, सूरज ।

वासव—स पु. [स वासव] १ इन्द्र का एक नाम, इन्द्र ।

(ना डि को, ना मा, ह ना मा,)

उ०—१ व्रज राखियो विगोयो वासव । वडो अवर कृण विसन
वड । —ह ना मा.

उ०—२ दीर्ज जोड किसी न्रप दीलत, राज विभो अवरेख । सात
सुखा भुगतं दिन साजा, वासव हूत विशेष । —र. रू.

उ०—३ इण वें विधि वासव विध विध भजे, इणारी महिमा कहै
महेस । —गी रा

२ महादेव, शिव । (ना डि. को)

वि. [स वसव]—इन्द्र, का, इन्द्र सम्बन्धी ।

रू. भे.—वासव, वासव, वासिव ।

वासवाणो—स पु. [स वस्] निवास स्थान, निवास ।

उ०—मेडती गाम सोह पडायो, रावळा घरा रा खेत किया सहेर
नाडी दोराणो कन्है वासवाणो कीयो थो । कहै छै कइक ढुढा
हुवा था । —नैणसी

वासवि, वासवी—स स्त्री [स वासवी] उपरिचर वसु की कन्या सत्यवती
(मत्स्यगथा), व्यास की माता । (डि. को)

स. पु.—१ अर्जुन । (डि को)

२ इन्द्र पुत्र जयन्त ।

रू. भे.—वासवी ।

वासवीदिसा—स पु. [स.] इन्द्र की दिशा, पूर्व की दिशा ।

रू. भे.—वासवीदिसा ।

वाससुदम—स पु.—चदन । (ना मा)

वाससुमेर, वाससुमेर—वि [स. वाम + सुमेर] सुमेरु पर्वत पर निवास
करने वाला ।

स. पु.—देवता ।

रू. भे.—वाससुमेर, वाससुमेर ।

वासावळी—स स्त्री [स. वास + अवळी] १ सुगंध, महक ।

उ०—१ अवर मोरीजै छै । कूपळा फूटीजै छै । वणाराइ मंजरी
छै । वासावळी फूटि रही छै । केसू फूलि रहिया छै । रितिराज
प्रगटीओ छै । —रा सा सा

उ०—२ साहरी आवळी घडा सर सावळा, भौक पड कावळी रोप
भंडा । अर गजां खून काटे बिना आवळी, खुले वासावळी तेण
खडा ।

—राव ऊदाजी रो गीत

२ सुगंधित पदार्थों का समूह ।

रू. भे.—वासावळी, वासवाळी, वासावळी, वासावळी, वासावळी

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे)

उ०—उठियो राठ भाटि लागे अंवरि, दोमजि वासिग खाड डहै ।

जुध सूतो कुभ करन्न जगायो, गोइवदास वाणस ग्रहै ।

—गु. रू. व.

वासिदो—देखो 'वासिदो' (रू. भे.)

उ०—धूल अर रूडिया रो रजी सूं भखभूरविह्योडा आ टपरिया
रा वासिदा इण घरती माथे कोड ज्यूं रगवगे । —फुलवाडी

वासि—स पु. [स वासि] १ अग्नि देव ।

[स. वासि] २ वसूला ।

३ कुठार ।

४ छैनी ।

५ देखो 'वास' (रू. भे)

उ०—१ साई एहा भीचडा, मोलि महूगे वासि । ज्या आछन्ना दूरि
भो, दूरि थका भो पासि । —हा. भा.

उ०—२ स्त्रीकस्णजी जैसे कोई आणि वघाई दे छै । तइसें सोघा
के वासि, अर नूपुर के सबद, आणि वघाई दीन्ही । —वेलि टी.

वासिग—देखो 'वासुकि' (रू. भे)

उ०—१ सिरि वेणी सिरली असी, जाणइ वासिग नाग । वीहता
माटइ वभणइ, कीधु ताहरु त्याग । —मा. का प्र.

उ०—२ नान्हइ किसनइ नाथियो, वासिग नाग वडेरी रे । नास
करइ रवि नान्हडी, अघकार बहुतेरी रे । —प. च. चौ

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति नख सिख सूघो
सिणगार वखांणीजै छै । वासिगा सारीखी पहपवेण ऊपरि
सीसफूल मोतिआरी वणाव वणिने रहिओ छै । —रा सा. स.

वासिट्ट—देखो 'वासिस्ट' (रू. भे)

वासिट्ट—स. पु.—शिव, महादेव । (डि ना. मा)

वासियोडी—भू का कृ —१ सुगन्ध लिया हुआ, सूघा हुआ ।

२ देगो 'वासियोडी' (रू. भे)

३ देखो 'वासियोडी' (रू. भे)

४ देखो 'वासियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. वासियोडी)

वासियो—वि —निवास करने वाला, निवासी ।

उ०—भुज लगा ऊडे अण पोहोर भाराथिया, वासिया सुरग
अर कीया गळ वाथिया । सूर 'सुरताण' रग घणा समराथिया, सुज
घणा रग 'सुरताण' रा साथीया । —ठाकुर सुरताण सिंह रो गीत

वासिब—देखो 'वासव' (रू. भे)

उ०—वासिब घर मजलेस, नेस लखि ईस परवखी । 'अभै' जिसी नर अवर, राज घर कुंवर निरवखी । —रा रू.

वासिस्टी, वासिष्ठ—स. स्त्री [स वाशिष्ठी] राजस्थान की वनास नदी का नाम ।

उ०—पच अयुत लय सग दळ, होय किलम हमगीर । कियो मुकाम उलधि जळ, खळ वासिस्टी तीर । —ला रा.

वि.—१ वसिष्ठ का, वसिष्ठ सम्बन्धी ।

२ वसिष्ठ का वशज ।

रू. भे —वासिस्टी, वासिष्ठी, वासिष्ट ।

वासीवौ—देखो 'वासिदौ' (रू. भे)

वासी-वि. [सं वासिन्] १ निवास करने वाला, रहने वाला, निवासी ।

उ०—१ नाम तुमारु स्यु अछै, किम छोड्या मा वाप । कियण नगरी कियण देस ना, वासी छौ महाराज । —वि. कु.

उ०—२ अळगी-अळगी भाय रा वासी आप-आप री बोली में दाछट बोले अर सुणणिया दाछट समझै । —फुलवाड़ी

३ मुहल्ले का, मुहल्ले सम्बन्धी ।

सं पु.—१ वह व्यक्ति जिसका किसी गाव या कस्बे के केवल एक मुहल्ले पर ही जागीरी सम्बन्धी अधिकार हो ।

२ देखो 'वासी' (रू. भे)

अल्पा —वासिद्वी ।

वासीजवारी—स. स्त्री —विवाह के समय दूल्हे को सुसराल की तरफ से दी जाने वाली प्रथम भेंट । (चारण, राजपूत)

रू. भे —वासीजवारी ।

वासीवड—स. पु. [देशज] किसी सम्बन्धी या कुटुम्बी के मृत्यु के बाहरवे दिन प्रात काल स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला रुदन ।

वासु—सं पु. [स] १ जीव, आत्मा ।

२ विश्वात्मा, परमात्मा ।

३ विष्णु भगवान का नामान्तर ।

वासुकि वासुकी, वासुगि—स पु [स वासुकि] १ कश्यप एवं कद्रू के नाग पुत्रों में से एक जो आठ नाग राजाओं में से एक गिना जाता है ।

उ०—काम देव कटारउ बाधइ, वासुगि खाट पहरउ दिइ ।

—व स.

वि. वि —इसकी पत्नी का नाम शतशीर्षा था । देवों व असुरों के समुद्र मन्थन के समय यह मथनदण्ड की रस्ती बना था । यह

शिव के गले पर निवास करता है । त्रिपुरदाह के समय यह शिव के घनुष की प्रत्यचा व रथ का कूबर बना था । इसके भतीजे का नाम आस्तीक था जो एक ऋषि था ।

२ शेष नाग, जो कश्यप एवं कद्रू के पुत्रों में से एक था । यह आठ नागराजाओं में से एक माना जाता है ।

वि. वि.—इसे भगवान् का अशावतार माना जाता है एवं उसके लिए शय्यारूप होकर उसे धारण करता है । इसका निवास स्थान पाताल लोक है । यह समस्त पृथ्वी को अपने शिर पर धारण करता है । गंगा के उपासना करने पर इसने उसे ज्योतिष शास्त्र एवं खगोल शास्त्र का ज्ञान दिया था । श्रीकृष्ण जब वसुदेव द्वारा गोकुल ले जाये जा रहे थे उस समय इसने उसकी रक्षा की थी ।

३ एक प्राचीन देवता ।

४ सर्प, साप ।

उ०—१ आवाहन कर वासुकि हि, विक्रम कही सुणाय । ब्राह्मण नू अरु हाल ही, निश्चय देहू जिवाय । —सिंघासण वत्तीसी

उ०—२ कुब्जा नूं करि रूप युत्त, मनसा मम इमि याय । इतरी सुण कर वासुकी, विधा दई बताय । —सिंघासण वत्तीसी

रू. भे —वासक, वासग, वासिग, वासुकि, वासुकी, वासुग, वासंग, वासग, वासिग, वासिग ।

वासुदे, वासुदेव—स पु [सं. वासुदेव] १ श्रीकृष्ण ।

उ०—१ वासुदेव पिता सुत थिया वासुदे, प्रदुमन सुत पित जगतपति । —वेळि.

उ०—२ महासग्राम राम रावण तरणउ, लवण सागर तरणु, लावण्य तउ वासुदेव तरणउ, आचारच तप सनत्कुमार तरणउ... । —व स.

उ०—३ भरतेस्वर वाहु बलि आपमाहि सग्राम करइ, वासुदेव बलदेव द्वारिकानउ दाघ ऊवेखइ । —व. स.

२ परमेश्वर, ईश्वर । (ह ना मा)

उ०—रामकिसन हर नारियण, सचितानंद गोविंद । वासुदेव बीठळ विसन, नरहर गोकुळचद । —ह. र.

३ वसुदेव के वशज ।

रू. भे —वासदेव, वासुदे, वासुदेव, वासदेव ।

वासुदेवक—स पु —श्री कृष्ण का उपासक ।

वासुदेवा—स. पु —भाटों की एक शाखा ।

रू. भे —वासदेवा, वासुदेवा, वासदेवा ।

वासुदेवौ—स पु —भाटों की वासुदेवा शाखा का व्यक्ति ।

वि. वि —ये जाडों की पिछली रात में गीला फण्डा सिर पर ओढ़ कर बस्ती में फेरी लगाते हैं और याचक वृत्ति करते हैं ।

वासुपुज्य, वासुपूज्य-स. पु. [स वासुपूज्य] जैनियो के बारहवें तीर्थंकर का नाम। (जैन)

रू. भे.—वासपुज्य, वासपुज, वासपूज्य।

वासुभद्र-स. पु. [स] श्रीकृष्णचंद्र।

वासुर—देखो 'वासर' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—१ कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर। सुबुध वधे सत सग, ग्यान गुर वाणि उजागर। —रा रू

उ०—२ त्हारो सुजस अमर, 'करणावत' वासुर जग बहु हुवै वितित। —द दा.

उ०—३ सुभ वासुर सुवम जोग वेळा, तिल्लक्क निलाट ताण ए। सोलह मुखि कळा चद सपूरण, द्वादस ऊगति भाण ए।

—गु रू व

वासुरा-स स्त्री [स] १ पृथ्वी, धरती।

२ रात्रि, रात।

३ स्त्री, नारी।

४ हथिनी।

रू. भे.—वासुरा।

वासू-स. स्त्री. [स] १ जवान लडकी।

२ कुंवारी लडकी।

वासूर—देखो 'वासर' (रू भे)

वासूळी—देखो 'वसूली' (रू. भे)

उ०—ऊछळ खळ तज तुरग एक। वासूळ पूळा स विसेख।

—रा रू.

वासं—देखो 'वासं' (रू भे)

उ०—१ तारा कूपी जोधपुर गयो। नै इण जावता साराई रिण-मलौत गया। अरु वासं घोडा सात सौ रायमल खनै रया।

—द दा.

उ०—२ तद इहा कही म्हे वीरभाण कुवर रा चाकर छा। सु म्हान वासं राख हतो सु हमें म्हे कवर री खबर करण जावा छा।

—चीबोली

वासो-स पु. [स वास] १ रहने क्रिया या भाव, निवास।

उ०—१ सरस्वती री वासो सव्दा मे। —फुलवाडी

उ०—२ गया भ्रम्म अकरम्म, गया जमहदा पासा। गया मुगति दोइ पक्ख, गया ग्रभ हंदा वासा। —जगी खिडियो

२ निवासस्थान।

उ०—भगा पीरस माण भग्गी, अड सगर उमराव अग्गी। ताप सुणि अग जेम तासा, वसं खळ गिर-किंगर वासा। —सू प्र

३ विश्राम।

उ०—१ एक पढतळ नूं वळद। तिकं रजपूत गाव मोतीसर भाय वासो लियो। रात रह्यो। —नैणसी

उ०—२ विदेसीवा रे आयो छै रे चौमासो, मारग री प्यारी खेद उत्तारो, म्हारं डेरं जे वासो। —रसीलैराजरो गीत

४ विश्रामस्थल, डेरा।

५ गाव।

उ०—प्रिव मालवणी परहरं, हाल्यच पुंगळ देस। डोला म्हा विच मोकळा, वासा घणा वसेस। —डो मा

६ पडाव।

७ एक शिकारी पक्षी।

उ०—हमं तीतरा ऊपर वाज छूटं छै। करवानका ऊपरं जुररा छूटं छै। तिलोरा ऊपरा वासा छूटं छै। —रा सा स.

रू. भे.—वासो।

वास्तध-वि [स.] १ असली, मूल, सही, सच्चा।

२ प्राकृतिक।

३ सारयुक्त, तथ्य युक्त।

४ निश्चित, निर्दिष्ट।

स. पु.—निश्चित की हुई कोई वस्तु।

वास्तवा-स. स्त्री [स] उपा काल, प्रातः काल।

वास्तविक-वि. [स] १ सत्य, यथार्थ, प्राकृतिक, असली।

२ ठीक, उचित।

रू. भे.—वास्तविक।

वास्तविकता-स स्त्री [स वास्तविक+ता प्र] १ सच्चाई, असलियत।

२ श्रौचित्य।

वास्तुपूजा-स स्त्री [स.] नवीन घर में गृह प्रवेश के आरंभ में की जाने वाली वास्तु-पुरुष की पूजा।

वास्तुविद्या-स स्त्री. [स] भवन-निर्माणकला, अभियान्त्रिक, इंजी-नियरिंग।

२ चौसठ कलाओं में से एक। (व. स.)

३ बहत्तर कलाओं में से एक। (व. स.)

वास्तुसांति-स स्त्री [स. वास्तु-शान्ति] नवीन-गृह-प्रवेश के समय किये जाने वाले शान्ति कर्म आदि।

वास्तुशास्त्र-स पु [स वास्तु शास्त्र] वह शास्त्र या ग्रन्थ जिसमें भवन-निर्माण सम्बन्धी सारी बातों की उल्लेख होता है।

वास्तुसिद्धि-स. स्त्री [स.] स्त्रियों का चौसठ कलाओं में से एक।

(व स)

वास्ते, वास्तै-अव्य. [अ] १ निमित्त, लिये।

उ०—१ ताहरा नरै कह्यो—माजी । हू ईयै नू गुदरू छूँ थाहरै
वास्तै छै ईयै रै घरं । —नैरासी

उ०—२ ताहरां फरवास बढायो ढोल रै वास्तै । ताहरा पुकार
गई । राज ! फरवास वीरमजी रै लोक वाढियो । तोई जोईया गई
कीवी । —नैरासी

उ०—३ दीवारणजी कह्यो—घोडी तो फगत म्हारै वास्तै ई
चाहीजे । दूजोडा तो सगळा लुक्योडा रैबैला । कठै ई कुचमादी
न्हाटग्यो तो म्हारै मन री मन में रै जावैला । यूँ आ वात घणी
चीडै किरा वास्तै करै । —फुलवाडी

२ कारण से, प्रयोजन से ।

उ०—ताहरा गोगादेजी मगरा में पराणी घाव दीठा, तद कह्यो श्री
कासू छै । ताहरा उठै रजपूत बहुत दिलगीर हुवौ । ताहरा गोगा-
देजी कह्यो—रे किसै वास्तै ? ताहरा राजपूत सारी हकीकत कही ।
—नैरासी

उ०—२ कही रे तू अठै क्यो ऐकली रहै छै । सहर तो कोई
नही । जद सूथार कही जो अठै एक वस्तु हू वणाऊ छु तैरे वास्तै
रहै छु । —चीवोली

रू भे —वासते, वासतै, बास्ते, वास्तै, वासते, वासतै ।

वास्तो—स पु [अ वास्त] १ सम्बन्ध, लगाव ।

२ प्रयोजन, मतलब ।

उ०—राजाजी उणारा हाथ सू पानो लिय इण भात जोर जोर सू
वाचण लागा, जाणै नाई नै वाच सुणावै, वारा सू उणारो की
वास्तो नी । —फुलवाडी

३ माध्यम, जरीया ।

४ कारण ।

उ०—मोटा रूप सू जठा ताई सुणनै समझण री सवाल है, आखा
प्रात में बातचीत सारू अटकण री कोई वास्तो कोनी ।
—फुलवाडी

५ शक्ति, बल ।

६ पुरुषार्थ ।

रू भे —वासती, वासत्यो, वासत्ती, वासत्यो वास्तो ।

वासप—स स्त्री [स वाष्प] १ आसू ।

२ भाप ।

३ कोहरा ।

४ लोहा ।

रू भे.—वासप ।

वाह—सं स्त्री [स] १ शस्त्र प्रहार, चोट ।

उ०—१ वंणावत 'पातल' वीजळ वाह, गोडै गज बाज खळा
गजगाह । —सू प्र.

उ०—२ तठै माराज फुरमायो सत्रसालजी नू कै कही तो
सावतराय पाळा मे निजीक है सू इणरी छाती मे साग री वाह
करूँ । —द दा

२ आक्रमण, हमला ।

उ०—धू मन्न घडै । सुमाण खडै । खडि-वाह किय । मेल्हाण
लिय । —गु. रू. व

३ युद्ध ।

उ०—तो मोनै घरती री आस छै जो वाह करसी, घरती घेरसी ।
—ठा. जैतसी री वारता

४ प्रहार की सीमा, परिधि, क्षेत्र ।

५ शस्त्र, आयुध ।

६ धनुष ।

उ०—ऊससे घणै ऊछाह, चाप बाण घरै चाह । वाम हाथ लीघ
वाह, जीमणै कसीस जाह । —र रू

७ गति, चाल ।

उ०—मद लख वाह सुपरण तजें माग में, चरण ऊत्राहणै धरण
चलै । —र. ज. प्र

८ वाहन, सवारी । (अ मा)

उ०—घोडा हस्तो तरणी नही वाह, लोक नइ घरि न वीवाहना
गाह । —तळदबदती रास

९ घोडा, अश्व । (अ मा, डि ना मा)

१० बैल ।

११ बोम्बा लादने वाला पशु ।

१२ नदी । (अ मा)

१३ मदद ।

१४ वायु, हवा ।

१५ सुगंध, महक ।

उ०—घणी वासावली री वाह लागी नं रहिजी छै । भीर वाट
वाट नै पाणी उछाळीजे छै । —रा. सा. स.

१६ बद्ध, दुर्गन्ध ।

१७ खेत मे हल चलाने की अवस्था, दशा, हल चलाने का मौसम ।

उ०—कहीयो जु देखा अजं लग सत्रा री साथ सावती ऊमी छै ।
वृठ ऊपरि वाह देणरी इहै वैळा छै । —वैलि टी.

अव्य —१ घन्य, सावास ।

उ०—१ जुर्व जुष 'नाहर' री 'जगसाह' । उढावत लोह कहे रवि
वाह । —सू प्र.

उ०—२ 'वीकी' 'गाजीसाह' तण, वाह अडोळ कमघ । फट्टा साह
समद नू, दियण अघट्टा वघ । —रा रू

२ आश्चर्य या घृणा सूचक शब्द ।

३ आनन्द या हर्ष सूचक शब्द ।

वि—सूच, अत्यन्त ।

उ०—सद माल सूर 'दूदे' सगाह । विजपाल दळा जूमोह वाह ।

—रा रू.

५ बस ।

रू भे.—वाह, वह वा', वाहा ।

वाहक-वि. [स] १ लेजाने वाला, ढोने वाला ।

२ वहन करने वाला ।

स पु—१ कुली, हमाल ।

२ गाडीवान ।

३ घुड सवार ।

४ एक विपला कीडा ।

वाहण—देखो 'वाहन' (रू भे) (डि ना मा)

उ०—१ रस वाग कुसम भ्रम छाह रूप । अवतार अरक वाहण अनूप ।

—रा रू

उ०—२ कहै—आडा वाहण कनारै धोडा छै । पछै इण भात करनै कटक आयी ।

—नैणसी

उ०—३ तारा-बळ चद्र-बळ, घडी-अम्रत साधारण । चतुर पच सह बळी, नाम वाहण सुभ वाहण ।

—गु रू व

उ०—४ तद गागैजी वा जैतसी जी जोसी न बुलायो, ने कयो 'सवारै जोगणी काई वाहण छै ।

—द दा.

उ०—५ वाहण जेहन पाचसै, वलीय पाचसह हाट । घर गोकुल पिए पाचसै तितला सकट सुघाट ।

—वि कु

वाहणगरुड—स पु [स गरुड-वाहन] विष्णु ।

वाहणब्रह्म—देखो 'वाहनब्रह्म' (रू भे) (अ मा)

वाहणसभु—स पु.—१ नन्दी-वैल ।

२ वृषभ, वैल । (डि ना मा)

वाहणसिखी—स पु.—स्वामीकातिकेय का एक नाम । (अ मा)

वाहण, वाहणी—स स्त्री—१ खेत की भूमि को बार-बार जोत कर बीज बोनेयोग्य बनाने की क्रिया या ढग ।

उ०—काकड प्रबळ वाहणी काढै, महपत सबळ घणा दळ माण ।

सत्र हर ढगळ करे सह सूघा, दळ चावर फेरे दीवाण" ।

—लालसिंह राठीड री गीत

२ देखो 'वाहन'

उ०—१ तारू तरिवा सावधान हूया, हीघाहीण अण वूडइ वाहणि मूया ।

—व स

उ०—२ मकरध्वज वाहणि चढघी अहिभकर, उत्तर वाड वाए अडर । कमळ बालि विरहिणी वदन किय, अय पाळि सजोणि उर ।

—वेलि

३ देखो 'वाहनी' (रू. भे) (ह. ना. मा) (अ मा)

रू भे—वाहणी ।

वाहणी—देखो 'वाहन' (अल्पा, (रू भे.)

उ०—अरधगी हेम-पुत्री सरपी कठेरिण, वाहणी साडी । सिगानेत भाळ चदी, तस्मै रुद्राय नमी ।

—गु रू व

वाहणी, वाहणी—देखो 'वावणी, वावणी' (रू भे) (उ र)

उ०—१ सु ओळ रुखा ऊभा हुता, तिकं केई भाला वाही सरिया कं न वाही सकिया, नै आय ऐ भेळा हुवा ।

—नैणसी

उ०—२ वाहि युहाय घणी वीजुजळ । तडळ खगा करं व्हां तडळ ।

—सू. प्र

उ०—३ रिएण आर्ग राजान रै, गग वाहतो विकट्ट । कवि किमनी लड केविया, अड पडियो खग अट्ट ।

—रा रू

उ०—४ मो गळि घालर घूधरा, मो मुखि वाहुड लज्ज । हू ज भलेरड करहलड, मूध मिळाळ अज्ज ।

—ढो. मा.

उ०—५ वलि ऊखर घर ऊगड, जड वीज फड वाहै रे । अकुर माय न नीपजड, नहु एम सराहै रे ।

—वि कु

उ०—६ राउत्ता गात वगळ रगत, करमर वाहि किया करवत्त । अणी अशरक हुला ऊभेल, सनाह सु सुतरा तोडं सेल ।

—गु रू व

वाहणहार हारी (हारी), वाहणियो—वि० ।

वाहिओडो, वाहियोडो, वाह्योडो—भू० का० कृ० ।

वाहीजणी, वाहीजणी—अमं वा० ।

वाहन—स पु [स] १ वहन करने या ढोने की क्रिया या भाव ।

२ वह पशु, प्राणी या साधन जिस पर बैठ कर कही आया जाया जासकता हो । सवारी ।

३ घोडा ।

४ हाथी ।

५ रथ ।

६ नाव, जहाज ।

७ सवार ।

८ लकड़ वगधा ।

६ उद्योग, प्रयत्न ।

१० सेना ।

११ नदी ।

रु भे—वहाण, वाहण, वाहिए, वाहण, वाहन, वाहेण, वाहण, वाहिए, वाहणी, वाहिए ।

अल्पा—वाहणी ।

वाहनव्रतम—स पु [स वाहन+वृषभ] शिव, महादेव ।

(ना मा)

रु भे—वाहणव्रतम ।

वाहनी—स स्त्री. [स. वाहिनी] १ सेना, फौज । (अ मा)

२ प्राचीन भारतीय सेना का एक दल जिसमें ८१ हाथी, ८१ रथ, २४३ घुड़मवार, तथा ४०५ पैदल होते थे ।

३ आधुनिक सेना का एक विशिष्ट विभाग, डिवीजन ।

वि.—चलाने वाली ।

उ०—देवी जम्मणी मत्स्य आहूति ज्वाला, देवी वाहनी मत्र लीला विसाला । —देवि

रु. भे.—बाअणी, वाहणी, वाहनी वाहणी, वाहिनी, वहिणी, वहिनी, वाअणी, वाहण, वाहणी, वाहिए, वाहिए ।

वाहपत्री—स स्त्री. [स पत्रवाह] सर, वाण, तीर ।

वाहर—देखो 'वाहर' (रु. भे.)

उ०—१ सिया वाहर समर दसाणण साभा, ब्रवी उछाहर दीन निवाजा । —र ज प्र

उ०—२ तद कही राज । घोडी थानू दीवी छै, जो म्हारै काम पढै तद म्हारी वाहर करज्यौ । —नैणसी

उ०—३ वाहर काज खळा वळवाणा, रँहै जीण पमग जवनाणा । —रा रु

वाहरली—देखो 'वारली' (रु. भे.)

(स्त्री वाहरली)

वाहरनी—देखो 'वारनी' (रु. भे.)

वाहरि—देखो 'वाहर' (रु. भे.)

उ०—तव ये भ्रहा हीं मे थोडी थोडी हसि । अर एक एक होय ग्रह थें स जु वाहरि गई । —वेलि टी

वाहरु—देखो 'वाहुरु' (रु. भे.)

उ०—आय पातिर्यं बैठा । आरोगता हुता । आघाडक जीमिया हुता नै वाहरु आया । —नैणसी

वाहरुओ—देखो 'वाहुरु' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—नह सादूळी नीमजै, जुष जिण तिण सृ जाय । श्री वाहरुओ आफळ, कुंजर हलका काय । —वा. दा.

वाहुरु—देखो 'वाहुरु' (रु. भे.)

उ०—१ धीत रा कीत रा रिखी सुकठ मीत रा घना । वाहुरु सीत रा राम अदीत रा वस । —र. ज प्र.

उ०—२ वालियो वर-वैरा तणै वाहुरु, 'अमर' मुहरै हुयै सर रग आयी । —अमरसिंह राठीड गजसिंहोत री वात

उ०—३ तद इण कही 'कुवरसी साखला री रजपूत छू, चेतो कर मारजी । म्हारै वाहुरु सबळा छै । ऐ तो आघा हुवा वहे कै नै गिणै ? सो मार हेठो नाखियो । —कुवरसी साखला री वारता

वाहुरु—स पु—१ घृत परोसने का एक टोटीदार बर्तन ।

२ बँल के पिछले पैरों में होने वाली बालो की पक्ति या कतार ।

३ देखो 'वहल' (रु. भे.) (डि ना मा.)

वाहुरु—१ देखो 'वाली' (रु. भे.)

उ०—जान्हवी यमुना बेहू मिलीआ, माइ वैटी तेह । आपणउं वाहुरुं देखी करीनइ, अधिक ऊपजइ नेह । —नळ दवदंती रास

२ देखो 'वाली' (रु. भे.)

वाहुरुकडू, वाहुरुकडो—देखो 'वाली' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—वाहुरुकडू वारु गणो, हेलि । न घरीइ हेजि । सेज-थिकी नर नीसरिउ, वली न लीजइ सेजि । —मा का प्र

वाहुरु, वाहुरु—देखो 'वाली' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—१ उत्तर आज स उत्तरउ, पडसी वाहुरुयांह । उर शोलै प्री राखियइ, मूवा काहुरुयांह । —ढो. मा.

उ०—२ वाणिया नाळा माग वहे दुत वाहुरु । मेह ओसर में वहे, नाळा अर नाहुरु । —लो. गी

वाहुरुकजा—देखो 'वाहुरुक' (रु. भे.) (डि ना. मा.)

वाहुरु, वाहुरु—देखो 'वाली' (रु. भे.)

वाहुरु, वाहुरु—देखो 'वाली' (रु. भे.)

उ०—भमरी भुडा व्रक्षनी, मनि मदार न जाणिए । एक ज वाहुरु ऊलखइ, जिम काणी केकाणिए । —मा. का. प्र.

वाहुरु—देखो 'वाली' (रु. भे.)

उ०—१ आगं पोकरण रा वाहुरु ऊपर रँहता । उरजनोत जोघपुर चाकर । —नैणसी

उ०—२ जठ साहिव तूं नावियउ, मेहा पहलइ पूर । विचइ वहेसी वाहुरु, दूर स दूरे दूर । —ढो. मा.

उ०—३ अति रोस करि जँसउ उलटयो ज्यो वरसाला कठ वाहुरु ऊफणइ । —वेलि टी.

बाहलो, बाहन्यो—१ देखो 'बाळो' (रु भे)

उ०—कलकलती कल्लोलि उच्छलती लहरि करी सूसती, बाहळो फूफूती, जिसे क्रतात तयो मूरत्ति तिसी रोद्र वेठ तट इ आवही नदी। —व स

२ देखो 'वाली' (रु भे)

उ०—१ बाहला पइ विसहर भलु, डसी करि वली अत। प्रेम पन्नगइ जै डस्या, तै किम सुख पामति ? —मा का प्र

उ०—२ सुल पाणि सकर तिहा, जात्र मिली जोमेसि, फालि देई हू फणगटइ, बाहला। बाडि पाडेसि। —मा का. प्र.

बाहलो—देखो 'वाली' (रु भे)

'वा' वा—देखो 'बाहवाह' (रु भे)

बाह वाह—वि अनु [फा] धन्य धन्य साधु-साधु।

उ०—१ अर सोलखी भागुराज प्रतिहार तेजसिह री मस्तक उढाय महाकर रा मुल सूं बाह-बाह पढायी। —व भा

उ०—२ एसी अनेक बात कही। और ही कवेसर बोल बाह-बाह कही। —रा रु.

उ०—३ एक बात ऊबरा, सुण रीभियो नरेसुर। बाह-बाह अखिखी, तोल खग लग अवतर। —सू. प्र

बाह-बाही—स. स्त्री. [फा.] १ प्रधासा, धन्यवाद, साधुवाद।

२ किसी कार्य के प्रति प्रगट किया जाने वाला आश्चर्य।

रु. भे.—बाहवाही।

बाहा—देखो 'बाह' (रु. भे)

बाहाऊ—देखो 'वघाऊ' (रु भे)

उ०—द्वारकादास, एका हमीर बळूनु मनावण सारा भाटी न राव सूरसिध आया था। उठे बाहाऊ आयी तठे राव सूरसिध बळू भा। —नैणसी

बाहावर—देखो 'बाहावर' (रु भे.)

उ०—तोई भगडे री आसग हुई नही। दलपत बडी जर्ममरद बाहावर देख्यो। —द दा

बाहार—१ देखो 'वार' (रु भे)

उ०—घर १ राजा सी गजसिहजी री बाहर माहै नवी हुवो छे, हुडी छे। —नैणसी

२ देखो 'बाहर' (रु. भे)

बाहाळो—देखो 'बाळो' (रु भे)

बाहालो—देखो 'वाली' (रु. भे)

उ०—१ हा माहा नाथजी, काहा गया जी, मुंहि एकली मेहेली वंन रे वज्रमि कठिण ते किम थयू रे, बाहाला तम्हारू मन रे। —नळाख्यान

उ०—२ वेस्या किण बाहाली करी, भूमडलि ? भूदेव। कोडि कोटि-धन्य क्षय गया, करता वेस्या-सेव। —मा का प्र.
(स्त्री. बाहाली)

बाहिण—देखो 'बाहन' (रु. भे)

बाहिणि, बाहिणी—देखो 'बाहनी' (रु भे)

बाहित्यदेस—देखो 'बाहित्यदेस' (रु भे)

बाहियात-वि. [फा] व्यर्थ, निरर्थक।

बाहियोडी—देखो 'बावियोडी' (रु भे)

(स्त्री बाहियोडी)

बाहिर—देखो 'बाहर' (रु. भे)

उ०—पाचा दिना पछे महला महां दाडी समराइ अर बाहिर पधारिया। —द वि

बाहिलियो—देखो 'वाली' (अत्या, रु भे)

बाही—१ देखो 'वही' (रु भे)

उ०—केतीवार जेठी जोर आगि पेच कीना, पूरे चापि जेठि नै भ्रमाया नासि दीना। बाही स्याति नीसरिगा जेठी का प्राण। पूरा मल्ल वादिस्याह कीना फुरमाण। —शि व

२ देखो 'व्याधि' (रु. भे) (जैन)

बाहु—देखो 'बाहु' (रु. भे)

बाहुडणी, बाहुडबो—देखो 'बावडणी, बावडबो' (रु भे.)

उ०—१ बाहुडि गोरी। तु धरि जाह, हु लेइ आवळ धारउ हो नाह। सोना ती बाध्यो गांठडो, दीधी सोपारी दीय कर च्यार। —वी दे

उ०—बोलिन सककू वीहतउ, हेक ज बात हुई। राजि अपूठा बाहुडउ, माळवणी भूई। —दो मा

बाहुडणहार, हारी (हारी), बाहुडणियो—वि०।

बाहुडिओडो, बाहुडियोडो, बाहुडचोडो—भू० का० क०।

बाहुडिजणी, बाहुडोजबो—भाव वा०।

बाहुडियोडो—देखो 'बावडियोडो' (रु भे)

(स्त्री. बाहुडियोडो)

बाहुसु, बाहुलो—१ देखो 'बाळो' (रु भे)

उ०—१ वाट-वचइ छइ बाहुसु, तिहां जाइ नर नारि। नाव नरेसर मेहलि करि, परि परि पार ऊनारि। —मा कां प्र

उ०—१ मारगि मोटा हूगरा, नद बाहुला विसेखि। जलचर खेचर भूमिचर, वसुधा रुधी रुखि। —मा. का प्र.

२ देखो 'बाली' (रु भे)

विचित्र्यो—देखो 'वीछियौ' (रु भे)

विछियौ—देखो 'विछियौ' (रु भे)

विछुडी—देखो 'विच्छुडी' (रु भे)

विछ्या—देखो 'वाछ्या' (रु भे)

उ०—कूकर कै मन काम की, रत सिर विछ्या होय । कामी नर
कै काम की, हरीया निसदिन होय । —अनुभववाणी

विजणौ, विजवौ—देखो 'बीजणौ, बीजवौ' (रु भे)

उ०—हरि ने हलधर दोनू गज चढ्या, साथे लियौ गज कुमार ।
छत्र ने चामर दोनू विजै रह्या, वाजै बाजा रा भणकार ।

—जयवाणी

विजणहार, हारौ (हारी), विजणियो—वि० ।

विजणोडौ, विजियोडौ, विज्योडौ—भू० का० कृ० ।

विजौजणौ, विजौजवौ—कर्म वा० ।

विजन—देखो 'व्यजन' (रु भे)

उ०—१ भूप वधाघी मोतिया, कीघा निजर तुरग । भोजन भूजाई
विवध, विजन पाक सुरग । —रा रु

उ०—२ निज मजलम रस सजणा, विजन पाक ऋग विहाण ।
हित करणै जसाह रै, वरणै को कवि वाण । —रा रु.

उ०—३ जनकपुरी में जीमिया है, विघ विघ विजन कौर । भला
सरस भोजन हुवा है, पण श्री आनद और । —गी. रा

विजाहरि—देखो 'विजयहरी' (रु भे)

उ०—गढ गिरुअ अनइ विममठ, जेह नउ पायउ पातालि पयठठ,
महागज तणा जिसा पाग तिसा कोसीसा, गरुई पोलि निविड कमाड
लोहभोगल, विजाहरी तणी पढति, यत्र तणी स्त्रैण, डीकुली तणी
परपरा. .। —व स

विजियोडौ—देखो 'बीजियोडौ' (रु भे)

(स्त्री विजियोडौ)

विजुल—सीत—स स्त्री. [स वङ्गुल-शीत] १ कुज, कुजगलि ।

(अ मा)

२ अशोक वृक्ष ।

विभगिरी—देखो 'विध्यगिरि' (रु भे)

विभगिरिपादमूल—देखो 'विध्यगिरिपादमूल' (रु भे)

विभल्लो—स पु [स बीजन] चक्रवाक नामक पक्षी ।

उ०—वील्हा घायस विभल्ला, आगलि ऊडी जाय । वाटइ दीसइ
वागली, ते ऊघी टगाय । —मा का प्र

विभाचळ—देखो 'विध्याचळ' (रु भे)

उ०—घियो चोळ सिदूर कुंभायळय, वन गेरुअ जाण विभाचळयं ।
—गु रु. वं.

विट—देखो 'वीट' (रु भे)

उ०—अवतार वहै आपै अनत, सह विटु हुय जावै सगा । तक विट
नाम स्त्री राम री, जग समद तिर तूं 'जगा' ।

—ज. सि.

विटणौ, विटवौ—देखो 'बीटणौ, बीटवौ' (रु. भे)

उ०—एहवौ घातकी खडए, परदक्षण परकार । अठ लख जोयण
विटौयो, समुद्र काली दधि सार । —वृ स्त

विटणहार, हारौ (हारी), विटणियो—वि० ।

विटणोडौ, विटियोडौ, विट्योडौ—भू० का० कृ० ।

विटौजणौ, विटौजवौ—कर्म वा० ।

विटाणौ, विटावौ—देखो 'वीटाणौ, वीटावौ' (रु. भे.)

विटाणहार, हारौ (हारी), विटाणियो—वि० ।

विटायोडौ—भू० का० कृ० ।

विटाईजणौ, विटाईजवौ—कर्म वा० ।

विटायोडौ—देखो 'वीटायोडौ' (रु. भे)

(स्त्री. विटायोडौ)

विटियोडौ—देखो 'वीटियोडौ' (रु. भे)

(स्त्री वीटियोडौ)

विट्टणौ, विट्टवौ—देखो 'वीटणौ, वीटवौ' (रु भे)

उ०—कमनेत नेतवधी सिपाह, सब सिलह पूर विट्ट सनाह ।
चवगान जान रनवीर खेत, ताजी तमाम पक्खर समेत ।

—ला. रा.

विट्टणहार, हारौ (हारी), विट्टणियो—वि० ।

विट्टणोडौ, विट्टियोडौ, विट्ट्योडौ—भू० का० कृ० ।

विट्टौजणौ, विट्टौजवौ—कर्म वा० ।

विट्टियोडौ—देखो 'वीटियोडौ' (रु. भे.)

(स्त्री विट्टियोडौ)

विठणौ, विठवौ—क्रि. अ [स. विनण्टनम्] १ नण्ट होना, वरवाद होना ।

उ०—वस्त्र हरीनि हंस गयु, ते विठिया हारि बाहार । तेह राक नु
वाक किसु, जु दसा पडी अपार । —नळास्थान

२ अण्ट हीना, विगडना ।

३ अदृश्य होना, गायब होना ।

विठणहार, हारौ (हारी), विठणियो—वि० ।

विठणोडौ, विठियोडौ, विठ्योडौ—भू० का० कृ० ।

विठौजणौ, विठौजवौ—भाव वा० ।

विठियोडी—भू का. कृ —१ नष्ट हुवा हुआ, बरबाद हुवा हुआ २
भ्रष्ट हुवा हुआ, विगडा हुआ. ३ अदृश्य हुवा हुआ, खोया
हुआ.

(स्त्री विठियोडी)

विण—देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—भाबकि पइठी झालि, सुंदरि दीठी सास विण । जिमि
व्हाला विच बाळ, प्रिव जोई मारु नही । —ढो मा.

विणणी, विणवी—१ देखो 'विणणी, विणवी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणणी, बुणवी' (रू. भे.)

विणणहार, हारो (हारी), विणणियो—वि० ।

विणिओडी, विणियोडी, विण्योडी—भू० का० कृ० ।

विणीजणी, विणीजवी—कर्म वा० ।

विणियोडी—१ देखो 'विणियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुणियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विणियोडी)

वितर—देखो 'व्यतर' (रू. भे.)

उ०—पचेंद्रि तिरजच न मानव, एह थया इकवीसजी । वितर
जोतिसी नै वैमानिक, इम दडक चौवीस जी । —घ व प्र.

उ०—२ वाघ सिध वितर घणा, भुइ वीहती चालइ रे । चालइ
नइ सालइ वरसा रत घणु ए । —नळ दवदती राम

उ०—३ ज्योतिसी भुवणि नी वितरी श्री पराँ, नैरित कूण जिण
वाणि ऊभी सुराँ । —घ व प्र.

(स्त्री. वितरी)

वित्तणी, वित्तवी—देखो 'वीतणी, वीतवी' (रू. भे.)

उ०—सिसु वै मित्ती वित्ती, उदभी पोगड मड सिगारी । ज्यो
त्र दारक तरय, प्रामे डाळ सणि पत्तेणाम् । —रा रू

वित्तणहार, हारो (हारी), वित्तणियो—वि० ।

वित्तियोडी, वित्तियोडी, वित्तियोडी—भू० का० कृ० ।

वित्तोजणी, वित्तोजवी—भाव वा० ।

वित्तियोडी—देखो 'वीतियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्तियोडी)

विद—स पु [स] १ धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक, जिसका वध भीम
ने किया था ।

२ भारतीय युद्ध में कौरव पक्ष का एक केकय-राजकुमार जिसका
वध सात्यकि द्वारा किया गया था ।

३ अवती देश के राजा जयसेन एवम् वसुदेव की बहिन राजाधि-
देवी के दो पुत्रों में से एक पुत्र ।

वि. वि.—इसके कनिष्ठ भ्राता का नाम अनुविद एव एक बहिन
का नाम मित्रविदा था । यह दुर्योधन एव जरामघ का पक्षपाती
था । इसकी बहिन का विवाह दुर्योधन से होना तप हुआ था
मगर इसकी बहिन की इच्छानुसार श्रीकृष्ण ने मित्रविदा से
विवाह किया । भारतीय युद्ध में यह एक अशोहिणी सेना के साथ
कौरव पक्ष में सम्मिलित हुआ था तथा यह दश रथियों में से एक
था । अपने दक्षिण दिग्बिजय के समय सहदेव ने इसे जीता था ।
अन्त में यह अर्जुन द्वारा मारा गया ।

४ देखो 'वीद' (रू. भे.)

उ०—१ सत के 'सोनागिर' वाचा हरिचद । साच के अजातसत्र
गात रति विद । —रा रू

उ०—२ वरै रभ वैसि रथा रण विद । अघोघ राज लिये सुरइद ।
—मू प्र.

उ०—३ विदया भद्रा गोपिया विद । आरती करै ऊपरा इद ।
—पी प्र

उ०—४ नर नरिद अणनिद, विद वाकिम्म वीर वर । सुत सुरिद
हरचद, कद काढण केवी हर । —गु रू. व

२ देखो 'वूद' (रू. भे.)

उ०—निज रोस व ध्वेम से काम नहीं, उर हाम आराम हुराम
नहीं । गरवै स्तुति निद समान गिनें, हरवै न वनें नहि विद हनें ।
—ऊ का

३ देखो 'विदु' (रू. भे.)

उ०—जाय हिमाळ गळत जिद, उलटि राखत नाद विद । कोटि
गउ दिज दान देत, भरत कासी मुगत नेत । —अनुभववाणी

४ देखो 'विदी' (मह, रू. भे.)

विदक—वि—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ जन्म देने वाला ।

३ देखो 'विदक' (रू. भे.)

विदगी—देखो 'वदगी' (रू. भे.)

उ०—सो इद्रायण! थे नै आठ ही अपचरा मारी विदगी धणी
कौधी, मो थे वर मागो सो थाने मे वर देने गुर-चेली अलीप होसां ।

—मयाराम दरजी री बात

विदण—देखो 'विदण' (रू. भे.)

विदणी, विदवी—देखो 'वदणी, वदवी' (रू. भे.)

उ०—कोउ येक निदी कोउ येक विदवी, नाम सुवारस पागा ।
जन मीरा गिरघर वर पायी, भाग हमारा जागा । —मीरां

विदणहार, हारी (हारी), विदणियो—वि० ।

विदिओडी, विधियोडी, विद्योडी—भू० का० कृ० ।

विदीजणी, विदीजवी—कर्म वा० ।

विदली—देखो 'विदी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—सोहे भाळ विसाळ, लाल विदली सिंदूर । नंगे काजळ, मुख तवीळ, वणि वदन सनूर । —गज उद्धार

विदवी—देखो 'विदवी' (रू भे)

विदसरोवर—स पु —गुजरात मे पाटण (सिद्ध पुर) से आघा कोस दूर, एक तीर्थ स्थान ।

विदावन—देखो 'व्रदावन' (रू भे)

उ०—घन गोकळ नर ग्वाळ घन, घन जसोदी घन । विदावन घन सरव वन, वाहू वाहू मधवन । —पी प्र.

विदी—हेखो 'विदी' (रू भे)

उ०—सीसफूल तारा भला रे, अरघचंद सम भाग रे रग । विदी जाणें मणि घरी रे, पीवत अम्रत नाग रे रग । —प च चौ

विदु—२ देखो 'विदु' (रू भे)

२ देखो 'वृद' (रू भे)

३ देखो 'विदी' (रू भे)

उ०—स्यामा तरुं लिलाट सोहिया, कूकुम विदु प्रसेद कण ।

—वेलि

विदु आगिरस—स पु —वेदो के एक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

विदुचित्रक—स पु [सं] सारे शरीर पर गोल चित्तियो वाला मृग ।

विदुजाळ, विदुजाळक—स पु [स विदुजाल] १ सफेद विदियों का वह समूह जो किसी हाथी के मस्तक और सूंड पर बनाया जाता है ।

२ पद्मक नामक हाथियों का एक रोग ।

विदुतीरथ—स पु [स विदुतीर्थ] काशी के पचनद तीर्थ का एक नाम जहा विदुमाधव का मंदिर है

विदुत्रिवेणी—स स्त्री [स] स्वर साधन की एक प्रणाली । (सगीत)

विदुमति, विदुमती—स स्त्री —राजा शशि विदु की पुत्री एवं अयोध्या पति माघाता की पत्नी ।

विदुमाधव—स पु [स] काशी के पचनद नामक तीर्थ में स्थित एक विष्णु मूर्ति का नाम ।

विदुळरथी—स स्त्री [म विदुल रथ्या] कुज गलि । (अ मा)

विदुली—देखो 'विदी' (अल्पा, रू भे)

विदुसर—स पु [स] १ कंलाग पर्वत के दक्षिण स्थित एक सरोवर, जो तीर्थ माना जाता है । (पीराणिक)

वि वि—यह सरोवर गंगा के जलकरणों से बना था । यही पर

वैठ कर भागीरथ ने गंगा को भूलोक में लाने हेतु तप किया था ।

२ एक नदी जिम्के किनारे कर्दम प्रजापति का आश्रम था ।

विदुसार—देखो 'विदुसार' (रू भे)

विदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

विदोळी—देखो 'वदोळी' (रू भे)

विदो—१ देखो 'वीद' (रू भे.)

उ०—अणी सामि आगें इसें काम इंदा । वणें ऊहडें वकडा क्रीत विदा । —रा रू

२ देखो 'वदी' (रू भे.)

विध—देखो 'विध्य' (रू भे)

उ०—जैसे राजहसनिसीं राजें मानसर राज, जैसे विध भूधर विराजें गजराज सीं । —ध. व. प्र.

विधणी, विधवी—देखो 'विधणी, विधवी' (रू भे)

उ०—१ मोसा री मार री काळजें तीर नी विधती तो कदास मासी रा वील उण रें काळजें इण भात असर नी करता । तीर विधणा रें समचें ई हिवडा रें विस री पोटळी फूटगी ही ।

—फुलवाडी

उ०—२ पण आ वात सुणता इ उण री मुळक रें गेण लाग्गी उण री उणियारी काळी घाक पड्गी । माथा मे कीडी-नगरी कळवळण लागी । मोसा री तीर पाधरी काळजें जाय विध्यी ।

—फुलवाडी

उ०—३ क्रीडा मेलतु, सूत्कर मेलतु, परवत जिम दलतउ, पवन जिम चालतउ दताग्रि विधतउ, पाडतउ फोडतउ ।

—व. स

उ०—४ में नही कहत कहत परिग्यानु, सुणि हो सबें सयाणा । में तें राग दोस जुग विध्या, ए कळि के इहनाणा । —अनुभववाणी

विधणहार, हारी (हारी), विधणियो—वि. ।

विधिमोडी, विधियोडी, विध्योडी—भू का. कृ. ।

विधीजणी, विधीजवी—भाव वा ।

विधर—वि —अशब्दशावी ।

उ०—देवमाहिं कुण हू न स्वामी, न दास, न भूक, न ऊतसूक, न वधिर, न विधर, न कूवड न वामण, न हूड, न छोट, न पागुला, न आघला, तिहा डस मुमा । —व. स.

विधाचळ—देखो 'विध्याचळ' (रू भे)

उ०—घर चौडे सरवर विपन, विधाचळ दिस एक । च्यार महरत उत्तरे, धारस मत्र विवेक ।

—रा रू.

विधियोडी—देखो 'विधियोडी' (रू भे)

(स्त्री विधियोडी)

विध्य-स पु [स] १ उत्तर भारत के दक्षिण में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम को फैला हुआ है, विध्याचल नामक पर्वत ।

उ०—जिसे परण बला विध्य २ रा अधीस 'राम' भूपाळ ?

—व भा.

२ रैवत मनु के पुत्रों में से एक ।

रू भे - विष्णु, विष्णु, विध्य, वीष्णु, विष्णु ।

विध्यकूट-स पु [स विध्यकूटन] १ अग्रस्य मुनि की एक उपाधि ।

२ विध्य पर्वत ।

विध्यगिरि-स पु.—विध्यपर्वत, विन्ध्याचल ।

रू. भे —विष्णुगिरि ।

विध्यगिरिपादमूळ - विध्यगिरी पर्वत की तलहटी ।

रू भे —विष्णुगिरिपादमूळ ।

विध्यवासिणी, विध्यवासिनी-स स्त्री [स विध्यवासिनी] १ मिर्जापुर जिले में विध्य के एक टीले पर अवस्थित देवी की एक प्रसिद्ध मूर्ति, जो इन्द्र द्वारा स्थापित की गई थी ।

२ दुर्गा की एक उपाधि ।

विध्यवासी, विध्यस्थ-स पु [स] सस्कृत व्याकरणों व्याडि मुनि की उपाधि ।

विध्य्याचल, विध्याचल-स पु [स विध्य्याचल] मध्य भारत की दक्षिण सीमा स्थित-पर्वत का नाम ।

उ०—१ द्विजवर । जा द्वारा वती, विध्याचल जल लिए । कोटेम्बर कैलास परण, ऊंकारि अभ्यग । —मा का प्र

उ०—२ तद लडकी कही-मो सू रात का आय यक्ष मिले सो मो नू कहे- हूँ तो नू विध्याचल लेय हालस्यु । —सिधामरा वतीसी

उ०—३ विध्याचल वाघे तुं घणु, अवर अडके आज । आदित्य नह ऊगी सकइ, सरइ अम्हारा काज । —मा का प्र

रू भे —वद्रचला, विध्याचल वीष्णुचल, वीष्णुचल, वीष्णुचल, वृध्याचल, वध्याचल वध्याचलि, विष्णुचल, विष्णुचल ।

विध्यावलि विध्यावली-स स्त्री [स विध्यावलि] दैत्य राज बलि की स्त्री का नाम, जो वाण की माता थी । शकुनी, पूतना आदि इसकी पुत्रिया थी ।

विदार विभार—देखो 'ववार' (रू भे)

उ०—गुण मिधु टणक ठणक गजे, विप छेद खणक छणक वजे ।

भुरजाळ रोसाळ उडार भरे, कर तीर विदार वभार करे ।

—पा. प्र.

विभी—देखो 'वैभव' ।

विद्यासियो—देखो 'वयासियो' (रू भे)

उ०—महपति आयो मेडते, गड खाटे नागौर । सिर तिण वरस विद्यासियो, आयो वड सुख और । —रा रू

विस-वि. [स विश] १ वीसवा ।

२ एक राजा जो क्षुप राजा का पुत्र था ।

३ इक्ष्वाकु राजा का पुत्र जो विविश का पिता था ।

४ देखो 'वीस' (रू. भे)

विसतिबाहु-स पु [स विशतिबाहु] रावण का एक नाम ।

विसोत्तरी-स. स्त्री. [स विसोत्तरी] मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति ।

वि वि —इसमें मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर उसके भाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार शुभाशुभ फल की कल्पना की जाती है । (फलित ज्योतिष)

विहचणो, विहचवो—देखो 'वंचणो, वंचवो' (रू भे) (उ र)

विहचणहार, हारो (हारी), विहचणियो—वि० ।

विहचिओडो, विहचियोडो, विहचयोडो—भू० का० कू० ।

विहचोजणो, विहचोजवो—कर्म वा० ।

विहचियोडो—देखो 'वंचियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विहचियोडो)

वि-अव्य [स] १ किसी शब्द के पूर्व लगकर विशेष अर्थ उत्पन्न करने वाला एक उपसर्ग ।

वि वि —इससे इसके निम्न लिखित अर्थ होते हैं—पार्थक्य, विलगाव, किसी क्रिया का विपरीत, विभाग, विशिष्टता, आक. जाच, भेद, क्रम, विरोध, तगी, विचार, आधिक्य ।

२ भी ।

उ०—१ करणु भणइ सच्चु कहउ, पुणु छइ एकु वि नाणु ।

दुरयीवन रहि आपणा, मइ कल्पना छइ प्राण । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ क्षात्रघरम मन हूतउ छडिउ, कौरवाधिपति गोग्रह माडिउ ।

सैन्यराय बिहु भागि वि लायउ, तउ सुमरम न्रप दक्षिण घायउ ।

—सालि सूरि

३ ही ।

उ०—१ भूचहलिय सायर रत सुरगिरि, सिंगु सिंगि खडहडी ।

खणु एकु असरणु हूउ तिहुयणु राय सयल वि घरहडी ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ सी धनुषु नामइ कीमु काटक, घरणि घ्रासकि घडहडी ।

वभड खड विखड थाइ कि, सगिग सयल वि रडवडी ।

—सालिभद्र सूरि

स पु [स. वि] १ रवि ।

- २ शशि ।
 ३ दधि ।
 ४ पक्षी ।
 ५ गरुड ।
 ६ लवा । (एका)
 ७ घोडा ।
 ८ आख ।
 ९ आकाश ।
 १० अन्न ।
 ११ देखो 'बी' (रू. भे)

उ०—१ फवि विस सहस गयद घज फरहर । घरै महीरि वि-सहस वाजिन्न घर । —सू प्र.

उ०—२ कहिए मालवणी-तराइ, रहियउ साल्ह वि मास । ऊहाळउ क्तारियउ, प्रगटयउ पावस-मास । —ढो मा

विश्वकर्मण, विश्वकर्मणि, विश्वकर्मण्यु—देखो 'विश्वकर्मण' (रू. भे)

उ०—मन्त्रीसर घरि आविउ, सयल लोक रजन सुलकखण । पूरव पुण्य पसाउलइ त्रिणिए, नारि विलसइ विश्वकर्मणि । —हीराणद सूरि

विश्वकर्मरी, विश्वकर्मरी—देखो 'विश्वकर्मरी' (रू. भे)

उ०—सोलह मात्रा पय सकळ, नही गुरु लघु नेम । आखा छुद विश्वकर्मरी, इणरी पदति एम । —ल पि

विश्वकर्म-स पु [स वियत्] आकाश, नभ । (ह. ना. मा)

विश्वकर्मणी, विश्वकर्मणी—देखो 'व्यापणी, व्यापणी' (रू. भे)

उ०—१ हू अयाण अणवूरु, प्रघळ कपटी बड पापी । कामी क्रीची कहूर, विळ पर निदा विश्वकर्मणी । —पी प्र

उ०—२ विश्वकर्म सत्र सदा दख विद, आश्री जिम जाय कहा सुर इद । —रामरासो

विश्वकर्मणहार, हारी (हारी), विश्वकर्मण्यौ—वि० ।

विश्वकर्मण्योडो, विश्वकर्मण्योडो, विश्वकर्मण्योडो—भू० का० कृ० ।

विश्वकर्मण्योडो, विश्वकर्मण्योडो—भाव वा० ।

विश्वकर्मण्योडो—देखो 'व्यापियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विश्वकर्मण्योडो)

विश्वकर्मणी—१ देखो 'व्यापी' (रू. भे)

२ देखो 'वापी' (रू. भे)

विश्वकर्मणम—[स विप्रतारणम्] पीटना, मारना । (उ. र)

विश्वकर्म—देखो 'व्यास' (रू. भे)

उ०—'दीपी' बाळकिसन्न पण, ऊरै विश्वकर्म । साथ लिया रिधि साम री, नव ही रिद निवास । —रा. रू

विद्विगिच्छा-स स्त्री—विचिकित्सा । (उ. र.)

विद्वत्-वि [स विदित्वा] जानकार । (उ. र.)

विद्वय-वि. [स. द्वितीय] १ दूसरा । (उ. र.)

२ विदित ।

विद्वड—देखो 'विकट' (रू. भे)

उ०—विद्वड मिउड ताडिउ, तु चपेटा ऊपाडिउ । कूंयिरि मनि विराडिउ, बोल बोलइ सु ताडिउ । —सालि सूरि

विद्वरण—देखो 'विवरण' (रू. भे.)

उ०—रानल वर विद्वरण भणु, तिहुअणि पडिउ त्रास । वेस्या विलपति तिहा, सकल मिलिउ सहिवास । —मा. का. प्र

विद्वल—देखो 'विपुल' (रू. भे)

विद्वलअसनपाण-स. पु [स विपुलाअसनपाण] विपुल अशन-पान, पुष्कल खान पान ।

विद्वलतव-स पु. [स विपुलतर] विपुलतप ।

विद्वलघण-स पु [स विपुलघन] विपुल घन, पुष्कल घन ।

विद्वलसग-स पु. [स विपुलसर्ग] व्युत्सर्ग, कायोत्सर्ग, एक तप विशेष ।

उ०—अणसण तप पहिली कहची, छेची विद्वलसग जाण । वारे भेदे तपस्या करी, ज्यो पहुची निरवाण । —जयवाणी

विद्वलसिरी—देखो 'मौलसिरी' (रू. भे.)

उ०—जिहा किए कमल अपार रे, चापी मरुवी रे दमणी मालती रे । विद्वलसिरी सुखकार रे र, जाई जूई रे दुखडा पालती रे । —वि कु

विद्व-वि [स. विद्] जानकर, वेत्ता । (जैन)

विद्वोग—देखो 'वियोग' (रू. भे)

विकपन-स पु [स] १ रावण पक्ष के एक राक्षस का नाम, जो राम-रावण युद्ध में मारा गया था ।

२ रुद्रगणों में से एक ।

विकंपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू. भे)

उ०—पूगळ पाळटी, थरकियो विकंपुर, कहै छूत्रा काहि । उदधि राजा सूर उलटो, जादवा गढ जाहि । —हरखी वारहठ

विकच-स पु [स] १ एक प्रकार के घूम केतु, जिनकी संख्या ६५ कही जाती है ।

२ बौद्ध भिक्षुक ।

३ केतु का नामान्तर ।

वि. [स] १ खिला हुआ, फीला हुआ ।

२ बिखरा हुआ ।

३ जिसके बाल न हो, केश विहीन ।

विक्रम-स. स्त्री. [स] विरूपक नामक नैऋत्त राक्षस की पत्नी, जिस से भूमिराक्षस नामक पुत्र उत्पन्न हुआ ।

विकट-वि [स] १ भयकर भीषण, विकराल, डरावना ।

उ०—बजरग घाट फाला विकट, दुरत थाट जमदूत सा । कर जोम गयण श्रीघस करै, धोम नयण अचघूत सा । —सू. प्र.

२ चीटा, प्रशस्त ।

३ विधाल, बडा ।

उ०—१ असमर भट भूपट विकट थट आवट, गो गाहट थट गरट गहे । ऊकट थिय फाट सुभट लख आरट, खल खट रिणवट खडग वहै । —गु. रू. ब

उ०—२ एहनी-आधीयो ताम करि जोर बल फौरती, बव्वराधीस मन रोस आणी । सुभट थट विकट साथै करी आपणा, रोस चढीयो वदै असुभ वाणी । —स्त्रीपाल रास

उ०—३ इम गढ निकट विकट थट आया, छपन कोडि जाणै घण छाया । सुजळ जांणि ऊभळै समराथै, समद सात नवसै नदि साथै । —सू. प्र

४ जवरदमस्त ।

उ०—१ दट अणघट अघ विकट दळा रो, राजा साची राम । बळ सोहै दिन जन निवळां रो, नित जापो तै नाम । —र. ज. प्र

उ०—२ विकट विहारी वकडो, जाळ घर गढ राज । सो राठीडा घेरियो, जोडै सेन सकाज । —रा. रू.

उ०—३ कोपमान नरराघ रूप करि, विकट विराट वदन विक-राळ । सोसै रगत असुर हरिणाकस, प्रभु प्रह्लाद भगत प्रतिपाळ । —ह. ना. मा

५ बलवान, शक्ति शाली ।

उ०—१ फाल हुकम जिम फाल रा, फिकर कहारै । होय लटा चट्टा हिचै, विकटां वाकारै । —सू. प्र

उ०—२ असी सहस विकटा असवारा । वाग उपाडि लडै जिरा वारा । —सू. प्र

६ दुर्गम, दुरूह, दुस्साध्य ।

उ०—मन जाणै सहल दीयण वित भोजां, अ दीय पण धरीया अमठ । वेडा रो चाता इज वेडी, वेडा रा वेडा इ विकट । —अज्ञात

७ कठिन, मुदिकल ।

८ बदशवल, फुरूप, भोडा, भदा ।

९ उग्र, तीव्र ।

उ०—मारै घणा चाडिया माथा, त्रिजड विकट तट गग तणी । राजा जिम भारत महाकर, कासी न पूजियो किणी ।

—किसनी आढी

१० टेढा, वक्र ।

११ अहकारी, अभिमानी ।

उ०—दुरवेस विकट करिवा दुरस, पुरस रूप जोधापुरी । मम हुकम लाज राखण मुदै, महाराज मढोवरी । —रा. रू.

१२ जगती, अमद्र ।

स पु.—१ विस्फोटक ।

२ सोमलता ।

३ बाल तोड-फोडा ।

४ सेना, फौज । (ह. ना. मा)

५ डिंगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

६ घृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

७ रावण पत्नी, एक राक्षस जो अगद द्वारा मारा गया ।

८ रुद्रगणों में से एक ।

९ एक राक्षस जिसकी गगाजल पीने के कारण मुक्ती हुई ।

१० सिंह, शेर । (ह. ना. मा.)

रू. भे.—वकट, वगट्ट, विकट, विकट्ट, वेकट, वेकठ, विकट्ट विकट्टी विगट ।

अल्पा.—विकटो ।

विकटाणण, विकटानन—देखो 'विकटानन' (रू. भे.)

विकटा-स. स्त्री. [स] १ बुद्धदेव की माता का नामान्तर ।

२ अशोक वन में सीता पर पहरा देते वाली राक्षसियों में से एक राक्षसी ।

रू. भे.—विक्कटा ।

विकटानन-स पु.—घृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक ।

रू. भे.—विकटाणण, विकटानन ।

विकटो—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—ऊडै जळ में ले चलयो, गज कू विकटो ग्राह । तव ततकार समारियो, राधानागर नाह । —गजउद्धार

विकट्ट, विकट्टी—देखो 'विकट' (रू. भे.)

उ०—१ 'विजपाळ' 'राम' 'केहर' विकट्ट, 'भीमेण' 'राम' 'फतमल' सुभट्ट । हरिभाण 'नाथ' भाराथ हाम, द्रढवत साम पेखै दुगाम ।

—रा. रू.

उ०—२ कट कट अघ दुघट विकट्ट थट अणघट, भट भट रट रट 'किसन' जिकी । —र. ज. प्र

उ०—३ भाला भलि हल्लै भिडण, करि फौज विकट्टी । खार खधा असि वेडिया, धावै वह घट्टी-। —सू. प्र

विकर्णो, विकर्णो—देखो 'विकर्णो, विकर्णो' (रू भे.)

उ०—१ पेम न निपजै खेत में, हाट न विकर्णो जोय । हरीया गाहक पेम की, सिर दै लेसी सोय । —अनुभववाणी

उ०—२ हीरौ हाटा माहि, हरिया विकर्णो देखीयो । पारिख विन कुछि नाहि, कीडी बदलै जात है । —अनुभववाणी

उ०—३ घरणै सीळ सत घरणै, भरणै लाला भटियाणी । किसुँ दाव बळ कोप, आव जम हृत्य विकर्णो । —रा रू

विकर्णहार, हारो (हारी), विकर्णियो—वि० ।

विकिओडो, विकियोडो, विकयोडो—भू० का० कृ० ।

विकीजणी, विकीजवो—भाव वा० ।

विकर्ता—वि० [स विकर्ता] नहीं करने वाला, अकर्ता ।

विकर्तन—स. पु [स] १ खोली, डींग ।

२ व्यग्य ।

३ झूठी प्रशंसा ।

विकर्त्या—स स्त्री [स] १ अफवाह, जनश्रुति ।

उ०—अस्ता दस आतुरें, वात विसतरें विकर्त्या । राह थाह नरनाह, ताहि चिंता समरत्या । —रा रू

२ झूठी प्रशंसा ।

३ व्यग्य ।

४ खोली, डींग ।

५ निरर्थक या वेहूदी बात ।

६ चुगली ।

रू भे—विकर्त्या, विकहा, विगहा ।

विकर्था—देखो विकर्त्या' (रू भे)

उ०—१ राज कथादिक विकर्था राग सू, वारु कहुअ वणाय । समता घरि न करी मन सुद्ध सु, सूत्र सिद्धात सभाय । —ध व. प्रं.

विकर्षणा—स स्त्री [स विकर्षणा] सदेह, भ्रम । (जैन)

विकर्म—देखो 'विकर्म' (रू भे)

विकर्माईत—देखो 'विकर्मादित्य' (रू भे)

उ०—तइ नरसिंघदास-का कटक-बघ चालिता सातरि आगळइ दळि पाणी पाछिलइ दळि कादम । तइ कादम-कइ ठाहि खेह उदती जाइ । दूसरउ विकर्माईत । —अ वचनिका

विकर्मायत—स. पु [स विकर्म+आदित्य] १ राठीडो की एक उप-शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

२ देखो 'विकर्मादित्य' (रू. भे.)

विकरद—स. स्त्री [स विकर+गघ] बददू, दुर्गघ ।

रू. भे.—विकरद ।

विकर—स पु [स.] १ रोग, विमारी ।

२ तलवार चलाने का एक ढंग ।

३ राक्षस ।

४ देखो 'विकार' (रू भे)

विकरण—स. पु [स विकर्ण] १ घातु व प्रत्यय के बीच में होने वाला वर्णगण । (व्याकरण)

२ एक शिवभक्त महर्षि ।

३ धृत राष्ट्र का एक पुत्र, जो बड़ा न्यायी था ।

४ कर्ण का एक पुत्र ।

५ एक प्रकार का साप ।

६ एक प्रकार का तीर या बाण ।

वि. [स वि+करणम्] १ इन्द्रिय रहित ।

[स वि+कर्ण] २ जिसके कान न हो, कर्ण रहित ।

३ जो सुन न सके, बहरा ।

विकरणक—स पु—शिव का एक व्याडि नामक गण ।

विकरतन, विकरत्तन—स पु [स विकर्तम] १ सूर्य । (डि को)

२ आक, मदार ।

३ वह राजकुमार जिसने अपने पिता का राज्य छीन लिया हो ।

४ एक सूर्यवंशी राजा जो कोठ से पीडित था और सावरमती नदी में स्नान करने से मुक्त हुआ था ।

विकरम—स पु [स विकर्म] वेद विहित कर्म के विपरीत कर्म, दुष्कर्म, पाप ।

२ विरुद्धाचार ।

३ देखो 'विकर्म' (रू भे)

विकरमादित्य, विकरमादीत—देखो 'विकर्मादित्य' (रू भे)

विकरमी—वि [स विकर्मन] १ निषिद्ध कर्म व कुकर्म करने वाला ।

२ देखो 'विकर्मी' (रू भे)

विकरस—स पु [स विकर्ष] १ बाण, तीर ।

२ धनुष की प्रत्यचा खींचने का कार्य ।

३ अन्तर, दूरी, फासला ।

विकरसण—स पु [स. विकर्षण] १ कामदेव के पाच बाणों में से एक । [स. विकर्षणम्] २ आकर्षण, खिंचाव ।

विकरांत—देखो 'विक्रांत' (रू भे)

विकराति—देखो 'विक्राति' (रू. भे)

विकरार—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

उ०—वार विकरार सिरदार विघ वाहियो, समर भर भार घर भार सूर । सार सेलार ऊमार भभार सर, पार चौवार कर पार पूगो ।

—नाथी साहू

विकराळ, विकराल-वि [स. विकराल] (स्त्री विकराळी) १ भीषण
आकृति वाला, भयकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ भरै हिक स्त्रीणी पिंड भुजाळ । विहै हिक वीर हुभा
विकराळ । —गु रु. व

उ०—२ वी हळफळियो किभकनै बँठी व्हियो । काई देखै के खुद
भावण माचा रँ पसवाडै चडी रो विकराळ रूप धारचा ऊमी है ।
—फुलवाडी

उ०—३ खँडेने खडिया घाट खूर, सत्रवां फाळ विकराळ सूर ।
—वि स.

उ०—४ ते रात्रैचर अति विटल, विकल वदन विकराल । विसम
वचन मुख बोलतो, रुठी जाणि कराल । —वि कृ.
२ जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—१ नगा असि नाळ वजै विकराळ । घरा रजि घोम वणै
उडि घोम । —सू. प्र.

उ०—२ असुर घणा विकराळ कही किम मारिया । सता-मुख
उपजाय देवा-दुख टारिया । —गी रा

उ०—३ त्रबक पुन अदग विकराळ रज घोम तम, उवाळ घल
मसाला तोप उवाळा । —महाराजा बहादरसिंघ रो गीत

उ०—४ ए नीकल्यो किम जीवतो, वँरो विकराल । वली मुक थी
अधिकी थयो हीयडे ऊठी भाल । —स्रीपालरास
३ प्रचण्ड, तीव्र, तेज ।

उ०—१ भाव वताय सामुही भाळै । अगनि भाल विकराळ
उछाळै । —सू. प्र.

उ०—२ तन पीरस ग्रहिया तुरस, करग धरै किरमाळ । पावक
धत सजोग पुण, कोप वर्धै विकराळ । —मा वचनिका

उ०—३ जाण जीह नागणी, अणी अपै अतमाळी । तिली सेल
फल तरल, तीर पावक विकराळी । —वखती विडियो

४ व्याकुल ।

५ क्रोधित, क्रोध युक्त ।

उ०—१ भाडी माथै गोळिया रो बरवा होवण लागी, तो सेवट
विकराळ व्हियोडी सूर वारै' निकळियो आख्या सूं आग बरसै
ही अर वी चरड चरड करती दातरडिया घिसै ही ।
—अमरचूनडी

६ जगी, विशाल, दीर्घ, बडा ।

उ०—१ ओ धनुम बडी विकराळ रघुवर छोटी मो । —गी रा

उ०—२ दौडिया लका लियण दासण, वर्धै कणि विकराळ ।

—सू. प्र

स पु—१ सिंह, शेर । (अ मा)

२ युद्ध । (अ. मा.)

रु. भे.—वकराळ, विकराळ, विवकराळ, विकरार, वकराळ,
विकरोळ, विक्राराळ, विक्राराल, विवकर ।

अल्पा.—वकराळी, वकराळी, विकराळी, विकराळी, विकरुल्यो ।

विकराळी—देखो 'विकराळ' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—तेजावत तियावार, 'रूप' वीरै मद्यराळी । विकराळा दळ
विचै, करु धमचक कळिचाळी । —सू. प्र.

उ०—२ राजा देखि तरह विकराळै । अहि चित भँचकि दीध
उछाळै । —सू. प्र.

उ०—३ छत्रपतिहूत सहस गुण छार्जे, वीरभद्र गण तठै विराजै ।
रोम जटा ऊभा विकराळा, काळा रोम रोम अहि काळा । —सू. प्र.

उ०—४ रोछ खाल अगिया विकराळी । कति जिम कसै मुळंगम्
काळी । —सू. प्र.

उ०—५ तामु वयणु अवहेलइ रामो, अति घणु घल्लइ जीवह
घाठ । कोपि चडिउ तसु वणरसवाली, धनुखु चढावइ जम
विकराली । —सालिभद्र सूरि

उ०—६ पडठठ गढ नइ गिरुई खालि, सरप डस्यठ तेह अति
विकरालि । घरि आवतठ पडिउ असार, सुर सेना गणिका नइ
वारि । —हीराणुद सूरि

(स्त्री विकराळी)

विकरी—देखो 'विकरी' (अल्पा, रु. भे.)

विकरुल्यो—देखो 'विकराळ' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—ताम तेज तन सइयो, त्रिल आवध अय धूल्यो । डग डग डैरु
वाय, नाद कै विल विकरुल्यो । —सुरजनदास पूनियो

विकरेता—देखो 'विक्रेता' (रु. भे.)

विकरोळ—देखो 'विकराळ' (रु. भे.)

उ०—विडरी असत 'विजी' थियो वारै, वाजे हाक थई विकरोळ ।
—नँणसी

विकरी—स पु [स विक्रयः] १ दाम लेकर कोई चीज देना, दाम लेकर
किसी चीज के अधिकार का हस्तान्तरण करना, बेचना ।

उ०—हाटा पडी हटनाल, हमें मद सुगौ हुवी । कूकें घणा कलाळ,
विकरी भागी वाघजी । —आसी वारहठ

२ वस्तु के बेचने से प्राप्त होने वाला धन ।

रु. भे.—विकरी, विकरी, विक्री ।

अल्पा,—विकरी, विक्री, विकरी, विक्री ।

विकळ, विकल-वि [स विकल] (स्त्री. विकला) १ व्याकुल, बेचैन,
दुखी ।

उ०—१ माळवणी इण विधि घण्ट, विरह विकल विलपति ।
डोलत पूगळ पथ सिरि, आणंद अधिक खडति । —डो. मा.

उ०—२ ज्योतिषिया कही ग्रहा रं योग सू इक्षी माळूम होय छै जे
पाणी री अधिकत कर सहर विकल होय से । —नी प्र.

उ०—३ क्रत्या पासि कराक कामु, वयरी नु हु फेडड ठामु ।
क्रत्या आवी घाई सकल कइ मारुं कइ करु विकल ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—४ का तन आळस कर ऊथ, का फिर सूंघा करत सूध । का
मन मूरख विकल जास, का हुय वैंठ वेदव्यास । —अनुभववाणी

उ०—५ विकल हुवा सुक सारिका हे । चुगं न पीवं नीर मियाजी ।
—गी रा

२ उदास' खिन्न-चित्त ।

उ०—व्याकुल सीता सोवत फिरता, जो यी नंण जटाऊ जी,
नारायणजी परमेसरजी । चुणनें कथा मुगत हरि दीनी, चाल्या
विकल अगाऊजी, नारायणजी परमेसरजी । —गी रा

३ भयभीत, डरा हुआ, घमडाया हुआ, विह्वल ।

उ०—अर गुजरात री अधीस विकल थकी परीवार सूं चत्रहास
लेती ही आगं आय पहियो । —व भा.

४ क्षीम युक्त ।

५ खडित, भग ।

६ हीन, रहित ।

उ०—१ प्रथवी मद फळ, मद्य सर्व नि फळ, जडी मूळी रस
विकल । कुळ स्त्री निररगळ, न्यायी राय तुच्छ दळ । चरड बहुल,
वाट पाडा तरा कल कल । —रा मा स

उ०—२ जै समजणी हूवै तै उरणे मूरख जाणै । जै भगी री
भीटी तो न खाधी नै भगी री कीधी खाधी तिया सू उरणे विवेक रो
विकल जाणै । —भि द्र

७ कुम्हलाया हुआ, मुझिया हुआ ।

८ सडा हुआ ।

९ प्रभाव या शक्ति से रहित, असमर्थ ।

१० क्रोधित, क्रुद्ध ।

उ०—ते रात्रं चर अति विटल, विकल वदन विकराल । विसम
वचन मुख बोलनी, खठी जाणि कराल । —वि कु

११ अस्वाभाविक ।

१२ मिथ्या, झूठ, असत्य । (अ मा)

१३ चंचल, अस्थिर ।

१४ अपूर्ण, अधूरा ।

१५ जिसमे कल नहीं हो, कल से रहित ।

स पु—१ कपट छल । (अ मा, ह ना मा)

२ देखो 'वेप्रकल' (रु भे) (अ मा)

उ०—जद सुहागण बोली-वामण नै माहै वसाणें ने कथा वचाई
थो सो कथा तो वाछै थोही नै माहरे सामी देखै । जो हु जाणा
मूरख है विकल है । —गाम रा घणी री चात

रु. भे—विकल, वेकल, वैकल, वकल ।

अल्पा,—विकली ।

विकलकांभी-स पु—नारद ।

उ०—कीयो रामायण लक कुरखेत भारत कीयो त्रिय कोई पे-
खियो भीच भेही । त्रिनयण तरण नारद पूछै त्रिपदै, कही भगवत
भगवत केही । महारुद्र महारुद्र महामुर्ण, महाजुध कीया थे महादळ
मारि । कही करणाकरण पूछजै ती कथा, ऊथ की ऊदउत तरा
उणिहारि । दडत कपि भूत्रता पड कुर देखीया, वहि रुद्र कहि रवि
विकलकामी । गागहर आभरण जिसी गजदळ गिळण, साख दै
पूछियो आख सामी । —दुरमी आही

विकलचित्त-वि—१ अस्थिर चित्त ।

२ चंचल ।

रु. भे—विकलचित्त, विकलचित्त ।

विकलता, विकलताई-स स्त्री—१ विकल होने की अवस्था या भाव ।

२ वेचनी ।

रु. भे—विकलता, विकलताई ।

विकल्प, विकल्प-स पु. [स. विकल्प] १ भ्रम, भ्रान्ति ।

उ०—जा घट पेम प्रगासीया, विखीया विकल्प नाहि । हगीया
छाना ना रहै, आया अतर माहि । —अनुभववाणी

२ घोखा ।

३ विरुद्ध कल्पना ।

उ०—अति उत्तम नाभी असथानु, मन सकल्प विकल्प नहीं
ठानु । अति उत्तम सिवरन सरवगा, अछर एक मया अणभगा ।

—अनुभववाणी

४ योग शास्त्रानुसार पंच विधि चित्त वृत्तियो में एक, जो ऐसे
शब्द ज्ञान की शक्ति है कि जिसकी वाच्य वस्तु नहीं होती ।

५ मन की दुविधा ।

उ०—अनर एक लीया रहै सदन्न, अमतन आखै बोल वचनती ।
करत न की सकल्प नहीं विकल्प, सुख दुख देह न वछै मनती ।

—अनुभववाणी

६ मन में उत्पन्न होने वाली भावि-भाति की कल्पनाए ।

उ०—१ सूत्र नवि सरदहै रहै विकल्प घणै । ससयो नौम मिथ्यात
बोयो भणै ।

—ध व प्र

उ०—२ मन सकलप विकलप है मनही, मन जाग्रत मन सूता ।
मन ही त्याग चले चौह माया, मन ही लाग विगूता ।

—अनुभववाणी

७ निर्धारण ।

८ सदेह, हिचकिचाहट, सकोच ।

९ इच्छा, अभिरुचि ।

१० भूल चूक । ११ अज्ञानता ।

रू. भे.—विकलप, विकलप ।

विकलाग, विकलाग—वि. [स विकल + अग] जिसका कोई अग टूटा
या खराब हो, अगहीन ।

रू. भे.—विकलाग, विकलाग ।

विकला, विकला—स स्त्री [स विकला] १ वह स्त्री जिसको मासिक
धर्म होना बंद हो गया हो ।

२ कला का सातवा अंश ।

३ उपद्रव ।

४ कलह ।

५ बुधग्रह की गति ।

उ०—चन्द्रकला ती विकला जाती, घटत वघत नइ लेखइ । साहिब
नइ तउ सदा सुरगी, वाघइ कला विसेखइ । —वि. कु

६ दुर्गा देवी का नामान्तर ।

उ०—दीरघा लघु वपु द्रढा, सवेही रूप विरूपा । विकला सकला
व्रजा, उपावण आप आपुपा । —देवि.

वि.—चचल, अस्थिर ।

रू. भे.—विकला ।

विकलिंदी—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू. भे.)

उ०—मनुम विन नव माहे तेऊ वाऊ वै जावै । विकलिंदी ती दस
माहि जावै पूठा ही आवै । —घ व अ

विकली—वि —१ चिरस्थायी, अमित ।

उ०—राजा काम भलावियो, राखै विकली कथ । कह्यो वजीरा
'गजपती', तेडो साऊ सत्य । —गु रू. व

२ देखो 'विकली' (पुं)

विकलेंद्रि, विकलेंद्रिय—वि [स विकलेंद्रिय] १ जिसकी इन्द्रिय बश मे
न हो ।

२ जिसकी इन्द्रिय मे कोई दोष हो ।

म. पु —जैन मतानुसार द्वेंद्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरेंद्रिय जीवो का
समूह ।

उ०—१ प्राण विकलेंद्रिय भूत वनस्पति, जीव पचेंद्रिय जात ।
चार स्थावर सत्वज कल्या, भगवत साक्षात । —जयवाणी

उ०—२ साते नरक तरणी इक दडक, असुरादिक दस जाणजी ।
पाच थावर नै त्रिण विकलेंद्रि, उगणीस गिणती आण जी ।

—घ. व. अ.

रू. भे.—विकलिंदी, विकलिंदी, विकलिंदिय ।

विकली—वि. (स्त्री. विकली) १ अविद्वान-पात्र ।

२ बदचलन, दुश्चरित्र ।

३ देखो 'विकल' (अल्पा., रू. भे.)

विकल्प—देखो 'विकल्प' (रू. भे.)

विकस—स पु [स विकस] चन्द्रमा, चान्द क कु. बो ।

विकसणी, विकसवी—क्रि. अ [स विकाशन] १ विकसित होना ।

उ०—फूलत वेल विरछ मालती माधवी, लह रहे कुज कुज
विकसै । —रसील राज रा गीत

२ खिलना, फूलना ।

उ०—१ मुख दीसो विकसै कमळ, चदन वचन रसाळ । हियडे
जाण कि करतरी, धूरत चिन्ह ए माल । —पचदडी री वारता

उ०—२ नाह विकसै घणो कमळ जिम भड निवेड । भड घणा
पाडती सोमियो महा भड । —हा भा.

३ वृद्धिमान होना, बढ़ना ।

उ०—नवली भली कुमदिनी विकसै, रवि ऊगमते जेण रे । भर
यौवन रवि ऊग दिन दिन, कुमरी विकसो एम रे । —वि. कु

४ आगे बढ़ना, प्रगतिशील होना ।

५ प्रफुल्लित होना, हर्षित होना, आल्हादित होना सुखी मे फूलना ।

उ०—१ उत्तम नप मिलियो जई, वाप भणी धरि नेह । मन
विकस्यो तन उल्लस्यो, रमाचित थयी देह । —वि. कु

उ०—२ सखी अमीणी साहिबी, वाकम सू भरियोह । रण विकसै
रितुराज सै, ज्यू तरवर हरियोह । —वा दा

उ०—३ प्रमुख अनेक सिद्ध वसइ । जेण दीठइ उत्तम ना मन
विकसइ । —सभा

६ प्रकाशित होना ।

विकसणहार, हारी (हारी), विकसणियो—वि० ।

विकसिओडो, विकसियोडो, विकस्योडो—भू० का० कृ० ।

विकसीजणी, विकसीजवी—भाव वा० ।

विकसणी, विकसवी, विगसणी, विगसवी, चगसणी, चगसवी,

विकसणी, विकसवी, विकसणी, विकसणी, विगसणी, विगसवी,

—रू० भे०

विकसाङ्गी, विकसाङ्गी—देखो 'विकसाणी, विकसावी' (रू. भे.)

विकसाङ्गहार, हारी (हारी), विकसाङ्गियो—वि० ।

विकसाडियोडी, विकसाडियोडी, विकसाडियोडी—भू० का० कृ० ।

विकसाडीजणो, विकसाडीजवो—कर्म वा० ।

विकसाडियोडी—देखो 'विकसायोडी' (रू भे.)

(स्त्री. विकसाडियोडी)

विकसाणो, विकसावो—[राज. विकसणी क्ति का प्रे. रू] १ विकसित करना/करवाना ।

उ०—सूखा नै हरिया किया, मुरझया विकसाया हे । —गी रा

२ वृद्धिमान करना, बढ़ाना ।

३ आगे बढ़ाना/बढ़वाना, प्रगतिशील करना/करवाना ।

४ प्रफुल्लित करना/करवाना, हर्षित करना/करवाना, आल्हादित करना/करवाना, खुशी मे फुलाना/फुलवाना ।

विकसाणहार, हारो (हारी), विकसाणियो—वि० ।

विकसायोडी—भू० का० कृ० ।

विकसाईजणो, विकसाईजवो—कर्म वा० ।

विकसाडणो, विकसाडवो, विकसाणो, विकसावो विकसावणो, विकसाववो, विगसाडणो, विगसाडवो, विगसाणो, विगसावो, विगसावणो, विगसाववो, विकसाडणो, विकसाडवो, विकसावणो, विकसाववो, विकसाणो, विकसावो, विकसावणो, विकसाववो, विगसाडणो, विगसाडवो, विगसाणो, विगसावो, विगसावणो, विगसाववो—रू भे ।

विकसायोडी—भू० का० कृ०—१ विकसित करवाया हुआ २ आगे बढ़वाया हुआ, प्रगतिशील करवाया हुआ ३ प्रफुल्लित करवाया हुआ, हर्षित करवाया हुआ ४ आल्हादित करवाया हुआ, खुशी मे फुलवाया हुआ. ५ वृद्धिमान किया हुआ, बढ़ाया हुआ.

(स्त्री. विकसायोडी)

विकसावण, विसावणो—वि.—१ विकसित करने वाला ।

२ खिलाने वाला, प्रस्फुटित कराने वाला ।

उ०—हिंदुस्थान का छत्र, जगत छाया वरतावण । हिंदुस्थान मे सूरज, कवि कमळ विकसावण । —रा रू

३ वृद्धिमान करने वाला, बढ़ाने वाला ।

४ आगे बढ़ाने वाला, प्रगतिशील करने वाला ।

५ प्रफुल्लित करने वाला, आल्हादित करने वाला, खुशी मे फुलाने वाला ।

विकसावणो, विकसाववो—देखो 'विकसाणो, विकसावो' (रू भे)

विकसावणहार, हारो (हारी), विकसावणियो—वि० ।

विकसाविओडी, विकसाविओडी, विकसाव्योडी—भू० का० कृ० ।

विकसावीजणो, विकसावीजवो—कर्म वा० ।

विकसावियोडी—देखो 'विकसायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विकसावियोडी)

विकसियोडो—भू० का० कृ०.—१ विकसित हुवा हुआ. २ विला हुआ, फूला हुआ (फूल) ६ आगे बढ़ा हुआ, प्रगतिशील हुवा हुआ. ४ प्रफुल्लित हुआ हुआ, हर्षित हुवा हुआ, आल्हादित हुवा हुआ, खुशीमे फूला हुआ.

(स्त्री विकसियोडी)

विकस्सणो विकस्सवो—देखो 'विकसणी, विकसवो' (रू. भे.)

उ०—मेडतिया 'हरियद,' सूर दळ राम विकस्स । मानसिध जूभार, वेळ बोलिया विहस्स । —रा. रू.

विकस्सणहार, हारो (हारी), विकस्सणियो—वि० ।

विकस्सिओडी, विकस्सियोडी, विकस्स्योडी—भू० का० कृ० ।

विकस्समीजणो, विकस्समीजवो—भाव वा० ।

विकस्साणो, विकस्सावो—देखो 'विकसाणो, विकसावो' (रू. भे.)

विकस्साणहार, हारो (हारी), विकस्साणियो—वि० ।

विकस्सायोडी—भू० का० कृ० ।

विकस्साईजणो विकस्साईजवो—कर्म वा० ।

विकस्सायोडी—देखो 'विकसायोडी' (रू. भे)

(स्त्री विकस्सायोडी)

विकस्सावणो, विकस्साववो—देखो 'विकसाणो, विकसावो' (रू. भे.)

विकस्सावणहार हारो (हारी), विकस्सावणियो—वि० ।

विकस्साविओडी, विकस्सावियोडी, विकस्साव्योडी

—भू० का० कृ०

विकस्सावीजणो, विकस्सावीजवो—कर्म वा० ।

विकस्सावियोडी—देखो 'विकसायोडी' (रू. भे)

(स्त्री विकस्सावियोडी)

विकस्सियोडो—देखो 'विकसियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विकस्सियोडी)

विकहा—देखो 'विकरथा' (रू. भे)

विकाणो विकावो—देखो 'विकाणो, विकावो' (रू. भे)

उ०—१ एकइ वत्रि वसतडा, एवड अतर काइ । सीह कवडुी नह लहइ, गइवर लखिख विकाइ । —अ वचनिका

उ०—२ तू सरवर की माछओ, काँण पिता कुण माय । अलप सनेही कारण, हाटो हाट विकाय । —अनुभववाणी

विकाणहार, हारो (हारी), विकाणियो—वि० ।

विकायोडी—भू० का० कृ० ।

विकाईजणो, विकाईजवो—कर्म वा० ।

विकाथिनी—स स्त्री. [स] स्कन्द की एक अनुचरी, एक मातृका ।

विकायोडी—भू० का० कृ०—देखो 'विकायोडी' (रू. भे)

(स्त्री विकायोडी)

विकार—सं पु [स विकार'] १ प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होने वाला परिवर्तन ।

उ०—१ बोधक बोध एकही कहिये, निश्चय योही हमारा । है सुखराम सदा सुद केवल, नहिं कोई माया विकारा ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ ब्रह्म ड इकीस ऊपर आसन, ज्या पर अविगत योगी । नाद विदका नहीं विकारा, ब्रह्म आनद का भोगी ।

—श्री सुखरामजी महाराज

२ किसी वस्तु के आकार, गुण, रंग-रूप, स्वभावादि में होने वाला परिवर्तन जिससे वह काम देने योग्य न रहे ।

३ उक्त प्रकार का परिवर्तन करने वाला तत्व ।

४ क्रोधादि के कारण मुख पर हुई विकृति ।

उ०—हुई दौड हैमरा, नरा ऊधरा करारा । सेख ज्वाळ सल्लळी, कना सिव चक्ख विकारा ।

—रा रू

५ बीमारी, रोग ।

उ०—जं जळ मीकर, तै उदंग कर । जउ सीतळोपचार ते करइ विकार । इणि परि प्रज्वळित, स्नेह पटळ, विरहानळ नीपजइ ।

—रा सा स

६ वेदान्त व साख्यदर्शनानुसार किसी पदार्थ के रूपादि का बदल जाना ।

७ मनपरिवर्तन ।

८ मनोवेग ।

९ उद्वेग, विकलता ।

१० दोष ।

उ०—१ सीचें अन्नत अग अति सजम, जोवन लगै विकार जरा जम । परमहस आणद मे प्राणी, ब्रह्म अकासि हुई तदि वाणी ।

—सू. प्र

उ०—२ दरसी जोत दिदार, तिरवेणारी ताक में । छूटा सकळ विकार, आयो मन माग में ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—३ सील सतोख सदा रहै सीतळ, आनद रूप रहै जाह ताही । पेम प्रवाह भयें तन भीतरि, श्रीर विकार लिपे नही काही ।

—अनुभववाणी

११ वासना ।

उ०—१ करम कचोडी वंस करि, निजर लगी चहु दिस । हरीया विखै विकार में, तन मन रहीयो फिस ।

—अनुभववाणी

उ०—२ परिया तरणै न चालै पंडै, हाले कुपथ विकार हियै । दाना मिनख न राखै डेरै, दाना विन कुण सीख दियै ।

—कधिराज वाकीदासजी

१२ अवगुण, बुराई ।

उ०—१ विखयानद मलीन विकारा, यह मान्या सी जुग जुग हारा । विखयानद जगत का भाखा, अब भजनानद की केहू साखा ।

—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ आसि पासि वन करम का, फळ लागा सुख दुख । माया मोह विकार की, हरीया मिटै न भूख ।

—अनुभववाणी

१३ वैमनस्य, शत्रुता ।

उ०—अठै रह कासू बफादारी लेयस्या । हाली घरा हाला । सो सूरै इसडी रग खीवै रो दीसी, जं सगा सूं विकार पैदा हो बिगाड हुवै ।

—सूरै खीवै काधळोत रो वारता

१४ परिवर्तन ।

उ०—स्वाति वूद आकास की, पासं पडी समद । हरीया पेम विकार का, निज कण खोया कद ।

—अनुभववाणी

१५ बदहजमी ।

उ०—हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै । चावळ रो चौथी हेंसी खावै । तत्रोल विना खाधा अहारा विकार थावै । माडी मोडी कटारी रो पडचली समावै ।

—रा. सा स

१६ स्वाद, जायका ।

उ०—आव स थोहरि ईख वड, एकै धरि अवतार । साई जिभ्या लख कहै, जिभ्या लख विकार ।

—सुरजनदास पुनियो

१७ जैन मतानुसार पाच ज्ञानेंद्रियो से होने वाले २४० विकारो मे से कोई एक ।

रू. भे —विकार, विकार ।

विकारी—वि [स. विकारिन्] १ जिसमे कुछ विकार हुआ हो, विकार युक्त ।

२ जिसमे कुछ परिवर्तन हुआ हो या होता रहता हो, परिवर्तनशील ३ विकार उत्पन्न करने वाला ।

उ०—सेली सीगी घालै नेमा, राम भगति का नाही पेमा । भरम करम वीह करै विकारी, साध नहीं श्री वड ससारी

—अनुभववाणी

स पु—१ साठ सवत्सरो मे से तैतीसवें सवत्सर का नाम जो विष्णु वीसी का तेरहवा सवत्सर होता है ।

२ व्याकरण के अनुसार वह शब्द जिसकी रचना मे विकार (परिवर्तन) हुआ हो ।

रू. भे —विकारी ।

विकार—देखो 'विकार' (रू. भे)

उ०—बाहिर हेम राम का बाना, भीतरि भया भंगार । या तन कुं
कारी नही लागै, मनवा भरघा विकार । —अनुभववाणी

विकाळ—स पु [सं विकाल] १ वह समय जब देवकार्य व पितृकार्य
करने का समय बीत चुका हो ।

२ देर, विलम्ब ।

३ सन्ध्या का समय, शाम ।

विकावणौ, विकावबौ—देखो 'विकावणौ, विकावौ' (रू. भे)

उ०—किसी सीख सायर सुतन, कौड विकावण एक कण (रा) ।

ताई सीख येही खरी, यी दुरगा आसकरण रा ।

—सुरजनदास पूनिया

विकावणहार, हारौ (हारी), विकावणियौ—वि० ।

विकाविश्रोडौ, विकाविघोडौ, विकाव्योडौ—भू० का० कृ० ।

विकावीजणौ, विकावीजबौ—कर्म वा० ।

विकावियोडौ—देखो 'विकायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विकावियोडौ)

विकास—स पु [स विकाशः] १ प्रदर्शन, प्राकट्य, प्रकटन ।

२ आकाश ।

३ विस्तार, फैलाव ।

४ प्रकाश, रोशनी ।

५ प्रस्फुटन, खिलन ।

६ उन्नति, बढ़ोतरी, तरक्की ।

उ०—घरटी फेरता हरजस ती वद व्हेग्या अर फिल्मी गीत गूँजण
लाग्या-अखिया मिलाक-जिया भरमाक-चलै नही जाना हो हो चले
नही जाना । गाम में दो च्यार मुकद्दमा इ चालू व्हेग्या, जिणस
लोग बाग कई दफा रा जाणकार व्हेगा । कैवण रो मतलब श्री कै
गाम रो भोकळी सांस्कृतिक विकास व्हेगी । —अमर चून्डी

रू. भे —विकास, विगास, विगास ।

विकासणौ, विकासबौ—क्रि. अ — १ विकसित होना ।

२ प्रकटित होना, प्रदर्शित होना ।

३ प्रस्फुटित होना, खिलना ।

उ०—काली भमरावळि फळी, भूहा वाकडियाह । कमळ प्रभात
विकासिया, इसडी आखडियाह । —अज्ञात

४ उन्नत होना ।

विकासणहार, हारौ (हारी), विकासणियौ—वि० ।

विकासिश्रोडौ, विकासियोडौ, विकास्योडौ—भू० का० कृ० ।

विकासीजणौ, विकासीजबौ—भाव वा० ।

विकासणौ, विकासबौ, विगासणौ, विगासबौ, विक्रासणौ, विक्रासबौ,
विगासणौ, विगासबौ—रू० भे० ।

विकासियोडौ—भू. का कृ.—१ प्रकटित हुवा हुआ, प्रदर्शित हुवा हुआ
२ विकसित हुवा हुआ ३ प्रस्फुटित हुवा हुआ, खिला हुआ
४ उन्नत हुवा हुआ ।

(स्त्री. विकासियोडौ)

विकिर—स पु. [सं विकिर] १ पूजा के समय विघ्न दूर करने के
लिए चारो ओर फेंके जाने वाले चावल आदि ।

२ पक्षी ।

३ कूप, कुआ ।

४ पेड़, वृक्ष ।

विकीरण—वि [स विकीर्ण] १ जो चारों ओर फैला या छितराया
हुआ हो ।

२ प्रसिद्ध, मशहूर ।

विकूठ—वि [स] १ अत्यधिक तीक्ष्ण या नुकीला ।

२ अत्यधिक, भुथरा ।

३ रवंत मन्वन्तर का एक देवता-समूह जिसमें चौदह देव होते थे ।

वि वि—इस देवता समूह में निम्न लिखित देवता होते थे—१
अजेय २ कृषा ३ गौर ४ जय ५ भीम ६ दम ७
ध्रुव ८ नाथ ९ यश १० विद्वस ११ वृण १२ शुचि
१३ भैतृ १४ दात ।

४ देखो 'वैकूठ' (रू. भे)

विकूठा—स स्त्री—एक देवी, जो रवंत मन्वन्तर में उत्पन्न विकूठ
नामक देवताओं की माता व शुभ्र की पत्नी मानी जाती है ।

विकूडभांड—स पु [स] एक दानव का नाम । (पौराणिक)

विकूडळ—स पु—निपथ नगर के एक धनी वैश्य के पुत्र का नाम ।

वि वि.—यह बडा पापी पुरुष था । इसने यमुना तीर वासी एक
ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मण के सग दो बार यमुना में माघ स्नान किया था
जिससे इसकी मुक्ति, हुई थी ।

विकुभ—स. पु—एक दानव, जो कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक था ।

विकुम्ब, विकुम्बी, विकुम्बि, विकुम्ब, विकुम्बी—स पु. [स. विकुम्बी] १
अयोध्यापति सूर्यवशोत्पन्न इक्ष्वाकु के १०० पुत्रों में से सर्वज्येष्ठ
पुत्र जिसे शशाद नामान्तर भी प्राप्त था । यह ककुत्स्थ, जिसके
नाम पुरञ्जय व इन्द्रवाह भी थे, का पिता था ।

उ०—१ सुत कामिप मूग्ज तप असाधि, वइवस्तु सूर सुत तेज
वाधि । वइवस्तु तरणै इक्ष्वाकु वीर, सभ्रम इक्ष्वाकु विकुम्ब सधीर ।

—सू. प्र.

उ०—२ सुत विकुल सन्निज सुत स्वसाद, पुत्र ज ककुस्थ अति हित प्रमाद । जे सुत अनन प्रथु पुत्र जास, राजे प्रथु नदन विस्ट-रास । —सू प्र.

वि.—जिसकी तोद बढी हुई ही ।

विकुट-स पु —राजस्थानी (डिगल) में एक गीत छन्द विशेष ।

वि. वि —इसमे प्रथम चरण मे १४-१४ मात्राओं पर यति से २८ मात्रा फिर दूसरे चरण मे २७ मात्रा, फिर ७-७ मात्राओं के २० चरण होते हैं ।

उ०—चवदह भक्ता चरण दुव, तिय सत वीसा सोइ । तिय थी मिळ दुव चवद वद, विकुट गांत इम होइ ।

—पिंगल सिरोगिया

विकूरवी, विकूरवी-वि —वैक्रिय लब्धि से उत्पन्न, कृत्रिम, बनावटी । (जैन)

उ०—तिहा बळी सबळी सिंह विकूरवी रे, तं कहे मैं दीठी इक सीह रे । माणस नी लेती वासना रे, आवै छे इण वार अवीह रे ।

—वि कु

विकेस-वि. [स विकेश] १ जिसके सिरके के बाल खुले हो ।

२ जिसका सिर बालरहित हो, गजा ।

स पु —१ एक प्रकार का प्रेत ।

२ पुच्छल तारा ।

विकेसी-सं स्त्री. [स विकेशी] सिर के खुले बालो वाली स्त्री ।

२ वह स्त्री जिसके सिर मे बाल न ही, गजे सिर वाली स्त्री ।

३ शिव की पत्नी का नाम ।

४ अग्नि की एक पत्नी का नाम ।

५ पूतना राक्षसी का एक नाम ।

६ बालो की छोटी-छोटी लटी को मिलाकर बनाई हुई चोटी या वेणी ।

विकोक-स. पु. [स] वृकासुर का पुत्र तथा कोक का छोटा भाई ।

विकोदर-स. पु [स वृकोदर] देवी 'विकोदर' (रु. भे)

उ०—१ अमरावत अजबसिध अमर बोल काजे, जुद्ध ध्राए जुधिसिठर बंधव सा राजे । योयद का सुदर विकोदर सा वाहा, ममर की मरजाद धरम के राहा । —रा रु

उ०—२ पटहथ ऊचडती भुज पाएँ, बाहा प्रलभ भेदियो वारण । ईखें साह नयण आपाएँ, जोधाहरी विकोदर जाएँ ।

—ईसरदास वीरभदेवोत राठीड री गीत

उ०—३ गाहेवा अजमेर गिरव्यर, सू सादूळ माडवा सम्मर । करण उपाडे 'भीम' किरम्पर, वधियो वामण जेम विकोदर ।

—गु रु ब

विकोस-वि. [स. विकोश, विकोप] १ म्यान से निकला हुआ, बिना म्यान का । (शस्त्र)

२ बिना छिलके या भूसी का, भूसी रहित ।

३ खुला हुआ, अनाच्छादित ।

विक्र-स पु [स विक्र] १ हाथी का वच्चा ।

२ देखो 'विक्र' (रु. भे)

विक्रटा—देखो 'विकटा' (रु. भे.)

उ०—देवी भूनडा अमरी वीस भूजा, देवी त्रीपुरा भेरवी रूप तूजा । देवी राखत घोररें रक्त रूती, देवी दुरजटा विक्रटा जम्म दूती । —देवि.

विक्रमपुर, विक्रमपुरि, विक्रमपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रु. भे)

उ०—१ अभयदाणु जिण दिनु सयल सघह विक्रमपुरि । किय पयट्टु जिण उसम भुवणि नहुविह उछवु भरि । —ऐ. जै का. स

उ०—२ विक्रमपुरि जिण वीर भुवणि वादिय मणु मोहइ । गणहरु जेम सुहम सामि भवियण दिण वोहइ । —ऐ. जै का स

विक्रय—देखो 'विक्रय' (रु. भे)

विकराल, विकराल—देखो 'विकराल' (रु. भे)

उ०—१ जुट जम्म जाळ, वपे विकराल । वाहडड पिंड, वाणासं विखडं । —गु रु ब

उ०—२ ऊछळते हाथ पाव, घट सीस दाव घाव । मड ईस रुडमाळ, वीर नित्त विकराल । —सू प्र

उ०—३ कलू काल रूपी महा विकराल, फणा टोप रोपे महकोप जाल । वलवक वलती चलती कराल, जिणै फूंकि सूके तर माल डाल । —घ व प्र

विकरू—देखो 'विकराल' (रु. भे)

विकसणी, विकसवी—देखो 'विकसणी, किरसवी' (रु. भे)

उ०—रणमल्ल राव विसरामियो, कुंभा की मन विकसं । छळियो छदम ते कूड फर, जेम सीह आगे ससं । —नैणमी

विकसणहार, हारी (हारी), विकसणियो—वि० ।

विकसणोडी, विकसणोडी, विकसणोडी—भू० का० कृ० ।

विकसणीजणी, विकसणीजणी—भाव वा० ।

विकसणोडी—देखो 'विकसणोडी' (रु. भे)

(स्त्री. विकसणोडी)

विकसाणी, विकसाणी—देखो 'विकसाणी, विकसाणी' (रु. भे)

उ०—विकसासं हासं सीसं वध, मेलै मूछा भूहारी । धारा लकाळे पाणै धूणै, अर्धं नवभ धाधारी । —गु रु ब.

विकसाणहार, हारी (हारी), विकसाणियो—वि० ।

विककासिओडो, विककासियोडो, विककास्योडो—भू० का० कृ० ।

विककासोजणो विककासोजवो—कर्म वा० ।

विककासियोडो—देखो 'विकामियोडो' (रू भे)

(स्त्री विककासियोडो)

विकखं, विकख—१ देखो 'विस' (रू. भे)

उ०—आर्व सघण अचीत, जेम वनि अगनि सिलग्गा । सरप
विकख सोखवा, मत्र आर्व सुखमगा । —रा रू

२ देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—चखा फ़ाल तूटं मुखा फ़ाल चडां, परस्ती फरस्ती भ्रमावं
प्रचडा । वदं रामहूँ राम वायक विकख, तिकं राम रा वाण जाणं
सतिकख । —सू प्र

३ देखो 'वीख' (रू भे)

उ०—अति सूरिति आवस जेती ऊफणि, वामण रूप जिहीं वधियो ।
विदवा दल साम्ही दीन्ही विकखा, जाणं अंतक जागवियो ।

—गु रू व

विकखणी—स. स्त्री—सडक चलते समय घोडे के पैर की रगडक लगने से
उत्पन्न आग की चिनगारी ।

उ०—खुरताळा विकखणी, घणोलगगी आयासा । नह सुणीजें
नीसाण, वसू वाजी वरहासा ।

—गु रू व

विकखघर—देखो 'विसघर' (रू भे)

उ०—सहर अजैपुर जोधपुर, सोवै राख जवन्न । पूठ अकव्वर
वाहरा, थयो विकखघर मन्न । —रा. रू

विकखम, विकखमी, विकखम्म, विकखम्मी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—भारा आकात हवदी भूममी, वरतदी सुरवार विकखम्मी ।
अमरू कथ भ्रहमाण अखम्मी, थदं उथल थानूदा । —र ज प्र

विकखहर—१ देखो 'विसघर' (रू भे)

२ देखो 'विसहर' (रू भे)

विकखेव—देखो 'विक्षेप' (रू. भे) (जैन)

विकटोरिया—स स्त्री [अ.] १ प्राय फिटन से मिलती-जुलती किन्तु
उससे कुछ छोटी और हल्की एक प्रकार की घोडा-गाडी ।

२ एक छोटा ग्रह जिसकी खोज हेंड नामक पाश्चात्य ज्योतिषीं ने
सन् १८५० मे की थी ।

विक्रतड—देखो 'वक्रतुड' (रू भे)

उ०—ग्यान रो गौरख विक्रतड बुधान रो गणा, सिधा वामदेव
मानसीरा में समद । छोळा माघवान बळाकार गदाघार छाजें, नप
भूपाळ असो उदीपियो नद ।

—महाराज सनमानसिध हाडा रो गीत

विक्रत—वि. [स विकृत] १ जिसमे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न हो
गया हो, विकारयुक्त ।

२ जिसका आकार, रूप आदि मे परिवर्तन हो गया हो, कुरूप, भद्दा
उ०—वा दो तीन वेळा मासी रँ मूंडा साम्ही जोयो ती उणुनं
अंठी लखायो जाणं उणारी आख्या होठा मार्य चिप्योडी व्है ज्युं,
कान आपरो ठायो छोट लिलाड मार्य जुडग्या अर नाक ठोडी रँ
हेट लहमँ । इण भात मासी रो उणियारी विक्रत अर विडरूप क्युं
व्हैगी ? —फुलवाडी

३ अस्वभाविक ।

४ अधूरा, अपूर्ण ।

५ बीमार, रोगी ।

६ अगहीन, विकलाग ।

७ उद्विग्न ।

८ घृणाजनक ।

९ अरुचिकारक ।

१० असाधारण ।

स. पु.—१ दस लोककर्ताओं मे से दूसरे प्रजापति का नाम ।

२ विष्णुवीमी मे चौथा व साठ सवत्सरो में से चौबीसवें सवत्सर
का नाम ।

३ परिवर्तन राक्षस का नाम । (पुराण)

४ ब्राह्मण वेशधारी कामदेव, जिसने इसी वेश में अयोध्यापति
इक्ष्वाकु के साथ सवाद किया था ।

रू भे—विक्रत, वक्रत, विक्रित ।

विक्रतस्वर—सं प्र [स विकृत+स्वर] अपने नियत स्थान से हटकर
दूसरी श्रुतियो पर जाकर ठहरने वाला स्वर । (सगीत)

विक्रता—स स्त्री [सं विकृता] एक योगिनी का नाम ।

विक्रति—स स्त्री [स विकृति] १ विकृत होने की अवस्था या भाव ।

२ विकार या खराबी ।

३ विकार के उपरान्त प्राप्त होने वाला रूप, विगडा हुआ रूप ।

४ बीमारी, रोग ।

५ परिवर्तन ।

६ परिवर्णम ।

७ मानसिक क्षोभ ।

८ २३ वर्णों के छन्दो की सज्ञा । (पिगल)

९ विकार आने पर होने वाला मूल प्रकृति का रूप । (सांख्य)

१० मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होने वाला शब्द का रूप ।

११ भागवत, विष्णु, एव वायु के अनुसार एक यादव राजा जो
भीमरथ का पिता व जीमूत राजा का पुत्र था ।

रू. भे—दक्रति ।

विक्रतुड—देखो 'वक्रतुंड' (रू. भे.)

विक्रम-वि.—विना क्रम का, क्रमरहित ।

स पु [स. विक्रम] १ विपरीत गति ।

२ कदम, डग ।

३ पराक्रम, बल, शौर्य ।

४ बहादुरी, वीरता ।

५ चाल गति ।

६ गरुड पर सवारी करने वाले भगवान, विष्णु भगवान् ।

७ ब्रह्मवीसी या साठ सवत्सरो मे से चौदवा सवत्सरो ।

८ घृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से बलवर्धन नामक पुत्र ।

९ योद्धा वीर । (श्र मा)

[स. विकर्म] १० दुष्कर्म, पाप-कर्म ।

उ०—सुभ करमन का सुख फल स्वरगा, असुभ करे दुख भोगी नरका । वरम विक्रम तणा यह साजा, कबहू रक कबू-ही राजा ।

—श्री सुखरामजी महाराज

११ तीन की सख्या ।४

१२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—श्रीराम कुळ राम श्रवतार, जंतवारू कै जेवार । भोज विक्रम करन ते सवाय, आचार की सोभा वरणी न.जाय ।

—रा. रू

१३ देखो 'विक्रमसवत्' (रू. भे.)

रू भे.—बिकरम, विक्रम, बीकम, विकम, विकरम, बीकम, बीकम्म ।

विक्रमक-स पु —स्वामीकर्तिकेय का एक सैनिक अनुचर ।

विक्रमगढ, विक्रमनगर, विक्रमनगरि, विक्रमनगरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरी

स पु—१ राजस्थान राज्यान्तर्गत बीकानेर नामक एक शहर ।

उ०—अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज करै छै ।

—द वि

२ जयसलमेर राज्यान्तर्गत एक प्राचीन नगर विक्रमपुर ।

रू भे.—बीकपुर, बीकमपुर, बीकमपुरि, बीकमपुरी, विक्रमपुर, विक्रमपुरि, विक्रमपुरी, बीकनैर, बीकपुर, बीकमपुर ।

विक्रमसील-स. पु —एक राजा, जो कालिन्दी का पति श्रीर दुर्गम का पिता था ।

विक्रमात-स पु [स विक्रम-श्रत] योद्धा, वीर । (श्र मा)

रू भे.—विक्रमात ।

विक्रमाजीत, विक्रमादित, विक्रमादित्य, विक्रमादीत-स.पु. [स विक्रमा-दित्य] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनकी राजसभा मे

कालिदास थे श्रीर विक्रमी-सवत् इन्ही का चलाया हुआ माना जाता है ।

उ०—१ गया चौतीस वादेसाहु, श्रीर केता भुंवाळू । विक्रमाजीत श्रर भोजराज, गयो सौ मुज चलाळू । —ऊदी नैण

उ०—२ भूप विक्रमादित था ऊजेण सहज का,सभ वाता समरत्य था दुख काटण पर का । दाता भोज पवार था त्रप धार नगर का, लाख लाख द्रव देत था इक इक श्रगर का । —दुरगादत्त वाहरठ

उ०—३ विक्रमादित्य जिसउ उपगारी, अहनिंसि सेवक नइ सुखकारी । पाच पडव जिम बलवत, सीह तण्णि परि माहसवत ।

—ऐ. जं. का न

रू भे —विकरम, विकरमाजीत, विक्रमाजीत विक्रमारक, बीक, बीकम, बीकी, विकमाईत, विकमायत, विकरमादित्य, विकरमादीत विक्रमारक, बीक, बीकम, बीकम्म ।

विक्रमाब्द-स पु —विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमी सवत् ।

उ०—घारि कठिनाई घोर गुरु की चराई घेनु, इस्ट वर पाय पुनि पूरनिधि पाई तें । विक्रमाब्द इदु नद द्वीप मानमोरी मारि चित्रकूट राजधानी जबर जमाई तें । —कम्पणिसिंह चारहठ

विक्रमारक-स पु [स. विकर्मक] देखो 'विक्रमादित्य' ।

विक्रमि-देखो 'विक्रमी' (रू भे.)

विक्रमित्र-स पु.—वज्रमित्र शुंग राजा का नाम ।

विक्रमी-वि [स. विक्रमिन्] १ वीर, बहादुर, शूरवीर ।

२ पराक्रम वाला, पराक्रमी ।

३ विक्रम सम्बन्धी, विक्रम का ।

स पु—१ सिंह, शेर ।

२ भगवान विष्णु का एक नामान्तर ।

३ विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्, विक्रमीसवत्

रू भे —विकरमी, विक्रमी, विकरमी ।

विक्रय-स पु [स विक्रय] बिक्री ।

रू भे.—विक्रय, विक्रेय, विक्रय, विक्रेय ।

विक्रात, विक्रा-श्रत-वि. [स विक्रान्त, विक्रान्त] १ शूरवीर, बहादुर, वीर । (ह ना मा)

उ०—रूपा फटाच्छ गोल की, विलोल जाहि धा कर्म । रजै विक्रांत सात मे, कृतात श्रात मे रमें । —ऊ का.

२ विजयी, प्रतापी, तेजस्वी ।

स पु—१ सिंह, शेर ।

२ एक प्रजापति जो वालेय गधवों का जनक माना जाता है ।

३ भगवान विष्णु का एक नामान्तर ।

४ एक प्रजाहित दक्ष राजा, जो दम राजा का पुत्र था। इसके पुत्र का नाम सुवृत्ति था।

५ हिरण्याक्ष के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

६ राजा ऋतुध्वज (कुवलयारव) के उनकी पत्नी मदालसा के गर्भ से उत्पन्न पुत्र का नाम। (पुराण)

[सं वक्रान्त] ७ वक्रान्तमणि।

रू भे—विकरात।

विक्रान्ति—स स्त्री [स विक्रान्ति] १ गति, चाल।

२ घोड़े की सरपट चाल।

३ विक्रम, बल, शौर्य।

४ वीरता, बहादुरी।

रू भे—विकराति।

विक्रित्त—देखो 'विक्रत' (रू भे)

विक्री—देखो 'विकरी' (रू भे)

विक्रुस्ट—स पु—व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ उच्च से उच्चतर ध्वनि में बोलने की क्रिया या भाव। (सगीत)

विक्रोता—वि [स.] विक्रय करने वाला, बेचने वाला।

रू भे—विकरेता।

विक्रये—वि—१ जो बेचने के लिए या बेचने के योग्य हो, बिकारू।

२ देखो 'विक्रय' (रू भे)

रू भे—विक्रये।

विक्रोस—स स्त्री [स विक्रोशन] १ गाली।

२ चीत्कार, चिल्लाहट।

विक्री—देखो 'विकरी' (रू भे)

विकलय, विकलव—वि. [स. विकलव] १ भीरु, डरपीक।

२ डराहुआ, भयभीत।

३ पीडित, दुखित।

४ विह्वल, वैचैन।

५ उद्विग्न, घबड़ाया हुआ।

विक्षत—वि [स] घायल।

विक्षम—स पु—कश्यप कुलोत्पन्न गोत्रकार।

विक्षय—स. पु—अधिक मद्यपान के कारण होने वाला रोग।

रू. भे.—विक्षय।

विक्षर—स पु—१ भगवान् विष्णु।

२ कश्यप एवम् दनु का एक पुत्र जो वीर और प्रतापी दैत्य था और आगे चल कर वसुमित्र राजा के रूप में अवतीर्ण हुआ था।

विक्षात, विक्षातमान, विक्षाति, विक्षातिमान—वि.—प्रसिद्ध, मद्यहृर।

उ०—१ समुद्रघात सग नर नै पण गम्भय तिरि देव। नारक वायु नै च्यार सेम नै तीनु भैव। दिही दोय विगल में थावर नै मिथ्यात। सेम नै तीन दिहि जिम प्रवचन मे विक्षात। —वृस्त

उ०—२ कीरतियभि करि, सारदा सरस्वती नदीए करी, देस-देसाउर वदीत् विक्षातमान छइ, एहइ एक अणहलपुर पाटण वरणवीतू सोभइ, अही भीमालक बोलि। —व. स.

उ०—३ अथ घरम्मप्रभाव, क्षीरसागर विस्तीरण निस्कलक कुल, लोकमहि विक्षाति विसुद्ध जाति, भवतोद्धारधार, सकललक्षण-प्रधान। —व. स

विक्षिप्त—वि [स.] १ घवराया हुआ, वैचैन, व्याकुल। २ खारीज किया हुआ, त्यागा हुआ ३ भेजा हुआ ४ खण्डन किया हुआ ५ बिखरा या फँका हुआ।

६ पागल।

विक्षिप्तता—स. स्त्री. [स. विक्षिप्त+ता] विक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

विक्षेप—स. पु. [स. विदोप] १ इधर उधर हिलाने डुलाने की क्रिया या भाव।

२ इधर उधर बिखेरने या छितराने की क्रिया या भाव।

३ भटका देने की क्रिया या भाव।

४ मन को इधर-उधर दौड़ाने या भटकाने की क्रिया या भाव।

उ०—माया में मिसरत मिलाया, चित्त नाम धराणी। स्वरूप भूल स्वप्ना भयो दांस विक्षेप दरसाणी। —स्त्री सुखरामजी महाराज ५ बाधा, विघ्न।

उ०—मल विक्षेप आवरण कर दूरा, वं सदा सुख से लेटे। सत चित्त ध्यानद मिले हजुरा, गुरु गोदी मे बैठे।

—साधु जगदीसरांम

६ एक प्रकार का अस्त्र विशेष। (प्राचीन)

रू भे—विक्षेप, विक्खेव, विक्षेप।

विक्षोभ—स पु [स.] विशेष रूप से मन में होने वाला दुःख, उद्विग्नता।

विक्षोभण—स पु—कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक दानव पुत्र।

विक्षड—वि—१ खड-खड, टुकड़े-टुकड़े।

उ०—१ खड-खड विखड बीजळा खिमता, हय गय दळा विहडता हाथ। हय वारा कूदेगा हळका, 'भारै' री रहियौ भाराय।

—केसरीसिंह सेखावत री गीत

उ०—२ सौ धनुखु नामइ किमु काटकि, धारणि धासकि घडहडी। वसड खड विखड थाइ कि सगिग सयल वि रडवडी।

—सालिभद्र सूरि

२ नाश, संहार ।

उ—१ जुटे जम्म जाळ' वपे विक्कराळ' । वाहूडड पिंड, वाणासी विखड ।
—गु रू व.

उ०—२ जिण मत्यै इसा भड न हुवै प्रचड, 'वाघ'उत रिम घडा करै खागा विखड । भूभू भूभूभार भड 'राजसी' भूभूणी, एक भवनाड सीगाळ भवखल्लणी ।
—हा भा

३ मिटाने वाला, खत्म करने वाला ।

उ०—भाळ आणदराम तण, उर आणद प्रचड । दळ आणद प्रकासणा, खळ आणद विखड ।
—रा रू
रू. भे —विखड ।

विखडण-वि —१ संहार करने वाला, संहारक, नाशक ।

२ तोडने वाला ।

विखडणो, विखडणो-क्रि भ्र.—१ मिट जाना, नष्ट हो जाना ।

१ खण्ड-खण्ड होना, टुकडे टुकडे होना ।

क्रि स —३ नाश करना, संहार करना, मारना ।

४ खण्ड-खण्ड करना, टुकडे टुकडे करना ।

उ०—धरि खबर जाणि वै वघवा, भाल विघटा मडियो । आसुर तरीन राजा 'भ्रभे', खग इण भात विखडियो ।
—रा रू

५ तोडना, मिटाना ।

उ०—१ इणइ वचनि धरणी ढलिठ, धर धर धूजइ देह । 'भ्रै भ्रै भ्रस मस हास तू, मुभू विखडइ नेह ।
—मा का. प्र

उ०—२ मित्र कलत्र स्यु नेह विखडिउ, तेह तराइ परभावइ । राजकुभरि परणीइ जि द्रोठि, जोई न सकइ भावि ।
—हीराणद मूरि

विखडणहार, हारी (हारी), विखडणियो—वि० ।

विखडिओडो, विखडियोडो, विखडचोडो—भू० का० क्र० ।

विखडोजणो, विखडोजवो—भाव/कर्म वा० ।

विखडणो, विखडवो—रू भे ।

विखडा-वि स्त्री —नाश करने वाली, संहार करने वाली ।

उ०—देवी कटका हाकणी वीर कवरी, देवी मात वागेसरी महागवरी । देवी दडणी देव वेरी उदडा, देवी वजया जया देता विखडा ।
—देवि

विखडियोडो-भू का. क्र.—१ मिटा हुआ, नष्ट हुवा हुआ. २ खण्ड

खण्ड हुवा हुआ टुकडे-टुकडे हुवा हुआ. ३ नाश किया हुआ, संहार किया हुआ, मारा हुआ ४ खण्ड-खण्ड किया हुआ, टुकडे-टुकडे किया हुआ ५ तोडा हुआ, मिटाया हुआ ।

(स्त्री विखडियोडी)

विख-वि. [स विख, विख्य] १ जिसकी नाक कटी हुई हो, नाक रहित ।

२ देखो 'विस' (रू भे) (भ्र. मा, डि. ना मा, ह ना. मा)

उ०—भाग विख अरावा प्राणि मार्ये भूडे, लडयडे अडे गैणाणि लागी । भूपेटा भाग किलमा करै भोवरै, नाग जिम राम रो खाग नागी ।
—राव भीममिघ हाडा रो गीत

उ०—२ हाथा रो जहडो हिलोहळ, तहडो कहियो जिफे तिके । 'जैसा' हरी जायने जोयी, विख अमरन हिक भाव विके ।
—नवळजी लाळस

उ०—३ विख पीजे कुण कारणै, ता सेनी मरि जाय । हरीया इभत पीव करि, कळि अजरामर थाय ।
—अनुभववाणी

उ०—४ साहिजिहान वराड भ्रप्रप सरप, महि अजमेर दराड मडाण । विख वळ गुमण आसनी वमियो, रहियो तेण अडभियो राण ।
—राव सत्रसाळ हाडा रो गीत

उ०—५ भ्रमिया गडड दवार थी, ज्यो विख निर विख होय । विसन जपता पाप ख्यो, वोहडि न करियो कोय ।
—वील्होजी

उ०—६ नेम कळू नही पेम, वझ्यो पखवाद में । हरिहा दास कहै हरिराम, रच्यो विख स्वाद में ।
—अनुभववाणी

उ०—७ इम पतसाह सुराँ अकूळायो, भ्रहि जाणै जूवल तळ आयो । भिलिया जाण सुरा विख भेळा, सोर अगन किर थया समेळा ।
—रा रू.

उ०—८ मिची लै अग्रमाणा, सीचो घोळ घी सहित । विख मो नीम वखाण, मीठी होत्रे न मोतिया ।
—रायसिंह साडू

३ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—राती रहै सदा विख रस में, पेम भगति नही भाय । लोक लाज काज फुळ माही, हरि पूज्यो न सुहाय ।
—अनुभव वाणी

विखअख-स. पु-सपै, सप ।

उ०—मेळ थया अग्रराज, हूत गजराज दहलै । गुरडपख गजिया, भाट विखअख न भल्लै ।
—ग रू

विखई-स स्त्री —१ इन्द्रिय । (भ्र. मा.)

२ देखो 'विसयो' (रू भे)

उ०—निज कूभ सिभ जुग वण अनोप, उतग सिखर घण सिखर ओप । कर लोल भुलत अति चपळ कान विखई मन जाणिक उकतिवान ।
—रा रू

विखड-देखो 'विखो' (रू भे)

उ०—थाह निहाळइ दिन गिराइ, मारु आसा लुध्व । परदेस घाघळ घणा, विखड न जाणइ मुध्व ।
—वो मा

विखकन्या-देखो 'विसकन्या' (रू भे)

उ०—किलच किलमा चाडि घडा कराकरा किया, हुवै हूकळ कळळ मैगळ हुवै । बिखकन्या वीदणी वीद भोजी विकट, जोजरी वरै मोटियार जोवै ।
—भोजराज खगारीत रौ गीत

बिखकर—स पु [स विषकिरि] मयूर, मोर । (ना. मा.)

बिखकसेन—स पु [स. विष्वक्सेन] १ ईश्वर । (ना मा)

२ विष्णु ।

३ श्री कृष्ण । (अ मा)

रू भे—बिखुकसेन ।

बिखगामी—वि [स विपमगामी] (स्त्री बिखगामण) विपम गति से चलने वाला ।

बिखणी, बिखवौ—देखो 'बीखणी, बीखवौ' (रू भे)

बिखणहार, हारौ (हारौ), बिखणियो—वि० ।

बिखिओडो, बिखियोडो, बिख्योडो—भू० का० कृ० ।

बिखीजणी, बिखीजवौ—कर्म वा० ।

बिखदाती—स. पु. [स विपदान्त] नाखून । (अ मा)

बिखघर, बिखघार, बिखघारी—देखो 'विसघर' (रू भे)

(अ मा., ह ना मा)

उ०—च्यार मजळ अजमेर सू, दामे 'अवरग' दुक्ख । ज्यौं बिखघर छच्छू दर, गिळै न त्यागं मुक्ख । —रा रू

उ०—२ चूर त्रिण तर पसर वनचर, कना मेटण तिमण रवि कर । धूप चख हर ज्वाळ, बिखघर धारि सुजहर । —रा रू

उ०—३ घर चलियो भाळ 'वव'हर बिखघर, भर वावी अजमेर भर । नाग दवण सत्रसल नेडाणी, डसै न राणी तेण डर ।

—राव सत्रसाळ हाडा रौ गीत

उ०—४ पथी अणपार, घुजै बिखघार । घुजै घर घोम, कसकूत कोम । —सू प्र

बिखनग—स पु —१ सीग या तेलिया नामक स्यावण विप ।

२ बछनाग नामक विप ।

बिखनजर—स स्त्री —१ कुटिल निगाह, बुरी दृष्टी । ३

२ शिव, महादेव ।

उ०—प्रहारै तिमर बिखनजर छाका पियै, धूमरा सत्रा खग घजर धावै । दिवाकर अजर सगराम सम सुर दुह, अवर छत्रघर नको नजर धावै । —कविराजा करणीदान

बिखभ—देखो 'ब्रखभ' (रू. भे)

बिखभधुज—देखो 'ब्रखभधुज' (रू भे) (अ मा)

बिखभ्र—देखो 'ब्रखभ' (रू भे)

उ०—भोळी नाथ भुतेस, सकर सिध दत रत सुरराणी । गज तुच बिखभ्र चहेस, वामदेव तस्मै नम । —मा वचनिका

बिखभ्रधुज—देखो 'ब्रखभधुज' (रू. भे)

बिखम—देखो 'विसम' (रू भे.) (अ मा)

उ०—१ जहर बिखम जारग, भुजा धारग भुजगम । भाल तेज भारग जरा हारग लसै जम । —सू प्र.

उ०—२ भुके नाग रा सीस त्रावाळ तासा रुडे, पाटवी राग रा बिखम हाका पडै । ओहि लागं गजव भुजा आभां अडे, 'जैत' मारु कटी कडा सिलहा जडै । —महादान महह

उ०—३ लाल वदन अवर सिर लागी, विक्रमादित जवनाहू वागी । बिखम धमक सावळ खग वाहै, मुनि छुडाय लीषा पल माहै । —सू प्र.

उ०—४ ऊचा डूगर, बिखम थळ, लागा किर तारेहि । कूटघइ करहुइ लधिया, घोडा म मारेहि । —ढो मा

उ०—५ काळ रौ विधेय करम करण पाळा ही चलाया अर बिखम दुग ओघट घाट रै कारण आपरा घोडा सिपाह पाछा ही भलाया । —व. भा

उ०—६ वपि असह जळ सुख उसण वल्लभ सुर कर हुइ सीतळ, उण किरण सिस निस जेम ओखम, बिखम हिम द्रुम विज्जळ । —रा. रू.

उ०—७ भवग मिळै मलीयागरी, लहरि बिखम की मेट । साध सदा मिळ करत है, राम नाम सुख भेट । —अनुभववाणी

उ०—८ वाकी कहै टळै दिन बिखमा, घणियाणी नै घाया । लोवडियाळ ताप नह लागै, ओळै धारै आया । —बा दा

बिखमगत, बिखमगति—देखो 'विसमगति' (रू भे)

उ०—हियै धारिया खान जुवान छिवती निहग अवर नर विसरै तणा अचभा । बिखमगत देख 'जसराज' खग वाहतौ, रही रथ साह गज-गाह रभा । —गु रू बं.

बिखमजुर, बिखमज्वर—देखो 'विसमज्वर' (रू भे)

उ०—हरि जिराह दारण हण्यां, जिकण बिखमजुर जाइ । विरह मिटावण वल्लहा, अर दो उहीज आइ । —र हमीर

बिखमता—देखो 'विसमता' (रू भे)

बिखमनयण, बिखमनेत्र, बिखमनेण—देखो 'विसमनयण' (रू भे)

बिखमबाण—देखो 'विसमबाण' (रू भे)

बिखमबाण—देखो 'विसमबाण' (रू भे.)

बिखमरी—देखो 'विसमरी' (रू भे)

बिखमबाण—देखो 'विसमबाण' (रू भे)

बिखमाजुष—बिखमाजुष, बिखमाजुष, बिखमायुष—देखो 'विसमायुष' (रू. भे.) (अ मा., ह. ना. मा)

विलमारिख-स. पु [स विपम+ऋक्ष] छोटे नक्षत्र ।

उ०—तिण वार वीरारस सगम, ग्रीष चील्ह नभ छाए विहगम ।
कळह का आगम सो विलमारिख, सार का काटा सचा पारिख ।
—रा. रू

विलमावरण-स पु [स. विपम+वर्ण] विपमवर्ण, दग्धाक्षर ।

उ०—कित्ता हुआ दिग्गज कवी, समुक्कणहार असेस । घुर रूपक
ज्याही घर, विलमावरण विसेस ।
—र. रू.

विलमी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—१ छायी गयण रभ रथ छाजे, विलमी पाख पाखणी वाजे ।
वावन वीर नचण वहवहिया, डेरू जटी चड डहडहिया । —सू. प्र

उ०—२ विलमी में सादूळ विलमीचद व्यास, मुरार का वाळ-
किसन साहस निवास । जहा जहा आप वणी बूभवे सरीखी,
कमघा के साथ वात व्यास पास सीखी । —रा. रू

उ०—३ वचन सुणी राजा डरपियो, करमा री ही घणी विलमी
वात । राय राणी दोनू कहे घर माहे ही घडी अफली जान ।
—जयवाणी

उ०—४ विजड विलमी चोरी पडठठ, मूक्यड कुडल नाग जी ।
वज्रघन नक्ष भेद जणाव्यड, साचड साहमी राग जी । —स कु

उ०—५ साची घणी विपत में सामी, तंड्या आवै तीजी ताळ ।
विलमी वाट तणी वोळळ, साई तू काळा तणी सुगाळ ।
—श्रीपी श्राढी

विलमीवार, विलमीवार-स. पु —१ दुदिन, बुरे दिन, दुख के दिन,
कण्टमय समय ।

२ अन्तकाल, मृत्यु समय ।

उ०—अजामेळ जमदळ अगा, विछट्यो विलमीवार । कीची
नारायण वहे, पुत्तर हेत पुकार । —ह र
रू. भे —विलम्मीवार, विलम्मीवार ।

विलमेणु-स पु [स विपम+ईपु] कामदेव ।

विलम्मी—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—१ वगा खगां साह दळ, माडेचा पण मड । वार विलम्मी
भेलणा, धादू नेम प्रचड । —रा रू

विलम्मीवार, विलम्मीवार—देखो 'विलमीवार' (रू भे)

उ०—भड पडिया 'सादूळ' रा, वीस विलम्मीवार । चंत इग्यारस
चानणी, असुरा सुणी पुकार । —रा. रू

विलयतप्रत-स पु [स विपयान्न कृत] शिव, महादेव । (अ मा)

प्रसय—१ देगो 'विधाय' (रू भे)

२ देगो 'विसय' (रू. भे) (अ मां, ह. ना मा.)

उ०—विलय विसहर डसिया, गारूडी लीगोव्यद । अति अग
भाजई लहर वाजई, जीवीई जगदानद । —रुकमणी मगळ

विलयारस-स पु [स. विपयस] विपयभोग, विलासिता ।

विलरणी, विलरवी—देखो 'विलरणी, विलरवी' (रू. भे)

उ०—१ हरसा म्हारा भाई रे, कुण बूभे मा विन मन री वात ।
ओदर रा रे साथी, कुण रे सवार विलरथा केसडा ।
—जीणमाता री गीत

उ०—२ अगि नीली भाभ लीआ वघाईदार दोडिया छै । नगर
माहे ओछव वघावीजे छै । मगळ गावीजे छै । गळिया गळिया
फूल विलरीजे छै । —रा सा. स

उ०—६ ना ना, श्री किसनू हरगिज न्ही व्हे सकै । बाळ विल-
रघोडा हाया-पगा पर मैल रा धारडा जम्योडा अर सरीर पर
फगत एक मैलोसोक कुडतियो । —अमरचूनडी

विलरणहार, हारी (हारी), विलरणियो—वि० ।

विलरिओडो, विलरियोडो, विलरघोडो—भू० का० कृ० ।

विलरीजणी, विलरीजवी—भाव वा० ।

विलरतन-स. पु [स. विकर्तन] सूरज, सूर्य । (ना मा)

विलराडणी, विलराडवी—देखो 'विलराणी, विलरावी' (रू. भे.)

विलराडणहार, हारी (हारी), विलराडणियो—वि० ।

विलराडिओडो, विलराडियोडो, विलराडघोडो—भू० का० कृ० ।

विलराडीजणी, विलराडीजवी—कर्म वा० ।

विलराडियोडो—देखो 'विलरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलराडियोडी)

विलराणी, विलरावी—देखो 'विलराणी, विलरावी' (रू भे)

विलराणहार, हारी (हारी), विलराणियो—वि० ।

विलरायोडो—भू० का० कृ० ।

विलराईजणी, विलराईजवी—कर्म वा० ।

विलरायोडो—देखो 'विलरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विलरायोडी)

विलरावणी, विलराववी—देखो 'विलराणी, विलरावी' (रू. भे)

विलरावणहार, हारी (हारी), विलरावणियो—वि० ।

विलराविओडो, विलरावियोडो, विलरावघोडो—भू० का० कृ० ।

विलरावीजणी, विलरावीजवी—कर्म वा० ।

विलरावियोडो—देखो 'विलरायोडो' (रू भे)

(स्त्री विलरावियोडी)

विलरियोडो—देखो 'विलरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विलरियोडी)

बिखवान-वि. [स विपवान्] विषयुक्त, जहरीला ।

उ०—सुख सिंगार, मानि अगार । तिराइ अबळा (अतरगत) फूला
कीघा वेगळा । चद तपइ पान, थया बिखवान । विरहानळ प्रज्वळइ
अगु, सखिजन सू विरगू । —रा सा स.

बिखवाद-वि [स विपवाद] १ विप के समान, विपतुल्य ।

उ०—एक नवि रहइ पुहर नइ घडी, एक आलोटइ आडी पडी ।
ध्यु बिखवाद पान नइ फूलि, एक रोआवि मुहुगि मूलि ।
—का दे प्र.

स पु—१ दुःख, पइचाताप ।

उ०—१ अजी लगं छोडें नहीं मा मोरी रै, सायर अपणी मरजाद
सुता हू तोरी रै । हरख विनोद हीर्यं घरा मा मोरी रै, परिहरि
मन बिखवाद सुता हू तोरी रै । —स्त्रीपाल रास

उ०—२ किस्या कहू गुण महाराजी, किस्या कहू, अपवाद । जेम जेम
सभारू हीर्यं जी, तेम तेम वधै बिखवाद । —वृस्त

उ०—३ लज्जाणी राजा धरु, मन धरती बिखवाद । नामता
माहरी थयो, लोका विचै अपवाद । —स्त्रीपाल रास

२ कलह, झगडा ।

उ०—बिखम धारिण बिखवाद, बिखयरस अगि न बाधइ । वखत-
वत वर विबुध, वान दिन प्रति बाधइ । —ऐ. जै. का स
३ विरोध ।

बिखसुघार-स पु [स. विपसुघार] घृत, घी । (अ मा.)

बिखहर-वि —विप का हरण करने वाला, विप का प्रभाव नष्ट करने
वाला ।

स पु—१ गरुड । (ना. मा)

२ विप का हरण करने वाली या विप का प्रभाव नष्ट करने
वाली औषधी या मंत्र ।

३ देखो 'विसधर' (रू. भे)

उ०—..... फूल बणराय न लगै । बिखहर चढे न विदख,
जळण अत होम न जगं । —चौथ वीरू

बिखहा-स पु [स. विपहा] गरुड । (दि. को)

रू. भे.—बिखहा ।

बिखाण—देखो 'विसाण' (रू. भे)

बिखाणण-स पु [सं विप+आनन] जिसके मुह मे विप हो, सर्प,
साप ।

बिखाणू - देखो 'बखाण' (रू. भे)

उ०—स्त्रीहरि जै सागरि सूइ छि, सहीए सर नवि जाणू ।
नारायण आगलि नारदजी सू ए सर नथि बिखाणू ?

—नञ्जाख्यान

बिखातक-स पु [स विप+अन्तक] शिव, महादेव ।

बिखान—देखो 'विसाण' (रू. भे.)

बिखानस—देखो 'बिखानस' (रू. भे)

बिखाइत—देखो 'बिखायत' (रू. भे)

उ०—पछै रिराधीर रिडमल नूं कह्यो, समझायो—ये बिखाइत
हुवा काय फिरी, नै वाप गी धरती री चीत करी नहीं, सु कुण
वासतै ? तरै रिडमल कह्यो—मोनू राव चडैं सुस लीरायो थो ।

—नैणसी

बिखाती—देखो 'बिखायत' (रू. भे)

बिखाद—देखो 'विसाद' (रू. भे)

उ०—अवतार अस 'अगजीत' ग्रह वस बिखाद पलट्टियो । रिठु
एण उदय चहुवाण रै, सुत 'अभमाल' प्रगट्टियो । —रा रू.

उ०—२ सासा धरम बिखाद वाद, विपरत बिलूधा ।

—केसीदास गाडण

बिखादी—देखो 'विसादी' (रू. भे.)

बिखायत बिखायती. बिखायती—स पु—१ किसी कारण विशेष से राज-
सत्ता के विरुद्ध होकर बगावत करने वाला व्यक्ति, राजद्रोही,
वागी ।

उ०—१ 'सूरी' 'केहर'सिध री, 'लखधीर' महस । भाटी आइ
बिखायतां, चाड मुरदर देस । —रा रू

उ०—२ वात वळं असुरा विसतारी, धर दिस असट विलासा
धारी । कितराई सुण भ्रमिया काचा,मवळ बिखायत रहिया साचा ।
—रा रू

२ सकटावस्था, विपम अवस्था ।

३ वह राजा, सामन्त या जागीरदार जिसका राज्य या जागीर
किसी राजा या बादशाह द्वारा जन्त कर लिया गया हो ।

उ०—१ तरै या ठाकुरा राणाजी नु कहची, "हाजीखान भलो
माणस छै, नै बिखायत थकी छै दीवाण वडो उपकार कीनो छै ।
सु हाजीखान नु आ वात कनाटिया री जुगत न छै । —नैणसी

उ०—२ इण खरच धरणी पूजवियो हुती । सु पछै रावळ घडमी
धरती वाळी, तरै सारा बिखायता नू बधारिया । —नैणसी

उ०—३ एक कोई बिखायत सूरवीर किय रै ही गढ में रहने वाने
काढ आप गढ अपणाय लियो गढ रा धरिया कयो जावी परा तरै
कहै ।

—वी स टी

उ०—४ दुमना थया बिखायती, मरता सामतसीह । थळ आयां
वळ ओढणा, सोई घमळ अवीह ।

—रा. रू.

वि—१ सकटग्रस्त, सकट से पीडित, दुःखी ।

उ०—१ महि दावण मेवाड, राड चाड अकवर रचें । विखें
विखायत वाड, प्रधुळ पहाड प्रतापसी । —दुरसी आढी

उ०—२ गाढा ३०१ सीधा रा भर चलाया सु जाय गढ पोहता,
सु वारहठ रतनू चद्रव माला री विखायत थकी महेचें रह्यो थो,
तिण जाणियो गढ माहरा ठाकुरा सु जाय । —नैणसी

२ लुटेरा, डाकू ।

रू भे —वखायत, विखाइत, विखाई, विखाऊ, विखायत. वखाइत,
वखात, वखायत, विखाइत विखाती ।

विखारी—देखो 'बिखारी' (रू भे)

विखावण—वि [स विज्वाण विश्वसनी भोजने इति पत्वम्] १ कष्ट
पीडित ।

२ भूखा ।

स. पु —भोजन । (ह ना. मा.)

विखासइ—स. पु —हृढ विश्वास ।

उ०—तच राड दुरयोधन ए विमासइ, हासउ हमीतु पडिउ विखासइ ।
'ए नारिरूपि नर राड कोई, कइ ईण रुपिइ इह पारथ होई ।

—सालिसूरि

विखिक—देखो 'विसिख' (रू भे)

विखिया—देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—१ दर स्तीक ईखद अलप, तुछ मदाक । श्रीछ तुछ रचक
अणू, श्री सुख विखिया आख । —अ. मा

उ०—२ राम भजी विखिया तजी, घर माही घर एक । ता घर सूं
लागा रहो, छाडो द्वार अनेक । —ह पु वा

उ०—३ सहजें जिणि विखिया तजी, पाचूं पसर मिटाय । सहज
सोई सत्य जाणिये, सतगुर हुचें सहाय । —परमानदजी वणियाळ

विखियात—देखो 'विख्यात' (रू भे)

उ०—१ इतें सुण सरव समराथ भड ऊठिया, वसु विखियात
कीरत वदीती । घात भड सोरसा वात सह घेरिया, वात करता
इतें रात वीती । —तिलोकदान वारहठ

उ०—२ श्रीपियो इखाग वम आससेण अग जात, वामा विखियात
मात जात आचें व द । एकीह अबीह सीह लोपें कुण लीह, एही
जाप घरें घरमसीह गोडीचो जिणद । —घ व अ.

विखीया—देखो 'विसय' रू भे)

उ०—१ जा घट पेम प्रगामीया, विखीया विकल्प नाहि । हरीया
छाना नां रहे, आया अतर माहि । —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भाठी पेम फी, इदर दई जगाय । पेम पीयाला
पीव करि, विखीया प्यास मिटाय । —अनुभववाणी

बिखुकसेन—देखो 'बिखकसेन' (रू भे)

बिखुटणो, बिखुटवो—फि. अ —बिछुडना ।

बिखुटणहार, हारो (हारी), बिखुटणियो—वि० ।

बिखुटिओडो, बिखुटियोडो, बिखुटयोडो—भू० का० कृ० ।

बिखुटीजणो बिखुटीजवो—भाव वा० ।

बिखुटियोडो—भू का कृ —बिछुडा हुआ ।

(स्त्री. बिखुटियोडो)

बिखेप—देखो 'विक्षेप' (रू. भे)

बिखेर—स स्त्री.—बिखेरने की क्रिया या भाव ।

२ देखो 'बिखेर' (रू भे)

बिखेरणो, बिखेरवो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरवो' (रू. भे.)

उ०—१ दूजें दिन सासरा माथे दुसमण आया तठें साळी न
बहनोई सगुआ नै पूगा तठें वीद वणीयेडे हीज ऋगडा रै भूखें
तरवारा आगं सरीर पुरजा कर बिखेरियो —वी स टी

उ०—२ राजी भीटा बिखेरचा ताचें माथे पकडयोडी वंठी है ।
दाता रै कोडी अर अलवण चढ रयी है । ठोडी लाळ्या अर थूक
सू भोज गयी है । —दसदोख

उ०—३ हुकम लेर भड हालिया, साह करा समसेर । जेभ न
कीधी जादवा, वाजत्र दिया बिखेर । —वी स. टी.

उ०—४ घण चम्मर सीस गयद घटा, जड-घारक मेर बिखेर
जटा । गडडति गुडता मत्त-गयं, गरजतिक जाणय गोरमय ।

—गु. रू व

बिखेरणहार, हारो (हारी), बिखेरणियो—वि० ।

बिखेरिओडो, बिखेरियोडो, बिखेरयोडो—भू० का० कृ० ।

बिखेरीजणो, बिखेरीजवो—कर्म वा० ।

बिखेराणो, बिखेरावो—देखो 'बिखेराणो, बिखेरावो' (रू. भे)

बिखेराणहार, हारो (हारी), बिखेराणियो—वि० ।

बिखेरायोडो—कर्म वा० ।

बिखेराईजणो, बिखेराईजवो—कर्म वा० ।

बिखेरायोडो—देखो 'बिखेरायोडो' (रू भे)

(स्त्री बिखेरायोडो)

बिखेरावणो, बिखेराववो—देखो 'बिखेरावणो, बिखेरावो' (रू. भे)

बिखेरावणहार, हारो (हारी), बिखेरावणियो—वि० ।

बिखेराविओडो, बिखेरावियोडो, बिखेरावयोडो—भू० का० कृ० ।

बिखेरावीजणो, बिखेरावीजवो—कर्म वा० ।

बिखेरावियोडो—देखो 'बिखेरावयोडो' (रू भे)

(स्त्री. बिखेरावियोडो)

बिखेरियोडो—देखो 'बिखेरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री बिखेरियोडी)

बिखेरी-स पु [स. विकीर्ण] १ बिखरे होने की अवस्था या स्थिति ।

३ बिखरी हुई सामग्री, अव्यवस्थित दशा में पडा हुआ सामान या कचरा ।

बि — फैला हुआ, व्याप्त ।

रू भे — बिखेरी, बिखोरी ।

बिखै—क्रि. वि — १ समय में ।

उ० — एक दिन री समाजोग छै । रात रँ बिखै पोढिया छै । तरै राणी चावडी मुहणी लाघी—'जु नाहर ३ आया छै । —नैणसी २ देखो 'बिसय' (रू भे)

उ०—१ स्त्रीपुर नाम नगर, तिरारै बिखै राजा सालवाहन राज करै छै । यू ईम घणा दिन बिता । तरै सालिवाहन देवगत हूवी ।

—रीसालू री वारता

उ०—२ आय न्रपति पूछी बिघ एही, सावधान हुय घरम सनेही । बिखै अग्यान घरम बीसारी, सूरजकुळ ची घरम सभारी । —सू प्र

उ०—३ पिलग पथरणा पोढणी, सदा सहेली सग । हरीया होसी भगति बिन, बिखै विलासा भग । —अनुभववाणी

उ०—४ गुर सन्नय गुर सुख की सीरा, गुर हँ दवन बिखै तन पीरा गुर अघहरण करन आनदा, गुर तँ मिटे भरम भय फदा ।

—अनुभववाणी

उ०—५ करत केल वन वन बिखै, मद उनमत्त गयद । ऊभा करै अकासिया, देख देख दिस चद । —गजरंडार

बिखैआगळ-बि. [स विप्+अगंला] विपत्ति में साथ देने वाला, दुख का साथी ।

बिखोड-स स्त्री —अप्रशसा, निन्दा, हसी ।

उ०—१ चारण पाछो बीसळदेजी पासं गयो । जाय नै कहची—'वाप ! मूळ आवै नही । तद मूळू रा राजा बिखोड किया ।

—नैणसी

उ०—२ ताहरा बिखोडी पाछो आयी । आयनं राजा नू कहची—वाप ! मूळू कोट में किसी तरह आवै ? म्हँ तो घणी ही कहची, पण आवै नही । ताहरा अठे गोरे वादळ मूळू रा बिखोड किया—'जु जाहरै, भला रजपूत ! आवणी हुती । —नैणसी

बिखोडणी, बिखोडबी—क्रि स —अप्रशसा करना, निन्दा करना, हसी करना ।

उ०—१ माळव देम बिखोडिया, मारु किया वखाण । मारु सोहागिण थई, सुदरि सगुण सुजाण । —ढो मा

उ०—२ घघ घरे करि द्वेस, वात मे हेत बितोडे । आप कियो तै अवळ, वल पर किया बिखोडे । —घ व ग्र

बिखोडणहार, हारी (हारी), बिखोडणियो—वि० ।

बिखोडिओडी, बिखोडियोडी, बिखोडचोडी—भू० का० कृ० ।

बिखोडीजणो, बिखोडीजवो—कर्म वा० ।

बिखोडियोडी—भू का. कृ —अप्रशसा किया हुआ, निन्दा किया हुआ, हसी किया हुआ ।

(स्त्री बिखोडियोडी)

बिखोरणी, बिखोरवी—देखो 'बिखेरणी, बिखेरवी' (रू भे)

बिखोरणहार, हारी (हारी), बिखोरणियो—वि० ।

बिखोरिओडी, बिखोरियोडी, बिखोरचोडी—भू० का० कृ० ।

बिखोरीजणो, बिखोरीजवो—कर्म वा० ।

बिखोरियोडी—देखो 'बिखेरियोडी' (रू. भे)

(बिखोरियोडी)

बिखोरी—देखो 'बिखेरी' (रू भे)

बिखो-स पु [स विप्+घेरना, मुठभेड होना] १ किसी राजा, सामन्त या जागीरदार जिसमें उसका राज्य या जागीर किसी अन्य राजा या वादशाह के द्वारा जन्त कर लिये जाने पर पडने वाला कष्ट, सकट या दुख ।

उ०—१ राव चद्रसेन बिखै माहे सीवाणा रँ भाखरँ रहती तद भीवला देवत कायलाणै रहता जोघपुर तुरक रहता, इतरी घणी विगाड करता । —राव चद्रसेण री बात

उ०—२ रावळ घडसी राणा रतनसी री बेटी मूळराज, रतनसी साकी कर मुंवा तद कमालदी नू आपरी बीज उन्नारणनू घडसी, ऊनड, कानड आपरा छोरू नै एक देवडी भाणेज कमालदी नू सुंपिया था । कमालदी नै मूळराज इण बिखा माहे भाएला हुवा था, पाघडी पलटी हुती । सु कमालदी री वर इणा नू छाना राखै ।

—नैणसी

उ०—३ छत्रपती छानो बिखै, अनपत्ती हित जोड । दिव्य धरत्ती आप री, तै खत्री कुल खोड । —रा रू

२ उक्त कष्टावस्था में, राज्य में सकटग्रस्त राजाओं, सामन्तो या जागीरदारो द्वारा की जाने वाली लूटखसोट या राजद्रोह ।

उ०—१ तद वादसाह औरगजेव जोघपुर तुरकाणी कियो जद राठीड दुरगदास आस करणीत बिखो कियो

—सुंदरदास विकपुरी भाटी री वारता

उ०—२ सो तुरक सुवायत री अमल नही होवणै दियो । वादसाही सहर मारिया लूटिया सो बडी बिखो हुवी फौजा लारै लागी फिरै पण हाथ न आयी । —सुंदरदास विकपुरी भाटी री वारता

उ०—३ अँ तो पाच माणस छँ मो सगळा ही महाराज रा चाकर छै आ हुवै तो बिखी करा ।

—राठीड राजसिंह कृपावत री बात

३ कण्ट, दु ख, विपत्ति, सकट ।

उ०—१ विखम विखी जिण वार, घोम धिखि हुवो भुरद्धर ।
दौडण लागा दुभळ, वडा तरवार बहादर । —सू प्र

उ०—२ जुग घरम सू डिगणा रें कारण म्हें खुद अणूती विखी
भुगतियोडो हू, पण अरव रोया काई साधौ लागं । —फुलवाडी

उ०—३ जकी विखी नानी, भटियाणीजी अर धू भुगतियो वी
म्हानं नी भुगतणी पडैला, विस्वास राख । अन्याय री वदळो हाथो-
हाथ लिरीजैला । —फुलवाडी

उ०—४ दळं तें वार किता दहकष, वाध्यो दधि देवा छोडण वध ।
विखी तें व्रज पडेती वार, घरें नख वार किता गिर-वार ।

—ह र

४ अशान्ति, क्षोभ ।

उ०—घरती माहें विखी थो । सगळा ठाकुरा रा गुढा भाद्राजण
था । उठें राठीड तेजसी डूगरसियोत री ही गुढी थो ।

—राव मालदे री वात

५ सकट का समय, कण्ट का समय ।

उ०—१ या मघकर हर वजिया, आद विखें अणुरेह । ज्या उलटें
मेघा रवी, सिद्ध पलट्टें देह । —रा. रू

उ०—२ इण नितनेम री श्री नतीजी व्हियो के थोडा ई दिना में
वादळ खुदोखुद ने किसन-भगवान री अवतार ई मानण लाग्यो
अर काली मासी लारली विखी भूलनं साप्रत जसोदा मैया वणगी ।

—फुलवाडी

उ०—३ तासूं भगवान कहे भार तुम कवें, पै आलम सूं जग काज
तेग हम वधें । विखें के तुम नायक और सब के भुदायत, सो जग
की ढील में वरस जैसी सायत । —रा रू

६ उपद्रव ।

उ०—भाटी पिण आया दळ भेळा, माण घणें चहुवाण समेळा ।
सरसी जोर हुवी पतसाहें, मद विखी पडियो घर माहें । —रा. रू
७ निर्धनता ।

८ विछोड, वियोग ।

उ०—१ दुनिया मे उण रें नाव री कीरत आप रें काना सुणू ।
वी दिन देखण वास्तं ई म्हें श्री विखी कवूल करियो हू । सेठा रा
वोल फळं । म्हारा वेटा नं लाठी मिनख वणियोडो देखूं ती आज
रें विखा री दाक ठरैला । —फुलवाडी ।

उ०—२ ह्यागळिया मसळी तो ई निवास नी आयी । अंडी वेजा रात
तो वं कदैई नी विताई । रगमेल मे मिरक पथरणा रें माय नवी
लुगाई रा कथळा कवळा वृक्रिया माथं माथी देय कंडा आराम सू
सूवता जे आ पोहरा वाळी तूमत नीं व्हेती तो । दीवाणजी नं आज

ठा'पडी के लुगाई रा निवास जंडी वासदी री ई नी व्हे । लुगाई
रा अभाव मे वानं लुगाई री असली पिछाण व्ही । लाख मोहरा
साटं ई अंडी विखी कुण अगेजं । —फुलवाडी

रू भे—वखी, विखही, विखी, वखी, विखठ ।

विखल—देखो 'विस' (रू. भे)

उ०—.....'फूल वणाराय न लगं । विसहर वडें न विखल,
जळण व्रत होम न जगं । —चीथ वीहू

विख्यात—स. पु [स] १ एक राक्षस जो तेरह संहिकियो मे से एक माना
जाता है ।

२ कवि । (अ मा)

वि. [स.] (स्त्री. विख्याता) प्रसिद्ध, मशहूर ।

उ०—१ कमधजा छात जिग वात क्रत, लय विट्यात सकळप
लियो । रिखि वयण आद वासिस्ट गग, कहिया तिम उद्यम कियो ।

—रा रू

उ०—२ थळ भाति गात निरतत थाळि, भ्रम जात व्रतन तन रूप
भाळि । जिण सक्ति परखि लजि तडिति जात, व्रत गवन पवन मन
ज्यो विख्यात । —रा रू.

उ०—३ वानरपति विख्यात वर, वेधु जाणी वालि । सहिजइ
सुग्रीव जु वरिउ, ताराइ तिणि तालि । —मा का प्र.

उ०—४ गलसेन महीपति वस विभूमण दिनमणी । जुसु सुयसा
माता, जगत विख्याता बहु गुणी । —वि कु.

रू. भे—विख्यात, वखात, विख्यात ।

विख्याति—स स्त्री. [स] १ प्रसिद्धि, शौहरत ।

२ कीर्ति, सुयश ।

विगडावात—स पु —एक प्रकार का वात रोग विशेष ।

उ०—अथ रोगा, कास स्वास उवर भगदर गुल्मवात गल्लवात
रक्तवात भस्मवात उष्णवात अग्निवात लोहवात लूतिवात हरसावात
आमवात सोफवात विगडावात कफवात साकिनोवात . ।

—व स.

विगध—वि [स वि+गन्ध] १ जिसमे किसी प्रकार की कोई गध न हो
२ जिसमे विशेष प्रकार की सुगन्ध हो, सुगन्धदार ।

विगडणी, विगडवी—देखो 'विगडणी, विगडवी' (रू. भे)

उ०—१ रूपक कुकवी रसणसू, विगडें यू रसवत । ज्यू विसफोटक
रोग वस, वप सोभा विगडत । —वा दा

उ०—२ राव नू सराप दियो । कह्यो—“थाहरी गढ जाजो ।
थारी मत अस्त हुई, गढ तुरका नू देईस । तू तुरका री (वहू) नू
सेवीस, अरवत पडीस, घूड खातो फिरीस ।” श्री साप हुवो । राव री
मुंहडो विगडियो । —नैणसी

उ०—३ खानो भोग करम छै रोग ना रे, विलसंता विगडत ।
सुख थोड़ी न दुख घणो अछै रे, रीकै कुण मतिवंत । —जयवाणी

उ०—४ घणो खडा जब खेत में, विगडन कू कुछि नाहि । जन
हरीया हरि सा घणो, वयु डरपं जुग माहि । —अनुभववाणी

विगडणहार, हारी (हारी), विगडणियो—वि० ।

विगडिओड़ी, विगडियोड़ी, विगडघोड़ी—भू० का० कृ० ।

विगडीजणो, विगडीजवो—भाव वा० ।

विगडाणी, विगडावो—क्रि स —विगडने के लिए प्रेरित करना ।

विगडाणहार, हारी (हारी), विगडाणियो—वि० ।

विगडायोड़ी—भू० का० कृ० ।

विगडाईजणी, विगडाईजवो—कर्म वा० ।

विगडायोड़ी—भू का कृ —विगडने के लिए प्रेरित किया हुआ ।

(स्त्री विगडायोड़ी)

विगडायल—देखो 'विगडायल' (रू भे)

विगडियोड़ी—देखो 'विगडियोड़ी' (रू भे)

(स्त्री विगडियोड़ी)

विगडी—स. स्त्री —दुरावस्था, बुरी अवस्था ।

उ०—सुघरी मे सौ वार, मदत करै मन मोडिया । विगडी में इक
वार, फोड़ न रे'वै, किसनिया । —अग्यात

विगडैल—देखो 'विगडायल' (रू भे)

विगट—देखो 'विकट' (रू भे)

उ०—१ बाटि विगट वंराट की, पहुँचैगा कोई सूर । हरीया कायर
थकि रहषा, दरगह रहीया दूर । —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया घट में अघट है बाकी ठोड विगट । विन गुर गम
खूल्है नही, भरम करम का पट । —अनुभववाणी

विगट्ट—वि —ट्ट ।

उ०—गिराव गड्ड गड्ड को विगट्ट छहुती वहे, वकारि वैरि ब्र द को
डकार डहुती वहे । वहे निसक वक की विवक कहुती वहे, रहेसु
सक रक की विसक बहुती वहे । —ऊ का.

विगत—वि —१ अन्तिम या बीते हुवे से पहले का ।

२ जो कही इघर उघर चला गया हो ।

३ निष्प्रभ, कान्निहीन ।

४ रहित, विहीन ।

स. स्त्री.—१ विवरण, व्यौरा, वृत्तान्त, हाल ।

उ०—१ आया दूत खुम्याळी आई, साह मरण ची विगत सुणाई ।
ताता घोडा हुई तयारी, अघपति सुणत कीध भ्रमवारी ।

—रा रू

उ०—२ कहियो न्य प्रज भय किणसु, ज्वाळामुखी न पूजै
जिणसु । भाणउदीप विगत सुण भारी, विवर्वत सकति पूजि
विसतारी । —सू प्र.

उ०—३ चिंतातुरा दुचित, विगत सुव दावो वाता । पुण डट
करग जोडै पभण, कहर कळह किमणा किया । —मा. वचनिका

उ०—४ तं देखी, तिणि पूछियउ, कुण ए राजकुमारि । किह
पीहर, किह सासरउ, विगतइ कहइ विचारि । —डो. मा

२ हिमाव ।

३ इतिहास ।

४ परिचय, जानकारी ।

उ०—सव सरीखी देखी रूपि, विगत न लही तेहनी भूमि । तं देखी
चतुरपणउ ए इम्य, राजा हियडा भीतरि हस्य । —हीराणुद सूरि
५ सूची, नामावली ।

उ०—सवत १६१३ हाजीखान सू राजाजी रं अदावदी हुई जद
राव मालदेजी आपरा उमराव हाजीम्वारी मदद मेलिया ज्यारी
विगत—राठोड देवीदास जैतावत, रावळ मेहराज हाफावत ..।

—वा दा क्यात

६ वर्णसूची, तफसील ।

७ घटना ।

८ सत्या, गिनती ।

[म वि = विशेष + गति = मोक्ष] ६ विशेष मुक्ति या मोक्ष ।

[स वि = रहित + गति = मोक्ष] १० वह प्राणी जिसकी मरणोप-
रान्त गति या मुक्ति नहीं हुई हो ।

रू भे —विगत, विगति, विगनी, विगत, विगति, विगती, विगय
विगिति ।

विगतरणो, विगतरणो—क्रि स —निंदा करना, अपकीर्ति करना ।

विगतरणहार, हारी (हारी), विगतरणियो—वि० ।

विगतरणोड़ी, विगतरणियोड़ी, विगतरणघोड़ी—भू० का० कृ० ।

विगतरीजणो, विगतरीजवो—कर्म वा० ।

विगतरणोड़ी—भू का कृ —निंदा किया हुआ, अपकीर्ति किया हुआ ।

(स्त्री विगतरणोड़ी)

विगतवार—क्रि वि.—व्योरेवार ।

उ०—या मर्म आजानवाह जेन मरदार, कवि जेतं जानं सो बखानं
विगतवार । पहलं सोनग साह विवै के सहायक, जोडै दुरगसाह
हम वम का जो नायक । —रा रू

वि —विस्तार के साथ, विस्तारपूर्वक, विस्तारगुक्त ।

उ०—१ म्है पूछघो—बाबा, वो जाट कीकर कुत्ता री कडिया
भागी । म्हनं सावळ विगतवार, वात माहनं वतावी । थारं मूडें
वात मोपं घणी । —फुलवाडी

—फुलवाडी

उ०—२ दीवाणजी तुरत जवाब नी दे सक्या ती राजाजी वानी पुरी बात विगतवार बताई । तद दीवाणजी कह्यो—अंदाता, अँ सगळी जूनी बाता अगँ ई मिटावणा सृ ती राज मे रुळियी मच जावैला ।
—फुलवाडी

३ क्रमश ।

उ०—१ इण वास्तं म्हारा मूडा सू थनं सगळी वाता विगतवार बताई । दूजा ती सगळा म्हारो ई कसूर बताव । अवं थू ई बता म्हँ काई बेजा काम करियो ।
—फुलवाडी

उ०—२ इटरव्यू रा विगतवार समाचार ती पछें सूरज रँ मूडा सृ इज सुण्या । बणनं इटरव्यू वास्तं जिकण कमरा में बुलायो वो एक छोटी-सोक कमरो ही ।
—अमर चूनडी

रू भे—वगतवार, विगतवार, वगतवार ।

विगताणी, विगताबी—क्रि. स —१ सूचित करना, सूचना देना ।

२ समझाना, सतकं करना ।

३ जानकारी देना, समझाना ।

उ०—रगण जगण गण रगण रचाइ, वरँ जगण गुर लुघ विगताइ आसर चउवह एण उपाइ, सुणिजी रूप कहा विधिसाइ ।

—ल. पिं

विगताणहार, हारो (हारो), विगताणियो—वि० ।

विगतायोडो—भू० का० कृ० ।

विगताईजणो, विगताईजवो—कर्म वा० ।

विगताणी, विगतावी, विगतावणी, विगताववी, विगतावणो, विगताववो ।
—रू० भे०

विगतायोडो—भू का कृ.—१ सूचित किया हुआ, सूचना दिया हुआ. २ समझाया हुआ, सतकं किया हुआ ३ जानकारी दिया हुआ ।

(स्त्री विगतायोडी)

विगताळू, विगताळू, विगताळो, विगताळो—वि (स्त्री. विगताळो) १ चरित्र वाला, लीलाघारी ।

उ०—१ किसन धवं कूकडा, वाट वाघं विगताळो । दही तणो लँ दांण, छाधि ढोळं छोगाळो ।
—पी व्र

उ०—२ ताळि नको नको जदि ताघड, आभ न उडगण अरस न अनड । क्रम्म न धम्म नको जदि काळो, ब्रह्मड रूप नमो विगताळो ।

—मा वचनिका

२ सुन्दर, मनोहर ।

उ०—ती वारू राजा रँ अहि डसीया, पछी माहरा साहिवा, भनगसेना इण नांम रँ, वेस्या विगताळो ।

—वि कु

३ अयवित्र, अशोच ।

उ०—अनि नर नारि पसू पखि वाळो, वप छाया न पडै विगताळो । करि सिनान अस्टम दिन काढं, चचळ सोळ भास भकि चाढे ।

—सू. प्र.

४ सुरुचिपूर्ण ।

उ०—साहिवा काइ मउज करो नई, साहिवा काइ मउज करउ । मउज करउ काइ अग सुहाता, सुणि सुणि नै विगतालो वाता ।

—वि कु

५ शौर्यपूर्ण, वीरतायुक्त ।

उ०—ती 'केहर' कहिजँ सताव, वाइक विगताळो । कूदि पडा गज कटहडा चढि गौख विचाळो ।

—सू प्र

६ प्रिय, प्यारा ।

उ०—'वाकीदास' कळह विगताळो, वाघं करा रिणम्मल वाळो । सामावत खग चद सवायो, दूजा अणो दिसो दरसायो । —रा रू ७ वीर, बहादुर ।

उ०—हू पिरणासू हिदवा, तुरका हर टाळं । सै कुण हिदू हम सुणा, जिसकू पिरणाळं । पिरणा सू सगपण करँ, वीरम विगताळं । जद पाचो कहियो 'जसू' आगम अकलाळं ।

—वी मा

रू भे—विगताळू, विगताळू ।

विगतावणी, विगताववी—देखो 'विगताणी, विगताबी' (रू भे)

विगतावणहार, हारो (हारो), विगतावणियो—वि० ।

विगताविओडो, विगतावियोडो, विगताव्योडो—भू० का० कृ० ।

विगतावीजणो, विगतावीजवो—कर्म वा० ।

विगतावळो—स. स्त्री.—सूचि ।

विगतावियोडो—देखो 'विगतायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विगतावियोडी)

विगति, विगती—स स्त्री —१ अवस्था व हालत ।

उ०—कहा वसे मन उनमनी कहा, कहा क्रम चासी करँ । ब्रह्मड पिडि एका विगति, उपख्यान वेद किम उचरँ ?

—सुरजनदास पूनियो

२ फकं अन्तर, भेद ।

उ०—२ जो सोळह कळा सृ पूरण पूरणमा को चद्रमा थो । सु पणि आपणो उजळता करि आकास सी मिळि गयो है । एती विगति नही लाभे छँ । जु इह आकास छँ कि चद्रमा छँ ।

—वेलि टी

३ देखो 'विगत' (रू भे)

उ०—१ पच विगति सुत पच प्राणा लुक्त, पच तत्व अन्है दाखु । पंचमी ले नइ जै क्रम करता, सिधि सब दई ईम भाखु ।

—रुमणी मगळ

उ०—४ आवी खबर अचित प्रगट चिंता भूपाळो । दळ असेस दुरवेस, सुणै विगती अडसाळो ।

—रा रू

उ०—३ वेगि लिखीजें विगति, रवद जिम सर्फे दुरगा । एक उतन ऊपना, जुडा द्वापुर जिम जगा । —सू प्र

उ०—४ अति प्रकाम गति भेद अति, विगति एह विसतार । आदि आदि कहिया इता, सति प्रबध ततसार । —सू प्र

उ०—५ प्रगट गाम पुर धखै अश्रवळ, मार-लियो वहुता पुर मडळ । श्रोपत माथा मिळै अलेखै, लूट तणीं विगति कुण लेखै । —रा रू

उ०—६ पखा पन्वी सवकी मिलै, जहर भरचा मुख नाग । जन हरिदाम बोल्या विगति कहा कोयल कहा काग । —ह पु वा

उ०—७ मुहर विगति कीजें दस मात्र, पछे वळें दस दस कविपात्र । सुण चौपे फेरै कल मात्त, वदिच चरण पुलणा विख्यात । —पि प्र

उ०—८ भणि तेरह सौ छामठि भेद, विगति मात्र मोळह धू वेद । आखर लुघू गुरु इगिआर, वटां सुभकर छद विचार । —ल पि

उ०—९ विगति लहै त्रिरहा तणी, त्रिरही मागम तेह । 'लालचद' कहइ भोवतइ, कहियइ न जावइ तेह रै । —प च चौ

उ०—१० अध्यातम मरम विसतार वावन अखर ससाकित सकति विगति सूफे । पाढगति गीत सगीत समभण पौहचि, वहतगी कटा खट भाव वूफे । —ल पि

विगत, विगति, विगती—वि [स वि=विशेष+गति, चाल] १ तेज गति वाली, तीव्रगामी ।

उ०—मतसागर उनमती, वीणा सुर मधुरे वावती । वाहण हम विगती, साय सुप्रसन हश्री सरमती । —गज चढार

२ देखो 'विगत' (रू भे.)^१

उ०—१ उल्लसै वेळ परसे अरस, ग्यान न लोक विगत री । जग करण लोप अतक जिसी, इसी कोप असपन री । —रा रू

उ०—२ सत्रु वाडि सीस पूजै सकति, वाटेल कहाया इण विगति । इम लीघ मडळश्रीखी उदार, घर समद वीटि गढ सखीघार । —सू प्र

उ०—३ तइ हीडू किया तुरक, विप्र ती भूल विटाल्या । वणिफे गई विगति, राक करि लगरि राल्या । —म कु

उ०—४ एक हस्ति आरही, ब्रखम अस उस्ट्र विगती । सरम चील साहूळ, रोछ वदर तर रती । —रा रू

विगन—'विघ्न' (रू भे.)

विगनान, विगन्यांन—देखो 'विग्यान' (रू भे)

उ०—विगन्यान ग्यान तु हिज विपति तु अछेद अमेद तन । अविगत नाथ केवळ अलख, पाप निही तूं कोइ पन । —पी अ

विगपति—देखो 'विग्यति' (रू भे.)

उ०—कारण कवण वयण लघु काया, महमा प्रवळ ईस्वरी माया । पुरां भडा विगपति धरि पीरस, जुघ होसी ती विजै हसी जस । —सू प्र

विगय—देखो 'विगत' (रू भे.)

उ०—खेचर चरम रोमपखी चमचेड कपोत, मनुज लोक धी वाहिर समुग विगय पख होत । सरवै जळ थळ खचर समुच्छिम गम्भय दौय, कम्म अकम्म भूमि अतर दीव मणुजोय । —वृ. स्त

विगर—देखो 'वर्गर' (रू भे)

उ०—१ बाहा बाघै राठवड, विगर सनाहा अग । वागा केसर आरिया, हुयगा सोण सुरग । —रा रू

उ०—२ कवण अखैवड विगर, प्रळै सागर तिर सोमै । कवण विना सुखदेव, देव माया नह लोमै । —रा. रू

उ०—३ हिव कै गाढ घणी करै । जीमै मत ही । अर तूं जोर घातै, म्हारी वहु हु ने नै जाइम्यु । अर जै न मेल्है ती लाकडी वहाडै । पिण वहु विगर लीया घरै मता आए । —कावळी जोइयो नै तीडी खरळ री वात

विगल—देखो 'विगुल' (रू भे)

विगलिदीय विगलिद्रिय—देखो 'विकलेंद्रिय' (रू भे.)

विगलित—वि [सं.] १ जो चूकर या टपक कर निकल या गिर गया हो ।

२ जो पिघल या धुल गया हो ।

३ शिथिल ।

४ विगडा हुआ ।

५ म्लान ।

उ०—पति पवन प्रारथित श्री तत्र निपतित, सुरत अत केहवी स्त्री । गजेंद्र क्रीडता सु विगलित गति, नीरासइ परि कमलिनी । —वेनि

६ विसर्जित ।

७ अस्तव्यस्त, विखरा हुआ ।

विगवत—वि—लम्बी यात्रा करने में समय ।

उ०— धरणि ते जे सीलवति, छइल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवति, वस्य ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, घान्य ते जे आहारवत, साधु ते जे क्षातिवत, करह [ते] जे विगवंत, तुरग ते जे वेगवत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मत्रि ते जे बुद्धिमंत, कर ते जे वीर्यवंत, राय ते जे प्रसस्य जातिवत । —व स

विगतणी, विगतनी—देखो 'विकसणी, विकसनी' (रू. भे.)

उ०—१ सुहाळ मिडिया आवि अडिया, सुहड अंगी अगि । नर सीस विहसई वदन, विगतसई, सेल बाहई सगि । —रुकमणी मगळ

उ०—२ हस बोली खेले ससि हसि, विगसे कमळ घणा चद्रवसी ।

जोत वाग भळकें मिळ नदि जळ, चमकें मंगर उछळें चचळ ।

—सू प्र

उ०—३ आगत मुख विगसै नही, जावत नहि कमळाइ । 'सम्मन' श्रैसै नीचकें, नीच हुवै सो जाइ । —सम्मन

उ०—४ भाएजा नै देख्या, म्हा रो कवळ विगसै, भतीजा ने देख्या म्हा रो मन हसै, वीरै रै आगए आवो मोरियो । —लो गी.

उ०—५ पोह विगसो पगडो हुवो, कूकडें दीन्ही वाग । उठ बदा कर बदगी, क्यो साहिव पास्यो माग । —ऊदो नैए

उ०—६ धोक पूज मे दिन गया, आन देव कें नाय । जी' रो देख' र विगसियो, जाय हमारे गाय । —अनुभववाणी

उ०—७ चगा रूप देख मत विगसो, मल मतर की देहा । जन-हरिराम भसम हुय जासी, नाव विना सब नेह । —अनुभववाणी

विगसाणहार, हारो (हारी), विगसाणियो—वि० ।

विगसाणियोडो, विगसाणियोडो, विगसाणियोडो—भू० का० कृ० ।

विगसाणियो, विगसाणियो—भाव वा० ।

विगसाठणी विगसाडवो—देखो 'विकसाणी, विकसावो' (रू भे)

विगसाडणहार, हारो (हारी), विगसाडणियो—वि० ।

विगसाडणियोडो, विगसाडणियोडो, विगसाडणियोडो—भू० का० कृ० ।

विगसाडणियो, विगसाडणियो—कर्म वा० ।

विगसाडियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विगसाडियोडो)

विगसाणो, विगसावो—देखो 'विकसाणी, विकसावो' (रू भे)

उ०—घुंघट श्रोत सलाम गह, कवलि कवलि विगसाय । हसतो लजति उमगति, ऊभो सनमुख आय । —पना

विगसाणहार, हारो (हारी), विगसाणियो—वि० ।

विगसाणियोडो—भू० का० कृ० ।

विगसाणियो, विगसाणियो—कर्म वा० ।

विगसायोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विगसायोडो)

विगसायणी, विगसावयो—देखो 'विकसाणी, विकसावो' (रू. भे)

विगसायणहार, हारो (हारी), विगसायणियो—वि० ।

विगसायणियोडो, विगसायणियोडो, विगसायणियोडो—भू० का० कृ० ।

विगसायणियो, विगसायणियो—कर्म वा० ।

विगसावियोडो—देखो 'विकसायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विगसावियोडो)

विगसियोडो—देखो 'विगसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विगसियोडो)

विगहा—देखो 'विकल्था' (रू. भे.) (जैन)

विगानो—देखो 'वेगानो' (रू भे)

उ०—लैरा लैरा रै लै चल राकणा, लोक विगाना धारी मुक्त विगाना, अपना नही कोई साजणा । —रसीलै राज रा गीत

विगाड—देखो 'विगाड' (रू भे)

उ०—१ रावळ भोजदें नू कहाडियो, आगें आदमी मेल—म्है पवारां ऊपर आवू जावा छा, तू आगे खवर मत देई । म्है धारो विगाड क्यू नही करा, तू थारा लुद्रवा माहै बंठी रहै । —नैएसी

उ०—२ ऊदो ऊगमणावत इंदो महेवें रावळ मलीनाथजी रो चाकरी करै । तद वाघ एक गोयाणा रै भाखरा रहै सो देस माहै विगाड करै । ताहरा रावळ जी राजपूतानू हुकम दियो—'चौकी छी' । —नैएसी

उ०—३ तद कुवरसी कही, "जो थाहरें दाय आवें, सो खरी । वात छानी न रहिसी, जद विगाड हूसी । म्हारो ती जीव हमें थाहरें हाथ छै । चित मे आवें त्यूं करी" । —कुवरमी साबला रो वारता

विगाडणी, विगाडवो—देखो 'विगाडणी, विगाडवो' (रू भे)

उ०—१ भड अजमाल कमधरा, वळिया देस विगाड । खागें एता खडिया, जेता मडी राड । —रा रू

उ०—२ पाप दणै तिण हीण प्रवाडै. वळियो मुहकम वदन विगाडै । आलम खडिया दक्खण ऊपर, कामवगस ऊपर चढ कुंजर । —रा. रू.

उ०—३ विगाडो ठोड जब भिस्टी, अज हू मरें नही दुस्टी । हुको स्वान ज्यू देवें, दुख सुख खबर नही लेवें । —ऊदो नैए

उ०—४ सु उठै जागळू रा कोट नजीक गूढी छै तठै रहै छै, नै रूप रा विगाड नू दौडै छै । नै श्रै साखला रो वेरा पाणी नै जाय सु दहिया रा कवर ४० तथा ५० भंळा हुमा फिरें छै । —नैएसी

उ०—५ राम विना कुण राखसी, कुण खेती किरसाण । नही तो चिडें विगाडिसै, हरीया चेत अनाण । —अनुभववाणी

उ०—६ सो वा सुरग री वेस्या तिकण सोक री चार मईना कुसग रहसी ४ महीना क्यू कि पेट में आघान है सो च्यारा मइना जनमिया पछे सत कर सुरग मे जाय पती नै पाछी लेवूं जितरें कुलटा आवत विगाड देसी । —वी. स टी.

विगाडणहार, हारो (हारी), विगाडणियो—वि० ।

विगाडणियोडो, विगाडणियोडो, विगाडणियोडो—भू० का० कृ० ।

विगाडणियो, विगाडणियो—कर्म वा० ।

विगाडियोडो—देखो 'विगाडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विगाडियोडो)

विगाडू-वि — १ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला, विगाडने वाला ।

उ०—कुल न्यात हीण फीटा कुटल, जिके विगाडू जात रा । मम सेंग वात सुगण्यी मती, रहण न दीज्यी रात रा । —ऊ का

२ विध्वंस करने वाला, विध्वंसक ।

रू भे.—विगाडू, विगार, विगारू ।

विगाडो—देखो 'विगाड' (अल्पा, रू भे) २

विगाथा—देखो 'विगाहा' (रू भे)

विगार—देखो 'विगाड' (रू भे)

उ०—जनहरीया मन मिरघ ज्यु, बरज्यो केनी चार । काया वारी वीच में, करि करि जाहि विगार । —अनुभववाणी

विगारणो, विगारवो—देखो 'विगाडणी, विगाडवो' (रू भे.)

विगारणहार, हारो (हारो), विगारणियो—वि० ।

विगारिओडो, विगारियोडो, विगारयोडो—भू० का० कृ० ।

विगारीजणो, विगारीजवो—भाव वा० ।

विगारियोडो—देखो 'विगाडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विगारियोडो)

विगारू, विगारू—देखो 'विगाडू' (रू भे)

उ०—रथू के घमसाण जिमक देल लजावे मुधाभुज के विमाण, अवरही कारखाने तिस तिस के ओघायत अपनी अपनी जिनसू ले आय, जिम मायत परदळ के विगारू निज दळ के किवाड ।

—रू रू

विगास—देखो 'विकाम' (रू भे)

विगासणो, विगासवो—देखो 'विकासणी, विकासवो' (रू भे)

उ०—ओउ सर सोउ देखा दोउ, पारब्रह्म परछदा है । ममाह्य पास कवळ विगास, अरघ नाव आखदा है । —अनुभववाणी

विगासणहार, हारो (हारो), विगासणियो—वि० ।

विगासिओडो, विगासियोडो, विगास्योडो—भू० का० कृ० ।

विगासीजणो, विगासीजवो—भाव वा० ।

विगासियोडो—देखो 'विकासियोडो' (रू भे)

(स्त्री विगासियोडो)

विगाह—देखो 'विगाहा' (रू भे.)

उ०—गाहा मात्र सतावन गावे, गाहो उलट विगाह गिरावे ।

चौपन मत गाहू उचरीजे, उगाहो मत साठ अखीजे । —र ज. प्र.

विगाहन—स पु —मुकुटवश मे उत्पन्न एक कुलागार राजा, जिसने अपने दुर्व्यवहार के कारण अपने जाति बांधवों का एव स्वजनों का नाश किया था ।

विगाहा—स. पु [सं विगाथा] आर्या छन्द का उद्गीति नामक एक भेद विशेष जिसके प्रथम चरण मे १२ मात्राएँ, द्वितीय चरण मे १५ मात्राएँ, तृतीय चरण में १२ मात्राएँ और चतुर्थ चरण में १८ मात्राएँ होती है ।

उ०—प्रथम विगाहा अरघ प्रति, वहिकल सत्रावीस । परदळ माहि त्रीस परिण, तविजे मात्रा तीस । —पि. प्र

रू. भे —विगाथा, विगाह, विगाहा ।

विगिति—देखो 'विगत' (रू. भे)

उ० परा है में मात्रा प्रसतार, विगिति विधोगति वेत विचार । घुर लें गुर हेठे लुष धारि, आगळि हुवे तिसी अगुहारि । —ल. पि.

विगुण—वि —गुणरहित, निर्गुण ।

विगुल—देखो 'विगुण' (रू भे)

विगूचणो, विगूचवो—देखो 'विगूचणी, विगूचवो' (रू. भे)

उ०—तम्ही वनमाहा विगूचु, हूँ करू पीहरि राज । कथ, तँ किम नोपजि, कुलवतो थो ए काज । —नळास्थान

विगूचणहार, हारो (हारो), विगूचणियो—वि० ।

विगूचिओडो, विगूचियोडो, विगूच्योडो—भू० का० कृ० ।

विगूचीजणो, विगूचीजवो—भाव वा० ।

विगूचियोडो—देखो 'विगूचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विगूचियोडो)

'विगूचणो, विगूचवो—देखो 'विगूचणी, विगूचवो' (रू भे)

विगूचणहार, हारो (हारो), विगूचणियो—वि० ।

विगूचिओडो, विगूचियोडो, विगूच्योडो—भू० का० कृ० ।

विगूचीजणो, विगूचीजवो—भाव वा० ।

विगूचियोडो—देखो 'विगूचियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विगूचियोडो)

विगूत—वि [स विगुत] १ छुपा हुआ, गुप्त ।

विगूतणो, विगूतवो—क्रि अ — १ कष्टमय होना, दुःखित होना ।

उ०—१ बंदरभी विरहि विगूतो, वनमाहा वोलि बाली । 'धाम एकली भूकी न जाइ, नैख रा, तम टाळी । —नळास्थान

उ०—२ मन ही सकळप विकळप है मन ही, मन जाग्रत मन सूता । मन ही त्याग चलै वीह माया, मन ही लाग विगूता ।

—अनुभववाणी

२ निन्दित होना ।

उ०—१ किया धपाय पोखण के लाई, अपति कदै न सूता । लोकी लाज मरै जा वार्त, बोहळि वार विगूता । —वील्हीजी

उ०—२ “गजवधी” सीह विरत्ता, दखणी दल भाजि विगूता ।
वालापुर महिकर छोडै दखणी दल भागा होडै । —गु. रू व
३ बर्बाद होना, नष्ट होना ।

उ०—गावै राघो सीभणी पात गाडो, आगै वाणी यू ‘किसनेसे’
आडो । तै भूला राघो, विगूतो भवि त्यारी, जाणैसी पीछै वडो
भाग ज्यारो । —र ज प्र

उ०—२ चद्र क्षयी, शुक्र काणउ, मनीस्वर कूबडउ, आदित्य
तापकर, अरुण पाकुलउ, मंगल वक्र, समुद्र खारु, रावण परस्त्री
कारण विगूतउ, श्रीराम रहइ धनवासु, सीता रहइ वियोग,
पाडव कीरव विरोध । —व स

४ छुपना, लुफना ।

५ कौसना ।

उ०—विस्व मिलिउ विधि विधि तराउ, हुउ तै हाहाकार । विधि
विगूती विलपती, नारि रही निरधार । —मा. का. प्र.

६ ढका हुवा होना (श्रोडा हुवा होना) ।

उ०—जिम नीद्र भरि हुई सुखि सूता, तेम कीरव ति नीद्र विगूता ।
करण मुख्य न्रप मौलि पटउला, वेगि उत्तरि लीया तिणि हेला ।

—सालिसूरि

विगूतणहार, हारो (हारी), विगूतणियो—वि० ।

विगूतिश्रोडो, विगूतियोडो, विगूत्योडो—भू० का० कृ० ।

विगूतीजणो, विगूतीजबो—भाव वा० ।

वगूतणो, वगूतधी—रू० भे० ।

विगूतियोडी—भू का कृ.—१ कष्टमय हुवा हुआ, दु खित हुवा हुआ
२ निन्दित हुवा हुआ ३ बर्बाद हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ।
४ छुपा हुआ, लुका हुआ. ५ कौसा हुआ. ६ ढका हुआ
(श्रोडा हुआ) ।

(स्त्री विगूतियोडी)

विगूवणो, विगूवयो—देखो विगोणी, विगोबी’ (रू भे)

उ०—विहि ।इ रहिइ वारी वली, मुक्क सिउ मडि म आडि ।
माघवनइ तूं नहीं गमइ, घगू विगूविसि घाडि । —मा का प्र

विगूवणहार, हारो (हारी), विगूवणियो—वि० ।

विगूविश्रोडो, विगूवियोडो, विगूव्योडो—भू० का० कृ० ।

विगूवीजणो, विगूवीजबो—कर्म वा० ।

विगूवियोडो—देखो ‘विगोयोडो’ (रू भे)

(स्त्री. विगूवियोडी)

विगो—स. पु.—भोजन के साथ खाये जाने वाले छ पदार्थ ।

१ दूध २ दही ३ घृत ४ तेल ५ मिष्ठान ३ कड़ाई ।

वि वि.—उपर्युक्त छ पदार्थों मे से एक-एक कर छुड़ाया जाने
वाला पदार्थ ।

उ०—२ जद स्वामीजी आठ रोटी काढ दीधी । मयाराम जी
साधा नें घामी पिण कोइ लै नही । जब वील्यो—परठ देवा रा
भाव है । स्वामी बोल्या—परठ नें दूजै दिन विगो टालज्यो ।

—भि. द्र

उ०—२ वलि गुरा निखेछ्यो, आगै थाने वरज्यो थो नी । जद
वले बोल्या—महाराज । उपयोग चूक गयो । जद गुरु बोल्या—
अवै पग लागै है तो सवेरै विगो रा त्याग है । थोडी वेला सूं
फिरता फिरता वले पग दे दियो । इम उपयोग चूक नें वार वार
पग लागो तो तै कृणका उपर पग देवाथी नें विगो टालवा थो राजी
नही । —भि द्र

विगोचणो, विगोचबो—देखो ‘विगोचणी, विगोचबो’ (रू भे.)

विगोचणहार, हारो (हारी), विगोचणियो—वि० ।

विगोचिश्रोडो, विगोचियोडो, विगोच्योडो—भू० का० कृ० ।

विगोचीजणो, विगोचीजबो—कर्म वा० ।

विगोवियोडो—देखो ‘विगोचियोडो’ (रू भे)

(स्त्री. विगोचियोडो)

विगोणी, विगोबो—क्रि. स.—१ नष्ट करना, वरबाद करना ।

उ०—किया खाना दोलतो, वीसलनद विगोय । कपण हिय मंह
कागसी, नहिं फेरै नर-लौय । —बा. दा.

उ०—२ खोयो आसुरी घरम आपो विगोयो तै मीरखान, जोयो
नही तारकी न आग लौ जबाब । “सवाईसीग” मारियो घागा सु
घगाखोर सिधु, नीत छाई किता दीइ जीवसी नीबाब ।

—नवळ्जनी लाळस

२ नाश करना, विध्वंस करना ।

३ दु.ख देना, कष्ट देना ।

उ०—१ मोटउ कुडउ मागासिरि, वली विचारी जोइ । दिन
थोडिउ रयणी घणी वयरणी काइ विगोई । —मा का. प्र.

उ०—२ घान न भावै चोच निरोई, इण वेदन मोनूं खरी विगोई ।
तो सो वान कहू में कैमी, मेरै मन मे वीचत जैसी ।

—कँवरसी साखला रो वारता

४ बदनाम करना, निन्दा ।

उ०—१ सपति सह लेई रही, वली विगोयु सेठी । सात खणइ
सात जि दिवस राखी, नाखिउ हेठि । —मा का प्र

उ०—२ स्त्रीवयराट न्रप साहसू जोई, विप्ररूपि न्रप बोलई सोई ।
ताहरइ नयरि नासि न कोई, ए अगाहू नारि बिरोई । —मालिसूरि

५ दुर्दशा करना ।

६ छिपाना ।

७ लज्जित करना, शर्मिन्दा करना ।

उ०—आखि पलव करसाख आगळी, उघरियो तिरिण सिर अनड ब्रज राखियो विगोनी वासव, वडी अवर कुण विसन वड ।
—ह ना मा.

८ खराब करना, गन्दा करना ।

उ०—जीभ न जीभ विगोनी, दव का दाधा कुपळी भेल्ही । जीभ का दाधा नु पांगूरई, "नाल्ह" कहइ सुणजइ सब कोई ।

—बी दे.

विगोणहार, हारी, (हारी), विगोणियो—वि० ।

विगोयोडी—भू० का० कृ० ।

विगोईजणी, विगोईजवी—कर्म वा० ।

विगोणो, विगोवो, विगोवणी, विगोववी, विगुणो, विगुवो, विगोवणी, विगोववी—रू० भे० ।

विगोनी—स. पु—१ कलह, टंटा-फिसाद ।

२ देखो 'वेगानी' (रू भे)

विगोयोडी—भू का कृ—१ नष्ट किया हुआ, बरवाद किया हुआ.
२ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ ३ दुख दिया हुआ,
कष्ट दिया हुआ ४ बदनाम किया हुआ, निन्दा किया हुआ
५ दुर्दशा किया हुआ ६ छिपाया हुआ. ७ खराब किया हुआ,
गन्दा किया हुआ. ८ लज्जित किया हुआ, शर्मिन्दा किया हुआ ।
(स्त्री विगोयोडी)

विगोरणी, विगोरवी—देखो 'वगोरणी, वगोरवी' (रू भे)

विगोरणहार, हारी (हारी), विगोरणियो—वि०

विगोरिओडी, विगोरियोडी, विगोरियोडी—भू० का० कृ० ।

विगोरीजणी, विगोरीजवी—कर्म वा० ।

विगोरियोडी—देखो 'वगोरियोडी' (रू भे)

(स्त्री. विगोरियोडी)

विगोवणी, विगोववी—देखो 'विगोणी, विगोवी' (रू भे)

उ०—१ आपणी लोग सगळो एक मते छै सु मान नु इण आपरी मतना करो । पूत रजपूतो न विगोव ।

—गौड गोपाळदास री वारता

उ०—२ आ वडे घर री बहु हुवे तिसडी भीळवत छै सु मान नु इण आपरी घाय मेल कहाडियो "तू रावळ री घर घगोहा विगोव छै । न तू माणस छै ती म्हारी नाम मत लेई" आ चकोर थकी रहै छै मान आघी हुवी वहे छ सु एक दिन सज न इण रं घर माहे आयी । इण दीठी म्हारी घरम न रहै तद आ हाडी पेट मार मूई ।

—नैणसी

विगोवणहार, हारी (हारी), विगोवणियो—वि० ।

विगोविओडी, विगोवियोडी, विगोव्योडी—भू० का० कृ० ।

विगोवीजणी, विगोवीजवी—कर्म वा० ।

विगोवावणी, विगोवाववी—क्रि. स [विगोणी क्रि का प्रे रू] १ नष्ट कराना/करवाना, बरवाद कराना/करवाना ।

२ नाश करवाना, विध्वंस करवाना ।

३ कष्ट दिलवाना, दुःख दिलवाना ।

४ बदनाम करवाना, निन्दा करवाना ।

उ०—सुणि, राजा ! राणी वदइ, 'राजकुमरि घरि आणि । वली श्रिगोवावि घणु ब्राह्मण-केरइ पाणि । —मा का. प्र.

५ दुर्दशा करवाना ।

६ छिपवाना ।

७ लज्जित करवाना, शर्मिन्दा करवाना ।

८ खराब करवाना, गन्दा करवाना ।

विगोवावणहार, हारी (हारी), विगोवावणियो—वि० ।

विगोवाविओडी, विगोवावियोडी, विगोवाव्योडी—भू० का० कृ० ।

विगोवावीजणी, विगोवावीजवी—कर्म वा० ।

विगोवावियोडी—भू. का. कृ —१ नष्ट करवाया हुआ, बरवाद करवाया हुआ २ नाश करवाया हुआ, विध्वंस करवाया हुआ ३ दुख दिलवाया हुआ, कष्ट दिलवाया हुआ. ४ बदनाम करवाया हुआ, निन्दा करवाया हुआ ५ दुर्दशा करवाया हुआ. ६ छिपवाया हुआ ७ लज्जित करवाया हुआ, शर्मिन्दा करवाया हुआ.
८ खराब करवाया हुआ, गन्दा करवाया हुआ
(स्त्री विगोवावियोडी)

विगोवियोडी—देखो 'विगोयोडी' (रू भे)

(स्त्री. विगोवियोडी)

विगो—देखो 'विगी' (रू भे)

विग्गाहा—देखो 'विगाहा' (रू भे)

विग्घ—देखो 'विघ्न' (रू भे)

उ०—प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि ब्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त किन्ति वित्त वदतं सनूर ए । विजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ घायक । प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक । —घ व ग्र.

विश्य—स पु [स. विज्ञ] ब्रह्मा ।

वि—१ बूद्धिमान, समझदार ।

२ विद्वान, पंडित ।

३ विशेष जानकार ।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरात्मक, विश्य चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वक्रन ब्रह्मसू, नरवर हस देहनायक । —वैलि.

विद्यता—स. स्त्री. [स विज्ञता] १ बुद्धिमता, समझदारी ।

२ पाठित्य, विद्वता ।

३ विशेष जानकार होने की अवस्था या भाव ।

विद्युत्-वि [स. विज्ञप्त] जो बतलाया या सूचित किया गया हो ।

विद्युत्ति, विद्युत्ती-स. स्त्री. [स विज्ञप्ति] १ बतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ इष्टतहार, विज्ञापन ।

रू भे —विद्युत्ति विद्युत्ति ।

विद्युत्त-स पु [स विज्ञान] १ जानकारी, ज्ञान ।

२ आविष्कृत सत्यो व प्राकृत नियमो पर आधारित क्रमबद्ध व व्यवस्थित ज्ञान ।

३ विशेषत भौतिक जगत् से सम्बन्धित उक्त प्रकार का ज्ञान ।

उ०—धर्म, विद्युत्त, इतियास, पुराण, राजनीति, आचार, विवहार, कला, साहित्य, वेदभूमा, परब—त्यूहार' कारीगरी न खेती-वाडी श्री संग परपरा रं कारण ई विकसं अर प्रगटं । —फुलवाडी

४ किसी विशिष्ट विषय के तत्वो या सिद्धान्तो आदि का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से एकत्र या संग्रहीत हो ।

ज्यू—सरीरविद्युत्त, समाजविद्युत्त, राजनीतिविद्युत्त ।

५ आत्मा के स्वरूप का ज्ञान । (बौद्ध)

६ आत्मा ।

७ स्त्रियो की चौसठ कलाओ मे से एक । (व स)

८ कर्म ।

९ कला । (व स)

१० विशेषतया ब्रह्मसाक्षात्कार से प्राप्त हुवा हुआ ज्ञान ।

११ एक शास्त्र विशेष ।

१२ निश्चयात्मिक वृद्धि ।

उ०—परिपूरण प्रेम, निज न्याय नेम, विद्युत्त विद्युत्त, पूरण प्रतिग्य गभीर ग्यान, विस्मय विद्युत्त उद्योग आस्थ, एकी उपास्थ ।

—रू का

रू भे —विद्युत्त, विद्युत्त, विद्युत्त, विद्युत्त, विद्युत्त, विद्युत्त ।

विद्युत्तकोस—देखो विद्युत्तमयकोस'

विद्युत्तपाद-स पु [स विज्ञानपाद] वेदव्यास का एक नाम ।

विद्युत्तमयकोस-स. पु [स. विज्ञानमयकोस] १ पाचज्ञानेन्द्रिय सहित वृद्धि । (वेद)

२ आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोष ।

विद्युत्तवाद-स पु. [स विज्ञानवाद] १ ब्रह्म और आत्मा की एकता प्रतिपादित करने वाला वाद या सिद्धान्त ।

२ वह वाद या सिद्धान्त जिसमे केवल आधुनिक विज्ञान की बातें ही प्रतिपादित या मान्य की गई हो ।

विद्युत्तवादी-स पु. [स विज्ञानवादिन्] १ योग के मार्ग का अनुसरण करने वाला योगी ।

२ आधुनिक विज्ञानशास्त्र का समर्थक ।

विद्युत्तानी-स पु —वह देवी जो किसी विशेष ज्ञान से जानी जाती है ।

वि. [स विज्ञानिन्] १ जिसे विज्ञान का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक ।

२ जिसे किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, ज्ञानी ।

३ देखो 'विद्युत्त' (रू भे)

उ०—ग्यान विद्युत्तानीय जानि मयै, विद्युत्त तपो मन मोह धूतागे ।

दास कहै हरिराम विना हरि, होय नही नरको निमतागे ।

—अनुभववाणी

विद्युत्तपक-वि० [स विज्ञापक] १ दूसरों को जानकारी करवाने या जानकारी देने वाला ।

२ समाचार पत्रो आदि मे विज्ञापन निकलवाने वाला, विज्ञापन-दाता ।

विद्युत्तपन-स पु—[स. विज्ञापन] १ किसी को जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव ।

२ वह पत्र या सूचना जिसके द्वारा किसी बात की सूचना दी जाय अथवा जानकारी कराई जाय, दृष्टितहार ।

विद्युत्तपनी, विद्युत्तपनी—स्त्री स. [स विज्ञापन] विज्ञप्त करना, बतलाना या सूचित करना ।

विद्युत्तपियोडी-भू. का. कृ—विज्ञप्त किया हुआ, बतलाया हुआ या सूचित किया हुआ ।

विद्युत्तपि—देखो 'विद्युत्तपि' (रू भे)

विद्युत्त-स पु [स विद्युत्तः] १ व्याकरण के अनुसार योगिक शब्दो या समस्त पदो के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग या पृथक करने की क्रिया या भाव ।

२ वीर-विरोध ।

उ०—बस्यो लिलाट राह विद्युत्त तै, सकर मयक न रावि सकेह । सरणाई 'खिता' सीसोदा, लाल केणी नह नीयी लेह ।

—बाला हाडा री गीत

३ लडाई, झगडा

उ०—जाइ नै आगली रजपूताणी नु तेडिनै कह्यो, मैं आ-रजपूताणी म्हारै मार्ये सटै आणी छै । ईयै सु वाद विद्युत्त मत करिज्यो । —कावळै जोईयै नै तीडो खरळ री वात

३ युद्ध, समर । (ह. ना मा)

उ०—१ करण तुच्छ केविया अर्भे कर मुछ उभारै, आरहिवा नरइद पाव धारै पाधारै । बीख सगह अल्पते सोभ विद्युत्त कवि सभरि, किसन डारिण हल्लियो जाण वाणासुर ऊपरि ।

—रा रू.

३०—२ मुगट उतार सुघट दसमुख रा, लेकर उघट घुजाई लका ।
वाळ सुतण्ण रचायी विग्रह, धायी राघव कर्न असका । —र. रू.
३०—३ रावळ दूदो तिलोकसी जसहडोत जेसळमेर गढ ऊपर छे ।
पातसाही फोज तळहटी छे । वरस १२ विग्रह न हुवा छे । मामला
घणा ही हुवा, पण गढ हाथ आवे नही । —नैणसी
३०—४ अजमला वास लागी आय गढ गिरनार घेरियो ।
वरस ३ विग्रह हुवी । अमीरखान गढरोहा माहे मोत मुवी ।
—नैणसी

४ नीति के छ गुणो में से एक ।

५ सेना, फोज ।

६ किसी के प्रति किया जाने वाला हानिकारक उपाय का प्रत्यक्ष प्रयोग ।

३०—इम देखि अमल जळिया असह, घरा लिये इम धारियो ।
जुष करण न व्हे आसग जदि, विग्रह चूक विचारियो ।

—सू प्र

७ शिव का एक नाम, शिव-लिंग ।

८ प्रतिमा, मूर्ति ।

९ कोई तत्त्व विशेष । (साख्य)

१० शृंगार, सजावट ।

११ समुद्र के द्वारा स्कन्द को दिये जाने वाले दो पापंदो में से
पहला पापंद ।

१२ कष्ट, पीडा, दुखी ।

३०—वीछडिया विग्रह घणा, भव अतरा पडाहि । नदी विछुटा
धाहळा, भवसर कही भिळाहि । —परमानदजी वैणियाळ

रू. भे —विग्रह ।

विग्रह-चारी—स पु —टटा-फिसाद, लडाई-भगडा ।

३०—पाचमा आरा ना राजवी, होसी विग्रहचारी रे । वचन कही
फिर जावसी, एहवी जाण विचारी रे । —जयवाणी

विग्रहणी, विग्रहवी—क्रि स —१ युद्ध करना, लडाई करना ।

३०—कमघज्ज सकज्जा कारणा, कळा भुजा मापे कवण । विचि-
त्राण घणी इम विग्रहे, गहियो फिर पडतो गयण । —रा. रू.

२ सहार करना, मारना ।

३०—गह धरती रिणमल जिण गादी विग्रहिया, खार्गे समवादी ।
रिडमल पाट जोष रिक्वसी, इळ रखवाळ थयी प्रम असो ।

—रा. रू.

३ नाश करना, नष्ट करना ।

४ पडयन्त्र करना ।

५ शृंगार करना, सजावट करना ।

६ घेरा डालना, घेरना ।

३०—कमालदी घोडा हजार अस्सी ले आयो । गढ घेरियो ।
दिहाडे ढोवा हुवा छे, सु परधान वीकमसी ईडर जाय चाकर हुवी
थो, सु गढ विग्रहियो साभळ न आयो । —नैणसी

३०—२ पछे मूळराज रावळ हुवी । रतनसी नू राणाई रो विरद ।
मूळराज वरस १ नै मास ६ राज कियो । वरस १२ वारै गढ
विग्रहियो रह्यो । —नैणसी

३०—तरै तेजसी तो गढ चढीया । पीरोजी लाख कोठार रावळा
थो तेजसी रा हुजदारा नू सुहला सा गिण दीया । सीवाणी विग्र-
हियो । —राव मालदे रो वात

७ दूर करना, हटाना ।

८ कलह करना, भगडा करना ।

९ वीरगति प्राप्त होना ।

विग्रहणहार, हारी (हारी), विग्रहणियो—वि० ।

विग्रहोडो, विग्रहियोडो, विग्रहोडो—भू० का० कृ० ।

विग्रहीजणो, विग्रहीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वग्रहणी, वग्रहवी, वीग्रहणी, वीग्रहवी—रू० भे० ।

विग्रहियोडो—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, लडाई किया हुआ.
२ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ नाश किया हुआ, नष्ट
किया हुआ ४ पडयन्त्र किया हुआ ५ शृंगार किया हुआ,
सजावट किया हुआ ६ घेरा डाला हुआ, घेरा हुआ. ७ दूर
किया हुआ, हटाया हुआ. ८ कलह किया हुआ, भगडा किया
हुआ वीर गति प्राप्त ।

(स्त्री. विग्रहियोडो)

विग्रही—वि [स विग्रहित्] १ लडाई-भगडा करने वाला, युद्ध करने
वाला ।

२ सहार करने वाला, मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, नष्ट करने वाला ।

४ पडयन्त्र करने वाला ।

५ शृंगार करने वाला, सजावट करने वाला ।

६ घेरा डालने वाला ।

७ दूर करने वाला, हटाने वाला ।

विघटण, विघटन—स पु [स विघटन] १ सयोजक अगो को अलग
अलग करने की क्रिया ।

२ तोडने-फोडने की क्रिया या भाव ।

विघटिका—स स्त्री [मं] घडी का ६० वा अंश, २४ सैकण्ड ।

विघटित—वि [स] १ जिसके सयोजक अलग-अलग कर दिये गये हों ।

२ तोडा-फोडा हुआ, नष्ट किया हुआ ।

विघन—स. पु [स विघन] १ घन, हथोडा ।

२ देखो 'विघ्न' (रू भे)

उ०—१ जग वीच जाग्रत ज्यास, अति विघ्न सुपन उदास । सब चीज रीक असार, अत चीत मीत विचार । —रा. रू

उ०—२ रीत आद जदुवस घराणी, जगा विघ्न जिगन सम जाणी । 'जीवण' हरनाथीत सजोसो, आसुर व्याधि हरण किर ओसो । —रा. रू.

उ०—३ जो मोनु घपाइस्यो ती भली करिस्स्यो, नहीं तो हूँ सह्र रा लोकां नु विघ्न करीस । ताहरा कह्यो, "कही विघ्न न करे ही ? —स्यामसुदर री वात

उ०—४ वेलि पढता कोई न होइ । कोई विघ्न वरि सकै नहीं । यळि जळि आकासि कोई न कोई छळ छिद्र होण न पावै । —वेलि टी

उ०—५ गाडी वहीर व्हेती वेळा ई उणारी सपनी उणी भात चालती ही । अर नी बादळ रा सपना मे ईं फिणी वात रो विघ्न पडची । —फुलवाडी

उ०—६ दसमी ढाल थई ए पूरी, विनयचंद्र चतुराई । सुणिष्यो आगलि कुमर कुत्तहल, तजि मन विघ्न बुराई । —वि. फु.

उ०—७ तपस्वी कही—दरसण रूप तो तुम ही ही । परा राजा रूप छोड कर एकला फिरो सौ उचित नहीं । विघ्न आय पडे तो राज-देह दुरलभ है । —सिंघासण वत्तीसी

विघ्नक—देखी 'विघ्नक' (रू. भे.)

विघ्नकरण—देखो 'विघ्नकरण' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

विघ्नकारी—देखो 'विघ्नकारी' (रू. भे.)

उ०—तठै पडित बोलिया—स्रीमहाराज । ओ बालक करडा नक्षत्र में जनम्यो छै नै कुडळी माहे ग्रह खोटा आया छै, वेळा पिण खोटी छै, सो माता पिता नै विघ्नकारी छै, मीत-घात ज्यू छै । —रिसाळू री वात

विघ्नजीत—देखो 'विघ्नजीत' (रू. भे.)

विघ्ननायक—देखो 'विघ्ननायक' (रू. भे.)

विघ्ननासक—देखो 'विघ्ननासक' (रू. भे.)

विघ्नपति, विघ्नपति, विघ्नपती—देखो 'विघ्नपति' (रू. भे.)

विघ्नप्राण—देखो 'विघ्नप्राण' (रू. भे.) (ना. मा.)

विघ्नराज—देखो 'विघ्नराज' (रू. भे.) (अ. मा.)

विघ्नविनायक—देखो 'विघ्नविनायक' (रू. भे.)

विघ्नहरण—देखो 'विघ्नहरण' (रू. भे.)

उ०—पूरण-पुनीत श्रीराम पद, विघ्नहरण त्रैलोक्य वर । परणाम सुकवि ईसर पुणं, तंत नाम भव-सिधु तर । —ह. र.

विघ्नेस—देखो 'विघ्नेस' (रू. भे.)

विघ्न—देखो 'विघ्न' (रू. भे.)

उ०—१ वळता ती दीपक भला, टळता भला विघ्न । गळता ती वरी भला, वळता भला सुदिन । —अग्यात

उ०—२ फजर विकराळ सरूप करे, किम न्याव विचाळ विघ्न करे । सब घाविय 'पाल' कने सिधिया, पुणायवा तुमने नथि पार-धियां । —पा. प्र.

विघ्नघणो, विघ्नघणो—कि. अ.—नष्ट होना, मिटना (मरना)

उ०—या दाखै तरवार उठाई मौरा प्रगटी पीड अमाई । वधियो दरद, सु देह विघ्नो, प्रष्ठ दुस्त चादी ऊपनी । —रा. रू.

विघ्नघणहार, हारी (हारी), विघ्नघणियो—वि० ।

विघ्नघणोडो, विघ्नघणोडो, विघ्नघणोडो—भू० का० कृ० ।

विघ्नघणो, विघ्नघणो—कर्म वा० ।

विघ्नघणोडो—भू० का० कृ० —नष्ट हुवा हुआ, मिटा हुआ ।

(स्त्री. विघ्नघणोडो)

विघ्नघो—वि—विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।

विघात—स पु [स विघात] १ नाश ।

२ आघात, प्रहार, चोट ।

३ बाधा, विघ्न

विघातक—वि—१ विघ्न डालने वाला, बाधक ।

२ आघात करने वाला, प्रहार करने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

विघातकारिणी—स स्त्री. [स] एक प्रकार की विद्या विशेष ।

उ०—आकासगामिनी सीदामिनी कामगामिनी कामसामिनी भुवन-क्षोभिनी कामरूपिणी मनस्तमिनी जलस्तमिनी आग्नेयी वायवी वरसणी कीमारी खगरूपिणी तमोरूपिणी विघातकारिणी गिरि-दारणी अवलोकिनी । —व. स

विघातन—स स्त्री [स] १ नाश करने की क्रिया या भाव ।

२ हत्या करने की क्रिया या भाव ।

३ बाधा डालने की क्रिया या भाव ।

४ प्रहार करने की क्रिया या भाव ।

विघाती—देखो 'विघातक'

विघ्न—स. पु [स.] १ विघ्न, बाधा ।

२ रोक रूकावट, ।

३ समर ।

४ अमगल, अशुभ ।

५ नरमासभक्षक एक राक्षस, जो कालि एवं अयोमुखी नामक राक्षस का पुत्र था ।

६ वध नामक राक्षस का पुत्र ।

रू. भे —विघ्न, विघ्न, विगन, विग्घ, विघन, विघन्न ।
 विघ्नक-वि [स] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।
 २ शत्रु, रिपु ।
 रू. भे.—विघ्नक ।
 विघ्नकरण-वि. [स.] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।
 २ शत्रु, रिपु ।
 रू. भे.—विघ्नकरण ।
 विघ्नकारी-वि [स] १ विघ्न उत्पन्न करने वाला, बाधा डालने वाला ।
 २ शत्रु, रिपु ।
 रू. भे —विघ्नकारी, विघ्नकारी, विघ्नकारी ।
 विघ्नजित, विघ्नजित-स पु. [स] श्रीगणेशजी ।
 रू. भे —विघ्नजित, विघ्नजित ।
 विघ्ननायक-स पु [स विघ्न + नायक] श्रीगणेशजी महाराज ।
 रू. भे —विघ्ननायक ।
 विघ्ननासक-म. पु [स. विघ्न + नासक] श्रीगणेशजी महाराज ।
 रू. भे —विघ्ननासक ।
 विघ्नपति, विघ्नपति, विघ्नपती-स पु [स विघ्न + पति] श्रीगणेशजी ।
 रू. भे —विघ्नपति, विघ्नपति, विघ्नपती ।
 विघ्नप्राण-स पू [स] कृष्ण के बड़े भाई बलभद्र, हनघर ।
 रू. भे —विघ्नप्राण ।
 विघ्नराज-स पु [स विघ्न + राज] श्रीविनायकजी ।
 रू. भे —विघ्नराज ।
 विघ्नविनायक-स पु [स विघ्न + विनायक] श्रीगणेशजी महाराज ।
 रू. भे —विघ्नविनायक ।
 विघ्नसतुष्ट-स पु [स विघ्नसतुष्ट] चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।
 विघ्नहरण-स पु [स विघ्न + हरण] श्रीगणेशजी महाराज ।
 रू. भे —विघ्नहरण ।
 विघ्नेस-स पु [स विघ्न + ईश] श्रीगणेशजी महाराज, ब्रह्मांड में इसके इशकावन नामान्तर दिये गये हैं ।
 रू. भे —विघ्नेस ।
 विड्ड-१ देखो 'विडग' (रू. भे.)

उ०—१ सूरजमाल दुभाल, नेज गज ढाल निहारै । फल सावळ फोरियो, विडग औरियो बघारै । —रा रू.
 उ०—२ उर्म तरफ ऊपडी, वाग तिण वार विडगा । अम्ही सम्हा सुर असुर, जुडै सर सभर जगा । —सू प्र.
 उ०—३ विडगण केसर पाखर भीड भुजाळोय बाघव आघव भीड । ग्रहै कर सावळ अग गरीठ, 'पवी' चढती जद केसर पीठ । —पा. प्र.

(स्त्री विडगण)

विडगि, विडगी—देखो 'विडग' (रू. भे)

उ०—अगराण न हालइ उवरि अम, वाहू अमोस जिम तेवि बम । जडलग साहि खेतसी जगि, वड्रा वराह चडियर विडसि । —रा ज सी.

विड-स पु —१ वीहड, वन ।

उ०—१ वाटि वटाळ सव चले, विड में वासा होय । जनहरीया साईं विना, यार न अपणा कोय । —अनुभववाणी
 उ०—२ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड में वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसी वेसास । —अनुभववाणी
 २ विपय, काम, भोग ।
 उ०—१ हरीया जुग विड नीदीयै, जा कु भगति न भाय । से रता रहमाण मु, और न आवै दाय । —अनुभववाणी
 उ०—२ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड में वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसी वेसास । —अनुभववाणी
 ३ शत्रु, दुश्मन ।
 वि [स विट] विपयी, कामी, भोगी ।
 उ०—वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड में वास । हरीया हरि विन दूसरा, ताहि किसी वेसास । —अनुभववाणी
 रू. भे —विड, विड ।
 मह, —विडाण ।

विडभोजा—देखो 'विहूजा' (रू. भे)

विडभोजावाह—देखो 'विहूजावाह' (रू. भे)

विडणी, विडवी—देखो 'विडणी, विडवी' (रू. भे)

विडणहार, हारो (हारी), विडणियो—वि० ।

विडिओडी, विडियोडी, विडयोडी—भू० का० कृ० ।

विडीजणो, विडीजवो—भाव वा० ।

विडड—१ देखो 'विदुद' (रू. भे)

उ०—१ झूठी रौ पापा रजवाडा मे रैवणियो स्याणी हाजरियो, राजनीत सू रग्योडी—सुधरयोडी मिनख । स्यात अर जात नै जाणो, विडड अर वडाई वखाणो । —दसदोख

३०—२ सखागत सुख करन कु, तुमरो विडव, विराज । अपनी ही जन जान कै, कृपा करो महाराज ।
—अग्यात

३०—३ निरवाह करत ज नारियण, असरण मरण विडव सू । फोल कर जोडघा भोगरै, सहस कळा गुर जभ सू ।
—कोल्हजी चारण

३०—४ विडव तमारो रामजी, लं वहीर्यं म्हाराज । हरीर्यं गुण श्रीगुण कीया, तीर्यं तमा कू लाज ।
—अनुभववाणी
२ देखो 'विहद' (रू भे)

विहदडी—स स्त्री —१ वृद्धि, बढोतगी ।

३०—गढ रणतभवर सू आर्यो विनायक, करी नी अणवीती विहदडी । विहद-विनायक दोनू जी आया, आय तो उत्तरिया हरिये वाग मे ।
—लो गी

२ वह स्त्री जिसके घर मे पुत्र या पुत्री के विवाह के मांगलिक वृत्त्य होते हो ।

रू भे —विहदडी, विडदडी, विडदडी ।

विहदवडी—स स्त्री. [स. वृद्धि-वटी] विवाहारम मे मातृका पूजन के समय दी गई बडी, जो वर-वधू को सीख देते समय पका कर भोजन के साथ गिलाई जाती है ।

रू भे —विहदवडी, विहदवडी, विहदवडी ।

विहदविनायक—स पु [स वृद्धिविनायक] मागलिक अवसरो पर प्रथम पूजे जाने वाले विनायक, वृद्धिविनायक ।

३०—विहदविनायक दोनू जी आया, आय तो उत्तरिया हरिया वाग मे । दूढत दूढत नगरी जी दूढी, कोई घर तो बतावो लाडल रै वाप रो ।
—लो. गी

रू भे —विहदविनायक, विहदविनायक, विहदविनायक ।

विहदाणी, विहदावी—देखो 'विरुदाणी, विरुदावी' (रू. भे)

विहदाणहार, हारी (हारी) विहदाणियो—वि० ।

विहदायोडी—भू० का० क० ।

विहदाईजणी, विहदाईजवी—कर्म वा० ।

विहदायोडी—देखो 'विरुदायोडी' (रू भे)

(स्त्री विहदायोडी)

विहदावणी, विहदाववी—देखो 'विरुदाणी, विरुदावी' (रू भे)

३०—धीरा धीरा भड धोळा विहदाव, धीरा धीरा पड धोळा मत पाव । वेळू वेतड रो ताती बळवाळी, रेणा धोळी रो राती कर राळी ।
—क. का.

विहदाव—देखो 'विरुद' (रू भे)

३०—पीच-त्रिचाव कर परा'र लिह्या मुअर, पाच नी जमा कर देवण रो ह्वम दास, व्याज न्यारी राखे है । सार्ग-सार्ग आपरी

वात मान ज्याणै वेगी मारजा रो तारोफ अर भरोसे रा ही विहदाव उडावे है ।
—दसदोळ

विहली—स पु —१ ढेर, समूह ।

३०—१ माता कै भवन मे जी श्री नारेळा रो विहली, जी श्री नारेळा रो विहली सुपारचा रे विहलै म्हारी आद भवानी वस रही ।
—लो. गी

३०—२ माता कै भवन मे जी श्री चावळिया रो विहली, जी श्री चावळिया रो विहली, मूगा रै विहलै म्हारी आद भवानी वस रही ।
—लो गी

३०—३ माता कै भवन मे जी श्री काजळिया रो विहली, जी श्री काजळिया रो विहली, रोळी रै विहलै म्हारी आद भवानी वस रही ।
—लो गी,

३०—४ माता कै भवन मे जी श्री मीळी रो विहली, जी श्री मीळी रो विहली, महदी रै विहलै म्हारी आद भवानी वस रही ।
—लो गी

२ देखो 'सुहागदार विहली' ।

विडाणी—देखो 'विडाणी' (रू भे)

३०—१ राम नाम नही चेत्यो, करी विडाणी आस । जन हरीया घर गोरिवे, सरिक्या सेती वास ।
—अनुभववाणी

३०—२ दुनिया रोवै रोवणा, देख विडाणी खाल । नाव सनेही वाहिरो, हरीया ह्योय विहाल ।
—अनुभववाणी

३०—३ माया भई विडाणीयां, भार विडाणी लोग । जनहरीया नही आपना, विखै विलासा भोग ।
—अनुभववाणी

३०—४ जाणै वृष्णि गहली भई, प्यारी पिव कै जोम । हरीया गुष्णि करसार सु भनी विडाणी लोग ।
—अनुभववाणी

३०—५ वाट विडाणी लोक विड, विड ही विड में वास । हरीया हरि विन दूमरा, ताहि किसी वेसास ।
—अनुभववाणी

(स्त्री विडाणी)

विडाळ, विडाल—देखो 'विडाळ' (रू भे)

विडाळद्रग—देखो 'विडाळद्रग' (रू. भे)

विडाळप्रत्तिक—देखो 'विडाळप्रत्तिक' (रू भे)

विडियोडी—देखो 'विडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विडियोडी)

विडूजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे)

विडूजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू भे.)

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू भे)

३०—तेज ताप मुनीपूर पाडिया पाथोध तास, नागेस झाडिया

ज्यू खगेस वर्ष नेत । पत्रे पल विडोजे भ्माडिया वज्र वीम वाट,
खळा थाट हूजे दळे' विभाडिया खेत । —हुकमीचद खिडियो

विडोजावाह—देखो 'विहूजावाह' (रू भे)

विडो—स. पु—थोहर के नीचे का भाग ।

उ०—घोडा दौड रह्या छै । होकारा हगामी हुय रह्यो छै । जितरे
वीच थोहर भाडा रा विडा माहा खरगास उठिया छै ।

—रा. सा स

रू भे—विडो ।

विचमा—क्रि वि—वीच मे, मध्य मे ।

उ०—राय देह पधराय, वार तण चेह विचमा । भळ अग्गी
भूलिवा, करण लगी परकम्मा । —रा रू

विच, विचइ—देखो 'वीच' (रू भे)

उ०—१ धारण सलज चखा 'चद' धारे, आच उठाय वडिम
उच्चारे, विच पुर घसे विजय वजि वाजा, जगपत सुता वरे
चदराजा । —सू प्र

उ०—२ पूछ्या विना पयपे पापी, थट विच कहे लात सिर थापी ।
वदन मत दिखाले वस द्रोही वळे । —र रू

उ०—३ भाखि सतोगुण भलो, खरो कोई कहिजे खोटी । त्रिविध
तणी विच तीन, त्रिविध तामस गुण थोटी । —पी अ

उ०—४ जउ साहिव तू नावियउ, मेहा पहलइ पूर । विचइ वहेसी
वाहला, दूर स दूर दूर । —ढो मा

उ०—५ दिलीवे कहुर पतसाह रा भाज दळा, सोहिया दळा विच
वीर साजा । सदा जोरावरा तणा नव-साहसी, राह सिर ऊपर
हुअे राजा । —देवराज रतनू

विचकणो, विचकवो—देखो 'विचकाणो, विचकावो' (रू भे)

विचकणहार हारो (हारी), विचकाणियो—वि० ।

विचकाणोडो, विचकाणोडो, विचकाणोडो—भू० का० कृ० ।

विचकाणोजो, विचकाणोजो—भाव वा० ।

विचकाडणो, विचकाडवो—देखो 'विचकाणो, विचकावो' (रू भे)

विचकाडणहार, हारो (हारी), विचकाडणियो—वि० ।

विचकाडणोडो, विचकाडणोडो, विचकाडणोडो—भू० का० कृ० ।

विचकाडणोजो, विचकाडणोजो—कर्म वा० ।

विचकाडियोडो—देखो 'विचकाणोडो' (रू भे)

(स्त्री विचकाडियोडो)

विचकाणो, विचकावो—क्रि स—१ चौकाना ।

उ०—वापडी छोरी रीवण-खारी हो'र लकडिया भेली करण
लागो । इत्ते मे गळी रे छोरा ताळिया वजा वजा'र साड नै विच-
काय दी । साड नाठी । छोरा कणाई माड पासी दीडे कणाई
लकडिया सामे । —वरसगाठ

२ विगाडना, विकृत करना । (मुख)

विचकाणहार, हारो (हारी), विचकाणियो—वि० ।

विचकाणोडो—भू० का० कृ० ।

विचकाणोजो, विचकाणोजो—कर्म वा० ।

विचकाडणो, विचकाडवो, विचकाणो, विचकावो, विचकावणो
विचकावो, विचकाडणो, विचकाडवो, विचकावणो, विचकावो
—रू० भे०

विचकाणोडो—भू० का० कृ०—१ चौकाया हुआ २ विगाडा हुआ,
विकृत किया हुआ (मुख) ।

(स्त्री विचकाणोडो)

विचकावणो, विचकावो—देखो 'विचकाणो, विचकावो' (रू भे.)

विचकावणहार, हारो (हारी), विचकावणियो—वि० ।

विचकावणोडो, विचकावणोडो, विचकावणोडो—भू० का० कृ० ।

विचकावणोजो, विचकावणोजो—कर्म वा० ।

विचकावियोडो—देखो 'विचकाणोडो' (रू भे)

(स्त्री विचकावियोडो)

विचकाक्ष—स पु—एक राजा, जिसने मास-भक्षण त्याग किया था ।

विचकियोडो—देखो 'विचकियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचकियोडो)

विचकिल—स पु—१ कुसुम विशेष २ सुगन्धी वृक्ष विशेष । (सभा)

(मि—'विचकिल' ।)

विचकखण—स. पु.—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

विचक—स पु—एक दानव का नाम । (पुराण)

विचक्षण—वि. [स विचक्षण] [स्त्री. विचक्षणा] १ पारदर्शी ।

२ सतर्क, सावधान ।

३ बुद्धिमान, चतुर ।

उ०—पट्टकूल पट्टणी देस भोगीघर दक्षण । कुजर कदली खड विप्र
तेरोतरी विचक्षण । —ढो. मा.

४ पंडित, कवि ।

५ निपुण, योग्य, काविल ।

६ अद्भुत, अपूर्व, विचित्र ।

उ०—उत्तम कुलनी ऊपनी, मयण तणउ अवतार । वली विचक्षण
परिण घणा, भरिया घन भडार । —मा कर्. प्र.

७ पुरुष के वत्तीस लक्षणों में से तेरहवा शुभ लक्षण ।

रू भे—विचच्छण, वचखण, वचिखण, विप्रखण, विप्रखण,
विप्रखण, विचखण, विचखण, विचखण, विचखण, विचखण,
विचखण, विचखण, विचखण, विचखण ।

विचक्षणताद्वय—स पु—एक आचार्य जो गर्दभी मुख शाडिल्यायन का दिव्य व शाकदास भाडित्यायन का गुरु था ।

विचक्षणता—न स्त्री [स विचक्षण + ता प्र] १ निपुणता, दक्षता, चतुराई, विद्वत्ता ।

२ विचित्रता, अद्भुतता ।

विचक्षणा—स स्त्री—१ कुभा नामक श्रोपधि, नागदती ।

२ चतुर स्त्री ।

उ०—चौसठ कला विचक्षणा, रूप गुरां करी रभा रे । देवगुरु घरम दी पावती, व्रतधारी द्रव्यवभा रे । —वृस्त.

विचक्षिण—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—पटकळ पट्टणी, देस भोगी घुर दक्षिण । कुजर कदळी खड, विपरीत नीति विचक्षिण । —हो मा

विचक्षु—म पु—एक राजा, जो 'यज्ञकर्म' में अर्हिसाव्रत का पालन करना चाहिए' इस तत्व का प्रतिपादन कर इसी मत पर 'विचररुनु गीता' की रचना की जो भीष्म द्वारा युधिष्ठिर को सुनाई गई थी ।

रू भे.—विचन्तु ।

विचक्षु ।—स पु—वमिण्डकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

विचक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू भे) (अ मा, ह. ना मा)

विचक्षणो—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

विचक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू भे.)

उ०—१ वसहृतरि वड पात विचक्षण, वीर कळोघर गरथ विचार । सिगळों सुजस लियो राइ भीघळ, खट वन कीया खगार ।

—वगार रायपाळोत री गीत

उ०—२ बुद्धिचत वळवत राज, सनमान विचक्षण । भोग जोग गुर भगत, भाग परमाणु मुजायण । —रा सा स

विचरनु—देखो 'विचरु' (रू भे)

विचरण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

विचरण—देखो 'विद्युडण' (रू भे)

उ०—मिळण भली विचरण बुगी, मिळ विचडी मत कोय ।

—अग्यात

विचरणो, विचरणो—देखो 'विद्युडणो, विद्युडवो' (रू भे.)

विचरणहार, हारो (हारो), विचरणियो—वि० ।

विचरणोडी, विचरणोडी, विचरणोडी—भू० का० कृ० ।

विचरणोणो, विचरणोणो—भाव वा० ।

विचरणोडी—देखो 'विद्युडियोडी' (रू भे)

(स्त्री विचरणोडी)

विचक्षण, विचक्षण, विचक्षणो, विचक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू भे)

उ०—१ वरणी उपमा सार, विचारि विचक्षण । लिया सही अत्रतार, धतीसा लक्षण । —वा दा.

उ०—२ अथ कवरी रं पत्री सिद्धनी लग्न री लडी जीव री जडी सजीली फत्रीली लजीली छत्रीली रमकीली लकीली कमककीली छकीली लटकीली चकीली चटकीली वतीस लक्षणो चौसठ कला विचक्षणो केल रस क्यारी प्राणप्यारी जिणसू साहरी निज नेह उरस भात राखज देह । —र हमीर

विचन—देखो 'विचित्र' (रू भे)

उ०—१ खग भूपट वे थपट छट खल खट, विकट अविचित्र विहें रिणिवट । पडें घट कटि उलट पालट गरट समरट पट्ट, गाहट विचित्र खड खट तणा दहवट । —ल पि

उ०—२ अथ मोराय 'पाल' धडी कनरें, पतसा हिय फीज सिवाण परें । रवदा वळ लूतत गाम रटें, विचित्रां दळ घेख लाख बटें । —पा प्र

उ०—३ केमरी सिध राव 'मालदे' कळोघर, चाइआ गुर सदा लग वडा चेळो । विचित्र साह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिळिये कियो ताळ-मेळो । —माधोदास गाडण

उ०—४ विचित्रा देखेय सोच विराम, तरा हिक रावत बोल्हो ताम । उवारण राका चीत उदार, बसै भी वीरम जूह विहार ।

—गो रू.

उ०—५ मछर और न सयहे, आ मछरीका भाद । अडे कमधा अगळो, विचित्रां हुता चाद । —रा. रू.

विचित्राण—देखो 'विचित्र' (मह, रू भे)

उ०—१ वधिया कराग खग वाहते, रूक जाग चतुरगिणी । विचित्राण जुवाणा वज्जियी, इद्रभाण पहले अणी । —रा. रू

उ०—२ जुघ जीप पति जोघाण, तड भाज भड विचित्राण । पाघारियो सिध पाय, 'अभसाह' घाम अकाय । —रा रू

विचित्रमू—स पु—चाद, चन्द्रमा । (नां मा.)

विचित्रां—देखो 'वीच' (रू भे)

विचरण—म पु—१ पैर, चरण । (अ. मा)

स स्त्री—२ चलने की क्रिया या भाव ।

३ पर्यटन करने की क्रिया या भाव ।

रू भे—विचरण ।

विचरणो, विचरणो—क्रि अ.—१ व्यापक होना ।

उ०—१ हम से सरव मो व्यापक, मो में सरव विचरता । जो देखू सो दीसत मुकू में, हू सरव ब्रह्म सरवगता ।

—सोहरिरामजी महाराज

उ०—२ देवी जगत करतार भरता सहरता, देवी चराचर जग सब में विचरता । देवी चार घाम स्थल अस्ट साठे । देवी पाविये एकसी पीठ घाठे ।
—देवि

२ गमन करना, घुमना ।

उ०—मरजीवा होय जग में विचरू, स्वाल करू नहि कीना । जिनकी कळा सकळ में वरते, सो साहब हम लीना ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

३ गुजरना, गमन करना, जाना ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अतरा माहे पात-साह महमद मुसतफाखान रा चार झूत विचरिआ हूता त्या हकीमत राजान रा पातसाह आगे पोहचाई ।
—रा. सा स

४ अवलोकन करना, देखना ।

उ०—माईत ती पाळा आपरें मसोवा मे रु घग्या अर टावर आपरी अवूभ वाळ-प्रीत में तारा रें सागें विचरता विचरता वानै ऊध आयगी ।
—फुलवाडी

५ जैन साधुओं का भिक्षा मागने हेतु जाना ।

उ०—'राजग्रही' नगरी हो अति रलियामखी 'गुणमिल' नामें वाग जिरोसर । 'विचरता' वीर जिणद समोसरचा, भव जीवा रें भाग जिरोसर ।
—जयवाणी

विचरणहार, हारो (हारी), विचरणियो—वि० ।

विचरिओडी, विचरियोडी, विचरघोडी—भू० का० कृ० ।

विचरीजणो विचरीजवो—भाव वा० ।

विचरवणो, विचरववो, विछरणो, विछरवो—रू० भे० ।

विचरन—देवो 'विचरण' (रू भे)

विचरवणो, विचरववो—देवो 'विचरणो, विचरवो' (रू भे)

उ०—सुत तु सुकमाल मृगत, मत कहिजो सजम वात । इगि गरुअइ सजम भारड, विचरेवउ खइडा घारइ । —जिनराज सूरि

विचरवियोडी—देखो 'विचरियोडी' (रू भे)

(स्त्री विचरवियोडी)

विचरियोडी—भू का कृ —१ व्यापक हुवा हुआ २ गमन किया हुआ, घुमा हुआ. ३ गुजरा हुआ, गमन किया हुआ, गया हुआ ४ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ ५ जैन साधु का भिक्षा मागने हेतु गया हुआ

(स्त्री विचरियोडी)

विचळ, विचल—वि. [स विचल] १ जो स्थिर न हो, अस्थिर, ढिगा हुआ ।

२ प्रतिज्ञा या सकल्प से हटा हुआ ।

विचळको—क्रि वि —बोच मे ।

उ०—तेल विचळकें आय रह्यो, लूम्या री डोरी । नणदल कूल्हर खाय, वारी ऐ लूम्या री डोरी ।
—लो गो.

विचळणी, विचळवो—क्रि अ.—१ विचलित होना ।

२ पदच्युत होना ।

३ हिंमत हारना, निरुत्साह होना ।

४ कहुवर इन्कार होना, मुकरना ।

५ प्रतिज्ञा या सकल्प से विमुख होना ।

६ विकृत होना, खराब होना ।

७ तितर-वितर होना, विखरना, भाग जाना ।

उ०—१ तेथि कछवाही भोपत राजा भारमल री दीकरो काम आयो । मिरखें इन्नाहम री फोज विचळी । पीण मिरजें रें तरग-सवधें कहियो पातिसाह थोडें साथ सेती छें । आयो जिम मारिल्या ।
—द वि.

उ०—२ लोक सारी गोळा सु फूट गयो । सो साकडें घेर मे लागी । सो एक-एक सु दोय-दोय तीन-तीन फूट गया । वाण लागा, सो घोडा आदमी फूट गया फोज विचळ गई । पग छूट गया । सो भाजता रें पूठें लोक लागी ।
—कुवरमी साखला री वारता

८ अस्थिर होना, ढिगना ।

९ घबराना, भयभीत होना ।

उ०—१ इयें समइयें हमाळ पानिसाह काविल हुता आयो । आपस में ममरेजसाह री फोज हुता वेढि हई । फोज भागी । पठाण विचळिया । पजाव ली । हमाळ पातिसाह सीहनद आयो ।
—द. वि.

उ०—२ वासा पठाणें चप की तीरा री । ताहरा मुगळें विचळतें ही ज मार की । तितरें बीजी फोज मुगळा री पठाणा आडी आई ।
—द. वि

उ०—३ इतरें माही मारवाड री घग्ती में कहत पडियो लोग सारी विचळियो ।
—नापें साखलें री वारता

उ०—४ ताहरा कोटवाळ पूछियो—क्योकर मोटियार, कासूं कहें छें ? ताहरा कुवर कह्यो—वेटी तौड्या री ही छू । तितरें माह कह्यो—रें कपूत, कासूं कहें छें, कै री वेटी छें ? ताहरा फेर कह्यो—थाहरो वेटी छू । ताहरा कोटवाळ कह्यो—रें मोटियार, रें विचळियो क्यु बोले छें ।
—पलक दरियाव री वात

विचळणहार, हारो (हारी), विचळणियो—वि० ।

विचळिओडी, विचळियोडी, विचळघोडी—भू० का० कृ० ।

विचळीजणो, विचळीजवो—भाव वा० ।

विचळणी, विचळवो, विचलणी, विचलवो, विचळणो, विचळवो, विचलणो विचलवो विचळणवो, विचळणवो, विचलणवो, विचलववो, विचळणवो, विचळवो—रू० भे० ।

विचलणो, विचलयो—देखो 'विचलणो, विचलयो' (रू भे.)

उ०—हुकम कीयो हल्ला करी रे, विचलयो साह वचन । जूझारै जाइ झालियो रे, कपटइ राण रतन । —प. च चौ.

विचलणहार, हारो (हारो), विचलणियो—वि० ।

विचलणोडो, विचलयोडो, विचलयोडो—भू० का० कृ०

विचलीजणो विचलीजवो—भाव वा० ।

विचलता, विचलता—स स्त्री—१ चचलता ।

२ अस्थिरता ।

३ घबराहट ।

४ भयभीत होने की अवस्था या भाव ।

विचलाडणो, विचलाडवो—देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे)

विचलाडणहार, हारो (हारो), विचलाडणियो—वि० ।

विचलाडणोडो, विचलाडियोडो, विचलाडयोडो—भू० का० कृ० ।

विचलाडोणो, विचलाडोणवो—कर्म/भाव वा० ।

विचलाडियोडो—देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलाडियोडो)

विचलावो, विचलावो—१ देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे.)

उ०—घननाद करे घमसाण घणो, विचलाव दियो दल राम तणो । हनुमत निसाचर नाम किया, खल-त्रद खपावण मे मुसिया । —गी रा.

२ देखो 'विचलणो, विचलयो' (रू भे)

विचलावणहार, हारो (हारो), विचलावणियो—वि० ।

विचलावोडो—भू० का० कृ० ।

विचलावोचणो, विचलावोचवो—कर्म/भाव वा० ।

विचलावो, विचलावो—फ्रि स.—१ विचलित करना ।

२ भयभीत करना ।

३ तितर वितर करना बिखेरना ।

४ देखो 'विचलणो, विचलयो' (रू भे)

उ०—१ धनु-भजन री रय घोर घणो, विचलायो है मड ब्रह्माड तणो । हरि-नामिय सू विधि जाय दल्यो, रय सूरज री तज राह चलयो । —गी रा

उ०—२ अवरौस सुध्यायो, तज अपणायो, भजन सवायो, मन आयो । दुरवासा आयो आय डरायो, चकर चलायो, विचलायो ।

—भगतमाल

उ०—३ भीव कल्याणदासीत लोहा पडने उपडियो फोज विचलाई । —गोपालदास गौड री वारता

विचलावणहार, हारो (हारो), विचलावणियो—वि० ।

विचलावोडो—भू० का० कृ० ।

विचलाईजणो, विचलाईजवो—कर्म/भाव वा० ।

विचलाणो, विचलावो, विचलावणो, विचलाववो, विचलावो, विचलावो, विचलावणो, विचलाववो—रू० भे० ।

विचलायोडो—१ देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विचलयोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलायोडो)

विचलायोडो—भू का कृ—१ विचलित किया हुआ २ भयभीत किया हुआ ३ तितर-वितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

४ देखो 'विचलयोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलायोडो)

विचलावणो, विचलाववो—१ टकराना, आपस में भिडना (वर्तन) ।

उ०—कर करहू भाडा सासण कचलावै, वाजै भूभाडा वासण विचलावै । चमकैता डागळ गोडा चिक चिकता, जतू जळ रिकता सिकता मे सिकता । —ऊ का. ।

२ ध्वनि करना ।

३ बीच में आना ।

४ देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे)

५ देखो 'विचलणो, विचलयो' (रू भे)

विचलावणहार, हारो (हारो), विचलावणियो—वि० ।

विचलावणोडो, विचलावियोडो, विचलावयोडो—भू० का० कृ० ।

विचलावोणो, विचलावोणवो—कर्म/भाव वा० ।

विचलावणो विचलाववो—रू० भे० ।

विचलावणो विचलाववो—१ देखो 'विचलाणो, विचलावो' (रू भे)

२ देखो 'विचलावणो, विचलाववो' (रू भे)

३ देखो 'विचलणो, विचलयो' (रू भे.)

विचलावणहार, हारो (हारो), विचलावणियो—वि० ।

विचलावणोडो, विचलावियोडो, विचलावयोडो—भू० का० कृ० ।

विचलावोणो विचलावोणवो—कर्म/भाव वा० ।

विचलावियोडो—भू का कृ—१ आपस में टकराया हुआ २ ध्वनि किया हुआ ३ बीच में आया हुआ ।

४ देखो 'विचलायोडो' (रू भे.)

५ देखो 'विचलयोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलावियोडो)

विचलावियोडो—१ देखो 'विचलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विचलावियोडो' (रू भे)

३ देखो 'विचलयोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलावियोडो)

विचलित, विचलित-वि [स विचलित] १ धवराया हुआ, भयभीत ।

२ पदच्युत ।

३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह ।

४ कहकर इन्कार हुआ हुआ ।

५ खराब हुआ हुआ, विकृत ।

६ तितर-वितर हुआ हुआ, विखरा हुआ ।

७ अस्थिर, डिगा हुआ, चचल ।

८ प्रीतिज्ञा या सकल्प से विमुख ।

विचलियोडो-भू का कृ—१ विचलित हुआ हुआ २ पदच्युत हुआ हुआ ३ हिम्मत हारा हुआ, निरुत्साह हुआ हुआ ४ कह कर इन्कार हुआ हुआ, मुकरा हुआ ५ प्रीतिज्ञा या सकल्प से विमुख हुआ हुआ ६ विकृत हुआ हुआ, खराब हुआ हुआ ७ तितर-वितर हुआ हुआ, विखरा हुआ हुआ. ८ अस्थिर हुआ हुआ, डिगा हुआ हुआ ९ धवराया हुआ हुआ, भयभीत हुआ हुआ.

(स्त्री विचलियोडो)

विचलियोडो—देखो 'विचलियोडो' (रू भे)

(स्त्री विचलियोडो)

विचली-वि (स्त्री विचली) मध्य का, बीच का ।

उ०—कितरेक भए इए लदके, उतारी ही काचर तरणी खोल ।
विचली गिर काढी लियो, सरायी ही घणी करी किलोल ।

—जयवाणी

उ०—२ थोळंग थारं विचलं वीरं ने भेज, वारी घण वारी श्री हजा, चतर चोमासं, श्री राजन, घर वसी जी, म्हारा राज ।
विचलं वीरं के गोद भडला री जात, वारी घण वारी श्री हजा, गठजोडे से श्री जात उतारमी जी, म्हारा राज । —लो गी

उ०—३ हाली हाली मोत्या विचली लाल, कोई, काना केरा हाल्या वाळी-भटगा, श्री मोरी मड्या । हाल्या हाल्या छाती परला-हार, कोई, पायलडी ती खुडकी विछिया वाजिया, श्री मोरी मड्या ।

—लो गी

उ०—४ विचली यात छं—देवडे विजं सूजा ने मारनें सूजा री वमी ऊपर साथ मेलियो, उठे माली सूजा री मरायो, वसी सारी लूटी ।

—नेणमी

विचली-वासो—देखो 'विचली-वासो' (रू भे)

उ० —भेला मिली सजन लं चाल्या, सीडो माय जोडो रं । विचली-वासो विचमें लैरायो, गावड हुवे छे दोरी रं । —जयवाणी

विचवला, विचवला-स स्त्री —मध्यस्थता ।

उ०—वीरम ती जोईया विचं, भ्यामं रिणमल्ला, सावज जाणी साकडे घड कूजर घला । पला विद्राता पालता-दिन कढता 'दला', वे दला अळगा रहा, करता विचवला । —घी मा

विचवाळी-वि —बीच वचाव करने वाला ।

उ०—इतं विचवाळी सूर अपाल, मिएघर आयो रावळ माल ।

सतोखं वाता वागा साय, जुदा दळ कीघा वेहू जाय । —गो रू

२ बीच का, मध्य का, मध्यस्थ ।

सं पु—मध्यम्यता ।

उ०—तरं भाटी कल्याणदासजी कयी थं महाराज रा कामदार छी नं भडारी रूपचदजी रा वेटा छी सी मेडतियो वदळं थानु कोइ मारा नही । इतरं घाघळ गोयदासजी आयनें कयी भडारी रतन चदजी विचवाळी करं छं ने स्त्रीजी री निसाण छे तरं भाटिया नूं लोथ मगाय दीनी । —रा व वि

विचा—देखो 'बीच' (रू भे)

उ०—'सरं' रा करारा वचन 'कुसली' सुणं, अवनीमो 'पाल' वीरदा उजाळी । वादळा दळा नागोरा बीचा सु, अरक जीऊ भळकियो 'हरा' वाळी ।

—सरसिध मेहनिया और कुसळसिध चापावत री गीत

विचार-स पु [स विचार] १ किसी बात या विषय पर कुछ विचार विमर्श करने, सोचने या सोच कर निश्चित करने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ पिडत वेद पुरान क, वार्च करं विचार । 'हरीया' श्रीरा अकनि छं, आप न सुधि बुधि सार । —अनुभववाणी

उ०—२ राजा विचार करण लागी—आज घनतेरस हे अर काले रूपचदस । आ सूनम (असाढ सुद नम) गई ती उरणं परणिया नं पूरा तीन वरस च्हिया अर चौथो वरस लागग्यो ।—अमरचूँनडी

उ०—३ गाम वाळा मिळनें विचार कियो—मास्टर परदेसी पछी—आपणो गाम मे आयो हे, कुण ती इणरे पीसैला अर कुण इणरे पोवैला । —अमरचूँनडी

२ मन मे उठने वाली भावना, ख्याल, इरादा ।

उ०—सावण जळहर गाज सुण, वीजं उर घर खार । जग सूं उलटा जाणया, वाधा तरा विचार । —वा दा

मुहा—विचार मे पडणो=चिन्ता मे पडना, चिन्तायुक्त होना ।

३ किसी मुकदमे की सुनवाई करने की क्रिया या सुनाई करने के बाद किया जाने वाला फंमला या निर्णय ।

४ विचरने, धूमने या फिरने की क्रिया या भाव ।

५ ज्ञान ।

उ०—१ वहि वहि मूवा मानवी, करि करि लोकाचार । भेद न पायो भगति को हरीया विना विचार । —अनुभववाणी

उ०—२ मन तं ऊच न नीच गिन, तन तं लोकाचार । हरीया तन मन मिट गई, पाया ब्रम विचार । —अनुभववाणी

६ ध्यान देने की क्रिया या भाव, अमल करने की क्रिया या भाव ।

उ०—भतीजी उण नं समकाई—इए में आप री की चुक कोनी ।

भोलप म नीं भूल ई व्हे जावै तो भगवान इण साथे की विचार
नी करै । —फुलवाडी

७ निर्माण बनावट, रचना ।

८— राज लोक सिणगार । च्यारै प्रस्तावें चतुर,
वसियो भली विचार । —रा सा स

८ निर्णय, फैमला ।

९ निश्चय, सकल्प ।

१०—जनवासा मे मुख सुविधा री पूरी इतजाम हो । म्हें स्नान
ध्यान स निपटर्न कपडा पलटिया अर थोडी ताळ घाराम करण री
विचार कियो । कारण के लगन गोधुळिक ही अर उण वखत
उठे म्हने हाजर रैवणो हो । —अमरचनडी

१० सन्देह, शका हिचकिचाहट ।

११ मे —विचार, विचारि, वीचार, वचार, विचारु, विचारो,
विचचार ।

विचारक—वि [स विचारक] १ विचार करने वाला ।

२ विचरने वाला, घूमने वाला ।

३ ध्यान देने वाला, अमल करने वाला ।

४—कळा तिमगळ किता, वरण गुण दोस विचारक । पवै सिखर
एम गुपत, किता गुण श्रीगुण कारक । —रा ह

४ निर्माण करने वाला, रचनाकर्ता ।

५ निर्णय या फैसला करने वाला, न्यायवर्त्ता ।

६ बुद्धिमान, विद्वान ।

७ निश्चय या सकल्प करने वाला ।

८ शका या हिचकिचाहट करने वाला, सन्देहकर्ता ।

विचारकरता—वि [म विचारकर्ता] १ वह जा विचार करता हो,
सोचने-विचारने वाला ।

२ न्यायालय मे न्याय करने वाला, न्यायाधीश ।

विचारण्य—वि [स विचारण] १ जो विचार करने मे निपुण हो ।

२ अनियोग आदि की सुनवाई कर निपटारा करने वाला ।

विचारचतुर—वि —जो विचार करने मे निपुण हो, बुद्धिमान ।

३—१ प्रजानद मुयकारीठ, माइ पिता समान । विचारचतुर
डाहू ननु ए, दिइ ययोचित दान । —नळदवदती रास

३—२ विचारचतुर डाहा भला, डाहा गुणवत रै । भवितव्यता
तेदूनद नदइ, जै हुइ बलवन । —नळदवदती रास

विचारणीय—वि. [म] जो विचार करने योग्य हो ।

विचारणी, विचारयो—क्रि म —१ किसी बात या विषय पर कुछ
विचार-विमर्श करना, सोचना या सोचने-निश्चित करना ।

३—१ हिये होळी हुअै दीध दुख हजार, विचारै नित मुख सूँ
वाखाणी । सूरपण "जसा" महाराज री जगत सिर, जिसी है तिसी
अवरग जाणै । —नरहरदास वारहठ

३—२ वीर महाबळ घीर उर, सूरम सूरत घार । आवी आदर
ऊठियो, भावी सीस विचार । —रा. ह.

३—३ खारी मे सोगरा अर राव घरने वी हाळिया सारु भाती
ले जावण नै त्यार व्हियो उण वगत दूजोडी कुत्ती खारी मे मूडी
मारण सारु जुगत विचारण लागी । —फुलवाडी

३—४ ठकराणी तो आ इज चावती ही । ठाकर नै वत्ता खरा-
वण सारु वळै पूछयो—कौल दोरी है, राज सूँ निर्भला नी । पछै
पलटणा विचे अवारु पाछी विचार कर लिरावी । —फुलवाडी

२ किसी मुकदमे की सुनवाई करना या सुनवाई करने के बाद
फैसला या निर्णय करना ।

३ समझना, सोचना-समझना ।

४—१ अकबर अगम अगाध गह, तै रहिया अजतन्न । वाचे
त्युँ ही विचारियो, कमधै साचे मन्न । —रा. ह.

४—२ चिहु पखि दल माडी काइ ही राउ छाडी, हरखि हसीय
नारी बोल बोलइ विचारी । —सालिसुरि

४ ध्यान देना, अमल करना ।

४ ध्यान देना, अमल करना ।

४—१ आतम भाई जीव सब, एक पेट परिवार । दाहू मूळ
विचारिये, ती दूजा कौन गवार । —दाहूवाणी

४—२ थें तो म्हारै दुख री परवा नी करो, पण म्हने ती थारो
भली-भूडी विचारणी ई पडे । म्हारी कैणी मानी, गगाजी पाळा
मत जावो, नामो बळवा री कोई गाडी भाडै करली । —फुलवाडी

४—३ श्रीरगमा पातसाह आलम कू चितारे, अरुबर के पास
की चिता ना विचारै । साह अवरग के पास या समे आवै, सौ
ती मनसब रीक इनाम मनवछ्या पावै । —रा ह

४—४ श्रीरगमा पातसाह आलम कू चितारे, अरुबर के पास
की चिता ना विचारै । साह अवरग के पास या समे आवै, सौ
ती मनसब रीक इनाम मनवछ्या पावै । —रा ह

५ निर्माण करना, रचना करना ।

६ निश्चय करना, सकल्प करना ।

३—१ फजल सेख खुलती फज्जर, असुर घसै लागी अति आतुर ।
अस न खबै रिएछोड उताळो, चुरण खळा विचारै चाळो । —रा ह

३—२ थापना मन माहि विचारी, साध रहे याके पूजारी । अपणै
पूजा फछुव न आवै, साध पथ के गुरु कहावै । —मेहोजी गोदारो थापन

३—३ थापना मन माहि विचारी, साध रहे याके पूजारी । अपणै
पूजा फछुव न आवै, साध पथ के गुरु कहावै । —मेहोजी गोदारो थापन

७ सन्देह करना, शका करना ।

३—४ राउ भणइ नइ किसउ पवारउ, हिब तुम्हि मइ सु धरि

पाठधारी । राजु तुम्हार पूतू तुम्हारउ, अजीठ गरं किमु विचारउ
—सालिभद्र सूरि

८ चिन्तन करना, मनन करना ।

उ०—जळ थळ महीयल पेखता, सैसार सुघारं, ब्रह्म्यानी सो वडा,
जो ब्रह्म विचारं । कुदरती किरतार की करणी वळिहारं, रिजक
पाणी ह्यात मोत, उस अला सारं । —कैसीदास गाडण

९ अनुसन्धान करना, खोज करना ।

उ०—सतगुर का सिख जाणि, विचारं ग्यान कू । तन मन सोंपे
सीस, घरं उर ध्यान कु —अनुभववाणी
१० सोचना ।

उ०—१ हमें कुवरसी मोहला मे गयी । सो मन न लागै, रात
दिन भरमल में जीव वसै । तद वीरू रावजी नु कही, जो सावण
री तीज री कोल कर आयी छै, सो उठै गयी रहसी । जिणसु
जतन विचारणो हुवै मु विचारो ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ हु पण जाणू छू जो वीजी ती में सु पोहचा नाया । तद
श्री घाट विचारीयो छै, जो आवी छोहरी घर सु काढसा, उण नुं
मारसा । सो हु सरव जाणू छू ।—कुवरसी साखला री वारता ।

विचारणहार, हारो (हारो), विचारणियो—वि० ।

विचारिओडो, विचारियोडो, विचारघोडो—भू० का० कृ० ।

विचारीजणो, विचारीजवो—कर्म वा० ।

विचारणो, विचारवो, विचारणो, विचारवो, वचारणो, वचारवो
—रू० भे०

विचारमान, विचारवान—वि [स विचारवान्] जिसमे सोचने, समझने
और विचार करने की शक्ति हो ।

रू भे —विचारमान, विचारवान ।

विचारसक्ति, विचारसकती, विचारसक्ति, विचारसगति, विचारसगती—
स स्त्री. [स. विचारशक्ति] भला-बुरा पहचानने व सोचने-विचारने
की शक्ति, बुद्धि ।

विचारसासतर, विचारसास्त्र—म पु [स विचारशास्त्र] भीमासा शास्त्र
या भीमासा दर्शन ।

विचारशील—वि [स विचारशील] जिसमे सोचने, समझने और विचार
करने की शक्ति हो, विचारवान ।

विचारशीलता—स स्त्री [स विचारशील+ता प्र.] विचारशील या
विचारवान् होने का भाव, बुद्धिमता, अकलमंदी ।

विचारस्थल—स पु. [सं विचारस्थल] १ वह स्थान जहा किसी विषय
पर विचार किया जा रहा हो ।

२ न्यायालय ।

विचाराध्यक्ष—सं. पु. [स. विचार +अध्यक्ष] १ वह प्रमुख व्यक्ति जो
किसी विषय पर विचार करता हो ।

२ न्यायालय में किसी विषय पर विचार करने वाला प्रमुख व्यक्ति,
न्यायाधीश ।

विचारालय—स पु [स. विचार +आलय] १ विचार किया जाने
वाला स्थान ।

२ न्यायालय ।

(मि —'विचारस्थल' ।)

विचारि—देखो 'विचार' (रू भे.)

उ०—१ निमुणि नारि विचारि ठा पयसियइ, प्रीय तणी तडि
कडतिगि वयसियइ, सिरि पडिइ भड नइ घड घाउतइ, सुहउ कोडि
हणी तुभ राउतिइ । —सालिभद्र

उ०—२ पहिउलउ वेठउ करमदोमि वालपणि विवनउ, वित्रिअ-
वीरयु वीजउ कुमार वहुगुणसपन्नउ । राउ पहूतउ सरगलोकि
गगेयकुमारि, तउ लघु वषक ठविउ पाटि तिणि वयण विचारि ।

—सालिभद्र सूरि

विचारिका—म स्त्री —दासी, नौकरानी ।

विचारित—वि —१ जिस पर विचार किया जा चुका हो ।

२ जो अभी विचाराधीन हो ।

विचारियोडो—भू का कृ —१ किमी बात या विषय पर कुछ विचार
विमर्श किया हुआ, सोचा हुआ या सोच कर निश्चित किया हुआ
२ किसी मुकदमे की सुनवाई किया हुआ या सुनवाई करने के
वाद फंसला या निर्णय किया हुआ. ३ समझा हुआ ४ ध्यान
दिया हुआ, अमल किया हुआ. ५ निर्माण किया हुआ, रचना
किया हुआ ६ निश्चय किया हुआ, सकल्प किया हुआ. ७ सन्देह
किया हुआ, गका किया हुआ ८ अनुमन्धान किया हुआ, खोज
किया हुआ. ९ सोचा हुआ १० चिन्तन किया हुआ, मनन किया
हुआ.

(स्त्री विचारियोडी)

विचारी—स पु [स विचारिन्] १ कवच राक्षस का एक पुत्र ।

स स्त्री —२ जिस पर चलने के लिए बड़े बड़े मार्ग बने हों, पृथ्वी ।

३ देखो 'विचारी' (पु०)

विचार—स पु [स] १ श्री कृष्ण और रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न
दस पुत्रों में से एक वासुदेव का पुत्र ।

२ देखो 'विचार' (रू. भे.)

उ०—पाचइ गार्डय सुर सुरलोकि सुरवाट सिख धूणाविया ए,
महीयल महिलीय करइ विचार 'कवणु कीउ तपु द्रूपदिय' ।

—सालिभद्र सूरि

विचारी—१ देखो 'बिचारी' (रू. भे.)

उ०—१ नैनवा की चूक कन्हईया, मन विचारी पाय रह्यो दुख ।
ग्मीलाराज कर सो पावै, रै यी तो अनोखी न्याव कन्हईया ।

—रसील राज रा गीन

उ०—२ ऊवरै वचन हीण टाळी देर हुवो आधी, साधी सारी
मेलगो सभाम हेके साथ । सोढी काज लपेटो भालाळ सताबी सूप्यो,
विचारी सु'रद्रा लोक बग्यो आ विख्यात ।—वादरदान दघवाडियो

उ०—३ हरीया पीर परापती, तन तँ दई लगाय । वेद विचारा क्या
करै, बिन भुगत्या नही जाय । —अनुभववाणी

(स्त्री. विचारी)

विचाल, विचाल, विचाला, विचालि, विचाली, विचालू, विचाले, विचालँ -
देखो 'बिचै' (रू. भे.)

उ०—१ चक्री विचाल, रघुवर विसाल, जप जहर, सुण भरप
सूर । हणमत एह, इण गुण अछेह, सेवा सुसेव किनी कपेस ।

—र रू

उ०—२ बीजी निग्रह जुध जितू कोप करि नाखै, 'बीदा' भास भरि
घडा विचाल । इळ पुड तैण आकपे आहस, पनग कध रुखे पायाळ ।

—गेही मीसण

उ०—३ साथी छाडि गयो 'सजा' सुत, तिसियो लोह तरण रिणताळ ।
दामण चमकि भूमकिते दुजडै, वणीयो गुजर घडा विचाल ।

—खेतसी गाडण

उ०—४ चोथी प्रस्न रसाल रै, सुण 'किसी' स्वामी, भरी परिसदा
विचाल रै ।

—जयवाणी

उ०—५ परसेस गया पाधरा रे साभल्यउ जेय सुकाल । माणस
सबल विण मूभा रे, मारग माहि विचाल ।

—स कु

उ०—६ दावानल बलती भलहल नीकले भाल, बहु ब्रक्ष सघन
वन बले पसु पखी बाल । किरण हीक कारण नर आयो अग्नि
विचाल, जिण नाम जलै अग्नि ओल्हायै तत्काल ।

—घ. व भ

उ०—७ पतिसाह फउज फूटति पाळि, ब्रह्मड 'जइत' गाजइ
विचालि । अबहर जइत वरसइ अवार, घुडुकिया मोर मुहि खग
घार ।

—रा. ज. सी.

उ०—८ भागा सूर न भजई, भागा गुर नै गाळि । इणोया एकल-
मलडो, दोउ दळा विचालि ।

—अनुभववाणी

उ०—९ मछा मते गुमान करि तम ही जळ का जीव । तम
ऊगण हम आथवण, इतो विचाली पीव ।

—अनुभववाणी

उ०—१० रिळिया रिणताळा, कट किरमाळा, सीस भुजाळा
सुंडाळा, चाले रत खाळा, तेण विचाला, पलणियाळा पोखतू ।

—भगतमाळ

उ०—१० पदमणी दिलीयर होण प्रीत, साजादा फूटै रण सरीत ।
सूरमा लडै चवडै सभाळ, वेगमा घसै पडदा विचाल ।

—वि ग

उ०—१२ 'मद्' ऊपर 'माघडै' बळ, मूछा वाळी, 'धीरम' आगळ
धीरवर समसेर सभाळी । ऐकण घाव ऊडाडियो, त्रजटै त्रिहूनाळी,
'मद्' पोडै मारकी, रिणखेत विचाली ।

—धी मा.

उ०—१३ अति घख क्रोध बुह दळ भाणै, जूटा गमा डटेहड
जाणै । धण खग गजरि जाण घडियाळा, वागी फजर कनीज
विचालां ।

—सू प्र

उ०—१४ तो 'केहर' कहिजे सताव, वाइक विगताळा । कूदि
पडा गज कटहडा, चडि गीत विचाला ।

—सू प्र

उ०—१५ वात विचालै आवियो, भासत न्यान दिवाण । फिर
अजमेर अजीमदी, तिग विच दयो कुराण ।

—ग रू.

उ०—१६ भूम 'वहती' को जण भाळै, वाटवाग निभ समद
विचालै । कमघ खडा भागे दस कोसा, दाखै कथ निरदोगा दोसा ।

—रा क

उ०—१७ हरीया नीकी ना डळ, वदी वरी डराय । दोय
विचालै जीवडी, करणो नाय न आय ।

—अनुभववाणी

उ०—१८ तद कवर कहो, रूही खरळा परणोगा पछै तीज दोय
विचालै गई । जितरै सारो साथ आण पहतो । तद फुरमावण
लागा, म्हा खरळा परणिया पछै आ तीसरी तीज छै ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—१९ ते ऊपरि पातिसाह अकाबर वांसी कियो । वि फोजा विया ।
मिरजै रै वासै आप पातिसाह पधारिहा । मिरजो बिहू फोजा
विचाला अर पातिसाह रा गोडा होइ नीसरियो ।

—द वि.

विचाली-वि —१ मध्यस्थ ।

स स्त्री—२ मध्यस्थता ।

क्रि. वि.—बीच में से ।

विचि-स स्त्री [स] १ तरग, लहर ।

२ कटि, कमर ।

उ०—चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग विचि हीण । मदिर बोली
मारवी, जाणि अणक्की वीण

—ढो. मा

३ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ करि घड वेहड गरा केविया, हाथू कै गळवाह हिचि ।
हस वप हूत विछूटि हालियो, वाटियो सुरा विमाण विचि ।

—तीकमदास खिड़ियो ।

उ०—उपजै प्रेम मन उलसै, बाला लागै लछिवर । माहरै रिबै
विचि मिडिया, चरण तुहारा अकधर ।

—मी अ.

७०—३ माहव एक मरद, देव कोई और न दीसै । लाख
चौरासी जीव, परम दाढा विचि पीसै । पी भ.

७०—४ तुम मूँ विचि अंतर घणउ, किम करू तोरी सेव । देव
न दीधि पाखडी, पण दिल मईं तु इक देव । —स कु

७०—५ निग्र वस चाढे नूर, करे महाजुघ कूमउत । वगडी
घणो विराजिअी, सूर सभा विचि सूर । —र. वचनिका

७०—६ ऊभी सह सखिए प्रससिता अति, किनारथी प्री मिळए
कृत । अटत सेज द्वार विचि आहुटि, जूति दे हरि धरि समाश्रित ।
—वेलि

रू भे —विचि, चीचि, विची ।

विचित, विचित्त-वि [स] १ अचेत, वेहोश ।

२ आनन्द-मग्न ।

७०—राम नाम सुख सागर भरीया, चाख्या चित विचित्त ह्य
रहीया । चाखि चाखि में भया निहाला, पायु जे कोई पीये
पीयाला । —अनुभववाणी

३ देखो 'विचित्र' (रू. भे)

७०—वाका विचित्त पाधोर वक, ताणइ कमाण पइतीसटक ।
आयासि पखि पाइइ अभुल्ल, माकडामुक्ख मुडा मुगुल्ल ।

—रा ज सी

विचित्र-वि [स] १ कई प्रकार के रगो या बरों वाला ।

२ अद्भुत, अनोखा, विलक्षण, विस्मयकारक ।

७०—१ दूत तिहा एक आवियो, जास वचन सुपवित्र । कर जोडी
त्रप आगलै, मेल्हो लेख विचित्र । —वि कु

७०—२ जिनवर दीघी देसना, विचित्र प्रकार ना भावो जी ।
आगार नै अणगार नो, चतुरा सुण्यो धरि चावो जी ।—जयवाणी
३ सुन्दर, खूबसूरत ।

७०—१ प्रजक घोप ते अनोप रूप चूप पार मे, हुए विछात
सूळि लूव भूल फूल हार में । अनूप ताक गोख लीविचित्र चित्र
सूँ अटा, घणू उतग अग जाणि सग मेघ ची घटा । —रा रू

७०—२ तठा उपराति राजान सिलामति तिण राजान कुंअर
राजाउत माळ ठाकर रे च्यार पटराणी छै । नाम मियागार सुदगी
सोभाग सुदरी, सरूप सुदरी, मदन सुदरी । माख्यात देवागना पद-
मणी विचित्र सुलवणी चोसठ कळा री जाणएाहार विनैनी करण-
हार लिखमी पारवती गगा सरसती री अरवतार वारह आभूजन
विराजमान हुआ छै । —रा सा स

४ चतुर, बुद्धिमान, होशियार ।

७०—मदिरतरि किया खिणतणि, मिळिवा, विचित्रे सखिए समा-
श्रत । कीधे तिण वीनह ससक्रित, करण सु तणु रति समकृत ।

—वेलि

स. पु—१ रीच्य मुनि के कई पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

(पुराण)

२ देवसावण मनु के पुत्रों में से एक पुत्र ।

३ महाभारत युद्ध में कौरव पक्ष का एक राजा, जो क्रोधवश
नामक दैत्य के अण से उत्पन्न हुआ था ।

४ धर्मराज (यम) का एक लेखक ।

५ एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसके द्वारा किसी फल की सिद्धि
के लिए किसी प्रकार का उलटा प्रयत्न करने का उल्लेख
किया जाता है ।

६ मुसलमान, यवन ।

७०—१ सेना सितर हजार सू, विचित्र अमित्र बळवान । कियो
विदा रवि चै उदै, मुदै तहवरखान । —रा रू.

७०—२ इण पर तहवर खान अछायी, विचित्र हुवो लडता रस
वायी । सिर हिंदवाण तरण रीसायी, 'धौरग' पीठ लगे हिज आयी ।
—रा. रू

७०—३ वात हुई ग्रीखम वौळाई, ऊपर घुर वरखा रत आई ।
असतखान उर थयो अचीती, विचित्रा तरणो सोच सुण वीती ।

—रा रू

७०—४ विचित्रा आदर दाख वमेक, आर्पं दोय तेग अनै अस एक
ईखै अस सुद्व चोज अथाळ, 'मालावत' लोभ धरै जगमाल ।

—गो रू

७०—५ वेसै विचित्र सिंदूर वन्न, कूडी कपाळ के छाज कन्न ।
कट्टी करगि वाचइ कुराण, मुसकीण मुला के मुसळमाण ।

—रा. ज. सी

रू भे —विचित्र, वचत, वचत्र, विचत्र, विचित, विचित्त, विचित्राण,
विचित्रायळ, विच्यत्रि ।

विचित्रता—स स्त्री [स. विचित्र+ता, प्र] विचित्र होने की अवस्था
या भाव ।

७०—मिश्रता मिळापी मेळ प्रीति की पवित्रता र्यों, विविध विचि-
त्रता विधान वडणन कै । रहन अनोखी रीति सहन स्वभाव सीधो,
कहण सुणण कथा यथा तीर तन कै । —ऊ का.

रू भे —विचित्रता ।

विचित्रवीरज, विचित्रवीरय, विचित्रवीरयु, विचित्रवीरय्य—स. पु. [स.
विचित्रवीर्य] १ चंद्रवशी राजा शातनु का मत्यवती के गर्भ से
उत्पन्न एक पुत्र जिमका विवाह काशीराज की राजकुमारिया
अविका एव अवालिका के साथ हुआ था । (महाभारत)

७०—१ पहिलठ वेठठ करमदोसि बालप्पण विवनठ, विचित्र-
विरयु वीजठ कुमार वहुगुणसपन्नठ । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ अगनदणु विदुर नामु नामि जि सरीखठ, खइ सीणइ
पुणु विचित्रधिरयु पडु राजि प्रतीठिउ । —सालिभद्र सूरि

वि वि—यह चित्रागद का कनिष्ठ भ्रता था । चित्रागद गधर्व
युद्ध में मारा गया, इसलिए भीष्म ने इसे राजगद्दी पर बैठाया ।
भीष्म ने काशीराज की कन्याएँ अम्बा, अम्बिका एवं अम्बालिका को
स्वयंवर में जीत लिया एवं उनका विवाह इससे करना चाहा ।
किन्तु उनमें से अम्बा ने इससे विवाह करने से इन्कार कर दिया ।
क्षेप दोनों राज-कुमारियों अम्बिका एवं अम्बालिका के साथ
इसका विवाह हो गया । असयमपूर्णा जीवन के कारण,
यह राजयक्ष्मा का शिकार हो गया, एवं अल्पवय में ही अनपत्य
अवस्था में इसकी मृत्यु हुई । इसकी मृत्युपरान्त भीष्म ने अम्बिका
एवं अम्बालिका को नियोग-पद्धति से सतान उत्पन्न करने की आज्ञा
दी । तदनुसार सत्यवती के कोमलवयस्य के पुत्र कृष्णद्वैपायन
(व्यास) से अम्बिका एवं अम्बालिका के क्रमशः घृतराष्ट्र एवं पाण्डु
नामक पुत्र उत्पन्न हुए और अम्बिका की दासी से विदुर उत्पन्न
हुआ । घृतराष्ट्र जन्माध एवं पाण्डु का रंग पीला था ।

२ एक शिव भक्त, जो शिव की उपासना के कारण जीवनमुक्त
हुआ था ।

३ यीर भद्र नामक एक शिवगण, जिम्ने दक्षयज्ञ का विध्वसन
किया था ।

वि वि—यह चित्रागद(गधर्व)का पुत्र था जो पूर्वजन्म में एक विधवा
शाह्याणी तथा चाडाल का पुत्र था, पर अनायास शिवरात्रि व्रत
के करने से चित्रागद का पुत्र हुआ । जन्मान्तर में शिवसायुज्य
को प्राप्त हो कर यही शिवगण वीरभद्र हुआ । (गृह शातनु के
पहले की बात है ।)

विचित्रशाळा—स स्त्री [स विचित्रशाळा] जहां अनेक प्रकार के विचित्र
पदार्थों का संग्रह हो, अजायबघर ।

विचित्राण—देखो 'विचित्र' (६) (रू भे)

उ०—कमघञ्ज सकञ्जा कारणा, कळा भुजा मापे कवण ।
विचित्राण घणी इम विग्रहे, गदियों फिर पडती गयण ।

—रा रू

उ०—२ विचित्राण निवड घड महण वेळ, मुरधरां ह्य नजर
मेळ ।

—रा रू

विचित्रा—स. स्त्री —भैरव राग की एक रागिनी । (सगीत)

विचित्रायळ—देखो 'विचित्र' (६) (रू भे)

उ०—कलमी प्रस देवळ देण कीयू, लोवडी प्रतपाळ यं रावें
लियूं । विचित्रायळ लुट्ट चार वळा, रन माभळ म्हे घन वाळ कळा ।

—पा. प्र

विचित्रित-वि [स] १ विभिन्न प्रकार के रंगों से वचित्रित, रंग-
विरगा ।

२ अनोखा, अद्भुत ।

उ०—यह पत्र विचित्रित चित्र योग्य, आरण्य-रुदन वत भी
अयोग्य । प्रिय जाट पुत्रि वत प्रसनपेस, पितु कति पपीलिका बिल
प्रवेस । —ऊ का

रू भे—विचित्रित

विचि—१ देखो 'विचि' (रू भे.)

२ देखो 'वीच' (रू भे)

विचेत—देखो 'वेचेत' (रू भे)

विचेतन-वि [स] १ जिसमें चेतना न हो, विवेकहीन, बेहोश ।

२ जिसमें जीव न हो, जीवरहित, मृत ।

विचेटियों—देखो 'विचेटियों' (रू. भे)

विचेतस—स पु [स] भव्य देवों में से एक

विचेरण—क्रि वि—मध्य में, बीच में ।

उ०—क्या फेर कर काठ की, मन की माळा फेर । जनहरिया
माळा फिर, विना विचेरण भेर —अनुभववाणी

विचेस्ट-वि [स विचेष्ट] जो किसी प्रकार की चेष्टा न करता हो,
निश्चेष्ट ।

विचें—देखो 'विचें' (रू. भे.)

उ०—१ अवसास विचें बाणास आछटे, कहर 'पदम' घमजगर
करि । 'मोहण'-मरण किया मारह्य, अकेण घाय छ-दूक अरि ।
—पदमसिध करणसिधोत राठोड री गीत

उ०—२ दिन ३ गढ नू डोवी हुवी । पछे गढ माहिला रा प्राण
छूटा । पछे रा गोपाळदास, रा. वीठळदास, रा. नाहरपान विचें
रावळ सबळसिध, भाटी रामसिध पचाइणोत फेर नै वात कीवी ।

—नैणसी

उ०—३ खगार पण मोटी हुवी । वरस २० तथा २२ माहे हुवी ।
साहवी सभाही । तर साथ करन रावळ नै या विचें सीय नदी छे,
तठे आयी । पंती कानी सू रावळ माणस हजार सात-आठ सू
आयी ।

—नैणसी

उ०—४ सवार हुवे वळ वेढ हुवे । यू वारं वरम वेढ कीवी ।
आसापुरा देवी विचें दी नै लीपी, तिए सू दिन दिन रावळ नू
हार आवती जाइ ।

—नैणसी

उ०—५ विचित्रा रज धू धर विचें, कला कीध प्रमाण । वहरगी
चीधा लखी, 'अवरगी' नीसाण ।

—रा रू.

उ०—६ गावड जाणं खरादी खराद उतारी छं । कमळ नाळसी वाहा लाल चूडो वणिओ छं । विचं सोत्रन चूडो विराज रही छं ।
—रा सा स.

मुहा —विचं देणो=(१) शपथ लेना, सोगन लेना ।
(२) मध्यस्थ करना ।

विचक्षण—देखो 'विचक्षण' (रू. भे)

उ०—वीर विचक्षण क्रीत तरणो वर, ढाहण खाग अरिदा ठूकी ।
'नाथ' तरणो सुरतेस अमं नर, चित ठीक नही कुळ रीत न चूकी ।
—सुरतसिंह चहुवाण री गीत

विचचार—देखो 'विचार' (रू. भे)

उ०—पातसाह भ्राळोज, मन्न विचचार विमासं । बळ छळ दळ दखवै, पाण विचारण कळासं ।
—गु रू व

विचचवानं—देखो 'विचचवानं' (रू. भे)

उ०—सुरंग रंगभोमि में तरग है न तान की, ढमक ढोलकी न त्यु घमक धुघरान की । छमक विचचवान की दमक ना दरीन की, अमक जेहरान की चमक ना चुरीन की ।
—ऊ का

विचछाय, विचछाया—स. पु [स वि + छाया] १ पक्षियों की छाया ।

[स वि. = विगत + छाया] २ वह जिसकी छाया नहीं पडती ही, भूत, प्रेत, देवता, दानव आदि ।

वि [स वि = रहित + छाया = कान्ति] कान्तिहीन, चमकरहित ।

विचिछन्न—स पु [स वृश्चिक] विच्छू ।

विचिछण, विचिछण—वि [स. विस्तीर्ण] १ फंला हुआ, विन्तृत ।

२ देखो 'विचिछन्न' (रू. भे)

विचिछत्ति, विचिछत्ति—स स्त्री [स विचिछत्ति] १ काट कर अलग करने की क्रिया या भाव, टुकड़े करने की क्रिया या भाव ।

२ कविता में या वेशभूषा आदि में होने वाली लापरवाही या बेढंगापन ।

३ स्त्री द्वारा थोड़े शृंगार से पुरुष को मोहित करने की चेष्टा का साहित्य में एक भाव ।

४ साहित्य का चमत्कार ।

५ एक स्वाभाविक अलंकार विशेष जिसके अनुसार माला, वस्त्राभूषण आदि के अस्तव्यस्त धारण करने से सौन्दर्यवृद्धि और मतान्तर में कान्ति के पोषक किंचित् रचना-कलाप ।

रू. भे.—विचिछत्ति, विचिछत्ति ।

विचिछन्न, विचिछन्न—वि. [स विचिछन्न] १ जुदा, पृथक, अलग ।

२ जिसका विच्छेद हुआ हो ।

३ समाप्त किया हुआ ।

विच्छु—१ देखो 'विच्छू' (रू. भे)

२ देखो 'विच्छू' (रू. भे)

विच्छुडणो, विच्छुडवो—देखो 'विच्छुटणी, विच्छुटवो' (रू. भे)

उ०—पडो विच्छुडो दाडमी जाणि पक्की, दिपे अरारपारा हजारा दरक्की । वचं अग्र सूरु 'अभो' खग वाहै, सुतो वाह सी वाह चडो सराहै ।
—रा रू.

विच्छुडणहार, हारो (हारी), विच्छुडणियो—वि० ।

विच्छुडिओडो, विच्छुडियोडो, विच्छुडयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छुडोजणो, विच्छुडोजवो—भाव वा० ।

विच्छुडियोडो—देखो 'विच्छुटियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छुडियोडो)

विच्छुडो—देखो 'विच्छुडो' (रू. भे)

विच्छुडो—देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू. भे.)

(स्त्री. विच्छुडो)

विच्छू—देखो 'विच्छू' (रू. भे)

विच्छूडो—देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू. भे)

(स्त्री विच्छूडो)

विच्छेद—स पु [स विच्छेद] १ छेद कर या काट कर अलग करने की क्रिया ।

२ बीच में ही किसी क्रम के टूट जाने की क्रिया या भाव ।

३ नाते या रिश्तों को तोड़ने की क्रिया ।

४ किसी प्रकार अलग या टुकड़े टुकड़े करने की क्रिया ।

५ अघ्याय, परिच्छेद या कविता में यति ।

रू. भे.—विच्छेद, विच्छेद, विच्छेद ।

विच्छेदक—वि [स] १ काट कर अलग करने वाला ।

२ नाते-रिश्ते तोड़ने वाला ।

३ विभाग करने वाला ।

विच्छेदण—स पु [म.] काट कर या छेद कर अलग करने की क्रिया ।

रू. भे—विच्छेदन ।

विच्छेदणो, विच्छेदवो—क्रि स —१ छेद कर या काट कर अलग करना ।

२ नाते-रिश्ते तोड़ना ।

३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकड़े टुकड़े करना, विभक्त करना ।

४ छोड़ना, मुक्त करना ।

५ खोलना ।

६ बीच में ही किसी क्रम को तोड़ देना ।

विच्छेदणहार, हारो (हारी), विच्छेदणियो—वि० ।

विच्छेदियोडो, विच्छेदियोडो, विच्छेदयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छेदोजणो, विच्छेदोजवो—कर्म वा० ।

विच्छेदणो, विच्छेदवो, विच्छेदणो, विच्छेदवो, वच्छेदणो, वच्छेदवो, वच्छेदणो, वच्छेदवो, विच्छेदणो, विच्छेदवो—रू० भे० ।

विच्छेदन—देखो 'विच्छेदण' (रू. भे)

विच्छेदियोडो—भू. का. कृ —१ छेद कर या काट कर अलग किया

हुआ. २ नाते-रिक्ते तोडा हुआ ३ किसी प्रकार अलग-अलग या टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, विभक्त किया हुआ. ४ छोडा हुआ, नुक्त किया हुआ. ५ खोला हुआ. ६ बीच में ही किसी क्रम को तोडा हुआ ।

(स्त्री. विच्छेदियोडी)

विच्छेदी-वि. [स विच्छेदिन्] छेद कर या काट कर अलग करने वाला ।

विच्छोडणो, विच्छोडवो—देखो विछोडणी, विछोडवो' (रू. भे)

विच्छोडणहार, हारी (हारी), विच्छोडणियो—वि० ।

विच्छोडिओडो, विच्छोडियोडो, विच्छोडयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छोडीजणो, विच्छोडीजवो—कर्म वा० ।

विच्छोडियोडी—देखो 'विछोडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छोडियोडी)

विच्छोटणो, विच्छोटवो—देखो विछोटणी, विछोटवो' (रू. भे)

विच्छोटणहार, हारी (हारी), विच्छोटणियो—वि० ।

विच्छोटिओडो, विच्छोटियोडो, विच्छोटयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छोटीजणो, विच्छोटीजवो—कर्म वा० ।

विच्छोटियोडी—देखो 'विछोटियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छोटियोडी)

विच्छोह—देखो 'विछोह' (रू. भे.)

उ०—मित्र अनइ मित्रह नी घरणी हूतउ अधिकउ मोह । कुणहि कु बोलइ माहोमाहि कीधउ वाग विच्छोह । —हीराणुद सूरि

विच्छोहणो, विच्छोहवो—देखो 'विछोहणी, विछोहवो' (रू. भे)

उ०—घरा मोर खंगा खुरा जोर धूज, मरै वग विच्छोहिया म्रग मूज । हमल्ला असा सेस चा सीस हल्लै, दिसा अग वाजू सकाजू दहल्लै । —रा रू.

विच्छोहणहार, हारी (हारी), विच्छोहणियो—वि० ।

विच्छोहिओडो, विच्छोहियोडो, विच्छोहयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छोहीजणो, विच्छोहीजवो—कर्म वा० ।

विच्छोहियोडी—देखो 'विछोहियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छोहियोडी)

विच्यत्रि—देखो 'विचित्र' (रू. भे.)

उ०—अमहारी सासू तणु सणगार वरणयू, पणि कसिउ एक छि जे सासू तणु मणगार ? करि ककण सोवरणमि चूडो, रूपइ रभा अनि रूअडी, चित्र विच्यत्रि करी उपइ, ऊपरि एकाउलिहारि, सरिमु मोसी तणु हार, भूमणा तणु भूमकार, । —व. स

विच्छडणो, विच्छडवो—फि स —१ मारना, सहार करना ।

उ०—जद जावै रं जद जावै, भठ सेस गयी समझावै । रे मीत नचित हुवो कपराजिद, याद हरी नह आवै । तोरी वीर विच्छडे तीरा, या गत सो हिव थावै ।—र० रू०

२—देखो 'विछोडणी, विछोडवो'—रू. भे.

विच्छडणहार, हारी (हारी), विच्छडणियो—वि० ।

विच्छडिओडो, विच्छडियोडो, विच्छडयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छडीजणो, विच्छडीजवो—कर्म वा० ।

विच्छडियोडी—भू का कृ.—१ मारा हुआ, सहार किया हुआ ।

२ देखो 'विछोडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छडियोडी)

विच्छडणो, विच्छडवो—देखो 'विछुडणी, विछुडवो' (रू. भे.)

उ०—१ सत्गुरु मिल्या सहज घर पाया, विच्छड्या हस मिळ्या । उलटा सहज आपमें मिळ्या, पद निरवाणी पाया ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—२ तठा उपरात करिनै राजान सिलामति सिकारी ठोड पहाडा री पाखती वना रा भगार मिळिनै रहिया छै, जाणै धया दिना रा विच्छडे मीत मिळै तिया भाति रा रूख मिळि नै रहिया छै —रा. सा स.

उ०—३ सुंदर आठै मुळकती, ऊमी महला रं माह । इण उणियारं लोभया, निरख्यो नवला नाह । रहो रहो वलहा विच्छडो कय इण बार । —जयबाणी

विच्छडणहार, हारी (हारी), विच्छडणियो—वि० ।

विच्छडिओडो, विच्छडियोडो, विच्छडयोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छडीजणो, विच्छडीजवो—भाव वा० ।

विच्छडाणो, विच्छडावो—देखो 'विछुडाणी, विछुडावो' (रू. भे)

विच्छडाणहार, हारी (हारी), विच्छडाणियो—वि० ।

विच्छडायोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छडाजणो, विच्छडाजवो—कर्म वा० ।

विच्छडायोडी—देखो 'विछुडायोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विच्छडायोडी)

विच्छडावणो, विच्छडाववो—देखो 'विछुडाणी, विछुडावो' (रू. भे)

विच्छडावणहार, हारी (हारी), विच्छडावणियो—वि० ।

विच्छडाविओडो, विच्छडावियोडो, विच्छडान्योडो—भू० का० कृ० ।

विच्छडावीजणो, विच्छडावीजवो—कर्म वा० ।

विच्छडावियोडी—देखो 'विछुडायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. विच्छडावियोडी)

विच्छडियोडी—देखो 'विछुडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—१ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

उ०—अजामेळ जमदल अगा, विद्युत्पणो विखमी धार । कीधी नारायण कहै, पुत्तर हेत पुकार । —ह र.

२ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे.)

उ०—असं छाया विरख सु, हरीया रही लपटि । जसं माया बहा सु, कसं जाय विद्युत्पणो । —अनुभववाणी

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—भाव वा० ।

विद्युत्पणोडी—१ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

२ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—१ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे.)

उ०—कोमड गरज्ज हुए हलकार, भडा भालोड करत भभार । एकूकी मूठ विद्युत्पणो असख, परं सर फूटै कोरी पख । —गु रु. ब.

२ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—भाव वा० ।

विद्युत्पणोडी—१ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

२ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पण-स. पु —दूध दूहते समय, दूध देने वाले पशु के स्थानों को घोंके लिए, दूध दूहने के बर्तन में, ले जाया जाने वाला पानी ।

रु. भे—विद्युत्पण ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

उ०—हाथ पग मिटी सू उजळा कीजै छै । कुरळा कीजै छै । सिन्ध्यावादण रो बखत हुवौ छै, वनाती आसण विद्युत्पणो छै । पीतळ रा भरत रा धूपिया आगं आण मेलजं छै । —रा सा स

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—भाव वा० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—१ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

उ०—१ सखि आरति चिता अपहरइ, विद्युत्पणो वाल्हेसर मेलइ रे । रोग सोग गमाइइ कीनर, दुसमणि नइ ठेलइ रे । —स. कु.

उ०—२ काहै कू अखिया लगाई नटनायक । समज मिजाल रूप मन मोह्यी, मिळी विद्युत्पणो दुखदायक । —रसील राज रा गीत

२ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

३ गमन करना, चलना-फिरना ।

उ०—३ जब गुप्त जग देव भेव कोई विरळा पावै, रहै सरण जो जीव बहुर भव जळ नहीं आवै । विस्णु रूप भवतार परगट पोहमी मे आए, सतजुग विद्युत्पणो जीव उनकूं आन चिताए ।

—कोल्हजी चारण

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—भाव वा० ।

विद्युत्पणोडी—१ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

२ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—क्रि स—१ साफ करना, धोना ।

२ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी, विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—कर्म वा०/भाव वा० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—१ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे)

उ०—नार घर की दे रही तानी, राज नै लिखती परवानी । जावता समझाया थाने, फेर मन विद्युत्पणो कथाने । —लो. गी

२ देखो 'विद्युत्पणो, विद्युत्पणो' (रु. भे.)

विद्युत्पणहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—कर्म/भाव वा० ।

विद्युत्पणोडी—१ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ०—१ साफ किया हुआ, धोया हुआ ।

२ देखो 'विद्युत्पणोडी' (रु. भे.)

(स्त्री विद्युत्पणोडी)

विद्युत्पणो, विद्युत्पणो—क्रि स. [विद्युत्पणो, विद्युत्पणो क्रि का प्रे रु]

विद्युत्पणो की क्रिया किसी दूसरे से करवाना ।

उ०—तव दूसरे रोज रघुनाथसिंह नै दरीखाना बग्याया, रजवाडू का मुस्तब और दस्तूर सत्र जग्याया । पुराणीसी विद्युत्पणो गदी विद्युत्पणो, फाटीसी मसनद रली विद्युत्पणो । —दुरगावत्त बारहठ

विद्युत्पणोहार, हारो (हारी), विद्युत्पणियो—वि० ।

विद्युत्पणोडी—भू० का० कृ० ।

विद्यवाईजणो, विद्यवाईजवो—कर्म वा० ।

विद्यवायोडी—भू का कृ.—विद्याने की क्रिया किसी दूसरे से करवाया हुआ ।

(स्त्री विद्यवायोडी)

विद्यवावणो, विद्यवाववो—क्रि स (विद्याणो, विद्यावो क्रि का प्रे कृ) किसी दूसरे से विद्याने का कार्य कराना ।

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरा, नोख गुलाव छडक घण नीरा । जळ गुलाव वेळुका जमावै, विमळ पटी सीतळ विद्यवावै ।

—सू प्र

विद्यवावणहार, हारो (हारो), विद्यवावणियो—वि० ।

विद्यवाविश्रोडो, विद्यवाविश्रोडो, विद्यवाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्यवावीजणो, विद्यवावीजवो—कर्म वा० ।

विद्यवाविश्रोडो—भू का कृ —किसी दूसरे से विद्याने का कार्य करवाया हुआ ।

(स्त्री विद्यवाविश्रोडो)

विद्यवो—१ देखो 'विद्यवो' (रू भे)

२ देखो 'विद्योह' (रू भे)

उ०—मरजो रै राईका, थारोडी जी नार, सैणा री विद्यवो दुसमी पाडियो, जी म्हारा राज ।

—लो गो

विद्यहो—देखो 'विद्योह' (रू भे)

विद्याणो, विद्यानो—देखो 'विद्याणो' (रू भे)

उ०—इळा पिंगळा नाडो मिळकर, सुखमनि किया विद्यानी । अरस परस पीया सु खेली, मगना भई दिवानी ।

—अनुभववाणी

विद्याइत—देखो 'विद्यायत' (रू भे)

उ०—१ तठा उपराति करिनें राजान सिलामति उवा हमामा महला वाहरि वाग-बगोचा रा रसता लाग़ा छै । चौकीए विद्याइत वणो छै । पाखती जळ कूल छूटि नै रही छै ।

—रा सा स.

उ०—२ धर्य मगाय पान तावोल रा रस लीजै छै । ऊजळी सपेत विद्याइत ऊपरै ऊजळै वणाव किया ऊजळी रुसनाई लाग रही छै । इण भाति स हेमत रिंत माहे रात रा सुख विलास माखीजै छै ।

—रा सा स

विद्याणो, विद्यावो—देखो 'विद्याणो, विद्यावो' (रू भे)

उ०—१ चौकी रूप पिलग चढाए, विमळ पुहुप घण सेज विद्याए । सेक पहुप प्रफुलित इम सोहे, मदन वसत इद्र मन मोहे ।

—सू प्र

उ०—२ जनहरीया चढि न्यान गज, जाजम अघर विद्याय । जगत सरूपी कूररा, भुसळि मरो भसि जाय ।

—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया अपन पीव सु, सूती सेक विद्याय । जो राखे मन श्रीर सु, तो विभचार कहाय ।

—अनुभववाणी

उ०—४ एक बोलै वरडा बोल ए, रोद उपनाय सटकै दे मोल ए । मार्ग दूजा कर्न जाय ए, तरै गिदरो देवै विद्याय ए ।

—जयवाणी

उ०—५ जिक् दिगपाळ रजपूत सामत अजानवाह ठाकुर अडाबीड दरवारै आइ खडा रहिआ छै । दरवार दुलीचा विद्याइजै छै ।

—रा. सा. स.

विद्याणहार, हारो (हारो), विद्याणियो—वि० ।

विद्यायोडो—भू० का० कृ० ।

विद्याइजणो, विद्याइजवो—कर्म वा० ।

विद्यात, विद्याति, विद्यायत—देखो 'विद्यायत' (रू. भे.)

उ०—१ प्रजक श्रोप तै अनोप रूप घूप पार मे, हुए विद्यात सुलि लूव-भूल फूल हार मे । अनूप ताक गोख श्री-विचित्र चित्र सू अटा, धणू उतग अग जाणि सग मेघ ची घटा ।

—रा रू

उ०—२ सह वंठत जान विद्यात सरै, वकियो सुत सारग पूरव रै । विप सोघ जडा वसु वासव मै, वरतं मुख वायक आसव मै ।

—पा प्र.

उ०—३ जिक् दिगपाळ रजपूत सामत अजानवाह ठाकुर अडाबीड दरवारै आइ खडा रहिआ छै । दरवार दुलीचा विद्याइजै छै । विद्यात वणि नै रही छै । दरवार वणियो छै ।

—रा. सा स.

उ०—४ तठे विलाइत री गथी चटाइ अमोलक विद्याइ रही छै । तिण ऊपरि वंठा छत्रोम रोग हरै ऊपरै डोलिआ गिलमा री विद्याति वणिनै रही छै ।

—रा. सा स

उ०—५ विद्यायत पर वंठै, सरव ही कवीसर, अचरी का केड, जिसकूं सरस्वती का वर । जिस विद्यायत पर, थटाव चरचा कै थहे । श्रीर भी कवीसुरा नै, क्या क्या ग्रथ कहे ।

—वा दा.

उ०—६ अबदुल्ला उर मडळ आयत, वणी मिळण कज सौज विद्यायत । सैदा मिळण लिया दळ साजा, रोळ गथी [अजी] महा-राजा ।

—रा रू

विद्यायतु—स पु —विद्याने का वस्त्र ।

विद्यायोडो—देखो 'विद्यायोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्यायोडो)

विद्याळ, विद्याल—देखो 'विद्याल' (रू भे)

उ०—छाड्यो नयर विद्याल छी, छाड्या साभरि का रिरावास । येक बलावै वाहुइथा, नाह उत्तरीयो नदीय वनास ।

—बी दे

विद्यावण, विद्यावणो—देखो 'विद्यावणो' (रू. भे)

उ०—२ वसत रै विखै श्रीकस्या रै घर पुहुप ही का छै । ओढणा विद्यावण पणि पुहुपा ही का छै । पुहुपाहि कै हीडीळ श्रीकस्या हीड छै । सखो छै सो भी सब पुहुपा माहै छै ।

—वैलि टी.

उ०—२ विधि सूं करी विद्यावणा, विच में मेल्यो धाल । भोजन की बेला हुई, आय बैठो भूपाल ।
—जयवाणी

उ०—३ तठा उपरायत जाजमा गिलमा रा विद्यावणा हुयनै रह्या छै । ऊपरा गदरा चादणी विद्यायर्ज छै ।
—रा. सा स.

उ०—४ ज्या रँ खाख विद्यावणी, श्रोदण नूं आकास । ब्रह्म पोख सतोख वित, पूरण सुख त्या पास ।
—वा दा.

विद्यावणी, विद्यावनी—देखो 'विद्याणी, विद्यानी' (रू भे.)

उ०—१ हिवकै गाढ घणो करै । जीमें मत ही । अर तू जोर धातै, म्हारी बहू हु लेनै जाइस्यु । अर जै न मेल्ले तो लाकडी बहाडै । पिएण बहू विगर लीया घर मता आए । बाच विछाई अर कहू छु ।
—कावळी जोईयो नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ एक दिन, रजपूत राजा री कुंवर वरस ५६ री हुतो, तिके नु रामति लगाईने डेरं लायो । आणि कुंवर नूं नै ढोलियो विछाई विद्यावणा करि कुंवर नु वैमाणियो ।
—बाप री सीख री वात

उ०—३ देव तेरी वाटडिया वलि जाव, जाह म्हारी साई सतगुर आवियो । पगि पगि घरू तवोल, वाटडिया म्हारे गुर कै फूल विद्यावियं ।
—ऊदोजी नैण

विद्यावणहार, हारी (हारी), विद्यावणियो—वि० ।
विद्याविश्रोडो, विद्यावियोडो, विद्याव्योडो—भू० का० कृ० ।
विद्यावोजणी, विद्यावोजनी—कर्म वा० ।

विद्यावियोडो—देखो 'विद्यायोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्यावियोडो)

विद्युआ—देखो 'विद्युयो' (रू भे)

उ०—पग री राती पींडी। खालिमी कूतरा री जीभ सारिखी, लाल कमळ चरण जावक महिदि रग सूं विराज रहिया छै । पग अगुळी राईबेलि री कळी हीरा सा नख आरीसा ज्यो आखि रहिया छै । ऊपरै अणोट पोल पावटा विद्युआ री वयाव वणि नै रहियो छै ।
—रा सा स

विद्युयोडो—देखो 'विद्युयोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्युयोडो)

विद्युयो, विद्युयो—देखो 'विद्युयो' (रू भे)

उ०—१ वाजन लागे आज मनमोहनी, मधुर चुन नूपर विद्युया किकनी । चमकन लागे चीर जरी कै, सीसफूल नथ सोहनी ।
—रसाल राज रा गीत

उ०—२ छुद्रघटा विद्युयो का छूटे छणछणाव, ज्यो हसं वचो की वाणी का वणाव । जाकरू का भरणकार न्है जोरं पर जोर, सावण कै मोसम ज्यो भिल्ल्या का सोर ।
—रा सा. स

उ०—३ सती मात, तेरा विद्युया रागी, घडिया छै मगळ वारा जी । अके ज वार ज पैरिया, रागी, लीना छै वामण्या उतार जी ।
—लो गी

उ०—४ चोहटे माहे नगर-नायिका वेस्या लाख लाख री लहरा-हार मौळें मिगगार ठविया थका फूला रा चौस पैहरिया थका टोय अणियाळा काजळ ठासिया थका वाका नैणा री भोक नागती पायलें रै ठमकें सूं घुघरें रै घमकें सूं विद्युयो रै छमकें सूं रममोळ करती अगूठा मोडती नखरा करती वाजारि चाली जाए छै ।
—रा सा म

उ०—५ भूवगु जाणि भुजग सा, चउकी चाक समान । वीछु सम ए विद्युया, सिज्या अगनि समानी रै ।
—प. च चौ

विद्युडणी, विद्युडनी—देखो 'विद्युडणी विद्युडनी' (रू भे)

विद्युडणहार, हारी (हारी), विद्युडणियो—वि० ।
विद्युडिश्रोडो, विद्युडियोडो विद्युडयोडो—भू० का० कृ० ।
विद्युडोजणी, विद्युडोजनी—भाव वा० ।

विद्युडाडणी, विद्युडाडनी—देखो 'विद्युडाणी, विद्युडाणी' (रू भे)

विद्युडाडणहार, हारी (हारी), विद्युडाडणियो—वि० ।
विद्युडाडिश्रोडो, विद्युडाडियोडो, विद्युडाडयोडो—भू० का० कृ० ।
विद्युडाडोजणी, विद्युडाडोजनी—कर्म वा० ।

विद्युडाडियोडो—देखो 'विद्युडायोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्युडाडियोडो)

विद्युडाणी, विद्युडाणी—देखो 'विद्युडाणी, विद्युडाणी' (रू भे.)

विद्युडाणहार हारी (हारी), विद्युडाणियो—वि० ।

विद्युडायोडो—भू० का० कृ० ।

विद्युडाईजणी, विद्युडाईजनी—कर्म वा० ।

विद्युडायोडो—देखो 'विद्युडायोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्युडायोडो)

विद्युडावणी, विद्युडावनी—देखो 'विद्युडाणी, विद्युडाणी' (रू भे)

विद्युडावणहार, हारी (हारी), विद्युडावणियो—वि० ।

विद्युडाविश्रोडो, विद्युडावियोडो विद्युडाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्युडावोजणी, विद्युडावोजनी—कर्म वा० ।

विद्युडावियोडो—देखो 'विद्युडायोडो' (रू.भे.)

(स्त्री विद्युडावियोडो)

विद्युडो—देखो 'विद्युडो' (रू भे)

विद्युडो—देखो 'विद्युडो' (अल्पा, रू भे) (स्त्री विद्युडो)

विद्युटणी, विद्युटनी—देखो 'विद्युटणी, विद्युटनी' (रू. भे)

विद्युटणहार, हारी (हारी), विद्युटणियो—वि० ।

विद्युटिओडो, विद्युटियोडो, विद्युट्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्युटीजणो, विद्युटीजवो—भाव वा० ।

विद्युटाणो, विद्युटाओ—१ देखो 'विद्युटाणो, विद्युटाओ' (रु. भे.)

२ देखो 'विद्युटाणो, विद्युटाओ' (रु. भे.)

विद्युटाणहार, हारो (हारो), विद्युटाणियो—वि० ।

विद्युटायोडो—भू० का० कृ० ।

विद्युटाईजणो, विद्युटाईजवो—कर्म वा० ।

विद्युटायोडो—१ देखो 'विद्युटायोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'विद्युटायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. विद्युटायोडो)

विद्युटियोडो—देखो 'विद्युटियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. विद्युटियोडो)

विद्युट्टणो, विद्युट्टवो—देखो 'विद्युट्टणो, विद्युट्टवो' (रु. भे.)

उ०—१ राव राय राखै सहित, सको थया स्वाधीन । या छूटा जग
जाळ ज्यो, जाळ विद्युट्टा मीन । —रा रु

उ०—२ आजम दक्खण हत उलट्टी, विकट घनुव सर जाण
विद्युट्टो । उत्तर घरा सु आलम आयो, सोज नीज दळ तेज सवायो ।
—रा रु.

उ०—१ प्रोहित केसरसिध, सिध किर सकळ छुट्टी । अरि सिर अल-
मालीत, जाण रिख गोत विद्युट्टी । —रा रु.

विद्युट्टणहार, हारो (हारो), विद्युट्टणियो—वि० ।

विद्युट्टिओडो, विद्युट्टियोडो, विद्युट्ट्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्युट्टीजणो, विद्युट्टीजवो—भाव वा० ।

विद्युट्टियोडो—देखो 'विद्युट्टियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. विद्युट्टियोडो)

विद्युट्टणो, विद्युट्टवो—क्रि स —घुलाई करना, घोना ।

उ०—तरै सरव ठाकुर आरोगे छै—ओ ठाकुर हाथ नीचो करै लो
बाज नही । तरै ओ बोलियो—ठाकुरे ! अख् वाज ही नही आयो
छै, काहू आरोगा ? तरै परिहार बोलिया—राज ! बाज उरै है,
ठाकुर पण विद्युट्टता हुता सू अपूठा किरिया नही ।
—प्रतापमल देवडा री घात

विद्युट्टणहार, हारो (हारो), विद्युट्टणियो—वि० ।

विद्युट्टिओडो, विद्युट्टियोडो, विद्युट्ट्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्युट्टीजणो, विद्युट्टीजवो—कर्म वा० ।

विद्युट्टाणो, विद्युट्टाओ—क्रि स —घुलाई करवाना, घुलवाना ।

विद्युट्टाणहार, हारो (हारो), विद्युट्टाणियो—वि० ।

विद्युट्टायोडो—भू० का० कृ० ।

विद्युट्टाईजणो, विद्युट्टाईजवो—कर्म वा० ।

विद्युट्टावणो, विद्युट्टावयो—रु. भे० ।

विद्युट्टायोडो—भू० का० कृ०—घुलाई करायो हुमा, घुलायो हुमा ।
(स्त्री. विद्युट्टायोडो)

विद्युट्टावणो, विद्युट्टावो—देखो 'विद्युट्टावणो, विद्युट्टावो' (रु. भे.)

विद्युट्टावणहार, हारो (हारो), विद्युट्टावणियो—वि० ।

विद्युट्टाविओडो, विद्युट्टावियोडो, विद्युट्टाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्युट्टावोजणो, विद्युट्टावोजवो—कर्म वा० ।

विद्युट्टावियोडो—देखो 'विद्युट्टावियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. विद्युट्टावियोडो)

विद्युट्टियोडो—भू का कृ —घुलाई किया हुमा, घोया हुमा ।

(स्त्री. विद्युट्टियोडो)

विद्युट्टो, विद्युट्टो—देखो 'विद्युट्टो' (रु. भे.)

विद्युट्ट-स. पु —१ विशाखा नक्षत्र का एक नाम ।

२ एक प्रकार का घोडा जिसकी पूछ का अग्र भाग वक्र होता है ।
(शा. हो.)

अल्पा.—विद्युट्टो ।

३ देखो 'विद्युट्ट' (रु. भे.)

विद्युट्टो—१ देखो 'विद्युट्ट' (अल्पा, रु. भे.)

२ देखो 'विद्युट्ट' (अल्पा, रु. भे.)

(स्त्री. विद्युट्टो)

विद्युट्ट-स स्त्री —छूटने की क्रिया या भाव ।

विद्युट्टणो, विद्युट्टवो—१ देखो 'विद्युट्टणो, विद्युट्टवो' (रु. भे.)

उ०—१ हरीया हसन को कहे, जोड विद्युट्टि जाणि । सायर का
सासा पडध, छीलर वसीयो आणि । —अनुभववाणी

उ०—२ मछ विद्युट्टो टोळीया, ताहि न घातो घात । आप मतो
मरि जावसी, तळक तळक जीव जात । —अनुभववाणी

२ देखो 'विद्युट्टणो, विद्युट्टवो' (रु. भे.)

उ०—१ को लाहै लोभियां, भीत चाहै अणखूटी । कमण पाण पाकडै,
बीज असमाण विद्युट्टी । —रा रु

उ०—२ जमदूता री जमात उठीया छै, जांणे सांकळा हूती सीह
विद्युट्टिया छै । घोडा राउ छटा लीजे छै । अमल पीजे छै —पना

उ०—३ कुट्टी लोके माचड, महात्मा बंठा पुस्तक वाचड ।
परवत तउ नीकरण विद्युट्टइ, भरिया सरोवर फूटइ । इसिइ वरसा
कालि । —रा सा. स.

उ०—४ जठे जादव राम रं सवधी भ्राता जादव देव रा किवारण
करि चालुक्य राज रा गज री सुंढाडड वाहिरथ देस सू विद्युट्टि
भडियो । —व. भा

क०—५ जाणूँ तिलहि न विच्छटू रे, जनि पछतावा होई । गुण तेरँ रसना जपू, सुणसी साई सोई रे ।
—दादूवाणी

उ०—६ समय घणउ स्रम स्रात थ्या, सयरि विच्छटि म्वेद ।
अरुप घणी अरुगा थया, सासइ पडिया दुभेद । —मा का प्र.

उ०—७ असमान विच्छटै सर असख । धकारव गाजै गुण घनप ।
सूरज्ज वीम छायाँ सरेय, किरि जाण काळ छाया करेय ।

—गु रू व

उ०—८ कुदरत विच्छटा कुहकवाण, आकप इळा पुड आसमाण ।
गोळिया ताड विपरीत गत, ओअई गडै किरि मेह अत ।

—गु रू. व

उ०—९ पूठिली परि तँ गलगलै, पिए नही कोई उपाय । सगलै
बी कहै जल नै बिना, जीव विच्छटो जाय । —वि कु

उ०—१० मुख साह मुहा मुहि हुकम विच्छटा, छूटा पडियाळा
खजर । समकै गजा साकळा तूटा, जूटा 'अरजण' अनै 'अमर' ।

—अरजण गौड वीठळदासोत री गीत

विच्छटाणहार, हारो (हारी), विच्छटाणियो—वि० ।

विच्छटिओडो, विच्छटियोडो, विच्छट्योडो—भू० का० कृ० ।

विच्छटीजणो, विच्छटीजवो—भाव वा० ।

विच्छटाणो, विच्छटाओ—१ देखो विच्छटाणी, विच्छटावो' (रू भे)

२ देखो 'विच्छटाणी विच्छटावो' (रू भे)

विच्छटाणहार, हारो (हारी), विच्छटाणियो—वि० ।

विच्छटायोडो—भू० का० कृ० ।

विच्छटाईजणो, विच्छटाईजवो—कर्म वा० ।

विच्छटायोडो—१ देखो 'विच्छटायोडो' (रू भे.)

२ देखो 'विच्छटायोडो' (रू भे)

(स्त्री विच्छटायोडो)

विच्छटियोडो—देखो 'विच्छटियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विच्छटियोडो)

विच्छट्टणो, विच्छट्टवो—देखो 'विच्छट्टणो, विच्छट्टवो' (रू भे)

उ०—हुए मीर सघार, सोक सर पूर विच्छट्टै । प्रळं-काळ आवत,
फौज फौजा मुहि जुट्टै । —गु रू व.

विच्छट्टणहार, हारो (हारी), विच्छट्टणियो—वि० ।

विच्छट्टिओडो, विच्छट्टियोडो, विच्छट्ट्योडो—भू० का० कृ० ।

विच्छट्टीजणो, विच्छट्टीजवो—भाव वा० ।

विच्छट्टियोडो—देखो 'विच्छट्टियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विच्छट्टियोडो)

विच्छेडो—स पु —विच्छेह, वियोग, जुदाई ।

विच्छेद—स. पु —१ विच्छेह, वियोग, जुदाई ।

२ देखो 'विच्छेद' (रू. भे.)

उ०—सुरमो लूण जात ए, पुढवी काय विच्छेद । भूमि आकास
ओस हिय, करण आळ ना भेद । —वृ. स्त

विच्छेदो—स पु —अग होने की क्रिया, नाश ।

उ०—'देव विमाण वल्यो' छुई, तिरारी सुणी राय भेदो रे । जघा
विद्या चारणी, जामी लविध विच्छेदो रँ । —जयवाणी

विच्छेरियो—देखो 'बछेरी' (अल्पा, रू भे)

विच्छेरो—देखो 'बछेरी' (रू. भे)

उ०—सिखरँ-री घोडी अर ऊदै री घोडी वेळ अक छान में वरुँ ।
सू उवा घोडी री उवा विछेरी मास इग्यारह री । सू घोडे ही
भाग चरै । सिखरी चढि अर नीसरियो ताहरा विछेरी घोडे रँ
लार हुयो । —ऊदै उगमणावत री वात

(स्त्री विछेरी)

विछोई—वि.—वियोगी ।

रू भे —विछोई ।

विछोडणो, विछोडवो—कि स.—१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियों
को एक दूसरे से पृथक कर देना ।

उ०—मा थो विछोड्या वाछडा, नीरी नही चारि । ऊनालँ तिर-
स्या भूआ, कीधी नही सारि । —स कु.

२ वियोग में डालना ।

३ साथी से अलग कर देना ।

४ काटना ।

उ०—पहँ रीठ पाडीसा गरीठ घञ्ज भाला पूर, घीठ सूर जडै वञ्ज
आवधा ओघार । ऊषडै वरम्मा कडा ननीठा विछोडँ अगा, जडै
आकारीठ 'दूदो आहुडँ जोघार ।

—ठाकर जवानीसिध पालडो री गीत

विछोडणहार, हारो (हारी), विछोडणियो—वि० ।

विछोडिओडो, विछोडियोडो, विछोड्योडो—भू० का० कृ० ।

विछोडीजणो, विछोडीजवो—कर्म वा० ।

विछोडणो, विछोडवो—रू० भे० ।

विछोटियोडो—भू का कृ —१ साथ रहने वाले व्यक्तियो या प्राणियो
को एक दूसरे से पृथक किया हुआ २ वियोग मे डाला हुआ.

३ साथी से अलग किया हुआ. ४ काटा हुआ.

(स्त्री विछोटियोडो)

विछोटो—स पु.—छुटकारा, मुक्ति ।

उ०—दीर्यं फोरडा देह दोला दबोटा, वदै वोल वाका भूमै मत्त
फोटा । पड्या वदिखानं महा दुक्ख मोटा, प्रभू नाम थी वेग थायै
विछोटो ।

—घ व प्र

विद्योदणी, विद्योदनी—देखो 'विद्योदणी, विद्योदनी' (रू भे)

उ०—उए वेळा 'अभसाह' दुगम वळ वाह दरस्सै, चक्रु गाह चूरिवा
ति किर चत्रवाह तरस्सै । अथग पियण अजळी जाणि अगस्त घरै
पण, कना 'पत्थ' कोपियो मत्थ 'जंदत्थ' विद्योडण । —रा रु

विद्योडणहार, हारी (हारी), विद्योडणियो—वि० ।

विद्योडिओडो, विद्योडियोडो, विद्योडयोडो—भू० का० कृ० ।

विद्योडोजणी विद्योडोजनी—कर्म वा० ।

विद्योडियोडो—देखो 'विद्योडियोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्योडियोडो)

विद्योणी—देखो 'विद्योणी' (रू भे.)

विद्योणी, विद्योनी—देखो 'विद्योणी, विद्योनी' (रू भे)

विद्योणहार, हारी (हारी), विद्योणियो—वि० ।

विद्योयोडो—भू० का० कृ० ।

विद्योईजणी, विद्योईजनी—कर्म वा० ।

विद्योयोडो—देखो 'विद्योयोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्योयोडो)

विद्योव—देखो 'विद्योव' (रू भे)

विद्योवणी, विद्योवनी—देखो 'विद्योवणी, विद्योवणी' (रू भे)

विद्योवणहार, हारी (हारी), विद्योवणियो—वि० ।

विद्योविओडो, विद्योवियोडो विद्योव्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्योवीजणी, विद्योवीजनी—कर्म वा० ।

विद्योवियोडो—देखो 'विद्योवियोडो' (रू भे)

(स्त्री विद्योवियोडो)

विद्योवो—देखो 'विद्योव' (रू भे)

उ०—१ नागजी, मली निभायी प्रीत, रे वारी, रेण विद्योवो कर
चल्यो ओ नागजी । —लो गी.

उ०—२ प्रीतम दुगिया कर गया, सुख कूं लेग्या साथ । रेण
विद्योवा कर गया, मळती रह गई हाथ । —अग्यात

विद्योह—स पु—१ जुदाई, वियोग, विरह ।

उ०—१ रजोनि भान वक्कयी, मनु अघकार मुक्कयी । विद्योह
चक्क चक्कय, अनेक वीर वक्कय । —ला रा

उ०—२ पिरण इक जठ तुक्क नइ तजु रे जि० तउ उपजे अदोह ।
घरती पिए फाटइ हियो रे जि० पाणी तरण विद्योह । —वि कु.

उ०—३ भूरई सहोवर राव का, कुली छतीसइ भूरइ सोही ।
घार भूरई राजा भोज सूं, सामरचा राव सी पडची विद्योह ।
—वी दे

उ०—४ फटि रे हिया । नीवालुवा, पाथरी घडियो, कै श्रीघट

लोह । भरचक्कयीयी फूटइ नहीं, मगुणा प्रीतम तरणी विद्योह ।
—वी. दे

२ वियोग का समय ।

रू. भे—विद्योवो, विद्योवो, विद्योवो, विद्योवो, विद्योवो, विद्योव,
विद्योवो, विद्योह, विद्योहो, विद्योहो, विद्योवो, विद्योहो, विद्योवो,
विद्योहो, विद्योव, विद्योवो, विद्योहो ।

विद्योहणी, विद्योहनी—कि अ—विद्युडना, दूर होना, जुदा होना ।

उ०—१ टोळी सूं टळियाह, वाना हर हु विद्योहिया । थोरी
हाथ थयाह, सा किम जीव जेठना । —जेठवा

उ०—२ पनरह वरस विद्योहउ हूमी घणइ कस्टि मेळावउ ।
थयउ । वळ विद्योही जठ करतारि, तउ इण भणि मुक्क एह ज
नारि । —ढो मा.

उ०—३ वली मत पहिज्यो एहवो दुकाल, जिण विद्योहया मा
गप वाल, जिण भागा सबल भूपाल । —स. कु

उ०—४ राम विद्योही विरहनी, फिर मिलन न पावै । दादू
तलफे मीन ज्यो, तुक्क दया न आवै । —दादूवाणी

विद्योहणहार, हारी (हारी), विद्योहणियो—वि० ।

विद्योहिओडो, विद्योहियोडो विद्योह्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्योहीजणी, विद्योहीजनी—भाव वा० ।

विद्योहणी, विद्योहनी, विद्योहणी, विद्योहनी—रू० भे० ।

विद्योहियोडो—भू का कृ—विद्युडा हुआ, दूर हुवा हुआ, जुदा हुवा
हुआ ।

(स्त्री विद्योहियोडो)

विद्योही—वि—वियोगी, विरही ।

उ०—टोला विद्योही यम अगली तिम करि आरुद, वन वन जोता
कथ न देवि दीन घामणी मद । —नळाव्यान

विद्योहो—देखो 'विद्योह' (रू भे.)

उ०—१ इक चलै सूड अदोळता अघ ऊरघ सावळ अविळ । तम
सुभट विद्योहो जाणि तिम दिवस वई करि डग वळि । —रा. रु.

उ०—२ सुपनइ प्रीतम मुक्क मिळघा, हू लागी गळि रोइ । डरपत
पलक न खोलही, मतिहि विद्योहउ होइ । —ढो मा.

उ०—३ पनरह वरस विद्योहउ हूमी, घणइ कस्टि मेळावउ
थयउ । वळ विद्योही जठ करतारि, तउ इण भवि मुक्क एह ज
नारि । —ढो मा.

उ०—४ केसर फाटु कुकडा, वील्यो मुक्क अभाग, सेंजा थारा
सजन रे, सूति छी गळ लाग । मोताहळ सीतळ हुवा रेण गळ ती
दीठ, प्रात विद्योही सजना ऊठी विरह अगीठ । —पना

उ०—५ वाली वाली रे मेरा इलाही तूं, रसरज एक राई वा
विद्योह, हुजी वेस मतवाळी रे । —रसीलै राज रा गीत

२०—६ जाण देस्या जी नही थाने आजीजा जी मेली विद्योनी
मार म्हासू नही नीसर । —लो. गी.

विद्योनी—देखो 'विद्योनी' (रु. भे.)

२०—हरिसीं सकेत करी राधिके विलोक मग, अंसं आई वंठी
सखी एक ही विद्योनी है । राधे बोली सुनि खेल मोरुं नैन वाद
जोवै, अनिमेव दी में हारी साई दासी होन है । —घ व प्र.

विज—१ देखो 'बीजली' (रु. भे.)

२०—गडि गडि गोळा नाळि, विज खडुं किरि अवर । अगन वाण
ऊळळ, घोम घूहा रव डव्भर । —गु रु. व

२ देखो 'बीजळा' (मह, रु. भे.)

विजई - देखो 'विजयी' (रु. भे.)

विजउरी—देखो 'विजोरी' (रु. भे.)

२०—करहा, नीरू सोइ चर, वाट चलतउ पूर । द्राख विजउरी
नीरती, सो घण रही स दूर । —ढो मा

विजकणी, विजकवी—देखो 'मिचकणी, मिचकवी' (रु. भे.)

२०—साधु सगति क्या करै, जो मन विजकयी होय । ज्युं हरीया
हरिवधण, वाग न भाल कोय । —अनुभववाणी

विजकणहार, हारी (हारी), विजकणियो—वि० ।

विजकियोडो, विजकियोडो, विजकियोडो—भू० का० कृ० ।

विजकौजणी, विजकौजवी—भाव वा० ।

विजकाणी, विजकावी—देखो 'मिचकणी, मिचकावी' (रु. भे.)

विजकाणहार, हारी (हारी), विजकाणियो—वि० ।

विजकायोडो—भू० का० कृ० ।

जिकाईजणी, जिकाईजवी—कर्म वा० ।

विजकायोडो—देखो 'मिचकायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री विजकायोडो)

विजकावणी, विजकाववी—देखो 'मिचकाणी, मिचकावी' (रु. भे.)

विजकावणहार, हारी (हारी) विजकावणियो—वि० ।

विजकाविणोडो, विजकावियोडो विजकावियोडो—भू० का० कृ० ।

विजकावीजणी, विजकावीजवी—कर्म वा० ।

विजकावियोडो—देखो 'मिचकावियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री विजकावियोडो)

विजकियोडो—देखो 'मिचकियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री विजकियोडो)

विजड—१ देखो 'बीजळा' (ना डि को, ह ना मा.)

२०—पाच कल परवार सु, रावळ आलोचेह । आपे मर गड
आपस्या, विजडा वार करेह । —नैणसी

२ देखो 'बीजली' (मह, रु. भे.)

विजडली—१ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रु. भे.)

२ देखो 'बीजली' (अल्पा, रु. भे.)

विजडहल, विजडहली, विजडहती, विजडहत्थ, विजडहत्थी, विजडहत्थी,
विजडहय, विजडहयी, विजडहथी—देखो 'बीजळाहय' (रु. भे.)

२०—१ घुण भुज खगा घोड पाण दर्य मूळी परं । रण जूभो
राठोड विजडहथो फिर बोलियो । —पा प्र

२०—वीक विदेसज चालियो, विजडहथो वळ बाव । मूळ तोडी
मुण सुगुर, साहि आलम सू साव । —नैणसी

विजडाहत, विजडाहती, विजडाहती, विजडाहत्थ, विजडाहत्थी, विजडा-
हत्थी, विजडाहय, विजडाहयी, विजडाहथी, विजडाहत्थ, विजडाहत्थी,
विजडाहत्थी—देखो 'बीजळाहय' (रु. भे.)

२०—विजडाहत घाघळ पूत बक, सय कोण घक पग माड सक ।
घट सूर ढहे विप खड घणा, तत चक्र वहे नव लाख तरणा ।

—पा प्र

विजडी—१ देखो 'बीजळा' (रु. भे.)

२०—हव वेरन कीजिय वेग हक वुणियाळ मिळी भड 'पाल'
घक । विजडी जड भाथल बाघ विन, कड भोड कठठत 'पाल'
कन । —पा प्र

२ देखो 'बीजली' (रु. भे.)

विजडोहय—देखो 'बीजळाहय' (रु. भे.)

२०—लखियो हयळेव प्रमाण लघो, विजडोहय घाघल मोडवघो,
विघना अक मेटरण की वरणी, पह 'पाळ' जतिद्र जको परणी ।

—पा प्र

विजड—१ देखो 'बीजळा' (रु. भे.) (अ मा, ना डि. को)

२०—१ सूर धीर सगमत, विजड जूटरण वगाळा । रागा हाथळ
टोप, पहिर जरदा छकडाळा । —गु रु. व.

२०—२ तात वैरि ततकाळ, लियो जिण चालुक लोहे । जिण
'मंहरण' मारियो, विजड वदी घड डोहे । —गु रु. व.

२०—३ घाघा घाव आहाडा घाय, विजडा वाढ चाढ घज-वघ ।
लेगी सुरग वरं रभ लारा, कमवज सारा करे कवव ।

—अमरी वारड्ड

२ देखो 'बीजली' (रु. भे.)

विजडी—देखो 'बीजळा' (रु. भे.)

२०—१ पायका भिलंमा पर तेग पडे, भलही दुरिया जड मूल
गडे । दुलही फरकी चव दूति फिरे, विजडी रत चाकिय 'पाल'
वरं । —पा प्र

३०—२ लेय वावत घेर नवै लखरी, सावळों पर रूप वधै सखरी ।
विजडी ह्यु खापाय चीह वकी, भिडजा चढ टोप कढे भभकी ।

—पा. प्र.

२ देखो 'वीजली' (रू. भे)

विजति-वि —जीतने वाला, विजय प्राप्त करने वाला ।

३०—छली विजति तत्तिकी, सुछत्ति छोलती वहे । विजेत नत
रेत पे, सजेत बोलती वहे ।

—ऊ का.

विजन-वि [स] एकान्त, जनशून्य ।

[स व्यजन] १ हवा करने का पखा, वीजन ।

२ देखो 'व्यजन' (रू. भे)

रू. भे. —विजन ।

विजनस-स. पु. [अ विजिनिस] १ व्यवसाय, व्यापार ।

२ व्यापारिक सगठन, व्यावसायिक सगठन ।

३ दृढ निश्चय ।

३०—कवराणी सभियो किलो, विजनस मरण विचार । किलो रखा
रहमी कलम, लाज किला रे लार ।

—लिखमीदान बारहठ

वि —वास्तविक, विन्कुल ।

(क्रि वि)—निश्चय ही, अवश्य ही ।

३०—१ नैणा हूँ आई निरख, जिण री ती हू जीव । ऊती
विजनस आव ही, प्रीतम प्यारी पीव ।

—२० हमीर

३०—२ कळजुग री मानै कहर, विजनस लागै वाव । रिखा
कह्यो अण देह री, परत करा पलटाव ।

—मयाराम दरजी री बात

३०—३ इतरै एक चारण बोलियो, तीज ती पुगळ री देखीजै । अह
लोक अ.य नै सुरलोक रीभीजै । जद कवर बोलियो, इसीछै ती
विजनस देखवा चालसा । एक वार पुगळ रा वागा मे मालसा ।
फजर पुगळ मे चालसा इतरी कह नै महिला पधारिया ।

—पना
रू. भे.—विजनस, विजिनिस, विजनेस, विजिनस विजिनिस,
विजनेस, विजिनिस, विजनेस, विजिनिस, विजिनिस, विजिनिस ।

विजनाळियो-स पु —एक प्रकार का नकुल की जाति का जानवर ।

विजिनिस, विजनेस—देखो 'विजनस' (रू. भे.)

३०—वरखीं चढ किरगाठ विराजै, स्याह सफेत लालरग साजै ।
विजिनिस वाव सूरियो बाजै, घडी पलक माय मेहा गाजै ।

—वरसा विगयान

विजपजर—देगो 'विजयपजर' (रू. भे.)

३०—थरहरिय प्रजा जिम नीर थाळ, भाखरै भाजि चडिया भुवाळ
आगळी प्रजा आई अवीह, सरणइ विजपजर 'जइतसीह' ।

—रा ज सी

विजय-स. पु [सं विजय] १ पराजय का विपरीत, जय, जीत ।

३०—फतेसाह साह आए वाह गैय धारै, विजावत विजय रूप
पराजय निवारै । 'मघकर' 'दयाल' का सी साह भै न धारै,
अघकार जात जैसै भाण के उजारै ।

—रा. रु

२ विवाद, युद्धादि मे जीत ।

३ विष्णु के जय-विजय नामक दो पापंदो (द्वारपालो) में से दूसरा ।

४ कुति-पुत्र अर्जुन के दस नामो में से एक, जो उसने भ्रजातवास
के समय धारण किया था ।

५ यमराज ।

६ देवरथ, स्वर्गीय रथ ।

७ वृहस्पति की दशा का प्रथम वर्ष ।

८ भगवान विष्णु का एक नामान्तर ।

९ मगध निवासी एक ब्राह्मण, जिसने महीसागर-सगम तीर्थ मे
अनेको सिद्धिया प्राप्त की थी और बाद में सिद्धसेन के नाम से
प्रसिद्ध हुआ ।

१० राजा रोमपाद के वंशज जयद्रथ और दाम्भृति के ससर्ग से
उत्पन्न एक पुत्र जो घृति का पिता था ।

११ महाराज दशरथ के एक मन्त्री का नाम ।

१२ घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

१३ एक राजा, जो पुहरवस एव उर्वशी का पुत्र एव भीम या
कांचन का पिता था ।

१४ शिवजी के त्रिशूल का एक नाम ।

१५ एक दिव्य घनुप जो परशुरामजी द्वारा कर्ण को दिया गया था

१६ हरिश्चन्द्र के वंशज सुदेव के पुत्र एवं भुस्क का पिता ।

१७ एक राजा, जो बृहन्मनस एव सत्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ
था ।

१८ भागवतानुसार जय राजा का पुत्र एव ऋतु का पिता ।

१९ भागवतानुसार सृजय का पुत्र और वायु के अनुसार सृजय
का पीत्र, और जय राजा का पुत्र था ।

२० एक यादव राजा, जो वसुदेव एव उपदेवी के गर्भ से उत्पन्न
हुआ था ।

२१ एक क्षत्रिय विजेता सम्राट, जो भागवतानुसार चप राजा का
एव वायु तथा विष्णु के अनुसार चचु राजा का पुत्र था ।

२२ कृष्ण एव जाववती के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र ।

२३ यज्ञश्री राजा का पुत्र एव चद्रविज्ञ का पिता एक आन्ध्रवशीय
राजा ।

२४ पृथुक देवो मे से एक ।

२५ मणिवर एव देवजनी का पुत्र एक यक्ष ।

२६ लोकाक्षि नामक शिवावतार का एक शिष्य ।

२७ भैरववंश में उत्पन्न एक वाराणसी नगरी का राजा, जो

उपरिचर का पिता था और जिसने खाण्डवी को नष्ट कर खाण्डवन का निर्माण किया था ।

२८ छप्पय छंद का द्वितीय भेद जिसमें ६९ गुरु १४ लघु से ८३ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं । मतान्तर से १४८ मात्राएँ होती हैं । (र ज प्र)

वि वि —जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २६, २६ मात्राओं के होते हैं, उसमें १४८ मात्राएँ होती हैं । अर्थात् $२४ \times ४ = ९६ + २६ \times २ = ५२$ कुल १४८ और जिस छप्पय में उल्लाला के दो पद २८, २८ मात्राओं के होते हैं, उसमें १५२ मात्राएँ होती हैं अर्थात् $२४ \times ४ = ९६ + २८ \times २ = ५६$ कुल १५२ मात्राएँ ।

रू भे —विजय विजै, विजयु विजै, विज्जै ।

विजयएकादसी—देखो 'विजयाएकादसी' (रू भे)

विजयक—वि [स विजय+कन] सदा जीतने वाला, हमेशा विजय प्राप्त करने वाला ।

विजयकुजर—स पु.—१ राजा की सवारी के काम आने वाला हाथी ।

२ युद्ध में काम आने वाला हाथी ।

विजयकेतु—स पु [स] विजयपताका ।

विजयखार—देखो 'विजयसार' (रू भे)

विजयघट—स पु.—१ मन्दिरों में लटकाया जाने वाला घण्टा ।

२ हाथी की भूल के साथ बघा रहने वाला घटा ।

विजयछद—स पु [स विजय+छन्द] पाच सौ लठियों का हार ।

विजययात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रू. भे)

विजयडिडिम—स पु. [स] युद्ध के समय युद्ध क्षेत्र में वजाया जाने वाला एक ढोल ।

रू भे —विजयदुदुम, विजयदुदुभि ।

विजयतीरथ—स पु [स विजयतीर्थ] एक तीर्थ विशेष । (पुराण ।

विजयबड—स पु [स. विजयदण्ड] सैनिकों का एक विभाग विशेष जो हमेशा विजयी रहता है ।

विजयदसम, विजयदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रू भे)

उ०—१ सन विजयदसम वधियो सग्राम धिखियो अहमदपुर घाम घाम । सजियो फोघानळ वियो 'सीह,' दावानळ दमगळ तीन दीह ।

—वि स

उ०—२ सतरें चालीस विजयदसमी दिनें, गच्छ खरतर जगिजीत सरव विद्या जिनें । विजयहरस विद्यमान सिष्य तिनकं सही, परिहा कवि धरमसी उपगारें दम क्रिया कही । —घ. व. ग्र

विजयदुदुम, विजयदुदुभि—देखो 'विजयडिडिम' (रू भे)

विजयनन्दन—सं पु. [सं.] भागवतानुसार, अयोध्यापति इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न राजा जय का नामान्तर ।

विजयपजर—स पु. [स. विजय.+पञ्जर] विजय प्राप्ति हेतु पढा जाने वाला स्तोत्र ।

रू. भे —विजपजर, विजयपजर, विजैपजर, विजपजर, विजैपजर ।

विजयपताका—स स्त्री [स] विजय की सूचक फहराई जाने वाली ध्वजा या इसी का सूचक कोई चिन्ह ।

विजयपरपटी—स स्त्री [स विजयपरपटी] वैद्यक में, सग्रहणी रोग के लिए दी जाने वाली एक प्रकार की औषधि विशेष

विजयपूजन, विजयपूरणिमा—सं. स्त्री [सं विजयपूरणिमा] विजयादशमी के बाद आने वाली पहली पूर्णिमा, जिस दिन बगाल में लक्ष्मी का पूजन होता है । (पुराण)

विजयभैरव—स पु —वैद्यक में, सब प्रकार के रोगों और दुर्बलता को दूर करने वाला एक प्रकार का रस ।

विजयभैरवतेल—स पु —वैद्यक में, मालकगनी, अजवायन, काले जीरे, मेथी और तिल को पेर कर निकाला जाने वाला एक प्रकार का तेल विशेष, जो सब प्रकार के वायु रोगों का नाशक माना जाता है ।

विजयमड—देखो 'विजैमड' (रू भे)

विजयमरदल—स पु [स विजय.+मर्दल] प्राचीन काल में होने वाला एक प्रकार का ढोल ।

विजयमाळा, विजयमाला—स स्त्री [स. विजयमाला] विजय प्राप्त करने वाले को पहनाई जाने वाली माला ।

रू. भे —विजयमाळा, विजैमाळा, विजैमाळा ।

विजयमेरु—स पु [स] सुमेरु पर्वत का एक नाम ।

उ०—पूरव पच्छिम घात की, खड गिणीजें दोह । विजयमेरु पूरव दिसै, पच्छि अचलमेरु जोह । —घ व. ग्र.

विजययात्रा—स स्त्री [स] किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा ।

उ० ...नीली रहरही इक्षुवाडमडली, फूलिइ उज्ज्वल कास, दीसइ सप्तच्छड पुस्फविकास, करइ नरेंद विजययात्रा रभ ।

—व स.

रू. भे —विजययात्रा, विजैयात्रा, विजययात्रा विजैयात्रा, विजैयात्रा ।

विजयरत्नाकरि—स स्त्री [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (संगीत)

विजयरस—स पु [स] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष जो पारे,

की यति पर ४० मात्राएं होती हैं और अतःमें रगण भी होता है । मतान्तर से प्रत्येक चरण में १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएं होती हैं ।

२३ देखो 'विजयादसमी'

२४ देखो 'विजयाएकादशी'

रू भे — विजया, विजिया, वज्जया

विजयाएकादशी—स स्त्री. [स. विजयाएकादशी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी ।

२ फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की एकादशी ।

रू भे — विजयएकादशी ।

विजयाणद—स पु [स विजयानन्द] सगीत के मुख्य साठ तालों में से एक ताल विशेष ।

रू भे.—विजयानद ।

विजयादसम, विजयादसमी—स. स्त्री [स विजयादशमी] १ आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी ।

२ उक्त दशमी को मनाया जाने वाला पर्व जिसकी गणना हिन्दुओं के चार प्रसिद्ध त्यौहारों में की जाती है ।

वि० वि०—आश्विन शुक्ला दशमी को श्रवण का सहयोग होने से विजयादशमी होती है । यह पूर्वविद्धा निपिद्ध, परविद्धा शुद्ध तथा श्रवणयुक्त सूर्योदय व्यापिनी सर्वश्रेष्ठ होती है । यह हिन्दुओं, विशेषकर क्षत्रियों का बड़ा त्यौहार है । इसे नवरात्री या दशहरा के नाम से भी पुकारा जाता है और आश्विन शुक्ला प्रथमा से दशमी तक मनाया जाता है । इन दिनों देवी, दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती की पूजा होती है । क्षत्रिय इस दिन देवी घोड़े हाथी खडग, आदि की पूजा करते हैं और नीलकण्ठी पक्षी के दर्शन करते हैं और हिन्दू, दुर्गा आदि देवी के साथ अपने कुलदेवता की पूजा करते हैं और कहीं कहीं पर शमी वृक्ष की पूजा भी करते हैं । कहते हैं इस दिन श्री रामचन्द्र ने लकापति रावण को मार कर लका- विजय की थी इसी लिए इसे विजयादशमी कहते हैं । और इसी दिन दुर्गा ने महिषासुर का वध कर विजय प्राप्त की थी इस लिए भी यह उत्सव मनाया जाता है । इस दिन को एक शुभमुहूर्त भी मानते हैं और इस दिन प्रारम्भ किया हुआ हर कार्य सिद्ध होता है । नवरात्रि के प्रथम दिन जो या गेहूँ घरों में बो दिये जाते हैं । और इस तिथि को जयती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु तं ॥' यह मंत्र पढ़ कर कान पर रखते हैं । इस दिन दश महाविद्याओं की पूजा होती है ।—घोडी, शमी, पुस्तक, लेखनी, अस्त्र, वाद्य, आदि की भी पूजा करते हैं ।

रू. भे — विजयदसम, विजयदसमी, विजयादसम, विजयादसमी, विजदसम, विजदसमी, विजयदसम, विजयदसमी, विजदसम,

विजदसमी, विजदसमी विजदसम, विजदसमी ।

विजयानद—देखो 'विजयाणद' (रू भे.)

विजयाभखी—देखो 'विजियाभखी' (रू भे.)

विजयाभरणी—स. स्त्री [स] कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (सगीत)

विजयारध—स. पु [स विजयार्ध] एक पर्वत का नाम । (पुराण)

विजयासप्तमी, विजयासातम—स. स्त्री [स विजयासप्तमी] फलित ज्योतिष के अनुसार, किसी मास की, रविवार के दिन पडने वाली शुक्ल पक्षकी सप्तमी । इस दिन श्रीरामचन्द्र की पूजा की जाती है । (पुराण)

रू भे — विजयसप्तमी, विजयसातम, विजयासप्तमी, विजयासातम, विजसप्तमी, विजसातम, विजयसप्तमी, विजयसातम, विजसप्तमी, विजसातम ।

विजयी—वि०—जिसने विजय प्राप्त की हो, विजय प्राप्त करने वाला ।

विजयु—देखो 'विजय' (रू भे.)

उ०—एतल ए पडु नरिदौ जूठिलौ पाटि प्रतिठिउ ए । बंधवि ए विजयु करेवि राय सर्व वसि आशिया ए । —सालिभद्र सूरि

विजयेस—स. पु [स विजय—ईश] १ शिव, महादेव ।

२ विजय के अधिष्ठाता देवता ।

विजयोत्सव—स पु [स विजय—उत्सव] आश्विन मास शुक्ल पक्ष की दशमी को मनाया जाने वाला उत्सव ।

विजर—स पु —अनायुषा नामक राक्षसी का पुत्र और खर एव कालक नामक राक्षसी का पिता, एक राक्षस ।

रू भे —विज्वर ।

विजरा—सं स्त्री. [स] ब्रह्म पुराण के अनुसार ब्रह्मलोक की एक नदी ।

विजराज—देखो 'व्रजराज' (रू भे.)

उ०—१ तूं हीज अकाज काज भगता री लाज तना, विसरियो केम परी विजराज वाज । आविस्स्यं अनत आज गजराज उधारिवा, निघ मार्यं गाज करे निपाइयो नाज । —पी. अ.

उ०—२ भूनिज्यो मति कदेई भूवर, जोइ लेखै राखै विजराज । तूक तणो निसदीह त्रीकमा, मुजरी पीर करे महाराज । —पी. अ.

विजळ—१ देवो 'बीजळ' (मह., रू भे.)

२ देखो 'बीजळी' (मह., रू भे.)

विजळडी—१ देखो 'बीजळ' (अल्पा., रू. रू.)

२ देखो 'बीजळी' (अल्पा., रू भे.)

विजली—देखो 'वीजली' (रू भे) (अ मा)

उ०—दरवाजी तूटण सू किला मे खळबळी माचगी । जेज व्हिया नाकावदी होवण री भी ही सो भीमडी विजली रै पळाका रै ज्यु किलारै मायनं वळियो । पण सिरं ड्योडी पूगता पूगता चाफेर सू घेरीजग्यी ।
—अमर चूनडी

विजहारी—देखो 'विजयहरी' (रू. भे)

उ०—गढ गरुड अनड विसमी जीह तरणी पाय पातालि पडठउ, पर-वतनड स्र ग बडठउ, उच्चतर पोलि लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तरणी पद्धति, यत्र तरणी स्त्रीणी, डीकुली तरणी परपरा, . . ।
—व स.

विजानु—स पु [स विजानु] तलवार चलाने के ३२ हाथो मे से एक ।

विजा—स स्त्री—विद्या ।

विजाई स. पु [स विजात] १ वशज ।

उ०—१ सग्रामा सभावे वीजुजला कसा प्राय सार्म, रेण अ्रेक थोडा नाम थावे असी रीत । न मावे फिरगी हिदूथान कीधी पाय-नामं, आपनामं नाज खाधी विजाई 'अजीत —नवलजी लालस

उ०—२ मिलं दताळा फवजा जोडै नेजाळा घटा ज्युं मेघ, नेजाला सपोडी हलै तेण धुपयाल । सचाळा छडाळा आभ छाजतो 'सवाईतीघ', गाजातां ब्रवाला रुठी विजाई 'गोपाळ'

—नवलजी लालस

वि —विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला ।

रू भे —विजाई, वजाई ।

विजात—वि [स] १ जिसके माता पिता की जाति अलग २ हो, वरुण-सकर, दोगला ।

२ जन्म लिया हुआ ।

१ प्रत्येक चरण मे ५, ५, ४ के विश्राम से १४ मात्राओ का; सखी छन्द का एक भेद विशेष जिसके अत में मगण या यगण होता है और पहली और आठवी मात्राएँ लघु होती हैं ।

विजाता—स स्त्री [सं] १ वह युवती जिसने हाल ही मे वच्चे या बच्ची को जन्म दिया हो ।

२ वरुणसकर या दोगला की स्त्री ।

विजाति—स स्त्री [स.] १ भिन्न या दूसरी जाति ।

उ०—१ नाही हे के मघ हे सोई, ज्या को आद्रि अत नहिं कोई । जाति विजाति न भेदाभेद, कहा ग्यान अग्यान की खेदा खेद ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

२ देखो 'विजातीय' ।

विजातीय—वि. [स] १ जो भिन्न या दूसरी जाति का हो ।

२ पौष्टिक पदार्थों का अधिक सेवन करने पर शरीर मे अधिक बढ़ने वाला अर्थां आदि पदार्थ ।

विजावत—सं पु.—राठीडो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

विजासण, विजासणी—देखो 'मावलिया' ।

उ०—जठे गुवाळ री माउ अणो नं घणो ईं समजावे पण यो गुवाळ घर माहे आवै नही । कहे सो आपणा ती घर माहे विजासण वंठी रहे हे सो ह घर माहे आवु ती मोनं खाय जाय ।

—गाम रा घणी री वात

विजिद—स स्त्री [अ] १ नेंट, मुलाकात ।

२ किसी चिकित्सक द्वारा किसी रोगी को देखने जाने का कार्य ।

३ उक्त कार्य हेतु दी जाने वाली फीस ।

विजिटरमबुक—स. स्त्री [अ विजिटसं बुक] किसी सस्था की वह पुस्तक जिसमे वहा आने जाने वाले अपना नाम अथवा सम्मति लिख सकें ।

विजिटिंगकार्ड—स पु [अ विजिटिंग कार्ड] किसी से मिलने जाने पर अपने आगमन की सूचना देने या परिचय देने का एक कार्ड जिस पर अपना नाम, पता, पद आदि छपे होते हैं ।

विजितास्व—स पु [स विजितास्व] राजा पृथु के पाच पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र ।

वि. वि —राजा पृथु और अर्चि के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जिसके शिखण्डिनी एव नभस्वती नामक दो पत्निया थी और शिखण्डिनी से पावक, पवमान और शुचि नामक तीन पुत्र और नभस्वती के गर्भ से हविघनि और मारीच नामक दो पुत्र हुवे थे । मतान्तर से हविघनि शिखण्डिनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ बताते हैं । इसने सौ अश्वमेध यज्ञ करने का निश्चय किया और नित्यानवे अश्वमेध यज्ञ पूरे कर लिये । इससे इन्द्र को अपने पद की चिन्ता हुई और उसने अश्वमेधीय अश्व चुरा लिया । तब इसने इन्द्र से युद्ध कर उसे परास्त कर अश्व वापिस ले आया । ऐसा कई बार करने से इसे 'विजिताश्व' नाम प्राप्त हुआ । इन युद्धो से इन्द्र ने प्रसन्न हो कर इसे अन्तर्धान होने की विद्या सिखायी इससे इसे 'अन्तर्धान' नाम प्राप्त हुआ । इन्हे अग्नि देवता मानते हैं और वसिष्ठ के शाप से मनुष्य जन्म लिया ऐसा मानते हैं ।

विजित्वरा—स. स्त्री [स] भगवती का एक नाम विशेष ।

विजिनस, विजिनिस, विजिनेस—देखो 'विजनस' (रू भे.)

विजियामखी—स पु — शिव, महादेव ।

रू भे —विजयामखी ।

विजुजळ, विजुजळा, विजुझळ, विजुझळा—१ देखो 'वीजूझळ' (रू. भे)

२ देखो 'वीजली' (रू भे)

विजुळा—देखो 'वीजळा' (रू. भे)

८०—केसरी सिध राव 'मालदे' कळोधर, चाडग्रा गुर सदा लग वडा चेळी । विचत्रसाह आलमी जालमी विजुळा, मरण मिलिये कियो ताळ मेळी ।
—माधोदास गाडण

विजुळी-स. स्त्री.—१ एक देवी का नाम । (पौराणिक)

२ देखो 'बीजळा' (रु. भे)
३ देखो 'वीजळी' (रु. भे)

विजू—देखो 'विज्जू' (रु. भे)

८०—कोडा अतज काहिया, पिंड थाकी आपाण । दुसरी विजू कियो, वेठ गयो सुरताण ।
—रगरैळी वीहू

विजुजळ, विजुजळा, विजुभळ, विजुभळा—देखो 'वीजुभळ' (रु. भे.)

(ना डि को)
८०—१ रत खाळ रळ-तळ पालर प्रग्धळ, हो हु हूकळ थट्ट हूव । वळकत विजुजळ वीजक वट्ट, ढोल त्रिमगळ वीम घुव ।
—गु. रु. व.

८०—२ सामठी धाक पड सावळाह, वळवळी धार विजुजळाह । गजवाज गढी-थळ भड गुडंत, निरलग अग धड नीजुडत ।
—गु. रु. व

८०—३ करं करिमाळ भटा पति काम, जळाहळ 'राम'तणौ 'जगराम' विजुजळ भटा करं जिण वार, सुरी 'अणुदेस' तणौ सिरदार ।
—सू प्र

८०—४ वाजं व्रवाळ सिधू विखम दुमग हाक वाजं दळा । वाजिया 'अभौ' सिर विलदखा, जळावोळ विजुजळा । —वखती विडियो

विजूवहो—स पु —दूहै-छन्द का एक भेद विशेष, जिसमे ३ गुरु और ४२ लघु होते हैं ।

८०—विजू नेत्रा सिव वदो, भास दिवस अर भास । इण विधि छदो आखिये, भणो महा बुध भास । —पिंगळ सिरोरमिण
वि वि.—देखो 'विडाळ' ।

विजेत, विजेता—वि —विजय प्राप्त करने वाला, जीतने वाला ।

८०—१ छळी विजति तत्तकी, सुछति छोलती वहे । विजेत नेत रेत पै, सजेत बोलती वहे ।
—ऊ का.

८०—२ रिपुग देत्य कस सी, अजेत मुल्लती रहे । विजेत वीर वश की, विजेत घल्लती वहे ।
—ऊ का

८०—३ औ तो सदा सियावर रो सगी, औ तो विस्व विजेता वजरगी । इण रो किए ही पार न पायी रे, हनुमत हरि मन भायी रे ।
—गी रा.

विजे—देखो 'विजय' (रु. भे.)

विजेउच्छव, विजेउच्छव, विजेउच्छव, विजेउच्छव—देखो 'विजयोत्सव' ।

विजेकारी—वि.—विजय कराने वाला ।

८०—देवी कौमारी चामुंडा विजेकारी, देवी कुवेरी भैरवी क्षेम-कारी । देवी अगस वरख हस्ती मयखे, देवी पख केकी गरुड विरट पख ।
—देवि.

विजेखार—स पु [स विजय+क्षार] १ विजयसार का क्षार निकाल कर बनाई गई औषधि ।

२ देखो 'विजयसार' (रु. भे.) (अमरत)

विजेजात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रु. भे.)

विजेदसम विजेदसमी, विजेदसमी—देखो 'विजयादसमी' (रु. भे.)

८०—आहनपुर दसरावी थप्यं, जोसी तिलक मुहूरत अर्यं । विजेदसमी होम करावे, विप्रा कला वेद वचावे ।
—गु. रु. व

विजेमंड—स स्त्री [म विजय+मण्ड] विजय की शोभा ।

रु. भे.—विजयमंड, विजेमंड, विजयमंड ।

विजेमाळा—देखो 'विजयमाळा' (रु. भे.)

विजेयात्रा—देखो 'विजययात्रा' (रु. भे.)

विजेलक्ष्मी, विजेलक्ष्मी, विजेलक्ष्मी, विजेलक्ष्मी, विजेलक्ष्मी—देखो 'विजयलक्ष्मी' (रु. भे.)

विजेसप्तमी—देखो 'विजयासातम' (रु. भे.)

विजेसाई—देखो 'विजयसाही' (रु. भे.)

८०—जंडी खुराक वहेडा ई करार । जाणो ईज हो छिमटी सू विजेसाई रिपिया रा आकर मिटाय देता ।
—फुलवाडी

विजेसातम—देखो 'विजयासातम' (रु. भे.)

विजेसार—देखो 'विजयसार' (रु. भे.)

विजेसाही—देखो 'विजयसाही' (रु. भे.)

विजोग—स पु —१ तत, गरम । (डि. को)

२ देखो 'विजोग' (रु. भे.)

८०—आठ दिस पुर ऊजडे, चडे तडे थव लोग । सभियो गढ वके भडे प्रज ग्रामडे विजोग ।
—रा रु

३ देखो 'वियोग' (रु. भे.) (डि. को)

८०—१ थारी वच्छ वाळु नहीं रे, खिए मात्र नी विजोग तिए कारण माहुरा डीकरा रे, विलस काम न भोग रे । —जयवाणी

८०—२ प्रसिद्ध बुद्धि सिद्धि निद्ध रिद्धि ब्रद्धि पूर ए, कलत्त पुत्त कित्ति वित्त बद्धते सनूर ए । विजोग सोग रोग विग्घ अग्घ सिग्घ धायक, प्रगट्ट देव नित्त मेव सेव पास नायक ।
—ध म अ

उ०—३ हू सेवक वी साहिबो हो, सदा रह्यो सजोग । कोइक
म्हारा पाप सू हो, उपज्यी विसम विजोग ।

—गी रा

उ०—४ ढलता आधी रातडी, जागै भीर न लोग । कै तो जागै
सत जन, कै तिय पियै विजोग ।

—अग्रयात

उ०—५ कवर रै साम्ही मूंडी करनै रूखा सुर मे बोली—हकनाक
वापडा जीव री थेह री ठायी छुडायी, भोळा माचरिया नै मा री
विजोग दियो अर सुवर नै इण विध लोह सू पूर करियो ।

—फुलवाजी

उ०—६ कामी तै कूकर भलो, रति बिन रहै विजोग । कामी नर
कै काम की, हरीया सदा सजोग ।

—अनुभववाणी

उ०—७ साची घणी न्हेतो ती बिणज रा लोभ मे लुगाई री भा माया
छोडती भळा । काई श्री विजोग देवण सारू ई वी चवरो मे हाथ
भाल आपरै लारै लायी ।

—फुलवाडी

विजोगडं—कि वि—निमित्त, लिए ।

विजोगण, विजोगणी—देखो 'वियोगणी' (रू भे)

उ०—१ जीवन पिणघट घट भर दिय, विजोगण ऊभी आ पिणहार
दुबोवै घर सूरज घट अंक, सभाळं किम घण दूणी भार ।

—साभ

उ०—२ जरै मनसा मथणी मय जाण, करै कथणी कथ कै
गुजराण । कुजीव कुसग कहा कुसळात, विजोगण पीव सजोगण
वात ।

—ऊ का

उ०—३ उत्तर आज स उत्तरद, वाजइ लहर असाधि । सजोगणी
सोहामणइ, विजोगणी अग दाधि ।

—ढो. मा

विजोगात—देखो 'वियोगात' (रू भे)

विजोगिण, विजोगिणी, विजोगिन, विजोगिनी—देखो 'वियोगणी' (रू.भे.)

विजोगी—देखो 'वियोगी' (रू भे)

विजोरी—स स्त्री—खजूर का फल या वृक्ष ।

उ०—सत्तम प्रहरं दिवस कै, घण जु वाडिया जाइ । आणै द्राख-
विजोरियां, घण छोलइ, भिउ खाइ ।

—ढो मा

विजोरी—देखो 'विजोरी' (रू भे.)

उ०—रसै माधुरं पी जभीरी विजोरा, भुके साख फूला भारि
भोरा । सनी सी मधु दाख अनार सेवा, दियो आणि लचै सुधा
जाणि देवा ।

—रा रू.

विजोळियो—देखो 'वीजोळियो' (रू भे.)

विजोहा—स पु [स विमोहा] प्रत्येक चरण मे दो रण सहित छ
वर्णों का एक छंद विशेष । (र. ज. प्र)

रू. भे.—विमोहा ।

विज्ज—१ देखो 'वीजळी' (मह., रू भे.)

२ देखो 'वीजळा' (मह., रू भे.)

विज्जह—देखो 'वीजळा' (मह., रू. भे)

विज्जमाल, विज्जमाला, विज्जमालि, विज्जमाली—देखो 'विद्युन्माली'
(रू भे.)

उ०—इद्र अछइ रहतू पुर राउ, विज्जमालि तै लहटठ भाउ ।
चपलु भली नई काडिठ राइ, रोसि चडिठ राउसपुरि जाइ ।

—सालिभद्र सूरि

विज्जळ, विज्जल—१ देखो 'वीजळा' (मह., (रू. भे.)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

उ०—१ थपि असह जळ सुस उसण वल्लभ, सूर कर हुइ सीतळ ।
उण किरण सिस निस जेम श्रीवम, विराम हिम द्रुम विज्जळ ।

—रा. रू.

उ०—२ प्रलय काल रिण मेघ प्रगट्टे, इत तल थल उदवट्टे ।
भलहल विज्जल खडग भपट्टे, छटा वाण आछट्टे हो ।

—वि. कृ.

विज्जा—देखो 'विद्या' (रू भे)

उ०—१ गुरु तक्क कव्व नाडय पमुह, विज्जा वास पसिद्ध घर ।
परिहरवि भावि विहि पयड कइ, पुहवि पससिजइ सुपरपरि ।

—ऐ. जै. का स.

उ०—२ अहे कमि आगम वेद छद, नाटक गण लवसण । पच
वरिस विज्जा विचार, भणि हुअ वियकसण ।

—ऐ. जै. का. स

विज्जावोस—स पु—१ विद्या या सिद्धि द्वारा प्राप्त किये जाने वाले
आहार पर लगने वाला दोष । (जैन)

२ विद्या या सिद्धि द्वारा रूप बदल लेने पर लगने वाला दोष ।

(जैन)

विज्जाहर—देखो 'विद्याघर' (रू भे)

उ०—१ नमिर सुरासुर खयर राय किन्नर विज्जाहर, मह्य राइ
विराय माण पय पकय सुदर । महिअल महिमायेय मण वछिअ
दायक, जय जय थभण पासनाह भुवणत्तय नायग ।

—स. कु

उ०—२ दुरयोधन चित्रगदह, मेल्हावी उहि पत्थि । विज्जाहर
रायह नमइ, दुरयोधनु लेउ सत्थि ।

—सालिभद्र सूरि

विज्जु, विज्जु—१ देखो 'विज्जु' (रू भे)

२ देखो 'वीजळी' (रू भे)

विज्जुमाली—स पु [स विद्युन्माली] १ पश्चिम मे स्थित एक पर्वत
विशेष ।

उ०—आर्ष पुस्कर मे पूरव दिसें, मदर नामे मेर तिहा वसें ।
पच्छिम विज्जुमाली मेर ए, इहा किण इतरी नाम फेर ए ।

—घ. न. अ

विज्ञान-स पु —खजूर का पेड़ । (सभा)

विजय—देखो 'विजय' (रू भे)

उ०—राठीड कृश्रर पक्कर रवद, कवण (भू) समवद करै । जम-
दाढ छोड विजय लई, कना राठ अरवद रै । —गु रू व

विजयदसम, विजयदसमी—देखो विजयादसमी' (रू भे)

उ०—देवी मनाई विजयदसम, चतुरग दळा चडियी भरणि । कह
ताज मेर भाभी, 'कमी, गयी भाजि मेरा सरणि । —गु रू. व

विजया—स स्त्री.—आर्या या गाहा छद का एक भेद विशेष, जिसके
प्रथम चरण में २३ दीर्घ वर्ण सहित ४६ मात्राये और ११ ह्रस्व
वर्ण सहित ११ मात्राएँ इस प्रकार कुल ५७ मात्राएँ होती हैं ।

—ल पि

विभक्ति, विभक्ति-स पु —विध्याचल पर्वत ।

उ०—घरि वीह मत्र जत्र चित धारणि, कर इलाज देवी वर
कारणि । चव इम सुणी दिर्य वर चाहे, माला-देवी विभक्ति माहे ।

—सू प्र.

विभासणि, विभासणी—१ देखो 'भावलिया'

'२ देखो 'भावह'

विभोहा—देखो 'विजोहा' (रू भे)

उ०—दोइ रगण गण देविजै, पाय जेण मंप्रत्त । विभोहा एही
विगत्ति, तवा रामगुण तत । —पि प्र.

विटव—देखो 'विटव' (रू भे)

उ०—१ जे कबहु भ्रतक चलै, तो वीचि विटव कोई और । जन
हरिदास मूवा पछै, नही कुटव मे ठोर । —ह पू वा.

उ०—२ मया करीनड मूहनड, दीघड देस नीकाल । तिरिण क्षणिथी
क्षीणु थयु, विरह विटवइ ध्याल । —मा का प्र

विटवण, विटवणा, विटवन विटवना—स स्त्री —१ कण्ट, दु ख, पीडा ।

उ०—१ विरह विटवन विधि घणी, सो मद्द सहीय न जाय ।
मुक्क मरवानुं सोहिलुं, वाडव म मारै, माय । —मा का प्र

उ०—२ मयण सरीखड माधवड, चिति लगाडो चाव । वली
विटवनतु करड, वारु भई वैसाव । —मा का प्र

२ देखो 'विटवना' (रू भे)

उ०—१ आणी सीत ज मध अनेसो, कीध विटवण कारण केसो ।
कहती कोय कुर्वण केहेसो, रोह मदोवरि कांय रहे सो ।

—सुरजनदास पुनियो

उ०—२ प्रियु मोरा अचरिज पाम्यड राम, प्रियु मोरा अही अही
काम विटवणा ही । प्रियु मोरा द्विड हु सारु काम, प्रियु मोरा
ध्यान सुकल हियडड घरथड ही । —स कु

उ०—३ चचल जीव रहइ नहीं जी, राचइ रमणो रूप । काम
विटवन सी कहूजी, तै तू जाणइ सरूप । —स. कु

विटवी-वि —१ दु खी, पीडित ।

उ०—विरह विटवी वीनवच, सुणि किरणागर क्रूर । मेखिड रासि
बाघयु, तु किम चालइ सू ? —मा. कां. प्र.

२ लपट ।

विट-वि [स विट] १ अधिक काम वासना रखने वाला, कामुक ।

२ वेश्याओं से सम्बन्ध रखने या उन्हीं के साथ रहने वाला, लपट ।

उ०—वाणिजा वधू गो वाछ अंसइ विट, चोर चकव विप्र तीरथ
वेळ । सूर प्रगटि एतला समापिया, मिळिया विरह विरहिया मेळ ।

—वेलि

३ बहुत बडा धूर्त या चालाक ।

उ०—मोटा छोटा माछळा, आप भलै अणपार । विट वाची वांकम
घणी, आप घरं अहकार । —गजरदार

४ वह जो मंथुन करवाने का आदि हो ।

स पु—१ साहित्य मे एक प्रकार के नाटक का नायक, जो विषयभोग
में अपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर किमी भोगविलासी राजा या
घनवान व्यक्ति के साथ रह कर अपनी वासना भी मिटाता हो ।

२ नारणी का पेड़ ।

३ मल, विण्डा ।

४ एक प्रकार का वगं विशेष ।

उ०—१ नट विट नाडी शोडणा, ति आवइ तु म वारि । धूती
जाइ धूत की, उत्तिमनी उगारी । —मा कां. प्र

उ०—२ नाचकर, भोजकर, कवीअर, करीध वेस्यादि वत, योगि,
भोगि, विरागी, नट, विट, खूट, खरट, लाट, मीठा, जूगनु सिगार,
वातहडा, रसिक । —सभा

रू भे —विट, विट, विड ।

विटक-स पु [स] १ आर्यावर्त के दक्षिण में स्थित नर्मदा के किनारे
का एक प्राचीन प्रदेश । (पुराण)

२ उक्त प्रदेश मे रहने वाली एक जाति विशेष ।

विटचर-स. पु [स विट =विण्डा + चर =खाने वाला] गडसूरि,
ग्रामधूकर ।

रू भे —विटचार ।

विटणी, विटवी-क्रि अ.—आवेष्टित होना ।

उ०—तितरं चोर आया । सो तीन तो तरवार सु पाडीया नै इण
भात लोह वायो, आगलै जाणीयो नहीं । पछै चौथो पेई वाळो
नाठी, तिण नुं छूटी गेडी वाही सु फडियां माहे भागी । गेडी दोळो
विटाणी । —राव मालवै री वात

विटणहार, हारो (हारी), विटणियो—वि० ।
 विटिओडो, विटियोडो, विटयोडो—भू० का० कृ० ।
 विटोजणो, विटोजवो—कर्म वा० ।

विटप—स पु [स विटप] १ वृक्ष, पेड । (अ. मा, ना. मा)

उ०—सिल विकट फरस सुखेण रं, तिरसूल ग्यायख तेण रं ।
 मिडपाल गजगव विटप भड, धिख गदा वभीखण उवरघर ।

—र. रु

२ पेड या लता की शाखा ।

उ०—विस्णु रूप अबतार परगट पोहमी मे आए, सतजुग विछरं
 जीव उनकूं आन चिताए । विस्णु घरम परगट कियो आन घरम
 विटप विहडन, सभरथळ परगट सही जोत रूप जग मडन ।

—कोल्हजी चारण

३ अण्डकोष का मध्यस्थ परदा ।

रु. भे—विटप ।

विटपतटी—स स्त्री.—कुज गली । (अ मा)

विटपी—स. पु. [स. विटपिन्] १ जिस वृक्ष मे नई शाखायें या कोंपलें
 निकली हो ।

२ पेड, वृक्ष । (ह ना. मा)

उ०—छिति रजपूतन छाइ रचं, घर घर बितरन रन । जिनमें बहु
 रान जिम, बढत बहु जिम विटपी वन ।

—व. भा.

३ वन, जगल ।

४ घट वृक्ष ।

५ अजीर का वृक्ष ।

रु. भे.—विटपी ।

विटव—स पु—प्रपच, अफडा ।

उ०—घरीया भेख भगति सु भागा, और भरम अघकेरा लागा ।
 पेम भगति का कठण पैडा, विटव न कोई मावै फंडा ।

—अनुभववाणी

विटभूत—स. पु [स] वरुण की सभा मे रहकर उनकी उपासना करने
 वाले एक असुर का नाम ।

विटळ, विटल—वि.—१ विगडा हुआ, विकार युक्त ।

२ पतित, पथ अष्ट, अष्ट ।

उ०—१ भक्त सग्यासी सेवडा ए, लग्या परिग्रह री लार के । विटल
 हुवा घणा ए, गया जमारी हार कै । —जयवाणी

उ०—२ अकबर कुटिल अनीत, और विटळ सिर आदरै । रघुकुळ
 उत्तम रीत, पाळै राण 'प्रतापसी' । —दुरसी धाढी

३ व्यभिचारी ।

उ०—ते रात्रेचर अति विटल, विक्कल वदन विकराल । विखम
 वचन मुल बोलतो, रुठी जाणि कराल । —वि. कु.

४ दुष्ट ।

उ०—वेलि विहृणां पत्र परि, ह हूइ छउ हीण । विटल रहि रे
 वेगलु, आगलि धिका अमीण । —मा. का प्र

५ विगडा हुआ, विगडैल ।

उ०—१ अबैं लोक हससि कंहसी सी ठकुराणी विटळ हे सो ख्याल
 तमासी देखता थका ठाकुर नै माहै बुलाय लीयो है आप पधारजैं ।

—राजा रा गुर रा वेदा री वात

उ०—२ परभाता हरि पैल, वगडावत गावैं विटळ । चूंथे फाती छैंल,
 मँल जगत रो मोतिया । —रायसिंह सादू

रु. भे—विटळ ।

अल्पा.—विटळी, विटळियो, विटळी, विटल ।

विटळणो, विटळवो—क्रि. अ.—१ विचलित होना, अस्थिर होना ।

उ०—अर उठीनै मगरै ढळता ईं असवार री मन विटळियो ।
 सोच्यो कंडी अबूभण्यो करियो । हार्थे आयोडी सपत नै ठुकराय
 दो । वापडी डोकरी ती नावघाव की नी पूछ्या । —फुलवाडी
 २ मर्यादा रहित होना, कुनीतिपूर्ण होना ।

उ०—अर वात नै सावळ समभक्ता ईं राजाजी घाटी री लटकी
 करता कैवण लागा—तो यूं बता, सावळ समभाया विना कीकर
 समझ मे आवैं । देवी जमानो विटळियो । मगो वेटी ईं भा रं साथै
 घोखी करग्यो । —फुलवाडी

३ पथ अष्ट होना, धर्मच्युत होना ।

विटळणहार, हारो (हारी), विटळणियो—वि० ।

विटळिओडो, विटळियोडो, विटळयोडो—भू० का० कृ० ।

विटळीजणो, विटळीजवो—भाव वा० ।

बटळणो, बटळवो, विटळणो, विटळवो, बटळणो, बटळवो,
 विटलणो, विटलवो—रु० भे० ।

विटलणो, विटलवो—देखो 'विटळणो, विटळवो' (रु भे)

विटलणहार, हारो (हारी) विटलणियो—वि० ।

विटलिओडो, विटलियोडो, विटल्योडो—भू० का० कृ० ।

विटलीजणो, विटलीजवो—भाव वा० ।

विटळणो, विटळवो—क्रि. स (विटळणो, विटळवो क्रिया का प्रे रु)

१ विचलित करना या कराना, अस्थिर करना या कराना ।

२ मर्यादारहित होने को प्रेरित करना या कराना, कुनीतिपूर्ण होने
 को प्रेरित करना या कराना ।

३ पथ अष्ट होने को प्रेरित करना या कराना, धर्मच्युत होने को
 प्रेरित करना या कराना ।

विटलाणहार, हारो (हारो), विटलाणियो—वि० ।

विटलायोडो—भू० का० कृ० ।

विटलाईजणो, विटलाईजवो—कर्म वा० ।

विटलाणो, विटलावो, विटलावणो, विटलाववो, विटलावणो, विटलाववो—रू० भे० ।

विटलायोडो—भू का कृ —१ विचलित किया या कराया हुआ, अस्थिर किया या कराया हुआ २ मर्यादारहित होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, कुनीतिपूर्ण होने को प्रेरित किया या कराया हुआ. ३ पथभ्रष्ट होने को प्रेरित किया या कराया हुआ, धर्मच्युत होने को प्रेरित किया या कराया हुआ ।

(स्त्री विटलायोडो)

विटलावणो, विटलाववो—देखो 'विटलाणो, विटलावो' (रू भे)

विटलावणहार, हारो (हारो), विटलावणियो—वि० ।

विटलाविओडो, विटलावियोडो, विटलाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विटलावीजणो, विटलावीजवो—कर्म वा० ।

विटलावियोडो—देखो 'विटलायोडो' (रू भे)

(स्त्री विटलावियोडो)

विटलायोडो—भू का कृ —१ विचलित हुआ हुआ, अस्थिर हुआ हुआ २ मर्यादारहित हुआ हुआ, कुनीतिपूर्ण हुआ हुआ ३ पथभ्रष्ट हुआ हुआ, धर्मच्युत हुआ हुआ ।

(स्त्री विटलायोडो)

विटलियोडो—देखो 'विटलायोडो' (रू भे)

(स्त्री विटलियोडो)

विटलियो, विटलो—देखो 'विटल' (रू भे)

विटाणो, विटावो—क्रि अ —सिकुडना ।

उ०—तेह पुरुस जरजर हुवो जी, सिथिल पडी छै जी काय । लीलरो पडे सरीर मे जी, चामडी हाड विटाय । —जयवाणी

विटाणहार हारो (हारो) विटाणियो—वि० ।

विटायोडो—भू० का० कृ० ।

विटाईजणो, विटाईजवो—भाव वा० ।

विटायोडो—भू का कृ —सिकुडा हुआ ।

(स्त्री विटायोडो)

विटाळण, विटाळणो—वि —१ लज्जित करने वाला, कलकित करने वाला ।

उ०—सीहणि हेको सीहं जणि, छापरि मडे आळि । दूध विटाळण कापुरस, वीहळा जणं सिपाळि । —हा भा.

२ भ्रष्ट करने वाला ।

विटाळणो, विटाळवो—क्रि. स —१ विचलित करना, अस्थिर करना ।

उ०—वीरम चित विटाळियो, उलटी मत आणी । सात हजारह साडिया, दिन हेक दगाणी । भावै उण री श्रीठिया, कळ कूक कराणी । ध्रीगा ध्रीगा ढोलकी, सहवाण वजाणी । —वी मा २ पथ स्रष्ट करना, धर्मच्युत करना ।

उ०—लाजइ राजगोत्र अहिठाण, लाजइ चाचिगदै चहूआण । हू ता नही विटाळ आप, हिव लाजइ कान्हडदै बाप । —का दे प्र ३ कलकित करना ।

४ बदनाम करना, निन्दित करना ।

विटाळणहार, हारो (हारो), विटाळणियो—वि० ।

विटाळियोडो, विटाळयोडो, विटाळवोडो—भू० का० कृ० ।

विटाळीजणो, विटाळीजवो—कर्म वा० ।

विटाळणो, विटाळवो, विटाळणो, विटाळवो, विटाळणो, विटाळवो, विटालणो, विटालवो, विटालणो, विटालवो—रू० भे० ।

विटालणो विटालवो—देखो 'विटाळणो विटाळवो' (रू भे)

उ०—१ तइ हिंदू किया तुरक, विप्र तो मूल विटाल्या । वणिकं गइ विगति, राक करि लगरि राल्या । —स कु

उ०—२ पिया हू सीलवती सती रे हा, केम विटालुं देह । जिम तिम करी ए भोलवी रे हा, रास्यो सील अमग । —वि कु

उ०—३ दिवस कित लेकं गर्दै, गोखै वेठी भूर । मल भूखित कस-काय मुनि, दीठी एहवी रूप । सीम वयण गयो वीसरो, सेवक नं कहै राय नगर विटाल्यो हूवडे, फाढो परो घकाय ।—सीपालरास

विटालणहार, हारो (हारो) विटालणियो—वि० ।

विटालियोडो, विटालियोडो, विटाल्योडो—भू० का० कृ० ।

विटालीजणो, विटालीजवो—कर्म वा० ।

विटालियोडो—भू का कृ —१ विचलित किया हुआ, अस्थिर किया हुआ २ पथभ्रष्ट किया हुआ, धर्मच्युत किया हुआ ३ कलकित किया हुआ ४ बदनाम किया हुआ, निन्दित किया हुआ । (स्त्री विटालियोडो)

विटालियोडो—देखो 'विटालियोडो' (रू भे)

(स्त्री विटालियोडो)

विटालो—वि —देखो 'विटालो' (रू भे)

(स्त्री विटालो)

विटियोडो—भू का कृ.—आवेष्टित हुआ हुआ ।

(स्त्री विटियोडो)

विटोप—स पु—रण क्षेत्र मे सिर पर धारण किया जाने वाला लोह का टोप ।

उ०—जिएसाल जुआण करत जगदी, जूसण बाघे जम्मजडा ।

हृद श्रोत्र विटोप रगावळि हाथळ, सूमात्रा करि सिद्ध खडा ।

—गु रू व

विट्वाळणो, विट्वाळवो—देखो 'विट्वाळणो, विट्वाळवो' (रू भे) (उ. र)

विट्वाळणहार, हारो (हारो), विट्वाळणियो—वि० ।

विट्वाळिओडो, विट्वाळियोडो, विट्वाळयोडो—भू० का० ऋ० ।

विट्वाळोजणो, विट्वाळोजवो—कर्म वा० ।

विट्वाळियोडो—देखो 'विट्वाळियोडो' (रू भे)

(स्त्री विट्वाळियोडो)

विट्ठळ—स पु —१ विष्णु की एक मूर्ति का नाम जो दक्षिणी भारत में स्थित है ।

२ ईश्वर, परमेश्वर ।

३ श्री कृष्ण ।

रू भे - विट्ठळ, वीठळ, वीठुळ, विठळ ।

अल्पा—विट्ठळो, विट्ठलो ।

मह—विठळसवर, विठळस्यर ।

विट्ठळनाथ, विट्ठळनाथ—स पु —१ भगवान श्री विष्णु का नाम ।

२ पुष्टि मार्ग के प्रथम उत्तराधिकारी एव 'दो सौ बावन वैष्णव की वार्ता' तथा 'चौरासी वैष्णवन की वार्ता' के रचयिता, प्रसिद्ध वैष्णवाचार्य बल्लभाचार्य के पुत्र ।

रू. भे—वीठळनाथ, वीठळनाथ ।

विट्ठळो, विट्ठळो—देखो 'विट्ठळ' (अल्पा, रू भे)

उ०—वहरी माहारा विट्ठळ ! का सिर कापिउ राह ? इहु गलिउ रहितु उदरि, तु मुझ देत न दाह । —मा. का प्र.

विठळ—देखो 'विट्ठळ' (रू भे)

उ०—ए जो पाडव थया अमेळा, विठळ घाव तो जिसी वेळा ।

—सिवदान वारहठ

विठळसवर, विठळस्यर—देखो 'विट्ठळ' (मह, रू भे) (अ. मा)

विठायत—स पु—वैठने का स्थान, वैठक ।

उ०—हुवँ चारमगळा, नाद सुर हुवँ त्रवाळा, हरख विठायत हुवँ हुवँ दरवार भूजाळा । ह्य हूक लजागडा, हुवँ ओछाह अमला, हुवँ वाण रूपगा, हुवँ सिणगार महला । —वखतो खिडियो

विडग, विडगक—स पु [स विटुण्ड] १ अश्व, घोडा ।

(अ मा, ना डि को)

उ०—१ घोळँ दिन वागा बर्क, तोलै कूंत खडग । आम्हा साम्हा आहुडे, विडग उपाडे वग । —रा रू

उ०—२ पाच सोबायता गिळँ ऊभो सुपह, विरोळँ धोंकळँ करे वाहा । विडग आदेसियो दळँ बहुळायता, सार आदेसियो पातसाहा ।

—ठाकर हरनाथसिध करमसौत रो गीत

उ०—३ गई घलि क्रोध भळाहळ जागि, उभै चग छूटि भळाहळ आगि । विडगक भाळि पवत्रिय वाग, भळाहळ सेल ग्रहै मध्य भाग । —सू प्र.

उ०—४ छछशा मद रा छाकिया, रहो आघा सिरदार । विडगो चढीया वीर वळ, लडगा आया लार । —पना

२ ऊट । (ह ना मा)

उ०—तुरत भेक खरचँ रतन, लगस तोड लडग । अमग भूप उवावरा, वह गज वाज विडग ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाडेल री वात

३ गायविडग नामक एक जडी विशेष ।

वि—१ मस्त, उन्मत्त ।

२ वेपरवाह निशक ।

३ आजाद, स्वतंत्र ।

४ उदासीन ।

५ वीर, बहादुर ।

रू भे—बडगी, विडग, विडगि, विडगी, विडगि, विडगी, विणग ।

मह—बडग, विडगाळ ।

अल्पा—विडगी ।

विडगळी—स स्त्री—गाडी के अग्र भाग (ऊध) से लगे और लटकते हुए वे दो लम्बे लकड़ी के डडो में से एक जो जमीन पर लगकर गाडी को जमीन से ऊची रखते हैं ।

विडगाळ—स. स्त्री—१ घोड़ी ।

उ०—घरँ फेट श्री लोण सू सेल घोवँ, जठी वाग वाळँ तठी 'पाल' जोवँ । विडगाळ, भाकँ करे आठ वाटां, चले वायरें टोट स मेघ छाठां ।

—पा प्र.

२ देखो 'विडग' (मह, रू भे)

विडगि, विडगी - देखो 'विडग' (रू. भे)

विडगी—देखो 'विडग' (अल्पा, रू भे)

उ०—अला विडगी तिरुँ फोजा वणावो, अला आदमा दळ मुसा अणावो । अला चंचळा ऊपरा भीर चाडो, अला दाणवा दिसँ वागा उपाडो । —पी अ

विडव—स पु [स विडव, विडम्ब] १ नकल ।

२ कष्ट, पीडा, सन्ताप ।

३ हसी, उठाने की क्रिया ।

रू भे—विडव ।

विडवक—वि [स] १ समान अनुकरण करने वाला, नकल करने वाला ।

२ अपमानित करने या निन्दा करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने वाला ।

३ हमी उठाने वाला ।

४ कष्ट देने वाला, सन्ताप देने वाला ।

रु. भे —विडवक ।

विडवणी, विडवणी—क्रि स —१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारना ।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारना ।

३ उपहास करना हमी-मजाक करना ।

४ प्रपच या जाल फँलाना ।

५ उद्देग या दु ख उत्पन्न करना ।

६ वेप बदलना ।

उ०—१ मत्स्यदेसि जाई नइ रमठ, ए तेरमठ वरसु निगमठ । ग्या वइराटह राय अमथानि, वेस विडव्या नीय अभिमानो ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ राइ बोलावि वहु हिडव, अम्हि वसीसइ वेस विडवि । तुम्हि सिधावठ तायह राजि, समरी आवै अम्हुठ काजि ।

—सालिभद्र सूरि

विडवणहार, हारो (हारी), विडवणियो—वि० ।

विडविओडो, विडवियोडो विडव्योडो—भू० का० कृ० ।

विडवीजणो, विडवीजवो—भाव वा० ।

विडवण, विडवणा—स. स्त्री [स० विडवण, विडवणम्, विडवणा]-

१ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने की क्रिया ।

२ चिढ़ाने या अपमानित करने के उद्देश्य से किसी की नकल करने की क्रिया ।

३ उपहास, हसी-मजाक ।

४ प्रपच, जजाल ।

५ उद्देग, दु ख ।

रु भे —विडवणा, विटवणा, विटवणा, विटवण, विटवणा ।

विडवियोडो—भू का कृ —१ किसी के चाल-ढाल की नकल उतारा हुआ २ चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल उतारा हुआ ३ उपहास किया हुआ, हमी-मजाक किया हुआ ४ प्रपच या जाल फँलाया हुआ ५ उद्देग या दु ख सपन्न किया हुआ. ६ वेष बदला हुआ ।

(स्त्री विडवियोडो)

विडवी—वि [म विडविम्बन्] १ किसी के चाल ढाल की नकल उतारने वाला ।

चिढ़ाने या अपमानित करने हेतु किसी की नकल करने वाला ।

३ हसी उठाने वाला, उपहास करने वाला ।

विड—देखो 'विड' (रु भे) (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ खसम विसारया विड भज्या, विचार न जोया ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ जठै पना बोली अँ ती पान की वीडो छँ, रखावस्यो ही । मन का मनोरथ हुवाँ थका, वघाइ पानसी हीज । खवास आय कवर नै हकीकत कही । बावना चनण कै बडेँ, अँहे रूप मिलजँ ती सही ।

—पना

विडभोजा—देखो 'विडुजा' (रु. भे) (ह ना. मा)

विडणो, विडवो—देखो 'विडणी, विडवी' (रु भे.)

विडणहार, हारो (हारी), विडणियो—वि० ।

विडिओडो, विडियोडो, विड्योडो—भू० का० कृ० ।

विडोजणो, विडोजवो—भाव वा० ।

विडद—देखो 'विरुद' (रु भे.)

उ०—होइ लोह गोला मुगल, दोला जोर जुडिया जग । हुँवरा गलि गज गाह बाधँ रखा विडद अमग ।

—प च. ची

विडदडी—देखो 'विडदडी' (रु भे)

विडदवडी—देखो 'विडदवडी' (रु. भे)

विडदविनायक—देखो 'विडदविनायक' (रु भे.)

विडदाव—देखो 'विरुद' (रु भे.)

विडदावळ, विडदावळी—देखो 'विरुदावळी' (रु भे)

विडरणो, विडरवो—क्रि अ.—१ क्रोध होना, गुस्सा होना ।

२ नाश होना, नष्ट होना ।

३ डरना, भयभीत होना ।

उ०—विडरी असज 'विजो' धियो वासँ, चाजँ हाक थई विकरोळ ।

चाला चालणहार न चूको, खत्रवट खगवाहो खेसोल । —नैणुसो

विडरणहार, हारो (हारी), विडरणियो—वि० ।

विडरिओडो, विडरियोडो विडरयोडो—भू० का० कृ० ।

विडरोजणो, विडरोजवो—भाव वा० ।

विडरणो, विडरवो—रु० भे० ।

विडराणो, विडरावो—क्रि स —डराना, भयभीत करना ।

उ०—१ रोवठ-भूकत घूजो माताजी रँ गेया, माता लँ घूजो नै कठ लगाया । काई काई रे घूजो तनँ कए रुसायो, काई काई रे घूजो तनँ कए विडरायो ।

—सो गी

उ०—२ मनँ म्हाण पिताजी गोद खेलायो, मनँ म्हारो माई-मा विडरायो । तँ नहिँ भजियो वाला मैं नहिँ भजियो, भजियाँ विना सुख काय सू होवँ ।

—सो गी

विडरणहार, हारो (हारी), विडरणियो—वि० ।

विडरायोडो—भू० का० कृ० ।

विडराईजणी, विडराईजवी—कर्म वा० ।

विडगणी, विडरावो, विडरावणी, विडरावणी, विडरावणी,
विडरावणी—रु० भे० ।

विडरायोडो—भू का. कृ — डराया हुआ, भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री विडरायोडो)

विडरावणी, विडरावणी—देयो 'विडराणी, विडरावी' (रु० भे०)

विडरावणहार हागे (हागे), विडरावणियो—वि ।

विडरावणोडो, विडरावियोडो विडरावोडो—भू का कृ ।

विडरावणीजणी, विडरावणीजवी—कर्म वा ।

विडरावियोडो—देयो 'विडारायोडो' (रु० भे०)

(स्त्री विडरावियोडो)

विडरियोडो—भू का कृ — १ क्रुद्ध हुआ हुआ, गुस्सा हुआ हुआ. २ डरा
हुआ, भयभीत हुआ हुआ. ३ नष्ट हुआ हुआ ।

(स्त्री विडरियोडो)

विडरी—वि — १ कायर, डरपोक ।

२ दुखी, व्याकुल ।

रु० भे०—विडरी

विडरूप—वि — १ कुरूप, बदसूरत, सुन्दरता-रहित ।

उ०—१ वादळ सजसू पैला सूवटा रा पीजरां रे गोडे गियो । सूवटा
उरणे कागला सू ई वत्ता विडरूप निर्ग आया । आयी
गवाडी रो भळाको दियो । की चीज दाय नी आई ।

—फुलवाडी

उ०—२ उण ठेलमठेल मेळा रे साने वादळ राज-दरवार मे पूगो
जरा राजाजी कोजी अर विडरूप लुगाया रो परख करणा मे
मगन हा । हेड रो हेड ऊभी ही ।

—फुलवाडी

उ०—३ वाने खुद हाया तगतगाय वारे काढी । पछे डावडियां
ने कस्यो के सगळी विडरूप लुगाया ने राज-मैल सू वारे तगड दे ।

—फुलवाडी

२ भयकर, भयावह, डरावना ।

उ०—१ वा दो तीन वेळा मासी रे मूडा साम्ही जोयो ती उरणे
अडो लवायो जाणे उणारी आख्या होठा माथे चिप्योडी व्हे ज्यू,
कान आपरी ठायी छोड लिलाड माथे जुडग्या अर नाक ठोडी रे
हेटे लहने । इण भात मामी रो उणियारो विकत अर विडरूप
क्यू व्हेगी ?

—फुलवाडी

उ०—२ विडरूप चले असि चकि कुंराणि, जागिया प्रेत रखेत
जाणि । दरयाव रूप हू कोस दोय, जगमुकट कीष डेरास जोर्म ।

—सू. प्र.

रु० भे०—विडरूप, विडरूपी, वीरूप, वडरूप, विडरूपी, ।

विडरूपता—स स्त्री — १ कुरूपता, बदसूरती ।

उ०—तव वाली मासी हुगने कंवण लागी—वेटी, श्री फुरत रो
नेम के भाटी ई रूपाळी चीज मूं मोह करे अर विडरूपता सू चिमरुं ।

—फुलवाडी

२ भयानकता, भयकरता ।

उ०— निपट अरुम अर अग्यानी व्हेना थका ई वेटा ने धारे रूप
रो परख हे अर वी म्हारी विडरूपता सू उरपे । —फुलवाडी

विडरूपी—देखो 'विडरूप' (रु० भे०)

विडलून, विडलून—न पु [स विडलयण] एक प्रकार का साधर
नामक नमक । (अमरत) (उ. र)

विडली—देखो 'विडली' (रु० भे०)

विडस—स पु [स वडिथा] मछनी फसाने का यत्र विद्येय । (अ. मा)

रु० भे०—वडस ।

विडाण—देखो 'विड' (१) (रु० भे०)

उ०—चित्त वाल डरचो तरु देख सही, मिळियो सिधराव विडाण
मही, अण लेसिय जोगिय मास भगा, पडियो भरडी डर दोड
पगां ।

—पा प्र

विडाणी—वि. (स्त्री विडाणी) १ भयकर, भयावह ।

२ पराया, दूसरो का ।

उ०—१ आखडिया डवर हुई, नयण गमाया रोय । से साजण
परदेसमद, रह्या विडाणा होय ।

—डो मा

उ०—२ सारा विडाणा हिव हवा, जामी हमारा सीम वै ।

सीस घणारा हूचीया, अर आया मूक चोर वै । —रीसालू रो वात

उ०—३ राम नाम निस दिन भजे, तजी विडाणी तात । जनहरिया
नर देह की, भोसर वीतो जात ।

—अनुभववाणी

२ नाशवान ।

उ०—गाफल मूढ न चेतिया, आ देह विडाणी ।

—केसीदास गाडण

३ अन्य ।

उ०—कता फिरज्यो एकला, फिसा विडाणा साथि । धारी माथी
तीन जरा हियी कटारि हाथि । —जखडा मुखडा भाटी रो वात
४ दुश्मन की, शत्रु की ।

उ०—१ सादूली आया समी, बियो न कोय गिरणत । हाक विडाणी
किम सहे, घण गाजिये मरत ।

—हा आ

उ०—२ खहर गर्म व्रत दुज्जडा, सहर करे दहवाट । आया थाणा
'अजन' रा, लूट विडाणा राट ।

—रा रु

रु० भे०—विडाणी, विडाणी, विराणी ।

विडामण—वि — भयकर भयावह ।

उ०—रेवता वाजिया पोड रडक, धराधर घुजीय कोम घडक ।
विडामण डबर दीह विचाळ, मिळै निस भाद्रव नी मेघमाळ ।

—गो. रू.

विहार—स पु —नाश, सहार ।

वि —नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

उ०—भ्रंकरण पसर तखत बै ऊपर, हीसल मला मनावी हार ।
पगी तरणा वाजिया प्रधळा, वडे दुरंग सिर राय विहार ।—द. दा

विहारक—स पु —विल्ली, विडाल । (व भा)

वि —नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

विहारणी, विहारवी—क्रि स —१ चीरना, फाडना ।

उ०—करक तरवार ग्रहे हिरणाकुस, मूढ निरोस निवारमुडे । सुत कै
वळ एक मुरार तरणी सज, थभ विहार गिलार थडे । —भगतमाळ
२ नाश करना, ध्वंस करना, मिटाना ।

उ०—१ ती पिण्ण आपणी उकति सार, असुरा विहार, घूमर
सघार, चड मुड चगाळ, रगतवीज, खंगाळ सभ निसभ सहारण,
भारथ खग खेरण, तिण्ण री वखाण देवी दीवाण, सुकवि कहै
सुणावै, परम मन वछित पावै । —मा वचनिक

उ०—२ जेमल कारण मड जुध, वड सेन विहारै । गिनका कीर
पठावगी, वंकुठ दवारै । —भगतमळ

उ०—३ निय निय तेज मुरा तन नीसर, मोहण रूप तेज ईख
मुनेसर । अप्रम सुज तेज प्रगट घुर आणण, विसन तेज भुज दैयत
विहारण । —मा वचनिका

उ०—४ रिणामालीत कहै रिण हधा, अचड तियागी बोल इसो,
जूह विहार किसी जीव—रखी, केहर हधा साथ किसी । —द दा

उ०—५ प्रति दिन मगळ गीत, देवता तरणा गुवावै । विघन
विहारण काज, विनायक नूत बुलावै । —दसदेव

ऊ०—६ एकलड गुरुड पन्नग खाइ, सीह एक गज ना सइ घाइ ।
पारथ एक दल कोडि विहारइ, ईणह सिउ की नवि मलड अखाडड ।
—सालिसूरि

३ निवारण करना, मिटाना ।

उ०—१ हगीया हसती दत सु । तोडै कोट किवार । साध विहारै
सवद सु, भरम करम का डार । —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया भाजै वधार क् । हमती माती मद् । साध विहारै
भरम क् सो राती अनहद । —अनुभववाणी

४ बर्बाद करना, विगाडना ।

उ०—मीरा नै राणाजी वरजै, मतना जन्म विहारै । ये सगत
साध की सीख्या, मत आबो म्हैल हमारै । —मीरा

५ मारना ।

उ०—१ काठ काण करवत्त, वट किय दत विहारै । पछट वीर
भुज पाण, चीर जुरसंध विहारै । —रा रू.

उ०—२ देवी दसरथ रूप स्रवण विडारी, देवी स्रवण रूप पितु
मात तारी । देवी केकयी रूप तै कूड कीघा, देवी राम रै रूप वनवास
लीघा । —देवि

उ०—३ सिंहमल सिलकिया करमट कूदिया, कटका हुई ज
हालीहाल । सेखा दुरजनसाल समोभरम, रोपी पग विहारण माल ।
—अमरसिंह राठीड री बात

६ तोडना ।

उ०—१ करीड प्रतिग्या चडोड भूक्ति जयद्रयु रणि पाडइ ।
भूरिस्रवा नउ तीण समइ सरि बाहु विहारइ —सालिमद्रसूरि

उ०—२ वीर कोडि चिहु पाडवि मारी, म्लेच्छराय रथ भीमि
विडारी । तु विराटन्नप भीमि ऊहालिउ, दाउ देविणु विलेच्छु
सुवालिउ । —सालिसूरि

६ किसी समूह या दल को बीच में पृथक करना, दूर हटाना,
दूर करना, चीर देना, विभक्त करना ।

उ०—वन घाहर नाहर वसै, वाहर थाट विहार । तरवर गुलम
समीर विण, न को नमावणहार । —बा दा.

८ कुपित करना, क्रोधित करना ।

९ तितर-बितर करना, बिखेरना ।

१० त्याग करना, छोडना ।

उ०—१ करिस्या भरम करम क् फानै, भरिस्या भगति भडारी ।
खरचत खावत सहज खजीना, लालच लोभ विडारी ।

—अनुभववाणी

उ०—२ जामण रा रै जाया, किस विध विडारी रै छोटी भाण
नै । —जीण माता री गीत

उ०—३ हरसा वीर मेरा रै, जै मेरी होती जुग तै माय । जामण
का रै जाया, अवन कवारी नै नाय विडारती ।

—जीण माता री गीत

११ उजड करना, निरावाद करना ।

उ०—चुप्या सवारथा दह पढै, दहिया सवारै, भरिया सरवर
रीतवै, रीता जळ भारै । सूना देस वसावही, वसिया विडारै, सीत
रखदा जळ कवळ, थळ भाक सघारै । —केसीदास गाडण

विहारणहार हारी (हारी), विहारणिघो—वि० ।

विहारिभोडो, विहारियोडो, विहारपोडो—भू० का० कृ० ।

विडारीजणी, विडारीजवी—कर्म वा० ।

विहारणी, विहारवी, विहारणी, विडारवी, विडारणी, विडारवी

—रू० मे० ।

विहारियोडो—भू का कृ—१ चीरा हुआ, फाड़ो हुआ. २ नाश किया हुआ, विध्वंस किया हुआ, मिटाया हुआ ३ निवारण किया हुआ, मिटाया हुआ ४ बर्बाद किया हुआ, विगाडा हुआ. ५ मारा हुआ. ६ किसी समूह या दल को बीच में से पृथक किया हुआ, दूर हटाया हुआ, दूर किया हुआ, चीर हुआ ७ कुपित किया हुआ, क्रोधित किया हुआ ८ तितर बितर किया हुआ, बिखेरा हुआ ९ त्याग किया हुआ, छोडा हुआ, १० निरावाद किया हुआ, उजड किया हुआ ।
(स्त्री विहारियोडो)

विडाळ, विडाल—देखो 'विडाळ' (रू. भे)

उ०—१ चख चोळ भाल विकराळ चूंच, कळ चाल प्रकट दाढाळ कूंच । रोसाळ मिळीं ग्रीखम रसम्म, चिंता विडाळ नाहर चसम्म ।
—वि. स

उ०—२ वद विडाळ वदि सुणह वलि, सह इकवोस सुणाइ । नार घटे हूइ लुघ हुअै, तिम तिम नाम वत्ताइ ।
—पिं. प्र

विडाळद्रग—वि—बिल्ली के समान आखो वाला ।

स पु—यवन, भुसलमान ।

उ०—असला चढि भाळ कराळ तकै, घडकै नह चिल लकाळ घकै विकसै रणताळ अमाळ वगा, दमकै खिजि उवाळ विडाळ—द्रगा ।
—भे म

रू. भे.—विडाळद्रग, विडाळद्रग

विडालवृत्तिक—वि.—बिल्ली के समान वृत्ति वाला ।

रू. भे.—विडालवृत्तिक, विडालवृत्तिक

विडालाक्ष—स पु [स] युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक राजा ।

विडाळी—देखो 'विडाळ' (अल्पा, रू. भे)

विडाव—स पु—विशेष प्रकार का दाव ।

उ०—में इम जाणियो महाराज, कोइक डाव—विडाव करू । मार महेंवें वदकी मीरजै, मीरजो मार'र पळै मरू ।
—बगती खिडियो

विडावणो—वि—जो सुहावना न हो, अप्रिय, अरुचिकर ।

उ०—भावं नही ज भास, लागै विणज विडावणो । रीरावं दिन-रात, रोटया कारण, राजिया ।
—किरपारांम

विडियोडो—देखो 'विडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विडियोडो)

विडुव—देखो 'विडुव' (रू. भे)

विडूजा—स पु [स. विडोजस्] इन्द्र । (अ. मा., ना. मा.,)

रू. भे—बडूजा, विडोजा, विडूजा, वडूजा, विडग्रीजा, विडूजा, विडोजा, विडग्रीजा, विडोजा, विडोजा ।

विडूजावाह—स पु [सं. विडोजस्+वाहन] इन्द्र का वाहन, हाथी, एरावत ।

रू. भे—वडूजावाह, विडोजावाह, विडूजावाह, वडूजावाह, विड-ग्रीजावाह, विडजावाह, विडोजावाह, विडग्रीजावाह, विडोजावाह, विडोजावाह ।

विडूरथ—स पु—१ एक यादववशी जो श्वफल्क के भाई तथा चित्ररथ के पुत्र थे ।

२ दन्ववध का भाई जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

३ एक पुरुवशीय सम्राट्, जिसे उसकी माता ने, जब परशुरामजी पृथ्वी नि क्षत्रिय कर रहे थे, उस समय ऋष्वत् पर्वत पर एक ऋषि के आश्रम में छिपा कर रखा था ।

४ अनश्वन का पिता, मधुकुल में उत्पन्न सप्रिया का पति और कुरु राजा एव दाशार्ही शुभांगी के ससर्ग से उत्पन्न, एक राजा ।

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे) (ना डि. को)

विडोळ—वि.—आकार रहित, विना आकार का ।

विडोळणो, विडोळवो—क्रि स—कम्पायमान करना, कम्पित करना, भयभीत करना ।

उ०—अमोल तोल भोल कै, प्रचोळ चोळ अख कै । अडोळ डोळ कध कै, विडोळ नै असक कै ।
—ऊ का.

विडोळणहार, हारो (हारी), विडोळणियो—वि ।

विडोळिओडो, विडोळियोडो, विडोळयोडो—भू का कृ. ।

विडोळीजणो, विडोळीजवो—कर्म वा ।

विडोळियोडो—भू का. कृ.—कम्पायमान किया हुआ, कम्पित किया हुआ भयभीत किया हुआ ।

(स्त्री विडोळियोडो)

विडो—देखो 'विडो' (रू. भे)

विडोजा—देखो 'विडूजा' (रू. भे)

विडोजावाह—देखो 'विडूजावाह' (रू. भे)

विडुारणो, विडुारवो—देखो 'विडारणी विडारवो' (रू. भे)

उ०—१ राव राय रखपाळ, राव रहडण रिम राहा । राव कुरुप हराय, राव वंरी पतसाहा । राव रोर विडुार, राव ससार उघारै । राव धम्म ऊघरै राव इक्कोतर तारै ।
—नैणसी

उ०—२ सळखहर राठ सिरि वधी सेस, दळपत्ति हुअठ सिरि दसा देस । मडोवर लियउ मल्लेख मारि, विडुारि सत्र मिरिया वहारि ।
—रा ज. सी.

विडुारणहार, हारो (हारी), विडुारणियो—वि० ।

विडुारिओडो, विडुारियोडो, विडुारयोडो—भू० का० कृ० ।

विडुारीजणो, विडुारीजवो—कर्म वा० ।

विह्वारियोडो—देवो 'विह्वारियोडो' (रू भे)

(स्त्री विह्वारियोडो)

विह्वणी, विह्ववो—देवो 'विह्वणी, विह्ववो' (रू भे.)

उ०—मुडिया पिंड भेगळ अस्सि उछ्छळ, रावत विम्मळ लडि पडिय । दुजडा दून दळ विह्व सव्वळ, कदळ पेसै रिब खडिय ।

—गु. रू व

विह्वणहार, हारो (हारो), विह्वणियो—वि० ।

विह्विओडो, विह्वियोडो, विह्वयोडो—भू० का० कृ० ।

विह्वीजणो, विह्वीजवो—भाव वा० ।

विह्वियोडो—देवो 'विह्वियोडो' (रू भे)

(स्त्री विह्वियोडो)

विह्व, विह्वक, विह्वण, विह्वणि—स पु —देवो 'वेह' (रू. भे)

उ०—१ धिळ वहत धक धक अछक छक, अतराळ गरळक दुळ इधक । फीफरडक नद फरक, हुय विह्वक हक हक, वीरहक ।

—र रू

उ०—२ थर थक्का बलवार विह्वण क्यू वीमरै, लग लोह लकीर नमता नीसरै । वाव फरुकै वेह वळ नह वापरै, पाणा चडिया किलम जिक्कै 'परताप' रै ।

—किसोरदान वारहठ

उ०—३ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडैचै वाही करि खीज सुकरि आकास हूत सेलारा, वीजुल विह्वण क वुही वीज ।

—केसोदास गाडण

उ०—४ इम कहि विह्वण दीध नप आयस, दळ हालिया वाग पद-मणि दिस । रोस चढे विह्विया रखवाळा, अठ छ हजार तेजमिया वाळा ।

—सू प्र.

उ०—५ वडो सूर सुदतार रायसिध विमरामिया, विह्वण कुण कवारी घडा वरसी । कूंजरा तणी मोहताद करसी कवण, कवण कोडा तणी मोज करसी ।

—दुरसो श्रादो

उ०—६ आलम तद् आयाह विग्रह हुवइ कीधइ विह्वणि । अचळेसर गढ अचळडे जिव लै मोकळि जाह ।

—अ. वचनिका

उ०—७ वूर पडि जद्वर विह्व घड, भुरज वीछडि पडे खडभड ।

विह्वण घरि अड सुहड समवड, वडवडे पिंड चार । —रा रू

विह्वणी, विह्ववो—क्रि अ —१ युद्ध करना, सग्राम करना ।

उ०—१ श्राठुपा चाढता धक साबळ अणी, खेलता घसळ खत्रवाट आन्वेट ।

विह्वता सेस मणगयण लागत वधे, नग भिडज करण राजा तणा नेट ।

—नाथो साहू

उ०—२ परठि पाच पोरिस तणी भणणियो पाघरै, चमरवध करण नमि वति चेजो । विधूसै सेव फुलवादि रूका विह्वण, अविध

घड वाग विचि भमर 'तेजो' । —तेजसिध सेग्वावत रो गीत

उ०—३ आया साह अलावदी, विह्व कटका सू वीर । भाभी रिणयभर मुओ, हठ निरवाह हमीर ।

—वा दा.

उ०—४ सहे खग सभ्रम 'सामतसाह', विह्वे अनपाळ' करै हण-वाह । सभे करिमाळ भटा समरेस, विह्वे 'करनेस' तणी 'वन्तेस' ।

—सू प्र

२ लहना, भगहना ।

उ०—एकदा प्रस्ताव । जोईयो दलो गुजरात चाकरी गयो हुतो भाईया सू विह्वनै । उठे गुजरात घणा दिन रहो । शोध वीमाह कियो, घणा दिन रहो ।

—नैरासी

३ भिडना, टक्कर लेना ।

उ०—२े राखस मुभ आगलि वाल, मारिमि तउ तू पूगउ कालु । रूख ऊपाडो वेई विह्वे, दह दिसि गाजइ डूगर रडइ ।

—सालिभद्र सूरि

४ युद्ध क्षेत्र मे लडते हुवे मारा जाना, वीरगति प्राप्त होना ।

उ०—१ घसै वरियाम वहै खग-घार, विह्वति सुवप्प पडन विहार । लडे हिक सामा लोह लियत, दिये हिक पाव चडे गज-दत ।

—गु रू घ.

उ०—२ कोटा श्रोत घणा जुध कीया, फीजा घणा कियो पग-फेर । राउ राठोड जिही सूं रीद्रां, अघ-नत विह्वियो न को अनेर ।

—केसोदास गाडण

उ०—३ केतो वार हुई कछवाहा, घाय मचता घमसाणा । दाने परी हरी-चद दूजा, विह्व पोही श्राव विवाणा ।

—जैसिध नरुका कछवाहा रो गीत

उ०—४ भागा साथि न भागो अणनग, आप विह्वे भाजिया अरि । केहरि सरगि पडती अणकळ, 'करन' हरो अन्वियात करि ।

—नाहरखान चौहाण रो गीत

५ फटना ।

६ कटना ।

उ०—मुडा भिडि मूळ चवा विकराळ, काळं असि श्रोरवियो कळिचाळ । दिये खग भाट 'गिरदरदास', विह्वे असवार सहेत ब्रहास ।

—सू प्र

विह्वणहार, हारो (हारो), विह्वणियो—वि० ।

विह्विओडो, विह्वियोडो, विह्वयोडो—भू० का० कृ० ।

विह्वीजणो, विह्वीजवो—भाव वा० ।

विह्वणी, विह्ववो, विह्ववणी, विह्वववो, विह्वणो, विह्ववो, विह्वणी विह्ववो, विह्ववणी, विह्वववो - रू० भे० ।

विह्वार—स पु —योडा ।

उ०—झड झनड झान झणो उपाड, दळ मळिं दूठ रिए मडै
रूड, तेगा अताळ वागो विढाळ, तिए वखत तात भड लखण भात,
चल सगत चोट लग पडै लोट, ' ' ' । —र. रू.

विद्योडो—भू. का कृ.—१ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ. २
लडा हुआ, भगडा हुआ ३ भिडा हुआ, टक्कर लिया हुआ ४
युद्ध क्षेत्र में लड़ते हुये मरा हुआ, वीरगति प्राप्त हुआ हुआ ५
फटा हुआ ६ कटा हुआ ।
(स्त्री विद्योडो)

विणग—देखो 'विडग' (१) (रू. भे.)

उ०—लं ऊडळिया 'पाल' नै, भूप तणो तप भाळ । विणग चडै
श्रीखविया, कोळ दिस ततकाळ । —पा प्र.

विणगणी—देखो 'विणगणी' (रू. भे.)

विणगणी, विणगणी—देखो 'विणगणी, विणगणी' (रू. भे.)

उ०—राम नाम विण जाणिया, वात विणगणी मूळ । हरीया जव
होसी कहा, अत भयो असथूळ । —अनुभववाणी

विणगणीहार, हारी (हारी), विणगणीयो—वि० ।

विणगणीयोडो, विणगणीयोडो, विणगणीयोडो—भू० का० कृ० ।

विणगणीजणी, विणगणीजणी—भाव वा० ।

विणगणीयोडो—देखो 'विणगणीयोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विणगणीयोडो)

विण—१ देखो 'विना' (रू. भे.)

उ०—१ कंध वसन रण हाथ खग, घोडा ऊपर गेह । घर रुखाळी
विण घरण, गिणो न प्रण सम देह । —जंतवान वारहूठ

उ०—घट तेज अनोपम वेग घणू, विण कारज तुज्ज विडग वणू ।
रखसू कर मोद घणो रळिया, उण नू असमान री ऊडळिया ।
—पा प्र.

उ०—३ कोकिल सोर मोर तडवि क्रत, नटवर गान सगीत करे
अत । गान पान इअत सम गावै, ईस्वर विण दुतिया नह आवै ।
—सू प्र

उ०—४ दीपक विण मंदिर किसी, यौवन विण सिएगार । नेह
विना सी प्रीति जिम, तिम कता विण नार । —वि. कृ.

उ०—५ असुर बोलियो कुबोल पतसाह मुह आगळी, राज विण
खत्री घरम कमण राखै । दूसरा 'माल' वरदान तोनू दिवू, 'अमर'
मो काढ जम-दाढ आखै । —केसरीदास गाडण

२ देखो 'वण' (रू. भे.)

उ०—१ रज वटघर कट रज मित्या, विण रज भरियो बट्ट ।
रज उछाळ गजराज घण, रण वांटे रजवट्ट । —रैवतसिंह भाटी

उ०—२ देरीदास श्री ठाकुरा तै परणाम कियो । तद भीतर सू
आवाज हुई—पलक दरियाव तमासी दीठी ? कुवर कहै—आपरी
किरपा सू । फेर अवाज हुई—तै आ भगवान री वात कियो नै कही,
तौ विण-सायत थाहरी देह छूटसी, तैसूं अबरदार रहै ।
—पलक दरियाव री वात

उ०—३ कुळ हाडा कूरमां, किया विण आडा कारण । ज्या प्राणै
अगराज, घरै गजराज न धारण । —रा रू.

विणग—देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—कारिज कीधू जोईई, [विक्रम करइ विचार] । विणग
विचक्षण मोकलू, साथइ सपति सार । —मा. का. प्र

विणग—स. पु —१ पकाए हुए मीठे चावल ।

२ मिष्ठान, मिठाई । (बीकानेर का उत्तरी पूर्वी भाग)

३ देखो 'वाणिज्य' (रू. भे.)

उ०—१ ठकुरी साह सरसै माहै रहै । सु इय रै मताह री छेह कोड
नही । अर ईय रै बीजी विणज कोई जिकै समुद्र माहै जिहाज ठेले
तिका री जोखम श्री लेवै । इण भात रहे । —ठकुरै साह री वात

उ०—२ दान भोग विन घन ज सच्यो, खेती विणज में पाई रे
अतकाल मे कुटुव कवीलो, लगा अगड नै जोई, रे । —जयवाणी

उ०—३ गुर सिख मिळीया क्या हुवै, मिळ अर पाडी वाटि ।
हरीया खोटा विणज कै, ठग मिळ ल्यावै खाटि । —अनुभववाणी

उ०—४ लख चौरासी हाट में, वसत अमोलिक एक । हरीया खोटा
जाणी विणज कै, लीया लाभ अनेक । —अनुभव वाणी

रू. भे.—वणज, बनज, विणज, विनज, विरज, वणज, विणज, ।

विणजणी, विणजणी—क्रि. स.—१ व्यापार करना, व्यवसाय करना ।

उ०—१ विणजै सासू अर बहू, घघे ततपर घूत । ठग नह जो
गणिका ठग, वणियाणी रा पूत । —बा. दा

उ०—२ अणहूत भाठै सूं काठी हुवै । विरिया देख' र विणजै नी
सौ वाणियो ही गिवार । छाती काठी करी है । जै जिसी दिन नही
आवै । —दसदोल

उ०—३ एक अमोलिक वसत का, विरळा विणजणहार । जनह-
रीया सो विणजणी, लाहै अत न पार । —अनुभव वाणी

उ०—४ तन तोला मन ताकडी, विणजणहार वचन । राम रतन
कु छाडि कै, साध न सचै घन । —अनुभववाणी

२ रुपये कर्ज देना, उधार देना ।

३ रुपये का व्यापार मे या अन्य कही विनियोग करना ।

उ०— विणजै व्यापार वलि विवहार, लक्ष्मी आप वहे लार ।
परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोलै बहु जस वाजारं ।

—बं. व. प्र.

विणजणहार, हारो (हारी), विणजणियो—वि. ।

विणजिओडो, विणजियोडी, विणज्योडो—भू का क्र. ।

विणजीजणो, विणजीजवो,—कर्म वा ।

वणजणो, वणजवो, विणजणो, विणजवो, वणजणो वणजवो, वणजणो, वणजवो—रू भे. ।

विणजार—१ देखो 'विणजार' (रू भे.)

२ देखो 'विणजारी' (मह, रू भे.)

विणजारडो—देखो 'विणजारी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—अला हम विणजारा पूरं साह का, विणज करण वोपारो ।
हम विणजारडिया । —दीन सुदरदी

(स्त्री विणजारडी)

विणजारण—स स्त्री—१ एक प्रकार की भैस विशेष ।

उ०—सूधी सीघरिया च्याफ थण सोधं, विमनी विणजारण कारण परवोधं ।
वाल्ही वेगड नं वेगड दे वाळं, भोळी भाळी नं भोडी नं भाळं । —ऊ का

२ देखो 'विणजारी' (स्त्री)

रू. भे—वणजारण, विणजारण, वणजारण ।

विणजारा—देखो 'विणजारा' (रू भे.)

विणजारियो—स. पु—१ देखो 'विणजारी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—१ च्यार पहरदा काम हे विणजारिया, तेरा जागण दा छक एह्वं ।
सोवण दी विरिया नही विणजारिया, तु नाव निरजन लेह्वं । —रैदास घत्तरवाळ

उ०—२ तीजं पहर रंण के विणजारिया, तेरा ढीला पडया पुराण वं ।
काया लोवोनी क्या करे विणजारिया, गढ भीतरि वस्यो अजाण वं । —दीन सुदरदी

२ देखो 'विणजार' (अल्पा, रू भे.)

विणजारो—स पु—१ कमजोर जीवात्मा ।

उ०—१ रे विणजारा चूको तू, फिर फिर क्यू दे कूको ।
वस्तु भरो पर देस न रे, वेला विन लद जाय । दुरमत डाणी आगं खडो, लेसी माल लुटाय । —श्रीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'विणजारी' (रू भे.)

उ०—१ पीछोली राणा लाखा री वार माहे किरा ही विणजारं वध-
वायो, पाखी कोम च्यार रे फेर मे छं । —नैणसी

उ०—२ कालो मासी रे पछी जिनावरा रा इण लाठा कडूवा मे फगत इण घोडा री इज खामी ही ।
मारग वेवता विणजारा कना सूं मासी केई कुत्ता वपराय लिया हा । —फुलवाडी

उ०—३ घुर ती जावे बोहरा रे, मिलिया ठोडा ठोडा रे । हाकम लटारा रे,
विणजारा सोदारा रे । —जयवाणी

उ०—४ विणजारण अं लोभण, ओरा के पल्लं छं दाम । म्हा रे
तो पल्लं कोय नही, विणजारी अं । —लो गो.

(स्त्री विणजारण, विणजारी)

विणज्ज—१ देखो 'विणज' (रू भे.)

२ देखो 'वाणज्य' (रू भे.)

उ०—कखी विणज्ज आकराणि, पसू चौपदी घणी । अनेक सपदा
उपाउ, लाछि चतुरगणि । —गु. रू ब.

विणट्टणो विणट्टवो—देखो 'विणट्टणो, विणट्टवो' (रू. भे.)

उ०—१ जीव विणट्टा विणास हुवा पछं गढ वारं नीकळं जिंका
रा नेक नाम वै है, अरथात जीव रे तन है ज्यूं रजपूता रे गढ है
सो मरिया गढ छोडै । —वी. स. टी

उ०—२ जेहा सज्जण काल्ह था, तेहा नांही अज्ज । माथि
त्रिसूळउ, नाक सळ, फोड विणट्टा कज्ज । —ढो मा

विणट्टणहार, हारो (हारी), विणट्टणियो—वि० ।

विणट्टिओडो, विणट्टियोडो, विणट्ट्योडो—भू० का० कृ० ।

विणट्टीजणो, विणट्टीजवो—भाव वा० ।

विणट्टियोडो—देखो 'विणट्टियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विणट्टियोडी)

विणट्टो—देखो 'विणट्टो' (रू. भे.)

उ०—है सवळी आखिया कवळी जाण मत्त खायं कारण के म्हा रे
पती सूं प्रण (वचन) करीयोडो हो के—आपने एकला छोडू नही
आप जुद मे मारीज सो ती हू लारे सत करसूं सो आज ओ मोको
है तू आख खायजासी तो नैण आख विणट्टो विना म्हा रो प्रण
कीकर देखेला इण सारु आखिया नही खाण री कहै है ।

—वी. स. टी.

(स्त्री विणट्टो)

विणठणो, विणठवो—देखो 'विणट्टणो, विणट्टवो' (रू भे.)

उ०—रजा साधवी रोग ऊपनी, विणठो कोढ सरीर जी । भव अनत
भमी दुख सहती, दोख दिखाडघउ नीरि जी । —स कु

विणठणहार, हारो (हारी), विणठणियो—वि० ।

विणठिओडो, विणठियोडो विणठ्योडो—भू० का० कृ० ।

विणठीजणो, विणठीजवो—भाव वा० ।

विणठियोडो—देखो 'विणट्टियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विणठियोडी)

विणठो—वि (स्त्री विणठो)—१ खराब, बुरा ।

उ०—वलि विणठो वार साम्भ सवार, दडाकार कातार । सात्रव
सिरकार, सिंह सिकार, दावोदार दरबार । गिरा वैठि वेगार कारा-
गार, जय सहू ठामें जयकार । —घ व अ

२ विनष्ट, नाश हुवा हुआ ।

रू भे —विण्टी ।

विणणी, विणवी—१ देखो 'विणणी, विणवी' (रू भे)

२ देखो 'बुणणी, बुणवी' (रू भे)

३ देखो 'बराणी, बरावी' (रू भे)

उ०—१ अजपा जाप ओकार एक, ओळखे कमण विणणी अनेक ।
अजपा जाप आतम उद्यास, मुर-भुवण माहि नव भूत मास ।
—पी प्र

उ०—२ असख वाव रिखि भाप रिखि, घोम रिखा घनघन । मेघ
रिखा रे माडहे, विणणी वीद विसन । —पी प्र

उ०—३ सरसती हुति विद्या मिर, विमळ अकळ कहिजे विसन । सूर
सा तेज विणणी सरस, कोडि कोडि वधती किमन । —पी प्र

विणणीहार, हारो (हारो), विणणीयो—वि. ।

विणणीओडो, विणणीयोडो, विणणीओडो—भू का कृ ।

विणणीजणी, विणणीजवो—कर्म वा ।

विणति, विणती—देखो 'वीणती (रू भे)

विणपद्य—स पु [स वेणू-पक्ष]—बाण, तीर । (डि नां मा)

विण-मणा—वि —जिसमे किसी प्रकार की कमी न हो, पूर्ण ।

उ०—तवी राघो राघी करम अघ दाघी तन तणा, महाराजा सीता-
वलभ कुळ-मीता विण-मणा । यरा जैता जगा अडर यक-रगा
जग अखे, सकी गावो जीहा अवस निस-दीहा अज सखे ।
—र ज प्र

विणय—देखो 'विनय' (रू भे)

उ०—इकु अरजुन आगलळ अनइ करणु हीयइ हरालड, गुर कूवइ
विणयह लगइ घणुहवेडु दीधउ सरालड । —सालिभद्र सूरि

विणयाणी—देखो 'विणयाणी' (रू भे)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर विणयाणी
नूं सोहरी वंसाणी । चालीया जावे छे । चालता-चालता आगे
मजल जाय डेरो कोयो । —रळ गढवे री वान

विणवाट, विणवाठ—वि—मूर्ख । (अ मा)

विणसणकाळ—देखो 'विणसणकाळ' (रू भे.)

उ०—अकवर लेख प्रमाण, तहवर सहत राज लोभाणी । आवी
चित्त अचीतो, विणसण गा (का) ल बुद्धि विपरीत । —रा रू

विणसणी, विणसवो—कि अ—१ नाश होना, नष्ट होना, मिटना ।

उ०—जिमि विलव विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज ।
कुसगति विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणसइ गान ।
—रा सा स.

उ०—२ दीयो नी व्हे जित्ती ती अघारो रे'वे, पण दीया रे चानणी
अघारा न विणसतां कोई जेज थोडी ई लागे । चानणा रे समने
ई अघारो विणम जावे । फगत दत्ती जेज ई वेटी रे सममणा
मे लागी ।
—फुलवाटी

न०—जीही काया माया कारमी, जीही मानो मतगुड वेण । जीही
जेसी सुणो रेण । जीही विणसतां देर लागे नही । —जयवाणी

उ०—४ जग मोई रग पतग है, विणसत लगे न वार । नाम रू
जड जाणीये, म्याली खर कर धार । —चीमुपरांमजी महागज

उ०—५ जाग्रत मे स्वप्न नहीं पावे, स्वप्न मे जाग्रत विसरेती ।
स्वप्न मे जावे न जाग्रत मे विणसत, अनुभव सता करेती ।
—चीमुपरांमजी महाराज

२ विगडना, खराब होना ।

उ०—१ जिमि विलव विणसइ काज, कुठाकुरी विणसइ राज ।
कुसगति विणसइ सतान, स्वर पाखइ विणसइ गान ।
—रा सा स.

उ०—२ जी मत पाछे सचरे, सो मत पहली होय । काज न विणस
अपणो, दुरजण हसे न कोय । —अग्यात

३ मरना, खत्म होना ।

उ०—सो दीसे तो विणसतो, ऊगे आयमि जाय । जनहरीया सो
जनमनी, जम ले जाती आय । —अनुभववाणी

क्रि स—४ नाश करना, नष्ट करना, मिटना ।

उ०—१ तम विणसण व्हे बी त्वरित, तेज फिरण वण ताप । त्या
वरण पातल तरणे, सर्व हरण सताप । —जैतदान वारहठ

उ०—२ च्यार जणा न सुणि चतुर, सोहे जरा मिगार । राजा
मुहती वेद रिखि, गरठ परी गुणकार । गरठ परी गुणकार, मार बहु
बुद्धि रसायण । विणस मल्ल वेसीया, गिणी तिम चाकर गायन ।
करे घणी जी कला, मघ तोइ किणी न माने । कहे घरमसी यु करे
जरा आइ च्यार जणा न । —घ. व प्र

उ०—३ देवज घणु विणसियो, किंयो ज पाप अघार । मारु तन
विणसियो, कत रहयो निरघार । —ढो मा.

५ मारना, सहार करना ।

उ०—विणसतां जीव न गिनर न करे जिंको, चौथी उट्टीया दोव
ऊपजे तिको । अनुक्रमे च्यार ए अधिक इक एकथी, दीव घरि प्राय-
चित्त नेइ विवेक थी । —घ व प्र

६ विगाडना, खराब करना ।

विणसणहार, हारो (हारो), विणसणियो—वि. ।

विणसिओडो, विणसियोडो, विणस्योडो—भू का कृ ।

विणसीजणी, विणसीजवो—भाव वा, कर्म वा ।

विणसाणो, विणसावो, वीणसाणो, वीणसावो, वणसाणो, वणसावो,
—रू भे ।

विणसाडणो, विणसाडवो देखो 'विणसाणो, विणसावो' (रू भे)

विणसाडणहार, हारो (हारी), विणसाडणियो—वि ।

विणसाडियोडो, विणसाडियोडो, विणसाडियोडो—भू का कृ ।

विणसाडोणो, विणसाडोणो—कर्म वा ।

विणसाडियोडो—देखो 'विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विणसाडियोडो)

विणसाडणो, विणसाडवो—देखो 'विणसाणो विणसावो' (रू भे)

उ०—१ हीरादेवि भणइ चडाळ, सृ मृग देखाडइ तुं काळ । जेह
पसाइ कीचा राज तेह तरण विणसाडिज काज । —का दे प्र

उ०—२ छक देखि खेलीजे एम कहो छ छे, पछतावो जिण काज
सहो न हुवे पछे । आखर जै घरमसीह हुवे उतावला, परिहा विण-
साड निज काज सही ते वाउला । —घ. व घ

विणसाडणहार, हारो (हारी), विणसाडणियो—वि० ।

विणसाडियोडो, विणसाडियोडो विणसाडियोडो—भू० का० कृ० ।

विणसाडोणो, विणसाडोणो—कर्म वा० ।

विणसाडियोडो—देखो 'विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री विणसाडियोडो)

विणसाणो, विणसावो—क्रि स —१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

३ विगाड करना, खराब करना ।

३ मारना, खत्म करना ।

विणसाणहार, हारो (हारी), विणसाणियो—वि ।

विणसायोडो—भू का कृ ।

विणसाडोणो, विणसाडोणो—कर्म वा ।

विणसाणो, विणसावो, विणसावणो, विणसाववो, वीणसाणो,
वीणसावो, विणसाडणो, विणसाडवो विणसाडणो, विणसाडवो,
विणसावणो, विणसाववो, विसणाडणो, विसणाडवो विसणाडणो,
विसणाडवो —रू भे ।

विणसायोडो—भू का कृ.—१ नष्ट किया हुआ, नाश किया हुआ,
मिटया हुआ २ विगाड किया हुआ, खराब किया हुआ
३ मारा हुआ, खत्म किया हुआ ।

(स्त्री विणसायोडो)

विणसावणो, विणसाववो—देखो 'विणसाणो, विणसावो' (रू भे)

विणसावणहार हारो (हारी), विणसावणियो—वि ।

विणसावियोडो, विणसावियोडो, विणसावियोडो—भू का कृ ।

विणसावोणो, विणसावोणो—कर्म वा. ।

विणसावियोडो—देखो 'विणसायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विणसावियोडो)

विणसिणकाळ—स पु [स विनाशकाल]—बुरा समय, विनाशकाल ।

उ०—कुरु पिड वेघ वसुधा, अपरा मभेण कुञ्जयो उभए । कुरवेत
जुद्ध समयो, विणसिणकाळ युद्ध विपरीतो । —गु रू वं.

रू भे —विणसाणकाळ ।

विणसियोडो—भू का कृ—१ नाश हुआ हुआ, नष्ट हुआ हुआ, मिटा
हुआ २ विगाडा हुआ, खराब हुआ हुआ. ३ मरा हुआ, खत्म
हुआ हुआ ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ,
५ मारा हुआ, सहार किया हुआ ६ विगाडा हुआ, खराब किया
हुआ ।

(स्त्री विणसियोडो)

विणा—देखो 'विना' (रू भे)

विणाठणो, विणाठवो—देखो 'विणटणो, विणटवो' (रू. भे)

उ०—खडिय न खाटी देह विणाठि थिरिन पवणा पारु । ग्रहनिश
आवा जाय घटती, तेरी सास ही बसवारु । —अभ्यात

विणाठणहार, हारो (हारी), विणाठणियो—वि० ।

विणाठियोडो, विणाठियोडो, विणाठियोडो—भू० का० कृ० ।

विणाठोणो, विणाठोणो—भाव वा० ।

विणाठियोडो—देखो 'विणटियोडो' (रू भे)

(स्त्री विणाठियोडो)

विणाघक—देखो 'विनायक' (रू भे)

उ०—चमन दिइ, जीमूत रिखि छोरु बेलावइ, कामदेव कटारं
बधावइ, वंशानर वंश पन्नालइ, कारतिकेय तलार करइ, चामुडा
चारि सचारि, विणाघक गादह चारि, अनइ सवा लाल पुत्र जेह
तराइ, इसिउ त्रिभुव [न] मल्ल महामल्ल रखण । —व. स

विणावट, विणावटी—देखो 'विनावटी' (रू भे)

उ०—पीछे गोपालदास असवाग् वूदी रा वा आपरा हजार च्यार
लेय नै मुगळा री फोज में गया । अरु वा पूछियो तद कयो मामलत
रा रुपिया लाया छा धोडा पर विणावट थैली दिव्यायी । तरा मुगळा
रं तबू ताई गया । —द. दा

विणास—देखो 'विनास' (रू भे)

उ०—१ गोत्र द्रोह थी जस नही, अग्रद्रोह नीति विणास । बाल
द्रोह थी गति नही, त्रिणहै करघा अभ्यास । —स्त्रीपालरास

उ०—२ सामी सिर दावा कसा, दावै माहि विणास । जुग निर-
दावै जाण्यो, सोई हरि वा दास । —अनुभववाणो

उ०—३ पाछा नि घरो ठाकुरे, धिरीया हुवे विणास । धिरीया
वेवू काढिया, दूदो देवीदास । —जैतमाल पुमार री वात

उ०—४ कं तो डर अर लोभ र कारण पेटा री घात होठा चढे कोनी अर कं मायली अतस ई अक-भेक वहेगी । मिनखीचारा री सिरं भावनावा री विणास वहेगी । —फुलवाडी

उ०—५ डोकरी वानं आडे हाथा लेवती धर्क केवण लागी लुगाया री विणास करिया तो था मिनखां री पं'ला विणास वहे जावे इण वास्तं खुद री स्वारथ पूरण सारू थं वानं जीवती राखी, खुदरं मन री आणद पोखण सारू वानं सिखागारियोडी राखी । —फुलवाडी

विणासणो, विणासवो—क्रि स.—१ नष्ट करना, नाश करना, मिटाना ।

उ०—१ लोक आछो कहे नहीं, लडता लिछमी नासं रे । दुप दारिद्र घर म घसै, गुण रा पूर विणासं रे । —जयवाणी

उ०—२ चितइ चतुर स चिततउ, घरतउ अरति अपार । विराय विणोदि विणासिइ, हासइ जीव गमार । —जयसेखर सूरि

२ मारना, सहार करना ।

उ०—१ बल थो बुध अधिकी कही, जठ ऊपजइ ततकाल । वानर वाध विणासियो, एकलडइ सीयाल ।

—प च चौ

उ०—२ खिण इक मा तं पकडि विणास्यो, तीखण कठिन कुडाडे । याद्रस आचरणादिक ताद्रस, फल तेहनं न गमाडे ।

—वि. कु

उ०—३ इतरा भे पुलसत रिख री कुळोधर, उतराध री वजीर, लिछमी री निवास, माभी दिगपाल, कुमेर वीलियो—आगै ही लकापति रावण सीता री चोरी करी ले गयो । तरं आप चम्भुज मानवी देह धार न विणासियो । —मा वचनिका

उ०—४ असुर विणासी किउ उपगारू, इद्रि लोकि हूठ जयजय-कार । इद्र तणु ए कीधु काजु, असुर विणासी लोघउ राजु ।

—सालिभद्र सूरि

३ विगाड करना, नुकसान करना ।

उ०—ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि चढण लाग । ताहरा राणीजी जसवतदेजी राजि नूं वीनमियो । राजि दोहरा की हवी, हू जाइ अर भोपति नूं ले आविस । ताहरा राणीजी चढि खडिया । पडि नै नागीर पधारिया । आगं देवै तो भोपतिजी किरण ही री विणासियो क्युं नही उजाडियो वंठा छै । —द वि ४ बुरा करना ।

उ०—द्वैज धणु विणासियो, कियो ज पाप अपार । मारू तन विणासियो, कत रह्यो निरधार । —ढो मा

विणासणहार, हारी (हारी), विणासणियो—वि० ।

विणासिओडी, विणासियोडी, विणास्योडी—भू० का० कृ० ।

विणासीजणो, विणासीजवो—कर्म वा० ।

विणासणो, विणासवो—रू० भे० ।

विणासियोडी—भू का कृ—१ नष्ट किया हुआ. नाश किया हुआ. २ मारा हुआ ३ विगाड किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ ।

(स्त्री विणासियोडी)

विणासी—देवो 'विनासी' (रू भे.)

विणासु—देवो 'विनास' (रू भे)

उ०—पडव तणउ चरीतु जी पडए, जी गुणइ गभसए । पाप तणउ विणासु तणु रहइ, ए हेलां हाइसि ए । —मालिभद्र सूरि

विणि—१ देखो विना' (रू भे)

उ०—१ विणि रीठी विणि लाकडी, विणि पाखो विणि पाळ । परची पसु पतेरवा, थल्य वंठी प्रतपाळ । —सुरजन जी

उ०—२ नल राजा विणि, सरणि विरयात मा [हाणि] पिता अनि ता भगत । मद हास्य करी रा उचरि 'नारी, मूरपता आदरि ।

—नळाम्याद

उ०—३ किरिण ठीठि रहै जायो कठे, घणी पहचि दातार घण । विणण रूप रेव किरिण दिसि वनं, निमो निमो तु नारीवण ।

—पो थ

उ०—४ हेतम दान कवि मलन कहि, अमर पुत्रि वे वनत गनि । दीठो न कोइ रवि चक्रु लागि, अलावदी सुलतान विणि ।

—प च चौ

रू भे—वणी, विणी ।

विणिघाणी—देखो 'विणिघाणी' (रू भे.)

उ०—मारू इण मनवार में, रग वीतं रात । परतानं दारू पीवसा, में विणिघाणी जात । —पता

विणियोडी—१ देखो 'विणियोडी' (रू भे)

२ देखो 'विणियोडी' (रू भे)

३ देखो 'विणियोडी' (रू भे)

(स्त्री विणियोडी)

विणी—देवो 'वणी' (१) (रू भे)

उ०—छेनट री लार म्हें तो खुणिया सूघा हाथ जोडनं कह्यो घायी धारं वेस हूं विणियां रं येत धारं काढ । —फुलवाडी

२ देखो 'विणि' (रू भे)

विणीयाणी—देखो 'विणिघाणी' (रू भे.)

उ०—वाणियो तो सुय रहयो । सूता भाख फाटी । तद उठिया । तणं सारा सु पहली रळो उठि नं पीठियो एकलं हीज सादियो ।

पछे वाणिया ही लादियो । हर्मिं विणीयाणी कहै, वेटा, पोठियँ चाढी ।
—रळँ गढवै री वात

विष्णु, विष्णु—देखो 'विना' (रू भे)

उ०—१ निहसँ वूठी घण विष्णु नीळाणी, वसुधा थळि थळि जळ
वसइ । प्रथम समागम वसत्र पदमणी, लीघँ किरि ग्रहणा लसइ ।
—वेलि

उ०—२ जिण दीघ जनम जगि मुखि दै जीहा, किसन जु पोखण
भरण करै । कहण तणी तिण तणी कीरतन, जम कीषा विष्णु
केम सरै ।
—वेलि

उ०—३ विरह वियापी रयण भरि, प्रीतम विष्णु तन खीण ।
वीण अलापी देवि ससि, किस गुण मेल्ही वीण । —ढो मा.

उ०—४ कुंती अनु द्रौपदी अ कधि करीउ मारगि चलावइ, कुती
जल विष्णु तूछीइ तेहि हिडव जलु लेउ थावइ । —सालिभद्र सूरि

विणोकडी, विणोखडी—स स्त्री [स वाणियण्टि] कपास का पीषा ।

रू भे—विणोकडी, विणोखडी ।

विणोद, विणोदि—सं पु—१ एक छद विशेष, जिसके प्रत्येक चरण मे
आठ रगण होते हैं ।

उ०—आठ रगण आवँ उचित, पार्यँ एह प्रमाण । गृण विणोद
इणि भाति, गरिण वदि लखपति बन्वाण । —ल पि

२ देखो 'विनोद' (रू भे)

उ०—१ फाग गाइजँ छँ । फाग खेलीजँ छँ । नाचीजँ छँ । हास
विणोद कीजँ छँ । हास रस हुइ नै रहींयो छँ । फागोटा रा मुख
सवाद लीजँ छँ । धरि धरि वसत राग हलरावीजँ छँ ।

—रा सा स

उ०—२ रग राग विणोद विसातरय बहुय, चडि चाडति सुंदर
मिदरयँ सह्य । मिण माणक कुदण ककणम दिपत, मोताहळ
हार विभूवणय वणित । —गु रू ब

उ०—३ राग छतीस तरग अनग, रूप अनूप अनोपम रग ।
बोलीजँ सुख निस-वासर, आणद गीत विणोद अवस्सर ।

—गु रू व

उ०—४ चितइ चतुर म चिततउ, धरतउ अरति अपार । विखय
विणोदि विणोसिइ, हासइ जीव गमार । —जयसेखर सूरि

वित्तड—स पु [म] १ हम्ती, हाथी ।

२ घोडा, अश्व । (अ मा, डि को, ह ना मा)

उ०—तेजी वित्तड ऊडड तेव, विख्यात वाग अख्यात वेव । परवत
पल पवखर प्रचड, एराकी पिठ खुरसाण खड । —गु रू व

३ सूरज, सूर्य ।

४ चटखनी ।

वि.—१ जवरदस्त, जोरावर ।

२ मनमीजी, मस्त ।

३ मूर्ख ।

४ पागल ।

५ उद्दण्ड, भगडालू ।

उ०—वसू प्रवड दडतँ प्रचड दडतँ वहँ, वित्तड चड दड दै अदड
छडतँ वहँ । विमोह मंह मोह मै विद्रोह द्रोहिपँ वढे, क्रतात भात
कोह मै कुकोह कोहिको कढे । —ऊ का

रू भे—वयड, वितड, वितुड, वेतड, वेतुड, वइड, वयड, वितुड ।

वित्तडमुख—स पु [स वितण्ड + मुख] गजानन, विनायक ।

रू भे—मुखवयड, वयडमुख ।

वित्तडा—स. स्त्री [स वितण्डा] १ अपने मत की स्थापना करने हेतु
दूसरे पक्ष को दवाने की क्रिया ।

२ व्यर्थ का भगडा या कहा सुनी ।

यो—वित्तडावाद ।

वित्तडावाद—स पु. [स वितण्डा + वाद] १ स्त्रियो की चौसठ कलाओ
मे से एक । (व स)

२ दूसरो के पक्ष को दवा कर अपने मत की स्थापना करने की
क्रिया ।

३ व्यर्थ का भगडा या कहा सुनी ।

रू भे—वित्तुडावाद ।

वित्तती—देखो 'वित्तत' (रू भे)

उ०—सुराचार घटारव तार साजँ, वरुँ नीवती सोभती रीत धाजँ ।

विराजँ मुखाघाय तती वित्तती, वदै आरती राग वाणी वण्णी ।

—रा. ख.

वित्त-वि [स] चतुर, निपुण ज्ञाता ।

स पु [स. वित्त] १ मवेशी, पशुधन ।

उ०—१ ओजो हु आज चूकू अवसाण, वकै नह वेद मुखा ब्रह-
माण । जावँ वित्त ऊमा मृभू जीयार वरा नह छौळ दियँ इद्रधार ।

—गो रू

उ०—२ स १७५३ रा वरसाद काळ पडोयो । घास चारी नही
मेह थोडो वूठो । वित्त घणी मुबो । पड रा गावा मे तथा थळ मे
मिनख गोळू कर नै ढोर चारवा नै नई पड रा घाम चार मे आवँ,
उणा ऊनाळू रा गावा मे कोसीटा, नै साख वाजरी ।

—मारवाड री ब्यात

उ०—३ रावळ भीम जेसळमेर पाट छँ । ऊहड गोपाळदास रै
वेटँ उरजन, भोपत, माडण, पोकरण रा गाव घणा भारनै वित्त
लै नीसरिया ।
—नैरासी

उ०—४ अठे जंत सिकार रमती आयी, वास छोडीया थका । सु जंत र नीजर असवार आया, साढीया घोडा लीया । ताहरा चाकर नू बोलीयो, “साढीयो कैरीया ?” ताहरा रैवारी १ साथ हतो । तिहाण तोड चढीयो पसवाडे लागी आवे छे । वाहरू सू रैवारी कहीयो, “भाढीयो राजवीया छे । सु तोड नू घाडवी जौंछे छे, जु रैवारी मार नै तोड लेवा । सु तोड मैह रं चीखल रं कैड री, हथ विहथी कवडी, नवहथी भोकणी । चीखल करहो भेकतो तहा भेकी । तोड त्रिहाण तो काम आयो । देढो जंत नू सुखपाल माहे घातीयो, पूरं लोह पडीयो, सु लोहा री छाक माहे गम नही । अचेत थको नू हजूर ल्यायो । सु अचेत थको जाहग बोले, ताहरा कहे, “राजा री वित जावण न पावे । —जंतमाल पुमार री वात २ घन, दोलत, द्रव्य, सम्पत्ति ।

उ०—१ तद दोई वेटा तो मोटा हता, सु तिकै तो जाय कही देस रं राजा रं चाकर रह्या । अर छोटी वेटी रजपूत पास । ऊ परा मोटी हूवी । अर वित कन्है हूनी सी सरव खाघी ।

—बूढी ठग राजा री वात

उ०—२ वारवघ्न ही हरण वित, नेह जणावे नैण । यू सिर लेवा ऊपर, वैरी मोठा वैण । —बा दा.

उ०—३ सुजन वित देणो लेणो, क्रीत गाथ सधीर है । हरण दुख व्हे सता, मात-पिता रघुबीर है । —र ज प्र

उ०—हरीया सुत वित वीह भया, मिमता भजू अघाय । कीडा होसी करम का, चुडिल चुडिल तन खाय । —अनृभववाणी

रू भे —वित वित्त, वीत, वत, वितु, वित्त ।

अल्पा, —वितडी, वितडी ।

वितकर-स पु —कपट, घोखा । (अ मा)

वितडणो, वितडबो-क्रि. अ.—विकारयुक्त होना, विकृत होना । (दूध-दही आदि)

वितडणहार, हारी (हारी), वितडणियो—वि० ।

वितडिओडी, वितडियोडी, वितडथोडी —भू० का० कृ० ।

वितडीजणो, वितडीजबो—भाव वा० ।

वितडियोडी-भू का कृ —विकारयुक्त हुवा हुआ, विकृत हुवा हुआ । (दूध-दही आदि)

(स्थी वितडियोडी)

वितडी-स स्त्री.—देखो 'वित' (अल्पा, रू भे)

उ०—दाडू कहे ज्यो आवे त्यो जाइ विचारी । विलसी वितडी न मार्य मारी । —दाडूवाणी

वितडी—देखो 'वित' (अल्पा, रू भे)

उ०—सतगुरु दीया राम घन, रहै सु बुद्धि वताइ । मनसा वाचा करमणा, विलसै वितडै खाय । —दाडूवाणी

वितरणो, वितबो—देखो 'वीतराणो, वीतबो' (रू. भे)

उ०—वितए आसोज मिळै नथि वादळ, प्रथी पक जळि गुडळपण । जिम सतगर कळि कलुख तरा जण, दीपति ध्यान प्रगट दहण । —वेलि

वितणहार, हारी (हारी), वितणियो—वि० ।

वितिओडी, वितियोडी, वित्योडी—भू० का० कृ० ।

वितोजणो, वितोजबो—भाव वा० ।

वितियोडी—देखो 'वीतियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. वितियोडी)

वितत-स. पु [स वितत] १ तात अथवा तार वाद्य ।

२ मृदग व ढोल आदि धाघी से उत्पन्न होने वाला शब्द ।

रू. भे —वितती ।

विततपक्ष-स. पु —१ एक पक्षी विशेष । (सभा)

वितत्य-स. पु [स] गृत्समवशीय विहव्य ऋषि का पुत्र और सत्य का पिता, एक ऋषि ।

वि वि—इसे कहीं-कहीं राजा भी कहा गया है ।

वितथ-स पु [स.] १ मिथ्या, झूठ, असत्य । (ह ना मा)

२ भरद्वाज ऋषि का एक नाम । ये दृष्यन्त के गोद गये हुए थे और इनके पुत्र का नाम मन्थु था ।

वि वि—कहीं-कहीं ऐसा लिखा भी मिलता है कि ये दृष्यन्त-पुत्र भरत राजा के गोद गये थे । ये बृहस्पति के वीर्य से उत्पन्न होने के कारण ब्राह्मण थे किन्तु बाद में क्षत्रिय हो जाने के कारण इन्हें “ब्रह्मक्षत्रिय” भी कहते हैं । अनेक पुराणानुसार, भरत राजा ने भरद्वाज ऋषि को गोद नहीं लिया था बल्कि उनके वितथ नामक पुत्र को गोद लिया था और इसे भरत राजा के गोद देने के बाद भरद्वाज ऋषि स्वयं वन चले गये थे ।

रू भे —वितथ, वितथ ।

वितवाता-स पु —पिता । (अ मा.)

वि —घन देने वाला, दानार ।

वितद्रु-स. पु [स.] १ पजाब की फ़ैलम नदी का एक नाम ।

२ एक यादव, जो यादवों के सात प्रधानमंत्रियों में से एक गिना जाता है ।

वितपन्न-वि [स व्युत्पन्न] शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता । (मा म)

वितरक-वि [स] वितरण करने वाला ।

स पु. [स वितक] १ एक तर्क के बाद दिया जाने वाला दूसरा तर्क ।

७०—तरक न अतरक्य कपि करत वितरक यामे, धरक गिरि अरक
उर थरक अमरेस कै । दलित पहार हलमलित सुमेरुधार, दिधस-
पतस्व अस्वचलित दिनेस कै । —ना द.

२ सदेह, शक ।

३ एक राजा जो कुशवीर्य धृतराष्ट्र का पुत्र था ।

वितरण—स पु [स]—१ दान । (ह ना मा.)

२ अर्पण करने की क्रिया ।

३ वाटने की क्रिया ।

४ दान देने की क्रिया ।

रू. भे —वितरण, वितरन ।

वितरणदान, वितरणदानी—स पु —दातार, दानी । (अ. मा.)

वितरणो, वितरणो—क्रि स —१ अर्पण करना ।

३ वाटना, वितरण करना ।

४ दान देना ।

५ पुण्य करना ।

वितरणहार, हारो (हारी), वितरणियो—वि० ।

वितरणोडो, वितरणोडो, वितरणोडो—भू० का० कृ० ।

वितरणोजनी, वितरणोजनी—कर्म वा० ।

वितरणो, वितरणो, वितरणो, वितरणो—रू० भे० ।

वितरणन—स पु [स वितरणन]—रावणपक्षीय एक राक्षस ।

वितरणन—देखो 'वितरण' (रू भे)

वितरण—क्रि वि —इतने मे ।

७०—वितरण माहै मारवणीजी विलव करता पान वीडो आरोगता
सहेलीया सघात आवण लागी । —दो मा

वितरित्त—वि [स] १ वाटा हुआ ।

२ दान दिया हुआ ।

३ अर्पण किया हुआ अपित ।

वितरिक्त—स पु —एक उपमालकार विशेष जिसमें उपमेय मे (उपमान की
अपेक्षा) उत्कर्ष या अपकर्ष दिखलाने के द्वारा उपमेय की उत्कृष्टता
(विशेषता) का वर्णन हो ।

क्रि वि [स. व्यतिरिक्त]—छोड़ कर, सिवा, अतिरिक्त ।

वितरिक्तया—स पु स्त्री —डिगल में गीत रचना का वह नियम जिसमे
व्यतिरिक्त अलंकार हो । (क. कु बो)

वितल, वितल—स पु [स वितल]—१ सात पातालो मे से तीमरा
पाताल । (पौराणिक)

७०—१ सर धून धून दिगपाल डरि, कसकि कमठु नि पिठुि भर ।
पर धुगिज तळातळ तळ वितळ सेम सलस्सल छुट्टि घर ।

—सा. रा

वि वि.—उक्त पाताल मे शिवजी को हाटकैवर कहते हैं ।
इन्ही की शक्ति से हाटकी नदी निकलती है जिसे वहा की वायु से
उत्पन्न अग्नि देव पीते हैं और पुन फुफकारने से हाटक (सोना)
निकलता है ।

२ पाताल ।

७०—बहुल ससियळ घमक सावळ, वहै कळकळ प्रवळ वीजळ ।
वहै चकळ इळतळ वितळ चळचळ,, मगळ भळ घमळ मगळ ।
विट्टे सूर व्रजागि । —सू प्र.

वि —नीच, अघ, पतित । (अ मा)

वितसारु—अव्य — यथाशक्ति ।

७०—अवनी मे जिर्क भलाई आया, करै सदा सुकरत रा काम
दान सदा वितसारु देवै, नित रसणा लेवै हरिनाम । —र. रू.

वितस्ता—स स्त्री [स] पजाव की भेलम नदी का एक नाम ।

वितान वितानक—सं पु [स वितान या वितान] १ विस्तार, फैलाव ।

७०—१ उठै वै दळ जोघ अकारा, साभ सरीर तणा घम सारा ।
कहि गगा तन मजन कीधा, दान वितान मान करि दीधा ।

—रा रू

७०—२ चीखलि चालता सकट स्खलड, लोक तणा मन घरम
ऊपरि बलड् । नदी महा पूरि आवड्, प्रथ्वी पीठ प्लावड् नवा
किसलय गहगहड्, वल्ही वितान लहलहड् । —रा सा स.

२ बडा चन्दोवा ।

७०—१ तास कनात अनेक तराण, विमळ सिमान वितान वणाए ।
चिग पडदासू पाल चमकै, दामण जाण सिळाउ दमकै । —सू प्र.

७०—२ मिळ थाट लुटै अमीर हिम जडित भुखण हीर । तारख
सरखत वितान, मुकेस जरियसि मान । —सू प्र

३ यज्ञ, हवन । (अ मा, ह नां मा)

४ सूर्य, सूरज । (ना मा) (क कु बो)

विताना—स स्त्री [स विताना] भौर्य मन्वन्तर के वृहद्भानु अवतार
की माता ।

वितानो, वितानो—देखो 'वितानो, वितानो' (रू भे)

७०—अरण आग्याकरो मुभ नायक अवध, अवध वितान वेग आवा
जानकी । रहोला अठै मो जनक रै, जनक रै कना पोहचाय जावा ।

—र रू

वितानहार, हारो (हारी), वितानियो—वि० ।

वितानोडो—भू० का० कृ० ।

वितानोजनी, वितानोजनी—कर्म वा० ।

वितानोडो—देखो 'वितानोडो' (रू भे)

(स्त्री. वितानोडो)

विताव-वि [स. वि-+ताव]—मद, ठहा, नम्र, जोश या क्रोध रहित ।

उ०—अति सोचें पतसाह अछानें, खिण सज्या खिण तारतखानें उड रहियो मन लाग भलगें, गुडो जाण भ्रमं गयणगें । ऊभा वास खिजमती भ्रगी, ताव विताव लखें टगटगी । —रा. रू

वितावणी, विताववो—देखो 'विताणी, वितावो' (रू. भे.)

वितावणहार, हारो (हारी), वितावणियो—वि० ।

विताविश्रोडो, वितावियोडो, विताव्योडो—भू० का० कृ० ।

वितावीजणो, वितावीजवो—कर्म वा० ।

वितावियोडो—देखो 'वितायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वितावियोडी)

विति-स पु [स] १ तुषित अथवा साध्य देवो मे से एक ।

उ०—समुद्र भुजादडि तरीइ, तीक्ष्ण खड्गधारा सचरीइ, निरास्वाद वालुकार्पिंड कवलीइ, पचमेरु पचागुलि तोलीइ, लोहमय चिणा दात विति चावीइ, वज्रानलज्वाला मुग्धि पीजइ, आकास निरालव चडेवउ. . . . —व. स

वितिक्रम—देखो 'व्यतिक्रम' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ मे कलित भई, रिन विच राज-धानी मानी मन भापी कौ । करम्मचारी वितिक्रमी करम्मसव वितिक्रम धिराथव थवन वितिक्रम ऊथापी कौ । —ऊ का

वितिक्रमी—देखो 'व्यतिक्रमी' (रू. भे.)

उ०—अस्टचत्वारिस लच्छ अच्छ मे कलित भई, रिन विच राज-धानी मानी मन भापी कौ । करम्मचारी वितिक्रमी करम्म सब वितिक्रम, धिराथव थवन वितिक्रम ऊथापी कौ । —ऊ का.

वितिपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

वितिहोतर, वितिहोत्र—देखो 'धीतिहोत्र' (रू. भे.)

वित्नीत, वित्नीति—देखो 'व्यत्नीत' (रू. भे.)

उ०—१ तद दिन ती वित्नीत हुवो, रात पडी । तठे ठकुरे रे वेटे नू सूते नू जानीया उठाय नाखीयो समुद्र । तिको ईयें नु एक मखी गिलीयो । —ठकुरे साह री वात

उ०—२ संसव सु जु सिसिर वित्नीत थायो सह, गुण गति मति अति एह गिणि । आप तणो परिग्रह लें आयो, तरुणापी रितुराउ तिणि । —वेलि

उ०—३ प्रभा कहता जोति सो चद्रमा की गई । जब राति वित्नीत होण लागी । तब चद्रमा किसी दीसे छें । जिसी भरतार असमाध्या थका सती को मुख देखिज्यें । —वेलि टी

उ०—४ त्हारो सुजस अमर, 'करणावत', वासुर जग बहु हुवें वित्नीत नाधारियो पाघडो विठतें, चैराडियो नहीं बडचीत । —द दा

उ०—५ यौं बहुता मग आवतां, श्रीराम हुथी वित्नीत । मिटिया खुल महाराव रा, आयो घरा 'अजीत' । —रा. रू.

वित्नीपात—देखो 'व्यत्नीपात' (रू. भे.)

उ०—साचरं मेल सिसपालना सामटा, अपसकुन अने अयजोग यया एकटा । दसासूळ भद्रा वित्नीपात महरत दीयो, क्रमियो काळ चद्र-काल सनमुय कीयो । —रूपमणो हरण

वित्नीपाती—देखो 'व्यत्नीपाती' (रू. भे.)

वित्तुड—देखो 'वित्तुड' (रू. भे.)

उ०—प्रचढ लोट पिठ के घके प्रचढ के परे, वित्तुड तुड लो भंगे अमड व्हे भरें । प्रजोध कुप्पि के प्रघाव घप्पि देपरें, महा गरूर-पूर सूर दूर दूर तें मरें । —ऊ का.

वित्तुडवाव—देखो 'वित्तुडवाव' (रू. भे.)

वित्तु—देखो 'वित्त' (रू. भे.)

उ०—वाहण वखारि आपणी, उतरिनां तें सेठि । धावि देवार आगणइ, वित्तु करता वेठि । —मा. का. प्र

वित्तोडणी, वित्तोडवो—क्रि स.—तोडना ।

उ०—घघ घरे करि देस, वात मे हेत वित्तोडे । आप कियो तें अवल, वलें पर कियो विखोटे । —घ व अ

वित्तोडणहार, हारो (हारी), वित्तोडणियो—वि० ।

वित्तोडिश्रोडो वित्तोडियोडो, वित्तोडयोडो—भू० का० कृ० ।

वित्तोडीजणो, वित्तोडीजवो—कर्म वा० ।

वित्तोडियोडो—भू का कृ —तोडा हुआ ।

(स्त्री वित्तोडियोडी)

वित्तोल-वि [स वि + तुल] अतुल्य, बलशाली ।

उ०—चुमाव लोल गोल की प्रघत गोलती घलें, हरोळ गोल घोलदें चदोळ चोलती हलें । विथ्य जनेच्यनी प्रचोळ गोळ घोलही वहें, सतोल तोल तोल सें वित्तोल तोलती वहें । —ऊ का

वित्त-स पु [स] १ कुशुभि नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य । २ प्रतदन देवो मे से एक ।

३ सुख देवो मे से एक ।

४ देखो 'वित्त' (रू. भे.)

उ०—१ क्याही कर वोहरो हुवें, क्याही कर व्हे गित्त । क्याही कर चाकर हुवें, बणिक हरेवा वित्त । —बा दा

उ०—२ तिण समय माहे तेजसी उठें गयो । तरें उण तीर्न हो उमरावें आपथा हीज विचार नें उण वित्त रा च्यार हिस्सा कीया । एक हिस्सा लें तेजसी नु दीयो । —राव मालदें री बात

उ०—३ वित्त जासिय ऊमर पाय सही, नभ सूरज चद भुगोळ नही । जिदराव लेजासिय वित्त जठें, कह 'पाल' वत्तासिय मूह कठें । —पा प्र

उ०—४ परमात चढिया सो गाव दूजो वळी जाय मारियो । पछे बीजा गावा नू पासरणा छूटा सो वित्त सारो घेर ले आया । गाव दोय री तो जमा ऊठण दीवी । —अमरसिंह राठोड री बात

उ०—५ खेर्व लाग राव खीचो चारणा वित्त नू खच्यो, सच्यो मना चायो इसी आयो यू भोसाण । पूकारो देवळा अर्व आपरा पखेत पावू, पाणा जोस हू तो आय लं जाळ अमाण ।

—वावरदान दघवाडियो

उ०— डोकरी कह्यो—गुजरा रं घरं आयोडा नै दूष पाया आपे ई वित्त अर दूष री वधापो व्है । म्हारी वेटी नै घरं आयोडा री सर-वरा री ध्यान है इज घणो । —फुलवाडो

वित्तगोष्ठा—सं पु [स] कुवेर के भण्डारी का नाम ।

वित्तग्यान—स पु [स. वित्त+ज्ञान] ७२ कलाओ मे से एक ।

वित्तणो, वित्तवो—देखो 'वीतरणो, वीतवो' (रू भे)

उ०—लग्गी हाम विलास, वित्ती अग्यात प्रात मध्यान । सायकाळ निसीत, रत भूप चूप मदनाय । —रा रू

वित्तणहार, हारो (हारी), वित्तणियो—वि० ।

वित्तणोडो, वित्तियोडो, वित्तयोडो—भू० का० कृ० ।

वित्तोजणो, वित्तोजवो—भाव वा० ।

वित्तदा—स स्त्री [म] स्वामी कार्तिकेय की अनुचरी एक मन्तुका ।

वित्तनाथ—स पु [स वित्त+नाथ]—कुवेर ।

वित्तप, वित्तपत, वित्तपति, वित्तपती—स पु [स वित्तप, वित्तपति] धन की रक्षा करने वाला, कुवेर, धनपति । (हिं को)

वित्तपाळ, वित्तपाल—स पु [स. वित्त+रा पाळ] कुवेर का एक नाम ।

वित्तपुरी—स स्त्री [स] कुवेर की अलकापुरी ।

वित्तरणो, वित्तरवो—१ देखो 'विस्तरणो, विस्तरवो' (रू. भे.)

उ०—इदवधू अणपार, क वसुधा वित्तरी । मनु तूटी मणिमाल, मदन महिपत्त री । —कविवर सिववक्षत पाल्हावत

२ देखो 'वितरणो, वितरवो' (रू. भे.)

वित्तरणहार, हारो (हारी), वित्तरणियो—वि० ।

वित्तरणोडो, वित्तरियोडो, वित्तरयोडो—भू० का० कृ० ।

वित्तरोजणो, वित्तरोजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

वित्तरियोडो—१ देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वितरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वित्तरियोडो)

वित्तहीण, वित्तहीन—वि [स वित्तहीन] दरिद्र, निर्धन, गरीब ।

वित्त—देखो 'वीति' (रू. भे.)

वित्तिकर—वि. [स] वृत्ति कर्ता ।

उ०—अभयदेव नव अग वित्तिकर, पासु पसायणु, पत्तमएवि धरणिद पमुह, सुर साहिय सासणु । —ऐ. जै. का. स

वित्तेस—सं पु. [स. वित्त+ईश] धन का पति, कुवेर ।

वित्तोसर, वित्तोसुर, वित्तोस्वर—[स वित्त+ईश्वर] कुवेर ।

वित्तो—सर्व.—उतना ।

उ०—बस केवल नाम सही है, वो मोटो राम सही है । जित्तो तप में म्हें तपस्या, वित्तो ही काम सही है । —करणीदान वारहट

वित्थर, वित्थरि—देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—गगतडा तडि अछइ भोयणु वित्थरि दीरधि वारह जोयणु । पासहरा वागुरीय बहूय, पड्ठा वणि कोलाहलू हूय ।

—सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे)

वित्थरणो, वित्थरवो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरवो' (रू. भे)

उ०—१ दत कुळी अगुळी, करो कोपरी कपाळा । वीच खेत वित्थरी फरी विहरी किरमाळा । —रा. रू.

उ०—२ पाना मुख वाजिन्न हिले वाना वरक्का, मेघ रग मातग वीढ ऊढग कटक्का । पलो जेभ सादळा हिलो फीजा धमसाणा, व्योम रजो वित्थरी धमस वज्जी केकाणा । —रा. रू.

उ०—३ सेर खान भर समर कहर परखै घर कदळ, लोथ लोथ ऊपरा गरा भिडजा गज तडळ । दत कुळी अगुळी मत्थ पग हत्थ निराळा, अत तत्र वित्थरी, हत दाढाळ हठाळा । —रा. रू.

वित्थरणहार, हारो (हारी), वित्थरणियो—वि० ।

वित्थरियोडो, वित्थरियोडो, वित्थरयोडो—भू० का० कृ० ।

वित्थरीजणो, वित्थरीजवो—भाव वा० ।

वित्थरियोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वित्थरियोडो)

वित्थार—देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वित्थारणो, वित्थारवो—देखो 'विस्तारणो, विस्तारवो' (रू. भे.)

उ०—१ लाहोर नयर उच्छ्रव ह्याय, चिहु खडि जस वित्थारिया । कर जोडि समयसुंदर भणइ, स्त्रीपूज्य भलइ पधारिया । —स कु.

उ०—२ पण सग वेय मयक वरसि माहह छण वासरि, भाणु-सल्लि वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि । नंदी ठविय वित्थारि सुगुरु सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिदि किट्टु मगलु विवहु प्परि । —ऐ. जै. का. स

वित्थारणहार, हारो (हारी), वित्थारणियो—वि० ।

वित्थारियोडो, वित्थारियोडो, वित्थारयोडो—भू० का० कृ० ।

वित्थारीजणो, वित्थारीजवो—कर्म वा० ।

वित्थारियोडो—देखो 'विस्तारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वित्थारियोडो)

वित्थुरणी, वित्थुरवी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू. भे)

उ०—धसी अकास धूसरी, कि वान सेन वित्थुरी । निमाण पाण नदय, सुघोर जोर सद्य । —रा. रू.

उ०—वसुधा सोण सुरगी, तुरिया घसळ वित्थुरी रैणा । आदू चपळ सहावी, हुद्द रत्ती हुद्द अणरतह । —गु रू व.

उ०—३ विसाळ भाल तोप की विसाळ जाळ वित्थुरै, धमक भू धुजावणी धमक मेघ लौ धुर् । महान रज दव्बुनी अरीन दव्बुनी मही, कथे कबीर नै कही चिराय की चही चही । —ऊ का

वित्थुरणहार, हारी (हारी), वित्थुरणियो—वि० ।

वित्थुरिओडो, वित्थुरियोडो, वित्थुरघोडो—भू० का० कृ० ।

वित्थुरीजणी, वित्थुरीजवी—भाव वा० ।

वित्थुरियोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वित्थुरियोडो)

विप्रस—वि [स वितृप्त] जो तृप्त न हुआ हो, असन्तुष्ट ।

विप्रभव—स स्त्री—पूर्व और ईशान दिशा के मध्य की दिशा जिस ओर कृत्तिका नक्षत्र उदय होता है । इसका दूसरा नाम 'लाणी' भी है ।

विप्रस—वि [स. वितृप्त] जिसमे किसी प्रकार की तृप्ता न रह गई हो, तृप्त ।

विप्ररण—वि [स. वितृष्ण] १ जिसे किसी प्रकार की तृष्णा न हो, तृप्त २ निष्पृह, उदासीन ।

विप्रहोत, विप्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे) (प्र. मा)

विप्रा, विप्रासुर—देखो 'वप्रासुर' (रू. भे)

उ०—गुमर तजै विप्रा गळिण, हुलसै जोडे हृथ्य । घेठी असुरा चौ घणी, कहे सुराई कथ्य । —मा वचनिका

विथ—देखो 'व्यथा' (रू. भे)

विथक—वि—थका हुआ ।

विथकणी, विथकवी—क्रि अ—थकना, थकावट महसूस करना ।

उ०—अळ पख चद जही अनैकारा, हेळ कळा छाडे चित हेत ।

विथकं नही उगता अवसा, रत कासिव नर रयण सुवेत ।

—बीरमदै राठीड रो गीत

विथकणहार, हारी (हारी), विथकणियो—वि० ।

विथकियोडो, विथकियोडो, विथकियोडो—भू० का० कृ० ।

विथकीजणी, विथकीजवी—भाव वा० ।

विथकियोडो—भू का कृ—थकावट महसूस किया हुआ, थका हुआ ।

(स्त्री. विथकियोडो)

विथत—देखो 'वितथ' (रू. भे) (प्र. मा.)

विथरणी, विथरवी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू. भे)

उ०—१ फळि मचड असात उठै मेजक फुहर, रेण भैचक संक व्ही राव राणै । विथरती तेण दिन जाप 'सूजा' विथा, जग दुडिद तणै आताप जाणै । —ऊमेद सिध तिसोदिया रो गीत

उ०—२ दताळा दटकाय, मोताहळ विथरं मही । स्याळां मती सताय, लगळां गज भल 'लघा' । —भगवानजी रतनू

विथरणहार, हारी (हारी), विथरणियो—वि० ।

विथरिओडो, विथरियोडो, विथरघोडो—भू० का० कृ० ।

विथरीजणी, विथरीजवी—भाव वा० ।

विथराणी, विथरावी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू. भे.)

विथराणहार, हारी (हारी), विथराणियो—वि० ।

विथरायोडो—भू० का० कृ० ।

विथराईजणी, विथराईजवी—कर्म वा० ।

विथरायोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विथरायोडो)

विथरियोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विथरियोडो)

विथा—देखो 'व्यथा' (रू. भे)

उ०—१ जिण दिन थो तुम देखीया जिमवा मउसरि साह । तिण दिन थो पदमिण मन वसिठ तुम्ह माही रे । सुण आलिम घणी, विरह विथा न खमायी रे, वात किसी घणी । —प च चौ

उ०—२ हरि सुमरण हिरदै घरी, विथा न पहुँचै वीर । बायर टळि कानं चल्या, लग्या न सुख की मीर । —ह पु वा

उ०—३ जैसे अगनि कास्टं मे रहै काटि कटै न काठे दहै जन हरिदास भव ऐसी भई, भजता राम विथा मव गई । —ह पु वा

उ०—४ पग परसै पावन हुवी, गई विथा सब भाज । राज बडे ही रामजी, गहर गरीबनिवाज । —गजउदार

उ०—५ करता करण सदा सगि जाकै, चितवनि कही कहा धूं ताकै । करम कुठार विथा हरि कापै, जन हरिदास नरहरि जापै ।

—ह पु वा

विथार—देखो 'विस्तर' (रू. भे)

विथारण—वि.—विस्तर करने वाला, फैलाने वाला ।

विथारणी, विथारवी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू. भे)

विथारणहार, हारी (हारी), विथारणियो—वि० ।

विथारिओडो, विथारियोडो, विथारघोडो—भू० का० कृ० ।

विथारीजणी, विथारीजवी—कर्म वा० ।

विथारियोडो—देखो 'विस्तरियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विधारियोडी)

विधित—देखो 'व्यथित' (रू. भे.)

विधुरणो, विधुरवो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरवो' (रू. भे.)

२०—१ तेल सिंदूर विधुरिय, सुनही असवार मसत अंराक । चामुड सुत उधरिय, क्षेत्राधीसर तुम्हो नमः । —मा वचनिका

२०—२ प्यारी के चिहुर विधुरे मानी मानी धाराधर की स्याम घटा उनई, ता मध्य पहुप छटि परे ते से बडी बडी बूदे । लाल सारी पहुरे हरी कोर मघायनिसी धूधट करि चली, पीठ पाछे ते तरक कचुकी तनीकी फूंदे । —मीरा

२०—३ दूनो तटा जु नदी उपरि वही छे सु जाणो चोटी विधुरी छे । विधुरी कहै ते । प्रथो जु स्त्री त्ये ने धाराहर मेघ जब भरतार मिळीयो छे । तब चोटी विधुरी । —वेलि टी

२०—४ पाका दाडिमा का बीज । यु छिटकि पड्या छे । एही वसंत पाट वंटे ने निवछावळि कीया छे । सु ए मानूं नग जवाहर विधुरे छे । और चु भाति भाति का फळ सखा के विखे लागा छे । —वेलि टी

विधुरणहार, हारो (हारी), विधुरणियो—वि० ।

विधुरिओडो, विधुरियोडो, विधुरयोडो—भू० का० कृ० ।

विधुरीजणो, विधुरीजवो—भाव वा० ।

विधुरियोडो—देखो 'विस्तारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विधुरियोडी)

विध्य—सं पु [स विधि] पथ, मार्ग, रास्ता ।

२०—धुमाव लोल गोलकी प्रघत्त बोलती घर्ले, हगेळ गोल घोल दे चढोल चोलती हर्ले । विध्य जनेच्छनी प्रचौळ गोल घोलही वहे, सतोल तोल तोल से वितोल तोलती वहे । —ऊ. का

विदड—स पु—द्रोपदी स्वयवर मे अपने पुत्र दण्ड के साथ उपस्थित एक राजा ।

विद—स स्त्री [स विद] १ जानकार, पंडित, कवि । (अ. मा.)

२ वंद ऋषि के पिता, एक प्राचीन ऋषि ।

३ देखो 'विध' (रू. भे.)

विदकणो, विदकवो—क्रि. अ —चौकना, चमकना ।

२०—मूळी कीम्ही, कटरूप, भोगणा री खाण । जावे जठीने ही रात मिळ । हसे जद चोड सो चीरे । चाले ती खोली सो भाजे, दडबडाट ऊपडे । वोलें ती गधा विदक जावे । —दसदोख

विदकणहार, हारो (हारी), विदकणियो—वि० ।

विदकियोडो, विदकियोडो, विदकयोडो—भू० का० कृ० ।

विदकीजणो विदकीजवो—भाव वा० ।

विदकाउ—देखो 'विदकी' (रू. भे.)

विदकियोडो—भू० का० कृ०—चौका हुआ, चमका हुआ ।

(स्त्री विदकियोडी)

विदकौ—वि. (स्त्री विदकी) बढिया, उत्तम, श्रेष्ठ ।

रू. भे.—विदकाउ ।

विदग, विदग्ध—देखो 'वीदग' (रू. भे.)

विदग्धछपय, विदग्धछप्पय—स. पु—पयोधर छप्पय का दूसरा नाम, जो ४४ गुरु और ६४ लघु अर्थात् १५२ नाम्नाओ का होता है । (पि. सि.)

विदग्धता—स स्त्री [स. विदग्ध +ता प्र] पांडित्य, विद्वता ।

विदग्धसाकल्य—स पु [स. विदग्धसाकल्य] १ विदेह जनक की राजसभा मे, याज्ञवल्क्य के साथ वाद-विवाद करने वाला एक आचार्य, जो पूर्व नियोजित शर्तानुसार, वाद-विवाद में पराजित होने के कारण, मृत्यु को प्राप्त हुआ था ।

२ एक आचार्य, जो वायु के अनुसार व्यास की यजुःशिष्य परपर । मे से याज्ञवल्क्य का धाजसनेय शिष्य था ।

विदग्धा—स स्त्री [स] १ होशियारी के साथ पर पुरुष को अपनी और आकृष्ट करने वाली परकीया नायिका ।

२ चातुर्य से युक्त देवी ।

विदग्धाजोरण—स पू [सं विदग्धाजोरण] पित्त के प्रकोप से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का अजीर्ण रोग ।

विदण—स पु [स विदग्ध] १ कवि ।

२०—जै जया मवद विदण भणै, वयणै राजा चांमहा । लाखीक खडै अकवर लिया, 'दुरगै' दकवण सामहा । —रा. रू.

२ पंडित ।

रू. भे.—विदण

विदत—१ देखो 'विद्युत' (रू. भे.)

२ देखो 'विदित' (रू. भे.)

विददसव, विददस्व—सं. पु—तरत एव पुरभीड नामक राजाओं का पिता, एक राजा ।

विदमान—१ देखो 'विद्यमान' (रू. भे.)

२ देखो 'विद्वान' (रू. भे.)

२०—मोटोडी माखी ई नाक मे गुणगुणावती—क्यू नी सा इंग-रेजी बोलणो काई बडी वाठ है, मास्तर बडा विदमान है । कितरा तो इणा ने फलमी गाणा भावे अर कितरा इणा ने नाच भावे ।

—अमरनूतड़ी

विदरग—देखो 'वदरग' (रू. भे.)

२०—मत कर, मत कर विदरग धारो भेस, खुर्जे रे केसा ना फिरै ।

आय भिळो गो धारी स्याम, दिन दसनै, भूरभुर ना मरै ।

—लो. गी.

विदर—१ देखो 'विदरी' (रू. भे)

२ देखो 'विदुर' (रू. भे)

उ०—१ बोला में ओछा विदर, बोला भे नह मोट । बोला भे 'परताप' रै, गोला वाळी मोट । —ऊ का

उ०—२ ब्रह्मा जो न करत विदर, जग माहै जगजीत । असल नसल रो ऊषडत, रूडापी किरण रीत । —वां दा

उ०—३ विदर वहादर वाजवा, कड बाँधै केवाण । कर जोडण लटका करण, विदर न छोडै वाण । —धा दा

उ०—४ प्रथम विदर पूजिया, मात केकइ मना में, पीव मरण पामिया, पूत चालिया वनां भे । पछे विदर पूजिया पडव करवा सदाइ, माह माह कट मुवा, दिली जीवता न पाइ । विदर नू पूज वगडावता, जेवद 'पीथल' जूंभीया, 'भोकमा' कमध मोटा मिनख, जिके विदर तै पूजिया । —अरजुनजी बारहठ

उ०—५ पैला पेट वघाय पछे विदरी परणीजे, दुलही नावै दाय फेर फस जावै बीजे । दुख चूडै दोवडे कदै नह लागो काम, नाकारी नह करै जेण कुळ पद जी जाय । —अरजुनजी बारहठ (स्त्री विदराणी, विदरी)

विदरण—देखो 'विदीरण' (रू. भे)

विदरणौ, विदरवौ—देखो 'विदीरणौ, विदीरवौ' (रू. भे)

विदरणहार, हारी (हारी), विदरिण्यौ—वि० ।

विदरिओडौ, विदरियोडौ, विदरयोडौ—भू० का० कृ० ।

विदरीजणौ, विदरीजवौ—भाव, कर्म वा० ।

विदरभ—स पु [स. विदर्भ] १ नीखडाविपति ऋषभदेव के नी पुत्रो में से एक, जो राजा भरत के भाई और निमि के पिता थे । अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा को इसी की कन्या मानते हैं ।

२ आधुनिक वरार प्रदेश का एक प्राचीन नाम । (सभा)

उ०—दक्खिण दिसि देस विदरभति दीपति अति कंदरापुर । राजति एक भीखमक राजा, सिरहर अहि नर अमुर सुर । —वेलि

वि वि—यहा के राजा भीष्मक थे । रुक्मिणी उनकी पुत्री थी । जो श्रीकृष्ण की पटरानी थी । राजा नल की पत्नी दमयन्ती का पिता भी इसी प्रदेश का राजा था ।

३ एक राजा, जो यदुवंशीय ज्यामर्ध राजा का पुत्र था ।

वि वि.—नारदपुराणानुसार इसका पैतृक नाम 'काश्यप' था और इसकी माता का नाम 'शैव्या' या 'चैत्रा' श्रीशिनरी था । इसका

विवाह भोजराज कन्या उपदानवी या भोज्या से हुआ था, इसी से इसे क्रुदा, क्रथ, रोमपाद आदि पुत्र और कौशिकि एव सुमति नामक दो पुत्रिया प्राप्त हुई थी जो सगर राजा को व्याही गई थी ।

४ कार्तवीर्य अर्जुन का मित्र एक राजा, जो परशुराम द्वारा मारा गया था ।

५ एक ऋषि का नाम । (पुराण)

रू. भे—विदर, विदरभ, विदरभति, विद्रभ, विद्रव ।

विदरभजा—स स्त्री [स. विदर्भजा] १ अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा का एक नाम ।

२ विदर्भ नरेण भीष्म की पुत्री और निपघदेश के राजा वीरमेन के पुत्र नल की पत्नी दमयन्ती का एक नाम ।

३ श्रीकृष्ण की पटरानी रुक्मिणी का एक नाम ।

विदरभति—देखो 'विदरभ' (रू. भे.)

विदरभराजतनया—स स्त्री [स. विदर्भराजतनया] दमयन्ती और रुक्मिणी का एक नाम ।

विदरभा—स स्त्री [स. विदर्भा] विदर्भ देश की राजधानी ।

उ०—निमख री विलव री नाथ अक्सर नथी, स्त्रीरुमण मागीओ आण रथ सारथी । स्त्रीकिमन ब्राह्मण तीसरी सारही, विदरना नगर ततकाल आया वही । —रूपमणी हरण

रू. भे—वइद्रभा ।

विदरभि—स. स्त्री [स. विदर्भि] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विदरभि कौंडिन्य—स. पु [स. विदर्भिन + कौंडिन्य] वत्सनपात चाअन्य का शिष्य और गालव का गुरु, एक आचार्य ।

विदराणी—स. स्त्री—दासी, सेविका ।

उ०—रजपूताणी रहै रिजक विन, धरम पतित्रत धारी रै ।

विदराणी पडवा मे वेठी, किसब कमावै मारी रै । —ऊ का

विदरियोडौ—देखो 'विदीरियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विदरियोडौ)

विदरी—स. स्त्री.—१ हुक्का ।

उ०—तडा उपरायत हुका री होस कीजे छै । चाकरा नै हुकम हुवी छै । हाग तयार कीजे छै । किरण भातरा हुका छै ? सोनै रा, रूपै रा, विदरी, त्वापोळ ठाढा पाणी सूँ भरजे छै । नीचै सुधरा विछायजे छै । ऊपर हुका मेरूजे छै । नमवा सरद कीजे छै ।

—रा सा स.

२ देखो 'विदुर' (स्त्री) (ग. मा.)

विदरीह—देखो 'विद्रोह' (रू. भे)

विदरीही—देखो 'विद्रोही' (रू. भे)

विदर, विदर—स. पु [स. वि. + दल] १ पेशेवर हीजडा ।

२ शत्रु-सेना ।

उ०—घाईं पुकार पड लाखि घाड, रवि उदय अस्त लग पच राड
सासुळें विदळ कदळ ससत्र, रग सेल खर्ग न मिटें रगत्र ।

—रा रू

३ एक राक्षस, जो काशीनगर मे पार्वती द्वारा गेंद प्रहार से मारा
गया था ।

[स] लाल रग का सोना ।

विदळणी, विदळघो—क्रि. स —दलित करना, नष्ट करना ।

विदळणहार, हारी (हारी), विदळणिघो—वि० ।

विदळिघोडो, विदळियोडो, विदळघोडो—भू० का० कृ० ।

विदळीजणी, विदळीजवो—कर्म वा० ।

विदळियोडो—भू का कृ —दलित किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री विदळियोडी)

विदल्ल—स. पु —ध्रुवमन्वि नामक राजा का मन्त्री ।

विदवता—देखो 'विद्वता' (रू भे)

विदवान—देखो 'विद्वान' (रू भे) (अ मा, ह ना मा.)

विदवीं—वि —सुन्दर, मनोहर ।

उ०—जगळ जाला माथ, छा रघी विदवीं वेला । फूला चिया
फळीज, झिळोरा झिलवें केला । गूदी रग गिलोय, पिलूदी पसरें
चढणें । ऊट फोग जड ऊग, पगोठा देवें वढणें । —दसदेव

रू भे —विदवी ।

विदवेम—देखो 'विद्वेस' (रू भे.)

विदवेसक—देखो 'विद्वेसक' (रू भे)

विदवेसणी, विदवेसिणी—देखो 'विद्वेसिणी' (रू भे)

विदवेसी - देखो 'विद्वेसी' (रू भे)

विदांत, विदांती—देखो 'वेदात' (रू भे)

उ०—दिगता लीं दोरें मचन मन मोरें मुदमुदी, विदांतीं ऊभोरें
विसय विप वोरें बुदबुदी । पळ्ळ्ळें पापा को त्रितप भव तापा ऋटि
तलें, मिळ्ळ्ळें मेघा को विधि विधि निसेवा फत मलें । —ऊ का

विदाम—स पु —१ मारवाडी (महाजनी) का एक छोटा सिक्का ।

२ देखो 'विदाम' (रू भे)

३ देखो 'वादाम' (रू भे)

उ०—साग साल मलियागरी, वळि नाळेर विदाम । सोपारी
खिरणी सरस, हेम ह्वा तिहि ठाम । —गजउद्वार

विदांमी—देखो 'वादामी' (रू भे.)

विदा, विदाई, विदायी—स स्त्री. [अ वदाअ] १ प्रस्थान, रवानगी,
रखसत ।

उ०—१ अरि पालण राखण अवनि, विघ सुण सरव विचार ।
भौम सुण भर भार भळ, विदा हुश्री तिण वार । —रा रू.

उ०—२ ताहरा पातसाहजी सू सिवें अरज कीवी—'आमद देस
मे आतरी री परगनी छें सु माहरी उतन छें ।' तिण उपर सिवा
नू उतन री पटी कराय दियो । घोडी सिरपाव वियो । घणी
दिलासा देन देस न विदा कियो । —नैणसी

उ०—३ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति उरिण भात सू
राजान री वात सुण नै अजमेर रै धारण री हकीकत साभळ नै
आदि वर उगराह नू असुगण तुरकारा रा दळ राजान ऊपरें
विदा हुआ सी किरा भात रा कहीजें छें । —रा सा स.

क्रि प्र —करणी, दैणी होणी ।

२ कहीं से रवाना होने या प्रस्थान करने को अनुमति ।

उ०—१ ताहरा पावूजी गोगोजी भेळा हुयनं घोडा नू गया । आगे
देखें ती कासूं ? ऊभा छटा चरें छें । तद अै घोडा लेय लगामा
देनं असवार हुयनं गोगोजी री कोटडी भाया । पछें पावूजी नू
भगत जीमाय नें विदा दीवी । —नैणसी

उ०—२ उठा जोघपुर हुता राव कल्याणमल जी कन्हा विदा
करि नै कुंवर पदवी थका महाराजाधिराज महाराजा श्रीराय-
सिघजी मिरजें इब्राहम रौ वासी कियो । —द वि.

उ०—३ साथै मुधरो पवन वहता मन विलमावै, डावा घातक
बोल सुरगा मोद जतावै । गरभीजण असमान बुगलिया मिळवा
आई, इदका हुवा सुगन लेवता मेघ विदाई । —मेघ

क्रि प्र —करणी, लैणी, दैणी ।

३ कहीं से प्रस्थान करने की किया ।

उ०—१ ताहरा पातिसाह उमरावा सगळा नू विदा करण लाग
सु उमराव की बीडी भालें नही । ताहरा महाराजाधिराज महाराजा
श्रीरायसिघजी बीडी भालयो । राजि विदा हुआ । —द वि

उ०—२ दुहाग वाळी उण रात तो कवराणी नै नीद आयी ही,
पण आज इण विदाई री रात उणनं नीद नी आई । डोलिया
माथै सूती सूनी पसवाडा पलटती री पण उणने नीद ती जाणें
तारा रै माय ईं चापळी ही । —फुलवाडी

४ विदा करने या होने पर, दिया जाने या प्राप्त होने वाला, धन
पुरस्कार, रुपया आदि ।

उ०—नारेळ नरसघ री हती नरसघ रै हाथ दीयो । वडो हरख
हूयो । प्रोहित साहो पूछियो । प्रोहित साही लिख दीनो । प्रोहित
न वडो विदा दीवी, घोडी सिरपाव । तूटा तो पण अजमेर रा

धरणी । धरणी मनोहार कर प्रोहित नू वडी विदा दे सीख दीवी ।

—राजा नरसिंघ री वात

क्रि. प्र.—लैणी, देणी ।

५ भेजने या खाने करने की क्रिया ।

उ०—१ वात अकव्वर आगली, अकखी हाथ मिळाय । दूत विदा करके लियो, मारू 'दुरग' बुलाय । —रा रू.

उ०—२ आसतखा सुरा कमध अमामा सुत सिर विदा कियो घर सामा । हलिया जवन अजैगढ हूता, दारुण सहस बीस जमदूता । —रा रू.

उ०—३ राजान राजावत । मारू घरे पधारिआ छै । चीकि कळळ फूटि नै रही छै । माया रा ऊवराव बहोडावीजै छै । कवि राजाना विदा कीजै छै । —रा सा. स

रू भे —विदा, विदाई, बीदा, विद्, विद्दा, विद्या, विधा ।

विदारक—वि —१ विदीर्ण करने वाला, फाडने वाला ।

२ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

रू. भे —विदारक ।

विदारण—स पु. [स विदारण] १ अर्धमियो को नष्ट करने वाले भगवान विष्णु ।

२ सिंधुनरेश जयद्रथ राजा के भाइयो मे से एक ।

३ युद्ध सभाम ।

विदारणो, विदारवो—क्रि स [स विदारण] १ मारना, सहार करना ।

उ०—केहर कुम विदारियो, गजभोती खिरियाह । जाणै काळा जळद सूँ, ओळा ओसरियाह । —बा दा

२ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

उ०—रिवि पत्नी पर किरपा कीन्ही, विप्र सुदामा की विपत्ति विदारण । मीरा के प्रभु मौ वदी परि, एती वेरि भई किरण कारण । —मीरा

३ चीरना, फाडना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ द्रुपदमुता को चीर बढ़ायो, दूसातन को मान-मद-मारण । प्रह्लाद की प्रतिग्या रागी, हिरणाकुम नख उदर विदारण । —मीरा

उ०—मगर गलतो काठी आयो घीवर पायो, काढयो पेट विदारी रै लो । तुम्ह पुनि घर देवि नीपजनो आयो चलतो, परणायो तिया वारी रै लो । —वि कु

विदारणहार, हारी (हारी), विदारणियो—वि० ।

विदारिओडो, विदारियोडो, विदारयोडो—भू० का० कृ० ।

विदारीजणो, विदारीजवो—कर्म वा० ।

विदारणो, विदारवो—रू० भे० ।

विदारिकद—देखो 'विदारीकद' (रू भे)

विदारिक—स. पु —बगल, जघा आदि के सधि स्थान पर होने वाला फोडा विशेष । (अमरत)

विदारिगघा—देखो 'विदारीगघा' (रू भे)

विदारियोडो—भू० का कृ —१ मारा हुआ, सहार किया हुआ. २ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ ३ चीरा हुआ, फाडा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ।

(स्त्री विदारियोडो)

विदारीकद—स स्त्री. [स] एक प्रकार की लता और उक्त लता का कद, जो ओषधि के काम आता है, भुईकुम्हडा ।

रू भे.—विदारीकद, विदारिकद ।

विदारीगघा—स स्त्री [स] शालपर्णी नामक एक क्षुद्र विशेष, जिसके फलिया लगती है ।

रू भे —विदारिगघा ।

विदारण—स पु —चपकनगरी का एक दुष्ट राजा ।

वि वि —इसने ब्राह्मणो व वेदो की निंदा की थी इस कारण से इसके शरीर मे कोठ उत्पन्न हुआ था, जो वेत्रवती नदी मे स्नान करने के कारण नष्ट हुआ ।

विदावत—स पु —१ कुटिल युक्ति, पेच, कपट, छल, गुप्त रहस्य ।

उ०—'अरजन' प्रत्रन मिळै उमरावा, दाव विदावत घरा दरियावा । वाता 'मुहकम' तणी वणावै, साह दियो अति कुरव सुणावै । —रा रू

२ गठोड वश की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति ।

विदाह—स पु [स] १ पित्त के प्रकोप से शरीर मे उत्पन्न जलन ।

२ किसी अन्य कारण से हाथ पैर मे होने वाली जलन ।

३ उत्सर्ग, दान । (डि को)

विदाहक—वि [म] विदाह उत्पन्न करने वाला ।

विदाहो—स पु [सं विदाहिन्] वह पदार्थ जिसमे जलन उत्पन्न हो, बाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ ।

विदित—स पु [स] अवगत, ज्ञात ।

उ०—१ विप्र वलतु बोलियु, 'वैदरभ देस विसाल । घरमात्मा एक भीम नामि, विदित ता भूपाल । —नळारयान

उ०—२ सूक्ष्म सरीर, व्याकृति बहीर, भीनातिभीन चित विदित

चीन । पद परम पुन्य सकल्प सून्य, निरवाण नित्य अतर अनित्य ।
—ऊ का

वि.—१ सूचित किया हुआ ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात ।

उ०—पैतीस जुघ लै जय प्रकट, हृत्पी सत्तरि रीझ हृत्ति । सासण
पचास दीघा सहज, वगसरिया कीघा विदित । —व भा

३ इकरार किया हुआ ।

रू भे —वदीत, विदित, वदीत, वदीतउ, वदीतै, विदत ।

विद्विया—देखो 'विद्या' (रू भे)

उ०—भूपति पूजतरौ दुति अङ्गुत, सजणविनोद नाम पचम सुत ।
उग्रबोधि पितरै अहिनाणै, जोध जोध विद्विया सव जाणै ।

—सू प्र

विद्वियाघर—देखो 'विद्याघर' (रू. भे)

उ०—पूछे भोपा वाभणा, विरमोटी वीरतत । विद्वियाघर वीरो-
टिया, चेला होय चालत । —अग्यात

विद्विस—१ देखो 'विदिसा' (रू. भे)

२ देखो 'विदेस' (रू. भे)

विद्विसा, विद्विसि—स स्त्री [स विदिशा] १ मालवा मे स्थित परियात्र
पर्वत से निकली एक नदी । (पीराणिक)

२ दगाराण्व देश की राजधानी ।

उ०—विद्विसा जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग
विलास पावसी प्रीत जताता । वेत्रवती जळ पीय लहरती घण गर-
जता, ज्युं मुख भौह विलास अघर घण पान करता । —मेघ

३ दो दिशाओ के बीच की दिशा, उपदिशा ।

उ०—१ पहिली जयू द्वीप ममइ विचि थाल आकार, लावउ
पिहलउ इक लख जोइण ने विस्तार । मोटी तेहनै मध्य सुदरसण
नामै मेर, तिण थो दस विद्विसानी गिराती च्यारै केर ।

—घ व प्र

उ०—२ कठव्यो घमसाण प्रमाण किसा, दहल्यो हिंदवाण दिसा
विद्विसा । त्रिदसालय चाव चढ्या तरुण्या, समचारै थळी छत्रघार
सुण्या । —मे म

उ०—३ अण चपळ नैण लघु जोर्म अत्ति, सगि अहू विद्विसि चेतन
सकत्ति । दीपत जुगळ कळ अमळ दत्त, मुत्त अरक पाणि लखि जाणि
सत्त । —रा रू.

रू भे —विदिस, विद्विसा, विद्विस ।

विद्वीया—देखो 'विद्या' (रू. भे) (व भा)

विद्वीरण—वि [स विदीरण] १ बीच से चौरा हुआ, फाड़ा हुआ

२ तोड़ा हुआ, नाश किया हुआ ३ मारा हुआ, सहार किया.
रू भे —विद्वीरण, विद्वरण ।

विद्वीरणो, विद्वीरणो—क्रि स [स. विदीरणम्] १ फाड़ना, चीरना ।

२ मारना, सहार करना ।

३ नाश करना, नष्ट करना ।

४ मिटाना ।

उ०—पर पीर विद्वीरण पीर प्रपा, तुलसी तसवीर कवीर कृपा ।
मुधि नानक बानक सी सरसी, दुति दादुदयाळ समी दरसी ।

—ऊ का.

विद्वीरणहार, हारी (हारी), विद्वीरणयो—वि० ।

विद्वीरिशोडो, विद्वीरियोडो, विद्वीरयोडो—भू० का० क्र० ।

विद्वीरोजणो, विद्वीरोजयो—कर्म वा० ।

विद्वरणो, विद्वरवो, वीद्वरणो, वीद्वरवो, विद्वरणो, विद्वरवो

—रू. भे ।

विद्वीरणोडो—भू का क्र —१ फाड़ा हुआ, चीरा हुआ । २ मारा हुआ,
सहार किया हुआ ३ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ.
४ मिटाया हुआ ।

(स्त्री विद्वीरियोडो)

विद्वु—स पु [सं] १ घोड़े के कान के नीचे का हिस्सा ।

२ हाथी के मस्तक के बीच का भाग ।

वि.—विद्वान, पंडित ।

उ०—अतवार वहै आप्र अतत, सह विद्वु हुय जावै सगा । तक विट
नाम स्त्रीराम री, जग समद तिर तू 'जगा' । —जगो खिडियो

विद्वुख—देखो 'विद्वुस' (रू. भे) (अ मा, ह ना मा)

उ०—१ उचारं वेद विद्वुख अनेक । —रामरासो

उ०—२ दूसरा द्रस्तात जिसउ कलि की पेढ होय । विपरीत रूख
कहता उलटउ कीयउ । आगइ पीडी कइसी जैसी केलि को गरम ।
विद्वुख कहता पंडित सुवचना करि वखारण । वेलि टी

उ०—३ श्री ब्रसपत दसमं ग्रह आयी, विद्वुख तिका दुण लाम
वतायी । कुळ नप उग्र थयी व्है कोई, मुतन प्रताप चौगुणो सोई ।

—रा रू

(स्त्री विद्वुखी)

विद्वुत्त, विद्वुति—देखो 'विद्वुत्त' (रू. भे) (ह ना मा)

विद्वुत्तम—स पु—विद्वुत्त भगवान का एक नाम ।

वि—सब बातों का जानकार, सर्वज्ञाता ।

विद्वुर, विद्वुरु—स पु [स विद्वुर] १ कोरवो व पाठवों के प्रसिद्ध मंत्री,
जो राजनीति, अर्थनीति व धर्मनीति में निपुण थे श्री महाराज
घृतराष्ट्र के भाई थे ।

वि. वि —इन्हे धर्मराज का अवतार मानते हैं। इनका जन्म विचित्रवीर्य की पत्नी की दासी श्रीर व्यास ऋषी के ससर्ग द्वारा हुआ था। ये श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त और निष्पक्षी थे। इन्होंने भीम से शास्त्रास्त्र, आयुधाभ्यास, धनुर्विद्या और वेदाभ्यास किया था। पाण्डवों के द्वारा सही नीति का मार्ग अपनाने के कारण इन्होंने उनकी रक्षा करने के अनेक बार प्रयत्न किये। चन्द्रवश की रक्षार्थ दुर्योधन की कृत्तिलताओं का उल्लेख धृतराष्ट्र के सामने करते हुए उसे अपने पुत्रों (दुर्योधन आदि) का त्याग करने को कहा था इसी कारण धृतराष्ट्र ने इन्हें देश से निष्कासित किया था। भीष्म की मृत्यु और श्रीकृष्ण बलराम के स्वर्गारोहण के पहले ही ये धृतराष्ट्र, सजय व गान्धारी के साथ तपस्या करने वन में चले गये और वही यदुवश के नाश की बात सुनकर पायिव शरीर छोड़ कर धर्मदेव का रूप धारण किया।

७०—१ आइस विदुरह दीघउ राइ. दह दिसि जणवइ जोवा घाईं। सोवनथभं मंच चढावइ, राणी राणि तं सह य आवइ।

—सालिभद्र सूरि

७०—२ राविउ ए राउ जूठिलु विदुरह वयणु न मानीउ ए। हारीयां ए हाथिय थाट भाईय हारीय राजि सउ ए।

—सालिभद्र सूरि

७०—३ अवानदणु विदुरु नांमु नामि खजि सरीवउ। इ खीणइ पणु विचित्रवीरघु पडु राजि प्रतीठिउ।

—सालिभद्र सूरि

२ बहला नामक स्त्री का पति एक वेश्यागामी ब्राह्मण, जिसने अपनी पत्नी के द्वारा किये गये पुण्यकर्मों के कारण मुक्ति प्राप्त की थी।

३ सोमवती अमावस्या के दिन प्रयाग के गंगासगम में स्नान करने से ब्रह्महत्या के पाप से मुक्त हुआ, पांचाल देश का एक क्षत्रिय।

४ पठित या ज्ञानी पुरुष।

५ दासी-पुत्र, सेवक।

६ स्वाग धनाने वाला विदूषक।

७०—विधि पाठक सुक सारम रस वल्लक, कोविद खजगीट गति-कार। प्रगलभ लाग दाट पारैवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार।

—वैलि

रू भे.—विदर, विदुर, विदर।

विदुला—स. स्त्री. [स] सीवीर देश के राजा की पत्नी और सजय की माता।

वि. वि —यह बड़ी ही वीर स्त्री थी। इसका पति, इसके पुत्र की बाल्यावस्था में ही मृत्यु को प्राप्त हुआ था। इसी कारण से सिन्धु-नरेण ने सीवीर देश पर चढाई की थी और सजय को रणभूमि से

भागना पडा था। मगर इसने अपने पुत्र सजय को घर में नहीं घुसने दिया और कड़ी फटकार सुना कर पुनः युद्धार्थ प्रोत्साहित किया था।

विदुस—वि [स विदुप] (स्त्री विदुसी) १ विद्वान, पंडित। (डि को.)

२ कवि। (अ मा.)

३ चतुर, होशियार।

४ अग्राज वशीय एक राजा।

५ मत्स्यानुसार, धृतराज का पुत्र, एक राजा।

६ ज्योतिषी।

रू भे.—विदुख, विदुस।

विदुसणी, विदुसवी—देखो 'विदुसणी, विदुसवी (रू. भे.)

विदुसणहार, हारी (हारी), विदुसणियो—वि०।

विदुसिओडो, विदुसियोडो, विदुस्योडो—भू० का० क०।

विदुसीजणी, विदुसीजवी—कर्म वा०।

विदुसियोडो—देखो 'विदुसियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विदुसियोडी)

विदुण—स. पु —रावण के छोटे भाई विभीषण का एक मंत्री।

विदूर—वि [स] बहुत दूर।

स पु—१ पुरु राजा विदूरथ का एक नामान्तर।

२ महाराज कुरु द्वारा दशाहं कुलोत्पन्न कन्या शुभागी के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो मधुवशीय कन्या सप्रिया का पति था, जिसके गर्भ से अनशवा नामक पुत्र हुआ था।

३ एक पर्वत, जहा वैदूर्य मणि मिलती है।

विदूरथ—स पु [स] १ यदुवशीय इवफन्क के भाई चित्रथ का पुत्र, जिसके पुत्र का नाम सूर था।

२ पुरुवश का एक राजा, जिसके पुत्रों का पालन-पोषण ऋक्षवान नामक पर्वत पर रीछो द्वारा किया गया था।

३ भजमान राजा का पुत्र एक यदुवशीय राजा।

४ सार्वणि मनु के पुत्रों में से एक।

५ सुरथ राजा का पुत्र व सार्वभौम राजा का पिता एक राजा।

६ नपक नगरी के हसध्वज राजा का भाई।

७ दक्षिण भारत का एक राजा जिम्ने अपनी कन्या का विवाह दिण्टवगीय राज्यवर्धन राजा के साथ किया था।

८ उपदर्व व दशाहं नामक एक यादव राजा, जो लोमपादवशीय विघृति राजा का पुत्र था।

वि वि —मत्स्यानुसार ये निवृत्ति राजा का पुत्र तथा दशाहं राजा का पिता था।

९ इमिणी व द्रौपदी स्वयंवर में उपस्थित एक वृष्णिवशीय

क्षत्रिय, जो वृद्धशर्मन व वसुदेव भगिनि श्रुतदेवा का पुत्र एव दन्तवक्र का भाई था ।

वि वि.—इसके भाई दन्तवक्र, शाल्व, शिशुपाल आदि का वध श्रीकृष्ण द्वारा किये जाने पर इसने अपने भाईयो का बदला लेने हेतु श्रीकृष्ण पर आक्रमण किया था मगर श्रीकृष्ण ने इसका वध कर दिया था ।

१०—भलदन ऋषि का मित्र एक राजा, जिसके सुनीति एव सुमति नामक दो पुत्र थे, एव मुदावती नामक एक कन्या थी ।

वि वि—कुजू भ राक्षस का वध करने हेतु, इसके दोनो पुत्र निकले थे मगर कुजू भ राक्षस ने उन्हें कैदी बना लिया और इसकी पुत्री का हरण भी कर लिया था । इसके दोनो पुत्रो व पुत्री मुदावती को, इसके मित्र भलदन ऋषि के पुत्र वत्सप्रि ने कुजू भ राक्षस का वध करके मुक्त कराया था । इसी कारण से इसने अपनी पुत्री मुदावती का विवाह वत्सप्रि के साथ कर दिया था ।

११ राम-रावण युद्ध के समय राम की सेना का एक बन्दर ।

विदूषक—स पु [स विदूषक] (स्त्री विदूषिका) १ दूसरो के दोष बतला कर हसी उड़ाने वाला व्यक्ति ।

२ विभिन्न प्रकार की नकलें, वेशभूषा बनाकर अथवा वातचीत द्वारा लोगो को हसाने वाला व्यक्ति, मसखरा ।

३ साहित्य मे चार प्रकार के नायको मे सँ एक प्रकार का नायक, जो अपने कीतुक और परिहास आदि के द्वारा कामकेलि मे अधिक आनन्द उत्पन्न कर देता है ।

४ कामुक या विषयी व्यक्ति ।

विदूषण—स पु [म विदूषण] विशेष रूप से किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव ।

विदूषणो, विदूषणो—क्रि स —१ कलकित करना, दोष लगाना ।

२ कण्ट देना, दुख देना, सताना ।

विदूषणहार, हारी (हारी), विदूषणियाँ—वि० ।

विदूषिओडो, विदूषियोडो विदूष्योडो—भू० का० कृ० ।

विदूषीजणो, विदूषीजवो—कर्म वा० ।

विदूषणो, विदूषवो विदूषणो, विदूषवो, वदूषणो, वदूषवो, विदु-सणो, विदुसवो विदोषणो, विदोषवो, विदोषणो, विदोसवो
—रू० भे० ।

विदूषियोडो—भू का कृ --१ कलकित किया हुआ, दोष लगाया हुआ।

२ कण्ट दिया हुआ, दुख दिया हुआ, सताया हुआ ।

विदेघ—सं पु [स] एक प्राचीन ऋषि का नाम ।

विदेघनायक—स पु —विदेघ लोगो का प्रमुख मधुवशीय एक राजा ।

विदेघ लोग भी आगे चलकर विदेह कहलाये ।

वि वि.—इसने अपने मुख मे अग्नि को बघकर रखा था और इस भय से कि बोलने से अग्नि बाहर आयेगी, यह किसी से बात भी नहीं करता था । इसके पुरोहित रहुगण गौतम ने अनेक प्रकार से अग्नि स्तुति करके इस अग्नि को बाहर निकालने का प्रयत्न किया मगर कुछ असर नहीं हुआ ।

एक वार गौतम के मुँह से 'घृत' शब्द का उच्चारण हो गया और इसके मुख मे बघ अग्नि अपनी अनेक जिह्वार्यो फैलाकर बाहर निकला और सारे ससार के साथ २ विदेघ एव गौतम को जलाने लगा । साथ ही साथ सृष्टि की नदियो को भी जलाने लगा । अग्नि के इस दाह से मुक्ति कराने के लिए विदेघ राजा ने अपने राज्य की सीमा पर बहने वाली नदी मे कूद गया यहा आकर अग्नि का दाह शान्त हुआ ।

विदेस—स पु [स. विदेश] अपने देश के अतिरिक्त अन्य देश, परदेश । (अ मा)

उ०—१ बूठा मेह, उलस्या स्नेह । नदी महा पूरि बहिवा लागी, देस विदेस नी वाट भागी । जळ भरिया निवाण, प्रथ्वी प्रवरती मेह नी आण । आदि । —रा सा. स

उ०—२ देवी निरभर तरवर नगै नेसै, देवी दिसै अवदिसै देसै चिदेसै । देवी सागर वेटडै आप सगै, देवी देहरै घरै देवी दुरगी । —देवि

रू भे.—विदेस, विदिस, विदेसि, विदेसी ।

विदेसि, विदेसी—वि —परदेश का, परदेश सम्बधी ।

स पु —१ परदेश का निवासी व्यक्ति, परदेशी ।

२ देखो 'विदेस' (रू. भे)

उ०—१ लोभी ठाकुर, आवि घरि, काई करइ विदेसि । दिन दिन जोवण तन खिसइ, लाभ किसाकउ लेसि । —ढो मा.

उ०—२ राम लक्ष्मण मही दुखि पाड्या, पाच पाडव विदेसि भमाड्या । डूव नइ धरि जल बहिउ हरचदिइ, भालडी मरण लाघ मुकुदिइ । —सालिसूरि

अल्या.—विदेसीडो ।

विदेसीडो—देखो 'विदेसी' (अल्या., रू भे)

उ०—१ घरा नै पघारी विदेसीडा, छोटी सी नाजक घण रा पीव । यो सावणियो उमड रह्यो छै, हरि नै सोहै छै दिस दिस सीव । —रसील राज रा गीत

उ०—२ विदेसीडा वेटा राव ही, ऊतरघा कोठै सँ भाय । चुकल्या सात सीस पर म्हारै, छुटती वै गजरी वाघ ।

—रसील राज रा गीत

विदेह—स पु [स] १ मिथिलानरेश सीरध्वज जनक का एक नाम ।

७०—१ मुनिद्वेस जोगेस कव्येस भेळा, भुजगेस देवेस स्रव्येस भेळा । विदेह प्रतग्या कहे एम वाक, पुथी जो वरं सो ज तांणं पिनाक ।
—सू प्र.

७०—२ ब्रह्मानद नं विसरघी विदेह ही रघुवरजी, कोई प्रेमानद पूरण छायो, छक रघी ही राज । मुनिवरजी नं ब्रूमं विदेह ही मुनिवरजी, कोई ए कुण प्राणां रा प्यारा पावणा ही राज ।
—गी. रा.

२ मिथिला नरेश निमि का नाम ।

३ विदेह नगरी, जनकपुरी, मिथिलापुरी । (सभा)

७०—१ मगध कोसल भग वग कलिंग कासी कुच देस, सोरठ कच्छ विदेह जांगल कुसावरत्त कहेस । भग सोवीर वैराट मलय साठिल सूरसेन । वरण पचाल दसारण कुंणाल देस मे चैन । —वृस्त.

७०—२ मगध मडल भग वग कलिंग कासी [कोसल कुच] कुसट्ट पचाल जांगल [सुराष्ट्र] विदेह सडिल्ल मलय ।
—घ स

४ विदेहवशीय राजाओं द्वारा प्रशासित एक लोक समूह जिसे पाण्डु राजा ने द्विविजय के समय अपने अधीन कर लिया था । इसी विदेह वंश में ह्यग्रीव व कुलागार नामक राजा उत्पन्न हुये थे ।

५ मिथिला-निवासी, विदेह देश के नागरिक ।

६ देह-परिवर्तन, दूसरी देह ।

७०—इतरी कहतां तुरन दोनू भाई गदगद कठ होय सिलाम करण लाग, फिस पडिया । देवीदास पण ऊभी-ऊभी देखी अर ऊळखिया । देह री विदेह होय गयो पण नाक री टीसी सं ओळख लियो । तांहर देवीदास कह्यो—आख्यां आगळ देह री विदेह होय गयो । ओळखणी आयं नही, ताहरा आख्या सू ही सलाम कीवी ।
—पलक दरियाव री बात

वि. — १ देह-रहित, शरीर-रहित ।

२ अचेत, बेहोश, चेतना-रहित ।

३ शारिरिक चिंताओं से मुक्त ।

४ मरा हुआ, मृत ।

विदेहक—स. पु [स.] एक पर्यंत का नाम । (पुराण)

विदेहकुमारी—स. स्त्री [स. विदेह + कुमारी] राजा जनक की पुत्री सीता ।

विदेहघी—स. स्त्री [स. विदेह + घीता] जनकसुता, जानकी, सीता । (हि. को)

नदेहपुर, विदेहपुरी—स. स्त्री [स. विदेह + पुर या पुरी] जनकपुर, मिथिलापुरी ।

विदेहा, विदेही,—स. स्त्री. [स.] १ जनकपुरी, मिथिलापुरी ।

७०—विदेही तरुं दिवाण, ईस चाप घरें प्राण । तोट्या घनेक तांण, ऊठिया करें अपाण ।
—र. क

२ जानकी, सीता ।

७०—भाली रग भूमि पं विदेही की अनूप रूप, प्राज अविलोचयो देवदुर्गतं मलय मे । नयन निकाम् सौ जुन्हाइ के कुरगमेन, तंज मे 'हमीर' भवकेतु के न भय मे ।
—हमीरदान मोतीसर

[स. विदेहिन्] ३ ग्रह ।

रु. भे — विदेही ।

विदेहेस—स. पु. [स. विदेह + ईस] राजा जनक ।

७०—अवद्वेस राजेस जानेस घाया, विदेहेस साम्हेम प्राणें घपाया । कुंवारा विदेह घाय बूहार कीघा, लगं प्रीत छाती पिता भीड लीघा ।
—सू. प्र.

विद्वेषत—स. पु — हरिवीर नामक क्षत्रिय जो भगले जन्म मे पिशाच बना क्यो कि वह नास्तिक था ।

विदोखणो, विदोखो—क्रि. स — अवलोकन करना, देखना ।

७०—प्रोखट वान देसी कवण, कवण नेणां विदोखियं । ह्य ह्य सरीर छूटो नही, रायसिध आपरोपिये ।
—नैणसी
२ देखो 'विदूसणो, विदूसवो' (रु. भे.)

७०—सूरज री मूढो दीठा 'विना जीमण री आखडी । म्हडा सू किरणें गाळ काढण री आखडी । चारण भाट नं विना काम विदोखण री आखडी । सुगाइ नं विना खुंन मारवा री आप्पडी ।
—रा सा इ.

विदोखणहार, हारी (हारी), विदोखणियो—वि० ।

विदोखिओडी, विदोखियोडी, विदोखोडी—भू० का० कृ० ।

विदोखीजणी, विदोखीजवो—कर्म वा० ।

विदोखियोडी—भू का कृ — १ देखा हुआ, अवलोकन किया हुआ ।

२ देखो 'विदूसियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री विदोखियोडी)

विदोगत, विदोगति—देखो 'वेदोक्त' (रु. भे.)

७०—पछें वरस चवदे री हुवो जदी राजा रा गुरा रा वेटा नं परणायो । जठे सारी विदोगत करे नं वेटा बहु नं घरे लं आयो ।
—राजा रा गुर रा वेटा री बात

विदोसणो, विदोसवो—देखो 'विदूसणो, विदूसवो' (रु. भे.)

विदोसणहार, हारी (हारी), विदोसणियो—वि० ।

विदोसिओडी, विदोसियोडी, विदोसोडी—भू० का० कृ० ।

विदोसीजणो, विदोसीजवो—कर्म वा० ।

विदोसियोडी—देखो 'विदूसियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. विदोसियोडी)

विद्—१ देखो 'विदा' (रू भे.)

२ देखो 'विद्ध' (रू भे)

उ०—नराक कोप भल्ल रा, कोटिक भीत काकरा । रजो भरवक
विद् ऐ, पूरण (भा) कै चद ऐ । —गु. रू. व

विद्धत—स. पु [अ वहदत] श्रद्धत-भाव ।

उ०—महदी री श्रीलाद सू आल बहोत है । महदी री वश रा पीर-
जादा कर्न महदधिया रा दीन री किताव है । पठाण महदवी विसेस
है । कुराण रा हदीस रा सरा री विद्धत भेटण महदी जनमिथी मह
दवी कहै । —वा दा ख्यात

विद्मान—देखो 'विद्यमान' (रू भे)

विद्वा—देखो 'विदा' (रू. भे)

उ०—सत्तोळ वोल मुखें दक्खै, सेलेवा खत्रं-धीड । साहिजादी माथें
विद्वा हूथी, हिंदू-पत्ती राठीड । —गु रू व

विद्दस—वि.—१ जो कठिनता से सहा जा सकें ।

२ देखो 'विदुस' (रू. भे.)

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति बाध अपारण । वेळ निजर
विद्दसा, असह कवि भ्रमर अकारण । —रा रू

विद्धस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

विद्धसण—देखो 'विधूसण' (रू भे)

विद्ध—स पु—१ कलह, भगडा ।

उ०—'सैल' तजी दळ समर, रेंग वट कहिक रखावो । तर्ज विद्ध
कुळ तणी, मिळी चित खत मिटावो । —सू. प्र.

२ युद्ध, गमर ।

उ०—गया राव राठीड, विद्ध देखे परपूरण । प्रेत सिला भरि पिंड,
पीर रिण हूहुइ ऊरण । —गु. रू व

वि. [स.]—१ बीच में से छेद किया हुआ ।

२ जिसमें बाधा पड़ी हो, बाधाग्रस्त ।

३ जिसको चोट लगी हो ।

४ देखो 'विध' (रू भे)

उ०—तनि श्रोप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जळद विद्धति
प्रकास । अति चलति सुगति दुति अमित विद्ध । पदमणिय हस
किरिं गुरु प्रसिद्ध । —रा रू

विद्धि—१ देखो 'विध' (रू भे)

उ०—करि अठ जगण बन्नीस कल, वरण वीस चत्र विद्धि । गति
इणि मोतीमाळ गुण पणि लखपति प्रसिद्ध । —न पिं

२ देखो 'विधि' (रू. भे)

विद्यमान—वि. [स. विद्यमान] उपस्थित, मौजूद ।

उ०—१ सतरें चालीस विजयदसमी दिन, गच्छ खरतर जगि जीत
सरव विद्या जिने । विजयहरख विद्यमान सिस्य तिनकें सही, परिहा
कवि धरमसी उपगारें दभ क्रिया कही । —घ. व अ.

उ०—२ कल्याणमल पुत्र महाराजधिराज श्रीरायसिधजी विद्यमान,
तत्पट्टाभितेक महाराकुमार चिरजीवी कुवर'श्रीदळपतजी विजयराज्यें
तत्स्यात्मज सभास गारहार कुवर श्रीउदर्यासिध, कुवर श्रीसवळसिध,
कुवर सुळसीदास सहित सरवे चिरजीयात् । —द. वि

रू भे.—विदमान, विदमान, विदमान ।

विद्यमानता—स स्त्री [स विद्यमानता] विद्यमान होने का भाव, उप-
स्थिति, मौजूदगी ।

विद्य—स पु—१ महर्षि विश्वामित्र के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार,
२ देखो 'विद्या' (रू भे.)

उ०—द्रुपदी नु नचावणहार, ए वृहस्पत कलासिणगार । अस्वघ
एह वीर नकीजह, अस्व विद्य सधली हरइ हईह । —सालिसूरि

विद्या—स स्त्री [स] १ शिक्षा आदि के द्वारा मिलने वाला ज्ञान ।

२ मोक्ष की प्राप्ति या परमपुरुषार्थ की सिद्धि दिलाने वाला ज्ञान ।

३ दुर्गा देवी का नामान्तर ।

४ दुर्गा देवी का मंत्र ।

५ सीता की एक सखी का नाम ।

६ वैदिक साहित्यानुसार तीन वेदों के ज्ञान का एक देवता ।

७ चौदह की संख्या ।

८ इल्म, हुनर, कला ।

उ०—च्यारू सिरदार उण सू धीजग्या हा । पूछ्यो, केस गुरढगा
तो था रो पीढ्या रो श्रेलम, पछे उठे काई नवी विद्या सीखण
सारू गियो । ऊधा पाचणा सूं मूढण री सीखने आयो दीस ।

—फुलवाही

९ जादू, मंत्र ।

उ०—१ हिवे थे राज भली भात राखीया । ठाम ठाम आपी आप
री खिजमत में सावधान रहा । धरती रजपूता नूं भळाई छे ।
म्हा में विद्या छे म्हे खवरि करि आवा । लोका कहुयो भला, म्हे
वासली जाबता करिस्या सर्व विन्हे सावळ्या हुइ नें उडीया उडत्या
उडत्या ऊर्वे गाम आया जेय स्यामसुंदर परणीज नें रह्यो तो, तेथ
तीर्ये धर ऊपरि आय वेंढ्या । —स्यामसुंदर री बात

उ०—२ जतर-भतर टाणा टूणा, कामण टूमण जाणें । वीर मूठ
विद्या बोहतेरी, आतम देव अजाणें । —अनुभववांशी

६ किसी विशेष व गम्भीर विषय का विभाग या शाखा ।

१० किसी विषय का व्यवस्थित ज्ञान ।

११ व्यापार या विशेष कार्य को संचालन करने का ज्ञान ।
 १२ आर्य छन्द का भेद विशेष, जिसमें २३ गुरु और ११ लघु
 अर्थात् ३४ वर्ण या ५७ मात्राएँ होती हैं ।
 १३ निसाणी छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें प्रत्येक चरण में
 ३ गुरु और १७ लघु अर्थात् २० वर्ण या २३ मात्राएँ होती हैं ।
 उ०—फोला, लीला, थिरा, कुँआरी, वीणा, रगी, चगी, वारि ।
 विद्या, माळा, बाळा, बाम, नीसाणी रा बारा नाम । —पि प्र.
 रू. भे.—विद्या, विज्ञा, विद्या, विदीया, विद्या, विध्या ।
 १४ देखो 'विदा' (रू. भे.)

उ०—१ तद वीकैजी वा काधळजी मुजरी कर जोघपुर सूं विद्या
 हुवण री त्पारी करी । तारा मडळंजी अरु वीदंजी वा कामदारा
 भाय रावजी नू कयी, "महरबान, म्हारें ती आपरी ठोड कवर
 वीकी है, सू म्है ती वीकें सागें रहस्या । —द दा
 उ०—२ गाव ४१ वरसळपुर लारें रया । गाव ८४ वीकूपुर लारें
 राखिया । पीछें या च्याराईं ठाकरा नू सीख रा सिरपाव देयनं
 विद्या कीया । च्यार घोडा दिया । —द. दा
 उ०—३ वडारण उदास सी जाय भीतर भरमल नू कह्यो, जो
 प्रोहित अरज कराईं छै—हलाणी कोई करे नही । मनं विद्या हुई छै,
 सो कागद लिखावज्यो । इत री सुरा भरमल अति उदास हुई ।
 —कूर्वरसी साखला री वारता

विद्यागाथा—देखो 'विद्या' (१२)

विद्याधर—स पु [स. विद्या+गृह] विद्या पढाने का स्थान, पाठशाला ।
 विद्याचड—स. पु [स. विद्याचण्ड] सुदरिद्र नामक ब्राह्मण के एक पुत्र
 का नाम ।

विद्याचारण—सं. स्त्री —२८ प्रकार की लवियों में से दसवी लवणी का
 नाम ।

उ०—१ जिण लवधि प्रभावं उडी जाय अकास, तै जघा विद्याचारण
 लवधि प्रकास । जसु वचन सरापं खिण में खेर थाय, ए लवधि
 इग्यारमीं आसी विखय कहाय । —वृस्त
 उ०—२ ... समिन्न स्रोती लवधि, जघाचारण विद्याचारण लवधि
 अक्षीणमहांगसी लवधि, क्षीरास्रव लवधि, मध्वास्रव लवधि, जीव-
 बुद्धि, कोस्टबुद्धि, पादानुसारिणी लवधि । —व स

विद्याता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

विद्यातानाय—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—वस सपतास छव गात दीठ वर्ण, वयानं जगत गज साख

वाता । अरोहक दुवो भाराय नीली ऊढढ, हृद घडे विद्यातानाय
 हार्था ।
 —माघीसिंह सिसोदिया री गीत

विद्यातीरथ—स. पु. [स] वह प्राचीन तीर्थस्थान जहाँ स्नान करने से
 विद्या की प्राप्ति होती है ।

विद्यादान—स पु. [स विद्यादान] विद्या पढाने का कार्य ।

विद्यादाता—स पु [स विद्यादातृ] विद्या पढाने वाला, शिक्षक ।

विद्यादेवी—स स्त्री [स] १ सरस्वती ।

२ सोलह जिन देवियों में से एक । (जैन)

विद्याधन—स पु [स] १ विद्या रूपी धन ।

२ अपनी विद्या द्वारा उपार्जित धन ।

विद्याधर—स पु [स.] १ एक देवयोनि विशेष । (अ मा, ना. मा)

उ०—१ जिण सभा रै माहै ब्रह्मादिक सिवादिक इन्द्रादिक आद
 तेंतीस क्रोड देवता इथ्यासी हजार रिख विद्याधर अग्रप जक्ष आद
 देस देस रा राजा बँठा है तिरण बखत श्रीरघुनाथजी लिखमणजी रा
 बखाण श्रीमुख सूं किया । —र रू

उ०—२ धरत ध्यान चारन विद्याधर, करत गान गुन अप्सर
 किन्नर । गुह्यक यक्ष रक्ष गधरबह, सिद्ध पिशाच भजत तब सरवह ।
 —मे म

२ कवि, पंडित । (अ मा)

उ०—१ विद्याधर वड बखतावर, महियल में ही महिमा महिमाय ।
 राउ राणा मोटा राजीया, पुहवीपति ही लागे जमु पाय ।
 —घ व प्र

उ०—२ गुण गजवध तरा कव गावै, दुरस परायण श्री दरसावै ।
 आस धरें विद्याधर आया, कवि सुज हसतीवध कहाया । —रा. रू.

उ०—३ दान के प्रमाण दुहुँ राजा नू के पाण, मेघ के मडाण
 कहा सातूं मेहराण देस देस के विद्याधर सूत मागध बदीजण,
 आसा घर आए सो भए पूरण । —रा रू

३ एक रसोपधि विशेष । (वैद्यक)

४ काम शास्त्रानुसार एक आसन, रत्नि-बन्ध ।

५ एक वार्षिक वृत्त विशेष जिसके प्रत्येक चरण में चार मण
 होते हैं और कुल बारह अक्षर होते हैं ।

उ०—मगण च्यारि पायै मही, बूकन आखर बार । सेस कहै रूपक
 सरस, विद्याधर विसतार । —पि प्र

रू. भे —विजाहर, विद्याधर, विद्याधर, विद्याधारी ।

विद्याधररस—स. पु यो. [स.] वैद्यक में एक प्रकार का रस विशेष, जो
 कि पारे, गधक, तावे, सोठ, पीपल, मिर्च, धतूरे आदि के सम्मिश्रण
 से बनता है ।

विद्याधराज-वि — विद्वान, पंडित, चतुर ।

उ०—कामेति करै सब राज काज, धुन कायथ वड विद्याधराज ।
सला रै काम भेहा सघीर, बुधवत वीरवळ सा वजीर । —वे रू

विद्याधरेन्द्र-स पु [स विद्याधरेन्द्र] जाम्बवान् नामक रीछ, जो सुग्रीव
का मंत्री तथा रीछो का राजा था ।

वि वि.—इसे ब्रह्मा का पुत्र मानते हैं तथा भागवतानुसार इसकी
पुत्री जाम्बवती का विवाह श्रीकृष्ण के साथ किया गया था ।
राम-रावण युद्ध मे इसने राम की सहायता की थी ।

विद्याधरेसुर, विद्याधरेस्वर-स. पु [स विद्याधर+ईश्वर] शिव की
एक मूर्ति का नाम । (पुराण)

विद्याधर-देखो 'विद्याधर' (रू भे)

उ०—विद्याधर वनि कृणहिं एकु भेल्हिउ छइ बाधी । छोडिउ
पहुकुमारि पासि तसु मुद्रा लाधी । —सालिभद्र सूरि

विद्याधारी-देखो 'विद्याधर' (रू भे)

विद्याधिदेवता-स स्त्री [स.] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती ।

विद्याधीश-स. पु [स विद्याधीश] सौराष्ट्र नरेश के प्रधान का नाम ।

विद्यानुवाद-स स्त्री. [स] ७२ कलाओं मे से एक ।

विद्यापति-स पु — १ गुरु, शिक्षक ।

विद्यापात्र-वि — विद्वान, पण्डित ।

उ०—१ राणा री पुरोहित पालीवाळ १ नै सिवड पुरोहित अठी
सू और ४ ब्राह्मण जूना विद्यापात्र वेद पढे छे । लागवाग दीजे
छे । —गव त्रिणमल री बात

उ०—२ 'पचोली डवगर वावर फोफलीया फडहटीया
फडिया वेगडिया सिगडिया भोई कदोई देसाली वलाली गोलू
गवाल पसुयाल राजपात्र विद्यापात्र विनोदपात्र । —व स

विद्यापुरी-स. पु — एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—हुवइ राजा परिवार प्रति वस्त्र आपइ, गुडीआ, सलीआ,
कस्तूरीआ, चपकदुर्गीआ, विद्यापुरीआ, देकापाटकीआ, कास्मी-
रीआ, घूमराई, खीरोक । —व. स

विद्यापीठ-स पु [स] १ शिक्षा का प्रमुख केन्द्र ।

२ महाविद्यालय ।

विद्यामंदिर-स पु [स] विद्यालय, पाठशाला ।

विद्यामय-वि — विद्वान, पंडित ।

विद्यामहेश्वर, विद्यामहेश्वर-स पु [स विद्यामहेश्वर] शिव, महादेव ।

विद्यारम्भ-सं पु [स विद्यारम्भ] विद्या पढाना प्रारम्भ करने के पूर्व
किया जाने वाला एक प्रकार का संस्कार ।

विद्याराज-स. पु [स.] भगवान विष्णु की मूर्ति ।

विद्यारथी-स पु [स विद्यार्थिन्] विद्या का अध्ययन करने वाला,
शिष्य ।

उ०—१ सुखारथी स्वारथी जे स्वमुख दुख प्रारथी वच सदे, बडे
जो विद्यारथी विसद परमारथी वच वदे । प्रचड ब्रह्माड प्रचुर
भुविमड प्रद विभौ, वितड प्रोदड प्रनत दुख खड प्रद विभौ ।

—ऊ का

उ०—२ सूरजमल लिछमी रा लाडका सेठ फूलचद री एकाएक
वेटी हो अर म्हाारा छाकटा सू छाकटा विद्यारथिया मे सू एक
टाळमी रकम । जरूरत सू ज्यादा हुसियार । कारण कं चढती
जवानी अर पंसो पल्ले रामजी चलावे ती इज गेल्ले चलै ।
—अमर चूँनडी

विद्यारासि-स पु [स विद्यारासि] शिवलिंग ।

विद्यालय-स पु [स] वह स्थान जहा पर विद्या पढाई जाती है,
पाठशाला ।

विद्यावान-वि [स विद्यवान्] विद्वान, पंडित ।

उ०—१ महाराज सामोरा री जात सू ऊदावत हुवा । महेसदास
री भतीजी हेमौ गणेशदास री वेटी जीवनेर जाळपादेवी री क्रिपा
सू विद्यावान हुवी । भाखा- चन्न-रूपग महाराज री बसायी ।

—वा दा ल्यात

उ०—२ तद उण री लुगाई कयी पदमसिधजी जिसा हमार री
ववत मे दातार अरु आपा भूखा मरा । तद गोगादान लुगाई नं कयी
के मा'राज ती विद्यावान नू देवे है सू हू ती भणियो नही ।

—द. दा

विद्याविलास-वि — विद्यारसिक ।

उ०—विद्याविलास नरिंद पवाडठ, हीयडाभितारि जाणी ।
अतराय विणु पुण्य वरठ, तुम्हि भाव घणोरठ आणी ।

—हीराणदसूरि

विद्यावेता-वि [स विद्या+वेता] विद्वान, पण्डित ।

उ०—निंदा नेता री भवभव मे भूडी, विद्यावेता विणु अवगत गत
ऊडी । वसुधा वीजाकुर विध विध विसतारै, न्याईसुर आसुर विध
विध निसतारै ।

—ऊ का.

विद्याव्रत-स पु [स] १ विद्या अध्ययन के उद्देश्य से, गुरु के घर रह
कर, किया जाने वाला व्रत या तपस्या ।

२ चंद्र शुक्ला प्रतिपदा को मनाया जाने वाला व्रत विशेष ।

वि वि — यह १२ महीने तक प्रत्येक शुक्ल पक्ष की एकम को
किया जाता है और इस दिन गी-दान भी किया जाता है । इसके

वाद १२ वर्ष तक अध्ययन किया जाता है। इस व्रत को करने से महाविद्वान बन जाता है।

विद्यासजीवन-स. पु [स विद्या+सञ्जीवन] दैत्य-गुरु, शुक्र।

(अ मा)

विद्यासिद्धि, विद्यासिद्धी-स. स्त्री [स] विद्या का निष्पादन करने की क्रिया।

उ०—वदया सामलि बाभणु भण्ड, ए विवहार नयरि अम्ह तणी।

विद्यासिद्धी राखसु हूर, वकनामि छइ जम नर दूउ।

—सालिभद्र सूरि

विद्युजिह्व—देखो 'विद्युजिह्व' (रु भे)

विद्युजिह्वा—देखो विद्युजिह्वा' (रु भे)

विद्युजिह्व-स पु [स] १ खशा राक्षसी का पुत्र और रावण की बहन सुपर्णाका का पति जो पूर्वजन्म में कालकेन्द्र नामक दानव था और राम के द्वारा मारा गया था।

२ रावण का एक प्रधान, जिसे अपनी माया-जाल से राम का दूटा हुआ मस्तक व घनुष सीता के सामने प्रस्तुत कर रावण को पति स्वीकार करने का अनुरोध किया।

३ एक यक्ष का नाम।

४ महातल नामक पाताललोक में स्थित अर्वाकतलम् नामक नगर का निवासी एक राक्षस जो विश्रवस् व धाका के पुत्रों में से एक था।

५ भीमसेन के पुत्र घटोत्कच का साथी एक राक्षस जिसका वध दुर्योधन ने किया था। मतान्तर से यह घटोत्कच का पुत्र था।

६ विद्युत के समान जिह्वा वाले, अमृत की रक्षा करने वाले, दो सर्प।

रु भे—विद्युजिह्व, विद्युतजिह्व, विद्युजिह्व, विद्युत्जिह्व, विद्युत्जिह्व।

विद्युजिह्वा-स स्त्री. [स] १ स्कन्द की अनुचरी एक मातृका।

रु भे.—विद्युजिह्वा, विद्युत्जिह्व, विद्युत्जिह्व, विद्युत्जिह्व,

विद्युच्छत्रु-स. पु—मार्गशीर्ष माह में सूर्य के साथ भ्रमण करने वाला एक राक्षस।

विद्युत-स. स्त्री [स विद्युत्] १ विजली।

उ०—१ वारद विद्युत वरण, पीत अर वरण नीलपट। तरह मदन रत तणी, देख दिल दरप जाय दट।

—र रु

उ०—२ आसन स्यध घटा तन स्याम, पटवर पीत सु विद्युत् है।

चाप मलीमुख पांन विमोह सु, वाम विभाग सिया जुत है।

—र ज प्र

२ एक प्रकार की वीणा।

३ वज्र।

४ सहिष्णु नामक शिवावतार का एक शिष्य।

५ यातुघान नामक राक्षस का पुत्र व रसन नामक राक्षस का पिता एक राक्षस।

६ एक छद्म विशेष, जिसमें दो नगर, दो तगर व अन्त में एक गुरु होता है तथा सात व छ वर्षों पर यति होती है।

वि. वि.—इसको चद्रिका, उत्पलिनी, व कुटिलगति भी कहते हैं।

वि—जिसमें बहुत अधिक दीप्ति हो।

रु भे—विदत, विदुत, विदुति, विद्युता, विद्योत, विद्योता, विद्वति, विद्युत।

विद्युतकुमार-स पु—दस भुवनपतियों में से एक भुवनपति। (बंन)

वि वि—इनके शरीर का वर्ण लाल और वस्त्र का वर्ण हरा तथा मुकट का चिह्न वज्र का होता है।

विद्युतकेस—देखो 'विद्युत्केस' (रु भे)

विद्युतजिह्व, विद्युतजिह्व—देखो 'विद्युजिह्व' (रु. भे.)

विद्युतजिह्वा, विद्युतजिह्वा—देखो 'विद्युजिह्वा' (रु. भे.)

विद्युतपताक—देखो 'विद्युत्पताक' (रु भे)

विद्युतपरणा—देखो 'विद्युत्परणा' (रु. भे.)

विद्युत्प्रभ—देखो 'विद्युत्प्रभ' (रु भे)

विद्युत्प्रभा—देखो 'विद्युत्प्रभा' (रु भे)

विद्युत्तलता—देखो 'विद्युत्तलता' (रु भे)

विद्युता-स. स्त्री [स] १ कुबेर की समा में नृत्य करने वाली एक अप्सरा, जिसने अष्टावक्र मुनि के स्वागत समारोह अवसर पर नृत्य किया था।

२ देखो 'विद्युत' (रु भे) (ना मा)

रु भे—विद्योता।

विद्युताक्ष-स पु [स] कुमार कार्तिकेय का एक अनुचर।

विद्युति—देखो 'विद्युत' (रु भे) (ना मा)

विद्युत्केस-स. पु [सं विद्युत्केस] १ हेति नामक राक्षस जो मयासुर की पुत्री के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

वि. वि.—सन्ध्या की सालकटकटा इसकी पत्नी थी। इससे उत्पन्न गर्भ मंदर-पर्वत पर छोड़ दिया गया था जिसका पालन-पोषण शिव ने किया था। कही २ इमकी पत्नी का नाम पौलीनी भी मिलता है।

२ सुकेशी नामक राक्षस का पिता, एक राक्षस राजा।

रु. भे—विद्युत्केस।

विद्युत्त्रिज्वह—देखो 'विद्युत्त्रिज्वह' (रू भे)

विद्युत्त्रिज्वहा—देखो 'विद्युत्त्रिज्वहा' (रू भे.)

विद्युत्त्रिज्वह—देखो 'विद्युत्त्रिज्वह' (रू भे)

विद्युत्त्रिज्वहा—देखो 'विद्युत्त्रिज्वहा' (रू. भे)

विद्युत्पताक—स पु. [स.] प्रलय-काल के सात मेघो भे से एक मेघ का नाम ।

रू भे —विद्युत्पताक ।

विद्युत्परणा—स. स्त्री [स. विद्युत्परणा] कश्यप ऋषि व प्राधा के गर्भ से उत्पन्न एक अप्सर, जिसने अर्जुन के जन्ममहोत्सव पर नृत्य किया था ।

रू भे.—विद्युत्परणा ।

विद्युत्पात—स पु [स] वज्रपात होने की क्रिया, विजली गिरने की क्रिया ।

विद्युत्प्रभ—स.पु [सं] १ एक दानव, जिसे रुद्रदेव से वरदान स्वरूप, एक वर्ष तक तीनों लोको का आधिपत्य, शिव का नित्यपार्यदपद, एक करोड़ पुत्र एवं कुशद्वीप का राज्य आदि मिले थे ।

२ 'पापमोचन' एवं "सूक्ष्म-धर्म" के सम्बन्ध में इन्द्र से चर्चा करने वाला एक ऋषि ।

रू भे —विद्युत्प्रभ ।

विद्युत्प्रभा—स स्त्री [स] १ उत्तर दिशा में रहने वाली दस अप्सर-राश्री का गण ।

२ दैत्यगज बलि की एक पत्नी का नाम ।

रू भे —विद्युत्प्रभा ।

विद्युत्प्रिय—स पु [स] १ कासा नामक धातु ।

२ उक्त धातु का बना कोई बर्तन ।

वि वि.—उक्त कासा या उक्त धातु से बना हुआ कोई बर्तन विजली को अपनी ओर जल्दी खींचता है ।

विद्युत्माळा—देखो 'विद्युन्माळा' (रू भे)

विद्युत्माळी—देखो 'विद्युन्माळी' (रू भे)

विद्युत्तला—स स्त्री [स] विजली की क्रोध या चमक ।

रू भे —विद्युत्तला ।

विद्युद्गोरी—स स्त्री [स विद्युद्गोरी] शक्ति की एक मूर्ति ।

विद्युद्द्वज—स पु [स. विद्युद्द्वज] एक असुर का नाम ।

विद्युदक्ष—स पु [स] स्कन्द का एक सैनिक ।

विद्युदाक्ष—स पु [स] एक राक्षस का नाम । (पुराण)

विद्युद्द—स पु [स. विद्युद्द] राम-रावण युद्ध में राम की सेना का एक वानर ।

विद्युद्रूप, विद्युद्रूप—स. पु [स. विद्युद्रूप] १ लका का एक राक्षस ।

२ कुवेर का सेवक, एक यक्ष ।

वि. वि —मेनका की पुत्री मदनिका इसकी पत्नी थी । यह एक बार अपनी पत्नी के साथ कैलास पर्वत पर मद्यपान कर रहा था । वहाँ कक नामक गरुड वशीय पक्षी से इसका झगडा हुआ और इसने उसे मार दिया । कक के भाई कदर ने आकर इससे युद्ध किया और इसका वध किया । इसके वध कर दिये जाने के कारण इसकी पत्नी ने कदर के साथ विवाह कर लिया ।

विद्युद्भरचस—स पु. [स विद्युद्भरचस] एक सनातन विश्वदेव ।

विद्युन्माळा—स पु —राम-रावण युद्ध के समय राम के पक्ष का एक वन्दर ।

विद्युन्माळा—स स्त्री [स] १ एक छद्म विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में आठ-आठ गुरु वरुण अथवा दो मरण और दो गुरु होते हैं तथा चार-चार वरुणों पर यति होती है ।

२ विजली की क्रोध या चमक ।

रू भे —विजुमाळा, बीजुमाळा, वाडूमाळा, विद्युत्माळा ।

विद्युन्माळि, विद्युन्माळी—स पु. [स विद्युन्मालिन्] १ तारकासुर राक्षस के तीन पुत्रो में से मझला पुत्र । (पुराण)

वि वि —इसके अन्य दोनों भाईयो का नाम ताराक्ष एवम् कमलाक्ष था । इसने भगवान् शंकर की आराधना कर एक सोने का विमान प्राप्त किया था जिस पर चढ़ कर यह रोजाना सूर्य के पीछे पीछे घूमता रहता था । इसलिए उस विमान में कभी अन्धेरा नहीं होता था । सूर्य ने उस विमान को अपने तेज से गला दिया । इसने धर्म के पुत्र सुपेण से भी युद्ध किया था ।

इसने अपने दोनों भाइयो के साथ ब्रह्मा को तपस्या कर सन्तुष्ट किया और यह वर प्राप्त किया कि सोने, चादी व लोहे के तीन नगर में हम तीनों एक बार पास-पास और हजार साल अलग-अलग रहेंगे तथा हमारा वध उसी समय किया जा सकेगा जब कि हम तीनों पास-पास हो । मगर वध के लिए इन्होंने मागा कि हम तीनों का एक साथ वध एक ही बार में हो । इस वर प्राप्ति के बाद इन्होंने देवताओं व मनुष्यों को बहुत सताया । इस लिए देवताओं ने शिव की स्तुति की और इनका वध करने हेतु कहा । शिव ने अपने त्रिशूल से इनके तीनों नगरो को छिद्रित कर दिया और विष्णु वाण, जिसकी नोक पर अग्नि और पीछे वायु थी और मन्दर पर्वत धनुष से, जब ये तीनों एक साथ थे, इनके नगरो सहित इन्हें भस्म कर दिया ।

२ राम-रावण युद्ध में रावण-पक्षीय राक्षस जिसे राम-पक्षीय सुपेण नामक वानर ने मारा था ।

३ एक राजा (प्राचीन)

४ तारका-मय युद्ध मे मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पापंद नन्दिन के द्वारा हुआ था ।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल मे रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था ।

रू भे -विद्युत्माळी, विज्जमाळ, विज्जमाळी, विज्जमाळि, विज्जमाळी ।

विद्योत-स पु [स] १ धर्मऋषि एव दक्षकन्या लवा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

३ देखो 'विद्युत्' (रू भे)

विद्योतन-स पु [स] सूर्य, सूरज । (ना मा)

विद्योता-१ देखो 'विद्युत्' (रू भे)

२ देखो 'विद्युता' (रू भे)

विद्योपरिचर-स पु [स] वायु के अनुमार, कृत नामक वसु का पुत्र ।

विद्रधि, विद्रघी-स पु [स विद्रधि] १ एक प्रकार का फोडा ।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घ'तक फोडा । (अमरत)

विद्रभ-देखो 'विदरम' (रू भे.)

विद्रम-देखो 'विद्रुम' (रू. भे.)

उ०-१ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम ओपमा, जेहा डसण हीरा जोति । —रुकमणी मगळ

उ०-२ गति गयद, जघ केळिप्रभ केहरि जिम कटि लक । हीर डसण, विद्रम अघर, मारु-अकूटि मयक । —ढो मा

उ०-३ (जाणो) मोती लड पोई घरघारं, अघर विद्रम विचिदत रे । चमकं चूनी सारिखा रे, दाडिम कूलीय दीपत रे ।-प च. चौ

विद्रमान-देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

विद्रमी-देखो 'विद्रुमी' (रू भे)

विद्रय-देखो 'विदरम' (रू भे)

उ०-मिळं फोडि तेथीस सुर भीम रं माढहो, अधिकि आण कना अचकि औछाह । जानि उग्रसेन वळिभद्र जिसा जानिया, विद्रवा तरणी घर हुओ वीमाह । —पी. य

विद्रवण-वि.—देने वाला ।

उ०-अपणी खाटी सपति जगत कूं चुलावे, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावे । वडं जगूं मे विरद बोल लोह बाहू की जोम चडि लडावे । आप सबसे आगू वीसूजळ वाहे । —सू. प्र

विद्रवणी विद्रव्यो-क्रि स - १ दान देना, घन लुटाना ।

उ०-उदर दर खण मरं पंस भोगवें भुयगह, हल वहि मरं वहिल्ल हरी जव चरं तुरगह । सूँव धन्न सच मरं वीर चिद्रवें विवह पर,

पडित पढ गुण मरं मूढ भूच रायाहर ।

—नैणसी

२ वाटना, देना ।

उ०-जोगी तेल माहे पडीयो । सोनं रो पोरसी हुवी । हिवं ईया । पोरसी घर में आणि राखियो । सोनी वेचीजे । खाईजे वीद्रवीजे । हिवं दास काढीजे । भठचा राति दिन तपत्या रहे ।

—देवजी वगडावता री बात

क्रि अ.—३ द्रविभूत होना ।

४ दौडना, भगना ।

विद्रवणहार, हरौ (हारी), विद्रवणियो—वि० ।

विद्रविओडो, विद्रवियोडो, विद्रव्योडो—भू० का० कृ० ।

विद्रवीजणो, विद्रवीजवो—कर्म, भाव वा० ।

विद्रवियोडो-भू का कृ — १ दान दिया हुआ, घन लुटाया हुआ. २ बाटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुआ हुआ. ४ दौडा हुआ, भागा हुआ ।

(स्त्री. विद्रवियोडी)

विद्रावण-स. पु —कश्यप एव दनु के पुत्रो मे एक ।

विद्रावी-स पु. [स विद्राविन्] १ भागने वाला ।

२ फाडने वाला ।

विद्रुत-स पु.—ययाति वशीय एक राजा ।

विद्रुम-स पु [स विद्रुमः] १ नव रत्नो मे से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल । (अ मा)

उ०-१ पाका विव मधु समा रे, ओपित विद्रुम जाण रे । मामोल्या जिम रातडा रे, अघर सुचारस खाण रे । —प च चौ.

उ०-२ फिटक-रयण मणि विद्रुम हिगुल वलि हरियाल, मणसिल पारो सुवरण आदि धातु नीहाल । सेदी बनी अरखेटी पलेवो पाखाण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जे खाण । —वृस्त.

२ मूंगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष ।

३ कौपल ।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

रू भे —विद्रम ।

विद्रुमलता-स स्त्री [स विद्रुम +लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य ।

२ मूगा ।

विद्रुमाभा-स स्त्री [स,] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी ।

२ ज्ञान रूपी देवी ।

विद्रुमी-वि.—१ मूंगे का, प्रवाल का ।

२ लाल रंग का ।

रू भे.—विद्रुमी, विद्रुमी, विद्रुमी ।

विद्रोह-स पु [स] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है ।

उ०—वसू प्रचंड दडते प्रचड दडते वहेँ, वितड चड दड दे अदड छडते वहेँ । विमोह मोह मोह मे विद्रोह द्रोहि पे बडेँ, कतात भात कोह मेँ कुकोह कोहि को कडेँ । —ऊ का.

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है ।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव ।

रू भे —विदरोह ।

विद्रोही-वि —१ विद्रोह से सम्बन्धित ।

२ विद्रोह करने वाला ।

रू भे —विदरोही ।

विद्वता-स स्त्री [स.] १ विद्वान या पंडित होने का भाव ।

२ जानकारी, ज्ञान ।

रू भे —विदवता, विद्वता ।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू भे)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तासु, प्रति नवळ जळन विद्वति प्रकास । व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्व, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू भे)

विद्वस-वि [स विद्वस] १ पंडित, विद्वान ।

२ कवि ।

३ चतुर, होशियार ।

विद्वान, विद्वान-स पु [स विद्वान, विद्वस] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला ।

२ बहुत अधिक विद्या पढा हुआ, सर्वज्ञ ।

उ०—छपन लिपि तरणी अलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तरणा सुभासित भणइ, म्वदरसन परदरसन तरण भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसास्त्र वास्त्यायनसास्त्र गरिणतसास्त्र धनु-रवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नसागर करचालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष षाचस्पति, इसउ विद्वानस । —व स.

३ पंडित ।

उ०—टावर आगं नी ती मोठ्यार रे डील रो करार काम आवं, नीं कियी चकवा राजा रो जोर हालेँ अर नी कियी विद्वानं रो समभ के अकल ई काम देवै । अदूभ बाळक सू दुनिया रो कोई ताकत जीत नी सकं अर जै कोई अकलहीण उण सू जीतणरी

थोथी गुमान ई करै तो हारणिया नै आपरी हार रो अगै ई वेरी नी व्हे । —फुलवाडी

रू भे.—विदमान, विदमान, विदवान ।

विद्विस-स पु [स. विद्विप, विद्विष] शत्रु, रिपु ।

विद्वेस-स पु [स विद्वेप] शत्रुता, दुश्मनी, वैर ।

रू भे —विदवेस ।

विद्वेसक-स पु [स विद्वेपक] शत्रुता करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसक ।

विद्वेसणी, विद्वेसिणी-स. स्त्री [स विद्वेपिणी] दु सह नामक यक्ष की निर्माणादि के गर्भ से उत्पन्न आठवीं और अन्तिम कन्या ।

(पौराणिक)

वि —विद्वेस करने वाली या रखने वाली ।

रू भे —विदवेसणी, विदवेसिणी ।

विद्वेसी-वि [स विद्वेपिन्] विद्वेप करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसी ।

विघस—देखो 'विध्वस' (रू भे)

उ०—जाणै वादळा माहै वीजडिआ रा सिला ऊपडिया पाखरा ऊपरै सारधारा फूनधारा वाजी सु ठणणणण जाणै परभात रो भालर ठणकी, नर वगतर विघस हुआ । —रा सा स

विघसक—देखो 'विध्वसक' (रू भे)

विघसण-वि —नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सडण पडण विघसण देहणी, तिए रो किसडी रे आस । खिए एक माही रे जासी विगडी, निम पाणी माहै पतास ।

—जयवाणी

२ देखो 'विधूसण' (रू भे)

विघसणी-वि — नाश करने वाला, विध्वस करने वाला ।

विघसणी, विघसनी—देखो 'विधूमणी, विधूसनी' (रू भे.)

विघसणहार, हारी (हारी), विघसणियो—वि० ।

विघमिओडो, विघसियोडो, विघस्योडो—भू० का० कृ० ।

विघसीजणी, विघसीजनी—कर्म वा० ।

विघसियोडो—देखो 'विधूसियोडो' (रू भे)

(स्त्री विघसियोडो)

विघ-स पु [स विघ] १ तरह, प्रकार, भाति ।

उ०—१ अटकई नह आय बळ, आई जरा अगुढ । आसी जद तू अटकसी, मान किसी विघ मूढ । —बा दा

उ०—२ भडा वात समळै, एण विघ हेंत अकारा । बहसि 'गजण' बोलियो, वरं पौरम जिण वारा । —सू. प्र.

४ तारका-मय युद्ध मे मयासुर पक्षीय एक असुर जिसका वध शिव के पापंद नन्दिन के द्वारा हुआ था ।

५ रावण वध का बदला लेने हेतु, राम का अश्वमेधीय अश्व-हरण करने वाला रावण का मित्र एक राक्षस, जो पाताल मे रहता था और शत्रुघ्न द्वारा मारा गया था ।

रू भे—विद्युत्माळी, विज्जमाळ, विज्जमाळा, विज्जमाळि, विज्जमाळी ।

विद्योत—स पु [स.] १ धर्मऋषि एव दक्षकन्या लवा का पुत्र और स्तनयित्नु का पिता, एक ऋषि ।

२ एक अप्सरा का नाम ।

३ देखो 'विद्युत' (रू भे)

विद्योतन—स पु [स] सूर्य, सूरज । (ना मा)

विद्योता—१ देखो 'विद्युत' (रू भे)

२ देखो 'विद्युता' (रू भे)

विद्योपरिचर—स पु [स] वायु के अनुमार, कृत नामक वसु का पुत्र ।

विद्रधि, विद्रधी—स पु [स विद्रधि] १ एक प्रकार का फोडा ।

२ पेट के भीतर का एक प्रकार का घ तक फोडा । (अमरत)

विद्रभ—देखो 'विदरभ' (रू भे.)

विद्रम—देखो 'विद्रुम' (रू भे)

उ०—१ नासिका सुक चच सरिखी, मुगतफळ सजोति । अहिर विद्रम श्रोपमा, जेहा डसण हीरा जोति । —रुक्मणी मगळ

उ०—२ गति गयद, जघ केळिग्रभ केहरि जिम कटि लक । हीर डसण, विद्रम अघर, मारू-भ्रकुटि मयक । —ढो मा.

उ०—३ (जाणें) मोती लड पोई घरघारें, अघर विद्रम विचिदत रे । चमकें चूनी सारिखा रे, दाडिम कूलीय दीपत रे ।—प च. चौ

विद्रमान—देखो 'विद्यमान' (रू भे.)

विद्रमी—देखो 'विद्रुमी' (रू भे)

विद्रय—देखो 'विदरभ' (रू भे)

उ०—मिळं कोडि तेथीस सुर भीम रै माडहो, अघिकि आण कना अघकि श्रीछाह । जानि उग्रसेन वळिभद्र जिसा जानिया, विद्रवा तणी घर हुश्री बीमाह । —पी अ

विद्रवण-वि.—देने वाला ।

उ०—अपणी खाटी सपति जगत कूं खुलावै, लख लहण सवालख विद्रवण का विरद बुलावै । वडें जगूं मे विरद बोल लोह बाहू की जोम चढि लहावै । आप सबसे आगू वीजूजळ वाहै । —सू. प्र

विद्रवणी विद्रवयी—क्रि स —१ दान देना, धन लुटाना ।

उ०—उदर दर खण मरै पैस भोगवै भुयगह, हल वहि मरै वहिल्ल हरी जब चरै तुरगह । सूंव धन सच मरै वीर विद्रवै विवह पर,

पडित पढ गुण मरै मूढ भूच रायाहर ।

—नैणसी

२ बाटना, देना ।

उ०—जोगी तेल माहै पडीयी । सोनै री पोरसी हुवी । हिर्व ईया । पोरसी घर में आणि राखियो । सोनी वेचीजै । खाईजै वीद्रवीजै । हिवै दारु काढीजै । भठचा राति दिन तपत्या रहै ।

—देवजी वगडावता री वात

क्रि अ —३ द्रविभूत होना ।

४ दौडना, भगना ।

विद्रवणहार, हररी (हारी), विद्रवणियो—वि० ।

विद्रविश्रोडी, विद्रवियोडी, विद्रव्योडी—भू० का० कृ० ।

विद्रवीजणौ, विद्रवीजवो—कर्म, भाव वा० ।

विद्रवियोडी—भू का कृ.—१ दान दिया हुआ, धन लुटाया हुआ. २ बाटा हुआ, दिया हुआ. ३ द्रविभूत हुआ हुआ. ४ दौडा हुआ, भागा हुआ ।

(स्त्री विद्रवियोडी)

विद्रावण—स पु —कश्यप एव दनु के पुत्रो मे एक ।

विद्रावी—स पु [स विद्राविन्] १ आगने वाला ।

२ फाडने वाला ।

विद्रुत—स पु.—ययाति वशीय एक राजा ।

विद्रुम—स पु [स विद्रुमः] १ नव रत्नो मे से एक रत्न, मूंगा, प्रवाल ।

(प्र मा)

उ०—१ पाका विंव मधु समा रे, श्रोपित विद्रुम जाण रे । मामोल्या जिम रातडा रे, अघर सुघारस खाण रे । —प च चौ.

उ०—२ फिटक-रयण मणि विद्रुम हिंगुल वलि हरियाँल, मणसिल पारी सुवरण आदि धातु नौहाल । सेढी बन्नी अरखोटी पलेवी पाखाण, भोडल तुरी ओस भूमि पाहण जै खाण । —वृस्त.

२ मूगे का वृक्ष, मुक्ताफल का वृक्ष ।

३ कोपल ।

४ एक प्रकार का गन्ध द्रव्य ।

रू भे—विद्रुम ।

विद्रुमलता—स स्त्री [स विद्रुम +लता] १ नलिका नामक गन्ध द्रव्य ।

२ मूगा ।

विद्रुमाभा—सं स्त्री. [स,] १ विद्रुम रत्न की शोभायुक्त देवी ।

२ ज्ञान रूपी देवी ।

विद्रुमी—वि —१ मूगे का, प्रवाल का ।

२ लाल रंग का ।

रू भे.—विद्रमी, विद्रुमी, विद्रमी ।

विद्रोह-स. पु [स] १ वह कार्य जो शत्रु को हानि पहुंचाने के उद्देश्य से किया जाता है ।

उ०—वसू प्रचंड दडते प्रचंड दडते वहुँ, वितड चड दड दे अदड छडते वहे । विमोह मोह मोह मे विद्रोह द्रोहि पे बडे, कतात भात कोह मे कुकोह कोहि को कडे । —ऊ का

२ वह आचरण या व्यवहार, जो राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जाता है ।

३ क्रान्ति करने हेतु किया जाने वाला उपद्रव ।

रू भे —विद्रोह ।

विद्रोही-वि — १ विद्रोह से सम्बन्धित ।

२ विद्रोह करने वाला ।

रू भे —विद्रोही ।

विद्वता-स. म्त्री [स.] १ विद्वान या पंडित होने का भाव ।

२ जानकारी, ज्ञान ।

रू. भे —विद्वता, विद्वत्ता ।

विद्वति—देखो 'विद्युत' (रू भे)

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तामु, प्रति नवळ जळद विद्वति प्रकास । त्रति चलति सुगति दुति अमित त्रिद्व, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा रू

विद्वत्ता—देखो 'विद्वता' (रू भे)

विद्वस-वि [स विद्वस] १ पंडित, विद्वान ।

२ कवि ।

३ चतुर, होशियार ।

विद्वान, विद्वान-स. पु [स विद्वान, विद्वान] १ अपनी आत्मा का स्वरूप जानने वाला ।

२ बहुत अधिक विद्या पढा हुआ, सर्वज्ञ ।

उ०—छपन लिपि तणी अलवि करइ, पात्रीस महाकाव्य तणा सुभामित भणइ, स्वदरसन परदरसन तणा भाव प्रकासइ, आगमारथ ज्योतिस सकुनसाम्त्र वास्त्यायनसास्त्र गणितसास्त्र धनु-रवेदायुरवेदादि सास्त्ररत्नमागर करचालसरस्वती, महायोगनाथ सिद्ध, प्रत्यक्ष वाचस्पति, इसउ विद्वानस । —व स

३ पंडित ।

उ०—टावर आग नी तो मोळ्यार रे डील रो करार काम आवे, नी किणी चकवा राजा रो जोर हाले अर नी किणी विद्वान रो समझ के अकल ई काम देवे । अबूझ बाळरू सू दुनिया रो कोई ताकत जीत नी सके अर जे कोई अकलहीण उण सू जीतणरो

थोथो गुमान ई करे तो हारणिया नै आपरो हार रो अग ई वेरी नी व्हे । —फुलवाडी

रू. भे.—विदमान, विदमान, विदवान ।

विद्विस-स. पु [स विद्विप, विद्विप] शत्रु, रिपु ।

विद्वेस-स. पु [स विद्वेप] शत्रुता, दुश्मनी, वैर ।

रू. भे —विदवेस ।

विद्वेसक-स. पु [स विद्वेपक] शत्रुता करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसक ।

विद्वेसणी, विद्वेसिणी-स. स्त्री. [स विद्वेपिणी] दुसह नामक यक्ष की निर्माणादि के गर्भ से उत्पन्न आठवीं और अन्तिम कन्या ।

(पौराणिक)

वि —विद्वेस करने वाली या रखने वाली ।

रू भे —विदवेसणी, विदवेसिणी ।

विद्वेसी-वि [स विद्वेपिन्] विद्वेप करने वाला, शत्रु ।

रू भे —विदवेसी ।

विघस—देखो 'विध्वंस' (रू भे)

उ०—जाणीं वादळा माहे वीजडिआ रा सिला ऊपडिया पाखरा ऊपरें सारघारा फूलघारा वाजी सु ठण्णणण जाणीं परभात रो भालर ठण्णकी, नर वगतर विघस हुआ । —रा स

विघसक—देखो 'विध्वंसक' (रू भे)

विघसण-वि —नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ०—सडण पडण विघसण देहणी, तिण रो किमडी रे आस । खिण एक माही रे जासी विगडी, जिम पाणी माहे पतास ।

—जयवाणी

२ देखो 'विधूसण' (रू भे)

विघसणी-वि — नाश करने वाला, विध्वंस करने वाला ।

विघसणी, विघसणी—देखो 'विधूसणी, विधूसणी' (रू भे.)

विघसणहार, हारी (हारी), विघसणियों—वि० ।

विघसिणी, विघसिणी, विघसिणी—भू० का० कृ० ।

विघसीजणी, विघसीजणी—कर्म वा० ।

विघसिणी—देखो 'विधूसिणी' (रू. भे)

(स्त्री विघसिणी)

विघ-स. पु [स विघ] १ तरह, प्रकार, भाति ।

उ०—१ अटकाई नह आय बळ, आई जरा अगूढ । आसी जद तू अटकसी, मान किमी विघ मूढ । —वा दा

उ०—२ भडा वात समळें, एण विघ हूत अकारा । वहुसि 'गजण' वोलियो, वधे पौरस जिण वारा । —सू. प्र

उ०—३ अगसत जेम नेम बल्ल श्रोडा, छात दिली दल जल विण छोडा । 'लखी' 'महेस' कहै विध लाखा, रवद अवध बंध जिम राखा । —रा. रू

उ०—४ असपत राव ओलीभियो, विध जिण वाकम होइ । कुमति पग ऊपर कहै कही सुमती कोइ । —गु. रू व

२ ढग, तरीका, प्रकार ।

उ०—१ नारि न की पुरखा, चतर न मूरखा, वेद न च्यारि वचदा है । अणभं पद बोल्या, अणर खोल्या, विध विरळा वूभंदा है । —अनुभववाणी

उ०—२ वार विकरार सिरदार विध वाहियो, समर भर भार घर भार सूरै । सार सेलार ऊमार भभार सर, पार चौघार कर पार पूरै । —नाथी सांदू

उ०—३ हिवै ईयै एक कोट करायी । साथ सरब लोक हुता, सु अठै ही ज रह्या । ईयै री साहिबी हुई । साढ्या रा वरग कीया । सु साढ्या रं प्रथीराज री दाग दीयो । साढ्या रा वरग घणा हूवा इयै विध एथ रहै । —जागळू री वात

३ वृतान्त, हकीकत ।

उ०—१ आखी 'गोदें' 'इद्र' सू, विध सारी बघणौर । तुरत विचारी कूच री, सोच न धारी श्रीर । —रा. रू

उ०—२ सो वाचिया सुणी विध सारी, भाई लिखी अवस्था भारी । साह मुगळ पूछै सरसावै, अवर 'सवाई' वेध उठावै । —रा. रू

४ कारण ।

उ०—सुणी हास्य विध कहै नरेसुर, गनिका ग्रेह आसण जोगेसुर । वनवद गिर अगार नह वसियो, हू श्री देख कतूहळ हसियो । —सू प्र.

५ शल । (अ. मा)

६ समूह, व्यूह । (अ. मा)

७ देखो 'विधि' (रू. भे.) (ना. मा)

उ०—१ कहै ताम कमधज, सुणी साहिब छत्रपत्ती । विध विचार धारियो, सकी तिण आर सुमत्ती । —रा. रू

उ०—२ अवनी रोग अनेक, ज्यारा विध कीना जतन । इण प्रकति री अनेक, रची न ओखद राजिया । —किरपाराम

उ०—३ कवि प्रोहित मत्री प्रधान, विध अत्र विचारै । रही मात चहुवाण, धरज हत वात उचारै । —रा. रू

उ०—४ विध रा जाण गाय रा वीकम, पारिख बाण हाथ रा पाय । जुध रा भीम खळा रा गजण, 'नाथ' रा बुध गणनाथ ।

—आईदान पाल्हावत

८ देगो 'विधु' (रू. भे.) (अ. मा)

रू. भे.—बिद्ध, विध, विधि, विद, विद्ध, विद्धि ।

विधअक—स पु—देखो 'विधअक' (रू. भे.) (अ. मा)

विधकर—देखो 'विधकर' (रू. भे.) (अ. मा., ह. ना. मा.)

विधचूड, विधचूड—स पु. [स-विधाचुण्ट] कपट, घोखा । (अ. मा)

विधत—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

उ०—वप ब्रह्म विधत री सरव वुसुत री तुं गगा गावतरी । पारवती निमा हेम री पुतरी सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी । —पी अ

विधनयण—देखो 'विधनयण' (रू. भे.) (क. कु. वो.)

विधना—स पु [स विधि] ब्रह्मा, विधाता । (डि. को.)

उ०—१ नहचै होय निसक, चित नह कीजे बल-विचल । अँ विधना रा अक, राई घटै न राजिया । —किरपाराम

उ०—२ सुदर बदन नयन अग मानी, विधना आप सवारी । मीरां के प्रभु गिरधरनागर, तुम जीतै हम हारी । —मीरा

उ०—३ अब ती जिय ऐसी बनि आई, विधना रची सोइ होय री । अरी जै मेरी यह लोक जात है, वह परलोक जिन जाव री ।

—मीरा

उ०—४ कै आ पटकी ऊपर पडगी कैआ भावी रची राम । कै आ विधना लेख लिखायो, कै आ तन्न जच्ची राम ।

—करणीदान बारहठ

रू. भे.—विधना ।

विधरम—देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

विधरमी—देखो 'विधरमी' (रू. भे.)

विधरम्म—स पु [स. विधरम्म] पराया या दूसरा धर्म ।

वि.—१ जो धर्मशास्त्र मे निन्दित हो ।

२ जिसका कोई धर्म न हो ।

रू. भे.—वेधरम, विधरम, विधम, विधम्म ।

विधरमी—वि. [स. विधम्मिन्] १ अपने धर्म के विपरीत आचरण करने वाला ।

२ पराये धर्म का अनुयायी, धर्मभ्रष्ट ।

रू. भे.—विधरमी, विधमी, विधमी ।

विधरेख, विधरेखा—सं स्त्री. [स. विधि+रेखा] भाग्य मे लिखा हुआ लेख, विधाता की रेखा, कर्मरेख ।

उ०—पिण भावी अति प्रबळ, सकळ बस प्राण असेखा । हुअणहार सिध करै, वार न घरै विधरेखा । —रा. रू.

विधवत—देखो 'विधवत' (रू. भे.)

उ०—१ कहियो त्रप प्रज भय किए सु, ज्वाळामुखी न पूजै जिएण सु । भाणउदीप विगत सुण भारी, विधवत सकति पूजि विसतारी ।

—सू. प्र

उ०—२ नाखिन्न सुर ससि अर मुनिद्र, आविया वरुण कुम्भेर इद्र । विप्र वेद मत्र विधवत विचार, आहूत वेद सुरमुख अपार ।—सू प्र विधवा—स स्त्री [स] वह स्त्री, जिसके पति का स्वर्गवास हो गया हो, पतिहीना स्त्री ।

उ०—१ वारी श्रेक विधवा भूवा अणूती धनवती ही । वं उण मार्य ठगाई री पासो फेंकणी चायी । श्रेक भाई मोको देखनै छानै भूवा रै पाखती गियो । भूवा री हाजरी मे श्रेक पग रै पाण ऊभो रेंती ।

—फुनवाडी

उ०—२ उण विधवा वामणी री गळाई कळजुग री घरम निभाया ईं आपारी जमारी सुचरंला अर सतजुग रें मरियोडा ढोर री पछ फालिया धन अर वेटा दोना सू हाथ घोणा पडैला । — फुनवाडी

उ०—३ सयळा मिनख अर वस्ती री तूमार जोया पछे ईं म्है फगत धन मार्य आस गडाय राखी ही । वेटी । विधवा री सासरी, पीवर, माईत अर भगवान फगत धन इज है । —फुलवाडी

उ०—४ वापडी भोळी- डाळी किन्यावा नै फुडकें में नाख'र वेगीसी विधवा वणा देवै । सुवाम री नी रडापै री चवरी चाई ।

—दसदोख

रू भे —वधवा, विदवा, विधवा ।

विधवापण, विधवापण, विधवापणो—स पु —विधवा होने की अवस्था बंधव्य ।

उ०—१ आप एकली मरनै फकत म्हनै हीज विधवापणो नही देसी धणी जणिया विधवा हुसी तद म्हारी ही चूढो ले जासी । चूढा री दूसरी प्रयोजन लेजावणी सो हू सती होवसूँ सो चूढा सहत सार्य ले जासी । —वी स टी.

उ०—२ गाई विधवापण ग्रह, हू न करुं तन हाण । पीह जिण लाजै अमरपुर सूरजमल सुरताण । —पा प्र.

रू. भे —विधवापण, विधवापण, विधवापणो ।

विधवा-वियाँ, विधवाविवाह—स. पु —पुनर्विवाह ।

उ०—“तो कोई परणीजियोडी ईं परणीजै है क्या । घरम हूव को जावै नी ?” “धोनै घरम री टाग पूछ री तो ठा श्री कोयनी, पराया घर ऊनै पाणी-सू वाळता फिरी ही ।” “ती यें कराय दिया विधवा-विया ? हू श्री देखूला ? —वरसगाठ

विधवासरम, विधवालन—स पु [म विधवा+आश्रम] वह स्थान, जहा विधवा स्त्रियों के पालन-पोषण एव शिक्षा आदि की व्यवस्था हो ।

विधविधान—वि —विधिपूर्वक, विधिवत् ।

उ०—वाणातरा साह नै परणायी । जठै सारी विध-विधान करनै सगा डायची दीघो । —साहूकार री वात

विधवल्ल—स. पु [स. विधि-वृक्ष या वृक्ष-विधि] पलास नामक वृक्ष । (अ मा)

विधसरवा, विधल्लवा—स पु [म वृद्धश्रवस्, वृद्धश्रवा] इन्द्र । (अ. मा, ना मा, ह ना मा)

विधाण, विधान—स पु. [स विधान] किसी कार्य का आयोजन ।

२ कार्य करने की रीति, व्यवस्था व सम्पादन ।

३ ढग, तरीका ।

उ०—मालती सेवती केतकी प्रफूलमान । फूलू की सोभा असमान के तारु का विधान । केवडू की वाडी सिरु का विकास । नाफरमा हजारा श्रीर गुलहूवाम । —सू. प्र.

४ तरकीब, उपाय ।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा ।

उ०—छत्रप्पती उछाह मे, धनेस माल ऊढमें । वेदोगत विधानयं, दुजा अनेक दानय । —सू प्र.

उ०—२ तपवत भूप निज धाम तत्र, छज कनक सिधामण चमर छत्र । दुतितव करै सन्नान दान, विध राज रीत सासत्र विधान ।

—सू प्र.

६ हाथी को मस्ती मे लाने हेतु खिलाया जाने वाला खाद्य पदार्थ ।

७ धन, सम्पत्ति ।

८ पूजा, अर्चन ।

उ०—विदा हुए पाधारियो, पुद्दकर मुरधर-पत्त । दान सिनान विधान दिन, पुनि मनि इद्र प्रकृत । —रा. रू.

९ आज्ञा, आदेश ।

१० किसी देश के सर्वोच्च कानूनो का संग्रह ।

११ वाद्य ।

१२ रचना वनावट ।

१३ सुख देवो मे से एक ।

१४ नियम, कानून ।

१५ कारण ।

उ०—आहार माहै आवता ही, जीव इत्ता दिन ज्यान । कीडी ती निरबुद्धि करै, वलि माखी वमन विधान । —घ व अ

उ०—विन्दै पल क्रसण सुकल विधान, विन्दै वपु अग सुदक्षिण वाम । ब्रह्मा दक्षण अग वदीत, निपायी दक्ष प्रजापति मीत ।

—रा. व

१६ एक प्रकार का शस्त्र विशेष । (ना द)

वि —१ समान, तुल्य ।

२ रचनाकर्ता, रचयिता ।

उ०— मूँ अयल सकल जगती प्राणी, तूँ सबल सब है सत्तिवाण ।
मूँ दास सदा तेरा स्यामी, प्राखँ जग री है तूँ विधान ।

—करणीदान बारहठ

रू भे — विधान, विध्यांन, विहाण ।

विधानसप्तमी, विधानसप्तमी, विधानसातम—स पु [सं विधानसप्तमी]
माघ शुक्ला सप्तमी से आरभ करके अगले वर्ष की पीप शुक्ल सप्तमी
तक पूरे एक वर्ष तक किया जाने वाला सूर्यदेव का यत् विशेष ।

विधानीक—स पु — डिगल गीतो की रचना का ढग विशेष जिसमे क्रम-
क्रम से प्रथम द्वाने के तीन चरण मे जो बात कही जाती है उसका
स्पष्टीकरण चतुर्थ चरण मे किया जाता है ।

उ०—तुक तुक मे क्रम सी तवै, अवर अवर विघ जाण । सभ
चौथी तुक नाम सी विधानीक वालाण । —रा. रू

विधांसणो, विधासबो — देखो विधूसणो, विधूसबो' (रू. भे)

उ०—१ तठा उपरात करि नै राजान सिलामति माखिरा नकासिमा
सूअर भाखरा रा मोढा फाड फाडनै निकळिमा छै । सूअरें रातें
खून किआ छै । सूरै गुलवाडि विधासिया छै । —रा सा स

उ०—२ भूअर तू भाइयो भगता रे, तू दातार नही डिंगता री ।
ब्रज रे देस वजाडी वासी, बडे भगत कजि वावि विधांसो ।

—पी. अ

उ०—३ वडो वड आरभु ज कुळ भार, घरा सिणगार इसी लल-
धीर । वहे सत्र-वाट नमावण नाट, विधासण घाट सत्रा वर वीर ।

—ल. पि

उ०—४ विधांसइ देसइ राकस बस, कीयो ते कस । दहकध कियो
घडे मुरलोक तणी सहि घट, वडो कोइ डील नमो वंराट ।

—पी. अ

विधासणहार, हारो (हारी), विधासणियो—वि० ।

विधासिओडो, विधासियोडो, विधास्योडो भू० का कृ० ।

विधासोजणो, विधासोजबो—कर्म या० ।

विधासियोडो—देखो विधूसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विधासियोडो)

विधा—स स्त्री [स] १ ढग, तरीका ।

२ तरह, प्रकार, भाति । (समा)

३ किस्म, जाति ।

४ धन, सम्पत्ति ।

५ हाथी या घोडे का चारा ।

६ किराया, भाडा ।

७ मजदूरी ।

८ रचना ।

उ०—नारी, सोवै है अपरौ घर, साई रं साथ गुहाणो है । नारी है
विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहाणो है ।

—करणीदान बारहठ

६ देवो 'विधा' (रू. भे)

१० देवो 'विदा' (रू. भे)

उ०—अरि राभे हरि पया आवै, जोघ विधा अकबर छल जाण ।
बिहू चौतीस मुळा क्रम बघण, भागा भाण-हरै मुळ भाण ।

—गोपाळ मीसण

विधातनताका—म पु [स विद्योतन+ताका या विद्या+तन+ताका]
चन्द्रमा । (डि को)

विधाता—वि [स विधात्] १ रचना करने वाला, सृष्टिकर्ता ।

उ०—पै'लो परमेसर याद करघो, 'है जगत पिता है जगदीसर । तू
अग जग भाग विधाता है, तू ही बाहर तू ही भीतर ।

—करणीदान बारहठ

२ देने वाला, दाता ।

उ०—गुर दयाळ दीन गुर दाता, गुर मवहन के श्यान विधाता ।
गुर है दया पाल गुर देवा, या गुर की मिळ करीय सेवा ।

—अनुभववाणी

३ प्रबन्ध या व्यवस्था करने वाला ।

सं पु —१ ब्रह्मा । (ना मा, ह ना. मा)

उ०—१ अजसं कनक भूखण पहर न्न अवर, कनक में विधाता
अकूट कीधो । लहर हिक सरण हित भभीखण रक लख, दान गढ
लक अणसव दीधो ।

—र. उ. प्र.

उ०—२ इण भात नख-सिख सूधा सोळें सिणगार कियो वारे
आभूखण विराजिया छै । जाणें इद्र-लोक री अपछरा, रूप री रमा,
आसमान री ऊनरी पडो । चित्राम री पूतळो, विधाता हाथ सू
सगारी ।

—रा. सा. सं.

उ०—३ देवी मद्रछा माइया जग माता, देवी ब्रह्म गोवींद समु
विधाता । देवी सिध्दि रं रूप नव-नाथ सार्थ, देवी रिध्दि रं रूप
धनराज हार्थ ।

—देवि

उ०—४ दसकघर आता बुघ के दाता, वचन विधाता कंवाता ।
सो नाह सुहाता, परजळ गाता, उरलै, लाता, मुरळाता ।

—भगतमाळ

२ विद्वानु ।

३ शिव, शकर ।

४ कामदेव ।

५ विश्वकर्मा ।

६ अगु एव रयाति के ससर्ग से उत्पन्न पुत्र ।

वि वि —इसके दूसरे भाई का नाम घाता था । इन दोनों ने

नियति और आयति नामक मेरु पुत्रियो से विवाह किया था । विधाता व नियति के गर्भ से भृकण्डु नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था । कमलो मे निवाम करने वाली विष्णु पत्नी लक्ष्मी इनकी बहिन थी । मतान्तर से विधाता व नियति के गर्भ से प्राण नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

७ प्रारब्ध, भाग्य ।

८ पञ्चित नामक अग्नि का पिता व क्रिया का पति एक आदित्य, जो आपाद या मार्गशीर्ष मास मे प्रकाशित होता है ।

स स्त्री [स विधातृ] ६ मदिरा, चागव ।

१० ब्रह्मा की पत्नी सरस्वतीरूपा ।

रू भे —विधाता, वेहा, विद्याता, विद्यातानाय, विघत, विधातानाय, विधात्र, विधात्रा, विधात्री, विघ्याता वेह वेहा ।

विधातानाय—देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—विधातानाय वण लेख अवरौ वरी, विया राघव करी अचळ वाता । हार ग्रीवा तणा देख भाला हियै, हार वारण लिया रही हाता ।
—कल्याणसिंह भाला री गीत

विधात्र, विधात्रा, विधात्री—२ देखो 'विधाता' (रू भे)

उ०—१ श्रेणी न्याति नारद ह्वड, उत्तम अपर विधात्र । जिहा जिमतु तिहा ऊठतु, भाजी भोजन-पात्र । —मा का प्र.

उ०—कुम्हरी कारण हीयडइ घरइ, थई ऊपराठी आसू भरइ । कुंभरी तणउ अग खळभळइ, लिल्यउ विधात्रा तै किम टळइ ।
—का दे प्र

विधायक—वि [स विधाक] १ कानून बनाने वाला ।

२ व्यवस्था करने वाला ।

३ रचना करने वाला सृष्टि कर्ता ।

उ०—चतुरमुख चतुरवरण चतुरात्मक, विग्य चतुर जुग विधायक । सरवजीव विस्वकृत ब्रह्मासू, नरवर हस देहनायक । —वेलि

स पु —विधान सभा का सदस्य ।

रू भे —वधायक ।

विधारा—सं स्त्री —दक्षिण भारत में बहुतायत से मिलने वाली एक प्रकार की लता ।

विधि—स. पु. [स विधि] १ काम करने की रीति, क्रिया या व्यवस्था ।

उ०—१ आगळि पित मात रमती अगणि, काम विराम छिपाडण काज । लाजवती अगि एह लाज विधि, लाज करती आवै लाज ।
—वेलि

उ०—२ प्रतिदिन होत वेद विधि पूजन, घुरियत तत आनळ सिसर घन । धूप दीप नैवेद पुस्य फळ, कस्मीरज मलयज नागज कळ ।
—मे म

२ तरह, प्रकार भाति ।

उ०—१ दिश्री सेत वरदान तू, परमेसरि प्रस्ताव । राजान री रस कथा, विधि कहि वात वणाव । —रा सा स

उ०—२ दुविधि अन पल त्रिधा, साग पच मास धारण । गौ रस जुग विधि गिणित, मिन्ट गति ए कवि चारण ।
—रा सा स

उ०—३ आप इमी हित चित इकतारी, नपती कही आण सुजि नारी । देता द्रव करता जुघ दावै, आणौ जेण तेण विधि आवै ।
—सू प्र

३ आज्ञा, आदेश ।

४ कार्यक्रम, प्रणाली, ढग, नियम, कायदा ।

उ०—१ मिळि मत्री परधान में, विधि दक्खे विचचार । जळ र-खण गढ जोधपुर, कै रक्खौ जोधार । —गु. रू. व

उ०—२ तव रत्नमणीजी डार्व पास वंसाण्या । ज्यौं विधि छै त्यौं चोल वाचा लै । ज्यौं कही छै त्यौं करि नै विवाह पूरण कीयी । तिहि वेळा वेद का पठणहारा । मुंहमागी सु नवही निधि पाई ।
—वेलि टी

उ०—विधि सहित वधावै वाजित्र वाचै, भिन भिन अभिन वाणि मुख भाखि । करै भगति राजान क्रिसन ची, रजरमणि रूखमिणि ग्रह राखि ।

५ धर्मशास्त्र की आज्ञा ।

६ ढग ।

उ०—सहिजि उल्लवइ सुर सरी, नोकन नेडी थाइ । वज्र तणौ विधि अगमइ, कुसुम सरीखी काय । —मा कां प्र

७ धार्मिक विधान ।

८ भेद, गहन्य ।

उ०—ताहरा आ बोली, "न हू सासरं वहू, ना पीहर वेटी, अय विचाळं ऊभी छू । ताहरा श्री बोलियो, "ईयै री जाव कीसू ? युं क्यु ऊभा ? मोनु थाहरै मन री विधि कही ।"
—कावळी जोईयो नै तीही खरळ री वात

९ सृष्टि, रचना ।

१० सृष्टिकर्ता, विधाता, ब्रह्मा । (ह ना मा)

उ०—१ बोल नवाव सरस द्रढ वघै, सुल पितु हूत महा छळ सघै । यू रिम सूरत मून प्रवचै, नेम लियो विधि जेम निमघै ।
—रा रू

उ०—२ जोग नीद वस भयै निरजन, गज्जे असुर पितामह गजन । आकृति विकट निकट बलि आयै, काडि दसन विधि असन धिकायै ।
—मे म.

७०—३ नारी सोर्व है अपर्यै घर, साईं रं साथ सुहायी है ।
नारी है विधि री अनुप विधा, नारी री अलग कहाणी है ।

—करणीदान वारहठ

- ११ भाग्य, प्रारब्ध ।
१२ वैद्य, हकीम ।
१३ विष्णु का नामान्तर ।
१४ विधान, नियम ।

७०—१ उरदेव समरथ एक, उतपात पेख अनेक । असहाय धान
आपार, विधि भरम क्रम विसतार । —रा रू

७०—२ करता अरु अकरता तिरगुण, खग ब्रह्म माई सगुणनिर-
गुण । विधि निखेध खगम होई, सब्द ब्रह्म द्रस्टा निज सोई ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

७०—३ विधि निखेध करम नहिं क्रिया, बुद्धि उगत थकाणी ।
संत सुखराम परम प्रकासी, आपी कू आप पिछाणी ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

७०—४ मयणा कहै कर जोडि नै, भगवत् । प्रछू तुम्ह, ऊजमणा
नी विधि कहाँ, समझावीनं मुक्त । मुनि कहै साभळ साविका,
एह नी विधि छै भुरि, नाम मात्र तुम्ह नै कहू, पामिस सुख भरपूरि ।

—श्रीपाल रास

- १५ कानून, कायदा ।
१६ साहित्य मे एक अर्थलकार ।
१७ व्याकरण में किसी को कुछ करने के लिए दी गई आज्ञा का स्वरूप ।

१८ पीला ।* (डि को)

१९ ध्वेत ।* (डि को)

२० देखो 'विध' (रू भे)

२१ देखो 'विधु' (रू भे)

रू भे—विद्ध, विध, विधि, विद्धि, धधी, विद्धि, विध्य विह ।

विधिग्रन्थ—स पु. [स. विधि+ग्रन्थ] प्रारब्ध, भाग्य ।

रू भे—विधग्रन्थ ।

विधिकर—स. पु.—चाकर, नौकर, सेवक । (अ मा, ह ना मा.)

रू भे—विधकर ।

विधिग, विधिग्य—स पु [स. विधिज्ञ] शास्त्रोक्त एव विधि के विधान
को जानने वाला, पंडित । (ह ना मा)

विधिनयन—स पु [स विधिनयन] सूरज, सूर्य । (ह. ना मा)

रू भे.—विधनयण ।

विधिपाठ—स पु [स] मूदंग के चार वर्णों मे से एक ।

वि वि.—इसके चारो वर्णों के नाम-पाठ, विधिपाठ, कूटपाठ, श्रीर
खडपाठ है ।

विधिपाठक—स पु [स] शास्त्ररीति का पाठ करने वाला या बताने वाला ।

७०—विधिपाठक सुक सारस रस वल्लक, कोविद खंजरीट गतिकार ।
प्रगलभ लाग दाट पारैवा, विदुर वेस चक्रवाक विहार । —वेलि
२ प्राधुनिक कानून का अध्ययन करने वाला या कानून बताने
वाला, वकील ।

विधिपुत्र—स पु [स विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र नारदमुनि ।

विधिपुर, विधिपुरी—स पु. [स विधि+पुरी] ब्रह्मलोक ।

विधिपूजा—स. स्त्री [सं] घन प्राप्ति हेतु पौष मास की शुक्ल पक्ष
की द्वितिया को की जाने वाली ब्रह्मा की पूजा, नक्त व्रत ।

विधिभेद—स. पु [स विधि+भेद] साहित्य मे उपमा-अलंकार का एक
दोष विशेष जो उपमेय और उपमान के धर्म, गुण आदि का मेल
ठीक नहीं बैठने पर माना जाता है ।

विधिराणी, विधिरानी—स. स्त्री [स. विधिरानी] ब्रह्मा की पत्नी,
सरस्वती ।

विधिलोक—स. पु. [स विधि+लोक] ब्रह्मलोक, मत्स्यलोक ।

विधिवत्—क्रि वि. [स विधिवत्] उचित पद्धति के अनुसार, विधि-
पूर्वक ।

रू भे.—विधवित ।

विधिवदन—स पु [स] चार की सख्या ।*

विधिवधू—स. स्त्री [स. विधि+वधू] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती ।

विधिवाहन—स. पु [स विधि+वाहनम्] ब्रह्मा की सवारी, हस ।

विधिसार—स पु—दिन्दुमार नामक राजा, जो क्षेत्रज राजा और
मतान्तर से क्षत्रीजस् राजा का पुत्र था ।

विधी—१ देखो 'विधि' (रू भे.)

२ देखो 'विधु' (रू. भे) (अ मा)

विधुसणी, विधुसवी—देखो 'विधसणी, विधूसवी' (रू भे.)

विधुसणहार, हारो (हारी), विधुसणियो—वि० ।

विधुसिओडो, विधुसियोडो, विधुस्योडो—भू० का० कृ० ।

विधुसोजणो, विधुसोजवो—कर्म वा० ।

विधुसियोडो—देखो 'विधुसियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विधुसियोडो)

विधु—स. पु [स] १ चन्द्र, चन्द्रमा । (नां. मा, ना डि. को)

७०—१ अमरत दध नह तिम अघर, विधु यिमरत न वखाण । कै
जन अजरामर करण, जस हर यिमरत जाण । —र ज प्र.

चढ़े । वरयावर पावुष राज विधु सिएगारित सूरजमाल सिधु ।

—पा प्र

विधूसरणी, विधूसरणी—देखो 'विधूसरणी, विधूसरणी' (रू भे)

उ०—१ जिम धायी जोगेस, वसुह्द दिल जयाग विधूसरण । जिम धायी ग्रह बाण, पत्य गो ग्रह छाडावण । —गु. रू व

उ०—२ वाजे बकी रोड के भ्रणाडे रूधो खासगाड़ा, जगी होदां सूधा के पनागा पाडे जूथ । जोम आडे लागी चौडे घाडे आडे विजू-जळा, विधूसे विभाडे ताडे गनीमा बिरुथ । —हुकमीचद विडियो

उ०—३ दिली साहा भजणी गजणी दिली लाग दावे, टाळ न की जीव लागा दादीवाद टेक । केका घडा विधूसे कवाणा चिले ग्रहे केवा, आसगे अनेका अेही भूरी वाप हेक ।

—किरपाराम कवियो

उ०—४ लोयणा पळाका नगा सावळा भळाका लेती, सुठगा प्रोयणा बाजा पाखरा सानेत । चीर अगा पीन अगा नीसाण मेछ घडा चगी, विधूसे पिलगा चा अगा 'चद' रो वानेत ।

—र.च देवीसिध सेसावत री गीत

उ०—५ रीक रीक हूरा वरा चारगा रम्माडे रगा, जोगणी अगाडे जगा जम्माडे म जूथ । तेग आडे लागी चौडे घाडे खळा आडे तू ही, बीभाडे विधूसे पाडे पट्टाणा बरुथ । —हुकमीचद विडियो

विधूसरणहार, हारी (हारी), विधूसरणीयो—वि० ।

विधूसिओडो, विधूसियोडो विधूस्योडो—भू० का० कृ० ।

विधूसीजणी विधूसीजनी—कर्म वा० ।

विधूसियोडो—देखो 'विधूसियोडो' (रू भे)

(रत्री विधूसियोडो)

विधेय—वि [स] १ जिसका करना उचित हो, विधान के योग्य, कर्तव्य ।

२ जिसे जानने का विधान हो ।

३ आशा के वशीभूत, आज्ञापालक ।

४ व्याकरणानुसार वह शब्द या वाक्य जिसके द्वारा किसी के सम्बन्ध में कुछ कहा जाय ।

५ योग्य । (व भा.)

६ प्रेयसी के द्वारा प्रिय के मान-मोचनार्थ किये जाने वाले दो उपचार विशेष, जिसमें उपेक्षा, घृष्टता, भय, हर्ष आदि दिखला कर प्रकारान्तर से अनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है । (साहित्य)

रू भे —विधेय ।

विधेयक—स. पु [स विधेय+कच्] विधान बनाने वाली परिपद या सभा के सामने विचारार्थ प्रस्तुत किया जाने वाला विधान या कानून का प्रस्तावित रूप ।

रू. भे —वधायक ।

विधेयकरम—स पु [स विधेय+कर्म] १ उचित कार्य, कर्तव्य ।

२ नियमपूर्वक कार्य, वैधानिक कार्य ।

३ शास्त्रोक्त नियमानुसार कर्म ।

उ०—दोही सहोदरा एक नदी रं नीर उचिन जळ देगि सायकाळ री विधेयकरम करण पाळा श्री चलामा । —व भा.

विधेयाविमरस—स पु [स विधेय+प्रविमर्श] गार्हिय मे, विधेय अग को अग्रधान अंन प्राप्त होने पर उपग्र होने यान्ता वाक्य दोष ।

विधोगत, विधोगति—म पु —१ ढग, तरङ्ग, प्रकार ।

उ०—वाचिमा जिके इतरा विचार, ममके लग्नरति समकरार । प्रसतार फहां गाहा प्रकार, ह्यि सुगो विधोगति सुणगहार ।

—स वि.

२ विधिपूर्वक, नियमपूर्वक ।

उ०—१ पुत्र जिण्हि जे जे हूह, ते परि सघली कीड । कोडि भरिउ कुरगदत्त, दान विधोगति दीड । —मा. कां प्र

उ०—२ ब्रह्मपणउ गणि व्यासनु माघन महीपति वासि । क्या विनोद विधोगति रीभ्रवितु गुण- रासि । —मा कां प्र.

उ०—३ ऊभित घिउ आटर करो, भूप करइ अभियद । वसतु दीड विधोगतिह, माघव आसीरवाद । —मा. कां प्र.

उ०—४ वंध विधोगति जे लहइ, ते ते करइ उपाय । काचा सोना कापीड, रजवीइ रस राय । —मा कां प्र.

विधोरणी, विधोरणी—क्रि अ —मिट जाना, मिटना ।

उ०—आग्रर पिय रं नाम के, लिगे कळेजा माहि । हरती पाणी ना पिक, मतहि विधोरा जाहि । —जलाल-बूबना री बात

विधोरणहार, हारी (हारी), विधोरणीयो—वि० ।

विधोरिओडो, विधोरियोडो, विधोरघोडो—भू० का० कृ० ।

विधोरीजणी, विधोरीजनी—भाव वा० ।

विधोरियोडो—भू का कृ —मिटा हुआ ।

(स्त्री विधोरियोडो)

विधोविध, विधोविध—क्रि वि.—१ विविध प्रकार से, भिन्न-भिन्न प्रकार से ।

उ०—१ राखू नह आद खत्री धमरीत, सतीसत छोड मे कूता, सीत । विधोविध घूहड दाख वचन, मेले नह चाल राणी बडमन ।

—गो. रू.

उ०—२ विधोविध दीठी माय विभूत, घुताई छोड परी सब घूत । माहिली ठाकुर लात्री माय, पुजावे आरीभाप ही पांय । —ह. र.

२ यथाविधि, विधिवत् ।

३ यथार्थ ।

रू भे — विधीविद्य ।

विद्य — देखो 'विधि' (रू भे)

उ० — तेहनुं रूप तै तुह ज खरू, जु थाइ तुम् पटराणी । ग्रह्या
विद्य नु लम थाइ साचु. चतुरपणि रहि पाणी । — नळख्यान

विद्यान — देखो 'विद्यान' (रू भे)

उ० — खट भासा नव व्याकरण, विद्या वेद विद्यान । हरीया
अछर एक विन, सब ही थोया ग्यान । — अनुभववाणी

विद्या — देखो 'विद्या' (रू भे.)

उ० — भाण तेजगीरा तीरा विद्या मेवा जै भाखा, जाण मछ्छाणी
जोग मत्ती रौ बोघाण जी भार । जम्मीरा जोखीरा वीरा वीरभद्र
जेम, जोयजी हम्मीरा जेम 'खेम' री जीधार । — हुकमीचद खिडियी

विद्याता — देखो 'विद्याता' (रू भे)

उ० — नैसघ नर नि जु तू नारी, सरखी सरखी जोड । नही तरि
विद्यातानि लागि, रूप रच्यानी खोड । — नळाख्यान

विधत्, विधत्ति — स पु [स विधृति] एक सूर्यवंशीय राजा, जो खगन
का पुत्र और हरिष्यनाभ का पिता था ।

उ० — वज्रनाभ सुत सुगण धरमवप, तै सुत विधत्त नरैस उग्र तप ।
सुत जय हरिणनाम सुभियारण, पुत्र त्रप जै सुत इद्र प्रमाण ।

— सू प्र

२ अभूतरजस् देवी मे से एक देवता ।

स स्त्री. — ३ वधृति नामक देवता समूह की माता ।

विध्न — देखो 'विध्नम्' (रू भे)

विध्नमी — देखो 'विध्नमी' (रू भे)

विध्नम् — देखो 'विध्नम्' (रू भे)

विध्नमी — देखो 'विध्नमी' (रू भे.)

विध्वस — स पु [स] १ विनाश, नाश ।

उ० — बहै जू वाट वाट मे पिता पिता महा बर्द, सुखी सुनाट तै सदा
दुखी दुवाट मे बहै सरीर समकार सार वीर छीर सै सने, विध्वस
वेरि वस को प्रससनीय तै बने । — ऊ का

२ तहस-नहस, बर्बाद ।

३ सहार, नाश ।

रू भे — विध्वम, भस विद्धस, विधस, विधूस ।

विध्वसक — वि. [स] १ विनाश करने वाला, नाश करने वाला ।

२ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला, मारने वाला ।

रू भे — विधसक ।

विध्वसण — देखो 'विधूसण' (रू. भे)

विध्वसणी — वि — (स्त्री विध्वसणी) १ नाश होने वाला, नाशवान् ।

उ० — सदन पडन विध्वसणीए, जतन करता जाय । कुण जाणै पेहली
पछै ए, दी अनुमत सुख दाय । — जयवाणी

२ मरने वाला ।

३ तहस-नहस होने वाला, बर्बाद होने वाला ।

४ नाश करने वाला, सहार करने वाला, मारने वाला ।

५ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

विध्वसणी विध्वसणौ — देखो 'विधूसणी, विधूसणौ' (रू भे)

उ० — १ माही माही नगर विध्वंस्या, पाडव दवदत राय जी ।

मुनि दवदत इटालै मारघौ, कीरव न तज्यौ बरवाय जी ।

— स कु

उ० — २ ताहरा बडी फोज कर मालदेजी आया हीज । गाम गगा-
रई आय डेग किया । फोज च्यारू ही तरफ दोडी छै । मेडतै

री रैत लोग खसीजै छै । देस मारीजै छै । देम विध्वसीजै
छै । — नैरासी

विध्वसणहार, हारौ (हारी), विध्वसणियो — वि० ।

विध्वसिण्योडौ, विध्वसियोडौ, विध्वस्योडौ — भू० का० क० ।

विध्वसीजणी, विध्वसीजणौ — कर्म वा० ।

विध्वसियोडौ — देखो 'विधूसियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विध्वसियोडौ)

विध्वस्त — वि [स] १ नाश हुवा या किया हुआ ।

२ सहार हुवा या किया हुआ, मरा या मारा हुआ ।

३ तहस-नहस हुवा या किया हुआ, बर्बाद हुवा या किया हुआ ।

विनत — देखो 'विनिता' (रू भे)

उ० — भणीजै र जसोमति माता, बलिभद्र भाई भुजाळी । विनत
भिया जाणिएजै, नद पिता घणी ब्रक वाळी । — पि प्र

विन — देखो 'विना' (रू भे)

उ० — जन हरीदास हरि सू कहै, तुम विन तन छोर्जै । 'प्रेम'
पियाला पाय करि, अपरणा करि लीजै । — ह. पु वा.

उ० — २ जोवनिया री जोरी छै जी म्हारा राज, नैण भळक्यौ
नेहरी तोरी । यारि मिळण विन जी म्हारी दोरी, रसराज थै मत
म्हा सु दिल मत चोरी । — रसीलराज रा गीत

उ० — ३ प्रथम सेव गुरुदेव की, पीछे हरि की सेव । जनहरीया
गुरुदेव विन, भगति न उपजै भेव । — अनुभववाणी

२०—४ नाव लीया गुण ना मिट्या, तिवर न भागा तेज । हरीया
ग्यान विचार विन, रही जेज की जेज । —अनुभववाणी

घिनउ—देखो 'विनय' (रू. भे)

२०—कुम्भा, घर नइ पखडी, थाकउ घिनउ वहेति । सायर लघी
प्री मिलउ, प्री मिलि पाछी देसि । —डो मा.

घिनडणी, घिनडबौ—कि अ.—१ विनम्र होना ।

२०—विरचै नही पदम विनडता, घणी वात जस भोम घणी ।
दे सासए पूठेचा देवै, घर जगळ जागळ घणी । —द. दा.

२ देखो 'विघ्नडणी, विघ्नडबौ' (रू. भे.)

घिनडणहार, हारी (हारी), घिनडणियो—वि० ।

घिनडिप्रोडो, घिनडियोडो, घिनडचोडो—भू० का० कृ० ।

घिनडोजणी, घिनडोजबौ—भाव वा० ।

घिनडणी, घिनडबौ, घिनडणी, घिनडबौ—रू० भे० ।

घिनडियोडो-भू का कृ—१ विनम्र हुवा हुआ ।

२ देखो 'विघ्नडियाडो' (रू. भे)

(स्त्री विनडियोडो)

घिनडणी, घिनडबौ—कि अ.—१ दुख देना, कष्ट देना ।

ज०—१ बालउ ज माय सुभ कपु कहुउ, अघर राय रखउ जीउ ।
सुलताए सेन विनडउ नही, तब रं माय फुट्टइ हीउ । —प. च ची.

२०—२ अनेकि परिछइ तं विनडत, दीणवयण जीव विलवत ।
नरग तणां दुख अनी निहासि, तं भैल्हइ करवत कपालि ।

—वस्तिग

२ वेप बदलना ।

२०—कवण तउ कवण भूपति राउ, कवण नामु कवण भूपति
जाउ । कवण काजि विनडिउ तइ सयर, कवण भूपति सिउ तुभ
वयर । —सालिसूरि

३ देखो 'घिनडणी घिनडबौ' (रू. भे)

४ देखो 'विघ्नडणी, विघ्नडबौ' (रू. भे)

घिनडणहार, हारी (हारी), घिनडणियो—वि० ।

घिनडिप्रोडो, घिनडियोडो, घिनडचोडो—भू० का० कृ० ।

घिनडोजणी, घिनडोजबौ—भाव वा० ।

घिनडियोडो-भू का कृ—१ दुख दिया हुआ, कष्ट दिया हुआ

२ वेप बदला हुआ ।

३ देखो 'घिनडियोडो' (रू. भे)

४ देखो 'विघ्नडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विनडियोडो)

घिनत-स. पु [स] १ एक बन्दर का नाम, जो सुग्रीव की सेना में
सेनापति था ।

वि. वि.—यह सीता की खोज हेतु पूर्व दिशा की ओर गया था ।
इसके पिता का नाम ध्येत था । यह स्वयं पर्वताकार था । इसकी
गर्जना मेघ गर्जना के तुल्य थी और इसकी सेना में साठ लाख

वानर थे ।

२ बँवस्त मनुपुत्र इल का पुत्र ।

३ पुलह एव ध्येता के पुत्रों में से एक दिग्गज ।

४ देखो 'विनीत' (रू. भे)

वितनक-स पु. [स] एक पर्वत का नाम ।

घिनतडी—देखो 'विनीती' (अल्पा., रू. भे.)

घिनतवत-वि [स] विनय से युक्त, विनयवान् ।

२०—कहियौ अरथ हियाली केरउ, यहिलउ हियइ विमासी ।

घिनतवत गुणवत तुम्हारी, नहिं तउ थास्यइ हामी रे । —स कु

घिनता-स स्त्री. [स] १ व्याधि लाने वाली एक राक्षसी ।

२ अशोक धाटिका में, रावण द्वारा, सीता को समझाने हेतु नियुक्त
एक राक्षसी ।

३ प्राचेतस दक्ष प्रजापति व उसकी पत्नी असिकनी के गर्भ से
उत्पन्न एक पुत्री जो अरिष्टनेमी कश्यप ऋषि की पत्नी थी और
पक्षियों की माता थी ।

वि वि—कश्यपऋषि ने इसे वरदान दिया था कि तुम्हारे दो पुत्र
उत्पन्न होंगे जो तुम्हारी क्षीन कद्रु के नाग पुत्रों से भी बलशाली
होंगे । इसी वरदान के फलस्वरूप इस के गरुड व अरुण नामक
दो पुत्र उत्पन्न हुए । ये दोनों पुत्र अण्डों से उत्पन्न हुए थे । एक
अण्डा समय से पूर्व फूट जाने के कारण आधे शरीर का पुत्र उत्पन्न
हुआ था जो अरुण था । इसी कारण से अरुण ने इसे अपनी शीत
की पाच सी वर्षों तक दामी रहने का शाप दिया । इस शाप से गरुड
स्वर्ग से अमृत लाकर मुक्त किया था । गरुड व अरुण के सिवा
इसके अरिष्टनेमि ताक्ष्य व आकाणि नाम दो पुत्र व छत्तीस पुत्रियाँ
थी ।

[स वनिता] ४ स्त्री, धीरत । (डि. को, ह ना मा)

२०—१ वचन विनता उच्चरि रै, विद्वग तू विरी थयु । गुण कहघां
ननराय निभावमनउ ताहा गयु । —नळाख्यान

५ स्त्री, पत्नी ।

६ प्रेमपात्री, स्त्री ।

रू. भे.—विनिता, विनिया, विनीता ।

घिनताक, घिनताग-स पु [स' वृन्ताकि] एक प्रकार का शाक, बँगन ।

रू. भे—घिनताक, घिनताग ।

घिनतासुत, घिनतासुतु-स. पु [स.] घिनता के पुत्र गरुड व अरुण ।

रू. भे—घिनतासुत, घिनतासुत ।

घिनत.स्व-देखो 'घिनत' (रू. भे) (२)

घिनति, घिनती-स स्त्री [स घिनति] १ अनुनय विनय, प्रार्थना ।

२०—सत्तनगराण सिवरियै, मिवरा सदा सहाय । ब्रह्म सुता सुं
घिनती, अक्षर छी समझाय । —अग्यात

२ नम्रता, विनम्रता-।

रू. भे — विनती, वीणती, वीनती ।

अल्पा — विनतडो

विनम्र-वि. [स] नम्रता से युक्त, नम्र ।

विनय-स स्त्री. [स. विनय] १ नम्रता, विनम्रता ।

२ अनुनय-विनय, प्रार्थना ।

३ ७२ कलाओं में से एक कला । ४ शील, सतीत्व । ५ शिष्टो चित्त व्यवहार । ६ जितेन्द्रिय पुरुष ।

७ गुरु आदि पूज्य पुरुषों का भक्ति से अभ्युत्थानादि के द्वारा आदर-सत्कार देने की क्रिया । (जैन)

रू. भे — वीन, विणय, विनर, विना, विनै ।

विनयवत-वि [स] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत ।

उ०-१ जग माहै सुभद्रा सती रे, मती रे विरोमणि जाए । विनय-वत स्रावक सुराज जी, सील रयण गुण खाण । —स कु

उ०-२ तास सीस अति दीपता रे, विनयवत जसवत । आचारिज चढती कला रे, श्री जिनासिंध सूरि महनी रे । —स कु

उ०-३ तसु बघव डुंगरसी तै पण दीपतठ रे, भागचद कुल भाण । विनयवत गुणवत सुभागी सेहरउ रे, बड दाता गुण जाए । —प च चौ

विनयवान-वि [स विनयवान] विनम्रता से युक्त, विनयशील, विनीत ।

विनयशील-वि [स विनयशील] विनयवान, विनम्रता से युक्त, विनीत ।

विनयो-वि [सं विनयिन्] विनम्रता से युक्त विनयशील, विनीत ।

विनयोक्ति — देखो 'विनोक्ति' (रू. भे)

विनरावन, विनराविन — देखो 'व्रदावन' (रू. भे)

विनवणी, विनवबो-क्रि. स — विनय करना, प्रार्थना करना ।

विनवणहार, हारो (हारो), विनवणियो-वि० ।

विनविओडो, विनवियोडो, विनव्योडो-भू० का० कृ० ।

विनवीजणो, विनवीजवो-कर्म वा० ।

विनवणो, विनववो, वीनवणी, वीनवबो-रू० भे० ।

विनवियोडो-भू. का कृ.—विनय किया हुआ, प्रार्थना किया हुआ ।

(स्त्री विनवियोडो)

विनस-स पु — सरस्वती के अदृश्य रहने का स्थान, जो पुण्य तीर्थ माना जाता है ।

विनसण-स पु [स] १ विनाश बर्बादी ।

२ सहार ।

विनसणी-वि.—विनष्ट होने वाला, बर्बाद होने वाला, नाशवान् ।

विनसणो, विनसबो-क्रि. अ — १ विनाश होना, नष्ट होना, मिट जाना ।

उ०-१ जै उपज्या सो विनस है, जे दीसै सो जाइ । दाहू निरगुण

राम जप, निस्चल चित्त लगाइ ।

—दाहूवाणी

उ०-२ तन तो राख्यो ना रहै, जतन करता जाय । यु हरीया पाणी ओस का, विनसत वार न लाय । —अनुभववाणी

उ०-३ सबद संत का आगिला, हसती का सा दत । ताग न दूटै भरम का, मं देही विनसत । —अनुभववाणी

२ सहार होना, मरना ।

३ तहस-नहस होना, बर्बाद होना ।

विनसणहार, हारो (हारो) विनसणियो-वि० ।

विनसिओडो, विनसियोडो, विनस्योडो-भू० का० कृ० ।

विनसीजणो, विनसीजवो-भाव वा० ।

विनसणो, विनसवो-रू० भे० ।

विनसति, विनसती-देखो 'वनस्पति' (रू. भे)

उ०-जनहरीया उन देसडै, वारै मास वसत । सदा फळीं गी विनसती विलव्या जीव निचत । —अनुभववाणी

विनसाडणो, विनसाडवो-देखो 'विनसाणो, विनसावो' (रू. भे)

विनसाडणहार, हारो (हारो), विनसाडणियो-वि० ।

विनसाडिओडो, विनसाडियोडो, विनसाडचोडो-भू० का० कृ० ।

विनसाडीजणो, विनसाडीजवो-कर्म वा० ।

विनसाडियोडो-देखो 'विनसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विनसाडियोडो)

विनसाणो, विनसावो-क्रि. स — १ नाश करना, नष्ट करना ।

२ सहार करना, मारना ।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

विनसाणहार, हारो (हारो), विनसाणियो-वि० ।

विनसायोडो-भू० का० कृ० ।

विनसाईजणो, विनसाईजवो-कर्म वा० ।

विनसाडणो, विनसाडवो, विनसाणो, विनसावो, विनसावणो, विनसा-वबो विनसाडणो, विनसाडवो, विनसावणो, विनसावणो-रू० भे० ।

विनसायोडो-भू. का कृ — १ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, बिगाडा हुआ । २ सहार किया हुआ, मारा हुआ । ३ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ।

(स्त्री विनसायोडो)

विनसावणो, विनसावबो-देखो 'विनसाणो, विनसावो' (रू. भे)

विनसावणहार, हारो (हारो) विनसावणियो-वि० ।

विनसाविओडो, विनसावियोडो, विनसाव्योडो-भू० का० कृ० ।

विनसावीजणो, विनसावीजवो-कर्म वा० ।

विनसावियोडो-देखो 'विनसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. विनसावियोडो)

विनसियोडो—भू का कृ —१ विनाश हुवा हुआ, नष्ट हुवा हुआ।
२ सहार हुवा हुआ, मरा हुआ । ३ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

(स्त्री. विनसियोडो)

विनस्ट-वि [सं विनष्ट] १ जो नाश को प्राप्त हो गया हो, नष्ट हुवा हुआ ।

२ तहस-नहस हुवा हुआ, बर्बाद हुवा हुआ ।

३ मरा हुआ, मृत ।

४ विगडा हुआ, खराब हुवा हुआ ।

विनस्वर-वि [स विनस्वर] १ नष्ट होने वाला, नाशवान् ।

२ जो बहुत दिनों तक न रह सके, अनित्य ।

विनस्वरता-स स्त्री [स विनस्वरता] १ नाशवान् होने की अवस्था ।

२ अनित्यता, अचिरस्थायित्व ।

विना—देखो 'विना' (रू भे)

उ०—१ जनहरीया साईं विना, खाली खलक न कोय । एक घरे ताह एक है, दूज करे ताह दोय । —अनुभववाणी

उ०—२ कवण अखँवड विगर, प्रळी सागर सिर सोभे । कवण विना सुयदेव, देव माया नह लोभे । —रा रू

उ०—३ अब तो मेरी बल घटघो, हटघो मग की साथ । रापण-हारी की नही, राज विना रघनाथ । —गजउद्वार

उ०—४ सुर-तरवरा रूखा रा ओला ताके छे । तरवरा रा पान भडिया छे । सु जाणे वस्त्र विना नागा डिगत्ररा सरीका नजर आवे छे । निवाण रा पाणी नीटिया छे । —रा सा स.

विनाण, विनाण, विनाणी—स पु —१ विचार ।

३ तरकीब, उपाय ।

४ चिह्न लक्षण ।

५ रूपक ।

६ व्याख्या, विवेचन ।

उ०—यकाल ब्यान दरसी निज ब्रम कूं पहिचाने । भूत, भवस्त, वरतमान जुगति सों जाणै । च्यार वेद नौ व्याकरण खट सासत्र के विनाण । विद्वत विद्या में पारावार जाणै नयदूण पुराण । —सू प्र.

७ विध्वम, नाश ।

उ०—घन लूट कीघी घाण, वयि नारनोळ विनाण । चडनयर रा परचड, दो नगर अँ भुजदड । —सू प्र

८ रहस्य, भेद ।

उ०—परब्रह्मोम घुसै जिके आप प्राण, बडा जुद्ध रा बध' जाणै विनाण । हणै मारि पाडे पत्नी चोम हुता, साहँ चाळि सँ जागवै काळ सुता । —र. वचनिका

[स. विज्ञान] ६ ज्ञान, जानकारी ।

उ०—मछतुव जळमा तरै जी, वूडे काग पाहाण । पय जाजि गयणै फिरैजी, इण परै सहिज विनाण । —वृस्त

६ भेद, प्रकार ।

उ०—मुहरि अति लुघयि गुर मफि, वार चिअार विनाण । पय सोलह आखर परठि, आखि रूप इहनाण । —ल पि.

१० तरह, प्रकार ।

उ०—१ अत्रा खग भाट निराट अलग्ग, पडे वि वि जव पडे भडि पग्ग । पडे रिणि उच्छलि ग्रेम प्रवग, कुडा चडि जाणि विनाणि कुरग । —र. वचनिका

उ०—२ जिम जिम गुरु घटती जाइ, तिम तिम दोइ वधे लुघताइ । नाम जूजूयी एण विनाणि, ववती अँसों जि वव्याणि । —ल पि वि —१ समान तुल्य ।

उ०—भुजा दुय च्यारि भुजा बळ भूप, रचै गजग्राह स्त्रियावर रूप । वहे खग सावण तात विनाण, कटे जरदाण जुवाण केकाण । —सू प्र

२ अद्भुत, अनोखा ।

[स वैज्ञानिक] ३ ज्ञानी, जाननार ।

उ०—सो सुख सुरिया सत विनाणी, विजळी चमके बादळ गरजे, चडचा अपूठा पाणी । —ह पु वा.

५ देखो 'विनाणी' (रू भे)

उ०—१ रहमाण विनाणी हत्थ तँ, भजण घडण ससार जग । सुरताण हुअो खुरसाण सिरि, खेडपती हुआ खडग । —गु रू व

उ०—२ कुण तेजमहाड अणी काढावे, वाढाळा मुहि वाड पडे । जिणसाल तियार करत जरादी, घाय विनाणिय लोह घडे ।

—गु. रू व

रू भे —विनाण, विनाणी, बीनाण, बीनाणी, विनान, विनाण, विनाणी ।

विनाण—देखो 'विनाण' (रू भे)

उ०—में जाण्यो मन एक था, मन का बोहत विनान । हरीया मन छिनछिन फिरै, डाली डाली पान । —अनुभववाणी

विनाणी—देखो 'विन्यानी' (रू भे)

विनाम-वि.—जिसका कोई नाम न हो, विना नाम का ।

विना—१ देखो 'विना' (रू. भे)

उ०—पूछ्या विना पयपे पापी, थट विच कहै जात सिर थापी । वदन मत दिखाले वस द्रोही वळे । —र. रू.

उ०—२ सरस तण्णी पसाव सोधिया, वयण बिना बाखागण वग ।
“बूड” हरा आकास चित्रणो, खेडेचा तहरो खग ।

—केसीदास गाडण

उ०—३ हिंदवाराव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा ।
गई स्रुग विवाणा वस डद्र आगळी, वुही वारगना विना वीदा ।

—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—४ हाम काम लोचणी उलाळी आकास जावै । चावळ री चौथी हेंसी खावै ।
तवोळ विना खाधा आहारा विकार थावै । माडी मोडी कटारी री पडदडी समावै ।

—रा सा. स

उ०—५ जसवत विना जिहान, पान चळ जाणो पवन, फना केतु साकप,
थया मन हिंदसथाने । घटं क्रिया वामणा, मिटे भालर पर-सादा,
ईत प्रभा ऊपजे, निरख दुर रीत निसादा ।

—रा रू

२ देखो 'विनाय' (रू भे.)

उ०—तरा जगमाल दीठी, “हू उजर करू, गणो वासै साथ चाढे,
वै कठे ही उत्गिया होय तो काई कावाइत होय, “तरै जगमाल घणा
विना सूं बोलियो “मानसिघ दीवाण री चाकर छै म्हानु किसी उजर
छै, जाणो सु घरती दीवाण नै, जाणो सु मानसिघ नु दे ।

विनाइक—देखो 'विनायक' (रू भे.)

उ०—१ लील विलास सुरा मा लाइकि, नियो पुलदर देव विना-
इकि । सकर ना पिणि करा सलामा, गोविंद रा आदेस गुलामा ।

—पी अ

उ०—२ हू मागा देवी हुयो, अचिरळ वारिण उकति । वळी विनाइक
वीनवू, सिद्ध बुद्ध धो सुमति । वह विनाइक देवता, नमो विनाइक
नाथ । तू सिद्धदायक रूप सुभ, तू सत्गुर ससिमाथ ।

—पी अ

विनाई—देखो 'विना' (रू. भे)

उ०—राजी राव रक भूप, नारि ही पुरख राजी, भूठ सी विनाई
वाजी, खुमी आप खाल में । सिन्यासी दुहा दत, जोगी आदिनाथ
जानै, जती ही वखाने जैन, रता मता व्हाल में ।

विनाय—वि [स] जिसका कोई रक्षक न हो, अनाथ ।

स पु —वह वैल, जिसके नाथ न डाली गई हो ।

विनादी—क्रि वि —आदि काल से ।

उ०—वादमाह हूँत कहयो छोड जै इणाने वेघा, ऐ न छई हिंदू
घरम विनादी आफेके । कहयो साज भाण नद पातवा छुडावो
किसा । एक एक प्रती चहा माथी एक-एक ।

—गोकळदास सक्तावत री गीत

विनायक—स पु [स विनायक] १ गणो के ईश व विघ्नविनाशक गणेश
जी । (अ मा, ह ना. मा)

उ०—एक दती महाबुद्धि सरव गुणी गणनायक । सरव मिद्धि
करी देव, गवरी पुत्र विनायक ।

—अग्नात

वि वि —पुराणानुसार, विनायक चार प्रकार के होते हैं (१)
दवळि विनायक, (२) कोण विनायक (३) हस्ती विनायक (४)सिन्दूर
विनायक ।

२ गरुड ।

३ सिंह, शेर आदि के समान मुक्ताकृति वाले शिवगणो का समूह
जिममें कुष्मांड गजतुड, जयत और रुद्रगण समाविष्ट हैं ।

४ कपडा वुनने का एक औजार । (जुलाहा)

५ सुथार, बढई ।

६ विवाह अवसर पर कुम्भकार द्वारा लाई गई मिट्टी की बनी गणेश
की मूर्ति ।

७ विवाह आदि मागलिक शुभ अवसरों पर गणेश जी को सम्बोधित
कर गाये जाने वाले गीत ।

८ यज्ञोपवीत अथवा विवाह सस्कार के शुभ अवसर पर गृह शान्ति
हेतु किया जाने वाला यज्ञ एव इस दिन किया जाने वाला भोज ।

(मा म)

उ०—विरघ वघाई नाव समूरथ माख सगाई । व्याह विनायक
वेळ, महोछव मेळ विदाई । पूजा-पाठ निराठ, वर वनमाळा मोखी ।
जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी ।

—दसदेव

९ बौद्ध, आचार्य ।

रू भे.—ब्रह्माक, विनाइक, विनायक, विनायक, ब्रह्माक, विनायक,
विनाइक, विन्यायक ।

विनायकचतुरथी विनायकचौथ—स स्त्री [मं विनायकचतुर्थी] १ माघ
मास में शुक्ल पक्ष की चतुर्थी, जिस दिन गणेशजी की पूजा की
जाती है ।

२ भादो मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी ।

३ प्रत्येक मास की शुक्ल पक्ष की चतुर्थी ।

विनायकण—स स्त्री.—बढई जाति की स्त्री ।

विनायकथाटियो, विनायकथाटी—देखो 'थाटियो' (जंतारण)

विनायकहेतु—म पु यी [स] गरुडध्वज, श्रीकृष्ण ।

विनायकियो—स पु —१ विवाह के समय दुल्हा के साथ रहने वाला
दुल्हे का छोटा भाई ।

२ देखो 'विनायक' (अल्पा, रू भे)

विनायिका—स स्त्री. [स] १ विनायक की पत्नी ।

२ गरुड की पत्नी का नामान्तर ।

विनास—स. पु [स विनाश] १ नाश, ध्वंस ।

२ विगाडने का भाव, विगाड ।

३ हानि, नुकसान ।

४ कलह, भगडा ।

५ एक भ्रमर, जो कक्ष्य एव उसकी पत्नी काला के गर्भ से उत्पन्न हुआ था एव यह अपने अन्य भाईयो की तरह अस्त्र-शस्त्र विद्या में यम के समान था ।

रू भे — वनाम, विनास, विनास, बणास, विनास, विनासु ।

विनासक-वि. [स. विनाशक] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला । (प्रथा)

३ हानि, नुकसान या विगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासकारी-वि. [स. विनाश+कारिन्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, विगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणी-वि [स. विनाशनम्] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

२ मिटाने वाला, हटाने वाला (प्रथा)

३ हानि, नुकसान, या विगाड करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

विनासणी, विनासवी-क्रि स [विनाशनम्] १ नष्ट करना, ध्वंस करना, २ मारना, महार करना ।

उ०-१ देस त्रिगाडघो राव रो, केर विनासी फीज । डर बंठा कासू हुवे, राजा लाग्या न्योज । डाढाळा सूर रो वात-

उ०-२ भागं देखें तो छपरें हेठे पातणी राखीयो तीसु सीहणी भाय चूंघावण लागी । ताहरा माता सारू दीठी । ताहरा कहै है सीहणी ते म्हारी बाळक विनासीयो । ताहरा सीहणी अळगी हुई ऊमी रही । ईय जाय टायर उरही लीयो । पालणी भीला रे कार्घ दीयो । भाषा हालिया । पीठर गई उय सुय सु रहे ।

—देवजी वगटवतां रो वात

३ त्रिगाड करना, नुकसान करना ।

४ बुरा करना ।

५ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

विनासणहार, हारी (हारी), विनासणियो—वि० ।

विनासिओडो विनासियोडो, विनास्योडो—भू० का० कृ० ।

विनासीजणी, विनासीजवी—कर्म वा० ।

विनासणी, विनासवी, विनासणी, विनासवी, वणासणी, वणासवी—रू० भे० ।

विनासियोडो-भू का कृ.—१ नष्ट किया हुआ, ध्वंस किया हुआ
२ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ नुकसान किया हुआ, विगाड किया हुआ. ४ बुरा किया हुआ, ५ तहस-नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ

(स्त्री विनासियोडी)

विनासी-वि. [स. विनाशिन्] १ नष्ट होने या करने वाला, विध्वंस होने या करने वाला ।

२ मारने वाला, सहार करने वाला ।

३ बुरा करने वाला ।

४ विगाड करने वाला, नुकसान करने वाला ।

५ मरने वाला, मिटने वाला, नाशवान् ।

६ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

७ मिटाने वाला, हटाने वाला ।

रू भे — विनासी ।

विनाह-स पु. [स.] कुए के मुख का ढकना ।

विनिग्रह-स पु [स.] १ सयम, दमन प्रतिबध ।

२ बाधा, अवरोध ।

३ परस्पर-ईर्ष्या ।

विनिता—देखो 'विनिता' (रू भे)

विनितासुत—देखो 'विनितासुत' (रू भे)

विनिद्र-स पु. [स.] १ वह व्यक्ति जिसे निद्रा नहीं आती ही ।

२ निद्रित या मूर्छित व्यक्ति की निद्रा या मूर्छा को दूर करने का एक अस्त्र विशेष ।

विनिपात-स पु [स.] १ विनाश, ध्वंस ।

२ अपमान, अन्यादर ।

३ मृत्यु ।

४ नाश, बर्बादी ।

५ नरक ।

६ कष्ट, पीडा ।

७ बडा कष्ट, या सकट पैदा करने वाली स्थिति ।

८ गर्भपात ।

विनिपातक-वि. [स.] १ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

२ अपमान करने वाला, अन्यादर करने वाला ।

३ कष्ट उत्पन्न करने वाला ।

विनिमय—स पु [स] १ किसी एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेने का व्यवहार, दो वस्तुओं का एक दूसरी के बदले अदल-बदल ।

विनिया—देखो 'विनता' (रू भे)

उ०—विहर्षसिंह उण देस विच, रीतविया राजद । सात सलामा नित सजै, विनिया अगगा विद । —जतीरासी

विनियुक्त—वि [स] १ लगा हुआ, नियुक्त ।

२ आदेशित ।

विनियोग—स पु [स] १ किसी वैदिक कृत्य में मन्त्र का प्रयोग ।

२ व्यापार आदि में पूजा लगाना ।

३ त्याग ।

४ भक्त द्वारा इष्टदेव का ध्यान कर दायें हाथ में लेकर मन्त्र बोल कर जमीन पर छोड़ा जाने वाला पानी जो पूजा करने हेतु बैठने के बाद सबसे पहले छोड़ा जाता है ।

विनियोजन—स पु [स] १ विनियोग करने की क्रिया ।

२ अर्पित करने की क्रिया, अर्पण ।

३ नियुक्ति ।

विनिहत, विनिहीत—स. पु [स विनिहत] १ देवप्रेरित या भाग्यद्वेष से आया हुआ कष्ट, या सकट ।

२ अपघात, घुरे शकुन ।

विनीत—वि [स.] १ जिसमें शिष्टता व नम्रता हो, शिष्ट, नम्र ।

२ जितेन्द्रिय, सयमी ।

३ प्रिय, मनोहर ।

४ गहण किया हुआ ।

स पु—१ उत्तम मनु का एक पुत्र ।

२ पुलस्त का प्रीति के गर्भ से उत्पन्न तीन पुत्रों में से एक पुत्र ।

रू भे—विनीत, विनत ।

विनीतता—स स्त्री—विनीत होने का भाव, नम्रता ।

विनीता—देखो 'विनता' (रू भे)

विनूर—वि—कायर, भीरू ।

उ०—घारा रति घरहर, दळपळ डालहर, भटकै पै कर सीस झडै । बडडै घाइ वगत, फाटै बडफर, रुकै विनूर रीठ पडै । —गु रू व

विनेत—स पु [स विनेत] १ आज्ञा, आदेश, हुकम ।

२ सिखाने वाला, शिक्षक ।

३ दण्डविधान का निर्माण करने वाला ।

[स विज्ञति] ४ सूचना ।

विने—स स्त्री [स विनय] १ कृपा महरवानी ।

उ०—तीन लक्ष द्रव रोकडा, चचल उच्च पचीस । निपट विने घारी निजर, नपति निवारी रीस । —रा. रू

२ देखो 'विनय' (रू. भे.)

उ०—या साहिजादँ आखियो, सहित विने हित संघ । मेरँ काज निवाह की, लाज कमघा कघ । —रा रू

३ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—विकट करी तीरथ, वरत, घरा भेख कै धार । विने नाम रघुवीर रँ, परत न उतरँ पार । —रू रू.

४ देखो 'विने' (रू भे)

उ०—१ अठो राम रा सुमड नँ सुभड रावण उठी, लक रँ जोर-वर खेत लडवा । तीर सेना छूरा भीक तरवारिया, बाजिया विने ही रम बरबा । —रू रू

उ०—२ समधी श्रीरगसाह री, विने मुगळ विसतार । महाराजा उण सू मिळँ, आदर कियो अरार । —रा. रू

विनेनी—स. स्त्री—विनम्रता, नम्रता ।

उ०—साख्यात देवागना पदमणी विचित्र सुलखणी चोसठ कळा री जाणणहार विनेनी करणहार लिखमी पारवती गगा सरसती री अवतार वारह आभूखन विराजमान हुआ छँ । आठँ पोहर सोळ सिणगार किया रहै छँ । —रा मा स

विनोक्त, विनोक्ति—सं पु [सं विनोक्ति] एक अलंकार विशेष, जिसमें, किसी वस्तु के बिना अशोभन या किसी के बिना शोभन कहा जाय यानि किसी वस्तु की हीनता या श्रेष्ठता का वर्णन किया जाय ।
रू. भे—विनयोक्ति, विन्योक्ति ।

विनोद—स पु [स विनोद] १ ऐसा कार्य जिसका प्रमुख उद्देश्य मन-वहलाव करना होता है ।

२ उक्त कार्य से होने वाला, मनवहलाव, आनन्द ।

३ हसी-मजाक ।

उ०—प्रधान मनोहर परिखत, सुभट झेण, विनोदीया ना विनोद साहय सो बोलाना समूह, उचितबोलानी शील, कलावत नी क्रीडा-भूमि, कूबडानी कोडि, । —व. स

४ आनन्द, आल्हाद हर्ष, प्रसन्नता । (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ जळ जाळ माळ विमाळ नभ जुत, उरड भड अणपार ए । मिटि जळण धरणि विनोद मानव, भूरि सर जळ भार ए । —रा रू

उ०—वहै बीषूजळ हद्-विहद्, नचत विनोद करत नारह । तमासै भाण हुआ रथ ताण, कहकह वीर हर्म कतियाण । —गु रू व

उ०—कवितु विनोदिहि सिरिजय, सिरिजय सेहरसूरि जै । खेलइ तै अरह पद, सपद पामइ पूरि । —जयसेखर सूरि

५ उत्सुवता, उत्कण्ठा ।

६ खेल-क्रीडा, आभोद-प्रमोद ।

उ०—१ किही रे काधे चढे, किही रा हाथ खेचै, चपळता आसग-गिरी करवो करै । सो लोग राजूखा री खुसामद रा पगा सहवो करै । टावर नै किही कहै-सुएँ नही । सगळा हाथा ऊपर विनोद करावो करै । टावर लाड सँ बडी अनौती ।

—सूर-खीवं काघळौत री वात

उ०—२ उचित बोलानी ओलि, कलावतनी क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि, वामणाना विनोद, पुण्यवन रहइ प्रमोद, वयरीह खिलाद, कविना कल्लोल, वादीनठ विवाद, वैदेसिक विलास । —व स ७ सोलह प्रकार के श्रु गारो मे से एक प्रकार का श्रु गार विशेष । (रा. सा स.)

८ एक प्रकार की राग विशेष । (सगीत)

उ०—भणत स्त्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खभायची पटगय, वगंसरी विहगय । —रा. रू.

९ गायन, संगीत ।

उ०—विनोद गीत नाद भेद, सद् घट भालरी, प्रसाद देव पुंजिहत, अविना हरीहरी । निसा जळ त दीपजोत, मिदर उजाळ ए । सदा सरव्वदा हुवत, जाण दीपमाळ ए । —गु. रू. व.

१० रतिक्रिया का एक आलिंगन विशेष । (कामशास्त्र)

रू. भे.—वणोद, वनोद, विणोद, विणोदि, विनोदन, विन्नोद ।

विनोदक—वि [स] विनोद करने वाला, खेल-क्रीडा करने वाला ।

विनोदन—देखो 'विनोद' (रू. भे)

विनोदित—वि [स] १ हर्षित, खुश, आल्हादयुक्त ।

२ हसी-मजाक किया हुआ ।

३ ऐसा कार्य किया हुआ, जिससे आनन्द उत्पन्न हो ।

४ विनोद शृंगार से युक्त ।

विनोदी—वि. [स विनोदिन्] १ खुद का व दूसरो का मनवहलाव करने वाला ।

२ हसी-मजाक करने वाला ।

३ विनोद सम्बन्धी ।

४ आनन्द व हर्ष उत्पन्न करने वाला ।

५ खेल-क्रीडा करने वाला ।

६ विनोद शृंगार करने वाला ।

७ गाने वाला, गायक ।

अर्था—विनोदीयो ।

विनोदीयो—देखो 'विनोदी' (अर्था, रू. भे.)

उ०—प्रधान मणोहर परिलन्, मुभट लैण, विनोदीया ना विनोद, साहन सो वोन ना ममूइ, उचित बोलानी ओलि, कलावतनी

क्रीडाभूमि, कूबडानी कोडि, वामणाना विनोद, पुण्यवन रहइ प्रमोद,..... । —व स.

विन्नक—स पु [स. विन्नक] अगस्त्य का एक नामान्तर ।

विन्नडियोडो—भू. का. कृ.—कण्ट दिया हुआ ।

विन्नवण—स. स्त्री [स. विज्ञापना] काम वासना पूर्ण करने हेतु कामी पुरुष के सम्मुख अपना अभिप्राय प्रकट करने वाली स्त्री ।

वि. वि.—कामी पुरुष जिसके प्रति वह अपना अभिप्राय प्रकट करती है "विन्नवण" कहलाता है । (जैन)

विज्ञाण, विज्ञाण विज्ञाणी—देखो 'विनाण' (रू. भे)

उ०—१ पातसाह आळोज, मन्न विचचार विमासै । बळ छळ दळ दखवै, पाण विज्ञाण कळासै । —गु. रू. व

उ०—२ महिकर घेरी सवळ, कियो दखणाधि कटक्का । गढ दुर्ग घेरियो, प्रजा भागी परिचक्का । नकी प्राण विज्ञाण, नेस फीका खुरसाणी । गयणगण डोलियो, सीम चपी सुरताणी । —गु. रू. व.

उ०—३ लसण्णाण विज्ञाण सन्नाण मेंह, कलाभि कलाभिरयुताः त्मीय देह । मणुण्ण कला केलि व्वाणुणार, स्तुवै पारस्त्वनाथं गुण लैण सार । —स. कृ.

उ०—४ "हरीया मन लागी" एहनो कन्या दोइ भणावियै, भणि वा अवसर एह रे । दोइ कन्या (भणावीयै) भणै, बालपणै सह आवडै, नाण विज्ञाण अछैह रे । —सोपाळ रास

उ०—५ पखी जिम विण पखडी, फोरी न सकै प्राण । प्रीतम दरीया मे पडथी, कीजै किसी विज्ञाण । —सोपाळ रास

उ०—६ हिचै नाण विज्ञान न सूजै, छाती घहडहड इम धूजै । अम्ह थी दादुर गुण जाण, पाणी सरिसा जसु प्राण । —सोपाळ रास

उ०—७ गरुड गरुड न नात्र कुपात्र ज पात्र न जाण, स घरइ ए भक्ति न लीजइ ए भीजइ ए भक्ति विज्ञाण । —जयसेखर सूरि

विन्नोद - देखो 'विनोद' (रू. भे)

उ०—किसा दीह आणद विन्नोद कीघा, लहै भूय आग्या वनोवास लीघा । जती राम साथै सिया वाम जोडै, तिका नाम लेता अघा ओघ तोडै । —सू. प्र.

विन्यानी—वि. [स वैज्ञानिक] जानकार, ज्ञानी । (उ. २)

रू. भे—विनानी ।

विन्यायक—देखो 'विनायक' (रू. भे)

उ०—तद घणा हरण कर नै ईया नू नाळेर भलाया । सात दिन

री विन्यायक बैठी । परणीया, घणा हरख-कोड कीया । दिन १५
राखीया । विदा किया । —पीठवँ चारण री वात

विन्यायको—देखो 'विनायक' (अल्पा., रू भे)

विन्यास—स पु [स] १ स्थापित करने की क्रिया ।

२ समूह, समग्रह ।

३ यथास्थान रखने की क्रिया, सजावट ।

४ जडने की क्रिया ।

विन्योक्ति—देखो 'विनोक्ति' (रू भे)

विन्ह, विन्हइ, विन्है—१ देखो विनँ (रू भे)

उ०—१ माळवणी, ढोलउ कहइ, हिव म्हा सीख करेह । ऊन्हाळउ,
वरखा विन्है, रहिया तुङ्ग सनेह । —ढो. मा

उ०—२ प्रेमी 'अणद' अमार्यं पाणी अववत सुखळि विन्है
'अमराणी' । 'माहव' तणी 'विजो' रण मोटा, कळहै ढाल थको
नवकोटा । —रा. रू

उ०—सुनन 'सुजाण' 'अनो' 'प्रिय' सभ्रम, 'अखो' विन्है आया जम
ओपम । 'अनै' तणी करि कोप अकारी, 'गजन' आवियो चाळा-
गारी । —रा रू

उ०—४ 'ऊदी' 'अनो' विकट ऊदावत, जोड मोड दळ विन्है
'जगावत । 'रतन' जगावत वाकिम राती, 'राम' 'सुभावत' मेळ
अराती । —रा रू

उ०—५ रिणमल 'कुमा विन्है रायगणि घणै चीतवँ ध्रोह घणा ।
फूटा लोह पछा फिटकारा, ताइवा राघव देव तणा ।

—हरीसूर वारहठ

उ०—६ विन्है पख क्ररण सुकळ विधान, विन्है वपु अंग सुदक्षिण
वाम । ब्रह्मा दक्षण अग वदीत, निपायो दक्ष प्रजापति मीत ।

—राठीड वशावळी

२ देखो 'विना' (रू भे.)

विपक्षिका, विपक्षी—स स्त्री [स] १ एक प्रकार का वाद्य विशेष जो
वीणा की तरह का होता है ।

२ क्रीडा-खेल, आमोद-प्रमोद ।

विप—देखो 'वपु' (रू. भे)

उ०—१ सेवगा दुखिया री कूक सुणी, काळवी असवार गी
दीपकणी । राखी जद खावद लाज रहै, विप ह्वा ऊपर वास
वहै । —पा प्र

उ०—२ किलमापति मँटँ कारीगर, कारो घाव निहाव कर ।
वाळ बाळ जुडियो थारी विप, पँवद आइस तणी पर ।

—जगतसिंघ सिसोदिया री गीत

२ देखो 'विप्र' (रू भे.)

विपक्क—वि [स] १ पूर्ण रूप मे पका हुआ, परिपक्व ।

२ पूर्ण उबला हुआ, रघा हुआ ।

३ उन्नति की चर्ममीमा तक पहुँचा हुआ ।

४ देखो 'विपक्ष' (रू. भे)

विपक्ख—देखो 'विपक्ष' (रू. भे)

विपक्खी—देखो 'विपक्षी' (रू भे.)

विपक्व—वि [स.] १ अच्छी तरह या पूर्ण रूप से पका हुआ ।

२ अवपका या कच्चा ।

स पु—एक देवता, जो मरीचिगर्भ देवताओं से से गिने जाँते हैं ।

विपक्ष—वि. [स.] १ विरुद्ध, खिलाप प्रतिकूल ।

२ चलटा, विपरीत ।

स पु.—१ दूसरा पक्ष । २ विरोधी पक्ष ।

रू भे.—विपक्ख, विपख, विपच्छ, विपक्क, विपक्व, विपख,
विपच्छ ।

विपक्षी—स पु [स] १ दुश्मन, शत्रु ।

२ दूसरे पक्ष का, विरोधी या प्रतिपक्षी व्यक्ति ।

उ०—वलिस्त धूम्र अक्ष की तुहीं विपक्ष नी, भई तुही महिखल स्त-
बीज भक्षनी । निसुंभ शुभ चड भुड तू निकदनी, नमामि मात 'इंदरा'
'समद' नदनी । —मे. म.

वि—दूसरे पक्ष का, विरोधी पक्ष का ।

रू भे—विपक्खी, विपच्छी, विपक्खी, विपख, विपखी, विपच्छ
विपच्छी ।

विपख—१ देखो 'विपक्ष' (रू भे)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे) (अ मा, ह ना मा)

विपखी—स पु—१ अश्व, घोडा । (डि ना मा.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे)

विपखणी—स स्त्री.—विरोधी की स्त्री ।

वि—विरोधी पक्ष की, प्रतिद्विनी ।

विपच्छ—१ देखो 'विपक्ष' (रू भे.)

२ देखो 'विपक्षी' (रू भे.)

उ०—गनीम गड्ड गव्वतीय गव्व कौ गमावनी, जहान आन मान
जोर सोर तँ जमावनी । रही प्रतच्छ रच्छसी दुगच्छ गच्छ दच्छ-
वनी, लगे विपच्छ लच्छ पे भुजाग वच्छ भच्छनी । —ऊ का.

विपच्छी—देखो 'विपक्षी' (रू भे)

विपण—स पु [स. विपण] १ छोटा व्यापार ।

२ विक्री ।

विपणक—वि [स] क्रय-विक्रय करने वाला, व्यापार करने वाला,
व्यापारी ।

रु. भे.—विपणक ।

विपणन—स. स्त्री [स विपणनम्] क्रय-विक्रय करने की क्रिया, व्यापार करने की क्रिया ।

रु. भे.—विपणन ।

विपणी—स. स्त्री. [स [विपणी, विपणी] १ थाजार २ हाट, दुकान ।

३ व्यापार हेतु रखा हुआ माल ।

स पुं [स विपणिन्] ४ व्यापार करने वाला, व्यापारी ।

रु. भे.—विपणी, वपणी ।

विपत, विपता, विपत्ति, विपत्ती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति विपत्ती—स. स्त्री [स. विपत्ति] १ आपत्ति, सकट । (डिं को)

उ०—१ सगा सनेही और नर, सुख में मिळीं अनेक । विपत पड्या दुख वाटलें, सो लाखन मे भेक । —अग्यात

उ०—२ आगळ सुरग कपाट अघ, दोजग अगुभी देख । सपत लता कुठार सम, विपत लता घण वेख । —वा. दा.

उ०—३ दूधा न्हासी, पुतरा फळसी, विपता वढसी, सुखडे रळसी । थारी काळी जीभ न थोडी चाकी, मूडे सू सगा थोडी थूक नाखी । भळं इसी नावो कदै ही मूडे सू मती काढ्या । म्हाने की ही ना देया । बीन रं वाप कंयो । —दसदोख

उ०—४ नदी पार सपजें, पोत द्रढ खेवट पाया । विपत्ति विले हुय जाय, जेभ घर सपत आया । —रा रु.

उ०—५ दिसा दिसान मान तोप माननीय की दर्ग, अडोल चक्र नक्र मक्र भाननीय व्हे अगं । विपत्य पत्य पत्य से विपत्ति की बहावनी, खिजें समत्य मत्य पें समत्य अत्य खावनी । —ऊ का

उ०—६ प्रह्लाद की प्रतिग्या राखी, हिरणकुस नख उदर विदारण । रिखि पत्नी पर किरपा कीन्हो, विप्र सुदामा की विपत्ति विदारण । —मीरा

उ०—७ पदम पराग कदम रज पावन, पाग, धरत छत्रपत्ती । प्राप्त होत भोत सुख सपति, व्यापत नाहि विपत्ती । —भे म.

मुहा —१ विपत्ति आणी—आपत्ति आना, सकट आना । २ विपत्ति उठाणी—सकट या दुःख सहना । ३ विपत्ति काटणी—सकट मिटाना, सकट मे समय व्यतीत करना । ४ विपत्ति फेलणी—देखो 'विपत्ति उठाणी' । ५ विपत्ति टळणी—सकट या आपत्ति टलना । ६ विपत्ति ढाणी—देखो 'विपत्ति आणी' । ७ विपत्ति पडणी—देखो 'विपत्ति आणी' । ८ विपत्ति मोल लेणी—'आपत्ति मोल लेना । ९ विपत्ति सिर माथे लेणी—देखो 'विपत्ति मोल लेणी' ।

२ कण्ट, पीडा ।

मुहा —१ विपत्ति भुगतणी—कण्ट और पीडा सहन करना । २

विपत्ति सहणी—कण्ट और पीडा सहन करना । ३ विपत्ति होणी—कण्ट व पीडा होना ।

३ भ्रूण्ट, बखेडा ।

उ०—जाव खड सख्याता किया ए, पिण अग्नि देताला ना दिया ए । कहे फाटीफटी होय ए, आ किसी विपत सूपी मोय ए ।

—जयवाणी

मुहा.—१ विपत्ति फेलणी—देखो 'विपत्ति मोल लेणी' । २ विपत्ति मोल लेणी—व्यर्थ मे भ्रूण्ट या आफन मोल लेना । ३ विपत्ति सिर माथे लेणी—देखो 'विपत्ति मोल लेणी' ।

४ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन ।

उ०—१ लोक चुगळ कानं लर्ग, घू घू बोल्यो गेह । भाया सूं भेळप नही, विपत लिखी त्याव वेह । —वा दा.

उ०—२ मिनख मोत आवे है, जकी घडी ऊमर भर री आछीमाडी लारली सारी वाता काच दाई साफ होय जाया करे है । दुख घर विपती मे भी । आपरे भला-बुरा कामा री ठा पढे बिना नी रेवे । —दसदोख

मुहा —१ विपत्ति आणी—बुरे दिन आना । २ विपत्ति काटणी—बुरे दिन काटना या बिताना । ३ विपत्ति टळणी—बुरे दिन खत्म होना । ४ विपत्ति भुगतणी या भोगणी—देखो 'विपत्ती काटणी' ।

५ मृत्यु, मोत ।

उ०—सबळा खळ सूं साधिया, निवळ जाय खळ नास । मूसी मेळ मजार कर, वचियो विपत विलास । —वा. दा

मुहा —१ विपत्ति आणी—मोत आना । २ विपत्ति टळणी—मोत से बचना, मोत टलना ।

६ थकान से उत्पन्न पीडा, थकान ।

उ०—जाळ खेजडा भाडखा भट, खनें बुला स्वागत करे । मर दातार देव वना विच, छाया सुला विपता हरे । —दसदेव

रु. भे.—वपत, वपता, विपत, विपता, विपति, विपती, विपत्त, विपत्ता, विपत्ति, विपत्ती, विपद, विपदा, वीपत, वीपता, वीपति वीपती, वीपत्त, वीपत्ता, वीपत्ति, वीपत्ती, ।

विपत्य, विपथ—स पुं—१ भयकर मार्ग ।

उ०—दिसा दिसान मान तोप माननीय की दर्ग, अडोल चक्र नक्र मक्र भाननीय व्हे अगं । विपत्य पत्य पत्य से विपत्ति की बहावनी, खिजें समत्य मत्य मे समत्य अत्य खावनी । —ऊ का. २ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

विपद, विपदा, विपदि, विपदी—स. स्त्री [स विपद्, विपदा] १ आपत्ति, सकट, कण्ट ।

उ०—१ अर पछे ठकराणी ठाकर मार्ये आयोडो' विपदा री सगळी

धरामूल सू माडनें सुगाय दी । वात री गभीरता नें समझ नैं उगा
ई ठकराणी नें अरज करी—आप म्हुनैं इण जोग समझिया श्री
आपरो बडपणी है । —अमरचूनडी

उ०—२ सियावर नैं तू वन मे निकार मती, म्हारा जिवडा नैं
विपदा मे डार मती । राज तिलक रो म्हे साज सजायी, वणती
वात विगार मती । —गी रा.

२ मानसिक दुख या सन्ताप ।

उ०—१ मानवा देही माथे इमी आफन आय जावे ती इण आफत
रो काई माप ? इण विपदा रो काई थाग ? कोई रो एकाएक
मोठ्यार वेटी भूडापा मे दगो देय जावे ती उण जामण रो काई
हवाळ ? उण बाबल रो काई भवस ? मायड रा उण दुख नैं कुण
माप सकें । वाप रो उण विपदा नैं कुण जाण सकें ?

—अमरचूनडी

उ०—२ धरवाळा घणा ई रोया, घणा ई कळपिया । पण होणहार
रें कान कठे, नैण कठे । जीयो जितरें वेटी, मरिया पछे माटी ।
वाप थका वेटी जावे, इण विपदा रो पार कुण पावे । —फुलवाडी

३ कष्ट, पीडा ।

४ झुंझट, बखेडा ।

५ आपत्ति की अवस्था, बुरे दिन ।

६ मृत्यु, मीत ।

७ थकान से उत्पन्न, पीडा, थकान ।

रू भे —वपत, वपता, विपद, विपदा ।

विपदेत्—स पु. [स व्यपदेश] कपट, छल, धोखा । (ह ना मा)

विपन—देखो 'विपिन' (रू भे.) (अ मा, ह ना. मा)

उ०—१ घर चौडे सरवर विपन, विधाचळ दिस एक । च्यार
महूरत उत्तरें, धारस मत्र विवेक । —रा रू

उ०—२ अरव आद ब्रख जात अपारा, आप रूप किर भार अठारा ।
सुपह ममेत भडा मिळ सारा, राज विपन जोयो राजा रां ।

—रा. रू

उ०—३ मदार पारजाती कलप, हरिचदन सतान तर परसियो
'अमै' ब्रदा विपन, कुज पुज तरवर निकर । —रा रू

उ०—४ की सरमावे फिर लुक ज्यावे, पग थाम पट साम जप ज्यावे ।
जै दिख ज्यावे ती हस ज्यावे, जद विपन गुदगुदी विखरावे ।

—करणीदान वारहठ

विपनतिलका—देखो 'विपिनतिलका' (रू. भे)

विपनविहारी—वि—वन मे धूमने वाला, वन-विहार करने वाला ।

उ०—हेमाणी मरु हाट, नरम तनडो उपकारी । ऊपर चढ देखे,
दूर तक विपनविहारी । ना ऊमळणें जोग, वाळका नत कर
खेलें । हिवडे सेवे चोट, कदे ना पाछी मेलें । —दसदेव

स. पु.—श्रीकृष्ण का एक नाम ।

रू. भे—विपिनविहारी ।

विपर—देखो 'विप्र' (रू भे)

उ०—१ पातुर नाचए घरम दुवार, मेरी माय भलो ए राजन
पार उतार । विपर पोथी वाचिया-नेरें भवन विच होय पूजा
वार..... । —लो गी

उ०—२ सूद्र वंस्य क्षत्री विपर, कहु मछली कहु नीर । कहु निरभें
निर बैरता, कहु जाळी कहु नीर । —ह. पु. वा

उ०—३ जद हरियाळी वनडो फेरा पधारची अं, फेरा मे विपरं
सरायो, अं वाई जी म्हारा राज । —लो गी.

विपरजय—देखो 'विपरय्य' (रू भे)

उ०—सुघ सुघ विपरीत थळ, प्रकारात विहु जाण । सत्य विपर-
जय संख्य थळ, उलट पच्छ लघु प्राण । —र ज. प्र.

विपरत—देखो 'विपरीत' (रू भे)

विपरव—स पु. [स विपर्व] बुरा दिन ।

उ०—काम क्रोध लोभ मोह पास मे परची, आसकी विनास के
निरास ना अरची । गरव मे अखरव खरव गरव ना गरची, परव
में विपरव परव वासना भरची । —ऊ. का

विपरयय, विपरय्य, विपरय्यय—सं पु. [स विपरयय] १ व्यक्तिक्रम ।

२ उलट-पलट, हेर-फेर ।

३ विरुद्धता, प्रतिकूलता ।

४ भूल, गल्ती, अशुद्धि ।

५ अव्यवस्था, गडबडी ।

६ वैमनस्य, शत्रुता ।

७ भ्रम, सन्देह ।

८ सन्देह के कारण विचार बदलने की क्रिया ।

रू भे.—विपरजय ।

विपराणो, विपरावो—देखो 'वपराणो, वपरावो' (रू भे)

विपराणदार, हारी (हारी), विपराणियो—वि० ।

विपरायोडो—भू० का० कृ० ।

विपराईजणो, विपराईजवो—कर्म वा० ।

विपरायोडो—देखो 'वपरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. विपरायोडो)

विपरावणो, विपराववो—देखो 'वपराणो, वपरावो' (रू. भे)

विपरावणहार, हारी (हारी), विपरावणियो—वि० ।

विपराविश्रोडो, विपरावियोडो, विपराव्योडो—भू० का० कृ० ।

विपरावीजणो, विपरावीजवो—कर्म वा० ।

विपराविधोडी—देखो 'वपराधोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विपराविधोडी)

विपरित, विपरिती, विपरीत—वि [स विपरीत] १ खिलाफ, प्रतिकूल, विरुद्ध ।

उ०—१ राग रग हुवें छे, छडवडा खिलवत रा साथ सु बँठा छे ।
तिण सम चाचीमेरी आपरी साथ लें साजबाज सु चढीया । राणाजी
दिसा ऊनाळी, ऊभी माहे चालीया । तरै राणें मोकलजी देख
कह्यो—आज खातण वाळा विपरीत दीस, मेळ मे तो नही ।

—राव रिंगमल री वात

उ०—२ श्रीईड अथन्नण भाद्रव न्नावण, कस्सस कोरण कठळिय ।
विपरीत करस्सण कट्टक कोग्रण, सेन महाघण सम्मळिय ।

—गु. रू. व.

उ०—३ घड मोर नवी परि नाचियो, दक्खण फौजा आइयां ।
'गजबध' मेह विपरीत गति, वूठी सिरि वेंराइया । —गु रू. व.

उ०—४ पातिसाह पासि कागळ गए, सुणी वात विपरीत परि ।
सुरताण सेर वूहा खुरम, कासमीर आई खबरि । —गु रू. व.

२ उलटा, विलोम, विपरीत ।

उ०—१ जेथि दीप दीपता तेथि प्रजळ हुत्तासण । जेथि हसति
गूजता, तेथि गुर्ज पचाडण । जेथि रग-आमास, तेथि क्रीडति कुर
गह । जेथि अरपति बँसता, तेथि उट्ट त विहगह । त्रिय तेथि रेख
काजळ नयण, भुअण तेथि भरिया असम । खेडपति कीध खिडकी-
तखत, वसुह रीत विपरीत इम ।

—गु रू. व.

उ०—२ कुदरत विछूटा आकप कुहकवाण, इळा पुड आसमाण ।
गोळिया ताड विपरीत गत्त, ओअठे गडे फिरि मेह अत्त ।

—गु. रू. व.

३ अनिष्ट साधन मे तत्पर, रुष्ट ।

४ जो उपयुक्त न हो, अनुपयुक्त ।

५ उलटा, कुटिल ।

उ०—हिये तहन्नर खान रे, व्यापी यो विपरीत । दाह अकन्नर
भोगयो, 'नीरग' साह नचीत ।

—रा रू.

६ असत्य, झूठा, मिथ्या ।

उ०—जेह एकात नय पक्ष थापी रहे, प्रथम एकात मिथ्यामती
तें कहै । अथ ऊथापि थापे कुमति आपणी, कहै विपरीत
मिथ्यामती तें भणी ।

—घ व. अ

७ अप्रिय, अशुभ ।

८ भयकर, भयावह ।

उ०—ताहरा भोटिंग भेंसै री रूप कर आयो । ओ ठाकुर बोलियो
हीज नहीं । सखरी पाछो आयनं तरवार लें बाकरी मारियो ।

बाकरी मारिया पछे भोटिंग एक विपरीत रूप करनै आयो । अकास
सीस, पग घरती, इसी भूत आवती दीठी । —नैरासी

९ नियम-विरुद्ध, परम्परा के विरुद्ध ।

उ०—१ निकराळ काळ वदन, दारण दुजीह गरळ मेमत्ती ।
विपरीत कुळह व्रती, इजगूर या डिभव' गिळ ए । —गु रू. व.

उ०—२ जद स्वामीजी कह्यो—सासनें आणी लेजा जमाईं जावें
जद स्त्री तो रोवें । पिए उण रं देखा देख जमाई रोवा लाग जावें
जद लोक मे भूडी लाग । ज्यू सावणणी लेवें जरै उण रा न्यातीला
रोवें तें तो आपरें स्वारथ पिए उण री देखा देख दीक्षा लेणा
वाळो रोवा लाग जावें ती वात विपरीत ।

—भि. द्र.

उ०—३ कोडी पति छोडी करी, अवर पुरुव सु प्रीत । तजि
आचार सतीतणी, कीधो इण विपरीत । —स्त्रीपाल रास
१० चित, सीधा ।

उ०—सोण मील कमकम, किये करिभरा चढाए । रचें संज
रिणभोम, कुमम अरि कमळ विद्याए । नखत तिकल सर
कूत, सहै अन-मध अचगळ । पाण पयोहर कठण मथें मैगळ
कुंभा-थळ । विपरीत रहसि वीरारसहि. रिण दूभळ हृइ रट्टवड ।
सूती सग्राम करि सोण-हर, भूप भाण सग्राम घड । —गु रू. व.
रू. भे.—विपरीत, वपरीत, विपरत, विपरीति, विपरीती, विपरत ।

विपरीत-रति-स स्त्री. [विपरीत +रति] रति-क्रीडा का एक ढग
'विशेष, जिसमे सभोग करते समय पुरुष चित्त लेटकर स्त्री को अपने
ऊपर उल्टी लेटाता है ।

विपरीत लक्षण-स. स्त्री —ऐसी व्यग्यात्मक अभिव्यक्ति, जिसमे परम्पर
विरोधी गुणो, लक्षणो आदि का उल्लेख हो ।

विपरीता-स स्त्री [स] दुर्घचरित्रा स्त्री, बदचलन स्त्री ।

विपरीति, विपरीती—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—१ अकवर लेख प्रमाण, तहवर सहत राज लोभाण । आवी
चित अचीती, विणसण गा (का) ल बुद्धि विपरीती । —रा रू.

उ०—२ किए परि राखें मुख चीत रे, भय मरण तणो विपरीति
रे । तिहा हूरि रही तें प्रीति रे, पछे सह को नी रीति रे । —वि कु

विपरत—देखो 'विपरीत' (रू. भे.)

उ०—पय जंग कूत केता घरम पालटें, हटे विपरत गत सूं तग
हीयो । कळह विच मजवूत अडिग रोके कदम । राह रजपूत साबूत
रहियो । —रावत सग्रामसिंह सक्तावत री गीत

विपळ, विपल-स पु. [स विपल] १ एक पल के साठवें अक्ष के बरा-
बर समय का एक बहुत छोटा विभाग ।

स. स्त्री —२ समय की गणना की एक इकाई ।

विपळध, विपलध—देखो 'विपलध' (रू. भे.)

विपळा, विपला—देखो 'विपुला' (रू. भे.)

(अ मा., ना. मा., ह. ना. मा.)

विपळो, विपळो—वि —जिसका विश्वास न किया जाय, अविश्वास पात्र ।

स पु [स. विप्लव] १ भूत-प्रेत आदि के उपद्रव ।
२ भूत-प्रेत ।

उ०—पळा भरते गळा वामणी प्रजाळी, रुदन वरतो छळा वयण रहटी । कैइ विकळा कळा वळवळा करतो, छळा विपळा जीउही आण चॅटी । —भैरवान वारहट

विपसचित्त, विपसच्चि—स पु [स. विपश्चित] कवि, पंडित ।
(अ मा, ह ना. मा)

विपसचित्त, विपश्चित—स पु [स पश्चित] १ स्वारोचिष मन्वन्तर का इन्द्र ।

२ एक राजा, जो अपनी पत्नी के साथ पापकर्म किये जाने के कारण नरक मे गया था । इसकी पत्नी का नाम पीवरी था जो विदर्भराज की कन्या थी ।

३ दक्षजयन्त लोहिल का वशज एव शिष्य, जो स्वयं आचार्य था ।

४ आपाठ उत्तर पाराशर्य नामक आचार्य का वशज एव शिष्य, जो एक आचार्य था ।

विपाडु, विपाडुर—वि [स] पीला, पीत ।

विपाक—स पु [स विपाक] १ किये हुए कर्मों का फल, परिणाम, नतीजा ।

उ०—१ सूत्र सिद्धात वखाणता जी, सुणता करम विपाक । खिए इक मन माहि ऊपजइ जी, मुझ मरकट वइराग । —स. कु.

उ०—२ काम, भोग सयोग सगला, जाण फल विपाक रे । दीसता रमणीक दीसइ, अति कटुक विपाक रे । —स. कु

२ स्वाद, जायका ।

३ कठिनाई, तकलीफ ।

४ परिपक्व होना, पकना ।

५ पूर्ण दणा को पहुचने की क्रिया, चरम उत्कर्ष ।

विपाकसूत्र—स पु —एक सूत्र ग्रन्थ का नाम । (जैन)

वि. वि —ज्ञानावरणीयादि आठ कर्मों के शुभ-प्रशुभ परिणामों को विपाक कहते हैं और ऐसे कर्मविपाक का वर्णन जिस सूत्र मे किया जाता है वह विपाक सूत्र कहलाता है । यह ग्यारवा अगसूत्र है ।

विपाट—स पु [स विपाट] १ एक प्रकार का लज्जा तीर या बाण विशेष ।

२ कर्ण के एक भाई का नाम जो महाभारत-युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया था ।

रू भे —विपाठ ।

विपाटल—वि.—गहूरा लाल ।

विपाठ—देखो 'विपाट' (रू भे)

विपाठा स. स्त्री —दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों में से एक पत्नी का नाम ।

विपाद—स पु —१ कश्यप एव दनु के पुत्रों मे से एक पुत्र, दानव ।
२ एक पिशाचगण ।

विपादिका—स स्त्री [स] एक प्रकार का कुष्ठ रोग । (अमरत)

विपाप—स पु —शिवावतार के एक शिष्य का नाम जिसको दमन के नाम से भी पुकारा जाता है ।

विपापनन, विपाप्मन—स पु [सं विपाप्मन] १ अग्नि का एक पुत्र, जिसका एक नाम त्रिश्वन भी था । यह वास्तुकार्य में अधिष्ठाता देवता माना जाता है ।

२ मत्स्यानुसार, आयु राजा का एक पुत्र ।

विपास, विपासा—स स्त्री [स विपाश] पंजाब में बहने वाली व्यास (आधुनिक शतलज) नदी का एक नामान्तर ।

वि. वि.—इस नदी को विपास या विपासा नाम प्राप्त होने का कारण है कि एक बार वशिष्ठ ऋषि आत्महत्या के उद्देश्य से अपने हाथ-पैर बाध कर उक्त नदी मे गिर गये । नदी ने उन्हे पाशमुक्त कर किनारे पर फेंक दिया ।

विपिन, विपुन—स. पु [स. विपिन] १ वन, जंगल । (ना. मा)

उ०—१ अत असतुत घर परस अघारै, चलै विपिन तप चाहै । इम थट सहित सुबेस उमाहै, पुर अवधेस पधारै । —र. रू

उ०—२ ग्रीक्षम गिर लास्या जरन, सरवर निकट पुलीन । बूझैगी कैसै विपिन, परस्या विना प्रवीण । —प्रवीणसागर

२ उपवन, वाटिका ।

उ०—विरचइ विपिनि विचक्षण तक्षण दस वि दसार, नव नव निर-मल भूखण दूखण रहिय स गार । —जयसेखर सुरि

रू भे —विपिन ।

विपिनचर—वि [स] वन में रहने वाला या विचरण करने वाला, जंगली ।

विपिनतिलका—स स्त्री —१ प्रत्येक चरण में नगण, सगण, नगण और दो रगण वाली वर्णवृत्ति ।

२ एक प्रकार का मात्रिक छंद विशेष जिसमे १०, १० मात्रा पर यति हो और अत मे रगण हो ।

रू. भे.—विपिनतिलका ।

विपिनपत्त, विपिनपति, विपिनपती—स पु [स विपिन+पति] वन का राजा, सिंह ।

बिपिनबिहारी—देखो 'बिपिनबिहारी' (रू भे)

विपुल, विपुल—वि [स] १ बहुत बड़ा, विशाल ।

२ अधिक, प्रचुर ।

उ०—सीत काळ ऊतरें, भव मवरें रित आगम । रस आयी तर-
वरें, भयी भमरें सुर सगम । द्रुम चरम मधु भरें, पत्र अकुरें विपुल
वन । फाग राग माधुरें, सुरें नर नारि हरें मन । —रा. रू.

३ अगाध, गहरा ।

४ रोमांचित ।

स पु —१ सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग ।

२ महाभारत युद्ध में अर्जुन द्वारा मारा गया, सौवीर देश का एक
राजा, जिसे देवमित्र व सुमित्र नाम भी प्राप्त थे ।

३ रोहिणी एव वसुदेव के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, बलराम व
कृष्ण का भाई ।

४ एक पर्वत, जिसकी अघिष्ठात्री देवी विपुला है ।

५ देवशर्मन ऋषि का शिष्य एक भृगुवक्षीय ऋषि ।

वि वि.—इसकी गुरुपत्नी 'रुचि' पर इन्द्र आसक्त हुआ, उस समय
इसने रुचि की उन्मत्त से रक्षा की थी । इसी कारण प्रसन्न होकर
देवशर्मन ने इसे अनेक वर प्रदान किये ।

६ एक पर्वत विशेष, जो मगध की राजधानी गिरिद्वज के पास है ।

रू. भे.—विउल ।

विपुलता, विपुलता—स. स्त्री —२ प्रचुरता, बहुतायत ।

२ महानता, विशालता ।

विपुलमति, विपुलमती—स. स्त्री —२८ प्रकार की लवणियों में से तृतीय
लवण का नाम ।

उ०—सुपरण मानुवक्षेत्रे सग्यावत, पञ्चैन्द्रिय जं छै तसु मनवाता
तत । सूखमपरजायं जायं सह परिणाम, ए नवमी कहियं विपुलमती
सुभ नाम । —वृ स्त

विपुलस्वान्त—स पु —सुकुप एव तुवुष के पिता, एक ऋषि ।

विपुला, विपुला—स स्त्री [स विपुला] १ जमीन, पृथ्वी, भूमि ।

(डि नां मा)

२ विपुल नामक पर्वत की अघिष्ठात्री देवी ।

३ एक प्रसिद्ध बहुला सती का नामान्तर ।

४ विपुला देवी का सिद्ध पीठस्थान ।

५ एक प्रकार का छद्म विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में भरण,
रक्षण और दो लघु होते हैं ।

६ आर्याछन्द का एक भेद विशेष, जिसके चारो चरणों में १८, १२
१४ और १३ के क्रम से ५७ मात्राएँ होती हैं ।

रू. भे.—विपुला, विपला, विपला ।

विपोहणौ, विपोहवौ—क्रि. स [स. वि=विगत, रहित+पोपणं]

१ मिटाना, नाश करना, समाप्त करना ।

उ०—समोसरण सामी दघइ देसण, भविक जीव पडिबोहइ । केव-
लग्यानी धरम प्रकासइ, वयर विरोध विपोहइ । —स. कु.

२ दूर करना, हटाना ।

विपोहणहार, हारी (हारी), विपोहणियो—वि० ।

विपोहणोडो, विपोहियोडो, विपोहचोडो—भू० का० कृ० ।

विपोहीजणो, विपोहीजवौ—कर्म वा० ।

विपोहियोडो—भू. का कृ —१ मिटाया हुआ, नाश किया हुआ, समाप्त
किया हुआ २ दूर किया हुआ, हटाया हुआ.

(स्त्री विपोहियोडो)

विप्प—१ देखो 'विप्र' (रू भे)

२ देखो विप्पळो ।

उ०—विप्पळो पळा आवळा चाढ, ग्रीधळां खळा सावळा गाढ ।

सावळा हुळा मंगळा सरल, ढँचळा ढळा तुलाह ढलन । —गु रू वं

विप्पोसहि, विप्पोसही—स. स्त्री —२८ प्रकार की लवणियों में से दूसरी
लवणी ।

उ०—१ आमोसहि विप्पोसहि खेलोमहि जल्लोमहि सव्वोमहि लव्वि
वंकिय लव्वि, पुलाक लव्वि, तेजोलेस्या लव्वि, आसीनिख लव्वि,
सभिन्नसोतो लव्वि । —व स.

उ०—२ जासु मळमूय वग्यव समा जाणीयें, वीय विप्पोसही लववि
ववाणियें । स्लेखम उखधि सारिखो जेहनी, तीजी खेलोमही नाम
तेहनी ठवं । —वृ स्त.

विपकरणौ, विपकरणौ—देखो 'विकरणौ, विकरणौ' (रू. भे)

विपकरणहार, हारी (हारी) विपकरणियो - वि० ।

विपकरियोडो, विपकरियोडो, विपकरचोडो—भू० का० कृ० ।

विपकरीजणो, विपकरीजवौ—भाव वा० ।

विपकरियोडो—देखो 'विपकरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विपकरियोडो)

विपफुरणौ, विपफुरवौ—देखो 'विपफुरणौ, विपफुरवौ' (रू भे)

उ०—जासु सुजसु जगि भिगगियें ए, चटुजल निकलक । प्रभु
प्रताप गुण विपफुरइ, हरइ डमर अरि सक । —पुण्यसागर

विपफुरणहार, हारी (हारी), विपफुरणियो—वि० ।

विपफुरियोडो, विपफुरियोडो, विपफुरचोडो—भू० का० कृ० ।

विपफुरीजणो, विपफुरीजवौ—भाव वा० ।

विपफुरियोडो—भू. का कृ —देखो 'विपफुरियोडो' (रू भे)

(स्त्री विपफुरियोडो)

विप्र-स पु [स] १ ब्राह्मण ।

उ०—१ नहीं तू विप्र नहीं तू बैस, नहीं तू खत्रिय सूद्र न खैस ।
नहीं तू मूल नहीं तू डाळ, नहीं तू पत्र नहीं जु पराळ । —ह. र

उ०—२ चित माहि इम चितवैजी, निरदय विप्र चडाल । करै
परीसी साधनै जी, दे मुख सू घणी गाल । —जयवाणी

उ०—३ ब्राह्मणपुर दसरावी थप्ये, जोसी तिलक मुहूरत अण्ये । विजै
दसम्पी होम करावै, विप्रा कम्पा वेद वचावै । —गु रू. व.

उ०—४ तिलक दुआ-दस वसत्र वखबर, करै सदा खट करम निर ।
तर । राजा वदन कीध उभै कर, भ्रात्री-वाच विप्रां इम उच्चार
—गु रू व

२ ब्राह्मण या पुरोहित जाति ।

३ उक्त जाति का पुरुष ।

४ कर्मोन्मत्त पुरुष ।

५ पीपल, सिरस आदि पेड़ों का नामान्तर ।

६ ध्रुव वशीय एक राजा ।

७ मगध नरेश सुनञ्जय के पुत्र व शुचि के पिता एक राजा ।

८ डगण के पाचवे भेद का नाम ।

९ विद्वान या मेधावी व्यक्ति ।

रू भे —त्रिपर, विप्र, विप, विपर विप्प ।

विप्रक-स पु [स] नीच या धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण ।

विप्रकार-स पु [स] १ हार, पराजय ।

२ अनादर, तिरस्कार ।

३ अपकार ।

विप्रचरण-स पु [स] भगवान् विष्णु के हृदय पर अंकित मृग मुनि की
लात का चिन्ह । (पुराण)

विप्रचित्त, विप्रचित्ति विप्रजित्त, विप्रजित्ति-स पु [स. विप्रचित्ति]

१ व्यष्टि नामक आचार्य का एक शिष्य ।

२ हिरण्यकशिपु का सेवक एक राक्षस ।

३ एक दानव राजा ।

वि वि. —यह कश्यप एव दक्षपुत्री दनु के सौ पुत्रों में से एक पुत्र
था । इसका विवाह हिरण्यकशिपु की पुत्री मिहिका से
हुआ था । मिहिका के गर्भ से इसे सौ पुत्र प्राप्त हुए थे जिनमें राहु
ज्येष्ठ-पुत्र था जो कि आजकल ग्रह माना जाता है । कहीं-कहीं इसके
पुत्रों की संख्या चौनीस या तेरह भी दी जाती है । इसने असुर-इन्द्र
युद्ध व अमृतमन्थन आदि में भाग लिया था । इसके पुत्रों का संहि-
कैय नामक समूह था जिसमें एक सौ राक्षस थे जो सभी इसके पुत्र
थे । उक्त समूह में एक राहु एव सौ कैतु थे ।

४ राहुग्रह । (हिं को)

विप्रणी—देखो 'विप्रो' (रू भे)

उ०—पीत दुकूल वैसणी पहरण, गाह सुदणी स्याम वसन गण ।
गौरे वरण विप्रणी गाहा, चपक वरण खिप्रणी चाहा ।

—र. ज प्र.

विप्रता-स स्त्री —ब्राह्मण होने की अवस्था, ब्राह्मणत्व ।

उ०—जै छइ गहन विचार रै सुकनै पूछीजै, निस्चय ए कीजै । सूँ
विप्रता रै अन्हनै सूवटा, जेहवौ छै तेहवौ दाखि रै । —वि कु.

विप्रविसार, विप्रतोसार-स पु [स] १ रोप, क्रोध, गुस्सा ।

२ दुष्टता ।

विप्रपद—देखो 'विप्रचरण' ।

विप्रवधु-स पु [स] १ धर्मभ्रष्ट ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण ।

२ मन्त्रद्रष्टा मुनि ।

विप्रबुद्ध, विप्रबुध—वि. [सं] ज्ञानी, जानकार ।

विप्रराज-स पु [स] परशुराम का एक नामान्तर ।

विप्रलभ-स. पु [स विप्रलम्भ] १ धोखा, कपट ।

२ विछोह, वियोग ।

३ प्रेमी, प्रेमिकाओं का विछोह ।

४ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाओं
के विरह का वर्णन होता है ।

वि वि —यह शृंगार रस का एक भेद है, जिसमें अनुराग तो अति-
उत्कंठ होता है किन्तु नायक नायिका का समागम नहीं होता है ।
पूर्वराग, मान, प्रवास, करुण, आदि इसके चार भेद हैं । इसमें
अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, प्रलाप, उन्माद, व्याधि,
जडता और मृति (मरण) आदि दश काम दशावै होती हैं और
इन सारी काम दशाओं के लक्षण भिन्न भिन्न होते हैं ।

विप्रलब्ध-वि [म] १ धोखा दिया हुआ, छला हुआ ।

२ हताशा, निराशा ।

विप्रलब्धा-स स्त्री. [स] वह नायिका जो अपने प्रेमी द्वारा बताये
सकेत स्थान पर प्रेमी के न पहुँचने पर निराशा या दुःखी हुई हो ।

विप्रलप, विप्रवाद-स पु [स] १ व्यर्थ की बकवास ।

२ विवाद, झगडा ।

विप्रस्त-स. पु [स विप्रष्ट] वसुदेव एव धृतराष्ट्र के पुत्रों में से एक
पुत्र, बलराम का छोटा भाई ।

विप्रस्त-स पु [स विप्रस्त] वह प्रस्त जिसका उत्तर फलित ज्योतिष
द्वारा दिया जाय ।

विप्रि, विप्रो-स स्त्री —आर्याछन्द में एक गाथा जिसमें १३ लघु वर्यं
होते हैं ।

उ०—१ विप्रो तेरह लघुव दीर्घ, लघु यकवीस खिप्रणी लीजें सतावीस लघु वैसी सोई, है लघु अधिक सुद्रणी होई ।—२ ज. प्र उ०—२ भीन रग वैसणी सुभायक, लख सुद्रणी म्याम रग लायक । मुगता भूखण विप्रो मोहत, सुज खिप्रणि हिम भूखण सोहत ।

—२ ज प्र

रू भे —विप्रणी ।

विप्लव—स. पु. [स] १ उपद्रव, बलवा, हगामा, विद्रोह ।

२ युद्धकाल मे उत्पन्न अशांति, उथल-पुथल ।

३ आपत्ति, विपत्ति ।

४ घोडे की अत्यधिक तेज चाल ।

५ सीमोल्लघन, अतिक्रमण ।

रू. भे —विपलव, विपलव ।

विप्लुत—वि [स.] जिसके उच्चरणा मे प्लुन रो भी अधिक समय लगे ।

उ०—गुरु लघु प्लुन विप्लुत करी, व्यजन वरण विसेख । धूया माठा पडमठा ताल-तरणा तिहा तेव । —मा. का प्र.

विप्सा—देखो 'वीपसा' (रू भे)

विफद, विफदौ—स पु —जाल, पाश, फन्दा, फास ।

उ०—राज के विहीन सत्यसिधु ते रह्यो । भाज के अधीन दीन-धधु के भयो । छद व्ही सुखद श्री अनद को कह्यो, मदमती "ऊमरी" विफद मे फयो । —ऊ. का.

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू भे)

विफरणी, विफरवौ—क्रि अ. [स. विस्फुरणम्] १ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, विगडना ।

उ०—विफरै जैमाळ तह वने बड बावळा, सुघारे जावळा बेल सारा । ऊपटे अठी रूपाण थड आबळा, भडण उतावळा हृति भारा । —प्रतापसिध री गीत

२ गरजना, दहाडना ।

३ फलना, विखरना ।

४ प्रगट होना, स्फुटित होना ।

विफरणहार, हारी (हारी), विफरणियो—वि० ।

विफरिओडो, विफरियोडो, विफरयोडो—भू० का० कृ० ।

विफरीजणो, विफरीजवौ—भाव वा० ।

विफरणी, विफरवौ, विफरणी, विफरवौ, वीफरणी, वीफरवौ, वीभरणी, वीभरवौ, भीफरणी, भीफरवौ, विफरणी, विफरवौ, विफुरणी, विफुरवौ, धीफरणी, धीफरवौ—रू० भे० ।

विफरियोडो—भू का कृ —१ क्रोधित हुवा हुआ, गुस्से से युक्त हुवा हुआ, विगडा हुआ. २ गरजा हुआ, दहाडा हुआ ३ फला गिसरा हुआ हुआ, ४ प्रगट हुवा हुआ, स्फुटित हुवा हुआ (स्त्री विफरियोडो)

विफलरे, विफरैळ—वि.—क्रोधित, क्रुद्ध, गुस्से से युक्त ।

रू भे —विफरेल, विफरैल, वीफरेन वीफरैल ।

विफळ, विफल—वि. [स. विफल] (स्त्री. विफळा, विफला) १ जिसके फल न लगते हो ।

२ व्यर्थ, निरर्थक ।

३ असफल, नाकामयाग ।

४ हताश, निराश ।

५ परिणाम रहित ।

स पु —पान, ताम्बूल । (अ मा.)

रू भे —विफळ ।

विफळणो, विफळवौ—क्रि अ —१ हनाश होना, निराश होना ।

उ०—तद कुवरसी कछो, जो मोनू फेर वरजियो ती हू पेट में मार कटारी मरीस, का राख घात सामी हुय जाईस । तद वीरू रग देख विफळियो, पाछो खीवसीजी नूं कछो, माने कोई नही ।

—कुवरसी साखला री धारता

२ धवराना, भयभीत होना ।

विफळणहार हारो (हारी), विफळणियो—वि० ।

विफळिओडो, विफळियोडो, विफळयोडो—भू० का० कृ० ।

विफळीजणो, विफळीजवौ—भाव वा० ।

विफळता, विफलता—स. स्त्री [स विफलता] १ व्यर्थता, निरर्थकता ।

२ असफलता, नाकामयावी ।

३ हताश, या निराश होने की अवस्था या भाव ।

विफळियोडो—भू का कृ —१ हताश, निराश । २ धवराना हुआ, भयभीत हुवा हुआ ।

(स्त्री विफळियोडो)

विफक—स पु —१ वीरता, बहादुरी, बारापन ।

उ०—गिराब गड्ड गड्ड को विगड्ड छड्ढती बहे, बकारि बरि ब्रद फो डकार डड्ढती बहे । बडे निसक बक की बिबक कड्ढती बहे, रहेपु सक रक की विसक बड्ढती बहे । —ऊ का.

२ कुटिलना ।

३ टेढापन, तिरछाई, बक्रता ।

४ वीर, बहादुर ।

विबध—स पु [स] १ कबजो होने की अवस्था, कबजो, मलावरोध ।

२ अवरोध, रुकावट ।

३ बन्धन, हथकडी ।

विबधवर्त्ति—स स्त्री [स विबधवर्त्ति] घोडों का रोग विशेष जिसके

कारण उनका पेशाब बंद हो जाता है ।

विबरजित—देखो 'विवरजित' (रू भे)

विवरण—देखो 'विवरण' (रु भे)

विवल, विवल-वि [स. विवल] १ अशक्त, शक्तिहीन, बलहीन ।

२ विशेष बलवान, शक्तिशाली ।

रु भे —विवल ।

विवहयरणी, विवहयरवी-क्रि अ —लहराना, फहराना ।

उ०—पसरि पख हें पाई इला उहुँ आघतरि । जरद लाल इक
स्याह, वरन वाना विवहयरि । —गु रु व

विवहयरणहार, हारी (हारी), विवहयरणिणी—वि० ।

विवहयरिओडो, विवहयरियोडो, विवहयरयोडो—भू० का० कृ० ।

विवहयरीजणी, विवहयरीजवी भाव वा० ।

विवहयरणी, विवहयरवी—रु० भे० ।

विवहयरियोडो—भू का कृ —लहराया हुआ, फहराया हुआ ।

(स्त्री विवहयरियोडो)

विवाई, विवाही—देवी 'विवाई' (रु भे)

वित्रिखण, वित्रिसण, विवीखण, विवीसण—देखो 'वित्रीसण' (रु भे)

विबुद्ध, विबुध-वि [स विबुद्ध] १ जाग्रत, सचेत ।

२ ज्ञानप्राप्त, जानकार ।

३ चतुर होंशियार ।

स. पु [स विबुध] १ चन्द्रमा, चाद ।

२ देवता ।

उ०—तिथ चतुरदसी सनवार तव, रयण पहर वीता अरध । 'अग-
जीत' ग्रेह जनम्यो 'अभी', वाण वेद हखै विबुध । —रा. रु

३ विद्वान पुरुष, बुद्धिमान जन, पंडित ।

उ०—पूरण ग्यान दसा मन आणी, वेधक वाणी व्वाणीजी ।
विबुध भणी अरवोध समानी, मूरख मति मूभाणीजी ।—वि कु
४ कृति राजा का मतान्तर से देवमीठ राजा का, विसृत मतान्तर
से विश्रुत नामक पुत्र, एक राजा ।

५ शिव, महादेव ।

रु. भे —विबुध, विवध, विवधा, विवह, विबुध, विबुह ।

विबुधतणी, विबुधनटनी, विबुधतटिणी, विबुधतटिनी—स स्त्री [स
विबुध+तटिणी] १ देवताओं की नदी, आकाश गंगा । २ गंगा नदी ।

विबुधतर, विबुधतरु—स पु [स विबुधतरु] कल्प-वृक्ष का एक
नाम ।

विबुधधेन, विबुधधेनु—स स्त्री. [स विबुधधेनु] काम-धेनु ।

विबुधनद विबुधनदी—स स्त्री [म विबुधनदी] १ आकाश-गंगा ।

२ गंगा ।

उ०—जिण री मै 'मा जोय, नर मूरख नावें नही । हाड पड्या
गत होय, विबुधनदी मे 'वसतिया' । —समेळजी बारहठ

विबुधपत्त, विबुधपति, विबुधपती, विबुधपत्त, विबुधपति विबुधपती—
स पु [म विबुधपति] सुरपति, देवराज इन्द्र ।

विबुधप्रिय विबुधप्रिया—स स्त्री. [स. विबुधप्रिया] चचरी या चचरी
नामक छंद का नामान्तर ।

रु. भे —विबुधप्रिय, विबुधप्रिया ।

विबुधवन—देखो 'विबुधवन' (रु भे)

विबुधलता—स. स्त्री [म] कल्प-लता ।

विबुधवेल, विबुधवेलि, विबुधवेली—देखो 'विबुधवेलि' (रु भे.)

विबुधवन—सं पु. [स] देवराज इन्द्र का वन ।

रु भे.—विबुधवन, विबुधवन विबुधवन ।

विबुधविलासण, विबुधविलासणि, विबुधविलासणी विबुधविलासिणि,

विबुधविलासिणी—स. स्त्री [स. विबुधविलासिणी] १ देवता की
स्त्री, देवागना ।

२ अप्सरा ।

विबुधवेल, विबुधवेलि—स स्त्री. [स विबुधवेलि] कल्प-लता ।

रु भे —विबुधवेल, विबुधवेलि, विबुधवेली ।

विबुधवैद्य—स. पु [स.] देवताओं के वैद्य, अश्विनी कुमार ।

विबुधान—स पु [स विबुधान] १ देवता ।

उ०—घानखी रथाग धार मेर विबुधान पाणा, किधरा अम्परा
नरा धरा ओपर्व सुधाक । अग रज्ज राजर्व सुपाट घाम येण पाणा,
जटीस वसु स्याम घाम 'छतारी' जोधाक ।

—भगतराम हाडा री गीत

२ पंडित, विद्वान ।

विबुधाचारय, विबुधाचारिय—स पु [स विबुध+आचार्य] देवताओं के
आचार्य, वृहस्पति ।

विबुधाधिप, विबुधापत्त, विबुधापति, विबुधापती—स पु [स विबुध+
अधिप, पति] देवराज इन्द्र ।

विबुधापगा—स स्त्री [सं] १ आकाश-गंगा । २ गंगा नदी ।

विबुधालय—स पु [स विबुध+आलय] देवता का मन्दिर ।
२ स्वर्ग ।

रु भे —विबुधालय, विबुधालय, विबुधालय ।

विबुधावास—सं पु [स विबुध+आवास] १ देवताओं का निवास म्यान
स्वर्ग ।

२ मन्दिर ।

विबुधेन्द्र—स पु. [स विबुध+इन्द्र] देवराज इन्द्र का नामान्तर ।

विबुधेस—स पु [स विबुध+ईश] १ देवताओं के स्वामी भगवान्

विष्णु ।

उ०—विमलानन विबुधेस-विहारी, संल चक्र धारी सुमण । भव
तारण भूधर भय-भजण, हिरणगरभ त्रय-ताप हण ।

—र. ज. प्र.

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे.—विबुधेस, विबुधेस ।

विबोध-स पु [स विबोध] १ जागृति, जागरण ।

२ चेतना, होश ।

३ अलकार साहित्य के अनुसार व्यभिचारी भाव ।

४ चंतन्यलाम जो निद्रा दूर करने वाले कारणों से उत्पन्न होता है ।

५ निर्वहणसन्धि के चौदह अंगों में से एक ।

६ कार्य का अन्वेषण करने की क्रिया ।

विबोधन-स स्त्री. [स विबोधन्] १ जागृति या जागरण पैदा करने
की क्रिया ।

२ चेतना या होश में लाने की क्रिया या भाव ।

३ व्यभिचार करने की क्रिया ।

विभाडणो, विभाडवो—देखो 'विभाडणो, विभाडवो' (रू भे)

उ०—एक छत्र जिण पुहवी, निस्चळ कीधी घर उप्पर । आण
कित्ति नव खड, अदल कीधी दुनीयप्पर । मल वीनल विभाडि
उदधि कर पाठ पखालिय । अतेउर रति रम, रूप रभा सुर
टाळीय । हेतम दान फवि मल्ल कहि, अमर धुन्नि वे वखत गनि ।
दोठी न कोइ रवि चक्क लगि, अलावदी सुलतान विणि ।

—प च ची

विभाडणहार, हारी (हारी), विभाडणियो—वि०— ।

विभाडिओडो, विभाडियोडो, विभाडघोडो—भू० का० कृ० ।

विभाडोजणो, विभाडोजवो—कर्म वा० ।

विभाडियोडो—देखो 'विभाडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विभाडियोडो)

विभाडणो, विभाडवो—देखो विभाडणो, विभाडवो (रू. भे.)

उ०—पछिम देस पारम, लियो लोहा उप्पाडै । पूरव दिस पतिसाह,
लियो खग दळ विभाडै —गु. रू ब.

विभाडणहार, हारी (हारी), विभाडणियो—वि० ।

विभाडिओडो, विभाडियोडो, विभाडघोडो—भू० का० कृ० ।

विभाडोजणो, विभाडोजवो—कर्म वा० ।

विभाडियोडो—देखो 'विभाडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विभाडियोडो)

विभाणो, विभावीदेखो 'विभाणो, विभावो' (रू. भे.)

विभाणहार, हारी (हारी), विभाणियो—वि० ।

विभायोडो—भू० का० कृ०— ।

विभाईजणो, विभाईजवो—कर्म वा० ।

विभायोडो—देखो 'विभायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विभायोडो)

विभग-स पु [स] १ भीहो द्वारा की जाने वाली चेष्टा, भ्रू-भग ।

२ किसी चीज को यथाम्यान रखने की क्रिया, विन्यास ।

३ खण्डित होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

विभज, विभजण-स. पु [स वि+भज्] १ नाश, विनाश ।

२ सहार, नाश ।

रू भे—विभजण ।

विभजणो, विभजवो—कि स [स. विभजनम्] १ नाश करना, विनाश
करना ।

२ सहार करना ।

३ मारना, वध करना ।

उ०—१ रघुराज सिंहायक सत रहे, कथ भेद जिकी अज वेद कहै ।
दसमाथ विभज अराथ दख, पहनाथ समाथ अनाथ पख ।

—र ज प्र

उ०—२ दिपै रघुनायक दीनदयाळ, पुणा मळ घायक मेवग-पाळ ।
वढे दसमाथ विभजण तक, लछीवर देण भभीनण लंक ।

—र ज प्र

४ मिटाना ।

उ०—घर सुकर सायक घानुव, लड समर रह्चण लख । दुजराज
गरव विभज दस्सत, सरव जग सरण । —र. ज प्र.

विभजणहार, हारी (हारी), विभजणियो—वि० ।

विभजिओडो, विभजियोडो विभज्योडो—भू० का० कृ० ।

विभजोजणो, विभजोजवो—कर्म वा० ।

विभजणो, विभजवो—रू० भे० ।

विभजियोडो—भू० का० कृ०—१ नाश किया हुआ, विनाश किया हुआ ।

२ सहार किया हुआ ३ मारा हुआ, वध किया हुआ । ४ मिटाया
हुआ ।

(स्त्री विभजियोडो)

विभ—देखो 'विभव' (रू भे.)

उ०—मड राम दससिर भजिया, दत लक सरणागत दिया । विभ
अवध सिय लै आविया, कळ चदनाम किया । —र ज प्र

विभकर-स. पु—एक प्रकार का रत्न विशेष । (व स)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वँहरय सूरयकात
चद्रकांत, नील, महानील, इद्रलील, सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर

लेलहर, विखहर हरिन्मणि चूनडी लोहिताक्ष मसारगल्ल हसगरम्भ
पुलक अक अजन अरिस्ट चितामणि । —व स.

विभक्त-वि. [स] अलग-अलग किया या हुवा हुआ; बटा या बाटा हुआ ।
स. पु [स. विभक्त] स्वामी कार्तिकेय का नामान्तर ।
रू भे—विभगत ।

विभक्ति-स स्त्री. [स.] १ विभक्त करने या होने की क्रिया या भाव,
पार्थव्य, अलगवाव ।

२ व्याकरण के अनुसार शब्द के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या
चिन्ह जिससे उस शब्द का क्रिया पद के सम्बन्ध का पता चलता
है ।

रू भे—विभगति ।

विभगत—देखो 'विभक्त' (रू भे.)

विभगति—देखो 'विभक्ति' (रू भे.)

विभगन, विभग्न-वि [स विभग्न] १ टूटा फूटा हुआ ।

विभचार—देखो 'व्यभिचार' (रू भे.)

उ०—१ विभचारी विभचार कर, कुल-धर्म खोय कुमोज । खूट
गया इण खलक मे, खुडकी हुवो न खोज । —ऊ. का

उ०—२ चपळ मती दरचारणी, चित्त भाव विभचार । सीध त्याग
कर सुर सभा, कर नर अगीकार । —पा. प्र

उ०—३ भाग जागे कहे किसी भात सू दामोदर माय चित राख
दीघा । रुकमणी आदि तो पतिवरत सँ ऊधरी, कूवडी आदि विभचार
कीघा । —भगतमाल

उ०—४ हरीया अपन पीव सु, सूती सेरु विछाय । जी राखँ मन
और सु, तो विभचार कहाय । —अनुभववाणी

विभचारी—देखो 'व्यभिचारी' (रू भे.)

उ०—१ विभचारी विभचार कर, कुल-धर्म खोय कुमोज । खूट
गया इण खलक में खुडकी हुवो न खोज । —ऊ का

उ०—२ चाद किरण सकुडी थी सु पसरी । कुलटा कहता विभचा-
रिणी की द्रस्टि सकुडी थी सु पसरी । निसाचर कहता राति कै
विखँ जु विचरँ छँ । त्याह की द्रस्टि पसरी । अभिसारिका कहता
जिह नँ सहेट वदी थी । त्याह की द्रस्टि पसरी । —वेलि टी

उ०—३ पतिवरता विभचारिणी, सगति सुख नहि कोय । तैल नीर
सँ ना मिळँ, लहसण चदन भी दोय । —ह. पु. रा.

उ०—४ पतिवरता विभचारिणी, दोऊ अनत न वैसे एकै साथी । फट-
किमणि तव लग भली, जब लग हीरा आवँ न हाथी । —ह पु वा.

उ०—५ होय दिसावर एक वर, कही कौण दिस जाय । जनहरीया
विभचारणी, पति विन गोता खाय । —अनुभववाणी

(स्त्री.—विभचारण, विभचारणी, विभचारिणी)

विभच्छ, विभद्य विभत्स—देखो 'वीभत्स' (रू भे.) (ह. ना मा)

विभत्सरस—देखो 'वीभत्स' (१) (रू भे.)

विभत्सु—१ देखो 'वीभत्सु' (रू भे.)

२ देखो 'वीभत्स' (रू भे.)

विभनो, विभनो, विभन्नो, विभन्ती—[स. वि+भज] मरा हुआ
मृत ।

उ०—१ विभनो तू गज गाम बरीसण, हुई तेण खट बरणा हाण ।
अणमिळणू मौ हुवी एम ती, मिटसी किम भोजा महराण ।

—वा. दा

उ०—२ घमळ विभन्ती घुर तर्ज, देख दुमन्नी साथ । उण वेळा
ताडें 'अजी' मूळा घाले हाथ । —रा. रू.

उ०—३ 'अजवै' वीठळदास रे, देख विभन्ती वध । भुजडई वळ
भल्लियो, तिण घुर ओई कध । —रा. रू

उ०—४ यूँ कमघा सुण अक्खियो, माडेची अर मोड । राम विभन्ती
को कहे, जा ऊभो रिणछोड । —रा. रू.

उ०—५ कमघ अगजी विभन्ती कहियो, वड दाता कीरत ची
वीद । वाक तुम्राळी करडी-वाळी, काळी भूवाळँ कासीद ।

—ओपी आढी

विभरणी, विभरवी—क्रि अ.—१ चमकना, चँकना ।

२ क्रोधित होना, गुस्से से युक्त होना, विगडना ।

३ भ्रम में पडना, भ्रमित होना ।

विभरणहार, हारो (हारी) विभरणियो—वि० ।

विभरियोडी, विभरियोडी, विभरयोडी—भू० का० क० ।

विभरीजणी, विभरीजवी—भाव वा० ।

विभरियोडी—भू का कृ—१ चमका हुआ, चँका हुआ . २ क्रोधित
हुवा हुआ, विगडा हुआ . ३ भ्रम में पडा हुआ, भ्रमित हुवा
हुआ .

(स्त्री विभरियोडी)

विभळ, विभळी—स स्त्री—१ विल, गुफा ।

१ आल, नयन, नेत्र । (ना डि को)

वि—१ निर्मल, साफ, स्वच्छ ।

२ सुन्दर, मनोहर ।

रू भे.—विभळ, विभळी, मिभळ, भीभळ, भीभळी, वीभळ, वीभळी,
वीभळ, वीभळी ।

विभव—स पु. [स] १ छत्तीसवें सवत्सर का नामान्तर ।

२ देखो 'वैभव' (रू भे.) (ना मा., ह. ना मा)

उ०—१ बरस दीय होता छता सारी विभव खिच गई ।

—साह रामदत्त री वारता

उ०—२ रूप हृद् तू चतुर नुहि, अथवा नही उदार । तै हृद् तु विभव नुहि, कै लपट हृद् अपार ।
—नळाख्यान

विभवता—देखो 'वैभवता' (रू भे.)

विभववान—देखो 'वैभववान' (रू भे.)

विभवसाळी विभासाळी—देखो 'वैभवसाळी' (रू भे.)

विभाड—स पु [स] सरदाय्या पर लेटे हुए भीष्म से मिलने हेतु उपस्थित जनो मे से एक ऋषि ।

विभाडक—स. पु [स] एक ऋषि का नाम जो कश्यप का पुत्र तथा ऋष्यश्रुग ऋषि का पिता था ।

वि वि —इसके पुत्र ऋष्यश्रुग ऋषि के जन्म एव अग देशाधिपति चित्ररथ की कन्या दान्ता से उसके विवाह के सम्बन्ध मे अनेक चमत्कारपूर्ण कथाएँ मिलती हैं । कश्यप के पुत्र के नेत्र-पीले रंग के थे एव इसे ब्रह्मज्ञान की शिक्षा हिमालयवासी सनत्कुमार ने दी थी ।

विभाडक काश्यप—स पु [स विभाडक काश्यप] ऋष्यश्रुग ऋषि का पुत्र एव शिष्य ।

विभांत, विभांति,—स स्त्री. [स विभाति] १ प्रकार, भेद, किस्म ।

वि —अनेक प्रकार का ।

विभा—स स्त्री [स.] १ दीप्ती, प्रभा, कान्ति ।

२ छवि, शोभा, सौंदर्य ।

३ किरण, रश्मि । (अ मा, ना. मा., ह ना मा.)

४ अग्नि, आग । (अ मा)

५ कावेरी की पुत्री एव दुर्गम राजा की अनेक पत्नियों मे से एक पत्नी का नाम ।

रू. भे —विभा ।

विभाकर—स पु [स विभा+कर] १ सूरज, सूर्य. (ह. ना मा, क. कु. वो)

२ चान्द, चन्द्रमा ।

३ राजा ।

४ अर्क, मदार ।

५ अग्नि, आग ।

वि —प्रकाश करने वाला, अन्धेरा मिटाने वाला ।

रू. भे —विभाकर ।

विभाग—स. पु [स विभाग] १ षटवार, अक्ष, हिस्ता ।

२ अक्ष, प्रकरण ।

३ कार्यक्षेत्र ।

४ कार्यालय, महकमा ।

५ परिच्छेद, खण्ड ।

रू. भे —विभाग, व्यभाग ।

विभागात्मकनक्षत्र, विभागात्मकनक्षत्र—स. पु. [विभागात्मकनक्षत्र] प्रकाशमय आठों नक्षत्रों का नाम ।

वि. वि.—उक्त आठों प्रकाशमय नक्षत्रों के नाम निम्नलिखित हैं —१ रोहिणी, २ आर्द्रा, ३ पुनर्वसु, ४ मघा, ५ चित्रा, ६ म्वाती, ७ ज्येष्ठा और ८ श्रवण ।

विभागी—स. पु. [स विभागिन्] हिरसेदार, भागीदार ।

वि.—विभाग करने वाला ।

रू. भे.—विभागी ।

विभाड—स. पु.—१ नाश, ध्वस ।

२ विगाड, हानि ।

३ कळह, भगडा ।

४ मारने की क्रिया, सहार ।

५ तहस-नहस करने की क्रिया, वर्बाद करने की क्रिया ।

वि —१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—हणू जिसा किकरा पधोर के वकरा हल्ला, जूघा जीत अनंक रा रोडणा जोघार, । रोळ लँण लक रा निसंक रा विभाड राम, हाथा भीक रक रा लंक रा दैणहार ।
—र ज. प्र.

२ विनाश करने वाला ध्वस करने वाला ।

३ चीरने वाला, फाडने वाला, विदीर्ण करने वाला ।

४ संहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—१ नाळेरउ आपइ त्रिणै नकख, सूरउ सतेज सूरिज सक्ख ।
पाखरि पलाणि काळउ पहाड, वरिजाग चडिय वड्ढा विभाड ।

—रा, ज सी

उ०—२ जुई खग गेद जहीं तळजोड, 'अनावत' सीघउमेद अरोड ।
वहै घज सावळ रोद विभाड, 'अजावत' साह वखा अघनाड ।

—सू. प्र

उ०—३ तुजी-अठार असली तुरस, दीप धूप भागळ दिया ।
साअव विभाड रछक सुवप, कर खवास हाजर किया ।

—वखतौ खिडियो

५ हानि करने वाला, नुकसान करने वाला ।

६ कळह करने वाला, भगडा करने वाला ।

७ तहस-नहस करने वाला, वर्बाद करने वाला ।

८ पराजित करने वाला, हराने वाला ।

९ मारने वाला, वध करने वाला ।

१० तितर-बितर करने वाला, बिखरने वाला ।

११ त्यागने वाला, छोडने वाला ।

रू. भे.—विभाड, वभाड, विभाड ।

अल्पा —विभाडी. विभाडी

विभाङ्ग, विभाङ्गी विभाङ्गी विभाङ्गी-वि —१ विनाश करने वाला, ध्वंस करने वाला ।

२ हानि करने वाला, बिगाड करने वाला ।

३ कलह करने वाला, झगडा करने वाला ।

४ तहस-नहस करने वाला, बर्बाद करने वाला ।

५ सहार करने वाला, मारने वाला ।

उ०—'सुरती' 'अनै' तणी पण सार्च, जुघ कजि सदा सकतिवर जाचै ।

'किरतावत' बुघसिध करारी, गजा विभाङ्गि राढी (डी) गारी ।

—रा रु

६ चीरने वाला, फाडने वाला, विदीर्ण करने वाला ।

७ पराजित करने वाला, लूटने वाला ।

८ तितर-वितर करने वाला, बिखेरने वाला ।

१० त्यागने वाला, छोडने वाला ।

रु भे —विभाङ्ग, विभाङ्गी, विभाङ्गी, विभाङ्गी ।

विभाङ्गी, विभाङ्गी-क्रि स —नाश करना, ध्वंस, करना नष्ट करना ।

उ०—बडवीर सधीर रेणपुर राजिद, धोम उजागर घाडि । पहाड

श्रीनाड विभाङ्ग पधोरै, राहा चक्कर राडि । —मा. वचनिका

२ सहार करना, (मारना) ।

उ०—१ उठै रिणछोड सुजाव अरोड, घडा खळ वेधत सेल घमोड ।

विभाङ्ग रोद घडा 'हळवाह', सराहत राह दुह दळ साह । —सू प्र.

उ०—२ मतिवाळा घूमै नहीं, नह घायल बरडाय, वाळू सखी ऊ

द्रगडी, भड वापडा कहाय । वाळू ऊ द्रगडी, बसै भड, वापडा

घाव अग सहै नह विभाङ्ग अरि घडा । घणा जसवत रा, जोध

विहसै घणा, माडिसी सही, मतिवाळा वेढीमणा । —हा भा

उ०—३ ऊगमण घराहू एम आय, जुघ कीध आयमण घरा जाय ।

वाहै खग गोहिल दळ विभाङ्ग इम लीघ खेड धर मारवाड ।

—सू प्र

उ०—५ वत्तीस आखडी री निवाहणहार, वैरिया विभाङ्ग-

हार, परभोम पचायण, घण दियण, जस लियण, कळायरी मोर,

सूवै भीनै गात, केसरिया पौसाख किया, पाच हथियारा बाधा

आण घोडै असवार हुवै छै । —रा सा स

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

५ हानि करना, बिगाड करना ।

५ चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ चौधारा लाखीक चाडती, किलम पचाहर कीया कर ।

राड विभाङ्ग सोहियो राजा, अरक ज्यूई दळ फाड अर ।

—चावडदान बारहठ

उ०—२ जेज न कीध ऊतावळ चूटी, वावळ फौजा ही थाट

विभाङ्ग । आधी काम महि थट ऊपर, चावळ वस चुहाणा चाडै ।

—ठाकुर सूरतसिंह चहुवाण री गीत

६ टुकडे टुकडे करना, काटना ।

उ०—लोहा भट ब्राह्म रोद लगम्स, 'वहादर' 'धीथळऊत' वंगम्स ।

'राधावत' आणुदसिध दुवाह, विभाङ्ग मुग्गळ वीजळ वाह ।

—सू प्र.

७ तितर-वितर करना, बिखेरना ।

उ०—सूर वाहर चडै चारणा सुरहरी, इतै जस जितै गिरनार आवू ।

विहड खळ खीचिया तणा दळ विभाङ्ग, पोढियो सेज रण भोम

"पावू" । —वा दा

८ मारना, बध करना ।

उ०—१ जळ माहै जगदीस विहै मघकीट विभाङ्ग । वतळावै

वेसासि, पछै दाणुवा पछाडै । —पी. प्र

उ०—३ भगत थारा जिकै तिका दरसण भयो, जमदगन तणा

जगदीस तुंना जयो । विभाङ्गी रेणुका वडी कीधो विघन, जमदगिनि

तणी परपेस माडै जिगिन । —पी. प्र.

उ०—३ विभाङ्ग पचदणुमाय आथ देण वेस रे, मफार ध्यान कज

सो वसै रदा महेस रै । सदा नमत श्रीधराय पाय धू सुरेस रै,

वदा नरेम आन कूण जोड राधवेस रै । —र ज. प्र.

९ युद्ध के सम्बन्ध मे कोई मोर्चा, किला, गढ या गांव जीत कर

अधिकार मे लेना ।

उ०—विभाङ्ग जादवा-कोट घरकीध वस, सबळ ब्रद खाटिया भवा

साहू । तप-बळी अभनमा "माल" "गंगेव" ती, ममारक पोकरण

राव मारू । —गु. रु बं

१० मिटाना ।

११ विजय करना, जीतना ।

उ०—आवै दाव कळहण दुनियान सोह ऊचरै, बडी घर राव

रुका विभाङ्गी । उधारी राडि रजपूत आवेरि घरि, पहाडी कामा

लै भोग पाडी । —राव राजा फर्तसिध नरुका कछवाहा री गीत

१२ त्याग करना, छोडना ।

उ०—गिणै न जळ थळ विकट गिर, आधी रयण उजाड । भय

विभाङ्ग 'पातल' वहै, पमगा वगा उपाड । —जैतदान बारहठ

१३ सजा देना, दण्डित करना ।

१४ पराजित करना, हराना ।

उ०—वासठि हजार फौजा रा भाजणहार । छवड खुरसाण रा

विभूसणहार । मेमत हाथिआ रा मारणहार । पतिसाहा रा

विभाङ्गहार । पतिसाहा रा पडिगाहण । —र वचनिका

विभाडणहार, हारी (हारी), विभाडणियो—वि० ।
 विभाडिओडों, विभाडियोडों, विभाडयोडों—भू० का० कृ० ।
 विभाडोजणों, विभाडोजवों—कर्म वा० ।
 विभाडणी, विभाडवी, वीभाडणी, वीभाडवी, वभाडणी, वभाडवी,
 विवभाडणी, विवभाडवी, विवभाडणी, विवभाडवी, विभाडणी
 विभाडवी—रू० भे० ।

विभाडियोडों—भू का कृ —१ नाश किया हुआ, ध्वस किया हुआ,
 नष्ट किया हुआ २ सहार किया हुआ, मारा हुआ ३ तहस-
 नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ४ हानि किया हुआ,
 बिगाड किया हुआ। ५ विदीर्ण किया हुआ ६ टुकड़े-टुकड़े
 किया हुआ, काटा हुआ ७ तितर-वितर किया हुआ, विभेरा
 हुआ ८ मारा हुआ, वध किया हुआ ९ युद्ध के सम्बन्ध में
 कोई मोर्चा, किला, गढ या गाव जीत कर अधिकार में लिया हुआ
 १० मिटाया हुआ ११ त्याग किया हुआ, छोड़ा हुआ १२
 दण्डित किया हुआ, सजा दिया हुआ। १३ पराजित किया हुआ,
 हराया हुआ। १४ विजय किया हुआ, जीता हुआ
 (स्त्री विभाडियोडी)

विभाडो—देखो 'विभाड' (श्रुत्या, रू भे)

उ०—घट्टा घूम जोयणा अमदा वेण जोम घट्टे, थट्टे थाट सोयणा
 समदा लेण थाह । भले घाडो गाहणी जला रो ज्यू लोयणा भीनी,
 दोयणा विभाडो हल्ले दळा रो दाह । —र हमीर

विभाजक—वि [स] विभाजन करने वाला, बाटने वाला ।

स. पु —वह सख्या जिससे किसी दूसरी सख्या को विभाजित
 किया जाता है, भाजक । (गणित)

विभाजन—देखो 'विभाजन' (रू भे)

विभाजणों, विभाजवों—क्रि. स —१ अलग-अलग करना ।

२ बटवारा करना, हिस्से करना ।

विभाजणहार, हारी (हारी), विभाजणियो - वि० ।

विभाजिओडों, विभाजियोडों, विभाज्योडों—भू० का० कृ० ।

विभाजोजणों, विभाजोजवों—कर्म वा० ।

विभाजन—स. पु [स] १ विभाग या हिस्से करने की क्रिया या भाव ।

२ पात्र, वरतन ।

रू भे.—विभाजण ।

विभाजित—वि [स] जिसके विभाग, हिस्से या खण्ड किये गये हों ।

विभाजियोडों—भू का कृ —१ अलग-अलग किया हुआ २ बटवारा
 किया हुआ, हिस्से किया हुआ ।

(स्त्री. विभाजियोडी)

विभाज्य—वि. [सं] जिसका विभाजन करना हो या कर दिया गया हो,
 विभाजन करने योग्य ।

विभाडण, विभाडण, विभाडणी, विभाडणी—देखो 'विभाडण' (रू भे.)

उ०—कन्हाराय फुल तिलक, जोष जग जेठी 'जाह्व', 'छाडी' 'तीठी'
 'सलस', वीर वीरी विभाडण । —गु रू व.

विभाडणी, विभाडवी—देखो 'विभाडवी, विभाडवी' (रू भे.)

उ०—१ विभाड गयद मयद विघ, महि सामद इधके मच्छरि ।
 'सूरउत' प्रगट नवनद मिर, गरुप्रति मेर गिरद सिनि ।

—गु रू व

उ०—२ जिम घायो हणमत, दोण पवरे उपाडण । जिम घायो
 भीमेण, दंत लक मीर विभाडण । —गु रू व.

उ०—३ रुठी सीस विहारियां, दिल्लीपति सुरताण । खान पहाड
 विभाडियो, वंठा फिर पठाण । —गु रू व.

उ०—४ इग्यारं मोहणी, ग्यान वारंह विभाडे । अरि उलाळ
 रिणताळ, गज्ज गयणाग भमाडे । —गु रू. व

विभाडणहार, हारी (हारी), विभाडणियो—वि० ।

विभाडिओडों, विभाडियोडों, विभाड्योडों—भू० का० कृ० ।

विभाडोजणों, विभाडोजवों—कर्म वा० ।

विभाडियोडों—देखो 'विभाडियोडों' (रू भे.)

(स्त्री विभाडियोडी)

विभाणों, विभावों—क्रि. अ —१ चमकना, झनकना ।

२ शोभा युक्त होना, शोभा पाना ।

विभाणहार, हारी (हारी), विभाणियो—वि० ।

विभायोडों—भू० का० कृ० ।

विभाईजणों, विभाईजवों—भाव वा० ।

विवभाणों विवभावों—रू० भे० ।

विभाभानु, विभाभानु—स पु [स विभा+भानु] अग्नि, आग ।

(अ मा.)

विभायोडों—भू का कृ —१ चमका हुआ, झनका हुआ। २ शोभा-
 युक्त हुआ हुआ, शोभा पाया हुआ ।

(स्त्री विभायोडी)

विभाव—स स्त्री [स विभाव] १ रति या रस-विधान (साहित्य) में
 भावों का शरीर या मन को किसी विशेष परिस्थिति में पहुचाने
 वाली अवस्था विशेष ।

वि. वि.—आलवन और उद्दीपन इसके दो भेद हैं ।

२ देखो 'वैभव' (रू भे)

विभावन—स. पु [स] १ विवेक, विचार ।

२ वाद विवाद ।

३ साहित्य में वह अवस्था जिसके कारण पात्र में प्रदर्शित भाव
 पाठक या दर्शक अनुभव करता है ।

विभावना—स स्त्री [स.] साहित्य में एक अर्थालंकार विशेष इसमें कारण के बिना कार्य की उत्पत्ति या किसी अपूर्ण कारण से कार्य की उत्पत्ति या प्रतिवध होने से भी कार्य की सिद्धि प्रदर्शित की जाती है।

वि वि—इसके छ भेद कहे गये हैं—(१) जिसमें कारण के अभाव में भी कार्योत्पत्ति हो २ जिसमें कारण की अपूर्णता में भी कार्योत्पत्ति हो, ३ जिसमें प्रतिवधक तत्व के उपस्थित होते हुए भी कार्योत्पत्ति हो (४) जिसमें कारणांतर से जिस कार्य का जो कारण हो, उसके अभाव में किसी अन्य कारण के द्वारा कार्योत्पत्ति हो। (५) जिसमें विपरीत कारण से कार्योत्पत्ति हो। (६) जिसमें कार्य से कारण की उत्पत्ति हो।

विभावारि, विभावरी—सं स्त्री [स विभावरी] १ रात, रात्रि।

(अ मा., ना मा, ह ना मा.)

उ०—रज डवर अवर मग चढे, भ्रम कोक विभावारि सोक बढे।
नभ देव विमान न की अवली, उडि गिद्धनि के गन सग चली।

—ला रा

२ वेश्या। ३ चतुर व मुखरा स्त्री। ४ कुटनी, दूनी स्त्री।
५ पतिता स्त्री, पथअस्ट स्त्री। ६ व्यभिचारिणी स्त्री।
७ पहली पत्नी के जिन्दावस्था में लाई गई दूसरी स्त्री, रखेल।
रू भे—विभावरी।

विभावारिस, विभावरीस—स पु [स विभावरी + ईश] १ चन्द्रमा, चान्द्र।

२ उल्लु घुग्घु।

विभावसु विभावसू—म पु [म विभा + वसु] १ वह वस्तु जो अधिक प्रकाशमय हो।

२ सूरज, सूर्य। (ना, मा, ह ना मा, क कु वो)

३ चान्द्र, चन्द्रमा।

४ अग्नि, आग। (ह ना मा)

५ गले का आभूषण, हार।

६ आठ वसुओं में से एक वसु, जो दक्षपुत्री वसु तथा धर्म के आठ पुत्रों में से अन्त्यतम थे। ये व्युष्ट रोचि, आतप आदि के पिता व उपा के पति थे।

७ विवस्व का एक पुत्र।

८ युधिष्ठिर को विशेषादर देने वाला एक ऋषि।

९ मुर नामक दैत्य का पुत्र, जो कृष्ण द्वारा मारा गया था।

१० नरकासुर के मात पुत्रों में से एक।

११ सुप्रतीक ऋषि का एक भाई जो स्वभाव से क्रोधी था उक्त महर्षि के शाप के कारण कछुआ हुए थे, और इसी अवस्था में गरुड ने इसका भक्षण किया था।

१२ एक गधर्व, जिसने गायत्री से देवताओं का सोम छीन लिया था।

१३ वृत्र—इन्द्रयुद्ध के समय वृत्र—पक्ष का एक दानव जो कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक था।

१४ द्युति का पति एग वसु। सोम से प्रीति के कारण द्युति ने इसका त्याग किया था।

१५ एक दैत्य, जिसे पूजापाठ के समय अमर घटा का निनाद करने के कारण मृत्युपरान्त घटा के आकार का मुख प्राप्त हुआ था।

रू भे—विभावसु, विभावसु, विभोवस, विभोवसु।

विभास स. पु [स]—१ चमक तेज, प्रकाश, दीप्ति।

२ सवेरे के समय गाया जाने वाला एक राग विशेष। (सगीत)

उ०—१ छतीस राग छाजती, निहाव धाव नोवती। भजे विभास भंरवी, रळी कळी कळी रव। —रा. ह

उ०—२ दोग घड़ी रात लारली रहै सो ब्रह्म मुहूर्त। इण वेळा विभास वेळावळ में लाखो-फुलाणी गवीजें—प्रह लाखी सु विहाण।

—वा दा. ह्यात

उ०—३ रात ती इण रग में विदित हुई। इतरें परभात हुवो। भंर विभास। विलावलि को वखत आयो। गुणीजना राग भ्लायो। —पना

३ एक देवयोजि विशेष।

विभासक—वि [स] १ चमकने वाला, प्रकाशयुक्त, प्रकाशवान्।

२ चमकाने वाला, प्रकाश युक्त करने वाला।

विभासणी, विभासणी—क्रि अ—१ चमकना, भलकना।

क्रि स—२ चमकाना, भलकाना।

विभासणहार, हारो (हारी), विभासणियो—वि०।

विभासिओडो, विभासियोडो, विभास्योडो—भू० का० कृ०।

विभासीजणो, विभासीजवो—कर्म, भाव वा०।

विभासा—स स्त्री [स] चमक, आभा, कान्ति, दीप्ति।

विभासियोडो—भू. का कृ—१ चमका हुआ, भलका हुआ २ चमकाया हुआ, भलकाया हुआ।

(स्त्री विभासियोडो)

विभिन्नु, विभिन्नुक—स पु [स] एक दानशूर राजा, जिमने मेघातिथि काण्व नामक आचार्य को ५८ हजार गायें दान में दी थी।

विभिन्न—देखो 'विभीसण' (रू भे)

विभिन्न—वि [स] १ तोडा या टूटा हुआ, छिदा या छेदा हुआ।

२ पृथक जुदा।

३ धायल, विधा हुआ, विद्ध।

४ उद्विग्न, विकल, हताश।

५ अनेक प्रकार का, कई प्रकार का।

विभिसण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

विभीखण—देखो 'विभीसण' (रू भे.)

उ०—१ घरी दधि पाज पहाडा घार, पदम्म अठार चतारै पार ।
पडे तद आण विभीखण पाय, लियो जद राघव कठ लगाय ।

—ह र.

उ०—२ नमो रण रावण-मारण-राम, नमो किय लिद्ध विभीखण
काम । नमो कन्ह रूप निकदण कस, नमो ब्रजराज नमो जदुवस ।

—ह र

विभीत-वि (स्त्री विभीता) डरा हुआ, भयभीत ।

स पु.—बहेडा या बहेडे का वृक्ष ।

विभीतक-स पु—[म. विभीतकी, विभीता] बहेडा या बहेडे का वृक्ष ।

विभीसण-वि [स विभीषण] डरावना, भयावह ।

स. पु.—१ एक यक्ष ।

२ रावण का कनिष्ठ भाई, जो ब्रह्मा के महामति विद्वान पुत्रस्त्य ऋषि का पुत्र विश्रवस् ऋषि एव सुमालि राक्षस की लक्ष्मी देवी के समान रूपवती पुत्री कंकसी के तीन पुत्रों में से एक पुत्र ।

वि वि—यह धार्मिक, स्वाध्यायनिरत, नियताहार एव जितेन्द्रिय था । इसने अपने बड़े भाई रावण को राम की पत्नी सीता को वापिस लौटाने का अनुग्रह करने पर रावण ने क्रुद्ध हो कर इसे अपमानित किया था । इसीलिए यह अपने अनल, सपाति, पनस और प्रमाति नामक राक्षस मित्रों के साथ राम की घारण में आगया था । इसने राम को रावण का वध करने के लिए अनेक परामर्श दिये एव रावण के कार्यों व गुप्त सूचनाओं का परिचय राम को देकर युद्ध में सहायता प्रदान की थी । इसने ब्रह्मा की अनन्य भक्ति की थी । शंख गन्धर्व की पुत्री सर्मा इसकी पत्नी थी जिसके गर्भ से कला नामक पुत्री उत्पन्न हुई थी । रावण वध के बाद राम ने इसे ही लका का राजतिलक किया था ।

३ विभीषणवशीय राका का एक नरेश जिसे पाण्डवों ने अपने दक्षिण दिग्बिजय के समय परास्त किया था ।

रू भे—बम्भीखण, बम्भीछण, बम्भीसण, बभीख, बभीखण, बम्भीसण, बम्भीखण, बम्भीछण, बम्भीसण, विभीखण, विभीसण, बीभीछन, भीभीखण, भीभीसण, भम्भीखण, भम्भीसण, वम्भीखण, वम्भीसण, वभीखण, वभीसण, विविखण, विविसण, विवीखण, विवीसण, विभिवण, विभिसण ।

अल्पा.,—बम्भीखणी ।

विभीसणा-स. स्त्री [स विभीषणा] कुमार कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका का नाम ।

विभीसिका-स. स्त्री. [स. विभीषिका] १ भय प्रदर्शन ।

२ भयकर बात या भयानक कांड ।

विभु, विभू-वि. [सं. विभु] १ जो सर्वगत एव सर्वव्यापक हो ।

२ बहुत बडा, महान् ।

३ अटल, दृढ़ ।

४ बलवान्, शक्तिशाली ।

५ आत्मसयमी, जितेन्द्रिय ।

स. पु [स विभु] १ उद्धायी तरल पदार्थ विशेष ।

२ आकाश, व्योम ।

३ ब्रह्मा ।

४ भगवान् श्रीविष्णु ।

५ शिव, महादेव ।

६ प्रभु, ईश्वर, स्वामी ।

उ०—नमो अग्राह्यार स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोकाध्यक्षा-
भ्रत विजयलक्ष्मा पत नमो । नमो विस्वाधारी अनल अघहारी विभु
नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विस्वभर नमो । —ऊ का

७ नौकर, सेवक ।

८ काल, समय ।

९ सीवौर देश के राजा शकुनि का भाई जो अपने चार भाइयों सहित भीम के साथ हुए रात्रि युद्ध में मारा गया था ।

१० रघुवत मन्वन्तर का इन्द्र ।

११ स्वायम्भुव मन्वन्तर में हुआ भगवान् श्रीविष्णु-अवतार ।

१२ स्वायम्भुव मन्वन्तर के तुपित देवों में से एक ।

१३ साध्य देवों में से एक ।

१४ ऋषभदेव के पुत्र भरत के वंशज प्रस्ताव और नियुक्ता के पुत्रों में से एक जिसकी पत्नी का नाम रति और पृथुमेन का पिता था ।

१५ यज्ञदेव एव दक्षिणा के पुत्रों में से एक देव ।

१६ कश्यप एव दनु के पुत्रों में से एक दानव ।

१७ एक राजा जो सुविभु का पिता एव सत्यकेतु का पुत्र था ।

१८ वरेण्य नामक ऋषि, जो भृगु वारुण का पुत्र था ।

१९ भग एव सिद्धि के पुत्रों में से एक भव देव ।

२० जिताखित देवों में से एक देव ।

२१ अभिताप देवों में से एक देव ।

२२ मगधवशीय महाबाहु राजा का नामान्तर ।

२३ स्वायम्भुव मनु के एक पुत्र का नाम जिसे कहीं-कहीं पर स्वयम्भुव मनु का पौत्र भी मानते हैं ।

२४ नृप, राजा । (ह ना. मा)

रू भे.—विभु, विभू ।

विभूखण— देवी 'विभूखण' (रू. भे)

८०—१ कापड माल असंख हेम मिए रयण विभूखण । परिमळ चदन अग्रर, पान कपूरह असरण । —गु रू व

८०—२ रग राग विणोद विसातरय बहुय, चडि चाडति सुदर मिदरय सहय । मिए मारण कुदण ककणम दिपत, मोताहळ हार विभूखणय वरिणत । —गु रू व

विभूखणी, विभूखनी—देखो 'विभूसणी, विभूसनी' (रू. भे)

विभूखणवार, हारो (हारी), विभूखणियाँ—वि० ।

विभूखिओडो, विभूखियोडो, विभूख्योडो—भू० का० कृ० ।

विभूखीजणी, विभूखीजनी—कर्म वा० ।

विभूखा—देखो 'विभूसा' (रू. भे) (अ. मा, ना मा, ह. ना मा)

विभूखित—देखो 'विभूसित' (रू. भे)

विभूखिओडो—देखो 'विभूसियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विभूखियोडो)

विभूत—देखो 'विभूति' (रू. भे)

८०—असटग विभूत सनाह उपावै, लोह छत्तीस सिंघार लिय । सिध बारह पथक तेरह साखा, 'केहरि' गोरख रूप किय ।

—गु. रू वं

विभूतसिद्ध, विभूतसिध, विभूतासिद्ध, विभूतासिध—स पु [स. विभूति+सिद्ध] १ शिव, महादेव ।

२ सिद्धिप्राप्त महात्मा ।

३ एक लोक देवता विशेष ।

वि. वि—यह विभूतासिद्ध पश्चिमी राजस्थान के चारणवासी नामक गाव का निवासी सोलकी राजपूत था । यह जंगल में रेवड (भेड व बकरियों का भुण्ड) चराया करता था एक बार जंगल में इसे 'पंगी' सर्पने डस लिया । जिससे यह मर गया । मरने के बाद इसने अपनी बहन को सपुराल से पीहर पहुँचाई थी और भी कई चमत्कार बताये थे । इस कारण इसे देवता मान कर पूजा जाने लगा । ब्रीकानेर डिवीजन के नोहर सरदार शहर और महाजन के क्षेत्र में इसकी बड़ी माध्यता है । साप के काटे जाने पर घायल को इसके स्थान पर ला कर ढोल वादन के साथ उसकी मनोती मनाते हैं व रात्रि जागरणा देते हैं जिसमें इसका मिरलोका गाते हैं । रेवड के ग्वाले एक गीत भी गाते हैं जिसमें अकाल मृत्यु और चमत्कारों का वर्णन एवं प्रशंसा है ।

रू. भे—वभूतसिद्ध, वभूतसिध, वभूतासिद्ध, वभूतासिध, भभूतासिद्ध, भभूतासिध, वभूतासिध ।

विभूति—स स्त्री. [स. विभूति] १ बड़ा होने की अवस्था, बढप्पन ।

२ स्वस्थ होने की अवस्था, ।

३ ममवृद्धि, बढोतरी ।

४ वैभव, ऐश्वर्य ।

५ धन, दौलत, सम्पत्ति ।

६ अधिकार, प्रभुत्व ।

७ कान्ति, दीप्ति, चमक ।

८ भगवान् श्रीविष्णु का नित्य और स्थायी माना जाने वाला ऐश्वर्य ।

९ दिव्य या अलौकिक शक्तिया, जिसके अन्तर्गत अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व, आदि आठ सिद्धिया मानी जाती है ।

८०—निमी निमी नाराइणा, भगवत निमी विभूति । तुफ तणी वसदेव तण, कुण जाणं करतूति । —पी. ग्र.

१० शिव और शैव आदि लोगों के शिर व शरीर पर लगाई जाने वाली वह राख या भस्म जो यज्ञादि के बाद बचती है ।

८०—कानं मुद्रा कनक की, आसण चीता चरम । लगाय विभूति तप जप करे, तं साधं शिव घरम । —प. च. चौ

११ भस्मी या राख ।

८०—१ जगत विदीत करी मनमोहन, कहा वजावत डोल । अग विभूति मळं अगछाळा, तू जन गुढिया पोल । —मीरा

८०—२ बदन सरोज सदन की सोभा, ऊभी जोळ कपोळ । सेली-नाद विभूति न वटवा, अजु मुनी मुख खोल । —मीरा

१२ सिद्ध पुरुषों के अग्निकुण्ड (धूगी) की वह भस्मी जो रोग निवारणार्थ शरीर पर लगाई जाती है ।

१३ राम का एक दिव्य अस्त्र जो विश्वमित्र ने दिया था ।

१४ चमत्कार युक्त पुरुष ।

१५ भूखों के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला एक व्यंग्य एवं सम्बोधन सूचक शब्द ।

१६ एक प्रकार का शारीरिक क्षुद्र रोग जिसमें शरीर पर हलकं भूरे-भूरे दाग या चिन्ह बन जाते हैं । (शुभ-अशुभ)

१७ विश्वामित्र का एक ब्रह्मावादी पुत्र ।

रू. भे.—वभूत, वभूति, वभूती, विभूत, विभूति, विभूती, वभूत, वभूति, वभूती, वभूत, वभूति, वभूती, वभूत, वभूति, वभूती, विभूत, विभूती ।

विभूतिद्वादस, विभूतिद्वादसी—स स्त्री [स. विभूति+द्वादशी] प्रत्येक शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष ।

विभूतिमान, विभूतिमान—वि [स. विभूतिमान] १ शक्तिशाली, बलवान ।

२ वैभवशाली, ऐश्वर्ययुक्त ।

३ धनी, सम्पत्तिशाली ।

४ कान्तियुक्त, चमकीला ।

विभुतिसिद्ध, विभुतिसिद्ध—देखो 'विभूतासिद्ध' (रू भे)

विभूती—देखो विभूति' (रू. भे)

उ०—पीनाकी चक्रधारिया ज्यू अंम ओपे तेगा पाणा, गणा मव्य देवा वीचा राजवं छपेग । विभूति अग पीतपट सुघारे जेही बनीं, सभूनाथ माघव ज्यू दुवी इद तेग ।

—महाराज भगतराम हाडा री गीत

विभूती—वि —१ राख या भस्मी लगाया हुआ ।

२ देखो 'विभूतासिद्ध' ।

रू भे —भभूती ।

विभूवस, विभूवसु—सं. पु —जिन ऋषि के पिता, एक ऋषि ।

विभूसरण—सं. पु [स. विभूपरणम्] १ अलकार आभूपरण, जेवर ।

२ अलकृत, या आभूषित करने की क्रिया ।

विभूषणकरता, विभूषणकार—सं. पु. [स. विभूषण-कर्ता] १ आभूषण जेवर आदि बनाने वाला, स्वर्णकार ।

उ० * * पाडकार तुडिकार आरामकार सास्त्रकार मंत्रकार सुद्ध-कार उद्दीसकार ध्रुतिकार रूपकार करणीकार रसकार क्षीरकार शस्यकार वस्त्रकार विभूषणकार पुंतार अस्वसिद्धाकार रथकार साव्यकार ।

—व स

वि —अलकृत या आभूषित करने वाला ।

विभूसणो, विभूसवो—कि अ —१ अलकृत होना, शोभित होना ।

कि. स —२ अलकृत करना, शोभित करना ।

विभूसणहार, हारी (हारी), विभूसणियो—वि० ।

विभूसिओडो, विभूसियोडो, विभूस्योडो—भू० का० कृ० ।

विभूसीजणो, विभूसीजवो—कर्म, भाव वा० ।

विभूसणो विभूसवो—रू० भे० ।

विभूसा—स स्त्री [स विभूषा] १ शोभा, मुन्दरता ।

२ शोभित होने वाली स्त्री, सुन्दरी ।

रू भे —विभूसा, विभूखा ।

विभूसित—वि [स विभूषित] (स्त्री विभूसिता) १ अलकृत, सुशोभित ।

२ सजाया हुआ, सुसज्जित ।

३ कान्ति युक्त, आभा युक्त ।

उ०—महाराय सौकल्याणमल जी जन्म महोच्छव मागळीक वधावणा कराया । महाराजकुमार सौ दळपतिजी दिन-दिन स्वेत पक्ष चद्रमा री ज्यू परिवधवत होता पूर्णिमा रे चद्रमा री परिसकळ कळा भरित विभूषित गात्र नोपना छै ।

—द. वि

रू भे.—विभूषित ।

विभूसियोडो—भू का कृ १—अलकृत हुवा हुआ २ अलकृत किया हुआ, शोभित किया हुआ ।

(स्त्री विभूसियोडी)

विभेद—सं. पु [स.] १ विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला तत्त्व, अन्तर, फर्क ।

२ अनेक भेद-प्रभेद ।

३ अक्ष, खण्ड, विभाग ।

४ काटने की क्रिया, छेदने या तोड़ने की क्रिया ।

विभेदक—वि. [स.] १ खण्डन, छेदन या भेदन करने वाला ।

२ अन्तर, फर्क, विभिन्नता आदि प्रकट करने वाला ।

विभेदण—सं. पु. [स विभेदन] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने की क्रिया ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने की क्रिया ।

३ अक्ष, खण्ड या विभाग करने की क्रिया ।

४ काटने छेदने या तोड़ने की क्रिया ।

वि (स्त्री विभेदणी, विभेदिणी) १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करने वाला ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करने वाला ।

३ खण्डन या विभाजन करने वाला ।

४ काटने वाला, छेदने वाला, तोड़ने वाला ।

रू. भे.—विभेदण, विभेदन ।

विभेदणी, विभेदवो—कि स [स विभेदनम्] १ अन्तर, फर्क या विभिन्नता प्रकट करना ।

२ अनेक भेद-प्रभेद करना ।

३ खण्डन या विभाजन करना ।

४ काटना, छेदना, तोड़ना ।

५ घुसाना, घसाना ।

६ ईर्ष्या उत्पन्न करना ।

विभेदणहार, हारी (हारी), विभेदणियो—वि० ।

विभेदिओडो, विभेदियोडो, विभेदयोडो—भू० का० कृ० ।

विभेदीजणी, विभेदीजवो—कर्म वा० ।

विभेदियोडो—भू का कृ —१ अन्तर फर्क या विभिन्नता प्रकट किया हुआ १ अनेक भेद-प्रभेद किया हुआ ३ खण्डन या विभाजन किया हुआ. ४ काटा हुआ, छेदा हुआ, तोडा हुआ. ५ घुसाया हुआ, घसाया हुआ. ६ ईर्ष्या उत्पन्न किया हुआ ।

(स्त्री विभेदियोडी)

विभेदी—देखो 'विभेदक' ।

विभोग—सं. पु —१ राज्य कर ।

२ जागीरदारो द्वारा कर स्वरूप लिया जाने वाला कृषि की उपज का कुछ निश्चित अक्ष, हिस्सा, हासिल ।

३ प्रेमपूर्ण आनंदप्रमीद, विलास ।

उ०—राति दिवस रगे रमे, नवरस भोग विभोग । सारीखी जोडी मिळी देव तरण सजोग ।

—डो मा.

रू भे—वीभोग ।

अल्पा—विभोगी ।

विभोगी—देखो 'विभोग' (अल्पा, रू भे)

उ०—देलवाडी विभोगी लेती सु नही लै, दाए लेती सु लेसी ।

—नैएसी

विभोर—वि [स] १ आनन्द मग्न, लीन ।

२ मदमस्त, मत्त ।

३ विकल, विह्वल, व्याकुल ।

विभोवस, विभोवसु—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

विभौ—देखो 'वैभव' (रू. भे)

उ०—१ जर जबहर घर जोरवा, लूटाणी सभ लाज । मेछा नीम-
डियो विभौ, सुए चडियो महाराज । —रा रू.

उ०—२ हिंदुवै छात लायो हियै, वडो जतन पायो विभौ । नवकोट
सोच मिटियो नरा, इसी भाल मिळता 'भ्रमै' । —रा रू.

३ परसो कमधा मधुपुरी, जमए किया सिनान । बूठा ऋड मडै विभौ
करै उमडै दान । —रा. रू.

उ०—४ दसरत्य विभौ इम नजर दीघ, कामना पुत्र घरि जिगन
कीध । आविया नाग नर सुर भ्रमाप, आविया ब्रह्म सिव विसन
आप । —सू. प्र

उ०—५ विभ्रचार माय पायो विभौ, जाता जुगा न जावसी । नित
स्वाद लियो पर नार में, याद घणा दिन आवसी । —ऊ. का

उ०—६ दीज जोड किसी त्रप दीलत, राज विभौ अवरेख । सात
सुखा भुगतें दिन साजा, वासव हूत विसेख । —र. रू

उ०—७ इद्र प्रभत इद्रह विभौ, इद्र छभा औनाण । इद्र समीवड
रहुवड, हिंदुवै सुरताण । —गु रू व

उ०—८ हीर चीर हेम तार घडी में विराण होसी, लाखा द्रव्य
विभौ सब हाथी घोडा लाठ । गाम धाम भूठा जाणै धवै भूठा
लागा नरा, गार रा मिरग रै पड़ी वायरा री गाठ ।—ओपी आढी

विभ्रस—स पु [स विभ्रस] १ भ्रवनति, पतन ।

२ विनाश, विध्वंस ।

३ हानि, नुकसान ।

४ ऊचा कगार ।

५ पहाड के शिखर पर का चोरस मैदान ।

विभ्रंसण—स. पु [स. विभ्रंसण] १ विनाश करने की क्रिया, विध्वंस
करने की क्रिया ।

२ हानि करने की क्रिया, नुकसान करने की क्रिया ।

३ तहस-नहस करने की क्रिया, बर्बाद करने की क्रिया ।

विभ्रसणो, विभ्रंसणो—क्रि स [स. विभ्रस] १ विनाश करना, विध्वंस
करना ।

२ हानि करना, नुकसान करना ।

३ तहस-नहस करना, बर्बाद करना ।

४ सहार करना, मारना ।

विभ्रंसणहार, हारो (हारो), विभ्रसणयो—वि० ।

विभ्रसिओडो, विभ्रसियोडो, विभ्रस्योडो—भू० का० कृ० ।

विभ्रसौजणो, विभ्रसौजवो—कर्म वा० ।

विभ्रसियोडो—भू० का० कृ०—१ विनाश किया हुआ, विध्वंस किया
हुआ २ हानि किया हुआ, नुकसान किया हुआ. ३ तहस-
नहस किया हुआ, बर्बाद किया हुआ ४ सहार किया हुआ,
मारा हुआ ।

(स्त्री. विभ्रसियोडो)

विभ्रम—सं. पु [स. विभ्रम] १ घूमने की क्रिया, भ्रमण, चक्कर ।

२ भूल, गलती ।

३ उतावलापन, उद्विग्नता ।

४ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह ।

उ०—१ उमा कहाँ इम ईस नै, उपज्यो विभ्रम एह । किकरि
ऊपर महर कर, सकर । मेट सदेह । —र. रू.

उ०—२ भूपति हसै देखि सिचभेसा, असि कसि वाग कीध आदेसा
हसतो त्रप देखै मिध हसियो, विभ्रम ताम त्रपति उर वसियो ।

—सू. प्र.

उ०—३ करि सनान भ्रम करै, घरै प्रमघ्यान स्यामभ्रम । काया
जोग अनेक, भोग माया तजि विभ्रम । —सू. प्र.

५ वह क्रिया जिससे काम वासना उत्प्रेरित हो, प्रीतिद्योतक हाव-
भाव ।

६ आश्चर्ययुक्त, चकित ।

उ०—१ गज कोटि राज द्वारी, मिदर उतग महल अटाला । सपेख
धाम धाम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु रू व

उ०—२ विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता ।
वासर विसाल लहिय, चक-वाणै मगळ भवण । —गु रू व

७ सयोग श्रु गार के प्रसग मे स्त्रियो का एक हाव-भाव जिसमें
वह कभी क्रोध, कभी हृष प्रकट करती है और उत्सुकतावश उलटे-
पुलटे वस्त्राभूषण पहन लेती है (साहित्य)

उ०—चित्रसालि चउमास रहै लहै गुरु आदेसा, कोसि कामिनी
नृत्य करइ सुर सुदरी जैसा । हाव भाव विभ्रम करइ कु भयै
निठुर निटोल, पूरव प्रेम सभाल प्रियु तू मान हमारी वोल कै ।

—स. कु.

रू भे—विभ्रम्म ।

विभ्रमणी, विभ्रमणी—क्रि. अ [स. विभ्रमण] १ घूमना, चक्कर लगाना ।

२ चित्तानुर होना, चित्तित होना ।

उ०—भूपति आयी पुर विभ्रमिये, सारगविजे मिळें तिण समिये
आलीवाद करे इम अक्खे, राजा किण कारण भ्रम रक्खे ।

—सू प्र.

३ भूल या गलती में आना ।

४ भ्रमित होना, शक्युक्त होना ।

५ आश्चर्ययुक्त होना, चकित होना ।

६ कामवासना की ओर उत्प्रेरित होना ।

७ उतावला या उद्विग्न होना ।

क्रि. स.—८ भ्रमित करना, शकित करना ।

९ आश्चर्यान्वित करना, चकित करना ।

१० चित्तानुर करना, चित्तित करना ।

११ गलती करना, भूल करना ।

विभ्रमणहार, हारी (हारी), विभ्रमणियो—वि० ।

विभ्रमिओडो, विभ्रमियोडो, विभ्रम्योडो—भू० का० कृ० ।

विभ्रमीजणी, विभ्रमीजणी—कर्म, भाव वा० ।

विभ्रमणी, विभ्रमणी—रू भे ।

विभ्रमा—स स्त्री.—१ आभा, कान्ति, शोभा, सुन्दरता । (अ. मा, ना-
मा, हं. ना. मा)

२ बुढापा, वृद्धावस्था ।

विभ्रमियोडो—भू का कृ —१ घूमा हुआ, चक्कर लगाया हुआ. २
चित्तानुर हुआ हुआ, चित्तित हुआ हुआ ३ भूल या गलती में आया
हुआ ४ भ्रमित हुआ हुआ, शक्युक्त हुआ हुआ ५ आश्चर्या-
न्वित हुआ हुआ, चकित हुआ हुआ ६ कामवासना की ओर उत्प्रे-
रित हुआ हुआ ७ उतावला या उद्विग्न हुआ हुआ ८ भ्रमित
किया हुआ, शकित किया हुआ. ९ आश्चर्यान्वित किया हुआ,
चकित किया हुआ १० कामवासना की ओर उत्प्रेरित किया हुआ
११ चित्तानुर किया हुआ, चित्तित किया हुआ १२ गलती किया
हुआ, भूल किया हुआ ।

(स्त्री विभ्रमियोडो)

विभ्रम—देखो 'विभ्रम' (रू भे)

उ०—पडे पूर लोह महा जुद्ध मोह । घोर घार तम्म, सविता विभ्र-
म्म ।

—गू रू व

विभ्रमणी, विभ्रमणी—देखो 'विभ्रमणी, विभ्रमणी' (रू भे)

विभ्रमणहार हारी (हारी), विभ्रमणियो—वि० ।

विभ्रमिओडो, विभ्रमियोडो, विभ्रम्योडो—भू० का० कृ० ।

विभ्रमीजणी, विभ्रमीजणी—कर्म, भाव वा० ।

विभ्रमियोडो—देखो 'विभ्रमियोडो' (रू भे)

(स्त्री विभ्रमियोडो)

विभ्रस्ट—वि. [स विभ्रष्ट] १ पथभ्रष्ट हुआ हुआ, पतित ।

२ नष्ट किया हुआ, ध्वस्त ।

विभ्रान्त—वि. [स] १ घूमाहुआ, चक्कर खाया हुआ ।

२ भ्रमित हुआ हुआ, शकित ।

३ चित्तानुर, चित्तित ।

४ आश्चर्यान्वित, चकित ।

५ उद्विग्न ।

विभ्रान्तशील—वि [स. विभ्रान्त+शील] १ चित्तानुर, विभ्रचित्त
व्याकुल ।

२ नशे में चूर ।

स. पु [स. विभ्रान्त+शील.] १ वन्दर, बानर ।

२ सूर्य मण्डल ।

३ चन्द्रमण्डल ।

विभ्रान्ति—स स्त्री [स विभ्रान्ति] १ भ्रमण, चक्कर ।

२ भूल, गलती ।

३ सौन्दर्य, शोभा ।

४ शका, शक, सन्देह ।

५ भ्रान्ति, धोखा ।

६ घबराहट, उद्विग्नता ।

विभ्राज—स. पु. [स.] १ ययाति वंशज एक राजा ।

२ सुकृत या सुकृति राजा का पुत्र एक राजा ।

३ अनघ नामक पाञ्चाल देश का राजा, जो ब्रह्मदत्त राजा का

पिता था ।

विभ्राजसौर्य—स. पु [स विभ्राजसौर्य] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का
नामान्तर ।

विभ्रत्री—स पु—आर्या गीति या खषाण (स्कंधक) का एक भेद विशेष ।

उ०—नद भइ भणि नाम सेष सारग सिव वभह, वारण वरण

वखारण नील मदनह ताटकह । सेखर सरपणि सोइ गगन गिणि

सरभ विभ्रत्री, खीर नयर नर निधि भाखि निहल इण भती ।

—पि प्र

विमगी—वि —१ अद्भुत, अनोखा ।

२ विना मागा हुआ ।

उ०—सुणा नाग नर देव सकोई, विमगी दान अक्खी वात । कीत्री

किणी न कोई करसी, 'पदम' जिसी लैणायत पात ।

—पदमसिधजी री गीत

विमची—स स्त्री —एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।

रू भे —विमची ।

विमणर, विमणी—स. पु —१ एक प्रकार का सुगन्धित वृक्ष विशेष ।

२ देखो 'दूणो' (रू. भे)

३ देखो 'विमन' (रू. भे)

उ०—पहिली होय दयामणउ, रवि आथमणउ जाइ । रवि ऊगइ विहसइ कमळ, खिए इक विमणउ थाइ । —डो मा.

विमता—स स्त्री —१ आपत्ति, विपत्ति ।

२ नञ्जता, धैर्य ।

[स. वि—रहित+रा मता=धन, दौलत] ३ कगाली, गरीबी, निर्धनता ।

उ०—विमता का वाग, भूतू का मडार, सिकोतरियु का सहायक, डाकणिया का दार । रोग का रजवाढा, सोग की सिरकार कायरा की कुटी, चोरू का आघार । —दुरगादत्त वारहड

विमति—वि [स] बुद्धीरहित, मूर्ख ।

विमद—वि [स] जो मतवाला न हो, मद-रहित ।

स पु —सत्यसन्ध राजा ।

विमधु—स पु. [स वि=विशेष + मधु=मीठा] अमृत पियूष ।

उ०—लछी रूप हरि भगति, धरम हिंदू धानतर । वेद चद्र मिण किया, भूम रभा वळ कुजर । धेन पूज सुरधेन, विमधु चरणाप्रत वदा । धनुख माण न्रप कळप, सख जस मद् विरहा । —रा रू वि.—१ विशेष मीठा ।

[स वि रहित+मधु=मीठा] २ कडवा ।

[स विमुग्ध] ३ अज्ञानी, मूर्ख ।

४ विशेष मोहित, उन्मत्त ।

५ विकल, व्याकुल ।

[स विमुद] ६ उदासीन, खिन्न ।

विमन—वि.—१ उदासीन, खिन्नचित्त ।

२ व्याकुल, उद्विग्न ।

३ चिंतित, दुःखी ।

४ क्रूर, क्रुद्ध, निर्दयी ।

रू भे —विमन, विमनी, विमन्न, विमन्नी, विमणउ, विमणी, विमनी, विमन्न, विमन्नी ।

विमनुष्या—स स्त्री [स विमनुष्या] कश्यप एव दनु की कन्याओं में से एक कन्या, अप्सरा ।

विमनी, विमन्न, विमन्नी—देखो 'विमन' (रू. भे)

विमर—१ देखो 'विमर' (रू. भे)

उ०—१ पछे देवी सैणी चारणी दिल्ली आई तरं मालदे ही देवी साथे दिल्ली आयी, पछे देवी सैणी विमर माहे पैठी तठे मालदे ही विमर माहे साथे पैठी । —नैणसी

उ०—२ पखे गोरखनाथ, कमण जाइ पैसे विमर । पखे राम दहकध, कमण वेधे एके सर । —गु रू व.

उ०—३ उतराघो वाउ वाजियो । हेमत रा बरफ ऊपडिया टाढी टमकियो, प्राळी पडण लागी । जिर्क घरती रा धणी पताळ वासी भुयंग नै घण रा घणी दौलतवत श्री विन्हे एके वग हूला सु घरती रो पुड भेद नै विमरं पैठा । उठे रहण लागी । —रा सा स.

उ०—४ तै 'भाण' तणी अवसाण-सिद्ध, वडा जुद्ध डोहण विमर । जोधार पखर लवख जिसे, निरो एक पखर निडर ।

—गु रू व

उ०—५ 'अमरसी' विमर' पैठी अराण, 'रासाउत' साधक रूक पाण । साहिब-खान 'नाहर' सुजाव, घण भूँभी वाहे सत्रा घाव ।

—गु रू व

उ०—६ बेरी हुश्री विमर मे बँठी, पल लागी सूती सुख पोढ । याकी गुरड डोकरो थू थयी, ऊपर लीवी रजाई ओढ ।

—टीकमदास

२ देखो 'विमळ' (रू. भे)

उ०—रुधवसी राठीड हर, तेरह साख कमध । विमर सकती वरणवा, वधे रूपक वध । —गु रू व.

विमरद—स पु [स विमर्द] १ अच्छी तरह मलने, मसलने की क्रिया, उबटन करने की क्रिया ।

२ छूने की क्रिया, स्पर्श ।

३ रगडने या रौंदने की क्रिया ।

४ युद्ध, संग्राम ।

५ नाश या बगवादी ।

६ मारने, सहार करने की क्रिया ।

७ कष्ट देने की क्रिया, दुःख देने की क्रिया ।

८ खग्रास नामक ग्रहण का नामान्तर ।

९ वह व्यक्ति जिसकी मूर्खेन्द्रिय वेकार हो या नहीं भी हो, नपुंसक हिंजडा ।

१० सामर्थ्यहीन व्यक्ति ।

११ किरात राजा ।

१२ सूर्य-चन्द्र समागम ।

रू. भे —विमरद ।

विमरदक—वि [स. विमर्दक] १ मर्दन करने वाला, मसलने वाला, उबटन करने वाला ।

२ रगडने या रौंदने वाला, कुचलने वाला ।

३ नाश या बरवाद करने वाला ।

- ४ मारने वाला, सहार करने वाला ।
 ५ युद्ध करने वाला, सग्राम करने वाला ।
 स पु —चन्द्र सूर्य ग्रहण या समागम ।

विमरदण—स पु [स विमर्दन] १ मलने, मसलने या उबटन करने की क्रिया ।

- २ छूने या स्पर्श करने की क्रिया ।
 ३ रगड़ने, रौंदने या कुचलने की क्रिया ।
 ४ युद्ध, सग्राम ।
 ५ नाश, बरबादी ।
 ६ मारने या सहारने की क्रिया ।
 ७ दुःख या कष्ट देने की क्रिया ।

विमरदित—वि [स विमर्दित] १ मला हुआ, उबटन किया हुआ ।

- २ छूआ हुआ, स्पर्श किया हुआ ।
 ३ कुचला या रौंदा हुआ ।
 ४ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया ।
 ५ नाश किया हुआ, बरबाद किया हुआ ।
 ६ मारा हुआ, सहार किया हुआ, मृत ।
 ७ पीड़ित, दुःखी ।
 देखो 'विमरद' (रू भे)

विमरस—स पु. [स विमर्श] नाटक की पाच सन्धियों में से एक सन्धि विशेष, मुख्यफल का उपाय गर्भसन्धि की अपेक्षा अधिक उद्भिन्न होता है किन्तु शापादि के कारण अन्तराय युक्त होती है ।

वि वि —इस सन्धि के तेरह अंग अर्थात् भेद होते हैं जो निम्नलिखित हैं—अपवाद, सकेत, व्यवसाय, द्रव, द्युति, शक्ति, प्रसंग, खेद प्रतिषेध, विरोध, प्ररोचना, आदान, श्रौर छादन ।

विमरीर—वि.—जवरदस्त, महान्, शक्तिशाली ।

- उ०—१ गाजे घण वाजे त्रवागळ, दुगम रूप विमरीर सके दळ ।
 हरख सनेह करे ध्रम हित नूँ, पट्टण राज दीघ प्रोहित नू —सू प्र
 उ०—२ अति भूळ गहमह आवळा, विमरीर भड रिण वावळा ।
 खग धार आछट है खुरा, धर भोगवता मुरधरा । —सू प्र
 उ०—३ इम कहे पौरस ऊफणी, विमरीर भळहळ दळ वण ।
 चढि तुरग थाट चलाविया, इम कही गढ पुर आविया । —सू प्र
 उ०—४ वह मडे गजा मेघाडवर, कठठे आरावा सकळ ।
 तन ससत्र कसे चढिया तुरा, दुगम सूर विमरीर दळ । —सू प्र

विमल, विमल—वि [स विमल] १ मल रहित, निमल ।

- २ सफेद, साफ, स्वच्छ, चमकीला, उज्ज्वल ।
 उ०—जिण हिज वार तेजमणि जादव, धर दुगलाण पुरी नव
 लाधव । इम निसि सुकळ वाग त्रप पाए, विमळ छद्रका साज
 वणाए । —सू प्र

३ जिसमें धार-पार देगा जा सकता हो, पारदर्शक ।

४ जिसमें कोई दोष न हो, दोष रहित, निर्दोष ।

५ सुन्दर, मनोहर, शोभायुक्त ।

उ०—१ अघरा डसणां सूं उदं, विमळ हास द्रतिवत । जो सध्या
 सू चद्रिका, फंली जाण फयत । —वा. दा.

उ०—२ मूछा त्रय फुल्लिया. रसण भूकं दत । मूनी मैनां घो-
 करे हूँ बळिहारी कत । कत बळिहारी लै मनाविय कामणी । धरं
 मन धू-धड साथि सकळा घणो । पाटि सत्र लोहडां घोकरे पोढियो,
 विमळ मूछा गिळं फरुकं वावियो । —हा भा

६ पावन, पवित्र ।

उ०—१ श्रोवामंडळ विमळ थळ, जळ आवत जगवद । धुज
 उज्जळ देवळ अमळ, निरख नमै नरयद । —रा म.

उ०—२ पेवै कोइ कहति एक एक प्रति, विमळ मगळ ग्रह एक
 वणि । एणि करण सुभ क्रम घाचरता, जाणियै वेलि जपति जणि
 —वेलि

उ०—३ नाथ अनाथ निराळ व तु नारीयण मदा मिवि तू हीज
 तु भगत कौघो मघण । चशधर निमो चकभुज तु हीज, चिदानद,
 विमळ ब्रह्मग्यान त्रय ग्यान तु गोपि त्रिदि । —पी म

उ०—४ छत्रपति प्रेम भाव सुग छाजे, विमळ इसा मुनि तठे
 विराजे । थिर करि पाइ मिस्ट जळ थाटे चदणादि लै पर बह
 चाटे । —सू प्र

उ०—५ लोहित चदण देव वलभा धरकाळ्ये कहे कवि धीर ।
 केसर तणो तिलक नित कोजे, विमळ भजन कोजे बळिधीर ।

—ह ना मा

७ स्वच्छ, साफ ।

उ०—१ त्रपति होइ मुख विमळ करे तदि, जुत मुखवास अग्र
 धारे जदि । मिरव सीत एळव मधि पावै, त्रितपति पान कपूर
 खुवावै । —सू प्र

उ०—२ आनन विमळ मुग्योप अपारा, तांनुनादि दिवै त्रिण वारा ।
 एहिज सदन सिसर हिमवतां, आसण पखी पसम अनता ।

—सू प्र

८ शुद्ध । (वाणी)

उ०—ऐसी विध पडतराज चातुरध कळा प्रवीण त्रिलोकू का प्रवध
 अनेक विध विमळ वाणो सै उच्चरै जिनुं सै रीभ स्त्रीमहाराज कनक
 जग्योपवीत चढाया । —सू प्र

स पु—१ चादी ।

२ सेंधा नमक ।

३ मणिवर एव पुण्यजनी के पुत्रो मे से एक यक्ष ।

४ जीमूत राजा का पुत्र एव भीमरथ राजा का पिता, एक राजा ।

५ इल राजा का पुत्र, जो दक्षिणापथ का राजा था ।

६ राम के अश्वमेधीय यज्ञ के समय शत्रुघ्न का सहायक रत्नातट नगरी का एक राजा ।

७ एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष जिसमें छत्तीस मात्राएँ होती हैं ।

उ०—ताइ सातसी छेनालीस, बदिआ रूप बरणावा बीस । मात्रा छत्तीस एह अनमान, विमल छद सुणिजौ गुणवान । —ल पि ८ देखो 'विमलनाथ'

उ०—१ विमल जिनेसर सुणि भलवेसर, माहरा वचन अनूप । मनडो विलूघो रे ताहरै रूप, जेम विलूघो रे कमल मधूप ।—वि कु

उ०—२ केवलग्यानी नइ निरवाणी, सागर महायस विमल वर वाणी । सरवानुभूति सौघर दत्त नामी, दामोदर स्त्री सुतेज स्वामी । —स कु.

उ०—३ रिसहु थपिड जेण सु निरम्मली, विमल नामु वहइ गुणि उज्जलो । ठविठ नेमि जिणिइ जगवल्लहर, परमतेजिहि तेजलु तै कहव । —जयसेवर सूरि

रु भे.—विमल, विमल, विमला, विपर, विम्मल, विम्मल ।

विमलक—स पु एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर, नग ।

विमलकथ—वि.—सुयशघारी, कीर्तिवान ।

विमलगिरिद, विमलगिरि—शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम ।

उ०—१ तामु दुरगति न व्है नरक त्रियच री, सुगति सुर नर लहे सुगति सारी । विमल आतम तिको विमलगिरि निरखसी, धनी धन स्त्रीघरमसील धारी । —घ. व. ग्र

उ०—२ सघ अनेक तिहा आबिया, भेटण विमलगिरिद । लोक-तणी सख्या नहीं, साथि गुरु जणचद । —ऐ जे का स

विमलजिन—देखो 'विमलनाथ' ।

उ०—दिव्य नाद सुर दूदुभि वाजइ, पुस्प व्रस्टि सुर विरचीजइ री । समयसुदर कहइ तेरे विमलजिन, प्रातीहारज पेखीजइ री । —स कु

विमलता, विमलता—स स्त्री [स विमल+रा प्र ता] १ निर्मलता स्वच्छता, उज्ज्वलता ।

२ पावनता, पवित्रता ।

३ सुन्दरता, मनोहरता ।

४ मधुरता, मीठापन ।

विमलतीर्थ—स पु [स विमलतीर्थ] एक पवित्र तीर्थ स्थान, जहा तालाबो मे स्नान एव रजत वरुणों की मछलिया पाई जाती हैं । उक्त तालाबो मे स्नान आदि करने से इन्द्रलोक की प्राप्ति होती है ।

विमलदान—स. पु. [विमल+दान] १ देवताओं का चढावा, प्रसाद ।

२ नित्य नैमित्तिक के अतिरिक्त केवल ईश्वर के प्रीत्यर्थ दिया जाने वाला दान । (पुराण)

विमलध्वनि—स. पु [स] १ सिंहावलोकित रीति से रखे हुए दोहे ओर समान सवैये से मिलकर बनने वाला एक छन्द, जिसमें छ-चरण होते हैं ।

स स्त्री —२ मधुर आवाज, सुरीली आवाज ।

विमलनाथ—स पु —एक तीर्थकर, जो उत्सर्पिणी के पाचवे व अव-सर्पिणी के तेहरवें अर्हत् माने जाते हैं ।

वि वि —इनका जन्म कम्पिलपुर नगर मे हुआ था । इनके पिता का नाम कृत्तवर्ष राजा था तथा माता का नाम श्यामा देवी रानी था ।

विमलपिड, विमलपिडक—स पु [स] कश्यप एव कद्रू के नाग पुत्रों मे से एक नाग पुत्र ।

विमलरूप—स पु.—हस । (ना मा)

विमला, विमला—स स्त्री [म विमला] १ वासुदेव की नायिका एक देवी ।

२ सुरभि की पुत्री रोहिणी की दो कन्याओं मे से एक कन्या, गाय ।

वि वि —दूमरी कन्या का नाम अनला था जिससे पिण्डाकार फल देने वाले सात वृक्ष हुए ।

३ देवी का एक विशेषण ।

उ०—धवा धवळागर धव धू धवळा, फसना कुवजा कचत्री कमळा चळाचळा चामुडा चपळा, विकट विकट भू बाळा विमळा ।

—देवि

४ पुरोत्तम नामक तीर्थ की अग्निष्ठात्री देवी ।

५ सरस्वती देवी का नामान्तर ।

६ एक ग्रह का नाम ।

वि स्त्री.—निर्मल, साफ, स्वच्छ ।

विमलाचल, विमलाचल, विमलाचल—स. पु. [स. विमलाचल] शत्रुञ्जय पर्वत का एक नाम । (डि को)

उ०—हा रे मोरा लाल गिरि तन सेत्रुजी नदी, जोबो आणिविवेक । इणिए परि विमलाचल तणी, तीरथ भूमि अनेक मोरा लाल ।

—वि कु

विमलात्मा—वि. [स विमल+आत्मा] जिसकी शुद्ध आत्मा हो ।

स पु —चन्द्रमा, चाद ।

विमलादरी, विमलाद्रि, विमलाद्री—देखो 'विमलाचल' ।

विमलापत, विमलापति, विमलापती विमलापत, विमलापति,-
विमलापती—स पु. [स विमलापति] १ ब्रह्मा ।

- २ स्वायम्भुव मनु ।
- ३ दधीचि ऋषि ।
- ४ आदित्य ।
- ५ रन्ति राजा ।

विमली—स स्त्री.—कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी । (सगीत)

विमलेश्वर, विमलेश्वर, विमलेश्वर—स पु [स विमलेश्वर] एक पवित्र तीर्थ का नाम विशेष ।

उ०—पुस्कर पेलि प्रभास पण, कालिंजर काश्मीर । विमलेश्वर वरजा बली, गंगा-सागरतीर । —मा. का प्र

विमान्—स. पु [स. विमान्] १ देवताओं अप्सराओं आदि का वह यान, रथ या उड़नखटोला जो आकाशमार्ग से चलता है ।

उ०—१ चम्परा दुलता चौजा अम्परा विमानां घट्टे, वढे श्रौत प्रथो सारी करता वाखाण । इद्र रा आवास सुरा लोक मे आणद आयी, पायो देव असी सारा देवा मे प्रमाण । —वादरदान दधवाडियो

उ०—२ च्यार घडी वाजी सुजड, ऋड मत्तो सर वाण । पडिया हिडू धार मूह, चडिया अछर विमाण । —रा रु.

उ०—३ देवा रथ्य रेवत सारग राजे, देवी विमाण पालखी पीठ वाजे । देवी प्रेत आरूड आरूड पथ, देवी सागर सुमेरू गूढ सध । —देवि

उ०—४ सुंडाला सुमेर सा सजिया अमर विमाण सी अवाही रे । चचळ हय चित चाल चुकावण, नाचै मोर मनोहारी रे । —गी रा.

उ०—५ जूसरा घवळ अप्रमाण जव, की विमाण पवमाण कथ । सुलताण मुगल मार्ये सज्या, राजथान वीकाण रथ । —मे म. २ आधुनिक वायुयान जो आकाश मे उडते हैं और पेट्रोल से चलते हैं ।

३ मृत व्यक्ति के शव की वह अस्थि जो फूलमाला आदि से सुसजित होती है ।

४ सोने, चादी या भोल की लकड़ी से बना हुआ पालकीनुमा वाहन जिसमे प्रायः भगवान् की मवारी निकाली जाती है ।

५ ऐसा मकान जिसमे सात खण्ड हो ।

६ वह देव मंदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊचा व लम्बोतरा हो ।

७ वाहन और सवारी ।

उ०—अकत री घन लेवा री आखडी खटवन री माल लेवा री आखडी । गाव फिलसी देवा री आखडी । सीव माह सुं

वळद गाव मे लावा री आखडी । विले विमाण गाव छाटवा री आखडी । —रा. सा. स.

रु भे.—वमाण, विवाण, विमाण, विमाणग, विमाणगी, विमाणण, विमान, विवाण, वीमाण, वेवाण, ववाण, विमाणग, विमाणो, विमान विवाण, विवाण, विवाणो, विव्वाण, विव्वाणो ।

विमाणग—देखो 'विमाण' (रु भे)

उ०—वारगा उमगा रगा विमाणगां सोक वाज, रारगा अमगा भडा दमगा री सार । पनगा विहगा ढंगा नारगा अमीच पडा, सारगा खतगा अगा मातगा दू सार । —उद्रीदाम खिडियो

विमाणवी—स स्त्री —एक लोक देवी जिसके प्रकोप से वातरोग होना माना जाता है । (अमरत)

विमानिक—देखो 'विमानिक' (रु भे.)

उ०—'भवनपति' 'व्यतर' ने जोतिषी, 'भेद' विमानिक पावे । सुर वर ते मिलने सगला, नाम 'निनाणू' आवे । —जयवाणी

विमाणो, विमाणिक, विमाणीय —देखो 'विमानिक' (रु. भे)

उ०—१ भवनपती इद्र वीसे भिल्या जी, सोल दू वितर सार । जोइस दु दस विमाणो जुड्या जी, चउसट्टि इद्र सुविचार ।

—घ व प्र.

उ०—२ त्रिहु तरा पति वायु कूण मे जाण ए, सुर विमाणीय नर नारि ईसाण ए । वार परिखद मद मच्छर छोड ए, भूख त्रिल वीसरं सुणं कर जोड ए । —घ व. प्र

उ०—३ प्रदिकषणा रूप थी अगनि कूण करी, गणधर साघवी तिम विमाणो सुरी । ज्योतिषी लुवणिनी वितरी श्री परां, वेरित कूण जिण वाणि ऊमी सुणं । —घ. व प्र

विमाणो —देखो 'विमाण' (रु. भे.)

उ०—१ सुर भणी सुरलोक म्यु, ऊतरं अमर विमाणो रे । अपछर आरतीया करइ, कामणि कचन वानी रे । —प च. चौ.

उ०—२ जासी सवारथ सिद्ध विमाणो, चवि महाविदेह वखाणी जी । मनुस हुसी बहु चतुर सुजाणी, दढपइण्णा नौ परिमाणो जी ।

—जयवाणी

विमान—देखो 'विमाण' (रु. भे)

उ०—१ निजर परक्खे राठवड, अकवर तेज दिण्णद । जाणी व्योम विमान सम, भोम प्रगट्ठो इद । —रा. रु.

उ०—२ साभलउ सौधरमेद्र तणी स्थिति, सौधरमी रत्नमय भूमि सिक्र सिंहासन सूरय जम भूलकतउ तिहा बसइ सक्र इसि नामिद सौधरमेद्र दक्षिण लोकारदस्वामी, एरावणवाहन, वत्रीस लाख निमानणउ आधिपत्य पालइ लीला लगइ । —व स.

३०—३ * दिसदिसइ वहकइ क्रस्यागर, इसिउ विमानं, माहि सुवरणमय स्तभ, ऊपरि रत्नमय पूतलीना सरभ, असख्य गवाक्ष्य मत्तवारण मगरमुहा ... , । —व स

विमानिकदेव—देखो 'विमानिकदेव' (रु. भे)

विमांस—स. पु [स.] वह माप जो खाने योग्य न हो, अशुद्ध, अपवित्र या वर्जित मास ।

विमाह—देखो 'विवाह' (रु. भे.)

३०—तथा उपराति राजान सिलामति रितिराज वसत वैसाख मास रा मगळाचार विमाह रा सुख विलास करता सरद रित आई छै । आसोज मास आइ संप्रापति हूओ छै । —रा सा स

विमात, विमाता, विमात्र, विमात्री—स. स्त्री [स. विमात्] जन्म देने वाली माता के जीवित अवस्था में या मृत्युपरान्त अपने पिता द्वारा पण्यता दूसरी नारी, सौतेली मा ।

विमारग—स पु [स विमार्गं] १ बुरा रास्ता, कुमार्ग ।

२ बुरे आचरण, कुआचरण ।

विमाळ, विमाल—स. स्त्री.—देरी, विलम्ब ।

३०—चडिया कटक्क आवक्क चाळ, वेडिसी 'जइत' न करइ विमाळ । असराळा ताजी ऊमगेहि, पन्नगा नेस धूजइ पगेहि ।

—रा ज. सी

सं पु—विचार ।

वि.—चुप, शान्त ।

३०—मिरजै खबर निबाव नूं पहुचाई ततकाल । आयी फिर महमदअली, सुरा नह रह्यो विमाळ । —रा रु.

रु. भे.—विमाळी ।

विमाळणी, विमाळवी—क्रि स—विचार करना ।

३०—उण वात विमाळै अक्खिया, चाळै कज हल चल्सिला । भूपाळ भलै मोटा भुजा, नवकोटै छळ भल्लिया । —रा रु

विमाळणहार, हारी (हारी), विमाळणियो—वि० ।

विमाळिओडो, विमाळियोडो, विमाळयोडो—भू० का० कृ० ।

विमाळीजणी, विमाळीजवी—कर्म वा० ।

विमाळियोडो—भू का कृ.—विचार किया हुआ ।

(स्त्री विमाळियोडो)

विमाळी—देखो 'विमाळ' (रु. भे)

३०—१ दुस्सह भाण भला जूष देखै, पाली गी थारुं गिर पेतै । विढवा नह कौ ताळ विमाळै, चाळी खग मातो गुणथाळै । —रा रु

३०—२ माहव मान तणो पट मोटै, कियो सवाय अमै नवकोटै । भगवत 'मुहकम' तणो भुजाळी, विढता न घरै ताळ विमाळी ।

—रा. रु

विमास, विमासण—स पु.—विचार ।

३०—१ जोरइ पिण हिव ताहरइ सखी, गलि माहि घालिस वाह । जै मिलवा नै उल्हसै सखी, किसी विमासण ताहिरै ।

—वि कु.

३०—२ कहता वै हाथै करि नाखियो रे, वानर ऊडि गयो आकास रे । सीह अरूपी लागी मारगं रे, रहीयो मन मा विमास रे ।

—वि कु.

३०—३ भारत खेत र भे सामठा, किए मा वेढा जाया रे । तीन सघाई आदिया, मै हाया सू वेहराया रे । करै विमासण देवकी ।

—जयवाणी

३०—४ कुण कहियं भुज मायडी जी, घडी घडी नै छेह । कहसु केहनै नानडीजी, सबल विमासण एह-रे जाया । —जयवाणी

३०—५ विरत्ती वेग न काइ विमास, विढेवा राउ खडै वरहास खुरा रवि फीण उमट्यो खाणि, लगेडै लागे लाल लगगणि ।

—राव जंतसी रो रासी

विमासणी, विमासवी—क्रि स—१ विचार करना ।

३०—१ तै ऊपरि ए पदमणी, आई आपा पासि । स्यु करिवी सूघो मती, वेघो कही विमासि । —प. च चौ

३०—२ सउदागर राजा कन्हइ, कहियउ एह विचार । राणी राय विमासियउ, तेहइ सालहुकुमार । —ढो मा

३०—३ ढोलइ मनह विमामियउ, एक करीजइ एम । करहइ चडि आपा खडा, नरवर पहुचा जेम । —ढो मा

३०—४ विद्या हीणा विप्र, तुं हीइ विमासी जोइ । तुरका-केरइ बोलडै, चिए न वूंटइ कोइ । —मा का प्र.

३०—५ पाताळ जाती सेस राखी, मनि विमास्यु आहि । देवता नी दया आणी, मकी ई माहि माहि । —रुकमणी मगळ २ समझाना ।

३०—ढोलइ करह विमासियउ, देखै वीस वसाळ । ऊर्षे थळइ ज एकली, वच्चाळइ एवाळ । —ढो मा.

विमासणहार, हारी (हारी), विमासणियो—वि० ।

विमासिओडो, विमासियोडो, विमास्योडो—भू० का० कृ० ।

विमासीजणी, विमासीजवी—कर्म वा० ।

विमासियोडो—भू का कृ.—१ विचार किया हुआ २ समझाया हुआ ।

(स्त्री. विमासियोडो)

विमाह—देखो 'विवाह' (रु. भे)

३०—१ ईख रस्स अहिफेणा, अरथ आगम डर ठाहे । पाना चग, मजोठ रग, उछरग विमाहे ।

—ह र.

उ०—२ इल घुकि लचक सीस ग्रहिवाळा, चद कटक खडिया कळ चाळा । जगत छत्रदिस लिखे जवावा, सभी विमाह कि समर सतावा । —सू प्र

उ०—३ जाइ राजा सुं मुजरी कीयी । कहियो महाराज घरा री खबर आई छे । वेटी री विमाह छे । राजा सिरपाव दे विदा दी उवे चोर कन्है गया कहघो इंडी विहचो । —चौवोली

उ०—४ महाराज विमाह रे आगम मगळ घमळ खमाइची कीजे । पिए श्री महाभारथ री आगम । अक वार सूरु पूरा अवसाणसिध लिभिआ रा वडा राग माहे वडा दूहा गवाडी । —र वचनिका

विमाहणी, विमाहणी—देखो 'विवाहणी, विवाहणी' (रू. भे.)

विमाहणहार, हारी (हारी), विमाहणियो—वि० ।

विमाहियोडी, विमाहियोडी, विमाहियोडी—भू० का० कृ० ।

विमाहोजणी, विमाहोजणी—कर्म वा० ।

विमाहियोडी—देखो 'विवाहियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. विमाहियोडी)

विमाही—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—वसतपचमी करो विमाही, सुघ निरदोख वेद विध साही । इम ठहराय महल नप आए, पदमणि ताम महामुख पाए । —सू. प्र.

विमुही—२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

विमुक्त-वि. [स] १ छूटा हुआ, मुक्त । २ आजाद, स्वतंत्र ।

३ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ. ४ फँका हुआ. छोड़ा हुआ.

५ दायित्व या कार्यभारादि से मुक्त ।

रू. भे.—विमुगत ।

विमुक्ति-स. स्त्री. [स] १ छूटने या मुक्त होने की अवस्था, छुटकारा ।

२ आजादी या स्वतंत्रता ।

३ अलगाव, विछोड़ ।

४ मुक्ति, मोक्ष ।

रू. भे.—विमुगति ।

विमुख-वि [स] १ जो किसी कार्य, विषय या बात आदि पर दत्त-चित्त न हो ।

उ०—में लख चोरामी धारि जोनि, का बोलत का गहूत मोनि । जनम जनम दुख बोहत पाय, जब राम नाम तें विमुख थाय ।

—अनुभववाणी

२ मिलाफ, प्रतिबूल, विरुद्ध ।

उ०—१ हरीया गुर तें विमुख नर, पाछा दरगें माहि । असें भागा गुरदा, दफ्तर चडिभी नाहि ।

—अनुभववाणी

उ०—२ आप गुरदेय का दसत राखे नही, और कुं ग्यान उपदेस

देवै । आठ ही पौहर हरिनाव कुं उचरै, साच नही जाणि गुर विमुख सेवै ।

—अनुभववाणी

उ०—३ रामजी री माळा रे वासदी लगाय धरणी सुं छाने वचा-योडी गूजी हाथ में राखती ती-महनं श्री दिन नी देखणा पडता । आज म्हारा वेटा ई म्हारा सुं विमुख व्हेगा । मा रे विना कोई इए दरद नें समझ नी सके ।

—फुलवाडी

उ०—४ जिसा स्वामीजी कहता था जिसाइ निकळिया । पछे सिव-रामदासजो सतोकचदजी दोनू सुलभ परणे रहथा । उवे दोनूइ विमुख रहथा तो पिए स्वामीजी उगारी गिएत राखी नही । —भि द्र

३ उलटा, विपरीत ।

४ पुनरावर्तन, प्रत्यावर्तन ।

५ उलटा, अंधा ।

६ रहित, विना ।

७ जिसके मूह न हो, मुख-रहित ।

स पु—दक्षिणी भारत का एक ऋषि । (प्राचीन)

रू. भे—वमुख, वमुह, वेमुख, वमुख, वमुह, विमुही विमुह, विमुहि ।

अल्पा—विमही, विमुही, वेमुही, वमुही, विमुखी, विमुही, विमुही, विमुही ।

विमुखता-स स्त्री [स] १ विरोध, प्रतिकूलता ।

२ अप्रसन्नता ।

३ विरति ।

विमुखी—देखो 'विमुख' (अल्पा रू. भे.)

उ०—कपणा जस भावै कठे, विधि विमुखा नूं वेद । 'वाका' भोजन नह रुचै, ज्यारें वप ज्वर खेद ।

—वा दा

विमुगत—देखो 'विमुक्त' (रू. भे.)

विमुगति—देखो 'विमुक्ति' (रू. भे.)

विमुग्ध-वि [स] १ मोहित हुआ हुआ, आसक्त ।

२ अम में पडा हुआ, अमित, अन्त ।

३ उन्मत्त, मत्त, मस्त, मनवाला ।

४ घबराया हुआ, विकल, परेशान ।

५ पागल हुआ हुआ, वावला ।

विमुग्धकारी-वि [स] १ मोहित करने वाला ।

२ पागल बनाने वाला ।

३ उन्मत्त या मस्त करने वाला ।

४ डराने वाला, परेशान करने वाला ।

५ अम में डालने वाला ।

विमुदर, विमुद्र-वि [स विमुद्र] खिला हुआ, धिकसित ।

रू भे—विमुद्र ।

विमुह—देखो 'विमुख' (रू भे.)

७०—१ विमुह करण रण साह दळ, 'मुहकम' का 'हरियद'। सोच निमेडण निय दळा, खळा उखेलण कद । —रा रू.

७०—२ सूरा नूर दरस्सिया, तीलै सेल करण । वायर ज्यौं लगगा विमुह, कायर आठूं मग । —रा रू

विमुहाळ—वि—आधा, ऊटे मुख ।

७०—विमुहाळ काषाळ विचाळ विपे, उवचाळ बगाळ सिगाळ अप । घड घाव बडाळ ओलाळ घडे, पड नाळ प्रनाळ चणाळ पडे । —पा प्र

विमुहि—देखो 'विमुख' (रू भे)

७०—कळि चालि लंकाळ कहै इम 'केहरि', विद्विवा कजि ऊछजि केवाण । चलियै दळि विमुहि क्यू चालू, चालियो विमुहि नकी चहु-वाण । —नाहरखान चौहान किसनदासोत री गीत

विमुहो—देखो 'विमुख' (अल्पा रू भे)

७०—१ ऊससै आभ लगा आवता, राव तरणी रज देख रथ । रैवत रोक न रहियो राणी, पुळिया विमुहा पाटपत । —धानण खिडियो

७०—२ सामो 'जोध' तरणै सै जूत, सामी सलह सजतै सैण । थय कुजर विमुहा कुभाथळ कागमुहा दोठा "कुभेण" । —गेहो खिडियो

७०—३ रहियो पण साबत जेतरी, जुघ घात विमा सत 'पाल' जती । किम जावत 'बूडाय' राव कहै, विमुहो रण मारग 'पाल' वहै । —पा. प्र

७०—४ औरगमाहि पातिमाहि रा तपतेज अपरवळ दईवार अब-तार जिण आगै जमराणो विमुहा खडे । तिण सू तीन पौहर हाथू कं महाराज जसराज ही लडे । —र वचनिका

७०—५ एक घडी बग्गी सुजड, घड घड लगगी धार । पिसण थया विमुहा पगा, गहि बग्गा तोखार । —रा रू

७०—६ 'करन' 'प्रताप' तरणी जुघ कारण, विमुहा करै जिसी अरि वारण । 'अजवावत' जोषो' दळ आगळ, केवी गळै जेम जळ कागळ । —रा. रू

विमूहो—देखो 'विमुख' (अल्पा रू भे.)

७०—आभ विमूहा मारासा है घर भेलण हार । घरणीघर घर छडिया, अचछै तू आघार । —ह र

विमूढ—वि [स विमूढ] १ मूर्ख, नासमझ ।

२ विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध ।

३ भ्रमित, भ्रान्त ।

४ चेतना-रहित, चेतना-शून्य ।

विमूढगरभ—स पु यो [स विमूढगर्भ] वह गर्भ जिस मे वच्चा मर गया हो और प्रसव बहुत कठिनाई से होता हो ।

विमूळ—वि [स विमूल] १ मूल रहित, विना जड का, निर्मूल ।
२ वरबाद, नष्ट ।

विमूळण—सं पु [स. विमूलन] १ समूल उखाड फेंकने की क्रिया, उन्मूलन ।

२ नाश करने की क्रिया, ध्वंस करने की क्रिया ।

विमूहो—देखो 'विमुख' (अल्पा, रू भे.)

विमेक, विमेख—देखो 'विवेक' (रू भे)

७०—१ तिलोई न जाणै ताहरा, ब्रह्मा जिसा विमेख । काइम तूं सबखो करै, भवखो मारग एक । —पी प्र.

७०—२ विसव कियो तं बीस हथ, कियो विमेख विचार । इम्या त्रिदि लीषो इसी, कीषो लै करतार । —पी अं.

७०—३ उचारै वेद विदुख अनेक, विचारै जिण सू विधि विमेक । —रामरासी

७०—४ पिगळ भरह पुराण पराकृत, विध विध जाणण सयळ विमेक । 'जैसा' हरो न भगवट जाणै, ऊतर करै न जाणै अनेक । —ईसरदास वारहट

विमोक्ख, विमोक्ष, विमोख—स. पु. [स विमोक्ष] १ बन्धनमुक्त करने की क्रिया, मुक्तिदेने की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ सूर्य एव चन्द्र का ग्रहण से मुक्त होना ।

४ सुमेरु पर्वत ।

विमोक्षण—स. स्त्री.—१ बधन मुक्त करने की क्रिया, रिहा करने की क्रिया ।

२ तीर आदि छोडने की क्रिया ।

वि.—१ बधन मुक्त या रिहा करने वाला ।

२ तीर आदि छोडने वाला ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाने वाला ।

विमोखणी, विमोखवो—क्रि स. [स. विमोक्षणम्] १ बधन मुक्त करना, रिहा करना ।

२ तीर, गोली आदि छोडना ।

३ जन्म-मरण से मुक्ति दिलाना ।

विमोखणहार, हारो (हारो), विमोखणियो—वि० ।

विमोखिओडो, विमोखियोडो, विमोख्योडो—भू० का० कृ० ।

विमोखीजणो, विमोखीजवो—कर्म धा० ।

विमोचिपोष्टी-भू का कृ- १ बन्धन मुक्त किया हुआ, रिहा किया हुआ ।
२ तीर, गोनी आदि छोटा हुआ ३ जन्म मरण से मुक्ति
दिलाया हुआ ।

(स्त्री विमोचिपोष्टी)

विमोचक-वि - १ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला ।

२ जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति दिताने वाला ।

विमोचन-स पु [म विमोच] १ बन्धन-मुक्त करने की क्रिया, मुक्ति ।
देन की क्रिया ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से छूटने की क्रिया, मोक्ष ।

३ एक तीर्थ का नाम जो कुण्डल में है, जिसमें जात करने में
फोष एवं इन्द्रिया के बन्धनों न हों यानि पुण्य की प्रतिष्ठा के
पाप से मुक्ति मिल जाती है ।

४ नाश करने की क्रिया, नाश करने की क्रिया ।

वि - १ बन्धन-मुक्त करने वाला, रिहा करने वाला ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्ति दिताने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

४ से - विमोचन ।

विमोचनी, विमोचनी-वि स - १ बन्धन-मुक्त कराना, रिहा करना ।

२ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त करना ।

विमोचणहार, हारी (हारी), विमोचणियो-वि० ।

विमोचिपोष्टी, विमोचिपोष्टी, विमोच्योष्टी-भू० का० कृ० ।

विमोचिजनी, विमोचिजनी-कर्म वा० ।

विमोचिपोष्टी-भू का कृ - १ बन्धन-मुक्त किया हुआ, रिहा किया
हुआ । २ जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त किया हुआ ।

(स्त्री विमोचिपोष्टी)

विमोद-स पु [स वि=विशेष+मोद=प्रसन्नता] १ प्रसन्न हर्ष,
मोद, प्रसन्नता ।

उ०-गिरते सिर जग घगी ग्रहियो, रवि मोद विमोद एक
रहियो । अथवार विनां यम जूँक अही, मपताम वियो न मोद
मही ।

-वा. प्र

वि [स. वि =रहित+मोद=प्रसन्नता] हर्ष रहित, मोद रहित,
प्रसन्नता रहित ।

विमोह-स पु [स वि=विशेष+मोह] १ अत्यन्त मोह ।

उ०-विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सयिना । यासर
विमोह लहिय, चक वांछे मगळ भवण ।

-गृ ४ व

२ मोह, भ्रम, भ्रान्ति ।

उ०-१ अर्द्धी ईस अनत नाम कल्याण निरजण, देव कित्त
दीपान ग्यान दर्ईना अत्र गजण । अलल नील स्नील विसव विमोह

विमोह-स पु [स वि=विशेष+मोह] १ अत्यन्त मोह ।

उ०-२ मुह निरग मगळ मणोह, रिहा मणु मूढ विमोह । रवि
विमण अणुण मण, भाणुण मण विमण ।

-वा ४

उ०-३ मण मण विमण मण मण विमोह मण मण अणुण रिहा
पुण मण । रिहा देव मण मण मण मण मण मण मण मण मण
मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण

-वा ४,

१ एक मण का नाम ।

वि - १ मण, मण ।

[म वि =रहित + मोह] २ मोह रहित ।

उ०- देवी मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण
मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण

-म-मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण मण

विमोह-वि [म] १ मोह नाश करने वाला मुक्त करने वाला,
विमोह करने वाला ।

२ मोह नाश करने वाला, भ्रमनाश करने वाला ।

३ अनेक या अनेक करने वाला ।

४ मोह-रहित या अत्यन्त मोह करने वाला ।

विमोह-म. पु [म विमोह] १ मोहित करने की क्रिया, अत्यन्त
करने की क्रिया ।

२ मोह उत्पन्न करने की क्रिया, भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया ।

३ मोह या अत्यन्त करने की क्रिया ।

४ अनेक या अनेक करने की क्रिया ।

५ एक करने का नाम ।

६ मोह रहित करने की क्रिया ।

वि - १ मोहित करने वाला, अत्यन्त करने वाला ।

२ मोह उत्पन्न करने वाला, भ्रम उत्पन्न करने वाला ।

३ अनेक या अनेक करने वाला ।

४ मोह रहित करने वाला ।

विमोहणी-वि (स्त्री विमोहणी) १ मोहित करने वाली, अत्यन्त
करने वाली ।

उ०-देवी गीर क्पा चमां नग विदि देवी सपत्ता अत्यन्त मण
गिदि । देवी व व विमोहणी गीर वांछी, देवी गोपना मणता चित्त-
वांछी ।

-देवि

२ मोह उत्पन्न करने वाली, भ्रम उत्पन्न करने वाली ।

३ अनेक या अनेक करने वाली ।

४ अनेक या अनेक करने वाली ।

५ मोह रहित करने वाली ।

विमोहणी, विमोहवी—क्रि अ [स विमोहनम्] १ मोहित होना, मुग्ध होना ।

उ०—१ अत्रा आदि तरण आभासं, परम कवर लखि हरख प्रकासं । सुदर चख मुख कर पद मोहै, मजु रूप लख कज विमोहै ।

—रा रु

उ०—२ मन हरखें तन उच्छ्वन्न मोटै, कियो वरणाव 'अभ्रं' नव-कोटै । सुरग वसन सुदर तन मोहै, वेखि रूप रति भूप विमोहै ।

—रा. रु

उ०—३ सुदर पाघ मोड सिर सोहै, भुगति पति लख जगत विमोहै । वचन सहास हुलास विहारै, नयण हरखजुत भिरत निहारै ।

—रा. रु

२ आकर्षित होना ।

उ०—ऊपर सरद सुखद रित आई, सुखधर न पत उदत सवाई । सरवर अचळ निमळ जळ सोहै, मध पूरन विधु रसमि विमोहै ।

—रा रु.

३ लालायित होना, ललचाना ।

उ०—१ फल कदली स्त्रीय स्वार्द अफारा, छयै स्त्रीय वादाम पिस्ता छुहारा । सुधा साव नारगिया रम सोहै, महादेव देवेस मेवै विमोहै ।

—रा रु

उ०—२ अनेकै फळ भारिया ब्रख अर्पे, लिये चाहि सेवा न को जाय लोपे । सुगधकर सुदर फूल सोहै, महायम सौरम सिंभू विमोहै ।

—रा रु

४ अभ्रित या भ्रान्त होना ।

५ अचेत होना, वेसुध होना ।

६ मोह रहित होना ।

क्रि स—७ मोहित करना, मुग्ध करना ।

उ०—१ सूर घोर साखेत नीर तें मोहै, कायर नर कर्पे साध कूं विमोहै । स्त्रीमहाराज को रूप असी निजर आयो, जाणें रोहिणी को संग विरोचन प्रायो ।

—रा रु

उ०—२ छिलती सलित न्याव नह छूटै, जेठी गयद कुरग नह छूटै । मकि जळ क्रीड न सहल विमोहै, अस सिक्का गज रथ न अरोहै ।

—सू प्र

उ०—३ खसै तें साहि विनाकष खेव, वचाडिय देवा आदू वेध । जटाधर अघ दइत जळाय, विमोहै रूप अनूप वणाय ।

—ह र

उ०—४ हर पवन आवैं छैं । कवळ करा मैं । नवरतन की पोचा सोहै छैं । मनरग लोभ पराग विमोहै छैं । आय ऊभी जीसी देव रभा । उरवसी लजाय । सुर राज अचभा ।

—पना

८ लालायित करना, ललचाना ।

९ अभ्रित या भ्रान्त करना ।

१० अचेत करना, वेसुध करना ।

११ मोहरहित करना ।

विमोहणहार, हारी (हारी), विमोहणीयाँ - वि० ।

विमोहिश्रीडी, विमोहियोडी, विमोहचोडी—भू० का० कृ० ।

विमोहीजणी, विमोहीजवी—कर्म, भाव वा० ।

विमोहणी, विमोहवी—रु भे. ।

विमोहा-स पु—प्रत्येक चरण मे दो रणण वाला एक छद विशेष जिसमे ६ वर्ण होते है । (रूपदीप पिंगळ)

विमोहित-वि. [स] १ मोहित, आकर्षित ।

२ ललचाया हुआ, लालायित ।

३ अभ्रित, भ्रान्त ।

४ अचेत, वेसुध ।

विमोहियोडी—भू का. कृ —१ माहित हुवा हुआ, भुन्व हुवा हुआ.

२ आकर्षित हुवा हुआ ३ लालायित हुवा हुआ, ललचाया हुआ.

४ अभ्रित हुवा हुआ, भ्रान्त ५ चेतना रहित हुवा हुआ, वेसुध हुवा हुआ.

६ मोह रहित हुवा हुआ ७ माहित या आकर्षित किया हुआ ८ लालायित किया हुआ, ललचाया हुआ

९ अभ्रित या भ्रान्त किया हुआ १० अचेत किया हुआ, वेसुध किया हुआ.

११ मोह रहित किया हुआ ।

(स्त्री विमोहियोडी)

विमोही-वि [मं विमोहिन्] १ मोहित या आकर्षित होने या करने वाला ।

२ लालायित होने या करने वाला, ललचाने वाला ।

३ अभ्रित या भ्रान्त होने या करने वाला ।

४ चेतनारहित या वेसुध होने या करने वाला ।

५ मोह रहित होने या करने वाला ।

विमोदगल-स पू [स विमोदगल] अगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ।

विम्मर—देखो 'विवर' (रु भे)

उ०—भगरा गिरा सहारा थका फाटकै, विम्मरा गिरा हूतां विचालैं । नव नवा प्रसण नवकुल जही नीवडै, किया आहूत घख-पख कालैं ।

—राजा अनिरुद्धसिंह गौड री गीत

विम्मल, विम्मल—देखो 'विमळ' (रु भे)

उ०—१ मुडिया पिडमैगळ अस्सि उच्छुळल रावत विम्मल लडि पडिय । हुजडा हूनै दळ विदूडै रव्वळ, कदळ पेखैं रिब मडिय ।

—गु रु व

उ०—२ पूजें पग विम्मळ वेद पुराण, अलीयळ नाथ लिये अग्राण । रमे पग-छाह मधूकर रिक्ख, तवें पग नाग सरीमा तकळ —ह र

विय—देखो 'विय' (रु भे)

विद्यमणि—स पु. [स. विद्यमणि] सूरज, सूर्य ।

विद्यटल—देखो 'विटल' (रू भे)

उ०—वाय विद्यटल वैसाखना, आहा थी अलग्नु वाय । पागरणा
परनारिना, ऊडाडितु आय । —मा का प्र

विद्यत—स. पु. [स. विद्यत्] आकाश, व्योम, गगन । (अ मा)

उ०—जग सीत प्रगटत पंथ चख जग, अगनि दिसि अनुक्रम ।
अगि जगत जण प्रति सुखद, अवर विद्यत जळघर वेस में ।

—रा रू.

रू. भे —विद्यत, त्रयद वयद, विद्यद ।

विद्यतमणि, विद्यतमणी—स पु [स विद्यत्+मणि] १ सूरज, सूर्य ।

२ चान्द, चन्द्रमा ।

विद्यति—स पु [स] नहुप राजा का एक पुत्र ।

विद्यद—देखो 'विद्यत' (रू भे)

विद्यदगगा—स स्त्री [स] आकाशगगा ।

विद्याण—देखो 'व्याण' (रू भे)

विद्याणी—वि स्त्री —जन्म देने वाली ।

विद्यान—१ देखो 'व्यान' (रू भे)

२ दाखो 'विद्यान' (रू भे)

उ०—विमान आसमान मे निसान से रहें नहीं, बसुधरा विद्यान सी
वगीलगी वहे नहीं । छलग बाछर धर न उच्छरं चरे चिरं फलग
भंचकी थकी न नंचकी चकी फिरं । —ऊ का

विद्याई—देखो 'व्याई' (रू भे)

विद्याज—देखो 'व्याज' (रू भे)

उ०—आगे जाइ आलि केलि ग्रह अतरि, करि अगण भारजण
करेण । सेज विद्याज खीरसागर सजि, फूल विद्याज सजे तसु
फेण । —वेलि

विद्याणी, विद्यावी—देखो 'व्याणी, व्यावी' (रू. भे)

उ०—१ दादू वरु विद्याई आतमा, उपज्या आनद भाव । सहज
सील सतोख सत, प्रेम मगन मन राव । —दादूवाणी

उ०—२ तेणि पातिसाहि आया सातरि कुण सहइ ? कुणइ सडिजइ ?
कुण की जुवनी, कुण की प्राप्ती ? कुण माइ विद्याणी, जू सामउ
रहइ अणी पाणी ? —अ. वचनिका

विद्यापणी, विद्यापवी—देखो 'व्यापणी, व्यापवी' (रू भे.)

उ०—१ चौथे पहरे रेणिएदे, वणिजारिया तू पक्का हूवा पीर वं ।
जीवन गया जरा विद्यापी, नाही सुधि सरीर वं । —दादूवाणी

उ०—२ आखय ऊमा देवडी, सभळि पिगळ राइ । विरह-विद्यापी
मारुई, नहिं राखण कउ दाइ । —डो. मा.

विद्यापणहार, हारी (हारी), विद्यापणियो—वि० ।

विद्यापिओडी, विद्यापियोडी, विद्याप्योडी—भू० का० कू० ।

विद्यापीजणी, विद्यापीजवी—भाव वा० ।

विद्यापियोडी—देखो 'व्यापियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विद्यापियोडी)

विद्यापि, विद्यापी—देखो 'व्यापी' (रू भे.)

उ०—१ सकल विद्यापी सगि वसें, हरि सन्नय सिरजणहार ।
साहिब ही ते पाइए, साहब का दीदार । —ह पु वा

उ०—२ त्रिविध ताप सासी न सूळ, परमभेद आनदमूळ । उदं
अस्त आवें न जाय, सकळ विद्यापि सहजभाव । —ह पु वा

उ०—३ मनसा अटी मिटी सब दौर, गहि गुर ग्यान वसें निज
ठीर । जन हरिदास गोविंद गुणागाई, सकळ विद्यापी राम सहाई ।

—ह पु वा

विद्यायोडी—देखो 'व्यायोडी' (रू भे)

विद्यार—१ देखो 'विकार' ।

२ देखो 'विचार' ।

विद्याळू—देखो 'व्याळू' (रू भे)

विद्याध—देखो 'विवाह' (रू भे)

विद्यास—देखो 'व्यास' (रू भे)

उ०—विद्यास भट्ट कै महत, जोनिकी ब्रह्मण । कथा पुराण
भागवत, भारथ रामाइण । —गु रू व

विद्यासियो—देखो 'व्यासियो' (रू भे)

उ०—रतन पाट बंठी रघू, देखी साईदास । समत पनर विद्यासिये
भेसरोड चद्रभाम । —साईदास री गीत

विद्यासी—देखो 'व्यासी' (रू भे)

विद्योग—स पु [स.] १ सयोग का अभाव । (हिं को)

उ०—१ कोडक परव भय सवध म् रे आइ मिल्यो सजोग । भवि-
तव्यता रइ जोग मिलइ इर्यो रे, वणियो एम विद्योग ।

—प च चौ

उ०—२ रहे नहीं नामे कोई रोग, वली सह जाये सोग विद्योग ।
सदा हुवे भोग सयोग सवेव, दीर्य सुख वछित रीखभदेव ।

—ध व, प्र.

२ विच्छेद, अलगवाव ।

उ०—१ स्वामीजी नवी दिक्षा लीघा पछे केतलैएक वरसें तीन
जणिया दिप्ता लेवा त्यारी थइ । जद स्वामीजी बोल्या थे तीन
जणिया मार्थे दिक्षा नेवो अने कदाचित एकण री त्रियोग पड जावे
ती दोयां नं कल्पे नही सी पछे सलेखणा करणी पडे । —भि द्र

३०—२ जकै व्यापार करै छै । त्याह की स्त्री, गाय अर वछडा । विभचार ही करणहारी स्त्री अर लंपट । ये तीन्वी रात्रि कै समै भेळा हुता त्याह नै वियोग हुग्री । —वेलि टी

३०—३ नाह वियोगे दुखणी तेह, भूरि क्रस कीघी छै 'देह' । रहै एकातै लेइ आवास घरम ध्यान मन माहै जास । —वि कु

३ अक्सर, मौका ।

४ विरह जुदाई ।

३०—१ दसरथ राय दियो देसवटउ, रहचउ वनवास जी । बलि त्रियोग पडचउ सीतानउ, आठं पहर उदास जी । —स कु

३०—२ खसत्रोय लगाई । आप डोलियै पोढियो । भरमल पवन करै छै । बहारण पग हाथ देवै छै । वाता करै छै । खुस-वखत छै हसै छै । घणा दिना री वियोग भागी, सो दोनुं परम राजी छै ।

—कृवरसी साखला री वारता

५ साहित्य में एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमें प्रेमी प्रेमिकाओं के विरह का वर्णन होता है ।

वि —विना, रहित ।

क्रि वि —अलग, वियोग में ।

रू भे —विघ्नो, विजोग, 'वियोग, विवोग, वजोग, विघ्नो, विजोग ।

अल्पा, —विजोगी, वियोगी ।

वियोगण, वियोगणी—स स्त्री [स वियोगिनी] वह स्त्री जिसका पति या प्रियतम उससे अलग या दूर हो, विरहणी ।

रू भे —विजोगण, विजोगणी, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी, विजोगिनि, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी, विजोगिणी, विजोगिण, विजोगिणि, विजोगिणी, विजोगिणि, विजोगिणी ।

वियोगात्—वि [स.] जिसकी कथा का अंत दुःखपूर्ण हो ।

रू भे —विजोगात् ।

वियोगिण, वियोगिणि, वियोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू भे)

३०—सीलवती नै ही एहिज जोगता, घरम पणै द्रढ थाय । बलि विसेख ही जेह वियोगिणी घरम करइ मन लाय । —वि कु

वियोगी—वि [स] जो अपनी स्त्री या प्रिया से अलग या दूर हुआ हो, विरही ।

स पु —वह नायक जो प्रिया के वियोग के कारण दुःखी हो ।

रू भे —विघ्नो, विजोगिण, विजोगी, वियोगण, वियोगी, विजोगी ।

वियोगी—देखो 'वियोग' (अल्पा., रू भे)

३०—राणी माख्या डपला नै सोगी रै, माहरै व्हाला पडै वियोगी । हा हा करू हिवै कासूं रै, माहरी हिवडो फटै मा सू ।

—जयवाणी

वियोजक-वि [स] १ वियोग उत्पन्न करने वाला ।

२ दो सयुक्त वस्तुओं को अलग करने वाला ।

वियोजण-स स्त्री. [स वियोजन] १ दो सयुक्त वस्तुओं को अलग करने की क्रिया, पृथक करने की क्रिया ।

२ गणित में किसी बड़ी सख्या में से छोटी घटाने की क्रिया, बाकी ।

वियोजित-वि [स.] अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

अ स्त्री —किसी बड़ी सख्या में से छोटी सख्या के घटाने के बाद आई हुई सख्या ।

वियो—देखो 'दूजी' (रू भे)

३०—१ चहुव रणा कुळ चल्लणी, वियो न चल्ले कोय । चाड न घट्टै खूंद की, सीस पलट्टै तोय । —रा. रू

३०—२ अनि गढा विखम भूम ऊपजै, खळ त्या उद्यम खभियो । 'गजसाह' वियो गुज्जर सिरै, 'अभैसाह' आरभियो । —रा. रू.

३०—३ कत सोभति रेसम लूव करै, घुरवा किर फूलिय सक घरै । अत दग तुरगम अग वियै, क्रम सोभत आवत डोर कियै ।

—रा. रू

वियोवन-स पु —१ युवा-अवस्था के बीच का समय ।

२ युवा अवस्था के बाद का समय ।

विरग, विरगू, विरगोडो विरगी—वि [स विरग] (स्त्री विरगी) १ अप्रिय, असुहावना ।

३०—१ ततखण भाळवणी कहइ, साभळि कत सुरग । सगळा देस मुहामरण, माच देस विरग । —ढो मा.

३०—२ सेभा आवो सुदरी, ज्यो सोभा दे सेभ । ती विन सेभ विरगियां, कही न लागे जेह । —कृवरसी साखला री वारता

३०—३ छूटी नीर चखा सतराम ऊवरता छेला, सरूपदास री छाती उभेला ममद जाभी आज म्हाँन छोड अकेला कठोर्न जावो, कोयला विरगा हेला दे रही कमध ।

—स्वरूपदास

२ जो ममय के प्रतिकूल हो ।

३ कडवा, वेस्वाद ।

४ बदशक्ल, बदरूप, क्रूरुप ।

५ वदरग, बुरे रग का ।

६ अनेक रंगो वाला, अनेक रंगो का ।

उ०—कंपू मार तेगा तीजी ताळी सो फुरगी कीधी, जका बाद नीरगी प्रजाळी भुजा जोम । मानू तारती धिरंगी काळी घडा माथे, भूप 'डूंगे' विधंसी फिरगी वाळी भोम ।—गिरवरदान कवियो ७ भयकर, भयावना, भयावह, डरावना ।

उ०—घटा टोप मेघा गड्डुत गाजें, द्वयकं तरंगा विरगांहु वाजें । लिचापिच्च लागी घडी ताल भाजें, अही कोइ राखें अठे अम्ह काजें । —घ व म

८ उदासीन, खिन्न ।

उ०—१ नाह मिळियो सही विरग रग नीसरें, क्रमतां प्रथी सिर जेज नह की वरें, रीसिये 'जसे' भड रिमा घड रोळिया, झुंजि अस असमरा रुधिर भकबोळिया । —हा भा.

उ०—२ नयणह प्रागलि गयड कुरगू, राय चीति जां हुयड विरगू । जोइ वामु दांहिएउ । —सालिभद्र सूरि

६ अशुभरग (वर्ण) ।

१० फीका, नीरस, आनन्दरहित ।

उ०—बडां लिया भड अनड कस तुरग सजतं विखी, अभग जग जीत ब्रद भुजां ओपे । सूर वड सुरग रग चडियो असमरां, किया नवरग विरग दुरग कोपे । —सबळी सांदू

११ अनुराग या इक्षक रहित ।

१२ दुःखपूर्ण, पीडायुक्त, सन्तापयुक्त ।

उ०—बरसण लागा वंण विरगा, तरसण लागी तीठा । परसण लागी पाव दुहेला, दरसण छेला दीठा । —ऊ. का

१३ प्रभावरहित, रीवरहित ।

१४ प्रतिष्ठा रहित वेद्जत ।

१५ जोश रहित, आवेशरहित ।

१६ शोकसूचक, शोकजनक ।

१७ भद्रा, बुरा ।

उ०—१ मुरघर छोड परघरा वसें, लगे अर्धाणा ओपरा । वासडा रे सारें विरगा, जाणें दरखत तोप रा । —दसदेव

उ०—२ वे विरगोडा रुख, जठे सुखी छाहडली । हाण फाण सी घास, काय काया री ढिगली । —सक्तिदान कवियो

१८ शुष्क, सूखा, निर्जल ।

उ०—वेस विरगउ ढोलणा, दुखी हुया इहा आइ । मन गमता पांम्या नहीं, ऊट कटाळा खाइ । —ढो मा

१९ कडवा, कर्णकट्ट ।

२० विकट ।

उ०—ताय सुरग वात कहियें तणी, दोग विरगी दहन री । उर जेज घरी म करी उरड, ऊनी तेज अगस री । —रा रु

२१ जिमवा रग बदल गया हो, परिवर्तित रग का ।

उ०—दय लग्गां वन अतरें, छूटें पयन अट्टेह । भूम दिसा तिम घुघळें, व्योम विरगें गेह । —रा ह

रु भे—विरग, विरगी ।

विरच—स स्त्री.—१ एक षोडश का नाम ।

उ०—तठा उपराति करि न राजान मिलापति गोळी, चूरण, आसण कवळ, कुटी, नागामिणी विरच, मुफर, तावेमर, मदा कांमेमर, जिता मारिआ घोसघ केरीजें छे । —रा. मा. स

२ देवी 'विरचि' (रु. भे) (दि नां मा.)

उ०—१ बांचे नत्रवेद विरच वमांण, प्रकासे व्याम अठार पुरांण । वप्री हुज वस गया मुद्र पोज, हुती ज हुती ज हुती ज हुती ज । —ह र.

उ०—२ महा मनोहर महल छवि, अति ऊचा भावास । रतन-जटत राजत अधिक, तहा विरच निवास । —गज उद्धार

उ०—३ श्रमी पुरी विरच की, का पं वरणी जाय । मत परवांण वराणिये, अपणें अपणें भाय । —गज-उद्धार

उ०—४ जमी सहाया नागेंद्र लोक उपाया विरच जांणें, धूरजटी तावां ऊच माया मेर धोग । आवा लोम रिमी रोम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सामवेद वेदागा धीरावी संभू सींग ।

—हुकमीचद लिडियो

विरचनाय—देखो 'विरचि' (रु. भे.)

विरचसुत—देखो 'विरचिसुत' (रु. भे.)

विरचि—स पु [स विरच विरचि] ब्रह्मा का नाम, विधाता ।

उ०—सकनकूर साखात सराहें सहचरी, काम विरचि विमास क स्त्री हय सू करी । जेहरि धूधरमाळ पगा भुणकें जिया, कुंज वारिज पुंज वचा कठहसिया । —बा. दा.

रु. भे—विरच, विरचनाय, विरचि, विरचिय, विरची, वरच, विरच, विरचनाय, विरचिनाय, विरज, विरजी ।

विरचिनाय देखो 'विरचि' (रु. भे.)

विरचिसुत—स पु [म विरचि-सुत] ब्रह्मा के पुत्र, नारद का एक नाम ।

रु. भे.—विरचसुत ।

विरज, विरजी—स पु.—१ चावल के साथ बनाया जाने वाला मास विशेष ।

उ०—तठा उपरायत सीरो-पूडी वर्ण छे । सोहिते सार देवजीभि जोयजें छे । विरजें सार चोखा मगायजें छे । पुलाव सार कमोद वीणजें छे । काठां गोहुवा री आटी मंगायाजें छे । सू नाळेर-गरा गोळवा रोटा वणायजें छे । —रा सा स.

२ चावल का बनाया जाने वाला, मोठा व्यजन विशेष ।

३ देखो 'विरचि' (रू भे) (ना. मा)

विरंडी—१ देखो 'ब्राडी' (रू भे)

२ देखो 'भिंडी' (रू भे)

विरउ—वि —हल्का, तुच्छ ।

उ०—अम्हे किसा छा ? मिच्छन्नास मिध्यात्वनउ सस्कार तिण्णि करी निक्कस्ट विरउ भाव तेहतउ गलिउ गुरु गुरुउ विवेक तत्वात-त्वविचार जेहनउ छइ । —पष्ठीशतक

विरक—स पु, [स वृक] भेडिया ।

उ०—सीकोतरि सक्कणी,प्रेत डक्कणी अपारा । विवध भूत वेताळ, वीर पळवर विसतारा । गिरघ चील गोमायु, विरक जवू रसवाया । काक कक की गिरुँ, आस पळ समळ आया । —रा रू.

रू. भे —वरक ।

विरकत—देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—१ नदी ताळ जहा नही जहा वापी सर कुवा । सबही उजड देस देख मन विरकत हुवा । —डूलची जोइयै री वारता

उ०—२ असे नटवा वास चढि, उलटा खेलें दाव । जनहरीया युं जगत में विरकत भेलें पाव । —अनुभववाणी

उ०—३ रीती देख न विरचियै, भरी न धरीयै चित्त । हरीया रीती अर भरी, दोळ सु विरकत । —अनुभववाणी

उ०—४ वैरागी विरकत भली, जुग सु न्यारा मन । हरीया गिरही सो भली, सब सु दासा तन । —अनुभववाणी

उ०—५ हरीया हिरमच लायकं, बँठे विरकत होय । विरकत सोई जाणियै, विलें विरता सोय । —अनुभववाणी

विरकख—देखो 'व्रक्ष' (रू. भे)

उ०—नमो ह्यग्रीव निगम्म निखात, बडा कवि अह्मा वदें बड रमात । नमो प्रथु राजा आदि पुरुक्ख, नमो वर लच्छि परम्म विरकख । —ह र.

विरक्त—स पु [स] १ रामस्नेही साधुओं का एक भेद विशेष, जिसके साधु नगे वदन, नगे शिर और नगे पाव रहते हैं । (मा म)

२ केवल ताल देने के काम आने वाले वाजे ।

वि [स] १ अत्यन्त लाल, गहरा लाल ।

२ सासारिक प्रपचो आदि से दूर रहने वाला, सासारिक बन्धनों से मुक्त ।

३ उत्तेजनायुक्त, उत्तेजित ।

४ भोग विलास से दूर रहने वाला, जिसे कामवासना न हो ।

५ बदले हुए रंग का, बद-रंग ।

६ अनुराग या आसक्ति रहित ।

७ कर्मानुष्ठान के फल की आशा न रखने वाला, त्यागी ।

उ०—१ मिध्याद्रुष्टि तरणी उत्थापक, व्यक्त गुणै सुविलासी । वलि विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी । —वि कु.

उ०—२ पण राजा को दान लेऊ नहीं विरक्त नृ त्रण वरावर छो । —पचदडी री वारता

८ खिन्न, उदासीन ।

रू भे.—विरकत, विरक्त, विरगत, विरकत, विरगत, विरत, विरता, विरत्त, विरिक्त, विरिक्त, विरित ।

विरक्तता, विरक्ति—स. स्त्री, [स] १ उत्तेजना ।

२ खिन्नता, उदासीनता ।

३ अनुराग या आसक्ति का अभाव, विमुक्तता ।

४ भोग विलास आदि से परे रहने की अवस्था या भाव ।

रू. भे —विरगता, विरगति विरता, विरति, विरती, विरत्ति, विरत्ती ।

विरख—देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०—१ तरवर सदा पुराणा पाता, थाया नवा पखें विण थात । सब जाणग सु विरख नव सहसी, पूजें नवा पुराणा पात ।

—हरीराम ऊहड गी गीत

उ०—२ वट तमाल पीपल विरख, अरुजन समी अपार । ईड तर्जे पत्र एक री, सुगन पाचेइ सार । —रा रू.

उ०—३ विना पेड जाह विरख है, विन फूला फळ लाय । विना पल जाह भवर है, अघर विलवै भाय । —अनुभववाणी

उ०—४ हरीया चदण वावनी, वाकें पासि विरख । सोई चदण दूमरा, कीया आप सिरख । —अनुभववाणी

विरखभाग, विरखभांण, विरखभान, विरखभानु—देखो 'असभानु' (रू भे)

उ०—मेरै गोपाळजी कूं रोटी बनाय देऊ, एक छोटी दूजी मोटी । मेरै गोपाळजी का ब्याह करू गी, विरखभान की वेटी । —मीरा

विरखा—देखो 'वरसा' (रू भे)

उ०—१ किसन सिर फूल विरखा करे, अमर तमासै आइया । निहग घरि वीच मावै नही, सुरै विवाण सवाहिया । —पी ग्र.

उ०—२ रुड मुड सै खड, गुडै गज माणकडडह । अगनि बाण आरिक्ख, वीज विरखा ब्रह्मडह । —गु रू व.

उ०—३ विना नीर जाह कवळ है, विन विरखा वरसाळ । विना मास जाह खत है, मात पिता विन वाळ । —अनुभववाणी

उ०—४ उलटिया पेम चहु और विरखा लगी, गिगन घनघोर विन इद गाजै । खळकिया नीर तन तठ नाडा भरघा, ब्रह्म परफूळ खट कवल छाजै ।

—अनुभववाणी

उ०—५ रसीद भाई कहाँ—जद ती बाभा थें घणा फोडा भुग-
तिया अँडी ठाँव्हेती तो म्हें सफायाने गाडी लियाती । घणी ई
वाट जोई । सेवट विरखा देखने रवाना व्हेणी ई पडथो ।

—फुलवाडी

विरलाकरणा—देखो 'विरलाकरणा' (रू भे)

विरगत—देखो 'विरगत' (रू भे)

विरगता, विरगति—देखो 'विरगतता, विरक्ति' (रू भे.)

विरगरावणो, विरगरावणो—कि म —दीनता दिखाते हुए दीन वचन
बोलना; गिडगिडाना ।

उ०—ऊजळो सुभाय, चडूड चल्ली, गाव री वेटी पण मगळा सूं
गूघटो पल्ली । सूधी गळ रा ऊपरला दात । विरगरावतो सी बोले
लीलडी सी काढे । कीसू ही खेडे नी आखे मिनखा ने हस'र दात
दिखाळ । —दसदोख

विरगरावणहार, हारो (हारो), विरगरावणियो—वि० ।

विरगरावियोडो, विरगरावियोडो, विरगरावियोडो—भू० का० कृ० ।

विरगरावियोडो, विरगरावियोडो—भाव वा० ।

विरगरावियोडो—दीन वचन बोला हुमा, गिडगिडाय हुमा ।

(स्त्री विरगरावियोडो)

विरडक—स पु —१ वाधा, विघ्न, रोक, रुकावट ।

२ कुएं से पानी खींचने मे कोई रोक ।

विरडणी, विरडवो—कि. अ —१ घुसना, घसना ।

उ०—विरड ऊरड मुरड वड वड हूर हड हड रभ हड हड, बीजट
ओभड कघ वड वड दडड रतपड मुंड दड दड । —जगो खिडियो

२ कुपित होना, क्रोधित होना ।

उ०—वारण विरडियो दरवार विचाळ, फायरा हुई करारी ।
'वाघा' हरे आगरै वाई, कुंवरपण कटारी ।

—रनसिंह राठोड रो गीत

३ लहना, भगडना ।

४ राजसत्ता के विरुद्ध होना, विद्रोही होना ।

उ०—कवर विरडियो मुरड अमराव फिरिया सको, अँरसी वार
बिलमी बणी आण । पाट चीत्तीड रो हुवो ऊथळपथळ, 'दुरग' नूं
सिमरियो तई दीवाण । —दुरगादास आसकरणीत रो गीत

विरडणहार, हारो (हारो), विरडणियो—वि०— ।

विरडियोडो, विरडियोडो, विरडियोडो—भू० का० कृ० ।

विरडियोडो विरडियोडो—भाव वा० ।

विरडियो, विरडवो—रू भे. ।

विरडियोडो—भू का. कृ —१ घुसा हुमा, घसा हुमा २ कुपित हुवा

हुमा, क्रोधित हुवा हुमा. ३ लडा हुमा, भगडा हुमा । ४ राज-
सत्ता के विरुद्ध हुवा हुमा, विद्रोही हुवा हुमा ।

(स्त्री विरडियोडो)

विरचणो, विरचयो—कि अ —१ पलटना, बदलना, विमुख होना ।

उ०—१ स्वारथ नी सगाइया, जोइजी इण मसार । किरा विधि
विरचें सू, कत सू 'सुरिकंता' नार । —जयवाणी

उ०—२ साजनिया ससार, जे कीजे ती जोइन । नेह निवहणहार,
'जसा' न विरचें जीवता । —जसराज

उ०—३ करे वणिक कुल कसव कर, हित मांहे वित हाण । बगिक
दगो दे विरचियो, उर इधरज मत आण । —दा दा.

उ०—पासी 'बोका ! पाट, करनादे श्रीमुख कहाँ । थारो रहसी
थाट, म्हारा सू विरचें मती । —अग्यात

२ पीछे हटना ।

उ०—हगीया अँसा ह्य रही, परवत कैसे भाय । घका घूंम केता
सहे, विरच कबु नहीं जाय । —अनुभववाणी

३ विरुद्ध होना, प्रतिकूल होना ।

उ०—कुळ ऊच मईजन मेम कियो दिल चेतन सूघ विखें न
दियो । त्रजडी धकघूण तकी तरछी, बुरचीतोय देवळ ना बिरची ।

—पा. प्र.

४ क्रुद्ध होना, कुपित होना ।

उ०—१ भेटण परजापत जिगन मद्, भव हुकम विरचियो वीर-
भद् । जुरसिध भोम तजि वाहुजुद्ध, किर सेन वधि जूटा सकुद्ध ।

—रा. क.

उ०—२ विरचि राव सत्रसाळ 'श्रीरम' पडे वाथिया, जाथिया अन-
चळें बदन जरदे । राळियो साथिया लोक त्रय लोक रे, हेम रो
हाथिया वीच हरदे । —हरदेनारायण हाडा रो गीत

५ रचना, बनाना ।

उ०—ततखिरा तिहा मिलिया चलियासण सुर कोडि, प्रभुना पद
पकज प्रणमइ वेकर जोडि । वेकर जोडी मछर छोडी समवसरण
विरचति, माणिक हेम रूप मय त्रिगड छत्र त्रय भलकति ।

—स कु

६ आयोजन करना, मनाना ।

७ विरक्त होना, उदासीन होना ।

उ०—रीती देख न विरचोयें, भरी न घरीयें चित । हरीया रीती
अर भरी, दोळ सू विरकत । —अनुभववाणी

८ कम होना, घटना ।

उ०—माया खरची खूब है, जो कुछ खरची जाय । हरीया खरचत
खावता, विरच कबु नहीं जाय । —अनुभववाणी

६ त्यागना, छोड़ना ।

उ०—साजन अंसा कीजिये, जामें लखण बतीस । भीड पड्या
विरचें नही, सीस करे वगसीस । —अग्यात

१० घोखा देना, छलना ।

उ०—म्याराजी, विरचौ मती, प्याराजी कर प्रीत । न्याराजी
रहता नमख, यो वैराजी चीत । —मयाराम दरजी री वात

विरचणहार, हारो (हारी), विरचणियो—वि० ।

विरचिओडो, विरचियोडो, विरच्योडो—भू० का० कृ० ।

विरचीजणो, विरचीजवो—भाव वा० ।

विरचणी, विरचवो विरचणी विरचवो विरचणी, विरचवो
वरचणी, वरचवो, वरचणी, वरचवो, वरचणी, वरचवो

—रू० भे० ।

विरचयिता—वि [स] बनाने वाला, रचना करने वाला ।

रू भे —विरचयिता ।

विरचित—वि [स] रचित, निर्मित ।

विरचयिता—देखो 'विरचयिता' (रू भे.)

विरचियोडो—भू का कृ—१ पलटा हुआ, बदला हुआ विमुख हवा
हुआ २ पीछे हटा हुआ ३ विरुद्ध हवा हुआ, प्रतिकूल हवा
हुआ ४ कद्र हवा हुआ कृपित हवा हुआ ५ रचा हुआ,
बनाया हुआ ६ आयोजन किया हुआ, बनाया हुआ. ७ विरक्त
हुवा हुआ, उदासीन हवा हुआ ८ कम हवा हुआ, घटा हुआ,
९ त्याग हुआ छोड़ा हुआ १० घोखा दिया हुआ, छला
हुआ ।

(स्त्री विरचियोडो)

विरछ—देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

उ०—१ विरछां लुंवी बेलियां, फूलीफली फवेह । सीतल छाह
सुहावणी, दिशियर किरण दवेह । —र हमीर

उ०—२ सेली पवित्रा सीम, किता रेसम सुवरगी । फल बयारी
रो भगी, खवा दोनू उपरणी । चौसर चौघड ग्य वरी फूला रो
गहणी, । विरछ वसत रो वरी, निजर तिरछी सू वहरणी ।

—अरजुणजी बारहठ

उ०—३ सीस सरग सातमे परग सातमे पयाळ । अरणाव सात
उदर, विरछ रोमाच विचाळ । —र. रू

उ०—४ विरछा बेला पर चढणो बुधि चाही, उर में अलबेलां
बेलाण सुध आई । आणा लेवण नै अँधूळा आया, दरसण देवण
नै मोभी मुळकाया । —ऊ का.

विरछो—स पु —बबूल की फली ।

विरज—स पु [स विरज] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

२ शिव, महादेव ।

३ वीर्य बीज ।

४ सार्वणि मनु के एक पुत्र का नाम ।

५ सार्वणि मन्वन्तर का एक देवगण ।

६ त्वष्ट एव विरोचना के पुत्रो मे एक एक पुत्र राजा, जो विशुचि
का पति और शतजित् का पिता था ।

७ पूणिमत राजा का एक पुत्र ।

[स विरजस्] ८ भगवान् नारायण का एक मानसपुत्र, जो कीर्ति-
मत का पिता था ।

९ शिवावतार का एक शिष्य ।

१० वसिष्ठ एव ऊर्जा के सात पुत्रो मे से एक पुत्र ऋषि ।

११ कश्यप एव कद्रू के पुत्रो मे से एक नाग पुत्र ।

१२ घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

१३ वारुणि कवि ऋषि के आठ पुत्रो में से एक पुत्र, प्रजापति ।

१४ कला (कदम प्रजापति की पुत्री) एव मरीचि महर्षि पूणिमा
नामक पुत्र का पहला पुत्र । दूसरे पुत्र का नाम विश्वग था ।

वि.—१ जिसका रजोधर्म बन्द हो गया हो । (स्त्री)

२ धूल, गर्द से रहित, निर्मल, स्वच्छ ।

३ सुखवासना से मुक्त, अनुराग रहित ।

विरजमडल—देखो 'व्रजमडल' (रू भे)

विरजस्क—स पु. [स] सार्वणिमनु के एक पुत्र का नाम ।

विरजा—स पु [स वीर्य+ज] १ पिता । (ह. ना. मा.)

२ घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

३ वीसवें कल्प में उत्पन्न श्री ब्रह्मा का रक्त नामक एक मानस
पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ वसिष्ठ एव ऊर्जा के आठ पुत्रो मे से एक ।

६ भगवान् नारायण का एक पुत्र ।

स स्त्री —७ शुभ्र पुत्र ऋक्ष वानर की पत्नी जो विरजस् नामक
प्रजापति की कन्या थी ।

वि वि —बाली एव सुग्रीव कमश इन्द्र व सूर्य से इसे पुत्र प्राप्त
हुए थे ।

८ श्रीकृष्ण की एक प्रिय सखी जो राधा के भय के कारण नदी
बन गई । कही २ पर राधा के शाप से भी इसका नदी बनना
स्वीकार्य है ।

९ नहुष की पत्नी एव ययाति की माता, जो सुस्वधा पितरो की
कन्या जी ।

१० अदितिपुत्र महोत्कट का वेशधारी श्रीगणेशजी का भक्षण

करने वाली राक्षसी, जिसका उदर विदीर्ण कर श्रीगणेशजी बाहर आ गये थे ।

विरजाक्ष-स पु [स.] मेरु पर्वत के पास उत्तर मे स्थित एक पर्वत ।

विरजाक्षेत्र, विरजाक्षेत, विरजाक्षेत्र-स पु [स विरजाक्षेत्र] उड़ीसा मे जाजपुर के पास माना जाने वाला एक पवित्र तीर्थ ।

विरजामित्र-स पु [स विरजस+मित्र] वसिष्ठ के पुत्र विरजस् का नामान्तर ।

विरडणी, विरडवी—देखो 'विरडणी, विरडवी' (रू भे)

उ०—१ बलि भरियो विरडियो, खुरम माभी गहवतो । अंह चढे चख त्रिडे, रोस हूँ मुंह हृद रातो । —गु रू व

उ०—२ ब्राह्मण पूतळी देखि न मन में विचारियो । आगले सायिये पूतळी तयार कीवी । हिवै स्त्रीपरमेस्वर रो भजन करू ज्युं जीव पडे । ताहरा पूतळी फिरण लागी । तद उवै च्यारै ही विरडियो । ऊ कहै म्हारी बाइर, ऊ कहै म्हारी बाइर ।

—चौबोली

उ०—३ हूकळ पोळ विरडियो हाथी, नीछट भीळ निराळी । 'रतन' पहाड तणै सिर रोपी, धूहडियै धाराळी ।

—रतनसिंह राठीड रो गीत

विरडणहार, हारी (हारी), विरडणियो—वि० ।

विरडियोडो, विरडियोडो, विरडियोडो—भू० का० क० ।

विरडोजणी, विरडोजवी—भाव वा० ।

विरडियोडो—देयो 'विरडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विरडियोडो)

विरणियो-वि.—धीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—घाव घण थटा अत पिसण दळ घालणो, पाच सै पाखरचा हेकलो पालणो । राव जसवत सो राखिया विरणिया, हाक वागो त कूदिगा हिरणिया । —हा भा

विरतत, विरतति—देखो 'व्रतात' (रू भे)

उ०—१ डोलइ मनि आरति हुई, साभळि ए विरतत । जे दिन मारू विए गया, दई न ग्यान गिरात । —दो मा.

उ०—२ ताहरा राणी पुछियो-जु महाराज, कुण वास्तं हसीया । राजा नटियो । राणी बहुत गाढ करि पूछण लागी । जु महाराज, मोनु हमीया रो विरतत कहीजे । —चौबोली

उ०—३ हिव विरतन सुणी सहू, आदरवत अचुक । सेठ तिहा ठगनी परे, पडियो पाडे कूक । —वि कृ.

उ०—४ पूछयो भूवै कुण परदेसी, इण ठामे यथुं आयो । तिए आरणा घर देव नियानी, सहू विरतत सुणायो । —ध व. अ

उ०—५ तेहनं कही निमित्तिये जी, बाल परणै निमत । जणसी पुत्र मुवा थका जी, करम तणै विरतत । —जयवाणी

विरत-स पु—१ भूठ, असत्य । (अ. मा)

२ यति, विश्राम । (पिंगल शास्त्र)

३ देखो 'व्रती' (रू. भे)

उ०—१ हूम-डल्ला कीरत गावै, मगता-भिलारी विरत चावै कोइयो, कोइयो आयो चाद रै चानणी मे बुहार भाड'र खायगा, लेग्या अर केई मागता ही गया । —दसदोख

उ०—२ स्रवण वयण सभळै, नयण विळकुळै निरमळ, जोत वदन भळहळै, लाज भुणि भळै स उज्जळ । सूर विरत सल्लळै, ज्वाल भळहळै फुणधर । कना प्रळकृति करण, किरण परजळै दिणकर । —रा रू.

५ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—१ वूढा तै किम बाल कहीजइ, विरत नही जाणउ कोई । एक रुपइयउ खोटठ बाध्यउ, दोडघउ करैय दगाई रे । —स कु

उ०—२ रात्रि भोजन करता थका ए, मन मानै खाय कै । विरत काई नही ए, मरने दुरगति जाय कै । —जयवाणी

६ देखो 'व्रत' (रू भे)

रू भे.—विरत, वरत ।

विरतात—देखो 'व्रतात' (रू भे)

उ०—१ सोना ना दीठा दात रे, जाणवउ पूरव विरतात रे । अणसण लीधउ एकात रे, बाधण पण थइ उपसात रे ।

—स कु.

उ०—२ राजा स्यामसुदर सारी विरतात दीठी । उवै उडीया पछै आ बोली, 'हिमें त्वबरि पडी ? ताहरा राजा कही 'खबरि पडी ।' फेरि कहण लागी, 'सवारै ऐ आविसी' ।

—स्यामसुंदर रो वारता

उ०—३ झाली नु कही ओ कासु विरतात ? तद झाली डर मा री वात सागो खीवसीजी नुं कहि दीवी—जिए तरै मा कामण कराया, इण नदी मे नाखिया, सो सरव मालम कीवी ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ कुंवरसी रथ सु उतर घोडे असवार हुवो । घोडे नुं गजदा सुवाई, सो हाथ चाळीस-पचास उपर जाय खडो । वरछी सिलार छै, सो खरल सारा देखता रूहा—जो ओ कासु विरतात ? कुण छै ?' —कुंवरसी साखला री वारता

विरता—१ देखो 'विरक्त' (रू भे)

उ०—भील ही भगत थारै भला, कैयै नां मोजा करे । हमां सत कूकि विरता हुयै, येरै काजि अवतरै । —पी अ.

२ देखो 'विरक्ता' (रू. भे)

उ०—१ हरीया हिरमच लायकै, वैठे विरक्त होय । विरक्त

सोई जाणियै, विखै विरता सोय । —अनुभववाणी
 उ०—२ ऊपनु केवलनागु सामीय ए नेमि जिणैसरह ए, सामली
 सामि वखाणु विरता ए सावयवतु घरइ ए । —सालिभद्र सूरि
 विरति, विरती—स स्त्री. [स विरति] १ अन्तिम अवस्था, अवसान,
 समाप्ति ।
 उ०—अवै त्वरथी अरथी बकत नह व्यरथी अति यही, अयोनी
 योनी की विरति चित होनी रचि यही । —ऊ का
 २ अन्तिम छौर, शिरा ।
 ३ देखो 'विरक्ति' (रू भे)
 उ०—१ विरति नही नही आखडी, नही पोही सो नही आदरी
 दोख । तै पिणु खेणु करायनै, तै कीचो हो स्वामी घाप सरीख ।
 —वृ स्त
 उ०—२ केइ उपाय करी भेलण करू, परिग्रह विविध प्रकार ।
 विरति करु पिणु मन न रहै वलि, तो किम हुवै भव पार (निस्तार)
 —घ व ग
 ४ देखो 'व्रति' (रू भे)
 उ०—नयतै निय सेन तणी नागद्रह, भारत भू भड विरती भीर ।
 पग किम रावत परठै पाछा, जडिया परिया तणा जजीर ।
 —रावत रत्नसिंह सिसोदिया री गीत
 वि —५ क्रोधपूर्ण ।
 उ०—जोधपुरी जुष जोपवा, गढ लेवा 'गजसाह' । विरती कोडी
 विळकुळ, रीसाणो रिमराह । —गु रू व
 विरतीचक्ष, विरतीचक्षु, विरतीचख—स पु —मत्री । (डि. ना मा)
 वि [स विरत्त—चक्षु] लाल आखो चाला, क्रोधपूर्ण आखो
 वाला ।
 विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी—
 देखो 'व्रतेस्वरी' (रू भे)
 विरती—देखो 'विरत्ती' (रू भे)
 उ०—घर भे मत खा फिरतो घिरतो, न कहै मरम बोलीजै
 निरती । तारु सुँ मत तोडै तिरती वडा रै काम म थाए विरती ।
 —घ. व ग.
 विरत्त—१ देखो 'विरक्त' (रू भे)
 उ०—एक एक मुनिवर एहवाजी, सूत्र में कहियै निरत्त । सकल्प
 आथमिया पछे जी, उगिया पछे विरत्त । —जयवाणी
 २ देखो 'व्रति' (रू भे.)
 विरत्तणी, विरत्तबी—क्रि अ —१ क्रुपित होना, क्रुद्ध होना ।
 उ०—दिल्ली साह विरत्ती, रण अग्राघ जम्मण उपकठे । रैणायर'
 रण मडै, गो दीवाण राम खळ खडै —रा रू

२ पीडित होना, दु खी होना ।

३ उदासीन, होना, खिन्नचित्त होना ।

उ०—'ईंदी परव परव भाभाळी, भोज सुतन अनसाह भुजाळी ।
 जैत सुजाव जोत जगपत्ती, वर्ध खीज किर वीज विरत्ती ।

—रा. रू.

विरत्तणहार, हारो (हारी), विरत्तणियो—वि० ।

विरत्तिओडो, विरत्तियोडो, विरत्स्योडो—भू० का० कृ० ।

विरत्तीजणो, विरत्तीजवो—भाव वा० ।

विरत्ति—देखो 'विरक्ति' (रू भे)

२ देखो 'व्रति' (रू. भे)

३ देखो 'वीरता' (रू भे.)

उ०—जं कहै ती कीरत्ति, त्या वर्ध वसुं विरत्ति । निवाज सु रथनि
 पत्ति, अस गज दिया पुरघर अत्ति । —मा वचनिका

विरत्तियोडो—भू. का कृ —१ क्रुद्ध हुवा हुआ, क्रुपित हुवा हुआ
 २ कष्टमय हुवा हुआ, पीडित हुवा हुआ, दु'खी हुवा हुआ ३
 उदासीन हुवा हुआ, खिन्नचित्त हुवा हुआ ।
 (स्त्री विरत्तियोडी)

विरत्ती—१ देखो 'विरक्ति' (रू भे)

२ देखो व्रति' (रू भे)

३ देखो 'वीरता' (रू भे)

विरत्ती—वि. [स विरक्त] (स्त्री विरत्ती) १ कष्टमय, पीडित, दुखी ।

उ०—चडि वेगो चक्र घरि, करे काई डील करता । गळी वडै गाय
 री, वळै ब्राह्मण विरत्ता । —पी ग.
 २ क्रोधयुक्त, क्रुद्ध, क्रुपित ।

उ०—१ "गजवधी" सीह विरत्ता, दखणी दळ भाजि विगूता ।
 वालापुर महिक्कर छोडै, दखणी दळ भागा होडै । —गु रू व

उ०—२ साह विरत्ती मारवा, ग्राह जही गज वार । जठे सुदरसन
 चक्र ज्या, रिणमलना पणघार । —रा रू

उ०—३ वस वखारुं भल्लणो, चहुवारुं 'चुतरेस' । रत्ती साहा जग
 कज, जाण विरत्ती सेस । —रा रू

उ०—४ जोस भुजा दखवै रोस वीरा रस रत्ती । गजराजा ऊपरा
 जाणि अग्राज विरत्ती । —रा रू

उ०—५ विरत्ती वेप न काइ विमास, विडेवा राउ खडै वरहास ।
 खुरा रवि फीण उमटडयो खाणि लगोडै लागै लाल लगाणि ।

—राव जैतसी री रासो

३ उदासीन, खिन्नचित्त ।

रू भे—विरती, विरत्त, विरत्ती, विरत्त्य, विरत्थी, विरथी ।

विरथ-वि. [स] १ विना रथ का या रथ से गिरा हुआ ।

२ नृपजय के पुत्र बहुरथ का नाम ।

३ देखो 'व्यरथ' (रू भे)

रू. भे —विरथ ।

विरथा—देखो 'व्रथा' (रू. भे)

उ०—पदमग्न बोली पीवता, विरथा कीदी वाद । छकिया मद री
छाक री, समजि नही सवाद । हरथ जलाली चित हुवे, पीदा
प्याली नेम । पीव विलाली पिलग परि, बाली लाग वेस । —पना

विरद—१ देखो 'विदद' (रू भे)

२ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—१ दल्ल-थभ तुभ दुवारि भुंभारि घबल्ल तणा, घणा विरदा
लहण आविया अरि घणा । घणा नीदाळवा नीद वारी घणी,
तूंग नह छे भली हीस घोडा तणी । —हा भा.

उ०—२ ऐराफ छाक दुरबल आघार, पावणा हूत सामा पघार ।
अति विरद बहादर तव अतूज, सरवार बहादुर विरद तूज ।

—वि स

उ०—३ पाछे ये ही नाहरू का नाहर दरसावे, 'भीमाजळ' हाथू
रुधनाथ सा कहावे । जादम 'किसोर' महेसदास का जाया, महेस
के ककण सा विरद जिण पाया । —रा रू.

उ०—४ उभे फात्रिया विरद 'जसराज' खगि ऊजळा, भुजा मारथ
दिली भार भळियो । वाळियो आक 'शौरग' सरिस वाजतै, वळै
ही मुरडतै आक-वळियो । —नरहरदास बारहठ

उ०—५ गढ वरियावर विरद अघागा, वरियावर कमघज इम
वागा । बारमी सुत पूज महाबळ, कपासिधु जिण नाम अणकळ ।

—सू प्र

विरदघण, विरदभल्ल, विरदभल्लू-वि —१ विरुदघारी, यशस्वी ।

उ०—यह कामतया जी हुकम सहकार रवाना होय, अवर जने-
तिया जी साजत कीजियो सहकोय । सहकोय साजत करी सुभडा
विरदभल्ल वरियाम, कुळ जनक कुमरी व्याह करसी रिधू वरमी
रांम । —र रू

२ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—आय हुई सब एकठी, कथ जेम कहाणी, विरदभल्लू जगमाल
री, कमरा कमवांणी । वेली वापूकारनै, कथ ऐम कहाणी, ऐ
तीजणिया स ऐकठी, आई आवाणी । —वी मा.

रू. भे —विरदघण, विरदभल्ल, विरदभल्लू विरदाभली, विरदाभल्ल,
विरदाभल्लो ।

विरदघार, विरदघारी, विरदघारू—देखो 'विरुदघारी' (रू भे)

उ०—१ लग अरद कूप मज तूटिये लाव, आ घात सुणत उन

छूटिये आव । कर बूब तिन कीनी पुकार, घाइयो मा करनल
विरदघार । —रामदान लाळस ।

उ०—२ गाव दुधोड हुवी राव झीरिडमलजी रे पुत्र वेरोजी
हुवा, वेराजी रे पुत्र रामदासजी हुवा । गाव दुधोड रे खेडे थापना
कीनी । वडी एक आखाढसिध रजपूत हुवी । विरदघारी रजपूत
हुवी । —रा. सा स.

विरदपगार-वि [स. विरुद+रा. प्र पगार=रक्षक] विरुद की रजा
करने वाला, यशस्वी ।

उ०—जिम रावण भुंभार, कमघज रामाइण करै । 'पाल' तणी वाहा
प्रळ व, पडिधी विरदपगार । —र. वचनिका

विरदपत, विरदपति, विरदपती—देखो 'विरुदपति' (रू भे)

उ०—१ 'पती' 'जगा' री विरदपत, 'वीरम' री 'जैमाल' । केल
पुरी कमघज दुह, हुआ चीत गढ ढाल । —बा दा

उ०—२ पुडरीक नभ पाटि विरदपति, सुज पुत्र खेमघन्व वायक
सति । देवानीक तास पुत्र दीपत, सुर दातार अनीक तास सुत ।

—सू प्र.

विरदाभली—देखो 'विरदभल्ल' (रू भे)

विरदाणी-वि —विरुदघारी, यशस्वी ।

विरदाई—देखो 'वरदाई' (रू भे.)

विरदाभल्ल, विरदाभली—देखो 'विरदभल्ल' (रू भे)

विरदाणी, विरदाबी—देखो 'विरुदाणी, विरुदावी' (रू. भे)

उ०—१ भड थका अवर न भाये भूपत, कवि विरदाये वीहोत
कथ । काढे कुण तो विन 'केहरिया', रावत कवि खूचियो रथ ।

—चतुरभुज बारहठ

उ०—२ चोपड रमता इसा समाचार मीया रे नै महेची रे हुवा ।
तरे महेची चारण घर री बुलायने रामदासजी रे कने मेलियो नै
कयो, इसी तरे-विरदायने कहेजी वाइ लाहु रे मीया बुढण रे चोपड
रमता इसी बतळावण हुइ छे, सी जाणसु । —रा सा स

विरदाणहार, हारी (हारी), विरदाणियो—वि० ।

विरदायोडो—भू० का० कृ० ।

विरदाईजणो, विरदाईजवो—कर्म वा० ।

विरदाधिप, विरदाधिपत, विरदाधिपति, विरदाधिपती—देगो 'विरुद-
पति' ।

उ०—हसी राघव वळ हाथ, ग्राह तणे माये दियो । सदा रहो निज
साथ, तार लियो विरदाधिपत । —गजउद्वार

विरदायक—१ देखो 'वरदायक' (रू भे)

उ०—घानख मुख जिंक रसण गुण धारणा, पाण बचन तीखा

अप्रमाण । रामकरण महङ्ग रा रूपक, विरदायक अरजुण रा बाण ।
—रामकरण महङ्गू रो गीत

२ देखो 'विरदायक' (रू भे)

उ०—नायका पाठडा हूत आवँ नही, लायका छदा री अतर लाहा ।
कोइक विरदायका माय जाणँ सुकव, वायका सायका तणी वाहा ।

—नवलजी लालस

विरदायोडो—देखो 'विरदायोडो' (रू भे)

(स्त्री विरदायोडो)

विरदाळ, विरदाळी—देखो 'विरदाळी' (रू भे)

उ०—१ भगतवच्छल विरदाळ तुम, जानू दीन्ही खोय । मी बाहर
घावी नही बैठ रहै चुप होय । —गजउद्वार

उ०—२ सूरिजि चद्रमा मारिखा, बैठ छै विरदाळ । खेतपाळ
हणमत खरा, कोटवाळ किरणाळ । —पी ग्र

उ०—३ वै भाई विरदाळ, औरगसाहि मुराद वै । हैवंपति भेळा
हुआ, जुध मडण जमजाळ । —र वचनिका

उ०—४ फँल क्रोध चसमा कराळा आग भाळा फुणा, ताळा दे
भूजाळा त्यू गुपाळा तीरवान । विरदाळा सिधाळा अडाळा जोध
चाळावध, जुटा विहु काळा नै विचाळा जोरवान । —र ज प्र

उ०—५ विहु कूरमा साथ विरदाळा, जोध हजार वीस जरदाळा ।
विहू रावळ गहलोत भाण तड, भीम हठी उग्रमेन महाभड ।

—सू प्र

उ०—६ पाघ तिहारा पाव मँ, रिडमल आ भट राळी । कियो
छत्रपति रक नै, दियो राज विरदाळी । —हिगाळाजदान वारहठ
(स्त्री विरदाळी)

विरदावणो, विरदावणो—देखो 'विरदावणो, विरदावो' (रू भे)

उ०—१ ईहगा घणो विरदावियो, मारू भ्रमलीमाण नू । आपरी
करे दीधो उतन, तरं राव सुरताण नू । —सू प्र.

उ०—२ जो घण दीहो सागडी, हूँ विरदावणहार । सीगाळी बळ
सौगुणो, जाणावँ जिण वार । —वा दा

उ०—३ धूँणँ सिर पकडँ घरा, असह सहे जँ आर । वोहूँजिया
विरदाविया, गरज सरँ नह तार । —वा दा

उ०—४ रात्र रँ हाथ लाहोरो कवाण री छँ । वडी खपरिया रा
तीर च्यार ती मूठ मे छँ और तरकस दोय होदा मे छँ । राव राज-
पूता नूँ विरदावँ छँ, ललकारँ छँ, सो घोडा रा सवार हाथी सू
पावडा वीस तीस अगल वगल ऊमा छँ । —डाढाळा सूँ री बात

उ०—५ रट्टीड रूप राए दीनी, सुरताण नाम दळधभण । हिदुवै
मुसळमाणो, विरदावियँ जोध विरदँता । —गु रू व

विरदावणहार, हारो (हारो), विरदावणियो—वि० ।

विरदाविओडो, विरदावियोडो, विरदाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विरदावोजणो, विरदावोजवो—कर्म वा० ।

विरदावळी—देखो 'विरदाळी' (रू भे)

विरदावियोडो—देखो 'विरदायोडो' (रू भे)

(स्त्री विरदावियोडो)

विरदू—देखो 'विरद' (रू भे)

उ०—दानार सूरू राजू का पुत्र जैसे प्यारँ । सूँवँ कायर राजूँ की
विख जैसे खारँ । राजसभा के भूखण दिल कै उदार । विरदूँ कै
भारँ समसेर बहादरू कै समसेरू के चितारँ । —सू. प्र.

विरदेत—देखो 'विरदँत' (रू भे)

उ०—दिपँ चढ भूपत ताम दुवाह, रिडम्मल ताम चढँ अरिणाह ।
'बुधो' चढ ताम दळी विरदेत, 'सरूप' चढँ अरि भाज सचेत ।

—सि सु रू

उ०—२ कायरा चेत उड प्रेत जोगण किलक, उप्रवट भूभट विरदेत
अडिया । 'जैत' हर जीत पाई समर जीतियो, पाच अर असी जुधखेत
पडिया । —तिलोकदान वारहठ

विरदँ—देखो 'विरद' (रू भे)

उ०—इद्रसिध दक्खण थो आयो, साथ लियो कर तोल सवायो ।
राणसुतण विरदँ समराथे, सग थयो पहुचावण साथे । —रा रू

विरदँत,—देखो 'विरदँत' (रू भे)

उ०—१ वेताळ वीर आगं वधं, चालै भूचर खेचरा । विरदँत पेखि
वदण भाणँ, जँत जँत जोघाहरा । —रा रू

उ०—२ चूगाळ फूलत खेलत चौघार, प्रह फट्टिय चड मुंडा पघार ।
विरदँत कीडि करमेत वेसँ, साखैत जँत पू वीर सेस ।

—मा. वचनिका

उ०—३ 'अभावत' क्रोध सभँ अणयाह, सिधा घरि साधक व्हे
सिध साह । दळा निजहूत वधँ विरदँत, खळा मफि हाकळियो पख-
रँत । —सू प्र

उ०—४ वाप इता विरदँत छळि, घरि फुळी छतीस सहि । चाल्या
स्वामि समाणसा, सउ माणस साखँत । —ग्र. वचनिका

उ०—५ साखेता सुहडा सामता, विरदँता जोघा वळवता । 'गाजी-
साह' सिरँ गँमता राणी-राण मिळँ रावता । —गु. रू व

विरह—देखो 'विरह' (रू भे)

उ०—१ धेन पूज सुर घेन, विमधु चरणाअत वदा । धनुख माण
त्रप कळप, सख जस मद् विरहा । —रा रू

उ०—२ सुकवि देख सभरँ, कोड उच्चरँ विरहा । रीत 'अजन'
राठीड, जोड लखि हद् समदां । —रा. रू

उ०—३ सुत घाघळ ढाल वरध सही, नटवा राय तुल विरध नही ।
भुगतूँ दुख वाद थयो भाइया विरदावीय 'पाल' वनी वाइया ।

—पा. प्र

उ०—४ जोधा गकसै जरध मूंगळा उतारै मद् बाहाळी खाटे
विरध मरहा मरध । रिमा खार्ग करै रद्, बहू लियै सु सवद्, हीद्
ऐहद विहद् जद जद जद् ।

—ल पि

विरध—१ देखो 'विहद' (रू भे)

उ०—१ विरध वघाई नाव, समूरथ साख सगाई । ज्याह विनायक
वेळ, महीछव मेळ विदाई । पूजा पाठ निराठ, वरै वनमाळा मोखी ।
जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोखी ।

—दसदेव

उ०—२ आला-गोला बास कटा र चवरी रा गीत गा दिया । वी
दिन ही विरध अर वी दिन ही बनोरी, वी दिन ही भात अर सागी
दिन ही अमोरी ।

—दसदोख

उ०—३ भंरव काळा और भंरव गोरा श्री वेगरी आव । ती विन
श्री भंरव तो विन विरध न होवसी । जी ती विन श्री भंरव ती विन
जनोई न होय ।

—लो गी.

२ देखो 'विरध' (रू भे)

उ०—१ आन्वी दुनिया म्हारी वाता सुणनै माथी घूर्ण, रीभे । जणी
जणी म्हारी विरध वखाणै । सुण-सुणनै कायी व्हेगी । नामून
सूं ओक्या वैठगी । पण अवे जावता वाना रा सिरै भरम नै सावळ
समझयी ।

—फुलवाडी

उ०—२ एक फिरत उचकै उरध, मति जग विरध विमोह ।
नटपट्टी दीसै निपट, घटी पलट्टी सोह ।

—रा रू

३ देखो 'विरध' (रू भे)

४ देखो 'विरध' (रू भे)

उ०—१ विरध पिता उहा दारण वन, तहा रिखी स्र ग तपोधन
तन ।

—रामरासी

उ०—२ जु धनी घणी विरध छै इण रं सेवा करण वाळी कोड
नही छै ।

—पचदडी रो वारता

उ०—३ फेर कुवर री राणी नै फुरमायो—जे राज री काम कुण
चलावसी, राजा तो विरध हुवा । कुवरजी री प हुई देपाळदे
वाळक छै । राज राखणी छै ती आपनै विराजणी छै ।

—पलक दरियाव री वात

विरधा—देखो 'विरध' (रू भे)

उ०—बालपणै नही चेतियी, तन तरणापी थाय । जनहरिया
विरधा भयो, अजू न गोविंद गाय ।

—अनुभववणी

विरधापण, विरधापणी—देखो 'विरधा' ।

उ०—सरधा घटगी सेंग, वेग विरधापण वळियो । निकळण रो रथ

नही, कळण ऊढी मे कळियो ।

—ऊ का.

विरधि, विरधी—देखो 'विरधि' (रू भे)

उ०—१ कनक दान कुरखेत विरधि, गुणि वासुर वासुर । सुबुध
वधै सतसग ग्यान गुर वाणि उजागर ।

—रा रू

उ०—२ म्है ती आगण गार गिलोवस्या, म्हारी विरधी रा
कोडा । चोखी रै मादळ घुळ र्ह्यी, रग राती रै मादळियो, थारी
रै सवद सुहावणी ।

—लो. गी.

विरबोर—देखो 'विरावर' (रू भे.)

विरम—१ देखो 'विरम' (रू. भे)

२ देखो 'विरम' (रू. भे.)

विरमखाड—देखो 'विरमखाड' (रू. भे)

विरमचारी—देखो 'विरमचारी' (रू भे)

विरमणी, विरमवो—देखो 'विरमणी, विरमवो' (रू. भे.)

विरमणहार, हारी (हारी), विरमणियो—वि० ।

विरमिओडी, विरमियोडी, विरम्योडी—भू० का० क० ।

विरमोजणी, विरमोजवो—भाव वा० ।

विरमपुरी—देखो 'विरमपुरी' (रू भे)

उ०—वाणिया री घरम वघावे अर विरमपुरी सराघ खावे है । आ
वात आतरै ताई जावे, ज्यू बाहरला वामण अठेरा टावरा वेटा नै
आपरी वेटी देवण आवै है । जाणै मोठी पाणी अर मोकळी विरम-
पुरी, आटी मार्ग जकारै ही हजार धूवा री वसती है, भात नै सेर
सात पक्की घरा लेय र बडे है ।

—दसदोख

२ देखो 'विरमपुरी' (रू भे)

उ०—दोनू मिल' र वात करै, वेगराजजी रा वेटा-पोना सुणै है ।
वेगराजजी वाजती हो । साल मे एक विरमपुरी गिया करती, सेठ
नाव घरावती, आया गया जिमावती ।

—दसदोख

विरमार्ड—देखो 'विरमार्ड' (रू भे)

विरमाणी—देखो 'विरमाणी' (रू भे)

उ०—पीलूडा पुरसाद देव, भाडी लेवै वाळका । विरमाणी धिराणी
जाणी, जाळा जूनी काळका ।

—दसदेव

विरमा—देखो 'विरमा' (रू. भे)

उ०—१ श्री तो गहरो गहरो विरमाजी री छावी वालम रसियो,
गहरो जी फूल गुलाव री । श्री ती गहरो गहरो नणदळ वाई री
वीरी वालम रसियो, गहरो जी फूल गुलाव री ।

—लो गी.,

उ०—२ उण कुमार नै आपरै खामचीपणा री ती अणूती मोद
ही । वी आपरी घरवाळी नै केई वेळा कंवती के विरमाजी नै अकर
इण दुनिया रा जीव जिनावर, पछी अर मिनख घडतां देखलू ती वो

हुजं दिन ई वारी हूवोहूव साची उतार दें । —फुलवाड़ी

उ०—३ डड कमडळ विरमा दीनी, सदासिव दीनी झारी ।

भगवा वसतर विसनु दीना, विचरी विरमाचारी । —अग्यात

विरमाचारी—देखो 'ब्रह्माचारी' (रू. भे.)

उ०—डड कमडळ विरमा दीनी, सदासिव दीनी झारी । भगवा

वसतर विसनु दीना, विचरी विरमाचारी । —अग्यात

विरमाणी, विरमावी—देखो 'विलमाणी, विलमावी' (रू. भे.)

विरमाणहार, हारी (हारी), विरमाणियो—वि० ।

विरमायोडो—भू० का० कृ० ।

विरमाईजणी, विरमाईजवी—कर्म वा० ।

विरमायोडो—देखो 'विलमायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विरमायोडो)

विरमावणी, विरमाववी—देखो 'विलमाणी, विलमावी' (रू. भे.)

विरमावणहार, हारी (हारी), विरमावणियो—वि० ।

विरमाविओडो, विरमावियोडो, विरमाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विरमावीजणी, विरमावीजवी—कर्म वा० ।

विरमावियोडो—देखो 'विलमायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विरमावियोडो)

विरमियोडो—देखो 'विलमियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विरमियोडो)

विरमो—स पु —१ एक प्रकार का ओढने का वस्त्र, दुसाला ।

उ०—भारत, रैन वीरा, भावज ओढाया, म्हार्न घणुमोला री चूनही जं । सुसराजो नै, वीरा, विरमो ओढाय, सासूजी नै साडी सापड जं । —लो. गी

२ देखो 'वरमो' (रू. भे.)

३ देखो 'वरम' (रू. भे.)

विरम्म—देखो 'वरम' (रू. भे.)

उ०—घरारी वाहर कोप घियान, विरम्मा वेढि तरु वरदान । भमाडे रुडा भारथि भल्ल, राया राउ जोध अनै रिणुमल्ल ।

—राव जंतसी री रासी

२ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

विरयां—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

२ देखो 'विरिया' (रू. भे.)

विरळ, विरल, विरलड—स पु —१ सूर्य, सूरज । (ना. डि. को.)

२ देखो 'विरळी' (रू. भे.)

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अघकार फोटउ । गाय तथा गाला

छूटा, तारागण विरल हुउ, चद्रमा विछाय थिउ । कूकडा तणी उलि लवइ देव तथा वार ऊघडिया, प्राभातिक तूरय वाजिया ।

—रा सा सं.

उ०—२ की विरलउ तुळ आदरइ, छाडइ सह ससार । एक आपनु भाजतउ, बीजा भाजइ च्यार । —स. कु

उ०—३ विरलउ पुण्यवत कोइ साहु वेटा, रिद्धि तणउ समदाय । घरमवत विनयवत होइ, भविय कुडवउ भणीइ सोइ । —वस्तिग

विरळणी, विरळवी—क्रि. स —१ तहस-नहस करना, नष्ट करना ।

२ आकर्षित करना ।

३ पथभ्रष्ट करना, गुमराह करना ।

४ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अग कभी ऊपर और कभी नीचे करना ।

५ चीरना, फाटना ।

६ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर और ऊपर वाला भाग नीचे करना, नीचे ऊपर या ऊपर-नीचे करना ।

७ अस्त-व्यस्त करना, इधर-उधर करना, बिखेरना ।

क्रि अ —१ तहस-नहस होना, नष्ट होना ।

२ आकर्षित होना, मोहित होना ।

३ पथभ्रष्ट होना, गुमराह होना ।

विरळणहार, हारी (हारी), विरळणियो—वि० ।

विरळिओडो, विरळियोडो, विरळ्योडो—भू० का० कृ० ।

विरळीजणी, विरळीजवी—कर्म/भाव वा० ।

विरळणी, विरळवी, वरळणी; वरळवी—रू. भे. ।

विरळणी, विरळवी—क्रि स —दिलाना ।

उ०—भायं भळहळिया भुरटा रा भारा, अघ अग ऊलळिया उरगा रा आरा । विरळा दाता री पाता विरळाती, चौडे चाचर री चौडे चिरळाती । —ऊ. का

विरळणहार, हारी (हारी), विरळणियो—वि० ।

विरळायोडो—भू० का० कृ० ।

विरळाईजणी, विरळाईजवी—कर्म वा० ।

विरळणी, विरळवी, विरळवणी, विरळववी, वरळणी, वरळवी, वरळवणी, वरळववी, विरळवणी, विरळववी—रू० भे० ।

विरळायोडो—भू का कृ.—दिलायया हुआ ।

(स्त्री, विरळायोडो)

विरळवणी, विरळववी—देखो 'विरळणी, विरळवी' (रू. भे.)

विरळवणहार, हारी (हारी), विरळवणियो—वि० ।

विरळविओडो, विरळवियोडो, विरळव्योडो—भू० का० कृ० ।

विरळवीजणी विरळवीजवी—कर्म वा० ।

विरळावियोडी—देखो 'विरळावियोडी' (रू भे)

(स्त्री विरळावियोडी)

विरळियोडी-भू. का कृ —१ तहम-नहस हुआ या क्रिया हुआ, नष्ट किया या हुवा हुआ २ आर्कषित किया या हुवा हुआ ३ पथ-भ्रष्ट किया या हुवा हुआ. ४ गुमराह किया या हुवा हुआ. ५ चोरा या फाडा हुआ ६ कुछ जानने, देखने या समझने के लिए चीजें या उनके अंग कभी ऊपर और कभी नीचे किया हुआ ७ किसी वस्तु का नीचे वाला भाग ऊपर व ऊपर वाला भाग नीचे किया हुआ ८ अस्त व्यस्त किया हुआ, इधर-उधर किया हुआ, बिखेरा हुआ ।

(स्त्री विरळियोडी)

विरळ, विरलु, विरळी, विरली—वि [स. विरल] १ जो बहुतायत से नहीं मिलता हो, थोडा, कम, दुर्लभ ।

२ जिसके अंग आदि पास-पास न हो, घना न हो, सघन का विपर्याय ।

उ०—भायें भल्लहलिया भुरटा रा भारा, अघ अंग ऊलळिया उरगा रा भारा । विरळा दाता री पाता विरळाती, चोडै चाचर री चौडै चिरळाती । —ऊ का

३ गाढा का विपर्याय, पतला ।

४ जहा कोई नहीं हो, निर्जन, शून्य ।

५ जहा कुछ भी नहीं हो, खाली, रिक्त ।

६ सैकडों हजारों या लाखों में से एक, कोई एक, अद्वितीय ।

उ०—१ जैसे सरपणी करत कूडाळा, वचीया जण जण खाई । आटा बार पड्या सोई जीता, यूँ विरळा बच जाई ।

—स्त्री सुखरामजी महाराज

उ०—२ काछ दिढा कर बरसणा, पर कजु मुंहा-मिठु । रिण-सूरा जग वल्लभा, सो र्हे विरळा दिठ । —कवरसी सांखला री वारता

उ०—३ दादू पला पखी संसार सब, निरपख विरळा कोइ । मोई निरपख होइगा, जाके नाम निरजन होइ । —दादूवागी

उ०—४ जाडजी रे समकित नौ परगम्यो रे, जिन मारग नै चाढी सोभ रे । इसडी समता केई विरला करे रे, जीत्या छै मोह अस्णा नै लोभ रे । —जयवाणी

उ०—५ अरघ उरघ में कीया पयागा, जाणै विरला जोगु । मन पवना पछिम की घाटी, आपा नाव तगेगुं । —अनुभववाणी

उ०—६ सोकड नवि मपति मिलइ, हरख घरइ नवि जाइ । हरख-सोक-समचित तै, विरला जाया माई । —मा. का प्र

रू भे —विरळी, वरळ, वरलु, विरळ, विरल, विरलठ ।

विरवड, विरवडी—देखो 'वरवडी' (रू. भे)

उ०—१ विरवड मात रमत वाया मे, चरवड भात चढाई । धणीं खमा राजा नोघण री, जाती फौज जिमाई । —मे म.

उ०—२ आवड विरवड चाहण चाळक, सारी सकति सहाय । अमरा व्रद सदा प्रतपाळै, मेहाई महमाय । —राघवदास भादों

विरस—वि [स] १ जिसमें रस न हो, स्वाद या जायके रहित, रसरहित ।

उ०—१ जिन मारग मे अनुरताजी, अरस नै विरस आहार । तक तक घर जावै नही जी, तप कियो न करै जहार । —जयवाणी

उ०—२ अरस विरस अत पत लुहु, ए चाल्या पच आहार । ए जीमी जीवै मुनि, घन मोटा अणगार । —जयवाणी

२ कष्ट, पीडा, सन्ताप ।

३ प्रेम या प्रीति रहित, अनुराग रहित ।

उ०—पातर चाळी प्रीत, मीठी लागै प्रथम मन । मद हुआ घन मीत, हुए विरस कडवी हुवै । —बा दा

४ रति-श्रीडा से विरक्त, काम-केलि से दूर या विषय-वासना रहित ।

५ उमग रहित, जोश या उत्साह रहित, मनोवेग का अभाव ।

६ मीठास का अभाव, कडवाहट ।

७ रक्त हीन, रुधिररहित ।

८ तरलता रहित, आर्द्रता रहित, शुष्क ।

९ गुणों का अभाव या तत्त्वरहित, सार रहित ।

१० नाराज ।

उ०—प्रकृत एकण भातगी छै, सु रागाजी नूँ कहाडिया, राजा मान-सिंह सू मत मिळो, श्री एकण भान री आदमी छै । राणी बरजियो रयो नही । आय मिळियो । मैहमानी करी । जीमण पगा विरस हुवो तद मानमिह दरगाह गयो । —नैणमी ११ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—ममत १६१२ प्रथीराज, अखैराज दलपतोत राव उदैमिघ वाघोतरै दावै हमीर भाटिया ऊपर दोडिया हुता । तिण दिन राव सरजसिध नै कवर बलू विरस हुवो थो, सु बलू विकपुर सँ छाडनै कैरडगर री पाखती आयो थो । —नैणसी

१२ कळह, भगडा ।

१३ जो अच्छा न लगै, अरुचिकर ।

१४ चिन्तातुर, चिन्तामग्न, उदास ।

उ०—पाघारै त्रप जोघपुर, गढ चाडिया कमध । आप विरस हुए चीतियो, घरा चहू दिस घघु । —रा रू

१५ जो दयालु न हो, निर्दय ।

१६ निष्ठुर हृदयहीन ।

१७ पीडाकारक, कष्टप्रद ।

स पु.—रीस, क्रोध ।

उ०—रामसिधञ्जी गाढा नवहर लै जाइ राखिया । कुवर रिणी सिधाया । तिसडै सँ वासै सीरोही राजाजी कन्हा सुरताण प्रियो-राज पणिर विरस करि धरे आया । धरै आइ रहिया । —द विरु. भे—विरस, विरसाळी, विरसाली ।

विरसपत, विरसपति, विरसपती—देखो 'ब्रह्मपति' (रु भे)

विरसाळी, विरसाली—वि.—१ श्रेष्ठ उत्तम ।

उ०—श्रीप साह ऊहड अमग, कमधज करिणाळा । हाथ जोड हरजी हसै, साहिव विरसाळा । —पी प्र. २ देखो 'विरस (रु भे)

उ०—सभाली ल्ये वडा सोह, सुचाली कलत्त सुत्त, क्या करै ककाली नाली अनाली कपूत । वाणी कै रसाली वदै विरसाली एका वात, कली कालि उजवालि आपरी करतूत । —घ व प्र (स्त्री विरसाळी विरसाली)

विरस्पत, विरस्पति, विरस्पती—देखो 'ब्रह्मपति' (रु भे)

विरह—स. पु. [स] १ सयोग का अभाव, वियोग ।

२ विच्छेद, अलगाव ।

३ दो प्रेमियो के अलग-अलग होने की अवस्था, जुदाई ।

उ०—१ मैं कीधो साचै मत्तै, नायक तोसूँ नेह । वण आवै सो देह वित, दाह विरह मत देह । —बा दा

उ०—२ विरह पीर तन भीतरै, पलक न विसरी जाय । जनहरिया हरी काग्यौ, नैरा नीभर लाय । —अनुभववाणी

उ०—३ रोम रोम मैं विरह की विथा वियापी एक । जनहरिया कसै कटै, श्रोखदहार अनेक । —अनुभववाणी

४ उक्त वियोग या जुदाई से उत्पन्न मानसिक कष्ट, दुख या पीडा ।

उ०—१ काळ रा नेवर पहरिया केळिअभ चदण रो छंडे रतना रो रासि, अघारै रो आदीत, अरस रो अमरी सरग रो आप, विरह रो समूह रूप रो निधान, थाका हस रो टोळी, निवार्ये गी ह्योळी, धर्यौ हाट नै चीरमा लपेटे थकी विराजमान होइ नै रही छै । —रा. सा स

उ०—२ वर मही तोटी वसै, वसै नफो नह 'वक' । सिया विरह राघव सहचो रावण पलटी लक । —बा दा

उ०—३ जद सुघ आवत पीव की, विरह उठत, तन जाग । ज्यूँ चूनै की काकरी, जद छिडकी तद अग । —अग्यात

उ०—४ वडारण कन्है वंठी थी, सो दिलासा दीवी । सो भरमल नू ती सारी वात बीसर गई । जीव ती कुवरजी कन्है गयो, देह पडी छै । सो इसी विरह ऊठीयो, सो राखीयो न रहै ।

—कुवरसी साखला री धारता

५ अनुपस्थिति, गैरहाजरी ।

६ छोडने की क्रिया या त्याग ।

वि.—१ तप्त, गर्म ।# (डि. को)

२ त्रिना, रहित, हीन ।

देखो 'विरही' (रु भे) (ना मा)

रु भे—विरह, ब्रह्म, वरह, वरहु, विरहि, विह ।

विरहण, विरहणि, विरहणी—स. स्त्री—वह स्त्री या प्रेयसी, जो अपने पति या प्रियतम से अलग या दूर हो ।

उ०—१ पाजं पाणी न थाहरै, थरहर कपे देह । हाथ सुहाळी मारवण, विरहण, पाडै वेह । —ढो. मा

उ०—२ सहिया सोइ विदेस पिव, तनहि न जावै ताप । बावहिया असाठ जिय, विरहण करै विलाप । —अग्यान

उ०—३ कबहू नैन निरख नहिं देखै, मारग चितवत तोर । दादू ऐसै आतु विरहणि, जैसै चद चकोर । —दादू वाणी

उ०—४ माती खेती पाती नीपनी काती मास, कातीय विरहणि छाती में काती वहुँ नही जास । दीप दीवालीय बलिय सुहालिय नै पकवान, खलक रचै पिए मुक नै न रचै खान नै पान । —घ व. प्र.

उ०—५ बावहियउ नइ विरहणी, दुहुवा एक सहाव । जब ही वर-सइ धण धणउ, तब ही कहइ प्रियाव । —ढो मा

उ०—६ तिरिण वाउ कमळ था सु वाळि इसा कीया जु । जिसी विरहणी कौ मुख । आव था सु इसा कीया जिसी सजोगिणी कौ उरस्थळ । —वैलि टी

वि.—जो अपने प्रिय या पति से अलग या दूर हो ।

रु भे.—वरहण, बरिहण, विरहण, विरहणी, विरहन, विरहनी, वरहण, विरहन, विरहनि, विरहनी, विरहिण, विरहिणि, विरहिणी, विरहण विरहणि, विरहणी, विरहण, विरहणि, विरहण, विरहणि, विरहण, विरहणी ।

विरहणी, विरहणी—क्रि अ [स] १ चीरा जाना, विदीर्ण किया जाना ।

उ०—मैं कामी कपटी क्रोध काया मे, कूप परत नहिं डरतै । कर-वत काम मीस घर अपने, आपहि आप विरहतै । —दादूवाणी

२ सयोग का अभाव होना, वियोग होना ।

३ विच्छेद होना, अलग होना ।

४ दो प्रेमियो का अलग-अलग होना ।

५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट होना ।

६ छोडना, त्यागना ।

विरहणहार, हारो (हारी) विरहणियो—वि० ।

विरहियोडो, विरहियोडो, विरहयोडो—भू० का० कृ० ।

विरहीजणी, विरहीजणी—भाव वा० ।

विरहन, विरहनि, विरहनी—देखो 'विरहण' (रू. भे)

उ०—१ नैणा नीकर लाविआ, छह रत वारं मास । हरिया विरह-
हन राम कू, एक न विसरं सास । —अनुभववाणी

उ०—२ उल्लसित हीयरो करि पपीयरो, करत प्रियु प्रियु सोर ।
विरह सङ्ग पीरो अति अघोरी, दरत विरहनि जोर । —वि. कु

उ०—३ विरहनि तेरी प्राण भुरत है, दाघी बेलि सिचाई । भीरां
को प्रभु दरसन दीजं, प्राण रखी सरगाई । —भीरां

उ०—४ विरहनी ऊभी दरद सूं, धवळा सू घया माण । फं मिळिहो
फं तन तज्जं, सुणिही कत सुजाण । —ह पु वां.

उ०—५ दिन की जाग्रत ह्य रह्ये, निसा नही भरि सोय । रांम
विसुरं विरहनी, भासु कर सं धोय । —अनुभववाणी

विरहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

उ०—चोपदार की भारफत रुधनाथसिंह से मिळने का इरादा
किया, उसने साल भर पहलं औरत के मरने की मातमी का बहाना
लिया । नेक बखत एक विरहमण ने स्वाम की अरज गुजराई, हे तो
मिळण के लागक भेक चारण मुजराई । —दुरगादत्त वारहठ

विरहमाण, विरमान—देखो 'विहरमाण' (रू. भे)

विरहमण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे)

विरहाग, विरहागन, विरहागनि, विरहागनि—स. स्त्री [स विरह+अग्नि]
विरहानल ।

उ०—१ व्यया विरहाग विधोग विहाय, सवागण भाग सयोग
सुहाय । अनाग्रह मुल्लित आन उपाय, प्रफुल्लित ज्युं पतनी पति
पाय । —ऊ का.

उ०—२ त्रिलोचना कुमरी तिण वार, दुख सपूरित ह्रिदय मभार
दुखणी दुस भरि करे विलाप, प्रीय विरहागनि तन सताप ।

—वि कु

उ०—३ पीहर तो परतटं रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया । प्रमदा
इणि परि विलवती, दुख रोई राति गलती । —श्रीपाळरास

विरहानळ विरहानल, विरहानलि—स. स्त्री [स विरह+अनल] विर-
हागनि ।

उ०—१ काळी कांठळ मे दामणिया दमकी, चित में कामणिया
विरहानळ चमकी । छूटी आसारा कासारा छिलती, पळती परनाळा
पहुवी पिलपिलती । —ऊ का

उ०—२ जेठ दीहाडा जेठ ना, लागइ ताप अथाही जी । विरहानल
तपइ दियउ, प्रियु तुम चदन बाहो जी । —वि कु

उ०—३ दिल सुद्ध प्रणमु नेमि जिनेसर परमदयाल । रोक्क्या जीव
ते सूक्या तोरुण थी रथ घाल । राजिमति सती नेह वस किय विविध
विलाप, तो पिण तसु तणु नाइ सक्यो विरहानल ताप ।

उ०—४ जे जळ सीकर, सै उद्वेग कर । जठ सीतलोपचार, तै
करद विकार । इधि परि प्रज्वलित, स्नेह पटल, विरहाळ नीपजइ ।

—रा सा. स.

उ०—५ ययदति विरहानलि हा नलि नदिय अपार । प्रिय नेलउ केतं
पासरे, घासरं बहिय ससारि । —जयसंगर सूरि

रू. भे.—विरहानळ, विरहानल ।

विरहाळी, विरहाली—मं. स्त्री.—सौंफ, दातपुष्पा ।

उ०—१ जायफळ लाग इलायची मिरच विरहाळी अजुं नागनेगर
भगट्टी तज तमालपत्र तवोळ प्रत सथी । भीर ही मगाला मगा-
यजं छे । —रा. सा स

उ०—२ लाभइ पांड तेल नइ मिरी, करइ सालणां लाभइ सुगे ।
अजमा जीरां लाभइ बहू, वेसण विरहाळी सह सहू । —कां. दे. प्र

विरहि—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—१ रयांहां जई तेहनि विरहि लगाहू प्रीत करि यम नारि ।
गुण घोसीकल पायि नहीं, राई, धिक तेहनु अघतार । —नळाव्यान

उ०—२ वीणा डफ महयरि वस बजाए, रोरी करि मुख पचम
रग । तरणी तरण विरहि जण इतरणि, फागुण धरि धरि सेलं
फाग । —वेनि

उ०—३ विरहि विरागीय वण मभारि, जाईउ मणि भायइ । लव-
णिय जूयणु रूपरेह तां आलिहि जाइ । —सालिभद्र सूरि

विरहिए, विरहिए, विरहिणी—देखो 'विरहणी' (रू. भे)

उ०—१ रूप सुरगा सावरी, मुग्ग निरतरण जावां । भीरां व्याकुळ
विरहणी, अपनी कर ल्यावां । —भीरां

उ०—२ आरति तेरी अतरी मेरे, धावी अपनी जाण । भीरां
व्याकुल विरहणी दे, तुम विन तलफत प्राण । —भीरां

उ०—३ भाव अमोडा-माहि घर, ईस तराइ जिम गग । हू विलपती
विरहणी, स्वांमि ! म छडिति सग । —मा. का प्र.

उ०—४ 'को विलपती विरहिणी, धाणी मन्मथ घाय । ससिहर
नइ साहमु लिखी, सिंह देवाडइ काय । —मा का. प्र.

विरहियोडी—भू का. कृ —१ चोरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ. २
सयोग का अभाव हुआ हुआ, वियोग हुआ हुआ ३ विच्छेद हुआ
हुआ, अलगाव हुआ हुआ ४ दो प्रेमियों का अलग-अलग हुआ
हुआ ५ उक्त जुदाई से मानसिक कष्ट हुआ हुआ. ६ छोटा
हुआ, त्यागा हुआ ।

(स्त्री विरहियोडी)

विरही—वि [स] १ जो अपनी पत्नी या प्रियतमा से अलग या दूर हो
या अलग या दूर होने के कारण दुखी हो ।

७०—१ तास थयी प्रारभ रे, थम जिसा रे तरुवर पालव रे ।
दुखिया नै दुरलभ रे, विरही लोका रे हीयडै सालव रे । —वि कु

७०—२ सूरज ना किरन पच्छिम ढळया । पथी सगा नइ मिल्या ।
विरही ना हीया वळया, गोवाळ घरं वळया । चौपूं लाव्या, आप
आपना घरं आव्या । —रा सा स

७०—३ हाथं न लेवइ वस्त्र । आषा ओढें वस्त्र । लोक सीसिआट
करइ, चौपूं उछरइ, ताढइ न चरइ । घुजें वाळगोपाळ, विरही
मा पडइ हवाल, सहु वंठा चौसाळ, साचव्या देहरा नइ पोसाळ,
एहवी सीतकाळ । —रा. सा स

२ कठोर । (डि को)

३ देखो 'विरही' (रु भे) (ना मा)

रु. भे —विरही ।

विरहीवीर—वि —वीरो मे वीर, महावीर ।

स. पु —श्रीकृष्ण के बडे भाई, बलराम । (ना मा)

विरह्ण, विरह्णिया, विरह्णो—देखो 'विरह्णो' (रु भे)

७०—गिरि गिरि वाघइ वेलडी, ऊपरि फूल विकास । मडइ मोर
कला घणी, विरह्णिया तन आस । —मा का प्र.

विरह्णोत्कठिता—स स्त्री [स विरह्णो+उत्कठिता] विरह्ण से व्याकुल
वह नायिका जिसे अपने नायक के आने का पूरा-पूरा विश्वास हो
किन्तु वह किसी कारणवश न आ सके ।

विरहो—देखो 'विरह' (रु भे)

७०—१ प्रायं छोरु न लहे सार, मावीत्रा नी किरण ही वार ।
पिरण मावीत्र तपं दिन-राति, पाणी बल विरहो न खमात ।

—वि. कु.

७०—२ अधिको विरहो अग मे रे लाल, तं किम दरं थाय हे
सहेली । जमवारी जल में वसे रे लाल, चकमावि अगन उल्हाय हे
सहेली । —घ व अ

७०—३ सजोग री विजोग पड जावें । सारीरिक मानसिक दुख
ऊपजें । जठे भगवान मोक्ष रा सुख सास्वता स्थिर कह्या है ।
उठे सुत्वा री कडेइ विरहो पडें ईज नही । ए स्वामीजी रा वचन
सुणने सतोख आय गयो । —भि. द्र

७०—४ विरहो मो दाहे सदा, कासू कर पुकार । प्रीतम अब
कीजें कृपा, लीजें हाथ पसार । —कुंवरसी साखला री वारता

विरांण—१ देखो 'वीराण' (रु. भे)

७०—१ उण घूमर क्रोध भळा ऊमळी, अडिया असुराण उचार
अळी । सयदाण जूवाण विरांण सख, गुमराण सफाण अरोह
गज । —सू प्र

७०—२ विरांण मीर धोठा विलद, नीसाण फील दीठा नरिद ।
घरहडें क्रोध परचड घूप, भुज डड अडें वहमड भूप । —वि स
२ देखो 'वीराण' (रु भे)

विराणी—१ देखो 'वणियाणी' (रु भे)

२ देखो 'विडाणी' (स्त्री) (रु. भे)

७०—सुणवाला, इक रंण पौढती कठ लगाणी, जागी जजका नंण
बिलखता नीर भराणी । पूछता, मुळकाय कह्या थं बोल सयाणी ।
छळिया । पेख्यो तूफ विलमणो नार विरांणी । —मेघ

विराणी—देखो 'विडाणी' (रु भे)

७०—१ हीर चीर हेम तार घडी में विराणा होसी, लाखा द्रव्य
विभी सबे हावी घोडा लाठ । गाम घाम भूठा जाणें घंघें भूठा
लागा नरा, गार रा मिरग रं पडी वायरा री गाठ । —ओपी आढी

७०—२ खाणा पोणा खरचणा, और न चालें सथ । जसवत घर
पोढाविया, माल विराणा हथ । —महाराजा जसवतसिंह

७०—३ वपु माया नै जाण विरांणी, पाव न घर खोटी दिस
प्राणी । रघुवर साचो दास रसाणी, बोल 'वकसिया' अमरत वाणी ।

—वकसीराम लाळस

(स्त्री विराणी)

विरांन—१ देखो 'वीराण' (रु भे)

२ देखो 'वीराण' (रु भे)

७०—मूळी दामें, रूसें अर रीस रळें । पेमजी जूमें, कुडें अर गुग
मे गळें । गठजोडी ती जुडची पण मन-मेळू जोडी मिल्यो नही ।
मूळी लावी अर जुवान । पेमजी ओछो, गटमीगणियो वूढी विरांन ।
दो-दो दुख सागें रळग्या । —दसदोख

विरांम—स स्त्री [स विराम] ? क्रिया, गति, चाल आदि में होने
वाला ठहराव, अटकान ।

२ अन्तिम अवस्था, समाप्ति ।

३ आराम, विश्राम ।

४ कार्य, सेवा आदि से मिलने वाला अवकाश, निवृत्ति ।

५ वाक्य व छन्द में वह स्थान जहा बोलते या पढते समय कुछ
समय के लिए रुकना पडता है ।

६ भ्रम, भ्रान्ति, शक, सन्देह ।

७—हरि है दाता देह का तातें भया सकाम । गुर है दाता ग्यान
का, मन का मेट विरांम ।

—अनुभववाणी

७ विराम चिन्ह ।

८ चिन्ह, लक्षण ।

उ०—माता पिता के आगे खेलता। काम रा जु विराम छै। सु छिपाया चाहिजे। सु काम रा विराम कुरा। ज एक तठ कुच प्रगट हुया। नेत्रा चचलता हुई। नितय भारी दीस लागे। ए काम का विराम। —वेलि टी

६ घबराहट, क्षोभ, खलबली, अमान्ति।

उ०—कमधा पत दरकूच कर, धरि भेडत मुकाम। धर दिल्ली धुञ्जै उरै, पुर आगरै विराम। —रा रू.

१० उत्पात, उपद्रव।

उ०—माया मोह न कीजिये, माया बडी हरांम जनहरिया तिह लोक में, केता करै विराम।

११ कष्ट, पीडा, सकट।

उ०—१ दूही दुपटी दाम, जोडघा सो ही जाणसी। व्यावर तगा विराम, बाभ न जाणै वीभर। —वीभरै अहीर री वात

उ०—२ अभिखा अक आह्वय अविधा, नामधेय सग्या हरि नाम। आठई पहर राखि उर अतर, वेग टळै दुख दळिद्र विराम।

—ह ना. मा

उ०—३ भगवति धावी भाई, मुभ मदत स्त्रीमहामाई। नित पढे प्रहस मे नाम, त्या रोरि भजि विराम। —मा वचनिका

१२ निवास-स्थान।

१३ अग्यान।

उ०—में मन कु नही जाणिया, मन का बोहत विराम। हरीया धनकू उलटि कै सदा सिवरियै राम। —अनुभववाणी

रू. भे.—विराम।

विरामण—देखो 'आह्वण' (रू भे)

उ०—१ रुळघा सुळघा रजपूत, विरामण मिळगा विटळा। वंस्य मिळ गया विकळ, सूद्र कुळ रुळगा सिटळा। षोड घाडे चोर ढग दिन देढस देदी। जिफे नही किए जोग मिळघा घर घर रा मेढी। —ऊ. का.

उ०—२ हिमें विरामण जीवण जसावत री नै मनोहर रामावत छै। जाट रजपूत बाभण वाणिया वसै। —नैणसी (स्त्री विरामणी)

विरामणी—स. स्त्री —१ ब्रह्मचारणी देवी, ब्राह्मणी।

२ देखो 'ब्राह्मण' (स्त्री) (रू भे)

विरामणो, विरामवो—क्रि. स —१ शमिन्दा करना, लज्जित करना।

उ०—सुनि भरस सभार सदन धर्या कपण्या तणी विरामियो। कर भू पर कीरत करमसी, रायसिध विसरामियो। —नैणसी

२ विश्राम देना, विश्राम करना, आराम करना।

३ कष्ट देना, दुख देना, पीडित करना।

४ रोचना, ठहराना।

क्रि. म. —१ शमिन्दा होना, लज्जित होना।

२ पीडित होना, दुखी होना।

३ रुकना, ठहरना।

४ मगना, धवसान।

उ०—पतळा नसीध पाता मुगा, परज करमफळ पावियो। प्रतपाळ 'सिवी' माता पिता, चड दातार विरामियो।

—साहबदान मुरताणियो

५ हटना।

उ०—चितामणि पारस पौरमो, सुधा मरोवर कामगा। सपजै ताम सुत सपनै, ग्रह सुर घाम विरामगा। —रा रू

विरामणहार, हारी (हारी), विरामणियो—वि०।

विरामिपोडी, विगंमिपोडी, विराम्योडी—भू० का० क०।

विरामोजणी, वीरामोजवो—कर्म, भाव वा०।

विरामग्रह—स पु. [स विराम-ग्रह] ग्रह ताल का एक भेद विशेष। (संगीत)

विरामिपोडी—भू का क — १ शमिन्दा किया या हुवा हुमा, लज्जित किया या हुवा हुमा २ विश्राम किया हुआ, आराम किया हुआ ३ पीडित किया या हुआ हुआ, दुखी किया या हुआ हुआ ४ रोका हुआ, ठहराया हुआ ५ रुका हुआ, ठहरा हुआ ६ मरा हुआ, धवसान हुआ हुआ. ७ हटा हुआ। (स्त्री विरामिपोडी)

विरामो—वि [स विराम] १ विश्राम करने वाला, आराम करने वाला।

२ आकुल बचन।

३ शमिन्दा करने या होने वाला।

४ पीडित होने या करने वाला, दुखी होने या करने वाला।

५ रुकने या रोकने वाला।

६ मरने वाला।

७ हटने वाला।

विराम—स पु —१ एक मे मिला हुआ हमरा राग। (संगीत)

२ देखो 'वैराग्य' (रू. भे)

विरामणी, विरामवो—क्रि स —१ वैराग्य ले लेना, संन्यास ले लेना।

उ०—तितरै राणीजी री दीकरी रामसिधजी री बहू नाम आवा राम कहियो। तिए ऊपरि रामसिधजी विरामियो। दाढी न सुवरुई। कपडा न घोवाडे। वागो न पहिरै। आरासि न करै। —द वि

२ त्यागना छोडना।

विरामणहार, हारी (हारी), विरामणियो—वि०।

विरागियोडी, विरागियोडे, विराग्योडी—भू० का० कृ० ।

विरागीजणो, विरागीजवो—कर्म वा० ।

विरागियोडी—भू का कृ —१ वैराग्य लिया हुआ, सन्यास लिया हुआ.
२ त्यागा हुआ. छोडा हुआ ।

(स्त्री विरागियोडी) ।

विरागी—देखो 'वैरागी' (रू भे) (सभा)

विरागीय—देखो 'वैराग्य' (रू. भे)

उ०—विरहि विरागीय वण मभारि जाईउ मणि भायइ । लवणिम
ज्वणु रूपरेह ता आलिहि जाइ । —सालिभद्रसूरि

विरागी—देखो 'वैराग्य' (रू भे)

उ०—साचउ जाणइ जिणधरममागो, तउ मनि ज्वणु लणइ
विरागो । गंगानदणु वणि वसार । —सालिभद्र सूरि

विराड—स. पु —१ हिस्सा वट । (भा म.)

२ देखो 'वराड' (रू भे)

विराज—स स्त्री —१ शोभा, सुन्दरता, सौन्दर्य ।

उ०—डोहत सूड सिधळी, घटा विराज सामळी । घमकि घट
धुग्घर, सिंदूर सीस चम्मर । —गु रू. व

स पु —२ राजा, नृप ।

३ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

४ क्षत्रिय जाति का व्यक्ति ।

५ स्वयंभुव मनु का नामान्तर ।

६ नर राजा का पुत्र एक राजा ।

७ एक वैदिक छन्द विशेष ।

८ कुह्वशीय राजा अविश्वित के पुत्र ।

विराजणी, विराजवो—क्रि अ. [स. विराजनम्] १ शोभित होना,
शोभायमान होना ।

उ०—१ और ही अनेक भात रा फूला रो माळा किलगी छडी
सेहरा गूथया छे । सू सारे साथ नै बकसजे छे । फूला रा चौसरा
घातजे छे । छडी हाथा मे विराज रही छे । —रा सा स

उ०—२ बाकी मुकट काछनी सुंदर, ऊपर जरद किनारी । गळ
मूतियन की माळ विराजे, कुडळ की छवि न्यारी । —मीरा

उ०—३ समपे अनड दाढाळ सहट्टा, देता दहण करण दहवट्टा ।
रातवर तन रोम विराजे, भळकत तेज सुरा मझि भ्राजे ।

—मा वचनिका

उ०—४ विदली सीस विराजही, माग ज भरी सिंदूर । नथ
विराजे नासिका, रही सोभ भरपूर ।

—कुंवरसी साखला री वारता

२ निवास करना, रहना ।

उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणी आप । वोहि
वगळी अणखावणी, ती विण घणी 'प्रताप' । —जैतदान वारहठ

उ०—२ दूर दिसावर जेहनी पिळ वसै जी, तै नार सुहागण
कहाय । महाविदेह मे घणिय विराजियाजी, तिके निरघणिया किम
थाय । —जयवाणी

उ०—३ सोजत रा वजार मे छत्री त्या स्वामीजी विराज्या ।

—भि. द्र.

उ०—४ अजमेर मे आनासागर ऊपर वाग मे मेल रंवास रा
कराया, ऊठे विराजता जद । —मारवाड री ख्यात

३ बैठना । (भादर-सूचक, सम्मान सूचक)

उ०—१ कसतूरो केसर अरगजी, चदन तिलक लिलाटि । करे
श्रीपति री आरती, किसन विराज्या पाटि । —पदम भगत

उ०—२ अ्रेकदा प्रस्ताव राव जोधोजी दरबार किया विराजे है
नै सारा भाई वा अमराव वा कवर हाजर है । —द दा.

उ०—३ ताहरा गोगंजी कहाँ—घोडा हू ले आऊ छू, जूँ आपा
धरें हाला । ताहरा पावूजी कहाँ—राज ! आप विराजो । हू ले
आईस । —नैणसी

उ०—४ उन्हाळें चोमासै सिरया री पक्की हाटे स्वामीजी बलाण
देता, भीखणजी स्वामी भारमलजी आगे जोडे विराजता, पाखती
कठ मिलावण वाला भाया वेठता, बीजा साध माहे वेसता ।

—भि. द्र.

उ०—५ पीळि पीळि उच्छव प्रवळ, वेदोकति विसतार । राजा
तखत विराजियो, सुभ चौकी स गार । —रा. रू.

उ०—६ डोडी रं वारणें वैहळ सु उतर भीतर नु चाली, सो
आगे राणोजी मूढे ऊपर विराजिया छे ।

—कुंवरसी साखला री वारता

४ होना ।

उ०—१ चक्रवर्ती दसे हुआ, धरम तणें परताप । आरभ परिग्रही
त्यागनै, मोख विराज्या आप । —जयवाणी

उ०—२ आदेशरजी' एडी कही, 'भरतादिक' सी आय । धरम
तणें परभाव सूँ, मुगत विराज्या जाय । —जयवाणी

५ उमडना, छाना, आच्छादित होना ।

उ०—चिहु और घोर घटा विराजत, गुहिर गाजत गडन । घरि
अधिक गाढ अखाढ चलत्यड, घट्यउ, चित सै चदन । —वि कु
६ रहना ।

७०—१ गाम रे वास्तं भार ई काई हे । गामसाऊ रुपिया आपरें खनें इज हे । आप जोधपुर जाय ने रेडियो ले पधारी । अठे विराजी जितरें खूब धूधावी अर वदळी व्हेनें पधारी जद रेडियो आपरी ने आपरें बाप रो ।
—अमरचून्डो

७०—२ राजा दखिण विराजियो, गा दखणी हुइ रद्द । साह सुपारिस सामळ, की फत्त सरहद्द ।
—गु. रु. व.

७ जीवित रहना । (सम्मान, आदर)

७०—१ ताहरा सरव हजूरी, पासवान, खवास तेरू हता तिके सरव तळाव द्खियो । घणो ही जोयो पण हाथ न आयो । इतरें मे कुंवर री अतक देही ऊपर तिर आई । तरें सरव लोग देखण जागा । देखे तो देही निरजीव देखी । तद हाहाकार सबद हुवो । साथ सारो ही रोवण-कूकण लागो । राजा नै जाय खवर हुई सो सुण नै मुरछा-गति हो गई, विवहल होय गयो । कुंवर सुंदरदास दीठी के कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटे तो राज जाय छे । ताहरा कुंवर देपाळदे नै उठाय छाती सुं रागायो । नाक भीच सावचेत कियो । राजा सावचेत हुवो । फेर कूकण-पुकारण लागो । तद महते अरज कीवी-जे कुंवरजी री आ दसा हुई । देपाळ निराठ दिलागोर हुवो । धूकारोळ सुं कुळराइज गयो, कहघो-महाराज दिलासा करो । इण ऊपर जीव टेकी अर परमेस्वरजी आईज की तो किये रो ही दोख नही । यूं कहि हूही कहघो-

सुख मे दुख सचारवी, दुखिया सुख दयाल ।

देवज रूठी दारणवै, हरि रूठा वेहाल ॥

यूं कहि राजा नूं समझायो । सावचेत कियो अर कहघो-महाराज, थाहरें सारी दोलत छे, कुटव छे । इण तरह राजा नूं धीरज वघाय जनानी डोढी गयो । जनाने सारे ही मे धीरज दीवी । कुंवर री मा अर महळ दोनूं ही हठ भालियो-कुंवर री मुंहडी देखा । ताहरा कुंवर री मा नै तो कहघो-ये तो सुग्यानी छी । इनरा सास्तर सुणिया छे । कथा सुणी ते में इतरो ही हठ सुणियो छे ? यूं कहि राणी रो हठ छुडायो । फेर कुंवर री राणी नै फुरमायो-जे राज रो काम कृण शलावसी, राजा तो विरघ हुवा । कुंवरजी री यू हुई । देपाळदे वाळरु छे । राज राखणी छे तो आपने विराजणो छे । परमेस्वरजी निमित्त घरम पुन करो । घणो सोच करणी तो असमझ रो काम छे । हठ छोड अर लारें रहि कर राज करो ।

—पलक दरियाव रो वात

७०—२ इयें भूतळ पर आप ३३ वरस रे अडेगडे विराजिया अर सवत् १९५१ मे सिवलोक सिधारिया ।

—सत सेठ श्रीरामरतन डागा री वात

८ ठहरना, रुकना ।

७०—१ गुणसठे रा साल चवदे साधा सू तथा चवदे आरया सू देवगढ में भीखणजी स्वामी विराज्या हुता, तिहा तीन आय

बोल्या—भीखणजी म्हें तीन जणा त्यानेइ पूरो आहार नही मिल्यो तो थाने इतरा ठाणा नै आहार किये रीते मिले ।
—नि. द.

७०—२ अतरपट कर सहैल्या हथबोळण री कसार मुह आणे आण घरियो । ताहरा भरमल अरज होळें सै कीवी, जो आज रात चाकर ऊपर किरपा कय विराजे तो मोटी करे ।

—कुंवरसी सावले री वारता

९ निवास करना ।

७०—श्रीघड एक न पायो श्रीघड, आक धनूरा वाय हूवो तड । घुरा भला खावें फिम काजें, तेरें भीतरि राम विराजे ।

—अनुभववाणी

१० स्थित होना ।

७०—यलि तेहनै चो पाळती, विकट दुरग विराजे रे । घण वाजिप्र सदा घुरे, घन गरजारव लाजे रे ।

—वि. कु.

११ उपस्थित होना, विद्यमान होना ।

विराजणहार, हारो (हारो), विराजणियो—वि० ।

विराजिओडो, विराजियोडो, विराज्योडो—भू० का० कृ० ।

विराजीजणो, विराजीजवो—भाव वा० ।

वराजणो, वराजवो, विराजणो, विराजवो—रु० भे० ।

विराजमान-वि [स विराजमान] १ दोभायमान, शोभित ।

७०—१ नारद तुवर सपत सुर सगीत किया । अपछरा मिळ ग्रधप ग्यान किया । हूरा पीहप वरवा कीधी । तिय विरिया वारें आदीत मुखा कमळ विराजमान हुवा ।
—मा वचनिका

७०—२ तठा उपरायत देशीत राजान आपरा टोळी मजल रा जुवान लिया विराजमान हुवा छे । कमरा सोलजे छे वरछी रा भूला कीजे छे ।

—रा सा स.

२ उपस्थित, विद्यमान ।

७०—तिय वेळा आदरी सगति । जोति री घणियाणी । सुरा री सहाय । सुक्रित री वाहरू । खळ री लैगाळ । चवदे भवणा री प्रतिपाळ । प्रगट विराजमान हुवा । इद्रलोक मे उद्याह हुवा ।

—मा वचनिका

३ वैठा हुआ । (सम्मान सूचक, आदर-सूचक ।

७०—वागा वणाउ करि । सख चक्र गदा पदम धारि । वैजयंती माळ मोर भुगट कुंडळ विसाळ मदनमोहन कमळलोचन म्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छे । मणिसाणिक जडित छत्रपाट सिधासण विराजमान दीसे छे । भळळाट करि जगाजोति जागी छे ।

—र वचनिका

४ स्थित ।

७०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति मुखमली जरवाफती,

मखतूल रेसम री कलावतू जरकस लपेटिआ लूवा समेत गादी तकिआ विराजमान कीजै छै ।
—रा सा स

स पु—१ बैठाने की क्रिया, बैठाना । (सम्मान सूचक, आदर सूचक)

उ०—नठा उपराति राजान सिलामति तोरण बाधीजै छै । घणा गज डवर पेमाख करि मडोवर महलें पधराया छै । सुभ दिन सुभ घडी सुभ मूरहरत सुभ वार सुभ लगन सुभ वेळा माहि आगिा पाट सिंघा-सण विराजमान किआ छै । माथा ऊपर सेत छत्र विराजै छै । सेत चमर दुळै छै ।
—रा सा स

२ बैठाने की क्रिया, बैठाना । (सम्मान-सूचक)

उ०—१ दोय-दोय वाकरा री सिल्हाडनै ठरका हुवै छै । तरवारा रा छणकार हुयनै रह्या छै । चौरगा री खाटग्वड हुयनै रही छै । कटोरा माहै फूल लीजै छै । वाकरा होसनाका वसू कीजै छै । देसीत रवा घोय हाथ ऊजळा कर विसायता ऊपर विराजमान हुवा छै ।
—रा सा स

उ०—२ त्या उमरावा रा वग्वाण । लोह री लाठ । चालता कोट । आवर चौ घा । अनेक भारथ किया । भाति भाति रा लोह चाखिया नै चखाया । ईसा दुवाह । आण विराजमान हुवा ।
—मा वचनिका

उ०—३ ब्रह्मा विसन महेस इद्र सुर साथै विराजमान हुआ छै । आप विसन चत्रभुज रूप धारि । वागा वखाव करि । सख चक्र गदा पदम धारि । वैजयतीमाळ मोरमुगट कुंडळ विसाळ मदन-मोहन कमललोचन स्यामसुंदर ठाकुर विराजमान हुआ छै ।
—र वचनिका

३ पत्रो आदि मे अपने से बडो के लिए लिखा जाने वाला आदर सूचक शब्द ।

उ० सरव श्रोपमा विराजमान अनेक श्रोपमा लायक भावीसा दुरगजी नै लिखी तेजा री जय स्त्रीरघुनाथजी री वचावसी । घणा मान सूं करने उपरच समाचार एक वाचसी के उत्तराद में ऋगडौ चेतग्यो है । म्हारी पलटण नै मोरचा साथै जावण री हुक्म मिळची है । आप कोई बात री चिंता फिकर करसी नी वृजी नै म्हारा पाव धोक भरज करसी अर टावरा साथै हाथ फेरसी । म्हारी कानी सू अमला री मनवार मनासी ।
—अमर-चूनडी

रू भे—विराजमान, वैराजमान ।

विराजित—देखो 'विराजियोड़ी'

उ०—१ वर तुरग उत्तम, कणै साकति विराजित । मदोमत्त मात्रग, जाण जळ वादळ गरजित ।
—गु. रू व

उ०—२ पूठि भिडउजा आरुहिया भड, तिस रूप लेथ छतीसै

त्रिज्जड । सत्तरि खान बहुत्तरि ऊमर, सीस विराजित मेघाडवर ।
—गु. रू व

विराजियोड़ी—भू का कृ—१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभित हुआ हुआ २ निवाप किया हुआ, रहा हुआ. ३ बैठा हुआ (आदर सूचक) ४ हुवा हुआ. ५ उमडा हुआ, छाया हुआ, आच्छा-दित हुआ हुआ ६ रहा हुआ. ७ जीवित रहा हुआ (आदर-सूचक) ८ ठहराहुआ, रुका हुआ. ९ निवास किया हुआ १० स्थित हुआ हुआ.

(स्त्री विराजियोड़ी)

विराजी—देखो 'वैराजी' (रू. भे)

उ०—१ ती सूं वादसाह घणी महरवानगी राखै और जवरदन्त घणां ती सू पण भय राखै जे विराजी हुवो तो फीजा धावै ।

—महाराज जयसिंह आमेर रा घणी री वारता

उ०—२ स १५३५ तळाव ऊपर कोट घातण री तजवीज करी । तद राव सेखै कहायो, "गढ अठे मती घानज्यो, परै जागळू री हद में घातो । सू या मानी नही । पीछे राव सेखी मनमें विराजी तो हुवो पण याने क्यू ई कयो नही ।
—द दा

उ०—३ ता पछे पातसाहजी भला मणस मेल दळपतसिंघजी नू दिली बुलाया सू गया नही । हजरत रा माणस पाछा गया । तठे पातसाहजी बडा विराजी हुवा । पण दळपतसिंघजी इण वात नै थापी नही ।
—द दा

विराट—स. पु [स विराट] १ महाभारत के एक पर्व का नाम ।

२ एक प्रदेश जो जयपुर, अलवर व भरतपुर के बीच है । जहा पाडवो ने आज्ञातवास का समय (एक वर्ष) बिताया था ।

उ०—बळी न्यप जैन करा वळिहार, पत्री अणभोज परा खळ पार । बाणा थट कैरव राण विराट, ब्रह्मट जाण करै ब्रह्वाट ।—मे म ३ उक्त प्रदेश का राजा ।

वि वि—इसकी पुत्री उत्तरा का विवाह पाडव-पुत्र अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु से हुआ था । इसके पुत्र उत्तर व इसकी स्वयं की मृत्यु महाभारत युद्ध मे पाडवपक्ष की ओर से लडते हुए हुई थी । इसके साले व सेना का सेनापति कीचक का वध पाण्डव पुत्र भीम ने उनके अज्ञात वास के समय द्रोपदी पर क्रुद्विष्टि डालने के विरोध मे किया था ।

४ स्वयंभू मनु का नामान्तर ।

५ महाभारत युद्ध के समय अर्जुन की कृष्ण द्वारा दिखाया गया विश्व स्वरूप ।

६ बलि को छनने हेतु विष्णु द्वारा किया गया त्रिविक्रम रूप ।

७ विश्वशरीर मयी अन्त पुरुष ।

८ ब्रह्मा की प्रथम सन्तान ।

९ एक देवयोनि, सुतप ।

१० प्रतवर्दन देवो मे से एक ।

११ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे मगण, सगण, जगण और अन्त मे लघु होता है ।

१२ देखो 'वैराट' (रू भे) (ह. ना मा)

रू. भे.—वराट, विराट, वैराट. वइराट, वयराट, वैराट ।

विराटक—स पु [स] विराट नगर में निकलने वाला एक प्रकार का निम्नकोटि का हीरा या नग ।

विराटपरध—स पु [स विराट+पर्वन्] महाभारत का चौथा पर्व ।

विराटरूप—देखो 'विस्वरूप'

विराड—देखो 'वैराट' (रू भे)

उ०—इयं विद्यावराणा कीया आइ बैठा । देखिन कह्यो इडी बाटो । खीर्षो बोलियो बाटणो कासू । विराड भाग इ करिस्था । ताहरा नाचिए वाळो बोलियो ना जी था कहियो हुतो । ईयै नु इतरी भुइ थाहरै कहियै आणी । —चीवोली

विराडप—स. पु —अगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ।

विराडणो, विराडबो—क्रि. अ —डरना, भयभीत होना ।

उ०—विउड भितड ताडिउ तु चपेटा कपाडिउ । कूंयिरि मनि विराडिउ बोल बोलइ सु ताडिउ । —सालिसूरि

विरादर—देखो 'त्रिरादर' (रू भे)

उ०—१ यम लिखि दोलउजीरने, पुरजा पहुचाया । खान विरादर नोकरों, सबको बुलवाया । सबके बीच मसूरखा, पुरजा बचवाया । फिर कासीद जवानदा, समचार सुनाया । —ला रा.

उ०—२ आगेही बडे महाराज 'अजमाल' से सभर के खेत हमारे विरादर हसनखा गिरदखा हुसैनखाने जग कर सच्चं दिल से सिर दिया । जिन्हन के मरण से तारीफ के सवाल सब आलम परि जिया । —सू. प्र.

विरादरी—देखो 'विरादरी' (रू भे.)

उ०—सात हजारी सामती, जाकी नाम 'अजीत' । दाखी फेर विरादरी, सह आदरी सप्रीत । —रा. रू

विराध—स पु [स] १ विरोध, प्रतिक्लता ।

३ अनादर, अपमान ।

३ कष्ट, पीडा, तकलीफ ।

४ दण्डकारण्य मे राम या लक्ष्मण के द्वारा मारा जाने वाला एक बलवान राक्षस जिसे रभा पर अत्याचार करने के कारण गधवं मे राक्षस योनि प्राप्त हुई थी ।

५ कश्यप एव दनु के दानव पुत्रो मे से वितल नामक पाताललोक मे रहने वाला एक पुत्र दानव ।

वि. [स विराड] १ विरोधी, प्रतिपक्षी ।

२ अपमानित, तिरस्कृत ।

३ कष्टमय, पीडित, दुखी ।

रू. भे —विराध ।

विराधक—वि —१ विरोध करने वाला, विरोधी, प्रतिपक्षी ।

उ०—उदायन दीघउ केसी नइ, भाणेजा तइ राजभार जी । वैर वहुतउ थयउ विराधक, अपीचि असुर कुमार जी । —स. कु

२ अनादर करने वाला, अपमान करने वाला ।

३ कष्ट देने वाला, दुःख देने वाला ।

विराधणो, विराधबो—क्रि स —१ विरोध करना, विरुद्ध कार्यवाही करना ।

२ अनादर करना, अपमान करना ।

३ रोकना, अवरुद्ध करना ।

उ०—तै मुक्क मिच्छामि दुक्कउ, अरिहत नी साख । जै मइ जीव विराधिया, चउरासी लाख । —स. कु.

४ कष्ट देना, दुःख देना ।

५ नाश करना, नष्ट करना ।

उ०—सीसु सिखडी तणउ तामु छेदीउ छलु साधीउ, पाप परामभ नइ प्रवेसि गतिमागु विराधीउ । —सालिभद्र सूरि

विराधणहार, हारो (हारो), विराधणियो—वि० ।

विराधियोडो, विराधियोडो, विराधियोडो—भू० का० क० ।

विराधीजणो, विराधीजवो—कर्म वा० ।

विराधियोडो—भू. का. कृ —१ विरोध किया हुआ, विरुद्ध कार्यवाही किया हुआ. २ अनादर किया हुआ, अपमान किया हुआ. ३ कष्ट दिया हुआ, दुःख दिया हुआ. ४ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ ।

(स्त्री. विराधियोडो)

विराधी—देखो 'विराधक'

उ०—इत्यादिक बहूला हूवा, समकित घरम विराधी रे । मरने केई नरके गया, केई नीची गती पिण लाधी रे । —जयवाणी

विराळ, विराल—स. स्त्री —उल्लेखता, वाण्य ।

उ०—हूंगर तणा सिखर डगमगइ, थयूं अजूआलूं सायर लगइ । दिग्गज आठ रहचा अवलोकिक, धूम विराल गई सुरलोकिक ।

—का दे प्र.

विराळी—देखो 'विराळी' (रू भे)

विराव—स. पु. [स] १ हल्ला गुल्ला, शोरगुल ।

२ ध्वनि, शब्द ।

३ अमिताभ नामक देवयोनि ।

रू. भे—विराव ।

विरावणो, विरावणो—क्रि. स —१ हल्ला-गुल्ला करना, शोर करना ।

२ ध्वनि या शब्द करना, बोलना ।

विरावणहार, हारो (हारी), विरावणियो—वि० ।

विरावणोडो, विरावियोडो, विरावणोडो—भू० का० कृ० ।

विरावणो, विरावणो—कर्म वा० ।

विरावणो, विरावणो—रू० भे० ।

विरावण-स पु [स विरावण] घृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

विरावणोडो-भू का. कृ —१ हल्ला-गुल्ला किया हुआ, शोर-गुल किया हुआ २ ध्वनि या शब्द किया हुआ, बोला हुआ ।
(स्त्री विरावणोडो)

विराह-स पु [स वि + फा राह] १ कुमार्ग, बुरा रास्ता ।

२ बिना रास्ता, रास्ता विहीन । ३ उल्टे रास्ते ।

उ०—कै भागा अजमेर नूँ, रिम दल राह विराह । कै छिपिया
'किरतेस' रे, कै पुर घर घर माह । —रा रू

३ देखो 'वराह' (रू भे)

विरिच, विरिचन, विरिचि-स पु [स विरिच, विरिचि] १ ग्रहा ।

२ विष्णु ।

३ महेश ।

विरिक्त, विरिक्त- देखो 'विरक्त' (रू भे.)

विरिक्त, विरिक्त, विरिक्ति—१ देखो 'व्रक्ष' (रू भे)

२ देखो 'वरस' (रू भे)

विरित्त-स पु [स व्रित्त, व्रित्ति] १ श्वान, कुत्ता । (ह ना मा)

२ देखो 'विरक्त' (रू. भे)

विरिद, विरिदि—देखो 'विरद' (रू भे)

उ०—१ वलिभद्र बुध तूँ ना विरद, सबळा चडिसँ सेस । परो
उघारै प्राणियो, 'पीर' कहै परसेस । —पी ग्र

उ०—२ चोरी बँठै चक्रघर, वलि सुहिद्रा रो वीर । वाबँ ना
सबळा विरिद, पुणँ कवेसर' पीर' । —पी ग्र.

ऊ०—३ अरण गुरद ओळगँ, दियँ परिकरमा दिणीअर । सिनिका-
दिलि समग, विरिद दँ वारट ईसर । —पी. ग्र

उ०—४ वावा तू वाळा विरिदि, प्रह्मो पुरिखि अलाह । सहसा-
बाहु सारिखा, गिल्लिया कितरा ग्राह । —पी ग्र.

विरिध—देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

विरिधि—१ देखो 'व्रद्ध' (रू भे)

२ देखो 'व्रद्धि' (रू भे)

विरिया—१ देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—१ एक विरियां मुख बोली रे, घुता रा जोगी । कानम
कूडळ गळ विच सेली, अब तेरो मुख खोली रे । रास रच्यो वसी-
वट जमुना, ता दिन कोनी कोली रे । —मीरा

उ०—२ उण विरिया 'अमसाह' रो, नरपति पेखँ नूर । सर सोखिम
करिवा सथा, ग्रीखम सूर करूर । —रा. रू.

उ०—३ पर उपगारी परम करुणा पर, सेवक अरणी समारो ।
भगत अनेक भवोदधि तारै, हम विरिया क्युँ विचारो । —स. कु

उ०—४ लोक व्यवहार राखण भणो, वीर समीपे जाय । पूछण रो
विरिया हुई, तरै लाज आई मन माय । —जयवाणी

उ०—५ अणहूत भाठै सू काठी हुवे । विरियां देख'र विणजे नी
सी वाणियो हीं गिंवार । छाती काठी करी हे । जे जिसी दिन नहीं
आत्रं । —दसदोख

उ०—६ फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणँ माथे ह्यफेरी
करणी पैलाई । पाच-सात विरियां, छुट्टी विसराम रे वखत, करणँ
नै जमी पर सूँवी सुवाण्यो, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायो ।
—दसदोख

विरिस, विरिसि—१ देखो 'वरस' (रू भे.)

२ देखो 'वरीस' (रू भे)

विरी—१ देखो 'विना' (रू भे)

उ०—सदा मद लेशै तना प्रावइ सकति, भाग हुइ सै जिका
जुडिसँ भगति । भागइ विरी करी कनां इद रो भलो, टळि गयो परी
जमराउ वाळो टलो । —पी. प्रं.

२ देखो 'वीडो' (रू भे.)

३ देखो 'वैरी' (रू भे)

उ०—वचन विनता उच्चरि रे, विहग, तू विरी थयु । गुण कह्या
नळरायना नि भाव मनन तांहां गयु । —नळाख्यात

विरुप्रो—देखो 'विरुप्रो' (रू भे)

उ०—१ विरुप्रो दुरमुख ऊपरं होजो, पिण जिन घरम करत ।
रयण दिवस रही, समकित सुद्ध सुमति प्रही होजो, भजे सदा भग-
वत । —वि. कु

उ०—२ मान गहेली माननी, विरुप्रउ बोल्हो वयण । विणु आदर
न रहँ वदे, सिंह सूर नँ सयण । —प. च चौ

उ०—३ पाणी तिहां नवि नीकलँ रे, सोकातुर सहू जात । धित-
वणा एहवी करँ रे, एतो विपइ वात । —वि. कु.

(स्त्री विरुई)

विरुद्धणी, विरुद्धनी—क्रि. अ —उलझना, फटना ।

विरुद्धणहार, हारी (हारी), विरुद्धणियो—वि० ।

विरुद्धिओडो विरुद्धियोडो, विरुद्धयोडो—भू० का० कृ० ।

विरुद्धीजणी, विरुद्धीजनी—भाव वा० ।

विरुद्धणी, विरुद्धनी—रू० भे० ।

विरुद्धियोडो—उलझा हुआ, फसा हुआ ।

(स्त्री विरुद्धियोडो)

विरुद्ध, विरुद्धी—देखो 'विरुद्धी' (रू. भे.)

उ०—आयो खुम विलागं अबरि, पूरं पारभ है गं पक्करि । उपा-
डेह छरा आघतरि, जाणं सीह विरुद्धी छप्परि । —गु रू व.

विरुद्ध्य, विरुद्ध्यो, विरुद्ध्य—देखो 'विरुद्ध्य' (रू. भे.)

उ०—दावं लाग जमी घणा हियं दूखिया दोयणा दूठ, प्रवाडा
अचुकिया लं भूडडा पाडीस । जुवारी 'भोपाळ' 'डूगी' दुहत्यां
भूखिया जगा, सेखा चाळं दूकिया विरुद्ध्यां गोरा सीस ।

—सफरदान सामोर

२ देखो 'विरुद्धी' (रू. भे.)

विरुद्धण, विरुद्धणी, विरुद्धनी—देखो 'विरुद्धणी' (रू. भे.)

विरुद्ध—स पु [स.] १ किसी के गुण, यश, प्रताप आदि का वर्णन ।

उ०—अमर मत्र उर घरे, विरुद्ध ऊचरं महावत, सक साह सपर्यं,
वयण न भर्यं अमुहावत । भाय दाय क्रमि भरं, पाय लगर खरळ-
कं । ऐंड वंड अडियल्ल नीठ दोय पैड सरकं । —रा. रू

२ राजा लोगो द्वारा प्राचीन काल में धारण की जाने वाली यश या प्रशंसासूचक पदवी ।

उ०—वेराजी रं पुत्र रामदासजी हुवा गाव दुघोड रं खेडं थापना
कीनी । बडो एक आखाळसिध रजपूत हुवो । विरुद्धारी रजपूत
हुवो । रामदास वेरावत नै उगणीस विरुद्ध हुवा । तिकं विरुद्धा रा
नाव—प्रथम पाखरिया विना रहणो नही । दूजो सबळा उथापण ।
तीजो निबळं थापण । चौथो जाचक जण तरवर । पाचमी परनारी
सहोदर । छठो चरुसुगाळ । सातमो सुखी . . . । —रा ता स.
३ यश, कीर्ति, गुण ।

उ०—१ गोपाळ गिज रा वाळ गोवाळ गोवाळ गति, छोगाळ
छत्राळ साईं प्रतिपाळ साच । जादवा उजाळ नमो विरुद्धा विसाळ
जूता, डाग थारी काळ मार्ये ससिपाळ डाच । —पी ग

उ०—२ छत्र, चामर, नीसाण, कुकमानगर री राज दीघो ।
कागरू देसनी राजा मारथी । लक्ष हाथी, नवलक्ष अस्व पायगा
हुई । अनेक विरुद्ध विराजमान राठीड कमघजवस री थापना कीघी ।

—रा व वि

उ०—३ हाडा घर गडमह हुई, जाडा विरुद्ध लुभाण । गाडा भरि

जाडा गळा, खाडा तुरक खपाण ।

—व. भा.

४ यशस्वी या यशपूर्ण कार्य, कीर्ति के कार्य ।

उ०—वाप जिम वडा ही वडा वणिया विरुद्ध, "सूर" हर आभरण
भवा सारू । महाराजा जु रं माड कीघी विरुद्ध, महोवर अंजती
राव मारू । —गु रू. व

५ कर्त्तव्य ।

उ०—१ तूवर दाटण भेलिया, अमं करं 'अभसाह' । सांभरि सिर
आयो सगह, नरपति विरुद्ध निवाह । —रा रू

उ०—प्रवहण तारथा कस्ट निवारथा, अटवी माहि उभारथा राज ।
विरुद्ध सभारथा घरमसी धारथा, सेवक काज सुधारथा राज ।

ध व ग.

७ देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

रू. भे.—बडद, वरद, विडद, विडद, विरद, विरद, विरद, विरिद, विरिदि,
विरुद, वीडद, व्रद, वि्रद, वि्रदि, विडद, विडदात्र, विडद, विडदाव,
विडुद, विरद, विरद, विरद, विरद, विरद, विरद, विरिद, विरिदि, विरुद,
विरुद, व्रद ।

विरुद्धधार, विरुद्धधारी—वि [स विरुद्ध+धारिन्] विरुद्ध धारण करने
वाला, विरुद्धपति ।

उ०—अराना किसन नंद छहु विघ हू अघक, चोजवान विरुद्धधार
चडता । कहर ससमाथ दस पाट लार्ध कवण, पथ उतराद गुण अथ
पढता । —हुरुमीचद खिडियो

रू. भे.—विरुद्धधार विरुद्धधारन विरुद्धधारी ।

विरुद्धपत, विरुद्धपति, विरुद्धपती—वि [स विरुद्ध+पति] विरुद्ध धारण
करने वाला, विरुद्धधारी ।

रू. भे.—बडदपत, बडदपति, बडदपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती,
विडदपत, विडदपति, विडदपती, विरदपत, विरदपति, विरदपती,
विरिदपत, विरिदपति, विरिदपती, विरुदपत, विरुदपति, विरुदपती,
विरुदाधिप, विरुदाधिपत, विरुदाधिपति, विरुदाधिपती, विरुदाधि-
पत, विरुदाधिपति, विरुदाधिपती, वरदपत, वरदपति, वरदपती,
वरुदाधिपत, वरुदाधिपति, वरुदाधिपती, विरुदपत, विरुदपती, विरुद-
पती, विरुदाधिप, विरुदाधिपति, विरुदाधिपती ।

विरुदाणी, विरुदाबी—क्रि. स.—१ जोश दिलाना, उत्साहित करना ।

२ कीर्तिगान करना, यशगान करना, गुणगान करना ।

३ ललकारना ।

विरुदाणहार, हारी (हारी), विरुदाणियो—वि० ।

विरुदायोडो—भू० का० कृ० ।

विरुदाईजणी, विरुदाईजनी—कर्म वा० ।

बडदाणी, बडदावो, बडदावणी, बडदाववो, बरदाणी; बरदाणी, बरदावणी, बरदाववो, बिडदाणी, बिडदावो, बिडदावणी, बिडदाववो बिडदाणी, बिडदावो, बिडदावणी, बिडदाववो, विरदाणी, विरदावो विरदावणी, विरदाववो, विरदाणी, विरदावो, विरदावणी, विरदाववो, बरदाणी, बरदावो, बरदावणी, बरदाववो, बिडदाणी, बिडदावो, बिडदावणी, बिडदाववो, बिडदाणी, बिडदावो, बिडदावणी बिडदाववो, विरदाणी विरदावो, विरदावणी, विरदाववो, विरदावणी, विरदाववो—रू० भे० ।

विरुदायक—वि —१ कीर्तनान, यश गान या गुणकथन करने वाला ।

२ जोश दिलाने वाला, उत्साहित करने वाला ।

रू भे —बरदायक, बिडदायक, विरदायक, विरुदायक, बरदायक, विरदायक ।

विरुदायोडो—भू का कृ०—१ जोश दिलाया हुआ, उत्साहित किया हुआ २ कीर्तनान किया हुआ यशगान किया हुआ ३ ललकारा हुआ ४ गुणगान किया हुआ ।

(स्त्री विरुदायोडी)

विरुदाळ —देखो 'विरुदाळी' (मह, रू भे)

विरुदाळी—स स्त्री —देवी दुर्गा ।

रू भे —बरदाळी, विरदाळी, विरदाळी, विरिदाळी, विरुदाळी, विरदाळी ब्रदाळी, ।

विरुदाळी—वि (स्त्री विरुदाळी) १ विरुदधारी, यशस्वी ।

२ वीर, बहादुर ।

३ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू भे —बरदाळी, विरदाळी, विरदाळी विरिदाळ, विरिदाळी, विरुदाळ, विरुदाळी, ब्रदाळी, विरदाळी ।

मह.,—बरदाळ, विरदाळ, विरदाळ, विरिदाळ, विरुदाळ, ब्रदाळ, विरदाळ ।

विरुदावणी, विरुदाववो—देखो 'विरुदाणी, विरुदावो' (रू. भे)

विरुदावणहार, हारी (हारी), विरुदावणियो—वि० ।

विरुदाविघोडो, विरुदाविघोडो, विरुदाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विरुदावीजणी, विरुदावीजवो—कर्म वा० ।

विरुदावळी, विरुदावली—स स्त्री [स.] १ कीर्तनान, यशवर्णन, प्रशंसा ।

उ०—१ राजविद्या नै श्रीलक्ष्मी रे, जाणै देस विदेम रे । वस तणी विरुदावळी, सभळावै सुविसेस रे । —श्रीपाळरास

उ०—२ देवकी माता आदै राणिया, साथै सहू परिवार । बोलै

विरुदावलिया, चारण सुजव सब, जय जय शब्द अपार ।

—जयवाणी

उ०—३ रथ वेठी नै सचरी, हुवो खाडेती भ्रात । भाटण देवै विरुदावली, आरीसी लेई हाथ । —जयवाणी

२ विरुदो या गुणों का संग्रह, गुणावली ।

उ०—विरुदावळी हसती बरीस भवनीस, लाख सासण कोडि बरीस अडड डडण अग्रजी गजण, अनमी असूत ताहि नमी भूत करण । सवळ रायथान उथापण, निरजोर राय सहाय करि थापण । खड खड खुरासाण की माण हीण करण, वेद मुजाद की ब्रजाद असरण के सरण । —रा रू.

रू भे.—विरदावळी, विरुदावळी, ब्रदाळी, बिडदावळ, बिडदावळी, विरदावळी ।

विरुदावियोडो—देखो 'विरुदायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विरुदावियोडी)

विरुदेत, विरुदेत—वि —१ विरुदधारी, विरुदपति, विरुदवान, यशस्वी ।

उ०—पाचै रतन तरुं वलै, जिहा तिहा पामै जैत । वीजा तै सहू वापडा, कुमर बडो विरुदेत । —वि कु.

२ विरुद या यश का वर्णन करने वाला ।

रू भे —वरदेत, विरदेत, विरदेत, विरुदेत, विरुदेत, वरदेत, वरदेत, विरदेत, विरदेत ।

विरुद्—देखो 'विरुद' (रू भे.)

उ०—१ वंडा जुधा गयदा ढाळवै खेत वेढीगारी, चाळवै समत्रा पजा विरुथी सचाळ । लूथवत्या अगरेजा सू, सूर काळ रूपी लडे, उनागा खडगा सीह विरुद्दा उजाळ । —बुधसिंह सिंहायच

उ०—२ इसा कमधज विरुद् अघार, महारिण मेछा मारणहार । ढढोळण दिल्ली है-वै ढाण, सकोडिम जेहू बडा सुरताण ।

—राव जैतसी री रासो

२ देखो 'विरुद' (रू भे)

उ०—नाथिया उनत्या नत्या विरुद्दा बठोठ नाथ । सिध टोळा साथिया सबोळा लीघा सग । घासाहरा दीघा घेर विभाडे हाथिया घडा, वेघ लागा लीघा घू विलातिया वरग ।

—डूगजी जवारजी री गीत

विरुद्ध—वि [स] १ जो प्रतिकूल हो, वैरी दुश्मन । (ह, ना. मा)

उ०—मिळ थाट कमघा दळ अनमघा, वघक सघा ऊवघा । अति वेघ विरुद्धा परस उरद्धा, किलव दगघा अघुकदा । —रा. रू.

२ विपरीत, उल्टा ।

उ०—१ तिण री सद्धा-हिंसा में धरम । सम्यक्त्वी नै पाप न लागै । सरव जगत रा जीव मारघा एक समी ससार वघै नही । सरव

जीव नी दया पात्या एक सभौ ससार घटै नही । होएहार हुवै जयु हुवै । करणी रो वाम नही केवली देरयो जद मोक्ष परही जासी । इत्यादिक विरुद्ध छद्दा स्वामीजी कर्म कहे । —भि. द्र

उ०—२ साजी नावा समान ती साधु आप तिरै घोरा नै तारै । फूटी नावा समान भेखघारी, आप हूबं भौला नै डबोवै । पत्थर की नावा समान तीन सो तेसठ पाखडी तै प्रत्यक्ष विरुद्ध दीस । —भि. द्र.

३ अवरुद्ध, अटका हुआ ।

४ घेरा हुआ, बन्द किया हुआ ।

५ जो मेल नहीं खाता हीं, वैमेल, असंगत ।

६ जो विरोध करे, विरोधी ।

७ अशुभ, बुरा ।

८ अनुचित, बुरा ।

उ०—परउपगारी रे सहनौ, हु हती, निस्टाचार न चोर रे । केहन दुख नवि दीघी काई विरुद्ध न कीघी, हा हा जाण्यो रे में इणहीज भवै । कीघी पातक घोर रे, न रहथो हु सीघी में सुजस न लीघी । —वि. कु.

९ जो वर्जित हो, निषिद्ध ।

स पु —१ दसवें मन्वन्तर ब्रह्मासावर्णि का एक देवगण ।

२ युद्ध ।

रू. भे —विरुद्ध, विरुद्ध, विरुध, विरुद, विरुद्, विरघ, विरुद्, विरघ, विरुध, विरुद, विरुध ।

विरुद्धकारमा—वि [स. विरुद्ध+कर्मा या कर्मन्] विपरीत आचरण वाला, बुरे चाल-चलन वाला ।

स पु —उक्त प्रकार का व्यक्ति ।

विरुद्धता—स स्त्री.—विरुद्ध होने की अवस्था या भाव, विपरीतता, प्रतिकूलता ।

विरुध, विरुधि—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ वाक्य दोल प्रतिकूल चरण बद, प्रगट वरण जिण रस प्रतिकूल । सुध लक्षण मति अरुच हुए सुण, मति विरुध रस अत-हत भूळ । —वा. दा.

उ०—२ सरिखा सू बळभद्र लोह साहियै, वडफरि उछजतै विरुधि । भला भली सति ती इज भजिया, जरासेन सिसुपाल जुधि ।—बेलि

विरुपाक्ष, विरुपाल, विरुपालि—देखो 'विरुपाक्ष' (रू. भे.)

(क. कु. बो. नां मा.)

विरुयउ, विरुयो—देखो 'विरुयो' (रू. भे.)

उ०—१ सध गिरुयउ रे, सौसध गुणै करि गिरुयउ रे । मात पिता सरिसउ हित उल्लभ, विम हीं करई नही विरुयउ, रे ।

—स. कु.

उ०—२ मन मा कुमर इम चितवै, ए थई तीजी वार । पीडा करै छै वापियो, विरुयो गोई वेकार । —वि. कु

उ०—३ ' ' दव अखाघउ, आगणइ कुउ अनइ कुटम आघउ, बानर अनइ बीछी राघन, काणी अनइ रिसाणी, साप अनइ पखालउ, फादम अनइ फटालउ, बाक अनइ विरुयो बोली, सरडो अनइ स्लेम्माणी । —व. स.

विरुहरण, विरुहणि, विरुहणो—देखो 'विरुहणो' (रू. भे.)

उ०—बीज रवइ चातुक लवइ, दादुर तिमरी तेण । विरुहणिआ तनि वेदना, आवण । सरइ विसेख । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सरद-निसाकर समसमइ, अं मइ जाणित भेउ । उहा सरी तिहा अमीअ जिमइ, विरुहणियां विरु देय ।

—मा. कां. प्र.

विरुअउ, विरुउ विरुओ—वि [स, विरुपक] (स्त्री विरुई) १ बुरा, खराब, भद्दा ।

उ०—१ आज इत्या तु का लवइ, विरुआ विरुआं वाक्य ? हुस-हणी, वायस भणी, जाणि म जावा ताकि ! —मा. का. प्र.

उ०—२ लोक सहुँ लापा लवइ, चित्त न राखि ठांहि । फागुण ना गुण स्या कहु ? विरुओ वसुधा माहि । —मा. का. प्र.

उ०—३ जउ अं विरुउ आचरइ, तउपण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर अं पूजोइ, अं निकळक चरित्र । —मा. का. प्र.

उ०—४ नवि मानिउ तुमिह हु एह वात अति हुई विरुई । अनु मुक घरि आविया पहु पुज इह वात गरुई । —सालिभद्र सूरि

२ बुरा, अहित ।

उ०—जा देव दुरयोधन बाहु वाही, नहीत तइ लेसिह पारथ साही । किमई विरुअउ करिसिइ न पारथ, ए उवि पूगी हिव हइ क्रतारथ । —सालिसूरि

३ बद शकल, कुरूप ।

४ बद जवान ।

रू. भे —विरुओ, विरुउ, विरुयउ, विरुयो ।

विरुउ—देखो 'विरुओ' (रू. भे.)

उ०—जउ अं विरुउ आचरइ, तउ पण ब्रह्म पवित्र । परमेस्वर अं पूजोइ, अं नीकळ क चरित्र । —मा. का. प्र.

विरुठक—स पु. [स] १ इक्ष्वाकुवशीय एक राजा ।

२ एक लोकपाल ।

विरुठ—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—भिडियो रुधनांघ भूपाल समीअम, धार पहार विरुठ घई । पहला चरियाम इता पडिया, ता पाछे गोइददास पई ।—गु. रू. व.

बिरुणा-वि —वीरो का, वीर-रस से सम्बन्धित ।

उ०—जोत्रा रगा वारणा बिरुणा नाद मामाजती, जटी-पू अजोणा नाद साभनी जगेव । बाजता बिडोणा नाद बाजियो राण-स बाबी, गुणा नाद अग्राजनी गाजियो गगेव । —हुकमीचद खिडियो

बिरुथ—देखो बरुथ' (रु भे)

बिरुथणी, बिरुथनी, बिरुथिनी—? वैशाख मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी ।

२ देखो 'बरुथणी' (रु भे) (ह नां मा)

बिरुथी—१ देखो 'बरुथी' (रु भे)

उ०—भुकै भूल वारणा थरक्क गजा पीठ भडा, 'केहरी' हुचक्क जटे ऊत्रक्कै क्रोधार । सामघमी केम चूकै जेण घाटे चूकै सूरौ, 'जगाणी' न रुकै भूरी बिरुथी जोघार । —किरपाराम कवियो

२ देखो 'बरुथ' (अल्पा, रु भे)

बिरुद—१ देखो 'बिरुद' (रु भे)

उ०—सकट माहै समरता, दादीजी करे दुख दूर रे लाल । वेडी राखी वूडती, परसिद्ध ए बिरुद पट्टर रे लाल । —घ व ग

बिरुध—१ देखो 'बिरुध' (रु भे)

उ०—दुद बिरुधा मदचळ, रोहा लगा राह । या जाळघर आवियो आसुर भालमसाह । —रा रु.

बिरुप-वि [स] १ बदशक्ल, बदसूरत, कुरूप, भद्दा ।

उ०—१ तेहनं रमणी चार सरूप जो, लखमी ती लाखे गाने गैह मारे ली । कितलं दिवसे थयो बिरुप जो, कवडी नी वित्त मिले नही जेडमा रे ली । —वि कु

उ०—२ सोना को नाम छै रुखमइयी निराउघ कीयी । आवघ काटि नाख्या । पकडयो पकडि केस उतारया । तव बिरुप दीम लागी । आपणो जीव खिज्या थका जु रुखमइया की जीव छोडयो सु रुखमणीजी को अतकरण जाणि के । —वेलि टी.

२ जिसके अनेक रूप हो, बहुरूपी ।

३ अप्राकृतिक, अद्भुत ।

४ क्रान्ति, आभा, शोभा, आदि से रहित ।

५ जिसका रूप बदल गया हो, बदले हुए रूप का ।

६ दूसरे या भिन्न प्रकार का ।

७ भयकर, भयावह, डरावना ।

स पु —१ श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया एक असुर ।

२ क्रोध का मानवी रूप, जिसमें उसने इक्ष्वाकु राजा से तत्त्वज्ञान पर सवाद किया था ।

३ श्रीकृष्ण का एक महारथी पुत्र ।

४ शिव का एक नामान्तर ।

५ अवरिख राजा का एक पुत्र जो पुषदश्व राजा का पिता था ।

६ बिगडी हुई या बदली हुई सूरत ।

रु. भे —दीरूप ।

बिरुपआगिरस—स पु. [स बिरुप+आगिरस] ऋग्वेद में वर्णित एक वैदिक सूक्तद्रष्टा, जो अगिराकुलोत्पन्न एक मन्त्रवार था ।

वि. वि —यह अगिरस ऋषि के आठ पुत्रों में से एक था । इसके सात भाइयों के नाम—बृहस्पति, उत्तथ्य, पयस्य, शान्ति, घोर, सवर्त्त एव सुधन्वन् थे ।

बिरुपक—स पु —१ पृथ्वी का शासक एक दानव । (प्राचीन)

२ आलवेय राक्षसों का अधिपति, जो नीलकन्या विकचा का पति व दण्डाकराल आदि का पिता था ।

बिरुपचक्ष, बिरुपचक्षु, बिरुपचख—स. पु [स. बिरुप+चक्षुस्] शिवजी का नाम ।

बिरुपता—स स्त्री —१ बिरुप होने की अवस्था ।

२ भयकरता, भयावहता ।

बिरुपपरिणाम—स. पु —एक रूपता से अनेक रूपता की ओर परिवर्तन । (दर्शन)

बिरुपरूप-वि [स बिरुप+रूप] भद्दा, वेडील, बदसूरत ।

उ०—उरघ केस बिरुपरूप, सुज निसा समाण । भ्रूह वका विक-राळ है, द्रढ दत केवाण । —गज-उद्धार

बिरुपा-वि स्त्री [स] बदसूरत, वेडील, भद्दी ।

स स्त्री —यम की एक पत्नी ।

बिरुपाक्ष, बिरुपाख, बिरुपाखि-वि. [स. बिरुप+अक्ष] वेढगे या डरावने नेत्र वाला ।

स पु —१ शिव, शंकर । (अ. मा)

२ शिव का एक गण ।

३ एकादश रुद्रों में से एक ।

४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

५ राम-रावण युद्ध में रावण का सेनापति जिसका वध सुग्रीव ने किया था ।

६ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

७ महिपासुर का अमात्य, एक राक्षस ।

८ महाभारत युद्ध में घटोत्कच का सारथि जो कर्ण-घटोत्कच युद्ध में कर्ण द्वारा मारा गया था ।

९ नरकासुर का सेनापति एक राक्षस, जो श्रीकृष्ण के द्वारा मारा गया था ।

१० एक दिग्गज । (पुराण)

११ इन्द्र-वृत्र युद्ध में वृत्र पक्षीय एक दानव जो कश्यप एव दनु के चौतीस पुत्रों में से एक था ।

१२ एक राक्षस जो हनुमान द्वारा प्रमदावन उजाडते समय मारा गया था ।

१३ एक नाग ।

स स्त्री.—१४ एक देवी का नाम ।

रू भे —विरूपाक्ष, विरूपाख, विरूपाखि ।

विरूपाक्षपूजन—स. पु [सं विरूपाक्ष+पूजन] पीप शुक्ला १४ को किया जाने वाला विरूपाक्ष देवी का पूजन ।

वि वि —उक्त पूजन के बाद उपकरण सहित महोक्ष का दान किया जाता है । इस प्रकार वर्षभर प्रत्येक शुक्ल, १४ को पूजन किया जाता है । इसके करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है और राक्षसादि का भय नहीं रहता है ।

विरूपिक, विरूपी-वि (स्त्री विरूपिका) बदसूरत, बदसकल का ।

स पु —कुरूप व्यक्ति ।

विरूहण, विरूहणि, विरूहणी—देखो 'विरहणी' (रू भे)

उ०—१ माठी थाइ मालती, कमल तरणा कुल नास । विरूहणियां दुख दाखविद्. मरि तूं मारगमास । —मा का. प्र

उ०—२ थणहर मज्झइ कारस्यु. विरूहणिया मुखि जेह । माघव मनि आलोच करि, करवी अघिकी तेह । —मा का प्र

विरेक, विरेचक, विरेचण, विरेचन—स पु [स विरेक, विरेचक, व विरेचन] दस्त लाने वाला पदार्थ या औषधि, जुलाब ।

विरेफ—स पु [स] १ जल की धारा, जलश्रोत, नदी ।

२ 'र' वर्ण ।

विरोगी-वि —रुग्ण, बीमार ।

उ०—विरह विरोगिण हुय रही, रोग न जाणै कोय । जनहरिया हरि कारणै, भुरि भुरि पजर होय । —अनुभववाणी

(स्त्री विरोगण, विरोगणी, विरोगिण, विरोगिनी)

विरोचण, विरोचन—स पु [स विरोचन] १ सूरज, सूर्य ।

(क. कु बो, डि को, ना मा, ना. डि को.)

२ चन्द्रमा, चाद ।

उ०—सूर धीर साखैत नीर तं सोहै कायर नर कर्प साध कू विमोहै । श्रीमहाराज की रूप अँसी निजर आयी, जाणै रोहिणी की सग विरोचन पायी । —रा रू

३ आग, अग्नि । (अ. मा., हु ना मा)

४ अरक, आक, मदार ।

५ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम जो महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया था ।

६ हिरण्यकश्यप के पुत्र भक्त प्रह्लाद का पुत्र व अर्वाकतलम् नामक पाचवें पाताल लोक के अधिपति वलि का पिता ।

वि. वि —पृथ्वीरूपी गी को दूहते समय यह बछड़ा बना था । यह ब्रह्मा के पास देवराज इन्द्र के साथ असुरों की ओर से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने हेतु गया था । यह 'तारकामय युद्ध' में असुरों की सेना का सेनापति था एवं इसी युद्ध में मारा गया था । इसके विशालाक्षी एवं देवी नामक दो पत्निया थी । यह यशोधरा का पिता व विरोचना का भाई था । इस के कुंभ, निकुम्भ, आयुष्मत्, क्षिति एवं वाष्कलि नामक पाच भाई थे ।

रू भे.— विरोचन, वीरोचन, वीरोचन, वीरोचद, वीरोचन ।

विरोचनसुत—स पु [स. विरोचन+सुत] १ प्रह्लाद पुत्र विरोचन का पुत्र राजा वलि ।

२ सूर्य पुत्र राजा करुण ।

रू भे.—वीरोचदसुत, वीरोचनसुत ।

विरोचना—स. स्त्री —१ भक्त प्रह्लाद की कन्या और विरोचन दंत्य की बहन, जो त्वष्ट्र को व्याही गई थी जिससे इसे विरेज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

२ स्कंद की एक अनुचरी का नामान्तर ।

विरोटियो—देखो 'वीरोटियो' (रू भे.)

(स्त्री विरोटण, विरोटणी)

विरोणी, विरोनी—क्रि. स —पिरोना ।

उ०—लक्ष्मीवतनइ ग्रहि एकि स्त्री अचछइ. हार अरद्धहार पिरोती, एकि सुँडै सुँडै चिरोती, देखीइ आमलक प्रमाण मोती विसाल, सुव-रणमय थाल, तेहना अपार भमाल, रूपानी कचौली, देखीइ वही-माहि भबोली । —व म

विरोद, विरोध—स पु. [स विरोध] १ वेमेल होने की अवस्था, वेमेल-पन ।

उ०—साहमी सु सतोल करीजइ, वयर विरोध निवार जी । सग-पण तँ जै साहमी केरउ, चतुर सुणी सुविचार जी । —स कु

२ शत्रुता दुस्मनी, वैर ।

उ०—१ साका विगर नाम न रहै सु एक माकी कीजै । तरं मूळराज, रतनसी नै दूदैं साकै री निसचै करी, नै पातसाह सू विरोध वधा-वण री करै । पिए वीकममी करण न दै । —नैणसी

उ०—२ बळीवळी वीरहक नौपता नगारा वागी, सेना पीठ लागी जोस धारिया सकोध । उबवरा आसमाण भुजाटां सेन री अण्णा, वेखी कस वस माथै तडिता विरोध । —बादरदान दधवाडियो

उ०—३ आगला जाळधर महाजोधार सारिखा रा वैर कळिया काढा । भसमासुर रा विरोध माहै इद्रादिक देवता वाढा ।

—मा. वचनिका

३ लडाई, झगडा, युद्ध ।

उ०—१ आदर विरोध अवरग सूं, थिरस बोध सुर थप्पियो ।

ऊधरा भडा 'अजमाल' रा, असुरा डर ऊधप्यिथी । —रा रु.

३०—२ य कमधज धरै धू अवर, ज्युं गगा मेळै जोगेसर । आदर जोध विरोध असका, बट रतत्रं ज्या सुर वका । —रा रु

४ वह प्रयत्न जो किसी कार्य आदि को रोकने हेतु किया जाता है ।

३०—वरसाळी रो भोकी, ऊट री असवारी, सा'वन सपैरी भेट दाय आयगी । ईं रै सागं चुनाव रै विरोध हाळी दरखास्त जकी म्है अगवळा रै के'णै सू फाड दी जके री ही जिकर करथी अर मनै दोसी सावत कर दियो । —दसदोख

५ अनवनी, वैमनस्यता ।

६ बाधा, रुकावट ।

७ भिन्न-भिन्न तथ्यों मे पाया जाने वाला तत्त्व जो स्वभाविक रूप से एक दूसरे के विपरीत हो । ज्युं-दूध अर नीवू

८ विपरीत स्थिति ।

९ नियंत्रण, दमन ।

१० विपरीतता, प्रतिकूलता ।

११ मुकाबला, सामना ।

१२ एक अर्थालंकार, जिसमे, जाति, गुण, क्रिया और द्रव्य मे से किसी के साथ विरोध पाया जाता हो ।

१३ अनान्तक का पिता व वात नामक राक्षस का पुत्र ।

रु भे.—वरोध, वरोध, विरोध ।

विरोधक—वि.—विरोध करने वाला, विरोधी ।

३०—है नह 'पावु' हाथ ताव अवध 'जीदै' तणी । वेध विरोधक वात कर, कोय विघन करावसी । —पा प्र

विरोधणी, विरोधवी—क्रि स [स विरोधनम्] १ वेमेल करना, अस-गत करना ।

२ शत्रुता करना, दुश्मनी करना, वैर करना ।

३ लडाईं करना, भगडा करना, युद्ध करना ।

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न करना ।

५ अनवनी करना, वैमनस्य करना ।

६ बाधा डालना, रुकावट डालना ।

७ नियंत्रण करना, दमन करना ।

८ मुकाबला करना, सामना करना ।

३०—माडव खुरम अडप्यिथी, हालाविया हमल्ल । साह विरोधण कळि मयण, इळ करिवा ऊधल्ल । —गु. रु. व

९ खण्डन करना ।

विरोधणहार, हारी (हारी), विरोधणियों—वि० ।

विरोधिओडो, विरोधियोडो, विरोध्योडो—भू० का० कृ० ।

विरोधीजणो, विरोधीजवो—कर्म वा० ।

विरोधणी, विरोधवी—रु० भे० ।

विरोधाचरण—स पु. [स विरुद्ध+आचरण] १ हित के प्रतिकूल आचरण ।

२ शत्रुता का व्यवहार ।

३ सामान्य आचरण के विरुद्ध आचरण ।

विरोधाभास—देखो 'विरोध' (१२)

विरोधिता—स स्त्री —१ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैर ।

२ नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि । (फलित ज्योतिष)

विरोधियोडो—भू. का. कृ —१ वेमेल किया हुआ, असगत किया हुआ.

२ शत्रुता किया हुआ, दुश्मनी किया हुआ, वैर किया हुआ.

३ लडाईं किया हुआ, भगडा किया हुआ, युद्ध किया हुआ

४ किसी कार्य आदि को रोकने का प्रयत्न किया हुआ

५ अनवनी किया हुआ, वैमनस्य किया हुआ.

६ बाधा डाला हुआ, रुकावट डाला हुआ

७ नियंत्रण किया हुआ, दमन किया हुआ.

८ मुकाबला किया हुआ, सामना किया हुआ.

९ खण्डन किया हुआ ।

(स्त्री विरोधियोडी)

विरोधी—वि [स विरोधिन्] १ विरोध करने वाले पक्ष का, विपक्षी, प्रतिद्वन्द्वी ।

३०—माहोमाहि विरोधिया, सीला ऊपरि सूर । भवसिद्धि भीखारी थया, भूय तलि हारी भूर । —मा. का प्र.

२ सामना करने वाला, मुकाबला करने वाला ।

३ बाधा डालने वाला, बाधक ।

४ शत्रु, दुश्मन, वैरी । (अ मा, ह. ना मा)

५ दमन करने वाला, नियंत्रक ।

६ युद्ध करने वाला, भगडा करने वाला ।

७ खिलाफ, प्रतिकूल ।

३०—कृष्णजी का जुदा जुदा रूप देखण लागा । कामिनी कहूँ काम आयी । सत्रु कहण लागा काळ आयी । और जिकेह विरोधी न था त्याह सीनारायण को सरूप जाण्यी । —वेलि टी.

स पु —साठ सवत्सरो मे से २३ वां और विस्णुवीसी में से तीसरे सवत्सर का नाम ।

रु भे—विरोधी ।

विरोधोपमा—स स्त्री [स] उपमा अलंकार का एक भेद विशेष, जिसमें किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी पदार्थों से दी जाती हो ।

विरोध—स पु —१ भ्रम, भ्रान्ति ।

२ नाश, समाप्ति ।

३ विघ्न, बाधा ।

४ अव्यवस्था, गडबडी ।

५ युद्ध, भगडा ।

उ०—ऊगा सूर समी ऊदावत, वढे वसू छळ बोल विरोळ । चलु-
अल अरी तणे चीतोडा, चद्रप्रहास रहे नत चोळ ।

—प्रथीराज राठीड

६ मथने की क्रिया, मन्थन ।

उ०—दोळा दळ दिल्ली वाळा, पचरूप करि प्रव्यत-माळा । सामद
विरोळ सकज्जे, धमचवक मिया कमधज्जे । —गु रू व.

वि —नाश करने वाला, ध्वस करने वाला ।

उ०—हालें आप सभावा उडणी प्रथीनाथ हीदू, वाज सीधू श्रीराक
में छ खडा विरोळ । मदा लागी खीजियो खूमाण खगा खळा माथें,
छदा लागी रीम्कियो पुरद्र वाळी छोळ ।

—भीमसिंह सीमोदियो री गीत

रू. भे —वरोळ ।

विरोक्षण—वि —१ तहस-नहस करने वाला ।

२ अस्त-व्यस्त करने वाला ।

३ मारने वाला, सहार करने वाला ।

४ मथने वाला, विलोडित करने वाला ।

विरोळणी, विरोळवी—फि स [स विलोडन] १ तहस-नहस करना, वर-
वाद करना, ध्वस करना ।

उ०—सज दळ सबळ सीस पतसाहा, दिली विरोळण 'करण' दुवो ।
पोढाप तरवार पाकडे, हीमत करे जवान हुवो ।

—वीर द्रगदास राठीड री गीत

२ अस्त-व्यस्त करना, अव्यवस्थित करना ।

३ सहार करना, नाश करना, मारना ।

उ०—१ विभाडे गौळ फिरगाण रा द्रहवटा, गंधडा विरोळण जोम
गाढे । लीण मे खाग भकवौळ नवसाहसी, चौळ गरकाव रग दधा
चाढे ।

—सिवनार्थसिंह कृपावत री गीत

उ०—२ आठ सं खळा नै हेक ढावडे विरोळथा आचा दरोळथा
देयता देवा मथायी खीरोध । अचायो दिखायो तीर सारंगा खनेस
आयो, सिखायो पिनाकी वीरभद्र सो विरोध ।

—बादरदान दधवाडियो

उ०—३ पाच सोवायता गिळ 'ऊमो' सुपह, विरोळें धौकळें करे
वाहा । विडंग आदेसियो दळें वहळायता, सार आदेसियो पात-
साहा ।

—हरनार्थसिंह करमसौत री गीत

उ०—४ घडा सिर जोम, ताजें घडा घमाधम, कागुरा तरफ वाचें
कुहाडा । फिली गिरधरण ओळें रयण वध कडा, विरोळें चोवडा
फिरग वाळा ।

—कविराजा बाकीदास

४ मथन करना, मथना, विलोडित करना ।

उ०—१ रिण रोहिड दधि मथाण, विरोळें लीघा रतन लाल ।
रत रळ सुपाण विमाण, विडारें हूरा कीघा हाल । —मा. वचनिका

उ०—२ समहर गजबौळ रोळिअे सावळ, बैसर बैसर तोसती
वळ । दिली सहायत 'अचळ' दूसरी, 'दूद' विरोळें दिखण दळ ।

—दूदा नगराजीत री गीत

५ उपभोग करना ।

६ बिखेरना, छितराना ।

७ समाप्त करना, मिटाना ।

उ०—तउ वीस हथि विरोळि, तइ वीस हथि विरोळियइ । भावठि
भागइ तू तरणइ हिण्यउ सु काइ हिगोळि । —अ वचनिका

८ गुजरना, पार करना ।

उ०—करहा, चरि चरि म चरि चरि, चरि चरि म चरि म फूर ।
जं वन काहिह विरोळियउ, तं वन मेल्हे हूर । —ढो. मा

९ पराजित करना, हराना ।

उ०—जतराव जणो पुल वाग भलें, ह्य थाट विरोळण भील हलें ।
कळ चाळ रोसाळ बुहा कडचें, यण ताळ घेनाळ लयां अडचें ।

—पा. प्र

१०—रस लेना ।

उ०—भमरि मालति जेम विरोलियइ, तिभ न केतकि केलि धधो-
लियइ । अणह काजि न डूगर ढोलियइ, जडह कालु करी कुल
बोलियइ ।

—सालिसुरि

विरोळणहार. हारी (हारी), विरोळणियो—वि० ।

विरोळिओडी, विरोळियोडी, विरोळचोडी—भू० का० कृ० ।

विरोळीजणो, विरोळीजवो—कर्म वा० ।

वरोळणो, वरोळवो, विरोळणो, विरोळवो, विरोळणो, विरोळवो,
वरोळणो, वरोळवो, वीरोळणो, वीरोळवो—रू० भे० ।

विरोळियोडी—भू का कृ —तहम-नहस किया हुआ, वरवाद किया हुआ,
ध्वम किया हुआ २ अस्त-व्यस्त किया हुआ, अव्यवस्थित किया
हुआ ३ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ
४ मथन किया हुआ मथा हुआ, विलोडित किया हुआ ५ उप-
भोग किया हुआ ६ बिखेरा हुआ, छितराया हुआ ७ समाप्त
किया हुआ, मिटाया हुआ ८ गुजरा हुआ, पार किया हुआ
९ पराजित किया हुआ, हरया हुआ १० रस लिया हुआ
(स्त्री विरोळियोडी)

विरोहण—म पु —१ एक नाग विशेष जो तक्षक कुल में उत्पन्न हुआ
था ।

२ वह सन्तान जिसकी माता का वरुण पिता की अपेक्षा उच्च हो ।

बिलद—स. पु.—१ बालिहत ।

उ०—सुइया साकळी रूपै रा चमकनै रह्या छै । सात-सात विलदां
री लाबी खोळी मेण कपड री सूं वाहर काढजै छै । वादळ माह
बीज नीसरी आकास री, कना तीज रै तमासै मास पातळी कामणी
पोसाख कर नीसरी, इण भात री वंदूका मोटघार तिरता-तिरता
लेय उण घडनावा आया छै । —रा. सा स

२ देखो 'बुलद' (रू भे)

उ०—१ विराण मीर धोठा विलद, नीसाण फोल दौठा नरिंद ।
घरहडै क्रोध परचड घूप, भुज डड अडै बहमड भूप । —वि. स.

उ०—२ वडवडै भी वडवडै, वड पुरख विलदै, जाण पिछाण
जाहारा, दिल अदर ददै । सीधा आगम च्यार वेद, कतेब कहदै,
पुतलिया नट हदिया, क्या आदम गदै । —केसोदास गाडण

रू भे —विलद बुलद ।

विलव-स पु [स विलम्ब] १ आवश्यक, उचित या सामान्य समय
से अधिक समय लगने की स्थिति ।

उ०—रिमि रूप रमाया खळ सहि खाया, रोम गमाया गुणु गाय ।
घिणीयाणी धाया विलव न लाया, आराधा ना सुणि आया ।
—पी ग्र.

२ आवश्यक उचित या सामान्य समय से अधिक लगने वाला
समय, देर, अति काल ।

उ०—घरिये भोग विलव न करिये, मेरी मान पियारी । जीमं
म्हारी प्यारी गिरघर, साधा नै वेग बुला री । —मीरा

३ आलस्य, दीर्घसूत्रता ।

रू भे —विलव, विलम, विलभ, विलम ।

विलवण, विलवन-स स्त्री [स. विलम्बनम्] १ देर करने की क्रिया,
विलव करने की क्रिया ।

२ लटकने की क्रिया ।

३ आश्रय लेने की क्रिया, आश्रित होने की क्रिया ।

विलवणी, विलववी-क्रि. स [स विलम्बनम्] १ देर करना, विलम्ब
करना ।

उ०—गढ थो माठ सेना लगै जी, करचो हारा डोर । वार घणी
विलववी जी, जतन करेयो जोर । —प च. चौ

२ आलिंगन करना ।

उ०—सावण आयउ साहिवा, पगइ विलवी गार । ब्रच्छ विलवी
वेलड्या, नरा विलवी नार । —ढो मा

२ स्पर्श करना, छूना ।

उ०—१ पवन जु चाल्यो छै । सु नदि नदि कै विखै तिरती आवै
छै । रूख छै त्या कै विखै विलवती आवै छै । वेल्पा सौं लपटाती
आवै छै । दसण हुता जु उत्तर दिसा नै चाल्यो छै । —वेलि टी

उ०—२ हरीया ग्रैसा हरि भया, तैसा भया न कोय । वाकं पाय
विलविये, पारि उतारै सोय । —अनुभववाणी

३ पकडना, ग्रहण करना ।

उ०—१ गाडर पूछ विलव कर, कोइ पार लंधावै, रंक क्लदा
मार कर, कोइ मल कहावै । वेतर भुन आराध कर, कोइ देव मनावै,
डाकण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावै । —केसोदास गाडण

उ०—२ केईक पाना फूलडा, केईक विलव्या डाल । हरीया भूल
विलविया, फल पाया असराल । —अनुभववाणी

क्रि अ —१ देर होना, विलम्ब होना ।

२ फसना, घसना ।

उ०—माया कौ कादो विन्यो, अंध विलव्या आय । हरीया नर
आधा घसै, ज्यु ज्यु कळता जाय । —अनुभववाणी

३ आश्रित होना, सहारा लेना ।

उ०—सजण, गुणै समुह तू, तर तर थक्की तेण । अवगुण एक न
साभरइ, रहु विलवी जेण । —ढो. मा.

४ मग्न होना, लीन होना ।

५ रक्त होना, आसक्त होना ।

उ०—दाद खाटा मीठा खाइ कर, स्वाद चित्त दीया । इनमे जीव
विलविया, हरि नाम न लीया । —दादूवाणी

६ लगना, लिपटना ।

उ०—सावण आयउ साहिवा, पगइ विळवी गार । ब्रच्छ विलवी
वेलड्या नरा विलवी नार । —ढो मा.

७ उलझना, फसना ।

८ सहारा लेना, लटकना ।

९ रुकना, अवरुद्ध होना ।

१०—चिपकना ।

उ०—१ सावण आयउ साहिवा, पगइ विलवी गार । ब्रच्छ
विलवी वेलड्या, नरा विलवी नार । —ढो मा.

उ०—२ पावस मास प्रगट्टियउ, पगइ विलवइ गारि । घण की
आही वीनती, पावस पथ निवारि । —ढो मा.

११ हर्षित होना, खुश होना ।

१२ अमित होना, भूलना ।

उ०—हरीया मिरघ विलवियो, हरथा देख वन घास । जीवण का
सासा पड्या, इण आजूणी वास । —अनुभववाणी

१३ मानसिक स्थिति का किसी ओर प्रवृत्त होना, लगना ।

उ०—साई सौं सहजै रमू रे, और नही आन देव । तहा मन विल-
विया, जहा धलख अमेव रे । —दादूवाणी

१४ देखो 'विलवणी, विलवणी' (रू. भे.)

विलवणहार, हारी (हारी), विलवणियो—वि० ।

विलवियोडो, विलवियोडो, विलवियोडो—भू० का० कृ० ।

विलवोजणी विलवोजणी—कर्म, भाव वा० ।

विलवणी, विलवणी, विलवणी, विलवणी—रू० भे० ।

विलविका—स पु —एक प्रकार का घनीर्ण रोग । (भ्रमरत)

विलवित्त—वि [स. विलम्बित] १ लटवा हुआ, झुनता हुआ ।

२ जिसमें देर हुई हो ।

३ देर करने वाला ।

४ सुस्त या धीरे चलने वाला ।

विलवियोडो—भू. का. कृ. —१ देर किया हुआ, विलम्ब किया हुआ.

२ आलिंगन किया हुआ ३ स्पर्श किया हुआ, छूपा हुआ.

४ पकड़ा हुआ, ग्रहण किया हुआ. ५ देर हुआ हुआ, विलम्ब

हुवा हुआ ६ आश्रित हुआ हुआ, सहारा लिया हुआ. ७ मग्न

हुवा हुआ, लीन हुआ हुआ. ८ लगा हुआ, लिपटा हुआ ९

उलभा हुआ, फसा हुआ १० महारा लिया हुआ, लटका हुआ.

११ रुका भवरुद्ध हुआ हुआ. १२ चिपका हुआ १३ रक्त हुआ

हुआ, आसक्त हुआ हुआ. १४ हवित हुआ हुआ, खुस हुआ हुआ

१५ भ्रमित हुआ हुआ १६ मानसिक स्थिति का किसी ओर

प्रवृत्त हुआ हुआ, लगा हुआ ।

१७ देखो विलवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलवियोडो)

विलभ—देखो 'विलभ' (रू. भे.)

उ०—वीरभाण विचारद रे, मन वर सभारद रे, इण सोहाग उतारयो मुभु माता तणी रे, जो परही दीज्य रे, सहिजइ छूटीज्य रे, कीज्य न विलभ इण वार्त घणी रे । —प. घ. चो

विल, विल—१ देखो 'विल' (रू. भे.)

२ देखो 'विल' (रू. भे.)

विलउ—देखो 'विलय' (रू. भे.)

उ०—किसू पहतउ द्वापरि प्रलउ, ईह लगद कइ अमह परि विलउ । अरजुन बोलइ रे अकुलीन, अरजुन भूकिसि मइ सु हीन ।

—सालिभद्र सूरि

विलकणी, विलकणी—देखो 'विलवणी, विलवणी' (रू. भे.)

उ०—अहन डील विलकणी, कर कर छूटा केस । भसम लगाऊ अग पर, ऊपर बरसै केस । —स्त्री हरिरामजी महाराज

विलकणहार, हारी (हारी), विलकणियो—वि० ।

विलकियोडो, विलकियोडो, विलकियोडो—भू० का० कृ० ।

विलकौजणी, विलकौजणी—भाव वा० ।

विलकाल—देखो 'विलक' (रू. भे.)

विलकणणी, विलकणणी—देखो 'विलवुट्टणी, विलवुट्टणी' (रू. भे.)

उ०—अरुण पर घाया घनंग, विले मास विल विलकणणी । त्रुष्टी कृति कीपी कृपा, माहव भगता मा विले । —पौ. घ.

विलकणणहार, हारी (हारी), विलकणणियो—वि० ।

विलकणणियोडो, विलकणणियोडो, विलकणणियोडो—भू० का० कृ० ।

विलकणणियोडो, विलकणणियोडो—भाव वा० ।

विलकणियोडो—देखो 'विलकणियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलकणियोडो)

विलकियोडो—देखो 'विलकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलकियोडो)

विलकुण—देखो 'विलकुण' (रू. भे.)

विलकुणणी, विलकुणणी—क्रि. घ —१ ध्याकुल होना, विज्ञान होना ।

उ०—हय एन निरगणहार, वीली वीलीही विलकुणणी । —दो. मा.

२ प्रसन्न होना, हवित होना ।

उ०—१ विलकुणणी गजगणी वदन, निरगं रुन नगधद रो । वीर्य

विकास प्रामे अजक, देवि प्रकास दुष्टि रो । —च. रू.

उ०—२ धरावति आज नगघोर रज पणी, पणी भुद जात जस-

याम रिधि पणी । कर्षी निति देवि मा माहि विलकुणणी, भनी

विधि तेज रवि जेम भइहळ । —स. वि.

उ०—३ गळी रा भीस महारुद मे पेस वीरे । दुष्ट मरे मरगा-

पुर रो दुम टळ । इानी नांगळ, विलकुणणी वदन पुदर बोलियो-

जाणं कर उजळा, अमीलक मोनाहळ मा वचन भट्टे ।

—मा. वचनिका

उ०—४ गळीहळा वत चळवळी मार, वीमहय भर विलकुणणी ।

मह वळा चव रघुनाथ भमला, मध सुमयद मडळी । —र. ज. प्र.

उ०—५ मन में ती देविया ने पणी विलकुणणी । चौई सोच की

नूरत वीदी । जवै सायण्या नै वही, अर्ये दृ मांड करू । मनै ती

देवि लीयो । पवन वी वरी हुयो । —पना

३ आतुर होना, उतावला होना ।

उ०—१ भइ वीस छला मर गं मरियो घी 'गोणी' लघुसर उत-

रियो । अर्ये सत्र नैडोय सभरियो, कळ चालण 'घोर' विलकुणणी ।

—गो. रू.

उ०—२ वीरति विदेया विलकुणणी, मुग राग म्छ झूहा मिळिये ।

चल लाल कीध मुव कीध चोळ, कळकळ तेजे विकसे कपोळ ।

—गु. रू. व.

उ०—३ विलकुणणी वधाईदार वधि, आणद उछम अयाह सु ।

आगम्भ खवर अमसाह' री, जाय कहे 'जसाह' सूं । —सू प्र
 ४ प्रफुल्लित होना, फूलना ।
 उ०—१ हणमत द्रोण हिल्लोळवा, वीरा-तन किरि बिळकुळ्टे ।
 दळ-धम विदण दखणाधि सू, ऐम ऊठियो भुज आमळे ।
 —गु रू व.
 उ०—२ बिळकुळियो वदन जेम वाकारघो, सग्रहि धनुख पुणुच
 सर सधि । किसन रुकम आउव छेदण कजि, वेलखि अणो मूठि
 दिठि वधि । —वेलि
 ५ दैदिप्यमान होना, चमकना ।
 उ०—१ वीरति मुख सूरति बिळकुळिय, कमधज तेज कमळ
 कळमळय । किसन वरण माफिल कठलिय, सूरज किरण जाण
 भळहळिय । —गु रू व
 उ०—२ सवण वयण सभळ, नयण बिळकुळे निरमळ, जोत वदन
 भळहळ, लाज भुजि भळे स उज्जळ । सूर विरत सल्लळ, ज्वाळ
 भळहळ फुणवर, कना प्रळकति करण, किरण परजळ दियकर ।
 —रा रू
 ६ चुनौती देना, ललकारना ।
 ७ उत्साहित होना, जोश मे आना ।
 उ०—१ सुज आप सपड वसभ लीय, वप वाधय जोस बिळकुळिय ।
 कष थापळ रजत दूर कियो, दाखे मुख वदळ गाम दियो ।
 —गो रू
 उ०—२ जोगवत 'पेमी' तिए जामळ, दिल बिळकुळें मिळें जद
 कदळ । 'वखराजोत' 'अखी' वरदाई, पाया कळह जाणि रिघ पाई ।
 —रा रू
 उ०—३ जोघपुरी जुघ जोपवा, गढ लेवा 'गजसाह । विरती कोडी
 बिळकुळें, रीसाणो रिमराह । —गु रू व
 ८ चचलता के साथ हिलना-डोलना ।
 ९ निकलना ।
 उ०—मारवणी मुख-ससि तण्ड, कमतूरी महकाइ । पावस पन्नग
 पीवणउ, बिळकुळियउ तिए ठाइ । —ढो मा
 बिळकुळणहार, हारो (हारी), बिळकुळणियो—वि० ।
 बिळकुळियोडी, बिळकुळियोडी, बिळकुळयोडी—भू० का० कृ० ।
 बिळकुळीजणो, बिळकुळीजवो—भाव वा० ।
 बिळकुळणो, बिळकुळवो, बिळकुळणो, बिळकुळवो—रू० भे० ।
 बिळकुळियोडी—भू का कृ —१ व्याकुल हुवा हुमा, विद्वल हुवा हुमा
 २ प्रसन्न हुवा हुमा, हर्षित हुवा हुमा. ३ आतुर हुवा हुमा,
 उतावला हुवा हुमा ४ प्रफुल्लित हुवा हुमा, फूला हुमा
 ५ दैदिप्यमान हुवा हुमा, चमका हुमा ६ चुनौती दिया हुमा,

ललकारा हुमा. ७ उत्साहित हुवा हुमा, जोश मे आया हुमा
 ८ चचलता के साथ हिला-डुला हुमा ।
 (स्त्री बिळकुळियोडी)

बिलक्षणी, बिलक्षवो—देखो 'बिलखणी, बिलखवो' (रू. भे)
 उ०—१ कर मूठ धनख छूट विसक्व, लेखा पक्व सर नक्व । वध
 सूर हरक्व और बिलक्व, चाव परक्व रवि चक्व । —रा रू
 उ०—२ स्वजन वेवाहिय धूरद भूरद निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपा
 डिय माडिय आणीय गेहि । भूतलि भमरभोलिय डोलिय जिम न
 चडत, बिलवद कुमरि बिलक्विय देखिय तै व्रत्तात ।
 —जयसेखर सूरि

बिलक्वणहार, हारो (हारी), बिलक्वणियो—वि० ।
 बिलक्वणोडी, बिलक्वियोडी, बिलक्वयोडी—भू० का० कृ० ।
 बिलक्वलीजणो, बिलक्वलीजवो—भाव वा० ।

बिलक्वियोडी—देखो 'बिलक्वियोडी' (रू भे)
 (स्त्री बिलक्वियोडी)
 बिलक्वो—देखो 'बिलक्वो' (रू भे)

उ०—सावुरा पाणो विना, रहइ बिलक्वा जेम । ढाढी साहिव सू
 कहइ, मी मन तो विण एम । —ढो मा

बिलक्ष-वि [स] १ विशेष चिन्हो या लक्षणो रहित, लक्षणहीन ।
 २ जिसका कोई लक्ष्य न हो, लक्ष्य रहित ।
 ३ विकल, व्याकुल ।
 ४ अद्भुत, अनोखा, अनूठा, असाधारण ।
 ५ लजा से युक्त, सजित ।
 ६ आश्चर्ययुक्त चकित, विम्भित ।
 रू भे —बिलक्षि ।

बिलक्षण-वि [सं] १ चिन्हो या लक्षणो से रहित, लक्षणहीन ।
 २ अद्भुत, अनोखा, विचित्र ।
 उ०—वीर पणो पती री दिखाण सारू कहे छे-थें जिका रा वधावा
 गावो छो तिका रा सुभाव सु म्हारा पती री सुभाव बिलक्षण छे-
 किसी कि दमगळ (जुद्ध) विना दुचितो रहै अनै जुद्ध में कगळ वग-
 तर रा जत कडिया ही नहीं जई इमा वीरपणा रा सुभाव है ।
 —वी स. टी

३ अशुभ लक्षणो वाला ।
 ४ विशेष लक्षणो वाला ।
 रू भे —बिलच्छण, बिलच्छन, बिलख, बिलखण, बिलखणो,
 बिलच्छण, बिलच्छन ।

बिलक्षणतो—स स्त्री —बिलक्षण होने की अवस्था या भाव ।
 बिलक्षि—देखो 'बिलक्ष' (रू भे.)

उ०—गोरी गलि वलगी रही, बेलि चढी जिम ब्रक्ति । विनय करी-
नइ विलपती, विधि विधि थई विलक्ति । —मा. का प्र.

विलख, विलखण—वि—खिन्न, उदास, विकल, व्याकुल ।

उ०—नमामी सरवेसा विलख लयसेखाक्षर नमी, नमी सरवग्यात्मा
परम परमात्मा वर नमी । नमी स्रस्ता त्वस्ता अगम ऊतकस्ता अह
नमी, नमी सेस्टी जेस्टी मुदित परमेस्टी मह नमी । —ऊ का
रू. भे—विलख, विलखण ।

विलखणो—वि [स्त्री विलखणी] १ व्याकुल, वेचन ।

२ रोने वाला ।

३ व्यथित, दु खी ।

४ मुरझाने वाला ।

५ भयभीत, घबराया हुआ ।

रू. भे,—विलखणी ।

विलखणो, विलखणो—क्रि अ—१ व्याकुल होना, वेचन होना ।

उ०—साळू डी साळू डी गोरी काई विलखै, मेह बिना धरती तरसै,
मेहडो हुवण दै । —लो गी

२ व्यथित होना, दु खी होना ।

उ०—थारा जीव अर म्हारा जीव रो मन मिळग्यो, पळें घरवास
मे काई खामी । मान तो थारी मरजी, नीतर म्हें धरं जावण तो
नी द् । म्हारें दिवडा री नागण थारें बिना तडफ, विलखै ।
—फुलवाडी

३ अभाव की स्थिति मे प्रत्याशा से ताकना ।

४ मुरझाना, कुम्हलाना ।

उ०—मेरें साम सुहाग का, छाना न रहे नूर । विलखै वदन दुहा-
गिनी, हरीया ऊगें सूर । —अनुभववाणी

५ विलाप करना, रोना ।

६ भयभीत होना, घबराना ।

उ०—विलखीजें रिरातूर वाजिया, अदग वाजिया हरख मचें ।
घाग तीरथ चढे, घूजणी, प्यारा तीरथ करण पचें ।

—कविराजा बाकीदास

विलखणहार, हारो (हारी), विलखणियो—वि० ।

विलखिअणो, विलखियो, विलखियो—भू० का० कृ० ।

विलखीजणो, विलखीजवो—भाव वा० ।

विलखणो, विलखवो, विलखाणो, विलखावो, विलखाणो, विल-
खावो, विलखावणो, विलखाववो—रू० भे० ।

विलखाणो, विलखावो—देखो 'विलखणी, विलखवो' (रू. भे.)

विलखणहार, हारो (हारी), विलखाणियो—वि० ।

विलखायोडो—भू० का० कृ० ।

विलखाईजणो, विलखाईजवो—भाव वा० ।

विलखायोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलखायोडो)

विलखावणो, विलखाववो—देखो 'विलखणी, विलखवो' (रू. भे.)

उ०—महा माहियो जाग उज्जैण गंगा मचें, रुदन विलखावतो
रही रोती । हेळी "अमर" री हीय करती हरख, "जसा" अपधर
रही वाट जोती । —नरहरदास वारहूठ

विलखावणहार, हारो (हारी), विलखावणियो—वि० ।

विलखाविअणो, विलखावियोडो, विलखावियोडो—भू० का० कृ० ।

विलखावोजणो, विलखावोजवो—भाव वा० ।

विलखावियोडो—देखो 'विलखियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलखावियोडो)

विलखियोडो—भू का कृ—१ व्याकुल हुवा हुआ, वेचन हुवा हुआ
२ व्यथित हुवा हुआ, दु खी हुवा हुआ ३ अभाव की स्थिति मे
प्रत्याशा से ताका हुआ ४ मुरझाया हुआ, कुम्हलाया हुआ
५ विलाप किया हुआ, रोया हुआ. ६ भयभीत हुवा हुआ, घव-
राया हुआ ।

(स्त्री विलखियोडो)

विलखू—देखो 'विलखी' (रू. भे.)

उ०—कोलाहल साभल्यउ अपार, कटक माहि वूठठ अगार । कटक
माहि सह दखीऊ हूऊ, घोई माणस विलखू थयूं । —का दे प्र

विलखोडो—देखो 'विलखी' (अल्पा, रू. भे.)

विलखी विलख्यो—वि. (स्त्री. विलखी) १ उदास, खिन्नचित्त, व्याकुल ।

उ०—१ वहिलठ आए वल्लहा, नागर चतुर सुजाण । तुभ विलण
घण विलखी फिरइ, गुण बिन लाल कमाण । —डो. मा.

उ०—२ निरखे अवासा भर निजर, नह देखे दमरथ नप निजर ।
निज देखे नह बचव निजर, नर दीठा विलख्या सह निजर ।

—रू

उ०—३ आव हमारे आगणो, 'अह' त्रिभुवन राइ । तुम्ह विन में
विलखी फिरों, अच रह्यो न जाइ । —ह पु. वा

उ०—४ मन जाणो कीकर ई व्हैग्यो । मूडो उतरग्यो अर कठ
जाणो चंठग्यो । धरें आया ठाम उतरावता जेठाणी पूछ्यो—
बिनखी आज विलखा किया ? —अमरचूनडी

२ दु खी, व्यथित ।

उ०—१ प्रभू सो काय उपावियो, किम अहे कराण । अत ही चित
आतुर हुवो, विलखी त्रहाण । —गजरद्वार

३०—२ मा रं मूंडा सूं बाप रं चेता री वात सुणनै राजी व्हे जाती अर वारं सीत री वात सुणनै अणूती बिलखी व्हे जाती । इण सू भागै उण री समझ नी ही । —फुलवाडी

३ मुर्झाया हुभा, कुम्हलाया हुभा ।

३०—१ प्यारी वित्तियो पीव दिस, वदन बिलखी देख । अर कैसे अतर परचो, कौन हमारी लेख । —गजवट्टार

३०—२ काळी तौ कोयल भई, काळा जिसका रग । हरीया हरि विन विरहनी, वदन बिलखै अरग । —अनुभववाणी

४ घबराया हुभा, भयभीत ।

५ वीरान, रिक्त, शून्य ।

३०—अमराणें में घोर अघार हा रे म्हारा सोढा राणा, अमराणें मे ही घोर अवार हो जी ही । बिलखा नै लागै रं मेहल माळिया हा, म्हारा स्तन राणा एकर ती अमराणें पाछी आव । —लो गी.

६ कान्तिहीन, तेज रहित, चमक रहित ।

३०—१ भूखा मास अहारी भाखें, बिलखें रग ऊचारं वाणी । वाकी चालण फोज वहडण, अखि वडग गयी 'अमराणी' ।

—सुखजी खिडियो

३०—२ कुदरत ई साव अलूणी कं बाडी लागती । चाद पीळिया रं रोगी ज्यू बिलखी लागती । ऊगता अर आयमता सूरज री गुलाल उणनै काळस सूं ई सवायी माडी लागती । —फुलवाडी

७ निराश, उदास ।

३०—१ ऊमर मन बिलखड हुयड, चारण वचन सुरोह । उणि हिज पथ पाछड वळघड, साल्ह निचत करेह । —ढो मा.

३०—२ लोग पूजारीजो नै सागंडी जीमायी । थडा देय घर सूं वारं काढियो । वो घणो ई कूकियो पण की सुणवाई व्ही नी । बिलखी होय टुळक-टुळक बगेची ताई नीठ पूगी । —फुलवाडी

३०—३ भाई सा ती रोज कंवे कं अवे उणनै सफाखाना सूं छुट्टी मिळ जाएला अर थारं मामोमा उणनै लेयनं आवेला । वो अठी-उठी देखनै बिलखी पडगयी अर म्हनं जवाव देवणी भारी पडगयी ।

—अमरजू नडी

रु. भे —बिलकी, बिलखी, बिलखी, बिलखी, बिलखी, बिलखी । अल्पा.,—बिलखीडी ।

बिलग-वि.—अलग, पृथक ।

रु. भे.—बिलग ।

बिलगणी, बिलगवो—क्रि. अ.—१ लगना, लिपटना ।

३०—मन बिसहर तन ववही, ऊठि बिलगं पाय । जनहरिया तिह लोक मे, जाह जाउ ताह खाय । —अनुभववाणी

२ अलग होना, पृथक होना, जुदा होना ।

३०—हरीया अंसा को मिळै, सहजा रहै सभाय । बाहरि वाजा वचन बोह, चित न बिलगं जाय । —अनुभववाणी

३ छूना, स्पर्श होना ।

४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडना ।

५ चिपकना, लगना, जुडना ।

३०—१ फल तर तं तूटा पछै वर्ध न बिलगं जाय । गुर वेमुख नही नीपजै, भावै गोविंद गाय । —अनुभववाणी

३०—२ तन ऊतरिया ना चडै, करिहो कोडि विचार । ज्यु तरवर फळ ऊतरयो, फेर न बिलगं डार । —अनुभववाणी

६ लगना, होना ।

३०—गाहर किस सूं भगडियै, घर भीड बिलगा ।

—कैसोदास गाडण

७ आवेष्टित होना, लिपटना ।

३०—ढोलड मारु एकठा, करड कतुहळ केळि । जाणं चदन-रु ख-डड, बिलगो नागर वेलि । —ढो. मा

८ कार्यरम होना ।

९ पकडना, ग्रहण करना ।

१० किसी अनिष्ट या कष्टदायक बात का किसी से सम्बन्ध होना या उसके सम्पर्क में आना, लगना ।

११ आलिगन होना, लिपटना ।

३०—१ वेस्या वेस बिलूण-समी, बोलि सोस-मभारि । नेह विना बिलगइ गलड, मूरख, भव म म हारि । —मा का प्र.

३०—२ पडखतड हुमि मू नइ स्वामी, मेलिहसी कवण स्त्री नइ नामी । कत कठि बिलगी तनु वालड, आपणा कुल करु अचूया-लड । —सालिसुरि

बिलगणहार, हारो (हारो), बिलगणियो—वि० ।

बिलगिओडो, बिलगियोडो, बिलग्योडो—भू० का० क० ।

बिलगीजणी, बिलगीजवो—भाष वा० ।

बिलगणी, बिलगवो बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो, बिलगणी, बिलगवो—रु० भे० ।

बिलगाणी, बिलगावो—क्रि स—१ लगना, लिपटना ।

२ अलग करना, पृथक करना, जुदा करना ।

३ छूना, स्पर्श करना ।

४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडाना ।

५ चिपकाना, लगाना, जोडना ।

६ लगाना, करना ।

७ आवेष्टित कराना, घेरना, लिपटना ।

८ कार्यारम्भ कराना ।

९ पकडाना, ग्रहण कराना ।

उ०—आंगणियं न करावी थिरी, कन्हैया । आंगुळिया विलगाय रे । हाऊ वेठी छे तिहा, कन्हैया, अलगी तू मति जाय रे ।

—जयवाणी

१० देखो 'विलगणी, विलगवी' (रू भे)

विलगाणहार, हारी, (हारी), विलगाणियो—वि० ।

विलगायोडो—भू० का० कृ० ।

विलगाईजणी, विलगाईजवी—कर्म वा., भाव वा० ।

विलगाणी, विलगावी, विलगावणी, विलगाववी—रू० भे० ।

विलगायोडो—भू का कृ —१ लगाया हुआ, लिपटाया हुआ २ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ, जुदा किया हुआ ३ छूया हुआ, स्पृश किया हुआ ४ किसी अन्य स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडाया हुआ ५ चिपकाया हुआ, लगाया हुआ, जोडा हुआ ६ लगाया हुआ, किया हुआ ७ आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ, लिपटाया हुआ. ८ कार्यारम्भ किया हुआ. ९ पकडाया हुआ, ग्रहण किया हुआ

१० देखो 'विलगियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. विलगायोडो)

विलगाव—स. पु —१ लगाव, लिपटाव ।

२ अलगाव, पृथकता ।

३ किसी अन्य स्त्री के साथ जुडा हुआ, अनैतिक सम्बन्ध ।

४ घेराव ।

५ कार्यारम्भ ।

६ पकडाव, पकड ।

विलगावणी, विलगाववी—१ देखो 'विलगणी, विलगवी' (रू. भे.)

२ देखो 'विलगणी, विलगवी' (रू. भे.)

विलगावणहार, हारी (हारी), विलगावणियो—वि० ।

विलगावियोडो, विलगावियोडो, विलगावियोडो—भू० का० कृ० ।

विलगावियोजणी, विलगावियोजवी—भाव वा कर्म वा० ।

विलगावियोडो—१ देखो 'विलगियोडो' (रू भे)

२ देखो 'विलगायोडो' (रू भे.)

विलगियोडो—भू का कृ —१ लगा हुआ, लिपटा हुआ. २ अलग हुआ हुआ, पृथक हुआ हुआ, जुदा हुआ हुआ ३ छूया हुआ, स्पर्श हुआ हुआ. ४ किसी स्त्री के साथ अनैतिक सम्बन्ध जुडा हुआ ५ चिपका हुआ लगा हुआ, जुडा हुआ. ६ लगा हुआ हुआ हुआ ७ आवेष्टित हुआ हुआ, लिपटा हुआ. ८ कार्यारम्भ हुआ हुआ. ९ पकडा हुआ, ग्रहण किया हुआ. १० किसी

अनिष्ट या कष्ट दायक बात का किसी से सम्बन्ध हुआ हुआ या उसके सम्पर्क में आया हुआ, लगा हुआ (स्त्री. विलगियोडो)

विलगणी, विलगवी—देखो 'विलगणी, विलगवी' (रू भे.)

उ०—१ जड पयाळ पै जुअल, सीस, ग्रहमड . विलगं । कळू-वाउ उड्डळ, डिगं नह डोलं जुगं । —गु. रू. व

उ०—२ 'गजपती' दिस मेल्हियो, असपती फुरमाण । गुरम विलगो राह हुई, ती छूटं खुरसाण । —गु. रू. व

उ०—३ 'दूद' मेडतियो राव, आय गुर पाय विलगो । रावळ चैसल-मेर, परचता सासी भगो । —वील्होजी

उ०—४ इक कर वयस विलगियं, इक कर तलिय लाज । वय कह जोगनिपुर चलहु, लाज कह मिडराज ।

—महाराजा मानसिंहजी

उ०—५ हर हर करती हरख कर, आळस म कर अयाण । जिए पाणी सू पिड रच, पवन विलगो प्राण । —ह र

उ०—६ सुण सुदरि, सच्चउ चवा, भाजइ मन ची अति । मो मारु मिळिवा तणी, खरी विलगो खति । —ढो. मा.

उ०—७ कठ विलगो मारवी, करि कंचूवा दूर । चकवी मनि आणद हुवउ, किरण पसारचा सूर । —ढो मा

विलगणहार, हारी (हारी), विलगणियो—वि० ।

विलगियोडो, विलगियोडो, विलगियोडो—भू० का० कृ० ।

विलगियोजणी, विलगियोजवी—भाव वा० ।

विलच्छण, विलच्छन—देखो 'विलक्षण' (रू भे)

विलच्छणी, विलच्छवी—देखो 'विलसणी, विलसवी' (रू. भे.)

उ०—वार न लायी विलछतां, म्लेछा मन रता । ईस्वर रूप अलाव-दीन, जिए आलम जिता । —लूणकरण कवियो

विलच्छणहार, हारी (हारी), विलच्छणियो—वि० ।

विलच्छियोडो, विलच्छियोडो, विलच्छियोडो—भू० का० कृ० ।

विलच्छियोजणी, विलच्छियोजवी—भाव वा० ।

विलच्छियोडो—देखो 'विलसियोडो' (रू भे)

(स्त्री विलच्छियोडो)

विलसणी, विलसवी—क्रि स —आवेष्टित करना, घेरना ।

उ०—दल सभवे सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ, भेजउ वेगि विसेट, बात मिलणं की, कीजइ । —प च ची

विलघणी, विलघवी—देखो 'विलघणी, विलघवी' (रू. भे)

उ०—मन-मध्या सोई इद्रिया, सो स्वाद विलघा ।

—केसीदास गाडण

विलघणहार, हारो (हारी), विलघणियो—वि० ।

विलघिओडो, विलघियोडो, विलघ्योडो—भू० का० कृ० ।

विलघीजणो, विलघीजवो—भाव वा० ।

विलघियोडो—देखो 'विलघियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विलघियोडो)

विलपणो, विलपवो—क्रि अ —१ उदास होना, खिन्नचित्त होना, वेचन होना ।

२ व्याकुल होना, दु खी होना, व्यथित होना ।

उ०—१ दातण मिळवो दलभ, सघन वन वन जित मह । विलपन जळ विन वाळ, भरं सर नळ उभळत वह ।

—जैतदान वारहूट

उ०—२ नगर माहि नर नारि नड, अतिघण अगि उचाट । विलपइ वभण वाणीया, वली विसेगि भाट । —मा का प्र

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—१ विनिता विविधि विलपती, टोलं टोलं जाय । आगलि थाता अकनइ बीजी वढवा घाय । —मा का प्र

उ०—२ आव, अमोडा माहि घर, ईम तणइ जिम गग । हें विलपती विरहिणी, स्वामि । म छडिसि मग । —मा का प्र

उ०—३ इम विलपती देखि नें, आवं सेठ निलज । सुवचन कहें सतोखनं, एहवी करं अरज । —वि कु

विलपणहार, हारो (हारी), विलपणियो—वि० ।

विलपिओडो, विलपियोडो, विलप्योडो—भू० का० कृ० ।

विलपीजणो, विलपीजवो—भाव वा० ।

विलपाणो, विलपावो—क्रि म —१ व्याकुल करना, दु खी करना, व्यथित करना ।

२ विलाप करने के लिए प्रवृत्त करना, रलाना ।

विलपाणहार, हारो (हारी), विलपाणियो—वि० ।

विलपायोडो—भू० का० कृ० ।

विलपाईजणो, विलपाईजवो—कर्म वा० ।

विलपावणी विलपाववो—रू० भे० ।

विलपायोडो—भू का. कृ.—१ व्याकुल किया हुआ, दु खी किया हुआ व्यथित किया हुआ २ विलाप करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, रलाया हुआ ।

(स्त्री विलपायोडो)

विलपावणी, विलपाववो—देखो 'विलपाणी, विलपावो' (रू भे)

विलपावणहार, हारो (हारी), विलपावणियो—वि० ।

विलपाविओडो, विलपावियोडो, विलपाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विलपावीजणो, विलपावीजवो—कर्म वा० ।

विलपावियोडो—देखो 'विलपायोडो' (रू भे)

(स्त्री विलपावियोडो)

विलपियोडो—भू का कृ.—१ उदास हुआ हुआ, खिन्नचित्त हुआ हुआ

२ व्याकुल हुआ हुआ, दु खी हुआ हुआ, व्यथित हुआ हुआ ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री विलपियोडो)

विलपत्र—वि [म] १ पाया हुआ, प्राप्त किया हुआ ।

२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

विलपवणी, विलपववो—क्रि स [म विलपवनम्] १ प्राप्त करना, पाना

२ अलग करना, पृथक करना ।

विलपवणहार, हारो (हारी), विलपवणियो—वि० ।

विलपिओडो, विलपियोडो विलप्योडो—भू० का० कृ० ।

विलपवीजणो, विलपवीजवो—कर्म वा० ।

विलपणो, विलपवो—रू० भे० ।

विलपियोडो—भू का कृ —१ प्राप्त किया हुआ, पाया हुआ ।

२ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ ।

(स्त्री विलपियोडो)

विलपणी, विलपवो—देखो 'विलपवणी, विलपववो' (रू भे)

विलपणहार, हारो (हारी), विलपणियो—वि० ।

विलपिओडो, विलपियोडो, विलप्योडो—भू० का० कृ० ।

विलपीजणो, विलपीजवो—कर्म वा० ।

विलपियोडो—देखो 'विलपियोडो (रू भे)

(स्त्री विलपियोडो)

विलम—स पु —१ मनवहलाव की क्रियाएँ ।

२ देखो 'विलव' (रू भे)

उ०—१ राई वेगई चढि आवी, विलम न करो वार । सोल सइ-यर रूकमणी सारीखी लेज्यो साथ । —रूकमणी मगळ

उ०—२ विलम विना विलुपी मेरी, नही अघर नहि घरता । आव र अत मध्य नही मेरे, नहि उरे परे मेरी सुरता ।

—स्त्री हरिरामजी महाराज

३ देखो 'वल्लभ' (रू भे)

उ०—भवरा घेर र भूवन मँ, राग्यो विना रहू न । वाडी म्हारी रो विलम, खूनी कर गयो खून । —अग्यात

४ देखो 'विलोम' (रू भे)

उ०—महण वन दहण 'केसर' गहण मडियो, तेण खग वहण

घण सघण तरिणयो । महा तम विलमा उडावण मारुत्री, वडखत्री
तरण चै रूप वरिणयो । —किसोरान वारहठ

विलमणो-वि —१ प्रेमाशक्त ।

८०—सुण वाळा, इक रेंण पीठती कठ लगाणो, जागी जजका,
नैण विलखता नीर भरांणो । पूछता, मुळकाय कह्या थें वोल
सयाणो, 'छळिया । पेख्यो तूक विलमणो नार विराणो । —मेघ

२ भोग-विलास मे रत्त ।

३ कार्य मे लग कर भूलने वाला ।

४ मग्न, लीन ।

५ कार्य मे लीन ।

विलमणो, विलमवो-क्रि अ —१ प्रेमाशक्त होना ।

२ भोगविलास मे रत्त होना ।

३ कार्य में लीन होना ।

४ कार्य मे लग कर भूलना ।

५ मग्न होना, लीन होना ।

६ ठहरना, रुकना ।

७ देखो 'विलवणी, विलववो' (रु. भे)

८०—म्हारा चगा माच चालें छें विदेस, जिण रत्त केसू फूलें
आली । कळिया सुं भवर विलम रया छें, सुवटा आवा डाळी
आली । —रसील राज रा गीत

८ देखो 'विलवणी, विलववो' (रु. भे.)

विलमणहार, हारो-(हारी), विलमणियो-वि० ।

विलमिओडो, विलमियोडो, विलम्योडो-भू० का० कृ० ।

विलमोजणो, विलमोजवो-भाव वा० ।

विरमणो, विरमवो, विलमणो, विलमवो, विरमणो, विरमवो, विल-
मणो, विलमवो-रु० भे० ।

विलमणो, विलमावो-क्रि स. —१ बातें करने हेतु प्रवृत्त करना, बातो
मे लगाना, वहलाना ।

८०—'मदू' आखें मारकी, अत वेढ अघाया, पुढ घर घूज पडाईयें,
'दलजी' चढ आया । वाता सु विलमायन, ज्या न जजमाया, 'सीहै'
कहिया भेद सी, नाही मन भाया । —वी मा

२ मोहित करना, लुभाना, मोहना ।

८०—१ मद भागणि मी सारसी, राज छैलें लीराय । कोइक पुर
की कामणो, रखें ली विलमाय । —पनां

८०—२ पलका रें ऊपर पण घर आजी, ती हिवडा रें आसण आप
विराजी । कही जी ! प्रभुजी ! पानं किय विलमाय, तो दासी रें
महला विलव सुं आया । —गी. रा

८०—३ बागां में घूमण गयो म्हारो रावतियो सरदार, बागा

मायलो कोयल म्हारो लियो छै भवर विलमाय, दासी, कण विल-
मायो म्रै, रावत नही आयो अत्र तक वारण । —तो गी

३ धैर्य देना, धीरज बघवाना ।

४ फुसलाना, वहकाना ।

८०—मालवणी ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पिण ढोलोजी
रहै नही । ताहरां मालवणी कहै । —ढो मा

५ देरी लगाना, विलम्ब करना ।

६ रोकना, ठहराना ।

८०—१ तद श्रीळंगुवा वोलिण-भुजनगर री राजा रावळ
जालम, बडी पातसाह तिण राणी रा चाक्र छा घरा तो काई
कमाण न छै, पण दातारा नै देखण नै मुलरुगिरी करता फिरा
छा । सो वरस अेरु हुवो, महाराज विलमाय राखिया ।

—पलक दरियाव री बात

८०—तद खीवो ऊठ घोडे सचार हुवो । सुरेजी नू कहियो-थं
काढो, साथ माफरु छै, ह इहा नू विलमायसू । तद सुरेजी कही-
हमे काडिया किसी गत छै । —सुरे खीव काघळीत री बात

८०—३ ओठक नू वित सापियो सी भगायो श्रीर कही जै हू
बाहर नू विलमाळ छ ।

—सुन्दरदास भाटी वीकपुरी री वारता

विलमाणहार, हारो (हारी), विलमाणियो-वि० ।

विलमायोडो-भू० का० कृ० ।

विलमाईजणो, विलमाईजवो-कर्म वा० ।

विरमाणो, विरमावो, विरमावणो, विरमाववो, विलमाणो,
विलमावो, विलमावणो विलमाववो, विरमाणो, विरमावो, विर-
मावणो, विरमाववो, विलमावणो, विलमाववो, विलमाणो, विल-
मावो, विलमावणो, विलमाववो-रु० भे० ।

विलमायोडो-भू का. कृ —१ बातें करने हेतु प्रवृत्त किया हुआ, बातो
मे लगाया हुआ २ मोहित किया हुआ, लुभाया हुआ, मोहा
हुआ. ३ धैर्य दिया हुआ, धीरज बघाया हुआ ४ फुसलाया, हुआ
बहकाया हुआ ५ देरी लगाया हुआ, विलम्ब किया हुआ ६
रोका हुआ, ठहराया हुआ

(स्त्री विलमायोडी)

विलमावणो, विलमाववो-देखो 'विलमाणो, विलमावो' (रु. भे)

८०—१ पाणो पी-पी जांपो काळो, हियं दध री सूखी धार ।
टावर रोयो भूखा मरतो, मन विलमावण लागी नार ।

—चेतमानखी

८०—२ "मेह-मामो म्हाने काई देसी, दादी ।"
"लाह ।"

भळं ?”

“हूध, दही, रमतिया, गैणा ।”

“साचें ई, दादी ।”

“हा, बेटा ।”

“नही तू विलमाचें है ।”

—वरसगाठ

उ०—३ तद बहुवा सारी मुजरी कर बोहुडी, डेरें आई । आय सारी जणी एकठी बेंस कहण लागी—“आपा कुवरजी नु किए भात विलमावस्या, वात विसारें घातस्या ?”

—कुवरमी साखला री वारता

विलमावणहार, हारी (हारी), विलमावणियो—वि० ।

विलमाविश्रोडो, विलमावियोडो, विलमाव्योडो—भू० का० कृ० ।

विलमावीजणी, विलमावीजवो—कर्म वा० ।

विलमावियोडो—देखो ‘विलमायोडो’ (रू भे)

(स्त्री. विलमावियोडी)

विलमियोडो—भू का कृ—१ प्रेमाशक्त हुवा हुआ २ भोग-विलास मे रत्त हुवा हुआ ३ कार्य मे लीन हुवा हुआ ४ कार्य मे लग कर भूला हुआ ५ मग्न हुवा हुआ, लीन हुवा हुआ ६ ठहरा हुआ, रुका हुआ ।

७ देखो ‘विलू वियोडो’ (रू भे)

८ देखो ‘विलवियोडो’ (रू भे)

(स्त्री विलमियोडी)

विलम्मणो, विलम्मवो—देखो ‘विलमणो, विलमवो’ (रू भे)

उ०—लोण भू मे खळाकें कसू वा माट फूटा सा-क, उठे सूर गेदता विलम्म केक आण । घणा घावा वीच घूम कलाळो हाट ज्यू गीरा, अँह रोसवाई उभें रचायो आराण । —जसो आढी

विलम्मणहार, हारी (हारी), विलम्मणियो—वि० ।

विलम्मिश्रोडो, विलम्मियोडो, विलम्म्योडो—भू० का० कृ० ।

विलम्मीजणी, विलम्मीजवो—भाव वा० ।

विलम्माणो, विलम्मावो—देखो ‘विलमाणो, विलमावो’ (रू भे.)

विलम्माणहार हारी (हारी), विलम्माणियो—वि० ।

विलम्मायोडो—भू० का० कृ० ।

विलम्माईजणी, विलम्माईजवो—कर्म वा० ।

विलम्मायोडो—देखो ‘विलमायोडो’ (रू भे)

(स्त्री विलम्मायोडी)

विलम्मावणी, विलम्माववो—देखो ‘विलमाणो, विलमावो’ (रू भे)

विलम्मावणहार, हारी (हारी), विलम्मावणियो—वि० ।

विलम्माविश्रोडो, विलम्मावियोडो, विलम्माव्योडो—भू० का० कृ० ।

विलम्मावीजणी, विलम्मावीजवो—कर्म वा० ।

विलम्मावियोडो—देखो ‘विलमायोडो’ (रू. भे.)

(स्त्री विलम्मावियोडी)

विलम्मियोडो—देखो ‘विलमियोडो’ (रू भे)

(स्त्री विलम्मियोडी)

विलय, विलयन—स पु [स. विलयनम्] १ पानी मे पदार्थ के घुलने की क्रिया ।

२ पदार्थ के परिवर्तित रूप मे हमरे पदार्थ मे मिलने की क्रिया ।

३ आत्मा का परमात्मा से मिलन ।

४ सृष्टि का अन्त, प्रलय ।

५ मौत, मृत्यु ।

६ दो राज्यो का आपसी विनन ।

७ नाश, समाप्ती ।

उ०—आप तो घरम करण नै जागा, करी काया री निम्तारी रे । म्हारें आगणी पगल्या करता पाप विलय जावें म्हारी रे ।

—जयवाणी

रू भे—विलउ, विलै ।

विलळणी, विलळणी—क्रि अ [स विलपनन्] १ उदास होना, खिन्न होना, वेचन होना ।

२ व्याकुल होना, दु खी होना ।

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—पथी हाथ सदेसडउ, घण विलळंती देह । पग सँ काढइ लीहटी, उर आसुआ भरेह । —ढो मा.

विलळणहार, हारी (हारी), विलळणियो—वि० ।

विलळिश्रोडो, विलळियोडो, विलळयोडो—भू० का० कृ० ।

विलळीजणी, विलळीजवो—भाव वा० ।

विलळाणी, विलळावो—क्रि अ [म विलापनम्] १ उदास होना, व्याकुल होना, खिन्न होना ।

२ व्यथित होना, दु खी होना ।

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—छाटी पाणी कुमकुमइ, वीभरण वीझ्या वाइ । हुई सचेती माळवो, प्री आगळि विलळाइ । —ढो मा.

४ समाप होना, नाश होना, मिटना ।

विलळाणहार, हारी (हारी), विलळाणियो—वि० ।

विलळायोडो—भू० का० कृ० ।

विलळाईजणी, विलळाईजवो—भाव वा० ।

विलळाणी, विलळावो, विलळावणी, विलळावणी, विलळावणी,

विलळावो, विलळावणी, विलळावो, विलळावणी, विलळावणी

—रू० भे० ।

विललाणी, विललावी—देवो 'विललाणी, विललावी' (रू. भे)

उ०—१ तोरखी रथ फेरि चलै रथ फेरि चलै योग्य पगु दे जान ।
प्यारउ लेहु मनाई, मुंगति चधू मन मउ वसी, मन मइ वगी समहि
रहे विललात । —स कु

उ०—२ जोड जादवा तगी सोहती मूल ए, देगता देगता ह्य
गई धूल ए । गाढ नै जोम हु तो घट माय ए, गिनि थोडा मे गट
विललाय हे । —जयवाणी

विललाणहार, हारी (हारी), विललाणियो—वि० ।

विललायोडी—भू० का० कृ० ।

विललाईजणी, विललाईजयो—भाव वा० ।

विललाप—देवो 'विनाप' (रू. भे)

विललापणी विललापयो—देवो 'विलापणी, विनापयो' (रू. भे)

विललापणहार हारी (हारी), विललापणियो—वि० ।

विललापिओडी विललापिओडी विललाप्योडी—भू० का० कृ० ।

विललापीजणी, विललापीजयो—भाव वा० ।

विललापियोडी—देवो 'विलापियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विललापियोडी)

विललायोडी—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुमा, व्याकुल हुवा हुमा,
विन्न हुवा हुमा २ व्यथित हुवा हुमा, दु गी हुवा हुमा ३
विलाप किया हुमा, रोया हुमा ४ समाप्त हुवा हुमा, नाश हुवा
हुमा, मिटा हुमा ।

(स्त्री विललायोडी)

विललायोडी—देवो 'विललायोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विललायोडी)

विललावणी, विललावयो—देवो 'विललाणी, विललावी' (रू. भे)

उ०—बाळ रहे विललायता, 'पातल' घाक प्रताप । मन जरमना
कमध री, आठ पीहर अलाप । —किसोरदान बारहुठ

विललावणहार, हारी (हारी), विललावणियो—वि० ।

विललाविओडी, विललावियोडी, विललाव्योडी—भू० का० कृ० ।

विललावीजणी, विललावीजयो—भाव वा० ।

विललावणी, विललावयो—देवो 'विललाणी, विललावी' (रू. भे)

उ०—मैं ती जाणी ए कानी माया, विललाव जिम बादल छाया ।
ऐसी जाणी कही कुण रीक, मोनै घरम तणी भाग प्रेमो ।

—जयवाणी

विललावणहार, हारी (हारी), विललावणियो—वि० ।

विललाविओडी, विललावियोडी, विललाव्योडी—भू० का० कृ० ।

विललावीजणी, विललावीजयो—भाव वा० ।

विनलापियोडी—देवो 'विनलापियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विनलापियोडी)

विललावियोडी—देवो 'विनलापियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विललावियोडी)

विलला—देवो 'विनला' (रू. भे)

उ०—१ हुमेमां री भात प्रेफ रिन भळै दोना मे गार पत्रगी ।
भाव विलला राठ । विललापणी कार्या—घाट विना म्हारो गळी
प्रद्योतो लागे, थें मोनार र पत्रे ताय दणु बीटी री घाट
गटायती । —पुनवाडी

उ०—२ पारि वीणा मुजय ननय री दात तां देवो मान घर
जवांन घर हायरी वान द्येगी भूठ । विणी रजा रें मूडामे घेडी
विलला वान परज्या मनी, योग हुसना । —पुनवाडी

उ०—३ गोपगियो मंभावती या मोमा गुर मे बोनी भाटिया म
हान घाणे पानी नी पटियो दीने, इणी गातर प्रेगी विनला वात
करी । —पुनवाडी

उ०—४ मेठा रें मूडा मांम्ही देव मयण नागा—मेठा, उना
नमभदार होय घं घेडी विलला वात पीकर बगी । पारि री नी
बच्यो तो काई द्ये, राज री गजागे तो हास भरयो हे ।

—पुनवाडी

(स्त्री विलला)

विलयणी, विलयवी—वि भ —१ उदाम होना, निपकित होना, बेचन
होना ।

२ व्याकुल होना, दु खी होना, व्यथित होना ।

उ०—१ पीहर ती परत है रहिया, प्रीतम विरहागनि दहिया ।
प्रमदा इणपरि विलयती, दुम रोई गति गलती ।

—जीपाल रास

उ०—२ इम विलयती सुदरी, रोयती न रहाय । पवल अघरमी
तिण समै, भासै पासै घाय ।

—जीपाल रास

३ विलाप करना, रोना ।

उ०—१ करि मन धीर करार, विलवे काह विरही ययो । सयणै
न लही सार, जावरण दे परहा 'जसा' ।

—जसराज

उ०—२ विलयई बे सती कीजइ ककण भग । उछइ नीरि जिम
माछली तिम विरह दहइ अम्ह भग । विलयई बे सती ।

—कां दे. प्र.

उ०—३ भन्न दिवसि बभणु सकुटव, रल जिम विलयई पाइइ
बुव । पूछइ भीमु करी । एकतु, भाविउ हूखु किंनुं अचिनु ।

—सालिभद्र सूरि

४ निर्भर होना, भाश्रित होना ।

उ०—४ जनहरिया उन देसई, वारं मास वसत । सदा फलंगी
विनसती, विल्विया जीव निचत । —अनुभववाणी

५ पकडना, ग्रहण करना ।

उ०—केईक पाना फूलडा, केईक विल्विया डाळ । हरिया मूळ
विल्विया, फळ पाया असराळ —अनुभववाणी

विल्वणहार, हारी (हारी), विल्वणियो—वि० ।

विल्विओडो, विल्वियोडो, विल्वयोडो—भू० का० कृ० ।

विल्वीजणो, विल्वीजवो—भाव वा० ।

विल्वळणो, विल्वळवो—देखो 'विल्विलणो, विल्विलवो' (रू भे)

उ०—खिण रोवं खिण विल्वळै, मारुं ****मित । वळि घण
दीसं नाह विण, घण विण नाह म दिठ । —डो मा

विल्वळणहार, हारी (हारी), विल्वळणियो—वि० ।

विल्वळीओडो, विल्वळीयोडो, विल्वळयोडो—भू० का० कृ० ।

विल्वळीजणो, विल्वळीजवो—भाव वा० ।

विल्वलणो, विल्वलवो—देखो 'विल्विलणो, विल्विलवो' (रू भे)

उ०—जाण्युं आडड माडम्यइ जी रे जी वीरजी 'गौतम लेस्यइ
केवल भाग रे । विल्वलता, मूकी गयड जी, रे जी, वीरजी एक
पखड म्हारड राग रे । —स कु.

विल्वलणहार, हारी (हारी), विल्वलणियो—वि० ।

विल्वलीओडो, विल्वलियोडो, विल्वल्योडो—भू० का० कृ० ।

विल्वलीजणो, विल्वलीजवो—भाव वा० ।

विल्वळियोडो—देखो 'विल्विलियोडो' (रू भे)

(स्त्री विल्वळियोडो)

विल्वलियोडो—देखो 'विल्विलियोडो' (रू भे)

(स्त्री विल्वलियोडो)

विलवावणी—स स्त्री —छिपकली की जाति का एक प्रकार का छोटा
जानवर विशेष ।

रू भे —विलवामणी ।

विल्वियोडो—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुआ, विन्नचित हुवा हुआ,
वेचैन हुवा हुआ २ व्याकुल हुवा हुआ, दुःखी हुवा हुआ,
व्यथित हुवा हुआ ३ विलाप किया हुआ, रोया हुआ ।

(स्त्री विल्वियोडो)

विल-विल—देखो 'विल विल' (रू. भे)

उ०—१ माता पिता भुरता रहघा, वलि वाघवा नी जोड रे ।
वाल त्रिया विल्विल करे, तै ती शयोज ऊमा छोड रे ।

—जयवाणी

उ०—२ अचेतन थई देवकीजी कुरई सा असराळ । हीन दीन
विल्विल करे जी, दोहली पेट री भाल । —जयवाणी

विल्विलणो, विल्विलवो—देखो 'विल्विलणो, विल्विलवो' (रू. भे)

उ०—१ वडळावू सगळा विल्विलइ, डोलड किरही पाछड वळइ ।
साथी मारु दागण-भगी, घणू कहुड पणि न रहइ वणी ।

—डो. मा

उ०—२ भाई सुत राणी विल्विलइ, हाथ भाली कहुइ तेह गहिला
राजा । एक पारेवइ नइ कारणइ, स्यू कापड छंड देह गहिला
राजा । —स. कु

उ०—३ स्रावण मास मे विरहणि जांमनी जांम न जात, सजि
आडवर जवर दामिणी मिले वरसात । मुळ वर गयी हरिणाखी
नाखी दीघ निरास, विल्विळै राजुल आखीय भरि भरि नाखी
निरास । —घ. व. प्र

उ०—४ मात पिता पाल्या घणा रे लाल, एतो रह्या नी लीगार
हो, भविक जन । नारथा विल्विलती रही रे लाल, नही आण्यो
मोह ति वार ही, भविक जन । —जयवाणी

विल्विलणहार, हारी (हारी), विल्विलणियो—वि० ।

विल्विलिओडो, विल्विलियोडो, विल्विलयोडो—भू० का० कृ० ।

विल्विलीजणो, विल्विलीजवो—भाव वा० ।

विल्विलाट, विल्विलाट—देखो 'विल्विलाट' (रू भे.)

विल्विलाणो, विल्विलावो—१ देखो 'विल्विलाणो, विल्विलावो'
(रू भे)

२ देखो 'विल्विलणो, विल्विलवो' (रू. भे)

विल्विलाणहार, हारी (हारी), विल्विलाणियो—वि० ।

विल्विलायोडो—भू० का० कृ० ।

विल्विलाईजणो, विल्विलाईजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

विल्विलायोडो—१ देखो 'विल्विलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विल्विलियोडो' (रू भे)

(स्त्री विल्विलायोडो)

विल्विलावणी, विल्विलाववो—देखो 'विल्विलाणो, विल्विलावो'
(रू भे)

२ देखो 'विल्विलणो, विल्विलवो' (रू भे)

विल्विलावणहार, हारी (हारी), विल्विलावणियो—वि० ।

विल्विलावियोडो, विल्विलावियोडो, विल्विलाव्योडो

—भू० का० कृ० ।

विल्विलावोजणो, विल्विलावोजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

विल्विलावियोडो—१ देखो 'विल्विलायोडो' (रू भे)

२ देखो 'विलविलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विलविलायोडो)

विलविलियोडो—देखो 'विलविलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. विलविलियोडो)

विलविलामणी—देखो 'विलवावणी' (रू. भे.)

विलसण, विलसणी—वि.—१ उपभोग करने वाला, उपभोक्ता ।

२ आमोद-प्रमोद करने वाला ।

३ भोग-विलास करने वाला ।

४ दान देने वाला, दातार ।

उ०—१ बट पह बडुआर भुजि कुळि भार, घर सिणगार तपे लखधीर । विलसण गज वाज कुभर सकाज, वसधा राज करे घर वीर । —ल. वि

उ०—२ विलसण गज वाजि निवाजणखट वन, काइम राज अजाद सकाज । घर ओपम प्रतपे पाटीघर 'लखपति' कुभर भुजे कुळ लाज । —ल. वि.

स पु—दांन । (अ मा, ह. नां. मा)

विलसणी, विलसणी—क्रि अ.—१ शोभा पाना, शोभित होना ।

उ०—म्हारें पती जाणें कोई आळस खुद देह घारी ऐं समे सुभावी फी हीज विलसती सोभती होवें जिसी हे पण सिधुराग जुद्ध री राग सुणताई ती सो गुणी अग फूल पोरस वध जाय अनें सरीर बगतर में ही मावें नही । —वी स टी.

२ कलकित होना, कलक लगना ।

क्रि. स —१ विलास करना, आनन्द मनाना ।

उ०—१ राति दिवस रगइ रमइ, विलसइ नयरस भोग । जोडी सारीखी जुडी, केसव तराइ सजोग । —डो. मा.

उ०—२ प्रति दिन विलास नवकोटपति, 'अभैसाह' विलसें इसा । चाहे धनेख निरखें चरस, इद्र सराहै एरसा । —रा. रू.

उ०—३ कवी कहे है कि—नाग हाथी सोभागवाना ने दाम रुपिया देण सूं मुसकळ हार्थे आवें वे हाथी वीर पुरख विना दांमा विना रुपिया दीघा दुसमणा सु खोस लेहै न विलसें सुख लेवें है । —वी स. टी

उ०—४ मुगति माहै वेहु मिल्या रे लाल, विलसें सुख वरदाय है सहेली । प्रणमें पडित धरमसी रे लाल, नमता नव निधि थाय है सहेली । —घ व. अ

२ उपभोग करना, भोगना ।

उ०—१ अन्न भोजन राम रस, काहे न विलसें खाइ । काळ विचारा क्या करे, रम रम राम समाइ । —दादूवाणी

उ०—२ वित विलसण री वार, नर सठ वित विलसें नही । जावें वीत जियार, जेहल पछतावें जिफे । —भा. दा.

उ०—३ विलसी घन कोडी तै वात टली, तजी नारी तणी सगति सगली । परभव दुरगति वेदन दुहिली, बोलइ मत कोसा तै वात वलि । —स. कु.

३ आमोद-प्रमोद करना ।

उ०—घाइ घसइ ति उघसइ, विलसइ हमइं प्रवाहु । खधि चडइ खधागली आकली न सइ नाहु । —जयसेगर सूरी

४ दान देना ।

उ०—वास स्त्रीया विलसत न विरचें, सुगतर सुपह बिन्है सारीक । सोरमतरि ग्रहि वस सुखी सहि, मागण सुखी कन्ही मछरीक । —नादण बारहट

५ भोग करना, समोग करना, मैथुन करना ।

उ०—१ सावण हास्य रसइ करी, विलमउ प्रीतम प्रेमइ जी । योगी भोगी नइ धरे, आवण लागा केमइ जी । —वि. कु.

उ०—२ मन्नीसर धरि आवीउ सयल लोक रजण सुलमखण, पूरव पुण्य पसाठलइ त्रिणण, नारि विलसइ विप्रवखण । —हीराण्ड सूरी

उ०—३ पदमणी परिमल पाम नै, भोगी भ्रमर नाह । मुख विलसी मोसु बालहा । लीजे-जोवन-लाह । —जयबांणी

उ०—४ वर विलसइ अलवेसर केसर हेठि सुवेस, अघ पूगइ ऊन-रायणि रायणि फलिय अमेम । —जयसेगर सूरी

६ उत्सव मनाना ।

उ०—१ जिरिण जगि जीतउ ममरमि अमर सिरोमणि कांमु, विलसइ सिद्ध सयवर सवरगुणि अभिरामु । निरुपम निपुण निर-जन रजन जनमन चार, पामीय सुह गुरु आइसु गाइसु नेमि कुमार । —जयसेगर सूरी

उ०—२ दोरइ बटइ सुयडउ छूटइ महतउ होइ इण परि विलसइ विवह परि सुद्धि न जाणइ कोइ । —हीराण्ड सूरी

विलसणहार, हारी (हारी), विलसणिवी - वि० ।

विलसिओडो, विलसियोडो, विलस्योडो—भू० का० क० ।

विलसीजणी, विलसीजवी—कर्म वा०, भाव वा० ।

बलसणी, बलसबी, विलसणी, विलसवी, बेलसणी, बेलसवी, बळसणी, बळसबी, धीलसणी, धीलसवी—रू० भे० ।

विलसाणी, विलसावी—क्रि स [विलसणी क्रिया का प्रे रू] १ शोभित करना, शोभायमान करना ।

२ कलकित करना, कलक लगाना ।

३ विलास करना, आनन्दित करना ।

३०—पेंसठ भोम पोला ऊररै, तेतीस नै भोम नै माय ह-भवियण ।
सिहासन सक इद्र नौ, जीव सुख बिलसाय हौ-भवियण ।

—जयवाणी

४ उपभोग या भोग कराना ।

५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित करना ।

६ दान दिलाणा ।

७ सभोग करने के लिए प्रेरित करना, मैथुन करने के लिए प्रेरित करना ।

बिलसाणहार, हारो (हारी), बिलसाणियो—वि० ।

बिलसायोडो—भू० का० कृ० ।

बिलसाईजणो, बिलसाईजवो—कर्म वा० ।

बिलसाणो, बिलसावो, बलसाडणो बलसाडवो, बलसाणो, बलसावो,
बलसावणो, बलसाववो—रू० भे० ।

बिलसायोडो—भू का कृ.—१ शोभित किया हुआ, शोभायमान किया हुआ २ कलकित किया हुआ, कलक लगाया हुआ. ३ विलास किया हुआ, आनन्दित किया हुआ. ४ उपभोग या भोग कराया हुआ ५ आमोद-प्रमोद करने को प्रेरित किया हुआ ६ दान दिलाया हुआ ७ सभोग करने के लिए प्रेरित किया हुआ, मैथुन करने के लिए प्रेरित किया हुआ ।

(स्त्री बिलसायोडी)

बिलसियोडो—भू का कृ —१ शोभायमान हुवा हुआ, शोभा पाया हुआ. २ कलकित हुवा हुआ ३ विलास किया हुआ, आनन्द मनाया हुआ ४ उपभोग किया हुआ, भोग किया हुआ. ५ दान दिया हुआ ६ भोग किया हुआ, सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ ७ आमोद-प्रमोद किया हुआ ।

(स्त्री बिलसियोडी)

बिला—भव्य. [अ बिला] बिना ।

बिलाइत—देखो 'बिलायत' (रू भे)

उ०—घण्टी सीतल पाणी सू सीचिया थका बीभूणा वाइ भापा सू हीफा खाइ रहीआ छै । तठे बिलाइत री गूथी चटाई अमोलक विछाइ रही छै । तिरण ऊपरि वैठा छत्रीस रोग हरै ऊपरि डोलिया गिलमा री विछाति वाणि नै रही छै । —रा सा. स.

बिलाइति, बिलाइती—देखो 'बिलायती' (रू भे)

उ०—तठा उपराति करि नै राजान बिलामति उण बागाइत माहै शीखम रित रा बिलाइती वालेरा खस खाना, ऊची ठोड रा बगळा, रावटी वालाबध रा ठासा रा गूथिया भाति भाति खसखाना बग्याया छै । —रा. सा स

बिलाउ—देखो 'बिहाउ' (रू. भे)

उ०—जिहा सिध,तणा फेत्कार, घूक तरणा घूत्कार । व्याघ्र तरणा

घूरहराट, न लाभइ वाट नइ घाट । लाघता दोहली छइ, चीत्रा
घुरकइ, वेडि बिलाउ घुरकइ ।

—सभा

बिलाग-वि.—१ पृथक, अलग, भिन्न ।

२ संलग्न, लगा हुआ ।

बिलागणो, बिलागवो—क्रि. अ —१ चिपकना, लिपटना ।

२ पहचना ।

३ स्पर्श होना छूना ।

उ०—१ श्रायो खुरम बिलागं अवरि, पूरै पारभ हे गै पवखरि ।
ऊपाटेह छरा आघतरि, जाणै सीह विरुत्तो छप्परि ।

—गु. रू व.

उ०—२ वाषा लै वाधियो, बडो ब्रह्मंड बिलागो । चलण हेक
हरि चापियो, भली भूगोळ सभागो

—पी. अ.

४ देखो 'लागणो, लागवो' (रू. भे)

बिलागणहार, हारो (हारी), बिलागणियो—वि० ।

बिलागिओडो, बिलागियोडो, बिलाग्योडो—भू० का० कृ० ।

बिलागोजणो, बिलागोजवो—भाव वा० ।

बिलागणो, बिलागवो—कर्म वा० ।

बिलगियोडो—भू का कृ —१ चिपका हुआ, लिपटा हुआ. २ पहचा
हुआ ३ स्पर्श हुवा हुआ, छूपा हुआ ।

४ देखो 'लागियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिलागियोडी)

बिनाणो, बिलावो—क्रि. अ —१ विलीन होना, विलय होना ।

२ लोप होना, लुप्त होना ।

उ०—बिलावलि कौ बखत आयो । गुणी जना राग भिलायो ।
चक्रवा चकवी को मिळाप । कुकडा बोलिया । जवार सीतल
हुवा । हरक वाल फूलिया । रातवर प्रगासियो । तारा बिलाया
चिड्या चहकि ।

—पना

३ नाश होना, मिटना ।

उ०—१ काम क्रोध मोह लोभ हंकारा, बोध खडग लै सवी
सधारा । जड अरु असत् बलेस बिलाया, सत् चेतन आनद पद
पाया ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ जड चेतन कू जोय, हस निरभं थया । तन मन गया
बिलाय, ब्रह्म केवल रया ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ गुरु का सवद सुणत ही जाग्या, माया मोह बिलाय
गया । स्वप्ना माथै अनत भरम देख्या, जागत ही निज स्वरूप
लया ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

उ०—४ उत्पति थिति लय नही ज्यामै, कारण कारज बिलाणो ।

सत् सुखराम घातभारांभी, निरालव निरवांशी ।

— स्त्री सुखरामजी महाराज

४ व्यतीन होना, चीतना ।

विलापहार, हारी (हारी), विलापिणी—वि० ।

विलापिणी—भू० का० कृ० ।

विलाईजणी, विलाईजवी—भाव वा० ।

विलावणी, विलाववी, वीलाणी, वीलावी, वीलावणी, वीलाववी
रू० भे० ।

विलात—देखो 'विलापत' (रू. भे)

उ०—काबल कतल करीह, कायम चीण विलात कै । भाळें क्रोध
भरीह, अपत 'पता' क्णिण सिर निजर । —पावूदान भासियी

विलाति, विलाती—देखो 'विलापती' (रू. भे)

उ०—१ माफी मीर बलककी मल्ल, मीर सैद पठ्ठाण भुगल्ल ।
खारी और सजोर बुखारी, घर कावली विलाति खधारी ।
—रा. रू

उ०—२ परचड गात कच्छिय प्रगट, रेवत थट्ट विलाती रा ।
नव साजि किया हाजर नरा, भिडज नवल्ली भाति रा ।
—रा. रू

उ०—३ तुरकी ताजी तुरग, विलाती देसी विडग । धूना
चित्तागिया धंग, खेड रा नोपना खंग । —गु रू. व.

उ०—४ विडग तुरककी ऐराकी विलाती, मच पाखरा रोळि है-
हीस माती । सिणगारिया पीलवारण सुडाळा, असमान साम्हा
दियता उलाळा । —गु रू व

विलाप-स पु. [स] १ उदास, व्याकुल या व्यथित होने की क्रिया ।
२ कष्ट, दुःख, पीडा ।

उ०—१ तिण सगतसिंह जी मार राणाजी नै हेवी पाड कयो
घोडी तीना पगा है तद देख जीण उतारता ही घोडी छूटो ।
रांणीजी महा विलाप कियो । सत्तू (सक्तिंसिंह) भाई उपकार
कर आपरो घोडी दियो । —वी स. टी
३ रुदन कदन ।

उ०—२ जद स्वामीजी बोल्या — यू न करणी । रोगादिक
ऊपना गाढी रहणी । ज्यू क्णिण हि रं माथे देणी ही । देवारा
परिणाम नही हुता । पिण पलं जबरी सू लिया । जद भुगल्ल तो
विलाप करं । —भि द्र.

वि—तप्त, गर्म । (हिं को)

रू भे—विलाप, विलालाप, विलापात, विलोपात ।

अल्पा,—विलापाती ।

विलापणी, विलापवी—क्रि. भ —१ उदास होना, बेचैन होना, खिन्न-
चित्त होना ।

२ व्याकुल होना, व्यथित होना, दुःखी होना ।

३ रुदन करना, रोना ।

विलापणहार, हारी (हारी), विलापिणी—वि० ।

विलापिणी, विलापिणी, विलापिणी—भू० का० कृ० ।

विलापिणी, विलापिणी—भाव वा० ।

विलापणी, विलापवी—रू० भे० ।

विलापात—देखो 'विलाप' (रू. भे)

उ०—१ इतरा विलापात करण लागी तद महेन्या घोली—इक
म्हा मन अचरिज भयो, सामळ वात म भ्रम । त्या अण दीठा
सज्जणा, क्यूकर लागी प्रेम । —दो मा

उ०—२ मारवणी वास इया भांत विलापात करं छें डाढी उहट
सोलणी नखा चालिया हुता सो कितरा हेक दिना म नळवरगड
जाय पहुता । —दो मा

उ०—३ केतल एक काले प्रदेश मे भरनार काल कीधी । सुणनं
घरम मे न समझें तं ती रोवं विलापात करं । समझें तं रोवं नहीं
समसा धारनं वंठी । —भि द्र

विलापाती—देखो 'विलाप' (अल्पा, रू भे)

उ०—कुण वीरो कुण वहनडी रे, जोयजी मोहरी नात । इण भव
भुगति सिघावसी रे, एम करं विलापाती रे । —जयदाणी

विलापिणी—भू का कृ.—१ उदास हुवा हुमा बेचैन हुवा हुमा,
खिन्नचित्त हुवा हुमा २ व्याकुल हुवा हुमा, व्यथित हुवा हुमा,
दुःखी हुवा हुमा. ३ रुदन किया हुमा, रोया हुमा ।
(स्त्री. विलापिणी)

विलापत—स पु [अ.] १ दूसरा या पराया देश, विदेश ।

उ०—हैं किसी विलापत वसं ही ? जकी धं भोज ताई ठा ही नही
करणी । हू कितसा हाथी-घोडा घोडा ही मार्ग ही ? अर जं मायू
तो ही किसी वदं सू आछी हुवं । —दसदोख
२ इग्लण्ड ।

उ०—१ नाव किसनजी, कोट घणी रं प्राणी रं वै । एडीकप
अर पराईवैट वाजं । देस रा दीरा पूग फरावें, भावू अर विलापत
सागं जावें । हरखा-कोडा हसं-कडें, गाळ्या खा-खा ऊचा चडें ।
—दसदोख

उ०—२ व्रज दुरग खिसारा तबळ सारा गीरा बजें, दहल पुड
रसा रा हल हमल दुद । लक दिस प्रभजण सारा वेग लागा,
विलापत दिसा रा उडें घणा वद । —चैनकरण सांडू

उ०—३ उतन विलापत किलकता कानपुर आविया, ममोई लक
मदरास मेळा । यलम धुर वहण अगरेज दाटण यळा, भरतपुर
ऊपरा हुवा मेळा । —कविराजा बाकीदास

७०—४ सज दूजा 'अभमाह', महि रज मडळ माचता । वडा लीवा राह, विकटा दूर विलायतां । —पावुदान आसियो

३ दूरस्त यूरोपीय देश ।

४ ईरान, तुर्किस्तान ।

रु भे —वलायत, विलायत, विल्लायत, वलायत, विलाइत, विलात, विल्लायन, विल्लायत ।

विलायति, विलायती-वि —दूमरे देश का, विदेशी ।

२ इंग्लैण्ड का ।

३ यूरोप का, यूरोपीय ।

७०—१ सू छुरी किए भात री छे ? पेतकवज चकचकी रुमी विलायती म्थाना माहा काडर्जे छे । —रा सा स

७०—२ सू तरवारथा किए भात री छे ? सीरोही री नीपनी, वै आगळ बाढ भेरिया थका जर्नव मगरेव पुडनकाळ मेफ विलायती भुजरी विराणपुरी हवसानी फिरगी । —रा सा स

४ ईरान का, तुर्किस्तान का ।

७०—अटक पार मो अर्ग, इळा नहि नर्म विलायति । जवन वसं जिए माहि, आठ मगरुरा मसपति । —सू प्र

रु भे —विलातिय, विलायती, विलाइति, विलाइती, विलाति, विलाती ।

विलायतीकहू-स. पु —तरकारी के काम आने वाला एक विशेष प्रकार का कदू ।

विलायतीकासनी-स स्त्री —एक प्रकार की कासनी, जिसकी पत्निया दवा के काम आती है ।

विलायतीकीकर-स पु —हिमालय मे पाच हजार फुट की ऊंचाई तक पाया जाने वाला पहाड़ी कीकर ।

विलायतीछद्म दर-स पु —इंग्लैण्ड के पश्चिमी प्रदेशो मे बहुतायत से पाया जाने वाला एक प्रकार का छद्म दर ।

विलायतीनील-स पु —चीन से आने वाला एक विशेष प्रकार का नीला रंग ।

विलायतीप्याज-स पु —बिना गाठ का एक प्रकार का प्याज जिसमे केवल गूदेदार जड होती है ।

विलायतीवेगन-स पु —१ एक प्रकार का वेगन विशेष जिसका पौधा यूरोप से आया हुआ कहा जाता है ।

२ टमाटर ।

विलायतीमेहदी-स. स्त्री —मेहदी की भाति का एक प्रकार का पौधा विशेष ।

विलायतीलसन, विलायतीलसुन, विलायतीलहसन, विलायतीलहसुन-

स पु —मसाले के काम आने वाला एक प्रकार का लहसुन ।

विलायतीसिरिस-स. पु —विदेश मे आया हुआ एक प्रकार का सिरिस आजकल यह नीलगिरि पर्वत पर बहुतायत से होता है ।

विलायतीसेम-स स्त्री.—एक प्रकार की मेम जिसकी फलिया साधारण सेम से कुछ बड़ी होती है ।

विलायन-स पु [स] प्राचीन भारत मे पाया जाने वाला एक प्रकार का अस्त्र विशेष ।

वि वि.—उक्त अस्त्र के प्रयोग से शत्रु सेना को विश्राम करने हेतु प्रवृत्त किया जाता था ।

विलायोडी-भू का. कृ —१ विलीन हुवा हुआ, विलय हुवा हुआ २ लोप हुवा हुआ, लुप्त हुवा हुआ ३ नाश हुवा हुआ, मिटा हुआ.

४ व्यतीत हुवा हुआ, बीता हुआ ।

(स्त्री विलायोडी)

विलाली-वि [स्त्री विलाली] १ रसिक, रसिया ।

७०—१ पदमण बोली पीवता, विरया कीदो वाद । छकिया मद री छक री समभी नही मवाद । हरख जलाली चित हुवं, पीदा प्याली नेम । पीव विलाली पिलग परि, वाली लाग वेस ।

—पना

७०—२ दारू री प्याली भली दुपट्टी री झाली । मारवण ती पतळी भली, मारू बडी विलाली । पीओनी दारूडी । —लो गी

२ उदार, दातार, दानशील ।

७०—१ ताकवा निसाला खुलै भेटिया विलद ताळा, विलाला नरिंद इद सा रूप दाखाण । पाणा थारा अमरेम' नचीती चीतोड-पती, खाई थारं दुचीती छ खडी खुरसाण ।

—अनरसिध विसोदिया री गीत

७०—२ प्रगट धूपटे दरव अठ पहर अणपार रे, बहम कुळ भार रे भुजा लीधा । विलाला खडे नित तुरग इण वार रे, माग आचार हुवा 'माधा' ।

—मेघजी महडू

३ अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।

७०—कर वखाण घणा हू कासूं, जीव कियो सपतास जिसी । लाखवरीस विलाली लाखी, आयस कीधी रीक इसी ।

—नवलजी लाळम

४ छेल-छबीला ।

७०—खेलण दो गणगौर भवर म्हाने पूजण दो गणगौर । ही म्हारी सध्या जीवै बाट, विलाला म्हाने खेलण दो गणगौर ।

—जो. गी.

५ युद्धोन्मत्त, मस्त ।

७०—१ कमरा कस आयी रण काळी, वाघण भांथे मोड

विलावली । भुजडह पकड ऊठियो भाली, लेवा भनक रुठियो लाली ।
—वरजूनाई

उ०—२ भाला हया जोव भीमानी, चारहा सुरपुरवासी । पात विराज विलावा पाता, प्याला मद कुण पासो ।

—महाराराणा जवानसिंहजी रो गीत

रु. भे —विलावली, वलावली ।

विलाव—देखो 'विडाळ' (रु. भे)

उ०—तिको तळाव किए भातरो छै । राती वरही रो । पाडरो नीर । पवन रो मारियो फीण आछटतो थको भोला खाथ रह्यो छै । लहरा लिये छै । अथग डोव छै । कडिया सुंदे पाणो मे पंठा पगारा नख भास्ये छै । दूध रे भोजावे विलाव वासोजे छै ।

—रा सा ग

विलावणी, विलावयो—देवो 'विलाणी, विलावो' (रु. भे)

उ०—१ वनवामो चवदे वरसा रो, वामा मग विलावे । गीते पलही कलप वरावर जिके दिवम किमि जावे । रे सुध भावे, रे सुध भावे, किए विध कीजिये ।

—र. रु.

उ०—२ दिया 'सूजा' तस्ये पंड तोपा विसा, सफीला तया नह लिया सरणा । बीजला रोठ पावे सभा विलावे, विजा करपुर करपुर वरणा ।

—कविराजा बाबीदास

विलावणहार, हारो (हारी), विलावणियो—वि० ।

विलावियोडी, विलावियोडी, विलावियोडी—भू० का० कृ० ।

विलावजणो, विलावजणो—भाव वा० ।

विलावळ, विलावळि, विलावळी—स पु—१ एक राग विशेष जो केदार और कल्याण के योग से बनता है यह दीपक राग का पुत्र माना जाता है । यह सवेरे के समय गाया जाता है [सगीत]

उ०—१ नचत केक रत राग, विम्मळ विलावळ । करत गोख जोय केक, हेम मे भळाहळ ।

—सू प्र

उ०—२ रात तो इण रग मे विदित्त हई । इतरं परभात हुवी । भैरु विभास । विलावळि को वखत आयो । गुणी जना गग भिलायो ।

—पना

२ हिंडोल राग की स्त्री एक रागिनी । (सगीत)

रु. भे —विलावळ, वेळावळ वेळावळ ।

विलाविया, विलाविया—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—पाटवर नीलगर जरवसो रा वणाव कोजे छै । आडिआ फणिया मुखमली खासा विलाविया थका जालोरी साठे, खुरासाणी भळके सातिअं ऊठ सोदागर रं घोडे चालविअं पठाण अरडे आयं चीवडिअं रुठे, गाम घणी सा लोचना किआ, वाळि वाळि मोतिआ ठविअ थका, ** ।

—रा. सा. स.

विलावियोडी—देवो 'विलावियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. विलावियोडी)

विलाव—म पु. [म. विलास] १ श्रीटा, गेल ।

उ०—१ अण मुण ग्रीमम निरग्या, वधि वरमात विलास । मातो कादव मेदनी, आयो भाद्रव मास ।

—ग. रु.

उ०—२ गवळा पळ सूं नाधिया, निवळ जाय पळ नास । मूंणी मेळ मजार वर, वधियो विपत विलास ।

—वा. दा

२ अणुगग या प्रेम पूर्ण श्रीटा, आगोद-प्रमोद ।

उ०—१ यों नरपति पुर थापरं, निन प्रति महन निवास । मुण अनुराग छ राग मुण, वाग तउग विलास ।

—रा. रु.

उ०—२ तठा उपगति राजान मिनामति रितिगज वमत वैमाव माग रा भगळानार विमाह रा मुण विलास करना मन्दरिन आई छै । आसोन मास आउ मप्रानती हूम छै ।

—ग. मा. म.

उ०—३ इण भात सुख-सेजे पीडिया । राति विदगयो । प्रमान हुवो छै । राती का काम उजागर नेण चुळि नै रहिया छै । कपोळं काम सुहाग रो छाप लागी छै । तुलि नै रह्यो छै । इण भात सुख विलास करता छै गित वारं माग माणीजे छै ।

—रा. सा. म.

३ शोभा, मुन्दरता, मनोहरता ।

उ०—वळवळ कठ विलास, हाग भुजग गग सिर पळहळ ।

—र. ज. प्र.

४ म्त्रियोचित हाव-भाव नाज-नखरा प्रादि जो काम-वामना को उत्तेजित करने वाली होती है ।

उ०—वर नारि नेत्र निज वदन विलासा, जाणियो अतहकण्ण जई । हसि हसि अहूहे हेक हेक हुइ, ग्रह बाहरि सहचरी नई ।

—वेलि

५ आनन्द प्रसन्नता, हर्ष ।

६ कोष, चमक ।

७ मनोरजन, मनोविनोद ।

उ०—१ सु आगली सखिआ नू जावती लखे नही छै । लवाव नही पडती छै । तिया सोंघरे डोरें लगी जाए छै । ऊजळी ठकुराणी ऊजळा ठाकुर प्रीतम सु जाइ जाइ मिळै छै । इण भाति सरद चादणी रग विलास माणीजे छै ।

—रा. सा. स.

८ सयोग श्रु गार वा एक भाव विशेष, जिसमे नायक के सामने नायिका उसके मन मे अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करने की क्रियाए या चेस्टाए करती है । (साहित्य)

९ भोग विलास, विषय भोग, मैथुन ।

३०—१ बोलै बधव रूपसी, बोलै मोकमदास । तज भवसाए
विलास पद को मानै धम जास । —रा रु

३०—२ निस वसियो सुख ग्रेह निज, भावै रमणि विलास ।
भरज करै मुख भोगता, हित रिति गरम हुलास । —रा रु

३०—३ कुसमित कहता फूली । कुसमायुध कहता काम देवतै
कै उदै करि केलि विलास खेल तै कैं भरथि जाहका भरतार घर
छै । सु तौ वसत विखै फूली छै । —वेलि टी

१० सुख भोग, आनन्द भोग ।

३०—१ सौनरनाथ विलास सू पूरण कियो वसत । देखैश दिल्ली
नगर, भायो कूच निभ्रत । —रा रु

३०—२ धरम वम लघु भ्रात हेत घरि कासीराज तेणि दीधी
करि । हित देखै नृप राग हुलासी, करै विलास इद्र जिम कासी ।

—सू प्र.

३०—३ सोरभा सोधा सरस, राग रग अति हास । ब्रह्मा
ब्रह्माणी महत, निज पुर करत विलास । —गज-उद्धार

३०—४ राजपाट सुत वित्त सबै, सुंदरि महल विलास ।
हरिया हरि सुख बाहिरी, ज्यु जंगल का घास ।

—अनुभववाणी

११ महक, सुगंध ।

१२ एक तपस्वी जिसकी मुक्ति 'विमल ज्ञान' की प्रति से हुई थी ।

१३ प्रिय वस्तु के दर्शनादि से गति, स्थिति आसन आदि की तथा
मुख, नेत्रआदि के व्यापारों की विशेषता या विलक्षणता ।

१४ शिल्पक के सत्ताईस अंगों में से एक ।

रु. भे —विलास, वेलस, वेलास, विलासा ।

अल्पा, —विलासी, विलासु ।

विलासक-वि —१ इधर उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, मंथुन करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग लूटने वाला ।

५ क्रीडा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करने वाला, आमोद प्रमोद करने
वाला ।

७ मनोरजन करने वाला, मनोविनोद करने वाला ।

क्रि वि. [अ विला + शक] विना शक, वेशक, निस्सदेह ।

३०—जै तू अरब जा हर भात कर हातिम नू भारचावैतो तोनू मोटी
कहूँ इण पापी कही विलासक मार आस्यु । —नी प्र

विलासण-वि —१ इधर-उधर घूमने वाला, भ्रमणशील ।

२ दातार, दानी ।

३ विषय भोग करने वाला, भोग विलास करने वाला ।

४ सुख भोग करने वाला, आनन्द भोग करने वाला, उपभोग
करने वाला ।

३०—रूप भूप रतिराज, प्राण अगराज प्रकासण । कौरवराज
घन करण, विमल सुरराज विलासण । —सू प्र

५ क्रीडा-खेल करने वाला ।

६ अनुराग या प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला ।

७ मनोरजन या मनोविनोद करने वाला ।

८ देखो 'विलासी' (पु) (रु. भे.)

विलासणो, विलासवो—क्रि स [विलाशनम्] १ क्रीडा करना, खेल
करना ।

२ अनुराग या प्रेम पूर्ण क्रीडा करना, आमोद-प्रमोद करना ।

३ काम वासना को उत्तेजित करने हेतु स्थियोचित हाव-भाव,
नाज-नखरे करना ।

४ मनोरजन करना, मनोविनोद करना ।

५ भोग-विलास करना, विषय भोग करना, मंथुन करना ।

३०—तिलोतमा मंगुका सची उरवसी सरोतरि, सुरपत्ती सेवता
ईद न घरै तिण श्रीतरि । कता सहित कुवेर वरण निज तरणि
विलासत, सरस लेख 'अमसाह' पेखि साराह प्रकासत । —रा रु

६ सुख भोग करना, आनन्द भोग करना ।

क्रि अ —७ अनुरक्त होना, लीन होना ।

३०—पाठ प्रबध किताक प्रकासत, वेद पुराण विचार विलासत ।
पडत द्वीत अद्वीत प्रकासत, भासत देव जिसा दुज भासत ।

—जैपुर नगर री तारीफ री गीत

८ शोभित होना, सुन्दर लगना ।

९ आनन्दित होना, हर्षित होना ।

विलासणहार, हारो (हारो), विलासणियो—वि० ।

विलासिओडो, विलासियोडो, विलास्योडो—भू० का० कृ० ।

विलासीजणो, विलासीजधो—कर्म वा०, भाव वा० ।

विलासणो, विलासभे—रु० भे० ।

विलासनो—देखो 'विलासिणी' (रु. भे.)

३०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अतेउरी आगे
चार बडारणा सहेलिआ रहै छै । अनगमजरी, मदनमजरी, रतन-
मजरी, पटुमजरी । ताह वडारणा सहेनिआ आगे चार पात्रा
सिगारणी खवास्या रहै । गुणमाळा, फूलमाळा, विजैमाळा, दीप-
माळा । तिका सिगारणी खवास्या आगे चार विलासनी दासी रहै
छै । —रा. सा सं.

विलासा—स स्त्री —१ अभिलाषा, इच्छा ।

३०—पेम पियाला पीजियै, मावा करि भरिपूर । जनहरिया पीया
पछै, दिखै विलासा दूर । —अनुभववाणी

२ देखो 'विलास' (रु. भे.)

उ०—१ सखी री मन धारें बारें मासा, आंणी वंराग उलामा ।
गुरु विजयहरख जस बासा, घघर्तं घरमगील विलासा हो नास ।

—घ घ घ

उ०—२ माया भईं विडाणिया, भए विटाणें लोग । जन हरीया
नही आपना, विलें विलासा भोग । —अनुभववाणी

उ०—३ विलग पथरणा पीडणें, सदा गहेली गग । हरीया
होसी भगति विन, विर्यं विलासा भग । —अनुभववाणी

उ०—४ वर नारि नेत्र निज वदन विलासा, जाणिया अतहकरण
जई । हसि हसि भ्रूँ हेक हेक हई, गह वाहुरि मदनरी गई ।
—वेनि

विलासि—देखो 'विलासो' (रू. भे.)

उ०—वैकठ विलासि अपुन्य प्रकामि अपार अपार अप्रम पप्र,
निरकार नर मधुकटक मारण विधन विचारण केवल रूप
वराह कर । घर दाठ घर करि देत कण कण रे पण रामण लक
लई दधि लोप लज, अविगति अज हमीर गमरि हरता सि निरतर,
ग्राह वेठ ऊग्राहि गजघज पय घज । —वि प्र

विनासिणी, विलासिनी—स स्त्री. [स विलासिनी] १ विलास करने
वाली, कामुक, भोग विलास में अनुरक्त या लीन स्त्री ।

२ देवी का विशेषण ।

३ वेदया, गनिका ।

४ विक्षेप शक्ति से युक्त ।

५ सुदरी, युवा स्त्री ।

६ एक वर्षावृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग,
ग होता है ।

रू. भे.—विलासिनी ।

विलासो—वि [स. विलासिन्] (स्त्री विलासण) १ दानी, दातार ।

२ सुखभोग या आनन्द भोग करने वाला ।

३ क्रीडा-खेल करने वाला ।

४ प्रेमपूर्ण क्रीडा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला ।

५ मनोरञ्जन या मनोविनोद करने वाला ।

उ०—सोभत (न) जोग मिले सुखकारी नरपति तिकण असोभा
न्यारी । रवि पख चतुरदसी सुखरासी, विद्या चतुरदस तणी
विलासो । —रा. रू

६ विषय भोग, भोग विलास या मंथुन करने वाला ।

७ कामी, रसिक ।

रू. भे.—विलासण. विलासि ।

स पु—१ आग, अग्नि ।

२ श्री कृष्ण का नामान्तर ।

३ भगवान श्रीविष्णु ।

४ चांद, चंद्रमा ।

५ माप, सर्व ।

६ जिय जागर, महादेश ।

७ कामदेश ।

८ यरण युद्ध ।

९ एक प्रकार का वणिज छद्र विशेष जितमें मगम तगम फिर
वो मगण और घन्त में गुरु होना है तथा पाच, तीन य पाच प-
यति हाती है ।

विलासु—देगो 'विलास' (घन्ता., रू. भे.)

उ०—मप्रद्रिजय सिवानदा वदन वचन विनासु नेमि जिनोम
तितु तितु उप्रत महिम निशामु । —जयनेगर सूरि

विलासो—देगो 'विनास' (रू. भे.)

उ०—१ जाणें तें चोमठि वना, निदपम वचन विलासो रे ।
चद्रवदन अगलोपणी, गय गजराज वल्हामी रे । —वि कु

उ०—२ चाकर चौकीदार जगें, बहला रागें पामो रे । काम
केरावें नें वल्हा, विलसें आप विलासो रे । —घ. घ.

विलास्य—स पु—नार लगा हुआ प्राचीन काल का एक वाता ।

विलि—देखो 'वळ' (रू. भे.)

उ०—हियइ वटां आचइ तें केहया । विलि मरिचना वडा, पाजो
ना वडा, घोल वडा, उडरनी दालि ना वडां मुगनी दालिना वडा
फुलधीनी दालिना वडा. घणें पोचणें भीनां, पणि नेलें मीना
चमत्कारिया अत्यत, मुहडि घात्या सुरत गलद्र, पणू म्युं कहीइ
स्वरग ना देव देवता पणि तावा नइ टलवलि । —व. स

विलिपित—वि. [स.] १ लिगा हुआ ।

२ सोदनर प्रकित किया हुआ ।

विलिस—वि—पुता हुआ, लिपा हुआ ।

विलिया—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—देखण लागी यक्ष आसठी प्रासूं भरिया, चीतें मन कुण्डाय
आज आ किसटी विलिया । निरम्यां भेडा मेप सजोगी चचळ
होवें, वारा काई हवाल, कामणी कठ न होवें ? —मेघ

विलियोडो—भू का क—आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ ।

(स्त्री विलियोडी)

विलिविलियो—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०—अथ वस्त्र, देवदूष्य चीनमुक गोजी चउडसी नीलनेत्र
सचोपा पाटणिया हीरपट्ट साउला विलिविलिया नरम्म ममी
उभयसरम्म वामसरम्म वामसऊमा मुगवना मांगलिमा वयराग

रा हीरागरा पुस्पागर जादर मेघाडंबर नेत्रपट्ट घोटपट्ट ।

—व. स.

बिलीजणो, बिलीजवो—क्रि अ.—खुर वाले पशुओं का 'मुहाडा' रोग ग्रस्त होना ।

बिलीजियोडो—भू का कृ —खुर वाले पशुओं का 'मुहाडा' रोग ग्रस्त हुवा हुआ ।

(स्त्री बिलीजियोडी)

बिली—देखो 'बळ' (रू. भे.)

उ०—अथ प्रव [ह] ठाभगावसर जलकल्लोल गगनमडल व्यापिवा लागा अकस्मात् नक्षत्रमाला अद्रस्य थई, बिली वाठ वाइवा लागा, तलानी माटी ऊपरि आणइ, हुगंध ऊछलित धार जलनउ छुड हु न लागइ, जलचर जीव आवी प्रवहरिण वाजइ ।

—व. स.

बिलीन—वि [स.] १ आपस में घुले-मिले हुए, जो वापस अलग २ नहीं किये जा सकें ।

२ जो गायब लुप्त, अदृश्य या ओझल हो गया हो

३ नष्ट हुवा हुआ, नष्ट ।

४ मरा हुआ, मृत ।

बिलुद्ध—वि [स. वि. + लुब्ध] १ मोहित, आकर्षित ।

२ लालायित ।

३ उलझा हुआ, फसा हुआ ।

बिलुद्धणो, बिलुद्धवो—देखो 'बिलूधणो, बिलूधवो' (रू. भे.)

उ०—सुंदर मंदिर मालिया, मुलकती नेह बिलुद्ध । पूरे हाथ पूजियो, परमेस्वर मन-सुद्ध । —जयवाणी

बिलुद्धणहार, हारो (हारी), बिलुद्धणियो—वि० ।

बिलुद्धिओडो, बिलुद्धियोडो, बिलुद्धचोडो—भू० का० कृ० ।

बिलुद्धीजणो, बिलुद्धीजवो—भाव वा० ।

बिलुद्धियोडो—देखो 'बिलूधियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बिलुद्धियोडी)

बिलुप्त—वि [स.] १ जिसका नाश हो गया हो, नष्ट ।

२ जो लोप या अदृश्य हो गया हो

३ जो टूट फूट गया हो, नष्ट, बरबाद ।

बिलुप्तयोनि—स पु [स.] स्त्रियो का एक प्रकार का रोग विशेष जो कि वायुदोष के कारण होता है ।

बिलूधणो, बिलूधवो—क्रि अ —१ झुंझटों में उलझना, फसना ।

उ०—बडो दुग्गी देस जोधे बिलूधो, सुधे अंगद अतरानेर सूधो ।

तर खेद होता अवा देह ताणो, प्रळ वेस लाघो नही पाख पाणो ।

—सू प्र.

२ मोह मे फसना, मोहित होना, आकर्षित होना ।

उ०—१ सुरा सोरै झुंझिये, भवर न जागे काय । प्रेम बिलूधो भवरो, सखि मरती जाय । —अग्यात

उ०—२ विखियारस विखलेर बिलूधो, सेवे करण घेनुगत सूधो । —अग्यात

३ लालायित होना, लालच में फसना ।

बिलूधणहार, हारो (हारी), बिलूधणियो—वि० ।

बिलूधियोडो, बिलूधियोडो, बिलूधियोडो—भू० का० कृ० ।

बिलूधोजणो, बिलूधोजवो—भाव वा० ।

बिलूधणो, बिलूधवो, बिलुद्धणो, बिलुद्धवो, बिलूधणो, बिलूधवो —रू० भे० ।

बिलूधियोडो—भू का कृ.—१ झुंझटो व तकलीफो मे उलझा हुआ, फसा हुआ २ मोह मे फसा हुआ, मोहित हुआ हुआ, आकर्षित हुआ हुआ ३ लालच में फसा हुआ, लालायित हुआ हुआ ।

(स्त्री. बिलूधियोडी)

बिलूधो—वि.—१ झुंझटो व तकलीफो मे फसा हुआ ।

२ मोह में फसा हुआ, मोहित ।

३ लालच में फसा हुआ, लालायित ।

बिलूधणो, बिलूधवो—क्रि अ —१ लटकना ।

उ०—१ खीवा थू खुरसाणा, घण तेगी तरवार री । मुखमल हदे म्यान, खंवे बिलूधूं खीवजी । —खीवजी री बात

उ०—२ करहो कार्ची ना चरे, पाकी दिसा न जाय । अघर बिलूवी वेलडी, तिण नै धणी भुराय । —अग्यात

२ भेघ या धनघटा आदि मडराना, छाना, झुकना ।

उ०—कुण थाने चाळा चाळिया, ही पनामारु जी हो, किण थाने दीवी, रे ढोला, सीख । सीख, ही पिया प्यारो रा ढोलाजी ही, हा रे, सांबणियो बिलूधयो रे वीकानेर । —लो गी

३ समृद्धि या विशालता युक्त शोभित होना ।

४ झूना, स्पर्श होना ।

५ लिपटना, चिपकना ।

६ लतथोवत्य होना ।

क्रि. स.—७ आलिंग करना, गले लगना या लगाना ।

उ०—यू करता हतरा मे ती हुह फजर । कूकडा बोलिया । वाजी गजर । तद कवर वाग नू सीख कीवी । ती पिण रतना आखिया मरी चाळा लूवी, गळ बिलूधो । बोलणी न आयो, गळी गहरायो । —र हमीर

८ रोकना, भयरुद्ध करना ।

९ देखो 'विलवणी, विलवनी' (रू भे)

विल्वणहार, हारी (हारी), विल्वणियो—वि० ।

विल्विषोटी, विल्विषोटी विल्व्योटी—भू० का० कृ० ।

विल्वीजणी, विल्वीजनी—कर्म वा० भाव वा० ।

बल्वणी, बल्वनी, बिन्वणी, विल्वनी, विल्वणी, विल्वनी,
विल्वणी विल्वनी, विल्वणी, विल्वनी, विल्वणी, विल्वनी
—रू० भे० ।

विल्वविद्योती—भू का कृ —१ लटका हुआ. २ भेष या घनघटा
आदि मडराया हुआ, छाया हुआ, फुका हुआ ३ स्मृद्धि या
विनाशला युक्त बोधित हुआ हुआ ४ सूया हुआ, स्पष्ट हुआ
हुआ. ५ लिपटा हुआ, चिपका हुआ. ६ सत्त्वोक्त्य हुआ
हुआ ७ आलिंगन किया हुआ, गले लगा या लगाया हुआ
८ रोकना हुआ, भयरुद्ध किया हुआ ।

९ देखो 'विल्वविद्योती' (रू भे) (स्त्री विल्वविद्योती)

विल्वमणी, विल्वमनी—देखो 'विल्वणी, विल्वनी' (रू भे)

उ०—विरछां विल्वंभी पिया वेलडी, नरां विल्वंभी विल्वंभी नार,
होजी डोला नार, भव घर आय जा फूल गुलाब रा हो जी ।

—सो गी

विल्वमणहार, हारी (हारी) विल्वमणियो—वि० ।

विल्वमिषोटी, विल्वमिषोटी, विल्वम्योटी—भू० का० कृ० ।

विल्वमीजणी, विल्वमीजनी—कर्म वा०, भाव वा० ।

विल्वमिषोटी—देखो 'विल्वविद्योती' (रू. भे.)

(स्त्री. विल्वमिषोटी)

बिल्व—देखो 'बिल्व' (रू. भे.)

उ०—१ डालू वाळा घणी रें पखें नी बघें तो वास रें है जटे ईं
भूची लाग जावें । सगळा आणुद रो मठ मर जावें । इण आणुद
रो साव लेवण सारू मतें ईं जणी जणी डालू वाळा मोठ्यार रें
बिल्व बघण्यो । —फुलवाडी

उ०—२ बस्ती रा सगळा मिनख थळिया रें बिल्व रह्या । भर वो
हाकांघाका गर्वुं भर खाखला री भाधी पाती पटकायली ।

—फुलवाडी

उ०—३ श्री तो साचाणी दूष ईं निकळियो । जै कोई लफगो
व्हेती तो केडीक माहेरी सजती । आज तो भगवान नांभी बिल्व
रह्यो । दोयती रा भाग है । —फुलवाडी

उ०—४ उत्तरतां ईं पैला ती वेटी सूं खम्माघणी करी । पछे
मोहरी भाल वागोळता ऊट री गळाई बगळ बगळ कंवण
सागा-भाग बिल्व व्हे जद यं व्हिया करे । —फुलवाडी

विल्वघणी, विल्वघनी—देखो 'विल्वघणी, विल्वघनी' (रू. भे.)

उ०—१ सांभाधरम विद्यादवाद, विपरीत विल्वघा ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ रिमल जिनेसर गुणि धनवेगर, माहरा बचन भद्रप ।
मनडी विल्वघी रे ताहरें रूप, जेम विल्वघी रे बमल मधुप ।

—वि. कृ.

उ०—३ सेठ तरुं मन माहि उदधि मां कुमरी बघें निगदीध,
विरह विल्वघी रे विगधावीम । नलिनी देवि भमर जिम घटके,
तिम तधु मिलण जगोस ।

—वि. कृ.

उ०—४ तीगा नोमण, फटि करळ, उर रत्तडा विनीह । दोला,
थाकी मारुई, जाणि विल्वघट मोह ।

—श्री मा

विल्वधणहार, हारी (हारी), विल्वधणियो—वि० ।

विल्वधिषोटी, विल्वधिषोटी, विल्वध्योटी—भू० का० कृ० ।

विल्वधीजणी, विल्वधीजनी—भाव वा० ।

विल्वधियोटी—देखो 'विल्वविद्योती' (रू भे)

(स्त्री. विल्वधियोटी)

विल्वरणी, विल्वरनी—क्रि. स —१ नोचना ।

उ०—गुरु पूछी रें मन माहि गयठ, काठसग्न रह्यठ ममसानी रें
जी । स्यालणी सरीर विल्वरियठ, वेदना सहो धगमानो खी ।

—स. कृ.

२ छीनना, झपटना ।

विल्वरणहार हारी (हारी), विल्वरणियो—वि० ।

विल्वरिषोटी, विल्वरियोटी, विल्वरघोटी—भू० का० कृ० ।

विल्वरीजणी, विल्वरीजनी—कर्म वा० ।

विल्वरियोटी—भू वा. कृ —१ नोचा हुआ. २ छीना हुआ, झपटा
हुआ ।

(स्त्री विल्वरियोटी)

विल्वेच्छ, विल्वेच्छु—देखो 'विल्वेच्छ'

उ०—धीर कोडि चिह पाडवि मारी, विल्वेच्छराय रथ भीमि
विहारी । तु विराटग्रय भीमि ऊदालिउ, दाठ देविगु विल्वेच्छु सु
बालिउ । —सालिसूरि

बिल्वे—देखो 'बिल्वे' (रू भे)

उ०—१ अला दुष भवतार तु वाप वावा, निमी धरम ना कीध
निरबळ नियावा । जुष धिणी जगत केणि भाति जीती, बिल्व
खाफर जिसी दहत बीती । —वी. प्र

उ०—२ सीत परणियो सांभ, गरव दुजरामि गमायो । हुषी
भयोघ्या हरख, बिल्वे कोसल्या वधायो । —वी प्र

३०—३ अकरूर घरै आया अनत, चिळै मात पिति विळकुळ ।
कूचडी हुति कौधी क्रिया, माहव भगता सा मिळै । —पी ग्रं
विलेप, विलेपण, विलेपन—स. पु [स. विलेप, विलेपन] १ लेप आदि
करने की क्रिया ।

३०—१ कचण ककण केउर नेउर पइ भुयदडि, चदनि देह
विलेपनु लेप न लागइ पिडि । —जयसेखर सूरि

३०—२ वेणी पवित्र करिस निखभीवर, मसतग चाडै तुलसी-
मजरै । तुव इम पवित्र करिस दसरथ-तण, चरच विलेप करै हर
चदण । —हं र

२ शरीर आदि पर चुपडने या लगाने की वस्तु चन्दन, केसर या
अन्य सुगन्धी द्रव्य आदि ।

विलेपनग्रह—स पु [स. विलेपन+गृह] वह स्थान जहा चन्दन आदि
का लेपन किया जाता है ।

३०—मञ्जनग्रह विलेपनग्रह प्रसाधनग्रह अलकारग्रह आदरसग्रह
अत पुरग्रह क्रीडाग्रह रसवतीग्रह भोजनग्रह आस्थानग्रह कोसर्चत्य
प्राय मदिरपरिकरित विसाली प्रणाली चित्रसाली । —व. स.

विलेसय—देखो 'विलेसय' (रू भे) (हं. ना मा)

३०—अर अणुहल पुर ववी में पाधरी ही जाय पंठण री सकल्प
घरती नहीं परतु इसडा राग रा रिभ्रवार अलगरद विलेसय ती
कठं न जाणिया । —व भा.

विले, विलै—१ देखो 'विले' (रू भे)

३०—१ विमळ करेसर विलै, साधु सुखदेव सरीखा । बालमीक
जैदेव, नाम नरहर कवि नीका । —पी ग्रं

३०—२ विही केम घणनाम, हेक हैश्रीव विलै हस । सेत वाराह,
आप विणु रूप तणो अम । —पी ग्रं

२ देखो 'विलय' (रू भे)

३०—१ फेर रावजी सँ कही कुवर घणा कही विलै लंगावो ।
भाई पण विलै लगावो । —नापे साखले री वारता

३०—२ केसव गुण गावण करू ली गुरुदेव सहाय । ऊजळ घट
धुष ऊपजै, विघन विलै हुय जाय । —भगतमाळ

३०—३ दाडू देखि देखि सुमिरण करै, देखि देखि लै लीन ।
देखि देखि तन मन विलै, देखि देखि चित दीन । —दादूवाणी

३०—४ तन मन विलै यो कीजिये, ज्यों पाणो मे लौण । जीव
ब्रह्म एक भया, तव दूजा कहिये कौण । —दादूवाणी

३०—१ नदी पार संपजै, पोत द्रढ खेवट पायो । विपति विलै
हुय जाय, जेम घर सपत आया । —रा रू

विलोक—वि [वि=रहित+लोक] १ जन रहित, निर्जन, शून्य ।

२ दृष्टि, नजर ।

विलोकण—स स्त्री [स विलोकने] १ देखने की क्रिया, या भाव ।

२ जाचने की क्रिया, परीक्षण ।

३ तलाश करने की क्रिया, तलाशी ।

रू भे—विलोकन ।

विलोकण—स. स्त्री.—दृष्टि, नजर ।

३०—सत के सोनागिर' वांचा हरिचद, साच के अजातसत्र गात
रति विद । क्रपा की द्रिस्टि अम्रित के भाय, कोप की विलोकण
काळ तै सवाय । —रा रू.

विलोकणी, विलोकवो—१ अवलोकन करना, देखना ।

३०—१ नरा अही अमरा उछडे थडे थाळ नीर, मही रसा तळा
घोर थडे आसमाण । महावीर देवासाल विलोकै रोस मे मडे,
पुळै कधी आळ छडे पछाडो पीठाण । —र रू.

३०—२ रवि रथ थाभि विलोकै राजा री आपरा जोष सिर-
ताजा । दै दै पाव गजा दांतूसळ, वाघा जेम चढा वीचूजळ ।

—सू प्र.

३०—३ जिण विलोकि कहियाँ जगजामी, सिव छै सुखी सिवा
तो स्पामी । कहि इम प्रभु आतिय-धम कीधी, दखि प्रमाण आसण
त्रण दीधी । —सू प्र.

२ निरीक्षण या परीक्षण करना, जाचना ।

३ ढूँढना, तलाश करना ।

४ विचार करना, विचारना ।

विलोकणहार, हारी, (हारी), विलोकणियो—वि० ।

विलोकियोडो, विलोकियोडो, विलोकियोडो—भू० का० कृ० ।

विलोकियोजणो, विलोकियोजवो—कर्म वा० ।

विलोकणो, विलोकवो, विलोकवणो, विलोकववो—रू० भे० ।

विलोकन—देखो 'विलोकण' (रू भे)

विलोकवणो, विलोकववो—देखो 'विलोकणी, विलोकवो' (रू. भे)

३०—सव तमस मिटयो प्रगटयो सराह, वरत्यो सुभ ग्यान प्रकास
वाह । चित कोक विलोकवै करत चाह, सव सुर नर जिनकी
करत सराह । —ध व प्र.

विलोकवणहार, हारी (हारी), विलोकवणियो—वि० ।

विलोकवियोडो, विलोकवियोडो, विलोकवियोडो—भू० का० कृ० ।

विलोकवियोजणो, विलोकवियोजवो—कर्म वा० ।

विलोकवियोडो—देखो 'विलोकियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विलोकवियोडो)

विलोकियोडो—भू का. कृ—१ अवलोकन किया हुआ, देखा हुआ.

२ निरीक्षण या परीक्षण किया हुआ; जाचा हुआ. ३ ढूँढा

हुआ, तलाश किया हुआ ४ विचार किया हुआ, विचारा हुआ ।

(स्त्री विलोकियोडी)

विलोडणी, विलोडनी—देखो 'विलोडणी, विलोडनी' (रु. भे.)

विलोडणहार, हारी (हारी), विलोडणियो—वि० ।।

विलोडिओडी, विलोडियोडी, विलोडयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोडोजणी, विलोडोजनी—कर्म वा० ।

विलोडियोडी—देखो 'विलोडियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री विलोडियोडी)

विलोचण, विलोचन—स पु. [स. विलोचन] १ आन्व, नैत्र ।

(अ मा, ह ना. मा)

२ एक नरक जहा जाने से प्राणी अन्धा हो जाता है ।

वि—विना आखो का, अन्धा ।

विलोचनश्रु—स पु. [स विलोचन+श्रु] आखो का पानी, आसू ।

विलोडणी, विलोडनी—क्रि स.—१ विलोडित करना, मथना ।

उ०—'वल्लिगहन श्रोतत, पाखाण रोडत सुडादडि आच्छोडत गिरिन्दी विलोडत, महाद्रह डोहत, साहास्सिक तणा मन खोहत, तुरगम आसवत, पवन जिम चालत ।' —व. स.

२ हिलाना, डुलाना ।

३ युद्ध आदि में शत्रु सैन्य को तितर-वितर करना ।

४ उथल-पुथल करना ।

विलोडणहार, हारी (हारी), विलोडणियो—वि० ।

विलोडिओडी, विलोडियोडी, विलोडयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोडोजणी, विलोडोजनी—कर्म वा० ।

विलोडणी, विलोडनी, विलोडणी, विलोडनी, विलोणी, विलोनी, विलोवणी, विलोवनी, वीलोणी, वीलोनी, विलोडणी, विलोडनी, विलोणी, विलोनी, विलोवणी, विलोवनी, वीलोणी, वीलोनी ।

—रु. भे.

विलोडियोडी—भू. का कृ.—१ विलोडित किया हुआ, मथा हुआ २ हिलाया-डुलाया हुआ ३ युद्ध आदि में शत्रु सैन्य को तितर-वितर किया हुआ, हताश किया हुआ, ४ उथल-पुथल किया हुआ ।

(स्त्री विलोडियोडी)

विलोणी—देखो 'विलोवणी' (रु. भे.)

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणी तणा ऋडका उपजइ, पथिक भारगि थया । आहाण तणं घरि वेद भवनि विस्तरि, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर ह्या । —रा. सा. स.

विलोणी, विलोनी—देखो 'विलोडणी, विलोडनी' (रु. भे.)

उ०—१ हुश्री हुस री रूप श्री राम हुश्री, वडी कछ भवतार दरिया विलोश्री । दिवै दान रतना तणी सरिसि देवा, जरू दुख दे दाखावा राह जेवा —पी. प्र.

उ०—२ विलोश्री वार वळिराव, वहि सुरा जैत सीता वरै । रुधनाथ तिकै दिन राह री, घडसा सिर अळगी घरै ।

—पी. प्र.

उ०—३ हुह्रिजे उद्यम दूध जतन करि दही जमावै । वलि परभात विलोइ, उदिम सेती घत आवै —घ. व. प्र.

उ०—४ मिळ मथाण धाराळ तणं मुह, जत्र कत्र सत्र होयै जणो जण । वार वाग दध जेम विलोश्री, ताईया दळ नगराज तण ।

—दूदा नगराजीत री गीत

विलोणहार, हारी (हारी), विलोणियो—वि० ।

विलोयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोईजणी, विलोईजनी—कर्म वा० ।

विलोप—स पु. [स.] १ बाधा, रोक, रुकावट ।

२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने की क्रिया ।

३ हानि, नुकसान ।

४ नाश, संहार ।

उ०—आयो सकोप दळ ऊपरा, प्रवळ तोप गोळी सु पर । कारण विलोप जग चो करण, घायो काळक कोप घर ।

—रा. ह.

५ उल्लघन करने की क्रिया ।

६ अदृश्य या आसो से शोभल होने की क्रिया ।

वि—गवाने वाला, खोने वाला ।

उ०—श्रीरग कोप विलोप भू, गिरां अकव्वर साह । साम्हा चडिया वावसू, खडिया पिच्छम राह । —रा. ह.

विलोपक—वि —१ बाधा डालने वाला, रुकावट डालने वाला ।

२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागने वाला ।

३ हानि या नुकसान करने वाला ।

४ नाश करने वाला ।

५ अदृश्य या विलुप्त होने वाला ।

६ गवाने वाला, खोने वाला ।

७ उल्लघन करने वाला ।

विलोपणी, विलोपनी—क्रि स.—१ बाधा डालना, रुकावट डालना ।

२ चोरी से या बलात् वस्तु लेकर भागना ।

३ हानि करना, नुकसान करना ।

४ उल्लघन करना ।

५ नाश करना, मिटाना ।

६ नाश करना, सहार करना ।

क्रि अ—७ नाश होना, मिटना ।

उ०—सर सरित निरमळ नीर सुदर, अमळ अवर ओपय ।
किरि सुबुधि वधि सतसग कारण, लुवुध होत विलोपयं ।

—रा रू

८ सहार होना ।

९ अदृश्य होना, विलुप्त होना ।

१० गवाना, खोना ।

११ विमुख होना, पलटना ।

विलोपणहार, हारी (हारी), विलोपणियो—वि० ।

विलोपिओडो, विलोपियोडो, विलोप्योडो—भू० का० कृ० ।

विलोपीजणो, विलोपीजबो—कर्म वा, भाव वा० ।

विलोपात—देखो 'विलाप' (रू भे)

उ०—ऊपरा साम्ही राति आई । ताहरा मन में विचार कियो,
हु केथो जाऊं ? में आगे कदे सासरी आखे दीठी नही । हिवै
म्हारी कौण गति हुसी ? आ मन में विलोपात करणै लागी ।
—कावळी जोईयै नै तीडी खरळ री वात

विलोपियोडो—भू का कृ.—१ बाधा डाला हुआ, रूकावट डाला हुआ
२ चोरी से या बलात् वस्तुएँ लेकर भागा हुआ ३ हानि किया
हुआ, नुकसान किया हुआ ४ उल्लघन किया हुआ ५ नाश
किया हुआ, मिटाया हुआ. ६ सहार किया हुआ. ७ नाश
हुवा हुआ, मिटा हुआ. ८ सहार हुवा हुआ ९ अदृश्य हुवा
हुआ, विलुप्त हुवा हुआ १० गवाया हुवा, खोया हुआ. ११
विमुख हुवा हुआ, पलटा हुआ ।

विलोपी-वि—विलोप करने वाला ।

विलोभ, विलोभन—वि. [स] १ जिसमें लोभ का अभाव हो, लोभ से
रहित ।

२ मोहित, आकर्षित, लालायित ।

उ०—सिणगार गज असि सोभ, लखि हुवै इदर विलोभ । मिळ
मत्रि सुभड समाज, साजत निज रस साज । —सू प्र.

सं पु—१ मन को ललचाने वाला, लालच ।

२ आकर्षण ।

३ बहकावा, फुसलाहट ।

४ गुणकथन ।

विलोम—वि [स] १ जिसके वाल न हो, लोम रहित ।

२ सामान्य रीति, नियम, स्वभाव आदि के विपरीत क्रम में
होने वाला ।

३ विपरीत क्रम यानी ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला ।

४ विपरीत, उल्टा ।

उ०—घनै उतग अग कै मतग घूमतै नही, चलत से विलोम लोम
व्योम चूमतै नही । भपेट देत भडकै ब्रह्म ड व्यापतै नही, छलग
देत छोनि है, मलग मानतै नही । —ऊ का.

५ शत्रु, दुश्मन ।

उ०—सबळ कळ आस्ट्रिया विलोमा साभता, वाजता त्रवागळ कहर
वेळा । 'पती' ईडरपती ढिलीवै पलायत, हुवो दळ छत्रिया छत्र
हेळा । —किसोरदान बारहट

सं पु—१ स्वान, कुत्ता ।

२ सर्प, साप ।

३ वरुण का एक नामान्तर ।

४ कृए से पानी निकालने का एक प्रकार का साधन, रहट ।

५ स्वरो का अवरोहात्मक साधन ।

६ सगीत में ऊचे स्वर से नीचे स्वर की ओर उतार, ऊचे स्वर
की ओर से नीचे स्वर की ओर आने की क्रिया ।

७ पदों के वाद्यो सतार आदि मे एक प्रकार का मीड विशेष ।

वि वि—इसमे "सा" के पदों पर ही बिना तार बजाए तार को
अदाज से खींच कर 'रे' के स्थान तक ले जा कर मिणराब से
प्रहार किया जाता है तथा फिर तार को वापस "सा" पर ले
जाया जाता है ।

८ कपोतरोमा राजा का एक पुत्र ।

रू. भे.—विलम, ।

विलोमसोमायन—स पु [स] एक प्रकार का व्रत विशेष, जिसके करने
से व्रतिसोमलोक प्राप्त होता है ।

वि वि—यह कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से आरम्भ कर, ३ दिन चार
स्तनो का, ३ दिन दो स्तनो का, ३ दिन एक स्तन का दूध पीये
फिर ३ दिन १ स्तन का, ३ दिन २ स्तनो का, ३ दिन तीन स्तनो
का, और तीन दिन चार स्तन का दूध पी कर कुल चौबीस दिन
तक यह व्रत किया जाता है ।

विलोयोडो—देखो 'विलोडियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विलोयोडी)

विलोळ, विलोल—वि [स विलोल] १ हिलने-डुलने वाला, लहराने
वाला ।

२ चंचल सुन्दर ।

३ ढीला, धियिल ।

उ०—भवि भवसड तै बोलइ बोलइ गिरिसिर टोल, सहजिइ
परभव भेदन वेदन वदन विलोल । —जयसेखर सूरि

४ अस्त-व्यस्त, बिखरा हुआ ।

स पु—ऐश-भाराम ।

उ०—विलसं दरव विलोळ, हरामखोर जो नर हुवै । पावै जम री पोळ, भूरदक्षिणा 'भरिया' । —महाराजा बलवर्तसिंह रत्नाम विलोळणी, विलोळणी—देखो 'विलोळणी, विलोळणी' (रू. भे)

विलोळणहार, हारी (हारी), विलोळणियो—वि० ।

विलोळिओडी विलोळियोडी, विलोळयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोळीजणी, विलोळीजणी—कर्म वा० ।

विलोळणी, विलोळणी—क्रि. स —१ ऐश-भाराम करना ।

२ हिलाना-डुलाना ।

३ हवा करना, हवा डालना ।

उ०—वनिता समझ न वेदना, करता कोठि उपाय । वाउ विलोळ वीजणइ, कौ चदन घसी लाय । —मा. का प्र

विलोळणहार, हारी (हारी), विलोळणियो—वि० ।

विलोळिओडी, विलोळियोडी, विलोळयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोळीजणी, विलोळीजणी—कर्म वा० ।

विलोळणी, विलोळणी—रू० भे० ।

विलोळियोडी, विलोळियोडी—भू का कृ —१ ऐश-भाराम किया हुआ.

२ हिलाया डुलाया हुआ ३ हवा किया हुआ, हवा डाला हुआ ।

(स्त्री विलोळियोडी, विलोळियोडी)

विलोळणउ—देखो 'विलोळणी' (रू. भे)

उ०—दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे । जिम विलोळणउ विलोळता थका, सरीर नउ सस्थान रे । —स कु

विलोळणी—स स्त्री.—१ मिट्टी का बना वह छोटा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

२ दही मथने वाली स्त्री ।

रू भे —विलोळण, विलोळणी ।

विलोळणी, विलोळणी—स पु.—१ मिट्टी का बना वह बड़ा पात्र जिसमे दही मथा जाता है ।

उ०—मूधा पडथा रे विलोळणी, रीती रँवै जाय छद्धियार । चारी, म्हारा गुगा, मल रही वी । —लो गो.

२ दही आदि मथने की क्रिया या भाव ।

उ०—१ माय विलोळ विलोळणी, बहन रसोई कँ माय । सोदागर महदी राचणी । —लो गो

उ०—२ हवइ कूकडा बोल्या, लगारेक नीदली डोल्या । नीदई ऋकोल्या, मूकी सभोगनी लोल्या, स्त्री भरतार डमडोल्या । आवइ नारि, वारि उघारि, राति अघारि । दही समाल्युं, विलोळणी घाल्युं । —रा सा स

उ०—३ जाभरक नानी-मा रे ईं सार्थे ऊठण्यो । जोडे वँठ डुवारी करी । थोडी ताळ विलोळणी ईं घमोडयो । पछै सूरज दो ग्रेक बासडा उचो चढ्यो जणा खाखरा मार्ये माखण मिसरी लेय कलेवी करण लागी । —फुलवाडी

उ०—४ थू ईं घणा रे मूडे सुणियो व्हेला कँ पुत्र री जड सदा हरी रँवै । अँ काला मिनयां री काली वाता है । पारी मासी तो पिचियासी वरसा मे विखा री विलोळणी करनै फगत इण ग्यान री माखण निकाळियो कँ घन री जड सदा हरी रँवै ।

—फुलवाडी

क्रि. प्र —करणी, घमोडणी, घालणी, होणी ।

रू भे —विलोळणी, विलोळणी, विलोळणउ, विलोळणी ।

विलोळणी, विलोळणी—देखो विलोळणी, विलोळणी (रू. भे)

उ०—१ माय विलोळ विलोळणी, बहन रसोई कँ माय । सोदागर महदी राचणी । —लो गो.

उ०—२ दसमी भावना एम भावउ, लोक स्वरूप मथान रे । जिम विलोळणउ विलोळता थका, सरीर नउ सस्थान रे ।

—स. कु.

उ०—३ एक बाई कह्यो स्वामीजी म्हारे भँस व्यावै जउ पधारी तो लाही लेवूँ । तँ किम भँस व्याया एक महिना ताइ दूध दही वावर देवँ, पिए विलोळ नही । तँ देवी रे टारुँ पधारज्यो ।

—मि. द्र

उ०—४ पीसण खाडण प्रसिद्ध, वलँ गो दूहि विलोळ । जीमण राधि जिमाव, लाज सु जिमँ लुकोवँ । —घ. व. प्र.

विलोळणहार, हारी (हारी), विलोळणियो—वि० ।

विलोळिओडी, विलोळियोडी, विलोळयोडी—भू० का० कृ० ।

विलोळीजणी, विलोळीजणी—कर्म वा० ।

विलोळियोडी—देखो 'विलोळियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. विलोळियोडी)

विलोळणी—देखो 'विलोळणी' (रू. भे)

उ०—कमळा किया करतार, भर बुडी तग भार । लेह देह छोडीजँ लास, विलोळणी वरहास । —गु रू व

विलोहित—स पु [स] १ तीन सिर, तीन पैर एव तीन हाथो वाला एक राक्षस जो कश्यप एव खशा का पुत्र था ।

२ कश्यप एव सुरभि के पुत्रो मे से एक रुद्र ।

विलो—सं पु —१ वर्षा ऋतु मे हरे घास या पानी मे होने वाला कीडा विशेष ।

२ उक्त कीडे के पेट मे चले जाने से गाय, बैल, भँस आदि पशुओं को होने वाला रोग विशेष ।

वि. वि.—इस रोग से पशु का अंग अकड जाता है । अंगर कीडा नाक मे चला जाये तो पशु मर भो जाता है ।

विलकुल—देखो 'बिलकुल' (रू भे.)

विलकुळणी, विलकुळवी—देखो 'विलकुळणी, विलकुळवी' (रू भे.)

विलकुळणहार, हारी (हारी), विलकुळणियो—वि० ।

विलकुळिओडो, विलकुळियोडो विलकुळचोडो—भू० का० कृ० ।

विलकुळीजणो, विलकुळीजवो—भाव वा० ।

विलकुळियोडो—देखो 'विलकुळियोडो' (रू भे)

(स्त्री. विलकुळियोडो)

विलघा—देखो 'वेळा' (रू भे.)

उ०—कोट किला करताह, विखरतां लागं विलघा । मानव नै मरताह, वार न लगे वसतिघा । —समेळजी वारहठ

विलघायत - देखो 'विलायत' (रू भे)

विलयो—देखो 'विल्यो' (रू भे)

विल्लगणो, विल्लगवो—देखो विल्लगणो, विल्लगवो' (रू भे)

विल्लगणहार, हारी (हारी), विल्लगणियो—वि० ।

विल्लगिओडो, विल्लगियोडो, विल्लगयोडो—भू० का० कृ० ।

विल्लगोजणो, विल्लगोजवो—भाव वा० ।

विल्लगियोडो—देखो 'विल्लगियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विल्लगियोडो)

विल्लभ—देखो 'विल्लभ' (रू भे)

विल्लल—स पु —एक देश का नाम ।

उ०—सगवण गज्जण सवर बरबरकाय चिलाय तुरड गुंड उडकुड पक्कण चुक्कण कुडक्क तोसल सिंहल दमिल अज्जल विल्लल पारस खस लउस हारो समोसहिम रोम-मरुग । —व स.

विल्लायत—देखो 'विलायत' (रू भे)

उ०—जुदा मिसल जग हूत, अमल विल्लायत वाळा । इसडा वार हजार, चूच चढिया कळिचाळा —सू प्र

विल्लो—देखो 'विल्लो' (रू भे)

विल्वपत्र—स पु [स] वह वेल का पत्ता जो प्राय शिवजी की पूजा मे चढाने के काम मे आता है ।

विल्वमगळ—स पु [स विल्वमगळ] श्रीकृष्ण के अनन्य भक्त एक ब्रह्मण पुत्र ।

वि. वि —इसके पिता कृष्णवेणी नदी के तट पर रहते थे । यह पहले तो शात व शिष्ट स्वभाव के थे । मगर पिता की मृत्युपरात दुराचारी हो गये व एक वैश्या के पास भी जाने लगे । पिता के श्राद्ध के दिन भी चिंतामणि नामक वैश्या के पास रात को गये । नदी मे किसी मृत स्त्री के शव को लकड़ी समझ कर उसी से नदी पार की तथा वैश्या के द्वार वद होने पर एक साप को रस्ती

समझ कर उसी से दीवार फाद कर अन्दर गये । उसी दिन वैश्या के फटकार भरे उपदेश को मान कर उसी को अपना गुरु बनाया तथा अपनी आखें फोड ली और कृष्ण की भक्ति मे लीन हो गये । इसीने 'श्रीकृष्ण कर्णामृत जिसे' "लीला गुरु" भी कहते हैं, की रचना की थी ।

विवत—स —१ स्थिति, हालत ।

उ०—जी नरसघजी की वाजी सावृत रहसी, थं सावत लोका नू लै नीसरसी तो । वळ पठाण नू वंगो धको देसा । विवत देख दुसमण कन्है नीसरै, विवत देख लडै, तिका घरती रहे । अर आखता हुय नै कावू विना लड मरै तिका री घरती जाहि । —राजा नरसिंघ री बात

विषक्षु—स पु [स.] कौरव वशीय निमिचिक राजा का नामान्तर जो अशिमिमकृष्ण का पुत्र था ।

विषची—देखो 'विमची' (रू भे) (अमरत)

विषत्स—वि. [स] सन्तान हीन, जिसके सन्तान न हो ।

विषध—१ देखो 'विषुध' (रू भे) (प्र मा)

उ०—विषध घणमाळ नभचक्र माफल वसी, रवि ससी न दीसै दिवस रजनी । मनोभव लगाडै बाण भोहण मदन, सहस वाता सजन आण सजनी । —वा. दा.

२ देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—१ जग ईल स्वद पी ऊखरस, जिम अवर चार अनारयं । सुख परम दिनपति नपति सेवत, विविध भोग विहारय । —रा रू

उ०—२ विविध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा सी ब्रह्माजी वनै सिघाई जे दरद सुणाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर बिहडीजै, क्रीत कानै सुणीजै । —मा वचनिका

उ०—३ कही घरा पूर घुर कया, विसवामित्र विषध ।

—रामरासो

विषधा—१ देखो 'विषुध' (रू. भे)

२ देखो 'विविधता, (रू भे)

विषधाजाण—देखो 'विविधजाण' (रू भे) (अ. मा)

विषधि—देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—आगम आवण हरख उमडै, माडहि कोड नरुका मडै । छत्रपति हित मारग छडकाया, विषधि राज मणि फूल विछाया । —रा रू

विषनउ—देखो 'विवनी' (रू भे.)

उ०—१ घण थाटि लियइ आयठ घरेहि, छागिया मेछ घर घाति छेहि । जणियार जोध विषनउ जियार, ताडिया वच्छ वथाणितियार । —रा. ज. सी

विद्यनरणी, विद्यनबी—कि भ्र.—मरना, श्रवसान होना ।

उ०—१ नर विद्यन वा नह रहै, जग में आ रह जाय । कुळवती
सु क्रीत री, नलटी गति इण भाय । —वा दा

उ०—२ विद्यन 'वाध' घरं मूछा बळ, वंठी गादी 'गग' महाबळ ।
'माल' 'गग' गादी राव मारु, सबळा किया आपरं सारु । —रा. रू

उ०—३ तण जास पास नय कुळ तणी, सीचं भोर आचा सही ।
शभिनमो 'कृष्ण' दानिसवर रायासिध विद्यनो म कही ।

—करमसी आसिधी

उ०—४ मारग जिकण गयी राव मारु, पाछो नह देखा परत ।
तो विद्यन चापा वड त्यागी, वन खट री तूटी वरत ।

—सकरदान दधवाडियो

विद्यनरणहार, हारी (हारी), विद्यनणियो—वि० ।

विद्यनिओडो, विद्यनियोडो, विद्यन्योडो—भू० का० कु० ।

विद्यनीजणी, विद्यनीजवी—भाव था० ।

विद्यनरणी, विद्यनबी, विद्यनणो, विद्यनयो विद्यनरणी, विद्यनबी
—रू० भे० ।

विद्यनियोडो—भू का. कु —मरा हुआ, श्रवसान हुआ हुआ ।

(स्त्री विद्यनियोडो)

विद्यनो—वि (स्त्री. विद्यनो) १ जिसका श्रवसान हो गया हो, मरा
हुआ, मृत ।

उ०—जोडै नाणी जगत मे, कर कर करडा काम । विद्यनो जीवै
वाणियो, नाणा री सुण नाम । —वा. दा

उ०—२ गिणुर्ज मत दामण चोळ गनी, मुभ वधव साचेय भाव
मनी । विद्यनो घर जीवत रूप मणी, चारण कुळ सकट 'पाल'
सुणी । —पा प्र

उ०—३ सुण वाधव विद्यनो समर, राव विया कर रेठ । दन
हूतो नभ दुघडी, पूभ रहो पिड जेठ । —पा. प्र

उ०—४ अकेली जाय अतीत, जती काय अकेली जासी । घण
विद्यनो री घणी, गरड जासी भभवासी । —अरजुणजी वारहठ

२ उदास, खिन्नचित्त ।

३ विपत्तिग्रस्त, सकटापन्न ।

रू भे —विद्यनर, विद्यनर, विद्यनो, विद्यनो, विद्यनो, वीधनो,
वीधनो ।

विद्यनर—देखो 'विद्यनो' (रू. भे.)

उ०—सीगिळु उस्थेडणु सत्रा, जोध विद्यनर जाणि । आंकलु
त्राडिउ ठठियउ, विक्रमाडुतु वयाणि । —रा ज सो.

विद्यनरणी, विद्यनबी—देखो 'विद्यनरणी, विद्यनबी' (रू. भे.)

उ०—वेगडउ साड 'वीकड' विद्यन, कुळभाण तेथ उदियउ

'करण' । ऊपरिय छत्र फेरादि घाण, ताई मडोवर मूलताण ।

—रा. ज. भी

विद्यनरणहार, हारी (हारी), विद्यनणियो—वि० ।

विद्यनिओडो विद्यनियोडो, विद्यनयोडो—भू० का० कु० ।

विद्यनीजणी, विद्यनीजवी—भाव था० ।

विद्यनियोडो—देखो 'विद्यनियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विद्यनियोडो)

विद्यनो—देखो 'विद्यनो' (रू. भे.)

उ०—महाराजा 'अजगाल', घडो अरिसाल विद्यनो । गयी राम सुर
लोक, इसी इक जोग उपनो । त्रिदू धरम निवाह, मरम गजं
मेज्जाणा । चक्रवती चालियो, प्रगट वंकुठ पयाणा । —रा. रू.

(स्त्री विद्यनो)

विद्यर—स पु. [म] १ सरं, चूडो व चीटियो के रहने का स्थान, छिद्र
बिंदु ।

उ०—१ इक कहे चीटी एह, छिन लखी सुल अणुदेह । वस रही
संग परवार, घर विवर घर निरधार । —रा. रू

उ०—२ सीह जिम अडर डर अनमि 'सिवगाह' हर, रिमां विख-
घर जिहि समर गाहै । तेज खग-ईम री टकर लागी तिका, रहै
नह वारधर विवर माहै । —राव देवीसिध सेखावत री गीत

२ कन्दरा, गुफा ।

उ०—१ च्यार घडी तलक च्यारुं रेढा घणा मखरा लडिया ।
आदमी घणी घायल हुवो । सारा घाप रहिया अर आवू रा विवर
पण भूंडण व रेढा री नजर आया । तद सारो साथ उठे ऊभो
रहियो । कूपर नू सभाळ घोडे सवार कियो छे । इतरं भूंडण-रेढो ।
विवर जा वडिया । —डाढाळा सूर री वात

उ०—२ विसम घाट गोरख पलं, कयण पैसे विवर । चीत कुण
रुदर वण जहर चाढे, असक देता वचं जोधपुर 'ऊदला', कहर
दरीया वसु तुह-भू काढे । —माली सादू

३ छेद, छिद्र ।

उ०—नाभि-विद्यर अति रुद्रु, घण नलीआरइ पेटी । उन्नत उर
विसाल, पण भल तइ सकइ न भेटी । —मा का प्र.
४ गर्त, गड्ढा ।

उ०—१ अर विवर तनसीत मुतो सब तीरथ न्हावै । कासी छाडे
देह हैम बसि हाड गमावै । —ह. पु. वा

उ०—२ कनिया भोमि विवर लघु काया, आयस जेम दास घरि
आया । वदियो वळि घर मगन वाळ वय, जय मम वर, मम पिता
पराजय । —सू प्र.

५ दरार, खाई ।

६ पाताल । (डि ना मा)

७ त्रुटि, गल्ती ।

८ किसी ठोस पदार्थ में होने वाला खोपला स्थान ।

९ घाव ।

१० मूर्ख, नाममग्न, विवेकहीन व्यक्ति । (ह. ना. मा)

११ भूगर्भ, तहखाना ।

उ०—अर उहि रिति कै आवणै भुजग जु सरप था । अर घनवत मनुस्य था त्या प्रथी का पुड विचरण करि ऊडी ठोडा सवारि तहा ए दून्यो वरग विचर कहता भुहिरा निखात ठोड तहा जाड रहवासि कीघा । —वेलि टी

१२ समुद्र, सागर । - (डि. ना. मा)

१३ व्योरा, हाल, वृत्तान्त, विचरण ।

उ०—१ आखी जग तणी कथ एती, सारी विचर अववर सेती । अँ राठोड हुवं ज्या आगँ, भिडता ऊला पैला भागे —रा रु

उ०—२ वाकी ग्यो अजमेर सू, साह हजूर सताव । पत्र परग्वि (ठि) या साह डर, लिखिया विचर नवाव । —रा रु.

उ०—३ विगत सुणो सारी विचर, आया हितू हजूर । अरि भमराणी आवियो, दळा न वं था दूर । —रा रु

उ०—४ कुवजा नारद विचर री, विचरां सजुत वात । हरि रा दामा ज्यूं हए, दासा नूं सुख दात । —वा दा

१४ घोखेबाज, कपटी व्यक्ति ।

१५ दूत, खबरनवीस ।

उ०—अबदुल्ला सुण वधु अवाजा, रीत कही सुणता महाराजा । पत्र दिया हित दूत पठाया, समाचार सहि विचर सुणाया । —रा रु

१६ नौ की सख्या ।

रु भे —विचर, विभर, विचर, विचर, विमर, विम्मर, वमर, ववर, विमर विम्मर, विचरण ।

अल्पा —वम्मरी ।

विचरजत विचरजित, विचरजिति—वि. [स विचरजित] १ वजित, निपिड, मना क्रिया हुआ ।

उ०—वह राणा राव विवाद विचरजित, "जोध" कळह कथ जिका जुई । वैरायता ती वाळी भगवट, हव जाणै कुळवाट हुई । —महम्मदजी बारहठ

२ अपेक्षित, वचित ।

३ रहित, विना ।

उ०—१ भाई नाळ वळद पियारी, तिह के गळं करद क्याँ सा'

री ? विणि चीन्ह खुदाई तरम विचरजत, केहा मुसलमाणी ?

—अग्यात

उ०—२ उदै अस्त आवै न जाय, सकल वियापि सहज भाय । मोह दोह आसा न पास, वरण विचरजित सु प्रकास ।

—ह पु वा

उ०—३ सकल रूप रस रूप विचरजित, सकल रूप तें कीया । सकल रूप करि सवने न्यारा, साधा कू सुख दीया ।

—ह पु वा.

उ०—४ सतगुरु सरणि गई सव दुवच्या, एक निरंजन पाया । करम विचरजिति सकल वियापी, सी मेरे मन भाया ।

—ह पु वा

✓ रुधा हुआ, अवरुद्ध ।

५ वणंन किया हुआ, बहा हुआ, वणित ।

रु भे —विचरजित, विचरजित ।

विचरजितदे, विचरजितदेह—स पु [स विचरजित+देह] निराकार, ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—अनाथा-नाथ अनत अछेइ, दयाळ मूरति विचरजितदेह । विना वपु रूप अनत विथार, अमूळ विरक्ख सु विस्वाधार ।

—ह र

रु भे —विचरजितदेह ।

विचरण—स पु [म विचरण] १ प्रकट करने की क्रिया, प्रकटन, प्रदर्शन ।

२ सविस्तार वणंन, विवेचना, व्याख्याभाष्य, टीका ।

उ०—विचरण जी वेलि रमिक रस वछी करी करणि ती मूभ कथ । पूरे इतं प्रामिस्यो पूरी, इअं ओछं ओछी अरथ ।

—वेलि.

३ छेदने की क्रिया छेदन ।

उ०—तव सूहव जु नायिका ताह का उरस्यळ वैकुठ प्राय हुई रहीआ छे । अर उहि रिति कै आवणै भुजग 'सु सरप था । अर घनवत मनुस्य था त्या प्रथी का पुड विचरण करि ऊडी ठोडा सवारि एहा ए दून्यो वरग विचर कहता भुहिरा निखात थोड तहा जाड रहवासि कीघा । —वेलि टी

[स. विचरण] ४ जातिच्युन या जाति मे बहिष्कृत व्यक्ति ।

५ मन्तव्य, स्पष्टीकरण ।

६ साहित्य मे एक भाव जिसमें नायक या नायिका के मुख का रंग भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण बदल जाता है ।

वि [स विचरण] १ नीच, कमीना, निम्न जाति या कुजाति का ।

२ बुरे या बेमेल रग का, बदरग ।

उ०—विधरण वरण स्तत्रवरण लवकरण वहे विलै, मही न धरन चरन मरन उत्तमरन के मिलै । गती रती न ग्यान की गद विग्यान की गमी, छुती परी करी सदा छुती जनछुती सभी ।

—ऊ का

३ मूर्ख, नासमझ । (अ मा)

४ कातिहीन, शोभा व चमक रहित ।

५ अनेक रंगो का, रग-विधरण ।

६ देखो 'विधर' (रू भे)

रू. भे —विधरण, विधरण, विधरण, विधरण ।

विधरत—स. पु [स विधर्त] १ चक्कर, फेरा, घुमाव ।

२ वापिस लौटने की क्रिया, प्रत्यावर्तन ।

३ भ्रम, भ्रान्ति ।

४ नृत्य, नाच ।

५ परिवर्तन ।

६ समुदाय, समूह ।

विधरतकल्प, विधरतकल्प—स पु [स. विधर्तकल्प] एक कल्प विशेष जिसमे लोक क्रमशा उन्नति की ओर से अवन्नति की ओर अभ्रसित होते हैं । (जैन)

विधरतवाद—स पु. [स विधर्त+वाद] वेदान्तियों के अनुसार वह सिद्धांत विशेष जिसके अनुसार ब्रह्म ही सृष्टि का मुख्य उत्पत्ति स्थान है व ससार माया व मिथ्या है ।

विधरतस्थायीकल्प, विधरतस्थायीकल्प—स पु [स विधर्तकस्थायीकल्प] वह समय जब लोक अवन्नति को प्राप्त कर शून्य दशा में भ्रमण करता है, कल्पान्त, प्रलय ।

विधरधन—स पु [स विधर्धन] १ मणिवर एव देवजनी का एक पुत्र, यक्ष ।

२ युधिष्ठिर की सभा का एक राजा ।

विधराणी, विधरावो—क्रि स.—उच्चरित करवाना ।

विधराणहार, हारो (हारी), विधराणियो—वि० ।

विधरायोडो—भू० का० कृ० ।

विधराईजणी, विधराईजवो—कर्म वा० ।

विधरावणी, विधराववो—रू० भे० ।

विधरायोडो—भू का कृ.—उच्चरित करवाया हुआ ।

(स्त्री विधरायोडी)

विधरावणी, विधराववो—देखो 'विधराणी, विधरावो (रू. भे)

उ०—सखिया राणी सू सकळ, विधराव सह वाणि । सात्तहुकुधर सपने मिले, पदमण अग कुमलाणि । —डो मा.

विधरावणहार, हारो (हारी), विधरावणियो—वि० ।

विधरावियोडी, विधरावियोडी, विधरावियोडी—भू० का० कृ० ।

विधरावोजणी, विधरावोजवो—कर्म वा० ।

विधरावियोडी—देखो 'विधरायोडी' (रू भे)

(स्त्री विधरावियोडी)

विधरि, विधरी—स पु —सन्देश व सूचना लाने व ले जाने वाला, सन्देशवाहक, दूत ।

उ०—'सेर' अरज माने सुल पायो, 'अमर' पास निज मत्री आयो ।

सेर विलद तणी विध सारी, 'अमर' सू तिण विधरि उचारी ।

—रा रू.

वि.—वर्णन करने वाला ।

विधरो—स पु —१ भेद, रहस्य ।

उ०—१ नव दिन नामी ध्यान की, विधरो देह बताय । जन हरीया ररकार सु, सहजा ताळी लाय । —अनुभववाणी

उ०—२ कहन सुनन की बात का, हरिया विधरा घाय । कोई महरम ह्य दाखवे, की कहे बात वनाय । —अनुभववाणी

उ०—३ पण परभात रे पोहर राज दरवार करो छो, ताहरा रावळी मुह उतरियो लागे सु काभू जाणीखे ? ताहरा लाखेजी कहयो रुडा भाणेज । तोनू कहीस, पण एकात कहीस इण बात री विधरो छे । —नेणमी

२ कारण ।

३ विधरण, व्यौरा, वृत्तात, हाल ।

उ०—१ उर प्रगटे सुल ऊधरो, सुणि विधरो 'अभेसाह' । ज्यो जिग काम तपीधर्ना, राम क्रियो श्रीछाह । —रा. रू.

उ०—२ नपत समेळ पवारिया, विधरो थयो विध्यात । आवी अरख उकील री, आ मत मानो बात । —रा. रू.

उ०—३ तिसै चौकी पोहर उमराव था, त्याने कहयो, चौकी किये किये री छे । जिके उमराव था तिण रा नाम ले ले न कहयो । तरै राजा कहयो, देजा ऊणुण दिसि न कोई गावे छे, कोई रोवे छे । तिणरी विधरो ल्यावो । —जगदेव पवार री बात

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ अन्तर, फर्क ।

उ०—१ सूर लडे जब कध सिर, कमध लडे विण सीस । हरिया सूर कमध विच, विधरो विसवा वीस । —अनुभववाणी

उ०—२ घडो कूलडो तावणी, घडिया घाट अनेक । कुल करमा विधरो कियो, हरीया माटी हेक । —अनुभववाणी

उ०—३ जस न हुवे धन जोडिया, धन दीघा जस होय । बीसलदे चौकम तणी, जग मे विधरो जोय । —बा. दा.

३०—४ जाति पाति विवरों करे, भाएँ भाएँ भिन । हरिया
इन परसाद में, पाप न कोइ पिन । —अनुभववाणी

३०—५ दमडी चमडी बीच में, हरिया विवरों होय । दमडी
सु दावा किसा, चमडी मा करि जोय । अनुभववाणी

६ व्याख्या, टीका ।

७ सक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

३०—कोडीघज साहरी कवर, माहरी नाव पनीज । आईछु
उदमाद सु तरं खेलवा तीज । किण घर सौ आया कही, जास्यो
सिध जोधार । म्हारी विवरों म्है दियो, कुण छी राज कवार ।

—पना

७ वयान ।

रू भे —विवरों, वीवरों, वीवरों ।

विवस—वि [सं विवश] १ जिसका कोई बस नहीं चलता हो, वेवस,
लाचार ।

३०—लुटेही लेत विवेक का डेरा, बुद्धिबल यदपि करू बहुतेरा ।
हाय राम नहिं कछु बस मेरा, मरत हू विवस प्रभु घावउ मवेरा ।
—मीरा

२ जो अपने या किसी के काबू में न हो, वेकावू ।

३ जिसे होश न हो, बेहोश ।

४ मरा हुआ, मृत ।

५ कारण ।

३०—आदर कियो मिल्ल असुरेसुर, दियो नाम न्यप तेग बहादुर ।
भावी विवस जोधपुर भायी, चगयै ला महराव चलायी ।

—रा रू

रू भे'—विवम, वेवस, विवसि ।

विवसता—स स्त्री [स विवशता] विवश होने की अवस्था या भाव ।

विवसवत—स पु [स विवस्वत्] १ एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

२ चौदह सौ किरणों वाला एक सूर्य जो ज्येष्ठ माह में प्रकाशित
होता है ।

३ मनु एव यम का पिता, प्रथम यज्ञकर्त्ता ।

४ चाक्षुष मन्वन्तर के सप्तपियों में से एक ।

५ गरुड के द्वारा मारा गया एक असुर ।

६ उदित होने वाले सूर्य का प्रतिनिधित्वकर्त्ता एक देवता ।

७ देखो 'विवसवान' (रू भे)

रू. भे —विवस्वत ।

विवसवान, विवसाण, विवसान—स पु [स विवस्वत्] १ सूरज,
सूर्य । (अ मा, क कु बो, ना मा, ह ना मा)

वि वि—यह वारह आदित्यों में से एक है, जो कश्यप प्रजापति व

दक्षकन्या अदिति के वारह पुत्रों में से एक है । वारह पुत्रों के नाम
निम्न हैं—विवस्वान्, अर्यमा, पूषा, त्वष्टा, सविता, भग, धाता,
विधाता, मित्र, वरुण, शक्र व वामन या उरुक्रम ।

२ अरुण ।

३ अर्क, मदार ।

४ पद्महवा प्रजापति ।

५ एक सनातन विश्वदेव का नाम ।

रू भे —विवसवत, विवस्वान ।

विवसाइ, विवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू भे)

३०—कारू नारू नइ विवसाई, आवइ वरण अठार । पाए.लागी-
नइ कामा सारइ, आयस करइ जुहार । —का दे प्र.

विवसाइयो, विवसाईयो—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा. रू भे)

३०—ग'छा छोपा नइ तेरमा, विवसाईया वसइ । नगरमा आपा-
पणि काजि सह मिलइ, चहुटइ हईइ हईउ दलइ । —का दे प्र

विवसाय—देखो 'व्यवसाय' (रू. भे)

३०—१ च्यारि वरण उत्तम जाणिया, विवहारिया वसइ वाणिया ।
कुहरइ वीकइ चालइ न्याय, देसाउरि करइ विवसाय ।

—का. दे प्र

३०—२ पुरसोतम चितवै स्रमि, व्यापार रबीज । इम चितवता
आप, सयन निद्रावसि सूर्ज । किता जुग विवसाय, परम निद्रा भर
पोढ्यो । जोगनिद्रा जोगेस, आठ क्रम पवनह उठ्यो ।

—रा. वसावळी

विवसायी—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा रू भे)

३०—हाटा तणउ पार नवि लहइ, घणा लोक विवसाया वहइ ।
खाडा तरकस तीर कमाण, जरहजीण पुरइ दीवारण ।

—का दे प्र.

विवसि—देखो 'विवस' (रू भे)

३०—१ त्रिण वेल तर आछादि गिर तन, अवनि पय अगम ए ।
मन जाणि तापमि विवसि थाया, अमत्त फिर पडि अम ए ।

—रा रू.

३०—२ विवसि हुप्रो मुनि वेस्या वसि ।

—रामरासो

विवस्था—देखो 'व्यवस्था' (रू भे) (अमरत)

३०—१ राइ नट तेडाविया, कही विवस्था वत । वाडव को
वेस्या जपइ, टालि पहु तै रत्त । —मा. का. प्र

३०—२ विवस्था विखाद वादा वादको विवाद वादयो, भेटन
फिसाद याद कीनों जस जापी को । प्रबळ प्रधानपणी देन जसवत
प्रभू, जंपुर तै लीनों टेर 'पातल' प्रतापी को । —ऊ का

विवस्वत—देखो 'विवसवत' (रू भे.)

विवस्वान—देखो 'विवसवान' (रू भे.)

विवह—स पु—१ देवराज इन्द्र । (ना हिं को)

२ अत्यन्त वेगवान् वायु, तुफान ।

३ देखो 'विवुध' (रू भे)

४ देखो 'विविध' (रू भे)

उ०—दीसइ विवह चरीय, जाणिजइ सयण दुज्जण सहावौ ।
अप्पाण च कडिज्जइ, हडिज्जइ तेण पुहवीए । —ढो मा

उ०—२ केता भडा निवाजस कीजै, दान प्रसन मन पाता दीजै ।
अतरं दूत खबर लै आया, समाचार सह विवह सुणाया ।

—रा रू

उ०—३ स्त्रीभडल रबाव सार रुहवीणा भरुणकार, तत मफि
घोर तार ग्रामा त्रिहणै । ताल कसाल भालरी अघोटी कच्छिवी
एक, आगळी वाजै अनेक, विवह वणै । —गु रू. व

उ०—४ अनि अवीर जबाधि, विवह अन्नके परिम्मल, चपक
दल केतनी कुसम सेवती सुपडुळ । नोसाण सइ सुणियं नही, भेर
नाद मरदग घण, आघ्राण महल्लं अग रहण, इम अलिअर गुंजार-
वण । —गु रू व

उ०—५ विवह वरना कप्पडा, विवह वरनी पाग । फगर हुवडी
फूलिया, जाण मलूका वाग । —गु रू. व

विवहथरणी, विवहथरणी—देखो 'विवहथरणी, विवहथरणी' (रू भे.)

विवहथरणहार, हारो (हारो), विवहथरणिथो—वि० ।

विवहथरियोडो, विवहथरियोडो, विवहथरयोडो—भू० का० कृ० ।

विवहथरीजणी, विवहथरीजनी—भाव वा० ।

विवहथरियोडो—देखो 'विवहथरियोडो' (रू भे.)

(स्त्री विवहथरियोडो)

विवहपरि विवहपरी, विवहप्परि—क्रि वि—विविध प्रकार से ।

उ०—१ ता ? उन्हुउ सीयलु जयह जलु, फासूय थप्पिय विवह-
प्परि । निज्जिणुउ विजयाणुद ति (लि) हि, अभयतिलकि चउ-
पट्टि घारि । —ऐ जै का स

उ०—२ दोरइ वडइ सूयडउ, छूटइ महतउ होइ । इण परि
विलसइ विवहपरि, सुद्धि न जाणइ कोइ । —हीराणुद सूरि

विवहल—देखो 'विवहल' (रू. भे)

उ०—१ हू रावळी चाकर, यू चूक पडि, तकसीर माफ करणी ।
यू करता घडी अ्रेक हुई । रुदन करण लागी । देही परसीज गई ।
विवहल होय गयो, ज्यो प्राण छूटै । ताहरा लक्ष्मीजी स्त्रीभगवान
सूँ अरज करी—जै साहूकार बहोत दीन छै, विवहल हुयो छै

इण रा प्राण छूटै छै । इण री पइसी लीजै ।

—पलक दरियाव री बात

उ०—२ इतरं मे कुवर री अतरक देही ऊपर तिर आई । तरं
सरव लोग देखण लाग । देखै ती देही निरजीव देखी । तद हाहा-
कार सबद हुयो । साथ सारी ही रोमण कूकण लागी । राजा नै
जाय खबर हुई सो सुणनं मुरछागति हो गई, विवहल होय गयो ।

—पलक दरियाव री बात

विवहार—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—१ धरम, विग्यान, इतियास पुराण, राजनीति, आचार,
विवहार, कळा, साहित, वेसभूमा, परब-त्यू हार, कारीगरी नै
खेतीवाडी अँ सँग परपरा रै कारण ई विकसै अर प्रगटै ।

—फुलवाडी

उ०—२ हुअर करी हजार, स्याणप चतराई सहिन । हेत कपट
विवहार, रहै न छानी, राजिया । —किरपाराम

उ०—३ वरतीजै विवहार, कदं निज रुठि न कीजै । सदाचार
धरमसीह, लीह कहो केम लघीजै । —ध. व. ग्र

उ०—४ विणजै व्यापार वलि विवहार, लक्ष्मी आप वहै लार ।
परिघल परिवार पुण्य प्रकार, बोले बहु जस वाजार ।

—ध व ग्र

उ०—५ अवं रिणमलजी मोकळ री विवहार बाघ चाचामेरा
नै प्रधानगी सूप पाछा मडोवर आया । अठै मोकळ रै आगं
चाचामेरी चलावं छै । —राव रिणमल री बात

उ०—६ कत घणा है सातरा' जाणै जग विवहार । मत समझी
मोटा घणा, करे न जणु सत्कार । —करणीदान वारहठ

विवहारिउ विवहारिथो, विवहारियो—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे)

उ०—राजशक्ति नउ विवहारिउ रे, गोभद्र तणुठ रं मल्हार ।
भद्रा माता कूँठ रे, सालिभद्र गुण भडार । —स. कु

विवहारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

उ०—त्रिणि दिहाडा वरखा वरसीउ, विवहारी चालिउ परदेसि ।
नारी एकली वली रे तिहा थई, छई तै यौवन वेसि ।

—नळदवदती रास

विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयो—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे.)

उ०—१ नारू थई विवहारीउ, वाहणि घोडा साथ । पूरण
पुहुचा लगि भरिउ, वेडि वाकडा हाथि । —मा का प्र

उ०—२ सपरिकरि सध्या समइ, रथि बइसीनइ राय । देख घरी
विवहारिया, वेस्यानइ धरि जाय । —मा का प्र

उ०—३ प्रधान लोक विवहारिया, राजलोक सहुअ सुम्बी ।

च्यार वरण गढ महि बसइ, जती मुनि नही कोय दुखी ।
—प च चौ.

विवाह—देखो 'व्यवहार' (रू भे)

विवाहलु, विवाहलौ—१ देखो 'विवाहलौ' (रू भे)

उ०—बहुया सांभलि बाभणु भणइ, ए विवहार नयरि अन्ह तणी ।
विद्यासिद्धी राखसु हूउ, वकनामि छइ जम नउ हूउ ।

—सालिभद्र सूरि

२ देखो विवाह' (अल्पा., रू भे.)

विवाह—देखो 'विवाह' (रू भे)

उ०—पण सग वेय मयक वरसि माहह छण वासरि, भाणुमलि
वर नयरि अजियनाहह जिण मदिरि । नदि ठविय वित्यारि सुगुण
सागरचद गणहरि, सूरि मतु जसु दिइ किहु मगलु विवहु प्यरी ।
—अभय यतिक यती

विवाण—देखो 'विमाण' (रू भे) (अ मा, ना मा)

उ०—१ सोठ सुहाव जायजै, चढजै गुध विवाण । रजी न लागी
लुगडा, पथ तूठे असाण । —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ सातमै पाताल वासग नाग रै मार्यै टपूकडा खाईनै
रहिआ छै । त्यारी सोरभ री वास्तै तेत्रीस कोडि देवता सरग सू
हलूस नै उतरै देवासुरा रा विवाण हिलोरव खाइ नै रहिआ छै ।
—रा सा स

उ०—३ भलहल खेडि विवाण भोका, सुर हुय इम जाळ सुर-
लोका । इम बोलै मेडनिया अहुर, घुर जोघार पुछै पाटीवर ।
—सू प्र.

उ०—४ दुरत गत डाण उसराण सिर दियती, लियती फुरलवो
थाट लागी । सुतन 'गजवध' सुर कामणी सपेखै, विवाण
ठाभियो खाग-वाही । —अग्यात

उ०—५ किसन सिर फूल विरखा करै, अमर तमासै आइया ।
निहग धरि बीच मात्रै नहो, सुरै विवाण सवाहिया । —पी अ

उ०—६ इळ वाज वजावै ऊपडता, रिणतूर नसा भिल्लनै रुडता ।
डाणा किरि पाउ पलर डहै, वाजिद्रक वेग विवाण वहै ।
—गु रू व

विवाणणी, विवाणवौ—क्रि स —प्रसव करना ।

उ०—इसउ हिंदू राजा उपकठि कउण जिकइ मनि पातिसाह की
रीस वसी, कउण का माथा तइ खिसी ? कउण हइ दई रुठउ ?
कउण की माई विवाणी, जू सामउ रहइ अणी पाणी ?

—अ वचनिका

विवाणियोडी—भू. का. कृ —प्रसव किया हुआ ।

विवाण, विवाणी—स. स्त्री.—१ अस्तरा ।

उ०—विवाणी भूण उरध्वी काळ, विहगम रभ मिली वेताळ ।

दिली खुरसाण विभांडघी ढाल, मनाव्यी मोटी राउळ 'मोल' ।
—राऊ चंतसी री रासी

२ देखो 'विमाण' (रू भे)

उ०—चीत्राग दमूडी छोहि चक्कि, फरहरइ फउरि फिरियउ
फरक्कि । वाघुलउ वाघ वाणी वखाणि, वाजिन्नि चडिय चडिसइ
विवाणी । —रा ज सी.

विवाई—देखो 'विवाई' (रू भे)

विवाद—स पु [स] १ किसी बात या विषय हेतु किया जाने वाला तर्क,
वाद, झगडा ।

उ०—१ विवस्था विखाद वाद वाद की विवाद वाढघीं, मेटन
फिसाद याद कीनीं जस जापी की । प्रवळ प्रवान पणी देण
जसवत प्रभू, जैपुर तै लीनीं टेर 'पातल' प्रतापी की । —ऊं. का

उ०—२ बली दोय साघा रै आपस मे अडवी लागी अने ऊ
कहै तू लोलपी । ऊ कहै तू लोलपी । इम परस्पर विवाद करता
करता स्वामी जी कने आया तो पिएण विवाद छोडै नही ।
—भि. द्र

क्रि प्र —करणी, होणी ।

२ शास्त्रास्त्र ।

उ०—१ द्वादस गुरु, द्वादस सिष्य, जुमलै चौबीस कापालिक हुवा
है । उगर भैरव कपालिक रै नै सकराचारघ रै विवाद हुवो है ।
—वा दा ख्यात

उ०—२ साधन काव्य कळा सुर साधत, वाद-विवाद करै मत
वाधत । देह अनेह किता तप दाधत, विद्ध हरि गुण वाधत वाधत ।
—जैपुर नगर री धरणण

क्रि प्र —करणी, होणी ।

३ सोच-विचार ।

उ०—थारा दिन घकै पड्या है, म्हे घणी दुनिया दीठी, फगत
थारी उणियारी निरखण सारू जीवण री साध पूरता हा । पण
इण साध री आज माठ आयगी दीसै । आ विवाद री वेला नी
है ।
—फुलवाडी

क्रि प्र —करणी, होणी ।

४ जिद्द, आग्रह ।

उ०—ओ सिरदार डाकी नही है परत अरिया नै खावण वाळी
है और डाकी होवै सो तो केवळ फकत वार आया अरयात सनेसर
नै ही ज मारै नै ओ सिरदार तो सदेव ही मारै और डाकी आपरा
री रिछा करै नै हूजा नै मारै पण ओ डाकी सिरदार वंदावदी
विवाद कर निज आपरा रजपूत भाई वेटा तिका नै जुद्ध मे माराय

नाखं इण वासतं डाकी डाकी नही डाकी श्री सिरदार है सारा नं
युद्ध मे मारावण वाळी ।
—वी स टी.

क्रि प्र.—करणी ।

५ युद्ध, भगडा, लडाईं ।

४०—१ श्रोपमा 'कमा' हरनाथ भाद, बरवीर खळा भेटण विवाद ।
मछरीक फती' गज घड मरोड, 'अजवेस' 'लाल' पातल अनोड ।

—रा. रू

४०—२ 'दोली' गोयद हरा दुवाही, सुत जैसिध विवाद मगाही ।

'सुरी' 'खान' तणो ध्वज सुरा, आहव न वदै जिसी अधूरा —रा रू

क्रि प्र —करणी, चालणी, होणी ।

६ न्यायालय मे चलने वाला वाद, मुकदमा ।

७ प्रतिस्पर्धा, होड ।

४०—एक करइ रथ वाडिय, वाडिय माहि विवेकि । कुसुम विवादइ,
चूँटइ, खूँटइ पल्लवि एक ।
—जयसेखरसूरि

क्रि. प्र.—करणी, चालणी, होणी ।

रू. भे —विवाद, विवादु, विवादी ।

विवादक—देखो 'विवादी'

विवादी—वि [स. विवादिन्] १ किसी बात या विषय पर तर्क, वाद
या भंगडा करने वाला ।

२ शास्त्रार्थ करने वाला ।

३ सोच-विचार करने वाला ।

४ जिद्द करने वाला, जिद्दी ।

५ युद्ध करने वाला, भंगडा करने वाला ।

४०—सेखा कामखानी कूम दोनू एम रुठा, दोनू ही विवादी यो
विवादी धारि कठा ।
—शि व

६ न्यायालय मे वाद चलाने वाला ।

७ राग के स्वरूप को बिगाडने वाला वर्ज्य या वर्जित नामक
स्वर । (सगीत)

८ संगीत का वह पक्ष जिसका किसी राग मे बहुत कम व्यवहार
होता है ।

रू. भे.—विवादी ।

विवादु—१ देखो 'विवाद' (रू. भे)

२ देखो 'विवादी' (रू. भे)

विवादी—१ देखो 'विवाद' (रू. भे)

४०—सेखा कामखानी कूम दोनू एम रुठा, दोनू ही विवादी यो
विवादी धारि कठा ।
—शि व

रू. भे.—विवादु ।

विचार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

४०—लाडगू वरी महाजन्न लोक चौपडा पडे वाजार चीक । है
दरव जहू लक्खू हजार, वाणिया तणा चाले विवार —पे रू.

विवाह—स. पु [स विवाह] १ हिन्दू धर्म के सोलह सस्कारो मे से
वह सस्कार जिसमे वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार
करते हैं ।

वि. वि.—ये विवाह निम्न आठ प्रकार के माने गये है —

(१) ब्राह्म विवाह—वह विवाह, जिसमे शीलवान् और वेदाभ्यासी
वर को बुलाकर कपडे व अलकारी मे वर-वधू का पूजन कर कन्या
का विवाह किया जाता है ।

(२) दैव विवाह—वह विवाह जिसमे ज्योतिष्टोमादि यज्ञ में
ऋत्विज (यज्ञ का कार्य कराने वाले) को विधि-पूर्वक अलकारादि
से सत्कार कर कन्या का दान किया जाता है ।

३ आर्ष विवाह—वह विवाह जिममे कन्या का पिता वर से
गाय व साड का एक या दो जोडे अपनी लडकी को देने हेतु
धार्मिक भाव से (लडकी के मूल्य के रूप मे नहीं) लेकर कन्या
का दान करता था ।

४ प्राजापत्य विवाह—वह विवाह जिसमे कन्या का पिता पहले
से ही सकल्प कर लेता है कि अमुक वर के साथ अपनी पुत्री का
विवाह करूंगा तथा कन्यादान करते समय वर-वधू का पूजन कर
अपने मुह से कहता है कि तुम दोनो साथ रहकर धर्माचरण
करो ।

५ आसुर विवाह—वह विवाह जिसमे वर की ओर से कन्या
व कन्या के पिता को धन देकर स्वच्छन्दनापूर्वक कन्या को ग्रहण
किया जाता है ।

६ गन्धर्व विवाह—वह विवाह जिसमे वर व कन्या कामासक्त हो
कर स्वेच्छा से (माता पिता के बिना दान किये) एक दूसरे के
साथ सयोग कर लेते हैं ।

७ राक्षस विवाह—बल पूर्वक कन्या का हरण करके किये गये
विवाह को राक्षस विवाह कहते हैं ।

८ पैशाच या पैशाच्य विवाह—वह विवाह जिसमे एकान्त स्थान
व समय पाकर वेखबर, नीद मे या नशे मे वेहोश कन्या के साथ
सभोग कर लिया जाता है । इसे अधम विवाह मानते हैं ।

राजस्थान मे विशेषतः राजपूतो व चारणो मे एक विशेष
प्रकार का विवाह किया जाता है । जिसमे वर को कन्या पक्ष
वाले घोखे से पकड कर ले जाते हैं, और घर लेजाकर विवाह
फर देते हैं ।

२ उक्त सस्कार के अवसर पर मनाया जाने वाला उत्सव ।

३ वह उत्सव जिसमें पुरुष व स्त्री वैवाहिक बन्धन में बन्धते है ।

उ०—२ सुभ चित्र मंदिर चौक सुंदर, श्रीपि रुचि राय अग्रणी ।
तन सदन सोभित करण तरणी, विविध मनि उद्दम वणी ।
—रा रू.

उ०—३ आपणा घरि कादम फेडड, बोजा काज मेडई । पार
पार न लीइ, साध विहार न करीइ । अनेक जीव नीपजै, विविध
धान्य ऊपजै । लोकनी आस पूजै, गाय भंस दूजै । इत्यादि ।
—रा सा. स.

उ०—४ ग्यान ब्रह्म 'जसराज' गुण, उग्र तप करि पाविया ।
सार जसवत आदि स्रुतिवर, विविध ग्रथ वणाविया । —सू प्र.

उ०—५ वरणव करु सुमेर की, सब ही कचन सार । रतन
स्र ग राजत विविध, लख जोजन विस्तार । —गज-वद्वार

रू भे—विविध, बीबध, विवध, विवधि, विवह, विवहु,
विविधि, विविह ।

विविधजाण—वि. [स विविध+ज्ञान] १ कवि, पंडित । (अ मा)

२ जिसने बहुत बातें सुन ली हो, बहुश्रुत ।

रू. भे.—विवधजाण ।

विविधता—स स्त्री [स विविध+ता प्रत्यय] विविध होने की
अवस्था या भाव ।

रू. भे—विविधा ।

विविधविलास—स स्त्री [स विविध=विबुध+विश्राम] स्वर्ग ।
(अ. मा)

विविधि—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—इंद्र कहि 'वरदान थी, देखसि नहीं प्रतिहार । ईच्छाई तूं
वरसन देख्यै, देखी विविधि विहिवार । —नलास्यान

विविधेस, विविधेसर, विविधेसुर, विविधेस्वर—स. पु. [स. विबुध+
ईश, विबुध+ईश्वर] १ कवि, पंडित, विद्वान ।

उ०—विरही वरहण धणमुड व्यापी, केकी सुकलापग कलापी ।
रथकुमार प्रक विखर चाया, विविधेसुर खग नाम बताया ।
—ना मा.

२ ईश्वर ।

विविनणी, विविनवी—देखो 'विवनणी, विवनवी' (रू. भे)

विविनणहार, हारो (हारो), विविनणियो—वि० ।

विविनिओडो, विविनियोडो, विविग्योडो—भू० का० कृ० ।

विविनीजणी, विविनीजवी—भाव वा० ।

विविनिघोडो—देखो 'विविनियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विविनियोडो)

विविनी—देखो 'विवनी' (रू. भे)

(स्त्री. विविनी)

विविन्नणी, विविन्नवी—देखो 'विवनणी, विवनवी' (रू. भे)

उ०—'सूरजम' (ळ) गो सरणि, साह निवत्राज विविन्नी । मन
तुरका हिंदुवा, ताम वंराग उपन्नी —गु रू व

विविन्नणहार, हारो (हारो), विविन्नणियो—वि० ।

विविन्निओडो, विविन्नियोडो, विविन्नयोडो—भू० का० कृ० ।

विविन्नीजणी, विविन्नीजवी—भाव वा० ।

विविन्नियोडो—देखो 'विविनियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विविन्नियोडो)

विविन्नी—देखो 'विवनी' (रू. भे)

विविह—देखो 'विविध' (रू. भे)

उ०—१ वारभद्रतरइ माह सिय छट्टि भणिज्जइ, जिणेसर सूरि
पइसरइ संघु सयलु विवह सज्जइ । सूरिमतु सिरि सव्यएवसूरहि
जसु दिनठ, जालठरहि जिणधीर भुवणि बहु उच्छव कीनठ,
—ऐ जै. का स.

उ०—२ इण परि विह तीरथकराए, चिरपालीराज विविह
पराए । जाणी भवसर सार 'ए, विह लीधो सज्जम भारए ।
—वृ. स्त.

विबुध—देखो 'विबुध' (रू. भे) (अ मा., डि. ना. सा., ह नां मा.)

विबुधपुर—स. पु. [स. विबुधपुर] स्वर्ग ।

विबुधप्रिय, विबुधप्रिया—स. स्त्री [स विबुधप्रिय] १ अम्सरा, देवागना ।

२ देखो 'विबुधप्रिया' (रू. भे.)

विबुधवन, विबुधवन—देखो 'विबुधवन' (रू. भे.)

विबुधबंध—स. पु. [स. विबुधबंध] देवताभी के बंध, अदिवनिकुमार ।

विबुधालय—देखो 'विबुधालय' (रू. भे)

विबुधेस—देखो 'विविधेस' (रू. भे)

विबुह—देखो 'विबुध' (रू. भे.)

विवेक—स. पु. [स] १ भले-बुरे या सत-असत का ज्ञान ।

२ भले-बुरे या गुण अचगुण को पहिचानने की शक्ति ।

उ०—जै भगी री भीटी तो न खादी नै भगी री कीवी खाधी
तिण सू सणनै विवेक री विकल जाणै । ज्यूं ग्रहस्थ कमाड
खोलनै देवै ते ती लेवे नही अनै अथारी रात्रि मे हाथ सू कमाड
जडै उधाडै तिण री सक आणै नही । —भि द्र

३ समझ, ज्ञान, बुद्धि ।

उ०—१ भव सह हरे निजर भर, कर कर गहर विवेक । सर
'प्रताप' नर ती समी, अवर आज नह एक ।

—जैतदान वारहठ

उ०—२ सूटेहि लेत विवेक का डेरा, बुद्धिवळ यदपि करु बहु-

तेरा । हाय राम नहि कछु बस मेरा, मरत हू विवस प्रभु धावड
सवेरा । —भीरा

उस—३ घर चौडे सरवर विपन, विधाचळ दिस एक । च्यार
महूरत उत्तरै, धारस मंत्र विवेक । —रा. रू.

उ०—४ आठू ई मिसल कै कमध महाबाह, जाकी सुण मानी
वानी विखै की सलाह । चाळीं मे अग्रकारी अनेक सा एक,
राम दळा मेळ जाणै नील की विवेक । —रा रू.

४ सत्यज्ञान ।

क्रि प्र —करणी, घरणी, धारणी, राखणी, होणी ।

रू भे —बवेक, वमेक, ववेक, विवेक, विमेक, विवेक, वमेक
विमेक, विमेख ।

अल्पा —विवेकी ।

विवेकजोग, विवेकजोग—स पु —स्त्री पशु व नपूसक अर्थात् मन मे
विकृति पैदा करने वाले किसी पदार्थ का ससर्ग न होने की अवस्था
या भाव ।

रू भे —विवेकजोग, विवेकजोग ।

विवेकता—स स्त्री. [स विवेक+ता प्र०] विवेक की अवस्था या
भाव ।

विवेकनारायण—वि —विवेकशील ।

उ०—तीणि नगरि, सामत मडलेस्वर मत्रि महामत्रि स्नेष्टि
सारथवाहपुत्र दडाधिपति ग्रहकप्रमुख लोक सेव्यमान अनौति निरना-
सन गह्यारभ परनारीसहोदर बुद्धिमयरहर विवेकनारायण दानं
कव्यसन*** । —व स

उ०—२ "एर अनेक रूप नरेंद्र, सच्यवाचा हरिस्वद्र, निरभय
भीम, आपन्न जीमूतवाहन, वाग्देवी विलास काश्मीर, विवेक-
नारायण, श्रीदारयि वलि, सेवकजन कल्पतरु चतुरग वाहिनी
सेनासमुद्र, इसिड राजा । —व स

विवेकवान—वि. [स. विवेक+वान्] जिसमे विवेक हो, अच्छे-बुरे को
पहिचानने वाला, बुद्धिमान ।

विवेकी—वि [स. विवेकिन्] १ विवेकधारी, भले-बुरे का ज्ञान रखने
वाला ।

उ०—कह सुखराम सुणी भाई साधी, भेख भेख सब एक । त्याग
वैराग गुरु गम गाढा, सोई जाण विसेख । भेद विवेकी रे, ..

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

२ बुद्धिमान, ज्ञानी ।

३ न्यायप्रिय, न्यायशील ।

रू भे —विवेकी ।

विवेकी—देखो 'विवेक' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—लख चउरासी जीव खमावई, मन धरि परम विवेकी जी ।
मिच्छामि दुक्कड दीजियई, त्रिकरण सुद्ध प्रत्येकी जी ।

—स. कु.

विवेग—देखो 'विवेक' (रू. भे.)

विवेगजोग, विवेगजोग—देखो 'विवेकजोग' (रू. भे.)

विवेचक—वि.—विवेचना करने वाला, विवेचनकर्ता ।

विवेचन—देखो 'विवेचना' (रू. भे.)

विवेचना—स. स्त्री [स.] १ भली-बुरी, सत्-असत् आदि का ज्ञान,
विवेक ।

२ तर्क-वितर्क, वाद-विवाद ।

३ निरुपय, फंसला ।

४ मीमासा ।

५ अनुसन्धान, अन्वेषण ।

६ परीक्षण, निरीक्षण ।

रू. भे —विवेचन ।

विवोगण, विवोगणि, विवोगणी, विवोगिण, विवोगिणि, विवोगिणी—
देखो 'विवोगण' (रू. भे.)

उ०—विरहणि विरह विवोगणी, दरसन कारणि पीव । विकळ
भई विलवै कहा, ताला वेली जी । —ह पु. भा.

विवोड—स पु [स. विवोडु] १ पति, खाविद, भरतार ।

(अ. मा., ह. ना मा.)

२ दुल्हा ।

विषवडा—देखो 'वरवडी' (रू. भे.)

विषवाण, विषवाणी—देखो 'विमारा' (रू. भे.)

उ०—वाज पख सीचाण, वाज विषवाण उढाया । पवन आतुर
पेरियै, जळद जाणै किरि धाया । —गु रू. व.

विषवो—स पु [स] स्त्रियो के द्वारा सयोग के समय प्रिय का अनादर
हेतु किया गया हाव । (साहित्य)

विष्वार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—१ लगती लहगी पहरि सुहागण, बीती जाइ विष्वार ।
धन जीवन दिन च्यार का, जात न लागै बार । —भीरा

विसंजुल—वि [स विसंजुल] १ चंचल । (उ र)

२ विपम, विकट ।

विसड—स पु —गणों के ईश, गणेश, गजानन । (क. कु वो)

विसदरी—देखो 'विसूदरी' (रू. भे.)

उ०—जळ अनळग वन वन गहन जाय, डाकणी पशु प्रेत न
डराय । खैचरी चोर नाहर न खेद, विसदरा वैरी दवी विवाद ।

—रामदान लाळस

विसन—१ देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—१ कमळी भगत जीती कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन ।
इमिरित वावि सोसी अलखि, विसभ रूप वणियी विसन ।

—पी ग्र.

उ०—२ बखार्ण जाणै एक विसन, कहै मति कूरम मच्छ
किसन । कहै दत देव कपिल कल्याण, तवै दसरथ तणै तुडिताण ।

—पी ग्र

उ०—३ वडी सहि थोका हुति विसन, प्रमेसर भूक समापी पुन ।
प्रमेसर पार अपार अपार, नारायण नेह निमी निरकार ।

—पी ग्र

२ देखो 'व्यसन (रू. भे)

विसभ—स पु.—१ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ समाणो तूक मही घणस्याम, राघव्व अम्हीणी आतम-
राम । सेवग पयप तेजस मोह, विसभ रखै हिव थाय विछोह ।

—ह र

उ०—२ विसभ तूक ना निमी लीला विलास, केहर तूक वाल्ही
घणी कविलास । निगुण नाथ आदेस वलिराम नागु, त्रिगुण
किसन रा वीर तू सरव त्यागु ।

| पी ग्र.

२ श्रीकृष्ण ।

३ ऋषभभावतार ।

उ०—१ पढि फरसरांम लखमण कपिलि, रिदै मुक बळिराम
रहि । नारीयण विसभ अवतार निजि, क्रिसन बुधि निकलक
कहि ।

—पी ग्र

उ०—२ कमळी भगत जीती कळह, त्रिपुरासुर जिसतान तन ।
इमिरित वावि सोसी अलखि, विसभ रूप वणियी विसन ।

—पी ग्र.

वि.—भयकर, डरावना ।

उ०—फोडा विसभ फाड ए, तुरग कोमड ताड ए । कट्टक फोज
कठळा, अणी खिवंत सावळा ।

—गु रू व

रू. भे.—विखभ, विसभ ।

विसभर—देखो 'विस्वभर' (रू. भे) (श्र मा, ह ना मा)

उ०—१ अखभ कपिलि हेप्रोव विसभर, दत्तात्रेय हस दामोदर ।
राव बंकूठ धनतर रिखलभ, गण्डाळड विसन प्रसणीप्रभ । —ह र.

उ०—२ भीर म्है जका भीरी विसभर, गाज कुण सकै जसराज रा
गाव । राव एक थाप ऊथापिया रिडमल्ला, रिडमला पुडदडी
राखिया राव ।

—दुरगादास राठीड रो गीत

उ०—३ धम रहसै, रहसै घरा, खिस जासै खुरसाण । 'अमर'
विसभर ऊपरै, राख नहच्यो, राण ।

—रहीम

उ०—४ स्त्रीघर स्त्रीरंग सियावर स्त्रीपत, करणाकर कागण-करण ।
वज्र नायक विसवेस विसभर, घणनामी आणदघण । —र जे प्र.

उ०—५ या श्रीसर हरि का होय गहिये, भवर रच्या सी भूघर
कहिए । नाव विसभर विसपति रावा, पूरण ग्रह परसि पति
पावा ।

—ह पु. वा.

विसभरा—देखो 'विस्वभरा' (रू. भे) (ना मा, ह ना मा)

विसवाद—स पु. [स] वाद-विवाद, बहस ।

उ०—प्रीति परस्पर प्रतिघणी, एक जीव तनु दोह । पिए निज
निज मत नै विरै, विसवाद नित होह ।

—स्त्रीपालरास

विस—स पु [स विप] १ शरीर में पहुँचने पर प्राण लेने या हानि
पहुँचाने वाला पदार्थ, जहर, गरल । (ह ना मा)

उ०—१ इयं भात रहिता दो एक दिन नायण चलै कही कुवर
नू एक गोली बणाया छा तेसुं थै राजी हुती । तद कुवर कही
गोली बणाय । तद नायण विस गोली बणाय हर कुवर नू दीवी ।

—घोबोली

उ०—२ रावळ बुधसिध जगतसिध रो पाट बंठी । पछै बुधसिध
नै कहै छै सीतळा नीसरी थी, तिण मे विस हुवी । तठा पछै
रावळ तेजसिध जसवतसिध रो पाट बंठी ।

—नेणसी

उ०—३ घर रा वेटा रै सिवाय द्जो कुण चाटती । बाप रो डील
चाट्या पछै दोनू वेटा रै डील मे विस फूटग्यो, सेवट मरिया लार
छूटी ।

—फुलवाडी

उ०—४ ऊमड घटा अघ्रियावणी, वीज छटा छिव वाह ।
विस जिसडी लागं दुरी, निस पावस विए नाह ।

—र हमीर

२ सुख शांति मे बाधा पहुचाने वाला तत्व या बात ।

उ०—१ पथी एक सदेसडइ, लग डीलइ पौहच्याइ । विरह
महा विस तन विसड, ओखद दियइ न आइ ।

—ढो मा.

उ०—२ चिडणा अर फूटणा विचै ई वेटी नै बाप रो इण सुभराज
अर कुरव कायदा रो घणी दुव व्हियो । मिनख रो आ गुलामी
तो हवा अर उजास मे ई विस घोळ देवैला ।

—फुलवाडी

३ कुटिलता ।

उ०—१ तो ई जीवुंला जितै गुण मानूला कं थारी प्रीत रै कारण
म्हारै हिवडा रो विस इमरत मे बदळग्यो । लुगाई रै रूप रो
अर पुरख रै प्रेम रो आ इज तो छैहळी मरजादा ।

—फुलवाडी

उ०—२ तद वो अळगी भाम जायनें अक दूजा गांव मे आपरा
डैरा-डडा जमाया । नवा गाव मे पेठ जमावण सारू वो मिसरी
सूं ई मीठी बोलण लागो तो ई उण रै अतस रो विस लोगा सू
छानी नी रह्यो ।

—फुलवाडी

उ०—३ आ कालाई ती बरसा ताई जूता मारिया ई ठाणै नी आवै, इए वास्ते म्है ती मुळगी ई माठ भालली । अवारु ई आ सोचनं मून घारी कै देखूं आप लोगा री जीभ मे कित्तोक विस भरघौ है । —फुलवाडी

४ वैश्य, बनिया ।

५ दनायुप नामक असुर का पुत्र ।

६ एक प्रकार के देवगण ।

७ नकुलि देवी के द्वारा मारा गया एक असुर ।

८ कमल की नाल ।

९ जल, पानी ।

१० घी, घृत ।

११ सर्प, साप ।

१२ अमृत ।

१३ सात उपधातुओं मे से एक ।

१४ कडवा या तीक्ष्ण तत्व या बात ।

क्रि. प्र.—उगटणी, करणी, छाणी, घोळणी, भरणी, टपकणी, देणी, मारणी, लेणी, होणी ।

रू भे—वख, बखम, बिख, विस, विसिया, विस्र, वख, वस वसव, विकल, विल, विसिया, विमु, वेख ।

१५ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—विस सूख माहि रम रहै, माया हित चित लाइ । सोइ सत जन ऊवरै, स्वाद छाड गुण गाइ । —दाहूवाणी

विसह, विसई—१ देखो 'विसय' (रू भे)

उ०—भला वस्त्र पहरइ तोई तखाच, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरी आमवातीठ, काली तो कवाडि, का वेचि तो खात्रपाडउ, न वेचइ तो भडग, विसह ती सद्धरम बहिस्कन, विसह हीन तो नपुसक । —व. स

२ देखो विसयी' (रू भे)

उ०—१ थोडु जमइ तो भूंडउ ऊणाटउ, भला वस्त्र पहरइ तोई तखाच, सामान्य वस्त्र पहरइ तो दरिद्री, गोरी आमवातीठ, काली तो कवाडि, का वेचि तो खात्रपाडउ, न वेचइ तो भडग विसह ती सद्धरम बहिस्कन, विसह हीन तो नपुसक । —व स

विसकठ—स पु. [स. विपकठ] १ शिव, महादेव ।

२ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

मि०—'नीलकठ' ।

विसकभक—देखो 'विस्कभ' (रू भे)

विसक—देखो 'विसिख' (रू भे)

उ०—पेख जण पोखता अगन भाळा पडे, छछाळा सीत मद सुगध छूवै, कपे नवजोवना इसक चाळा करै, फूलवाळा विसक पार फूटै । —लच्छीराम बारहठ

विसकन्या—सं. स्त्री [स विषकन्या] १ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर मे एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

२ नाग कन्या ।

उ०—१ दळपति कोई न दूजी बरदळि, निरदळिया मात लोक नर । करि ऊछजि विसकन्या कहियो, राव तणै घरि लहोस बर ।

—दूदी विसराळ

उ०—२ में परणती परखियो, सूरति पाक सनाह । धडि लडिसी गुडिसी गयद, नीठि पडेसी नाह । नाह नीठि पडिसी खेत माभी निवड, गयद पडिस गहर करड घड भड गहड । विढती 'जसो' विसकन्या वाखाणियो, परणती कथ चौ भुरड पहचाणियो ।

—हा भा.

रू भे.—विसकन्या, विसकन्या ।

विसकरमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे)

उ०—राजमहलूं कै अडाव अरस सेती अडे, मनु धवळागिर विसकरमा जडाव सू जडे । जिस नगरी का राव विस का दरघाव जिसके भुडार परवरदिगार ।

—रू

विसकामणि; विसकामणी—स स्त्री. [स. विषकामिनी] नाग कन्या ।

उ०—१ सिणगारी सन्नाह सू, विसकामणि वरियाम । वरि आई हाहा वरण, करण महा जुघ काम । काम सग्राम ची हाम जुघ कामणी, घणा नर जोवती भोमि आई घणी । महाबळ धवळ रा साहि वरमाळ तू, सबळ घड कडतळां घणा सन्नाह सू ।

—हा भा.

उ०—तूटे हार अगार तुरगम, पट्टटि माग अनग पडी । कमधज 'रतनै' स्यू विसकामणि, चाचरि चवरग पलंगि वडि ।

—दूदी विसराळ

२ वह कन्या या स्त्री जिसके साथ सभोग करने से सभोगकर्ता की मृत्यु हो जाय । इस उद्देश्य से कन्या के शरीर में एक विशेष प्रकार का विष प्रविष्ट कर दिया जाता था ।

रू. भे.—विसकामणि, विसकामणी ।

विसकुभ—स पु [स विपकुम्भ] फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से प्रथम योग का नाम ।

विसकुट, विसकूट, विसकूठ—देखो 'विस्कूट' (रू भे)

विसकख—१ देखो 'विसिख' (रू भे)

उ०—उभै दळ उचारय, मचै सु मार मारय । विसकख पारवारयै, भडा सनाह भारयै ।

—रा रू.

उ०—२ कर मूठ धनख छूट विसकख, लेखा पखल मर लकख । वध सूर हरकख, श्रीर विलकख चाव परकख रवि चकख ।—रा. रू.

२ देखो 'विसेस' (रू भे)

३०—१ आठ गुरु पद छद, जिण विष्णुन्माळा अक्ख । गुरु लघु क्रम अठ वरग पद, सो मल्लिक विसक्ख । —र. ज प्र.

३०—२ भेद च्यार जिण रा भणो, आद वेलियो अक्ख । कवी सोहणी खुडद कह, वळ जागडी विसक्ख । —र ज प्र

विसक्रमा—स. पु. [स विस्व+कर्मिनि] १ सूर्य, सूरज, भानु ।

(क कु वो, ना मा)

२ देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

३०—१ इणि जाइगा वारह दिना रो मुकाम कीजै । ज्यू इतरा माहे अग्नि सिनान करी सति ही आवै । महाराज मानी । हाजी दुलह क्य चालै विगर जानी । वैकुण्ठाथ विसक्रमा कूं हुकम किया । —र वचनिका

३०—२ गज कोटि राज द्वारी, मिंदर उतग महल भटाळा । सपेख धाम वाम, विसक्रमा विभ्रम भवेत । —गु रू व.

विसख—देखो 'विसिख' (रू भे)

३०—१ वहि सुबाह एकणि विसख, मारीचं मुरभाय ।

—रामरासी

३०—२ दिस किरण पूरव अरक दरसं, दिखण कमधज दर-सिया । असुराण दळ सिर असख अणगम, विसख घण जिम वरसिया । —रा. रू

३०—३ आगं सेर विलद सेन सनमुख चलायो, दळ जादव ऊपरा जाण नाळव दरसायो । कुहक बाण हथनाळ विसख वरखै तिण घारा, व्रति सामण वदळा जाण घण मत्ती घारा । —रा रू)

३०—४ ती करू अरियण तेण कण कण, हरख मारुं विसख हण हण । विकट पुहुं मनावछत, गहर गुण गाजै । —र रू

विसखधाम—स पु [स. विशिख धाम] १ तरकष । (अ मा)

विसखपर, विसखपरी, विसखप्पर—स पु [स. विपकर्परा] १ कीचक के लिये प्रयुक्त विशेषण सूचक शब्द ।

३०—विसखप्पर कीचका बकु, हिडबु फनीरु मारिउ । लहु वधयि अरजुनि दुमि, वार तुह जीउ ऊगारिउ । —सालिभद्र सूरि

२ देखो 'विसखपरी' (रू भे)

विसखुट, विसखूट—देखो 'विस्कुट' (रू भे.)

विसघातक, विसघाती—वि [स विप+घातक] जिससे विप का प्रभाव दूर हो जाय ।

विसटर—देखो 'विस्टर' (रू भे)

विसटाळ विसटाळ, विसटालु, विसटाळू, विसटाळो—देखो 'विस्ताळी' (रू. भे)

३०—१ केय कहै भिड आयी कंडीर । विस्ताळ कहै फोय वडो वीर । जिण वार तमक पावु जवान, विसताळ भडै खँग रीठ वान । —पा प्र

३०—२ जगपत जोय जहाज, कुळ जोइया कतळत करत । ए विसटाळु आज । दाखै कुण मेलत 'दला' । —गो रू

३०—३ विसनसिध जद भेजिया, विसटाळू उणवार । कमध हूत कंहाविया, चोकस सम्माचार । —पे रू

३०—४ विसटाळू आया वडै, जीद कनै सव जाण । कहिया वूढे रा कथन, वकियो जायल राण । —पा. प्र

३०—५ आलोची रातै रे, कहस्या परभातै रे, जातै ग्हातै सुख हम तुम सही रे । पाउघारेंठ डेरै रे, आलिम पति हेरै रे, विसटाळू घर पाछा फिरै इम कही रे । —प च. ची.

३०—६ घरा सहिर ऊधमै, जोध खिजिया जमजाळा । कूमराण औदकै, वीच फेरै विसटाळा । —सू. प्र-

३०—७ विठै एम देखियो, इता एकण घर वाळा । वड वड भडा विचारि, वीच फेरै विसटाळा । —सू. प्र

३०—८ 'सूर' पान लै साह रा, अयो करण अखियात । घर मुदफर सिर छत्र घर, विसटाळा रो वात । —सू प्र

३०—९ अम्ह विसटाळै आवियो, लग ज्या हिज लारै । कटक सुणि अगद कहै, पित तूभ प्रकारै । —सू प्र.

विसटियो—देखो 'विसठी' (अल्पा रू. भे)

३०—वित ले जावै विसटिया, पाण चकारा पाड । मारी ज्यानै मोटवी, सगत त्रसूला चाड । —पा प्र.

विसठी—स पु [स. विष्टि] १ ज्योतिष मे ग्यारह करणी मे से सातवें करण का नाम ।

२ पुरस्कारहीन या बिना पारिश्रमिक का कार्य, बेगार ।

वि—१ दुष्ट आततायो ।

२ देशद्रोही, उपद्रवी ।

३ डाकू, लुटेरा ।

रू भे.—विसठी ।

अल्पा,—विसटियो ।

विसठी—देखो 'विस्टी' (रू. भे.)

३०—कागा केरी चाच ज्यूं, चुगलां केरी जीह । विसटा ज्यु परची वुरी, चूंथै सवही दीह । —वा दा.

विसठ—स. पु [स विशठ] बलराज एव रेवती के सप्तमं से उत्पन्न एक पुत्र ।

विसठी—देखो 'विस्टी' (रू भे)

विसरण—देखो 'विस्णु' (रू. भे)

उ०—ब्रह्मा विसरण महेश्वर तो सेव कराही । गत भ्रमामी
ताहरी, को जाणै नाही । —गज उद्धार

विसरणाडणौ, विसरणाडवौ—देखो 'विणसाणी, विणसावी' (रू. भे)

विसरणाडणहार, हारौ (हारी), विसरणाडणियो—वि० ।
विसरणाडिओडौ, विसरणाडियोडौ, विसरणाडचोडौ—भू० का० कृ० ।
विसरणाडौजणौ, विसरणाडौजवौ—कर्म वा० ।

विसरणाडियोडौ—देखो 'विणसायोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री विसरणाडियोडौ)

विसरणाडणौ, विसरणाडवौ—देखो 'विणसाणी, विणसावी' (रू. भे)

उ०—अलूखानि विसरणाडिउ काज, कटक मरावी आव्यउ आज ।
करइ वात इम सारूँ राज, अलूखानि जो आणी लाज ।
—का दे. प्र

विसरणाडणहार, हारौ (हारी), विसरणाडणियो—वि० ।
विसरणाडिओडौ, विसरणाडियोडौ, विसरणाडचोडौ—भू० का० कृ० ।
विसरणाडौजणौ, विसरणाडौजवौ—कर्म वा० ।

विसरणाडियोडौ—देखो 'विणसायोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विसरणाडियोडौ)

विसरणु—देखो 'विस्णु' (रू. भे)

विसतत्र—स पु [स विपतत्र] साप आदि विपले जानवर के विप को
दूर करने की क्रिया । (वैद्यक)

विसत—देखो 'वहिस्त' (रू. भे)

उ०—अपनै काज करै गउ विसतल, जीव सरै पुहचावै । काजी
विसत हाथि है तेरे, ती कुल दोजख क्यु जावै । —अनुभववाणी

विसतर—देखो 'विस्तर' (रू. भे)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

उ०—लाखा भाटी की अजै साखा विसतर का, काटै मोती
पोविया वन हैम वर का जल्ला गहाणी जिसा जग कीरत कर
का, गावै जिस दा गीतडा अर ही घर घर का ।
—दुरगादत्त बारहठ

विसतरणौ, विसतरवौ—देखो 'विस्तरणौ, विस्तरवौ' (रू. भे)

उ०—१ रसना नाभ सवद सचरिया, तन मन वचन सहज
विसतरिया, उलटि अछर अणअछर होई, सुरता बकता लहै न कोई ।
—अनुभववाणी

उ०—२ विसतरी बात सारी विसव, अणकारी उतपात सी ।
अजमेर कान अवरग नै, सुण लगी अत घात सी । —रा रू

उ०—३ महा ढहोली मेदनी, विसतरियो तिरण वार । साह
तपस्या अगली, अकबर सेन अपार । —रा रू.

उ०—४ गम पडै एम इण गीत री, इम पिगळ कवि उचरै । हेक
गुर घटै दुइ लुघ दुई तिम तिम नाम विसतरै । —पि प्र.

उ०—५ कमघज्ज तजै मनमोह कायाची वीर तिसीह विसतरिय
तत लै निरवाण क राज तियाग, गोपीचद भरत्थरिय ।
—गु रू. व

उ०—६ दाडिमी वीज विसतरिया दीसै, निउछावरि नाखिया
नग । चरणै लुचित खग फळ चुचित, मधु मुंचति सीचति मग ।
—वेलि

विसतरणहार, हारौ (हारी), विसतरणियो—वि० ।

विसतरिओडौ, विसतरियोडौ, विसतरथोडौ—भू० का० कृ० ।

विसतरीजणौ, विसतरीजवौ—कर्म, भाव वा० ।

विसतरवद—देखो 'विस्तरवद' (रू. भे)

विसतरियोडौ—देखो 'विस्तरियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री विसतरियोडौ)

विसतरियो, विसतरी—देखो 'विस्तर' (अल्पा, रू. भे)

उ०—पाछौ पडउथलो मिल्यो—कदं ही नहीं । कदं ही नहीं ।
तो भूँ अठै क्यू हूँ ? दूजी दुनिया वळगी के ? एक दिन री बात
योडौ ही है ? जिदडी री सवाल है । मूली बोरिया-विसतरा
उठायी, बाघ्या अर चढी, रातरै पल्लै । पेमजी आपरै तल्लै-बल्लै ।
—दसदोख

विसतार—स पु—१ समूह, भुण्ड । (अ. मा)

उ०—सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारा, विवध भूत वेताळ
वीर पळचर विसतारां । गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया,
काक कक कौ गिरां, आस पळ सभळ आया । —रा रू

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—१ सु वसत आइ हित देने दुख दूरि कीयी । वेली थो सु
व्याई । साखा ब्रह्मा की पसरी छै । सु जाणा वाहा की श्रीलादि
वंसाख हुई । वंसाख मासि साखा कौ विसतार हुआ । —वेलि टी

उ०—२ राम नाम निज मूळ है, श्रीर सकळ विसतार । जन-
हरिया फल मुगति कु, लीजै सार सभार । —अनुभववाणी

उ०—३ तीन लोक मडप विसतारा, जा विच आय जाय ससारा ।
वाकै परै अभगीराया, आसण एक अटल मट छाया ।
—अनुभववाणी

उ०—४ श्रीरगसा पातसा आसुर अवतार, तस्या के तेजपुज
एक से विसतार । माप का विहाई सा प्रताप का निदान, मारतड
आगं जिसी जोतसी जिहान । —रा रू

उ०—५ पीळि पीळि उच्छ्व प्रबळ, वेदोक्ति विसतार । राजा सखत विराजियो, सुभ चौकीस गार । —रा रू

उ०—६ वडी रिधि तरुं विसतारं, पुर बाहिर हिव पधारं । आवं घरता आणद, जिहा त्रिगडं स्त्रीवीर जिणद । —ध व ग.

उ०—७ आठ गायत्री ब्रह्मा नै दीवी, रजोगुण विसतारा । चार वेद पिछाडी दीना, कर उत्पत्ति ससारा ।

—स्त्रीहरिरामजी महाराज

उ०—८ मिटं चोर मारग, जोर प्रगटं व्यापारं, वधि वसती रन, वनं वेळ वरती ऊदारा । वडै क्रोध विसतार, रीछ सावर घर रोणा ।

जठं सिध सद्दा, तठं गरजंत विलीणा । —रा रू

उ०—९ आगं जाइ गुजराति री वेढि की । वेढि जीपि अर पाति-साहजी सीकरी फतेहपुर पधारिया । इण वात री विसतार आगं कहीजसी । —द. वि

विसतारक—देखो 'विस्तारक' (रू भे)

विसतारण—देखो 'विस्तारण' (रू भे)

उ०—१ कुळ देवी ग्रह पूज सकारण, विजन नव नेवज विसतारण । घुप अगार दीपक सुभ धारण, अन देवा घन सेव अपारण ।

—रा रू

उ०—२ घर अवर ढक्कियण, वेद ब्रह्मा विसतारण । त्रिभुवन तारण-तरण, सरण असरण साधारण । —ह र

विसतारणी, विसतारवी—देखो विस्तारणी, विस्तारवी' (रू भे)

उ०—१ चुगली विसतारत चुगल, साप्रत होय सचेत । सी मुरदार सरीर री, लट मुख माफल लेत । —वा दा

उ०—२ वात वळं असुरा विसतारी, घर दिस असट दिलासा धारी । कितराई सुण भ्रमिया काचा, सबळ विखायत रहिया साचा । —रा रू

उ०—३ पर हूता जिम पसर, धरा फणधर उर धारं । पवन जोर पेरियो, वडै वडळ विसतारं । नाग राग पेरियो, प्राण पैला वलि थप्यं । दास हुकम पेरियो, जास पति धरं सजप्यं । —रा रू

उ०—४ भार उतारं भोमि, अवधि संदेह उधारं । वसै राम वेकूठ, विमळ जग जस विसतारं । —सू प्र

उ०—५ हाथी सह पहिरी हलकारं, हलकता नवि हारं । सुडा-दड सबल विसतारं, मद उनमत्ता भारं हो । —वि कु

विसतारणहार, हारी (हारी), विसतारणियो—वि० ।

विसतारिओडी, विसतारियोडी, विसतारघोडी—भू० का० कृ० ।

विसतारीजणी, विसतारीजवी—कर्म वा० ।

विसतारियोडी—देखो 'विस्तारियोडी' (रू भे)

(स्त्री विसतारियोडी)

विसतारी—देखो 'विस्तारी' (रू. भे)

विसतारी—देखो 'विस्तार' (रू. भे)

उ०—चारित्र ऊपर चाव हमारी, वचन न लोप्यो एकज धारी । तिण सु एह हुवी विसतारी, पिण विरक्त नै कुण राखणहारी ।

—जयवाणी

विसतरणी, विसतरवी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू. भे.)

उ०—करि धान छटं प्राकृत कहू, विधि आ घणी विसतरू । सर रचि प्रताप 'अभमाल सह,' इम खटभाखा उच्चरू ।

—सू प्र.

विसत्तरणहार, हारी (हारी), विसत्तरणियो—वि० ।

विसत्तरिओडी, विसत्तरियोडी, विसत्तरघोडी—भू० का० कृ० ।

विस्तारीजणी, विसत्तरीजवी—भाव वा० ।

विसत्तरियोडी—देखो 'विस्तारियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विसत्तरियोडी)

विसथरणी, विसथरवी—देखो 'विस्तरणी, विस्तरवी' (रू भे)

उ०—भरदिया जेम जगमल्लमल्ल, ढढोळि ढल्ल मारिय मुगल्ल । रळतळइ रत्त सोखइ सपत्त, सभळइ सत्त विसथरई वत्त ।

—रा ज सी

विसथरणहार, हारी (हारी), विसथरणियो—वि० ।

विसथरिओडी, विसथरियोडी, विसथरघोडी—भू० का० कृ० ।

विसथरीजणी, विसथरीजवी—भाव वा० ।

विसथरियोडी—देखो 'विस्तारियोडी' (रू भे)

(स्त्री विसथरियोडी)

विसथार—देखो 'विस्तार' (रू भे)

उ०—१ नमी नर सुरा नाथ निरगुण नरेसुं, नमी नेक धारे हुप्रो नाग सेसु । नमी विसन विसथार अधिको वणायो, निमी जोनि ब्रह्मा जिसो पुसल जायो । —पी प्र

उ०—२ करतार मेह करति, ब्रम चिहु रसा वरसति । परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार । —पी. प्र

विसथारणी, विसथारवी—देखो विस्तारणी, विस्तारवी' (रू भे)

विसथारणहार, हारी (हारी), विसथारणियो—वि० ।

विसथारिओडी विसथारियोडी, विसथारघोडी—भू० का० कृ० ।

विसथारीजणी, विसथारीजवी—कर्म वा० ।

विसथारियोडी—देखो 'विस्तारियोडी' (रू. भे)

(स्त्री विसथारियोडी)

विसद-वि. [स विशद] १ निर्मल, साफ, स्वच्छ, पवित्र ।

३०—कह कारखाना गिरात कुण कुण, सभ्रमें तिहूलोक सुण सुण । विसद जग उजवाळ विरदा, सत्रा साभरण सूर ।

—र. रू

२ सफेद रग का, चमकीला, उज्जवल (प्र मा., ना. मा., ह. ना. मा)

३ स्पष्ट ।

४ शान्त, स्थिर, निश्चिन्त ।

३०—सखारथी म्वारथी जै स्वसुख दुख प्रारथी वच सदै, बढे जी विद्यारथी विसद परमारथी वच सदै । प्रचड ब्रह्माड प्रचुर भुविमड प्रद प्रभो, वितड प्रोड्ड प्रनत दुख खड प्रद विभो —ऊ. का

५ सुन्दर, मनोहर ।

स पु —१ सफेद रग ।

२ शब्द । (अ. मा)

३ जयद्रथ राजा का पुत्र एय सेनजित राजा का पिता एक राजा ।
रू भे —विसद ।

विसदता—स स्त्री [स विषद+ता प्रत्य] विषद होने की अवस्था या भाव ।

विसदशरीर—स पु [स विषद+शरीर] चन्द्रमा, चान्द । (ना. मा)

विसधर—स पु [स विप+धर] १ सर्प, साप ।

३०—हण विसधर विसधर बचो, भाग बुझाय अगार । पिसण मार सुत पिसण रो, असमभू लियो उवार । —वा. दा

२ गोह ।

३ शेषनाग ।

४ महादेव, शिव, शंकर ।

रू भे —ब्रह्मधर, बलधारी, विक्वधर, विम्बधर, विखहर, विसधर, विसहर, विक्वहर, विखधर, विखधार, विखधारी, विखहर, विसधर, विसधारी ।

विसघात्री—स स्त्री.—मनसादेवी जो जरत्कार ऋषि की स्त्री थी ।

विसन—स. पु [स. वंदवानर] १ भाग, अग्नि ।

३०—में तो प्रीत करी परमातम, पावक देख पतगा । परमातम पर दुख निवारै, उ जळत विसन कै सगा । —अनुभववाणी

२ देखो 'विस्णु' (रू. भे) (ना मा, ह ना मा)

३०—१ राम नाम सब ही कुं आरथी, ब्रह्मा विसन महेशुर भाख्यो । सोई नाव कह्यो पारवती, आयी भेद रिख नारद ती ।

—अनुभववाणी

३०—२ भगवत सुतण हुयो ब्रह्म भुवणै, घण दोहा लग नाम घणी । ब्रह्मा विसन महेश वदीती, तप तुंगिम जस तूभू तणी ।

—गोपाळ भीसण

३०—३ तारण मुख तोले तिजड, विसन सकति कर वद । कूच नगारा हुय कटक, चवै हुकम जयचंद । —सू. प्र.

३०—४ सुणै पौकार विसन सळसळिया, रत चखि भ्रकट कोट धोम रळिया । प्रळं काळ रो विखती पावक, प्रगटं जोति पिड प्रम भावक । —मा वचनिका

३०—५ ब्रह्मा विसन ईसर सुवर, केसव एक त्रय वप्प किय । रिदय निलाट भरि नाभि हू, ब्रह्मा विसन महेश थिय ।

—रा. वसावळी

३ देखो 'व्यसन' (रू. भे)

३०—१ कइ अन्है सस विसन आचरिया, कइ परनदा कीधी । कइ अन्है दीनदया नवि पाली, लाच अयुगती लीधी ।—का. दे प्र.

३०—२ एक सहर, तै माहै बढी राजा । पिण राजा नू सिकार रो धणी विसन । नित्य सिकार चढै । मारै ती हेक हिरण पिण सारी ही रोही रा हिरण घेचै, चरण देवै नही ।

—बूढी ठग राजा रो वात

३०—३ माभी खिणक मिजाज, वै अदवी सातू विसन । लोभ धणी कम लाज, पैला घर वाछै पिसण । —वा. दा.

३०—४ जग माभल चुगली जिसे; हीण विसन अन है न । विण चुगली भुगतै विया, चुगली कीधा चैन । —वा. दा.

विसनदेव - देखो 'विस्णु'

३०—नागै हुय असनान कराया, विसनदेव का नाव घराया । तुं तो आस पास कू नाळ, अलख रह्यो आखि दे ठाळ ।

—अनुभववाणी

विसननाय—देखो 'विस्णु' ।

३०—नरा नाय वाजता नगारा, आयी पुहकर धळा अपारा । विसननाय आयी दिन वळिया, पुहकर गुरा तणा दुख पुळिया ।

—रा. रू.

विसनपय - देखो 'विस्णुपय' (रू. भे)

विसनपद—देखो 'विस्णुपद' (रू. भे.) (प्र मा, ह ना मा)

विसनपरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे.)

विसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (रू. भे.)

३०—भूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का काम । हरीया सुवचन साचका, विसनपरा विसराम । —अनुभववाणी

विसनपुर—देखो 'विस्णुपुरी' (रू. भे)

विसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (अल्पा., रू. भे)

विसनपुरी—देखो 'विस्णुपुरी' (रू. भे.)

विसनप्रिया—देखो 'विस्णुप्रिया' (रू. भे)

विसनर, विसनरु—१ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे) (उ र)

उ०—१ दूखणिया गदबई, घाव डूगा घळ जावै। विसनर सू जळ जाय, लाल लोई कळ भावै। जळ मे पान उकाळ, घपटवा घाव कुवावै। कौडा पई न फोय, पीड आखी भळ जावै।

—दसदेव

उ०—२ विहगै हुवो न चीनो विसनर, भव ही तणै न आयी भागि। घड 'घमळीत' तणै खग-धारा, लिगि लिगि गयी अगारा लागि।

—ईसरदास बारहठ

उ०—३ राति चालइ राउ मागि सुरगह कुणबि सउ, दियउ पुरोहितु दाउ लाखहरइ विसनर ठवइ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—सिध ब्रह्मा विसनर कहै, सत भरै सब साखि। राम नाम एको भला, हरीया हिरवै राखि।

—अनुभववाणी

विसनसामी-स. पु.—वैष्णव सम्प्रदाय का अनुयायी।

उ०—१ तळाव मोतीकुंड विसनपुरा कनै पहला ती खान कटणा सु हुयो थी नै पछै मोती बाई करायी तिरण मे वेरी १८९६ मे विसनसामियां सार, सामल होय नै कराई।

—मारवाड री ख्यात

विसनासन-स. पु. [स. विष्णु+आसन] १ गरुड।

२ क्षेपनाग।

वि. पु [स विष + नाशत्र] विष का नाश करने वाला।

विसनिर, विसनिरु—देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

विसनी, विसनीउ—देखो 'व्यसनी' (रू. भे)

उ०—१ विसन बिना दस बीस वरस, बिच भरणी सूरग सिघाणी। विसनी नर सौ वरख जियै वपु, पूगै नरक पयाणी।

—ऊ ऊ

उ०—२ गवचो घाइ गालडा, अनइ करमाइ काय। आगलि ऊमठ विसनीउ, थूकत थूकत जाइ।

—मा. का प्र

विसनु—देखो 'विष्णु' (रू. भे.) (अ मा)

विसनुकवच—देखो 'विसनुपजर'।

विसनुपजन, विसनुपजर-स. पु [स विष्णु+पजर] १ विष्णुस्तोत्र जो रक्षार्थ पढा जाता है।

२ विष्णुस्तोत्र जो तावीज के रूप में भुजा पर धारण किया जाता है।

रू. भे.—पजरविसन, पजरविसनु।

विसनोई-स. पु—१ एक सम्प्रदाय विशेष, जिसके प्रवर्तक जाभोजी थे।

२ उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति।

रू. भे.—विसनोई, विस्नोई।

विसनो—देखो 'विष्णु' (रू. भे)

उ०—विन भजन कहे तूं विसनो, वडी थूळ सरिखी छा। पोरदास कूड बोले प्रभु, दास नही कहे दास छा।

—पी. ग्र.

विसन्न—१ देखो 'विष्णु' (रू. भे)

उ०—१ कपाळ विसाळ सिघाळ किमन्न, वडाळ भुजाळ उजाळ विसन्न। मुणाळ भुआळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस आदेस।

—ह. र.

उ०—२ वदे पग लच्छि सहेत विसन्न, समीपमुकति ज 'देव' सुतन्न। अखै प्रथमी जस एम अथाग, 'भुरा' धनि तूक तणो अत भाग।

—सू. प्र.

उ०—३ उदोत तपोनिध त्रेगुण ईम, अजीत जरा अत जोग अघीस। विसन्न विमोह विसन्न विग्यान, रतीपति तात प्रकत राजान।

—ह. र.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे)

उ०—जावै साहस जाणियो, ईखै आकत तन्न। वाघ डरै नह वरै सू, वाघा वरै विसन्न।

—बा दा

विसन्नर—१ देखो 'विष्णु' (रू. भे)

२ देखो 'वैस्वानर' (रू. भे)

उ०—फौजां गजडवर लीण लसवकर दक्खण उत्तर आहूडियं। वहे वाण विसन्नर विखिलयो घोमर ताळ भयकर तावडिय।

—गु. रू. ब

विसन्नू—देखो 'विष्णु' (रू. भे)

विसपत, विसपति विसपती—१ देखो 'विश्वपति' (रू. भे)

उ०—या औसर हरि का होय रहियै भवर रच्या सो भूधर वहिए। नाव विसभर विसपति रावा, पूरण ब्रह्म परसि पति पावा।

—ह. पु. वा

२ देखो 'ब्रह्मपति' (रू. भे.)

विसपाळ—देखो 'विश्वपाळ' (रू. भे)

उ०—१ चद्र सूर किया दोय दीपक, करि तारामडळ करितार। अनत लोक विसपाळ विसभर, सकळ सद्याया ती सार।

—ह. पु. वा.

उ०—२ अरि भजन अनरथ हरन गरब हरन गोपाळ। जन हरि-दास अकरन करन हरि अकळ सकळ विसपाळ। हरि अकळ सकळ विसपाळ नाथ निरभै निरधार। निराकार निरलेप वार नहिं लामै पार।

—ह. पु. वा.

विसप्रसून-स. पु. [स. विपप्रसून] कमल। (ह. ना. मा.)

रू. भे.—विसप्रसून।

विसप्रस्थ—स. पु [स. विपप्रस्थ] एक पर्वत का नाम ।

विसफळ—स पु [स. विप+फल] १ वह जहरीला फल जिसके सेवन करने पर सेवनकर्ता की मृत्यु हो जाती है ।

रू. भे.—विसफळ ।

विसफोटक—देखो 'विसफोटक' (रू. भे)

विसब, विसव्व—देखो 'विस्व' (रू. भे)

उ०—उदोत तपोनिघ त्रेगुण ईस, अजीत जराअत जोग अधीस ।
विसभ्र विमोह विसव्व विग्यान, रती पति तात प्रकत्त राजान ।

—ह र

विसवावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

उ०—ससि सूर लोचन साचि, चत्र वेद वायक वाचि । बुद्धि ब्रह्म
विसवावीस, अतकरण कहीज ईस ।

—पी. प्र.

विसमत्र—स. पु [स. विप+मत्र] १ विप उतारने वाला मत्र ।

२ उक्त मत्र को जानने वाला व्यक्ति ।

विसम—वि [स विपम] १ जो समान न हो, असमान ।

२ जिसमे दो का भाग देने पर एक शेष बचे ।

३ जो सरल न हो, कठिन, रहस्यमय ।

उ०—अव वार गग तोइ धोई अग करि स्त्रीकसन नणा कंवार ।
उत्तम हीई जनम क्रम आतम, लगम तरं दधि विसम ससार ।

—ह. ना मा.

४ जो व्यवस्थित न हो अव्यवस्थित ।

५ जहा कोई नहीं जा सके, दुर्गम्य ।

उ०—वदइ इसी करी अरदास इणि गढि राउलनउ छइ वास ।
विसमउ गढ विसमा भूमार, ऊपरि विसमा पोलिपगार ।

—का दे प्र.

६ भयकर, भोपण ।

उ०—१ उलकापात हूठ विकराळ, विसम धूम धूधइ विराळ ।
वलित कटक छाडिउ मेल्हाण, ढौली भणो च ल्यठ सुरताण ।

—का दे प्र

उ०—२ सत्य कू छेदिउ बलिहिं, सीसु तसु दिणो चऊदमइ,
रातिहिं भूमइ विसम, भूमि गुरु पडइ कीमइ । —सालिभद्रसूरि

उ०—३ विसम ढाक स हूकस ढमढमी भरहरी भर भेरि विहा-
मणो । उच्चरि तुररी कुहरी जसो, सुभट ना सवि रोम ज
उद्धमी ।

—सालिसूरि

७ कष्ट देने वाला, कष्टप्रद ।

८ टेढा, तिरछा, वाका ।

९ प्रतिकूल, विरुद्ध, विपरीत ।

१० अद्भुत, अनोखा ।

११ बुद्धिमान, चतुर, चालाक ।

१२ तीव्र, तेज ।

१३ वीर, वहादुर ।

१४ जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—वदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउलनउ छइ वास ।
विसमउ गढ विसमा भूमार, ऊपरि विसमा पोलिपगार ।

—का. दे. प्र.

१५ ऊगड-खाबड, असमतल ।

उ०—सुगुरु साथिय हीण घणु समिया, विसम वाट किहाइ न
वीसमिया । वसइ जे जिनमदिरि सीयलइ, विहु परं तीह तापु सही
टलइ ।

—जयसेखर सूरि

१६ दृढ, मजबूत ।

१७ चट्टा, विपरीत ।

उ०—तं जाणो हु ताहरी, थई रहो छू धीर । अक्षर सहू कीज
समा, विसमा टाली वीर ।

—मा का प्र.

१८ टेढा, अनुचित, बुरा, कर्ण कटु ।

उ०—पातिसाह मूछइ बळ घाली, विसमा वोल्या बोल । जे की
माहरी भाण न मानइ, चूकइ ठाम निठोल ।

—का. दे. प्र.

स पु—१ वह संख्या जो दो से बराबर-बराबर नहीं बटे ।

२ तकलीफ, मुसीबत, विपत्ति, सकट ।

३ फौज, सेना ।

४ अग्नि, आग ।

५ वायु, पवन, हवा ।

६ शिष्य, धाकर, महादेव ।

७ वह वर्णवृत्त जिसके चारो चरणो मे समान वर्ण न होकर किसी
चरण मे अधिक व किसी चरण मे कम हो ।

८ दो परस्पर विरोधी वस्तुओ या दोनो की विपमताओ का वर्णन
करने वाला एक प्रकार अर्थालंकार विशेष । (साहित्य)

९ एक प्रकार का ताल विशेष । (संगीत)

१० वायु प्रकोप के कारण उत्पन्न होने वाली चार प्रकार की
उठराग्नियो मे से एक ।

[स. विपम] ११ भगवान श्रीविष्णु का एक नामान्तर ।

रू. भे —अक्षम, विल्वम, विल्वमी, विस, विसम, वीसम, वल्लम,
वल्लमी, विवल, विवल, विवल्लम, विवल्लमी, विवल्लम्म, विवल्लम्मी,
विल्लम, विल्लमी, विल्लम्म, विल्लम्मी, विसमउ, विसमिउ, विसमी,
विसमु, विसर्म, विसमी, विसम्म, विसम्मी, विसम्य, विस्सम,
वीसम, वीसमउ, वीसमी, वीसर्म वीसमी ।

विसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे.)

उ०—१ गढ गिरुठ अनइ विसमउ, जेहनउ पायउ पातालि पयठउ
महागज तणा जिसा पाग तिसा कीसीसा, गहई पोलि, निविड

कमाड, लोहभोगल, विजाहरि तरणी पडति, यत्र तरणी स्त्रेणि, **।

—व. स

उ०—२ वदइ इसी करी अरदास, इणि गढि राउळनउ छइ वास ।

विसमउ गढ विसमा भूभार, ऊगरि विसमा पोळिपगार ।

—का. दे प्र

विसमगत, विसमगति, विसमगती, विसमगत, विसमगति, विसमगती—
स. स्त्री —विकटस्थिति ।

उ०—हळवळ दळ अकळ 'जसा' हीलोहळ, भळहळ कूंत हृद वीज
भक्त । भळहळ खाग दोगण स भ्राडण, गढ अरियण घरा विसम-
गत । —साहूळजी पिडियो

रू. भे —वसमगत, वसमगति, विखमगत, विखमगति ।

विसमजुर, विसमज्वर—स पु. [स विपम+ज्वर] प्राय वर्षा ऋतु मे
होने वाला एक प्रकार का ज्वर विशेष जिसमे यकृत और तिल्ली
बढ़ जाती है ।

रू. भे —विखमजुर, विखमज्वर, विखमजुर, विखमज्वर ।

विसमत—स स्त्री [स विप+मति] दुबुद्धि, खराब बुद्धि ।

वि.—१ ऊन्नड खावड, असमतल ।

२ कठिन या दुर्गम्य ।

३ सकुचित, सिकुडा हुआ ।

देखो 'विस्मित' (रू. भे)

रू. भे —विसमत, विसममत ।

विसमता—स स्त्री [स विपम+ता प्रत्य] विपम होने की अवस्था
या भाव ।

उ०—अठै अस्थिपाल रा अन्वय में 'गभीर' थी वसमी पीढी राज-
कुमार देवसिंह हुवो जिकण चालुक वस में भोलाराय भीम थी
तेवोसमी पीढी गोहदराज टोडा री अघीस हुवो जिकण रा अढा-
रह अगजा में बडा ही बडा कुंभराज कन्हड दो ही बघवा नू आपरा
सगोत्र गोळवाळ जसराज री दो ही पुत्रिया विवाही इण कारण
मागध लोका रा घणा ग्रथा में एक ही लेख जाणि सोहो प्रमाण
इण ग्रथ मे राखियो परंतु पीढिया री विसेम ही विसमता हू
विरोध आवे । —व. भा

रू. भे —विपमता ।

विसमनयण, विसमनयन—स. पु. [स. विपमनयन] शिव, महादेव ।

रू. भे —विपमनयण, विखमनयण, विखमनयण, विपमनयण ।

विसमनेतर, विसमनेत्र, विसमनेत्र—स पु. [स विपमनेत्र] शिव,
महादेव ।

रू. भे.—विपमनेत्र, विपमनेत्र ।

विसमपण, विसमपणी—स पु. [स विपम+रा प्र पण, पणी] विपम
होने की अवस्था या भाव, विपमता । (अमरत)

विसमवाण—स. पु. [स विसम+वाण] कामदेव के पाच वाणो मे से
एक वाण ।

रू. भे —विखमवाण, विखमवाण, विसमवाण ।

विसमवत—देखो 'विसमत' (रू. भे)

विसमय—स पु. [स. वि =बुरा+समय] बुरा समय, खराब समय ।

वि.—[स. विप+मय] १ विपयुक्त, जहरयुक्त ।

रू. भे —विसमय, विसम, विसमय ।

२ देखो 'विस्मय' (रू. भे)

उ०—कमने तीरन तानिके पखरते वेधत पानि के 'बुध' तनय हित
जय प्रणय नय वय छपय रन सुम अभय अतिमय विसय चय भुव
बलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय उदय रवि नयनिलय
अजय सयकर अखय जय अय उभय सय पय हृदय अपचय कटय
भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार । —व. भा

विसमर—देखो 'विसमरी' (रू. भे)

विसमरण, विसमरण—देखो 'विस्मरण' (रू. भे)

विसमरणौ, विसमरवौ—देखो 'विस्मरणौ, विस्मरवौ' (रू. भे)

विसमरणहार, हारो (हारो), विसमरणयो—वि० ।

विसमरिओडो, विसमरियोडो, विसमरयोडो—भू० का० कृ० ।

विसमरीजणो, विसमरीजवो—कर्म वा० ।

विसमरियोडो—देखो 'विस्मरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विसमरियोडो)

विसमरौ—स पु. [स विपमर] विपला जन्तु, छिपकली । (अमरत)

रू. भे.—विसमर, विखमरौ, विसमर ।

विसमल, विसमला, विसमल्ला, विसमल्लाह—देखो 'विस्मल्लाह'
(रू. भे)

उ०—१ मूला सूनिता तै, करी तै कीया विसमल । ग्वलडी गला
कटाय के, क्या कीया वेकल । —अनुभववाणी

उ०—२ काया विसमल क्या करे, मन कु विसमल कीन । हरीया
मन विसमल बिना आतम सधे न चीन । —अनुभववाणी

उ०—३ अपने काज करे गठ विसमल, जीव सरै पुंहुचावे ।
काजी विसत हाथि है तेरे, ती कुल दोजख क्यु जावे ।

—अनुभववाणी

उ०—४ अपने हाथि कीया मन मानी, हरि का कीया दाय नही
आनी । मारे गऊ कहे विसमला, यू ती खुसी खुदाय न आला ।

—अनुभववाणी

विसमवाण—देखो 'विसमवाण' (रू. भे)

विसमचित्सिख—स. पु. [स विपम+चित्सिख] कामदेव का एक नाम ।

विसमव्रत—स पु [स विपम+वृत्त] एक प्रकार का वृत्त विशेष जिसके चारो चरणों में पद असमान हों ।

विसमसि—स. पु [स.] आलम्बन सहारा ।

उ०—तं मिच्छद्विद्वो मिथ्यात्वी द्रष्टि जाणिज्ज जाणिवउ, जं पतित धरम हता भ्रष्ट ह्या तेहना आलम्बन ओठम लिइ, अस्टनी विसमसि करइ ।
—पण्ठीशतक

विसमागनी, विसमान्नि—स स्त्री [स. विपम+ अग्नि] बंदक में चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जठराग्नि ।

विसमाजुद्ध, विसमाजुध, विसमाजुध्व विसमायुद्ध, विसमायुध—स पु [स विपमायुद्ध] कामदेव का नामान्तर ।

रू भे—विखमाजुध, विखमाजुध्व, विसमायुद्ध, विसमायुध ।

विसमासन—स पु [स विपमासन] ठीक समय पर भोजन न करके थोड़ा पहले या थोड़ा पीछे भोजन करना जिससे शरीर में आलस्य उत्पन्न होता है । (बंदक)

विसमिड—देवो 'विसम' (रू भे)

उ०—विसमिड कटक कौरव केरउ, देव चक्र किम काइ फेरिउ ।
नारि सडरि सर सप्रति आवइ, कइ अगास पडतां एउ भावइ ।
—सालिसुरि

विसमिल, विसमिला, विसमिल्ला, विसमिल्लाह—देवो 'विस्मिल्लाह' (रू भे)

विसमित—देवो 'विस्मित' (रू भे)

विसमो—देवो विसम' (रू भे)

उ०—१ रतनसेन साथं हुओ, विसमो विसमो ठोड । देवाथो सुलतान नै, फिरि-फिरि गढ चीत्तोड ।
—प च ची

उ०—२ चमरी जिम चल ललमीय, विसमोय विसय नी वात ।
नारीय नेह विण दीविय, जीविय बहु उपघात । —जयसेवर सूरि

विसमु—देवो 'विसम' (रू. भे)

उ०—१ देव जिहां विसमु थयु, तव नही काई बलप्राण । वली वेना सरव सार्व, जाणने निरवारिण ।
—नळारग्यान

उ०—२ गुह ऊठाडइ अरजुनु कुमरो, करणिहि सरिसउ माडइ वयरो ।
वै भाथा त्रिहु खवै वहेई, करयलि विसमु धणुहु घरेई ।
—सालिसुरि

विसमै—१ देवो 'विस्मय' (रू भे.)

उ०—१ आवी खबर अचोतिया, विसमै जैसी वत्त । तव राठोई वृक्षिपी, 'डुरगै' आसावत्त ।
—रा रू

उ०—२ मेडतिया 'मघकर' हर मेडतै सहायक, साहस कै सादूळ बस कै नायक ।
जाकी रीत को प्रमाण द्वापुर दरसावै, कहनै में

विसमै सी देखैं वन आर्व ।

—रा. रू

२ देखो 'विन्मित' (रू. भे)

उ०—रात घडी दिय गया थाळी में सेर च्यार वस्त घात, रुमाल सू ढक राजा री हजूर गयो । जाय मुजरो कियो । थाळी मुंहई आगं मेल्हो । राजा साम्हो देख विसमै रह्यो ।
—राजा भोज अर खापर चोर री वात

३ देखो 'विमम' (रू भे)

उ०—१ सांम घरम रत्ता पण सार्व, वयण दूठ मुख फूठ न वार्व । पडतो गयण ग्रहे निज पाणी, विसमै समै एक रस वारणी ।
—रा. रू

उ०—२ 'सोनागिर' चापावत हाथ खग तोलै, विसमै में द्रढ देण कोप वण बोलै । समै पाए सूर सोई वीरता विचारै, समै कै निदान आए आसमान धारै ।
—रा. रू.

विसमो—१ देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—गढ गरुड अनइ विसमो जीह तणी पाय पातालि पइठउ, परवतनइ लग, वइठउ उच्चस्तर पोलि, लोहमय कपाट, महाकाय भोगल, विजहारी तणी पडति, ।
—व स

२ देखो 'विस्मय' (रू भे.)

विसम्म, विसम्मी—देवो 'विसम' (रू भे.)

विसम्य—१ देखो 'विसम' (रू भे.)

उ०—दसा विसम्य सम्य हा अगम्य गम्य है नहीं, रसा परम्य रम्य रम्य हा हरम्य है नहीं । गवाक्ष तं अगाक्ष को कटाक्ष तं निर्गै नहीं, थिराभ चद्रसाल चद्रसाल पै थिगै नहीं ।
—ऊ का.

२ देखो 'विस्मय' (रू भे)

विसय—स पु [स. विपय] १ कोई तत्व या बात जो विचारणीय, विवेचनीय या अध्ययन करने योग्य हो ।

२ स्त्री के साथ किया जाने वाला सभोग या मैथुन ।

उ०—१ धुरतं सील फरसधर धारघो, विसय विकार विहाई । क्षत्रिय मार अवनि निक्षत्री, वाग इकीस बनाई ।
—ऊ-का

उ०—२ वैरागी विसया रस त्यागै, रागी कर आसक्ती लागै । दोई तजं सी निरदावै, सम द्रष्टि थावै ।
—श्री सुखरामजी महाराज

उ०—३ बिलार विसया लालची रे, ताहि भोजन देत । दीन हीन व्हे छुधा रत सै, राम नाम न लेत ।
—मीरा

उ०—४ परदारा सु पापियठ, भोगवइ काम भोग । विसया रस लुठउ थकउ, न वीहइ पर लोग ।
—स कु.

३ बडा प्रदेश या राज्य ।

उ०—कमनैत तीरन तानिकै पखरैत वेघत पानि कै 'बुध' तनय

हित जय प्रणय नय वय छपय रन सुम भ्रमय अतिसय विसय चय
भुव वलय विसमय प्रलयमय भय समय निरदय, उदय रवि नय-
निलय अतिरय अजय खयकर अखय जय भय उभय सय पय हृदय
अपचय कटय भट स्मय निचय हय गय मार हीन सुमार ।

—व. भा.

४ भोग-विलास व मैथुन से प्राप्त आनन्द ।

५ पचज्ञानेन्द्रियो से प्राप्त आनन्द या सुख ।

६ जगह, स्थान ।

७ वीर्य, वीज ।

८ प्रियतम या पति ।

९ सम्पत्ति ।

१० सर्प, साप ।

११ सत्तनत, वादशाहृत ।

१२ सासारिक पदार्थ ।

क्रि वि —१ लिए, प्रति ।

२ मध्य, अन्दर, मे ।

रू भे.—बिखै, बिखइ, विसई, विसिया, वखै, विख, विखय,
विखिया, विखै, विस, विसइ, विसई, विसिया, विसै ।

विसयक-वि [स विपयक] विपय का, विपय से सम्बन्धित ।

रू. भे.—विसयक ।

विसया-स. स्त्री. [स विपया] चन्दनावती नगरी के दुष्ट बुद्धिप्रधान
की कन्या का नाम ।

विसयो-स. पु [स. विपयिन्] १ कामदेव ।

२ भोग-विलास मे बहुत अधिक आसक्त व्यक्ति, कामी व्यक्ति ।

३ बहुत अधिक विपय या धन सम्पत्ति वाला व्यक्ति, धनवान ।

रू. भे.—विसई, विसइ, विसई ।

विसर-स. पु —१ अपशब्द, कट्टु शब्द, अपमान सूचक शब्द ।

उ०—असुर वोलियो विसर पतमाह मुह आगळी, राज विण खत्री
धम कवण राखे । दूसरा 'माल' वरदान तोना देऊ, अमर' मी
काड जमदाड आखे । —अमरसिधराठीड री गीत

२ अप्रशंसासूचक कविता, निन्दा सूचक या दुत्कारयुक्त कविता ।

उ०—१ सुकव आविया नजर मेळाय भटके सदा, कसर सूं चल
मछरा कराता । अदावा विसर विण लागे नह आमटी, तुरी विण
चांमटी न वहे ताता । —पीरदान आढी

उ०—२ पराणी विसर वाजे घणा ऊगरा, पेड चाले नही पेल
पूरा । रीत वळ भाडे थाका सकी रामणा, भांगणा लेऊ धुर जूप
भूरा । —हरनाथसिंह चापावत री गीत

३ एक प्रकार का विपला जन्तु विशेष ।

४ युद्ध, समर ।

५ एक प्रकार का घोडे का चारजामा ।

[स. वि. सर] ६ समूह, भुण्ड । (अ मा)

वि.—भयकर, भयावह ।

उ०—१ विहद भूपत सीत वाहर, जार दससिर समर जाहर ।
थरर लकी जिसा थाहर, विसर अबक वाज । —र ज. प्र

उ०—२ विसरि गडगडे तूर सूरुा चढे वीर रसि, अछर वरिवा
करे वित उमेखा । सामि छळ देस छळ वेस छळ सामठा, सापना
साहरै भागि सेखा ।

—सेखा दुर्जनसालीत पातावत राठीड री गीत

रू भे.—विसर, वसर, विस्वर, वीसर ।

विसरग-स पु. [स विसर्ग] १ व्याकरण के अनुसार ऊपर नीचे
अर्थात् खडे दो बिन्दुओं वाला वह वर्ण जिनका उच्चारण अर्द्ध
'ह' के समान होता है ।

२ दान ।

३ सहार, नाश ।

विसरण, विसरन-स पु [सं. विसर्जन] १ परित्याग, त्याग ।

२ दान या भेंट । (अ मा, ह नां. मा.)

३ प्रस्थान, विदा ।

४ मल का परित्याग करने की क्रिया ।

५ पूजन मे अंतिम उपचार, पोडशोपचार ।

६ सभा आदि की अंतिम कार्यवाही के बाद सभा के विसरजन
की क्रिया ।

७ उक्त के आघार पर पूजनोपरान्त देव मूर्ति का जलाशय मे
किया जाने वाला प्रवाह ।

८ विस्मरण, भूल ।

९ समूह, व्यूह । (अ मा)

वि. [स. विशरण] आश्रयहीन, अनाथ ।

विसरणी, विसरवी-क्रि अ —१ गल्ती होना ।

२ फैलना ।

उ०—एक आवाहिया देवराए, गाजि ब्रहमड घाए निहाए ।
खीजिया जोष वाहे खडग, विसरि किरि जीह वासिग नग ।

—गु रू ब.

३ कुपित होना, क्रोधयुक्त होना ।

उ०—वाही गजसिधोत विसरिअं, असुरा फुटा अफर अणी ।
मुगळा तणै पडी किर माथै, त्रिजडी तडित अकाळ तणी ।

—केसोदास गाडण

४ विस्मरण होना, भूलना ।

उ०—१ वर उपदेस करे विन पुछ्या, निगमा उगत उचरना ।

हमा होय चुगी मुक्तावळ, विसया रस बिसरमा ।

—चीसुजगमजी महाराज

उ०—२ सघण, श्रेष्ठ, वायव न मुणावी, लाखात्त प्रागळी लहेइ ।
तू बिसरिस तडया जडया तिरण डिग हुडस रज तणी घिवेइ ।

—ईमरदास वारहठ

उ०—३ हिपे घारिया खान जुवान छिबती निहग, अवर नर
बिसरं तणा अचभा । बिखम गत देन 'जमगज' खग वाहतो,
रहो रथ साह गजगाह रभा ।

—गु रू व

उ०—४ पीया निमदिन तोकु घ्याउ, उनमून ताळी लाउ, तो
बिसरथां दुज पाउ ।

—अनुभववाणी

उ०—१ माटणिया नै इवारत बोलै, वाचणिया रे दूहा रा अर-
धाव खोलै हँ । विनम्या वैट्या है । घरनै सफा बिसर रया है ।

—दसदीस

उ०—६ वरज्या मतगुर माम्य, कुमल कुकरणी करता । मट
माम पोन्ती, भाग ग्याहि बिसरंथा ।

—अग्यात

बिसरणहार, हारी (हारी), बिसरणियो - वि० ।

बिसरिओठी, बिसरियोठी, बिसरघोठी - भू० का० कु० ।

बिसरीजणी, बिसरीजयो - कर्म वा० ।

बिसरणी, बिसरवी, बीसरणी, बीसरवी, बीसरणी, बीसरवी,
बीसरणी, बीसरवी - ३० भे० ।

बिसरप-म पु [स विमर्ष] १ रंगने, फिसलने या सरकने की क्रिया ।
२ अनिष्ट फलदायक प्रारंभ कर्म ।

३ एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें एक माथ वदतसी छोटी-
छोटी फुन्सियों के साथ बुगार भी आता है, पीतला, चेचक ।
(अमरत)

बिसरभौ-वि [स वि. = रहित + शर्म = लज्जा] जिसे शर्म नहीं आती
हो, बेधर्म, लज्जाहीन ।

उ०—कामू व्हे बहु कछ्या वदे नही वदे बिसरमा । सुगुरु तणी
धरम सीग करे नही भारी करमा ।

—घ व प्र.

बिसरात-स पु—मथुरा का विश्राम घाट ।

उ०—तद प्रथीराजजो कयो, "महाराज माम छठे मथुराजो में
बिसरात घाट ऊपर होवंगी । जहा घोळा काग आवंगा ।—द दा

बिसरंम-स पु [सं विश्राम] १ सहारा, आश्रय, पनाह ।

उ०—१ सावरिया । तू भुला री वाट है, राम प्यारा रे । हारया
री बिसराम ।

—गी रा.

उ०—२ देस मालम सुतण देसल नर सघर दुह पखै निरमल,
प्रतुलबल अति कमल ऊजल वरन खट बिसराम ।

—ल. पि.

उ०—३ मछळी नै जळ कोई मिळावै, के कोयलडी नै आम । अरव

तो वंग मिळै उवां सावळ, हारया री बिसरंम ।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—४ वांह कोई ऊच न नीच है, नाम न कोई ठाम । हरीया
हेकी ब्रह्म है, सबहन के बिसराम ।

—अनुभववाणी

उ०—५ मतगुरु सोई जाणिये, कहे कहावै राम । हरीया गुर
गोविंद सा, श्रीर न की बिसराम ।

—अनुभववाणी

उ०—६ जिए अरवद ऊपर अढारह भार वनम्पती फुक रही छै ।
घणी ही चपी, चमेली, मोगरी, जुही फूल रहिया छै । फेर अडसठ
तीरथ प्राय बिसराम लियो छै ।

—डाढाळै सूर री वात

२ आराम, चैन ।

उ०—१ अर इती उस्ताद रामजी । थाने ई करणी पढेला, कोई
समाधभा आळी आवै ती के दिया—अवार लवियत ठीक की रे वै
नी, डागदर बिसराम लेवण री कयो है ।

—वरसगाठ

उ०—२ नारी बयारी काम की, सीच्या करे विराम । जनहरीया
तन मन घरे, ताहि नही बिसरंम ।

—अनुभववाणी

उ०—३ लख चौरासी जोनि में, माती मोह सकाम । हरीया ऐसै
जीव कु, कहा नही बिसराम ।

—अनुभववाणी

उ०—४ गजराज सूका सरोवर दूढता फिरे छै । सादूळा केसरी-
मिह ज्वाळानळ भगनी सू वळता घका वीका वनरा हाथिग्रा री
पेट री छाया सूता बिसराम करे छै ।

—रा सा स.

उ०—५ हा रे राज इद्र घडके हो, हा रे राज, श्री ती इंदर
घडके हो, हा हो म्हारा घडी नै, घडी रा बिसराम भवरजी इंद
घडके हो ।

—लौ गी.

३ सुख-शान्ति, आनन्द ।

उ०—१ जनहरिया है मुगति कु, नीसरणी निज नाम । चडि
चापरि सु सिवरिये, जो चाहे बिसराम ।

—अनुभववाणी

उ०—२ राम नाम कु सिवरता, पाया मन बिसराम । जनहरिया
तै नाव का, में हू सदा गुलाम ।

—अनुभववाणी

उ०—३ जै कोई चीन्है सहज कु, सहजा आतम राम । जनहरिया
सहजा भया, मन इद्री बिसराम ।

—अनुभववाणी

४ आश्रमव्यवस्था में चौथा आश्रम, सन्यासाश्रम ।

उ०—हरीया अंसा की मिळै, चित चौथै बिसरंम । ताप त्रिगुण
सुं रहत है, निज भगता निहकाम ।

—अनुभववाणी

५ अयसान, मोत, मृत्यु ।

६ कार्य-काल के बीच आराम एव जलपान हेतु मिलने वाला
अवकाश ।

उ०—फाजल ही आपरी साधना सरु करी, करणै माथै ह्यफेरी

करणी पैलाई । पाव-सात विरिया, छुट्टी विसराम रै बलत, करणी
नै जमी पर सूँवो सुबाँधी, ऊपर चादर उढाई तथा मितर पढायी ।
—दसदोख

७ ठहरने का स्थान, विश्रामस्थल ।

उ०—१ हरिया हसी जीव है, सुन्य सागर विसराम । सुरति हमारी
सीपडी, निज कण मोती नाम । —अनुभववाणी

उ०—२ जळ जाई जळ ऊपनी, जळ तेरा विसराम । हरीया जग
लं जावसी, वंग सिवरियं राम । —अनुभववाणी

उ०—३ झूठा खाणा बकणा, ए जमपुर का काम । हरिया
सुवचन साच का, विसनपरा विसराम । —अनुभववाणी

उ०—४ हरि वसती हरि वन है, हरि हैं ठामो ठाम । हरिया हरि
हिरदं गया, ताहि नही विसराम । —अनुभववाणी

८ ठहराव ।

उ०—१ सहजा सुख दे वस्य किया, मन मोहादिक काम । जनहरिया
गोरख जती, सहज किया विसराम । —अनुभववाणी

उ०—२ राम राम रसना लिया, मास दोय विसराम । हरिया
हिरदं कठ रें, सागर वरस मुकाम । —अनुभववाणी

उ०—३ गामा दाम उग्राहर्ज, कं मारीजं ग्राम । डेरा दीघा रांगपुर
निस कीघा विसराम । —रा. रू.

उ०—४ म्हने वडो अचूंभो आवती ही कं बबोई जिसो मोटो
नगरी मे जठे कं आभा सू वाता करता मेल माळिया ऊभा हा
पण दो मिनटा नै विसराम करण जोग छ हाथ जमीन मिलणी
कठण व्हैगी ही । —रातवासी

क्रि प्र —करणी, पाणी, मिलणी, लैणी ।

६ अघ्याय, प्रकाश ।

१० वाक्य के अत मे लगाई जाने वाली विन्दु या लकी रेखा ।

११ छन्द शास्त्रानुसार कविता, पद्य आदि के चरणो मे वह स्थान
जहा पढते समय लय ठीक रखने हेतु थोडा विराम या ठहराव
किया जाता है, यति ।

उ०—१ दस दस पर विसराम चव, मत च.ळीस हुवत । गुरु
लघु अखिर नियम नहि, उदत छद अखत । —र. ज. प्र

उ०—२ कळ दस घुर फिर आठ सकाम, मळ लुक विखम दोय
विसराम । सम अठ अत रगण जोकार, चतुर गीत लैहचाळ उचार ।
—र. ज. प्र.

उ०—३ छै निसाणी छद रं, मत तेवीस मुकाम । माळ भ्रेक लुक
अदस दस, वदे दोय विसराम । —र. ज. प्र

रू. भे.—विसराम, विश्राम, विज्ञाण, विस्सराम, विस्साम, वीसाम,
वीसामड ।

मह —विसरामी, विस्सरामी, वीसामी ।

अल्पा.—विसरामी, विसरामी, विस्सरामी ।

विसरामणो—वि —१ विश्राम करने वाला ।

२ विश्राम देने वाला ।

३ सहारा देने वाला, सहायक ।

रू. भे.—विसरावणी ।

विसरामणो, विसरामणो—क्रि अ [स. विध्यमण] १ आराम लेना,
विश्राम लेना ।

२ मरना, अवमान होना ।

उ०—१ सुनिभरस सभारसदन घणा, कपणां तणो विरामियो ।
कर भू पर कीरत करममी, रायसिध विसरामियो । —नैणमी

उ०—२ यु मरता राव सूजोजी फितरं हेकं दिनं विसरामियो ।
ताहरां टीकं री तयारी हुई । ताहरा इया ठाफूरां वीरमदे नू पकड
बाह अर गड सू हेठो उतारियो, नै गागं नू टीकी दियो
—नैणसी

उ०—३ लाटी देसवटं फिरं छं । फूल री चोयो दसा हुनी । तं
वासतं लापेजो प्रा वात कही हुनी, फूलजो री मोनूं मत कोई
सुणाया । सु फूलजो विसरामियो । लासं नू कोई कहै नही ।
—सासं फूलाणी री बात

३ युद्ध मे वीरगति प्राप्त होना ।

उ०—१ रण सारग विसरामियो, नह वूडो नमियोह । गोल तणो
कहियो गुणो, सपूरण समियोह । —पा प्र

उ०—२ आहुई वडो राठीह विसरामियो, तज गया दूसरा न
सायत टेक । हसत नित वरीसण न को इळ रापहर, हसत बघ
कवि नही जगत मे हेक । —द बा.

४ ठहरना, रुकना ।

५ सहारा देना, आश्रय देना ।

विसरामणहार, हारो (हारी), विसरामणियो—वि० ।

विसरामिओडो, विसरामियोडो, विसराम्योडो—भू० का० कृ० ।

विसरामीजणो, विसरामीजवो—भाव वा० ।

वसरामणी, वसरामवो, विसरामणो, विसरामवो, वसरामणी,

वसरामवो, विस्रामणी, विस्रामवो, वीसामणो, वीसामवो

—रू० भे० ।

विसरामियोडो—भू का. कृ —१ आराम लिया हुआ, विश्राम लिया

हुआ. २ मरा हुआ, अवसान हुवा हुआ. ३ रुका हुआ, ठहरा

हुआ. ४ सहारा दिया हुआ, आश्रय दिया हुआ ५ युद्धक्षेत्र

मे वीरगति प्राप्त हुवा हुआ ।

(स्थी. विसरामियोडो)

विसरांमी-वि — १ विश्राम करने वाला ।

उ०—सुखदाइ सीतल स्वामी रे, प्रभु सुमता रस विसरांमी रे ।
उपकारी गुण अभिरामी रे, नमिर्व एह नै सिर नामी रे ।

—घ व प्र.

२ विश्राम देने वाला ।

३ देखो 'विसराम' (अल्पा, रू भे.)

रू भे.—विसरामी, विस्रामी ।

विसरामी—देखो 'विसरांम' (मह, रू भे)

उ०—उत्तिम सिवरन हिरद सयानु, माहीमाहि भया घर घ्यानु ।
रसना लीया राम का नामा, उर भीतरि पाया विसरामा ।

—अनुभववाणी

उ०—२ दुख पाळ छु आप, पापा रे परताप । ती तू जाणदै ए,
विसरांमी खाणदै ए ।

—जयवाणी

विसराडणी, विसराडवो—देखो 'विसराणी, विसराणी' (रू भे)

विसराडणहार, हारो (हारी), विसराडणियो—वि० ।

विसराडियोडी, विसराडियोडी, विसराडयोडी—भू० का० कृ० ।

विसराडोजणी, विसराडोजवो—कर्म वा० ।

विसराडियोडी—देखो 'विसरायोडी' (रू भे)

(स्त्री विसराडियोडी)

विसरायाण—स पु —दान । (अ मा)

विसराणी, विसरावो—क्रि.स.—१ विस्मरण करना, भूलना ।

उ०—१ सीख सुनत ही सुधि भई, तन आपी विसराय । जन-
हरिया मन गरक हुय, तरक फरक नही थाय । —अनुभववाणी

उ०—२ वेटे वाप विसराया, भाई वीसारेह । सूरु पूरा गल्लडी,
चारण चीतारेह ।

—रा. सा स.

उ०—३ वीठू कवल न चूवज, लगी जीव के लार । विसराई
नही वीसर, केवल प्राण अघार । —कुंवरसी साखला री वारता
२ गलती करना ।

३ त्यागना, छोडना ।

विसराणहार, हारो (हारी), विसराणियो—वि० ।'

विसरायोडो—भू० का० कृ० ।

विसराईजणो, विसराईजवो—भाव वा० ।

विसरामणो, विसरामवो, विसराडणी, विसराडवो, विसराणी,
विसरावो, विसरावणी विसराववो, वीसराणो, वीसरावो, वीस-
रावणो, वीसराववो, वीसराणो, वीसरावो, वीसरावणो, वीसराववो
विसराडणो, विसराडवो, विसरावणो, विसराववो, विसराहणी,
विसराहवो, वीसराणो, वीसरावो, वीसरावणो, वीसराववो

—रू० भे० ।

विसरायण—स. पु —दान । (अ मा.)

विसरायोडो—भू का कृ—१ विस्मरण किया हुआ, भूला हुआ.

२ गलती की हुई, त्याग हुआ, छोडा हुआ ।

(स्त्री विसरायोडी)

विसरारण—देखो 'विसरायण' (रू भे.) (ह ना मा)

विसराळ, विसराळी विसराळी—वि. [स. विप+रा. प्र. राळी] १

विपला, जहरीला ।

२ क्रोधी, क्रोधयुक्त ।

३ रसहीन, कडवा, नीरस ।

४ जोशपूर्ण, जोशयुक्त, जोशीला ।

उ०—नीधसिया विसराळ न घोख, दळ पड घोके तीरमदाज ।

भटका वह सामुहा भोके, रोके कुण एकल गिड राज ।

—महादान मेहडू

५ भयकर, भयावह ।

उ०—विसराळ त्रंवाळ घुरै रवि वीहस, लाह आखेट लकाळ ।

अजेरा जेरण घेर असगा, फेर दुहाई फाळ । —मा धचनिका

६ निन्दाजनक काव्य की रचनाएँ करने वाला ।

७ कर्णकट्ट कडवा ।

उ०—वामक विसराळाह, मुणिया थै मामी मनै । वै धाघळ वालाह,

केवा में सह काडिया ।

—पा. प्र

स. पु — निन्दायुक्त कविता ।

रू. भे —विसराळ, वसराळ, विस्राळ, विस्राल, विस्राळी, विस्राली,

विसाळी, विस्राली ।

विसरावणो—देखो 'विसरामणो' (रू भे)

विसरावणो, विसराववो—देखो 'विसराणी, विसरावो' (रू भे)

उ०—१ पुसपो री माळा पहराया, जनम मरण मेटे विन जाप ।

विध विध रा भोजन विसरावे, वधवो जाय खाय मा-वाप ।

—भगतमाळ

उ०—२ गाव में ही पीर, गाव मे ही सासरो । फूटरी आवे-जावे

अर आणद सू ओपे है । कुसोभ्या री काम नी, आछो नाव-नामून

कर रायी है । सासू सुसरो सरावे, वास रा माणस वडाई करै ।

कोई ही विसरावे नही सगळा सोभ्या करै । —दसदोख

उ०—३ सुणी वात सुविहाण, पूछ खुरसाण अप्रवळ । दरद जीव मो

दहे, करद जिम सहे विना कळ । असपत्ती ऊचरे, वेध छत्री विसरावो।

छडि हेस महि छोड, भेख ग्रहि मक्के जावो । —रा रू.

उ०—४ मारो मार मचाया मनवो, आप श्रेक घर आवे । श्रेक

ठोड प्राया सू अनुभव, बस सुध बुध विसरावे । —ऊ. का.

विसरावणहार हारो (हारो), विसरावणियो—वि० ।
विराधियोडी, विसराधियोडी, विसराधियोडी—भू० का० कृ० ।
विसरावीजणो, विसरावीजवो—भाव वा० ।

विसराधियोडी—देखो 'विसरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विसराधियोडी)

विसराहणो, विसराहवो—देखो 'विसराहो, विसरावो' (रू. भे.)

विसराहणहार, हारो (हारो), विसराहणियो—वि० ।

विसराहियोडी विसराहियोडी विसराहियोडी—भू० का० कृ० ।

विसराहीजणो, विसराहीजवो—कर्म वा० ।

विसराहियोडी—देखो 'विसरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विसराहियोडी)

विसरियोडी—भू. का. कृ. —१ गलती हुवा हुमा २ कुपित हुवा हुमा,
कोधयुक्त हुवा हुमा ३ फेला हुमा ४ विस्मरण हुवा हुमा,
भूला हुमा ।

(स्त्री. विसरियोडी)

विसलूमो—स पु. —एक प्रकार का हिंदवाना से मिलता-जुलता कडवा
फल । (क्षेखावाटी)

विसल्या—स पु. [स विशल्या] १ रामानुज लक्ष्मण की पत्नी ।

२ एक नदी जो वरुण की सभा मे रह कर वरुण की उपासना
करती थी ।

३ एक औषधि का नाम जो शरीर मे लगे वाणो को निकालने के
लिए लगाई जाती है ।

विसय—स पु. [स. विश्व] १ पृथ्वी, धरती, भूमि ।

(अ. मा., ना मा.)

२ स्वभाव, आदत, प्रकृति । (ह ना. मा.)

३ देखो 'विस्व' (रू. भे.)

उ०—१ विसतरी बात मारी विसव, अणकारी उतपात सी । अज-
भेर कान 'अवरग' नै, सुण लग्गी अत घात सी । —रा. रू.

उ०—२ पातसाह दक्षण रहै, जाळ धर महाराज । विसव अवर
जवना वसू, फरे सकी मिल काज । —रा. रू.

उ०—३ धू ग्रह घास वालपण घारै, साई त्या ततकाळ सभारै । औ
पतसाह तिसी अर्थाई, विसव अनीत जीत वरताई । —रा. रू.

उ०—४ निरख छठे रिपु ग्रह ससिनदण, कुळ मातुळ सुख अरी-
निकदण । राजभवन सुरगुर सुभ राजै, विसव एक छत्र आण
विराजै । —रा. रू.

उ०—५ आळस वाळी मगणा, उर मगणा उदार । बक उदारों
विसव भै, बाळो जस विसतार । —वा. दा.

उ०—६ तूं करता तु भोगता, रहै अकिरिता राम । विसव घडे
भाजै विसव, विसव तणो विसराम । —पी. प्र.

विसवकसेन—देखो 'विस्वकसेन' (रू. भे.)

विसवक्रमा—देखो 'विस्वकरमा' (रू. भे.) (अ. मा.)

विसवजून, विसवजोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

विसवतरेखा—स स्त्री [सं. विपुवरेखा] पृथ्वी के ठीक मध्य मे पूर्व या
पश्चिम की ओर चारो ओर मानी जाने वाली एक कल्पित रेखा ।
(भूगोल, ज्योतिष)

रू. भे.—विसुवरेखा ।

विसवनाथ—देखो 'विस्वनाथ' (रू. भे.)

उ०—१ भिरजो पंठो डेरा माहै, सुज कर अरज घणा पग साहै ।
वाधे तेज नोवता वाजै, विसवनाथ निज तखत विराजै । —रा. रू.

उ०—२ वीठुल विसवनाथ घन जदपत्त केसव सीवर, नारायण
नरसिंघ दमोदर गिरधर नरहर । अविगत आदि जुगाद उपावण
अकळ अपपर, समरि जगदीस भगत साधार प्रमेसरं । —पिं. प्र.

विसवयोनि—देखो 'विस्वयोनि' (रू. भे.)

विसवाद्—स पु. [स. विपवाद] ७२ कलाओ मे से एक ।

२ देखो 'विषयाद्' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि कारनै, सी परमारथ स्वाद । आय सुवारथ
हरि विना, सी स्वारथ विसवाद । —अनुभववाणी

उ०—२ दादा दादा जग जस वादा, मोह्या सह नर भादा राज ।
टलइ अल्हादा सह विसवादा कुसल कुसल परसादा । —घ. व. प्र.

उ०—३ दुसम काल तरणै परभावै, हुइ माहो मा विसवाद जी ।
तो परिण तुरत खमावी लीजइ, पडित गुरु परसाद जी । —स. कु.

उ०—४ विकथा चार कीधी बलि, सेव्या पच प्रमाद । इस्त
वियोग पढ्या किया, रोदन विसवाद । —स. कु.

विसवावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—तन मन सौंज सवार सब, राखै विसवावीस । सी साहिब
सुमिरै नही, दादू मान हवीस । —दादूवाणी

विसवामत्र, विसवामित, विसवामितर, विसवामिति, विसवामित्र, विसवा-
मित्रि—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)

उ०—१ किसन रौ सुरै दरसण कियो, कर जोडै कीरति कहै ।
करतार काजि दसरथ कह्यो, विसवामिति आया वहै । —पी. प्र.

उ०—२ विसवामित्रि कारणै, प्रभु चडियो जिगि पालण । जा
मारै ता मुगति, आज ताहका उधारण । —पी. प्र.

विसवावीस—अव्यय —१ निश्चय ही, अवश्य ही, जरूर ।

उ०—सूर लडै जव कष सिर, कर्मव लडै विण सीस । हरिया सूर
कमष विच, विवरी विसवावीस । —अनुभववाणी

उ०—२ चलणा है, रहणा नही, चलणा विसवावीस । अंस सहज
सुहाग पर, कुंण गु थावै सीस । —अग्यात

उ०—३ रीक छडिवा तोज री, पदमण वचन प्रमाण । आस्या
विसवावीस में, सिव सगत री आण । —पना
२ सत्य, ठीक ।

उ०—१ ग्राह पकडै खाच गाढी, सलल फिरगी सीस । तज गरुड
गजराज तारै, वात विसवावीस । ती जगदीस जी जगदीस, जन
काज दोडणा जगदीस । —भगतमाळ

उ०—२ राजा अति आतुर थयो, तेहनै कीधी रीस । उत्तम तिहा
किए आविनै, वोलै विसवावीस । —वि कु
३ निस्सन्देह ।

उ०—कहियो न्यप कारिज सिध कीजै, दत वर भूक पदमणी
दीजै । वदं सिद्ध न्यप विसवावीसां, पदमण आणू दीह पचीसा ।
—सू प्र

४ निश्चयपूर्वक, यकीनन ।

वि. वि —किसी बात के औचित्य को मान लेने के लिये जिस
प्रकार यह कहा जाता है कि "यह बात सोलह आने खरी है ।"
या यह शत-प्रतिशत सही है । "वीस-विसवा" ठीक इन्ही अर्थों में
बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त होता है । कभी-कभी वीस विसवा
के स्थान पर 'सौ विसवा' भी बोला जाता है । पर दोनों का
आशय एक ही है ।

५ पूर्णरूप से ।

उ०—सेठ तणै मन माहि उदधि मा कुमरी वसै निसदीस, त्रिह
विलूधौ रे विसवावीस । नलिनो देखि भमर जिम अटकै, तिम तसु
मिलण जगीस । —वि. कु

रू भे —विसवावीस, विस्वावीस बीसवसा, बीसविसवा, बीस-
विस्वा, बीसवावीस, बीसविसा, बीसावीस, बीसावीस, बीसुवसा,
विसवावीस, विसवावीस, विसवाहीवीस, विसव्वावीस, विसहवीस,
बीसविसवा, बीसविसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा ।

विसवावीसद्द—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—पटणी पारिख सूरजी सघ सु, जात्र करी लाभ सुजगीसद्द ।
समयसु दर कहइ साचठ मइ जाण्यठ, बीतराग देव विदा विसवा-
वीसद्द । —स कु

विसवास—देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

उ०—१ जा जीती सारो सगत, त्या सब भाई रास । भाग जिन्हा
दा जाणियै, जै राखै विसवास । —गजउद्धार

उ०—२ अंसै नर अस्त्री भयो, अग सिध की मोह । हेत विसवास
न होत है, वाता करत विमोह ।

—कल्याणसिंह नगराजोत वाडेल री वात

उ०—३ स्याणप सूं सोदी पटायो, बेटे री वाप नाव-नामून मे
आयो । डार्ग री विसवास जम्घो अर दायजै टीक री मोल माण्यो
न धम्घो । सर्ग-सर्ग री रळग्यो जी मीठा हुया ज्यू सककर घो ।

—दसदोख

उ०—४ मा'रजा नै आपरो मितर वता-वता मार नारयो । पण
श्रोजू वात री विसवास करे साच कूड री वेरो पट जावै ती
किसी नदलाल नै माडी बता देवे । —दसदोख

उ०—५ लाधूराम राजदरवार री इती वडी निघडक चौधरी
होवता थका भी भूत-पलीत, डोरा-डाडा, देई-देवता अर डाकण-
स्यारी नै वदे ही कूड नी बतावै । आधो विसवास राखती थकी
हिहदे मूं मानती रै'वै । —दसदोख

उ०—६ पूरणदस प्रामिया, जनम होसी जोषाहर । वर्षे वस
विसवास, आस तै ज्यास मुरद्धर । —रा. रू.

उ०—७ सुत 'गोयद' घाण्ड सकज, दुक्ल विहारीदास । राजा
निज पुर रक्खियो, वचन जिके विसवास । —रा. रू

विसवासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे.)

विसवासणो, विसवासवी—देखो 'विस्वासणो, विस्वासवी' (रू. भे.)

विसवासणहार, हारो (हारी), विसवासणियो—वि० ।

विसवासिओडो, विसवासियोडो, विसवास्योडो—भू० का० कु० ।

विसवासोजणो, विसवासोजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

विसवासिआ—स स्त्री—आर्था या गाहा छद का एक भेद विशेष
जिसके चारो चरणो मे मिलाकर ६ गुरु और ३६ लघु वर्ण सहित
५७ मात्राएँ हो ।

विसवासियोडो—देखो 'विस्वासियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विसवासियोडो)

विसवासी—स पु [स. विश्वाची] एक प्रकार का वात रोग विशेष
जिममे कवे से लेकर अगुलियो तक सारा ही हाथ न तो सिकोडा
जा सकता है और न ही फैलाया जा सकता है । (अमरत)

२ देखो 'विस्वासी' (रू. भे.)

उ०—अध विसवासी मिनख, हरेक आदमी री कैयोडी वात नै
साची मानण खातर ही वण्यो है । नटणै खातर हरगिज नही ।
चावै कोई अफड करो तथा जाळ । —दसदोख

विसवाहीवीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—दिल अतर एह विचारी दसरथ, घर पदवी जुवराज सधीर ।
सो दैणी विसवाहीवीसै, राज जोग दीसै रघुवीर । —रू

विसवि—देखो 'विस्व' (रू. भे.)

३०—१ वीठुल बरदाई बड़ी बढाई, विसवि सपाई व्रजवासी ।
भेरभिर ग्रामी सुर नर सामी, अतरजामी अविणासी । —पि. ग्र.

३०—२ बडा ही बडा आचार दीर्घ विसवि, वहे सबळा खळा
खेनि बागै । जग हथै बघियै 'गजण' रौ जंत-हृष, जग हथा बघपण
विरद जागै । —केसोदास गाढण

विसवेस—देखो 'विस्वेस' (रू. भे.)

३०—स्त्रीघर स्त्रीरग सियावर स्त्रीपत, करणाकर कारण-करण ।
व्रज नायक विसवेस विसभर, घणनामी आणदघण । —र. ज प्र

विसवी—स पु —१ जमीन को नापने का एक नाप विशेष जो एक
एकड़ के पचासवें भाग के बराबर होता है ।

३०—चारवें कोई अफड करो तथा जाळ । बीरें वास्तं तो वीधै
भूत भर विसवै साप हाळी कैवत साची है । खेजडी-खेजडी गोगा
अर खेतपाळ खडया दीसै । —दसदोख

२ अगुली की गाठ या जोड जहा से वह मुड सकती है ।

३ अगुली के जोड के स्थान पर पडी रेखा ।

४ पूर्णता के माप का निश्चित अंश ।

३०—हिवै वीरमजो जाय जोइयै रह्यो, जोइयां घणी आदर दियो,
घणा हीडा क्रिया कही वीरमजो विखै मे आया छै, बेखरच
छै । ताहरा दाण माहे विसवी कर दियो । —नैणसी

५ अन्न पदार्थ आदि यत्किंचित् ।

६ पिंगल प्रकाश के अनुसार एक वर्णिक छन्द विशेष जिसके
प्रत्येक चरण मे प्रथम नगण फिर सगण फिर यगण होता है ।

७ सार्वजनिक पशु (आकल) के लिए गेहू आदि की हरी फसल मे
से लाया गया चारा जो कि प्रत्येक दिन अलग २ कुए से लाया
जाता है ।

रू. भे.—विस्वी, विसोवा, विसोवा, विस्वी ।

विसव्वावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

३०—घन सूरतन घन अडप, घन राठीडा ईस । सुणि सुरताण
कवूल की, बात विसव्वावीस । —गु. रू. व

विससन—स. पु [स विशसन] एक नरक का नाम ।

विसहर—स पु [स विपघर] सर्प, साप ।

३०—१ तन बवही मन विसहर माही, डस्य डस्य जाहि सकळ
जुग ताही । विसम लहरि ऊठै अग अगा, ता तै होय सकळ जुग
भगा । —अनुभववाणी

३०—२ मैली अत अदतार मन, रुष जस तणी रहै न । तन
काळी विसहर तणी, कचुक सेत सहै न । —बा. दा.

३०—३ सज्जण चाल्या हे सखी, वाज्या विरह निसाण । पालखी
विसहर भई, मंदिर भयउ मसाण । —ढो. मा.

३०—४ भूल मत्र जाणुं कुछ नाही, विसहर ले भेलें गल माही ।
जैसा फुनि गति सी है माया, जै न्याया तै वहीडि न आया ।

—ह. पु. वां

वि. [स] विप के प्रभाव को दूर करने वाला, विप के प्रभाव को
हरण करने वाला ।

रू. भे.—विखहर, विसहर, विपखहर, विमहरि ।

विसहरतिय, विसहरतिथि—स स्त्री —नागपचमी ।

रू. भे.—विसहरतिय, विसहरतिथि ।

विसहरा—स. स्त्री. [स विपहरा] मनसा देवी का नामान्तर ।

विसहरि—देखो 'विसहर' (रू. भे.)

३०—सब जीव भुवगम कूप में, साधू काढे आइ । दाडू विसहरि
विस भरै, फिर ताही को खाइ । —दादूवाणी

विसहरी—स स्त्री. [स विपहरा] मनसादेवी का नामान्तर ।

विसहविसा, विसहवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसाई—देखो 'विस्नाति' (रू. भे.)

३०—अक पेड रै तळै विसाई ली । गगली लकडिया चुग लायो
डोकरी रोटिया पोवण लागी । —वरसगाठ

विसागणा, विसागना—स स्त्री. [स. विप+अगना] १ विपकन्या ।

२ नाग कन्या ।

विसाण—सं पु. [स. विपाण] १ हाथी दात ।

२ पशु का शींग ।

३ सूअर का दात ।

रू. भे.—विसाण, विखाण, विसान ।

विसाणण, विसाणन—स. पु. [स विप+अनन] सर्प, साप ।

विसाणिन—स पु [स. विपाणिन्] एक जातिसमूह, जो दाशराज युद्ध
मे सदासराजा के पक्ष में था ।

विसाणी—देखो 'विस्नाति' (रू. भे.)

विसाणी—स पु [स विपाण] विवाह के लिए खरीदा गया हाथीदात
का चूडा ।

३०—सोमसी साखलें सारी सभाई कीधी । वरी विसाणी रावजी
लेनै आया गोधूलक समे परणिया । रातिवासै पोडिया । प्रभातै
सुखपाल मे बैसाण नै गढ जालौर ले आया ।

—वीरमदै सोनिगरा री बात

रू. भे.—विसाणी ।

विसातक—वि [स विप+अतक] १ विप को नष्ट करने वाला, विप
के प्रभाव को दूर हटाने वाला ।

स. पु — शिव, महादेव ।

विसानो—स स्त्री.—शरपुंखा ।

रू भे — विसानो, विसूनी विहाणी, विहानी, विहूणी, विहूणी, विहूनी ।

विसाइत — देखो 'विसात' (रू भे)

उ०—प्रथम तो द्रव्य हुवे ती देवं, म्हारें घर में पाच लाख री विसाइत छें गढ गिरनार री वणी तियें रें पाच लाख री माया तो वीजा राजा रें कठा द्रव्य ? —सयणी री बात

विसाइति, विसाइती—१ देखो 'विसाती' (रू. भे)

२ देखो 'विसाती'

विसाऊ—वि.—खरीदने वाला, भेता, खरीददार ।

उ०—१ कुण खत्री कुण ब्राह्मणा, चत्र वेद चवदा । विणज विसाऊ कुण वेस, कुण सुद्र कहदा । —केसोदास गाडण

उ०—२ महि माती मंगळा, विडग ताता कारवाना । किसतूगी कुमकुमा, भतर गाधिया दुकाना । केसर चनण कपूर, भ्रग भ्ररगचा भ्रबीरा भ्रौर विहद भ्रेवास, सुगध चील पर समीरा । वादळा तास थिरमा वसत्र, बासता ऊच वजाज रा । विसाऊ 'सेर' महंगी बुसत, गी गाठिक सोदागरा । —पहाडवा आढी

विसाख—स पु [सं विशाख] १ स्वामीकार्तिकेय ।

(भ्र मा , ना. मा , ह ना मा)

२ शिव, महादेव ।

३ इद्र-सभा का एक महर्षि ।

४ स्वामी कार्तिकेय का छोटा भाई ।

५ आयु राजा का एक पुत्र, एक राजा ।

विसाखा—स. पु [सं विशाखा] सत्ताईस नक्षत्रो भे से सोलहदा नक्षत्र, जिसमें चार तारे होते हैं ।

उ०—१ नखत विसाखा तिथी चवहस, घडी च्यार पळ वीस गया निस । मिथुन लगन सोभन मिळ जागें, सकुन करण दुख हरण सजोगें । —रा रू.

उ०—२ तदि निसा च्यार घटिका वितोम, ऊपरा वळें पळ सताईस । वणि नखित्र, विसाखा जेणि वार, 'भ्रभमाल' जनम लीधो उदार । —सू प्र

रू. भे.—विसाख, विसाखा ।

विसाग—देखो 'विसाद' (रू. भे)

उ०—विहू रघु लकखण पुत्र बुलाय, सभें जग विस्वामित्र सहाय । जनक तणो वळि जोयो ज्याग, मार्गं धनुख कट्टण सीय विसाग ।

—ह र.

विसाइणी, विसाइवी—देखो 'विसाणी, विसावी' (रू. भे.)

विसाडणहार, हारो (हारी), विसाडणियो—वि० ।

विसाडिप्रोडो, विसाडियोडो, विसाडचोडो—भू० का० कृ० ।

विसाडीजणो, विसाडीजवो—कर्म वा० ।

विसाडियोडो—देखो 'विसायोडो' (रू. भे)

(स्त्री विसाडियोडी)

विसाजुद्ध, विसाजुघ—देखो 'विसायुद्ध' (रू. भे.)

विसाणो, विसावो—क्रि स.—१ छितराना, फँलाना, बिखेरना ।

२ खरीदना, मोल लेना ।

उ०—१ काच कथीर विसाय कर, कोई कनक घडावें ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ खुरासाण उत्पन्न, सोभ ऐराक विसाया । कर दरियावा पथ, जिकें नावा सिर आया । —रा. रू.

उ०—३ काछी करह बिर्युभिया, घडियठ जोइण जाइ । हरणाखी जउ हसि कहइ, आणिसि एधि विसाइ । —ढो मा.

३ निवास कराना, ठहराना ।

उ०—छाडि गयो भ्रव कहा विसासी, प्रेम की बाती बराय । बिरह समुद्र मे छाडि गयो पिव, नेहकी नाव चलाय । —मीरा

४ वेचना, विक्री करना ।

उ०—१ तठा उपरात करि राजान सिलामति तिण सहिर माहे छत्रोस पवन जाति रहै छै । तिण सहिर माहे बाजार चौहटा मडिया छै । सोना रूपा जवहर जडाव कपडा पटकूल रसम पस-मरा वाव भाति भाति विसाईजें छै । —रा सा सं

उ०—२ किरचा फाक्या री कोथळी, बीडी सिगरेटा री डवी भ्रर वेटरी, वाजा री पेटी रासभिया रें पेटा माथें लटकाया खोड में विसायत खानी सो विसाया फिरें है । —वसदोख

५ स्थापित करना ।

विसाणहार, हारो (हारी), विसाणियो—वि० ।

विसायोडो—भू० का० कृ० ।

विसाईजणो, विसाईजवो—कर्म वा० ।

विसाणो, विसावो, विसाहणो, विसाहवी, विसाडणी, विसाडवी, विसावणी, विसाववो, विसाहणो, विसाहवी—रू० भे० ।

विसात—१ देखो 'विसात' (रू. भे.)

उ०—भावेभ्रेक देस में रावजी री भ्रमल छै । थाणा सू हमेसा राडा हुवे छै । जिणा दिना वीरमदै दूदावत सू मेडती छूटो सू विसात थका राव कल्याणमलजी कना भायो सू आ वात इण तरह छै ।

—द दा

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाति, विसाती-स. पु —१ व्यापार करने वाला व्यापारी ।

उ०—'सूज' हर मिळीं अघियामरणा साज सू, जैतखम आज री किला जेरें । वारणा लियण हेरें नह विसाती, हैथडा हूकळा खळा हेरें ।
—उम्मेदसिघ सीसोदिया री गीत

२ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

विसाद-स पु [स विपाद] १ दुःख, शोक ।

उ०—तुरत देय अम्रत कळस, मेट्यो सत्रु विसाद । इसी उदार विक्रम अंपति, सुणी भोज सवाद । —सिधासण वत्तीसी

२ निराश या हताश होने की अवस्था या भाव ।

३ दुर्बलता, कमजोरी ।

४ मूर्खता, अज्ञानता ।

५ उपायो के अभाव में पुरुषार्थहीनता ।

रू. भे.—विखाद, विसाद, विखाद, विसाग ।

विसावी-वि. [स विपादिन्] जिसे विपाद हो, विपादयुक्त, विपादग्रस्त ।

रू. भे.—विखादी ।

विसावीस—देखो 'विस्वावीस' (रू. भे.)

विसायत-स. पु.—१ देखो 'विसाती'

२ देखो 'विसात' (रू. भे.)

उ०—१ सो रावजी रें नानाएँ दिसा सौं साख हुती, सु रावजी जुहार कहायो । त्या सौरावजी नै भीतर बोलाया निछरावळा कीधी । अर कहायो—बाबा ! रिजक, विसायत दीसैं छैं सु थाहरी छैं । भोजन करो । —नैणसी

उ०—२ राम सरीखा नाब न कळि में, गाया पातिग जात । पूरी एक विसायत पाई, छूटै कबुयन खात । —अनुभववाणी

उ०—३ साह रें एक वेटी हुती । तठैं ओ आदमी आयी हुती, तिकी ठकुरें रें माळियें विसायत देख राजी हुवी । इयें मन माहै विचारी, जु साह ती वडी साह दीसैं छैं ।

—ठकुरें साह री बात

३ देखो 'विछायत' (रू. भे.)

उ०—१ तठा उपरायत पाछलें पोहर री ढळती छाया री विसायत कीजें छैं । देसौत सिरदार जाजलमा पघारें छैं । केस सुनारें छैं ।

—रा सा. स.

उ०—२ चौरगा री खाटखड हुयनै रही छैं । कटोरा माहै फूल लीजें छैं । बाकरा होसनाका वसू कीजें छैं । देसौत रवा घोय हाथ ऊजळा कर विसायता ऊपर विराजमान हुवा छैं । —रा. सा. स.

विसायति, विसायती—१ देखो 'विसाती' (रू. भे.)

२ देखो 'विसाती'

विसायुद्ध, विसायुध-स. पु [स विपायुद्ध] १ सर्प, साप ।

२ विप मे बुझाया हुआ अस्त्र ।

वि —विप मे बुझाया हुआ, विपैला ।

रू. भे.—विखाजुद्ध, विखाजुध, विखायुद्ध, विखायुध, विखाजुद्ध, विखाजुध ।

विसायोडो-भू. का. कृ —१ छितराया हुआ, फैलाया हुआ, विखेरा हुआ २ खरीदा हुआ, मोल लिया हुआ । ३ निवास कराया हुआ, ठहराया हुआ ४ विक्री किया हुआ, बेचा हुआ. ५ स्थापित किया हुआ ।

(स्त्री. विसायोडी)

विसार-स. स्त्री [स] १ मछली । (अ मा, ह नां मा.)

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

विसारण, विसारणी-वि (स्त्री. विसारणी) विस्मरण कराने वाला, भुलाने वाला ।

रू. भे.—वीसारण, वीसारणी ।

विसारणी, विसारणी-क्रि. स —१ विस्मरण करना, भुलना ।

उ०—१ सो सपूत जै पीछी रासैं, टुरज्ज न हीण कदै ना भाखें । वैरा तिरणा विसारें वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा ।

—ढाढाळें सूर री बात

उ०—२ थै ती नाभि नरिंद कुल चदा, राजि थानह सेवै सुर नर इदा । थारी ध्यान हिया विच घारूँ, राजि थानह निसि दिन कही न विसारू । —वि कु

उ०—३ ढोला, ढोली हर किया, मूक्या मनह विसारि । सदेसव नह पाठवइ, जीवा किसइ अघारि । —ढो. मा

उ०—४ भाम गाम धाम ठाम ठहाम नकू भ्राम, तमाम निहार साम लें अराम ताम । दाम दाम विसार निकाम भौड हूँ उदाम, नरा जाम जाम में उचार राम नाम । —र ज. प्र

२ परित्याग करना, त्यागना ।

३ गलती करना ।

४ आरम्भ करना, शुरू करना ।

उ०—सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी अपारा, विवध भूत वेताळ वीर पळचर विसतारा । गिरध चील गोमायु विरक जबू रसवाया, काक कक की गिर्यें आस पळ सभळ आया । अछरा लगर धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियो । महि गयण सग खेळा मिळें, आगम जंग विसारियो । —रा. रू.

विसारणहार, हारी (हारी), विसारणियो—वि० ।

विसारिओडो, विसारियोडो, विसारयोडो—भू० का० कृ० ।

विसारीजणो, विसारीजवो—कर्म वा० ।

वइसारणो, वइसारवो, विसारणो, विसारवो, बीसारणो, बीसारवो,
बीसारणो, बीसारवो—६० भे० ।

विसारद-वि [स विशारद] १ किसी विषय का अर्च्छा ज्ञाता,
विशेषज्ञ ।

२ विद्वान, पंडित, कवि । (अ मा., ह. नां मा.)

३ चतुर, होशियार, कुशल, निपुण ।

उ०—सारद ससि सारद वदन, सारद कविता सुद्ध । अदसारद
पारद उकति, करण विसारद बुद्ध । —रा रू

४ प्रसिद्ध, प्रख्यात, मशहूर ।

५ श्रेष्ठ, उत्तम ।

रू भे —विसारद ।

विसारियोडो-भू का कृ-१ विस्मरण किया हुआ, भुलाया हुआ . २
परित्याग किया हुआ, त्यागा हुआ ३ गलती किया हुआ ।
(स्त्री. विसारियोडी)

विसारो-स पु —विस्मृति, भुलावा ।

उ०—१ तद बहुवा सारी मुजरौ कर बोहडी, डेरै आई । सो आप
एकठी वस कहण लागी—“आपा कुंवरजी नू किय भात बिल-
मास्या, वात विसारै घातस्या । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ उण दिन सू सारा मोहल इसी हीज तवज्या लोक-लोक
री करण लागी अर कुंवरजी नू इसा खुस कीया, जंसु रच रहा ।
नेट दिन आडा पडता गया, ज्यु ज्युं वात विसारै पडती गई ।
आदमी पण कदै ही कोई खरळा दिसली वात काहै नही ।
—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ नदलाल री नाव आवै जद स्यामजी सफा सीतळ पड
ज्यावै । मूँछ सवारै, भोला खावै, गै'णै हाळी वात नै विसारै
घालणी चावै । —दसदोख

विसाळ, विसाल-वि [स विशाल] १ दीर्घ, बडा । (अ मा)

उ०—१ विसाल भाल तोप की विसाल जाल वित्थुरै, धमक भू
धुजावनी धमक मेघलौ धुरै । महान रज दब्बुनी श्रीन दब्बुनी
मही, कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही । —ऊ का.

उ०—२ चिहुर अलवका ऊघरी, विकसै वदन विसाळ । चोळ वरभ्र
कपोळ किय, सत्ता लोचन भाळ । —गु रू. व

उ०—३ चडियै गयण गज चीघाह, गुड्डी जाण फन्वि गिराह ।
वाजै वीरघट विसाळ, पक्खर पूठि घूघर-माळ । —गु रू. व

उ०—४ सोल कला सुदरि, ससिवयणी चपकवन्नी बाल । काजल
सामल लह कइ, वेणी चचलनयण विसाल । —हीराणद सूरि

२ विस्तृत, लम्बा-चौडा ।

उ०—१ विसाल भाल तोप की विसाल जाल वित्थुरै, धमक भू
धुजावनी धमक मेघलौ धुरै । महान रज दब्बुनी श्रीन दब्बुनी मही,
कथै कवीर नै कही चिराव की चही चही । —ऊ. का.

उ०—२ एक चित्त ऊजळा, चलै सुभ नीत रसतै । एक खून छल-
वान,वहै कोळाहळ मत्तै । एक सोर सारति, घोर घूवा रवि डंवर ।
ज्यौं बावळि वादळ, विसाळ श्रोपै मग अवर । —रा. रू.

३ ऊचा ।

४ प्रसिद्ध, मशहूर ।

५ महान् ।

उ०—१ कृपाळ विसाळ सिघाळ किसल, वडाळ भुजाळ उजाळ
विसल । मुग्णाळ भुग्णाळ छत्राळ महेस, आदेस आदेस आदेस
आदेस । —ह र.

६ समय की निश्चित सीमा से अधिक, लम्बा ।

उ०—विभ्रम विमोह चित्त, सपत तुरग ताणिय सविता । वासर
विसाळ लहियं, चक वाणै मगळ भवण । —गु रू. व.

७ बहुत, अधिक ।

उ०—१ अन्नदिएतरि रामलि करतउ,जमण तडा तडि राउ पहतउ ।
जलखेलती दीठी बाल, वेडी वइठी रूप विसाल । —सालिभद्रसूरि

उ०—२ देवी सुनी रै दूध तै खीर राधी, देवी मारकड रूप तै
आत बाधी । देवी मत्र मूळ देवी बीज वाळा, देवी धापणी सव्व
लीला विसाला । —देवि.

८ लम्बा ।

उ०—१ मद मसत हळवळ, हालि मंगळ, विमळ स्यामळ घटा
वहळ । जाणि रद बग पत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ ।

—महाराव हणूतसिध सेखावत री गीत

उ०—२ कवुकठ भुज विसाळ, ग्रीव तीन रेखा । नटवर की भेस
मानु, सकळ गुण विमेखा । —मीरा

९ मात्रा की दृष्टि से अधिक ।

उ०—वग्गी हाक बहादरा, वीछडि पडै विसाळ । नाराजा ऊवाणिया
खुरसाणिया कपाळ । —रा रू

स पु —१ एक पर्वत का नाम । (पुराण)

२ राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र ।

३ एक प्रकार का हरिय ।

४ लंका नगरी का एक राक्षस ।

५ परिक्षित राजा की पत्नी वैशालिनी का पिता एक राजा ।

६ कृष्ण का बालमित्र ।

७ विश्रवस व अलवुषा अप्सरा का पुत्र ।

रू भे.—विसाळ, विसाल, विद्याळ, विद्याल, विसाळू, विसाळू ।

वितामन—नं पु [म विद्यामन] १ एक यक्ष जो कुचेर की सभा में रहता है ।

२ बगुदेव पत्नी भद्रा का पिता ।

वितालना—न स्त्री [स. वितालना] विद्याल होने की अवस्था या भाव ।

वितालयग—म पु [म विद्यालय + दृग] शिव, महादेव । (म. मा.)

वितालनेत्र, वितालनेतर, वितालनेत्र—म. पु [स. विद्याल + नेत्र] शिव, महादेव । (५ कु बो)

वितालपुरी—देगो वितालपुरी (रु. भे.)

विताला—न स्त्री [सं. विताला] १ एक तीर्थ का नाम । (पुण्य)

२ उत्तरेन नगर का नाम ।

३ गौमयशीष राजा प्रजमीमठ की पत्नी ।

४ गय राजा के यज्ञ से प्रकट हुई सरस्वती ।

५ दम प्रजापति की एक पुत्री ।

६ शौनिक राजा की पत्नी ।

७ महावीर्यपुत्र भीम राजा की पत्नी ।

वितासाध—म पु. [म विद्याल + अध] (स्त्री. वितासाधी) १ शिव का नामान्तर ।

२ वाग्नुदासप्रिययक घटारह प्रमुग प्रपकारों में से एक ।

३ भीम के द्वारा मारा गया वृतराष्ट्र का एक पुत्र ।

४ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

५ विगत का छोटा भाई व मेनापति ।

६ बुधियुक्त के राजसूय यज्ञ में उपस्थित मिथिनादेश का राजा ।

७ भगवान् विष्णु का काहन, गण्ड ।

८ दण्ड का एक पुत्र ।

९ भीमठ शैशवे में से एक शैश्य का नाम ।

मि.—बटो य मुन्दर प्रांतों वाला ।

वितासाध—म. स्त्री [स विद्याल + अधी] १ बही एक मुन्दर प्रांतों वाली स्त्री ।

२ प्राचीन देवी का नाम व उन्की एक मूर्ति ।

३ शौनिक योगिनियों में से एक योगिनी ।

वितासाधोपासना वितासाधोपासना—म पु [म वितासाधोपासना] भाद्रपद कृष्ण चतुर्थीकाशी रिक जाने वाला धन विधेय ।

[सं. वि.—दुर्गमें विदि राविष्णुप्रतिमों होने का अवसर है । इस दिन कृष्णकाल व साकरण व भाद्रपद दुसरा गृहीषा की गौरी का पुजन कर दूध के दूध में से दूध में दिये जाते हैं ।

वितालपुरी—म. स्त्री [म वितालपुरी] उत्तरेन नदरी का नाम ।

रु. भे.—वितालपुरी, वितालपुरी ।

विताळ, विताळू—देसो 'विताळ' (रु. भे.)

उ०—बडा सामि ते विसव किमि करि बणायो, सरग सात पाताळ मुय मा समायो । बडी ताहरी मुख उरळी विताळूँ, किसन तूफ ना निमो तुरू काळ-काळू । —पी. प्र.

वितावणी, विताववो—१ उपाजंन करना, कमाना ।

उ०—'जोधा' हरा मिले जोधारा, समहर रीठ वजायो सारा । एक पोहर लडियो बळ ओडे, कमधा भाभ वितावण कोडे । —रा. रु.

२ उत्पन्न करना, नया पैदा करना ।

उ०—१ वंर हमेस वितावण, वाड विना वसणोह । वाधा रं वर्य कर वण, धारण घाळसणोह । —वा. दा.

उ०—२ वंर वितावे वाघ सूँ, वन माभळ कर वास । जतन न राखे जाणजे, वेगो जास वितास । —वा. दा.

उ०—३ वाता वंर वितावण, संणा तोडे नेह । हासं विख पीणा हरस, घाछा काम न एह । —वा. दा.

३ प्राप्त करना, पाना ।

उ०—एका लाभ विताविया, एक मूळ ठगाणा ।

—केसीदास गाडण

४ एकत्र करना, इकट्ठा करना, संग्रह करना ।

उ०—दो भसाळ, दो भादवा, दो भासोज के माय, सोना-चादी वेच के, नाज वितावो साय । —वरसा विष्णान

५ देगो 'विताणी, वितावो' (रु. भे.)

वितावणहार, हारी (हारी), वितावणियो—वि० ।

विताविघोडी, विताविघोडी, विताव्योडी—भू० का० वृ० ।

वितावीजणी, वितावीजयो—कर्म वा० ।

विताविघोडी—भू का वृ—१ उपाजंन किया हुआ, कमाया हुआ । २ नया पैदा किया हुआ, उत्पन्न किया हुआ ३ एकत्र किया हुआ, मग्न किया हुआ, इकट्ठा किया हुआ ४ प्राप्त किया हुआ । ५ देगो 'वितायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. विताविघोडी)

वितावीज, वितावीस—देगो 'विगवावीज' (रु. भे.)

उ०—१ गजा रन पीट, पदि चोट तवागळां, वचग धरि चोट ले वितावीस । धजयटा गदे मन-मोट ज्या गिर धसं, दयाळा कोट नंनोट होमं । —धनोपतिध मांडू

उ०—२ बदनीक पाय रा पाय रा दुजां वितावीस, प्रागुरां नजणा भाडे पाय ग घमाय । बडोड पाय ग मोह गुभाय रा प्रागतोक, गिहाय ग जनां शीघ्राय ग गुजाय । —र. ज. प्र.

उ०—३ हनुमत्पुत्र गाम विचार भार अठार वन कर भेद । उग-
शीस वरसँ भोम जोवन विज्ञावीस अखेद । —र ज. प्र.

विज्ञान—देखो 'विज्ञान' (रू भे.)

उ०—१ भड समेळां जाह कन्है, तुरी अमेळा जास । रावत माफी
इक मना, जाह री किसी विज्ञान । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ यों करता कितरा दिन विसीत हूवा सो गुवाळ पण
विज्ञान कीधी जाणँ सो मोनें खाय तो नही ।

—गाम रा धरणी री बात

उ०—३ चद सूरिज हुई दीया साख, पानी पवन अरि धूर अकासि ।
हु नवि जाणु य ईम करै, मुसी है । नणद हु ईणी विज्ञान ।

—बी दे.

उ०—४ राम भरोसँ ऊकळै, आदणु ईसरदास । ऊकळता मे
अोर दे, वंदा राख विज्ञान । —ह र

विज्ञानघात—देखो 'विज्ञानघात' (रू भे)

उ०—१ विज्ञानघात गोहला, निपात डामिया वुरी । करै कमध
चूक जोम, भोम आपरी करी । —पा प्र

उ०—२ भुजा धारियो न खाग तँ वाकारियो न बाध भूरी,
करगा प्रहारियो दगा सू आणँ कूत । एकाएक लखा वाता हारियो
धरम् 'अजा', हिदूनाथ मारियो विज्ञानघात हूत ।

—जोवीजी भादी

विज्ञानशी, विज्ञानबी—देखो 'विज्ञानशी, विज्ञानबी' (रू भे)

उ०—कद थै नाग विज्ञानिया, नैण लिया अग-भल्ल । मान
सरोवर कद गया हसां सीखण हल्ल । —अग्यात

विज्ञानहार, हारी (हारी), विज्ञानणियो—वि० ।

विज्ञानिओडो, विज्ञानियोडो, विज्ञान्योडो—भू० का० क० ।

विज्ञानिजणो, विज्ञानिजबो—कर्म वा० ।

विज्ञानियोडो—देखो 'विज्ञानियोडो' (रू भे)

(स्त्री विज्ञानियोडो)

विज्ञानि—स पु [स विप+अस्त्र] १ विप में बुझा हुआ अस्त्र ।

२ साप, सर्प ।

विज्ञानो, विज्ञानो—क्रि स —१ स्वीकार करना ।

२ ग्रहण करना, पकडना ।

उ०—सब जीव विज्ञानेँ काळ की, कर कर कोटि उपाह । साहिव
को समझै नही, यों परळै हूँ जाइ । —दादूबाणी

उ०—२ दाहू कारण काळ के, सकळ सवारै आप । मीच विज्ञानेँ
मरण की, दादु सोक सताप । —दादूबाणी

३ देखो 'विज्ञानी, विज्ञानो' (रू भे)

उ०—१ करि उच्छ्व सूरजकवर, कीध विदा 'अभसाह' । रिध
सोन्नन मोती रतन, वसन अमोत्य विज्ञान । —रा रू

उ०—२ मोतिए विज्ञान ग्रहि कुण मूकै, एक एक प्रति एक
अनूप । किल सोऊण मुख मूक वयण कण, सुकवि कुकवि चालणी
न सूप ।

विज्ञानहार, हारी (हारी), विज्ञानणियो—वि० ।

विज्ञानिओडो, विज्ञानियोडो, विज्ञान्योडो—भू० का० क० ।

विज्ञानिजणो, विज्ञानिजबो—कर्म वा० ।

विज्ञानो, विज्ञानो—रू० भे० ।

विज्ञानियोडो—भू का कृ —१ स्वीकार किया हुआ २ ग्रहण किया
हुआ, पकडा हुआ ।

३ देखो 'विज्ञानियोडो' (रू भे)

(स्त्री विज्ञानियोडो)

विज्ञानिस्थल, विज्ञानिस्थल—स पु [स विज्ञानिस्थल] कटिस्थल ।

उ०—करमायु भर कुसुमचु, वेणु विज्ञानिस्थल थाय । ऊडती जाणँ
ग्रही, सीचाणुइ दुरगाय । —मा. का प्र.

विज्ञानिख, विज्ञानिख—स पु [स विज्ञानिख] १ वाण, तीर ।

(अ मा., डि. ना. मा.)

उ०—जैसे वाउ थंभे तो मेह वरसँ । त्यो अठे विज्ञानि कहता तीर
चलावणो रहि गयो । घडा उपरि ऊजळी धारा तरवारचा की
चमकण लागी । —वेलि टी.

२ एक पक्षीराज, जो गड एव शुक्री के पुत्रो मे से एक था ।

रू भे —विज्ञानिख, वसविक, वसख, विज्ञानिख, विसक, विसवख,
विज्ञानिख, विज्ञानिख, विज्ञानिख, विसेक, विसेख ।

विज्ञानिखा—स पु [स विज्ञानिखा] १ फावडा ।

२ तक्रुआ ।

३ वाण, तीर ।

४ सुई या आलपिन ।

५ राजमार्ग, आम रास्ता ।

रू भे —विज्ञानिखा ।

विज्ञानिख, विज्ञानिख—देखो 'विज्ञानिख' (रू भे) (अ. मा)

विज्ञानि—१ देखो 'विज्ञानि' (रू भे)

उ०—ब्रह्मि जगायो विज्ञानि, परम कोपिथी ईसर परि । महा
कोप मन माहि, कध कंकाण जिसी करि । —पी प्र.

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे)

विज्ञानि, विज्ञानिनी—१ देखो 'विज्ञानि' (रू भे.)

उ०—१ चारण सहि कीरति चवै, अमर करै आदेस । ग्यान
करीमो हुइ गियो, विज्ञानि किसी कोइ वेस । —पी. प्र.

७०—२ इद अनत अणपार, विसिनि लै रोम वसाया । रोमि रोमि
अहमड, असख अहमड उपाया । रोम रोम ऊपरी रहै सायर जळ
सारा, एकरि रोम अनत बसै कविलास विचारा । —पी अ
२ देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

विसिमिसि—स पु. [स] १ प्रतिस्पर्द्धा, ईर्ष्या, होड । (उ र)

२ गर्ध, अहमता । (उ र.)

विसिया—१ देखो 'विसिया' (रू. भे)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

३ देखो 'विसय' (रू. भे.)

७०—जन हरिदास विसिया तजै, गोविन्द गुण गावै । छाजै बैसै
ग्यान कै, तव ही सच पावै । —ह पु. वा.

विसियारस—सं. पु. [स विपय+रस] १ कामवासना, कामेच्छा ।

२ भोगविलास, मंथुन ।

७०—तन लाल गुलाल प्रवाल तरै, भल भोग नितब नितब भरै ।
कसिया तन घोट लगोट कसी, विसियारस अंतर वीच वसी ।

—ऊ का.

विसिरस्क—स पु [स विशिरस्क] सुमेरु के पाम का एक पर्वत । (पुराण)

विसिरा—स स्त्री. [सं. विशिरा] स्कद की एक अनुचरी, एक मातृका ।

विसिस्ट—स. पु [स. विशिष्ट] वह व्यक्ति या वस्तु जिसमें कोई विशेष-
पता पाई जाती हो, अद्भुत वस्तु या व्यक्ति ।

वि.—१ प्रसिद्ध, महाहर, कीर्तिवान ।

२ शिष्ट, सम्य ।

३ देखो 'वसिष्ठ' (रू. भे)

रू. भे —विसीठ ।

विसिस्टाद्वैत—स. पु. [स विशिष्ट+अद्वैत] श्री रामानुजाचार्य का यह
दार्शनिक सिद्धान्त जिसमें, जीवात्मा और जगत दोनों को ब्रह्म
से भिन्न माना गया है यद्यपि ये दोनों भिन्न नहीं हैं ।

विसिस्टाद्वैतवाद—देखो 'विसिस्टाद्वैत' ।

विसिस्टी, विसिस्टी—स. पु [स विशिष्टी] १ सदेशवाहक, खबरनवीस,
दूत ।

स. स्त्री —२ शंकराचार्य की माता का नाम ।

विसीखमूरति—देखो 'विसीखमूरति' (रू. भे)

विसीठ—१ देखो 'वसीठ' (रू. भे.)

७०—राजा री सेना पूछियो, लडाई अरु हइसी पिरा पूछी पैला
कुण छै विसीठा लोग पूछियो । —पचवडी री वारता

२ देखो 'वसिष्ठ' (रू. भे)

३ देखो 'वसिष्ठ' (रू. भे)

विसीठगारी—स. पु.—१ सदेशवाहक या दूत का कार्य ।

२ अपशब्द, कटुशब्द, गाली ।

७०—गोगादे वीरमोत मारियो, तद राव राखंगदे विसीठगारी
गोगादेजी सू कीवी थी, तद गोगादेजी कह्यो हुती—म्हारी दावी
जोईया सू की नहीं, म्हारी तीन सरदार पडिया, जोईया रा सात
सिरदार पडिया, म्हारी कोई राठोड वर मार्य तो राव राखंगदे
कने मागज्यो । —नैणसी

विसीसमूरति—स पु. [स विशीपमूर्ति] कामदेव का नामान्तर ।

विसुडी—स. पु [स विसुडी] कश्यप ऋषि का पुत्र एक नाग ।

विसुदरी—देखो 'विसुदरी' (रू. भे)

(स्त्री विसुदरी)

विसुंधरा—देखो 'वसुंधरा' (रू. भे.)

७०—विस्वामित्रेस एण वात, कोपियो भयकरा । गिरा तरा सरा
गभीर, धुज्जवे विसुंधरा । —सू. प्र

विसु—१ देखो 'वसु' (रू. भे)

२ देखो 'विस' (रू. भे.)

७०—विसु दीवउ दुरयोधनिहि, भीमह भोजन माहि । अमतु हई
नइ परिणमिउ, पुनिहि दुरिउ पुलाइ । —सालिभद्र सूरि

विसुभ्रावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे)

७०—सुणी रगण त्रिणि रूप सहि, सी नै सत तालीस । प्रगट छद
कहि एण परि, वात विसुभ्रावीस । —ल. पि

विसुक—स. पु [स विशुक] देवी के द्वारा मारा गया एक भण्डासुर ।

विसुणी—देखो 'विसाति' ।

७०—भोसा, भोळमा वर्ग कवै, छाक पूत सिर छाबडी । लेण
विसुणी बैठ सभाळ, रळग्या वाळक राबडी । —दसदेव

विसुद्ध—वि [स विसुद्ध] १ विलकुल शुद्ध, खरा ।

२ बिना पाप का, पाप रहित ।

३ कलकरहित, फलकशून्य ।

४ सच्चा, ठीक ।

५ पवित्र ।

७०—१ विरुद्ध वेद वारता प्रबुद्ध पातरै नहीं, विसुद्ध सुद्ध सघ तें
असुद्ध आतरै नहीं । प्रचड पडितान की वितड बडली नहीं, महा
अबोध सोधनी सुबोध मडली नहीं । —ऊ का.

७०—२ कटै कडियाळ वहै करमाळ, कुटवकै कोपर कध कपाळ ।
बगत्तर जोध हुवति विसुद्ध, जुटत बहादर बाहुप्र जुद्ध ।

—गु. रू. व.

स पु—योग या तंत्र के अनुसार राजस्थानी में शरीर के भीतर
माने गये आठ कमल या चक्रों में से पाचवा चक्र ।

वि. वि.—इसका स्थान कठ माना गया है । जप १०००, रग नीला (हलका आसमानी), दल १६ होते हैं । इसके देव कही चद्र और कही शिव -माने जाते हैं । इसके १६ अक्षर और १६ दल होते हैं ।

उ०—चक्र विमुद्ध कठ में उद्मुख जाणियै, घुन्न वरण सोडस दळ, कमळ पिछानियै । एक एक कर सोडस स्वर हैं दळन पर, यत्र पूरण चद्राकति, भासत सुकलतर । —साधक-सुधा

रू. भे.—विमुद्ध विमुघ विमुद्धचक्र, विमुद्धिचक्र, विमुघ ।

विमुद्धचक्र—स. पु—देखो 'विमुद्ध' (सं पु.) (रू. भे.)

विमुद्धचारी—स पु [स. विशुद्ध+चारिन्] विलकुल शुद्ध चरित्र वाला व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति ।

विमुद्धता—स पु. [स. विशुद्ध+ता] विशुद्ध होने की अवस्था या भाव ।

विमुद्धात्मा—स. पु [स विशुद्ध+आत्मा] परम शुद्ध निर्मल आत्मस्वरूप भगवान ।

विमुद्धि—सं स्त्री [सं विशुद्धि] विशुद्ध होने की क्रिया या भाव, शुद्धता ।

रू. भे—विमुद्धि विमुद्धी, विमुद्धी ।

विमुद्धिचक्र—देखो 'विमुद्ध' (स. पु.) (रू. भे.)

विमुघ—१ देखो 'विमुद्ध' (रू. भे.)

उ०—किंहि रिति सध्या के विखै रस पाईजै छै । कवि यो कहि गया छै । विहु पला । विमुघ । विहु मासा । विहु राति दिन । वसति सारीखी रस निरवाह छै । —वेलि टी

२ देखो 'विमुघ' (रू. भे.)

विमुन—देखो 'विस्णु' (रू. भे.)

विमुनपुर—देखो 'विस्णुपुरी' (रू. भे.)

विमुनपुरी—देख 'विस्णुपुरी' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—असीय सइहस सजै करि ममत्ता, पच धोहरण जं कइ मिळइ नरिद । कर जोडै नरपति कहई, विमुनपुरी जाणै वसइही गोव्यद । —वी दे.

विसुरण, विसुरणी—देखो 'विसूरणी' (रू. भे.)

उ०—हजार कोस मे सारो लोक दुखी छै । म्हानं तो छोडिया नै वरस छ' हुवा छै, पण चाळीस दिन आपणी सीम मे हुवा, सारो लोक रोवै था । माथी टेकिय विसुरण करै था ।

—पलक दरियाव री वात

विसुरणी, विसुरवी—देखो 'विसूरणी, विसूरवी' (रू. भे.)

विसुरणहार, हारो (हारो), विसुरणियो—वि० ।

विसुरिओडो, विसुरियोडो, विसुरयोडो—भू० का० कृ० ।

विसुरीजणो, विरीजवो—कर्म वा० ।

विसुरियोडो—देखो 'विसूरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विसुरियोडी)

विसुव—स पु. [सं विपुव] दिन और रात दोनो बराबर होने का वह समय जब सूर्य विपुवतरेखा पर पहुँचता है । (ज्योतिष)

विसुवरेखा—देखो 'विसवतरेखा' (रू. भे.)

विसुवामित, विसुवामितर, विसुवामिति विसुवामित्र,—देखो 'विस्वामित्र' (रू. भे.)

विसुविसा, विसुवोसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसूँगी—देखो 'विस्राति' ।

विसूँदरो—स. पु (स्त्री. विसूँदरी) विपला जन्तु विशेष, छिपकली ।

उ०—१ नाई बोल्थी—हा वापजी, वात तो आपरी साव साची । म्हारी निजरा देख्योडी है । अकर विसूदरा री पूछ धाढी तो वा निरी ताळ आगणा में लटपट लटपट करती री । —फुलवाडी

उ०—२ सेठ कही—पाळियोडी मिन्नी री काई सबूत ! म्है किसी उरणे मोल लायो ही । थें तो कंबौला के ऊदरा ई म्हारे पाळियोडा है, घर री माखिया, माछर अर विसूदरा ई म्हारे पाळियोडा है । —फुलवाडी

रू. भे.—विसादरी, विसूदरी, विसूँदरी, विसदरी, विसदरी ।

मह—वसदर ।

विसू—देखो 'वसु' (रू. भे.)

उ०—१ विसू रक्खण सुजस वाता, इद्र कोसळ आखियाता, देव वछित दान दाता, दुफल दीन दयाळ । गाव दसतिर वाण गजै, प्रगट खळ जन भूप भजै, जनक पण रख चाप भजै भलै अवध भुवाळ । —र ज प्र

उ०—२ देण सेवग लक दाता, घल्ल व्याध कवध घाता । विसू रक्खण शीत वाता, हद हाता हद हाता । —र ज प्र

उ०—३ वडा भाग ज्यारी विसू, लछवर चरणा लाग । पाव राम गुण प्रीत सूँ, भाठ पहर अनुराग । —र ज प्र

विसूइया—देखो 'विसूचिका' (रू. भे.) (जँन)

विसूकणी, विसूकवो—कि अ—१ रसहीन होना, सूखना ।

उ०—वन माभळ बघवाव सु, दुरद विसूकं डाण । जेठ लुवा सूकत जिम, निरजळ देख निवाण । —वा दा.

२ नष्ट होना ।

३ दुबल होना, कमजोर होना ।

४ सुसु होना ।

५ दुधारा पशु के दूध आना बन्द होना ।

विसूकणहार, हारौ (हारी), विसूकणियो—वि० ।

विसूकियोडी, विसूकियोडी, विसूकियोडी—भू० का० कृ० ।

विसूकीजणौ, विसूकीजवौ—भाव वा० ।

विसूकणौ, विसूकवौ, वेहूगणौ, वेहूगवौ, विसूगणौ, विसूगवौ—रू० भे०

विसूकियोडी—स. पु.—वह गाय, भैंस, या अन्य दुधारा पशु जिसने दूध देना बन्द कर दिया हो ।

रू भे —विसूगियोडी ।

विसूकियोडी—भू का. कृ.—१ रसहीन हुवा हुआ, सूखा हुआ. २ नष्ट हुवा हुआ ३ दुर्बल हुवा हुआ, कमजोर हुवा हुआ. ४ सुप्त हुवा हुआ ।

(स्त्री विसूकियोडी)

विसूगणौ, विसूगवौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकवौ' (रू. भे.)

विसूगणहार, हारौ (हारी), विसूगणियो—वि० ।

विसूगियोडी, विसूगियोडी, विसूगियोडी—भू० का० कृ० ।

विसूगीजणौ, विसूगीजवौ—भाव वा० ।

विसूगियोडी—देखो 'विसूकियोडी' (रू भे)

विसूगियोडी—देखो 'विसूकियोडी' (रू भे)

(स्त्री विसूगियोडी)

विसूचिका—स. स्त्री [स] वमन और विरेचन को साथ लिए हुए हैजा नामक रोग विशेष, जो अजीर्ण की वृद्धि के कारण होता है ।

विसूची—स. स्त्री. [स. विपूची] १ विरजू नामक राक्षस की पत्नी, जिससे इसे सो पुत्र एवं एक कन्या उत्पन्न हुई थी ।

२ देखो 'विसूचिका' (रू. भे)

विसूणी—देखो 'विसूति' ।

उ०—जो'डै खनै जिराण, जठै नर अतक जळावै । सीढी घोरै मे'ल, विसूणी कीच लरावै । जळ री कर छिडकाव, नगलियो फटकै फोडै, हाडी पावक हेत, दागवै पाळा जो'डै । —दसदेव

विसूर—स पु —रुदन करने या सुबकने की क्रिया या भाव ।

विसूरण, विसूरणौ—स पु [स विसूरण] १ दुख, रज, शोक, पश्चाताप ।

उ०—इए भात फाली ठाकुर सिंह ऊभी-ऊभी विसूरण करे छै । हाथ मसळ छै । घोडलौ आपरी सवारी री सुन्हली साखत सू खेत माही पडियो छै । —डाढाळा सूर री बात

२ चिन्ता ।

३ रुदन ।

४ किसी मृत व्यक्ति के शोक में बनाया हुआ पद्य, मरसिया ।

रू भे —विसूरणौ, विसूरण, विसूरणौ, वीसूरण, वीसूरणौ ।

विसूरणौ, विसूरवौ—क्रि. स.—१ सुबक-सुबक कर रोना ।

उ०—१ निमखातर सहता नही, दीखण लागी दूर । भावै इए विघ भामणी, वचन विसूर-विसूर । —र. हमीर

उ०—२ एक घडी आधी घडी तुम सौं रहू ज दूर । वरस बराबर एक पळ, रहू विसूर-विसूर । —कुंवरसी साखला री वारता

२ —चिन्ता करना, शोक करना ।

उ०—माया विसरी बेलडी, हरीया पसरी दूरि । केताई फळ कारणै, रह्या विसूरि-विसूरि । —अनुभववाणी

३ रुदन करना, रोना ।

उ०—१ भिरै भटालि भाल मे भिखार भूर-भूर व्है, छिता अफड छड के प्रचड ज्वाळ तै चिपे । भगै कनूर भूरि भैस तूर तूर व्है भजी, मरै विसूर सूर के मकूर कन्न लै मजी । —ऊ. का.

उ०—२ दिन की जाग्रत ह्य रहौ, निसा नही भरि सोय । राम विसूरै विरहनी, आसु कर सुं घोय । —अनुभववाणी

४ पश्चाताप करना, दुख करना ।

उ०—तर ऊचौ असमान फळ, पयो रह्या विसूरि । जनहरिया फळ ऊजळा, हाथ न पहुचै दूरि । —अनुभववाणी

विसूरणहार, हारौ (हारी), विसूरणियो—वि० ।

विसूरियोडी, विसूरियोडी, विसूरियोडी—भू० का० कृ० ।

विसूरीजणौ, विसूरीजवौ कर्म वा० ।

विसूरणौ, विसूरवौ, विसूरणौ, विसूरवौ—रू० भे० ।

विसूरियोडी—भू का कृ —१ सुबक-सुबक कर रोया हुआ २ चिन्ता किया हुआ, शोक किया हुआ ३ रुदन किया हुआ, रोया हुआ.

४ पश्चाताप किया हुआ, दुख किया हुआ ।

(स्त्री विसूरियोडी)

विसूविसा, विसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू भे)

विसेक, विसेख—स स्त्री —यश, कीर्ति, प्रसिद्धी ।

(अ मा, ह ना मा)

वि —१ भयकर, भयावह ।

उ०—१ आसाढक सुद नवमि, गुण आगै रिख (१७३७) लेख । जिके समत्सर जोधपुर, समहर थयो विसेख । —रा. रू

उ०—२ यौं नभ रवि अचरज्जियो, प्रबळ कळह गह पेखि । एक प्रहर गोळा उरड, व्रत ऋडूत विसेख । —रा. रू

[स वि = विशेष + सेक = शोक] २ विशेष दुखी, खिन्नचित्त, उदास, पीडित ।

उ०—राम निचत आप ह्य रहिया, सुध म्हारी वीसरिया साम । लेखा सकळ विसेक विलोकै, बोलै जद राधव वरियाम । —र. रू

३ देखो 'विसिख' (रू. भे)

४ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—पछे अबु समझायो, कह्यो—अँ इण तरफ वडा आदमी फँमदार छँ । इणा सु आपणो काम आखर कर देसी । तठा पछे इणा रो आदर भाव विसेक कौयो । —नँणसी

उ०—२ मगण सगण जगणह सगण, तगण दोय गुरु एक । सारदूळ विक्रीडतह, वरणो छद विसेक । —र. ज. प्र.

उ०—३ वासवाहली ठोड थापी दोय रावळ हुवा दोय सारीखी राजधानी हुई तरवार सामे वासवाहला रा धरिया री विसेख हुई । —नँणसी

उ०—उर पतसाह उचाट अत, वाट अटककी देख । मिरच हुतासण होमिया, मत्र कतेव विसेख । —रा. रू.

उ०—५ साथ रे लोक नू कहण लागी, 'जो बीहा कुवरजी रे आगे ही घणा छे पिण समझदार दातार तो लाडीजी सारखी कोई नहीं—बडी सिरदार जाणियो विसेख ।

—कु वरसी साखला री वारता

उ०—६ तिण रुपिया री जायगा लेयने लकडा री खटकड कीधी । आरभ थोडो । जद स्वामीजी ने किराही कह्यो—इनमें कोई आरभ है ? विसेख आरभ नहीं । —भि. द्र.

उ०—७ दस कूप समो वापी, दस वापी समो सर । दसा सरवरा समो किन्या, अन-दान विसेखत । —रा. सा. स

उ०—८ प्रधीराज रे हाथ रावत भीव रहियो । बीजी ही घणो विसेख हुयो । पाछा कुसळ-खेम रावजी कने साथ आयो । तरै सिके रातो वरछी कीया रावजी री हजूर आया । —नँणसी

रू. भे.—विसेखि ।

अल्पा.—विसेखियो, विसेखी ।

विसेखकच्छेद्य-स. पु —६४ कलाओ मे से एक कला का नाम ।

विसेखरणी, विसेखबी-फि. स —१ देखना, जाच करना ।

२ अवलोकन करना, समझना ।

उ०—दिगविजै कजि नरनाथ सजि, दळ प्रवळ उच्छव पेखियो । सब धरण नव सुख नवल सोभा, विमळ रूप विसेखियो ।

—रा. रू.

३ कहना, पुकारना ।

उ०—व्यदु दोय सुनयणा विसेखी, बहु अनुमार मनहरा देखी । विण सकार पदमणी विसेखत, एक सकार चित्रणी ओपत ।

—र. ज. प्र.

विसेखणहार, हारो (हारी), विसेखणियो—वि० ।

विसेखिओडो, विसेखियोडो, विसेखयोडो—भू० का० कृ० ।

विसेखीजणी, विसेखीजबो—कर्म वा० ।

विसेखणो, विसेखबो—रू० भे० ।

विसेखापुद्गल-स. पु [स विशेषापुद्गल] वे पुद्गल जिनका आत्म सम्बन्ध नहीं हुआ है ।

विसेखि-स. पु —१ कारण ।

उ०—पातिसाह दिली माहे हुयो दिन अढाई । तिण पातिसाह री मामो ममरेजखान निणिए एदल नू मारि अर टोकी लियो दिली री । वरस एक राज कियो । पातिसाह सेती लूणहराम कियो । तिणिए विसेखि ममरेजखान आप गहिली हुयो । —द. वि.

२ देखो 'विसेख' (रू. भे.)

३ देखो 'विसेस' (रू. भे.)

उ०—१ सहस लाख स्रावक भणी, भोजन पुण्य विसेखि । सेवुज साध पडिलाभता, अघिकउ तेह थी देखि । —स. कु.

उ०—२ ऊठिया जगतपति अतरजामो, दूरतरी आवतो देखि । करि वदण आतिथ घम कीधी, वेदै कहियो तेणिए विसेखि ।

—वेनि

विसेखियो, विसेखी, विसेखो—१ देखो 'विसेख' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'विसेस' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ कीधी कपटी पूर, भूँडो दीसै नूर । धरम री द्वेसियो ए, मच्छर विसेखियो ए । —जयवाणी

उ०—२ हिम बाधि हिम रित निसा हरणै, दिवस क्रिस गुणिए देखियै । चित मोद निस प्रति मिटै चकवा, सुख चकोर विसेखियै ।

—रा. रू.

उ०—३ तिणिए मा गुर इकत्रीस, दोइ लुष भेळा देखी । मूहर नाम सो महण, वळ गुणत्रीस विसेखी । —पि. प्र.

उ०—४ कबु कठ भुज विसाळ शीव तीन रेखा, नटवर का भेख मानो सकळ गुण विसेखा । छुद्रघटिका अघर अनूप किकिनी धुन सवाई, उस गिरधर कै अग अग मीरा वळि जाई । —मीरा

उ०—५ इद्र वोल्या वेळ कसण नै हो, लाया थे जान विसेखी । नेम ककर परणै जिंकै ही, में पिए लेस्या लेखी । —जयवाणी

विसेट, विसेठ—देखो 'वसीठ' (रू. भे.)

उ०—१ दळ सभवे सुरताण, आय चित्रकोट विलिज्जइ । भेजउ वेगि विसेट, वात मिलणुं की कीजइ । —प. च. ची.

उ०—वेग विसेट चलाइयउ, पुहतउ गढह मभार सभा सहित राय भेटीयउ, वोल्इ वयण विचार । —प. च. ची.

विसेरियो-स. पु —१ आधिपत्य या प्रशासन मे रहने वाला व्यक्ति ।

उ०—तरै कवर करन कह्यो—“थानु, दीवारणजी बुलाया छै, थै आवी तो हू जीमूँ” तरै मेघ कह्यो—“भूँ थारा विसेरिया चाकर छा, ज्यू थै कहस्यो, त्यु करस्या पिए हू पातसाहजी सौं सीख कर आवसो ।

—नँणसी

२ देखी 'वसीरी' (अल्पा, रू. भे)

विसेल, विसेली-वि [सं. विपला] १ जहरीला, विषयुक्त । (अमरत)

२ व्यसनी, विषयी ।

विसेविसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

विसेस-वि. [स विशेष] १ अधिक, विशेष, ज्यादा ।

उ०—१ पनगेस धरेस सुरेस तेस सभै पेस, भूतेस विसेस चितवेस ध्यान भेस, जीतेस, अरेस दध सेस क्रीत जपो जेस, 'किसनेस' कवेस नरेस कोसळेसे ।
—र ज. प्र

उ०—२ खरळां रा आदमिया री जाबती आप रा मुख सुं करावै छै । दारू रा घडा बीच मे पडिया छै । सारै साथ नुं पायजै छै । फेर उहां नुं विसेस जाबती देय पावै छै ।
—कु वरसी साखला री चारता

उ०—३ 'सोमल' ब्राह्मण नीधिया, 'सोमा' नाम एक । प्रत्यक्ष जाणै अपछरा, चतुराई रूप विसेस ।
—जयवाणी

२ मुख्य, खास, प्रधान ।

उ०—१ विसेस बाब भेलची रा मे, जिकी जीभ वादसाहा री छै अर हाल, समझ, वादसाहा रा तीर भेलची उण रा सू मालम होय ।
—नी प्र

उ०—२ पूत पिता एकै थया, थै चढ जावौ देस । बोला कोला बोलिया, बीतो वयण विसेस ।
—रा रू

३ साधारण से परे, अतिरिक्त या अधिक ।

स पु —१ अन्तर भेद ।

२ हर्ष, खुशी ।

३ पदार्थ वस्तु ।

४ अधिकता, उत्तमता विशेषता ।

५ विचित्रता, अद्भुतता, अनोखापन ।

६ सार, तत्व ।

७ प्रकार, किस्म ।

८ दमन नामक शिवावतार का शिष्य ।

९ सात प्रकार के पदार्थों मे से एक प्रकार का पदार्थ । (नैशंपिक दर्शन ।

१० एक प्रकार का पद्य विशेष, जिसमे तीन श्लोको या पदो मे एक ही क्रिया रहती है । (साहित्य)

११ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमे आश्चर्योत्पादक अर्थ (घटना) का वर्णन होता है । इसके तीन भेद होते हैं ।

रू भे —वसेस, विसेस, वछेक, वसेक, वसेल, वसेस, विसम्ल, विसेक, विसेल ।

अल्पा,—वसेखी, विसेखि, विसेखियो, विसेखी, विसेखी, विसेसि, विसेसी ।

विसेसउक्ति—देखो 'विसेसोक्ति' (रू. भे)

विसेसक-वि [स विशेषक] १ विशेषता उत्पन्न करने वाला ।

स पु —१ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द विशेष, जिसके प्रत्येक चरण में पाच भगण व एक गुरु होता है ।

वि. वि.—इसके अक्षरगीत, नील, व लीला भी नाम हैं ।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिगमे प्रस्तुत-अप्रस्तुत में गुण सादृश्य होने पर भी किसी कारणवश विशेषता की स्फुरण होती है । (साहित्य)

विसेसग्य-वि [स विशेषज्ञ] किसी विषय का विशेष ज्ञान रखने वाला ।

विसेसण-स पु [स विशेषण] व्याकरण मे वह विकारी शब्द, जिससे किसी सजावाची शब्द की कोई विशेषता अवगत हो या उसकी व्याप्ति सीमाबद्ध हो ।

वि.—विशेषता बताने वाला ।

विसेसता-स. स्त्री [स विशेषता] विशेष होने की अवस्था या भाव ।

रू भे.—विमेखता, विसेसता ।

विसेसलु-वि—विशेषज्ञ । (जंन)

विसेसालंकार—देखो 'विसेम' (११)

विसेसि—देखो 'विसेस' (रू भे)

उ०—पूगळ देस दुकाळ थियु किणही काळ विसेसि । पिगळ कचाळ उ कियउ, नळ नरवर चढ देसि ।
—ढो. मा

विसेसोक्ति-स स्त्री [स विशेषोक्ति] एक प्रकार का अलंकार विशेष जिसमे पूर्ण कारण के होने पर भी कार्य का अभाव वर्णित होता है ।

वि वि.—इसके तीन भेद कहे गये हैं—

(१) उक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त कहा जाय ।

(२) अनुक्तनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त नहीं कहा जाय ।

(३) अचित्त्वनिमित्ता—जिसमे कार्य के अभाव का निमित्त समझ मे नहीं आने वाला हो ।

रू भे —विसेसउक्ति ।

विसेसी—देखो 'विसेम' (अल्पा, रू भे)

विसेस्य-स पु [स विशेष्य] व्याकरण की वह पद या शब्द जिसकी विशेषता विशेषण लगा कर सूचित की जाय । \

विसँ—देखो 'विमय' (रू भे.)

उ०—१ कु ती नगरी नै विसँ, हुवी हाहाकार । देखी राय मरावियो, विना गुनै अणगार ।
—जयवाणी

उ०—२ हसण बोलण चालण विसँ, धरू होसी ही अवसर नो

जाण । युद्ध करी अपराभवी, नवाग सुदर ही, सोमै स गार वखाण ।

—जयवाणी

उ०—३ आयं साध भयं ग्रहलाद, जिनकं नही विसै रसवाद ।
उनका कहा वरनी विसतार, रामसनेही मेरै प्राण अघार ।

—ह. पु वा

विसोक—स. पु [स. विसोक] १ असोक नामक वृक्ष ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ भारतीय युद्ध मे पाण्डव पक्षीय राजा जो केकय राजकुमार था और कर्ण के द्वारा मारा गया था ।

४ भीमसेन का सारथि ।

५ ब्रह्मा का मानसपुत्र । (पुराण)

६ दमन शिवावतार का एक शिष्य ।

७ कृष्ण एवं त्रिवक्रा के एक पुत्र का नाम जो नारद का शिष्य था ।

वि —१ जिसे शोक न हो, शोकरहित ।

२ जिसे शोक हो, शोक युक्त ।

रू. भे —विसोग ।

विसोकद्वादशीव्रत—सं पु [स. विसोकद्वादशीव्रत] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी को किया जाने वाला एक प्रकार का व्रत विशेष ।

वि वि —इस दिन सिर्फ अल्पाहार किया जाता है और लक्ष्मी-पूजन किया जाता है इसके करने से प्रियवियोग नहीं होता है तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

विसोका—स स्त्री. [स. विसोका] १ कृष्ण की सोलह हजार पत्नियों में से एक पत्नी का नाम ।

२ स्कंद की एक अनुचरी मातृका ।

विसोग—देखो 'विसोक' (रू. भे.)

विसोतर—स. पु —एक सी वीस की सख्या ।

रू. भे —विसोतर, विमोत्तर, विसोत्तर ।

विसोत्तरि, विसोतरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू. भे.)

विसोत्तर—देखो 'विसोतर' (रू. भे.)

विसोत्तरि, विसोत्तरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू. भे.)

विसोघन—स. पु [सं विसोघन] पापों का नाश करने वाले भगवान् ।

विसोघनी—स. स्त्री [स. विसोघनी] ब्रह्मपुरी का नाम ।

विसोनी—स. स्त्री —एक प्रकार का वर्षात मे पैदा होने वाला पौधा, शरपुखा ।

रू. भे —बिसूनी, विसोनी, बीयोनी, बीफनी, बीसूनी, बीसोनी, वेहोनी ।

विसोवा—देखो 'विसवी' (रू. भे.)

विसोभित—वि [स वि =रहित+शोभित] १ शोभारहित, भद्दा ।

उ०—जब राति वितीत होण लागी । तब चद्रमा किसी दीसै छै ।
जिसी भरतार असमाध्या थका सती की मुख देखिज्यै । जब पिउ वै माहै सक्त छै । चद्रमा माहि ज्योति छै । श्री दुख का मारघा अर वै दिन की जोति नजोक आया । दून्यो विसोभित सा देखीजै छै ।
—वैलि टी

[सं वि =विशेष+शोभित] २ विशेष शोभित, शोभायुक्त ।

विसोवन—वि [सं विपोपम] विप के समान जहर के सदृश्य ।

विसोवा—देखो 'विसवी' (रू. भे.)

विसोवावीस, विसोहावीस—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.) (ह. ना. मा.)

उ०—१ राजा नीयत सामळ, बहै विसोवावीस । असमं धारं बुद्धि बळ, समं, विचारं रीस ।
—रा. रू.

उ०—२ आभ थोमं भुजं "माळ" हर आभरण, वघं आधक छत्रा विसोवावीस । दुचित दिल्लेस तद खळा माथे दुगम, सुचित तद परठिजं ऊमरां सीस ।
—केसोदास गाढण

विसोही—वि. [स. विसोही] १ आत्मा को विशेष प्रकार से शोधन करने वाला । (जैन)

स स्त्री —विशुद्धी ।

विसी—वि. [स्त्री विसी] वंसा, जैसा, समान ।

उ०—१ श्री दोनू सरदार जनाना रं बाहर जाय ऊभा रहिया । इहा नू माहीं बडणै नहीं दिया राजूखा री वीवी बाहर आय कही-बावा थारी वंर थां लेय ही लियो । सावास छै, बडी रजपूती राखी ! जसा पुरसा रा थै लडका था विसी ही कीवी । जनानी मरजाद मता मांजो ।
—सूरं खीरं काधलोत री वारता

उ०—२ सेठ तीन दिना ताई कलकत्ता री सडका नापी जरै कठे ई जावता चौथौडे दिन ठीक विसी री विसी इज हीरो एक देसी फरम मे निर्गं आयी ।
—अमरचून्डी

उ०—३ दिनुगा री टेम ही अर भूलेसर री भीड आपरी पूरी जवानी पर आयोडी ही । जवानी ई इसी-विसी नही पण टल्ला देवती ।
—रातवासो

विस्कम, विस्कमक—स. पु [स. विष्कम, विष्कमक] १ ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों मे से एक योग का नाम ।

वि. वि —इसमे किसी शुभ कार्य करने मे विष्कम योग की प्रथम पाच घटि (दंडों) को अशुभ व शेष को शुभ माना जाता है ।

२ योगियों का एक प्रकार का वध ।

३ भूत एव भविष्यत् कथाओं का सूचक, एव कथा का संक्षेप करने वाला श्रक ।

रू. भे — विसकभक, विसकभक ।

विस्कभी—स. पु [स विष्कम्भिन्] शिवजी का एक नामान्तर ।

विस्क—स पु [स विष्क] बीस वर्ष की आयु का हाथी । (डि. को)

विस्कर—स पु. [स विष्कर] १ पक्षी, चिडिया ।

२ पूर्वकालिक एक राक्षस जो सम्पूर्ण पृथ्वी का शासक था ।

विस्कल—स पु [स विष्कल] सूअर, शूकर ।

विस्किर—स पु [स विष्किर] १ पक्षी चिडिया ।

२ सर्प, साप ।

विस्कुट—देखो 'विस्कुट' (रू. भे)

विस्टइ—स पु [स. विष्टि] सदेशवाहक, दूत ।

उ०—१ विस्टइ ! तू बलि वेगिसूं, विक्रम कहिजै वात । वेस देउ भ्रं विप्रनइ, तु भेह ज माहर तात । —मा का प्र

उ०—२ अम्ही वलूं इम विस्टइ, काहवी करणवतो । क्षिति मडन क्षीजइ नहीं, क्षिमा-खडग सोभति । —मा का. प्र

विस्टकार—स. पु — १ दूत, सन्देशवाहक ।

२ अपशब्द कहने वाला व्यक्ति ।

रू. भे — विस्टिवार ।

विस्टकारी—स पु.—१ दूत या सन्देशवाहक का कार्य ।

२ अपशब्द, गाली, कटु शब्द ।

उ०—पसू बांधनं घाव कियो । इसी घाव जो राघ राणुगदे नूं अथवा मादे कुंवर नू करे ती जाणू घाव कियो । मोनूं भाटी खटक छै । इया गोगादेजी नूं विस्टकारी दी हुती, सु मोनू दुख छै । —नैणसी

रू. भे.—विस्टाकारी, विस्टिकारी ।

विस्टप—स पु [स विष्टप] ससार, जगत ।

विस्टर—स पु. [स. विष्टर] १ आसन, बैठक ।

२ यज्ञ में ब्रह्मासन ।

३ पेठ, वृक्ष । (ह ना मा)

४ देखो 'विस्तर' (रू. भे)

रू. भे — विसटर, विस्टर, विसटर ।

विस्टरास, विस्टरास्व—स पु [स. विष्टरास्व] सूर्यवशी राजा पृथु के उत्तराधिकारी राजा का नाम ।

उ०—सुत विकुल सक्रुनिज सुत स्वाद, पुत्र ज कक्रुस्थ प्रति हित प्रमाद । ज सुत अनन प्रथु पृथ जास, राजे प्रथु नदन विस्टरास ।

—सू. प्र,

विस्टाकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू. भे)

उ०—ताहरा गोगादेजी बोलिया—जै कोई सुणती हुवै ती सामझ-ज्यो, गोगादे कहै छै, राठीडे अर जोईयें वैर बराबर हुवो छै । जै कोई जीवती हुवै ती महवै जायने कहज्यो । राघ राणुगदे विस्टा-कारी दीनो छै । ज्यो वैर भाटिया कना लेज्यो । —नैणसी

विस्टाळ, विस्टाळू, विस्टानु, विस्टाळू, विस्टालू, विस्टाळो, विस्टाली-वि. [स. विष्+टालनम्] बीच बचाव करने वाला, मध्यस्थता करने वाला ।

स. पु — १ कलह या झगडे की श्रवस्या मे शान्ति कराने वाला मध्यस्थ व्यक्ति ।

२ सुलह कराने की क्रिया, मध्यस्थता ।

३ समझौता ।

उ०—सहर रँ दरवाजे चिठी बाधी—नव चौर मारया त्रिण रा इयारा गुणा निनाएत्रे मनुस्य मारया पद्वे विस्टाळो कर सू ।

—भि. द्र.

रू भे — बसीटाळू, बसीटाळी, विसटाळू, विसटाळी, वनीटाळू, वसीटाळी, विसटाळी ।

विस्टि—स पु [स विष्टि] १ धर्म सावर्णि मन्वन्तर का एक ऋषि ।

स स्त्री [स. विष्टि] २ विष्टिभद्रा नामक ज्योतिष के ग्यारह

करणो मे से सातवा करण । ३ नरकगामी जीव का नरकवास ।

३ विवस्वत् एव छाया की एक भयकर कुरूप कन्या जिसका विवाह स्वष्ट पुत्र विवस्वरूप राक्षस से हुआ था ।

विस्टिकार—देखो 'विस्टकार' (रू भे)

विस्टिकारी—देखो 'विस्टकारी' (रू भे)

विस्टिघत—स पु [स विष्टिघत] एक प्रकार का घत विशेष जिसमे मार्ग-

शीर्षं शुक्ला चतुर्थी को इसका सकल्प कर विद्वान ब्राह्मण का

पूजन करे तथा लोह, पाषाण या काष्ठ की मुद्रा बनवा कर अष्ट-

दल आसन पर प्रतिष्ठित कर पूजन करे । इस घत को इन्द्र ने

वृत्रासुर मारने हेतु, शिव ने त्रिपुरासुर का वध करने हेतु विष्णु

ने पाचजन्य शस्त्रार्थ एव वरुण ने विमानार्थ किया था ।

विस्टी—स पु [स विष्टी] पाखाना, मंला, मल, टट्टी, गू । (अमरत)

उ०—१ पग ऊचा माथी तलै जीवा, आखा ऊपर हाथ । जाल

जजाल विस्टा मध्य जीवा, तू वसियो कही जगनाथ । —जयवाणी

उ०—२ विष्टा नै वलीमातरी ए, नाक तणो मल खेल । वाय

पित्त सलेसमाए, सुक लोही राध खेल । —जयवाणी

रू भे — विसटी, विस्टी भिसटी भिसठी, भिस्टी, भिस्टी, विसटी,

विसठी, विस्टी ।

विष्ठाघर—स पु [स. विष्ठा+गृह] पाखाना, तारत, शौचालय ।

उ०—सुणी नप स्नान करि तू नौसरघठ, देहरा भयो सुपवित्ती

जी । विष्ठाघर माहि बडठठ आदमी, तेडइ तु आबि तुरती जी ।

—स. कु.

विष्ठासुक्त, विष्ठासुक्त—स पु [स विष्ठासुक्त] सूअर ।

विष्ठी—देखो 'विष्ठी' (रु भे)

विष्णु—देखो 'विष्णु' (रु भे.)

३०—१ ब्रह्मा विष्णु महेस, सेस माने फुरमाण ।

—केसोदास गाडण

३०—विष्णु नाम कुळ विष्णु, विष्णु सुत मित्र अपस वद । कच अहिमुख ससि लक, स्यघ कुच कोळ नाळ छिद । —र. ज प्र

विष्णुतर—स. पु—सुदर्शन चक्र । (ना मा)

विष्णु—स. पु [स विष्णु] १ सृष्टि का भरण-पोषण व पालन करने वाले देवता, जो हिन्दुओं के प्रधान देवता माने जाते हैं, ईश्वर, परब्रह्म ।

वि. वि.—इन्ही की नाभि से कमल द्वारा ब्रह्मा की उत्पत्ति मानी जाती है ।

३०—१ ब्रह्मा विष्णु नहीं सिव सक्ती, नहीं गुरु नहि चेला । नारी पुरुस एक नहीं होता, हरि तौ आपोई आप अकेला ।

—स्त्रीहरिरामजी महाराज

३०—२ विष्णु नाम कुळ विष्णु, विष्णु सुत मित्र अपस वद । कच अहिमुख ससि लक, स्यघ कुच कोळ नाळ छिद । —र. ज प्र.

३०—३ देवी नाभ रं कमळ ब्रह्मा निपाया, देवी ब्रह्म रं रूप मधु-कीट जाया । देवी रूप मधुकीट ब्रह्मा डरायें, देवी ब्रह्म रं रूप विष्णु जगायें । —देवि

३०—४ पणि तरिण हूती चोटलइ, चौद लोक नु वास । ब्रह्मा विष्णु महेस परिण, पजरि श्रेणि प्रकास । —मा का प्र

२ अग्निदेवता ।

३ बारह आदित्यो मे से पहले आदित्य का नाम ।

४ विष्णुस्मृति की रचना करने वाले प्राचीन ऋषि ।

५ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

६ चौसठ भैरवो मे से एक भैरव का नाम ।

७ श्वेत वरुण ।# (डि को)

८ कृष्ण वरुण ।# (डि को)

९ कार्तिक मास में अश्वतर नाग, रभा अप्सरा, गधवं एव यक्षो के साथ घूमने वाला सूर्य ।

१० भृगु वश मे उत्पन्न एक गोश्रकार ।

११ महाभारत युद्ध मे पाण्डव पक्ष का एक राजा, जो कर्ण के द्वारा मारा गया था ।

१२ सार्वणि मनु के एक पुत्र का नाम ।

१३ भोत्य मनु के पुत्र का नाम ।

१४ धर्मसार्वणि मन्वन्तर के सप्तऋषियो मे से एक ।

१५ अठारह पुराणो में से एक पुराण ।

रु भे.—विसन, विसन्न, विसन, विसनु, विसन्न, विष्णु, विस्तु, विस्तुक, वीसन, वसन, विरणु, विसन, विसण, विसणु, विसन, विसनर, विसनु, विसनी, विसन्न, विसन्नू, विष्ण, विष्णू, विस्त, वीससु, वीसन, वीसनु ।

विष्णुकांची—स. पु [स. विष्णुकांची] दक्षिण मे श्रीशकराचार्य द्वारा स्थापित एक तीर्थ का नाम ।

विष्णुकाता—स. स्त्री. [स] एक जड़ी विशेष, जो श्रीपद्य मे काम आती है । (अमरत)

विष्णुकर्म—स. पु [स विष्णुकर्म] विष्णु भगवान् का पाद या पग ।

विष्णुक्रांत—स. स्त्री. [स विष्णुक्रांत] संगीत मे एक प्रकार का ताल विशेष ।

विष्णुक्राता—[विष्णुक्रान्ता] नील अपराजिता ।

विष्णुक्राति—[स विष्णुक्रान्ता] श्वेत कोयल नाम की एक लता विशेष । (अमरत)

विष्णुगग, विष्णुगगा—स. स्त्री [स विष्णुगगा] एक प्राचीन नदी ।

विष्णुगुपत, विष्णुगुप्त—स. पु [स विष्णुगुप्त] कौटिल्य के नाम से प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ चारुख्य का असली नाम । (ऐतिहासिक)

विष्णुचकर, विष्णुचक्र—स. पु [सं विष्णुचक्र] सदैव भगवान् विष्णु के हाथ में रहने वाला सुदर्शन चक्र ।

विष्णुज्वर—स. पु [स विष्णुज्वर] शत्रुओं का नाशक एक ज्वर जिसके अधीश विष्णु है ।

विष्णुतरपण—स. पु. [स. विष्णुतरपण] किमी बालक के मर जाने पर उसके तीसरे दिन दूध, जल, तिल आदि से की जाने वाली तर्पण विधि । (मा म)

विष्णुतिथि, विष्णुतिथि—स. स्त्री. [सं विष्णुतिथि] एकादशी और द्वादशी दोनो तिथियों का नामान्तर ।

विष्णुतैल—स. पु [स विष्णुतैल] समस्त वात रोगो को मिटाने वाला तैल विशेष । (वैद्यक)

विष्णुदास—स. पु [स विष्णुदास] श्रीविष्णु का एक अनन्य भक्त ।

विष्णुदेवत, विष्णुदेवत्या—स. पु [स विष्णुदेवत्या] १ योगतत्र मे २७ नक्षत्रो मे से श्रवण नामक नक्षत्र विशेष, जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं ।

२ चान्द्रमास के दोनों पक्षो की एकादशी व द्वादशी तिथिया ।

विष्णुद्वीप—स. पु [स विष्णुद्वीप] एक द्वीप विशेष । (पुराण)

विष्णुधरमा—स. पु. [स. विष्णुधर्मा] गरुड की प्रमुख सतान ।

विष्णुधरमोत्तर—स. पु [स. विष्णुधर्मोत्तर] विष्णुपुराण का उपपुराण या एक अंश ।

विष्णुधारा—स. स्त्री. [स. विष्णुधारा] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।
२ एक नदी का नाम । (पुराण)

विष्णुधर—स पु [स. विष्णुधर] १ विष्णु का एक कवच विशेष, जिसके धारण करने से सब भय दूर हो जाते हैं । (पुराण)
२ एक मंत्र जो शिव द्वारा देवी को बताया गया था ।
रू. भे.—विष्णुधर ।

विष्णुपथ—स. पु. [स. विष्णुपथ] १ आकाश, व्योम ।
रू. भे.—विसनपथ, विसनपथ, विसनपथ ।

विष्णुपद—सं. पु. [स. विष्णुपद] १ आकाश, व्योम ।
२ स्वर्ग, वैकुण्ठ ।
३ क्षीरसागर ।
४ कमल ।
५ विष्णु के पैर ।

६ एक प्रकार का मायिक छन्द विशेष जिसमें १६ व १० पर यति और अन्त में गुरु होता है ।

७ एक तीर्थ का नाम, जो विपाशा नदी के तट पर स्थित है ।
रू. भे.—विसनपद विसनपद, विसनपद ।

विष्णुपदी—स. स्त्री [स. विष्णुपदी] १ भगवान् श्रीविष्णु के पैर के नाखून में से निकली हुई गंगा, श्रीभागोरथी गंगा ।
२ द्वारिकापुरी ।
३ वृष, वृश्चिक, कुंभ व सिंह आदि की सक्रांति ।

विष्णुपुराण—देखो 'विष्णु' (१५) ।

विष्णुपुरी—देखो 'विष्णुपुरी' (अल्पा, रू. भे.)

विष्णुपुरी—स. पु. [स. विष्णुपुर] स्वर्ग लोक, वैकुण्ठ ।
रू. भे.—विसनपुरी, विसनपुर, विसनपुरी, विसुनपुर, विसुनपुरी ।
अल्पा.—विसनपुरी, विसनपुरी, विसुनपुरी, विष्णुपुरी ।

विष्णुप्रयाग—स. पु. [स. विष्णुप्रयाग] एक तीर्थ स्थान, जो पाण्डु-केसव के निकट है । इसके निकट ही विष्णुगंगा अलकनदा में मिलती है, इसके पास ही हाथी पर्वत है ।

विष्णुप्रिया—स. स्त्री [स. विष्णुप्रिया] १ भगवान् श्री विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी ।
२ तुलसी का पौधा ।
रू. भे.—विसनप्रिया ।

विष्णुप्रीति—स. स्त्री. [स. विष्णुप्रीति] भगवान् श्रीविष्णु की सेवा पूजा करने के लिए किसी पूजा करने वाले व्यक्ति को बिना लगान दी गई भूमि ।

विष्णुपती—स. स्त्री. [स. विष्णुपती] दातानी ६ की पत्नी ।

विष्णुपत्नी—स. पु [स. विष्णुपत्नी] ब्रह्मयज्ञ का पुत्र और कल्कि भवतार का पिता, जो सुमति का पति था । (पुराण)

विष्णुरथ—स. पु [स. विष्णुरथ] विष्णु का वाहन, गरुड ।

विष्णुरात—स. पु [स. विष्णुरात] अर्जुन-सुभद्रात्मज अभिमन्यु व उत्तरा का पुत्र महाराज परीक्षित जिसकी हत्या अश्वथामा द्वारा गर्भ में ही कर दी गई थी मगर श्रीकृष्ण ने पुनर्जिवित किया था ।

विष्णुलोक—स. पु. [स. विष्णुलोक] विष्णु का निवास स्थान, स्वर्ग वैकुण्ठ ।

विष्णुवल्लभा—स. स्त्री [स. विष्णुवल्लभा] १ तुलसी का पौधा ।
२ लक्ष्मी ।

विष्णुवाहन—स. पु [स. विष्णुवाहन] गरुड ।

विष्णुवाहण—स. पु [स. विष्णुवाहण] गरुड ।

विष्णुविवाह—स. पु [स. विष्णुविवाह] एक प्रकार का वैधव्यहर, जिसमें कन्या का विवाह पहले विष्णु से कर देते हैं ।

विष्णुघत—स. पु. [स. विष्णुघत] पीप शुक्ला द्वितीया से चार दिन तक रखा जाने वाला विष्णु का व्रत विशेष ।

विष्णुसक्ति, विष्णुसक्ति, विष्णुसगति—स. स्त्री. [सं. विष्णुशक्ति] लक्ष्मी ।

विष्णुसप्तमी—स. स्त्री. [स. विष्णुसप्तमी] मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को की जाने वाली विष्णु की पूजा जो अभीष्ट सिद्धि हेतु की जाती है ।

वि. वि.—इसी मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी को ही त्रियसप्तमी और विष्णु सप्तमी भी मनायी जाती है ।

विष्णुसरमन—स. पु [स. विष्णुसर्मन] इन्द्र को भी क्षरण देने वाला एक राजा, जो शिवसर्मन राजा का पुत्र था ।

विष्णुसावर्णि—स. पु. [स. विष्णुसावर्णि] भीष्म मनु का नाम ।

विष्णुसिद्धि—स. पु [स. विष्णुसिद्धि] अगिराकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

विष्णुहरि—स. पु. [स. विष्णुहरि] विष्णु के एक अनन्य भक्त का नाम ।

विष्णुसिला, विष्णुसिला—स. स्त्री. [स. विष्णुशिला] सालि-ग्राम ।

विष्णुखल, विष्णुखल—सं. स्त्री [स. विष्णुशुखला] अश्वन नक्षत्र में आने वाली द्वादशी ।

विष्णुस्मृति—स. स्त्री [स. विष्णुस्मृति] एक धर्मशास्त्र, स्मृति विशेष ।

विष्णुस्वामी—स पु [स विष्णुस्वामी] १ वैष्णव सम्प्रदाय या रामा-
वत साधुओं की एक शाखा । (भा. म)

विष्णु—देखो 'विष्णु' (रू भे)

उ०—कृतध्वसी विष्णुं कमलभव जिष्णु स्तुति करे, हिमासू
उम्णासू पदम-पद पासू सिग्धरे । हगामा हमेसा वजंत विदवेसा
नववती, अई इद्द अवा जयति जगदवा भगवती । —भे म

विस्तर—१ देखो 'विस्तर' (रू भे)

२ देखो 'विस्तार' (रू भे.)

उ०—१ नव वाडि सेती सील पालउ, पामउ जिम भव पार रे ।
भगवत विस्तर पराइ भाख्यउ, उत्तराध्ययन मभार रे । —स. कु.

उ०—२ उत्तराध्ययन अध्ययन अठारमै, सूत्र टीका सुविचार ।
रिखमडल वलि प्रकरण थो, रच्यो ए विस्तर अधिकार ।

—ध व. अ

उ०—३ सूत्र वाची नइ सगलुं समझ्यो, तिहा विस्तर सबधीजी ।
केसी प्रदेशी राजा तराउ, समयसुदर कहइ प्रबधी जी । —स कु.

विस्तरण—वि —विस्तार करने वाला, फैलाने वाला ।

उ०—नमी वेद विस्तरण, नमी निसचर बोह नामण । नमी सेस-
सायत, नमी हव कव्व हुतासण । —ह र.

विस्तरणी, विस्तरवो—क्रि अ.—१ उच्चरित होना, ध्वनित होना,
गूजना ।

उ०—राज भवनि वैतालिक पढइ, विलोणा तरा अरडका उपजइ,
पथिक मारगि थया । ब्राह्मण तरा घरि वेद ध्वनि विस्तरि, धार-
मिक लोक प्रतिक्रमण पर हूया । —रा सा स.

२ विस्तार पाना, व्याप्त होना, फैलना ।

उ०—१ सुर प्रगट मिटि अटकाव सरिता व्याह मगळ विस्तरै ।
सोचति पुर बाजार सोभा, मोज सुदर भदिरै । —रा रू.

उ०—२ मीठापणा जाणिया मीठी, कमधज धिनी तुहारा कृत ।
वोका'हरा बाण विस्तरियो, अत भवणै माही इअत । —द. दा

३ प्रफुल्लित होना, आनन्दित होना ।

४ बिखरना, छितरना, फैलना ।

उ०—माग माही मोती सू भरिया छै जाणै आकास रे आण
तारा विस्तरिया छै । सरवणा री ओर ओपमा न वणसी । सीप
मानू स्वाति दूंद भेली छै । जकी मोती जणसी । —पना

५ हरा भरा होना, लहलहाया ।

६ गमन करना, जाना ।

उ०—वइरागी थिउ विस्तरइ रामा सूपि राग । कातर काटे
काकरि, पुलतू भणूहाणि पाग । —मा का प्र

७ तितर-बितर होना, फैलना ।

उ०—वेताल किलकिलह, दावानळ प्रज्वळइ । रीछ साचरइ, वीरू-
तणा यूथ विस्तरइ । वेडी रा साड चाहूकइ, ठामि ठामि वन रा
भइसा ठूकइ । —समा

विस्तरणहार, हारो (हारी), विस्तरणियो—वि० ।

विस्तरिओडी, विस्तरियोडी, विस्तरघोडी—भू० का० कृ० ।

विस्तरिजणी, विस्तरिजवो—भाव वा० ।

वित्थरणी, वित्थरवो, वित्थरणी, वित्थरवो, विथुरणी, विथुरवो,
विसतरणी, विसतरवो, विस्तरणी, विस्तरवो, वीथरणी, वीथरवो,
वित्तरणी, वित्तरवो, वित्थरणी, वित्थरवो, विथुरणी, विथुरवो,
विसतरणी, विसतरवो, विसत्तरणी, विसत्तरवो, विसथरणी, विस-
थरवो—रू० भे० ।

विस्तरता—स स्त्री [स] बहुत या अधिक होने की अवस्था या भाव ।

विस्तरवद—देखो 'विस्तरवद' (रू भे)

विस्तरियोडी—भू का कृ—१ उच्चरित हुवा हुआ, ध्वनित हुवा हुआ,
गू जा हुआ २ विस्तार पाया हुआ, व्याप्त हुवा हुआ, फैला
हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, आनन्दित हुवा हुआ. ४ बिखरा
हुआ, छितरा हुआ. ५ गमन किया हुआ, गया हुआ. ५ हरा
भरा हुआ हुआ, लहलहाया हुआ ।
(स्त्री विस्तरियोडी)

विस्तरियो—देखो 'विस्तर' (अल्पा., रू भे)

विस्तार—स पु [स.] १ प्रसार, फैलाव ।

उ०—सिव सत्ती का सब विस्तारा, ब्रह्मा कीट लग कर रे । इनमे
ई उत्पति धिति अरु लयता, निज स्वरूप निरपख रे ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—२ अकास लील नगर गधरव का, इद्रजाळ आकार । जाग्रत
भवकार्युं जोय २ जोगुण, मन कल्पित विस्तारा ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

उ०—३ वधवाणी तू ऐक ब्र म. ओर्जकार अपार । किमि करि
कीधी काळिका, विसव तरा विस्तार । —पी. अ

उ०—४ केतेक दिन तपस्या करि आराम लगाया । तिस काक-
रिख के नाम कागा कहाया । तिस वगीचू के दरम्यान वरणै जेत
फळ फूलू का विस्तार । सबू के सिर पोस आनारू का अधिकार ।

—सू प्र.

उ०—५ मैला मिनख वचन रे मर्थ, बात बणाय करे विस्तार ।
वैठ समा विच मूंडा वारै, वचन काढणी वहुत विचार ।

—वा. दा.

२ वृक्ष की शाखाए ।

३ अधिकता, बाहुल्यता ।

उ०—तठे केसरिये साह ठकुरे साह नू पूछी कही, "जी साहजी, इतरी थाहरे माया री विस्तार हती, सु किसी भाति गयो, सु मनै कही ।
—ठकुरे साह री बात

४ वृत्तान्त, विवरण ।

ज०—१ तिण समय दिली पातिसाह श्रीसेरसाह राज करे छै । तिण रे पुत्र सलेमसाह साहिजादो बडो अदली हुयो । तिण समै जोधपुर राव मालदे राज करे छै । विस्तार आगे लिखीजसो ।

—द वि

उ०—२ तिण अनुसारं मंडाय कोई सधेप हुती तिण नै उनमान न्याय जण नै बघारयो । विस्तार जाण नै सकोच्यो । तिण में कोई विरुद्ध आयो हुवै ।

—मि. द्र

उ०—३ स्वामीजी फेर कही आर्प करे । पछे चद्रभाण तिलोकचद दोनू जणा मान अहकार रे बस टोला वारं निकल्या । तै सह विस्तार ती स्वामीजी क्रत रास थी जाणवो ।

—मि द्र

उ०—४ पाच पाच सो दीघा दात, सोनी रूपी ग्रहण सघात । राछ पीछ बडारण गाय, विस्तार सूत्र भगवती माय ।

—जयवाणी

रु. भे —विथार, विसतार, विस्तर, विस्तार, वित्थर, वित्यार, विथार, विसतर, विसतार, विसतारी, विसयार, विसार, विस्तर, विस्तारि, वीसार ।

विस्तारक—वि.—विस्तार करने वाला ।

रु. भे —विसतारक ।

विस्तारण—स स्त्री.—विस्तार या प्रसार करने की क्रिया या भाव ।

रु. भे —विसतारण ।

विस्तारणो, विस्तारवो—क्रि स —विस्तार करना, फैलाना ।

उ०—१ जब परीसदा वादण नीकली, सुण आयो 'सुवाहु' कुमारी' रे । वादे बँठी छै भुग आगलं, धीर वाणी कही विस्तारी रे ।

—जयवाणी

उ०—२ साधवा मुक्तिका वास बदा सह, भिक्खम स्वाम सिद्धंत है भारी । स्वामी पर भाव कै साधन साच है, वाचं है सूत्रकला विस्तारी ।

—मि द्र.

उ०—३ 'एक चद्र सूरधनी प्रभा आपणी काती करी पराभवइ एक स्त्री पुरुख योग्य दिव्योपभोग्य आभरण विस्तारइ एक चक्र-वरशिनी रसोई पाहिइ अनत गुण सुस्वाद अट्टोत्तरसस खाद्य ' ।

—व स.

२ विखेरना, छितराना ।

३ ध्वनित करना, उच्चरित करना ।

४ बढोतरी करना, घडाना ।

५ हिलाना-डुलाना ।

६ प्रचार करना ।

उ०—धरमकथा अनुयोगमेजी, धरमकथा द्रस्टात । ए चारो विस्तारिया जी, पैतालिस मिद्धात ।

—वृस्त

विस्तागणहार, हारो, (हारो), विस्तारियो—वि० ।

विस्तारियोडो, विस्तारियोडो, विस्तारयोडो—भू० का० छ० ।

विस्तारीजणो, विस्तारीजवो—कर्म वा० ।

विथारणो, विथारवो, विसतारणो, विसतारवो, विस्तारणो, विस्तारवो, वित्यारणो, वित्यारवो, विथाराणो, विथारवो, विसतारणो, विसतारवो, विसयारणो, विसयारवो—रु० भे० ।

विस्तारि—देखो 'विस्तार' (रु. भे)

उ०—चऊद राज ऊपरि विस्तारि, सिद्धसिला छइ छयाकारि । अनेक सुख छइ सिद्ध विलसत, सुखह तणठ तै पार न लहति ।

—वस्तिग

विस्तारियोडो—भू. का छ —१ विस्तार किया हुआ, प्रसार किया हुआ, फैलाया हुआ. २ विखेरा हुआ, छितराया हुआ ३ ध्वनित किया हुआ, उच्चरित किया हुआ । ४ बढोतरी किया हुआ, बढाया हुआ. ५ हिलाना-डुलाना हुआ ६ प्रचार किया हुआ । (स्त्री. विस्तारियोडो)

विस्तारी—वि [स. विस्तारिन्] जिसका विस्तार अधिक हो ।

विस्तारण—वि. विस्तीर्ण] १ विस्तृत, फैला हुआ ।

२ बहुत लम्बा-चौड़ा ।

रु. भे.—वित्थारण ।

विस्त्रत, विस्त्रित—वि. [स. विस्तृत] १ फैला हुआ, विस्तरित, व्याप्त ।

२ लम्बा-चौड़ा ।

३ विपुल, परिव्याप्त ।

४ जिसका विवरण यथेष्ट हो ।

विस्न—१ देखो 'विस्णु' (रु. भे)

उ०—१ दुख सुख गौटा ऊछळ, माया मद पीया । ब्रह्मा विस्न महेश लो, वाजी वसि कीया ।

—ह. पु वा

उ०—२ गवगीय नदन वीनव् जी, श्रीहरि सुरतइ आणि ।

विस्न तणी वीवाहिलो जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण ।

—रुकमणी मगळ

उ०—३ रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण करी नइ, विस्न तणी वीवाह ।

सुंडा डवर करि धर फरसी, लीला लोचन चाह ।—रुकमणी मगळ

२ देखो 'व्यसन' (रु. भे)

विस्नी—देखो 'व्यसनी' (रु. भे)

विस्पला—सं स्त्री. [स विस्पला] एक बहुत ही वीर स्त्री जो खेन नामक राजा की पत्नी थी ।

वि वि —कहते हैं कि युद्ध में इसके एक पैर के टूटने पर अश्विनो ने इसे लोहे का पैर प्रदान कर युद्ध करने योग्य बनाया था ।

विस्फार—स. पु [स] १ धनुष की टकार ।

२ धनुष की डोरी ।

३ कम्पन, सिसकन ।

विस्फारित—वि [स] १ टनारा हुआ, खंचा हुआ ।

२ कम्पायमान किया हुआ, थरथराता हुआ ।

विस्फुरणी, विस्फुरबौ—क्रि अ —१ कापना, कम्पित होना ।

२ डरना, भयभीत होना ।

३ हिलना डुलना ।

विस्फुरणहार, हारो (हारी), विस्फुरणियो—वि० ।

विस्फुरिओडो, विस्फुरियोडो, विस्फुरचोडो—भू० का० कृ० ।

विस्फुरीजणो, विस्फुरीजबौ—भाव वा० ।

विस्फुराणो, विस्फुराबौ—क्रि. स —१ कम्पित करना, कम्पाना ।

२ भयभीत करना, डराना, हिलाना-डुलाना ।

विस्फुराणहार, हारो, (हारी), विस्फुराणियो—वि० ।

विस्फुरायोडो—भू० का० कृ० ।

विस्फुराईजणो, विस्फुराईजबौ—कर्म वा० ।

विस्फुरायोडो—भू. का. कृ.—१ कम्पित किया हुआ. २ भयभीत किया हुआ, डराया हुआ ३ हिलाया-डुलाया हुआ ।
(स्त्री विस्फुरायोडो)

विस्फुरियोडो—भू. का. कृ.—१ कांपा हुआ, कम्पित हुआ हुआ. २ हिला-डुला हुआ ३ डरा हुआ, भयभीत हुआ हुआ ।
(स्त्री. विस्फुरियोडो)

विस्फोट—स. पु [सं] १ भूमि के अन्दर की भरी हुई आग, गर्मी आदि

के फूट कर बाहर निकलने की क्रिया ।

२ उक्त क्रिया के परिणामस्वरूप होने वाला शब्द ।

३ एकत्र गैस, बारूद आदि के अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलने की क्रिया ।

४ उक्त क्रिया के कारण उत्पन्न शब्द ।

क्रि. प्र —करणी, होणी ।

५ जहरीला या खराब फोडा ।

६ एक प्रकार का कोढ़ नामक रोग ।(अमरत)

विस्फोटक—स पु [स.] १ गर्मी या आघात से भस्मकने वाला पदार्थ ।

२ जहरीला फोडा ।

३ शीतला रोग, चेचक ।

४ छत्तीस प्रकार के अस्त्र-शस्त्रो में से एक ।

उ० मुरवि अर्द्धमुरवि परसु पास पट्टिस दूस लागूल मुसल मुखडि मुन्दर लगुड गदा दड भिडपाल गाजीव विस्फोटक वज्र तरवारि प्रमुख ३६ खट खटत्रिस दडा युधानि । —व. स

रू भे —बिसफोटक, विस्फोटक, विसफोटक ।

विस्फोटणो, विस्फोटबौ—क्रि अ.—१ भूमि के अन्दर की आग, गर्मी आदि का फूट कर बाहर निकलना ।

२ एकत्र गैस, बारूद आदि का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकलना ।

३ जहरीला फोडा होना ।

क्रि स —४ एकत्र गैस, बारूद आदि को अग्नि, ताप या आघात आदि से बाहर निकालना ।

विस्फोटरणहार, हारो (हारी), विस्फोटरणियो—वि० ।

विस्फोटिओडो, विस्फोटियोडो, विस्फोट्योडो—भू० का० कृ० ।

विस्फोटीजणो, विस्फोटीजबौ—भाव, कर्म वा० ।

विस्फोटता—स स्त्री — अग को भालस्य आदि के कारण मोड़ने की क्रिया ।

उ०—समस्त सेना दिसि द्रस्टि करि देख्यो । पाछै क्यो थोडो सो

हस्या । पछै क्यो थोडो सो आळस क्यो । अग विस्फोटता क्यो ।

जभाई भाई पाछै क्यो थोडा-थोडा चाल्या गति दिखाई । पाछै

क्यो एक संकुच्या । ए पाचौं बाण सेना नै लाग्य । —वैलि टी.

विस्फोटियोडो—भू. का. कृ.—१ भूमि के अन्दर की आग का, गर्मी आदि

के कारण फूटकर बाहर निकला हुआ । २ एकत्र गैस बारूद आदि

का अग्नि या ताप के कारण बाहर निकला हुआ. ३ जहरीला,

फोडा हुआ हुआ । ४ एकत्र गैस बारूद आदि को अग्नि या

आघात आदि से बाहर निकाला हुआ ।

(स्त्री. विस्फोटियोडो)

विस्मय—स. पु [सं] १ आश्चर्य, ताज्जुब ।

उ०—१ तद वखतसिह जी विस्मय में पड अबोला सा रहिया ।

—मारबाड रा अमरावां री वारता

उ०—२ बादल लै आदेस गीरा रावत तणो, सुभट मित्या तिहां

जाय साहस मन में घणो । देखि सभा सगली मनमई विस्मय थई

आवइ नहिं दरबार कर्द क्यो आवई । —प. व चौ.

२ अद्भूत रस का स्थायी भाव । (साहित्य)

३ अभिमान, अहकार, गर्व ।

रू. भे.—बिसमय, विसमय, विसर्ग, विस्मय, विसमय, विसर्ग,

विसर्ग, विसम्य विस्मि, विस्मिय ।

विस्मयकारी—वि. [स. विस्मयकारिन्] आश्चर्यान्वित करने वाला,

ताज्जुब में डालने वाला ।

उ०—हे सकळगुणो सिरमोर ! माया रा चित्र बडा विचित्र,

विस्मयकारी, बहुगुण भरिया हुआ जाणो । बाहरी ससार माहो

जिसा नदी परवत बन अर नगर दोसै है जिका सगळा ही था
अतरजगत काया माही जायो । —सिंघासण वत्तीसी

विस्मरण—स पु [स] भूल जाने या याद न रहने की अवस्था या भाव
रू भे —विस्मरण, विस्मरण, विस्मरण, विस्मरण ।

विस्मरणो—वि —भूलने वाला, जिसे याद न रहता हो ।

विस्मरणो, विस्मरबो—कि स —भूल जाना, याद न रहना ।

विस्मरणहार, हारो, (हारो), विस्मरणीयो—वि० ।

विस्मरिओडो, विस्मरियोडो, विस्मरघोडो—भू० का० कृ० ।

विस्मरीजणो, विस्मरीजबो—भाव वा० ।

विस्मरणो, विस्मरबो, विस्मरणो, विस्मरबो, विस्मरणो,
विस्मरबो—रू० भे० ।

विस्मरियोडो—भू का. कृ —भूला हुआ, याद न रहा हुआ ।

(स्त्री विस्मरियोडो)

विस्मल्ला, विस्मल्लाह—देखो 'विस्मल्लाह' (रू भे.)

विस्मारक—वि [स.] भूला देने वाला, विस्मरण करा देने वाला ।

विस्मि—देखो 'विस्मय' (रू भे)

उ०—गिणता राइ 'दस' कस्यु, तव दसु भूपति नाग । करूप
अति राजा थयु विस्मि तै जोई लाग । —नळास्थान

विस्मित—वि. [स]—आश्चर्ययुक्त, आश्चर्यान्वित, चकित ।

उ०—ती राणो विस्मित होय नापै नू बुलायो, एकात मे ले जाय
कही जं राठोड मडोवर कद आया । —नापै साखलै री वारता
रू. भे —विसमत, विसमित, विसमत विसमित, विसमै ।

विस्मिता—स. पु —एक प्रकार का वर्णिक छंद विशेष जिसमे यगण,
मगण, नगण, सगण, दो रगण एव अन्त मे गुरु होता है । तथा छ
छ तथा सात पर यति होती है ।

विस्मिय—देखो 'विस्मय' (रू. भे.)

उ०—दीठु जाणै प्रत्यक्ष काम, मानी देव, को करि प्रणाम ।

विस्मिय पामी गजगामिनी, सघली रूप जोई कामिनी ।—नळास्थान

विस्मिले—देखो 'विस्मिल' (रू भे)

विस्मिल्ला, विस्मिल्लाह—देखो 'विस्मिल्लाह' (रू भे)

विस्र खल, विस्र खला—वि [स. विश्रखल] ? जिसमे श्रुखला नहीं हो,
श्रुखलारहित ।

२ जो किसी प्रकार दबाया या रोका न जा सके ।

३ दुराचारी, लपट ।

विस्र भ—स पु. [स विश्रम्भ] ? दृढ विश्वास ।

२ प्यार, प्रेम, मुहब्बत ।

३ विश्राम ।

४ मैथुन के समय होने वाला प्रेमी-प्रेमिका का झगडा ।

विस्र भो—वि [स विश्रम्भो] ? विदवास करने वाला ।

२ प्रेम या मुहब्बत सम्बन्धी ।

विस्र—स. पु —खून, रक्त । (डि. को)

रू भे—विस्र ।

विस्रब्ध—वि [सं. विश्रब्ध] ? जिसका विश्वास किया जाय ।

२ जो विश्वास करे ।

३ निर्भय, निडर ।

४ जो उद्धत न हो, सुशील ।

विस्रव, विस्रवा—सं. पु. [स विश्रवस्] ? पुलस्त्य ऋषि एव हविभूँ
के पुत्र और कुवेर, रावण आदि के पिता का नाम ।

वि. वि —इसके करीब नी पत्निया थी । इसकी इडविडा नामक
पत्नी से कुवेर, दूसरी पत्नी केकसी के गर्भ से रावण कुम्भकरण,
विभीषण, नामक तीन पुत्र एव क्षुर्पणखा नामक एक कन्या, तीसरी
पत्नी राका के दूषण आदि तीन पुत्र एवं चौथी पत्नी पुष्पोत्करा से
खर आदि चार पुत्रो का जन्म हुआ था ।

२ लकापति रावण ।

उ०—सख बडो तू सख, सख आरध सवाहै ।

गदा पदम चक्र ग्यान, विस्रव ऊपरि लै वाहै । —पी. प्रं.

३ पुलस्त्य ऋषि के वंशज ।

४ तूणविन्दु का पुत्र एन राजा ।

५ ख्याति, प्रसिद्धि, कीर्ति ।

६ विशाल राजा का पुत्र एक राजा ।

[स. विश्रव] ७ आश्रय ।

विस्रान्त—वि [स विश्रान्त] ? जिसने आराम किया हो ।

२ शान्त, सुशील ।

३ पीछे रहा हुआ, रहित ।

४ देखो 'विस्राति' (रू. भे.)

विस्रान्ति—स स्त्री [स. विश्रान्ति] ? विश्राम, आराम, ।

२ अवसान, मोत मृत्यु ।

३ एक तीर्थ का नाम । (पुराण)

रू भे—विसाई, विसाई, विसाणी, विहाणी, बिहामी. विसाई,
विसाणी, विहाणी ।

विस्राम—देखो 'विसराम' (रू. भे.)

उ०—१ निरद्वद नाथ, आलम अनाथ, वह सस्तीवार,
प्रळयात पार । विस्राम व्यूढ, गोतीत गूढ, निरगुण निरीह, आघार
ईह । —ऊ. का.

उ०—२ तटै आगवी खाग हु छाग तोडै, चडी काळिका मात रै झोण चौडे । लगवै सबै सेस विदी ललाटा, करै फेर विश्राम पाखै कपाटा ।
—मे म

उ०—३ कनक महल रतनन जटत सर्वे पुरी कै धाम । कनक कीटी पीरी कनक, वाय तयो विश्राम ।
—गज उद्धार

उ०—४ एहवा पालखा में राव नै बेसाण हवा खावा निकल्या । माथै मनुख आगे पाछै घणा गाम वारै आया । जब खेत कर्नै रूख री छाया विश्राम लियी । जद करसणी वील्या—घटै मा बाली रे । मा बाली । छोहरा छोहरी वीहेला ।
—भि द्र

विश्रामणी, विश्रामवौ—देखो 'विसरामणी, विसरामवौ' (रू भे)

उ०—१ जिसड' मोटी राजडवाळ' गयी तिसड' परिया रामसिंघजी पधारिया । ओयि आरोगण लाग्ना दाढी समराडी । बहू विश्रामी पछै तिण दिन दाढी समराडी ।
—द वि.

उ०—२ राजाजी भोपतजी थका कुवर दळपतजी नू उची करि, झालियो हुतौ अर भोपतजी विश्रामिये पछै ज्यू भोपति नू कसता तिम दळपतजी नू कसणी माहे कियो
—द वि.

विश्रामणहार, हारी (हारी) विश्रामणियो—वि० ।
विश्रामिओडो, विश्रामियोडो, विश्राम्योडो—भू० का० कृ० ।
विश्रामीजणो, विश्रामीजवो—भाव वा० ।

विश्रामियोडो—देखो 'विसरामियोडो' (रू. भे)

(स्त्री विश्रामियोडी)

विश्रामी—देखो 'विसरामी' (रू भे)

वल्लामु—देखो 'विसराम' (रू भे)

उ०—दव जिम दीठड करण ए करणइ ए हियु निकामु । मरुठ वरुठ दमनकी मन किह नही य विश्रामु ।
—जयसेखरसूरि

विश्राल, विश्राल, विश्राली, विश्राली, विश्राली—देखो 'विस-राळ'
(रू भे.)

उ०—नारी चीतवइ एहवू, जु नल हुइ मरु चित्ति । सती प्रमाविइ ए हुज्यो, विश्राल धाज्यो भक्ति ।
—नळदवदती रास

विश्रुत-स पु [स विश्रुत] १ वसुदेव एव सहदेवो के पुत्रो मे से एक यादव राजकुमार ।

२ अमिताभ देवो में से एक ।

३ पारावत देवो मे से एक ।

४ जनकवध के देवमीठ के पुत्र और महाघृति के पिता का नाम ।

वि—१ जाना या सुना हुआ ।

२ प्रसिद्ध, विख्यात ।

३ प्रसन्न, हर्षित ।

विश्रुतवत-स पु [स विश्रुतवत] सरस्वत राजा का पुत्र एव बृहद्वल राजा का पिता एक राजा ।

विश्रुतात्मा-स पु [स. विश्रुतात्मन्] भगवान श्रीविष्णु ।

विश्रुति-स स्त्री. [स विश्रुति] प्रसिद्धि, श्रुति ।

विश्रुय-वि [स. वि.=विशेष श्रेयम्] १ विशेष श्रेष्ठता वाला, उत्तम, श्रेष्ठ ।

[स. वि.=रहित+श्रयस्] २ श्रेष्ठता रहित, बुरा, नीच ।

उ०—धेय की विधान साधि ध्यान ना धरथो, गेय हो अग्रयान तै प्रमान ना परथो । क्रय श्री विक्रय कथा काजतै करथो । श्रेय की विश्रुय साज लाज ना मरथो ।
—ऊ. का

विश्रुथ-वि. [स विश्रुथ] १ शिथिल ढीला ।

२ सुस्त, थका हुआ ।

विश्रुस-स. पु. [स विश्रुस] १ अलग या पृथक होने की क्रिया या भाव ।

२ प्रेमियो या पति-पत्नी का विच्छेद, विधोग ।

३ थकावट सुस्ती ।

४ शिथिलता, ढीलापन ।

विश्रुसण-स पु [स विश्रुसण] १ किसी पदार्थ आदि के संयोजक द्रव्यो की अलग-अलग करने की क्रिया ।

२ वायु के प्रकोप से फोडे या घाव मे होने वाली एक प्रकार की वेदना ।

विश्रुसणात्मक-वि. [स विश्रुसणात्मक] जिसका विश्रुसण किया जा सकता हो ।

विश्रुलोक-स पु. [स विश्रुलोक] एक मात्रिक छंद विशेष जिसमें १६ मात्राएँ होती हैं और पाचवी व आठवी मात्रा लघु होती है और यहीं पर यति होती है ।

विश्रुतर-स. पु [स विश्रुतर] भगवान बुद्ध ।

विश्रुभर-स. पु [स विश्रुभर] १ समस्त समार का पालन-पोषण करने वाले, भगवान विष्णु का नामान्तर ।

उ०—नमो अग्राह्याह स्रवन पुट सारु सत नमो, नमो लोका-ध्यक्षा अत विजय लक्ष्मणा पत नमो । नमो विश्वाधारी अनळ अघहारी विभु नमो, नमो भूभूरव स्व प्रवन सुत विश्रुभर नमो ।
—ऊ का

२ देवराज इन्द्र ।

३ अग्नि देवता ।

४ एक उपनिषद् ।

रू. भे—विसभर, विश्वभर, वसंभर, विसभर, विसभर, वीसभर ।

विश्रुभरा-स स्त्री [स विश्रुभरा] पृथ्वी, भूमि । (डि को)

२ दुर्गा, देवी, शक्ति ।

विश्वनत-स. पु [स विश्वनत] जनकवशीय एक राजा ।

विश्वनद-स पु [स विश्वनद] ब्रह्मा के एक परम तेजस्वी शिष्य का नाम ।

विश्वनाथ-स पु [स. विश्वनाथ] १ काशी का एक ज्योतिर्लिंग ।

२ शिव, महादेव । (अ. मा)

उ०—भी मेदि उभे ससार भव, इम कुण वृळ सद्धारसी ।
पगसियो राय जोधहपुरे, विश्वनाथ वाणारसी । —गु रु. व

३ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

रू भे—विसवनाथ ।

विश्वनाभ-स पु [स विश्वनाभ] १ भगवान् श्रीविष्णु ।

२ देखो 'विश्वनाभि' (रू. भे)

विश्वनाभि-स पु. [स विश्वनाभि] १ भगवान् श्रीविष्णु का सुदर्शन चक्र ।

२ देखो 'विश्वनाभ' (रू. भे)

विश्वपति, विश्वपति, विश्वपती-स. पु. [स विश्वपति] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ श्रीकृष्ण का नामान्तर ।

३ मनु नामक अग्नि के एक पुत्र का नाम

रू भे.—विसपत, विसपति, विसपती ।

विश्वपा-स पु [स विश्वपा] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चन्द्रमा, चाद ।

४ आग, अग्नि ।

विश्वपातरी विश्वपात्री-स पु [स विश्वपातृ] पितरो में से एक ।

विश्वपाळ-स पु [स विश्वपाल] १ 'ससार का भरण-पोषण कर्ता, ईश्वर, विष्णु ।

२ हिरण्यनाभ कौशल्य का पिता एव व्युत्थिताश्व का पुत्र एक राजा ।

रू भे.—विसपाळ ।

विश्वपावन, विश्वपाविनी-स स्त्री [स विश्वपावन] १ तुलसी ।

२ सूर्य, सूरज ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आग, अग्नि ।

विश्वपूजिता-स स्त्री [स विश्वपूजिता] तुलसी ।

विश्वप्रकाशक-स पु [स विश्वप्रकाशक] सूरज, सूर्य ।

विश्वप्रबोध-स पु [स. विश्वप्रबोध] भगवान् विष्णु ।

विश्वासन-स. पु [स विश्वासन्] १ देवता ।

२ सूरज, सूर्य ।

३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ अग्नि, आग ।

विश्वबधु-स पु [स विश्वबधु] शिव महादेव ।

विश्वबाहु-स. पु. [स विश्वबाहु] १ विष्णु ।

२ शिव, महादेव ।

विश्वभग्ता, विश्वभरता-स पु [स विश्वभर्तृ] ईश्वर, परमात्मा ।

विश्वभावन-स पु [स. विश्वभावन] १ ईश्वर, परमात्मा ।

२ रक्त नामक वीसवें कल्प मे उत्पन्न ब्रह्मा का एक मानस पुत्र ।

विश्वभुज, विश्वभुजा-स स्त्री [स विश्वभुज] १ एक देवी का नाम । (पुराण)

स पु—२ ईश्वर, परमात्मा ।

३ देवराज इन्द्र ।

४ पाकयज्ञ का अग्निदेवता जो ब्रह्मस्पति के चार पुत्रों में से चौथा पुत्र था और गोमती नदी का पति था ।

५ पितरो मे से एक ।

वि—सव का उपभोगकर्ता, सर्वभक्षी ।

विश्वभूखण, विश्वभूसण-स. पु [स विश्वभूषण] एक सूर्यवशी राजा (रा. वसावली)

विश्वमया-स. स्त्री [स विश्वमया] अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक जिह्वा का नाम ।

विश्वमहेश्वर-स पु. [स. विश्वमहेश्वर] १ शिव, महादेव ।

विश्वमाता-स स्त्री [स विश्वमाता] विश्व की माता, दुर्गा ।

विश्वमित, विश्वमितर, विरवमित्र, विश्वमीत—देखो 'विश्वामित्र' (रू. भे)

उ०—पेडा री छाया बँठघी ही, विश्वमित्र तप ग्यानी । चितन घणोमगन हो, ही परम लोक री घ्यानी । —करणीदान बारहठ

विश्वमुखी-स. स्त्री [स विश्वमुखी] पार्वती ।

विश्वमूर्ति, विश्वमूर्ती, विश्वमूर्ति-स स्त्री [स विश्वमूर्ति] सर्वव्यापी भगवान् विष्णु ।

विश्वमोहन-स पु. [स. विश्वमोहनम्] विष्णु का नामान्तर ।

विश्वयोनि, विश्वयोनी-स. पु. [स. विश्वयोनि] ससार के सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ।

२ विष्णु ।

रु. भे.—विसवजूण, विसवजोनि, विसवयोनि, विश्वजूण, विश्वजोनि ।

विश्वरधी—स पु. [स विश्वरधि] इक्ष्वाकुवंशीय एक राजा का नाम ।

विश्वर—देखो 'विसर' (रु. भे.)

उ०—नाडोलाई रो सोभाचद सेवग वावेचा कहथा—भीखणजी खैरवै है सो त्यारा अवरणवाद विश्वर जोड । सतरै प्रकार नी पूजा रचै है तिण माहीं सूं तोन दस बीस रुपया देस्या । जद सोभाचद बोल्या—भीखणजी सू वात करनै पछै विश्वर जोडसू —भि. द्र

विश्वरथ—देखो 'विश्वमित्र'

विश्वराजा—स. पु.—एक सूर्यवंशी राजा का नाम । (रा. वसावळी)

विश्वरुचि, विश्वरुची—स. पु. [स. विश्वरुचि] १ एक देव योनि ।

[स विश्वरुची] २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम ।

विश्वरूप—स पु [सं विश्वरूप] १ श्रीकृष्ण । (ना. मां.)

२ श्रीविष्णु ।

३ शिव, महादेव ।

४ चौसठ भैरवों में से एक भैरव का नाम ।

५ शिवकल्प के पश्चात् प्रारंभ हुए एक कल्प का नाम ।

६ गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखाया गया भगवान् श्रीकृष्ण का बहुस्वरूप जिसके अनुसार उन्होंने समझाया कि ब्रह्मांड में सूर्य, चन्द्रमा, तारे ग्रह आदि जो कुछ है वे सब मेरा ही स्वरूप हैं ।

७ एक प्राचीन तीर्थ ।

८ त्वष्टा का एक त्रिमूर्ती पुत्र जिसे इन्द्र ने मारा था ।

विश्वरूपविस्तार—स पु—श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

विश्वरूपा—स स्त्री. [स विश्वरूपा] १ एक देवी ।

२ धर्म ऋषि की पत्नी, जिसकी कन्या का नाम धर्मव्रता था ।

विश्वरूपी—स पु [स. विश्वरूपिन्] भगवान् श्रीविष्णु ।

विश्वरेतस—देखो 'विश्वरेतस' (रु. भे.)

विश्वलोचण, विश्वलोचन—स पु [स विश्वलोचन] १ सूरज, सूर्य ।

२ चांद, चन्द्रमा ।

विश्वलोप—स पु [स. विश्वलोप] एक वैदिक ऋषि का नामान्तर ।

विश्ववसु—स पु. [स विश्ववसु] जमदग्नि एवं रेणुका एक पुत्र ।

विश्ववारा—स स्त्री. [स विश्ववारा] एक अग्निगोत्र की स्त्री, जो ऋग्वेद के पाचवें मंडल की ऋचाओं की ऋषि थी ।

विश्वविद्यालय—स पु. [स विश्वविद्यालय] सभी प्रकार के विषयों की

ऊँच कोटि की शिक्षा देने व उपाधिया प्रदान करने वाली शैक्षणिक संस्था विशेष ।

विश्वसनीय—वि [स. विश्वसनीय] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

विश्वसहा—स स्त्री. [स विश्वसहा] १ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा का नाम ।

२ भूमि, पृथ्वी, (हिं को)

विश्वसाक्षी, विश्वसाक्षी—स पु [स विश्वसाक्षी] ईश्वर, परमात्मा ।

विश्वसित—देखो 'विश्वस्त' (रु. भे.)

विश्वसेन—स पु [स विश्वसेन] १ शान्तिनाथजी के पिता एक राजा । (जैन)

उ०—विश्वसेन पिता अचिरा माया, जेणुं चउदै सुपना मोटा पाया । जनम्या तीरथकर अमिय भरी, स्त्रीसाति जिनेश्वर साति करी । —जयवाणी

२ एक सूर्यवंशी राजा का नाम । (रा. वसावळी)

विश्वस्त—वि [स विश्वस्त] जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वसनीय ।

विश्वस्ता—स स्त्री. [स विश्वस्ता] वह स्त्री, जिसका पति मर गया हो विधवा ।

विश्वस्त्रवा—स पु. [सं विश्वस्त्रवा] कुवेर एवं लकापति रावण के पिता एक मुनि ।

उ०—ब्रह्मपति पुत्र पुलहकत (भारथा मनभवा) तस्य पुत्र भारद्वाज । पुलहस्त भारथा साति, तस्य पुत्र विश्वस्त्रवा । विश्वस्त्रवा पुत्र कुवेर । कुवेर पुत्र नलकुवर । —रा. वसावळी

विश्वहरता, विश्वहरता—स पु [स विश्वहर्तृ] शिव, महादेव ।

विश्वहेतु—स पु [स विश्वहेतु] भगवान्, श्रीविष्णु ।

विश्वा—स. स्त्री [स विश्वा] १ राजा दक्ष की कन्या, जो धर्म को व्याही गई थी ।

२ भारतवर्ष की एक महा नदी ।

३ सोंठ । (ना मा.)

विश्वगाथा—स. स्त्री. [स विश्वगाथा] गाथा छंद का एक भेद विशेष, जिसमें ६ गुरु और ३६ लघु अर्थात् ४२ वर्ण या ५७ मात्राएँ होती हैं ।

विश्वाघात—देखो 'विश्वघात' (रु. भे.)

उ०—राजाजी चिमकनै बोल्या—हैं, अरे तो दीवाणजी ! अर्ब ठा पडी ! तो भा सगळी कुचमाद आ दीवाणजी रो ही । इत्तो

ह. भे.—विसवामित्र, विश्वामित्र, विसवामित्र, विसवामित, विसवा
मितर, विसवामिति, विसवामित्र, विसुवामित, विसुवामितर,
विसुवामिति, विसुवामित्र, विश्वमित, विश्वमितर, विश्वमित्र,
विश्वमीत ।

विश्वामित्रा—स स्त्री. [स.विश्वामित्रा] भारत में बहने वाली एक नदी ।
विश्वामित्र—सं पु. [सं विश्वामित्र] पुरुरवस् राजा के छ पुत्रों में से एक जो
राजा था ।

विश्वामित्र—सं पु [स विश्वामित्र] १ एक गन्धर्व का नाम जो कश्यप
एव प्राथा के पुत्र थे । (पुराण)

वि. वि.—इनके दो पुत्रिया थी । पहली पुत्री महासती मदालसा
थी, जिसे पातालकेतु विवाहार्थ हर ले गया था किन्तु शत्रुजित्
के पुत्र ऋतध्वज ने पातालकेतु को मारकर इससे विवाह किया था
और दूसरी पुत्री का नाम प्रमदरा था जो मेनका नामक अप्सरा से
उत्पन्न हुई थी । पृथु महाराज के द्वारा पृथ्वी को गाय रूप में दूहते
समय गन्धर्वों व अप्सराओं ने इन्हें बछड़ा बनाकर कमल पात्र में
गन्धर्व विद्या (सगीत) व सौंदर्य द्रुह लिया था ।

२ श्रावण माह के सूर्य के साथ भ्रमण कर्ता एक गन्धर्व ।

३ विष्णु का नामान्तर ।

४ जमदग्नि ऋषि के पाच पुत्रों में से एक जो महान ऋषि था ।

५ साठ सवत्सरों में से ३६ वा और विष्णु बीसी के उन्नीसवें
सवत्सर का नाम ।

६ धर्म एव सुदेवी के पुत्रों में से एक, वसु ।

७ मधु राक्षस की पत्नी कुम्भिनसी का पिता एव माल्यवत राक्षस
की कन्या का पति, एक राक्षस ।

८ पुरुरवस एव उर्वशी के पुत्रों में से एक, गन्धर्व ।

विश्वावीस—देवी 'विसवावीम' (रू भे)

७०—१ छं सद्दु नै सुख ए जगदीम, चाणी तेहनी, विश्वावीस ।
प्रख्या आगम पेंतालीस, सख्या नाम कहूँ सुजगीस ।

—घ व. ग्र.

७०—२ धण जोवै नित राजरी, वाटा विश्वावीस । किय दिन
आय करावस्यौ, घर लीला री हीस ? —अग्यात

विश्वास—स. पु [स विश्वास] १ मन में किसी व्यक्ति, बात या वस्तु
के कारण उत्पन्न होने वाला भाव, भरोसा, ऐतबार, यकीन, ।

७०—१ देवता पाण सेठ री जीव राजी विह्यौ । उण री निजरा
आगै सा' व अर मेंमडी रा हमतीडा उणियारा फिरण लाग्या ।
सेठ नै पक्कायत विश्वास व्हैग्यौ के हीरी वाने सोळू आना दाय
धावेला । —अमर चूँनडी

७०—२ तथा लीका नै साधा सू भिडकावै । जद स्वामीजी

बोल्या—आगै भगू पुरोहित पिय वेटा नै भिडकाया । कह्यौ
साधा री विश्वास कीज्यो मती । —भि. द्र.

२ किसी विषय, सिद्धांत आदि की सत्यता का पूरे प्रमाण के अभाव
में उसकी सत्यता के सम्बन्ध में होने वाली मन की धारणा ।

७०—लुगाई मे अकल अर हीमत व्है तो ई वा काम में नीं बरती-
जै । बरतीजण री कीं भारण ई कोनी । पूतळी री पूजा करता
भगत नै तो श्री विश्वास रैव के भगवान विना कह्या ई उण रै
मन री सै वाता जाणती व्हैला । —फुलवाडी

३ मन में होने वाला वह दृढ निश्चय जो केवल अनुमान पर
आधारित हो ।

७०—इतरा नै तो एक लठु म्हारी खोपडी पर पडियो अर म्हु
पडती पडती बच्यौ । अरवै म्हुने पक्को विश्वास व्हैग्यौ ही के आ
कोई प्रेत लीला नही पण मानखा लीला ही । —रातवासी

४ यकीन एतबार, भरोसा ।

७०—१ घात व्हैणी व्हैती तो कदैई व्है जाती । धनजी-भीमजी
माथे आपरी विश्वास है जिको चोखी इज है, पण काई ए दो
आदमी दरवार सू ई वत्ता सामरथ है ? दरवार तो आप रै
माथे पूरा मेहरवान है । —अमर चूँनडी

७०—२ धक्की महाराणी फेर मासी रै पगा हाथ लगाय कह्यौ—
थू श्री विश्वास राख के थारी काली भाणजी कदै ई थारै इण सत
माथे अमरोसी नी करेला । —फुलवाडी

७०—३ म्हारी जीम मे कीडा पडे म्हुँ थने काले कँडी ऊडी पाटी
पढाई । म्हारी काली वाता माथे धणी विश्वास करियो तो सगळी
ऊमर रोवैला । —फुलवाडी

५ आत्मबल ।

७०—१ इण परमेस्वर रै करार री कूती धाक लियो वेटी ।
म्हुँ थने म्हारी श्री इज ग्यान संपणी चावती । अरवै तो श्री ग्यान
ई म्हारी सुहाग अर थारी विश्वास है । —फुलवाडी

७०—२ उण रा डील नै पतवारिण्या म्हुँने अँडी लखायो के श्री
बाबो धान, पाणी अर हवा रै पाण नीं जीवै, आपरा विश्वास
रै आप जीवै है । —फुलवाडी

७०—३ पण विश्वास रा बळ आगे उणारा अछूट विखा नै ई
हार मानणी पडी । विश्वास रा बळ रै सामी वापडा दुख, क्लेश
अर सताप री काई गाढ । —फुलवाडी

६ दृढ निश्चय ।

७०—ठाकर आडिया रा अरथ वतावण मे प्रवीण हा वाने पूरी
विश्वास हो । अर जवान सूं कील व्हैगी जकी ती व्हैगी ।

—फुलवाडी

७ धैर्य, तसल्ली ।

८ आत्म-सन्तोष ।

उ०—१ मू अवे उण भोळा कमेडा नै काई जवाव देवती । उण रा विश्वास नै किया खडत करती । जिण उम्मेद री डोर माथै वी जीवै ही उणनै किया तोडती । —अमरचूनडी

उ०—२ गुमेज भरघा सुर में बोल्या—मूंडी है, घरटी री गाळी कोनी । निकळया बोल पाछा नी उराइजे । म्हनें पूरौ विश्वास हे कै किणी आडी री अरथ म्हारा सूं छानी कोनी । —फुलवाडी ६ धैर्य ।

उ०—तिण सूं गगदेव री आगम जाणि पहिली सूचना करि मोनु बुलाइ नेमारा नूं म्हारी सहायक भाव दिखावणी । जरै खीची री भय टळियां विश्वास पाइ धीजिया नूं रजपूत करण रै काज मीणा री चाल छोडण री पत्र कपट कर लिखावणी । —व भा.

उ०—.....जै हसे तो एक लाख अर जै प्रसन्न होय तो विक्रम करोड रुपिया देय । सो हे राचा । महाराज विक्रम सा गुण जै तो माही होय तो सिंघासण बैठ नातर विश्वास कर बैठ रहे ।

—सिंघासण बत्तीसी

क्रि प्र.—करणी, जमणी, देणी, बैठणी, होणी ।

रू भे —वसास, बिसबास, बिसवास, बिसास, बिश्वास, बेसास, बंसास, बिसबास, बिसास, बीसास ।

अल्पा.—बेसासडर, बीसासी ।

विश्वासकारक—वि [स विश्वासकारक] १ विश्वास करने वाला, जो विश्वास करे ।

२ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास योग्य, विश्वसनीय ।

विश्वासघात—स पु [स विश्वासघात] विश्वास देने के बाद विश्वास करने वाले के विरुद्ध, उसके विश्वास के विरुद्ध किया जाने वाला कार्य ।

उ०—१ इतरी सुण कुमार चट वादर नूं डाळ सूं धकेलियो सी पडता बार सचेत होय डाळ ऊपर चढ गयो । कुमार रै माथै मृत की धार मार कही—नीच तो नूं धिक्कार । तू बचनहार, मित्रद्रोही विश्वासघात कीन्हो । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ इसी बात सुण कुमार एक आक छोडियो । बीसारामा करै लागियो, तद पडदा माही सूं फेर पिडत कही —ब्रह्महत्यादिक पाप गगा नहाया छूट जाय पर मित्र सू कियो विश्वासघात नही छूटै । —सिंघासण बत्तीसी

उ०—३ कइ विश्वासघात अम्हे कीधा, कइ अथगुणियां पात्र । कइ धन प्राणिय पियारा भूडी, पामर पोल्यां गात्र । —का दे प्र

रू. भे —बिसवासघात, बिश्वाघात, बिश्वासघात, बिसवासघात, बिसासघात, बीसासघात ।

विश्वासघातक, विश्वासघाती—वि. [स विश्वासघातक, विश्वासघातिन्] विश्वासघात करने वाला ।

उ०—१ इतरी वात सुण कुमार एक आक श्रीर छोडियो । बीस-रामा करै लागियो । पडदा सूं पिडत कही—जै मित्रद्रोही, बिश्वास-घाती अर कतघनी ही सो चाद, सूरज रहे ती लीं तरक भोगे ।

—सिंघासण बत्तीसी

उ०—२ सेठजी म्हनें पैला आ वात क्यू नी बसाई म्हें आ सेठा नै अंदा विश्वासघाती ती नी जाण्या हा । म्हारे सार्गे ई कुचमाद करणा मे नी चूसया । —फुलवाडी

उ०—३ राज-दरवार में मानखी मावती नीं ही । राजाजी सिंघा-सण माथै बिराज्या रीस मे उफणता हा । ती आ सगळी कुचमाद इण विश्वासघाती दीवाण री । —फुलवाडी

विश्वासणी, विश्वासबो—क्रि. स.—१ सन्तोष करना ।

२ विश्वास या भरोसा देना, विश्वास कराना ।

३ दृढ निश्चय करना ।

क्रि. प्र —४ सन्तोष होना ।

५ विश्वास होना, भरोसा होना ।

६ दृढ निश्चय होना ।

विश्वासणहार, हारी (हारी), विश्वासणियो—वि० ।

विश्वासिओडो, विश्वासियोडो, विश्वाल्पोडो—भू० का० कृ० ।

विश्वासीजणो, विश्वासीजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

बिसवासणो, बिसवासबो, बिसासणो, बिसासबो, बिश्वासणो,

बिश्वासबो, बेसासणो, बेसासबो, बंसासणो, बंसासबो, बिसवासणो,

बिसवासबो, बीसासणो, बीसासबो—रू० भे० ।

विश्वासपातर, बिश्वासपात्र—वि [स. विश्वासपात्र] जिसका विश्वास किया जाय, विश्वसनीय ।

रू भे —बिश्वासपात्र ।

विश्वासा—स पु. [स विश्वासा] एक सूर्यवंशी राजा, विश्रुतवान । (पुराण)

उ०—जै सुत हुवो सधि हत दूजण, मरखण सधिसुतरण कुळ मडण । मरखण सुत सिहसान भूप भणि, भूप बिश्वासा द्वै ते सुत भणि ।

—सू प्र.

विश्वासियोडो—भू का कृ.—१ सन्तोष किया हुआ. २ विश्वास या भरोसा दिया हुआ, विश्वास किया हुआ ३ दृढ निश्चय किया हुआ ४ सन्तोष हुआ हुआ, भरोसा हुआ हुआ. ५ विश्वास हुआ हुआ, भरोसा हुआ हुआ ६ दृढ निश्चय हुआ हुआ । (स्त्री विश्वासियोडो)

विश्वासी—वि [स विश्वासी] १ जिसका विश्वास किया जा सके, विश्वास करने योग्य ।

उ०—१ दीखणा मे ती अकली दीसूला, पण अकली वूला कोनी ।
म्हारी मरजी रा खास विश्वासी असवारा नै पाच-पाच, सात-सात
री टोळिया बणाय नाकें रै नाकें ठीठ ठीठ लुकाय नै बँठाण दू ला ।

—फुलवाडी

उ०—२ जद स्वामी जी खिमाकर विश्वासी आहार अवेरनै
बोल्या—आ थारै सका है तो चरचा कगला । इम कही उण वेला
इज तावडै मँ विहार कीधो ।

—मि. द्र

उ०—३ मतीरीं री रुत में मतीरीं रा ऊठ रा ऊठ नाखीजता ।
विश्वासी आदमी वा रै टाक्या लगाय' र कई मे मोहर अर कई मे
रुपिया घाल' र पाछोई मूडो वद कर देंवता ।

—सत सेठ श्रीरामरतन डागा री वात

२ विश्वास करने वाला ।

रू भे —विस्वासी, विसवासी ।

विश्वेदेव—स पु. [स विश्वेदेव] १ वेदानुसार नौ देवतातो का एक
समूह विशेष ।

वि वि. —अग्निपुराणानुसार इस समूह मे दस देवता माने गये
हैं—ऋतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आद्रक
और पुरुषवा । इनमे से पाच देवो का जन्म विश्वामित्र के शाप
के कारण द्रोपदी के गर्भ से हुआ था जो वाल्यकाल मे ही अश्व-
धामा के द्वारा मारे गये थे । आद्रक आदि मे इनका पूजन किया
जाता है ।

२ दस की संख्या* ।

विश्वेदेवपूजन—स पु [स विश्वेदेव पूजन] आपाठ छुक्ला पूणिमा को
पूर्वापाठा होने पर विश्वेदेवो का किया जाने वाला पूजन ।

विश्वेस—स पु. [स. विश्वेस] १ शिव, महादेव ।

२ भगवान् श्रीविष्णु ।

३ ब्रह्मा ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

५ सत्ताईस नक्षत्रों मे से उत्तरापाठा नामक नक्षत्र विशेष ।

रू भे.—विसवेस, विश्वईस ।

विश्वेसर, विश्वेसुर, विश्वेस्वर—स पु [स विश्वेश्वर] १ शिव की
एक मूर्ति ।

२ विष्णु ।

३ ब्रह्मा ।

४ ईश्वर, परमात्मा ।

५ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।

रू भे —विसेसर, विश्वईसर, विश्वईसुर, विश्वईस्वर ।

विश्वेकरमा—देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

विश्वेकसार—स. पु [स. विश्वेकसार] एक प्राचीन तीर्थ, जो काश्मीर
मे है ।

विश्वेकरमा—देखो 'विश्वकरमा' (रू भे)

उ०—अह नाम सोय प्रभा धाम एता, जिकै तात विश्वेकरमा कीध
जेता । हिमानी सखा माहरै एक हूती. अठाहूत सो उद्धरी भागवती
—सु प.

विश्वी—देखो 'विसवी' (रू भे)

उ०—तरै जैतसीजी बोल्या, वाई, म्हानै पण छै वामण, चारण
भाट सवासणी—इतरा री विश्वी खाण री पण छै सो पण
भाज्यो थारा दाखीण सूं । —जैतसी ऊदावत री वात

विस्तरांम—देखो 'विसराम' (रू भे)

उ०—पडिहार भीम भुज दान भत्त, प्रित्थमी दीप जाणें सपत्त ।
थाकें सति साहस विस्तराम, नाद' उत कियो रवि चद - नाम ।
—गु. रू ब.

विस्तरामी—देखो 'विसराम' (रू. भे)

विस्तरामौ—देखो 'विसराम' (रू. भे)

विस्सम—देखो 'विसम' (रू भे)

उ०—विपरीत विस्सम घात. किरि वाण वज्रहै पात । वरजाण
वृग वहति, किरि अग्नि द्रस्टि हुवति । —गु रू. ब.

विस्सहरपुर—स पु. [स विषहरपुर] नागौर नगर का नाम ।

उ०—विस्सहरपुर फतै वहइ वाणि, पह दियइ भेट पूजइ न
प्राणि । खेसइ खडगि नाणउ खरोइ, करिमाळ भाल ऊभइ न
कोइ । —र ज सो

विस्साम—देखो 'विसराम' (रू. भे)

विस्सा—स पु [स विश्रसा] पुदगल, घूप छाया, आदि ।

उ०—विस्सा हाथ आवै नही, मिस्सा जीव-रहत । जीव सहित तै
योगसा, स्त्री जिन वाणी तहत । —जयवाणी

विहग—स. पु [स] १ पक्षी, चिडिया ।

उ०—१ प्रीतइ भला पारेवडा, केता अवर विहंग । वात न लहइ
वियोगनी, सदा निरतर सग । —मा का प्र.

उ०—२ सर सूकं नह सचरै, वाका पही विहग । किरा रै चालं
सग कुण, सब स्वारथ रै सग । —बा. दा.

उ०—३ जेथि रग-भ्रामास, तेथि क्रीडति कुरगह । जेथि त्रपति
बसता, तेथि उहु त विहगह । —गु. रू. ब

उ०—४ कुदरत्ती कोमठ ताण करै, छेदत विहग दुहग सरै । रज
घूधळ समूह मिळै रयण, ग्रहपति प्रखल्ल थयी गयण । —गु रू. ब.
२ मासाहारी पक्षी ।

उ०—१ पनग लडो कीडा पडो, सडो झडो दुख सग । जग चुगला
री जीभडी, वायस भलो विहग । —बा दा.

उ०—२ मिल अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत वरत
पत । खग गिलत गूदा तत अखत, धण असत परवत मेरवत । सह
त्रिपत विहग विसेख । —र रु.

३ सूरज, सूर्य ।

४ चान्द, चन्द्रमा ।

५ बादल, मेघ ।

६ बाण, तीर ।

७ घोडा, अश्व । (ना डि. को.)

उ०—१ जोइवा जगत आवत जात, गिरवर विहंग उतग गात ।
दीपकक चक्क सोभा दिवस्सि, असराळ तेज कोडीक अस्सि ।
—गु रु बं.

उ०—२ ताहरा चूडासामा, “राज री खरी परधान आयी । थोडा
असवारा सो पोहती । परमेसर दीनी । मार नै घोडा उरा लेवी ।”
इतरी कहि नै असवार ५० वडा विहग पाछा घेरिया । घेर नै नरै
ऊपर नाखिया । —जैतमाल पुमार री वात

८ आकास, गगन । (ना मा)

९ सत्ताईस नक्षत्रो में से एक नक्षत्र ।

१० जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध, ऐरावतकुलोत्पन्न एक नाग का
नाम ।

११ हंस ।

उ०—करिसु कथा जिम कुमुदिनी, रमिवा भोगी भ्रग । मति
मुत्ताहल वीखरिसु, चिरावा चतुर विहग । —मा का. प्र.
१२ देखो ‘विहगमारग’ (रु भे)

उ०—भक्त जोग परै हठ जोग है, साख्य जोग ता आगी । मीन
पपील विहग पुनि कहियँ तीहू राह चीन बडभागी ।
—स्रीहरिरामजी महाराज

१३ देखो ‘बिहाग’ (रु भे)

उ०—भणत स्त्री विनोदय, कल्याण केक मोदय । खभायची पट-
गयँ, वर्गसरी विहगय । —रा रु

रु. भे—वहग, बिहग, विहगम, विहगो, विहग, वहग, विहग,
विहगम, विहग, बिहाग, वीहग ।

अल्पा.,—विहगडो, विहगडो, विहांगडो, वीहगडो ।

विहगडो—देखो ‘विहग’ (अल्पा, रु. भे)

विहगजेठी—स. पु —१ सूरज, सूर्य ।

उ०—भड खगा छछोहा भीच छेटी भने, विहग-जेठी समर खाचियो
बाज नै । गजा धेटी तरह झाडता कुलगने, कयोठी सूर सुरताण

जेठी कने ।

२ गरुड ।

विहगनाथ—स पु [स. विहग+नाथ] १ पक्षिराज गरुड ।

उ०—वज्र छूटी इद्र कै, विछूटी रामचन्द्र बाण, कूडवा सामद्र
बाण दूटो हरणु क्रोध । काळी नाग घडा हू विहंगनाथ जूटी कना,
जटी की जटा सु छूटी भद्र जोध । —हुक्मीचद लिढियो

२ देवराज इन्द्र ।

३ देखो ‘विहगपत’

रु भे—विहगानाथ ।

विहगपत, विहगपति, विहंगपती,—स. पु [सं विहगपति] १ पक्षिराज
गरुड ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ सूर्य सूरज ।

४ चन्द्रमा, चाद ।

रु. भे—वहगपत, वहगपति ।

विहगम—वि [स.] आकाश मे गमन करने वाला ।

उ०—१ तठा उपराति फरि नै राजान सिलामति श्रीखम रित
माहै पवन पावक समान वाजियो छै । प्रथी अप नै वायू अकास
च्यारि तत पाचमै अगनी तेज तत भेला मिळ नै रहिआ छै । प्रिथी
रा लोक विहगम पखी छै । —रा. ज. स.

स. पु —१ सूरज, सूर्य ।

२ अश्व, घोडा ।

३ आकाश, गगन ।

४ मासाहारी पक्षी ।

उ०—१ तिया वार वीरारस सगम, प्रीध चील्ह नभ छाए
विहगम । कळह का आगम सी बिखमारिख, सार का काठा सचा
पारिख । —रा. ह

५ पक्षी ।

उ०—१ तन दुख नीर तडाग, रोज विहंगम रूखडो । विसन सली-
मुख बाग, जरा बरक ऊतर जबल । —बां दा.

उ०—२ सार्थ हिंदू मुसलमाण, हिंदुस्थान खिडे खुरसाण ।
मुळ गळ अक्ककि खुरसाणी, बोले जेम विहंगम वाणी ।
—गु रु. व

उ०—३ सडाळा आलम ढल्ल सिरै, नन्नावधि वसक नदगिरे ।
घटा-रव धूधर सद् हुवे, बोलत विहगम जाण धुवे । —गु रु. व.

उ०—४ ऊचासी इद्र रै, राम रै गुरड विहगम । सूरज री सिलह
“जै” जितो सपत्तास तुरगम । —गु रु. व

६ धर्म सारणि मन्वन्तर का एक देवगण ।

७ खर राक्षस का एक आमात्य ।

८ देखो 'विहगमारग' (रू भे.)

रू भे —विहंगम ।

विहगमग—स पु [स] १ आकाश, आसमान, गगन, (ना मा.)

२ देखो 'विहगमारग' (रू भे.)

विहगमपथ—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—वदति लोक वाक्या, पपीलिका भारग पयणं । सिधति सूर
पथ, विहगमपथ पणयह । —गु रू व

विहगममारग—देखो 'विहगमारग' (रू भे)

विहगमा—स स्त्री. [स] सूर्य की किरण ।

विहगमारग—स पु [स. विहगमारगं] योग साधना के तीन मार्गों में से एक मार्ग विशेष, जिसके द्वारा साधक काया को अधिक क्लेश दिये बिना शीघ्र व सहज में पक्षी की तरह उड़कर अपने प्राण ब्रह्मांड तक ले जाता है ।

रू भे.—विहग, विहगम, विहगमग, विहगममारग, विहगराह ।

विहगराज, विहगराजा—स पु [स विहगराज] १ पक्षिराज गरुड ।

२ इन्द्र का नामान्तर ।

रू भे —वहगराज, वहगराजा ।

विहगराह—देखो 'विहगमारग' ।

उ०—साख्य जोग निज ग्यान कहीजै, सार असार पिछायै ।
मिथ्या त्याग सत्तकी सग्रह, श्री विहगराह निरवार्यै ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

विहगानाथ—देखो 'विहगनाथ' (रू भे)

उ०—तूटी बोन वाट निराताळ सी विछुटी तारी, केता छूटी
पीराण आळखां तार्क कूप । कोप रुद्र-भाळका विहगानाथ जूटी
कना, लठौ गौरा मार्ये प्रळं काळ को सौ रूप ।

—गिरवरदान कवियो

विहगेस—स पु [स विहग+ईश] १ गरुड ।

२ इन्द्र ।

रू भे —विहगेस, विहगेस ।

विहगी—देखो 'विहग' (अल्पा, रू भे)

उ०—गरु मेरे दीया सबद विहगा, पकरि लीया असैं मन पगा ।
यो मन भवग वसे तन वबी, गवन करै कव छोटीय लवी ।
—अनुभववाणी

विहड—स पु —१ टुकड़ा, खण्ड ।

उ०—लडे पडे रिए खेत मे, तन तै होय विहड । सूर्रा तन को
क्या भूवी, हरिया दरगह मड । —अनुभववाणी
२ नाश, सहार ।

उ०—ग्रलुळ पीरस घर चडमुड बोलिया—हसा गमए री हाम पूरां ।
वडी प्रम उवारा । दोखिया रा काघ भिरडा । एक बार थणा रा तन
विहड करा । —मा वचनिका

३ मारने की क्रिया ।

रू भे —विहड ।

विहडखंड—देखो 'खड-विहड' (रू. भे)

उ०—मिळं असुराण वीर भाग री समदा मथं, खेले हीळी फाग
री अथाग री खतग । भडं पंडा खाग री विहड-खडा वर्गें जूम,
पीठाण 'गभीरी' पडं आग री पतग ।

—ठाकुर गंभीरसिध सोलकी री गीत

विहडण—स पु —१ नाश, सहार ।

२ मारने की क्रिया ।

वि —१ नाश करने वाला, संहार करने वाला ।

उ०—धर गई सरव धर घूंझडा, तै दावी तोता त नै । वैरिया
विहडण वेगडा, मुणै किस हव मात नै । —पा प्र

२ मारने वाला ।

उ०—श्री रघुनाथ अनाथ नाथ सुज, वेढ सत्र दसमाथ विहंडण ।
भाहर मही जहर सुजस जिण, महपत नूर सूरकुळ मडण ।

—र. ज. प्र.

३ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—१ खलक तारण तरण खला खडण खतम । रीर जण
विहडण सुखद सरसे । सियावर तूमसी तुही दाखे सकी, दूसरी
समोवड न की दरसे । —र. रू.

उ०—२ दुख दावानल सलिलवाह ! दोहग विहडण । जय जय
'पास' जिणद । देव ! थमणपुर मडण । —स. कु

विहडणी—वि.—१ नाश करने वाला, मिटाने वाला ।

उ०—इम थुण्यठ जिणवर सति दिणयर, भरिय तिमिर विहडणी ।
अणहिल्ल पाटण मांहि सी, त्र वाड वाडा मडणी । —स. कु.
२ मारने वाला ।

३ नाश करने वाला, सहार करने वाला, विध्वंसक ।

विहडणी, विहडवी—क्रि म —१ नाश करना ।

उ०—१ स्याम छळ करा जुध साहसा, धार समद भूलण घसा ।
किरमरा विहड असुरा फटक, वरां रभ सुरपुर वसां —सू प्र.

उ०—२ पिंड विहड होय चुल चुव पडू, ताय वरू रभ हित तिकी ।
सुलभ ही जिकी पाऊ सुरग, जगत थणौ दुल्लभ जिकी ।

—सू प्र.

उ०—३ जीता लाखा जुद्ध विहडे जूजूवाह हाजिर वदा देव सकी
किकर हूवाह । प्रगटी पेस अमोल दिये नित सुरपती, हरिहा

गुमिर कित्ती इक तूफ कहीजै जगजगती । —मा. वचनिका
३०—४ बहै विपरीत वेळा करारी, कूत किरमाळ नेजा कटारी ।
घजवडा घार रुळ रुड मुड, विहङ्ग पड वाढ खडह विहङ्ग ।

—गु रू व

२ मिटाना, खत्म करना ।

३ नाश करना, मिटाना ।

३०—१ गिरिजा-नदन गुण गुहिर, गाजइ गिर गभीर । अघारि
आदित्य तिम, विधन विहङ्ग वीर । —मा. का प्र

३०—२ घोर गात्र ठरट्टिम कइ चालइ, सिरि सेवत्रा भार । गवरीय
नदन विधम विहङ्गण, दुख खडण सुख सार । —रुकमणि मगळ

४ मारना, सहार करना ।

३०—१ भाखरसी आपणै पण लोह गोळी । अर पठाण आया
हता, तिका नू मार विहङ्ग कर नाखिया, अर अठे भाखरसी री
ती फते हुई, मोरचो कायम राखियो । —राजा नरसिंघ री वात

३०—२ भोमिया डड पेसा भरै, मैणै करसण माडिया । गढपती
पेसायो मालगढ, विड अरवाळ विहङ्गिया । —रा. रू.

३०—३ विहङ्गत गज वाज, सामि तरणै छळि साहणो । देखि
कहै पैळा दळा, घिन हाथा घनराज । —र वचनिका

३०—४ इक बाघो सहसा अजणि, जळ क्रीडा मकारै । बांमणि गदा
विहङ्गिया, दूजो बळि द्वारै । —सू. प्र.

३०—५ “सूर” तरणी सुरसरी तरणै सर, मानव विहङ्गिया वजावं
मार । रण रेखग भेळा कर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी
सिरणमार । —किसनी आढी

३०—६ सीह हुवा मेहासद्, अडिया भुज अवर । विजो अरजजन
विहङ्गिया, खाधा भर खप्पर । —ठाकुर जूकारसिंह भेडतियो

५ टुकडे टुकडे करना, काटना, छेदना ।

३०—१ रूक पिआला पीमस्या पाइस्या । चाचर विहङ्गिया
विहङ्गिया । रिणखेत रै विलै रगिअ बाणासि मतवाळा ज्युं
धूमता थका हाथिआ सू टला खाइस्या । —र वचनिका

३०—२ वाहै सत्रा सिरि खाग विहङ्ग, मार लिये थाणा बळ मडं ।
पाल्हासणी असुर बळ पूरै, साथ अमामे गात सनूरै । —रा. रू.

३०—३ आज करू आराण, निकसता तवल निसाणा । वीस
भुजा दस बदन, विहङ्ग रालू तज वांणा । —र. रू.

३०—४ ओरि तुरग असुर रा, जगी हवदां लमि जाळ । सिर
विहङ्ग घण सत्रा, विलम निज सिर विहङ्ग । —सू प्र

क्रि अ —६ नाश होना, सहार होना ।

७ टुकडे-कटुडे होना, कटना ।

३०—१ भड खळिया भमर वेहक वज्जर, बडिया पयवर विहङ्ग
वपे पळ खडिया पजर पडै पचाहर, जै जै सकर मकति जपे ।

—गु. रू व

३०—२ तूटे भड निवड त्रिजड अड तिमछे, वाढ अतेवड विहङ्ग
वपे छूटती रुहिर नडड दड वड छिल्लि, धारा घजवड सुहड धरं ।

—गु. रू. व.

३०—३ वपि विहङ्ग पळ खड, तेग तिमछा मुहि तुटी । धारा
मुहि घडछियो, कूंम किरि काळी फूटी । —गु रू. व.

८ मृत्यु को प्राप्त होना, मरना ।

९ घटना ।

१० मिटना, खत्म होना ।

विहङ्गणहार, हारो (हारी), विहङ्गणियो—वि० ।

विहङ्गयोडो, विहङ्गियोडो, विहङ्गयोडो—भू० का० कृ० ।

विहङ्गजणो, विहङ्गजवो—भाव वा०, कर्म वा० ।

विहङ्गणो, विहङ्गवो, विहङ्गणो, विहङ्गवो, वीहङ्गणो, वीहङ्गवो,
वहङ्गणो, वहङ्गवो, विहङ्गणो, विहङ्गवो—रू० भे० ।

विहङ्गाणो, विहङ्गावो—क्रि स [विहङ्गणो, विहङ्गवो का प्रे. रू.]

१ सहार कराना ।

३०—१ वीजळां मोहुरि खळ दळ विहङ्ग, वप विहङ्गाय परी वरां ।
जग करै वास अजस सरव, कुळ सी वीस कवेसरा । —सू प्र.

३०—२ अममाल आप छळि करि अचड, वप विहङ्गाय रभा वरू ।
जग करण महाभारत ज्युं ही ‘करण’ नाम साचो करूं । —सू प्र.

२ नाश करवाना, मिटवाना ।

३ सहार करवाना, मराना ।

४ मिटवाना, खत्म करवाना ।

५ टुकडे-टुकडे कराना, फटवाना, छिदवाना ।

३०—१ ओरि तुरग असुर रा, जगी हवदा लमि जाळ । सिर विहङ्ग
घण सत्रा, विलम निज सिर विहङ्गाळ । —सू प्र

३०—२ रूक पिआला पीमस्या पाइस्या । चाचर विहङ्गिया विह-
ङ्गिया । रिण खेत रै विलै रगिअ बाणासि मतवाळा ज्युं धूमता
थका हाथिआ सू टला खाइस्या । —र. वचनिका

विहङ्गणहार, हारो (हारी), विहङ्गणियो वि० ।

विहङ्गायोडो—भू० का० कृ० ।

विहङ्गाईजणो, विहङ्गाईजवो—कर्म वा० ।

विहङ्गायोडो—भू का कृ.—१ सहार कराय ह्यमा २ नाश करवाया

ह्यमा, मिटवाया ह्यमा ३ सहार करवाया ह्यमा, मरवाया ह्यमा

४ टुकडे-टुकडे करवाया ह्यमा, छिदवाया ह्यमा, फटवाया ह्यमा.

५ मिटाया ह्यमा, खत्म किया ह्यमा ।

(स्त्री विहङ्गायोडी)

विहडियोडी—भू का कृ —१ नाश किया हुआ, सहार किया हुआ, ध्वस किया हुआ २ नाश किया हुआ, मिटाया हुआ ३ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ४ टुकड़े-टुकड़े किया हुआ, काटा हुआ, छेदा हुआ. ५ मिटा हुआ, खत्म हुआ हुआ ६ मिटाया हुआ, खत्म किया हुआ ।

(स्त्री विहडियोडी)

विहरण, विहरणी—देखो 'विहरणी, (रू. भे.)

विहसक—देखो 'विध्वसक' (रू. भे.)

उ०—विहसण वस विहसक, किसुक नहि ए भ्रति । विलवड विहस करालियड, वालिय डम एकति । —जयसेखर सूरि

विहसणी, विहसनी—देखो 'विहसणी, विहसनी' (रू. भे.)

विहसणहर, हारो (हारी), विहसणियो—वि० ।

विहसिओडी, विहसियोडी, विहस्योडी—भू० का० कृ० ।

विहसीजणी, विहसीजनी—भाव वा० ।

विहसियोडी—देखो 'विहसियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. विहसियोडी)

विह—देखो 'विधि' (रू. भे.)

उ०—१ वारस विह गरिणपिठक तणी, सख्या कही ही लाल । सासता अरथ अनत कि छड, एहना सही ही लाल । —वि कु

उ०—२ आरोहत गिर सिखर, समुद्र लंघ जात कपाळ । विह अक्षर लिखिया भाल, फलत कपाळ हि भूपाल । —ठकुरे साह री वात

उ०—३ लिखियो लाभ जोय, पर लिखियो लाभ नहीं । पर सिर पदम हि जोय, जे विह विहवे अप्पियो । —नैणसी

उ०—४ लगन कळह दिली विह लिखियो, आलम घड देखे असमान । बीदपणी अजमेर विसारे, खिसियो लसियो हाजीखान ।

—राठोड रतनसिंह री वेलि

उ०—५ विह आणें विह मेळवें, विह मडे उपचार । अळगी ही नेडो करे, विह तणो विचार । —राव रिणमल री वात

विहग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

विहड—स पु —बीहड, जगल, वन ।

उ०—इस में भागेसुर मगायजे छं सु किये भात छं । केसर री क्यारी दोलळी, वासग माया री । थोहर रा बिडा री, भाखर रा खुडारी भूरं मोर री, काळं पान री, आवू रा विहडा री, भमरमार मिरघमाळ लरियाळ चिडियाळ, चोटडियाळ ।

—रा. सा स

रू. भे —विहड, विहडु ।

अल्पा,—विहडी, विहडी ।

विहडणी, विहडनी—देखो 'विहडणी, विहडनी' (रू. भे.)

उ०—नेह अक्रत्रिम मड कियठ रे, कदै न विहडइ तेह । दिन दिन अधिकठ उलटइ रे, जिम आसाडी मेह । —वि. कु

विहडणहार, हारो (हारी), विहडणियो—वि० ।

विहडियोडी, विहडियोडी, विहड्योडी—भू० का० कृ० ।

विहडीजणी, विहडीजनी—कर्म वा०, भाव वा० ।

विहडियोडी—देखो 'विहडियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री विहडियोडी)

विहडी—देखो 'विहड' (अल्पा, रू. भे.)

विहडणी, विहडनी—देखो 'बैचणी, बैचनी' (रू. भे.)

उ०—१ सिर नासा कान दसन आखें, नख गाल वपुस ना मल नाखें । मिलणी लेखो करइ मतरणी, विहचण अपणी करि धन धरणी । —ध. व. ग्र.

उ०—२ जाइ राजा सू मुजरी कीयो । कहीयो महाराज घरा री खवर आई छे । बेटी री विमाह छे । राजा सिरपाव दे विदा दी उर्वे चोर कहे गया कहयो इंडो विहचो । कहयो विहचो । ताहरा खीवो बोलियो एथ वहिचस्या नहीं मारवाड माहि नै जाइ नै उथ वहिचस्या । ताहरा ऊ चोर बोलियो कितरा हेसा करिस्यो कहयो तीन हेसा करिस्या । —चीवोली

उ०—३ तद पाछा घरे पधारनं जं भात जोगी कहयो हतो तै भात राणिया नूं बभूत री गोटी, सोपारिया विहच दीवी । पछे कितरें के दिने पुत्र हुवी । —नैणसी

विहचणहार, हारो (हारी), विहचणियो—वि० ।

विहचियोडी, विहचियोडी, विहच्योडी—भू० का० कृ० ।

विहचीजणी, विहचीजनी—कर्म वा० ।

विहचियोडी—देखो 'वाटियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. विहचियोडी)

विहड—देखो 'विहड' (रू. भे.)

उ०—तिके चीता कठारा छे ? मरोट रा, अधीरा, देरावर रा, रोहरा, थटरी, पहाडा रा, ईडर रा डूंगरा रा, जाळोर रा, पहाडा रा, पावर रा, थळा रा, पारकर रा विहडा रा । इसा चीता साथ लोखे छे । —रा. सा. स

विहडी—देखो 'विहड' (अल्पा, रू. भे.)

विहड—१ देखो 'बेहद' ।

उ०—नेहली नीर भरिया नयहु, वाकड दुरग पाखी विहड । सारीख 'जइत' सुरिताण साज, रामावतार राठरड राज ।

—रा. ज. सी

२ देखो 'विहड' (रू. भे.)

विहरण—वि. [स] १ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

२ सहार करने वाला, मारने वाला ।
३ देखो 'बहन' (रू. भे.)
रू. भे.—विहृण, विहन, विहन ।

विहृत, विहृति—क्रि. वि. [स विहीतम्] निवारण करने के लिए ।

उ०—उलझाया तन मन आप आप में, विहृत सीत रुखुमिणी
वरि । वाणि अरथ जिम सकति सकतिवत, पुहपगध गुण गुणी
परि । —वेलि

देखो 'वेहद' (रू. भे.)

उ०—अगमद अबर सारधण, गधसार अगरेल । कुम कुमादि
केसर अतर, विहृति सुगधी रेल । —रा. रू.

विहृत्तर—देखो 'वेहृतर' (रू. भे.)

उ०—वाग ताम बरियाम, दहू आए अडि डबर । कारजा चादरा
नीर धरहरै विहृत्तर । —सू. प्र.

विहृथी—वि.—दो हाथ के बराबर नाप की ।

उ०—सु तोड नूं धाडवी जोरौ छै, जु रंजारी मार नै तोड लेवा ।
सु तोड मेह रै चीखल रै कंड री, हथ विहृथी कवडी, नवहृथी
भोकणी । चीखल करही भेकती तथा भेकी ।

—जैतमाल पुमार री वात

विहृद—स पु.—१ ध्वनि, आवाज ।

२ ईश्वर, परमात्मा ।

उ०—विहृद हृदि रहम देख जमदूत दहलै । —केसोदास गाडण
३ एक प्रकार का मात्रिका छन्द विशेष जिसके प्रत्येक चरण में बीस
मात्राएँ होती हैं ।

उ०—पायै एकणि परठि जै, बीस मात्र विसतार । समभै लाखी
भड सुपड, विहृद छद बहुआर । —ल पि.
वि.—बडा या महान ।

उ०—ता में अक गयद है, मेर समीवड गात । रिण वेळा रावत
विहृद, गिणै अरि तिलमात । —गणउद्वार

५ देखो 'वेहृद' (रू. भे.)

उ०—१ हरनेत्र जळै ज्वाळा विहृद, झीकजि अमरख समिळै ।
अजमल्ल वळै दीठी 'मभौ', देस ढाळ मारू दळै । —रा. रू.

उ०—२ विहृद लीघ चिण वार, रंण प्रथ भूप जही रस ।
जस धम कजि जगजीत, दिया तवपत्र दवादास । —सू. प्र.

उ०—३ विहृद कोर गोटा बरुण, पातर रै पोसाक । परणी फाटा
पुंगरण, वैठी फाडे वाक । —बां. दा.

उ०—४ देवी दे बरदान, ग्यान रीजै गुण गावां । भाखा सहि
भागिवत, विहृद हथ अरथ वणावा । —पी. अ

उ०—५ लागी ग्यान धरा पर लोटै, सुध बुध भूला भोम सिळै ।
विहृद कपाळ हुवा परवरती, मुगती पोहरां मांय मिळै ।
—बांकीदास बीहू

रू. भे.—विहृद ।

विहृदमानु. विहृदमानु—स. पु [स वृहद्भु] अग्नि, भाग । (प्र. मा.)

विहृद—१ देखो 'विहृद' (रू. भे.)

२ देखो 'वेहृद' (रू. भे.)

उ०—१ विराण सव्द सुणिया विहृद, नीसाण तूर अनहृद नद ।
जोयणा सरीरा जोत जाग, लोयणा पार रा ध्यान लाग ।

—वि. स.

उ०—२ त्यारी करै तमाम, जसूसा साजिया, प्रबागळ रिणतूर,
विहृदं वाजिया । —र. रू.

उ०—३ हुकम हुवी तन सुख हुवा, हुवा नगारा सद । कूच हुवी
जैपुर दिसा, हुवी हुलास विहृद । —रा. रू.

उ०—४ वनस्पती पाखर वणी, वणिया टूक विहृद । पटा विहृटा
नीभरण, आयी मद अरबद । —ढाढाळै सूर री बात

उ०—५ फौजा डेरा फाबिया, दीसै हृद विहृद । सबज वरना स्याह
अन, लाल सपेत अरद । —गु. रू. ब

उ०—६ वैताळ वीर मिळिया विहृद, सीकीतरि साकणि महा
सद । मिळ समळ ग्रीध आमख भक्क, जंबक्क रींछ वहुक जक्क ।
—गु. रू. बं

विहन—१ देखो 'बहन' (रू. भे.)

उ०—नांमण चरण प्रतापविधि, हिम पित गौरि विहन ।

—रामरासी

२ देखो 'विहृण' (रू. भे.)

विहृबळ—देखो 'विहृल' (रू. भे.)

उ०—साह वळ वडी विहृबळ हुवै, त्रिखावत जळ मोकळै । कळि
मूळ आद पैठी, कमी, भूइ कंठे भाखर वळै । —गु. रू. ब.

विहृमड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

विहर—स पु—१ संहार, नाश ।

२ घोडा, अश्व ।

३ विचरण करने की क्रिया । (जैन)

४ साधुओं आदि द्वारा मांगने पर दिया जाने वाला आहार आदि,
भिक्षा ।

क्रि. वि.—१ भाति, तरह, प्रकार ।

२ बहुत, अपार ।

३ बडा, विशाल ।

४ बडा, महान् ।

विहरखी-स. पु — एक प्रकार का अशुभ घोडा । (शा हो.)

विहरण-स. पु [सं] १ विहार करने की क्रिया ।

२ विद्योह, वियोग ।

३ विस्तार, फैलाव ।

विहरणी, विहरबौ-क्रि. अ — १ विहार करना, घूमना, टहलना ।

उ०—१ महामैरव सूकर घुरकइ, चित्रक बटकइ, वेताल किल-
कलइ, दावानल प्रज्वलइ, रिछ साचरइ विरु बूत्कार करता विहरइ,
इसी घटवी, । —व स.

उ०—२ पुलिया रविसुता फहरावजै पीतपट, आवजै रासथळ
ब्रजनाथ आय । कान कवार विहरि गळी ब्रज कुजरी, सुभ रळी
कीजिये लाडली साथ । —वा दा

उ०—३ विहरत वाग विलास, किरि सभ ग्रह कयलास । दिन
उदय सुख दरसाव, चित्त होत अगया चाव । —रा. रु.

२ अलग-अलग होना, जुदा होना ।

३ बिखरना, तितर-बितर होना ।

४ भिक्षा देना ।

उ०—वेकर जोडी सालिभद्र बोलइ, प्रस्न करू स्वामी तुम्ह नइ रे ।
विहरण बात ती दूरी रही पणि, मा ओलख्यउ नही मुम्हनइ रे ।
—स कु.

५ गमन करना, जाना ।

उ०—धन तें गाम नयर पुर मदिद, जिहा विहरइ जिनराइ रे ।
विहरमाण सीमघर स्वामी, सुर नर सेवइ पाय रे । —स कु

६ भिक्षा मागना, भिक्षा लेना ।

उ०—१ वीर वचन सुणि विहरण चाल्यठ, सालिभद्र मन सतोखी
रे । आयठ धरि ओलख्यउ नही माता, तप करि काया सोखी रे ।
—स कु

उ०—२ नदिसेण विहरण गयउ, गणिका कीधु हास हो । ब्रस्टि
करी सोना तणी, मइ तसु पूरी आस हो । —स कु

उ०—३ दिन विहरघइ पाछउ वल्यउ मुनिवर, मन माहि सदेह
आयउ रे । मारण माहि मिला महिआरा, तिण गोरस विहरायउ
रे । —स कु.

उ०—४ आपण पइ जाळ विहरवा, सूम्हत्तउ लूं आहार । ऊव
नीच कुल गोचरी, लेळ नगर मभार । —स कु.

क्रि. स.—७ सहार करना, मारना ।

उ०—१ सबळ बोलिया 'प्राग' समोअम प्ररिअण विहर करा खग
उत्तम । 'तेजल' अमर खाग भुज तीले, बहुसै खान नरायण बोले ।
—रा. रु.

उ०—२ वढ पढू विहर थाटा विळ द, भुजळग भट सेळा भचडि ।
लुग वसूं कहें 'हटमल' सुतन, 'अभूनि' जिम खाटे अचडि ।

—सू प्र

उ०—३ व्हा अमर काय सिभजीत व्हा, विखम 'विलद' फौजा
विहरि । करमाळ रगं मुजरी करू, केसरिया भक्कवोळ करि ।

—सू. प्र.

८ काटना ।

उ०—१ भड भिडज्ज गजभार, धार विहरें पाडे घड । ढहिया
सिर पीढियो, वोळ भक्कवोळ वहादर । —सू. प्र.

उ०—२ उढती भाळा लोपि अराबा, वह गजघड खगि हणू
निबावा । कूंभाथळा विहरि घण काळां, मारि गजा लोपूं मछराळा ।
—सू प्र.

उ०—३ पाडवा जही किता पळ खडिया, विहरें हाड विज्जळ
वाह । सहुया सिर 'मुहुआ' सूरजमल, मेलघी मेछ तणें दळ माह ।
—महाराजा सूरसिंह री गीत

९ टुकडे करना, विच्छेदन करना ।

उ०—एकण हीरी विहरिया, दूजो हीरी थाय । हीरावेधी कवित
जिम, दोय अरय दरसाय । —र. ज. प्र.

१० चोरना, विदीर्ण करना ।

उ०—१ दातुसळ वजर धजर जम दाढा, वाढा ऊगाढा विहर ।
असपति नजर भली आफळियो, कुजर नै नाहर कवर ।
—लिखमीदास गाढण

उ०—२ फाट फरि उर पारि फीफरि, वजरि असमरि विहर
वाखरि । कुवरि नरि कटि कचर कोपरि, चार चरि धरि ढचरि
पळचरि । जोघ जुट थट जग । —जगो खिडियो

११ तोडना ।

उ०—जो त्रप पूती नह दिर्य, दासी दूध अहार । ती विहरें गिरि
वज्ज जिम, खत्री खग पहार । —गु रु व.

१२ इन्तजारी करना, प्रतीक्षा करना ।

उ०—गात महाबळ गाळिया, भड सारिखा भीम । सत विहरो
सयणी कहै, हिब जाणीस्यें हीम । —सयणी री वात

१३ युद्ध क्रीडा करना ।

उ०—असुर हजारा सहरे, हरे अमीरा लज्ज । आयो रण विहरें
अभौ, करे फते कमधज्ज । —रा रु

विहरणहार, हारो (हारो), विहरणियो—वि० ।

विहरिओढो, विहरियोढो, विहरचोढो—भू० का० कृ० ।

विहरीजणो, विहरीजबो—भाव वा०, कर्म वा० ।

विहरणो, विहरवो, धीरणो, धीरवो, धीहरणो, धीहरवो ।

—रु० भे० ।

विहरमाण विहरमान—स पु —पाचो विदेह क्षेत्रो मे विचरण करने वाले तीर्थकर ।

वि वि —जम्बू द्वीप के विदेह क्षेत्र के मध्य में स्थित भेरुपर्वत के पूर्व गव पश्चिम मे भीता एव सीतोदा महानदिया हैं । उक्त नदियो के उत्तर-दक्षिण मे आठ-आठ विजय हैं । इस प्रकार वहा आठ-आठ की पक्ति में बत्तीस तीर्थकर रहते हैं ।

धातकी खण्ड व अर्द्धपुष्कर द्वीप के चारो विदेह क्षेत्रो मे भी ऊपर लिखे अनुसार ही जघन्य चार एव बत्तीस उत्कृष्ट तीर्थकर सदा रहते है कुल पाच विदेह क्षेत्रो मे १६० विजय एव प्रत्येक विजय में जघन्य बीस एव उत्कृष्ट १६० तीर्थकर रहते हैं ।

वर्तमानकाल में पाच विदेह क्षेत्रो मे बीस तीर्थकर विद्यमान हैं । जिनके नाम नीचे लिखे हैं । धूमते रहने के कारण ये विहर-मान कहलाये ।

(१) श्रीसीमधर स्वामी (२) श्रीयुगमधर स्वामी (३) श्रीबाहु स्वामी (४) श्रीसुबाहु स्वामी (५) श्रीसुजात स्वामी (श्रीसयातक स्वामी) (६) श्रीस्वयप्रभ स्वामी (७) श्रीऋष-भानन स्वामी (८) श्रीभ्रनतवीर्य स्वामी (९) श्रीसूरप्रभ स्वामी (१०) श्रीविशालधर स्वामी (विशाल कीर्ति स्वामी) (११) श्री वज्रधर स्वामी (१२) श्रीचंद्रानन स्वामी (१३) श्रीचन्द्रबाहु स्वामी (१४) श्रीभुजग स्वामी (भुजगप्रभ स्वामी) (१५) श्रीईश्वरस्वामी (१६) श्रीनेमिप्रभ स्वामी (नेमीश्वर स्वामी) (१७) श्रीवीरसेन स्वामी (१८) श्रीमहाभद्र स्वामी (१९) श्रीदेवयश स्वामी (२०) श्रीभ्रजीतवीर्य स्वामी ।

बीस विहरमानो के चिन्ह लाक्षण कमषा निम्न हैं—

(१) वृषभ (२) हस्ती (३) मृग (४) कपि (५) सूर्य (६) चन्द्र (७) सिंह (८) हस्ती (९) चन्द्र (१०) सूर्य (११) शंख (१२) वृषभ (१३) कमल (१४) कमल (१५) चन्द्र (१६) सूर्य (१७) वृषभ (१८) हस्ती (१९) चन्द्र (२०) स्वस्तिक ।

उ०—१ सम्प्रति बीस जिनेस्वर वदउ, विहरमान जिणाराया जी ।

विचरता भविजन मन मोहैं, सुर नर प्रणमइ पायाजी । —वि कु

उ०—२ बिहू भमती विधावली कोरणी भ्रति लीकारी रे । समो-

सरण सोहामणी, विहरमान विस्तारो जी । —स कु

उ०—३ धन तँ गाम नयर पुर मदिर, जिहा विहरइ जिनराय

रे । विहरमाण सीमधर स्वामी, सुरनर सेवइ पाय रे । —स कु.

रु भे —बहरतमाण वइहरमाण विरहमाण, विरहमान ।

विहराणी, विहरावो —देखो 'वैराणी, वैरावो' (रु भे)

उ०—बिन विहरचइ पाछउ बल्यउ मुनिवर, मन माहि सदेह

प्रायठ रे । मारग माहि मिला महिभारा, तिण गोरस विहरायठ

रे ।

—स. कु.

विहराणहार, हारो (हारी), विहराणियो—वि० ।

विहरायोडो—भू० का० कृ० ।

विहराईजणी, विहराईजवो—कर्म वा० ।

विहरायोडो—देखो 'वैरायोडो' (रु. भे)

(स्त्री. विहरायोडो)

विहरावणी, विहराववो—देखो 'वैराणी, वैरावो' (रु भे)

उ०—१ प्रतिदिन पटिकमणु करइ गति पामइ जी, सामायिक एकत देव गति पामइ जी । आहार विहरावइ सूक्तउ गति पामइ जी, सामलइ सूत्र सिद्धात देवगति पामइ जी । —स कु

उ०—२ बिए विहगण्वा आप जिमइ नही दाभीजइ दान सूरौ जी । आहार पाणी विहरावइ सूक्तउ, वस्य पात्र भरपूरो जी ।

—स. कु

उ०—३ आज तो तपसीएहवो, पुंजा रिख सरोखी न दीसइ रे । तेहन वदता विहरावता, हरखे करि हियडो हीसइ रे । —स. कु.

विहरावणहार, हारो (हारी), विहरावणियो—वि० ।

विहराविओडो, विहरावियोडो, विहराव्योडो — भू० का० कृ० ।

विहरावीजणी, विहरावीजवो—कर्म वा० ।

विहरावियोडो—देखो 'वैरायोडो' (रु भे)

(स्त्री. विहरावियोडो)

विहरियोडो—भू का कृ—१ विहार किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ.

२ अलग अलग हुआ हुआ, जुदा हुआ हुआ ३ भिक्षा दिया हुआ

४ बिखरा हुआ, सितर बितर हुआ हुआ. ५ गमन किया हुआ,

गया हुआ ६ भिक्षा मागा हुआ, भिक्षा लिया हुआ. ७ सहार

किया हुआ, नाश किया हुआ, मारा हुआ. ८ काटा हुआ ९

टुकडे-टुकडे किया हुआ, विच्छेदन किया हुआ १० चीरा हुआ,

विदीर्ण किया हुआ ११ तोडा हुआ. १२ इन्तजारी किया

हुआ, प्रतीक्षा किया हुआ. १३ शीडा किया हुआ ।

(स्त्री. विहरियोडो)

विहल, विहल—देखो 'विहल' (रु. भे)

उ०—भाग तथा भामणा त्या भूघर दुख भजण । विहला ना

वीठला, मुगति सारूप समरण । —पी ग्र

उ०—२ रास निमो रहमाण, मुगति दीन्ही महिला ना । गोकळ

मा गोविंदो, वळं मिळ्यो बिहला ना । —पी ग्र

उ०—३ राक सरिस दे रीभ, अखिल काड खीज करं भ्रति ।

वडो विहळ हू बुरो, पीर सा रीस किसी पति । —पी ग्र.

विहलो—देखो 'विहली' (रु भे)

उ०—रहि चोमासो रग सु, विहली करं विहार । माती घरा महे-

वची, वदाथो तिण वार । —ऐ. जे. का. स

रु भे —विहिल, विहिल विहिलो ।

विहव—देखो 'विभव' (रू. भे.)

उ०—लिखियो लाभ लोय, पर लिखियो लाभ नही । पर सिर पदम हि जोय, जँ विह विहव अप्पियो । —नैणसी

विहवस—देखो 'विह्वल' (रू. भे.)

उ०—कुंवरसी रो मा ती सुण अचेत हुई । सी बडारणा नीठ सचेत कीवी । अर बहुवा सुण विहवली हुई गई । नेत्रा माह प्रवाह छूट पडिया । —कुंवरसी साखला रो वारता

(स्त्री विहवली)

विहव्य—स पु [स.] वितथ्य का पिता एव गृत्समदवशीय वचंसु ऋषि का एक पुत्र, एक ऋषि ।

विहव्यआगिरस—स पु [स.] एक वैदिक सूक्तद्रष्टा का नाम ।

विहसणौ' विहसवौ—क्रि अ —१ हसना, प्रफुल्लित होना, हर्षित होना ।

उ०—१ उरध रोम उल्लसँ जोम अरि करण रसातळ, भजि त्रिसळी निज भाळ कळा सोखखा सत्र कम्मळ । उर उच्छाह ऊपजँ धाह पैला ग्रहि धारण, वदन हास विहसत रुदन पर वस वधारण । —रा रू.

उ०—२ सुडाळ भिडिया आवी अडिया, सुहड अगोअगि । नर सीस विहसई वदन विगसई, सेल वाहई सगि । —कमणीमगळ

२ खिलना, विकसित होना ।

उ०—१ पहिली होय दयामणउ, रवि आयमणउ जाइ । रवि ऊगड विहसइ कमळ, खिण इक विमणउ थाइ । —ढो मा

उ०—२ हिं व हूउ प्रभात, फीटी राक्षसनी वात, टलित अघकार वात, अद्रम्य नसत्र पट, लगन उज्जवल, नि सबद धूक कुल, मिरमल दिग्मडल, आस्रित पूग्वाचल, हूउ रविमडळ, विहसइ कमळ, विस्तरइ परिमळ, वायु वाई सीतळ, प्रसन्न महीतळ, जिस्या राता पारेवा तणा चरण, तिस्या विस्तरइ सूरय तणा किरण । —रा सा. स ३ प्रफुल्लित होना, फूलना ।

उ०—१ तुकमा रूप खतम फर्त रा फळिया, देखता उर दभ अरंदा दळिया । विहसती निज वदन वीरा रस वंस रो, दीणायो हद दौर मुरद्धर देस रो । —किसोरदान वारहठ

उ०—२ मतिवाळा घूमै नही नह घायल कणणाय, वाळू सखी ऊ द्रगडी भड वापडा कहाय । वाळि ऊ द्रगडी वसै भड वापडा, घाव अग सहे नह विमाडँ अरि घडा । घणा जसवत रा जोघ विहसै घणा, माडिसी सही मतिवाळा वेदीमणा । —हा भा

उ०—३ बैनाणी ढीली घडँ मो कथ तणी सनाह, विकसै पोइण फूल जिम, पर वळ दीठा नाह । विकसै घणी कमळ जिम भड निवड, भड घणा पाडती सोभियो महा भड । विहसतै सहस वळ कडी जाय उवडँ, घाट घड कथ रँ जरद ढीली घडँ । —हा भा.

४ लहलहाना, लहराना ।

उ०—तिसिह आविउ वसत, हूउ सीत तणउ अंत । दक्षिण दिशि तणउ सीतळ वाउ, वाइ विहसइ वणराइ । —रा सा. स. ५ प्रभात होना ।

उ०—१ मुक्क रहइ पहिलउ दिउ अगेवाणु पडव कन्ह दलउ जिम माणु । ई हा सेनानी गगेठ, प्रह विहसी जुडिया दल वेउ ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—२ पवनह वेगिइ चालता, पुहवी घणी गयाइ । प्रहि विहसी रवि ऊगोर, नीद्र गई नयणाह । —हीराणुद सूरि

विहसणहार, हारी (हारी), विहसणियो—वि० ।

विहसिओडो, विहसियोडो, विहस्योडो—भू० का० कृ० ।

विहसीजणो, विहसीजवो—भाव वा० ।

विहसणौ, विहसवौ, विहसणौ, विहसवौ, वीहसणौ, वीहसवौ, वीहसणौ, वीहसवौ, विहसणौ, विहसवौ—रू० भे० ।

विहसियोडो—भू का कृ.—१ हसा हुआ, प्रफुल्लित हुवा हुआ, हर्षित हुवा हुआ २ विकसित हुवा हुआ, खिला हुआ. ३ प्रफुल्लित हुवा हुआ, फूला हुआ ४ लहलहाया हुवा, लहराया हुआ । (स्त्री. विहसियोडो)

विहाँ—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—तद खीवसीजी वीहू नू बुलाय कह्यो, 'जो कुंवर नू कहि, थारँ विहा ती घणा छँ । फेर जोख छँ ती एक-दीय फेर सखरी जायगा करि । इण रो नाळेर फेर दँ । आपा सु इहा रो किसो सूत छँ ? —कुंवरसी साखला रो वारता

विहाण—देखो 'विहग' (रू. भे.)

विहांगडो—देखो 'विहग' (रू. भे.)

उ०—विहाणडँ ज उदाघ्नया, सर ज्यउ पडुरियाह । कालर काभा कमळ ज्यउ, ढळि ढळि ढेर थियाह । —ढो. मा

विहाण, विहाणइ—स पु [स विभानु] १ प्रात काल, सवेरा ।

उ०—१ विहाणँ नवै नाथ जागो वहेला, हुवा दोडिवा घेन गीवाळ हेला । जगाडँ जसोदा जडूनाथ जागो, महीमाट घूमँ नवै नडि मागो । —ना. द

उ०—२ उत्तर आज स उजमो, पाळो पडँ विहाण । भाजँ गात्र कुमारिया, देखँ मुगळ पठाण । —ढो. मा.

उ०—३ तिण दिवसि हूउसुपनतर, हूतइ प्रगट विहाणइ । पधारिया गगा नइ गीरी, कान्हडडँ इम जाणइ । —का. दे. प्र.

उ०—४ घण थट्टा गड घेरिया, वणि रिण ऊग विहाण । निस जाएँ चख जगाणँ, दिन पायँ घमसाण । —रा रू

उ०—५ अर अचळो रायमलौत कहै छँ—'जु जेमलजी मोनू बोलावै

छै, पिरा हू विहाण री दिन अठे वंठी छू अर जेमलजी घणो
गाढ करे छै । —नैरासी

२ देखो 'विधान' (रू भे)

रू भे —बहाण, विहाण, बिहान, बीहाण, बीहाणू, बीहान,
विहाणु, विहाणू, बीहाण, बीहाणू ।

अल्पा —बहाणो, बिहाणो, विहाणो, विहान, बीहाणो ।

बिहाणा—देखो 'बिहाणा' (रू भे)

बिहाणो—वि —१ नाश हुंवी हुई, नष्ट ।

उ०—घात छात सब दिल्ली जाणी, सपत श्रीपत थई विहाणो ।
पुर चळ चळ मुख अन्न न पाणी, रिधी सोध लीधी रजघाणो ।

—रा रू

२ हीन, तुच्छ, निम्न ।

३ बीती हुई, गत, विगत ।

उ०—२ एतै पर डाकदार वाव सू आया, पातसाह की ठीक कर
तहकीकत लाया । हाजर बुलाए साह सुण दूत बांणी, देवत ही
फुरमाया कही सो विहाणो । —रा रू

४ विना, रहित ।

स स्त्री —१ वृद्धावस्था ।

२ विध्वंस, नाश ।

३ वार्ता, बात-चीत ।

४ देखो 'विस्मृति' (रू. भे)

रू. भे —बिहाणो, बिहानी, बीहाणो ।

बिहाणू, बिहाणू—वि —१ रहित, विहीन, विना ।

२ देखो 'बिहाण' (रू. भे.)

उ०—तेहि न रोगी दोहगु तहु, तह मगल कल्लाणु । जे जिण-
वल्लहसूरि थुणहि, तिभि सभ सु बिहाणु । —ऐ जै का स

३ देखो 'बिहाणो' (रू. भे)

बिहाणो—अव्य —१ कल ।

उ०—१ मार नै तेडिया, कहण सदेसा कज । कही कव थै
चालस्थो, कै बिहाणो कै अज । —ढो मा

उ०—२ जीवन कारमी रे बिहाणो उठ जासी, आदर भजन तणो
अभियास । प्राणिया कदे न आवै पाछो, वळ न बीजो वागड वास ।

—श्रीपी आढी

उ०—३ इतै बिहाणो उगीयो, चिडिया चैचाइ । सायव कदे
पधारस्थो, कह जावो काइ । —पना

उ०—४ हेम सिसर रित मेडतै, रहियो कमधा राव । सभ बिहाणो
ऊगणो, दिन दिन दूणो चाव । —रा रू

उ०—५ कूच बिहाणो ऊगणो, अरि घर सोच अयाह । घास
उजाडा नीमडे, पडे पहाडा राह । —रा. रू.

वि.—१ बीता हुआ, विगत ।

२ विना, रहित ।

३ नष्ट ।

२ देखो 'बिहाण' (अल्पा, रू. भे)

उ-१ हीदूए मारीयल कीघउ, पग मेल्हणउ न जाइ । लोही तणा
प्रवाह ऊलटीया, दीसइ बिहाणा माहि । —का. दे. प्र.

उ०—२ बार बार रतनलाल कह बतळावी जी बिहाणा राजा
राम का, मुख घोवो कूटळा करी थारे कवरा नै थो ना दूध पिलाय
बिहाणा राजा राम का । —लो गो.

उ०—३ बिहाणा केरी वादली, नीच मरीसु नेह । तिम योवन
धिरता नही, पवन चढी जिम खेह । —मा का प्र.

३ देखो 'बिहाणा' (रू. भे)

रू. भे —बिहाणो, बिहाणो, बहणो, बिहाणु, बिहाणू, बीहाण,
बीहाणू, बीहाणो ।

बिहान—देखो 'बिहाण' (रू. भे)

उ०—१ थान की कुथान थान मान नीसरथो, हीयसी सुयान हा
बिहान बीसरथो । हू जहा अरामखोर तू जहा तरथो, तूहि पार
तार मार पाव में परथो । —ऊ का.

उ०—२ ए कैसे हैं—बडे सु बिहान हैं बडे महिरवान हैं, बडे
सिरदार हैं । बडे बूझदार हैं, बडे दातार हैं, जमी आसमान बीच
सभू अवतार हैं । —रा सा. स

उ०—३ सुधार सस्त्र अस्त्र कै जुधार जागत नही, लखौ बिहान
सान पै भ्रमान लागत नही । कमान वान तान कै निसान वेधत
नही, रसा उजास अघत नसा नितेधत नही । —ऊ का.

बिहा—देखो 'बिवाह' (रू. भे)

उ०—१ सो खीवमी हळोद झाल परणीया । बडी बिहा हुवो ।
बडी गूडी खरच जस अबल कीयो, बडी नाव कियो । झाली बडी
ठाकुराणी, जिसी ही रूप, जिसी ही सहर, जिसी ही सारी बात
में सुघड । सो खीवसी घणो राजी ।

—कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ आगे सहर मे अके साह रे बिहा थो, तै रे महीन री
तयारी करावै छै, भठी कढाय कढा, चरु, खुरपा, डहोला सारा
बासण आण हाजर कथा, खाड रा कापा भेळा कर वेकी कर
राखी, मैदी धिरत सारी काढ तयार कर राखियो ।

—राजा भोज अर खापर चोर री बात

बिहाई—देखो 'बिहायस' (रू. भे)

विहङ्गति-स. पु [स विहापित] दान । (ह ना मा)

विहाई—१ देखो 'विहायस' (रु भे)

उ०—अरीरगसा पातसा आसुर अवतार, तपस्या के तेजपुंज एक से विसतार । माप का विहाई सा प्रताप का निदान, मारतह आर्गं जिसी जोतसी जिहान । —रा रु

देखो 'विहाईमाता'

विहाईमाता—देखो 'वे'माता'

उ०—म्हारी नई अँ विहाई, टोक-टोडे सँ आए । तू ती आव विहाईमाता, भलडँ सँ ओसर आए । —लो. गो.

विहाण—देखो 'विहाण' (रु भे) (मीरा)

विहाड, विहाडो-वि.—भयकर, भयानक, भयावह, डरावना ।

उ०—ऊपाडिये तूट आघतर, जण जण पूगी जुवो जुवो । खीवर हाकलियो खीमावत, होकर जाउ विहाडा हुवो । —दुरसो आडो

विहाणी, विहाबो-कि अ —१ व्यतीत होना, गुजरना, बीतना ।

उ०—१ न क्यू विहाणी निसा इण वखत दूजा नरा, छता वहू दीसवं वड-वडा छात । 'पदम' विन न कौ प्रथमाद दाता पणा, 'पदम' विन न कौ प्रथमाद गजपात । —द्वारकादास दधवाडियो

उ०—२ राति विहाणी एण रसि, प्रात हुवो असवार । मेछ अभाग महाबळी, आरहि सग अपार । —रा रु.

उ०—३ दिवस दुहैला कस्टं जाय, रयणी तो किमही न विहाय । जिम जळधर नँ समरं मोर, तिम तुम्ह नँ समरु छू जोर । —वि. कु.

उ०—४ मोतिया री माळ तूटी । जाणो सुख री लका लूटी । इण भात सुख-सेजँ पौडिया । राति विहाणी । प्रभात हुवो छँ । राती का काम—ऊजागर नैण घुळि नँ रहिया छँ । कपोलै काम सुहाय री छाप लागी छँ । —रा सा स

२ छोडना, त्यागना, गमाना ।

उ०—वय बाळ विहाय युवा वरणी, कटिबद्ध भयो करनी करनी । विमना अनुराग विराग वह्यो, चित्तव्रतिय जोग प्रयोग चह्यो । —ऊ का

३ रवाना होना ।

उ०—चीतवियठ चहवाणि, जउहर की माडउ जुगति । हव हूइ-स्या हर-पुर दिसा, वेगावेगि विहाणि । —अ वचनिका

४ प्रात काल होना, सुबह होना ।

५ देखो 'विवाहणी विवाहबो' (रु भे)

विहाणहार, हारी (हारी), विहाणियो—वि० ।

विहायोडो—भू० का० कृ ।

विहाईजणी, विहाईजबो—भाव वा० ।

विहाइणी, विहाइबो, विहाणी, विहाबो, विहावणी, विहावबो, विहावणी, विहावबो—रु० भे० ।

विहापन-स पु [स. विहापन] दातार, दानी ।

विहायस-स. पु. [स] १ आकाश, गगन ।

२ पक्षी ।

रु भे—विहाइ, विहाई ।

विहायोडो-भू का कृ —१ व्यतीत हुवा हुआ, गुजरा हुआ, बीता हुआ २ छोडा हुआ, गमाया हुआ त्यागा हुआ. ३ रवाना हुवा हुआ ४ प्रात काल हुवा हुआ, सुबह हुवा हुआ ।

५ देखो 'विवाहियोडो' (रु भे)

(स्त्री विहायोडो)

विहार-स पु [स] १ मंथुन, रतिक्रीडा ।

२ वह स्थान जहा रतिक्रीडा या मंथुन किया जाय ।

३ वीडो का मठ ।

४ देवालय, मन्दिर । (ह. ना मा.)

५ गति, चाल, वेग ।

उ०—१ भरै नफेरी अरव को, डका सोर अपार । हुकम पिता चँ हल्लियो, नीर क तीर विहार । —रा रु

उ०—२ खतग वाज वेखता, विडग चौवडी विहारा । अगीअग आपळं, हुवा निरलग हजारा । ढग मतग चाचरा, वरगना रग वबाळा, सरग मग सूरमा, सग वारग सुचाळा । —वखतो खिडियो

६ प्रस्थान, गमन ।

उ०—१ स्त्री अकबर आग्रह करी, कास्मीर कियो रे विहार । स्त्रीपुर नगर सोहामणु, तिहा वरतावी अमार । —स कु.

उ०—२ जद भारमलजी स्वामी नँ रुधनाथजी कर्न मेल्या थारा स्रावक चरचा री कहै है सो चरचा करणी हुवै तो करी । जद रघुनाथजी बोल्या किएरं चरचा करणी है रे ? पछै घणी उपकार कर घणा नँ समक्राय स्वामीजी विहार कीवी । —भि. द्र

उ०—३ जो वीर जिणद विहार करि, इण नगर ना वाग मे आवै रे । तो घर छोडी अणमार हू थळ, एहवी भावना भावै रे । —जयवाणी

उ०—४ पखी तडफडइ, वडा माणस जडथडइ, काठ सडइ, हाळी हळ खडइ । आपणा घरि कादम फेडइ, बीजा काज मेडइ । पार पार न लीड, साध विहार न करीइ । —रा सा स.

७ जैन साधुओं का भिक्षा मागने हेतु जाने की क्रिया ।

स स्त्री —८ पक्ति, कतार ।

रू भे.—विहार, वीहार, वेहार ।

विहारजत्र—स पु —विहार यात्रा । (जैन)

विहारण—स पु [स विहारणम्] १ सहार, नाश ।

२ घूमने की क्रिया, टहलने की क्रिया ।

३ प्रस्थान करने की क्रिया, गमन ।

वि १ सहार या नाश करने वाला ।

२ गमन करने वाला ।

विहारणो, विहारवो—क्रि. स.—१ चहल कदमी करना, घूमना, फिरना टहलना ।

२ मडराना, उडना ।

उ०—आपरा पाम्हणा (हुसमण) तो पथ निहारै, भगडा री वाट जोचै, अनै रिण खेत मे मास रुधिर भखण भाळी शीघा गेण आकास में विहारै उड रही है । —वी स. टी

३ सहार करना, मारना ।

उ०—ग्रहि छळ 'अरजण' गौड, परठि मनवार अपारा । नजर टाळि नाराज, वहै घट हुवो विहारां । —सू. प्र.

४ चीरना, विदीर्ण करना ।

उ०—उमै मिसल अक्खास, पडे घडहड अपापारा । राव जाणि नरसिघ, हलै करि दयत विहारा । —सू. प्र.

५ तहस-नहस करना, नष्ट करना ।

६ क्रीडा करना, खेल करना ।

उ०—१ खेडघणो सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल । ज्यों गज वारि विहारतां, वोचै बारिज वेल । —रा. रू.

उ०—२ परणीजे मधुपुरी 'अभी' प्र दावन आयी । पेखि धाम सुख परम भडा सीरथ मन भायी । परखि निगम दूम पुज हेक सुख कुंज निहारै, हेक पुळिण हित करै हेक जळ जमण विहारै । —रा. रू.

७ गमन करना, प्रस्थान करना ।

८ उपभोग करना, खाना ।

उ०—जग ईख स्वाद पी ऊख रस, जिम अवर चार अनारय । सुख परम दिनपति नृपति सेवत, विवध भोग विहारय । —रा. रू.

९—शोभा देना ।

१० रति क्रीडा करना, मैथुन करना, सभोग करना ।

११ देखो 'वैराणो, वैरावो' (रू. भे.)

विहारणहार, हारी (हारी), विहारणियो—वि० ।

विहारिमोडो, विहारियोडो, विहारयोडो—भू० का० कृ० ।

विहारीजणो, विहारीजवो—कर्म वा० ।

विहारणो, विहारवो—रू० भे० ।

विहारियोडो—भू का. कृ.—१ चहलकदमी किया हुआ, घूमा हुआ, टहला हुआ २ मडराया हुआ, उडा हुआ. ३ नाश किया हुआ ४ सहार किया हुआ मारा हुआ. ५ चीरा हुआ, विदीर्ण किया हुआ ६ तहस-नहस किया हुआ, नष्ट किया हुआ. ७ क्रीडा किया हुआ, खेल किया हुआ ८ गमन किया हुआ, प्रस्थान किया हुआ. ९ उपभोग किया हुआ, खाया हुआ १० शोभा दिया हुआ ११ रति क्रीडा वा सभोग किया हुआ, मैथुन किया हुआ

१२ देखो 'वैरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री विहारियोडो)

विहारियो—देखो 'व्यवहारियो' (रू. भे.)

उ०—बरस वावीस की वाली-वेस, दत कवाड्या, सिर किलकिला केस । हाट विहारया कइ जोवज्यो, कइ जोवज्यो राज-दुवारि ।

—वी. दे

विहारी—वि.—१ विहार करने वाला, विचरण करने वाला ।

२ गमन करने वाला, प्रस्थान करने वाला ।

३ नाश करने वाला ।

४ सहार करने वाला, मारने वाला ।

५ रतिक्रीडा या मैथुन करने वाला ।

स. पु [स] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

उ०—१ मीरा के गिरधारी मुरारी, राखी लाज प्रभुजी हमारी । मैं हूँ दासी सदा तुमारी, तुम हो भलँ विहारी, चीर छोडो ।

—मीरा

उ०—२ हसँ सारी नाग नारी उचारी विहारी हूत, सवारी पधारी चळै लेतो आर्जे सूक । कठे थारी वेस असो जुद्धकारी वाता करै, फूणाधारी दीठो न छै प्रागकारी फूँक । —मुरारीदास बारहठ

उ०—३ विमळानन विबुधेस विहारी, सख चक्र धारी सुमण । भव तारण भूधर भय भजण, हिरणगरभ त्रय ताप हण ।

—र. ज. प्र.

उ०—४ गोकळ ग्रामी, सुर नर सामी । ए अवतारी, वाचि विहारी ।

—पि. प्र.

२ शिव, महादेव ।

३ ईश्वर, परमेश्वर ।

४ एक प्रकार का नीबू विशेष ।

उ०—विहारी, गूदडियो, कागदी तीन जात रा नीबू ।

—बा. दा. स्यात

५ देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

रू भे —बहार, बिहारी, वेहारी ।

बिहारीकव—स पु [स] एक प्रकार का जमीकद विशेष जो औपधि के प्रयोग में लिया जाता है ।

बिहारीदासोत—स. पु —१ राठोडो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

२ भाटी वश की एक शाखा या इस शाखा का व्यक्ति ।

—बा दा. ल्यात

बिहाल, बिहालौ—देखो 'बिहाल' (रू भे)

उ०—१ भाग बिना नहीं पाईयें, माणिक मोती लाल । दुनिया कौडी हाथि लै, हरीया भई बिहाल । —अनुभववाणी

उ०—२ दुनिया रोबं रोवणा, देख बिहाणी खाल । नाव सनेही बाहिरो, हरिया होय बिहाल । —अनुभववाणी

उ०—३ सबळ दळा कर 'यानसी', आयी फेर अचीत । फळ पायो आला धणी, थयो बिहाला चीत । —रा. रू

बिहाव—देखो 'बिवाह' (रू भे)

बिहावणी, बिहावची—१ देखो 'बिवाहणी, बिवाहवी' (रू भे.)

२ देखो 'बिहाणी, बिहावी' (रू भे)

उ०—१ आवी प्रीतम सेभ मे, हस हस पूछू बात । गळ में घाता बाहडी, सुखा बिहावें रात । —कुवरसी साखला री वारता

उ०—२ रायसिध नूं कहयो "मोनू थासु अलगी करस्यो ती राव था ऊपर आवसी" तरं राठोडें ठाकुरें कह्यो "जिण गाव कूकडो न हुवें छे तठे बिण रात बिहावें छें" —नैणसी

उ०—३ ताहरा कोडीधज री फरडकी सुणियो ताहरा राव खीवो वोलियो—'भाई कोडीधज घोडें रा फरडका सुणीजं छे, कोट पण एकलो छे बाभणियो पण मास ५-६ हुवा आयो बैठी छे, उपद्रव दीसै छे । आज कुसळ बिहावें । —नैणसी

उ०—४ कुसळ बिहावठ सज्जणा, पर मळळ थयाह । जठ बिह हिया न हारिस्यइ वळं मिळवठ त्याह । —ढो मा

बिहावणहार, हारी (हारी), बिहावणियो—वि० ।

बिहाविओडो, बिहावियोडो बिहाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बिहावीजणी, बिहावीजवी—कर्म, भाव वा० ।

बिहावियोडो—१ देखो 'बिवाहियोडो' (रू भे)

२ देखो 'बिहावियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिहावियोडो)

बिहिसिक, बिहिसिग-वि —अनेक प्रकार की हिंसाए करने वाला ।

(जैन)

बिहि—१ देखो 'बिधि' (रू. भे.)

उ०—१ ही बलण वेगी करे वालहा रे हो वा रे, हूं राखीसि सील

रतन्न । हो लेख मिटइ नही बिहि लिख्या, हो रे, हो झूठा कीजइ तें जतन्न । —स. कु.

उ०—२ जु रवि पस्चिम ऊगमइ, मेरु चलइ मही—माहि । बिहि—तणा पणि जे लख्या, चतुर न चूकइ क्याहि ।

—मा का. प्र

२ देखो 'बे'माता' ।

उ०—बिहि अम्हारी वंरणी, पेला भवनी होय । सज्जन सिद्ध सुख माणीइ, निलवटि निलख्या जोय । —मा का प्र

बिहिचणी, बिहिचवी—क्रि. स —१ विभक्त करना, तोडना ।

उ०—बिहिचो मेरु माहागिरी नाप्यु, पात्र तणि ता पाणि । तू नू दान करयू मि महीमाहा, मनि मोटी ए काणि । —नळाख्यान

२ देखो 'वाटणी, वाटवी' (रू भे)

बिहिचणहार, हारी (हारी), बिहिचणियो—वि० ।

बिहिचियोडो, बिहिचियोडो, बिहिच्योडो—भू० का० कृ० ।

बिहिचीजणी, बिहिचीजवी—कर्म वा० ।

बिहिचियोडो-भू का कृ —१ विभक्त किया हुवा, तोडा हुआ ।

२ देखो 'वाटियोडो' (रू भे)

(स्त्री बिहिचियोडो)

बिहित, बिहिति-वि [स बिहित] १ बनाया हुआ, अनुष्ठान किया हुआ, अनुष्ठित ।

२ निर्दिष्ट, नियुक्त या सुव्यवस्थित ।

३ निर्माणित, रचित ।

४ स्थापित ।

५ वांटा हुआ, विभक्त ।

६ शास्त्रसम्मत ठीक, उचित, उपयुक्त ।

उ०—१ बिहित सुणें अत वाणि एम चहुवाण उचारें । सकी काळ संघरें, न की रहियो चीसारें । प्रगट मात पाडवा, सु तो न गई वर सत्यं, श्री अत हथ आपरो हरी दीनी पर हत्यं । —रा. रू.

उ०—२ आकुळ थ्या लीक केहवी अचिरज, वछिन छाया ए बिहित । सरण हेम दीसि लीघी सूरिज सूरिज ही त्रिख आसरित । —वेलि

स पु [स बिहित] १ विधि विधान, कानून ।

२ आदेश, आज्ञा ।

[स. बिहित] ३ कृति, रचना ।

रू भे —बिहित, बिहितु ।

बिहिमग, बिहिमारग-स. पु [स बिधिमानं] बिधिमानं ।

उ०—सवि आचार विचार सार बिहिमग पयासइ । भविय जण मग विमल कमल रवि जेम पयासइ । —ए जे का. स.

विहिर-स. पु —१ दूषित, आचार । (जैन)

२ अपराध, दोष, गलती ।

उ०—विधाताइ करघु विहिर सरसव नि यम मेर । एक याचक,
एक दाता, घणु दीसि फेर । —नळाख्यान

३ फरक, अंतर, भेद ।

उ०—पचायण जवुक यथा, विहिर वायस हस । तिम माधव नइ
अवर नर, दासि । न जाणउ दस । —मा का प्र.

विहिल, विहिली, विहिलु, विहिली, विहिल्ल, विहिल्लो, विहिल्ल-वि.-
काफी, बहुत, अधिक, पर्याप्त ।

उ०—व्यास भणइ मत्रनइ उपाय, विहिली व्रस्टि हुसइ गढ माहि ।
गढ ऊपरि गढरोहा समइ, वूठा देव दिवस चउदमइ ।

—का दे प्र.

२ दु खी, पीडित ।

उ०—लक्ष्मीपुज आश्रितवत्सल प्रकृतिप्रोजल, विहिल्या साधार,
परोपकारकव्यसन नीतिबाधव परनारी सहोदर स्निग्धालाप सज्जन
चूडामणि अरथजनचित्तमणि इति स्तुति । —व स.

३ देखो 'विहिली' (रू. भे.)

उ०—१ गाई बाई गुण करी, रीभवि जाणउ राय । अक्ला । चालि
ऊतावली, वेगि विहिल्या पाय । —मा का प्र.

उ०—२ पवग पवग पलाण पलाण, विहिल्ला रूढ हुवा चापाण ।
सुभट्ट सजोडा त्रिण्ह सहस्स, सत्रामि जिक् सवि दीस सकस्स ।

—राउ जंतसी री रासी

उ०—३ बीर, विहिलु आवजें, कुसल माग तुंहनि करं कारज मन
वाछित, समइ सभारें मूहनि । —नळाख्यान

विहिवा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—भीम राइ सवणं सुणू रे पुत्रोनि पीडा तन । विहिवा नु
समय थयुं रे, अक्ला थई योवन । —नळाख्यान

विहिवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—इद्र कहि—'वरदान थो, देखसि नही प्रतिहार । ईंछाइ तूं
दरसन देज्ये, देखी विविध विहिवार । —नळाख्यान

विहिस्त—स. पु. [फा विहिस्त] स्वर्ग ।

उ०—दीन दुनी सदकं करू, टुक देखण दे दीदार । तन मन भी
छिन-छिन करू, विहिस्त दोखल वार । —दादूवाणी

विहीण, विहीणी—देखो 'विहीन' (रू. भे.)

उ०—१ विदर गपा रा वादळा, विदर विवेक विहीण । विदर
छाह निरखे वई, अलवेला अकुलीण । —वा दा.

उ०—२ गिनका री जे नर अहै, कयरी डढ करेण । खाग ग्रहै

किमि दळण खळ, तेज विहीणा तेण ।

—वा दा.

उ०—३ 'भगवन' सुतन सत्रा दळ भागा, निरदळिया अतलोकर
नर । क्रूरम चै न धाळियो किण ही, काळ विहीणां चाळ कर ।

—राजा मानसिध भगवतदासीत कछवाहा री गीत

विहीन-वि [स.] १ बिना, रहित, वगैर ।

२ त्यागा हुआ, छोडा हुआ ।

३ नीच, निम्न, कमीना ।

रू. भे —विहिन, विहीण, विहीन, वहीण, विहीण, विहीणी ।

विहुंड-स. पु. [स] हुण्ड राक्षस का पुत्र, एक राक्षस ।

वि वि —नहुप नै इसके पिता हुण्ड का वध किया था अतः इसने
नहुपवध हेतु शिव की तपस्या की थी किन्तु विष्णु ने मनमोहिनी
स्त्री का रूप धारण कर इसकी तपस्या भंग की थी । अन्त में यह
पार्वती के द्वारा मारा गया था ।

विहुडन-स. पु. [स'] शिव का अनुचर विशेष ।

विहुण, विहुणी, विहुण, विहुणी-वि —१ तुच्छ, निम्न ।

२ निर्बल, कमजोर ।

उ०—तठ वीरू अरज कीवी, "घरा पघार परभात असबार हुयजे,
जाय पुहचस्या । आपा सु कजीयो कर कासु लैसे ! आपा के विहुणा
छा । —कुवरसी साखला री वारता

३ देखो 'विहुणी' (रू. भे.)

उ०—१ हेम वरनी हेम गिर बाळी लंहुवै - वेस, कथ विहुणी
कामणी, साची कहि सदेस । साची कहें सदेस वेण मीठा करू, राज
मुदै पट हृथ्य रग महिला घरू । —मा वचनिका

उ०—२ पग विहुणी पिण परदेस भर्म, आवै तुरतउ जाय । वंठी
वहै अणै घरि बापडो, ती पिण चपल कहाय । —घ व अ.

(स्त्री विहुणी, विहुणी)

विहुव-कि वि —चारो ओर, हर तरफ ।

उ०—घूघरी रोळ घटा सबइ, मोखत पटं तळ जोड मह । गुडिया
गयद विहुव गमेय, पाहाड जाण हालै पगीय । —गु रू व

विहू—देखो 'वेळ' (रू. भे.)

उ०—१ रिण सोहा रिण सूरमा 'वीकी' 'सोम' वखाणि, नायक
पायक भड निवड अरि भजण आराणि । राण अराणि
अरि भाजिता रूक-हृथ, सूर साराहिया 'सोम' 'वीकी' समय । खड
पडतीस सो विहू उडं खरा, राय गुर वखाणं वधव रायसिध रा ।

—हा. भा.

उ०—२ दूजे पौहरे रयण के, मिळियत गुपफागुच्छ । धण पाळी,
पिव पाखरचो; विहू भला भड जुच्छ । —ढो. मा.

विहूण, विहूणी—देखो 'विहूणी' (रू. भे.)

उ०—१ है काने मीताहळ, कर पूंची कठमाळ पै सकळ । राघो नाम विहूण अनखाणी डोर आदम्मी । —र. ज. प्र

उ०—२ मूळ व्याज दोळ गया रे, धुर वोंरे नहि मेळ । साह विहूणी सहर मे, कूडी करेज केळ । —झीहरिरामजी महाराज

उ०—३ ग्यान विहूणा गुर मिल्या, सुरति विहूणा सिख । जन हरिया गुर सिख का, ससा मिटचा न चिख । —अनुभववाणी

उ०—४ घणी विहूणा घौळहर, ढहि ढहि ढेर थियाह । हरिया पाछा आय कै, वास न को वसियाह । —अनुभववाणी

(स्त्री. विहूणी)

विहू, विहूण, विहूणडो, विहूणडो, विहूणी—देखो 'विहूणी' (रू. भे.)

उ०—१ नितु नितु जोसी पूछोइ, नितु नितु सुकन सुभाव । नित नित निरति विहूणडां, आविइ वली वघाव । —मा. का. प्र.

उ०—२ इम अहनिस् आलोचती, मन सिधि मन परिणाम । तेल विहूणा दीप परि, क्षणि क्षणि थाती क्षाम । —मा. का. प्र.

उ०—३ ज्योति जिती छइ दीवडइ, तिम माघवि मुक्क जाणि । नवपल्लव नेह-जि-यकी, नेह विहूणइ हाणि । —मा. का. प्र.

उ०—४ जलाल ती बिन कोटडी चद विहूणी रैण । ती आया चानण हुवै, दीसै भलास सैण । —जलाल वूवना री वात

उ०—५ प्रेम विहूणी प्रीति जोसै मन न ठरै 'जस' । रस विण पाना रीति, रग न आवै राचणी । —जसराज

उ०—६ दादू भाव हीन जे प्रथी, दया विहूणा देस । भक्ति नही भगवत की, तह कंसा परवेस । —दादूवाणी

उ०—७ राम बसै जिए जगळां हे सखी । सौ हिज सुरग निवास । राम विहूणी सुरग ही सखी, तन उपजावै श्रास । —गी. रा.

(स्त्री. विहूणडी, विहूणडी, विहूणी)

विहून—देखो 'विहूणी' (रू. भे.)

विहूवल—देखो 'विहूवल' (रू. भे.)

उ०—गगा देखी विहूवल थयो, काम वाण पीडचौ ईस ।

—धरम पत्र

विहेठ, विहेड—स. पु —विनाश, सहर । (जंन)

विहूत—स. पु [स विहूतम्] स्त्रियों के दस प्रकार के स्वाभाविक अलकारो मे से एक जिसमे लज्जा के कारण फहने के समय भी बात नही कही जाती है । (साहित्य)

विहूति—स स्त्री. [स विहूति] १ विहार, आमोद, प्रमोद क्रीडा ।

२ हटाने या छीनने की क्रिया ।

विहूल—वि [स] १ भय, चिन्ता आदि के कारण घबराया हुआ, व्याकुल, बेचैन ।

उ०—१ रूप अनुपम रभ सम, उवा पदमी कहे याह । वार वार विहूल थकी, जपै आलिम माहि । —प च. ची

उ०—२ तिविका बडसी सचरइ, घरि थी राउलि जाइ । वाटि-वली विलीकती, विनता विहूल थाइ । —मा का प्र

२ खराब विकृत । (अमरत)

३ चकित, विस्मित ।

४ भयभीत, डरा हुआ ।

उ०—पीली चोली पहिरणइ, वाली फाली सेत्र । निरखी निरखी नाहु नइ, विहूल विकसित नेत्र । —मा का प्र

५ पीडित, सन्तप्त ।

६ कुटिलतायुक्त । (मति)

उ०—लघु वइ लक्षण लाछिना, सामुद्रिक गुण सार । वेस्या मति विहूल थइ, चितइ चूक विचार । —मा. का प्र

७ चिन्तित, उदास ।

उ०—वलवलती विहूल वदनि, वलती वदइ उदार । राजा रुठव मनाविसुं, सुपी सपति सार । —मा का प्र

रू. भे —विभन, विम्मल, विहवळ, विहवळ, विहूल, भिमल, भिमळ, भीमळ, भीमल, विवहल, विहवळ, विहळ, विहल, विहवल, विहूवल, वीहळ, विहल ।

अल्पा.—विहवली, विह्वली, वीहली, वीहली ।

विहूलता—स स्त्री [स.] विहूल होने की अवस्था, क्रिया या भाव ।

वीं—१ देखो 'वी' (रू. भे.)

उ०—१ पहर एक गोळी वही पण वाहरला जाणै उया सौ उवै लगाव री जायगा जाणै था सौ वीं ठावें सूं बड गया ।

—मारवाड रा अमरावा री वारता

उ०—२ भरमल अहडी कामणी, जहडी चद प्रकास । काया लै घर कू चल्या, रहौ जीव वीं पास ।

—कृशरसी साखला री वारता

उ०—३ सौ दलकरण रै डेठ सौ घोडा पायगा माहे वाकी पटायता रा घोडा सौ इण तरइ सू घोडा अडाई सौ वीं कन्है रहै ।

—सुदरदास भाटी वीकूपुरी री वारता

उ०—४ योगी कही—बन माही म्हारे साथ एक कारज सिद्ध करस्या । राजा कही—हाली । तद योगी राजा नू बन माहीं लेय गयो । वीं ठाव एक सीसम री ब्रख । ती पर एक मुरदो वधियो छै ।

—सिधासंखे वतीसी

२ देखो 'भी' (रू. भे.)
 ३ देखो 'वी' (रू. भे.)

वींजणी, वींजणी—फ्रि स [स वीक्षण] १ ऊन, रुई आदि को हाथ से साफ करना ।
 २ देखो 'वीखणी, वीखवी' (रू. भे.)

वींजणीहार, हारो (हारी), वींजणियो—वि० ।
 वींजियोडो, वींजियोडो, वींजियोडो—भू० का० कृ० ।
 वींजियोडो, वींजियोडो—कर्म वा० ।
 वींजणी, वींजणी, वींजणी, वींजणी—रू० भे० ।

वींजियोडो—भू का कृ—१ हाथ से साफ की हुई ऊन, रुई आदि ।
 २ देखो 'वीखियोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री वीखियोडो)

वींख—देखो 'वीख' (रू. भे.)
 उ०—“इतना दिन हू जाणती रे हा” एहनी हिंवें तो सोहण सुदरी रे हा, पुत्री नै धीर्यं सीख, बाईं । सामळो । सासरीया सतोखिजें रे हा, हलवें भरजें वींख, बाईं । सामळो । —स्त्रीपाळारास

वींखणी, वींखणी—१ देखो 'वींखणी, वींखणी' (रू. भे.)
 २ देखो 'वींखणी, वींखणी' (रू. भे.)

वींखणहार, हारो (हारी), वींखणियो—वि० ।
 वींखियोडो, वींखियोडो, वींखियोडो—भू० का० कृ० ।
 वींखियोडो, वींखियोडो—कर्म वा० ।

वींखियोडो—१ देखो 'वींखियोडो (रू. भे.)
 २ देखो 'वींखियोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री. वींखियोडो)

वींखी—स. स्त्री.—१ विवाचिका नामक कुष्ठ रोग । (अमरत)
 २ एक प्रकार का रक्त विकार का रोग (अमरत)

वींखियो, वींखियो, वींखियो, वींखियो—देखो 'वींखियो' (रू. भे.)
 (व. स.)

उ०—१ पाय पीरोजो वाणही, अगुठि अणवट्ट । ठीक जडित ठाहरि रहिया, वली वींखियो खट्ट । —मा. का प्र.
 उ०—२ अणोट वींखियो उदार, पाय पख पकज । अनग ह्वै छनंग अग, रग रग मे रज । —सू. प्र.

वींजणी—१ देखो 'वींजणी' (रू. भे.)
 २ देखो 'वींजणी' (रू. भे.)

उ०—१ वीनता समइ न वेदना, करतां कोडि उपाय । वाउ विलोलइ वींजणीइ, को चदन घसी लाय । —मा का प्र
 उ०—२ सघण सूकडि सहरि सु सीचीइ, पवण पूरिहि वींजणी

वींजणीइ । कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ
 आफरिउ । —सालिसूरि

वींजणी, वींजणी—१ देखो 'वींजणी' (अल्पा, रू. भे.)
 उ०—माधव जिहा पगला भरि, तिहा पळ्यो मुळ राख । पवन वसइ तिणि वींजणी, सावद सारेज लाख । —मा. का प्र.
 २ देखो 'वींजणी' (रू. भे.)

वींजणी—देखो 'वींजणी' (रू. भे.)
 उ०—जलंद्रा सरीरि लगाडीयइ, गुलाव तणा अम्यग कीजइ, बावन स्त्रीखड घसीयइ । चउदिसि वींजणी फिरइ द्राक्षा आबिली पान कीजइ । कलम सालि तणा साधठ रा करवा कीजइ । —रा सा स'
 उ०—२ न लेवें वींजणीं वाय, स्निग्ध वासी न रखाय । भोजन ग्रही थको ए, जीम्या होवें व्रत-धकी ए । —जयवाणी
 उ०—३ गुळें वेंठी गोरडी रे वींजणीं ढीलति वाय । पेट नै काजें पदमणी रे, जाचें घर घर जाय । —स. कु

वींजणी, वींजणी—देखो 'वींजणी, वींजणी' (रू. भे.)
 उ०—मस्तक छत्र घरावतउ, चामर वींजता सार रे । आज तउ मस्तकइ रवि तपइ, डास मसक भणकार रे । —स. कु.
 उ०—२ “सेवत्री तणा ताड वेड भमिया, अगर प्रतिवोधिउ, कस्णा-गर उखेविउ, पंचवरण पाडु तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी तिसरी मोतीसरी लबावी राजा आस्थान देउ बइठउ छइ, मोर वीछ तणी वींजणीं वाउ वींजइ । —व. स.
 उ०—३ सघण सूकडि सहरि सु सीचीइ, पवण पूरिहि वींजणी वींजणीइ । कमल नै दलि साथर पाथरिउ, मरइ कीचक मन्मथ आफरिउ । —सालिसूरि

वींजणीहार, हारो (हारी), वींजणियो—वि० ।
 वींजियोडो, वींजियोडो, वींजियोडो—भू० का० कृ० ।
 वींजियोडो, वींजियोडो—कर्म वा० ।

वींजणी, वींजणी—देखो 'वींजणी, वींजणी' (रू. भे.)
 उ०—१ मल्हपें मंगळा, सूड लल्लवळा, आगळी ऊजळा, सेत दातुसळा । सोहिया सामळा वप्पि वींजणीचळा, सग कूभायळा, वींजणी किरि वडळा । —गु. रू. व.
 उ०—२ कुजरा डूहरी ढाळ कुभायळें, बादळा जाण फाबत्त वींजणीचळें । धम्मळी पीयळी लाल नीली धज, गाजता जाण गोरभ दीसें गज । —गु. रू. व.

वींजणी, वींजणी—देखो 'वींजणी, वींजणी' (रू. भे.)

उ०— अनइ इक सुवरणमय रूपमय रसित विविध प्रकारि जै छइ पालखी, चकडोल, अनइ तरुआरि स रमता, भाला उछालता, हाकहीक करता एह्वं पायकं परिवारिउ, छत्र घरातइ, चमर वीजातइ, नफेरी सरणाइ बरगा डोल भालर डुडि दमामा दडदडी अद ग नीसाण प्रमुख वाजिअ वाजइ । —व. स.

वीजाणहार, हारी (हारी), वीजाणियो—वि० ।

वीजायोडो—भू० का० कृ० ।

वीजाईजणो, वीजाईजवो—कर्म वा० ।

वीजायोडो—देखो 'वीजायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीजायोडो)

वीजासणिया—स स्त्री—एक लोक देवियो का समूह विशेष, जिनके प्रकोप से घात रोग होते हैं । (अमरत)

वि. वि.—देखो मावलिया

वीजियोडो—देखो 'वीजियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीजियोडो)

वीजीणो—देखो 'बीजणो' (रू. भे.)

उ०— सेवत्री तणा ताड वेड भमिया,अगर प्रतिबोधित,कस्सागर ऊसेविउ पचरणण पाइ तणा उल्लोच ताड्या, मुक्ताफल तणी त्रिसरि मोतीसरी लबावी, राजा आस्थान देउ वइठउ छइ, मोरवीछ तणै वीजीणै वाउ वीजइ*** । —व स

वींभ—देखो 'विध्य' (रू भे)

उ०—१ इहा सु पजर मन उहा, जय जाणइला लोइ । नयणा आडा वींभ वन, मनह न आडउ कोइ । —ढो मा

उ०—२ प्रीति अलियळ केतकी नड, प्रीति वींभ गयद । तिय रुखमणी सु नेह धरज्यो, प्रीति परमाणुद । —रुखमणी मंगळ

वींभगिर, वींभगिरी—देखो 'विध्यगिरि' (रू भे)

वींभणो—देखो 'बीजणो' (रू भे)

वींभणो, वींभवो—देखो 'बीजणो, बीजवो' (रू भे)

उ०—१ भाजी निसही जिनग्रह पेसै, धरं छत्र न मडप मे वेसै । पहिरं वस्त्र अनं पनही, चामर वींभ मनठाम नही । —वृस्त

उ०—२ जिनजी कु देखि मेरउ मन रींभइ री । तीन छत्र सिर ऊपर सोहइ, आप इद्र चामर वींभइ री । —स. कु

वींभणहार, हारी (हारी), वींभणियो—वि० ।

वींभणोडो, वींभियोडो, वींभयोडो—भू० का० कृ० ।

वींभोजणो, वींभोजवो—कर्म वा० ।

वींभवन—स पु—एक वन विशेष जहा हाथी बहुत पाए जाते हैं, सु दर वन ।

रू. भे—वींभवन, वींभवन, वींभावण, वींभावन ।

वींभाचळ, वींभाचल—देखो 'विध्याचळ' (रू भे.)

उ०—मयण काम मूरति, गात गिरवर वींभाचळ । बडी वीर वीराधि, सिध रूपी सहस बळ । —गु रू व

वींभाजळ, वींभाजल, वींभाभळ, वींभाभल—देखो 'विध्याचळ' (रू. भे.)

उ०—१ वींभाजळ रूप गयद चढि मेघाडवर विराजै । नीवतूं कै निहाव वीरारस वाजै । जिस बखत जळाबोळ हालोहळ सै फोज हल्ली । नाळूं कै निहाव सेती धरती थरसली । —सू. प्र.

उ०—२ पुवै राग सिधुवा, गजै नाळिया अ बागळ । मेळा भड गहमहै, वहै गोळा वींभाभळ । —सू प्र

वींट—स पु [स विष्टा] १ पक्षियो की वीट या विष्टा ।

उ०—राजा कहघो—थूं ई वता उडता पछिया नै वींट करता म्है कीकर पाल सकूं । कोई मिनख रो जायी की भूल करै तो म्है उण रो सात पीडिया नै उकळता फडावा में भूज न्हाकू पण आ अरूभ पछिया माथे खोज करणो नी विरथा है । —फुलवाडी

उ०—२ राजा कहघो—थू तो नित सो वार मरिया करै थारै मरणा रो काई । पण एक मामूली सो वींट वास्तै म्है अणगिर पछिया नै मार नी सकू । लुगाया रो कणो मानै उणनै तो राजा वणणो ई नी चाहिजै । —फुलवाडी

२ आवेष्टन, घेरा ।

३ टापू, द्वीप ।

उ०—माफि समदा वींट घर, जळ सू जामोपत्त । किएही प्रवगुण कुम्हो, कुरळी माफिम रत्त । —ढो मा

४ देखो 'वीटी' (मह, रू. भे.)

रू भे—विट, बिट, वीट, बीठ, वीट, विट ।

वीटण—स पु. [स. वेष्टन] १ पुस्तक आदि लपेटने का वस्त्र ।

२ विस्तर आदि बाधने की रस्ती ।

रू भे—वीटण ।

वीटणी—देखो 'वीटणी' (रू भे.)

वीटणो—देखो 'वीटी' (रू. भे.)

उ०—कोटवाळ राजी हुवी, कहघो, देखो गाठडो माहै कासू छै । जदं पयादा उतावळा मुजरायता खोलणी माडी । जठे तीजी वट खोलै तिठे लोही लागो दीठो । सगळा चमक्या नै वीटणो उघाडै तो माटी मारघो निजर पडियो । —जगदेव पवार री वात

वीटणो, वीटवो—क्रि. सं.—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित करना, घेरना ।

उ०—१ रामा री पटी लीयो नै राव चद्रसेन नै मुगळा नू लगाय दीया । जेठ सुद १२ रामो मुगळ रामबावडो उत्तरीया । दिन १८ नगर वींट रह्या । —राव चद्रसेन री वात ।

उ०—२ पातिसाह गुजराति ल्यो । हू हिंदुग देस जाइ करि लेइसि ।

उठा हुती मिरजी सोभति सिरियारि माहे होइ न नागीर आइ बौटियो । —द वि

उ०—३ त्रिण कण कापड जल माहे लीध, गढरोही मालव पति कीध । सायर बौटी लका जेम, उज्जेणी बीटी रह्यो तेम ।

—छीपालरास

उ०—४ कमघर्ज बौट नागीर कोट, चळ दळ अरि कीघा एक चोट । 'इद्रसिध' देख दळ बळ अपार, दै कोट जिण लियो धरम द्वार । —रा रु

२ गोल करना, लपेटना, समेटना । (विस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण करना ।

४ आच्छादित करना, ढकना ।

५ लपेटना ।

उ०—१ अन्न अदक पय परिहारी, आभरणा ऊवेखि । वकुल त्वचा बौटी करि, तरणी तापस-वेखि । —मा का प्र

उ०—२ चावडी उण न अमला माहे वेखवर देखि, तरे उणरी ही तलवार काडि गळो कीधो । हाथ जुदा जुदा काटिया पगा रा जांघा रा जुदा जुदा तखता कीघा करने चादणी माहे घड देने बाधियो । ऊपरा पिलिग-पोस बौटियो । तिए ऊपर जाजम छोटी थी, तिकी बीटी । गठ गाडी सैठी बाधो । —जगदेव प वार री वात

६ बाहुपाश मे लेना, अकमाल मे लेना ।

उ०—रहे उमा भुज बौटियो, नव कौपळ रे रग । आदर पावे कठ उण, सूर तयो उत्तमग । —बा दा

७ वस्त्र, कवच आदि को पहनना, धारण करना ।

८ वस्त्र, कवच, आदि पहनाना, धारण कराना ।

९ मढना, आच्छादित करना ।

उ०—तठा उपरायत पताखा सू बादळा छोड्जे छे । सू किये भात रा बादळा छे ? हळवद रा, मोरवी रा अजार रा, भरवछ रा, हालोर रा छे । रूप टूटी साकळी लागी छे । घणी सिलेहटी अटायण में बौटिया थका, ऊपरा वेवडी-तेवडी झालरी में गरकाव किया थका छे । —रा सा. स

क्रि. अ-१० चारो ओर ही जाना, चारो ओर फेल जाना ।

उ०—१ सिधा माळ सू बीटियो ज्यू हेमाळ सदा लहे सोभा, वहे चद्र माळतारा बीटियो वलाण । बीटियो अमरामाळ मेर वदे कहे वातां, रहे पातामाळ सू बौटियो 'भीमो राण ।

—कविराजा बाकीदास

उ०—२ क्षणि नान्हा क्षणि मोटा दीसइ, माहीमाहि खुसइ वेड गीसइ । बघावे बौटीउ राउ दुजोहणु चिहु पडवि बीटीउ द्रोणु ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ तथ जादव अणरागिय लागि रहिया पागि । बौटीउ प्रभु परमेसरी नीसरी न सकइ मागि । —जयसेखर सूरि

११ आवेष्टित होना, घिरना ।

उ०—वारागना वसत्रे बौटणी, घाइ घाइ तरण करे घणो ।

'ऊदा' हरे नासिया भळगा, पोति अने अयतार पणो ।

—पूरणमल भाणायत री गीत

११ जडना ।

बौटणहार, हारी (हारी), बौटणियो—वि० ।

बौटिओडो, बौटियोडो, बौटयोडो—भू० का० कु० ।

बौटीजणो, बौटीजयो - वमं वा०, भाव वा० ।

बिटणी, बिटयो, बिटुणो, बिटुवो, बिटणी, बिटवो, बौटणो बौटवो, बिटणी, बिटवो, बिटुणो, बिटुवो, बीटणी, बीटवो—रू० मे० ।

बौटळी, बौटली-स स्त्री—१ पगडी, साफा ।

उ०—वीग री चिलकी बौटली, भावजा वो चिलक्यो जी वीर ।

उठ गोरी उठ सावळी, वाई सोदरा वाहर भाव । —लो गी

रू मे.—बीटली, बीटली, बीटुळी, बीटुली, बीठली ।

२ देखो 'बीटळी' (रू मेः)

उ०—ताहरा रोमि मुहते नू कण्यो—'जावां छा गोठ जीमण ।

राव नू बौटळी मता चढण देज्यो । ताहरा बीटळी चढसी ताहरा

रेया री डूगरी देखसी, ताहरा सहसां चीता आवसी ।

—नेणसी

३ देखो 'बीटी' (अथवा रू मे)

उ०—कर कगीय ठोसी वाकुडी, बौटली विविध प्रकारि । मुद्रडी

हीरे जडी नई, कनक ककण सार ।

—रुकमणी भगळ

४ देखो 'बीटणी'

बौटणी, बौटावो—क्रि स [बीटणी क्रिया का प्रे रू] १ किसी शहर

दुर्ग आदि को अधिकार मे करने हेतु उसे आवेष्टित कराना

घिराना ।

२ गोल कराना, लपेटाना, समेटाना । (विस्तर आदि)

३ चारो ओर से आक्रमण करना ।

४ आच्छादित कराना, ढकाना ।

५ लपेटाना ।

६ बाहु पाश में लेने को प्रवृत्त कराना, अकमाल मे लिवाना ।

७ वस्त्र, कवचादि पहनाना, धारण कराना ।

८ मढाना, आच्छादित कराना ।

९ चारो ओर कर देना या फैला देना ।

१० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त करना, घिरने के लिए प्रेरित करना ।

बौटणहार, हारी (हारी), बौटणियो—वि० ।

बौटियोडो—भू० का० कु० ।

बौटाईजणो, बौटाईजयो—कर्म वा० ।

बीटाणो, बीटाबो, बीटाणो, बीटाबो, बिटाणो, बिटाबो

—रू० भे० ।

बीटायोडो—भू का कृ—१ किसी शहर, दुर्ग आदि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित कराया हुआ, घिराया हुआ २ गोल कराया हुआ, लपेटाया हुआ, समेटाया हुआ । (विस्तरादि) ३ चारों ओर से आक्रमण करने के लिए प्रेरित किया आच्छादित करवाया हुआ, ढकाया हुआ ५ लपेटाया हुआ ६ बाहुपाश में लेने के लिए प्रेरित किया हुआ, अकमाल में लिवाया हुआ ७ वस्त्र, कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ. ८ मढाया हुआ, आच्छादित कराया हुआ ९ चारों ओर किया हुआ, फँसाया हुआ १० आवेष्टित होने के लिए प्रवृत्त किया हुआ, घिरने के लिए प्रेरित किया हुआ ।

बीटियोडो—भू का कृ—१ किसी शहर, दुर्गादि को अधिकार में करने हेतु उसे आवेष्टित किया हुआ, घेरा हुआ २ गोल किया हुआ, लपेटा हुआ, समेटा हुआ ३ चारों ओर से आक्रमण किया हुआ. ४ आच्छादित किया हुआ, ढका हुआ ५ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ, ६ बाहुपाश में लिया हुआ, अक- माल में लिया हुआ ७ वस्त्र कवच आदि पहना हुआ, धारण किया हुआ ८ वस्त्र कवच आदि पहनाया हुआ, धारण कराया हुआ ९ चारों ओर हुवा हुआ, चारों ओर फँसा हुआ १० आवेष्टित हुवा हुआ, घिरा हुआ ११ जडा हुआ ।

(स्त्री. बीटियोडी)

बीटो—देखो 'बीटो' (रू भे)

उ०—१ छुरी र हसती मुहरें री थी सी बोहत बस थी । सी रुपोट माहे खोलियो । बीटो हाथ में मोहरें री थी, सी खोळी । पछे आप री आख खोळ बढारण री आख खोळाय आप रें हाथ सु भरमल नै दी । —कूबरसी साखला री वारता

उ०—२ मोतिया री हार चीठ पच-लडी विराज रह्या छे । जडाव रा बाजूबध काण्य रतन-चोक आरसी बीटो विराज रही छे । बळ चूडी सोनेरी बगडीदार विराजे छे । जाणै काळी घटा में बीज चमके छे । —रा. सा स.

उ०—३ जीमणा हाथ री चिदुडी आगळी धके करने कंवाण लागा आ छोटी सी बीटो दस हजार रिपिया री है, म्हारी अं पगरखिया हजार रिपिया री है अर थाने की इदकाई नी दीसे । आपरी आख्या में कठई जाळी तो नी है । —फुलवाडी

बीटोरो—देखो 'बीटोरो' (रू भे)

बीटो—स. पु—दरी आदि में लपेट के साथ बाधा हुआ कपडे आदि का गोल विस्तर ।

२ देखो 'बीटो' (रू भे)

मह,—बीट, बिट, बीटो ।

बीटो—देखो 'बीटो' (रू भे.)

उ०—जं सीख दिया रें दूजें दिन कं बरस दिय बरस पछे वाई री अणचीती मोत व्हेगी ती सगळी बीटो, दत्त-दायजी अँळी नी जावैला । कमाई करण वाळा नै हजरू वाता री ध्यान राखणी पडं । —फुलवाडी

बीटो—स पु—एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ०— 'गढगजी सवागजी चुगजी पटणी पटपाद्द, पचवरण छीट, नीलवटा चकवटा घीतवटा मुहिवटा नाटी दोटी घटी कठपीठ पागडी बीटो रेट चूनडी पातलसाडी, नदरवारी पाघडो, पामडी लोवडी, वाहणवही लोवडी । —व. स.

२ देखो 'भिडी' (रू भे)

बीटो—देखो 'भिडी' (भल्पा, रू भे)

बीण—१ देखो 'बीणा' (रू भे)

२ देखो 'बिना' (रू भे)

बीणणी, बीणबी—क्रि स—छाटना, टालना ।

उ०—प्रतापसिंह माथे निजर पडताई ची तारा री गळाई उण कानी तूटी, इतरे लारनी भोड माथे आय पडी छता पण नैडा आयोडा तीन च्यारा नै बीणने वीर री डाढाळी बुई सी प्रतापसिंह री माथी जमी माथे लुटतो निजर आयी । —धमर चूनडी

२ देखो 'बिणणी, बिणबी' (रू भे)

३ देखो 'बुणणी, बुणबी' (रू. भे)

बीणणहार, हारो (हारी), बीणणियो—वि० ।

बीणणोडी, बीणणोडी, बीणणोडी—भू० का० कृ० ।

बीणणबी, बीणणबी—कर्म वा० ।

बीणती—देखो 'बिनती' (रू भे)

उ०—कठे अगन, जळ, पवन, चुंबं री मेघ अदेसो ? कठेक पाटक पुरख लिजावण जोग सदेसो ? भूल्यो इतरा भेद बीणती मेघ करतां न चेत अचेतरण ग्यान काम-कवाण चढता । —मेघ

बीणियोडी—भू का कृ—१ छाटा हुआ, टाला हुआ ।

२ देखो 'बिणियोडी' (रू भे)

३ देखो 'बुणियोडी' (रू भे)

(स्त्री. बीणियोडी)

बींद—देखो 'बींद' (रू भे)

उ०—१ कोई वीर पुरख परणीजियो नै दूजे दिन सासरा माथे दुस-मण आया तठे साळी नै वहनोई सत्रुप्रा नै पूगा तठे बींद वणियोडे हीज ऋगडा रें भूखे तरवारा आगे सरीर पुरजा पुरज कर बिखे-रियो । —बी स टी

उ०—२ हिंदवा राव हथवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा । गई झुग विवाणा बैस इद्र आगळी, बुही चारगना विना वीदा ।
—महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—३ आसकन्न वडी एकाधपति, 'नीवउत' नमौ आतम सकति ।
श्रोपमा करन्न अण-नीद, वरियाम कुमारी घडा वीद ।

—गु. रू व

उ०—४ 'जंतमाल' अण-पाल, धी व मेवाड तणी घड । सिवि-
याणै सोभति, 'भाण' रीळिया भडा घड । —गु रू व.

उ०—५ रुद्रमाल रचावा । पहाडा नै जळ चाढा । इतरी साभळी
नै संभ नै निसभ वेळ दावाई भाई बोलिया-उवाह उवाह । अणी
रा वी द । रिण मे बावळा । वाकी मूँछाळा । —मा वचनिका
(स्त्री वीदणी)

वीदह—१ देखो 'वीद' (अल्पा, रू भे.)

उ०—धी दह जेडी वीदडी, जोडी तुली है जोर । गळ कठी भुज
भुजवद, माथा ऊपर मोड । —सातिलाल

२ देखो 'वीदळ (रू. भे.)

उ०—जप सखी ! म्हारा जणण, भवर करै भडभाळ । वी'दह
बजाय विग्रहा, बीजड ह्वै बीवाळ । —रैवतमिह भाटी

धी दडली—देखो 'वीदडी' (अल्पा, रू भे.)

वी'दडी-स स्त्री —१ विवाह आदि के लिये निमन्त्रण पत्र, कुकुम-
पत्रिका ।

२ देखो 'वीदडी' (रू भे.)

३ देखो 'वीदणी' (रू. भे.)

उ०—वीदह जेडी वी दडी, जोडी तुली है जोर । गळ कठी भुज
भुजवद, माथा ऊपर मोड । —सातिलाल

धी दडी—१ देखो 'वीदडी' (रू. भे.)

२ देखो 'वीद' (अल्पा, रू भे.)

धी वणी—देखो 'वीदणी' (रू. भे.)

उ०—१ सुरति करि आरती निरत नेता लीया, साम समेहळं मिळं
सारा । वहा वर धी वणी खैरवटी खरी, इद ज्युं श्रोवडं इमी धारा ।
—अनुभववाणी

उ०—२ मन ई मन सोचण लागा के आ कोई डाकण, भूतणी के
स्यारी ती किणी भाव नी व्है सकं । देवता री पूजा साह घर सूं
निकळी । किणी घनवती री नवी वी'दणी दीसं ।

—फुलवाडी

उ०—३ वी'दणी अणूठी होय मूँढी ऊघाह बँठगी । ऊवो जोयो ।
पतळी पतळी लीली चेर लडाभूम सागरिया ई सांगरिया देखता ई
कीया मे ठाडोळाई वापरणी । —फुलवाडी

उ०—४ तद पदमावती वर देख राजी हुई । उठं वीद नु तोरण
वादाय चवरी लै आया । अर धी वणी आण हथळवो जोड धर
परणाया । —ठकुरै साह री वात

धी'वणी, धी'दवी—देखी 'बीधणी, बीधवी' (रू. भे.)

धी'दणहार, हारी (हारी), धी दक्षिणी—धि० ।

धी दिप्रोडी, धी दियोडी, धी घोडो—भू० का० कृ० ।

धी दीजणी, धी दीजवी—कर्म वा० ।

धी दरजा—देखी 'वीद' (रू. भे.)

उ०—फेरा रं पै'ली हथळेवा में धी'दरजा री हाथ काई फिलियो,
जाणै गिगन रा नवलख तारा वीदणी री हथाळी मे आय जिरिया
उण री नस नस मे वीजळिया खिवण लागी । —फुलवाडी

धी दळ-स पु.—नपुंसक, हिजडा ।

उ०—१ दुमल दुरगा दहण, वद वद सह खग वार । की धी दळ
विग्रह करै, हथ ताळया हथियार । —रैवतसिह भाटी

उ०—२ धी दळ बीस हजार, हैमाळे गळिया हता । करम लिखी
करतार, राका नै राजा किया । —अग्यात

रू. भे.—वीदइ ।

धी वाचन—देखो 'व दाचन' (रू भे.)

धी वियोडी—देखो 'धीधियोडी' (रू भे.)

(स्त्री. वीदियोडी)

धी दोळी, वी'दोली—१ देखो 'वीदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'बदोळी' (रू भे.)

धी दोळी, धी दोली-स पु —१ दूहे या दुल्हन का जूता ।

२ देखो 'बदोळी' (रू. भे.)

रू भे—धीनोळी ।

धी ध—देखो 'वीद' (रू भे.)

उ०—बहण धी ध कुंद सपक दाळिद बहण, तप पड ग अगभाव
अवतार । कोक सिख जडळ जोगेसरा कविदा, सूर सन्न अथग
'सिव' वियो सिरदार । —महाराजा छत्रसिंह हाडा री गीत

धी'धणी, धी धवी—कि अ स. १ आर-पार होना, आर-पार निकलना ।

२ दबना, विवश होना ।

उ०—जीव सताप्या मइ घणा, पर आसायें धी'ध । वलि रात्रि
भोजन करघा, काज अकारज कीध । —वि. कु.

३ आर-पार करना ।

४ दबोचना ।

५ देखो 'धीधणी, धीधवी' (रू. भे.)

उ०—१ जाणता वूमता हाथा करते घोखी खायी । पण अवं व्है

काई । सपाडी करघोडा ऊघाडा डील । पोहू री ठारी हाडका नै
वी धती ही । माया ठफसनं भरमड । व्हेगा । —फुलवाडी
उ०—२ ताहरा रायसिध बोलियो—कूभा । क्युं उतरं ? म्हारा
हाथ देख । सिगळा ही नू कवूतर दाई वींधू । ताहरा कूभी
बोलियो—रावळ मलीनाथजी री भ्राण छै, बोली तो । —नैणसी
उ०—३ जउ सूकी तुहइ बुलसिरी, जउ वी धी तुहइ मोतिसिरी ।
जउ दुहलूं तुहइ गगाजल जाणि, जउ थोडी तुहइ सपुरिस वाणि ।
—नळदवदती रास

६ देखो 'विधायी, विधायी' (रू. भे.)

उ०—१ लगी सबद की चोट, वींध गई विच काळिजी । हरिया
भौर न भोट, सतगुर वाह्या मूठ भरि । —अनुभववाणी

उ०—२ सबद तणी ताह मार, ऊठे सूळ सरीर मे । हरिया इणी न
घार, नख चख सारा वी धय्या । —अनुभववाणी

उ०—३ सैर में सीवळ री रौळाटी फँलियो । घर-घर में छोटा
वडा रँ सीवळ निकळ । कमळा रँ श्री करम री भ्राय वाजी ।
धणी दोरी सीवळ निकळी, रू रू वी धीजय्यो । —वरसगाठ

वी धणहार, हारो (हारी), वी धणियो—वि० ।

वी धिम्रोडो, वी धियोडो, वी धयोडो—भू० का० कृ० ।

वी धीजणो, वी धीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वी धाणो वी धावो—देखो 'विधाणी, विधावो' (रू. भे.)

वी धाणहार, हारो (हारी), वी धाणियो—वि० ।

वी धायोडो—भू० का० कृ० ।

वी धाईजणो, वी धाईजवो—कर्म वा० ।

वी धायोडो—देखो 'विधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीधायोडो)

वी धावणो, वी धाववो—देखो 'विधाणी, विधावो' (रू. भे.)

वी धावणहार, हारो (हारी), वी धावणियो—वि० ।

वी धाविम्रोडो, वी धावियोडो, वी धाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वी धावीजणो, वी धावीजवो—कर्म वा० ।

वी धाधियोडो—देखो 'विधायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीधाधियोडो)

वी धियोडो—१ आर पार हुवा हुभा, आर पार निक्का हुभा. २
दवा हुभा, विवश हुवा हुभा. ३ आर पार किया हुभा ।
४ दवोचा हुभा ।

५ देखो 'विधियोडो' (रू. भे.)

६ देखो 'वीधियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीधियोडो)

वी न—१ देखी 'वीणा' (रू. भे.)

२ देवो 'विना' (रू. भे.)

३ देखो 'वीद' (रू. भे.)

वी नणी—देखो 'वीदणी' (रू. भे.)

वी नोळी—१ देखो 'वदोळी' (रू. भे.)

२ देखो 'वीदोली' (रू. भे.)

वी नोळी—१ देखो 'वीदोली' (रू. भे.)

२ देखो 'वदोळी' (रू. भे.)

वी फरणो, वी फरवो—देखो 'विफरणो, विफरवो' (रू. भे.)

उ०—धारण सलाह चित नह धरं, आरण करण उतावळी । वावळा
गयद मसता विधी, वी फरियो रिण वावळी । —सू प्र०

वी फरणहार, हारो (हारी), वी फरणियो—वि० ।

वी फरिम्रोडो, वी फरियोडो, वी फरघोडो—भू० का० कृ० ।

वी फरीजणो, वी फरीजवो—भाव वा० ।

वी फरियोडो—देखो 'विफरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीफरियोडो)

वी भर—देखो 'भीभर' (रू. भे.)

वी भरणो, वी भरवो—देखो 'भीभरणो, भीभरवो' (रू. भे.)

उ०—१ जुडै हिक वी भरता जम दूत, कडै हिक मारि भ्रणी सर
कूत । वहै हिक घाउ वदै विख वाण, रिखै हिक गोळिया रिण-
ढारण । —गु रू. वं.

उ०—भाग री धणी सोभाग री भुकीयो, खाग री खाटियो वाट
खावै । बेहू राहा वीचं नित वादं 'बलु', वीभरं खंत नीसाण बावं ।
—बलुजी चापावत री गीत

२ देखो 'विभरणो, विभरवो' (रू. भे.)

वीभरणहार, हारो (हारी), वीभरणियो—वि० ।

वीभरिम्रोडो, वीभरियोडो, वीभरघोडो—भू० का० कृ० ।

वीभरीजणो, वीभरीजवो—भाव वा० ।

वीभरियोडो—१ देखो 'भीभरियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'विभरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीभरियोडो)

वीभरियो—देखो 'भीभर' (मल्ला, रू. भे.)

वीभळ, वीभळी—देखो 'विभळ, विभळी' (रू. भे.)

उ०—वाहू चळी निरम्मळी, चख वीभळी सुरत । भाजं करनल
अकळी (तु) सवळी रूप सगत ।

—राव मेखी

धीही—सर्व.—उस, उसी ।

उ०—सो विधना र लेख सू भूङण प्रात काळ घडी दोय र तडकं ऊठ सूरजकुड मे स्नान करणं नू गई । धीही सम देवजोग सू डाढाळो वीही सूरजकुड माही स्नान करणं आयी, सो देखे तो भूङण स्नान कर रही छे । —डाढाळा सूर री वात

धी—स पु —१ शास्त्र । (एका)

२ विष्णु । (,,)

३ योद्धा, सुभट । (,,)

स स्त्री.—४ वेल । (,,)

५ गगा । (,,)

रू भे—वी ।

६ देखो 'बी' (रू भे)

उ०—इतरं कवर वीरमदे घोडा खड आयो आयो । जठे गण-गोरघा आगे चढीया ऊभा छा ज्या वूजायी—अं सिरदार कुण छे । जठे या कयी—म्हं तो गैलारखु छा । पारवती को दरसण करस्या । इतरं गणगोरघा गाव नै वावडी । अं वी गैला उपरं छे । —पना

७ देखो 'भी' (रू भे)

उ०—सावठा असवारा की वागा उठी । जिके फागा जाणिए, गुलाला री मुठी । जठे सै वाहर पोती । जठे कवर वीरमदे गैले असवार ऊभा राख्या था जिके बी उण वेळा आय सांमिल हुवा । —पना

धीअ—देखो 'भी' (रू भे)

धीआनी—देखो 'विसानी' (रू भे)

धीआळ, धीआल—देखो 'व्याळ' (रू भे)

उ०—जेवडउ अतर हाथि अनइ ऊठ, जेवडउ अंतर पाधरसी अनइ खुंट, जेवडउ अतर सीह नइ सीआल, जेवडउ अतर गोल अनइ धीआल, जेवडउ अतर राणी अनइ दासी, ' । —व स.

धीआळकी—देखो 'वीयाळकी' (रू भे)

धीआपक—देखो 'व्यापक' (रू भे)

धीआपणी, धीआपनी—देखो 'व्यापणी, व्यापनी' (रू भे.)

धीआपणहार, हारो (हारी), धीआपणियो—वि० ।

धीआपियोडो, धीआपियोडो, धीआप्योडो—भू० का० कृ० ।

धीआपीजणी, धीआपीजनी—भाव वा० ।

धीआपियोडो—देखो 'व्यापियोडो' (रू भे)

(स्त्री धीआपियोडो)

वीक—१ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

२ देखो 'वीख' (रू भे)

धीकणो, धीकयो—क्रि. स —१ वेचना, विक्रय करना ।

उ०—१ लाख जूण तिल वुहरया धीकया, कन्या विक्रय कीधा । सोम सूर कइ राहु गिलतइ, महादान की लीधा । —का. दे. प्र.

उ०—२ दोसी वूहरइ अतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र । एक वइठा कहइ कथा कल्लोल, एक वइठा धीकइ मजोठ चोल । —नळदवदती रास

उ०—३ सरस्वती आगलि कुण पढीयइ, अत्रत करणि कढीइ, माणिकु करणि धीकीइ, मोती करणि छडीइ, निरगुण करणि वदीइ, वास करणि-वाधीइ । —व. स.

२ देखो 'विकणी, विकनी' (रू. भे)

धीकणहार, हारो (हारी), धीकणियो—वि० ।

धीकियोडो, धीकियोडो, धीकयोडो—भू० का० कृ० ।

धीकीजणी, धीकीजनी—कर्म वा० ।

धीकघर—स पु —बीकानेर का एक नाम ।

धीकनैर, धीकपुर, धीकपुरी—देखो 'विक्रमपुर' (रू भे)

उ०—१ जस विरद सुणि दुरग जैरा, नजर भेजी धीकनैरा । एह सुणि धीकाण अक्खे, रावळां बह निजर रक्खे । —सू. प्र

उ०—२ गढ जैसाण धीकपुर, कै सीरोही पार । जग मै भूपत धान री, बुध अनुमान विचार । —रा रू

उ०—३ त्याग मै दिया गढ परणता चकुरण, धीकपुर अजस दूणा विकासै । क्रीत सु प्रवीत जण जण रसणा कहावो, रहावी वात जुग च्यार 'रासै' । —रायसिंह री गोत

धीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

उ०—भगो तोय वाराह, राह गिलियो तोय दणोयर । लाघणियो तोय सीह, जेभ मथियो तोय सायर । अण हुत धीकम, घण धीटियो धीकोदर, खोडो तोय हणवत, लियो दरसण तोय साकर । —अल्लुजी कवियो

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

उ०—१ बाघरत ऊचरं, सुणी खट-तीस वस, जुरा आगलि रहै वदू जाही । भोज धीकम तणी सुजस सारै भुयण, नरा तिण वार रा मडप नाही । —राव गागी

उ०—२ विध रा जाण गाय रा धीकम, पारिख वाण हाथ रा पाथ । जुध रा भीम खळा रा गजण, नाथ' रा बुध गणनाथ । —आर्द्धदान पाल्हावत

उ०—३ पलटियो नही ग्रहिया पली, सत हरचद बिरदा सर्घ । दातारपणै 'गजवध' दुभल, धीकम क्रन हूता वधे । —सू प्र

उ०—४ 'जवदळ' 'पदम' रायसीग जुजन्टळ, हरचद वीकम भोज हुवा । माणी मता छता मह मडळ, मता न माणी जीता मुवा ।

—गोरधनजी खीची

वीकमपुर—देखो 'विक्रमपुर' (रू भे)

वीकमायत-प पु.—राठोड वश की एक उपशाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति ।

वीकम्म—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भें)

उ०—काय भोज वीकम्म काय रुद्र नाग अरज्जन, काय रामण वलराज काय जुजठळ अर गजन । कन्न काय हरचद कन कग ग (क) हर कहता, काय समर दद्वीच काय जीवाहन जता ।

—माली आसियो

वीकराळ, वीकराल—देखो 'विकराळ' (रू. भे)

उ०—अकलक कलक मी चळ्यो, सामुहो जीवन वीरह वीकराळ । अनवलइ दव परजळ, पगि पगि मी सखी महइ आळ ।

—वी दे

वीकाण, वीकाणगढ, वीकाणो—देखो 'वीकानेर'

उ०—१ प्रथम देस जेसाण वीकाण प्रगटी पळ्हे, वरजियो भाण देहो उवारयो । अवे परब्रह्म धाळी प्रकति अद्रजा, धजाळी मद्र अवतार धारयो ।

—भे म

उ०—२ सी वीकाण घरा चै सार्ध, वळ मेटियो जु हुता बाधे । केताई गाव थाणायत कोटा, सूट देस किया सहलोटा ।

—रा रू

उ०—३ लोहि हरि 'जैत' वीकाणगढ जै नीयो, दहुडि खुरसाण अजमेर गढ दावियो । खाग भुड राण खुरसाण दळ जिण खड, डोडवाणा सहित सहर साभरि डड ।

—सू प्र.

उ०—४ भिडती खुरसाण जिते दळ भाजा, आयो 'करण' तुहारी भोट । वीकाणा देसाणो वास, करनाई पलटे किम कोट ।

—महाराणा करणसिधजी

वीका—स. स्त्री.—राठोड वश की एक उपशाखा ।

वीकियोडो—भू. का कू—१ वेचा हुमा, किश्य किया हुमा ।

२ देखो 'विकियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. वीकियोडो)

वीकीजी—सं स्त्री—वीकानेर राजवश की पुत्री या बहिन ।

वीकोदर—देखो 'त्रकोदर' (रू भे)

उ०—१ भगो तोय वाराह राह गिलियो तोय वणीयर, लाघणियो तोय सीह जेअ मथियो तोय सायर । अण हुँते वीकम भणो वीटीयो

वीकोदर, खोडो तोय हणवत लियो दरसण तोय साकर ।

—अल्लूजी कवियो

उ०—२ वीकोदर वीर वर, अनड पाहाड असकित । त्रिविध फीज रचिअणो, अरध आठम चद्राकत ।

—गु रू. व

वीको—स पु—राठोड वश की वीका नामक उप शाखा का व्यक्ति ।

वीकम—१ देखो 'विक्रम' (रू भे)

२ देखो 'विक्रमादित्य' (रू भे)

वीकमनगर, वीकमपुर—देखो 'विक्रमनगर' (रू भे)

वीक्षण—स. पु [स] देखने की क्रिया, अवलोकन, निरीक्षण ।

रू भे—वीख, वेख ।

वीख—स पु [सं] १ कदम, डग, पैड ।

उ०—१ छोटी वीख न आपडा, लाबी लाज मरेहि । सयण वटाळ वाळ रे, लवउ साद करेहि ।

—ढो. मा.

उ०—२ सपेख खुरम सुरतांण साथ, नरसिध रूप नवकोट नाथ । 'सूरजमल' सभ्रम तँ सरोख, वधियो किरि वामण दियण वीख ।

—गु. रू व

उ०—३ वाकरा नूँ बरकी करण रे पगा अलवळिया मोटधारा न हुकम कीजे छे । सू असीला सीरोहिया लेन ऊठिया छे । मलफती वीखा भरें छे । जाणो पावासर रो हस मोती चुगण चालियो छे ।

—रा सा. स.

उ०—४ राय देह पधराय वार तण चेह विचमा, भळ अग्नी भूलिवा करण लग्गी परकम्मा । भूप हेत सत भाय रूप सोहे पट-राणी, वीख वीख जग विमळ ईख लाजे इद्राणी ।

—रा. रू

२ चाल, गति वेग ।

उ०—१ मागो सीख नरिंद सू, दीन्ही वीख कुवार । जाणो वध पलटियो, सिध प्रळ ची वार ।

—रा. रू

उ०—२ कपडा खरची दं कलै, दसा घरा दी सीख । अठी अठा पाछे अवे, वळ देखी मत वीख ।

—कल्याणसिध नागराजोत वाढेल री वात

३ ऊट या घोडे की चाल विशेष ।

उ०—१ छट सुदर वीख सतेज घणा, तन भोप वर्ध गढ रूप तणा । दुति वकति तुड लगाम दिया, कुळवतिय घूषट जाणि किया ।

—रा. रू.

उ०—२ उण गाव रे गोयरे आय नीसरियो । देखे, ती एक लुगाई ऊभी छे । देखि ने मन में सकियो, भई चूडल नहीं छे । इतरो जाणि ने रजपूत हीर्य रो जोरावर हुतो दीठी, बोलाईस ती खरी । ताहरा श्री ऊंड वीखे वीखे चलाइ नं नेडी आयी ।

—कावळ जोईये ने तीडी खरळ री वात

४ देखो 'विष' (रू. भे.)

उ०—प्रायु रं धरणी पाल्हण परमार सरव धातू माहै भरत री भरियो धीतकर री वीख हुती सू मलाय अचळेसर है । नादियो भरयो जिण विख घालण रा पाप सू पाल्हण रं कोठ उघडियो जीददेव री नावी विख भराय थापित कियो जद कोठ मिटियो ।

—वा दा. ख्यात

५ देखो 'वीक्षण' (रू. भे.)

उ०—तूं मोनू हिव जाणदे, म देख म्हनं कु वीख । जलदी मोनू जावणी, म्हारी सगळा न उडील । —सातीलाल

रू भे—बरीख, वीख, ब्रख, ब्रखा, ब्रति, ब्रीख, भीख, बरीख, विकव, विकख, वीख, वीखा, वेख ।

मल्पा,—वीखडी ।

वीखडी—देखो 'वीख' (मल्पा., रू. भे.)

उ०—साल्ह चलतइ परठिया, आगण वीखडीयांह । सी मइ हियइ लगाडिया, भरि भरि मूठडियाह । —डो मा

वीखणी—देखो 'विकखणी' (रू. भे.)

उ०—१ इळादि डव उल्लडे, पवग वाग ऊपडे । खुरा ज खोण वीखणी, पतग छाइ पोइणी । —गु रू व

उ०—२ है-थट समद जाण हिलोळ, पमगा हमस पक्खर रोळ । क्रमतं खुरमरं कटकेह, वसुधा वीखणी विडगेह । —गु. रू. व

उ०—३ खेड रा जोध तुरगाण ताता खडे, पै खुरं वीखणी खोण खाना पडे । तणिया तालू ए लोह घोडातरणं, आड भाफा भरं तेज सू ऊफणें । —गु. रू. व.

वीखणी, वीखवी—फि अ —१ रुदन करना, रोना ।

२ विलखना, व्याकुल होना ।

३ तरसना, लालायित होना ।

४ तडफना ।

५ दु.खी होना, पीडित होना ।

६ देखो 'वीकणी, वीकवी' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखणी, वेखवी' (रू. भे.)

उ०—बदनारविद गोविद वीखियं, आलीचं आपी आप सू । हिव रुखमणी कतारथ हुइस्यं, हुभो कतारथ पहिलो हू । —वेलि

वीखणहार, हारो (हारी), वीखणियो—वि० ।

वीखिओडी, वीखियोडी, वीखयोडी—भू० का० कृ० ।

वीखीजणी, वीखीजवी—माव वा० ।

वीखणणी, वीखणवी, वीखणी, वीखवी, विखणी, विखवी, वीखणी, वीखवी—रू० भे० ।

वीखरणी, वीखरवी—देखो 'विखरणी, विखरवी' (रू. भे.)

उ०—१ वाटइ राई वीखरी, उलढावइ अ्रेक । लक्ष प्रकारं लूणना विनता करइ विवेक । —मा का. प्र

उ०—२ जद छोहरा नगारा वजावा लागा । जद रामत मे भग पडयो । लोक वीखर गया । रावतिया रं हायं दान पिण न प्रायो नं भूंडा पिण दीठा । —भि. इ

उ०—३ भयानक हेक करं भाराथ, हिका मसतक्क पडे पग हाय । वंणी डड हेका वीखरियाह, लुटे भुइ हेक लुही भरियाह । —गु रू व

उ०—४ उन्हुठ तीन्हुठ सरहरउ भरहरउ ग्राहसिउ नीलसिउ अणीआलउ सूंआलु सरसु सकोमल वीत्तरिउ वीणउ ऊजलउ जिसउ केवडउ ऊदेली जेवडउ, हुवल पेटि पइसइ, फूटी नीसरइ इसउ कूर परीसिउ । —व. स

वीखरणहार, हारो (हारी), वीखरणियो—वि० ।

वीखरिओडी, वीखरियोडी, वीखरयोडी—भू० का० कृ० ।

वीखरीजणी, वीखरीजवी—भू० का० कृ० ।

वीखराणी, वीखरावी—देखो 'विखराणी, विखरावी' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारो (हारी), वीखराणियो—वि० ।

वीखरायोडी—भू० का० कृ० ।

वीखराईजणी, वीखराईजवी—कर्म वा० ।

वीखरायोडी—देखो 'विखरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीखरायोडी)

वीखरावणी, वीखराववी—देखो 'विखराणी, विखरावी' (रू. भे.)

वीखरावणहार, हारो (हारी), वीखरावणियो—वि० ।

वीखराविओडी, वीखराविओडी, वीखराव्योडी—भू० का० कृ० ।

वीखरावीजणी, वीखरावीजवी—कर्म वा० ।

वीखराविओडी—देखो 'विखरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीखराविओडी)

वीखरियोडी—देखो 'विखरियोडी' ।

(स्त्री वीखरियोडी)

वीखा—स स्त्री [स] १ नाच, नृत्य ।

२ सगम, मिलन ।

३ देखो 'वीख' (३) (रू. भे.)

वीखियोडी—भू० का० कृ०—१ रुदन किया हुआ, रोया हुआ. २ बिलखा हुआ, व्याकुल हुआ हुआ ३ तरसा हुआ, लालायित हुआ हुआ.

४ तडफा हुआ. ५ दु.खी हुआ हुआ, पीडित हुआ हुआ ।

६ देखो 'वीकियोडी' (रू. भे.)

७ देखो 'वेखियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वीखियोडी)

वीखेरणी, वीखेरवी—देखो 'विखेरणी, विखेरवी' (रू. भे.)

बीखेरणहार, हारो (हारी), बीखेरणियो—वि० ।
बीखेरिओडो, बीखेरियोडो, बीखेरघोडो—भू० का० कृ० ।
बीखेरीजणो, बीखेरीजबो—कर्म वा० ।

बीखेरियोडो—देखो 'बिखेरियोडो' (रू. भे.)
(स्त्री बीखेरियोडी)

बीखै—१ देखो 'बिखै' (रू. भे.)
२ देखो 'बिसय' (रू. भे.)

बीखोरणो, बीखोरबो—देखो 'बिखेरणो, बिखेरबो' (रू. भे.)

उ०—सरण साधार सुदतार लहरी समद, करे अदतार नर मोद
केहा । रार लजधार ससार सारो रटे, न्रुगट गढ बीखोरणहार तेहा ।
—गुलजी आढो

बीखोरणहार, हारो (हारी), बीखोरणियो—वि० ।
बीखोरिओडो, बीखोरियोडो, बीखोरघोडो—भू० का० कृ० ।
बीखोरीजणो, बीखोरीजबो—कर्म वा० ।

बीखोराणो, बीखोराबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)

बीखोराणहार, हारो (हारी), बीखोराणियो—वि० ।
बीखोरायोडो—भू० का० कृ० ।
बीखोराईजणो, बीखोराईजबो—कर्म वा० ।

बीखोरायोडो—देखो 'बिखरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री बीखोरायोडी)

बीखोरावणो, बीखोरावबो—देखो 'बिखराणो, बिखराबो' (रू. भे.)
बीखोरावणहार, हारो (हारी), बीखोरावणियो—वि० ।
बीखोराबिओडो, बिखोराबियोडो, बिखोराब्योडो—भू० का० कृ० ।
बीखोराबीजणो, बीखोराबीजबो—कर्म वा० ।

बीखोराबियोडो—देखो 'बिखरायोडो' (रू. भे.)
(स्त्री बीखोराबियोडी)

बीखो—देखो 'बिखो' (रू. भे.)

उ०—राठोड डुरगदास आसकरणीत बीखो घणो कीयो न समत
१७६३ रा चैत वद ५ जाळोर सू न जोधपुर सू सोबेदार नबाव
जाफरखा वगैरे था सो नास गया न स्रीहजूर जोधपुर मे जाळोर सू
जाय न अमल कीयो । —मारवाड री ख्यात

बीगडणो, बीगडबो—देखो 'बिगडणो, बिगडबो' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया वाडो बीगड, सिर परि घणो न होय । यु
चिडीया खाया खेतडा, हाकल करे न कोय । —अनुभववाणी
उ०—पण म्हारै श्री पण छे-सगै री नाळेर आयो पाछो न मेलु ।
सो माजो, म्हारी वचन गया, जमवारी अथा जासी । तिए सु थे
राजो ह्य मन फुरमावो, ज्यू म्हारो भलो हुवे अर पाहरे सत-
तपस्या सु माहरो कुही न बीगडे ।

—कु वरसी साखला री वारता

बीगडणहार, हारो (हारी), बीगडणियो—वि० ।
बीगडिओडो, बीगडियोडो बीगडघोडो—भू० का० कृ० ।
बीगडोजणो, बीगडोजबो—भाव वा० ।

बीगडाणो, बीगडाबो—देखो 'बिगडाणो, बिगडाबो' (रू. भे.)

बीगडाणहार, हारो (हारी), बीगडाणियो—वि० ।
बीगडायोडो—भू० का० कृ० ।
बीगडाईजणो, बीगडाईजबो—कर्म वा० ।

बीगडायोडो—देखो 'बिगडायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीगडायोडी)

बीगडावणो, बीगडावबो—देखो 'बिगडाणो, बिगडाबो' (रू. भे.)

बीगडावणहार, हारो (हारी), बीगडावणियो—वि० ।
बीगडाबिओडो, बीगडाबियोडो, बीगडाब्योडो—भू० का० कृ० ।
बीगडाबीजणो, बीगडाबीजबो—कर्म वा० ।

बीगडाबियोडो—देखो 'बिगडायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीगडाबियोडी)

बीगडियोडो—देखो 'बिगडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीगडियोडी)

बीगन—देखो 'बिघन (रू. भे.)

बीगसणो, बीगसबो—देखो 'बिगसणो, बिगसबो' (रू. भे.)

उ०—वळं की चेत जीव, चेतिस्यी चेतणहारो । बीणा बीगसं
मन, लखण उजाळं लारो । —वील्होजी

बीगसणहार हारो (हारी), बीगसणियो—वि० ।
बीगसिओडो, बीगसियोडो, बीगस्योडो—भू० का० कृ० ।
बीगसीजणो, बीगसीजबो—भाव वा० ।

बीगसियोडो—देखो 'बिगसियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगसियोडी)

बीगाड—देखो 'बिगाड' (रू. भे.)

उ०—राव मालदे रा डेरा फळोधी छे । तरै नरं कवर हुरराज नु
कहो—कहो तो म्हे जावा कटक रा बीगाड करां । तरै हुरराज
आपरो साथ घणी सार्थ दीयो । —नैणसी

बीगाडणो, बीगाडबो—देखो 'बिगाडणो, बिगाडबो' (रू. भे.)

उ०—नाहडराव मडोवर घणी हुबो । वाराह एक मडोवर री
वाडो बीगाड । तिए री घणी पुकार होई रही छे, न एक दिन
नाहडराव डेरै होतो थो सु वाराह नीसरियो । —नैणसी

बीगाडणहार, हारो (हारी), बीगाडणियो—वि० ।
बीगाडिओडो, बीगाडियोडो, बीगाडघोडो—भू० का० कृ० ।
बीगाडोजणो, बीगाडोजबो—कर्म वा० ।

बीगाडियोडो—देखो 'बिगाडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाडियोडो)

बीगाड—देखो 'बिगाड' (रू. भे.)

उ०—नठे माली बोलियो—महाराज ! आज काल कोईक जानवर हिल्यो छै । सो दिन रा जावना घणो करा छै, पिए रात रा बीगाड कर जाव छै । —रिसानू रो बात

बीगाडणो, बीगाडबो—देखो 'बिगाडणो, बिगाडबो' (रू. भे.)

उ०—१ वागवान नै पूछयो—क्युं बे वागवान ! बहुत दिन नै एसा फल-फूल क्यु लाया, सो कारण काइ छै ? तदी वागवान कही—हजरत, सलामत कवनैयान, अघरात कु वाग मं हमेस क्या बलाय भावती है, सो वाग बीगाड छै । —रिसानू रो बात

उ०—२ अतरायक मं पातसाहजी बोल्या क्युं बे वागवान ! ईतरा दिन मं ईम्या फल-फूल क्यु ल्यायो । तदि वागवान कही—माहाराज ! कोई भाषी रात्रे भावे छै, कोई बलाय छै । मी वाग बीगाडो जाय छै, नित प्रत भावे छै । —रिसानू रो बात

बीगाडणहार, हारो (हारो), बीगाडणियो—वि० ।

बीगाडिप्रोडो, बीगाडियोडो, बीगाड्योडो—भू० का० कृ० ।

बीगाडोजणो, बीगाडोजबो—कर्म वा० ।

बीगाडियोडो—देखो 'बिगाडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीगाडियोडो)

बीघोडो—देखो 'बीघोडो' (रू. भे.)

बीघो—देखो 'बीघो' (रू. भे.)

बीघह—देखो 'बिघह' (रू. भे.)

बीघहणो, बीघहबो—देखो 'बिघहणो, बिघहबो' (रू. भे.)

उ०—१ तरं रावजी बात भा राखी, कही—माहारो कोट भावसी तरं म्हे तोनुं छोडसा । तरं डगरमी कोट रं मोहडे जाई जगहय देपावत नु कहीयो—सावास तें पाच मास गड बीघहियो । हिमें ह दोहोरो ह तूं कूंघी रावजी नुं सोंप जु मोनुं छोडे । —नैणसी

उ०—२ इण फेर रतनसी कोट आलियो । सावत बहुवाण कान्हर नरनाह रो बंदो बहुवाण ईसरदास बडो रजपूत छै । बडो बडो गड बीघहो मं लडाई की । —नैणसी

बीघहणहार, हारो (हारो), बीघहणियो—वि० ।

बीघहिप्रोडो, बीघहियोडो, बीघह्योडो—भू० का० कृ० ।

बीघहोजणो, बीघहोजबो—कर्म वा० ।

बीघहियोडो—देखो 'बिघहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीघहियोडो)

बीघोडो—देखो 'बीघोडो' (रू. भे.)

बीघो—देखो 'बीघो' (रू. भे.)

उ०—अघ विसवासी भिनरा, हरेक घादनो रो कंयोडो बात नं माची मानण ग्यातर हो बप्यो है । नटरुं ग्यातर हरमिज नहीं । चावे कोई अकट करो तथा जाळ । धीरं बाम्ठं तो बीघं नूत अर विसवें साप हाळी नंबत माची है । —दमदीन

बीडग, बीडगाण, बीडगि, बीडगो—देखो 'बिटग' (रू. भे.)

उ०—गुटकाण सीदाण बीमाण तणी गत, नाव तीराण्य दंघाण्य अणुं । पुअराण वंगाण प्रमाण पराएक, बात वत्रे बीडगंण अणुं । —किसनजी दघवाडियो

बीड, बीडड—१ देखो 'बिट' (रू. भे.)

२ दयो 'बीडो' (मह, रू. भे.)

बीडणो, बीडबो—देखो 'बीडणो, बीडबो' (रू. भे.)

बीडणहार, हारो (हारो), बीडणियो—वि० ।

बीडिप्रोडो, बीडियोडो, बीडयोडो—भू० का० कृ० ।

बीडोजणो, बीडोजबो—कर्म वा० ।

बीडमो, बीडवो—देखो 'बीडमो' (रू. भे.)

बीडा—देखो 'बीडा' (रू. भे.)

बीडाणो, बीडाबो—देखो 'बीडाणो, बीडाबो' (रू. भे.)

बीडाणहार, हारो (हारो), बीडाणियो—वि० ।

बीडायोडो—भू० का० कृ० ।

बीडाईजणो, बीडाईजबो—कर्म वा० ।

बीडादार—देखो 'बीडादार' (रू. भे.)

बीडायोडो—देखो 'बीडायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीडायोडो)

बीडियोडो—देखो 'बीडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीडियोडो)

बीडो—स. पु.—१ जल भरं चरस की लाव [मोटी रन्सी] की बलों के जुएँ में जोडने का म्यान ।

२ देखो 'बीडो' (रू. भे.)

बीच—स. पु.—१ मार्ग, राह । (उ. र.)

२ देखो 'बीच' (रू. भे.)

उ०—१ तिसडं पूरव रो पातसाह सपसदी, तिकी दिल्ली रा पातसाह ऊपर आयो । कोस २० रो दोनुं फोजा रं बीच रहयो, तरं पूरव रं पातसाह कवाण दिल्ली रं पातसाह नूं मेली "जु पाहरा कटक माहै कोई इसडो छै, जिकी भा कवाण बाडं । —नैणसी

उ०—२ बिडे एम वेखियो, इता एकरा घर बाळा । वड वड भडा

विचारि, वीच फेरें विसटाळा ।

—सू प्र.

उ०—३ छोटा चेलहरा ऊपर कुत्ता री डोर छूटी सो जाय वेरिया चेलहरा चीकिया । त्या ऊपर सुवर भुडण घिरीया । सो घोडा वीच घात फटाय लीया । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ दीवाण रें सामत माहे जिंका हुई सु दीवाण माहे पण होत । पण दीवाण री भाग वडो । धरती दे लडाईं टाळी । इतरें कहता वीच रावजी रें फोजा री वागा ऊपडी । त्या दीवाण री फोज पाछी मुडी । इतरें केदक वडेरा ठाकुर वीच पडिया जु कयी 'ठाकुरा । भागा पाछे काई जावो ? —नैणसी

उ०—५ पत्र लिखावें प्रीत सू, आप धरम ची आण । उर ससै यू छेदियो, कर कर वीच कुराण । —रा. रू.

उ०—६ हरीया तरवर वीच में, पछी वासी लेह । कोई कवाडी आय कै, दोस विना दुख देह । —अनुभववाणी

उ०—७ राता माता में भया, तं सेती रहमान । हरीया नैणा वीच में, निरखु सारगप्रान । —अनुभववाणी

उ०—८ हरीया केता वहि गया, कीया करम कै लारि । धिल घबे घन वीच में, ध्यान सघे नही धारि । —अनुभववाणी

उ०—९ आज काल क्या करत हैं, हरीया होय अवेर । क्या जांगु कंसी करे, सभा वीच सवेर । —अनुभववाणी

उ०—१० ए कसैं हें—वडे सु विहान है, वडे महिरवान हें, वडे सिरदार हें । वडे वृभदार हें, वडे दातार हें । जमी आसमान वीच सभू अवतार हें । —रा सा स

२ देखो 'विछियो' (रू. भे)

उ०—घम घम वाजै घूघरा, वाजै चम-चम वीच (छ) । तम-नम यम मालू तवें, म्यार (म) चसम म मीच ।

—मयाराम दरजी री बात

वीचणो, वीचवो—क्रि. स —१ नाश करना, नष्ट करना, मिटाना ।

३०—खेड धरणी सिरि खीजिया, हुई मुगल्ला हेल । ज्यों गज वारि विहारता, वीच वारिज वेल । —रा. रू

२ सहार करना, मारना ।

३ अलग करना, पृथक करना ।

४ त्यागना, छोडना, बहिष्कार करना ।

५ बीतना, गुजरना, घटित होना ।

उ०—१ धान न भावें वीच निरोई, इण वेदन मोनू खरी विगोई । ती सों बात कहू में कंसी, मेरें मन मे वीचत जैसी ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ तद भा वळें कटारी काढ नें छाती उपरा बंठी, कही, 'रे मूरख, भागें ती तं माहे वीचो थी अर वळें आयो ? तो हमें तें

पासं माल छं सौ दे नही तो मारा छा ।"

—बूढी ठग राजा री बात

६ बीतना, गुजरना, व्यतीत होना ।

उ०—१ जदि जोवन थी जोरि, आव को धरघो उभारी । वीचि गई तरवार, हुवो अगि अखत उवारी । —देवोजी

उ०—२ चोर पिण ऊवें रें घर फाडण नु गया हुता । सु साहूकार बाप वेटी लेखी करण वंठा हुता, सु रातो वीचो गई । पाछिली राति उठीया । ताहरा अथ साहूकार पडि रह्या । ऊवें री वेर दीवो करि ढोलियो विछाड नें वंठी हुती, सु राति वीचि गई ।

—स्यामसु दर री बात

वीचणहार, हारो (हारी), वीचणियो—वि० ।

वीचिओडो, वीचियोडो, वीच्योडो—भू० का० कृ० ।

वीचीजणो, वीचीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वीछणो, वीछवो—रू० भे० ।

वीचळो, वीचलो—देखो 'विचलो' (रू. भे.)

वीचारणो, वीचारवो—देखो 'विचारणो, विचारवो' (रू. भे.)

उ०—पहली पोरसी सूत्र चितारें, वीजी पोरसी अरथ वीचारें । जाणें तीजी पोरसी लागी, वेदन रें वस खुच्या जागी । —जयवाणी

वीचारणहार, हारो (हारी), वीचारणियो—वि० ।

वीचारिओडो वीचारियोडो, वीचारघोडो—भू० का० कृ० ।

वीचारीजणो, वीचारीजवो—कर्म वा० ।

वीचारियोडो—देखो 'विचारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीचारियोडो)

वीचाळ, वीचाळि, वीचाळी, वीचाळ, वीचाळें—देखो 'विचें' (रू. भे.)

उ०—१ वगा वीचाळें काढिया, हुड जिम पग फलै । ऊभी मेली साहवी, गढ गोख महलें —कैसोदास गाडण

वीचाळो—देखो 'विचाळो' (रू. भे.)

वीचि—स म्त्रो [स वीचि] १ विवेकहीनता, चंचलता ।

२ लहर, तरंग ।

३ हर्ष, खुशी, आल्हाद ।

४ किरन, रश्मि ।

रू. भे —वीची ।

४ देखो 'वीच' (रू. त्र.)

उ०—इस ऊर्जका तमाम देखि गिर भगरू वीचि घंसाहर फेरें । अरू कै भूड नदू कै तटाक घण घुमरू सें घेरें । तहा सेती होकरि ऊठें अघकघ गिडदी ढाळ अगन कुंड से चखुवीच भभकतें क्रोध की फाळ ।

—सू. प्र

५ देखो 'विचि' (रू. भे.)

वीचिमाळी—स पुः [स. वीचिमाळिन्] समुद्र, सागर । (डि. को.)

वीचियोडी—भू का. कृ.—१ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ. २ सहार किया हुआ, मारा हुआ. ३ अलग किया हुआ, पृथक किया हुआ. ४ त्याग किया हुआ छोडा हुआ, बहिष्कार किया हुआ. ५ वीता हुआ, गुजरा हुआ, घटित हुआ हुआ. ६ वीता हुआ, गुजरा हुआ, व्यतीत हुआ हुआ ।
(स्त्री वीचियोडी)

वीची—देखो 'वीच' (रू. भे.)

उ०—जनहरिया तन वीची मे, नख चख घाटि न वाघ । श्रीर साध सब कहन का, राम भजे सोई साध —अनुभववाणी
२ देखो 'विचि' (रू. भे) (इ. ना. मा)
३ देखो 'वीचि' (रू भे)

वीचेतस—स स्त्री.—दुचित । (डि को)

वीछडणी, वीछडवी—१ देखो 'विछुडणी, विछुडवी' (रू. भे.)

उ०—जीहो सगपण इण ससार ना, जीहो थया अनति वार । जीहो मिल मिल नै वलै बीछडै, जीहो करम लगाने लार रे ।—जयवाणी

उ०—२ पहिलि मिलियह तेह सुं रे हा, करियह हास विलास । मिलि नइ वीछडिवी पडै रे हा, तव मन होइ उदास । —वि. कु.

उ०—३ कुकडिया कळिघळ कियड, सुणी उपखड वाइ । ज्याकि जोडी वीछडी, त्या निसि नीद न भाइ । —ढो मा

उ०—४ हसा वुगगा पटतरी, वीछडिया परवाण । वुग छीलरीया रय करै, हरिया हस विलखाण । —अनुभववाणी

उ०—५ कुरजडिया कुरळा रही, देख विर गा ताळ । जिण की जोडी वीछडी, जिणका कवण हवाल । —अग्र्यात

२ देखो 'विछूटणी, विछूटवी' (रू भे)

उ०—१ बग्गी हाक बहादरा, वीछडि पडै विसाळ । नाराजा ऊनाणिया, खुरसाणिया कपाळ । —रा रू.

उ०—२ खूम इसी चाढी 'खुमारण', घोया इसै अनोखे धोत । दससा पडै वीछडै डाडर, पिंड कापड आवे अणपोत ।
—मोहकमसिध मेढतियो

उ०—३ जुघ खनी जाट अग्रज जम जमासा, बाज छड बाण धम धमासा वीर । वीछडै कडा बरम्मा रुधिर विमासा, गग-सिर-धर खडा तमासा-गीर ।
—हुकमीचद विडियो

उ०—४ वीर तन छोह छकडाल कस वीछडे, रूक सूं मिडै अस-पति सारीस । सीस देवळ तरणी डिंगण न दिर्ये सकस, स्याम तण भुजा ऊपतज तै सीस —सुजाणसिध भोजराजौत सेखावत रो गीत

उ०—५ वाहता तेग अनमध कध वीछडै, हसत बध हसत दोय दूक होवै । सायजावा दळे हिंदवा पातसाह, 'जसा' भवसर अचछर

तूक जोवै ।

—महाराजा जखवतसिहजी रो गीत

वीछडणहार, हारी, (हारी), वीछडणियो—वि० ।

वीछडिओडी, वीछडियोडी, वीछडयोडी—भू० का० कृ० ।

वीछडीजणी, वीछडीजवी—भाव वा० ।

वीछडवाणी, वीछडवावी—देखो 'वीछुडणी, विछुडवी' (रू. भे.)

वीछडवाणहार, हारी (हारी), वीछडवाणियो—वि० ।

वीछडवायोडी—भू० का० कृ० ।

वीछडवाईजणी, वीछडवाईजवी—कर्म वा० ।

वीछडवायोडी—देखो 'विछुडयोडी' (रू भे)

(स्त्री वीछडवायोडी)

वीछडणी, वीछडावी—देखो 'विछुडणी, विछुडावी' (रू. भे)

वीछडाणहार, हारी (हारी), वीछडाणियो—वि० ।

वीछडायोडी—भू० का० कृ० ।

वीछडाईजणी, वीछडाईजवी—कर्म वा० ।

वीछडयोडी—देखो 'विछुडयोडी' (रू. भे)

(स्त्री वीछडयोडी)

वीछडावणी, वीछडाववी—देखो 'विछुडणी, विछुडावी' (रू. भे.)

वीछडावणहार, हारी (हारी), वीछडावणियो—वि० ।

वीछडाविओडी, वीछडावियोडी, वीछडावयोडी—भू० का० कृ० ।

वीछडावीजणी वीछडावीजवी—कर्म वा० ।

वीछडावियोडी—देखो 'विछुडयोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीछडावियोडी)

वीछडियोडी—१ देखो 'विछुडियोडी' (रू भे.)

२ देखो 'विछूटियोडी' (रू भे)

(स्त्री वीछडियोडी)

वीछडणी, वीछडवी—१ देखो 'विछुडणी, विछुडवी' (रू भे.)

उ०—१ निजर नी नेह जिण सु हुनै जी, वीछड्या दुख न खमाय । तेह साप्रति किम वीसरै जी, जेहनी जीवन प्राय । —वि कु

उ०—२ रैण अघारी घण गडै, खडि वाताण वखाण । वीछडोथा मेळा करै, मिरण डरण केकाण । —पना

उ०—३ वासर सुख ना रयणी सुख, घरै सुख नावत । वालिम वीछडिया तरणी, मरम स लागो मन । —ढो मा

२ देखो 'विछूटणी, विछूटवी' (रू भे)

उ०—है तूट तूड रुळि रुंड मुड, भाजै अनुड गै हाड-गुड । वीछडै सध अनमध वप्प, भूभाण दिर्ये तेगा ऋडप्प । —गु. रू. ब

वीछडणहार, हारी (हारी), वीछडणियो—वि० ।

वीछडिओडी, वीछडियोडी, वीछडयोडी—भू० का० कृ० ।

वीछडीजणी, वीछडीजवो—भाव वा० ।

वीछडियोडो—१ देखो 'विछुडियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'बिछूटियोडो' (रू भे)

(स्त्री. वीछडियोडो)

वीछण, वीछणी—स पु —देखो 'वीछण' (रू भे)

उ०—तन धारं वीछण तरणी, जग चृगला री जीह । आठ तरफ
खावं उदर, दै छोना दुख दीह । —वा दा

वीछळ, वीछळण—स पु —१ वर्तनो, वस्त्रो व हाथ-पैर आदि को धोने
का पानी ।

उ०—धोवट घाट अनोखा घोया, सारा मुह ऊजळा सरीर ।
सिवला तरणी वीछळण साप्रत, चौळ तरणी रगिया अण चीर ।

—मोहकमसिध मेडतियो

२ प्रहार ।

उ०—ऊभडा भडा नीभडा अग, वीजडा गडा वीछळो वग । जम-
जडा घडा समवडा जग, त्रिजजडा भडा तडफडा तग ।—गु रू व.

वीछळणी, वीछळवो—क्रि स —घोना, घुलाई करना ।

उ०—ताहरा तळाई आयो । पागडो छाडियो । घोई री काढणी
हाथ छै । पाणी माहे पथर छै तिके उपर बँठा छै । पथर मायें
वैस हाथ पग वीछळनै आखिया रा गोख छाटीया ।

—माडणसी कू पावत री वात

वीछळणहार, हारो (हारी), वीछळणियो—वि० ।

वीछळिओडो, वीछळियोडो, वीछळयोडो—भू० का० कृ० ।

वीछळीजणी, वीछळीजवो—कर्म वा० ।

वीछळियोडो—भू का कृ —घोया हुआ, घुलाई किया हुआ ।

(स्त्री वीछळियोडो)

वीछामणी—देखो 'विछाणी' (रू भे)

उ०—रगित मडप माहि हिंव, जाजिम लानी जेह । वारु करं
वीछामणा, मोल घणा छै जेह । —प च चौ

वीछाणी—देखो 'विछाणी' (रू भे)

वीछाणी, वीछावो—देखो 'विछाणी, विछावो' (रू भे)

वीछाणहार, हारो (हारी), विछाणियो—वि० ।

वीछायोडो—भू० का० कृ० ।

वीछाईजणी, वीछाईजवो—कर्म वा० ।

वीछायोडो—देखो 'विछायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीछायोडो)

वीछावणी—देखो 'विछाणी' (रू. भे)

उ०—ताहरा वळद उपर सखरा वीछावणा, तिण उपर विणयाणी

नू सोहरी वंमाणी । चालिया जावं छै । चालता चालता आगं
जाय डेरी कीयी । —रळं गढवं री वात

वीछावणी, वीछाववो—देखो 'विछाणी, विछावो' (रू भे)

वीछावणहार हारो (हारी), वीछावणियो—वि० ।

वीछाविओडो, वीछावियोडो, वीछावयोडो—भू० का० कृ० ।

वीछावीजणी, वीछावीजवो—कर्म वा० ।

वीछावियोडो—देखो 'विछायोडो' (रू भे)

(स्त्री वीछायोडो)

वीछियो—देखो 'विच्छू' (अल्पा, रू भे.) (शेखावाटी)

वीछुडणी, वीछुडवो—क्रि अ —१ विमुक्त होता ।

उ०—कळ विछुडि एक बमं गिरि कदरि, मदिर भाळक एक भरं ।
ग्रहि त्याग भुरं घन एक गमाय रु, कै रिघ आदरि सधि करं ।
—रा रू.

२ देखो 'विछुडणी, विछुडवो' (रू भे)

उ०—यै सिध्दावठ, सिध करठ, पूजठ, थाकी आस । वीछुडतां
ही माणसा, मेळठ दियठ उल्हास । —डो. मा.

३ देखो 'विछूटणी, विछूटवो' (रू भे)

वीछुडणहार, हारो (हारी), विछुडणियो—वि० ।

वीछुडिओडो, वीछुडियोडो, वीछुडयोडो—भू० का० कृ० ।

वीछुडोजणी, वीछुडोजवो—भाव वा० ।

वीछुडियोडो—भू का कृ.—१ विमुक्त हुवा हुआ ।

२ देखो 'विछुडियोडो' (रू भे)

३ देखो 'विछूटियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीछुडियोडो)

वीछू—देखो 'विच्छू' (रू भे) (उ र.)

उ०—मिणघर विख अणामाव, मोटा नह धारं मगज । वीछू पूंछ
वणाव, रागें सिर पर राजिया । —किरपाराम

वीछूडो—१ देखो 'विच्छूडो' (रू भे)

२ देखो 'वीछण' (अल्पा, रू. भे)

वीछूटणी, वीछूटवो—१ देखो 'विछूटणी, विछूटवो' (रू भे)

उ०—१ करिमा रा छूटा गाढ जूवळा अफूटा क्रमं, रथा छूटा
पीतमरा लूटा वरा र भ । तूटा वाढ वीजळा वीछूटा आभ वीजू
तेम, खूटा सोस साकुळा हू जूटा जैतखभ ।

—राजाधिराज वखतसिधजी री गीत

उ०—२ हे कळळ मचै हल हल्लकार, मुछाळ वदत मुख मार
मार । वीछूटे छूट हई विकट्ट, निरभीत कडं चदिया निकट्ट ।

—मा वचनिका

३०—३ चौड खल धूहल लाखा चाक, वीरोळ लाख खळां वेडाक । सत्री गुर वीरम धूर्य लाग, बीछट्टी जाण्ये साकल वाग ।
—गो. रू

३०—४ अणघरा का सा वीवाण बीछटा । छछोहा जवान तरवारघा आछट्टे छे । ज्या सूं अणजवार हर वरमाळा सायें ही कट्टे छे ।
—पना

२ देखो 'बिछुडणी बिछुडवी' (रू भे)

बीछटणहार, हारो (हारी), बिछुणियो—वि० ।
बीछटिओडी, बीछटियोडी, बिछुट्योडी—भू० का० कृ० ।
बीछुटीजणो, बीछुटीजवो—भाव वा० ।

बीछुटियोडी—देखो 'बिछुटियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'बिछुडियोडी' (रू भे)

(स्त्री बिछुडियोडी)

बीछोड णो, बीछोड बो—देखो 'बिछोडणी, बिछोडवो' (रू भे)

३०—१ वणें फोज राजा तरुं काजवाळी, कयो क्रत जंसी फुणा पत्ति काळी । कजाका भडा दीडियो रूप कंसी, 'अभो' नक्र बीछोड वा चक्र अंसी ।
—रा रू.

३०—२ जिम मोरा ददरा, सणण घण पावस वूठी । जळ ता मळ बीछोडि, वळ जळ माहि पयठी ।
—अल्लुजी कवियो

बीछोडणहार, हारो (हारी), बीछोडणियो—वि० ।
बीछोडिओडी बीछोडियोडी, बीछोडयोडी—भू० का० कृ० ।
बीछोडीजणो, बीछोडीजवो—कर्म वा० ।

बीछोडियोडी—देखो 'बिछोडियोडी' (रू भे)

(स्त्री. बीछोडियोडी)

बीछोडाणी, बीछोडावो—देखो 'बिछोडाणी, बिछोडावो' (रू. भे)

बीछोडाणहार, हारो (हारी), बीछोडाणियो—वि० ।

बीछोडायोडी - भू० का० कृ० ।

बीछोडाईजणो, बीछोडाईजवो—कर्म वा० ।

बीछोडायोडी—देखो 'बिछोडायोडी' (रू भे)

(स्त्री. बीछोडायोडी)

बीछोडावणी, बीछोडाववो—देखो 'बिछोडाणी, बिछोडावो' (रू भे)

बीछोडावणहार, हारो (हारी) बीछोडावणियो—वि० ।

बीछोडाविओडी बीछोडावियोडी, बीछोडान्योडी—भू० का० कृ० ।

बीछोडावीजणो बीछोडावीजवो—कर्म वा० ।

बीछोडावियोडी—देखो 'बिछोडावियोडी' (रू भे)

(स्त्री बीछोडावियोडी)

बीछोटणी, बीछोटवो—क्रि अ.—१ वहना, निकलना ।

३०—गखडे एक घाव कीघो । तीसो दूजो सभूनाथ में दुधारी सीरा छुटा । वळ घाव हुवो । दूध दही बीछोटवा लागी । बीजो घाव हुवो । लोही वीकरड चात्या, तीको सभूनाथ खड वेहड हुवा ।
—अरजण हमीर री वात

२ देखो 'बिछुटणी, बिछुटवो' (रू भे)

३ देखो 'बिछुडणी, बिछुडवो' (रू भे)

४ देखो 'बूटणी बूटवो' (रू भे)

बीछोटणहार, हारो (हारी), बीछोटणियो—वि० ।

बीछोटिओडी, बीछोटियोडी, बीछोटयोडी—भू० का० कृ० ।

बीछोटीजणो, बीछोटीजवो—भाव वा० ।

बीछोटियोडी—भू का कृ—१ वहा हुवा, निकला हुवा ।

२ देखो 'बिछुटियोडी' (रू. भे)

३ देखो 'बिछुडियोडी' (रू भे.)

४ देखो 'दूटियोडी' (रू. भे)

(स्त्री बिछोटियोडी)

बीछोव—देखो 'बिछोह' (रू भे)

बीछोवणी, बीछोववो—देखो बिछोहणी, बिछोहवो' (रू भे.)

बीछोवणहार, हारो (हारी) बीछोवणियो—वि० ।

बीछोविओडी बीछोवियोडी, बीछोव्योडी—भू० का० कृ० ।

बीछोवीजणी, बीछोवीजवो—भाव वा० ।

बीछोवियोडी—देखो 'बिछोहियोडी' (रू भे)

(स्त्री बीछोवियोडी)

बीछोवो, बीछोह—देखो 'बिछोह' (रू. भे)

बीछोहणी, बीछोहवो—देखो 'बिछोहणी, बिछोहवो' (रू भे)

बीछोहणहार, हारो (हारी), बीछोहणियो—वि० ।

बीछोहिओडी, बीछोहियोडी, बीछोह्योडी—भू० का० कृ० ।

बीछोहीजणी, बीछोहीजवो—भाव वा० ।

बीछोहियोडी—देखो 'बिछोहियोडी' (रू भे)

(स्त्री बीछोहियोडी)

बीछोहो—देखो 'बिछोह' (रू भे)

३०—प्राया मिळ असवार, सुंदर दीठी सास विण । हय हय सिरजणहार, डोल बीछोहो बिळकुळ
—डो मा

बीज—देखो 'बीज' (रू भे)

२ देखो 'बीजळा' (रू भे)

३०—१ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडेंची वाही करि खीज । सुकरि प्राकास हत सेलारा, बीजुळ विढण क बुही बीज ।

—केसोदास गाडण

३०—२ पातहठ कवणइ, कणण जम ज तठ वारइ ? कवण वज्र भेलियइ, कणण सिरि बीज सहारइ ।
—अ. वचनिका

३ देखो 'वीजली' (रु भे) (ना मा)

उ०—१ सुर दक्खे जे जे सबद, रस अदभुत लख रीज । ईढ करे खग सूँ 'अमा', वजर न चकर न वीज । —रा रु

उ०—२ भडज वादळ सवळ वीज सावळ भळक, वळक जळ वधर घट नाळ खाळा । वाग् सुरताण वळ अकळ खूटा वरस, माल' हर सीस सुर-गरद माळा । —अजवी वारहठ

उ०—३ सो रूप री ऐसी, जैसी प्रथी में नही—सरग री परी, आभे री वीज मान सरोवर री हस, केळ री गरम । सी रूप गुणा-कर निपट अवल परा आख्या सजम मोतियावध ।

—कृवरसी साखला री वारता

उ०—४ जइ तूँ ढोला, नावियउ काजळिया री तीज । चमक मरेसी मारवी, देख खिचता वीज । —ढो. मा

उ०—५ हीया असक्कइ कायर लोक, संत तराण मन करइ ससोक । जाणै वीज पडि [ध] अकालि, जाणै मुद्र खुम्प्या कलिकालि । —सालिसूरि

४ देखो 'दूज' (रु भे)

वीजइ—१ देखो 'दूजी' (रु भे)

उ०—वीजइ दिन चचिगदै राइ, वइठउ मन माहि करइ उपाय । मत आवइ रिएधवळाह जान, करिसी भू भू पिगराजान ।

—ढो मा

२ देखो 'वीजली' (रु भे)

३ देखो 'विजय' (रु भे)

४ देखो 'वीज' (रु भे)

विजइयभ—स पु [स विजय स्तभ] विजयस्तभ, कीतिस्तभ ।

उ०—पात्हएसी भला-भला लोका का कह्या करण चार साभळ्या । आसू पूँछि अकमाळ लियउ । वीजइयभ वागडी की नाई सकळ ही प्रियमी प्रतपिज्यर, यउ गढ लीजर, हमारउ वइर सूरिताण गोरी राजा सउ कीज्यर । —अ वचनिका

वीजई—१ देखो 'दूजी' (रु भे)

२ देखो 'वीजली' (रु. भे)

३ देखो 'विजय' (रु भे)

४ देखो 'वीज' (रु. भे)

वीजउ—देखो 'दूजी' (रु भे)

उ०—अणहिलवाडा पाटण सामि, वीजठ नफर गयउ तिरिण ठामि । उदयचदनय कियउजूहार, परणावउ रिएधवळ कुंमार ।

—ढो मा

२ देखो 'वीज' (रु भे)

वीजक—१ देखो वीजक' (रु भे)

२ देखो 'वीजली' (रु भे)

उ०—डोहन सूडा डड ए, ज्ञीखड सरपकहिड ए । गज वाग मरथे मैगळा, वळकत वीजक वट्टा । —गु. रु व.

उ०—२ रत खाल-रळ तळ पालर, प्रग्घळ, होहू हूकळ थट्ट हुवै । वळ कत विज्जळ वीजक वट्ट, ढोल त्रिमगळ वोम धुवै ।

—गु रु. व

उ०—३ चढे चलं चतुरग महादळ, वीजक जाण वळकके सावळ । वाजी घोडा पाइ धरत्ती, छूटा साहण हाहुल माती । —गु. रु व

वीजकणी, वीजकवी—देखो 'भिचकणी, भिचकवी' (रु भे)

वीजकणहार, हारी (हारी), वीजकणियो—वि० ।

वीजकियोडो, वीजकियोडो, वीजकियोडो—भू० का० कृ० ।

वीजकौजणी, वीजकौजवी—भा वा० ।

वीजकाणी, वीजकावी—देखो 'भिचकाणी, भिचकावी' (रु भे)

वीजकाणहार, हारी (हारी), वीजकाणियो—वि० ।

वीजकायोडो—भू० का० कृ० ।

वीजकाईजणी, वीजकाईजवी—रुमं वा० ।

वीजकायोडो—देखो 'भिचकायोडो' (रु. भे)

(स्त्री. वीजकायोडो)

वीजकियोडो—देखो 'भिचकियोडो' (रु भे)

(स्त्री. वीजकियोडो)

वीजखणी, वीजखवी—देखो 'भिचकणी, भिचकवी' (रु. भे)

उ०—भरडी वीजखियो, आळखियो मोनू अवं । कुण जीदो कहि-याह, किए कारण मारु कहौ । —पा. प्र.

वीजखणहार, हारी (हारी), वीजखणियो—वि० ।

वीजखियोडो, वीजखियोडो, वीजखियोडो—भू० का० कृ० ।

वीजखौजणी, वीजखौजवी—भाव वा० ।

वीजखियोडो—देखो 'भिचकियोडो' (रु. भे)

(स्त्री वीजखियोडो)

वीजगणित—देखो 'वीजगणित' (रु भे.)

वीजड—देखो 'वीजळा' (मह, रु भे)

वीजडली—१ देखो 'वीजळा' (अल्पा, रु भे)

२ देखो 'वीजली' (रु भे)

वीजडहत, वीजडहती, वीजडहय, वीजडहथी—देखो 'वीजळाहय' (रु भे)

वीजडहतो, वीजडहथी—देखो 'वीजळाहय' (मह, रु भे)

वीजडाहत, वीजडाहती, वीजडाहय, वीजडाहथी—देखो 'वीजळाहय'

(रु भे)

वीजडाहतो, वीजडाहथी—देखो 'वीजळाहय' (मह, रु भे)

बीजडी—१ देखो 'बीजळा' (रू. भे)

२ देवो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—वगतरा ऊपरा तरवारिआ रा वाड त्रूटि नै रहिआ छै । जाणी वादळा माहै बीजडिआ रा सिला ऊपडिआ पाखरा ऊपरै सार-धारा फूलधारा वाजी सु ठण्ठाणण जाणै परभात री भातर ठण्ठी, नरवगतर विघस हुआ । --रा. सा स

बीजजळ, बीजजुळ, बीजजुळ, बीजभळ, बीजभूळ—देखो 'बीजभळ'

उ०—सग्रामा सभावै बीजजुळी कसा आया सामै, रेण श्रेक थोडा नामै थावै असी रीत । न भावै फिरगी हिदुथान कीधी पाय नामै, आप नामै नाच खाधी विजाई 'अजीत' । —नवलजी लाळस

बीजड—देखो 'बीजळा' (मह, रू. भे)

उ०—ऊभडा भडा नीभडा अग, बीजडा गडा बीजळा वंग । जमजडा घडा समवडा जग, त्रिजजडा भडा तडफडा तग । —गु. रू. व.

बीजण—देखो 'बीजणी' (मह, रू. भे)

उ०—फुला हळवी पाटो कुंवळी, बीजण इधक खिवाय । 'बील्ह' कहै गुर भाइयो, करणी साच तराय । —बील्हीजी
२ देखो 'बीजन' (रू. भे)

बीजणी—देवो 'बीजणी' (अल्पा, रू. भे)

बीजरू, बीजणी—देखो—'बीजणी' (रू. भे.)

उ०—आप जुद्ध मे काम आवी, ह सत करू, पछै विमाण मे वैस स्वरग मे जामा जद अपछरावा चमर करसी तिए गी वायरी लागसी श्री बीजणी हुमी अर्व बीजणी कगवणनै श्री वळै आपरा वळ सारू है । —वी स टी

उ०—२ स्त्रीमत तरणा चउवारा भलहलड, जलद्रां सरीरि लगाडीइ, गुलाव तरणा अभयग कीजइ, वावना स्त्रीखड घसीयड, चउदिसीयइ बीजणां फिरइ, द्राक्षा आवलीपान कीजइ, कलमसालि तरणा सीध-उरा करवा कीजइ अच्छा कापडा पहरियड लू आहण्या पाणी पीजइ । —व स

बीजणी, बीजवी—देखो 'बीजणी, बीजवी' (रू. भे)

उ०—पान आरोगइ तै घणा, वनिता बीजइ वाय । अगि अति ऊलट धरी, तिहुयण तेह न माय । —मा. का प्र

२ देवो 'बीजणी, बीजवी' (रू. भे)

बीजणहार, हारी (हारी), बीजण्यौ - वि० ।

बीजियोडी, बीजियोडी, बीजियोडी—भू० का० क० ।

बीजीजणी, बीजीजणी—कमं वा० ।

बीजन—स पु [स बीजन] १ चक्रवाक, चकोर पक्षी ।

२ पये से हवा डालने की क्रिया ।

३ देखो 'बीजणी' (रू. भे)

रू. भे—बीजण ।

बीजपुरख, बीजपुरस, बीजपुरख, बीजपुरस—स. पु [स. बीजपुरख] किसी वक्ष का आदि या मूल पुरुष ।

बीजपूर, बीजपूरक—देखो 'बीजपूर' (रू. भे)

बीजमत्र—देखो 'बीजमत्र' (रू. भे)

उ०—रिध सिध दियण कोयला राणी, ब्राळा बीजमत्र ब्रहमाणी । वयण दियै मो अविरेळ वाणी, पुणा क्रीत जिम सारगपाणी । —ह र

बीजमारग—देखो 'बीजमारग' (रू. भे)

बीजमारगी—देखो 'बीजमारगी' (रू. भे)

बीजळ, बीजल—स पु—१ पखा ।

२ देखो 'बीजळ' (रू. भे)

३ देखो 'बीजळा' (रू. भे)

उ०—१ जुघ सीस पडत घडाह जोळा, बीजळ धक्क चरक्क वहे । गळिवाह लोळावट होय गळोवळ, गूथाबत्य सुभट्ट ग्रहे ।

—गु. रू. व

उ०—२ विढे बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ए । वळिवत अतुळ बळ, जूटा चिहु वळ (वळ) भळहळ दळ बीजळ ए । —गु. रू. व.

उ०—३ बीजळ सेल गुरज घण बाजै, गाज त्र वाळ सघण घण गाजै । अरण वभक कोप घड उरिया, छकिया घाव कटारा छुरिया । —सू. प्र

उ०—४ वाप रै तखत बैठी, धारि छत्र जोम धारि । बीजळा दिलेस देस, मारि कीध पाळ वारि । —सू. प्र

उ०—५ रीठ पडे धारूजळा, अर घड डळा उवेड । करै खळां चहुवै वळां, दळ बीजळा निवेड । —रा. रू

४ देखो 'बीजळी' (रू. भे.)

उ०—१ सोर धीर' सम्मूह, वाण ऊच्छळै वळ ता । वहे आग वरजाग, वोम किरि बीजळ लता । —गु. रू. व

उ०—२ वादळ दळ मेल खडग सभ बीजळ, कमधा काठळ फौज कर । घण गाजै गजसीग विरद घण, आफळ मरै कठीर यर । —देवराज रतनू

उ०—३ पसवाई बीजळ खिबै, हो जी, वै री पेट पीपळ केरी पान । है गवरल, रुडो है नजारी तीखो है नैरा री । —लो गी.

उ०—४ साकळा कळा चक्र साह, तु आद बीसहत नीमी ताह । साकवरी तुं हीज तु कळा सोम, बीमळा भवर बीजळ गोम । —रामदान लाळस

बीजलडी, बीजलडी—१ देखो 'बीजळ' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'बीजळा' (अल्पा, रू भे)

३ देखो 'बीजळी' (रू. भे)

उ०—१ बीजलडी, घण, वरजी ना जाय, वारी घण वारी श्री हजा, सावण-भादवी श्री चमक बीजळी, जी राज । —लो गो.

उ०—२ था री ती सतायी, गोरी का सायबा, आभा री बीजलडी होय जास्या, म्हारा राज । थै घण, होस्यो आभा केरी बीजळी, मारु थारी इदरियो धररासी, म्हारा राज । —लो गो

बीजळसार—देखो 'विजळसार' (रू भे)

उ०—चरखी ती लेल्यू, भवरजी, रागली जी, हाजी ढोला पीढी लाल गुलाल । तकवी ती लेल्यू, भवरजी, बीजळसार को जी श्री जी म्हा री जोडी रा भरतार, पूणी मगा ल्यू जी क बीकानेर री जी । —लो गो

बीजळहत, बीजळहती, बीजळहत्य, बीजळहत्यो, बीजळहत्य, बीजळहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू. भे)

बीजळहथो, बीजळहथी—देखो 'बीजळाहथ' (मह, रू भे)

बीजळा, बीजला—१ देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—राठीड रचेवा रगताळ, वामग डहे बीजला झाळ । बाध कदील सर्व विधाण, कोसीस भुजै दीना कबाण । —गु. रू. व

२ देखो 'बीजळी' (रू भे) (ना मा)

उ०—१ कसस्त कटळा, आकुसा बीजळा । चमकै चप्पळा, वरका, ववळा । —गु रू व

उ०—२ खळहळा चल रळतळा खाल, बीजळा झळा बीमळा बाल । भू छळा गळा गू थळा गड्ड, सिधळा कळा साकळा सड्ड । —गु रू व.

बीजळाहत, बीजळाहती, बीजळाहत्य, बीजळाहत्यो, बीजळाहत्य, बीजळाहथी—देखो 'बीजळाहथ' (रू भे.)

बीजळाहथो, बीजलाहथी—देखो 'बीजळाहथ' (मह, रू भे)

बीजळि, बीजलि, बीजळी, बीजली—स. स्त्री —१ वह भंस जिसके स्तनो मे एक ही सफेद रेखा या धारी हो । (अशुभ)

२ देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—पछट्ट बीजळि 'केहर' पाणि, सिलह वध हेक करे धमसाणि । जुडे चहुव दळ रोद ब्रजागि, खिव घण केहर' ऊपर खगि ।

—सू प्र

३ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—१ च्यारड पासइ घण घणउ, बीजळि खिवइ अगास । हरि-याली रुति तउ भली, घर सपति, पिठ पास । —ढो मा.

उ०—२ नख अहिरण घज नळी, कळी बाजू पीडा चक । बजे नास बासली, ताव बीजळी छळी तक । —सू. प्र

उ०—३ ढोलउ जाण्यत बीजळी, माघ जाण्यउ मेह । च्यारि आख एकठि हुई, सयणै वध्यो सनेह । —ढो मा.

उ०—४ आरुढ पीलवाणा-ऐ, गजिद-वाग पाणाए । घटा फवज्ज घूधळी, चमकि कूत बीजळी । —गु रू व

उ०—५ कुरजा री टोळी, सहेल्या री हवोळी साथ लीना श्री लागणा लोयणा देखि रिभवार अडवई छै । वादळा में बीजळी को भळकी, ज्यू गु गटा में टीकी को पळको पई छै । हसता ती फूल भई छै । इण भाति चालता रिमभोळा री धमक पई छै ।

—पना

बीजाजळ, बीजाजुळ—देखो 'बीजूभळ' (रू. भे)

उ०—विढे बीजाजळ गुडिया गज दळ, दमगळ हूकळ कळियळ ए । वळिवत अतुळ वळ, जूटा चिहु वळ, (वळ) भळहळ दळ बीजळ ए ।

—गु रू. व.

बीजाभळ, बीजाभल—१ देखो 'बीजूभळ' (रू भे.)

२ देखो 'विध्याचल' (रू भे)

उ०—नग सीसा गळ नीम, गरक असमा चूनागळ । बीभाभळ सिर वणै, विखम भुग्जा बीजाभळ । —सू. प्र

बीजाविक-स. पु. [स] ऊट ।

बीजियोडी—१ देखो 'बीजियोडी' (रू भे.)

२ देखो 'बीजियोडी' (रू भे.)

(स्त्री बीजियोडी)

बीजु—देखो 'विजु' (रू भे)

बीजुळ, बीजुल—देखो 'बीजळा' (रू भे)

उ०—असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडैच वाही करि खीज । सुकरि आकास हूत सेलारा, बीजुल विढण क बुही बीज ।

—कैसोदास गाडण

बीजुळी, बीजुली—१ देखो 'बीजळा' (रू भे)

२ देखो 'बीजळी' (रू भे)

उ०—काळी कठळि बीजुळी, नीची खिवइ निहल्ल । उर भेदती सज्जणा, ऊचेडती सल्ल । —ढो. मा

बीजूजळ, बीजूजल, बीजूभळ, बीजूभल—देखो 'बीजूभळ' (रू. भे)

उ०—१ 'अजबी' 'पतो' लिया परण उज्जळ, वेंणावत ग्रहिया बीजूजळ सकतावत छळि घणी सिधाळा, आया चापा वस उजाळा ।

—रा रू.

उ०—२ वाहि बुहाय घणी बीजूजळ, तडळ खगा करे त्वा तडळ ।

इस प्रथमी सिर क्रीत उवारा, परणं अपछर सुरगि पधारा ।

—सू प्र

उ०—३ वळकं बीजूजळ कुटकं कम्मळ, स सर सावळ भळहळ ए । अडडं काछूसळ कुटकं कम्मळ, सोणी रळचळ वळहळ ए ।

—गु. रू व

उ०—४ कळकळा दळा चहुवळा फावै करण, धरं वार हेकल पाट-
ऊधोर । तूटतो जाय धीजूजळा तणी ताव, जळां वाघा ज्यु ही खळा
चौ जोर । —महाराजा मानसिंहजी रौ गीत

उ०—५ जवनाए दळं धीजूभळं, देख भलं कुळ देस रौ । 'इद्रभाए'
खणं वढ ऊजळं, मिळं जोत 'मुकनेस' रौ । —रा रू

बीजोग—१ देखो 'बिजोग' (रू भे)

२ देखो 'बिजोग' (रू भे)

३ देखो 'बिजोग' (रू भे)

उ०—राज कुवर नव वरणव्या, सयल सभा साभळी ही सजोग ।
गगा फळ 'नरपति' कहइ पुत्र कळप्र नवि हुवई बीजोग ।—बी. दे.

बीजोरव—देखो 'बीजोरी' (रू भे.)

बीजोरडी, बीजोरडी—देखो 'बीजोरी' (अल्पा, रू भे.)

उ०—कणावीर पकरणी केतकी, बीजोरडी नारेळ । कवोई कुदाळी
घाईसरस, सडवळ वरण तबोळ । —रुकमणी मगळ

बीजोरी—देखो 'बीजोरी' (रू भे.)

बीजोरी—देखो 'बीजोरी' (रू भे)

बीजी—देखो 'बीजी' (रू भे)

उ०—१ जद जागू तद एकली, जब सोळ तव वेल । सोहणा, थं
मनं छेतरौ, बीजी श्रीजी हेल । —ढो मा

उ०—२ उवै घोडी आणी तो थं बडा घाडवी । बीजी तो घाडा
घणा ही करो छो छोटा मोटा । इतरौ कहता वेउ जणा उठि नै
चळू करं नै बोलीमा । चळू भरि पाणि नै कहियो । जं उवै घोड्या
आणा तो एण आड नै जीमा नही तो ए कलक मारु उदक आवण ।
—चीबीली

उ०—३ वधाईदर नु रावखी कडा वगसिया । भालीजी मोती
दीया कुवर रा मोहला सिरपाव दीया । बीजी पण कामदारा
साहुकारा राज रै राहणं अमरावा ठाकुरा सारा वधाई दीवी ।

—कुवरसी साखला री वारता

(स्त्री. बीजी)

बीभरण, बीभरण, बीभणी—देखो 'बीभणी' (रू भे) (उ र)

उ०—१ छाटी पाणी कुमकुमड, बीभरण बीभ्या वाड । हुई सचेती
माळवी, प्री आगलि विललाड । —ढो मा

उ०—२ तथा उपराति करि नै राजान सिलांमति उण वागाइत
मांहे श्रीखम रित रा विलाइती वालै रा खस गाना, ऊची ठोड रा
वगला, रावटी बालावध रा ठांसा रा गूणिया भाति भाति एख-
खाना वणाया छै । घणै सीतळ पाणी सूं सीचिया थका बीभणी
वाड भापा सू हीका लाइ रहिया छै । —रा. सा स

उ०—३ वावळ घागं बीभणी, की पावै सनमान । तूक रीक
आगं तिसी, 'देवा' ! जग चौ दान । —वा. दा.

उ०—४ वाफता रा सेलारा रुमाल केसरिया छं सू माथा ऊपर
राखजं छै । बीभणीं सू वायेरा लीजं छै । किए भात रा छै ?
लाहोर रा कियाडा छै । रूप रौ डाढी जरी सूं मढी, टुकडी री
भालरी । —रा सा स

बीभणी, बीभवौ—देखो 'बीजणी, बीजवी' (रू भे.)

उ०—छाटी पाणी कुमकुमड, बीभरण बीभ्या वाड । हुई सचेती
माळवी, प्री आगलि विललाड । —ढो मा

बीभरणहार, हारौ (हारौ), बीभणियो—वि० ।

बीभ्रयोडी, बीभ्रयोडी बीभ्रयोडी—भू० का० कु० ।

बीभीजणी, बीभीजवी—वमं वा० ।

बीभवण, बीभवन—देखो 'बीभवन' (रू. भे.)

उ०—आडा डंगर बीभवण, बीव माछळा गयद । सीन कहरं
वदरा, किय विध्य लोपियो समद । —मेहीजी गोदारौ थापन
बीभाणमाता—स. स्त्री —एक देवी का नाम ।

बीभाजळ, बीभाजल, बीभाभळ, बीभाभल—१ देखो 'बीजूभळ'
(रू. भे)

२ देखो 'विध्याचळ' (रू भे.)

उ०—नग सीसा गल नीम, गरक असमा चूनागळ । बीभाभळ
सिर वणं, विलख भुरजा बीजाभळ । —सू प्र.

बीभावण, बीभावन—देखो 'बीभवन' (रू. भे)

उ०—सादूळा केसरीसिंह ज्वाळानळ अगनी सू वळता थका बीभा-
वन हाथिया री पेटरी छाया सूता विसराम करं छै । भुयग सरप
नीसरिया छै । सो लू नै तावड' री अगनि सूं वळता थका द्रोडि
द्रोडि नै हाथिया रै सीतळ सू डाहळा माहे पैसि पैसि रहिया छै ।

—रा. सा. सं.

बीभासण, बीभासणी—१ देखो 'भावलिया' ।

उ०—भोपी कहे भूव छै लोभ बीभासणि लीधौ । जत्र मत्र रा जाण,
कहे कोइ कामण कीधौ । —घ. व. अ

२ देखो 'भावड' ।

बीभीडणी, बीभीडवी—क्रि स —काटना ।

उ०—खाजरू आए हाजर हुआ छै, रावताला नू कहिओ छै। ठाकरे खाजरूमा नै ठरका करी। तिकै रावताला घणी केसर नै घणै कसनगर अतर साधे माहे गरकाव हया थका। उमा सीरोहीआ खाजरू बीभोडीज छै। —रा सा. स

बीभोडणहार, हारी (हारी), बीभोडणियो—वि० ।
बीभोडिओडो, बीभोडियोडो, बीभोड्योडो—भू० का० कृ० ।
बीभोडीजणो, बीभोडीजवो—कर्म वा० ।
बीभोडणो, बीभोडवो—रू० भे० ।

बीभोडियोडो—भू. का. कृ —काटा हुआ ।

(स्त्री बीभोडियोडी)

बीटक—स पु [स] पान का बीडा ।

बीटणी, बीटवो—देखो 'बीटणी, बीटवो' (रू. भे.)

उ०—१ गाज नगारा चहू गमा, धर माण रुकाणी, चडिया घूस बहादरा, बधे किरवाणी । देस महेवा बीटिया, त्रिविध तुरकाणी । रावळ 'माल' महावळी, आगळ हिंदवाणी । —बी. मा.

उ०—२ ककर पथर बीटिया कु नण, जिण तिरण पूछे तोछ जळ । 'सुरावत' तुहे कण साचो, आभुखण नव कोट इळ ।

—सिवनार्थसिध री गीत

उ०—३ हिरणा नह मावे हिये, सहबो दीठा स्वास । वाघ घणा मिळ बीटिया, तो पिण तिल नह त्रास । —बा दा.

उ०—४ 'चदण' चदण बीटियो, अन भीखण उरगाह । इण कारण आया नही, चारण पखी ताह । —बा. दा.

उ०—५ खाग धुबती मारवे, बीट लियो जोघाण । सज्जे कोट मळे छे दळ, वज्जे बाण कबाण । —रा रू.

उ०—६ विधि विधि विलखा वचन कहइ, वेलिइ बीटिया ब्रक्ष । ग्रेह पनुता अवनि तटि, यम चुहुटाइइ चक्ष । —मा का. प्र.

उ०—७ एहवो घातकोखड ए, परिदखिणा परकार । अठ लख जोयण बीटीयो, समुद्र कालीदधि सार । —ध व प्र

उ०—८ सुंदर स्याम सरीर, बाघी कट राम पीत पीतवर । काळी धादळ सू के, बीटाणी बीज वरसाळ । —र ज प्र.

बीटणहार, हारी (हारी), बीटणियो—वि० ।

बीटिओडो, बीटियोडो, बीट्योडो—भू० का० कृ० ।

बीटीजणो, बीटीजवो—कर्म वा० ।

बीटली, बीटवो—१ देखो 'बीटली' (रू. भे.)

उ०—१ उठा सु पाछा मुरडिया, सी अजमेर आया । बीटली सभो तिरण ऊपर भडारी विजेराजजी नै राव अमरसघजी कुसल-सघोत ऊदावत वगेरे हरमाण भगवानदासोत राठीड जगतसघ तेज-

सघोत वगेरे आसामी जद थी ।

—रा व. वि.

उ०—२ पण उणारी चीडे लडणै री आसग हुई नही । तद वर-सघ नू लालच देय अजमेर बुलायो, अघ खातरी करनै बीटली चाडियो । पीछे वदीवस्त कियो । —द. दा.

उ०—३ इण भात सारा नू सीख सलाह दे बहिर हुवो सी पहला तो अजमेर गयो सी पहला तो खाजेजी री जारत कीवो, देग कवूल कीवो । फेर बीटली चढ मीराजी री जारत कीवो ।

—सूरि खीरे काधळीत री बात

२ देखो 'बीटली' (रू. भे.)

३ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)

४ देखो 'बीटी' (रू. भे.)

बीटवो—वि — घुमावदार, लपेटेदार ।

उ०—सात हमायचा भाग, सात सुराई सराब की, सात सीका जमनाजळ री, हलवान पीडा सात, बीटवा सूळा सराब वस्त भाब माहे घास उभो छै । —तिमरलिंग पातसाह री बात

रू. भे.—बीटीवो ।

बीटिका—स. स्त्री [स बीटि] १ पान की बेल ।

२ पान का बीडा तैयार करने की क्रिया ।

३ चोली की गाठ ।

४ छोटा पान का बीडा ।

रू. भे.—बीटी ।

बीटियोडो—देखो 'बीटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीटियोडी)

बीटी—१ देखो 'बीटी' (रू. भे.) (प्र. मा.)

उ०—सोवन बीटी रयणै जडी, मुक्त नाचता देरलि पडी । प्रीति-वचन प्रामो मन माहि, महूतच पाछउ वलिउ उछाहि ।

—हीराणद सूरि

२ देखो 'बीटिका' (रू. भे.)

बीटीजणो, बीटीजवो—क्रि. अ.—१ मादा टिड्डी का ऋतुमती होकर गर्भ धारण करना ।

बीटीजियोडो—भू. का कृ. (स्त्री) १ ऋतुमती होकर गर्भ धारण की हुई (मादा टिड्डी)

बीटीदार—स पु —विशेष खुदाई वाला, अर्द्ध मडलाकार पत्थर ।

बीटीवो—देखो 'बीटवो' (रू. भे.)

उ०—सू नमचा किण भातरा छे ? बीटीवा, बीगानिया, घणै वनातरा लपेटिया, सालूरा लपेटिया, बोयदार रा मडिया, चँतरा, कलावृत रे काम रा, सोनै रूपै रे बळा रा, रूपै रा कुलावा लाग

थका, सोनें री दूटी, रूपै री चिलम, चिलमपोस छै ।

—रा सा स.

बीटली, बीटली—१ देखो 'बीटली' (रू भे)

२ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)

३ देखो 'बीटी' (रू भे)

४ देखो 'बीटली' (रू भे.)

उ०—सकती बाँध बीटली, डीली मेल्ले लज्ज । सरढी पेट न लेटि-
यस, भू ध न भेळउ अज्ज । —ढो. मा.

बीटोरो—देखो 'भीटोरो' (रू. भे.)

बीटो—स. पु [स. बीटा] १ लकडी के डडे से खेला जाने वाला खेल ।
(प्राचीन)

२ देखो 'बीटी' (रू भे.)

३ देखो 'बीटी' (रू. भे)

उ०—तेज में नाहरखा नाहर से हाथूँ और 'अमरेस' गहै आसमान
वाथूँ । 'प्राग' के जे न्याती रोके नाग की सी नाई, सेल साहेटवाळे त
बीटा देत बाई । —रा. रू

बीटुल, बीटुल—देखो 'बिटुल' (रू. भे.)

बीटुलनाथ—देखो 'बिटुलनाथ' (रू. भे.)

बीठ—देखो 'विस्ठी' (रू भे) (उ. र)

बीठनि—क्रि वि.—अन्दर, मे ।

उ०—नर नार उच्छ्व सेव निरखै, देव दूदभि वज्जए । वाटत नव
गुळ सहर बीठनि, राज अविचळ रज्जए । —रा रू

बीठळ, बीठळ—देखो 'बिटुळ' (रू भे) (ना मा, ह ना मा)

उ०—१ लिखमी ना हर कुण लियै, कुण जीपै करतार । कटक
मारण बारणै, बीठळ कीयो विचार । —पी प्र.

उ०—२ आदि विस्तु नइ आदि माया, हूआ अचळ गठि । मधु
पुरख ह्यलेषडी वरमाळ बीठळ कठि । —रुमणि मगळ

उ०—३ आभ गाभ ती नाखियो, घरा लीयो सिर भल । हरीया
घर सिर घूणियो, कर गहियो बीठल । —अनुभववाणी

उ०—४ तइ ब्रह्मा भल भोलव्यु, सभु कीव तप भग । ब्रह्मचारि
बीठल करिठ, सोल सहलह सगि । —मा का. प्र.

उ०—५ दीना लका जै हाथा न कजै, दीघा जग सारो जाणै । वेदा
भेदां घाता बीठळ, बारवार रटे वाखाणै । —र ज. प्र

बीठळनाथ, बीठळनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे.)

उ०—कै जम नाम तणो तन सज कर, भै जम हू डर डर मत
भाजै । किया सुनाथ हाथ ग्रह केतां, बीठळनाथ अनाथा वाजै ।

—र ज प्र

बीठली—१ देखो 'बीटणी' (रू. भे.)

२ देखो 'बीटी' (मत्पा., रू. भे.)

३ देखो 'बीटली' (रू भे.)

४ देखो 'बीटली' (रू भे)

उ०—सवत १७७७ जेठ माहे अजमेर दाखल हुवा । बीठली लीनी,
पातसाही थाणी सो उतार दीनी । तिए ऊपर पातसा महमदसाह
बाइसी मेली निवाव मुदफरखा । —रा व वि.

बीठळी, बीठळी—देखो 'बिटुळ' (रू. भे.)

उ०—१ भोकू लीन्है जात है, ग्राह नीर कै मांय । बाहर करवा
बीठळी, अजु न आवी काय । —गजउदरार

उ०—२ मन बुद्धि चित्त अहकार मति, समरति तना त्रेवइ
सकति । रहमाण तुहारी अटल राज, बीठला हिमै सिणगार बाज ।
—पी प्र

उ०—३ भाग तणा भामणा त्या भूधर दुध भजण, विहसा ना
बीठला मुगिति सारूप समपण । साधा ना साजोति राक सालोक
लियै रस, सामी मुगिति समीपि भुभ समपी जोडा जस ।

—पी प्र

उ०—४ वस अजुआळ प्रतिपाळ थै बीठला, रामचद राजि मु
भुवण राईआ । पुराणा डोकरा अरज साभळि परी, भाजिही भाजि
भेचक भाईया । —पी. प्र

बीठुल, बीठुल—देखो 'बिटुळ' (रू भे)

उ०—१ रिखव नाम सुत निमी अलख अणजीत अणकळ, ब्रह्मा
सेस महेश दत जोगी थारा थळ । इसी आप अविधूत जिको अत
सोईया जायो, बीठुल सा वादतै, गरव गोरखि गमायो । —पी प्र

उ०—२ अरथ पिता दुख भाळि, हूओ बीठुल वनवासी । सरगि
गिमी दसरथ, अनत कीधो अविणासी । —पी. प्र.

उ०—३ बीठुल विसवनाथ धन जदपत केसव स्त्रीवर, नारायण
नरसिध दमोदर गिरघर नरहर । अविगत आदि जुगाद उपावण
अकळ अपपर, समरि समरि जगदीस भगत साधार प्रमेशर ।

—पि प्र

उ०—४ मछ कछ वराह माहव, नारसिध अनिदय । वेसवाण
दुइभ बीठुल, रामचद निरदय, कान्ह बुड-कलकि केसव, भोम
टाळण भारय । —पि. प्र

बीठुलनाथ, बीठुलनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू भे)

बीठुल, बीठुल—देखो 'बिटुळ' (रू भे)

बीठुलनाथ, बीठुलनाथ—देखो 'बिटुळनाथ' (रू. भे)

बीठी—वि.—वेष्टित, घिरा हुआ ।

उ०—विराजै नगा ओप सू रूप बीठी, दळा नाथ लीनाथ री रूप

दीठी । वरुँ साभळी गात भीरुँ वसन्न, तिसो भूखरुँ जोत मोती
रतन्न । —रा. रू.

२ खराब ।

बीडगाण—देखो 'विडग' (रू. भे)

बीडरणी, बीडरबी—क्रि. स.—क्रोध करना, गुस्सा करना, क्रोध में विक-
राल रूप धारण करना ।

बीडरणहार, हारो (हारो), बीडरणियो—वि० ।

बीडरिओडो, बीडरियोडो, बीडरओडो—भू० का० कृ० ।

बीडरीजणी बीडरीजबी—कर्म वा० ।

बीडरियोडो—भू का कृ —क्रोध किया हुआ, गुस्सा किया हुआ, क्रोध
में विकराल रूप धारण किया हुआ ।

(स्त्री बीडरियोडो)

बीडन—स पु —रस्ती के छोर पर लगाया जाने वाला काठ का छोटा
टुकड़ा ।

बीडवसदेस—स पु —एक प्रदेश विशेष । (प्राचीन)

उ० बीडवसदेस ग्राम सहस्र ७०, गुजरात ग्राम सहस्र ७०, पारी-
थतदेस ग्राम सहस्र ७०, मालवा ग्राम लख १८ सहस्र ६२, गगा
पारदेस ग्राम सहस्र २४, जेजाहुति सहस्र २४, कुकण सहस्र ६,
मलयदेस ग्राम लख १, । —व. स

बीडाणी—देखो 'विडाणी' (रू. भे)

बीड—१ देखो 'भीड' (रू. भे)

२ देखो 'वेड' (रू. भे)

उ०—१ अग्नि में वाण छूटा अमय, बळी बीड चिहूँ वळा ।
पछिवाण हूवी पूठी रुखी, 'गजण' ताम दिल्ली बळा ।

—गु रू व

उ०—२ पाना मुख वाजिप्र हिलै वाना वरक्का, मेघ रग मातग
बीड उढग कटक्का । पली जेभ सादळा हिली फौजा घमसाणा,
व्योम रजी वित्थरी घमस वज्जी केकाणा । —रा रू

बीडण—देखो 'विडण' (रू. भे)

बीडणी, बीडबी—क्रि स —१ लपेटना, लिपटाना ।

उ०—दही रो रजबी दीजें छें । तरगसा माहा सीका काडजें छें ।
वेवडा ठीहा चाडजें छें बीच खीसरी भरती दीजें छें । सूतसु बीड
सीका ऊपर चाडजें छें । झाडै हाथ डोरा दीजें छें इण भात सूळा
वरुँ छें । बडी देवगिरी थाळी में उत्तारजें छें । —रा सा स.

२ देखो 'विडणी, विडबी' (रू. भे)

उ०—बीडण सगराम रो हाम बाकारता, माहा दोग जाम होय
गड मीने । जोषपुर जहर रा बीज वाया जिर्क, तिके फळ चखाउ
आव तीने । —सरसिग कोळसिध रो गीत

३ देखो 'वेडणी, वेडबी' (रू. भे)

४ देखो 'बीडणी, बीडबी' (रू. भे.)

बीडणहार, हारो (हारो), बीडरणियो—वि० ।

बीडरिओडो, बीडरियोडो, बीडरओडो—भू० का० कृ० ।

बीडरीजणी, बीडरीजबी—कर्म वा० ।

बीडरियोडो—१ लपेटा हुआ, लिपटाया हुआ ।

२ देखो 'विडियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'वेडियोडो' (रू. भे)

४ देखो 'बीडियोडो' (रू. भे)

(स्त्री बीडियोडो)

बीण—स. स्त्री [स बीणा] १ सपेरो के बजाने का एक फूक वाद्य
विशेष, महुवरि ।

उ०—तद काया हुय जोगी हुवा । मुद्रा घाती । गुजरात गया ।
श्रं प्रोहित दीदाच, सखरा पण । अर बीण आछी वजावै । तद सहर
माहै बखाण हुवी,—जु जोगी पण भला, बीण आछी वजावै ।

—नैणसी

२ वासुरी, मुरली ।

३ भंरुजी के भीपो के बजाने का एक फूक वाद्य विशेष ।

४ मसक से मिलता जुलता एक फूक वाद्य विशेष ।

५ देखो 'बीणा' (रू. भे)

उ०—१ हस गवण कदळी सुजघ, कटि केहर जिम खीण । मुख सस-
हर खजन नयण, कुच लीफळ कठ बीण । —अग्यात

उ०—२ सहज मदळ जित घमकही, चाजें अनहद बीण । नोरगी
वाणी तन रतन, साध भगत लीलीण । —आलमजी

उ०—३ चपा वरनी, नाक सळ, उर सुचग, विचि हीण । मदिर
बोली मारुवी, जाणि अणक्की बीण । —ढो. मा.

रू. भे —बीण, वीन, वेण, वेणा, वेणु, वंगु, वंग ।

अल्पा, —वेणका

बीणउसिउ, बीणउसीउ—स पु —एक प्रकार का वस्त्र विशेष ।

उ० बीणउसीउ बीणउसीउ मलउसीउ आउचीउउ
भूगनउ भयउ मगलिक मेदियउ सीलउर सिहलउरउं वडरागउ
हीरागरउ फुलयागरउ पूतलीउ बहूमूल धूणोलिय मीणीय काल
फूटडउ रातउ फूटडउ सूपउती मेघावलि मेघडवर पद्मावलि-
पद्मोत्तर इत्यादि वस्त्राणि । —व. स.

बीणकार—स. पु —गर्वयो के अन्तर्गत एक भेद जो वीन बजाने का
पेशा करते हैं । (मा मा)

रू. भे —बीणाकार, बीणकार ।

बीणणी, बीणबी—क्रि स —१ देखो 'विणणी, विणबी' (रू. भे)

उ०—१ सु पाखिली पहर छै । आ झूलि सापडि नैवाजोट ऊपरि वैठी छै । छूटा केस छै । उवाहणी लाल धाघरी छै । डील कसएँ काचवी छै । वैठी थाळी मे चावळ वीणै छै ।

—कावळ जौईयै नै तीडी खरळ री वात

उ०—२ तठा उपरायत इलूरा री कूडी तेजवळ री घोटो धोय तयार कीजै छै । मागण वीण मोकळा पाणी सू धोयजै छै । फेर कोरी हाडी मे राधजै छै । तठा पछै घोटजै छै । —रा सा स

उ०—३ वसत पचमी पछै, नीकळ काची केळा । कूपळ दातण तणी, रगीली रत री वेळा । फागण उतरै धीव, गवरज्या पूजण चावै । वीण लासवा फूल, चढा चद्रायण गावै । —दसदेव

उ०—४ तसु रग वास तसुवास रग तण, कर पल्लव कोमळ कुसुम । वणि वणि माळिणी केसरि वीणति, भूली नख प्रतिविब भ्रम ।

—वेलि

३ देखो ' वणणी, वणवी' (रू. भे)

४ देखो ' वुणणी, वुणवी' (रू. भे.)

वीणणहार, हारो (हारी), वीणणियो—वि० ।

वीणभोडी, वीणियोडी, वीणयोडी—भू० का० कृ० ।

वीणीजणी, वीणोजवी—कर्म वा० ।

वीणत, वीणती—स. स्त्री. [स विनति] १ अनुनय-विनय, प्रार्थना ।

उ०—१ तू थो नोज मरै ए म्हारी धीवडी, सूरज तो सुखेला थारी वीणती, आ तो वेमाता सुखेला पुकार, लाय दोनी भवर वीणोटियो । —लो. गी

उ०—२ नी तो म्है ऊदरा नै धरै निवतनं लायी अर नी म्है मिन्नी नै ऊदरा मारणा सिखाया । थारा भगवान आगे जाय वीणती करी जकी जिनावरा नै जीव मारणा सिखावै । थारै पाल्या जं मिन्नी मानती व्है तो उणनं मनावो । —फुलवाडी

उ०—३ तरै जैतेजी नु वीरमदे कहाडियो—राव सु वीणती करी नै म्हा कन्हा राव रा हीडा करावी । ज्युं थं चाकरी करी छौ त्यु म्है ही राव री चाकरी करा । —राव मालदै री वात

२ नअता, विनअता ।

रू. भे.—विणति, विणती, वीणती ।

अल्पा,—वीणतडी

वीणधर—देखो 'वीणाधारी' (रू. भे.)

वीणवणी, वीणववी—१ देखो 'विणवणी, विणववी' (रू. भे.)

२ देखो 'विणवणी, विणववी' (रू. भे.)

वीणवणहार, हारो (हारी), वीणवणियो—वि० ।

वीणभोडी, वीणवियोडी, वीणयोडी—भू० का० कृ० ।

वीणवीजणी, वीणवीजवी—कर्म वा० ।

वीणवियोडी—१ देखो 'विणवियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'विणवियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीणवियोडी)

वीणां—स पु.—१ कपास का पीधा व कपास का डोडा ।

उ०—ऊपर छोतरा, गोहू, तरकारी हुवै । पाणी मीठी । वीणां फागुणिया-मूंग, जवार, सेलडी सो हुनै छै । —नैणसी
२ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

वीणा—सं. स्त्री. [स] १ प्राचीन कालीन एक प्रसिद्ध तारवाद्य ।

(अ मा)

उ०—१ वीणाधर रहजाई गावै किए भात, तराज पर नह आवै नारद वीणा री तात । जिणनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग श्री भमग वन पाताल सूं आवै । —रा सा स.

उ०—२ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति अनेक राग रग बघाई वाटीजै छै । राय अगण धोलहरै गेहणी घणां मगळाचार गीत नाद खभाहची गावै छै । छत्रीस वाजा पच-सवदा वाजै छै । ताहरा नाम ततो, वीणा, किनरी, तवूरी, नीसाण एतो पाच सवदा भागै छत्रीस वाजा रा नाम कहै छै । —रा सा. स

उ०—३ ताल अदग तवूरे, सुर वीणा वीणाधरि सुदरि । हरखत नपत हजूर, सभै सलाम अलाप कीध सुर । —सू प्र

२ वीन ।

३ निसाणी छंद का भेद विशेष जिसके प्रत्येक चरण मे ७ गुह और ६ लघु वणं होते हैं ।

उ०—कीला, लीला, थिरा कृमारि, वीणा, रगी, चगी, वारि । विधा, माळा, बाळा, वाम नीसाणी रा वारा नाम । —पि. प्र.

४ मध्य लघु की पाच मात्रा का नाम । (SIS)

५ पुरुषों की ७२ कलाओ मे से एक । (व स)

६ विद्युत, विजली ।

रू. भे—वीण, वीन, वीण, वीन, वीणा, वीणा, वेण, वेन, वेंण, वैन, वण, वन, वीण, वीन, वीण, वीणा, वेण, वेणा, वेणु, वेणु, वेंण, वैन, वैण, वैणा ।

अल्पा,—वेणका, वेणका ।

वीणाकार—देखो 'वीणकार' (रू. भे.)

उ०—दक्षिण दिसि तूरी रहित ,हीण अगूठउ हत्थि । वीणाकार चाइ सुसर, तास दत दोई नत्थि । —मा का प्र.

वीणादड—स पु [स.] वीणा नामक तारवाद्य के मध्य भाग का लबा दड, प्रवाल ।

वीणाधर, वीणाधरि, वीणाधर, वीणाधारी—वि. [स. वीणाधारि] (स्त्री वीण धारिणी)

१ वह जो वीणा रखता और बजाता हो ।

उ०—ताल अदग तवूर, सुरवीणा वीणाधरि सुदरि । हरखत नपत हजूर, सभै सलाम अलाप कीध सुर । —सू. प्र.

३०—२ वीणाधर सहजाई गावै किए भात, तराज पर नह श्रावै नारद वीणा री तात । जिखनै सुण्या कोकिला मयूर लाज भाग जावै, कुरग श्री भमग, वन पाताळ सूँ श्रावै । —रा. सा. स

स पु.—१ नारद ।

२ अँरुजी के पुजारी, 'भोपे' ।

स स्त्री —३ सरस्वती ।

रु. भे —वीणाधर ।

वीणानिनाद—स. स्त्री [स.] स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक ।

३०—ग्रहोपचार, व्याकरण, परिनिराकरण, रघन, केसवधन वीणानिनाद, वितडावाद, अकविचार, लोकन्यवहार, प्रहेलिका, स्त्री चतुरस्रिकला । —व स.

वीणापाणि, वीणापाणी—स. पु. [स वीणापाणि] १ नारद ।

२ भोगा ।

स स्त्री, —३ सरस्वती ।

रु. भे.—वेणापाणि, वेणापाणी ।

वीणाप्रसेव—स पु [स वीणा+प्रसेव] वीणा में लगी वह गट्टी जिसे आगे पीछे करके तार से निकलने वाले स्वर को तीव्र या मंद किया जाता है ।

वीणार—स पु —१ प्रत्येक चरण में प्रथम एक तगण और बाद में सात भगण अत में एक लघु और एक गुरु सहित २६ वर्णों का एक वृत्तिक वृत्त ।

३०—प्रथम तगण जग्गण सपत्त, लुध गुर सारा लारि । आखर बीस छ श्री वहा, वदा छद वीणार । —पि प्र २ घुडसवार ?

३०—१ भड तुरग वीणार, चडै माफ्री गज केसर । फीज लगै फूलियँ, दीध परराठा पस्सर । —गु रु व

३०—२ श्रीस हजार तुरग नर, मारु धर वीणार । धडहडियी मडळ धरणि, चडियी राजकुंवार । —रा. रु.

वीणावस—स पु [स वीणावस] एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

३०— देहरि दडकलस आँमलसारा सोना तणा जलकड, जलदिरिण कुलवधु तरण पाणि नूपर खलकड सडिड कीरत्तिस्तभ दीसड, लोकहिया विहसड, मेघ मल्हार राग गाइय, वीणावस मनोहर वाइय, देही पूजा कीजड, जन्मफल लीजीड । —व. स.

वीणावती—स स्त्री. [स] वीणावादिनी सरस्वती ।

वीणावाद, वीणावदक—वि [स. वीणा+वाद व वादक] वीणा बजाने वाला ।

वीणावादिनी, वीणावादिनी—स. स्त्री [स वीणावादिनी] वीणावती सरस्वती ।

वीणासर, वीणासुर—सं. पु [स. वीणा+स्वर] वीणा को बजाने से उत्पन्न ध्वनि, वीणा की श्रकार ।

३०—वीणासुर सहए करचौ, तत उतारचा राग । पिए किएही ना नाद सु, कुमरी चित्त न लाग । —श्रीपालरास

वीणास्य—स. पु. [स वीणा+आस्य] वीणा रखने वाला, नारद-मुनि ।

वीणाहस्त—स. पु. [स वीणा+हस्त] शिव, महादेव ।

वीणि—१ देखो 'विना' (रु. भे.)

३०—१ थळ मायँ निवाण करि, नर काय लीडै नीर । नाळँ खोळँ न मिळँ, रीणायर वीणि हीर । —वील्होजी

३०—२ भोजन दान सुभाव विणि, दिल कपटी अतरि दिवै । जप वीणि भमवारी इकरथ, सुरिजन कवि साची कवै ।

—सुरजनदास पुनियो

२ देखो 'वीणी' (रु. भे.) (उ. र.)

३ देखो 'वेणी' (रु. भे.)

३०—एक नाखई एकाउली हार, एक उतारइ सवि सिणगर । तांणइ वीणि विछोडइ दोर, एक लूस्या दिसइ वदोर ।

—का. दे प्र

वीणिकार—देखो 'वीणकार' (रु. भे.)

३० * चामरघारिणी वारविलासिनी महल्लकल्लिका उपाध्याय गायन वदकार आलविणिकार वीणिकार वसकार उत्तकार मानताळकार वडाउजिय पखाउजय पाटहिकप्रमुख राजलोक पीरलोक चक्रवालि । —व स

वीणियोडी—१ देखो 'विणियोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'वणियोडी' (रु. भे.)

३ देखो 'वुणियोडी' (रु. भे.)

वीणी—स. स्त्री १ दो कपाटों को मजबूत बंद करने के लिए उनके पीछे लगाई जाने वाली श्रंगला ।

२ चीकोर छिद्र करने का एक कीला विशेष ।

३ हाथ की कलाई ।

४ देखो 'वेणी' (रु. भे.)

रु. भे.—वीणी, वेणि, वीणि ।

वीणी—स. पु —एक प्रकार का तार वाद्य विशेष ।

२ स्त्रियों के शिर पर चूडामणि (बोर) के नीचे लगाया जाने वाला प्लास्टिक का टुकड़ा, जो चूडामणि (बोर) के शिर में गढ़ने से बचाने हेतु लगाया जाता है ।

३ स्त्रियों के शिर के आभूषण टीके का ही दूसरा नाम ।

रु. भे.—वीणी, वेणी, वेणी ।

वीत-स स्त्री. [स. वीत] १ महावत द्वारा हाथी को अक्रुष मार कर पैरो से मारने की क्रिया। (डि. को.)

[स. वीत] २ हाथी, घोडा या सैनिक जो युद्ध के अयोग्य हो।

वि [स] ३ स्वतंत्र या मुक्त किया हुआ. ४ गया हुआ, प्रस्थान किया हुआ ५ पसद या स्वीकृत किया हुआ।

६ युद्ध के अयोग्य।

रू भे —'वीत'

७ देखो वित' (रू भे)

उ०—१ हसियो जग आसक हुए, वसियो खोवण वीत। रसियो नागी राड सू, फसियो होण फजोत। —वा. दा

उ०—२ हाजर हिद्वे तुरक, लिये न पर भुंइ लोडि। वीत वटावण हेक तूं, वीत वटावण फोडि। —गु. रू ब

उ०—३ पेसकसी सिर आदरे, वधे कर परवाण। पाय लगी 'अगजोत' रे, वीत धरे चहुवाण। —रा रू

उ०—४ वाटी वीत आपण वारे, लाछ नही हालैला नारे। धिर भे दिन नह रहसी थारे, तू नर क्यो न ईसवर चितारे।

—ववसीराम लाळस

वीतक, वीतग-वि —वीता हुआ, गुजरा हुआ।

उ०—१ हू तुज आगळ सी कहू कन्हैया ! वीतक दुख री वात रे। —गिरधारी लाल

उ०—२ संत्रुजे नायक वीनति सामलो, श्रीरिखहेसक स्वाम। दीनदयाल तुम्हाने दाखिवु, अतर वीतग ग्राम। —ध व. ग्र

उ०—३ तू ग्यानी ती पिण तुभू आगे, वीतग कहिये वात जी चौबीसे दडके हू फिरियो, वरण तेह विरयात जी। —ध व. ग्र.

उ०—४ तसु जातिपाति नही काई नही कोई जेहनै भाई, बलि बाप न काई माई। हूं तुभू न आवी मिलियो, वीतग दुख सह टलियो, घर आगण सुरतर फलियो। —वि. कु

वीतगराग, वीतगरागी—देखो 'वीतराग' (रू भे)

उ०—मेरू विचंकरि पूरव पच्छिम दोह विभाग, सोलह सोलह विजय तिहा विचरे वीतगराग, सासत चौथे आरे तारे श्री अरिहत, एहवे महाविदेह करमभूमि श्रीजी तंत। —ध व. ग्र

वीतणी, वीतबो—देखो वीतणी, वीतबो' (रू भे)

उ०—तण त्रप पूज सथानक तीजे, वीरचंद्र राजा वरणीजे। इक निस भाग वीतिया आधी, लगी अनुराग सुपन त्रप लाधी।

—सू. प्र.

उ०—२ वीता अघूर वार पूरा वेध सूरु वचवए, सेल प्रहार धार सार मार मार मचवए। वग्गा खडगो दुहु वग्गे फाळ रगे वीरय, अछरा समगें दूर अगें चाव रगे वीरय। —रा रू.

उ०—३ पूत पिता एकें थया, थं चढ जावो देस। बोला कोला बोलिया, वीतो ब्यण विसेस। —रा. रू.

वीतणहार, हारो (हारी), वीतणियो—वि०।

वीतिप्रोडो, वीतियोडो, वीतयोडो—भू० का० कृ०।

वीतोजणो, वीतोजवो—भाव वा०।

वीतद्वेख, वीतद्वेस-वि [स वीतद्वेप] द्वेप रहित, बिना द्वेप का।

उ०—राग द्वेस श्रोलगायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रे माथा मे दीधी। जद तो लोकरण न श्रोलभी देवे। भला आदमी छोहरा ना माथा में वयू दे। अने किण ही डावरा ना हाथ में लाडू दियो। तथा मूली दियो। उरणे कोई वरजे नही। श्री राग श्रोलखणी दोहरो, अने ऊ द्वेस श्रोलखणी सोहरो। तिण सू वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिठ्या द्वेस तो पहिलाइज मिट जाय। —मि द्र

वीतभय-स पु—१ एक नगरी का नाम।

उ०—अतेउर परिवार ले, भडोपकरण मभाय। 'वीतभय' सेती निकली, 'चपा' नगरी जाय। —जयवाणी

२ भगवान् विष्णु का विशेषण।

वि.—जिसका भय समाप्त हो गया हो, भय रहित।

उ०—वीतभय पाटण नउ धणी रे, नाम उदयन राय। तिण रातइ पोसठ कीयो रे, वीर वादण चित लाय रे। —स. कु.

वीतराग-वि. [स वीत + राग] १ जिसे आसक्ति न हो, निस्पृह, कामनाशून्य।

उ०—१ राग द्वेस श्रोलगायवा स्वामीजी द्रस्टात दियो। किणहि डावरा रे माथा में दीधी। जद तो लोक उरणे श्रोलभी देवे। भला आदमी छोहरा ना माथा में वयू दे। अने किणही डावरा ना हाथ मे लाडू दियो। तथा मूली दियो। उरणे कोई वरजे नही। श्री राग श्रोलखणी दोहरो, अने ऊ द्वेस श्रोलखणी सोहरो। तिण सू वीतराग कह्या, पिण वीतद्वेस न कह्या। राग मिठयो द्वेस तो पहिलाइज मिट जाय। —मि द्र.

उ०—२ वारमी भावना एम भावड, अरिहत वीतराग देव रे। धरम ना ए खरा आराधक नाम जपड नितमेव रे। —स. कु. २ जितेन्द्रिय।

स. पु—१ बुद्ध का एक नाम।

२ जैनियो के प्रधान देवता का नाम, जिन भगवान।

उ०—१ आगइ तीह ना सरिमा काज, जेहे कहिउ कीधउ वीतराग। अठ करम जरा ती श्रोडी बेलि, गिया इ जि सिदिइ पेलावेली। —वस्तिग

उ०—२ जिन सेव च्यारे अरध पुस्कर, माहि पच्छिम भाग ए। तिहा मेर विज्जुमाल चिहू दिसि, विचरता वीतराग ए।

—ध व. ग्रं

८०—३ पटणी पारिख सृज्जी सघ सू, जात्र करी लाभ सुजगीमद
समय सुदर कहइ साचउ मइ जाण्यउ, वीतराग देव विसवा वीसड
—म कु

८०—४ सूत्र सुणउ हित आणी, एती वीतराग नी वाणी ही ।
जस कल्पावतसिका नामदू सोहइ उवग प्रकामद ही । —वि कु
रू भे —वीतराग, वीतगरागा, वीतगरागी, वीतरागी, वीयराग,
वीयरगी वीयराय ।

अल्पा, वीतरागी वीतरागी ।

वीतरागी—देखो 'वीतराग' (रू भे)

८०—एक ही ब्रह्म अग्नि सम जाणया, दुतिये कास्ट दागी । जीवन
मुक्ति सदा सुखदाई, समदरसी वीतरागी ।
—स्त्रीसुखरामजी महाराज

वीतरागी—देखो 'वीतराग' (अल्पा, रू भे.)

८०—भार वाहक नइ कह्या भला, बीमामा वीतरागी जी । माथा
थी मूङ्गइ कर्घे सहइ, मारग माहि लागी जी । —स कु

वीतसूत्र—स. पु [स] जनेऊ, यज्ञोपवीत ।

वीतसेन—स पु [स] राजा पुरवा के पिता का नाम ।

वीतशोक—वि स [वीत + शोक] जिसे शोक न हो, शोक रहित ।

स पु — अशोक नामक वृक्ष विशेष ।

वीतशोका—स. स्त्री [स वीतशोका] एक नगरी का नाम ।

८०—तिम हिज नवमी दच्य विजय बलि पूरव विदेह, नयर सुसीमा
श्रीजी बाहु नभु धरि नेह । नलिनावरत्त चउबीममी पछिम विदेह
वखाण, वीतसोवा नयरी तिहा चौथी सुवाहु सुजाण ।

—ध व प्र

वीतहृदय—स पु [स] १ शुनक का पुत्र एव घृति का पिता एक जनक-
वशीय राजा ।

२ हैहय नामक शर्यातिवशीय वत्स का पुत्र ।

वि० वि०—मतान्तर मे यह हैहयवशीय तालजघ राजा का पुत्र,
सुविख्यात हैहय सम्राट कार्तवीर्य का प्रपौत्र एव जयध्वज राजा का
पौत्र था । परशुराम के क्षत्रियसंहार के समय यह अपन पिता के
साथ हिमालय मे छुप गया था एव परशुराम के निवृत्ति होने पर
इसने माहिष्मती नामक नगरी बसाई थी । इसे अपनी दश पत्नियों
से प्रत्येक से दश दश पुत्र उत्पन्न हुए थे । जिन्होंने काशि देश के हर्यश्व,
सुदेव एव दिवोदास राजाओं को पराजित किया । इसके पुत्रों का
वध काशि के दिवोदास के पुत्र प्रतर्दन ने किया था, उस समय इसने
भृगुऋषि के आश्रम में छिप कर अपनी जान बचायी थी एव उसके
बाद इसने ब्राह्मणत्व स्वीकार किया एव भृगुऋषि के कृपाप्रसाद से
ब्रह्मर्षि बना था ।

वीतहोत, वीहोतर. वीतहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू भे.) (ना. मा.)

वीताणी, वीतावी—देखो 'विताणी, वितावी' (रू भे)

वीताणहार, हारौ (हारी), वीताणियो—वि० ।

वीतायोडो—भू० का० कृ० ।

वीताईजणी, वीताईजवी—कर्म वा० ।

वीतायोडो—देखो 'वितायोडो' (रू भे)

(स्त्री, वीतायोडो)

वीतावणी, वीताववी—देखो 'विताणी, वितावी' (रू भे)

८०—एक डकी नीवत एक री एक अगरेजी राज री सुया नै सूर-
वीरा आपरी जात री नै कुळ री स्वभाव वीरपणी मूला और वा
सूरमा आळस मे अर अंम मे सरीर निररथक वीतावणी सुरू
कीघो ।
—वी. स. टी.

वीतावणहार, हारौ (हारी), वीतावणियो—वि० ।

वीताविओडो, वीतावियोडो, वीताव्योडो—भू० का० कृ० ।

वीतावीजणी, वीतावीजवी—कर्म वा० ।

वीतावियोडो—देखो 'वितायोडो' (रू भे)

(स्त्री वीतावियोडो)

वीति—स. पु [स. वीतिः] १ घोडा अश्व । (२) खाद्य पदार्थ, भोजन ।

३ यज्ञ, हवन । ४ भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ।

५ चमक, दीप्ति, कान्ति ।

६ अग्नि, आग ।

७ गति, चाल ।

८ पंदावार, उपज ।

९ खाने पीने की क्रिया, उपभोग ।

रू भे —वीति, वीती, वित्ति, वित्ती, वीती ।

वीतिमत—स पु [स वीतिमत्] रैवत मनु का पुत्र, एक राजा ।

वीतियोडो—देखो 'वीतियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीतियोडो)

वीतिहोत, वीतिहोतर, वीतिहोत्र—स पु [स वीति + होत्र] १ अग्नि,
आग । (२) हैहयवशीय वीतहक राजा का नामान्तर । (३) प्रियव्रत एव
बहिष्मती के पुत्रों मे मे एक जो रमणक एव धातकी का पिता था ।
(४) सूर्य, सूरज । (५) इद्रसेन राजा का पुत्र एव सत्यश्रवस् राजा
का पिता, एक राजा (६) सुकुमार राजा का पुत्र एव भर्ग राजा का
पिता एक राजा । (७) युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में उपस्थित एक
ऋषि ।

रू भे —वितिहोत, वितिहोतर, वितिहोत्र, वीतहोत, वीतहोतर,
वीतहोत्र वीतिहोत, वीतिहोतर, वितिहोतर, वितिहोत्र । वित्रहोत,
वित्रहोत्र वीतहोत, वीतहोतर, वीतहोत्र, वीतीहोत, वीतीहोतर,
वीतीहोत्र, वीत्रहोत, वीत्रहोत्र ।

वीती—देखो 'वीति' (रू भे) (प्र. मा)

वीतीहोत, वीतीहोतर वीतीहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे)

वीतीहो—देखो 'वीतियोहो' (रू. भे)

(स्त्री वीतीहो)

वीत्यरणो वीत्यरवो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरवो' (रू. भे)

वीत्यरणहार, हारो (हारी), वीत्यरणियो—वि० ।

वीत्यरिओहो, वीत्यरियोहो, वीत्यरघोहो—भू० का० कृ० ।

वीत्यरीजणी, वीत्यरीजवो—भा० वा० ।

वीत्यरियोहो—देखो 'विस्तरियोहो' (रू. भे)

(स्त्री. वीत्यरियोहो)

वीत्योहो—देखो 'वीतियोहो' (रू. भे.)

(स्त्री वीत्योहो)

वीत्रहोत, वीत्रहोत्र—देखो 'वीतिहोत्र' (रू. भे.) (ह ना. मा)

वीत्रोट—स. पु —मनमुटाव, वर ।

उ०—डेरा नजीक—नजीक हुवा । वीच परधान फिरीया, वात बणी नही । वीरमदे राव मालद वीच परधान जुदा फिरीया । राव 'कू पं' 'जेतै' वीच आदमी फिर, धणी चाकरं वीत्रोट घातियो । राव मालद डेरा २ पाछा कौया । —नैरासी

वीथरणो, वीथरवो—देखो 'विस्तरणो, विस्तरवो' (रू. भे.)

वीथरणहार, हारो (हारी), वीथरणियो—वि० ।

वीथरिओहो, वीथरियोहो, वीथरघोहो—भू० का० कृ० ।

वीथरीजणो, वीथरीजवो—भाव वा० ।

वीथरियोहो—देखो 'विस्तरियोहो' (रू. भे)

(स्त्री वीथरियोहो)

वीथि, वीथिका, वीथी—स स्त्री [स वीथि, वीथिका, वीथी] १ मार्ग, रास्ता, गली ।

२ पक्ति, कतार ।

३ हाट, दुकान ।

४ चित्रशाला ।

५ वीथी या सडक के रूप में माने जाने वाले आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग ।

६ कागज या दीवार जिस पर चित्र बनाया जाता है ।

७ सूर्य के चलने का आकाश मार्ग ।

८ सत्ताईस प्रकार के दृश्य काव्यों या रूपकों में से प्रकार का रूपक जो एक ही अक्षर का और एक ही नायक का होता है । इसमें शृंगाररस अधिक होता है ।

रू. भे —वीथि, वीथी ।

वीदस—स. पु.—श्येन, बाज आदि शिकारी पक्षी ।

वीद—स. स्त्री.—१ हाल, वृत्तान्त, विवरण ।

उ०—जळ छोल चौर भीनी सुजाण, वीद पुछी सासु वीमळ बाण । पोसाक तुज किम नीर पास प्रगत्यो मोय इचरज चव प्रकास ।

—रामदान लाळस

२ देखो 'वीद' (रू. भे)

उ०—खित हर अपच्छर वीद खटै, फिरमाळ वही वरमाळ कटै । निरखै सुख नारद वीर नचै, सिव चाल पर्ग सिरमाळ सचै ।

—रा. ह

वीदग, वीदग्ध—स. पु [स विदग्ध] १ कवि, पंडित । (हिं. को)

उ०—१ मुरभूम पाठ विंगळ मता, साहित वीदग सारनै । कहै मख भला रूपक करी, अँ दम दोस निवारनै । —र. रू.

उ०—२ दूहा लघु गिण आधकर, ज्या मरु घट कर एक । रहेस बाकी नाम रट, वीदग अघट विसेक । —र. ज. प्र

२ चारणों का एक पर्यायवाची नाम ।

उ०—१ जिजा भला धन जोडियो, ऊधमियो निज आच । कीरत पोहरे करन रै, वीदग ऊठे वाच । —वा. दा

उ०—२ देवळ विण देव करम विण दरसण, वप वनिता भरतार विना । वामण विण वेद, विद्या विण वीदग, मौज धनह विण जिसेी मना । —त्याग प्रससा रो गीत

रू. भे —विदग, वीदग, विदग, विदग्ध ।

वीदळ, वीदल—देखो 'विदळ' (रू. भे)

उ०—भिडजा भड पारख साल भरै, करवा जुघ वीदल मेलि करै । भर रोस जिदं धिक वेंण भरै, गहें गख खळा तिलमात गिणै ।

—पा. प्र.

वीदा—देखो 'वीदावत' (रू. भे)

उ०—१ सर्फ जुघ 'वीदह' रा खळ साळ, हिचें खग भाग चदोत 'हिंदोळ' । रचै जुघ 'भोज' हरा रिमराह, नरावत नाहरखा नरनाह । —सू. प्र.

उ०—२ ऊदा कं वीदा भड उदार पडियार कमा मडळा पमार । साखला गोड हाडा सघोर, भाटी चवाण निरवाण वीर ।

—पे. रू.

वीदावली—देखो 'वीदावाटी' (रू. भे.)

वीदावत—स. पु —राठीहो की एक उपशाखा या उक्त उपशाखा का व्यक्ति ।

रू. भे —वीदा, वीदावत, वीदा ।

वीदावाटी—स. स्त्री —छापर त्रोगापुर का वह प्रान्त जो राव जोधा के पुत्र वीदा के अधिकार में था । (ऐतिहासिक)

रू भे.—वीदावटी ।

वीदुखण, विदुसरण—देखो 'विध्वंस' (रू भे)

वीधणी, वीधवी—१ देखो 'विधणी, विधवी' (रू. भे) (उ. र)

उ०—नागरपाल रा नीपना गोहू, बजर कठकालिमा मूछा रा ।
त्रावारी सिलाक हुमै तिण भाति रा, वारा वारा वरसा रा डारडा
रा कान वीधीजै । इण भाति रा पाच पाच मण, दस दस मण गेहू,
चावळ आडिमा जाणमा घालिमा रोजीजै छै । —रा सा स.

२ देखो 'वीधणी, वीधवी' (रू. भे.)

उ०—१ पख जाति जीवन लाभइ पार, अनवरतु तीह नउ हूइ
सहार । दीठउ सावज वीधइ वाणि, दुख तणी ऊघाडी खणि

—वस्तिग

उ०—२ पाच सइ थनुख देह परिमाण, तेत्रीस सागरोपम सातमी
जाणि । पाप तणा फल एवडा होइ, वज्रकटि वीधउ छइ सोउ

—वस्तिग

उ०—३ नेहइ नव भव वीधिय, वीधिय उग्रसेन राय । कुअरि भलीय
राजीमति, सीमति तिहयण माहि ।

—जयसेखर सूरि

उ०—४ वीधउ मन रखि नवमइ, नवमइ निज नेठाउ । देई दान
सवस्सर, मत्सर मिल्हिय नाहु ।

—जयसेखर सूरि

वीधणहार, हारो (हारो), वीधणिवी—वि० ।

वीधियोडो, वीधियोडो, वीधियोडो—भू० का० कृ० ।

वीधीजणो, वीधीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

वीधि—देखो 'विधि' (रू भे.)

उ०—१ सुजस सुराई सोम, पय ओपम चडे इधकाई । धन्य धम
दिये सो धन्य, वीधि संई लहैं वडाई ।

—वील्होजी

उ०—२ जोग नही पाखड, कोप काया मा वसं । जोग नही पाखड,
जीव वोहू वीधि तरसं । जोग नही पाखड, वीर जपि गांव जडावें ।

जोग नही पाखड, कूड कथि दुंनी डुलावें ।

—वील्होजी

वीधियोडो—१ देखो 'विधियोडो' (रू भे)

२ देखो 'वीधियोडो' (रू. भे)

(स्त्री वीधियोडी)

वीन—१ देखो 'वीद' (रू भे.)

उ०—गूद लाहू लें र वीन वण, कर घमड फुरती घणो । जाय
असघं ग्राम गवाडे, परण पघारें वीनणी ।

—दसदेव

२ देखो 'वीण' (रू. भे.)

३ देखो 'वीणा' (रू भे)

४ देखो 'विनय' (रू. भे.)

वीनउलो—देखो 'वदोळी' (रू. भे.)

उ०—फिरइ वीनउला वीसलराय, वाजिअ वाजइ नीसाणो घाई
जीमणवार साजत हुइ, कु कुं चदन पाका पान । कर जोडे राजा
कहई, चालउ चउरासी राव की जान ।

—वी दे.

वीनडी, वीनणी—१ देखो 'वीदणी' (रू. भे.)

उ०—१ गूद साहू लें र वीन वण, कर घमड फुरती घणो । जाय
असघं ग्राम गवाडे, परण पघारें वीनणी ।

—दसदेव

उ०—२ वसी री मा—घारें जच तो वीनणी । श्रीभाजी नं बुलाय 'र
गऊदान देय देवा ।

—वरसगाठ

वीनणो, वीनवो—देखो 'विनवणी, विनववो' (रू भे)

उ०—१ सतगुर आगल्य वीनती, करवे लणु पाय । राह कारण्य गुर
वीनऊ, आखर दघो समभाय ।

—अग्यात

उ०—२ गेरी नदन वीनऊ स्त्रीपति सुमति सुजाण । क्रसण तणै
वीवाहलो, रिध सिध प्रसिध प्रमाण ।

—रुक्रमणी मगळ

वीनणहार, हारो (हारो), वीनणियो—वि० ।

वीनियोडो, वीनियोडो, वीनियोडो—भू० का० कृ० ।

वीनीजणो, वीनीजवो—कर्म वा० ।

वीनतडी—देखो 'वीराती' (अल्पा, रू भे)

उ०—१ वाल्हेसर मामी, मानि नें तु अतरयामो । मानि नें सिवगति
गामो, वीनतडी मुळ मानो ।

—प. च. चौ.

उ०—२ सहू गच्छपति सिर छाजें, राजेस्वर पादियइ पासघारउ ।
इक वीनतडी प्रवधारी, स्त्रीसघना वछित सारउ ।

—वि. कु

उ०—३ कायम राजा वाही वाही, सीच्यो सतगुर नूर । वीनतडी
जकै हाजिर सिवरें सत सुकरत का सूर ।

—अग्यात

वीनति, वीनती—देखो 'वीणती' (रू. भे)

उ०—१ सिध साधक योगी अणो रे, जाय क्रीयो आदेस रे । धार
वार वीनति करी रे, लागी पाय नरेस रे ।

—प. च. चौ.

उ०—२ सहज सहज हिडाय, उदो बोले वीनती, आवा गुवणि
चुकाय ।

—ऊदोजी नैण

उ०—३ राय पासि पहिलु पहूचेई, पय पणामि वीनती करेई ।
साभलि वाचा मुळ भूपाल, इणि वणि अछउ अन्हि रखवाल ।

—सालिमद्र सूरि

उ०—४ आडी सीवो आवियो, मिरजें सहत मुकीम । वळ तज दक्खें
वीनती, भूप परक्खें भीम ।

—रा. रू.

उ०—५ हरि जस रस साहस करे हालिया, मी पडिता वीनती
मोख । अम्हीणा तम्हीणें आया, स्रवण तीरथें वयण सदोख ।

—वेत्ति

वीनमणो, वीनमवो—देखो 'विनवणी, विनववो' (रू भे)

उ०—१ तापरि खोजी वीनमे, वूभो राधव व्यास । सब लक्षण गुण
पदमणि के, जाणें सास्त्र अभ्यास ।

—प. च चौ

उ०—२ बादल इण परि वीनमें, मात नही हु वाली रे। रिणवट
आलिम साह सू, जोइ करू ढकचाली रे। —प. च ची.

उ०—३ आजि चलावे देव हइ, वचन हमारउ मानी नू मान। कर
जोडे हूज वीनमे, यँ धरि चाली, नू लावी हौ वार। —बी दे

उ०—४ ताहरा राजाजी भोपत ऊपरि चढए लागी। ताहरा राणीजी
जसवतदेजी राजि नू वीनमियो। राजि दोहरा की हुवी, हू जाइ अर
भोपति नू लै आविस। —द. वि.

वीनमणहार, हारो (हारो), वीनमणियो—वि०।

वीनमणिओडो, वीनमियोडो, वीनम्योडो—भू० का० कृ०।

वीनमीजणो, वीमीजवो—कर्म वा०।

वीनमियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीनमियोडो)

वीनवणो, वीनववो—देखो 'विनवणो, विनववो' (रू. भे.)

उ०—१ गोरीनदन वीनवु, ब्रह्मसुता सरसत्ति। सरस वध प्राकृत
कवू, छठ मुक्त निरमल मत्ति। —का दे. प्र.

उ०—२ कहीउ सघलउ तँ अघदात, महती हरखी निसुणी वात।
सखीअ पाठि वीनवीउ नरिंद, निसुणी राय हूच आणद।

—हीराणद सूरि

उ०—३ जीवडलु जावा करइ, जोई जोई जठ। वेदन वीनवीइ
किसी ? हू वहूअर, तू जेठ ! —मा का प्र.

उ०—४ नदियां गँरी कठए लाघणी, पथ खाडा री धार। काजी
महमद वीनवे, हरि भजि उतरी पार। —वीनमहमद

उ०—वे कर जोडो वीनवूँ जी, सुणि स्वामि सुविदीत। कूड कपट
मूकी करी जी, वात कहू आप वीति। —स कु

उ०—६ एक दिन कोमल पाखडी रे लाल, भाट लेइ निज हाथ रे
आधी सभा मे वीनवे रे लाल, चिरजीवी नरनाथ रे। —प च ची.

वीनवणहार, हारो (हारो), वीनवणियो—वि०।

वीनविओडो, वीनवियोडो, वीनव्योडो—भू० का० कृ०।

वीनवीजणो, वीनवीजवो—कर्म वा०।

वीनवियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वीनवियोडो)

वीनोण—स. स्त्री —१ रचना, कृति, सृजन।

उ०—नूर जिहा भरपूर अग, कठ लोह पखाणी, चौरासी लख भख
दियण, निरपख निरवाणी। घड घड भजे भी घडे, पैदास पुराणी,
तुज वीनाण न जाणिये, करतार वीनाणी। —केसोदास गाडण
२ देखो 'विनाण' (रू. भे.)

वीनाणी—वि.—१ रचना कर्ता, सृजन कर्ता, कृतिकार।

उ०—नूर जिहा भरपूर अग, कठ लोह पखाणी, चौरासी लख भख
दियण, निरपख निरवाणी। घड घड भजे भी घडे, पैदास पुराणी,
तुज वीनाण न जाणिये, करतार वीनाणी। —केसोदास गाडण

२ देखो 'विनाणी' (रू. भे.)

३ देखो 'वीनाणी' (रू. भे.)

उ०—१ तदे तरवार वाही। तरवार वाहता तरवार भागी।
ताहरां वाळी वहे, "फेट वीनाणी, फेट वीनाणी। भुडी घडी, भुडी
घडी। ताहरा साजण कहे—दूहा—वाळा म फरि वेसास, असमर
ऊजडिया तणी। वाक वीनाणी नाह, वाक तमीणी बोधउत।

—चापे वाळी री बात

उ०—२ बरहासा नास धमण बाजती, घासारव साजे धमसाण।
वाकडी रावत मेघ वीनाणी, अरियण दळा धमै आराण।

—रावत मेघ सीसोदिया री गीत

वीनियोडो—देखो 'विनवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीनियोडो)

वीनी—सं. पु —१ सकट, तकलीफ।

२ विनय।

उ०—वीनी पीत सनेह, प्रेम निरवाहे पावन। लाज माण अंहकार,
सिरै चाहे सुरातन। —गु. रू.

वीपनी—स स्त्री —प्राय डेढ फुट ऊचा लाल या सफेद फूलों वाला एक
प्रकार का वर्षाती पीघा, जिसके फल फलीनुमा होते हैं शरपुखा।

वीपसा, वीप्सा—स स्त्री [स वीप्सा] १ एक प्रकार का शब्दालकार
विक्षेप, जिसमे आदर, आश्चर्य, आतुरता, रोचकता घृणा, हर्ष शोक
आदि भावों का वाहल्य प्रकट करने हेतु किसी शब्द का प्रयोग बार
बार किया जाता है।

उ०—१ चौथे पदकल पच वार चिहु, दोग वीपसा दाखी। कहे
'मछ' इम गीत गोलकर, भूप अघ गुण भाखी। —र रू

उ०—२ बारह मत तुक आठ प्रत, आख वीपसा अंत। छीनू मत
दवाळ प्रत, यूँ गोखी आखत। —र ज प्र.

उ०—३ रगण जगण गुरू लघु हुवे, जिण रँ तीन तुकत। होय
वीपसा चवथ तुह, अरघ गोखी आखत। —र ज. प्र.

२ अधिकता, बाहुल्यता।

३ व्याप्त होने की अवस्था या भाव, व्याप्ति।

४ शब्दों की पुनरावृत्ति, शब्ददुवृत्ति।

रू. भे.—विप्सा

वीप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

विफनी—देखो 'वीपनी' (रू. भे.)

वीफरणी, वीफरवो—देखो 'विफरणी, विफरवो' (रू. भे.)

उ०—१ भवक 'बखतेस' गुप्त भरियो, ब्रजराज उपासक धीफरियो ।
जुध जाणिक क्रोध मतै अजरै, करि दामणि धार सग्राम करै ।

—सु. प्र.

उ०—२ अगडूपरि आप जूटै धीफरै वच्छर दतूसळुं कै खाटक कंस
दरसावै । इंद्र वज्र की भाट ऐपी नजर आवै । चाचरु की भवक
सुंढाडडूँ का उपाट । कूभाथळू पर वझकी काल दार भुजगा की सी
भाट ।

—सु प्र

उ०—३ कुवैण देवी सामळ कराळ, धीफरै तिणा इम कहै वाळ ।
बूया अघोट जीपे वाणास, आखाढ सिद्ध सी करै आस ।

—मा वचनिका

उ०—४ डाकरतो भरतो डकरा, धरतो मकर सघोर । धीफरतो
वाकारियो, करतो खून कठीर ।

—सरूपसीगजो रौ गीत

धीफरणहार, हारो (हारी), धीफरियोडो—वि० ।
धीफरिओडो, धीफरियोडो, धीफरयोडो—भू० का० कृ० ।
धीफरीजणो, धीफरीजवो—भाव वा० ।

धीफरियोडो—देखो 'धिफरियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. धीफरियोडो)

धीवरणो, धीवरवो—१ देखो 'धीवरणो, धीवरवो' (रु. भे.)

२ देखो 'धिवरणो, धिवरवो' (रु. भे.)

उ०—मतवाळा जेम घुमंत महाभड, लोह तणो छक लालुरता ।
जमदूठ चठत टवै जमदाढा, वाहै आवध धीवरता । —गु. रु. वं.

धीवरणहार, हारो (हारी), धीवरणियो—वि० ।

धीवरिओडो, धीवरियोडो, धीवरयोडो—भू० का० कृ० ।

धीवरीजणो, धीवरीजवो—भाव वा० ।

धीवरियोडो—१ देखो 'धीवरियोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'धिवरियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. धीवरियोडो)

धीभचार—देखो 'धिमिचार' (रु. भे.)

उ०—ज्यानी भवक पहरका मरद मीजाजी डोला भवक पहर का
मरद भोत धीभचार करै छै जी भोत धीभचार करै छै जी ।

—लो गी

धीभत्स—स पु [स] १ साहित्य के नौ रसो में से एक रस जिसमें घृणित
एव जघन्य पदार्थों का वर्णन होता है ।

२ देखो 'धीभत्सु' (रु. भे.)

रु. भे.—धीभच्छ, धीभछ, धीभत्स, धिभत्स ।

धीभत्सरस—देखो 'धीभत्स' (१)

धीभत्सु—स पु [स] १ अर्जुन का एक नाम ।

२ देखो 'धीभत्स' (रु. भे.)

रु. भे.—धीभत्सु, धिभत्स ।

धीभर—देखो 'धीभर' (रु. भे.)

धीभरणो, धीभरवो—क्रि. अ.—गर्जना करना, दहाडना ।

उ०—रोक अकबर राह, लै हीदु कूकर लखा । धीभरतो वाराह,
पाडै घणा 'प्रतापसी' । —दुरसी आडो

२ देखो 'धीभरणो, धीभरवो' (रु. भे.)

३ देखो 'धिभरणो, धिभरवो' (रु. भे.)

धीभरणहार, हारो (हारी), धीभरणियो—वि० ।

धीभरिओडो, धीभरियोडो, धीभरयोडो—भू० का० कृ० ।

धीभरीजणो, धीभरीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

धीभरियोडो—भू का कृ.—१ गर्जना किया हुआ, दहाडाहुआ ।

२ देखो 'धीभरियोडो' (रु. भे.)

३ देखो 'धिभरियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. धीभरियोडो)

धीभळ, धीभल—देखो 'धिभळ' (रु. भे.)

धीभळियो, धीभळियो—वि —१ रसिक ।

२ थकित, श्रात (नयन) ।

३ देखो 'धिभळ, धिभळी' (अल्पा., रु. भे.)

रु. भे.—धीभळियो ।

धीभळी, धीभली—सं स्त्री —१ एक देवी का नाम ।

देखो 'धिभळी' (रु. भे.)

धीभव—स. पु —१ अर्जुन का एक नाम । (प्र. मा.)

२ देखो 'धिभव' (रु. भे.)

३ देखो 'धिभव' (रु. भे.)

धीभवता—देखो 'धिभवता' (रु. भे.)

धीभववान—देखो 'धिभववान' (रु. भे.)

धीभवसाळी, धीभवसाली—देखो 'धिभवसाळी' (रु. भे.)

धीभाडणो, धीभाडवो—देखो 'धिभाडणो, धिभाडवो' (रु. भे.)

उ०—कटक धीभाड हराहर अकल, छित छेकल नाहरडै छेक ।
'अमान' तणो वही भात बमेखळ, टेकल भीम न छोडै टेक ।

—ठाकर नवलसिध सेखावत री गीत

धीभाडणहार, हारो (हारी), धीभाडणियो—वि० ।

धीभाडिओडो, धीभाडियोडो, धीभाडयोडो—भू० का० कृ० ।

धीभाडीजणो, धीभाडीजवो—कर्म वा० ।

धीभाडियोडो—देखो 'धिभाडियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री विभाडियोडी)

वीभागो, वीभाबो—देखो 'विभाणो, विभावो' (रू. भे.)

वीभाणहार हारो (हारो), वीभाणियो—वि० ।

वीभायोडो—भू० का० कृ० ।

वीभाईजणो, वीभाईजवो—भाव वा० ।

वीभायोडो—देखो 'विभायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० वीभायोडो)

वीभावणो, वीभाववो—देखो 'विभाणो, विभावो' (रू. भे.)

वीभावणहार, हारो (हारो), वीभावणियो—वि० ।

वीभावणोडो, वीभावियोडो, वीभावयोडो—भू० का० कृ० ।

वीभावोजणो, वीभावोजवो—भाव वा० ।

वीभावसु, वीभावसू—देखो 'विभावसु' (रू. भे.)

वीभावियोडो—देखो 'विभावोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीभावियोडो)

वीभो—देखो 'वेभव' (रू. भे.)

उ०—चू डो उठै गयो, भाग जागयो। दिन-दिन घात रस घायतो गई। चांवडा देवीजी री सेवा राव धूटै निपट घणो माटी। मारग बहतौ तिए सु' दस गुणो इधक बहण सागो। रूपा री नदी बहण सागो। चू डा नू वीभो जुडतो गयो। घोडां रजपूता री जोड होती गई। —नैणसी

वीमचो—देखो 'विमचो' (रू. भे.) (गा. हो)

वीमळ, वीमल—देखो 'विमळ' (रू. भे.)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—सारीखी जोडी जुडी, प्रा नारी अठ नाह। रांणो राजा सू कहइ, कीजइ अठ वीमाह। —डो मा

वीमाहणो वीमाहवो—देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू. भे.)

वीमाहणहार, हारो (हारो), वीमाहणियो—वि० ।

वीमाहणोडो, वीमाहियोडो, वीमाहयोडो—भू० का० कृ० ।

वीमाहोजणो, वीमाहोजवो—कर्म वा० ।

वीमाहियोडो—देखो 'विवाहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीमाहियोडो)

वीमा—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—बीजु हस बोलतो, जद घणा दिन सू मिळतो। कुसळायत वू ऋतो, अमल रूपेटा गळतो। वीमा सुण आवियो, वचन थारा रं कारण। वीरज मन नह धरी जनम पायी कुळ चारण।

—अरजुनजी वारहठ

वीमासणो वीमासवो—देखो 'विमासणो, विमासवो' (रू. भे.)

उ०—अरजुनजी मन मे वीमासो रहा। तादगं मा बोनी, 'अरजुन बोली नही? चाप जीमग ठाडी हूँ छै।' ताहरो अरजुन बोनिषो, 'मांजी, हमीर भाई दुगोटो मागे छै तां मेन ही।

—अरजुन हमीर नी बात

वीमासणहार, हारो (हारो), वीमासणियो—वि० ।

वीमासणोडो, वीमासियोडो, वीमासयोडो—भू० का० कृ० ।

वीमासोजणो, वीमासोजवो—कर्म वा० ।

वीमासियोडो—देखो 'विमासियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री० वीमासियोडो)

वीमाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—मन मूळ तरणो वीमाह जिगो छै। माह 'गोदं' घाप मरं। आधो नड साधि जिको मो घायं, बाळ निमरा मरीर करं।

—गु रू व.

उ०—२ जिकं वेद मूरति ब्राह्मण छै मू धरपो घगनि मगाटि होम करं छै। घणो गो घत नं बपूर रो घाटि दीजं छै। वेद घनि कीजं छै। दूल्ह नं दूल्हनी सेहरा बधिघा पूर्य साहमा वेमासिया छै। सेहरा दीजं छै। चार केरा केगोडं छै। वीमाह कीजं छै।

—रा. सा स.

उ०—३ कह्यो जी। मोनु राजा मेळो। कह्यो जी; राजा महीने मिळसो, काल्हि राजा बाहिर हुतो, घाज माहि पधारियो, महीने राजा घायं छै, यळं नयो वीमाह करि महल माहे पघारं छै, सू वळं महीने बाहिर आविसो।

—सदणो री बात

उ०—४ जोपारणं जोघाहरो, मुस माणं घनसाह। विच ज्ञानर फाणण विचं, च्याग् पया वीमाह।

—रा रू

उ०—५ मोहरि गोठि वीमाह, मोहर दरवार मभारं। न्हो मोहरि रावता, सदा जिम वहुतां सारां।

—नू. प्र

वीमाहणो वीमाहवो—देखो 'विवाहणो, विवाहवो' (रू. भे.)

वीमाहणहार, हारो (हारो), वीमाहणियो—वि० ।

वीमाहणोडो, वीमाहियोडो, वीमाहयोडो—भू० का० कृ० ।

वीमाहोजणो, वीमाहोजवो—कर्म वा० ।

वीमाहियोडो—देखो 'विवाहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीमाहियोडो)

वीमूह—देखो 'विमुण' (रू. भे.)

वीमुही—देखो 'विमुल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ना जीहा पं वीमुहा, असधमीर जं नथ। केता कव जन सस गया, अरि केता भारथ।

—स्त्री रायसिधजी रो गीत

वीमहर—स पु —भीगूर।

वीमराग—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

वीररागी, वीरराय—देखो 'वीतराग' (रू. भे.)

उ०—पचाभिगम विधि सु करूं, सक्रस्तव सूधौ उच्चरूं । जय वीर-
राय कहता करम कटै, देव जुहारूं गउ वीसटै । —स कु

वीयाण—स पु —आकाश, गगन ।

उ०—वीयाण चद वड वीयु, ऐराक वीज सापुरस वयण । प्रात
गाज पेहली लहवाय, लहवाय पीछे गरवाय ।

—भूळवे सागावत री वात

वीयाज—देखो 'व्याज' (रू. भे.)

वीयाजू—देखो 'व्याजू' (रू. भे.)

उ०—हरीया सामी मनमुखी, माय त्माही हेत । क्युईक गाडे रेत
में, और वीयाजू देत । —अनुभववाणी

वीयास—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

उ०—सारद नारद सुक वीयास समरथ सिमरद ।

—केसोदास गाढण

वीयोगण, वीयोगणी, वीयोगिण, वीयोगिणी—देखो 'वियोगण' (रू. भे.)

वीयी—देखो 'दूजो' (रू. भे.)

वीर—स. पु [सं] १ वहादुर, शूरवीर । (ह ना. मा.)

वि० वि०—वीर चार प्रकार के होते हैं जो निम्नलिखित हैं—

१ धर्मवीर २ युद्धवीर ३ दानवीर ४ दयावीर ।

उ०—१ मचिये काकळ मदत री, वीर न देखे वाट । एक अनेका
सूं हिचे, छाती वजर कपाट । —वा. दा

उ०—२ कमधज्ज तजे मनमोह काया चौ, वीर तिसीह विसतरिय ।
तत ले निरवाण क राज तियाग, गोपीचद भरत्यरिय ।

—गु रू व

उ०—३ धख पख धमळ धीर धारण, निहग ती डर केळ वारण,
दुखळ पखी गुरड दारण, सलह खाग सधीर । यर केण छाजे खाग
उछज, अणी भटा चच आवाज, कळहियौ 'गजसाह' कळियज, वरळ
वध वर वीर । —महाराजा गजसिंह री गीत

उ०—४ समर सगतपुर मडोवर छतरधर समोसर, तकर कर वजर
वर धजर ताजी । उसर वगतर ऊअर धीर सासर अतर, 'गग' हर
फळोघर कहर गाजी । —नाथी साहू

२ युद्ध करने वाला, योद्धा, सैनिक ।

३ विकट परिस्थितियों में भी अपने कर्त्तव्य का पालन करने वाला,
साहसी ।

४ विशिष्ट कार्यों में अन्य से बढ़कर ।

५ कर्मठ, कर्मशील ।

६ वात-चीत में होशियार वाग्वीर ।

७ बहन या अन्य स्त्री के द्वारा भाई या किसी अन्य पुरुष
के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—तितर हेक दीठ पवित्र गळि आगो, करि प्रणपति लागी कहण ।
देहि सदेस लगी दुवारिका, वीर वटाळ ब्राह्मण । —वेलि

८ भाइ, आता । (अ मा., ह. ना मा)

उ०—१ आज उमाहउ मी घणउ, ना जाणू किव केण । पुरुख
परायउ वीर वड, अहर फुरकइ केण । —ढो. मा

उ०—२ खित्रीवट जे साहस धीर, मालदेव छइ लहुडउ वीर ।
जिसी प्रीति लखमाण नइ राम, राज खनरेइ एहवी माम ।

—का दे. प्र.

उ०—३ बागा में वाज्या जगी ढोल, सहरा में वाजी सहनाई जी ।
आयो म्हारो जामणजायी वीर, चूनड तो ल्यायो रेसमी जी ।

—अमर चूनडी

उ०—४ चौरी बँठे चक्रधर, वळि सुहिद्रा री वीर । बावे ना सबळा
विरिद, पुण कवेसर 'पोर' । —पी. अ.

उ०—५ चुडली चिरासी घण री सायबी रे, लंजा श्रोठीडा हे ली ।
श्रोठियी श्रोठासी म्हारो वीर वाला जी । —लो. गो.

६ पति, खाविद ।

१० पुत्र, बेटा ।

११ मित्र, साथी ।

१२ सखी, सहेली ।

१३ महिला, स्त्री, १४ राठीडो के प्रसिद्ध तेरह वशो में से एक
वश, अथवा इस वश का व्यक्ति । —वा. दा. श्यात

१५ दूल्हा, वर ।

१६ तीन प्रकार की भावों की साधनाओं में से एक प्रकार की
साधना जिसमें मद्यपानादि द्वारा उन्मत्त होकर साधक द्वारा मनुष्य,
भैंसे, भेड़ या वकरो की बलि दी जाती है । (तांत्रिक)

उ०—भगांत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करे । तरक्क नीति
सासत्राणि, एक मुखल उच्चरे । —गु रू व.

वि० वि०—यह साधना दिन के प्रथम दस दंडों में पशुभाव से,
दूसरे या बीच के दस दंडों में वीरभाव से और अन्तिम या तीसरे
दस दंडों में दिव्यभाव से करनी चाहिए । मतान्तर से सोलह वर्ष
की अवस्था तक पशुभाव से, फिर पच्चास वर्ष की अवस्था तक वीर-
भाव से और उसके बाद दिव्यभाव से साधना करनी चाहिये ।

१७ उक्त प्रकार के वीरभाव से साधना करने वाला साधक ।

१८ वज्रयानी सिद्धों के अनुसार वज्रप्रज्ञोपाय योग के द्वारा महाराग
में विराग का दमन करने वाला साधक ।

१९ मोक्ष के अनुष्ठान अर्थात् साधना में पराक्रम करने वाला या चार

धन-धातिया कर्मरूपी रज अर्थात् कूटा-कचरा हटा देने वाला एवं प्राणियों को समय आदि के अनुष्ठान में विशेष रूप से प्रेरित करने वाला । (जैन)

२० चौबीसवें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी । (जैन)

२०—१ धन धन गाम नगर जिहा रे, विहरद धीर जिण्दि रे ।
धन धन नर नारी तिके रे, वाणि सुण्ण धाण्णु रे । —स. कु

२०—२ दोषा उहदना बाकला, धीर नै 'धदनवाल' । वृष्टि हर्द सोवन तण्णो, वरत्था भगल माल । —जयवाणी

२०—३ लहिये सोभा लोक में, तप करि कसता सन्न । परतलि धीर प्रससियो, धन्तो गुनिवर धन्न । —ध. न. प्र

२१ विष्णु का एक नाम ।

२२ अर्जुन का एक नाम ।

२३ कामदेव ।

२४ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक असुर ।

२५ घृतराष्ट्र के सौ पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

२६ पांचजन्य अग्नि का पुत्र एक अग्नि ।

२७ एक अग्नि, जो भारद्वाज एवं धीरा के पुत्रों में से एक था और सरथु का पति एवं सिद्धि का पिता था ।

२८ कलिगराज चित्रागद की कन्या के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा

२९ पुरुवशीय एक राजा ।

३० श्रीगणेश का एक विशेषण ।

३१ पुरजय नामक एक राजा जो अनुवशीय था ।

३२ तामस मन्वन्तर का एक देव ।

३३ कृष्ण एवं सत्या के पुत्रों में से एक पुत्र यादव ।

३४ कृष्ण एवं कालिंदी के पुत्रों में से एक पुत्र यादव ।

३५ अविशित की पत्नी लीलावती का पिता, एक राजा ।

३६ सोमवशीय राजा, जो तोण्डमान का पिता था ।

३७ क्षुप एवं प्रथमा का पुत्र, विदर्भ राजकुमारी नदिनी का पति एवं विवशा का पिता, एक राजा ।

३८ पवनसुत हनुमान ।

३९ शृगार आदि नौ रसों में से एक रस, जिसमें उत्साह वीरता, साहस आदि गुणों का वर्णन होता है । (साहित्य)

४० प्रत्येक चरण में ३१ एवं १६ मात्राओं पर यति या विराम पाया जाने वाला एक प्रकार का मात्रिक छन्द विशेष । (पिंगल)

४१ छप्पय छद का पांचवा भेद जिसमें ६६ गुरु, २० लघु से ८६ वर्ण तथा १५२ मात्राएं होती हैं । (र. ज. प्र.)

४२ ठगण के द्वितीय भेद का नाम ।

४३ भूत, प्रेत ।

२०—१ जतर मतर टाणा टूणा, कामण टूमण जाणुं । धीर मूठ विद्या वीहतेरो, घातम बेव अजाणुं । —धनुमव्याणी

२०—२ सीकोतरि समण्णो, प्रेत टयण्णो भपारां । विवघ नून वेताळ, धीर पळनर गिरतारां । गिरघ धील गोमायु, धिरक जयू रसवाया । काक कक को गिणुं, धामपळ समळ धाया ।

—र. ६.

२०—३ पूजै कर कर धीर, धर धर नूतं गांव में । वळ्ळै जगावै धीर मूठ चलावै मोतिया । —रायगिह सांठू

२०—४ घैताल धीर मिळिया विहरद, सीकोतरि साकणि महा मद् । मिळ समळ ग्रीध धामग भवन, जग्ग नीछ पट्टाक जवग ।

—गु. ६ व.

क्रि. प्र जगामी, जागणी ।

४४ चीमठ भैरवों में से एक भैरव ।

वि० वि०—देवी 'भैरव' ।

२०—गळ्ळां पूकळ्ळां घाघरं धीर मेळा, मिळै घाघरं जोगण्यां जुत्य मेळा । भरं पत्र भेगा भया रत्र भोगे, घट्टवर्णां द्रवा छाक दाक् धरोगे । —मे म

४५ महादेव के वे प्रियगण जो दमनान में ही निवास करने हैं ।

क्रि. प्र.—जगणो, जागणी ।

४६ धीरभद्र नामक शिवगण ।

४७ दक्ष के यज्ञ को विध्वंस करते समय शिवगण धीरभद्र के रोम रोम से निकले हुए गए ।

२०—१ तित हूर अपच्छर घीद सट्टे, किरमाळ वहे धरमाळ वट्टे । निररां सुख नारद धीर नचं, सिव चाल पगं सिरमाळ सचं ।

—रा. ६

२०—२ छायो गयण रभ रय छाजं, विलमी पांघ पासणो वाजं । वावन धीर नचण व्हवहिया, डेरू जटो चड डहडहिया ।

—सू प्र.

२०—३ खिल महाकाळी दं दं ताळी नचं धीर सेला, हेला मुडमाळी पढं सचं हार हेत । इळां जत्र पांणा वंचं वाहा वाणा वाहा ईलां, खागा खळा 'सुभाणो' विरच्चं वीरखेत । —प्रमुदान मोनीसर

२०—४ कतियाणो क्रह क्रह नारद दह डह, हेका दह दह धीर हतं । वड रावत ब्रह ब्रह पोरसि प्रह प्रह, दूडी ठह ठह होठ डसं ।

—गु ६ व

वि० वि०—धीरभद्र के शरीर से निकले हुए गणों में से मुख्य ५२ गण थे जिन्हें 'धीर' सजा दी गई थी । उनके नाम निम्न लिखित हैं । —

(१) क्षेत्रपाल धीर (२) कपिल (३) बटुक (४) नार-सिंह (५) गोपाल (६) भैरव (७) गण्ड (८) रक्तमुवणं

(१) देवसेन (१०) रुद्र (११) वरुण (१२) भद्र (१३)
 वज्र (१४) वज्रजघ (१५) स्कन्द (१६) कुम्भ (१७) प्रियकर
 (१८) प्रियमित्र (१९) वह्नि (२०) कदर्प (२१) हंस
 (२२) एकजघ (२३) घटापथ (२४) दजक (२५) काल
 (२६) महाकाल (२७) भेषनाद (२८) भीम (२९) महाभीम
 (३०) तुंगभद्र (३१) विद्याधर (३२) वसुमित्र (३३)
 विस्वसेन (३४) नाग (३५) नागहस्त (३६) प्रधन्न (३७)
 कपिल (३८) वकुल (३९) अह्लाद (४०) त्रिमुख (४१)
 पिशाच (४२) भूतभैरव (४३) महापिशाच (४४) कालमुख
 (४५) शुनक (४६) अस्थिमुख (४७) रेतोवैद्य (४८) स्मशानचार
 (४९) कलिकल (केलिकला) (५०) भृगु (५१) केटक
 (५२) विभीषण ।

४८ वावन की सख्या का नाम । #

४९ नये बँल को कृषि में जोतने का अभ्यास कराने की क्रिया ।

५० आरम्भ करने की क्रिया ।

५१ रवाना होने या करने की क्रिया ।

५२ किसी भूत-प्रेत विशेष की उपस्थिति का शरीर में अनुभव
 होकर तदनुसार अग संचालित होने और मूह की ध्वनि उत्पन्न
 होने की क्रिया, भूत-प्रेत का प्रभाव ।

उ०—देखो डाकण रा घर मे डावडा नं जकौ मेलै उण री भूल,
 क्यूँकि डाकण तो वीर चढे तद खावहीज चाहे घर री चाहे पारकी
 उण सूं तो आघी रहे वी हीज वचं । —वी स. टी.

क्रि प्र —आणी, उत्तरणी, ऊटणी, चढणी ।

५३ यज्ञ की अग्नि ।

५४ काली मिर्च ।

५५ आलुबुखारा नामक फल ।

५६ चाराही कद ।

५७ एक प्रकार का सींगिया नामक विष ।

५८ पुष्करमूल ।

५९ काजी । (अमरत)

६० अर्जुन नामक वृक्ष ।

६१ सिद्धर ।

६२ लोहा ।

६३ लताकरज ।

६४ नरकट ।

६५ कनेर ।

६६ उषीरा, खस ।

६७ शालिपर्णी, सरिवन ।

६८ ऋषभक नामक औषधि ।

६९ तोरी, तुरई जिसकी सब्जी बनाई जाती है ।

७० कुश ।

७१ नरसल ।

७२ भिलावा ।

रू भे —वीर, वीरक, वीरकक, वीरजु, वीरय, वीरय्य, वीररस,
 वीररसस, वीराण, वीरारस, वीरारसि, वीरु' ।

अल्पा,—वीरो, वीरडो, वीरडो, वीरति, वीरती, वीरो ।

वीरकठ—स पु —१ वीरध्वनि ।

२ डिगल का एक गीत (छंद) विशेष ।

वि० वि०—इसके पहले एव तीसरे चरण मे सोलह वरुण व चौबीस
 मात्राएँ एव दूसरे व चौथे चरण मे चौदह वरुण व इक्कीस मात्राएँ
 होती हैं । आठ-आठ वरुण पर अर्द्धविराम एव अत मे लघु-गुरु होते
 हैं । (र ज प्र, र रू)

रू भे.—विडकठ, विरकठ, वीरकठ ।

वीरक—स पु [स] १ चाक्षुक मन्वन्तर के सप्तऋषियों में से एक ऋषि ।

२ अगाराज वशीय राजा शिवि का पुत्र ।

रू भे —वीरकक ।

३ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—दीपक हूत दीपक, अत्र हू अत्रक उगै । सिध हूता साधिकक,
 वीर घर वीरक जगै । —गु रू. ब.

४ देखो 'व्रक' (रू भे)

वीरकरमा—वि [स. वीर+कर्मा, कर्मन्] वीरोचित कार्यकर्ता ।

वीरकलहल्ल—स स्त्री —वीर-ध्वनि ।

उ०—हूकळ सीधवी वीरकलहल्ल हुवै, वरण कजि अपछरा सूरिमा
 बहुबुवै । त्रिजड हथ मयद जुध गयद घड तोलणा, ऊठि हरधवळ
 सुत अडगा बोलणा । —हा भा

वीरकाम—वि [स. वीर+कार्यं] १ वीरोचित कार्य करने वाला ।

[स. वीरकाम] २ पुत्र की कामना रखने वाला ।

वीरकाव्य—स पु [स.] वह काव्य जिसमे वीरतापूर्ण कार्यों का वर्णन
 होना है ।

वीरकुक्षि—स. स्त्री [स] १ वह स्त्री जो वीर पुत्र को जन्म देती है ।

२ वह भूमि जिस पर वीर पुत्र उत्पन्न होते हो ।

वीरकेत, वीरकेतु—स. पु [स वीरकेतु] १ पाञ्चाल देशाधिपति द्रुपद
 का पुत्र जो महाभारत के युद्ध मे द्रोण के द्वारा मारा गया था ।

२ एक अयोध्या नरेश का नाम ।

३ हसध्वज नामक राजा के प्रधान सुमति का पुत्र ।

वीरक—१ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—वीरकक नचकक सभकक सवकक, चोळकक पियकक कळिकक
 चहकक । करकक हाडकक गुडकक वडकक, खिवं खजरकक पडे खर-
 डकक । —सू प्र

२ देखो 'वीरक' (रू. भे.)

३ देखो 'व्रक' (रू. भे.)

धीरखेत-स. पु [स वीर+क्षेत्र] युद्धस्थल ।

उ०—१ पूनम थावर वार, सरद रित है पालट्टी । धीरखेत पूरट्ट
रित हेमत प्रघट्टी । —गु. रू. व

उ०—२ खिल महाकाळी दे दे ताळी नच वीर सेला, हेला मुंड-
माळी पढे सच हार हेत । इला जप्रपाणा बच वाहा बाणा बाहा
ईसो । खाणा खळा 'सुभाणी' विरचच धीरखेत । —प्रभूदान मोनीसर

२ वह भूमि जहा वीर अधिक उत्पन्न होते हो ।

उ०—तरह तरह के दाव जगू के ऋणाके अपर्य अपर्य फुरगू की
हमराहा होसनायकू के हाके जोधाए मेढती धीरखेत के जाए भाजे
न लहवहे जेत लडे तेत बरीबर रहे । —सू प्र

३ वह स्त्री जो वीरपुत्रो को जन्म देती है ।

रू. भे.—धीरखेत ।

धीरखेती—युद्ध ।

रू. भे.—धीरखेती ।

धीरगत, वीरगति, वीरगती—स स्त्री [स वीरगति] वीरो को रणक्षेत्र मे
मरने पर प्राप्त होने वाली गति ।

रू. भे.—वीरगत, वीरगति, वीरगती ।

धीरगाथा, वीरगाथा—स स्त्री [स वीरगाथा] वीर के वीरतापूर्ण कार्यों
का कवित्वमय वर्णन ।

धीरघट, धीरघट्ट, धीरघटो—स पु [स वीर+घट] १ हाथी के झूल
के बाधने का घटा या घटी ।

उ०—१ रात घडी दो एक गई, इक डकी सुणियो । तरे जोगेसर
जाण्यो कोई सिरदार आवे छै । तिसै हाथी री धीरघट सुणी, तुररी
सहनाई सुणी, घोडा री कळहळ सुणी ।

—जगमाल मालावत री यात

उ०—२ मद धारा बरसता थका गज डवर नीसाण गाजे । वीजळी
आकुस विराजे । सिध चाप्रिग धीरघट दादुर बोले । मुगळ लाल
ममोळा सा दिलावे । —वचनिका

उ०—३ हाथियों के हलके खभूटाणाते खोलै, अरापत के साथी
भद्रजाती के टोळ । अत देहु के दिग्गज विघ्याचळ के सुजाव, रग-
रग चित्रे सुडाडड के बणाव । झूल की जलूस धीरघट्ट के ठणके,
वादळा की जगमगाट भरै भोरी की भकी भणके ।

—रू

२ देवालयो मे लटकाया जाने वाला बडा घटा या छोटी घटी ।
रू. भे.—धीरघट ।

धीरडी—देखो 'धीर' (अल्पा, रू. भे.)

धीरचक्र—स. पु. [स.] सैनिकों को उनके वीरतापूर्ण कृत्यों के लिए
दासको द्वारा दिया जाने वाला पदक ।

धीरघाळो—सं. पु.—१ युद्ध ऋगटा ।

उ०—१ मारु फील मता, दिये पाय दता । कढके कपाळा, चढे
धीरघाळा । —सू. प्र.

उ०—२ उजेणी महासूर ह्यट भाणै, जुडेवा चढे देव दाण्ण
जाणै । चकत्या कमधा रचै धीरघाळा, वणै जाणै भारत्य
पारत्यवाला । —र वचनिका

उ०—३ जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, घुरम घमचक रचण
धीरघाळा, वसै येत धीरती । ताणटां जोध आरोठ दसरय तणा,
कीजिये किसो न्यप जोड काळा, कहे जग कीरती । —र. ज प्र.

२ भूत प्रेतादि का उपद्रव ।

३ वीरो का कार्य या वरिष्ठ ।

धीरचाव—सं. पु.—युद्ध, ऋगटा ।

उ०—किला जीत भाभी मारवाड मे कहायै 'कूपा', धीतवरा
वारग मिळायै धीरचाव । अनेकां विमाड रोधी लोडा नै पछाड
आयो, राजा राज 'भीम' री जमायो मारवाड ।

—धीसनमिष कूपावत री गीत

धीरज—स पु [स. धीर्य] १ नव धातुओ के अत मे निर्मित होने वाली
शरीर की सात धातुओ मे से एक धातु, शुक्र रज । (डि. को.)

उ०—१ जस भगति जादव जाणि, वणराय रोम बसाणि । वपु
वरण धीरज वारि, नह वेंर रांमा नारि । —पी प्र.

उ०—२ तरुवर साग्वा मूळ बिन, रज धीरज रहिता । अजर अमर
अतीत फळ सो दादू गहिता । —दादूबाणी

२ किसी पदार्थ का सार भाग । (वेद्यक)

३ पराक्रम तेज ।

४ बल, सामर्थ्य, धीरता ।

५ अन्न आदि का धीज ।

६ पुंसत्व, प्रजनन शक्ति ।

७ साहस, दृढ़ता ।

८ फुल्लापन, स्फूर्ति ।

९ आभा, कान्ति, चमक ।

[स धीर्यज] १० पुत्र, बेटा ।

धि०—१ निर्मल, स्वच्छ ।

उ०—सग सखी सीळ कुळ वेस समाणी, पेखि कळी पदिमणी परि ।
राजति राजकुअरि रायअगण, उडीयण धीरज अच हरि । —वेलि
रू. भे.—धीरज, धीरय, धीरय्य, धीरय्यज, धीरिय, धीरय ।

धीरजा—स स्त्री—धीरागना ।

धीरजित—स. पु [स.] मगधवशीय सत्यजित् राजा का पुत्र विश्वजित् ।

वीरजिन—स पु —भगवान् महावीर स्वामी के लिए प्रयुक्त शब्द ।

—(स कु)

वीरजु—देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—हथनाळि हयाई कुहक वाण याकी सोर आघात होण लागी वीरजु वडा वडा जोधा । त्या की वीरहाक होण लागी । गय हस्ती त्या की गहणि हई ।
—वैलि टी

वीरडो—देखो 'वीर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—टीवा भोलटी वडी जी राजयै वाई बसवा एक रुसडी जाय । बाहिर से आयी मेरी वीरडो जी यं राज गौरी आगण ए क कीचड क्यूं ।
—लो. गो

वीरण—स पु [स] चाक्षुक मन्वन्तर का एक प्रजापति ।

वि० वि०—इसकी अमिकनी (वीरिणी) नामक कन्या का विवाह दक्ष के साथ किया गया था जो ५००० पुत्रों की माता थी । इसे सात्वत घर्मका ज्ञान सनत्कुमार के द्वारा प्राप्त हुआ था जो इसने भागे चलकर रैभ्य ऋषि को दिया था ।

२ कास नामक तृण ।

वीरणक—स पु [स] जनमेजय के सर्पसत्र में दग्ध हुआ, घृतराष्ट्र कुलोत्पन्न एक नाग ।

वीरणि, वीरणी—स पु [स वीरणि] याज्ञवल्क्य का वाजसनेय शिष्य एक आचार्य ।

वी'रणी, वी'रवो—क्रि अ —१ विस्मरण होना, भूलना ।

२ देखो 'विहरणी, विहरवी' (रू भे)

वी'रणहार, हारो (हारी), वी'रणिथो—वि० ।

वी'रिओडो, वी'रियोडो, वी'रचीडो—भू० का० कृ० ।

वी'रीजणो, वी'रीजवो—भाव वा० ।

वीरत—स स्त्री [स. वीरत्व] वीरता, बहादुरी, शौर्य, बल ।

उ०—१ मन भावें चलै खत्रीवट मारग, वीरत दावै घडा वरै । राजापती 'जसो' महाराजा, कमध सुहावै जकू करै । —नाथी साहू

उ०—२ वडै वडै नरनाह, सै न घण सभळी, आनद हुवो उछाह, कगूडी ऊछळी । वीरत कीरत वात, पिरणि सिर वापरी, आयी ओरगवाद, फतह कर आपरी । —महाराजा पदमसिंहजी री वात

उ०—३ वीरत कीरत वस वित, मत मोजा गुण मान । सप सुलच्छण धरम सुख, न्हैया अघ सूं हारण । —वा. दा

उ०—४ सुर सरत धर सिर भरत सर, पळ चरत पळचर अघत अत । मिळ अछर हरखत चित महत, पख निरख वीरत चरत पत ।
—र. क

उ०—५ तेज वडै तखतेस रा हे हिंद दिवाकर, तूज सराह न की तुलै वे राह बरावर । देख खळा उर ताप न्है अजसै सैणा उर, वीरत

भलपण वीटियो 'परताप' बहादुर ।

—मोडजी आसियो

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

वीरतराय—स पु —विजययाधिपति, श्रेष्ठवीर । (व० भा०)

वीरतवंत—स पु.—१ वीर, बहादुर, योद्धा ।

उ०—आद 'जसो' धन आख दाख दूजी यणवल नर, वीरतवत सिद्धरावत करसी घण । रख नारायण हूदें साडसिघ धण जुध सावज, विकरम करम वखाण करण सारण मोटा कज । —पा. प्र.
२ बलवान, शक्तिशाली ।

वीरता, वीरताई—स स्त्री —१ वीर होने का भाव, वीरत्व, बहादुरी ।

उ०—१ खेल वीरता खेलणा, अस डेलणा अपल्ल । 'पती हुवै भल जास पख, भुकती लै नम भल्ल ।
—जैतदान बारहठ

उ०—२ वीरता, सच्चाई अर डिढता ती इणरें आगि पाणी भरै । म्हनै ती सुण सुण नै इचरज न्है कै आ नाकुछ गुणा रा अबूभ मिनख कंडा कंडा वखाण करिया हे । म्है ती भगवान री भगती नै ई इणरें सामी फुतरका जिती गिण ।
—फुलवाडी

उ०—३ इण तरें आपरा धरम री कुळ री मरजाद री धरती री रिछधा करणी ओ रजोगुण कहीजें सी जिका मं रजोगुण नही (अभिमान) तिका नै अं दोहा सुण वीररस उपजें नही क्यू कि वामें वीरताई री उफाण नही ।
—वी. स. टी.

उ०—४ इसी वीरताई हे सी आका रा ही भूंपडा न देवें । वडा वडा राजाआ गढ दै वीरता री मरजाद खोय दी परत इण वीर री ईसी वीरता आदि राजपूती अडग हे ।
—वी स टी.

२ बल, पराक्रम ।

३ वीरता का कार्य, वीरतापूर्ण कार्य ।

४ जोश ।

उ०—भळक नवरण जरकस बसण भूखणा, तेज धन धगन मुख वीरताई । 'जगाहर' 'भोम' कर लगन विलसी ज्युंही, अगन भळ घसण मन मगन आई ।
—किसनी आढी

रू भे,—वीरत, वीरता, वीरताई, वीरती, विगति, विरती, वीरति, वीरती वीरत, वीरति, वीरती ।

वीरति, वीरती—१ देखो 'वीर' (४२, ४३, ४४, ४५, ४६)

(अल्पा, रू भे.)

उ०—राति जगावै वीरती, दिन की लेवै नीद । हरीयो कहै कुराड कु, क्यू करि मुई उलीद ।
—अनुभवधारणी

२ देखो 'वीरता' (रू भे)

उ०—जानकीनाथ समराथ जाहर जगत, चुरस घमचक रचण वीरवाळा, वसे खेत वीरती । ताखडा जोध आरोड दसरथ तरणा, कीजिये किसी अघ जोड काळा, कहै जगत कीरती । —र ज प्र.

उ०—२ खल्ल दल्ल समर खपावत, किन्न जणु गावत कीरती । सीता वाहर सभता वसुधा जाहर वीरती । —र. ज प्र

उ०—३ नरा नरिदा पार न लब्धे, वीरति खुरम विहेवा विव्भे । साह तणी घर फाटी सव्भे, ऊमर माड पडे की श्रव्भे ।

—गु. रू. व

उ०—४ वीरति मुस सूरति विळकुळिय, कमघज तेज कमळ कळमळय । किसन वरण माळिल कठळिय, सूरज किरण जाण भळहळिय ।

—गु. रू. व

उ०—५ वड विना क्रामति न की वीरति, पिड हुई मत जाय सपति । हमे इण भति धरो हिम्मति, पुळी पर खिति रही नरपति ।

—रा. रू.

वीरत्त, वीरत्ति, वीरत्ती—देखो 'वीरता' (रू. भे.)

उ०—१ जल्ल महि ती समर अपर जन, सर 'प्रताप' समरत्थ । वणुं न की निरवीज भुव, त्या कमधा वीरत्त । —जैतदान बारहठ

उ०—२ वीरत्ति विहेवा विळकुळ्ये, मुख राग मूछ भ्रूहा मिलेय । चख लाल कीध मुख कीध चोळ, कळकळ तेज विकसे कपोळ ।

—गु. रू. व

उ०—३ भाराहरो कुळिभाण कविदा दिये केकाण, वाचीजे वडा बखाण प्रथमी प्रमाण । मारकी श्रमलीमाण जाडे जोध जुवाण, वीरत्ति दत्ति विनाण जाण जाण जाण ।

—ल. पि

वीरथाड—स पु —सेना, फौज । (श्र. मा)

वीरदांण—स पु —देखो 'विरुद' (मह., रू. भे)

उ०—मार्थ सत्रा खांपा धावे गवावे जिहान मार्थे, दसु दसा सोभाण छवायो वीरवाण । जीहान जाणी जोम छर्त 'नाहरेस' जायो, श्रजठी ऊठाय श्रायो श्रापे ही श्राथाण ।

—कमजो दधवाडियो

वीरवेत, वीरवेत—देखो 'विरुदेत' (रू. भे)

वीरद्युमन, वीरद्युम्न—स पु [स वीरद्युम्न] भूरिद्युम्न नामक राजा का पिता, प्राचीन वीर नरेश ।

वि० वि०—अपने खोये हुए पुत्र भूरिद्युम्न को खोजते हुए यह तनुविप्र नामक ऋषि से मिले एव आशा-निराशा से सम्बन्धित तत्त्वज्ञान पर सवाद किया था ।

वीरधनवन, वीरधन्या, वीरधनवन—स पु. [स. वीरधन्वन्] १ महाभारत युद्ध में कौरव पक्षीय त्रिगर्द देश का राजा, जो घृष्टकेतु के हाथों मारा गया था ।

१ कामदेव का नाम ।

३ घृष्टराष्ट्र के एक पुत्र का नाम ।

४ चेदी नरेश का नाम जो दशार्जुनराजा की पुत्री सुदामा ने पति थे ।

वि० वि०—नल की पत्नी दमयन्ती इन्हीं के यहाँ रही थी और यहीं से उसे कुण्डिनपुर वापिस लिया ले गये थे ।

५ अत्यंत पराक्रमी भुजाओं वाले भगवान् ।

वीरधरमन, वीरधरमा—स. पु [स वीरधर्मन] भारतीय युद्ध में पांडव-पक्षीय एक राजा ।

वीरनाद, वीरनाद—स पु [स. वीर-नाद] वीरो की सन्तान, वीरपुत्र ।, वीरनाद स स्त्री [स.] वीरध्वनि, वीरगर्जना ।

उ०—अस्त्र गुलाव अवीर उढायी, सस्त्र पिचरका छिव सरसायो । वीरनाद सोह चग वजायी, रंग फाग सम जग रचायो । —ऊ का वीरपउतार—वि —वीरो को उत्साहित करने वाला, वीरो को जोश दिलाने वाला ।

उ० मेघाडवर छत्र, गगायमुना वमर, मुद्रावतार सीकिरिघोरघार, गयद्रसक्क, रायद्रहवोल रायत्रिभाड, रायपवायण राजा बद्धठ छद्द, डावद्द पवद्द मत्रि, वीरपउतार दीवटिया वयगरणा यश्रवाहक चमरहारि छ्दायता ' ' ' ' । —व स

वीरपण, वीरपणी—स पु —वीरत्व, वीरता, शूरता, बहादुरी ।

उ०—१ एक वीर स्त्री आपरा पती री वीरपणी देख मस्त हुई कहै छै ए सखी देख म्हारी पती सिध होवे जैडो छै—मो सत्रु ऊपरै श्रावण री मती कने पण पण पाछा पडे है छाती घडके । —वी स टी.

उ०—२ 'पता' अग वण वीरपण, निज वाळापण नेह । जाण जवाहर रग जिम मेटे नही मिटेह । —जैतदान बारहठ

रू. भे.—वीरपण वीरपणी ।

वीरपरा—स स्त्री —सोलकी वंश की एक शाखा ।

रू. भे —वीरपुरा

वीरपरी—स पु —सोलकी वंश की वीरपुरा शाखा का व्यक्ति ।

रू. भे —वीरपुरी

वीरपाण, वीरपान—स पु [स. वीरपान] एक प्रकार का मादक पेय पदार्थ, जो योद्धा युद्ध में जाते समय या युद्धोपरान्त थकावट मिटाने हेतु पीते थे ।

वीरपाटी—स पु.—वीररस की विद्या ।

उ०—पढचो वीरपाटी पाव श्राणण न दिया पाछा, ताळा लाटी वंडी ही उगती मूछा ताण । बाप खाटी मेटनी ऊजळा रूका पाण वापौ, राज दाटी भुजा रं भरोसे आला राण ।

—माधीसिंह आला री गीत

वीरपुरा—देखो 'वीरपरा' (रू. भे.)

उ०—सोळ किया री साख री विगत—दारिया, भाणगोती, वाघेला, लराहा, बालणोत, वीरपुरा, नायावत, वाराह, खाजीय इत्यादि है ।

—वा दा. ख्यात

वीरपुरी—स स्त्री—१ श्रावण मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया या तृतीया के बाद आने वाले सोमवार को मनाया जासे वाला उत्सव ।

२ वह नगर जहा वीर अधिक रहते हो ।

रू भे — वीरपुरी, वीरपुली, वीरपुरी, वीरपुली ।

वीरपुरी—देखो 'वीरपरी' (रू. भे)

वीरपुली—देखो 'वीरपुरी' (रू. भे)

वीरप्रसविनि—स. स्त्री [स.] १ वीर पुत्रो की माता ।

२ पृथ्वी जहा वीर उत्पन्न होते हो ।

वीरप्रसू, वीरप्रसू—स. स्त्री [स वीरप्रसू] १ वह स्त्री जो वीरसतान को जन्म देती हो ।

२ वह भूमि जहा वीर उत्पन्न होते हो ।

वीरबळी—देखो 'वीरबळी' (रू. भे)

वीरबहूटी, वीरबहोडी—स. स्त्री —वर्षा ऋतु मे पाया जाने वाला लाल रंग का कीडा विशेष, इद्रवधु ।

७०—वीरबहूटी भ्राज ही भुवर्षे मखमल भास, साप्रत साभण तीजणी खूब करो सब ख्यात । —लो. गी

रू भे — वीरबहूटी

वीरबाणो—देखो 'वीरबाणो' (रू. भे)

वीरबाहु—स पु [स.] १ भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

२ महाभारत युद्ध में भीम के द्वारा मारा गया घृतराष्ट्र के सो पुत्रो मे से एक ।

३ चेदीनरेश जो दशार्णुराज सुदामन् की कन्या का पति था ।

वि० वि०—इसकी पत्नी नल की परित्यक्ता पत्नी दमयन्ती की मीमी थी और नल के छोड़ देने पर दमयन्ती इसी के पास रही थी । इसके पुत्र का नाम सुबाहु एव कन्या का नाम सुनदा था ।

४ राम-रावण युद्ध मे राम पक्षीय एक वानर ।

५ गन्धर्व, जिसने तक्षक से युद्ध किया था ।

६ लकानरेश रावण के एक पुत्र का नाम ।

७ परम विष्णुभक्त काम्पिल्य नगर का राजा, जिसकी पत्नी का नाम कान्तीमती था, जो पूर्वजन्म मे भी इसी की पत्नी थी ।

वि.—जिसकी भुजाएँ पुष्ट अथवा मजबूत हो ।

वीरभदर, वीरभद्र, वीरभद्र—स पु. [स वीरभद्र] १ श्रेष्ठ एव प्रसिद्ध वीर, योद्धा ।

२ वह घोडा जो अश्वमेधीय यज्ञ के लिए उपयुक्त हो ।

३ मनोभद्र नामक सोमवशीय राजा के एक पुत्र का नाम ।

४ अश्विभद्र राजा की पत्नी निभा का पिता, एक राजा ।

५ यशोभद्र राजा का भाई ।

६ सुगन्धित भास, खस ।

७ भगवान् शंकर के क्रोध से उत्पन्न हुवा एक गण जिसने दक्ष यज्ञ को ध्वंस किया था ।

७०—१ चावदत दीह अगा समा जूझ लाग चाळी, नरा ताळी सामझमी तराँ साची नेम । क्रोत्र वाळी रूप गनीमाण री विधूस कीधी, 'जोध' वाळी वीरभद्र दक्ष जाग जेम । —बद्रीदास खिडियो

७०—२ राति भाल चखा चौळ काळी सलहे काळ रूप, रुद्र वीरभद्र काळी करती आरोध । दोडियो सामही देखे काथा सू हुरामी दूठ, जाणें विना माथा सूँ बरुच वाळी जोध । —करखोदान कवियो

७०—३ सू मघ जेठ कळा घर सारी, आयो रवि ज्यो किरण अकारी । पड कोपियो किना धार पण, वीरभद्र दिख ज्याग विधूसण । —रा. रू

७०—४ सुणि कथ पदम सर्भ दळ साजा, रिण परणण उच्छव करि राजा । जटी वीरभद्र घणा जगाया, भ्राठ हजार इसा भड आया । —सू. प्र.

वि० वि०—दक्ष यज्ञ मे शिव के अपमानित होने के कारण क्रुद्ध होकर जटायें भटकने पर इसका निर्माण हुवा । मतान्तर से क्रुद्ध शिव के सिर से टपकी बूंद के पृथ्वी पर गिरते ही इसका निर्माण हुआ । कई जगह शिव के मुह से उत्पन्न होने या स्वयं शिवावतार होने की कथा प्रचलित है । शिवाज्ञा से इसने दक्षयज्ञ को विध्वंस हेतु अपने रोमकूपो से रोम्य नामक रुद्रगणेश्वरो की सृष्टी की थी । दक्षयज्ञ के बाद यह शिव सेनापति भी था । इसने शिव-जालधर युद्ध मे भी अपने पराक्रम को दिखाया । समस्त देवगणो व कश्यप-पादि ऋषियो के दावानि मे भस्म हो जाने पर मन्त्रो से सिद्ध भस्म से इसने उन्हें पुनर्जीवित किया था । इसी प्रकार साप व पचमेदू नामक राक्षस के द्वारा देवताओ के निगल लिए जाने पर इसीने उन्हें पुनर्जीवित किया था । हिरण्यकशिपु के उदर-विदीर्णपूरान्त विस्वसहाराय उद्यत नृसिंहावतार का भी इसी ने दमन किया था ।

रू भे — वीरभद्र ।

वीरभद्रक—स पु [स] गौडदेशाधिपति, जिसकी पत्नी का नाम चपक-मजरी था ।

वीरभाव—स पु—१ बहादुरी, वीरता, शौर्य ।

२ बल, पराक्रम ।

रू भे.—वीरभाव ।

वीरभूम, वीरभूमि, वीरभोम—स स्त्री. [स. वीरभू, वीरभूमि] १ युद्धस्थल, युद्धक्षेत्र ।

२ वह भूमि जहाँ वीरो के जन्म अधिक होते हो ।

३ दमशान ।

रू भे — वीरभोम ।

वीरमत्र-स पु [स वीर+मत्र] इमशान भूमि मे भूत-प्रेत एव वीरो को जगाने का मत्र ।

उ०—अराध वीरमत्र एक, साधन सधीत रा । सिखत भेद कोक-सार, सासत्र सगीत रा । —सू प्र.

वीरमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमणि-स पु [स.] १ देवपुर का राजा जिसके पुत्र का नाम रुक्मा-गद था ।

वि० वि०—राम के भाई शत्रुघ्न एव इसके पुत्र रुक्मागद मे राम के अश्वमेध यज्ञ के घोड़े को पकड़ लेने के कारण युद्ध हुआ था । उक्त युद्ध मे शिव शकर इसके पक्ष में थे जिन्होंने शत्रुघ्न को पाश मे बाध लिया था, किन्तु रामचन्द्रजी ने छुड़ा लिया था ।

२ एक परम शिवभक्त राजा, जिसके श्रुतवती नामक पत्नी थी । वि० वि०—इसकी प्रार्थना सुनकर स्वयं शिव ने योगिनियो से युद्ध किया था किन्तु अन्त मे इसकी हार हुई ।

वीरमति, वीरमती-स स्त्री [स वीरमती] भारतवर्ष मे बहने वाली एक प्राचीन नदी का नाम ।

वीरमत्स्य-स स्त्री [स] एक जाति विशेष । प्राचीन

वीरमद-स पु.—माटी वक्ष की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति ।

वीरमपोता-स पु.—चारण जाति के याचक डोलियो की एक शाखा । (मा. म.)

रू भे—वीरमपोता

वीरमपोता-स पु.—चारण जाति के याचक डोलियो की 'वीरमपोता' नामक शाखा का व्यक्ति ।

वीरमरदन-स पु. [स वीरमदन] एक दानव का नाम । (पुराण)

वीरमहर-स पु.—राजा के पाश्र्ववर्ती लोगो मे से एक ।

उ०— अगमरद कूटिकार चाटुकार उपानहधर भ्र गारधर म्यगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक अककार फलिहकार मल्लयोद्ध सस्यपाल बालवध अगरक्षक वीरमहर धनुरद्धर खडगधर दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक । —व स

वीरमाचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू भे)

वीरमात, वीरमाता-स स्त्री [स वीरमातृ] १ वीरपुत्रो की माता ।

१ वीर नामक गणेश की माता ।

३ पृथ्वी ।

४ शत्रुओ का सहार करने वाले वीरो की रक्षा करने वाली देवी ।

वीरमारग-स पु. [स वीरमार्ग] वीरो को वीरगति प्राप्त होने के बाद मिलने वाला स्वर्ग, वैकुण्ठ ।

वीरमुग्धर-स पु.—राजा के पाश्र्ववर्ती लोगो मे से एक ।

उ०—.....वीरमुग्धर धनुरद्धर खडगधर उपानहधर भ्र गार-धर स्थगिताधर चित्रक देसालिक मसूरिक दीपवरत्तिक भोजिक सूपकार चक्षक नरवैध . . . । —व स.

वीरमुठ—देखो 'वीरमूठ' (रू भे.)

उ०—बडावास था कोस ०, जगोण माहे । सूनी खेडी छे । दत्त राव स्त्रीगागाजी रो वारैठ भैरव नीवावत रोहडिया ने । वीरमुठ साथे दीयो । हमे गजसी नरावत ने माधी भेवाहरोत छे ।

—नैणसी

वीरमुद्रिका-स स्त्री [स. वीर+मुद्रिका] पैर की बीच की अगुली में पहनने का छल्ला ।

वीरमूठ-स स्त्री—किसी राजा द्वारा कवि को दिया जाने वाला नकद पुरस्कार जो एक मुस्त रुपयो के ढेर मे से दोनों हाथों की मुट्ठी भर कर उठाया जाता था ।

उ०—सालवाहण जेसल सभ्रम, कत्रिया दाळिद्र कप्पियो । करि वीरमूठ वूजो सुकव, धिर वारहठ थप्पियो । —नैणसी

रू भे.—वीरमुठ ।

वीरभद्रग-स पु [स वीरमृदग] एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—वीरभद्रग वाज्या, जयदक्क वाजी, समहर सामह्या, ब्रह्महर्त ब्रवक तरण ब्रह्महाटि त्रिभुवन टलटलित, भेरि भुंगल तरण भूभूयाटि भूकिइ भिलकि फाटी . . . । —व स

वीरय, वीरय्य—१ देखो 'वीर' (रू भे)

उ०—वीता अघूरा वार पूरा वेध सूरा वच्चए, सेलै प्रहार धार सार मार मार मच्चए । बग्गा खडगगे दुहू वग्गे काळ रगै वीरय, अछरा उमगै दूर अगै चाव रगै वीरय । —रा. रू

२ देखो 'वीरज' (रू भे.)

वीरय्यज—देख, 'वीरज' (रू भे)

वीररथ-स पु [स] द्विमीढवशीय बहुरथ राजा का नामांतर । यह नपजय राजा का पुत्र था ।

वीररस, वीररस्स-स पु—१ पीला पीतः । (डि को)

२ देखो 'वीर' (३८) (रू भे)

उ०—१ 'पातल' री वग ऊपडी, ब्रजड ऊडी मऊ त्राट । बडी बडी वप वीर री, घडी वीररस घाट । —किसोरदान वारहठ

उ०—२ ऊससे कमव लागी उरसि, राजा चढियो वीररस । उण वार लोह मुहगो हुवो, सोना ही हूता सरस । —सू प्र

उ०—३ विदेवा बर्ष दाखियो वीररस्स, 'अरस्सी' हरो कूंत तोलै अरस्स । ओपे फोज माही अमरसिध तन्न, किरै जाण लका दळ कूँभ क्रन्न । —गु रू व.

रू भे—वीररस, वीरारस, वीरारस ।

वीररेण, वीररेणु-स पु [स वीररेणु] पाडव पुत्र भीमसेन ।

धीरलोक—स पु [स] १ स्वर्ग, बंकाई ।

२ वीरो को वीरगति प्राप्त होने पर मिलने वाला लोक ।

वीरव्रत, वीरव्रत—वि [स वीरव्रत] जिसमें वीर अधिक हो, वीरो से युक्त ।

उ०—तुम्हें करुवट धरम, पणि नथी जाणता मरम । साभलउ वन तें वणवीध जे ब्रह्मवत, नदी ते जे नीरवत, कटक तें जें वीरवत, सरोवर ते जे कमलवत, मेघ ते जे समावत महात्मा ते जे क्षमावत, प्रसाद ते जे घजावत, धरमी ते जे दयावत, आदि । —वाग्बिलास स पु—१ सार्वणि मनु का एक पुत्र । २ ब्रह्मसार्वणि मनु के पुत्र का नाम । ३ साध्य देव ।

वीरवर—वि—श्रेष्ठ वीर, योद्धा, बलवान ।

उ०—१ ब्रह्मनाथ लिखमी सग वंठी, आराण वाण ऊफण डिंगपाल अहिफण डोलिया, प्रथमादि क्रूरम पीठ जादम डाहळ जोरवर वाजिया खाग वीरवर । —जगी खिडियो

उ०—२ दिखणी पतसाह राह दिय द्रोमकि, कडि आवघ आबिया कसि । वेस कहै धरि चाल वीरवर, समर कहै मरणी अवसि ।

—सुजाणसिध जगन्नाथोत कछवाहा री गीत

उ०—३ बडम पराक्रम वीरवर, विहर निडर बळ बाह । सर 'प्रताप' केई सुखी, छत्रधर तो कर छह । —जैतदान वारहठ

स पु.—१ तालव्वज नरेश माधव की पत्नी सुलोचना के द्वारा पुरुष धारण किया गया नाम ।

रू भे—वीरवर, वीरवर, वीरवर ।

२ देखो 'वीरवळ' (रू. भे)

उ०—'पीथळ' सू मजलिस गई, तानसेन सू राग । रीळ वोल हस खेलवी, गयी वीरवर साथ । —अग्रयात

वीरवरत—देखो 'वीरव्रत' (रू. भे)

वीरवरती—देखो 'वीरव्रती' (रू. भे)

वीरवरद—स. पु—शिव, शंकर, महादेव । (क कु वो)

वीरवरमन—स पु [स वीरवमन्] १ सुभाल, सुलभ, लोल, कुवल एव सरस का पिता एव यम की पुत्री मालिनी का पति, मारस्वत नगराधिपति एक राजा ।

वि० वि०—इसने पाण्डवो का अश्वमेधीय अश्व को रोक कर अपने श्वसुर यम की सहायता से कृष्णार्जुन से घोर सग्राम किया था । फिर कृष्ण ने इससे सधि की थी ।

२ द्रविड देशाधिपति, एक राजा, जिसकी पत्नी हेमांगी पूर्व जन्म में मोहिनी नामक अप्सरा थी ।

वीरवाणी, वीरवानी—स स्त्री—वीरध्वनि, वीरगर्जना ।

उ०—कलकार वीरवाणी कजाक, हलकार दुह वलवाज हाक । धानक टकार भलकार घोह, ललकार मार अणपार लोह ।

—वि स

रू भे—वीरवाणी

वीरवानी—स. स्त्री—स्त्री, श्रीरत ।

उ०—सोने री थाली में लोहरी भेख मारणी ही ती म्हा सू वयु भिड्या ? इसी वेगी ही भागवानी हुगी खतम ? सीधा ही काखा में गोळिया दूढ । पण म्हे ही वाजीदा हा ! आगलै री म्यान लेवता ही को सका नी ! इसी वनड्या री नादीद ही कोनी ! आ ही नहीं लाधी ! एक एक वदै लारी चार-चार वीरवानी वंठी है । कुनारपणो चतर ग्यी । अवे भला ही बाप आपरी वेटी न काठी राखी ।

—दसदोख

वीरवाहण, वीरवाहन—स पु [स. वीरवाहन] १ ब्रह्महत्या में पीडित एक राजा ।

२ विराध नगरी का एक राजा जिसने वसिष्ठ ऋषि के साथ धर्म सम्बन्धी चर्चा की थी ।

वीरविक्रम—स पु—एक शूद्र जिसकी कन्या का विवाह एक चाडाल के साथ हुआ था ।

वीरविद्या—स स्त्री—१ वीरो अर्थात् इमशानो में भूतो व प्रेतात्माओं को जागृत करने की विद्या, मन्त्र तत्र ।

उ०—नकी सुपन जागै नकी सुखपती, नकी पद तुरिया नकी मोव मुगती । नकी भूत प्रेत नकी वीरविद्या, नकी काळ जाळ नकीउ अविद्या । —अनुभववाणी

२ युद्धविद्या ।

वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी—देखो 'वीराधिवीर' (रू. भे)

उ०—१ कृग राम सकज्ज, जैतधारी जैतावत । 'बाघ' 'फता' वेढका वीरवीराध निजावत । —रा रू

उ०—२ धडं सावकं जोर सूं खाग धारा, हुयं चोट वारी हजारे हजारा । वडा वीरवीराध वाकार वाहे, सु ती सामुहै चाचरं वाहि स है । —रा रू

उ०—३ मयण काम मूरत्ति, गात गिरवर वीकाचळ । वडो वीर-वीराधि, सिध रूपी सहस वळ । —गु रू व

उ०—४ छळ भेन छोटी दहूँ श्रोड छाजै, विचै पाट राजीव माजी विराजै । खडो लागडो वीरवीराधि खेतू, करे रागडां छागडा राह केतू । —मे म

वीरवैताळ—वि—उत्पात करने वाला, वदमाशा, शैतान, उद्द ।

उ०—कहै अचूकी शोर कथ, भलो 'कळो' भूपाळ । म्हे ती सब जग मोहिनी, तू ती वीरवैताळ ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाटेल री वात

वीरवृक्ष, वीरवृक्ष—सं पु [सं वीरवृक्ष] अर्जुन नामक वृक्ष का नाम ।

वीरव्रत, वीरव्रती—वि. [स] अपने मकल्प पर दृढ रहने वाला ।

२ बहुत ही निष्ठा एव आचारपूर्वक रहने वाला, निष्ठावान ।

स. पु.—मद्यु राजा एव सुमना के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र, जो

मथु एव प्रमथु का पिता एव भोजा का पति था । (पुराण)

रू. भे.—धीरव्वरत, धीरव्वरती ।

धीरव्वर—देखो 'धीरव्वर' (रू. भे.)

उ०—'जोषा' 'चापा' 'अखा', भला भण्डि 'डूंगर' 'भाखर' । 'माडण' 'मडळा' 'करन', वरण फीजा धीरव्वर । —गु. रू. व

धीरसंग—स. पु [स धीर-शङ्ख] ४६ क्षेत्रपालो मे से ३६ वां क्षेत्रपाल ।

धीरस—देखो 'विरस' (रू. भे.)

उ०—पछे राव मालदे तो मेडता मार्ये कटक कोई नह कीयो । तठा पछे मास न राव मालदे समत १६१६ रा काती सुदी १२ काळ कीयो । राव चद्रसेन पाट वेठी । सु चद्रसेन रे भाई प्रासीया जोर लाग । रजपूत नै रियामल नै राव धीरस हुओ । राव चद्रसेन तो मेडतै रो नाव लीयो नही । —नैणसी

धीरसजा, धीरसज्जा—देखो 'धीरसज्या' (रू. भे.)

धीरसयन—स. पु. [स. धीरशयन] धीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र ।

धीरसज्या—स. पु [स. धीरसज्या] धीर के सोने का स्थान, रणक्षेत्र ।

रू. भे.—धीरसजा, धीरसज्जा

धीरसरमा—स. पु [स. धीरसर्मा] शशिष्ठ कुलोत्पन्न एक ब्राह्मण जो कुशिक वशीत्पन्न लक्ष्मी नामक कन्या का पति था ।

वि० वि०—इसके तीर्थयात्रा पर जाते समय इसकी पत्नी गर्भवती होने के कारण इसने उसे राजा तोडमान के यहा छोड दी थी । राजा ने छ माह की भोजन सामग्री भरवा दी और फिर भूल गया । ब्राह्मणी ने स्वाभिमानवश भोजन मागा नही और वही मर गई किंतु इसने दो वर्ष बाद उसे बैकटाचल पर स्थित अस्थिकूट सरोवर मे स्नान करवा कर जीवित कर लिया था ।

धीरसिध, धीरसिंह—स. पु. [स. धीरसिंह] धीरमणि राजा का पुत्र एव रुमागद का भाई एक राजा, जिसने राम के अश्वमेधीय अश्व को रोक कर शत्रुजन् से युद्ध किया था ।

धीरसुता, धीरसुता—वि [स. धीरसुता] धीर पुत्रो को जन्म देने वाली, धीरप्रसू ।

उ०—एक धीरसुया सती आपरा पुत्र नै हीडा देती घर री रीति सिखावै है । —वी. स. टी.

स. स्त्री—१ धीरवाला, धीरस्त्री ।

२ भूमि जहा धीर अधिक उत्पन्न होते हैं ।

रू. भे.—धीरसुया

धीरसू—स. स्त्री [स.] १ धीर पुत्र प्रसव करने वाली स्त्री ।

२ वह भूमि जहा धीर अधिक उत्पन्न होते हैं ।

धीरसूया—देखो 'धीरसुता' (रू. भे.)

उ०—१ हू आ धीरसूया (धीरमाता) वा राणियां री कूळ नै वळिहारी जाळ और वा राणिया री वळिहारी भ्रूण (गरभ) हीज वा नै काई तरै सिखाण देवे है सो दाई रा हाथ री नाळी काटण

री छुरी नै साव (जन्मती) हीज बाळक भपटै । —वी. स. टी.
उ०—२ कोई एक धीरसूया (धीर री मा) भागल पुत्र नै ललकारै छै । अरै पूत म्हारी ऊमर सोय आ थणा री दूध पाय घणा दुव सू पाळ मोटी कियो सो आ आस ही के । —वी. स. टी.

धीरसेण, धीरसेन—स. पु.—१ युधिष्ठिर के राजसुय यज्ञ में उपस्थित एक ऋषि । २ एक सूर्यवंशी राजा । ३ निपद्य देशाधिपति नल का पिता । ४ दक्ष राजा का दशसुर । ५ वसुदेव की धारणी राणी का पुत्र । ६ कृष्ण-वसुदेव के २१ हजार ककणधारी बीरों के प्रमुख अग्रसर । ७ ऋतुपर्ण राजा का पुत्र एव सूदास राजा का पिता, एक राजा । ८ तीन राजन्य यज्ञ एव सोलह अश्वमेधीय यज्ञ करने वाला अवती नरेश । ९ आलुवुय्यारा । १० हिमालय मे होने वाली घ्राड नामक जड ।

रू. भे.—वइरसेन ।

धीरस्थान—स. पु. [स. धीरस्थान] १ स्वर्ग, बैकुण्ठ ।

२ देखो 'धीरासन' (रू. भे.)

धीरह—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—कडि चालउ गोरी करइ धीरह वेदन नवि जाएइ कोई । वयु राजा राणी मिलइ, यु ईणि कलि मिलजं सव कोई । —वी. दे.

धीरहक, धीरहक, धीरहक—देखो 'धीरहाक' (रू. भे.)

उ०—१ खग भट विकट बुडव खरडक, डहकत डारण धीर डहडक । गलि घण गैहक छायेर्य गयणक, 'हीरा' ऊपरि धीरहक ।

—हीरा मागळिया रे जुध री गीत

उ०—२ चत चंन थका नत चोक चौहटै, सुनतु पुठै वडै सक । समहर समहर मोहर सुजीया, हुअै हुवती धीरहक ।

—सूरजमल करमसोत री गीत

उ०—३ धुवै सार मार धडै धार धार, हुवै धीरहक हजारै हजार । छटा ज्यो विछुटै भुजै सेल छुटै, खग अग तूटै अनोमन्न छुटै । —रा. रू.

उ०—४ नवकोट सुभट कुळवट निहार, सनाम अडप नप छळ सभार । हुई धीर सधीरा धीरहक, हर सकति डक डमरु डहक । —रा. रू.

उ०—५ ऊठयो दिली हू ओरगसाह एक राह तरणै आटै, महावाह विहू राहा मेटवा अजाद । धका धका चहू चका हूचका खडग धारा । धीरहकका हीदवा तुरवका भिदं बाद ।

—महाराणा जयसिंहजी द्वितीय री गीत

धीरहथ, धीरहथी, धीरहथ्य, धीरहथ्यी—स. पु—धीर, बहादुर ।

उ०—धीरहथा आपहमता, प्रभुता लियण अमाप । कविता रजपूती कदर, तुहि करता 'परताप' । —जैतदान बारहठ

धीरहाक, धीरहाबी—स. पु.—धीररसपूर्णं ध्वनि, ललकार ।

उ०—१ डमडमं सकति डम्मरू डाक, है-थाट हृव्व हुय धीरहाक ।
गडि अडै भेर दम्माम गज्ज, गयणगज वारह घण गरज्ज ।

—गु रू व.

उ०—२ ह्यनाळि हवाई कुहकवाण याको सोर आघात होण
लागी । धीरजु वडा वडा जोधा । त्या की धीरहाक होण लागी ।
गय हस्ती त्या की गहणिए हुई । वेलि टी.

उ०—अह अहै अवाळ जोगी अमक, सीधवी राग प्रगटत सक ।
करि धीरहाक ओरं केकाण, मच राडि आडि गोळा मडाण ।

—मा वचनिका

रू भे —वीरहक, धीरहाक, धीरहक, धीरहकक, धीरहककी ।

धीरहोत, धीरहोतर, धीरहोत्र-स पु [स धीरहोत्र] १ विन्धाचल पर्वत
पर स्थित एक स्थान ।

२ हैहय राजवश का आद्यपुरुष हैहय सम्राट ।

धीरांगणा, धीरांगना-स. स्त्री [स धीरांगना] धीर स्त्री, बहादुर स्त्री ।

उ०—धीरांगना वचन-ए ढोलण ढोली नूं कह इतरी ढोल रो पला
(ढोल रो पौढ वा गत) में इतरी क्य ताकीद करे जोधार तो आपरा
वाह घोडा नं चर धरवादार मालक गे घोडी सभे छै तं मालक है
सो बगतर पहरं इतरी देर छै । —वी स टी

धीराण वि०—१ धीरे का, धीरो से सम्बन्धित, धीरतासूचक ।

२ भयानक, भयावह ।

स पु—१ युद्ध, समर, संग्राम ।

उ०—चादो ईसरदास सचाळो, 'विसन' सुजाव गढा रजवाळो । चाड
धणी 'तेजल' चहुवाणो, वाधे 'चद' तणी धीराणो । —रा रू.

२ देखो 'धीर' (रू भे)

उ०—१ इण भात कमघा अगळी, रुक वजायी 'रोहडै' । धीराण
कि आरण वावरें, ज्या घण तत्तं लोहडै । —रा रू.

उ०—२ दडोदडी तूट माथा कमघा पावडा देवं, रिमा सीस खाथा
सार वजावे आराण । हैकपे कायरा प्राण छूटगा धीराण हासै,
भंचककं भूलोक रत्या थभायो सु भाण । —बादरदान दधवाडियो

उ०—३ लोधा आसतीक रणसिग ऊवारं घडा रो लाडो, ऊवारो
मडाला नाम चाढो कुळा अत्र । गोरा रं अजटी बोल सामळं धीराण
गाढो, खर्ग ऊभो मंदपाट आडो जेतखभ । —कमजो दधवाडियो

उ०—४ मदकरा डाण नीसाण भोज, फरहरा वाण असुराण
फोज । धीराण रूप इण विध वणाय, आराण भूप सनमुक्ख धाय ।

—वि स

उ०—५ हिंदवाण तुरककाण हिचं, रिण डाण धीराण नताण
रचं । करडकक हुवं सिलहकक कडा धमचकक भचककत सेल धडा ।

—सू प्र.

३ देखो 'धीरान' (रू. भे)

उ०—काळा सा मिरघलडाजी, घट ऊजळ पेटा । चोरी जाय करंजी
धीराणो खेता । —दीन सुदरवी

४ देखो 'विडाणी' (रू भे.)

रू भे —धीराण, वैराण, विराण, विरान, वैराण, वैरान, वैराण,
वैरान ।

धीराणी-स. स्त्री.—धीरता, बहादुरी ।

वि०—१ भयानक, भयावह ।

२ धीरसंपूर्ण ।

३ धीरों का, धीरो से सम्बन्धित, धीरतासूचक ।

उ०—रमै धीर हडुडै हालरं जमं जोगराणी, वीम धोम मडै वडै
मेछाणी वैराक । पढै पाठ धीराणी चीतीड थान चडै पाणी,
'अडसाणीर' डैरोस ऊकडै अंराक । —महादान महडू.

४ देखो 'धीरानी' (रू भे)

धीराणी- १ देखो 'धीरान' (मह, रू भे)

२ देखो 'विडाणी' (रू भे)

धीरान-वि० [फा धीरान] १ उजडाहुआ, श्रीहीन ।

२ जनशून्य, उजाड, जगल ।

रू भे.—धिराण, धिरान, धीराण, वैराण, वैरान, वैराण, वैरान,
मह —धीराणी, वैराणी ।

धीरानी-स. स्त्री. [फा. धीरान] धीरान या उजाड होने की अवस्था या
भाव ।

रू भे —धीराणी ।

धीरा-स. स्त्री. [सं] १ पत्नी, स्त्री ।

२ बधू ।

३ माता ।

४ धीर पत्नी, धीर स्त्री ।

५ बहिन, भगिनि ।

उ०—उठं नी, अं चारण धीरा, सूती छै सुखडा री नीद, धारी ती
गाया में अं, खीची घोडा फेरिया । ज्या ती गाया कै, अं चारण,
तूं खेती गुगळ-धूप, ज्या ती गाया कै अं खीची मारं कोरडा ।

—लो गी.

६ पुत्री, बेटा ।

७ बडो या वृद्ध पुरुषो व स्त्रियो द्वारा पुकारा जाने वाला किसी
कुलवधू या युवा स्त्री के लिए सम्बोधन सूचक शब्द ।

८ स्त्रियो द्वारा वृद्धो के अतिरिक्त अन्यो को पुकारने के लिए प्रयुक्त
किया जाने वाला सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—१ कै इता में मोडा रं वारं घोडा री हीस सुणीजी । कम-
सल वात करता ई आयग्यी । सेठाणी आडो खोल बोली-धीरा,
धारी ऊमर ती लांठी । —फुलवाडी

७०—२ सासरा री मगरी ढळता ई उणने मडो साम्ही घकियो । सुगन ती भला विह्या । वेल सूं हेट उतर वा मुडदा न हाथ जोडिया अक खाधिया न होळीसी'क पूछयो—वीरा, कुण चलियो ।

—फुलवाडी

६ घायुपुत्र भरद्वाज नामक अग्नि की पत्नी और वीर की माता ।
१० वीर्यचंद्र राजा की कन्या एव करधम की पत्नी जो अविश्वित राजा की माता थी ।

वि० वि०—इसने अपने पौत्र मरुत के द्वारा सर्पसन प्रारंभ करवाया था जिसे अविश्वित की पत्नी वेशालिनी ने अपने पति के द्वारा बन्द करवाया था ।

११ मुरा, मुरामासी ।

१२ केला ।

१३ ऐलुवा ।

रू भे —वीरा ।

वीराचारि, वीराचारी—स पु. [स वीराचारिन्] १ अपने इष्टदेव की वीरभाव से उपासना करने वाले एक प्रकार के वाममार्गी या शाक्त ।

२ वीर बहादुर या योद्धा का आचार, कर्त्तव्य ।

७०—इम आरोडिड तपि जा करणु, पुरूख पराभवि सारू मरणु । दुरजोधनि तउ पखउ करीजइ, 'वीराचारि कुलु जाणी-जइ ।'
—सालिभद्र सूरि

वीराजमान—देखो 'विराजमान' (रू. भे.)

७०—ठाकुरजी स्त्रीवाऊजी रा मंदर मे सेवा ती महाराज अर्भ-सिधजी गुसाईजी विठलरायजी १७८६ कोटे सु लाय वीराजमान किया न मंदर रो मोटी कमठी मा'राज विर्जेसिधजी करायो ।

—मारवाड रो ख्यात

वीरातन—स. पु —१ बहादुरी, वीरता ।

७०—१ इणमत द्रोण हिल्लोळवा, वीरातन किरि विळकुळ । दळ-थम विढण दखणाधि सू, ऐम ऊठियो भुज आमल । —गू रू व

७०—२ सुजड-हृथा "चाद राउ" समोभ्रम, विधि वीरातन वंर विधि । रोपे जई पवगि आसण रिध, रिप तई भजे राज रिधि ।

—राव रिडमल रो गीत

७०—३ आरण कियो उछाह, वीरातन वडियो । मारू लोह मराट, चमू सभ चडियो ।

—किसोरदान वारहठ

२ बहादुर, वीर, योद्धा ।

रू भे —वीरायतन ।

वीराधवीर, वीराधिधीर, वीराधीधीर—देखो 'वीराधिधीर' (रू. भे.)

७०—कथ सुणी अ्रेम 'विसने' कमध, मेडतिये गूलरपत मदध ।

सामहा जाय मिळियो सधीर, विसनेस कमध वीराधवीर । —पे. रू
वीराधपत, वीराधपति, वीराधपती—मं. पु.—[स. वीराधिपति] वीरो मे श्रेष्ठ, वीर विरोमणि, महावीर ।

वीराधवीर—देखो 'वीराधिधीर' (रू. भे.)

७०—१ मूळा अणी भूँह मेळ, दाढी कर दाखि जी । विढसी वीराधवीर, सूर जित साखि जी ।

—गु. रू. व.

७०—२ वरवीर खूमाण वीराधवीरं, फळी-मूळ 'सादळ' वेंवें कठीर । भली भोच फल्याण मल्ली भुजाळी, 'मानावत' वेढीमणी मच्छराळी ।

—गु. रू. व.

७०—३ गेळा उघमै अवाक भाला छाक डाक दे दे आणें, घाढा घाढा आणाणें भरोसें भुजा धीग । चद्रहास ऊवाणें वीराधवीर जाणें चीजा, दिली री कवारी फौजा गाणें देवीधीग ।

—राव देवीसिध सेपावत रो गीत

७०—४ वीराधवीर जिंसा घोर पडिर । यारी वी रजपुती असी आकाय । ज्या सृ जमराच पणि देसत पाय । या न आगवणि कुण करे । सिर उपर रुठा फिरे ।

—पना

वीराधि—स पु —वीर, बहादुर, योद्धा ।

७०—जोगी तुळ ना जयो जूना जुवारी, महादेव माहेस अणकल मुरारी । महावीर वीराधि अकलमलं, अधिक आप उदार दाता अदल ।

—पी. प्र.

वीराधिधीर—स पु —वीरविरोमणि, महावीर ।

७०—१ सुत रूक हवी अक पोह सधीर, अक सुतण वाहू वीराधिधीर । सुत वाहू सगर परगट सासर असमज सगर सुत अउ उदार ।

—सू. प्र.

७०—तेहे घोडे किस्या खित्री चडिया । पंचवीम वरस ऊपहरा । पचास वरस माहि । लुधसधानीक । वीराधिधीर । आकरणात मूछ ।

—का. दे. प्र.

७०—३ वीराधिधीर, हेला हमीर । 'मधुकर' सुतन्न, किरतव्व फ्रून ।

र वचनिका

रू भे —विराधवीर, वीराधवीर, वीराधवीर, वीराधिधीर, वीराधिधीर, वीरवीराध, वीरवीराधि, वीरवीराधी, वीराधवीर, वीराधिधीर वीराधीधीर, वीराधवीर ।

वीरापाचम—स स्त्री —भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की पंचमी ।

वीरावारस—स स्त्री.—कार्तिक मास की कृष्ण पक्ष की द्वादशी ।

वीरावीज—स स्त्री —कार्तिक शुक्ल द्वितीया ।

वीरायतन—देखो 'वीरातन' (रू. भे.)

७०—सातल तणउ अधिर सुरताणि, वाद्यउ वीरायतन वखाणि । पदम नाभ पडिति मति कही, बीजा खड समापति हुई ।

—का. दे. प्र.

वीरारस, वीरारसि—देखो 'वीर' (३८)

७०—१ धणि वाजिन्न घण घाउ, घमघमि अघर घूघरा । वागा वीरारस तणा, नाराजिआ निहाउ ।

—र. वचनिका

उ०—२ तुकमा रूप खतम फर्त रा फन्विया, देखता उर दभ अरदा दन्विया । विहसती निज वदन वीरारस वेस री, दीपायी हृद वीर मुरद्वर देस री ।
—किसोरदान बारहठ

उ०—३ वीरारस घण घोख वाजई, अभिनवा सिरि द्रोण । सेल साबळ कृत मुदगर, उछळई अति स्रोण ।
—रुकमणी भगळ

उ०—४ वीभाजळ रूप गयद चढि मेघाडबर विराज । नौबतूँ कं निहाव वीरारस वाज । जिस वखत जळावोळ हालोहळसै फीज हल्ली । नालू कं निहाव सेती धरती थरसली ।
—सू प्र.

वीराधी—क्रि वि—वीरो मे ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जाणें, धूरजटी तावा ऊच भावा मेर वीण । भावा लोम रिखी राम तम्मी ज्यू दधीच हाड ऊच, सामवेद वेदागा वीराधी सभूसीघ ।
—हकमीचद खिडियो

वीरासन, वीरासन—स पु [स वीर+आसन] १ निगाह या चौकसी रखने की क्रिया, रखवाली ।

२ युद्ध आदि मे अधिक जोखिम वाला पद ।

३ वीर सिपाही ।

[स वीर+आसन] ४ वीरों के बैठने का ढग विशेष ।

उ०—जिल ग्रामक सै वीरासन बैठान गया, पिछाडी को हाथ टेक कर अगाडी पैर फेला दिया । जिस वखत रघुनाथसिध अंसा निजर आया, मानों बुझी मसाल सा दीदार दिखलाया ।
—दुरगादत्त बारहठ

५ पहरा दिया जाने वाला स्थान ।

६ घुटना मोडकर बैठने क्रिया ।

७ योग के वीरासी आसनो के अन्तर्गत एक आसन विशेष जिसमे वायें पाव को घुटने से मोडकर इसके पजे को गुदा के नीचे उत्तर दक्षिण भाडा रखकर और दाहिने पाव की एडी वाये पाव के अगूठे को लगाकर घुटने को छाती की तरफ ऊचा करके बैठना होता है । हाथो या पावो के हेर फेर से इसका दूसरा प्रकार भी होता है ।

उ०—एक आसण अरु ऊकहु, पढिमा काउसग रात । पद्मासन वीरासणो, रहै छकाया-नाथ ।
—अयवाणी

रू भे—वीरस्थान

वीरि—सं. स्त्री—१ वहन, भागिनी । (ह ना मा.)

२ वीर स्त्री ।

उ०—एक नारि रण नइ तडि ऊभी, वधु वल्लभ तरण छइ मोभी । तीणि घाय पडतउ नवि जाणिएउ, न्याय वीरु कुल वीरि वखाणिएउ ।
—सालिसूरि

३ देखो 'वीरी' (रू. भे.)

वीरिणी—स स्त्री.—[स] १ वह स्त्री जिसका पति एवं पुत्र जीवित एव सुखी हो ।

२ वीरण प्रजापति की कन्या एव दक्ष प्राचेतस की पत्नी ।

वि० वि०—इसकी उत्पत्ति ब्रह्मा के अगूठे से हुई बताते हैं । इसके एक हजार पुत्र एव पचास कन्याएँ उत्पन्न हुई थी ।

३ शुक्रपत्नी पीवरी का नाम ।

४ ब्रह्मा की पोत्री एव वीरसेन राजा की कन्या जो चाक्षुष राजा की पत्नी थी ।

५ एक प्राचीन नदी का नाम ।

वीरियां—देखो 'वेळा' (रू. भे.)

वीरियोडो—भू० का० कृ०—१ विस्मरण हुवा हुआ, भूला हुआ ।

२ देखो 'विहरियोडो' (रू. भे.) (स्त्री वीरियोडी)

वीरी—स. पु. १—धैरी, शत्रु दुश्मन ।

उ०—सदेसाहि ववज पड्यो, लाध्या परवत दुरघट घाट । परि-देसा परि-भूमि गयउ, वीरी जगह न चालइ वाट ।
—वी दे.

२ देखो 'वीरि' (रू. भे.)

वीरियां—देखो 'वेला' (रू. भे.)

उ०—१ इसी तरं कागद लिख मेलियो, चारण साथ । सौ कागद वाच नं रामदासजो तिया हीज वीरीयां हेरु मेलिया, अन कयो अन ती साडिया लीया वसा । चारण नं घोडी सिरपाव दें नं सीख दीनो पधारो वाइ नं जुहार कहेजो ।
—रा० सा० स.

उ०—२ मा बोली—'अरजन, बात साभळी ? वाप, हमीर दुणोटी मांग छै । कह्यो—वाप, जीमण वेसे छै, तीय वीरीयां अर-जन सु भोनू दुणोटी मेलही ।'
—अरजन हमीर ती बात

वीर—देखो 'वीर' (रू. भे.)

उ०—१ सउ कूर पचगलउ किंवहरि पढिवा जाइ । धीरु वीर मति आगलउ करणू पडइ तिणि ठाइ ।
—सालिभद्र सूरि

उ०—२ एक नारि रण नइतडि ऊभी, वधु वल्लभ तरण छइ मोभी । तीणि घाय पडतउ नवि जाणिएउ, न्याय वीरु कुलवीरि वखाणिएउ ।
—सालिसूरि

उ०—३ हउ अोलखावउं अनइ वीर वीर, तइ होइवउ उत्तर नाम वीर । छइ जीह दुरयोधन तीह खेडउ, हेला सही कौरवमान मोडउ ।
—सालिसूरि

वीरुज, वीरुज, वीरुज—स पु [स वीर+उरुज, अग्निहोत्र नहीं करने वाला ब्राह्मण ।

वीरघा—स स्त्री, [स] नागमाता सुरसा की तीन कन्याओं में से एक ।
वि० वि०—इसकी अन्य दो बहनों का नाम अनला एव रुहा था ।

वीररूप—वि० [स. विरूप] भयकर, भयावह डरावना ।

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीररूप अग ।
देवी बाल जूवा अघ वेख वाली, देवी विश्व रखवाळ चीसाभुजाळी ।
—देवि

रू भे —वीररूप ।

वीरेस, वीरेसर, वीरेसुर, वीरेस्वर—स पु [स. वीर+ईश एव वीर+
ईश्वर] १ शिव, महादेव ।

२ वीर, अत्यन्त वीर पुरुष ।

३ पवनसुत हनुमान ।

वीरोचद—देखो 'विरोचन' (रू. भे.) (ना हि को.)

वीरोचदसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

उ०—वीरोचदसुत अहपर वारी, रव सुत तणी अमरपुर राज ।
धीनि दातार 'कलावत' नरपुर, अनत रोर केही गत आज ।

—दुरसी आढी

वीरोचन—देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—ऊधम किर राळी घर अदर, वाग असोक लागडे वानर ।
दहूवें जुवा भडा खळ दहिया, वीरोचन अमर दळ दहिया ।

—सू प्र.

वीरोचनसुत—देखो 'विरोचनसुत' (रू. भे.)

वीरोटण, वीरोटणी—स. स्त्री जादू-टोने आदि करने वाली स्त्री. जादू-
गरनी ।

उ०—तद कान्ही बोल्यो तमक, मत करणा मक्कर । वीरोटण पण
देखता, नह सोभ चढे नर । —ठाकुर भुम्भारसिंघ मेढतियो

वीरोटियो—स. पु [स. वीर+रा प्र ओट, ओटियो] (स्त्री. वीरोटण,
वीरोटणी) १ मन्त्र-तन्त्र द्वारा श्मशान भूमि मे भूत-प्रेत जगाने वाला
पुरुष, जादूगर ।

२ देखो 'वीर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—कई खाय पीलिया कैणा, कई जाळ जाळोटिया । मुरघर
मल्ल वणै इण मेवै, वाळ बंड वीरोटिया । —दसदेव

रू. भे —विरोटियो ।

वीरोध—देखो 'विरोध' (रू. भे.)

उ०—बाण पाराथ तणी जाण वीरोध री, विखम थट रोध री किया
वासी । जबर भुज धारिया हणूं बळ जोध री, धमक भुज धारिया
अरण धांसी । —रावत अजीतसिंघ री गीत

वीरोळणी, वीरोळणी—देखो 'विरोळणी, विरोळणी' (रू. भे.)

उ०—चौडे सळ घूह लाखा चाक, वीरोळी लाख खळा वेढाक,
सत्री गुर वीरम घूणै खाग, वीरूढी ज्ञाणेय साकल बाग ।

—गो रू

वीरोळणहार, हारी (हारी), वीरोळणियो—वि० ।

वीरोळियोडी, वीरोळियोडी, वीरोळियोडी—भू० का० कृ० ।

वीरोळीजणो, वीरोळीजणो—कर्म वा० ।

वीरोळियोडी—देखो 'विरोळियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वीरोळियोडी)

वीरो—स पु—१ भाई, भ्राता ।

उ०—१ उठी बाइसा वाधो राखडी, थारा वीरोसा रा जतन कराव ।
उठी मानेतण खोली कोथळी, थारै सासु नणद नै श्रोढावा ।

—लो गी.

उ०—२ श्री माय घाली जायफळ नै जावंतरी, श्री तेल बनडा रं अग
चढसी श्री । लेखी वा रा भाभीसा कर लेसी, श्री दमडा वारा
वीरोजी भर देसी । —लो गी.

उ०—३ चाकरडी रं मारू, था रं वडोडे वीरोजी नै मेल राय,
भरियै रं भाद्रवै, रं म्हारा गाढा मारू, घर वसो । वडोडे वीरोजी री,
गवरादे, लडोकडी नार, राय, साभतडी रीसवैली म्हारै वावैजी सूं
मोरची माडसी । —लो गी.

उ०—४ कृण वीरो कृण वहनडी रे, जोयजो मोहरी बात । इण
भव मुगति सिधावसी रे, एम करै विलापाती रे । —जयवाणी
(स्त्री वीरो)

२ भाई के नाम पर बहिन द्वारा गाया जाने वाला एक लोक गीत ।

उ०—१ वीवडियो घर बाळापण धीर, उगेरै 'वीरो' ऊची राग ।
जोवता दुग दुग तारी अक, सरावै धरती रा सांभाग । —साम्क

उ०—२ म्हनें वीरो सुणण री अर वाई नै वीरो गावण री कितरी
कोड ही, जिण री कोई पार नी । म्ह भावतो जितरी बार जारै पड
जावतो—बाई एकर ती वीरो सुणाय दे । अर वा भीणा कठ सू
सरू कर देवती । —अमर चूनडी

३ देखो 'वीर' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—१ रमता राम एक रग रता, माया मोह विखे नही मता ।
उत्तम साध सु लछन थीरा, सो कहीयै अजरामर वीरा ।

—अनुभववाणी

उ०—२ भगवत नइ भव पूछिया कह्यउ, तुं छह चरम सरीरी रे ।
सूरियाभ वारता सहू, गीतम पूछी कहि वीरो रे । —स कु.

रू. भे.—वीरो

वीरघ—देखो 'वीरघ' (रू. भे.)

वीरघचद, वीरघचदर, वीरघचदर—स पु. [स. वीर्यचद्र] करधम राजा
की पत्नी एव अविशित राजा की माता का पिता ।

वीरघघर, वीरघघारी—स पु [स. वीर्य+घारि] प्लक्षद्रीप के मूल
निवासी क्षत्रिय । (पुराण)

वीरधवत, वीरधवान—स. पु. [स. वीर्यवत्, वीर्यवान] १ कश्यप एव दनु
के पुत्रो मे से एक दानव ।

२ एक सनातन विश्वे देव ।

वीरधसह—स. पु. [स. वीर्यसह] सूर्यवंशी राजा सोदास का कल्पाप-
पाद नामक पुत्र ।

वीरधहारी—स. पु. [स. वीर्यहारी] दु सह नामक यक्ष की पुत्री के गर्भ
से किसी चोर के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

वील—स. पु.—१ किसी बन्द कमरे में सामान आदि रखने के लिए
आमने-सामने की दीवार में लगाया जाने वाला लंबा पत्थर ।

२ देखो 'बीली' (मह. रू. भे.)

उ०—१ प्रथम पीपल साग सीसमू, आमली अघिकार । बडबोर
धील बहेड बाउळ, क्रूरमदी कथार । —रुमणी मगळ

उ०—२ जाळ ज्ञागडी रु ख, सघन गायडमल गाढी । वील सरेसा
वडी खजूरा सिरसी डाढी । खर खोदरिया माय, गोहिरा साप
गजवरा । भड भाखड जड जाय, उरणिया वडे अणव रा ।

—दसदेव

उ०—३ कनक कुंभ स्त्रीफल जिमा रे, कुच तटि कठिन कठोर रे
रग । पाका वील नारिग सा रे, मानु युगल चकोर रे रग ।

—प च ची.

३ देखो 'बील' (रू. भे.)

बीलाणी, बीलाबी—देखो 'विलाणी, विलाबी' (रू. भे.)

उ०—बरसा वदीत हुइ सरद आइ । ससि अन्नत सूवें छै जोतिफळ
गइ जुन्हाइ । आकास निरमळ हुवो । बादळ बीलाया । सीपा गरम
धारण कीयो छो । ज्या मोती जाया । —पना

बीलाणहार, हारो (हारी), बीलाणियो—वि० ।

बलायोडो—भू० का० कृ० ।

बीलाईजणो, बीलाईजवो—भाव वा० ।

बीलायोडो—देखो 'विलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीलायोडो)

बीलावणो, बीलाववो—देखो 'विलाणो, विलावो' (रू. भे.)

बीलावणहार, हारो (हारी), बीलावणियो—वि० ।

बीलाविओडो, बीलावियोडो, बीलाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बीलावीजणो, बीलावीजवो—भाव वा० ।

बीलावियोडो—देखो 'विलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बीलावियोडो)

बीलियो—देखो 'बीली' (अल्पा, रू. भे.)

बीली—देखो 'बीली' (अल्पा, रू. भे.)

बीलोणी—देखो 'विलोवणी' (रू. भे.)

उ०—थापियो कीरड ताय सीथर थान, मही नद मोळन गोळजी
उगोळ माय । गाजें सु ब्रखव सुव चरै गाय, मन घरै बीलोणी करण
माय । —रामदान लाळस

बीलोणी, बीलोबी—देखो 'विलोडणी, विलोडवी' (रू. भे.)

बीलोनहार, हारो (हारी), बीलोणियो—वि० ।

बीलोयोडो—भू० का० कृ० ।

बीलोईजणो, बीलोईजवो—कर्म वा० ।

बीलोयोडो—देखो 'विलोडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीलोयोडो)

बीलोवणो, बीलोववो—देखो 'विलोडणी, विलोडवी' (रू. भे.)

बीलोवणहार, हारो (हारी), बीलोवणियो—वि० ।

बीलोविओडो, बीलोवियोडो, बीलोव्योडो—भू० का० कृ० ।

बीलोवीजणो, बीलोवीजवो—कर्म वा० ।

बीलोवियोडो—देखो 'विलोडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीलोवियोडो)

बीली—देखो 'बीली' (रू. भे.)

बील्हणवटी, बील्हणवाटी—स. स्त्री —नागौर जिले के 'मारोठ' गाव के
आस पास का प्रदेश ।

उ०—दहिया रो उत्तन यू सुणियो छै, दिखण नूं नासिक श्यबक
गोदावरी कर्ने गढ थालनेर थी । इतरी ठोड दहिया रे अजमेरा माहें
हुती । देरावर परबत्तसर गाव ५२. सावर घाटियाळी । हरसार
बील्हण रो वेटी हरघवळ घणी । माहरोट रो बील्हणवटी नाव ।

—नैणसी

वि० वि०—इसका नाम बील्हण दहिये के नाम से हुआ ।

बील्हो—स. पु.—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

उ०—बील्हा वायस, बिभळ्ळा, आगलि ऊडी जाय । वाटइ धीसइ
वागली, तें ऊधी टगाय । —मा का प्र.

२ देखो 'बीली' (रू. भे.)

बीवणोटो—देखो 'दूणी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—ताहरा साजण रो नजर नै हमीर रो नजर एक हुई । ताहरा
हमीर रो आख सू चाळ्या ठळक-ठळक पडवा लाग । ताहरा साजण
कहै छै, "बाप, हवे रोवै छै ? सु अरजनजी विचें बीवणोटो
आरोगवा पघारा था । —अरजन हमीर रो वात

बीवनी, बीवनी—देखो 'विवनी' (रू. भे.)

उ०—परचड पराक्रम दाखवें, पित्त बीवनें पच दिन । 'गजसाह'
वसुह राखी पगें, डहै भुज्ज डिगियो गिगन । —गु. रू. ब.

वीवरौ-स पु. -१ आलवन, सहारा ।

उ०-रही वीवरै रामरम, अनरय पणौ अलत । या हिज है ध्रम
आतमा, ए तीरथ ए तत । —या. दा.

२ लीन या मन होने की अवस्था या भाव ।

३ देखो 'विवरौ' (रू. भे.)

वीवसाल—देखो 'विसाल' (रू. भे.)

उ०-सवळां सु सहीयारी कीजई, पाणौ पहिली पाळ । रुखमईयी
बोले सुणि राजा, जोईजइ वीवसाल । —रुक्रमणी मगळ

वीवाण—देखो 'विमाण' (रू. भे.)

उ०-१ अणछरा का सा वीवाण वीछटा । छछोहा जयान तरवारपां
आछटै छै । ज्या सु अणजवार हरवरमळा साथे ही कटै छै ।
—पना

उ०-२ भोम वाजद्र धरै सुर पग वीवाणा, भणै सुर पधारी जोत
भेळा । आपरै सेवगा महर रावळ 'भ्रमर', वीहद भूली नही तंण
वेळा । —रावळ हरराजजी री गीत

वीवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०-१ ईखै पित मात एरिसा प्रवयव विमळ विचार करे वीवाह ।
सुंदर सूर सीळ फुळ करि सुध, नाह किसन सरि सुभे नाह ।
—वेलि

उ०-२ मदिर तरि किया खिणतरि मिळिवा, विचित्रै सखिए
समाप्रत । कीर्षे तिणि वीवाह ससकित, करण सु तणु रति ससकत ।
—वेलि

उ०-३ तद विजोगण री मा विजोगण नू कण्यो, आपा वांणीया
छा अर ए राजा छै । अर आपा इसा निसपत काई नही । ए बीजा
वीवाह करसै तद तने दुहागण कर राखसी । तू कही साह नू
परणीज ज्यौं धर री धण्योयांणी हुवे । —बीजड वीजोगण री वात

वीवाहली, वीवाहिलु, वीवाहिलौ—देखो 'विवाहली' (रू. भे.)

उ०-१ गोरीनदन वीनऊ, स्त्रीपति सुमति सुजाण । फरण तणौ
वीवाहली, रिधसिध प्रसिध प्रमाण । —रुक्रमणी मगळ

उ०-२ सयल मण वछिय काम-कुभोवम, पास पय कमलु पण-
भेवि भक्ति । सुगुह 'जिणउदयसूरि' करिसु वीवाहलउ, सहिय
ऊमाहलउ भुज्ज चित्ति । —ऐ जं. का. स

उ०-३ गवरीय नदन वीनवु जी, स्त्रीहरि सुरतइ आणिए । विस्न
तणौ वीवाहिलौ जी, रिधि सिधि प्रसिध प्रमाण ।
—रुक्रमणी मगळ

वीवाहु—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०-१ अभिवनु उत्तरकूरि वरिउ, आबी कस्णि वीवाहु सु
करिउ । पहुतउ सहइ कन्हवपुरि, च्यारि कन्न चिहु पडवि वरी ।
—सालिभद्र सूरि

उ०-२ आदरि भरिदल आमला, सामलावांनि वीवाहु । आसारंनि
रमाडिय, भाडिय गनि उच्छाहु । —जयसेखर सूरि

वीवाहणौ, वीवाहवौ—देखो 'विवाहणौ, विवाहवौ' (रू. भे.)

वीवाहणहार, हारौ (हारौ), वीवाहणियौ—वि० ।

वीवाहणोडौ, वीवाहियोडौ, वीवाहणोडौ—भू० फा० कू० ।

वीवाहोजणौ, वीवाहोजवौ—कर्म था० ।

वीवाहियोडौ—देखो 'विवाहियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वीवाहियोडौ)

वीसनर—देखो 'विस्वभर' (रू. भे.)

उ०-अतिम येह उपाय, वीसनर न विमारिये । साथे धरम सहाय,
पल पल रांण प्रतापती । —दुरसौ आढौ

वीसनरा—देखो 'विस्वभरा' (रू. भे.)

वीस-वि —दस का दुगुना, पन्द्रह व पाच का योग ।

स स्त्री —२० की सख्या ।

उ०-१ रोगी सुण चद्रावत राणी, साम साथ कज लवण सुहाणौ ।

गायण वीस परम जस गावे, दूण हित ऊठी दरसावे । —रा. रू.

उ०-२ वीस कोस दिस वाम, वीस दाहण तरवर्क । जाळ धर

सामही, करे वेमुही सरवर्क । —रा. रू.

रू. भे —वीस ।

वीसण—देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

वीसणु—देखो 'विष्णु' (रू. भे.)

वीसन—देखो 'विष्णु' (रू. भे.)

उ०-वळतौ डोलो इम कहै, एह वचन मम आप । मारु सु सक-
लपियो, ब्रह्मा वीसन री सात । —डौ मा

२ देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

वीसनर—देखो 'विस्वानर' (रू. भे.)

वीसनु—देखो 'विष्णु' (रू. भे.)

वीसभुज, वीसभुजाण, वीसभुजा-स पु [स वीस + भुजा] ? सका-
नरेण रावण । (भ्र. मा.)

उ०-१ साफल जुधा वीसभुज आसुर, दीन निवाजण अनुज
सहीदर । बोले साख त्रिकुट लिछमीवर, उमग रीसवाळो प्रवधेस्वर ।
—र. ज. प्र.

उ०-२ सुत आत कटै सक घोट वधे धक, वीसभुजाण विचारियो
जी । निरवीजां वांनर नेम गमुधर, धेस इसौं मन धारियो जी ।
—र. रू.

स स्त्री.—२ दुर्गा, महामाया ।

वि० —जिसके वीस भुजाएँ हो ।

रू. भे.—वीसभुज, वीसभुजा, वीसभूजा ।
 वीसभुजाळ—१ देखो 'वीसभुजाळी' (मह., रू. भे)
 २ देखो वीसभुजाळी' (मह., रू. भे)
 वीसभुजाळी—स स्त्री.—देवी, दुर्गा, महामाया ।
 रू. भे —वीसभुजाळी, वीसाभुजाळी ।
 मह., रू. भे.—वीसभुजाळ वीसभुजाळ, ।
 वीसभुजाळी—वि —जिसके वीस भुजाएँ हो ।
 स पु —लकानरेश रावण ।
 मह., रू. भे —वीसभुजाळ, वीसभुजाळ ।
 वीसभूजा—देखो 'वीसभुजा' (रू. भे)
 उ०—देवी भूतडा अम्मरी वीसभूजा, देवी श्रीपुरा भेरवी रूप
 तूजा । देवी राखस घोररं रक्त स्ती, देवी दुरजटा विषकटा
 जम्मदुनी । —देवि
 वीसम, वीसमउ—देखो 'विसम' (रू. भे) (उ २)
 वीसमणी, वीसमवी—क्रि. भ्र. [स. विश्राम] १ आराम करना, ठहरना ।
 उ०—१ इकि डोकरि तिरिण वीसि पाच पूत्र इकि वहुय सउ कुती
 नइ आवासि वटैवाहु वीसमिया । —सालिभद्र सूरि
 उ०—२ सुगुरु साथिय हीण घणु भमिया, विसम वाट किहाइ
 न वीसमिया । वसइ जै जिनमदिरि सीयलइ, विहु परं तीहै तापु
 सही टलइ । —जयसेखर सूरि
 उ०—३ सीतल सीलछाया वीसमउ, भावना नीरिहिं सीचिउ
 घरउ । फुल पत्र वार देवलोक जाणि, एह व्रक्ष नउ फल मुकति
 निरवाणि । —वस्तिग
 २ शयन करना, सोना ।
 उ०—छायल फूल विछाय, वीसमती वरजागदं । गैमर गोरी राय,
 तिरण आमास भडाविया । —सोभा हीमालावत री गीत
 ३ अवसान होना, मरना ।
 उ०—'मान' हर 'माल' हर 'अमर' हर वीसमै, अन पहू श्रीसरं नकी
 आया । असुर दळ ऊपटं, आज हू अकलौ, जुडन कज पवारी 'स्याम'
 जाया । —कछवाहा सुजाणसिध स्यामसिधौत सेखावत री गीत
 वीसमणहार, हारो (हारी), वीसमणियो—वि० ।
 वीसमिओडी, वीसमियोडी, वीसम्योडी—भू० का० कृ० ।
 वीसमीजणी, वीसमीजवी—भाव वा० ।
 वीसमणी, वीसमवी, वीसम्मणी, वीसम्मवी—रू. भे. ।
 वीसमियोडी—भू. का. कृ.—१ विश्राम किया हुआ आराम किया हुआ,
 ठहरा हुआ । २ शयन किया हुआ, सोया हुआ । (३) अवसान
 हुवा हुआ, मरा हुआ ।
 (स्त्री. वीसमियोडी)

वीसमी, वीसमै—देखो 'विसम' (रू. भे)
 उ०—१ हुईय कामिनि रूपि निरूपमी, रहिउ भीम तमी मुख
 वीसमी । बहुल भक्ष मनुक्ष करं करी, गयउ सौ तडि कीचक सुंदरी ।
 —सालिसूरि
 उ०—२ उठं हसन दळ लिया अभूता, हिलियो महण क दक्खण
 हूता । श्री वीसमै दिवस खडि आयो, लेखवता मग मास न लायो ।
 —रा रू.
 वीसमी—१ देखो 'विसम' (रू. भे)
 उ०—१ मरै घणु गाजियं जिकी सादूळ महि, सत्रा चा ढोल सिर
 सकै किम 'जसो' सहि । वयण घण सामळं रहै किम वीसमी, सुपह
 सादूळ कुणि गिएँ आपा समी । —हा फा.
 उ०—२ 'गोइद' पेखि जैसळगिरी, वाध वीसमी वीरवर । रिण-
 वार राण 'अमरेश' रा, कुरंगा जेम गया कुअर । —गु रू. व.
 २ देखो 'वीसवी' (रू. भे.)
 वीसम्मणी, वीसम्मवी—देखो 'वीसमणी, वीसमवी' (रू. भे)
 उ०—पखा करै अछर विहू पासं, पखणि सेव सचपै पाव । सिरदारा
 पाथरि वीसम्मियो, समहरि निसभरि 'मान' सुजाव ।
 —सुरताण मानावत री गीत
 वीसम्मणहार, हारो (हारी), वीसम्मणियो—वि० ।
 वीसम्मिओडी, वीसम्मियोडी, वीसम्म्योडी—भू० का० कृ० ।
 वीसम्मोजणी, वीसम्मोजवी—भाव वा० ।
 वीसम्मियोडी—देखो 'वीसमियोडी' (रू. भे)
 (स्त्री वीसम्मियोडी)
 वीसर—स. स्त्री —१ भूल, विस्मरण ।
 २ देखो 'विसर' (रू. भे.)
 वीसरणी—वि०—भूलने वाला, विस्मरण होने वाला ।
 वीसरणी, वीसरवी—देखो 'विसरणी, विसरवी' (रू. भे.)
 उ०—१ ताहरा एकण वहु कह्यो, "वीजो तो किण ही विध विसारं
 न पढे, जो सावण लागतं स्यु आपा कुवरजी नु जुदी जुदी गोठा
 करी । भीतर राखा । आदमी वागिया सारा नु अमला-पाणिया सु
 गळतान राखा ती वीसर जावं । —कुवरवी साखला री वारता
 उ०—२ लिब लागी तूटै नही, लिब अतर की तार । लागत ही
 सु वीसरै, हरीया तन की सार । —अनुभववाणी
 उ०—३ कयो वीसरं दान कयो वीसरं मान कयो वीसरं जुगति
 सु जीमियो धान । कयो वीसरं साप नै सीस री घाव, कयो वीसरं
 वैरिया जदि पढे दाव । —मेहोजी गीदारा थापन
 उ०—४ मोताज अम्हा हरवळ मिळण, सौ कुळवाट न वीसरू ।
 'गोरधन' कियो 'गजवध' अग्र, कळह आप अग्र में करू ।
 —सू प्र

उ०—५ दिन निस्सि माधव देखवा, हीयडा माहि हाम । भूख
त्रिखा निद्रा नही, बीसरिया सवि काम । —मा. का प्र.

बीसरणहार, हारी (हारी), बीसरणियो—वि० ।

बीसरिओडो, बीसरियोडो, बीसरघोडो—भू० का० कृ० ।

बीसरीजणी, बीसरीजवो—कर्म वा० ।

बीसराणी, बीसरावो—देखो 'विसराणी, विसरावो' (रू. भे.)

उ०—हीरा तणी सहेलिया, दुरस दिलासा दीन । बीसराई उण
बात नै, नागर ग्यात नवीन । —वगसीराम प्रोहित री बात

बीसराणहार, हारी (हारी), बीसराणियो—वि० ।

बीसरायोडो—भू० का० कृ० ।

बीसराईजणी, बीसराईजवो—कर्म वा० ।

बीसरायोडो—देखो 'विसरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरायोडो)

बीसरावणी, बीसराववो—देखो 'विसराणी, विसरावो' (रू. भे.)

बीसरावणहार, हारी (हारी), बीसरावणियो—वि० ।

बीसराविओडो, बीसरावियोडो, बीसराव्योडो—भू० का० कृ० ।

बीसरावोजणी, बीसरावोजवो—कर्म वा० ।

बीसरावियोडो—देखो 'विसरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरावियोडो)

बीसरियोडो—देखो 'विसरियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बीसरियोडो)

बीसवळो—स. पु.—कलेजे पर पानी से भरी एक थैली ।

बीसविसवा, बीसविसा, बीसवीसा, बीसवीस्वा—देखो 'विसवावीस'
(रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—१ बीसविसवा भक्ती कर, एक विसवो दे नंद । पुण्य कीनो
राक्षस भख, होय जावं भदादुद । —स्त्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ जमवान सु एवजखान जिसा, वप रीस अमापक बीस-
विसा । यधि जोड अचहल संद वळ, भुज सार लियो जिणु भार
भळ । —रा रू.

उ०—३ दिल उजळ 'सिवा' अवनोमा दूदा, वडपण दाखा
बीसवीसा । कपडा वीसा न देखे कमधज, देखीजे आखरा वीसा ।
—सिधसिध मेडतिया री गीत

बीसवो—वि०—जिसका स्थान कम से उन्नीस के बाद हो ।

रू. भे —बीसवो, बीसवो बीसवो ।

बीससणी, बीससवो—क्रि० स०—१ विश्वास करना, ऐतबार करना ।

उ०—१ मन उल्हसइ कलवो तणा, ऊससइ वेलि वितान । लोक
लोकनइ बीससइ, विणुसीइ जवाना पान । —नळदवती रास

उ०—२ विदुरि पवाचिठ लेखु, दुरयोधन मन बीससउं । एसु
पुरोहित वेसु, कालु तुम्हारउ जाणिजउ । —सालिभद्र सूरि

क्रि० अ०—२ विश्वास होना, ऐतबार होना ।

बीससणहार, हारी (हारी), बीससणियो—वि० ।

बीससिओडो, बीससियोडो, बीसस्योडो—भू० का० कृ० ।

बीससीजणी, बीससीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

बीससाकरण—स. पु. [स विश्साकरण] रूप, रस, गद्य एव स्पर्श का
अपने से भिन्न रूप, रस, गद्य एव स्पर्श मे मिलने से उस वर्णादि
का मेल । (जैन)

बीससियोडो—भू० का० कृ०—१ विश्वास किया हुआ, ऐतबार किया
हुआ ।

२ विश्वास हुआ हुआ, ऐतबार हुआ हुआ ।

(स्त्री. बीससियोडो)

बीसहत, बीसहती—सं स्त्री.—१ देवी, दुर्गा, महामाया ।

२ सरस्वती गिरा, भारती ।

उ०—चिंता विधन विनासणी, कमळासणी सगत । बीसहती हस-
वाहणी, माता देह सुमत । —अग्यात

रू. भे.—बीसहत, बीसहती, बीसहत्य, बीसहथी, बीसहथ, बीसहथि,
बीसहथी, बीसहथ्य, बीसहथ्यो, बीसहत्य, बीसहथी, बीसहथ,
बीसहथि, बीसहथो, बीसहथ्य, बीसहथ्यो, हासवीसाळी ।

बीसहती—देखो 'बीसहथी' (रू. भे.)

बीसहत्य, बीसहथी—देखो 'बीसहती' (रू. भे.)

उ०—नमो कूखमांडी नमो काति काळी, नमो त्रिपूरा तोतला प्रेत
ताळी । नमो बीसहथी नमो चीर सगा, नमो उडळा श्रौडणी गोम
अगा । —मा. वचनिका

बीसहथी—देखो 'बीसहथी' (रू. भे.)

बीसहथ. बीसहथि, बीसहथो—देखो 'बीसहती' (रू. भे.)

उ०—१ तउ बीसहथि विरोळि, तइ बीसहथि विरोळियइ । भावठि
भागइ तू तणइ, हिच्यउ सु कांइ हिगोळि । —अ. वचनिका

उ०—२ कहै श्रीरि केकाण, सेल असुराण करू सळ । बीसहथी
हथवीस, ओक पाळ रत ऊजळ । —सू. प्र.

उ०—३ खळहळां खत चळवळा खापर, बीसहथ भर विळकुळी ।
मह वळा चव रघुनाथ अमला, मह सुसवद मडळी । —र ज. प्र.

उ०—४ वूरुइ किंसू वापडा मानव, बीसहथी सह लहुइ विचार ।
गवरो जाणु लाडगहेली, ईसर देव तणा अधिकार ।

—महादेव पारवती री वेलि

बीसहथो—स. पु.—लकाधिपति रावण ।

वि.—बीस भुजाओ को धारण करने वाला ।

रू. भे — वीसहृतौ, वीसहृत्यौ, वीसहृत्यौ ।

वीसहृत्य, वीसहृत्यौ—देखो 'वीसहृतौ' (रू. भे)

वीसहृत्यौ—देखो 'वीसहृत्यौ' (रू. भे)

वीसहे'क—वि.— करीव वीस, लगभग वीस ।

उ०—तद अं मोटियार था, सतावी खड़ कोसा पाचा-साता आय पोहता । आण वतळाया अं घिरीया, सौ रीठ चागौ । सौ आदमी वीसहे'क सु वेणीदास रा बेटा दोय, भतीजा दस, बीजा भाई वध खरळ काम आया । —कुंवरसी साखला री वारता

वीसाभुजाळी—देखो 'वीसभुजाळी' (रू. भे.)

उ०—देवी रगत नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरूप अग । देवी बाळ जूवा न्रघ वेळ वाळी, देवी विस्व रखवाळ वीसांभुजाळी । —देवि.

वीसाम, वीसांमठ—देखो 'विसराम' (रू. भे)

उ०—१ न लियइ वीसांम उन विरहइ, पवन वेग तं वाटे वहइ । कहइ उडइ पळी आगासि, प्रगडइ आया पूगळ पासि । —ढो मा

उ०—२ ललित सरोवर पेखियइ ए, वली सत्ता नी वावि । तिहा वीसांमठ लीजियइ ए, वड नइ चउतर आवि । —स कु

वीसांमणौ, वीसांमवौ—देखो 'विसरामणौ, विसरामवौ' (रू. भे)

वीसांमणहार, हारौ (हारी), वीसांमणियो—वि० ।

वीसांमिओडौ, वीसांमियोडौ, वीसांम्योडौ—भू० का० कृ० ।

वीसांमीजणौ, वीसांमीजवौ—कर्म वा० ।

वीसांमियोडौ—देखो 'विसरामियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री, वीसांमियोडौ)

वीसांमौ—देखो 'विसराम' (मह, रू. भे)

उ०—भारवाहक नइ कहा भला, वीसामा वीतरागी जी । माथा थौ मूकइ कर्ष लहइ, मारग माहि लागी जी । —स कु

वीसार—स स्त्री—१ विस्मरण, भूल ।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

वीसारण, वीसारणौ—देखो 'विसारणौ' (रू. भे)

उ०—दुख-वीसारण, मनहरण, जउ ई नाद न हुति । हियडउ रतन-तळाव ज्यउ, फूटी दह दिसि जति । —ढो मा.

वीसारणौ, वीसारवौ—देखो 'विसारणौ, विसारवौ' (रू. भे)

उ०—१ साहजादा अजीम साअतखा सग, अजमेर में सहायक राखे अवरग । इनायत खान जोधपुर दोड आ वीसार, असुरा की घोर को न जोर को न पार । —रा. रू.

उ०—२ थै सिध्दावठ, सिध करउ, पूजठ थाकी आस । मत वीसारउ मन-थकी, उवा छइ थाकी दास । —ढो मा.

उ०—३ आय न्रपति पूछी विध एही, सावधान हुय धरम सनेही । विखे अग्यान धरम वीसारौ, सूरजकुळ चौ धरम सभारौ । —सू प्र.

उ०—४ ध्रम सनेह कुळ मारग धारा, प्राणहूत वधि आप पियारा । आप वचन में सीस अघारै, वायक प्रिया कहण वीसारै । —सू प्र

वीसारणहार, हारौ (हारी), वीसारणियो—वि० ।

वीसारिओडौ, वीसारियोडौ, वीसारयोडौ—भू० का० कृ० ।

वीसारीजणौ, वीसारीजवौ—कर्म वा० ।

वीसारियोडौ—देखो 'विसारियोडौ' (रू. भे)

(स्त्री. वीसारियोडौ)

वीसावत—सं पु—वीका राठोडो की एक शाखा या उक्त शाखा का व्यक्ति ।

उ०—अरु प्राणकुवर निरवाण रं दोय कवर हुआ, अमरीजी वीसीजी । तिण रा अमरावत वीका है माजन रा परधान । अरु वीसीजी रा वीसावत वीका है भूकरकै रा परधान । —द दा

वीसास—देखो 'विस्वास' (रू. भे)

उ०—१ काई कीयो कपटी तणौ रे, असुर तणौ वीसास । राय अह्यौ हिव पदमणौ नै, गढनौ करसी आस । —प च चौ.

उ०—२ जब कह्यो मात पं अघट जोय हिन मागहु अछथा फेर होय । उण कयौ मात इक पुत्र आस, सौ वियणं कुंप केसी वीसास । —रामदान लाळस

उ०—३ पेस करा जो पदमणौ जी, तुम उपजे वीसास । विण वीसास किसी परं जी, व्है सहनै रग रास । —प. च चौ.

वीसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे)

वीसासणौ, वीसासवौ—देखो 'विस्वासणौ, विस्वासवौ' (रू. भे.)

उ०—कहि आलिम कंशी परंजी, तुम वीसासउ मन । 'लालचद' कहै साभलीजी, वादल कहेज वचन । —प च चौ.

वीसासणहार, हारौ (हारी), वीसासणियो—वि० ।

वीसासिओडौ, वीसासियोडौ, वीसास्योडौ—भू० का० कृ० ।

वीसासीजणौ, वीसासीजवौ—कर्म वा० ।

वीसासियोडौ—देखो 'विस्वासियोडौ' (रू. भे.)

(स्त्री वीसासियोडौ)

वीसासौ—देखो 'विस्वास' (अल्पा, रू. भे)

उ०—हिव नव श्रीवै कं पचानुत्तर सार, चेईहर अणसय त्रेवीसा सुविचार । प्रत्येकेप्रतिमा वीसासौ तिहा जाण, अडनीस सहस सत-साठ अछै गुण खाण । —वृ स्त

वीसियो—स पु—एक प्रकार का घास विशेष ।

रू. भे.—वीस्यौ ।

बीसी-स. स्त्री—१ समय, अवधि ।

२ बीसमी शतान्दी ।

३ वह स्थान जहा लागत भदा करके शाकाहारी भोजन प्राप्त किया जाता है, भोजनालय ।

४ बीस वर्ष का समय । (युग)

५ एक ही प्रकार के बीस पदार्थों का समूह, कोडी ।

६ गणना का वह प्रकार, जिसमे बीस-बीस चीजों के समूह को एक-एक इकाई मान कर रखा जाता है ।

७ ज्योतिष शास्त्र मे साठ सवत्सरो के तीन विभागों में से कोई एक विभाग ।

वि० वि०—इनमे प्रथम ब्रह्मावीसी, द्वितीय विष्णुवीसी एव तृतीय रुद्रवीसी कहलाती है ।

(१) ब्रह्मावीसी—(१) प्रभव (२) विभव (३) शुक्ल (४) प्रमोद (५) प्रजापति (६) अगिरा (७) श्रीमुख (८) भाव (९) युवा (१०) घाना (११) ईश्वर (१२) बहुधान्य (१३) प्रमाथी (१४) विक्रम (१५) वृष (१६) त्रिभानु (१७) सुभान (१८) पार्थिव (१९) तारण (२०) व्यग्र ।

(२) विष्णुवीसी—(१) सर्वजित (२) सर्वघारी (३) विरोधी (४) विकृति (५) खर (६) नदन (७) विजय (८) जय (९) मन्मथ (१०) दुर्मुख (११) हेमलम्ब (१२) विलव (१३) विकारी (१४) शार्ङ्गरी (१५) प्लव (१६) शुभकृत (१७) शोभन (१८) क्रोधी (१९) विश्वावसु (२०) पराभव ।

(३) रुद्रवीसी—(१) प्लवग (२) कीलक (३) साम्य (४) साधारण (५) विरोधकृत (६) परिधावी (७) प्रमादी (८) आनन्द (९) राक्षस (१०) अनल (११) पिगल (१२) कालयुक्त (१३) सिद्धार्थ (१४) रौद्र (१५) दुर्मति (१६) दूँदुभी (१७) रुधिरोग्दारी (१८) रक्ताक्षी (१९) क्रोधन (२०) क्षय ।
८ बीस गाथा, श्लोको या छन्दो का समूह ।

९ जैन मतानुसार बीस विहरमानों के नामों का समूह ।

वि० वि०—देखो 'विहरमाण' ।

रू. भे.—बीसी, बीसी ।

बीसूणी—देखो 'विस्त्राति' (रू. भे.)

बीसूरण, बीसूरणी—देखो 'विसूरण' (रू. भे.)

बीसूरणी, बीसूरबी—१ देखो 'विसूरणी, विसूरबी' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरणी, विसूरबी' (रू. भे.)

बीसूरणहार, हारी (हारी), बीसूरणियों—वि० ।

बीसूरिओडी, बीसूरियोडी बीसूरयोडी—भू० का० कृ० ।

बीसूरीजणी, बीसूरीजबी—भाव वा० ।

बीसूरियोडी—१ देखो 'विसूरियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'विसूरियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बीसूरियोडी)

बीसूविसा, बीसूवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—अपत रहिया 'अखै' 'अजा' 'गोकळ' इसा, रीत खत्रवाट री वीय दीनी रसा । विगाडघी धरम धर तणी बीसूविसा, दियो जळ हाथ सु सात पीढी दिसा ।
—स्यामजी वारहठ

बीसे'क-वि०—बीस के लगभग ।

रू. भे.—बीसे'क ।

बीसेविसा, बीसेवीसा—देखो 'विसवावीस' (रू. भे.)

उ०—तू सूधी तू साधवी, तू नर भक्ति निधान । विधि वाधी वारु विसै, बीसेविसा समान ।
—मा. का. प्र.

बीसोतर-वि०—एक सौ बीस ।

सं पु—चारण जाति जिसमे कुल एक सौ बीस गीत्र हैं ।

उ०—बीसीतर का छोगा, दिल का उदार । जस जुगतेम कुं बखाएँ, सब ही ससार ।
—वा. दा.

रू. भे.—बीसोतर, बीसोतर ।

बीसोतरि, बीसोतरी—देखो 'विसोत्तरि' (रू. भे.)

बीसोत्तर—देखो 'बीसोतर' (रू. भे.)

बीसोत्तरि, बीसोत्तरी—देखो 'विसोत्तरी' (रू. भे.)

बीसी-स. पु—१ बीस की सख्या का वर्ण ।

२ बीस की सख्या का सवत् ।

रू. भे.—बीसी ।

बीसीयो—देखो 'बीसीयो' (रू. भे.)

बीहग—देखो 'विहग' (रू. भे.)

बीहगहो—देखो 'विहग' (अत्पा., रू. भे.)

बीह—देखो 'बी' (रू. भे.)

उ०—निमो हस हसा तणी जोति हरता, निमो काळ ही बीह राखै करता । निमो धरम ही तूअ निस बीह घ्यावै, निमो वडो जण वीण तुवर वजावै ।
—पी. प्र.

बीहड—देखो 'बीहड' (रू. भे.)

बीहणी, बीहबी—देखो 'बीहणी, बीहबी' (रू. भे.)

उ०—१ आसराव, नाहल सिकार रमती हुतो सु बडी दूठ राजवी हुवी, तिण नू देवी बीहाडण लागी सु आसराव बीहै नही नै बाण हिरण नू साधियो हुतो सु बाहधी, तरै देवी खुश हुई नै आसराव नू कहण लागी, तोनू हू सुी तू जाणै सु माग ।
—नैणसी

उ०—२ वीहडो जिक्के मरणा सुं वीहै, रहज्यो जिकोज साथ रहै ।
सिर साटै देसी सादावत, कौट म वीहै 'भोज' कहै ।

—भोजराज रूपावत री गीत

उ०—३ वोलि न सकू वीहतउ, हेक ज वात हुई । राजि अणूठा
वाहडउ, माळवणी भूई । —डो मा.

उ०—४ जसु अठार मुकुट वढ राजा, सेव करइ कर जोड जी ।
कोणिक थी वीहतउ राय चेडउ, कूप पडचउ बल छोड जी ।

—स. कु

वीहरणहार, हारो (हारी), वीहणियो—वि० ।

वीहणोडो, वीहियोडो, वीहचोडो—भू० का० कृ० ।

वीहीजणो, वीहीजवो—भाव वा० ।

वीहर—देखो 'वहीर' (रू भे)

वीहरणो, वीहरवो—देखो 'विहरणो विहरवो' (रू. भे.)

उ०—तिरसुळ धीव उरमऊ ताय, फळ जहु चवर म वर वीहरै
फवाय । सिर चकर वीहर कर काट सोय, हुकार डकर धमजगर
होय । —रामदान लाळस

वीहरणहार, हारो (हारी), वीहरणियो—वि० ।

वीहरिओडो, वीहरियोडो, वीहरचोडो—भू० का० कृ० ।

वीहरीजणो, वीहरीजवो—कर्म वा० ।

वीहरियोडो—देखो 'विहरियोडो' (रू भे)

(स्त्री वीहरियोडी)

वीहळ, वीहल—१ देखो 'वीहली' (रू. भे.)

२ देखो 'वीहल्ल' (रू. भे.)

३ देखो 'विहल्ल' (रू भे)

४ देखो 'वेहळ' (रू भे)

५ देखो 'वेहल' (रू भे)

वीहळा—स स्त्री—देवी, दुर्गा, महामाया ।

उ०—देवी चद्रघटा महम्माय चढी, देवी वीहळा अचटा वड वड्डी ।
देवी जम्मघटा वदीजे जडवा, देवी साकणी डाकणी रुढ सव्वा ।

—देवि

वीहळी, वीहली—स. स्त्री—१ वह स्त्री जिसका पति पास मे नही हो,
वियोगिनी ।

उ०—बीज न देखे वीहलिया, पीव परदेम थयाह । आपण लीये
ऊनूकडा, गळि लागे सिहराह । —डो मा.

२ देखो 'विहल्ल' (अल्पा, रू भे)

वीहलो—स. पु.—वीहल्ल राजपूत वंश का व्यक्ति ।

वि०—हृद से ज्यादा, अत्यधिक ।

उ०—देख्यो दरियो भरियो जल घणैजी, तव वोलै नरनाथ ।
वारिधि पूरी हल वीहला हुइ रे, मुछा घालै हाथ । —प च वी
देखो 'विहल्ल' (अल्पा रू भे.)

वीहल्ल—स पु.—एक राजपूत वंश ।

उ०—चारडा हरीयड डोडीया, वेगि करी रायगणि गया । जय-
वता यादव वीहल्ल, नर निकुभ गिरुया गोहिल्ल । —का. दे प्र
रू. भे.—वीहळ, वीहल

वीहसणो, वीहसवो—क्रि० अ०—१ हसना, हर्षित होना ।

उ०—विसराळ त्रवाळ घुरै रवि वीहस, लाह आखेट लकाळ ।
अजेरा जेरण घेर असगा, फेर दुहाई फाळ । —मा वचनिका
१ हिनहिनाना ।

उ०—साठ तुरिय पाखरथा सजुत, वीसलदं साथहि वीहसत ।
जाई परभोमई सचरघो, कोई न जाणइ साभरचा-राव । उल्लिगाणउ
होई सचरघो, देस उडीसइ पहुता जाई । —बी. दे.

वीहाण—१ देखो 'विहाण' (रू भे)

२ देखो 'विहाणी' (रू भे)

वीहाणी—देखो 'विहाणी' (रू भे)

वीहाणू—१ देखो 'विहाण' (रू भे)

२ देखो 'विहाणी' (रू भे)

वीहाणो—१ देखो 'विहाण' (अल्पा ' रू भे)

२ देखो 'विहाणी' (रू. भे.)

वीहा—देखो 'विवाह' (रू. भे)

उ०—तद वीरू जाय कुवर नु कही, "जी माहाराज फुरमावें छै,
श्री नाळे र पाछो देवो । वीजी वीहा सु जोख छै ती एक-दोय करी ।"
तद कुवर कह्यो, "वीरू तू अरज करे, जो म्हारें ती पण छै-सरीक
री नाळे र आयो पाछो न फेरु । —कुवरसी साखला री वारता
वीहाडणो, वीहाडवो—१ देखो 'वीहाणो, वीहावो' (रू भे)

उ०—आसराव, नाहल सिकार रमती हुतो सु वडो दूठ राजवी
हवो, तिरा नू देवी वीहाडण लागी सु आसराव वीहै नही नै वाण
हिरण नू साधियो हुतो सु बाह्यो, तरै देवी खुस हुई नै आसराव नू
कहण लागी, तोनू ह तूठी, तू जाणो सु माग । —नैणसी

२ देखो 'वीहावणो, वीहाववो' (रू. भे.)

वीहाडणहार, हारो (हारी), वीहाडणियो—वि० ।

वीहाडिओडो, वीहाडियोडो, वीहाडचोडो—भू० का० कृ० ।

वीहाडीजणो, वीहाडीजवो—कर्म वा० ।

वीहाडियोडो—१ देखो 'वीहायोडो' (रू भे)

२ देखो 'वीहावियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीहाडियोडी)

वीहाडणी, वीहाडवो—१ देखो 'वीहाणी, वीहावो' (रू भे.)

२ देखो 'वीहावणी, वीहाववो' (रू. भे.)

वीहाडणहार, हारो (हारी), वीहाडणियो—वि० ।

वीहाडिओडो, वीहाडियोडो, वीहाडयोडो—भू० का० कृ० ।

वीहाडोजणी, वीहाडोजवो—कर्म वा० ।

वीहाडियोडी—१ देखो 'वीहायोडी' (रू भे.)

२ देखो 'वीहावियोडी' (रू भे.)

(स्त्री वीहाडियोडी)

वीहाणी, वीहावो—१ देखो 'विवाहणी, विवाहवो' (रू भे.)

२ देखो 'वीहाणी, वीहावो' (रू भे.)

३ देखो 'वीहावणी, वीहाववो' (रू भे.)

वीहाणहार, हारो (हारी), वीहाणियो—वि० ।

वीहायोडी—भू० का० कृ० ।

वीहाईजणी, वीहाईजवो—कर्म वा० ।

वीहायोडो—१ देखो 'विवाहियोडो' (रू भे.)

२ देखो 'वीहायोडो' (रू भे.)

३ देखो 'वीहावियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीहायोडी)

वीहार—देखो 'विहार' (रू. भे.)

उ०—नवलाख निवतरं सहत नूर, नित दिवस वदे रंगरळी पूर ।
आपरी इउ हीज लीला उदार, वड सगत करण जे जग वीहार ।

—रामदान लाळस

वीहाव—देखो 'विवाह' (रू भे.)

उ०—तद ठगे कही, "फळाणें रा वेटा हुवो नही?" तद ईयें
कही, राज हुवा छा । तद ठग रं वेटे कही, ती थें म्हाहरा वहनेई
हुवो । फलाणें वरस थाहरो बाप आयो हुतो । तद वीहाव कीयो
हुतो ।

—वृढी ठग राजा री बात

वीहावणी, वीहाववो—क्रि. स १—व्यतीत करना समाप्त करना ।

उ०—वीजा नु परो बीजी काह्नी मेल्हण लागा । तरं देवडे बीजे
घण ही इणा ठाकरा नै कही—मी नु परो अळगो मत मेल्हो ।
तरं इणें ठाकरें कही—कूकडो जिण गाव न हुवं छें तठे ही रात
वीहावें छें ।

—राव चन्द्रसेन री बात

२ देखो 'वीहाणी, वीहावो' (रू भे.)

३ देखो 'विवाहणी, विवाहवो' (रू भे.)

वीहावणहार, हारो (हारी), वीहावणियो—वि० ।

वीहावियोडो, वीहावियोडो, वीहावयोडो—भू० का० कृ० ।

वीहानोजणी, वीहानोजवो—कर्म वा० ।

वीहाडणी, वीहाडवो, वीहाडणी वीहाडवो, वीहाणी' वीहावो

—(रू. भे.)

वीहावियोडी—भू० का० कृ०—१ व्यतीत किया हुआ, समाप्त किया हुआ ।

२ देखो 'वीहायोडी' (रू भे.)

३ देखो 'विवाहियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वीहावियोडी)

वीहर—स. पु —वातचक्र, हवा का चक्र ।

वि० वि०—देखो 'बघूली' (रू भे.)

बु—स पु.—१ प्रात काल, सवेरा । (एका)

२ रात्रि का प्रथम प्रहर, प्रदोष । (,)

३ घनपटल । (,)

बुआणी, बुयवो—१ देखो 'वहणी, वहवो' (रू भे.)

उ०—१ प्रतापसिंह नै साम्ही भावतो देखने ठाकर म्यान सूं तल-
वार वारें काढली । घेरो नैहो होवण लाग्यो अरु ठाकर वार करे
रण पे'लीज प्रतापसिंह री तलवार बुई सो ठाकर री माथो वाड
नाक्यो । दुस्मिया रं मन चीतो वही । —अमरचून्डोउ०—२ जिण मारग केहर बुयो, रज लागी तिरणाह । वे वन ऊभा
सुकसी, नह चरसी हिरणाह । —वा. दा.

२ देखो 'बोवणी, बोववो' (रू. भे.)

बुआणहार, हारो (हारी), बुआणियो—वि० ।

बुआओडो, बुआयोडो, बुआडो—भू० का० कृ० ।

बुआईजणी, बुआईजवो—भाव वा० ।

बुआणी, बुआवो—देखो 'वहाणी, वहावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणी, बोवावो' (रू भे.)

बुआणहार, हारो (हारी) बुआणियो—वि० ।

बुआयोडो—भू० का० कृ० ।

बुआईजणी, बुआईजवो—कर्म वा० ।

बुआयोडो—१ देखो 'वहायोडी' (रू भे.)

२ देखो 'बोवायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बुआयोडी)

बुआरणी, बुआरवो—देखो 'बुहारणी, बुहारणी' (रू भे.)

बुआरणहार, हारो (हारी), बुआरणियो—वि० ।

बुआरियोडो, बुआरियोडो, बुआरयोडो—भू० का० कृ० ।

बुआरीजणी, बुआरीजवो—कर्म वा० ।

बुआरियोडी—देखो 'बुहारियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बुआरियोडी)

बुझारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बुझारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बुझावणो, बुझाववो—१ देखो बहाणो, बहावो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवाणो, बोवावो' (रू. भे.)

बुझावणहार, हारो (हारी), बुझावणियो—वि० ।

बुझाविओडो, बुझावियोडो, बुझाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बुझाबीजणो, बुझाबीजवो—कर्म वा० ।

बुझावियोडो—१ देखो 'बहायोडो, (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बुझावियोडो)

बुझयोडो, बुझोडो—१ देखो 'बहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बुझयोडो, बुझोडो)

बुक—१ देखो 'बक' (रू. भे.)

२ देखो 'बुग' (रू. भे.)

बुकठणो, बुकठवो—क्रि. स —निकालना ।

उ०—है बुकठिआ काकरण हयो, केवा कादण काज कडछे । भाक समू भळकता भाला, धण लं अरिया खाग घडछे ।

—मोहकर्मसिध राठोड री गीत

बुकठणहार, हारो (हारी), बुकठणियो—वि० ।

बुकठियोडो, बुकठियोडो, बुकठयोडो—भू० का० कृ० ।

बुकठीजणो, बुकठीजवो—कर्म वा० ।

बुकठणो, बुकठवो—रू० भे० ।

बुकठियोडो—भू० का० कृ०—निकाला हुआ ।

(स्त्री बुकठियोडो)

बुकठणो, बुकठवो—देखो 'बुकठणो, बुकठवो' (रू. भे.)

बुकठणहार, हारो (हारी), बुकठणियो—वि० ।

बुकठियोडो, बुकठियोडो, बुकठयोडो—भू० का० कृ० ।

बुकठीजणो, बुकठीजवो—कर्म वा० ।

बुकठियोडो—देखो 'बुकठियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बुकठियोडो)

बुकानो—देखो 'बुकानो' (रू. भे.)

बुखार—१ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुखार' (रू. भे.)

बुखारी—१ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

बुखारी—देखो 'बुखारी' (रू. भे.)

उ०—काय भाई मोमिणी श्री धन सची, सचि सचि छलो बुखारी श्री धन खाकि जी भाई होयसी, खाली रह्या बुखारी ।

—रुदोजी नेण

बुग—देखो 'बुग' (रू. भे.)

बुगचियो, बुगचो—देखो 'बुगचो' (अल्पा, रू. भे.)

बुगचो—देखो 'बुगचो' (रू. भे.)

बुगती—देखो 'बुगती' (रू. भे.)

उ०—“छो हसता ।” बीदणी तो आ वात कैय अनेज वेहल सूँ हेटं कूदगी । फूदी व्हे ज्यूँ केर केर उडती फिरी । थोडी ताळ में राता-चुट्टु ढालुवा सूँ खोळी भरने पाछी प्रायगी । बुगती रा पाणी सू वानं सावळ घोया । ठारया ।

—फुलवाडी

बुगदी—देखो 'बुगदी' (रू. भे.)

बुगदो—देखो 'बुगदो' (रू. भे.)

बुगघ्यानी—देखो 'बुगघ्यानी' (रू. भे.)

बुगर—देखो 'बुगर' (रू. भे.)

बुगलाभक्त—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

बुगलाभक्ति, बुगलाभक्ती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

बुगलाभगत—देखो 'बुगलाभक्त' (रू. भे.)

बुगलाभगति, बुगलाभगती—देखो 'बुगलाभक्ती' (रू. भे.)

बुगलियो—१ देखो 'बुगलियो' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (अल्पा, रू. भे.)

बुगलो—१ देखो 'बुगलो' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (अल्पा, रू. भे.)

बुगस—१ देखो 'बुगस' (रू. भे.)

२ देखो 'बक' (मह, रू. भे.)

बुगगी—देखो 'बुगगी' (रू. भे.)

बुडको—देखो 'बुडको' (रू. भे.)

बुडचणो, बुडचवो—देखो 'बुडचणो, बुडचवो' (रू. भे.)

बुडचणहार हारो (हारी), बुडचणियो—वि० ।

बुडचियोडो, बुडचियोडो, बुडचयोडो—भू० का० कृ० ।

बुडचीजणो, बुडचीजवो—कर्म वा० ।

बुडचियोडो—देखो 'बुडचियोडो' (रू. भे.)

बुजी—देखो 'बुजी' (रू. भे.)

बुटोवटी, बुटावटी—देखो 'बुटावटी' (रू. भे.)

बुट्टणो, बुट्टवो—देखो 'बूठणो, बूठवो' (रू. भे.)

उ०—तहिं अरजुणि मिल्हिक, आगिरोय सरु अगि उट्टीय । बहु दुक्खु मणि चितवीय, पडसेन धण नयणि बुट्टीय ।

—सालिभद्र सुरि

वृद्धणहार, हारी (हारी), वृद्धणियो—वि० ।

वृद्धिओडी, वृद्धियोडी, वृद्ध्योडी—भू० का० कृ० ।

वृद्धीजणो, वृद्धीजवो—भाव वा० ।

वृद्धियोडी—देखो 'वृद्धियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृद्धियोडी)

वृठणो, वृठवो—देखो 'वृठणो, वृठवो' (रू. भे.)

उ०—१ गुलक्यारी क्यारा, चदनगारा, फूल अधिक फावदा है।
चावरिया छूट, ज्युं घण वृठ, ऊजळ जळ मळकदा है।

—गज-उद्धार

उ०—२ अठी सतारी अमीर जहु सीवासु जुटिया आरुं, वृठिया आतसा आग प्रथी व्हे अचव । जैतवादी 'चापा' 'कुं'पा' जुटिया सिव जीउ जारुं, खागा माल अठी सुं उठीया जैतखम ।

—पहाडखा आडी

वृठणहार, हारी (हारी), वृठणियो—वि० ।

वृठिओडी, वृठियोडी, वृठ्योडी—भू० का० कृ० ।

वृठीजणो, वृठीजवो—भाव वा० ।

वृठियोडी—देखो 'वृठियोडी' (रू. भे) (स्त्री वृठियोडी)

वृठी—देखो 'उठी' (रू. भे)

वृठं—देखो 'उठं' (रू. भे)

वृठुणो, वृठुवो—देखो 'वृठुणो, वृठुवो' (रू. भे)

उ०—सोळसं समत, वरस छहतरं वयहुं । सुकळ पक्ख भाद्रवै,
धुम्मि वरखा घण वृठुं ।

—गु रू व.

वृठुणहार, हारी (हारी), वृठुणियो,—वि० ।

वृठिओडी, वृठियोडी, वृठ्योडी—भू० का० कृ० ।

वृठ्ठीजणो, वृठ्ठीजवो—भाव वा० ।

वृठ्ठियोडी—देखो 'वृठ्ठियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृठ्ठियोडी)

वृडणो, वृडवो—१ देखो 'वृडणो, वृडवो' (रू. भे)

२ देखो 'उडणो, उडवो' (रू. भे)

वृडणहार, हारी (हारी), वृडणियो—वि० ।

वृडिओडी, वृडियोडी, वृड्योडी—भू० का० कृ० ।

वृडीजणो, वृडीजवो—भाव वा० ।

वृडवणो, वृडववो—देखो 'वृडवणो, वृडवो' (रू. भे)

२ देखो 'उडवणो उडवो' (रू. भे)

उ०—जग म्हाट विकट वृडव खरडक, डहकत डारण बीर डहडक ।
गति घण गंहेक छाथीये गयणक, 'हीरा' ऊपरि वीरहक ।

—हीरा मागळिया री गीत

वृडवणहार, हारी (हारी), वृडवणियो—वि० ।

वृडविओडी, वृडवियोडी, वृडव्योडी—भू० का० कृ० ।

वृडवीजणो, वृडवीजवो—भाव वा० ।

वृडवियोडी—१ देखो 'वृडवियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'उडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृडवियोडी)

वृडियोडी—१ देखो 'वृडियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'उडियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृडियोडी)

वृड्ठी—देखो 'वृड्ठी' (रू. भे)

वृडण—देखो 'वृडण' (रू. भे)

वृड्ठापो—देखो 'वृड्ठापो' (रू. भे)

वृड्ठी—देखो 'वृड्ठी' (रू. भे)

वृड्ठी—देखो 'वृड्ठी' (रू. भे.)

उ०—तूं हिज आज जुगाद तूं, तू वृड्ठी वाळी । तुहिज तरण किसोर
तं माता मतवाळी ।

— गज उद्धार

(स्त्री वृड्ठी)

वृणणो, वृणवो—१ देखो 'वृणणो, वृणवो' (रू. भे)

२ देखो 'वृणणो, वृणवो' (रू. भे)

वृणणहार, हारी (हारी), वृणणियो—वि० ।

वृणिओडी, वृणियोडी, वृण्योडी—भू० का० कृ० ।

वृणीजणो, वृणीजवो—कर्म वा० ।

वृणवाणो वृणवावो—१ देखो 'वृणवाणो, वृणवावो' (रू. भे)

२ देखो 'वृणवाणो, वृणवावो' (रू. भे)

वृणवाणहार, हारी (हारी) वृणवाणियो—वि० ।

वृणवायोडी—भू० का० कृ० ।

वृणवाईजणो, वृणवाईजवो—कर्म वा० ।

वृणवायोडी—१ देखो 'वृणवायोडी' (रू. भे)

२ देखो 'वृणवायोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृणवायोडी)

वृणवाई—देखो 'वृणवाई' (रू. भे)

वृणवाणो, वृणवावो—१ देखो 'वृणवाणो, वृणवावो' (रू. भे)

२ देखो 'वृणवाणो, वृणवावो' (रू. भे)

वृणवाणहार, हारी (हारी), वृणवाणियो—वि० ।

वृणवायोडी—भू० का० कृ० ।

वृणवाईजणो, वृणवाईजवो—कर्म वा० ।

वृणवायोडी—१ देखो 'वृणवायोडी' (रू. भे)

२ देखो 'वृणवायोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृणवायोडी)

वृणवावणो, वृणवाववो—१ देखो 'वृणवाणो वृणवावो' (रू. भे)

२ देखो 'वृणवाणो, वृणवावो' (रू. भे)

वृणवावणहार, हारी (हारी), वृणवावणियो—वि० ।

वृणाविओडी, वृणावियोडी, वृणाव्योडी—भू० का० कृ० ।

वृणावीजणो, वृणावीजवो—कर्म वा० ।

वृणावियोडी—१ देखो 'वृणावियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'वृणावियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बुणावियोडी)

बुणियोडी—१ देखो बुणियोडी' (रू भे)

२ देखो 'बुणियोडी' (रू भे.)

(स्त्री बुणियोडी)

बुघर—१ देखो 'उघर' (रू भे)

२ देखो 'भूघर' (रू भे)

उ०—बल्य राठोडा ऊ कही, साभल्य बुघर भेव । विसनोई करिस्या
अकर, हुकम करो हरिटेव । —केसौजी गाडण

बुपर—देखो 'ऊपर' (रू भे)

उ०—उसण येक गजमुख लभोदर, धरणी कनक मुकुट फरसीघर ।
पीतवर सोभा तन बुपर, बिनायक दायक विद्या वर ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

उ०—२ मुहँ अणिया बुपर नाकती 'मघकर', भव चँ मन आतरौ
भयो । सहली दिली हुई अणसकती, गहली री बेव्हडी गयो ।

—राजा माधोसिध कछवाहा री गीत

बुर—देखो 'बुर' (रू भे.)

बुरकी—देखो 'बुरकी' (रू भे)

बुरडणी, बुरडनी—देखो 'बुरडणी बुरडनी' (रू भे.)

बुरडणहार, हारौ (हारौ), बुरडणियो—वि० ।

बुरडिओडी, बुरडियोडी, बुरडयोडी—भू० का० कृ० ।

बुरडीजणी, बुरडीजनी—कर्म वा० ।

बुरडियोडी—देखो 'बुरडियोडी' (रू भे)

(स्त्री. बुरडियोडी)

बुरचितौ बुरचीतौ—देखो 'बुरचितौ' (रू. भे)

बुरज—देखो 'बुरज' (रू. भे)

बुरजी—देखो 'बरछी' (रू भे) (डि. को)

बुरज्ज—देखो 'बुरज' (रू भे)

बुरभी—देखो 'बुरछी' (रू. भे) (डि ना मा.)

बुरटी—देखो 'बुरटी' (रू भे.)

बुरड—देखो 'बुरड' (रू भे)

बुरडी—देखो 'बुरडी' (रू भे)

बुरखँ बुरखँ—देखो 'बुरचीतौ' ।

बुराई—देखो 'बुराई' (रू भे.)

उ०—निहचँ नाव राखि तन मन तँ, विक्रम छोडि बुराई । धरगं
माहि धका नही खावँ, हाली हुक सराई । —अनुभववाणी

बुराणी, बुरावी—देखो 'बुरावणी, बुरावनी' (रू. भे)

बुराणहार, हारौ, (हारौ), बुराणियो—वि० ।

बुरायोडी—भू० का० कृ० ।

बुराईजणी, बुराईजनी—कर्म वा० ।

बुरावी—देखो 'बुरावी' (रू भे.)

बुरायोडी—देखो 'बुरावियोडी' (रू भे)

(स्त्री बुरायोडी)

बुरावणी, बुरावनी—देखो 'बुरावणी, बुरावनी' (रू. भे)

बुरावणहार, हारौ (हारौ), बुरावणियो—वि० ।

बुराविओडी, बुरावियोडी, बुराव्योडी—भू० का० कृ० ।

बुरावीजणी बुरावीजनी—कर्म वा० ।

बुरावियोडी—देखो 'बुरावियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बुरावियोडी)

बुरी—देखो 'बुरी' (रू. भे)

उ०—सिरदार री क्रपा और सुद मन री चाह सारा रँ होवँ है ।
सुद मन रा सिरदार री चाकर बुरी कहै नही बुरी सुँणी नही ।

—वी. स. टी.

२ देखो बुरी' (पु)

उ०—नारी नेह न कीजियँ, नारी बुरी संसार । हरिया नारी
गजिया, सँ भगा करतार । —अनुभववाणी

बुरी—१ देखो 'बुरी' (रू. भे.)

उ०—१ बासँ विजँ भगती की । ओथि रामसिधजी प्रियीराज जी
विजँ री भगति जीमिया । ताहरा राजाजी बुरा किया । इया नू
कहाडियो जु थँ मोनू थोडाई छा । —द. वि

उ०—२ कळि खोटी पीहरी बुरी, रीस करी मत कोय । हरिया
माया भगति कँ, जाह ताह प्राडी होय । —अनुभववाणी

उ०—३ पाडोसी पिडत बुरी, जी हरि भगति न होय । हरिया
हरिजन गाँव घर, ता तुल्य भलो न कोय । —अनुभववाणी

उ०—४ किसकी बुरी न कीजियँ, जी सिध होय असिध । हरिया
प्राडी प्रावसी, जिसे कमाई कीष । —अनुभववाणी

उ०—५ भलो किसी कू चाहियँ, बुरी न कीरियँ कोय । जन
हरिया सब कु कह्या, राम भजी नर लोय । —अनुभववाणी

बुलगाणी, बुलगावी—क्रि स. (गीत या गायन) प्रारम्भ करना ।

उ०—विरहानळ प्रज्वळइ अगु, साखिजन सू विरगू । एहवळ काई
थ्यू विप्र चित्तू न बुलगाई गीतू । न कुण हीसू हसइ, सदा नीस-
सइ; बोलावि खोजइ, दिहाडइ देह खोजइ । आदि । —रा सा स.

बुलगाणहार, हारौ (हारौ), बुलगाणियो—वि० ।

बुलगिओडी, बुलगियोडी, बुलग्योडी—भू० का० कृ० ।

बुलगीजणी, बुलगीजनी—कर्म वा० ।

बुलगाव—देखो 'बुलगाव' (रू भे.)

उ०—सोनहीरी फूला नकसी फूला मुखमल री गादी घातिया, साबरा हथवासा, बुलगाव डाबा सहित ऊमास राजाना रा हाथा री ऊमाहीज बडा नं पीपलारीमा साखा सून नागलिया ।

—रा सा. स

बुलगियोडी—भू० का० कृ०—(गीत या गायन) प्रारम्भ किया हुआ ।

(स्त्री बुलगियोडी)

बुलडोग—देखो 'बुलडोग' (रू भे)

बुलसरी, बुलसिरी—देखो 'बोलसरी' (रू. भे)

उ०—जठ सूकी तुहइ बुलसिरी, जठ बीधी तुहइ मोतीसिरी । जठ डुहलूँ तुहइ गगाजल जाणिए जउ थोडी तुहइ सपुरिस चाणिए ।

—नळदवदती रास

बुलाक—देखो 'बुलाक' (रू भे)

बुलाकी—देखो 'बुलाकी' (रू भे)

बुलाणो बुलावो—१ देखो 'बुलाणो, बुलावो' (रू भे)

उ०—हवि सुह्लि बुलावु, पीहरि जावा मन । भुफ विना डुहल्या थाता, हुसि पुत्री नं तन ।

—नळारयान

२ देखो 'बोळाणो, बोळावो' (रू भे)

बुलाणहार, हारो (हारी), बुलाणियो—वि० ।

बुलायोडो—भू० का० कृ० ।

बुलाईजणो, बुलाईजवो—कर्म वा० ।

बुलायोडी—१ देखो 'बुलायोडी' (रू. भे)

२ देखो 'बोळायोडी' (रू. भे)

(स्त्री बुलायोडी)

बुलावण—देखो 'बुलावण' (रू भे)

बुलावणो, बुलाववो—१ देखो 'बुलाणो, बुलावो' (रू भे)

२ देखो 'बोळाणो, बोळावो' (रू भे.)

उ०—१ बुलावण भीमराय देसनी सधि, लगइ आथीउ बहु सैन्य लेई ए । भीमनइ कहइ निसध, तमे वलु भूपति । रूडइ ठामि हवइ बइसीइ ए ।

—नळदवदती रास

उ०—२ रथ तरण माहरइ खप ज नही, माहरू नथी अहीइ काई सही । धणउ कहितइ रथ राखिउ तेणिए नजनइ आवइ बुलावा जेणिए ।

—नळदवदती रास

उ०—३ सैन्य सांमयो सघळी करी, दवदती पीहरि नीसरि । चद्र-यसाना प्रणम्या पाय, बुलावा आवइ तिहा राय ।

—नळदवदती रास

बुलावणहार, हारो (हारी), बुलावणियो—वि० ।

बुलावियोडी, बुलावियोडी, बुलावियोडी—भू० का० कृ० ।

बुलाधीजणो, बुलाधीजवो—कर्म वा० ।

बुलावियोडी—१ देखो 'बुलायोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोडी' (रू भे)

(स्त्री बुलावियोडी)

बुलावो—देखो 'बुलावो' (रू भे)

बुलि, बुली, बुली—१ देखो 'बुलि' (रू. भे)

२ देखो 'बुली' (रू भे)

बुवाणो, बुवावो—देखो 'बोवाणो; बोवावो' (रू. भे)

बुवाणहार, हारो (हारी), बुवाणियो—वि० ।

बुवायोडो—भू० का० कृ० ।

बुवाईजणो, बुवाईजवो—कर्म वा० ।

बुवायोडी—देखो 'बोवायोडी' (रू भे)

(स्त्री बुवायोडी)

बुवारणो, बुवारवो—देखो 'बुहारणो, बुहारवो' (रू भे)

बुवारणहार, हारो (हारी), बुवारणियो—वि० ।

बुवारियोडी, बुवारियोडी, बुवारियोडी—भू० का० कृ० ।

बुवारीजणो, बुवारीजवो—कर्म वा० ।

बुवारियोडी—देखो 'बुहारियोडी' (रू भे.)

(स्त्री बुवारियोडी)

बुवारी—१ देखो 'बुहारी' (रू भे)

२ देखो 'बहू' (प्रत्या., रू भे)

उ०—दस कोम री पैडी पार कर दियो । गाव रं गळियारं गळियारं जावती ही कं श्रेक वारणा माथें घू घटों काढया उठानं श्रेक लुगाई ऊभी दीसो । चौधरी फट लखग्यो कं है तो मा इण गाव री बुवारी ।

—फुलवाडी

बुवारी—देखो 'बुवारी' (रू भे)

बुवाळा—देखो 'बुवाळा' (रू. भे.)

बुवाळो—देखो 'बुवाळो' (रू भे)

बुवासो—देखो 'बहुवासो' (रू भे)

बुवाह—स पु—वाह-वाह, धन्यवाद ।

उ०—सिलप्पी रचार्य जं रुका असी चार सोभं, बियायं रतन्ना विधा कागरा बुवाह । आमासा अनोळां गोळा पराभा मेघ भासं असां, दान रा सौभा ऋलोखा विराजे बुवाह ।

—मोहकर्मसिध रूपावत री गीत

बुधोत्तर—देखो 'बुधोत्तर' (रू. भे.)

बुधोत्तरमी, बुधोत्तरमी—देखो 'बुधोत्तरमी' (रु. भे)

बुधोत्तरेक—देखो 'बुधोत्तरेक' (रु. भे)

बुधोत्तरी—देखो 'बुधोत्तरी' (रु. भे)

बुसत—देखो 'बस्तु' (रु. भे) (ह ना. मा)

उ०—१ दीया बुसत अनूप है, दिया करी सब कोय । घर में घरा न पाइयै, जे कर दिया न होय । —अग्रयात

उ०—२ हरीया ख्याली खलक में, कै तो गया बसाय । कै आया ज्युई गया, बुसत मुसाय मुसाय । —अनुभववाणी

उ०—३ मनवा उलटि मित्या निज मन कूं ससा सोग न व्यापै तन कु । अरध उरध विच रसतह लाया, जोला जत न बुसत विसाया । —अनुभववाणी

बुसताज, बुसताद—देखो 'उसताद' (रु. भे.)

उ०—पड बुसताज आहरी असपत, दुजडे देती खळा दुल । केस केस सधियो कैलपूरा, राबळ अबर तणी रुल ।

—जगतसिध सीसोदिया री गीत

बुसतु—देखो 'बस्तु' (रु. भे)

बुसुत—देखो 'बस्तु' (रु. भे)

उ०—अप ब्रह्म विघत री सरव बुसुत री, तु गगा तु गावतरी । पारवती निमो हेमरी पुतरी, सीतामाता सावतरी जी सीतामाता सावतरी । —पी. अं

बुस्त—देखो 'बस्तु' (रु. भे)

बुस्ताज, बुस्ताद—देखो 'उसताद' (रु. भे)

बस्तु—देखो 'बस्तु' (रु. भे)

बुहणी, बुहवी—१ देखो 'बहणी, बहवी' (रु. भे)

उ०—१ हिंदवा राव हयवाह अचरज हुई, न सारी सुरीति चीत नरदा । गई ऋग विवाणा बैस इद्र आगळी, वुही वारगना विना बीदा । —महाराजा जसवतसिंह री गीत

उ०—२ असपति राव चमकि ओद्रकियो, खेडेचं वाही करि खीज । सुकरि आकास हूत सेलारा, बीजुल विढण क वुही बीज ।

—केसोदास गाडण

उ०—३ जिण मार्यं सखी मारा धणी री साग वरछी वुही जाणणी अरयात दूसरा जोघारा रा हाथ रा सस्त्रा सू तो अघकटिया अघ-मरिया हूवा रोचं छं न म्हारा पति रा सस्त्र लागोडा पखं, जीव विना हीज हीचं छं सस्त्र लागोडा कोइ वचं नही । —वी स टी.

२ देखो 'बोवणी, बोववी' (रु. भे)

बुहणहार, हारी (हारी) बुहणियो—वि० ।

बुहणोडो, बुहियोडो, बुहोडो—भू० का० कृ० ।

बुहोजणी, बुहोजवी—भाव वा०/कर्म वा० ।

बुहत्तर, बुहत्तरि, बुहत्तरी—देखो 'बुधोत्तर' (रु. भे.)

बुहरज—देखो 'बौरी' (रु. भे) (उ र)

बुहरणी, बुहरवी—क्रि स—१ खरीदना, क्रय करना ।

उ०—दोसी बुहरइ प्रतिघणा वस्त्र, सुभट भला तै चहइ सस्त्र । एक वइण कहइ कथाकल्लोल, एक वइण वीकइ मंजीठ चोल ।

—नळदवदती रास

२ देखो 'व्यवहारणी, व्यवहारवी' (रु. भे)

बुहरणहार, हारी (हारी), बुहरणियो—वि० ।

बुहरिओडो, बुहरियोडो, बुहरओडो—भू० का० कृ० ।

बुहरीजणी, बुहरीजवी—कर्म वा० ।

बुहराडणी, बुहराडवी—देखो 'बुहराणी, बुहरावी' (रु. भे)

बुहराडणहार, हारी (हारी) बुहराडणियो—वि० ।

बुहराडिओडो, बुहराडियोडो, बुहराडओडो—भू० का० कृ० ।

बुहराडीजणी, बुहराडीजवी—कर्म वा० ।

बुहराडियोडो—देखो 'बुहरायोडो' (रु. भे)

(स्त्री बुहराडियोडो)

बुहराणो बुहरावी—देखो 'बुहगणी, बुहरावी' (रु. भे.)

बुहराणहार, हारी (हारी), बुहराणियो—वि० ।

बुहरायोडो—भू० का० कृ० ।

बुहराईजणी, बुहराईजवी—कर्म वा० ।

बुहरायोडो—देखो 'बुहरायोडो' (रु. भे)

(स्त्री बुहरायोडो)

बुहरावणी, बुहराववी—देखो 'बुहराणी, बुहरावी' (रु. भे)

बुहरावणहार, हारी (हारी), बुहरावणियो—वि० ।

बुहराविओडो, बुहरावियोडो, बुहराव्योडो—भू० का० कृ० ।

बुहरावोजणी, बुहरावोजवी—कर्म वा० ।

बुहरावियोडो—देखो 'बुहरायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री बुहरावियोडो)

बुहरियोडो—भू० का० कृ०—१ खरीदा हुआ, क्रय किया हुआ ।

२ देखो 'व्यवहारियोडो' (रु. भे)

(स्त्री बुहरियोडो)

बुहाडणी, बुहाडवी—१ देखो 'बोवाणी, बोवावी' (रु. भे)

२ देखो 'बहाणी, बहावी' (रु. भे)

बुहाडणहार, हारी (हारी), बुहाडणियो—वि० ।

बुहाडिओडो, बुहाडियोडो, बुहाडओडो—भू० का० कृ० ।

बुहाडीजणी, बुहाडीजवी—कर्म वा० ।

बुहाडियोडो—देखो 'बहायोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. बुहाडियोडी)

बुहाणो, बुहावी—१ देखो 'वहाणो, वहावी' (रू. भे.)

उ०—वाहि बुहाय घणो वीजूजळ, तडळ खगा करे ह्यातबळ ।
इम प्रथमी सिर क्रीत उवारा, परणुं अपछर सुरगि पघारां ।

—सू. प्र.

२ देखो 'बोवाणो, बोवावी' (रू. भे.)

बुहाणहार, हारो (हारी), बुहाणियो—वि० ।

बुहायोडो—भू० का० कृ० ।

बुहाईजणो, बुहाईजवो—कर्म वा० ।

बुहायोडो—१ देखो 'बुहायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहायोडी)

बुहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—समत बयाळं मांह काती वद कळस थप्यो । मुकति की
बुहार कीनो साची गुर जाणियं । —सेवादास

बुहारडी - १ देखो 'बुहारी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

बुहारण—देखो 'बुहारण' (रू. भे.)

बुहारणी, बुहारवी—देखो 'बुहारणी, बुहारवी' (रू. भे.)

उ०—गाया री में गोरघा बुहारी भंस्यां रा खरळा-खरळा गोर
गेरघो उपला थाप्या सी रं पचाम । मासणी घणा कमावणी ।

—लो गी

बुहारणहार, हारो (हारी), बुहारणियो—वि० ।

बुहारिओडो, बुहारियोडो बुहारयोडो,—भू० का० कृ० ।

बुहारीजणो, बुहारीजवो—कर्म वा० ।

बुहारि—१ देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

२ देखो 'बहू' (अल्पा., रू. भे.)

बुहारियोडो—देखो 'बुहारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहारियोडी)

बुहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बुहारो—देखो 'बुहारो' (रू. भे.)

बुहावणो, बुहाववो—१ देखो 'बहाणो, वहावी' (रू. भे.)

उ०—करं घात बोलं पारसी, बगतर तवा फिखं जाणुं आरसी ।
कवाणां फुजा जिम कुरवरिया विलख मेहा जिम ओसरिया । नाली
निहाव, गोळा बुवाव । गढ सिखर सडी, कायरा का जीव तुडी ।

—अ. वचनिका

२ देखो 'बोवाणी, बोवावी' (रू. भे.)

बुहावणहार, हारो (हारी), बुहावणियो—वि० ।

बुहाविओडो, बुहावियोडो, बुहाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बुहावीजणो, बुहावीजवो—कर्म वा० ।

बुहावियोडो—१ देखो 'बुहावियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहावियोडी)

बुहियोडो—१ देखो 'बुहियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बुहियोडी)

बुहतर, बुहतरि, बुहतर, बुहतरि, बुहतरि—देखो 'बुहतर' (रू. भे.)

बूग—१ देखो 'बूग' (रू. भे.)

२ देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूगरड—देखो 'बूगरड' (रू. भे.)

बूगी—देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूगी—देखो 'बूगी' (रू. भे.)

बूघरी—देखो 'बूघरी' (रू. भे.)

बूक—देखो 'बूक' (रू. भे.)

बूकियो, बूकी—देखो 'बूकी' (रू. भे.)

बूट—देखो 'बूट' (रू. भे.)

बूटी—देखो 'बूटी' (रू. भे.)

बूटी—देखो 'बूटी' (रू. भे.)

बूतणो, बूतवो—देखो 'बूतणो बूतवो' (रू. भे.)

बूतणहार, हारो (हारी) बूतणियो—वि० ।

बूतिओडो बूतियोडो, बूत्योडो—भू० का० कृ० ।

बूतीजणो, बूतीजवो—कर्म वा० ।

बूतियोडो—देखो 'बूतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूतियोडी)

बूद—देखो 'बूद' (रू. भे.)

उ०—मेरी गई पुकार सव, ज्यू समद मे बूद । सुणी न ओकी
सावळा, कान रहे हो मूद । —गजद्वार

बूदड—१ देखो 'बूद' (मह, रू. भे.)

२ देखो 'बूदी' (मह, रू. भे.)

बूदडी—१ देखो 'बूद' (अल्पा, (रू. भे.)

२ देखो 'बूदी' (अल्पा, रू. भे.)

बूँदळा—देखो 'बूँदळा' (रू भे)

बूदा—देखो 'बूदा' (रू भे)

बूदी—१ देखो 'बूदी' (रू भे)

२ देखो 'बूद' (रू भे)

बूँव—देखो 'बूँव' (रू भे.)

बूबडा—देखो 'बूमडा' (रू भे)

बूँवाडी—देखो 'बूँव' (मह, रू. भे)

बूँमडा—देखो 'बूमडा' (रू भे)

बू-स. पु —१ अकं, सूर्य । (एका)

२ यमु (,)

३ तूल । (,)

४ कबूतर । (,)

५ बहुत, अत्यधिक । (,)

६ सर्व, सब । (,)

७ देखो 'बू' (रू भे)

८ देखो 'बूँ' (रू भे)

बूअणो, बूअवो—१ देखो 'बूअणो बूअवो' (रू भे)

उ०—पाचा (छा) डेरा हता क्या हुआ छै, पकवाना का थाल डेरा नै बूआ छै । पाचा रग-रग बरताणा, मालूका हुआ मन का जाणा दारू को भड लगायी छै, जसा भी पीयी छै, म्याराम नै पीयी छै ।

—मयाराम दरजी री बात

२ देखो 'बोवणी, बोवणी' (रू भे)

बूअणहार हारी (हारी), बूअणियो—वि० ।

बूअणोडी बूअयोडी, बूअणो, बूयोडी—भू० का० कृ० ।

बूअणो, बूअवो—भाव वा० ।

बूअणो, बूअवो—१ देखो 'बूअणो, बूअवो' (रू भे)

२ देखो 'बोवणी, बोवणी' (रू भे)

बूअणहार हारी (हारी), बूअणियो—वि० ।

बूअयोडी—भू० का० कृ० ।

बूअणो, बूअवो—कर्म वा० ।

बूअयोडी—१ देखो 'बूअयोडी' (रू भे)

२ देखो 'बोवणी, बोवणी' (रू भे)

(स्त्री बूअयोडी)

बूअवणो, बूअववो—१ देखो 'बूअणो, बूअवो' (रू भे.)

२ देखो 'बोवणी, बोवणी' (रू भे)

बूअवणहार हारी हारी) बूअवणियो—वि० ।

बूअवणोडी, बूअवियोडी, बूअवयोडी—भू० का० कृ० ।

बूअवोणो, बूअवोवो—कर्म वा० ।

बूअवियोडी—१ देखो 'बूअयोडी' (रू भे)

२ देखो 'बोवणी, बोवणी' (रू भे.)

(स्त्री बूअवियोडी)

बूअयोडी—१ देखो 'बूअयोडी' (रू भे.)

२ देखो 'बोवियोडी' (रू भे)

(स्त्री बूअयोडी)

बूअ—देखो 'बूअ' (रू भे)

बूक—देखो 'बूक' (रू भे.)

बूकड—देखो 'बूक' (मह, रू. भे)

बूकडी—देखो 'बूक' (अल्पा, रू भे.)

बूखीचडी—देखो 'बूखीचडी' (रू भे)

बूग—१ देखो 'बूक' (रू भे)

२ देखो 'बूग' (रू भे)

बूडी—देखो 'बूडी' (रू भे.)

बूच—देखो 'बूच' (रू भे)

बूचकी—देखो 'बूचकी' (रू भे)

बूचड—देखो 'बूचड' (रू भे)

बूचडखानी—देखो 'बूचडखानी' (रू भे)

बूचो—देखो 'बूचो' (रू भे)

बूजी बूजीसा—स. स्त्री [स वधू] १ वृद्धा स्त्री ।

बू - वि० वि०—सर्व प्रथम अरित घर में व्याह कर आती है उस समय उसको "बू" कहकर पुकारा जाता है । उसके सन्तानोत्पत्ति होने पर सन्तान भी उसको 'बू' कहने लग जाती है । परन्तु उसकी वृद्धावस्था होने पर उसको 'बूजी' कहने लग जाते हैं ।

२ माता ।

उ०—आप कोई बात री चिंता फिकर करसो नी । बूजी नै म्हाारा पाव धोक अरज करसो अर टावरा मार्ये हाथ फेरसो । म्हाारी कानी सू अमला री मनवार मानसो । —अमर बूनडी

३ दादी ।

४ दादीसामु ।

५ सामु ।

उ०—काकी बोली - जवरजी बेटा ! म्हाारी एक काम करीला ? म्हनै थारै काकीसा री कागज पढने सुणाय दी बीरा ! म्हु थानै

विलावणी करती वखत वृजो रं छानं माखण री लू दो लू ला ।

—अमरचूनडी

उ०—२ सेठा रं कंणा मुजव सेठानी पाचू वहुवा न इण अक्खी
वेळा में साथ निभावण वास्तं समभावण लागी तो चारू मोटोडी
वहुवा कल्ली—वृजोसा, इण में इत्ती समभावण री काई वात ।
म्हारीसाख किसी न्यारी है ।

—फुलवाडी

रू भे.—वृजो, वृज्जी ।

वृजो—१ देखो 'वृजो' (रू भे)

२ देखो 'वृभो' (रू. भे.)

वृज्जी—१ देखो 'वृज्जी' (रू भे.)

२ देखो 'वृजी' (रू. भे.)

वृभ—१ देखो 'वृभ' (रू. भे.)

० देखो 'पृछ' (रू भे)

३ देखो 'वृभ' (रू भे)

वृभणी, वृभवो—१ देखो 'पृछणी, पृछवो' (रू भे)

उ०—आवी खवर अचीतिया, विसमें जंसी वत्त । तद राठीडे
वृभियो, 'दुरगं' 'भासावत्त' ।

—रा रू.

२ देखो 'वृभणी, वृभवो' (रू भे)

वृभणहार, हारो (हारो), वृभणियो—वि० ।

वृभणोडी, वृभणियोडी, वृभण्योडी—भू० का० कृ० ।

वृभणीजणी, वृभणीजवो—कर्म वा० ।

वृभताछ—देखो 'पृछताछ' (रू. भे)

वृभवार—वि—बुद्धिमान ।

उ०—ए कैसे हैं—वडे सु विहान है, वडे महिरवान हैं, वडे निरदार
हैं । वडे वृभवार हैं, वडे दातार हैं । जमी आसमान बीच सभू
अवतार हैं ।

—रा. सा स

वृभवृभकड, वृभवृभगार—देखो 'वृभवृभकड' (रू भे.)

वृभली—देखो 'वृभली' (रू. भे.)

वृभवणी, वृभववो—१ देखो 'वृभणी, वृभवो' (रू. भे.)

२ देखो 'पृछणी, पृछवो' (रू भे.)

वृभवणहार, हारो (हारो), वृभवणियो—वि० ।

वृभवणोडी, वृभवणियोडी, वृभवण्योडी—भू० का० कृ० ।

वृभवणीजणी, वृभवणीजवो—कर्म वा० ।

वृभवणियोडी—१ देखो 'वृभवणियोडी' (रू भे)

२ देखो 'पृछियोडी' (रू भे)

(स्त्री वृभवणियोडी)

वृभणणी, वृभणण्यो—१ देखो 'वृभणणी, वृभणवो' (रू. भे.)

२ देखो 'वृभणणी, वृभणवो' (रू. भे.)

३ देखो 'पृछाणी, पृछावो' (रू. भे.)

वृभणणहार, हारो (हारो), वृभणणणियो—वि० ।

वृभणणणोडी, वृभणणणियोडी, वृभणणण्योडी—भू० का० कृ० ।

वृभणणणीजणी, वृभणणणीजवो—कर्म वा० ।

वृभणणियोडी—१ देखो 'वृभणणियोडी' (रू भे.)

२ देखो 'वृभणणियोडी' (रू. भे.)

३ देखो 'पृछाणियोडी' (रू भे)

(स्त्री वृभणणियोडी)

वृभणणी, वृभणवो—१ देखो 'वृभणणी, वृभणवो' (रू. भे)

२ देखो 'वृभणणी, वृभणवो' (रू. भे.)

३ देखो 'पृछाणी, पृछावो' (रू. भे)

वृभणणहार, हारो (हारो), वृभणणणियो—वि० ।

वृभणणणोडी—भू० का० कृ० ।

वृभणणणीजणी, वृभणणणीजवो—कर्म वा० ।

वृभणणियोडी—१ देखो 'वृभणणियोडी' (रू भे)

२ देखो 'वृभणणियोडी' (रू भे)

३ देखो 'पृछाणियोडी' (रू. भे)

(स्त्री वृभणणियोडी)

वृभणवणी, वृभणववो—१ देखो 'वृभणवणी, वृभणवो' (रू. भे)

२ देखो 'वृभणवणी, वृभणवो' (रू भे)

३ देखो 'पृछावणी, पृछावो' (रू भे)

वृभणवणहार, हारो (हारो), वृभणवणणियो—वि० ।

वृभणवणणोडी, वृभणवणणियोडी, वृभणवणण्योडी—भू० का० कृ० ।

वृभणवणीजणी, वृभणवणीजवो—कर्म वा० ।

वृभणवणियोडी—१ देखो 'वृभणवणियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'वृभणवणियोडी' (रू भे)

३ देखो 'पृछावणियोडी' (रू भे)

(स्त्री वृभणवणियोडी)

वृभणियोडी—१ देखो 'वृभणियोडी' (रू. भे)

२ देखो 'पृछियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वृभणियोडी)

वृट—१ देखो 'वृट' (रू. भे.)

२ देखो 'वृट' (रू. भे)

वृटकी—देखो 'वृटकी' (अल्पा., रू. भे.)

वृटणी, वृटवो—देखो 'वृटणी, वृटवो' (रू. भे.)

उ०—१ लुटी सामान भुडारा ऊवार पाग राव लागी, सोभा बाणें
भाणें राव खूटी खजाना सचूप । तणी वाघ साम घटा मौजा भाणें
रावतूटी, राणें राव रूपाधार वूटी यद्र रूप । —महादान महह

उ०—२ पगी लुटी चगी सामा हुई माण पाण वाळी, जाऊ छूटी
पाता घणा भाणा वाळी भौक । रीभा तूठी अछेह ज्यू ऊठी भाट
राणा वाळी, नाणा वाळी मूठी वूटी मेह ज्यू निधोक ।

—महादान महह

वृटणहार, हारी (हारी), वृटणियो—वि० ।

वृटिओडो, वृटियोडो, वृटयोडो—भू० का० कृ० ।

वृटीजणी, वृटीजवी—भाव वा० ।

वृटियोडो—देखो 'वृटियोडो' (रू भे)

(स्त्री वृटियोडो)

वृटियो—देखो 'वृटी' (अल्पा, रू भे)

वृटी—देखो 'वृटी' (रू भे)

वृटी—देखो 'वृटी' (रू भे)

(स्त्री वृटी)

वृठ—स स्त्री —वर्षा होने की गति या क्रिया ।

वृठणी, वृठवी—देखो 'वृठणी, वृठवी' (रू भे)

उ०—१ * * भला हइ वही, परीस्या कोड कइ नही, सही
प्रथिवी रही गहगही, साचई कादम माचइ, कारसणी नाचइ, नीप-
जइ मातइ थान, देखता प्रधान, नासइ दुकाल, भाद्रवइ वृठइ
सुगल । —व म

उ०—२ सोरम फूट जव्वाध एम, घग वूठं जळहर लहर जेम ।
पेखियें ताम सोभा परम्म, किसनागर अवर जख कदम्म ।

—गु रू व

उ०—३ ऊनमियठ उत्तर दिसइ गज्यठ गुहिर गभीर । मारवणी
प्रिउ सभरघर, नयणें वृठर नीर । —ढो मा

उ०—४ सेवें नर सदीना मुरघर, सदा नीरोगी ही रवं । वूठं जारी
घातडी नें, वगत घटाऊडा कवं । —दसदेव

उ०—५ गाढा वाढणी अवागढ महूगढ, उत्तर प्रगट घर पै ला ।
सेला ऋड माळ्यो साहवखा, वूठी सरस वूदेला ।

—साहवखा भाखरोत कछवाहा री गीत

उ०—६ दीपं मजलस निस दिवस, हित चित नित मनुहार । विद
'अभो' वूठी विभं, इद तणें आचार । —रा रू

वृठणहार, हारी (हारी), वृठणियो—वि० ।

वृटिओडो, वृटियोडो, वृटयोडो—भू० का० कृ० ।

वृटीजणी, वृटीजवी—भाव वा० ।

वृठाळ, वृठाळू—वि —वरसने वाला, वर्षा करने वाला ।

उ०—कठळ वृठाळ रूपकध, वधिया किलावा चमरवध । तहमह
भूल कसि घट ताम, जगी धरि हवदा पूठि जाम । —सू प्र.

वृटियोडो—देखो 'वृटियोडो' (रू भे)

(स्त्री वृटियोडो)

वृडपरवा, वृडपिरवा—देखो 'वृडपरवा' (रू भे)

वृडवेम—देखो 'वृडजाम'

वृड—१ देखो 'वृड' (रू भे.)

२ देखो 'वृडी' (मह, रू भे)

३ देखो 'वृडण' (मह., रू भे)

वृडजाम—देखो 'वृडजाम' (रू भे)

वृडण, वृडणि वृडणी—देखो 'वृडण' (रू भे)

वृडणी, वृडवी—देखो 'वृडणी, वृडवी' (रू भे.)

वृडणहार, हारी (हारी), वृडणियो—वि० ।

वृटिओडो वृटियोडो, वृटयोडो—भू० का० कृ० ।

वृटीजणी, वृटीजवी—भाव वा० ।

वृडपरवा, वृडपिरवा—देखो 'वृडपरवा' (रू भे)

वृडल—१ देखो 'वृडी' (मह, रू भे)

२ देखो 'वृडण' (रू भे)

वृडली—१ देखो 'वृडण' (अल्पा, रू भे)

२ देखो 'वृडी' (अल्पा, रू भे)

वृडली—देखो 'वृडी' (अल्पा, रू भे)

(स्त्री वृडली)

वृडवाळ, वृडवाधळ—स. स्त्री —वृद्धावस्था, बुढापा ।

उ०—पेमजी जवरा हुकमां हाल्या । अं मै वृडवाळ फोडा घाल्या ।

सपना ला सँग हीडा-मुमन, उलटा ऋडलला ज्युं भूरडीजे है । कुभा-
वना ह्याला काली नस रा कीडा कुसम, सुलटा तिरणखला सा तुर-
डीजे ।

—दसदीख

वृडवेम—देखो 'वृडजाम'

वृडसुवागण, वृडसुहागण—स स्त्री —वृद्धा सुहागिन स्त्री ।

वृडाई—देखो 'बुडाई' (रू भे)

वृडापण, वृडापणी—देखो 'वृडापणी' (रू भे.)

उ०—आवि तू पुत्र उतावलउ, अम्ह नइ तू आधारी जी । तुभ

विएण कुण वृडापणइ, करिस्यइ अम्हारी सारी जी । —स. कु.

वृडापी—देखो 'बुडापी' (रू भे)

उ०—१ किसनजी की कूंत नी सकयी । सीखीनाई अर खरच-बरच
री बीजा वस्तुवा सू खूव राजी हुयी । बूढापे हाळा ओखदा माथे
वंम ही नी गयी । ओसध्या ही तीस-पंतीस ताई री अकल में भाई ।
—दसदोख

उ०—२ बाळापण तरणा गयी, वड बूढापौ थाय । हरीया कर
सिर कपिया, बीख भरी नही जाय । —अनुभववाणी

बूढि—१ देखो 'बूढापौ' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढी' (रू. भे.)

बूढियोडी—देखो 'बूढियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बूढियोडी)

बूढी—१ देखो 'बूढण' (रू. भे.)

२ देखो 'बूढी' (स्त्री.)

बूढेवारं—देखो 'बूढेवारं' (रू. भे.)

उ०—इतरी कहिनै जंत डेरं आयी । आय रजपताणी नूं रीसाणी,
'जु बूढेवारं राजा कनै मारी कमी कराई ।' इम कहि नै जंत
छाडियो । —जंतमाल पुमार री वात

बूढो—देखो 'बूढो' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया बूढा ना गिनं, तरना गिनं न वाळ । काळ पसारा
सकळ जुग, ज्यू मकडी का जाळ । —अनुभववाणी

उ०—२ व ला ती तरणा भयो बूढो ती ई न आपो चेतो । जनहरि-
राम बीज विन वाह्या, कहा निपावं खेतो । —अनुभववाणी

बूढोठाडो, बूढोठाडो—सं पु. (स्त्री. बूढोठाडी, बूढोठाडी) अति वृद्ध
पुरुष ।

उ०—आळी भोळी गावं वा तो घर वर पावं । परणी-पाती गावं
वा तो पुतर खेलावं । बूढोठाडी गावं ज्या नै वंकू टा रो वासी ।

—लो गी

बूढोठेरो—स. पु (स्त्री. बूढोठेरी, बूढोठेरी) अति वृद्ध पुरुष ।

उ०—जं कोई घूजी नै परणी-पाती गावं, परणी पाती गावं, गोद
पुतर खेलावं । जं कोई घूजी नै बूढोठेरी गावं, बूढोठेरी गावं वा
वंकू टा नै जावं । —लो. गी.

रू. भे.—बूढोठेरी ।

बूढोडेंग—देखो 'बूढोडेंग' (रू. भे.) (स्त्री. बूढोडेंग)

बूढोडेरी—देखो 'बूढोडेरी' (रू. भे.)

बूढोभोड—स पु —अति वृद्ध पुरुष ।

उ०—ऊट, वकरी री जोडी जुडे, जद मन कद मिळें ? एक करे
नूई बीनणी रा कोड, दूजी करे आखें अवीड बूढोभोड । पेलडी लटवा
करे—हाथ जोडें । बीजी मू सूजावं, माथो फोडें । —दसदोख

बूणा—देखो 'बूणा' (रू. भे.)

बूतणौ, बूतवौ—देखो 'बू तणौ, बू तवौ' (रू. भे.)

बूतणहार, हारो (हारी), बूतणियो—वि० ।

बूतिओडी, बूतियोडी, बूत्योडी—भू० का० कृ० ।

बूतीजणी, बूतीजवौ—कर्म वा० ।

बूतियोडी—देखो 'बू तियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बूतियोडी)

बूतेली—स पु —वातचक्र, बगूला ।

वि० वि०—देखो 'बूतेली' (रू. भे.)

बूत्कार—देखो 'बूत्कार' (रू. भे.)

बूथ—देखो 'बूथ' (रू. भे.)

बूथेळियो—देखो 'बूथेळी' (मल्पा., रू. भे.)

बूथेळो—देखो 'बूथेळी' (रू. भे.)

बून—देखो 'बू द' (रू. भे.)

बूनै—देखो 'बूनै' (रू. भे.)

बूर—१ देखो 'बूर' (रू. भे.)

२ देखो 'बूरी' (मह., रू. भे.)

बूवणो, बूववौ—१ देखो 'बूवणो, बूववौ' (रू. भे.)

उ० कू डी कुतको होक चीपियो, कमर कस उठ बूवौ रे । भोळी
भडा और पीजरी, जिण माही एक सूवी रे । —रंदास घत्तरबाळ

२ देखो 'बोवणो, बोववौ' (रू. भे.)

बूवणहार, हारो (हारी), बूवणियो—वि० ।

बूविओडी, बूवियोडी, बूव्योडी—भू० का० कृ० ।

बूवीजणी, बूवीजवौ—भाव वा० ।

बूवियोडी—१ देखो 'बूवियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'बोवियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बूवियोडी)

बूसड—स पु —चपेटा । (उ र)

बूसर—१ देखो 'असुर' (रू. भे.)

उ०—रे मन बूसर क्यू वंठो रूस र, साहिव सेती सान्या, माया
देखि भयो मतिवाळी, या वाता मन मान्या । धन जोबन अजरी को
पाणी, कर सू जासी नीसर, मनखा देही वळं न पावं, हरि सिवरी
मन बूसर । —हरजी वणियाळ

२ देखो 'ऊसर' (रू. भे.)

बूहणो, बूहवौ—देखो 'बूहणो, बूहवौ' (रू. भे.)

उ०—१ कू भडिया करळव कियड, धरि पाछिलं दरगि । सूती
साजण सभरचा, करवत बूही अगि । —डो. मा.

३०—२ कू भडिया कळिभळ कियउ, सरवर पइलइ तीर । निसि भरि सज्जण सल्लिया, नयणं बूहा नीर । —ढो मा

३०—३ सिर ढाकरण कुण सा ग्रहो, जुवती चढतं (वैसा) जोम । दिन दिन जीवन दीहडा, बूहा जावं वोम । —मा वचनिका

३०—४ घाव चोट निहस घरहरै, फाळ दुग ऊछळं भूम । बूही तेग मेर सिरि वजर, वजर देह खगधार वज ।

—सुरजनदास पूनियो

३०—५ इसडा हीज गढा रा ढिग मारग माहै पडिया । परमेसर री का इसडी हीज घडी बूही । उठा चढि अर कीतासर पधारिया ।

—द वि

३०—६ ताहरा सिवो छाजू री वेटी नदी थी निजीक सिकार खेलती हुती, सू कूकवी सुणनं दीड आयी । साहिजादी नदी माहै बूही जावती दीठी । —नंणसी

बूहाणहार, हारो (हारी), बूहाणियो—वि० ।

बूहाण्योडो, बूहाण्योडो, बूहाण्योडो—भू० का० कृ० ।

बूहाण्योडो, बूहाण्योडो—भाव वा० ।

बूहा—देखो 'बूहा' (रू. भे.)

बूहाणो, बूहावो—देखो 'बहाणो, बहावो' (रू. भे.)

बूहाणहार, हारो (हारी), बूहाणियो—वि० ।

बूहाण्योडो—भू० का० कृ० ।

बूहाण्योडो, बूहाण्योडो—कर्म वा० ।

बूहाण्योडो—देखो 'बहाण्योडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहाण्योडो)

बूहारणो, बूहारवो—देखो 'बुहारणो, बुहारवो' (रू. भे.)

बूहारणहार, हारो (हारी), बूहारणियो—वि० ।

बूहारण्योडो, बूहारण्योडो, बूहारण्योडो—भू० का० कृ० ।

बूहारण्योडो, बूहारण्योडो—कर्म वा० ।

बूहारण्योडो—देखो 'बुहारण्योडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहारण्योडो)

बूहारी—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बूहारो—देखो 'बुहारी' (रू. भे.)

बूहावणो, बूहाववो—देखो 'बहावणो, बहाववो' (रू. भे.)

बूहावणहार, हारो (हारी), बूहावणियो—वि० ।

बूहावण्योडो, बूहावण्योडो, बूहावण्योडो—भू० का० कृ० ।

बूहावण्योडो, बूहावण्योडो—कर्म वा० ।

बूहावण्योडो—देखो 'बहावण्योडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहावण्योडो)

बूहियोडो—देखो 'बहियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बूहियोडो)

बूही—वि—पागलपनयुक्त, पागलपन की ।

३०—एकर री वात, राजी रं जापं मे पौन-हवा निकलगो । बावली वडा करण लागगो । यूग विखेरं अर तत्ता-पत्ता सूं बूही वाता करे । जकै सूं घर हाळा नै भूतणी री वैम वड गयी है ।

—दसदोख

बू—देखो 'बू' (रू. भे.)

बूकट—देखो 'बूकटगिरि' (रू. भे.)

बूकटगिर, बूकटगिरि, बूकटगिरी—स. पु. [स बूकट+गिरि] दक्षिण भारत मे स्थित एक पर्वत, जहा विष्णु का प्रसिद्ध स्थान है और भारत के कोने-कोने से भक्त दर्शनार्थ आते हैं ।

रू. भे. —बूकट, बूकट, बूकटगिर, बूकटगिरि, बूकटगिरी

बूकटाचळ—देखो 'बूकटगिरि'

बूकटेस, बूकटेसर, बूकटेसुर, बूकटेस्वर—स. पु. [स. बूकट+ईश, बूकट+ईश्वर] १ भगवान् विष्णु का नामान्तर ।

२ शेषनाम का नाम ।

३ दक्षिण भारत के तिरुपति बालाजी का एक नाम ।

बूकट, बूकटगिर, बूकटगिरि, बूकटगिरी—देखो 'बूकटगिरि' (रू. भे.)

बूगळा, बूगला—स. स्त्री —मूखं स्त्री, मूखां ।

३०—१ भगवान री समभदारी कै दुनिया में श्रींढा मूरख अर अधरमी आदमी घणा नी व्हे, नीतर सगळा ससार री ई पोखाळी व्हे जाती । आ दुनिया जीवण जोगी ई नी रंती । बी घरमात्मा भतीजी नीठ उण बूगळा नै समभाई । —फुलवाडी

३०—२ सेठ जूभळ खावता बोल्या—थनं हेलो नी मारघी ती किणी दूजा नै मारघी । घर में दूजो कुण है जिणनं हेलो मारु । थारं पीहर वाळा ई थनं बूगळा कैता सी यू थोडा ई कैता ।

—फुलवाडी

३०—३ पण सेठाणो श्रींढी बूगळा कै वा आपरं जायोडा वेटा नै ई नी ओळखं । बोळी-घोनी नै कठं ई रातिदो ती नी हैं । नी वेटा री बोली पिछाणी अर नी उणनं ओळखियो । —फुलवाडी

बूच—देखो 'बूच' (रू. भे.)

बूचणी, बूचवो—देखो 'बूचणी, बूचवो' (रू. भे.)

३०—रामदासजी साडिया लेंनं दुघोड आया । इणा नै ती आखडी छं, घाडो वासी राखणी नही । साडिया रजपुता नै बूच दीनी ।

—रा. सा. स.

वेंचणहार, हारी (हारी), वेंचणियो—वि० ।
 वेंचिओडो, वेंचियोडो, वेंच्योडो—भू० का० कृ० ।
 वेंचीजणी, वेंचीजवी—कर्म वा० ।

वेंचवाडो—देखो 'वेंचवाडो' (रू. भे.)

वेंचाणो, वेंचावी—देखो 'वटाणो, वटावी' (रू. भे.)

वेंचाणहार, हारी (हारी), वेंचाणियो—वि० ।
 वेंचायोडो—भू० का० कृ० ।
 वेंचाईजणी, वेंचाईजवी—कर्म वा० ।

वेंचायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचायोडो)

वेंचावणो, वेंचाववी—देखो 'वटाणो, वटावी' (रू. भे.)

वेंचावणहार, हारी (हारी), वेंचावणियो—वि० ।
 वेंचाविओडो, वेंचावियोडो वेंचाव्योडो—भू० का० कृ० ।
 वेंचावीजणी, वेंचावीजवी—कर्म वा० ।

वेंचावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचावियोडो)

वेंचियोडो—देखो 'वेंचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंचियोडो)

वेंट—देखो 'वेंट' (रू. भे.)

वेंटणी, वेंटवी—देखो 'वाटणी, वाटवी' (रू. भे.)

उ०—वेटा रं जलम री खुसी मे वामण सवा मण मिसरी पतासा
 वेंट्या अर जाट सवा मण गुळ वेंट्यो । पछें दोनू घरा मे दोनू
 वाता दिनोदन भरें पडण लागी । —फुलवाडो

उ०—२ डावडी कळी—गाव में ती सगळें बघाई री पाच मण
 गुळ वेंटीजण्यो अर थें हाल ताई सूताई ही । राज ती अपारें
 गाव सोनं री सूरज ऊणियो । आपरें करमा री परताप कं इण
 गाव राजा री कवर तोरण वाटियो । —फुलवाडो

वेंटणहार, हारी (हारी), वेंटणियो—वि० ।
 वेंटिओडो वेंटियोडो, वेंट्योडो—भू० का० कृ० ।
 वेंटीजणी, वेंटीजवी—कर्म वा० ।

वेंटाणी, वेंटावी—देखो 'वटाणो वटावी' (रू. भे.)

वेंटाणहार, हारी (हारी), वेंटाणियो—वि० ।
 वेंटायोडो—भू० का० कृ० ।
 वेंटाईजणी, वेंटाईजवी—कर्म वा० ।

वेंटायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटायोडो)

वेंटावणी, वेंटाववी—देखो 'वटाणो, वटावी' (रू. भे.)

वेंटावणहार, हारी (हारी), वेंटावणियो—वि० ।

वेंटाविओडो, वेंटावियोडो, वेंटाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वेंटावीजणी, वेंटावीजवी—कर्म वा० ।

वेंटावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटावियोडो)

वेंटियोडो—देखो 'वाटियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंटियोडो)

वेंडाक—१ देखो 'वेंडाक' (रू. भे.)

२ देखो 'वेंडो' (मह., रू. भे.)

वेंडो—देखो 'वेंडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेंडो)

वेंण—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)

२ देखो 'वचन' (रू. भे.)

३ देखो 'वेन' (रू. भे.)

वेंत—१ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

उ०—१ वीजळी काई किडकी, आभा ने संचक्षण कर दियो ।
 खेजडी हेट चार हाथ ऊडी घंड खुदग्यो । च्यारू आदमिया री
 जीभा वेंत वारें निकळणी । आख्या रा डोळा वारें आय पड्या ।

—फुलवाडो

उ०—२ घऊं जावता वो इज रुखाळी वाळी खेत आयी । ताळा
 छेक ऊभी वाजरी म्हाला खावती ही । दो दो वेंत लावा जडाव
 री जात सिट्टा मोत्या रं उनमान परळाट करता हा ।

—फुलवाडो

उ०—३ अदाता, आप कितो विस्वास करीला—इत्ती ऊची अेलम
 कं फगत दोग घडी में वेंत वेंत लावा वाळ आय जावें । सेवा ज्यू
 लरड लरड वघे ।

—फुलवाडो

उ०—४ वेदा री तो गिरें-दसा ई भवणी । जूता अर वेंता रा डर
 मू जाणता जको ई विद्या विसरग्या । किणी घतर-वेद सू की कारी
 लागी नी ।

—फुलवाडो

२ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

३ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

४ देखो 'वेंत' (रू. भे.)

वेंतणी, वेंतवी—देखो 'वेंतणी, वेंतवी' (रू. भे.)

वेंतणहार, हारी (हारी), वेंतणियो—वि० ।

वेंतिओडो, वेंतयोडो, वेंत्योडो—भू० का० कृ० ।

वेंतीजणी वेंतीजवी—कर्म वा० ।

वेंतरणी, वेंतरवी—देखो 'वेंतणी, वेंतवी' (रू. भे.)

वैतरणहार, हारो (हारी), वैतरणियो—वि० ।
 वैतरिओडो, वैतरियोडो, वैतरयोडो—भू० का० कृ० ।
 वैतरीजणी, वैतरीजवो—कर्म वा० ।

वैतराणी, वैतरावो—देखो 'वैताणी, वैतावी' (रू. भे.)
 वैतराणहार, हारो (हारी), वैतराणियो—वि० ।
 वैतरायोडो—भू० का० कृ० ।
 वैतराईजणी, वैतराईजवो—कर्म वा० ।

वैतरायोडो—देखो 'वैतायोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री वैतरायोडो)

वैतरावणी, वैतराववो—देखो 'वैताणी,, वैतावी' (रू. भे.)
 वैतरावणहार, हारो (हारी), वैतरावणियो—वि० ।
 वैतरावियोडो, वैतरावियोडो, वैतरावयोडो—भू० का० कृ० ।
 वैतरावीजणी, वैतरावीजवो—कर्म वा० ।

वैतरावियोडो—देखो 'वैतायोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री वैतरावियोडो)

वैतरियोडो—देखो 'वैतियोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री वैतरियोडो)

वैताणी, वैतावी—देखो 'वैताणी, वैतावी' (रू. भे.)
 उ०—थान दोय बाफता रा, दोय माहमुदी, पाच सेल्हा अचल ल्याई । सी दरजी भरमल रं कारखाने वंसाणिया । बागो पंहरण नं कुवरसी रं थो सी दोपोर पोढिया जद ले गई । उण ऊपर वैताया जाधिया तीन बाफता रा कराया ।
 —कुंवरसी साखला री वारता

वैताणहार, हारो, (हारी), वैताणियो—वि० ।

वैतायोडो—भू० का० कृ० ।

वैताईजणी, वैताईजवो—कर्म वा० ।

वैतायोडो—देखो 'वैतायोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री वैतायोडो)

वैताळीस, वैतालीस—देखो 'वयाळीस' (रू. भे.)
 वैतावणी, वैताववो—देखो 'वैताणी, वैतावी' (रू. भे.)

वैतावणहार, हारो (हारी), वैतावणियो—वि० ।
 वैतावियोडो, वैतावियोडो, वैतावयोडो—भू० का० कृ० ।
 वैतावीजणी, वैतावीजवो—कर्म वा० ।

वैतावियोडो—देखो 'वैतायोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री. वैतावियोडो)

वैतियो—वि.—एफ वालिस्त लम्बा ।

स पु—केवल एक वालिस्त लम्बा व्यक्ति, जो प्रायः पृथ्वी तल के अन्दर पाया जाता है और पृथ्वी पर जीवित नहीं रह सकता ।

वैदी—देखो 'विदी' (रू. भे.)

वैद्विय—देखो 'वेइद्विय' (रू. भे.)

वैहरी—स पु—विवाद ।

उ०—उरजन तणी लसे ऊतरियो, सुत जगमाल रहियो सुधर ।
 वैहरी हुप्रो वेहू गढ विग्रह, हाडा अने 'हमीर' हर ।

—रावत पत्ता आमेट री गीत

वे—देखो 'वेह' (रू. भे.)

वे—स पु—१ काम, कार्य । (२) वेद्य, हकीम । (३) पल्लव । (४) कल्पवृक्ष । (५) पीपर । (६) वेग, गति । (एका.)

७ स्वरूप, आकार ।

८ पोषाक ।

सर्व—१ 'वी' का बहुवचन ।

२ उस । (अमरत)

३ वह वा बहुवचन उन ।

उ०—वैरी रा मीठा वचन, फळ मीठा किपाक । वे खाधा वे मानिया, हुवा क्रतात खुराक ।
 —वा दा.

४ वह का बहुवचन, वे ।

उ०—मुनि घाले तप जोग वळ, सरग कपाटा हृत्य । वे ही कपण कपाट नू, ऊघाडण असमत्थ ।
 —वा. दा.

४ तृतीय पुरुष के लिए सम्बोधन सूचक शब्द, वह (सम्मान सूचक) ।

उ०—काम ती करणी इज चाहिजे । सगळे ई काम व्हाला है. चाम व्हाला कठई कोनी । पण थोडो घणी काम ती जेठाणीजी नै ई करणी चाहिजे । पण वे ती डील रं एल ई नी दे ।

—अमरचू नडी

ग्रन्थ—५ सम्बोधन सूचक शब्द ।

उ०—अहो भावो वे यार वंठी दरवार । ए चादणी रात, कही मजलीस की वात । कही कौण कौण, मुलक कौण कौण राजा देखे, कोण कौण पातिस्या देखे, कौण कौण दईवान देखे, कौण कौण महिवान देखे ।
 —रा. सा स.

६ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—१ उठे वे दळ जोध प्रकारा, साभू सरीर तणा ध्रम सारा । कहि गगा तन मजन कीघा, दान वितान मान करि दीघा ।

—रा रू.

उ०—२ रहता सेती रचीये, क्या वहता सुं काम । भाव जहा हसि वोसिये, वे भावत वेकाम ।
 —अनुभववाणी

रु. भे.—वेह, वै ।

वेअत—देखो 'वेअत' (रु. भे.)

वेअफल—देखो 'वेअफल' (रु. भे.)

वेअकली—देखो 'वेअकली' (रु. भे.)

वेअखरी—देखो 'वेअखरी' (रु. भे.)

वेअखरीचीसर—देखो 'वेअखरीचीसर' (रु. भे.)

वेअखरी, वेअखरी, वेअखरी—देखो 'वेअखरी' (रु. भे.)

वेअव—वि०—वेदज्जत, प्रतिष्ठादहित ।

उ०—ठिकाणा री मालक घोडा रजपूतां नं वेअद राखती सो इण सारु उरारी स्त्री कह रही है—हे सखिया अठ ठिकाणा में भड नै घोडा सुहगा हा सो एक आदमी सृ ऋाट उडता (युद्ध होता) भड नं घोडा सुहगा हो गया ।
—वी स टी

वेअदय—देखो 'वेअदय' (रु. भे.)

वेअदवी—देखो 'वेअदवी' (रु. भे.)

वेअरय, वेअरयी—देखो 'वेअरय' (रु. भे.)

वेआखरी—देखो 'वेआखरी' (रु. भे.)

वेआव—देखो 'वेआव' (रु. भे.)

वेआवरु—देखो 'वेआवरु' (रु. भे.)

वेआळिस, वेआळीस—देखो 'वेआळीस' (रु. भे.)

वेआसी—देखो 'वेआसी' (रु. भे.)

वेइदिय, वेइवी, वेइदिय—देखो 'वेइदिय' (रु. भे.)

वेइसाफ—देखो 'वेइसाफ' (रु. भे.)

वेइसाफी—देखो 'वेइसाफी' (रु. भे.)

वेइ—देखो 'वेइ' (रु. भे.)

उ०—राजा वीसलदेव अजमेर राज करे । वडी महाराज, तैसु कोई अघकी नहीं । तिणु सौ मूळवे लागवजी हुई, चारण वंसवडे वेइ । वेसवडी मूळवे पासै रहे अर मूळवी चणुओळियो रहे ।
—मूळवे सागावत री वात

वेइज्जत—देखो 'वेइज्जत' (रु. भे.)

वेइज्जती—देखो 'वेइज्जती' (रु. भे.)

वेइतवार—देखो 'वेइतवार' (रु. भे.)

वेइया—देखो 'वेइया' (रु. भे.) (जैन)

वेइल्म, वेइल्मी—देखो 'वेइल्म' (रु. भे.)

वेई—देखो 'वेई' (रु. भे.)

उ०—१ मन में धरता मरट धरट जिम भूले घूम, मेले धर गया मरु अटक मूमा पर भूम । वेटा नै मा वाप वेचि घं जीमण वेई, रुलतां रिगता राक करे वेसलाटा केई ।
—घ. व. अ.

उ०—२ पछे समत १६७२ वळें पाछी आयी, तद काभडी पटें दियो । पछे विक्रकोहर पाणी री तीण वेई माहीमाह बोलाचाली हुई तद भाटी अचळदास मारियो ।
—नैणसी

उ०—३ गूजवी कोहर ती, तठे चारण री वित पावण वेई, सु कोहर चाडियो, सु पाणी नीसरें नहीं । ताहरा चारण विरवडी कही—
'वडा राठीड घेरी छे ज्युं पाय ।
—नैणसी

उ०—४ जद वीरमदे कहणु लागी—'ज, हू रठे पठारण रें जाय अर वध वेई अरज करू । ताहरा कल्याणमज सवणा माई समभता हुती, ताहरा कही—'राज । वध वेई अरज मता करो ।
—नैणसी

वेईठणी, वेईठवी—देखो 'वेईठणी, वेईठवी' (रु. भे.)

वेईठणहार हारो (हारो), वेईठणियो—वि० ।

वेईठणोडो, वेईठियोडो, वेईठयोडो—भू० का० कृ० ।

वेईठीजणी, वेईठीजवी—भाव वा० ।

वेईठाणी, वेईठावी—देखो 'वेईठाणी, वेईठावी' (रु. भे.)

वेईठाणहार, हारो (हारो), वेईठाणियो—वि० ।

वेईठायोडो—भू० का० कृ० ।

वेईठाईजणी, वेईठाईजवी—कर्म वा० ।

वेईठायोडो—देखो 'वेईठायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री वेईठायोडो)

वेईठावणी वेईठाववी—देखो 'वेईठाणी, वेईठावी' (रु. भे.)

वेईठावणहार हारो (हारो), वेईठावणियो—वि० ।

वेईठाविओडो, वेईठावियोडो, वेईठ व्योडो—भू० का० कृ० ।

वेईठावीजणी, वेईठावीजवी—कर्म वा० ।

वेईठावियोडो—देखो 'वेईठायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. वेईठावियोडो)

वेईठियोडो—देखो 'वेईठियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री वेईठियोडो)

वेईमान—देखो 'वेईमान' (रु. भे.)

वेईमानी—देखो 'वेईमानी' (रु. भे.)

वेउल—स पु [स विचकिलः] एक प्रकार की चमेली । (उ र)

उ०—१ वनि वनि विकसइ वेउल, खेउ लगाडइ चीति, दीठा द्राखह मडव, मंड वधारइ प्रीति । वर विलसइ अलवेसर केसर हेठि सुवेस, अघ पूगइ उतरायणि रायणि फलिय असेस ।
—जयसेखर सूरि

उ०—२ मवरिया सहकार, चपक उदार । वेउल वकुल, अमर कुल सकुल, कलरव करइ कोकिल तरणा कुल । प्रवर प्रियगु पाडल, निरमळ जळ, विकसित कमळ ।
—रा० सा० स०

वेउवियलद्धी, वेउवियलधी, वेउवियलद्धी, वेउवियलधी—देखो 'वेईठायलविव' (रु. भे.) (जैन)

वेक—स पु—१ एक प्रकार का शाक विशेष ।

उ०—वालु नइ वेलातरु, वेक वेतस वाणि । वघ्नारु वाहलु लीड
वाडलीज वग्वाणि । —मा का प्र

२ देखो 'वेक' (रु. भे)

वेकट—स पु—१हसी-मजाक करने वाला, मस्खरा ।

२ हीरै-जवाहिरात की परख करने वाला, जौहरी ।

३ युवा पुरुष ।

रु भे—वेकट, वेकठ

वेकटी, वेकढी—देखो 'विकट' (रु. भे)

उ०—वागी अखगा काहूळा नाग करतका साफलं वही, गुडं सिधू
वाहूळा जुम्माक कं गाराज । लडं वहादरेस घूत मूहडा गंणाग
लागी, नत्रीठा वेकढी वागी खळा धुनाराज । —प्रभूदान मोतीसर

वेकणी, वेकबो—देखो 'वेखणी, वेखवो' (रु. भे)

उ०—चपला गत चूवीह, परी गई अपछर परं । आय आगळ
ऊभीह, कमळादे नर वेकिया । —पा प्र

वेकणहार, हारी (हारी), वेकणिया—वि० ।

वेकियोडी, वेकियोडी, वेकयोडी—भू० का० कृ० ।

वेकीजणी, वेकीजवो—कमं वा० ।

वेकदर—देखो 'वेकदर' (रु. भे)

वेकदरी—देखो 'वेकदरी' (रु. भे)

वेकदरो—देखो 'वेकदर' (अल्पा, रु. भे.)

वेकर—स पु. १—एक प्रकार का घास विशेष ।

२ एक प्रकार की मिट्टी विशेष ।

३ देखो 'वेकर' (रु. भे)

रु भे—वेकरडी, वेकरिया ।

वेकरडी—१ देखो 'वेकर' (अल्पा, रु. भे.)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा, रु. भे)

वेकरडी—१ देखो 'वेकर' (मह, रु. भे)

२ देखो 'वेकर' (मह, रु. भे)

वेकरार—देखो 'वेकरार' (रु. भे)

वेकरारी—देखो 'वेकरारी' (रु. भे)

वेकरिया—१ देखो 'वेकर' (अल्पा, रु. भे)

२ देखो 'वेकर' (अल्पा, रु. भे)

वेकळ—१ देखो 'वेकळू' (रु. भे)

२ देखो 'विकळ' (रु. भे)

वेकल—देखो 'विकळ' (रु. भे)

उ०—मुला सूनित तै करी, तै कीया विसमल । खलडी गला
कटाय कै, क्या कीया वेकळ । —अनुभववाणी

वेकळी—१ देखो 'वेकळी' (रु. भे.)

२ देखो 'व्याकुळी' (रु. भे)

३ देखो 'व्याकुलता' (रु. भे)

वेकळू—देखो 'वेकळू' (रु. भे)

उ०—१ पखं सिश्या ताई खेत रं चारु मेर होळं होळं चकारा
देवती फिरी । सूरज हमेसा री गळाई आथूण दिस रं घोरा री
वेकळू मलमल में गढयो ही । —फुलवाडी

उ०—२ मन ई मन आ सोच राजी व्ही कंजकी कूडा में मोहर
व्हाकी, वा सोख में राम-जाणुं काई वगसैला ! वा मन लगाय
आपरी खट-पट में अळभगी । वेकळू रेता कूडा भर भरने मळवा
माथे लाय राळघा । —फुलवाडी

उ०—३ अंडा अंडा अकरम, अन्याव अर अघरम चुपचाप सट्टे,
चुस्कारी ई नी करे । वेकळू रेत रा लाठा घोरा में विरखा री
पाणी रिसे ज्यु रण राज री रघा रं अतस में सगळा अकरम,
अन्याव भरं बुडको ई नी ऊठे । —फुलवाडी

वेकस—देखो 'वेकस' (रु. भे)

वेकसूर—देखो 'वेकसूर' (रु. भे)

वेकानूनी—देखो 'वेकानूनी' (रु. भे)

वेकाम, वेकामो—देखो 'वेकाम' (रु. भे)

उ०—१ घरि ही हरि सु हित लाय रही, मन रे मत जाह भटकण
कूं । कण पाखी काम वेकाम करे, थोथा भूर फटकण कूं ।

—सुरजनदास पूनियाँ

उ०—२ जाके घट विरहा वसे, जा घट प्रगटे राम । जनहरिया
घट विरह विन, सोई घट वेकाम । —अनुभववाणी

उ०—३ रहता सेती रचिये, क्या वहता सु काम । भाव जहा
हसि वोलिये, वै भावत वेकाम । —अनुभववाणी

उ०—४ सहजे जीव जिद कुं छाडे, ताकु कहत हरामा । काजी
करद गळ सिर सारे, विना दोस वेकामां । —अनुभववाणी

वेकाज—देखो 'वेकाज' (रु. भे)

उ०—तु क्यु सूतो नीद भरि, भजन विनां वेकाज । जनहरिया
जोरी करे, खडो सिराणुं वाज । —अनुभववाणी

वेकावू—देखो 'वेकावू' (रु. भे)

वेकायदा—देखो 'वेकायदा' (रु. भे)

वेकार—देखो 'वेकार' (रू भे)

वेकारी—देखो 'वेकारी' (रू भे)

वेकी—देखो 'वेकी' (रू भे)

वेकीमती—देखो 'वेकीमती' (रू. भे.)

वेकुठ—देखो 'वेकुठ' (रू भे)

वेकुथहत्थिराज, वेकुथहत्थिराय, वेकुथहत्थिराज, वेकुथहत्थिराय—स. पु.

[स. वेकुथहत्थिराज] हाथियो की सेना का नायक । (जैन)

वेकूफ, वेकूब—देखो 'वेकूफ' (रू भे)

वेकूबी—देखो 'वेकूबी' (रू भे)

वेख—१ देखो 'वेख' (रू भे.)

२ देखो 'वेखण' (रू भे)

३ देखो 'वेख' (रू. भे)

४ देखो 'वेख' (रू भे)

५ देखो 'वेख' (रू. भे)

वेखटक वेखटक—देखो 'वेखटक' (रू भे)

वेखणी, वेखनी—क. स —[स वि+ईक्षणम्] १ भ्रवणोक्त करना, देखना ।

उ०—१ बजि थाळ सकळ वाजिप्र वजै, कुसम सधरा सुरियद किया । वेखिया हीज भावे वणै, चण दिन तणी भ्रजोधिया ।

—सू प्र

उ०—२ बळीबळी वीरहाक नीपता नगरा कागी, सेना पीठ लागी जोस धारिया सकोध । उववरा आसमाण भुजाटां सेल री भ्रण्या, वेखी कस वस मार्थे नडिता विरोध । —वादरदान दधवाडियो

उ०—३ वणै चार, आभास वदनारविद, उरं ऊपजं वेख रेखा अणद । सदा हेत सता इसा नेत सोहे, महा मण रूपी तिका नैण मोहे ।

—रा रू

उ०—४ भंगव डावी भणै दुगडियो मान दिरीजं, जो राजा जीमणी पोहर हैक्षण ठेहरीजं । वल आडो वेखता पीर खोडस पारभण, आठ पोहर योमास चलैऊ भेडो तं सुण । —पा प्र

२ निरीक्षण करना, जांचना ।

३ जानना, समझना ।

उ०—१ कथ सुणि न्रप दाखियो क्लिपा करि हवि तूं मांग कहै सुजि हाजरि । एक वार ओखद तत एहो, जपियो मै वेखा गुण जेहो ।

—सू प्र.

उ०—२ वेदा भेदा वेखी, पेखी दह आठ हेर पीराण । राधी नांम सरीख, नह को नर देव नागिद्र ।

—र ज. प्र

वेखणहार, हारी (हारी), वेखणियो—वि० ।

वेखिओडी, वेखियोडी, वेखयोडी—भू० का० कृ० ।

वेखीजणी, वेखीजवी—कर्म वा० ।

वेखणी, वेखवी, धीखणी, धीखवी, वेखणी, वेखवी, श्रीखणी, श्रीखवी
—रू. भे ।

वेखता—देखो 'वेखता' (रू. भे)

वेखवर—देखो 'वेखवर' (रू भे)

वेखवरवारी—देखो 'वेखवरवारी' (रू भे.)

वेखवरी—देखो 'वेखवरी' (रू भे)

वेखरघ—देखो 'वेखरघ' (रू. भे.)

उ०—उठा घरमदुवार मागि नीसरिया हुता । मरि, छटि, तूटि, घणी वेखरघ ह्रह, तूटि मरि, भूखा मरि मर नीसरिया हुता । तिर्हे वास्तं पातिसाहुजो खिजिया ।

—द वि

वेखवेरी—देखो 'वेखवेरी' (रू. भे.)

वेखातर, वेखातरि—देखो 'वेखातर' (रू. भे.)

वेखास—स. पु —१ प्रयत्न, प्रयास, कोशिश ।

उ०—कोई कहै मोनि पाठ ग्रह विघ्या, कोई वसतै वनवासा । सतपुर विन ससा नही भाजै, भावे कोटि करी वेखासा ।

—अनुभववाणी

२ विश्वास, एतबार ।

उ०—सुण जिनवर सेत्रुजाघणीजी, दास तणी अरदास । तुज आगल बालक परंजी, हुती करुं वेखास, रे जिनजी मुज पापी नै तार ।

—वृस्त

३ विलाप, रुदन ।

उ०—१ सुणि माखणी प्रावइ घरै, व्याप्यउ विरह मयण बळ घरै । सूती सेज करै वेखाम, मोडइ भ्रग, मू कइ नीगास ।

—डो मा

उ०—२ वोटावे मन विलसा किया, देवसूत्र एहवा थया । वार डोलउ करइ वेखास, वळि वळि जोवइ मारु-साम । —डो. मा.

वेखियोडी—भू० का० कृ०—१ भ्रवलोकन [किया हुआ, देखा हुआ २ निरीक्षण किया हुआ, जाचा हुआ. ३ समझा हुआ जाना हुआ । (स्त्री वेखियोडी)

वेखुदी—वि [फा. वेखुदी] जिसमे चेतना न हो, वेखवर ।

उ०—वेखुदी वै आदि वैगम, अजर अचळ अचाल । चिदानद अरूप अ्रवगति, खबर दारो ह्याल ।

—ह पु. वां.

वेखून—वि.—निरापराध, वेखून ।

उ०—त्रीकम अरज करा छा तूना, मोटी अकलि समापै मूना ।
जादवराव निमो जर जूना, बैकठ मा राखै वेखूना । —पी प्र.

वेग-स. पु [स] १ प्रवाह, वहाव ।

उ०—वहै खग आय खळा झळ वेग, तुटै धण आप तराँ मिर
तेग । सथी करि मेछ घणा समराथ, भटी भड ताम पडै भाराथ ।
—सू प्र

२ शरीर मे से मल-मूत्र आदि निकलने की प्रवृत्ति ।

३ मोतिया विन्द का समय पर ऑपरेशन न होने पर नेत्र मे चलने वाली सूत्र, पीडा ।

४ वायु विकार ।

५ चौबीस गुणो मे से एक गुण जो आकास, जल, तेज वायु और
मन मे पाया जाता है । (न्याय)

६ गति, चान ।

उ०—१ पमग वेग उपडै, वराँ सनूर वकडै । मुलै अपार खगथ
अणी सकति अग्रय । —रा रु

उ०—२ चोखी बात फौनता नै जेज लागै पण भूडी बात तो पवन
रै वेग उडै । रेडियो मे खबर पूगै ज्यू आ खबर धानपुर पुगी तो
गाव मे खळबळी माचगी । मिनखा रा अवे मूँडा जितरी ई वाता ।
—अमरचू नडो

७ तीव्र गति, तेज चाल ।

उ०—१ राति सामीर सारग डाणुं ग्रहै, वाइ ऊपडिया लीण जाणुं
वहै । हूँ वेहूँ प वेग प हैमरा, पाधरा जाण पाहाड उडुँ परा ।
—गु रु व.

उ०—२ जिम लवण रहित रसवती वचन रहित सरस्वती, कठ
रहित गायन, अत्य रहित वादन, फल रहित व्रत, तप रहित
भिक्षुक । वेग रहित घोडो, केस रहिन मोढी, वस्त्र रहित सिण-
गार, स्वरण रहित अलकार, इत्यादि । —रा सा स

उ०—३ मभि खगा फाट खेल्है मलग, आफळै अणी परधार अग ।
पवन रा कुटवी वेग पाण, उडुउ सिधगुटका जिम उडाण ।
—सू प्र

८ आवेश, लोष ९ दृढ प्रतिज्ञा । १० प्रेम, अनुराग । ११ वीर्य,
द्युक्र । १२ वीर्यपात, वीर्यस्खलन । १३ शक्ति, बल, सामर्थ्य ।
१४ शीघ्र, जल्दी, तुरन्त (अ मा)

उ०—१ मम ढील करी हल वार म लावी, वेग चढो वहिळा
वहिळा । भिडता भड सूरज मडळ भेदै, भूळ भरै रम भूक भला ।
—गु रु. व

उ०—२ सुपुण सनेही माहला, वाला वेग पधार । अलवेना अलजी
घणी, देखण पीय दीदार । —डो. मा

उ०—३ सोवायत इद्र साह रौ, राव दिसी तिण-वार-। गीयदास
पमार सग, पूगी वेग पुकार । —रा रु.

उ०—४ चद उठी दळ वेग चलाया, आई ठीक नजीक सु आया ।
प्रळै काळ जिसडा दळ पावस, दळपत छत्रहूत कोसा दस ।
—सू. प्र

१५ प्रसन्नता, आनन्द ।

१६ देखो 'वेग' (रु भे)

रु भे.—वेग, वेध वेधी, वेव, वेग, वेगाण ।

वेगइरउ, वेगइरौ—कि वि —अपेसाकून शीघ्र, जल्दी ।

उ०—पथी, हेक सदेसडउ. लग ढोलइ पँहव्याय । जीवन जायइ
प्राहुगउ, वेगइरउ घर आय । —डो. मा.

वेगउ—देखो 'वेगी' (रु भे) (उ र.)

उ०—चदमुखी, हुसा-गमणि, कोमळ दीरध केस । कचन-वरणी
कांमनी, वेगउ गावि मिल्लेस । —डो. मा.

वेगड, वेगडउ—स पु —१ राठीडो की एक शाखा या उक्त शाखा का
व्यक्ति ।

२ देखो 'वेगड' (रु भे)

३ देखो 'वेगडो' (मह, रु भे)

उ०—१ सवा कोटि धन खरचियो, हरखी 'महमद शाह' हो ।
विरुद दिया वेगड तणी, प्रगट थयो जग माहि हो ।
—ऐ. जै. का सं.

उ०—२ कमधा घर ऊगी किरणाळी, भुज लग हथ पावू भालाळी
वेगड घमल कथ वळवाळी, वाखाणू घाघल राव वाळी ।
—पा प्र.

उ०—३ कमळ फाडै पडै न चाले कलोडा, छड भाजै भरै जीव
छोळा । 'अजारी' पूजिया माड काधो अवे, वेगड ताड तो जिसी
वेळा । —हरनार्थसिंह चापावत री गीत

उ०—४ राठउडै उदियउ चउड राउ, वेगडइ साड वीरम वियाड ।
साळवडो थाणउ दै सघीर, हठमलन राउ थाणुं हमीर ।
—रा ज. सी.

उ०—५ वेगडउ साड 'विकउ' विवध, कुळ भाणु तेथि उदियउ
'करघ' । ऊधरिय छत्र फेरावि आण, ताई मडोवर मूलताण ।
—रा. ज. सी

४ देखो 'वेगळी' (मह, रु भे)

वेगडरीगडी—स. स्त्री एक प्रकार की बन्दूक ।

वेगडि—देखो 'वेगडी' (रु भे)

वेगडियो—स पु —१ धीहटे का नाम । (सभा)

२ देखो वेगडी' (अल्पा, रू भे)

वेगडी-स स्त्री. [स विकटशृंगी] तीक्ष्ण और सीधे सींगे वाली गाय या भैंस। (उ र)

रू भे —वेगडी।

वेगडी—१ देखो 'वेगड' (रू भे)

२ देखो वेगडी' (रू भे)

उ०—१ पावू पाट रं रूप राठवडा, सेवै तूभ सधीरा। वेगडे पाल्ह लीया वरवाई, सिध तणा साडी रा।

—पावू धाघळीत राठीड री गीत

उ०—२ माघी अटक न ऊनरं माघी कटक न जाय। वेठी साटै वेगडी, घर वंठी घर खाय। —बां दा ख्यात

उ०—३ वाछना वरमाळ वेगडा, वकता सुणुं 'दूद' वसियो। जेसळगिरा तिकी दिन जाणुं, हाथा ताळी दे हसियो।

—हूफी सांहु

उ०—४ महि मालम थान मसूरियो, धोथ हूत खड प्रावजै। वेगडा 'पाल' गड वाहरू, दम इक जेज म लावजै। —पा प्र

उ०—५ दरगह राण कळण विच दारण, गी नाही सुधी कळण। कांघी कुण माडं 'कांघळ' रा, वेगडा घोरी तूभ वण।

—चतुरभुज बारहूठ

३ देखो 'दोगळी' (रू. भे)

वेगड, वेगडउ—१ देखो 'वेगड' (रू. भे.)

२ देखो 'दोगळी' (मह, रू भे)

३ देखो 'वेगडी' (मह, रू भे)

उ०—उड्डि महाभर कध, भार भलपण सवगहे। वेगड वांभी वहण प्रियो सांभी पतिसाहे। —गु रू. ब.

वेगडियो—१ देखो 'वेगड' (अल्पा, रू भे.)

२ देखो 'वेगडी' (अल्पा, रू भे)

वेगडी—देखो 'वेगडी' (रू भे)

वेगडी—१ देखो 'वेगड' (रू भे)

२ देखो 'दोगळी' (रू भे)

३ देखो वेगडी' (रू भे.)

उ०—वाजिया वेगडा, त्रिखल भजै थडा। ऊजडे सड्मडा, धूज प्रिधो पुडा। —गु रू व

वेगडत—कि वि —तत्काल, गीघ्र, तुरन्त।

उ०—धीत माज 'करनला' कर विचार, 'लाखण' रं नाही पुत्र सार। सुब सुदा दीस्ट जोयी सगत, ताहा उठची लाखण वेगडत।

—रामदान लाळस

वेगम-स पु —१ वह स्थान जहा पर कोई नहीं जा सके, अगम्य स्थान।

उ०—१ सुख सागर की सेन वताई, मेरा अतर जाए रया। लगम मगन सतगुरु कर दीना, वेगम देस गया।

—सीहरिरामजी महाराज

उ०—२ वेगम का जाणत कौन वजारा, वाही सहर की मोय वतावै। सी सत् गुरु हमारा। —सीहरिरामजी महाराज

२ देखो 'वेगम' (रू भे)

उ०—१ पदमणी दिलीवर होण प्रीत, साजादा जूट रण सरीत। सूरमा लडे चवडे सभाळ, वेगमां धमै पडदै विचाळ। —वि स.

उ०—२ हरीया परणी पीव सु, खेलै अग लगाय। दूजी वेगम देख करि, भावै ज्य उठि जाय। —अनुभववाणी

उ०—३ दळ दिली कळळ दरोळ, षडि वेगमा चख-डोळ। तिए वार दळ सुरताण, खळ भळं इम खुरसाण। —सू प्र.

उ०—४ पाटवी हेळवी वेगम पैलकं, तें समं अंलकं लीध टाळा। पागती 'दली' नै 'रतन' परणीजता, वाट जोती रही 'गजन' वाळा।

—महाराजा जसवर्तसिंहजी री गीत

वेगमी—देखो वेगमी' (रू भे)

वेगर—देखो 'वेगर' (रू भे.)

वेगरज—देखो 'वेगरज' (रू भे)

वेगरजी—देखो 'वेगरजी' (रू भे)

वेगरणी—वि.—मध्यस्थ।

उ०—व्या'रा वेगरणी, विचावला, रुळपट, लपचेडू अर जार भायेला भोडू पटावै तथा खूब खावै-पीवै है। मोफतिया इमा मीकां मौज-मजा ही किया करै है। —दसदोख

रू. भे - वेगरणी।

वेगरणी—स पु —मध्यस्थता।

वि०—मध्यस्थ।

रू भे —वेगरणी।

वेगळ—देखो 'वेगळ' (रू. भे)

वेगळि वेगलि वेगळी. वेगली, वेगळ, वेगलु, वेगळी, वेगली—कि वि० —१ क्षीघ्र, जल्दी।

उ०—१ अकस्मात् घुंअरि पडिवा लागी, एतलनइ नालिनी वेगळि भागी, वस्तु चावणी कीजइ, लहरइ सिध भीजइ, एकं घापणी वस्तु तिवारइ अरदमूलि दीजइ अनैरं लीभीए तिवारइ तै वस्तु लीजइ सार गाठडी सुग्रहीत कीजइ,

—व स.

उ०—२ राजद्वार कोठार, जीन-साला काढीजै जरद जरही घडे लोह लोहे कूटीजै। वेनाणी वेगळा, वाढ घालै केवाणा, कूंत वाण कीजति अणी तीखा खुरसाणा। —गु. रू ।

उ०—३ बरहास दोहें वेगळा, किरि खडै नभ उर मडळा । हुह हमस धम धम है-खुरा, वाजत धम-धम पाखरा । —गु रू व २ दूर ।

उ०—१ वेग वाळ्या हय रे रे रय सुं रय वाघ्यो रळी । गज थाट मोगर वहइ उवट, वैदवा थई वंगळी । —रुकमणी मगळ

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, अलीअ लक्षण होइ जेह । वेदि जे विधि विस्तरी, सविकी पालइ तेह । —मा का. प्र.

उ०—३ आहेडीइ मन फेरव्यु, ग्रिहेवा लागु हाथ रे । रेहि रे पापी नूह वेगलु, नल छि माहारु नाथ रे । —नळाश्यान

उ०—४ वेलि विहूणा पत्र परि, हू हूइ छउ हीण । विटल रहि रे वेगलु, आगलि थिका अमीण । —मा का प्र.

उ०—५ किसी एक विरहणी हूई विरहावस्था, आहार ऊपरि करइ अनास्था । सरब सिगार, मानि अगार । तिराइ अरवा (अतरगत) फूला कीधा वेगला । चद तपइ पान, यया विखवान ।

—रा. सा. स.

वेगयत वेगवान-वि [स वेगवान्] वेगपूर्वक चलने वाला, तेज चलने वाला ।

उ०—घोडा छं सु महा वेगवत छं । रय छं सु महा अतरिख वहे छं । चदारणि कहता रखमणीजी के साथि ए चालिया । सु किसा दीसं छं । जिसा अयोध्या का वासी वैकुंठ तं । —वेलि टी.

स. पु —१ विप्यु ।

२ दंत्य जो कृष्ण पुत्र साम्ब के द्वारा मारा गया था ।

३ कश्यप एव दनु का पुत्र एक दानव ।

४ एक नाग ।

रू भे —वेगवती ।

वेगवाहिनी-स. स्त्री [स] १ गंगा नदी का एक नाम । (२) कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी विशेष । (सगीत) (३) एक प्राचीन नदी (पुराण)

वेगसर-स पु —१ तेज गति से चलने वाला घोडा ।

२ देखो 'वेगसर' (रू भे)

वेगानगी—देखो 'वेगानगी' (रू भे)

वेगानी—देखो 'वेगानी' (रू. भे.)

वेगागळ वेगागळी—१ घोडे के गले में बाधने का चमडे या सूत का तस्मा या रस्ता ।

२ घोडा, अश्व । (ह ना. मा)

उ०—ऊपरि फौज घटा आडवर, रज धूळ हि छायो रातवर । चडिया घडे घडाला चचळ, वाजे नास वहे वेगागळ । —गु रू. व

वि.—तेज गति से चलने वाला, अति चंचल ।

उ०—सिरागारं सरब हेम मे साकति, गळं गज्जगाह वध ए । वेगागळ वाजराज वाहण या, दीपत सरळ कध ए । —गु. रू. व क्रि वि —तेज गति से, तीव्रगति से ।

उ०—१ कसस्स कठळा, आकुसा वीजळा, चमक्कं चप्पळा, वैरका ववळा । हेंच ढालववळा, अस्सि ऊतामळा, वहे वेगागळा, वाज वाहे नळा । —गु. रू. व

उ०—२ अन्नूप रूप चित्राम अग. वेगागळ थळ नाचं विडग । अद-भूत पराक्रम गुण अछेह, ऊचास कना सपतास अेह । —गु रू. ब.

रू भे —वेगागळ, वेगाळ, वेगाळी, वंगागळ, वंगागळ, वंगागळी, वेगाळ, वंगाळी ।

वेगार—देखो 'वेगार' (रू. भे.)

उ०—आज री सिद्ध्या ती घरवाळा नै श्री काम सभळाय देणी ही । थारं गिया पछे ती सेवट आ लोगा नै ईं अं सगळा काम करणा है । महाराणी व्हेतां थका ईं इत्ता दिन घरवाळा री धणी ईं वेगार काढी । —फुलवाडी

वेगारी—देखो 'वेगारी' (रू भे)

वेगाळ वेगाळी-वि०—१ तेज गति से चलने वाला, तीव्रगामी, शीघ्र-गामी ।

उ०—१ कळ चाळ नित्र छात्राळ कदळ भीच काळ भुजाळ, सुडाळ दरगह सावता वेगाळ खैग बडाळ । किरमाळ वळ रिणताळ केता जीपगा जमजाळ । —पीर आसियो

उ०—२ चमराळा व्हे चूर, वेगाळा तेजी वडा । पडता घर भेळा पडे, सर गोळा नर सूर । —र. वचनिका

२ जल्दवाज, सतावला ।

३ तेज वाला, तेजस्वी ।

क्रि० वि०—१ शीघ्र, जल्दी ।

उ०—आर्यं थह उजवाळ, कवरा गुर मिसलत करे । वीरम दिस वेगाळ, जद लिखिया कागळ 'जगं' । —गो रू.

२ देखो 'वेगागळ' (रू. भे)

उ०—१ वहे वेगाळ उरा उण वार, घडा चढ धिक्क सरा धूंकार । सक्क रुडमाळ सिभू सिरताज, विचं दळ सुर हिलौहळ वाज ।

—गो. रू.

उ०—२ घडहडें सात-पुडि घूजि धम-हम धरा, डब शीघूळ अंवर चडें डबरा । वावता नास वेगाळ तेजी वहे, गाहटा गोम पाहाड पाए गहे । —गु. रू. व.

उ०—३ गाळं भाण कायरा सोकिया तीर वाण गोळा, गजा कध
हाळं पाण तोकिया तेगाळ । भाण रथां रोकिया गंगाण खेल रीघा
भाळं, 'गोघा' वाळं सत्रा घाण भोकिया वेगाळ ।

—जालमसिंह चापावत री गीत

रू भे.—वेगाळ, वेगाळी ।

वेगावेधि—क्रि० वि०—शीघ्र, जल्दी ।

उ०—चीतवियर चहवारिण, जउहर की माडर जुगति । हव हुइ-
स्या हरपुर दिसा, वेगावेधि विहारिण । —घ. धचनिका

वेगिनी—स. स्त्री. [स] एक नदी का नाम ।

वेगुना, वेगुनाह—देखो 'वेगुनाह, (रू भे)

वेगेरी—देखो 'वेगी' (रू. भे.)

उ०—पथी एक सदेसडो, लग डोलं पहुचाइ । जोवन जावं प्राहुंणी,
वेगेरी घर आइ । —ढो मा

वेगी—वि० [स्त्री. वेगी] १ शीघ्र, जल्दी, अघिलम्ब ।

उ०—१ काळा काळा केस भवर, म्हारी घाटी कामणगारी रे ।
घाधी रा अमला में, म्हारी सेज अलूणी रे, वेगा वावडज्यो । हा
रे सासू रा जाया, वेगा वावडज्यो । —फुलवाडी

उ०—२ खिसकण घाळा भिनखा रा पग हा जठे ई चिपग्या ।
मासी अणती जोर सृ हसी । बोली—घानं म्हारी बोली विचै ई
कुत्तां री बोली वेगी समझ में आवै । आवै जकी ई चोखी ।

—फुलवाडी

उ०—३ वेगा दूत दिलीपतवाळा, आवै गुजर खड उताळा । चाहे
दुरग तकू तजि ताळा, समपे धन मणि मुकत विसाळा । —रा. रू.

उ०—४ ताहरा राणुं ज्ञान करि परणीजण नुं चालियो । ताहरा
वगडावता नु आदमी मेलिह्या जु राणुंजी परणीजण नुं चढिया
छे । थै वेगा आवी । —देवजी बगडावत री बात

रू. भे —वेगी, वेगर, वेगेरी, वेघ, वेघी, वेगी ।

वेघ, वेघी—१ देखो 'वेग' (रू. भे.)

२ देखो 'वेगी' (रू. भे.)

उ०—१ पोलि उघाडी गढ तणी, सरल सभाव राणी रे । मुक्या
तेडण मत्रवी, वेघ पधारी सुलतानी रे । —प. च. चौ.

उ०—२ महिर करी हिब मोहि, बीदा करी वेघी घणी जी । आ-
लिम साथे होय, पोलि लगं पहुंचावियो जी । —प. च चौ

उ०—३ तें ऊपरि ए पदमणी, माइ प्राण पासो । स्यु करिवो
सूधी मती, वेघी कही विमासी । —प. च. चौ.

उ०—४ वादसाह हूत काणी छोड जं शणा न वेघा, एं न छडे हिदू
धरम विनादी आफेक । कही साह 'भाण' नंद पातवा छुडावो किसा ?

एक एक प्रती चहा माथी एक एक ।

—सक्तावत गोमळदास (सावर) री गीत

वेड—१ देखो 'वीहड' (रू. भे.)

उ०—स्या माहे ऊगी मुदी बोल्थी, राज्याजी, राम राम, राज्याजी
समाध्या छी । राजा हस्यो । तरं ऊगं कह्यो, महाराज, जाट गधेडा
की तरह छे, वेड का रहिण वाळा छां, बोलण की कू ही जाणा
छा नही, माफ करिज्यो । —कहवाट सरवहियो की बात

२ देखो 'वेड' (रू. भे)

३ देखो 'वेडो' (मह, रू. भे)

४ देखो 'वेड' (रू. भे)

५ देखो 'वेड' (रू. भे)

उ०—वाग वणाया वेड में, काटा आक कटाय । सीसम आंवा
तर सघण लाखा दिया लगाय । —चिमनदान रतनू

६ देखो 'वेड' (रू. भे)

उ०—१ वेड परायण इसी वचाइ, मही सरायण सुराज्यो मूठ ।
निज नारायण गुरु निवाण, फजर गह तारायण फूठ ।

—वाकीदास वीहू

उ०—७ वाट प्रसाद वळोवळ वागा, असना भागी लोभ तणी ।
चेला गुरा वेड री चरचा, साधा सी सी कोस सुणी ।

—वाकीदास वीहू

वेडकी—देखो 'वेडकी' (रू. भे.)

२ देखो 'वेड' (अल्पा, रू. भे.)

वेडणी—देखो 'वेडणी' ।

वेडणी, वेडवी—१ देखो 'वेडणी, वेडवी' (रू. भे)

उ०—वळवेव महावळ तासु भुजावळि, पिडि पहरतं नवी परि ।
विजडा मुहे घेडतं वळभद्र, सिरा पुज कीघा समरि । —वेलि

२ देखो 'वेडणी, वेडवी' (रू. भे)

वेडणहार, हारी (हारी) वेडणियो—वि० ।

वेडिघोडो वेडियोडो, वेडघोडो—भू० का० कृ० ।

वेडीजणो, वेडीजवी—कर्म वा० ।

वेडली—१ देखो 'वेडो' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'वेडली' (रू. भे)

वेडाफोड—देखो 'वेडाफोड' (रू. भे)

वेडियोडो—१ देखो 'वेडियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेडियोडो)

वेडी—१ देखो 'वेडी' (रू. भे)

२ देखो 'वेङ्क्री' (वि स्त्री)

वेङ्क्री, वेङ्क्री—देखो 'वेङ्क्री' (रू. भे.)

वेङ्क्री—देखो 'वेङ्क्री' (रू. भे.)

उ०—वेङ्क्री देखो विसन डोयो, सचियार साल्हिया लेविसी । पार-गिराय पुह्वाय भाभराय, वास निह्चळ देविसी । —ऊदीजी नंगु
वेच—देखो 'वे'ज' (रू. भे.)

वेचकी—देखो 'वे'ज' (अल्पा, रू. भे.)

वेचणी, वेचवी—क्रि. स — १ खर्व करना, व्यय करना ।

उ०—विद्या लेवानु वीजु भेद, सोमलु प्राणी । माणसिउ खेद ।
सुत भणायवानु जु खप होय, तु घन वेचीज्ज अति जोइ ।
—नळदवदती रास

२ देखो 'वेचणी, वेचवी' (रू. भे.)

उ०—१ पांच तत महा तत रहु पास, सभारं तना प्रभु सास सास ।
गुण तीन दास पतिसाह गाइ, वेचिया प्रभु थारा विकाइ ।
—पी. अ

उ०—२ वेचं मत तु वेगडी, चित नाणा री चाह । वळं न मिळसी वेगडी. नाणा दीक्षा नाह ।
—वा. दा

उ०—३ आहू अखइ मोहती दूही वडै, राजा वेचू नही ती ओवी खाण मिळ ।
पण घोडो ठराकी छै । रवियाण चद, ऐराक बीज वड बीज प्रात गाज,
सापुरस वेण, पहिली तो लहवाय लहवाय पीछें गरवाय गरवाय ।
—हाहल हमीर री वात

उ०—४ मन मे धरता मरट धरट जिम भूखं घूर्मे, भेलै घर गया मळ मटक
मूआ पर भूमे । वेटा नै मा वाप वेचि छं जीमण वेइ रुलता रिगता राक करे
वेललाटा केई । —घ व अ

३ देखो 'वेचणी, वेचवी' (रू. भे.)

उ०—१ अथवा सालि दालि घत पनवानादिक अथवा देवद्रव्य वस्त्रा-
दिक जइ धराइ मूलिइ आपणइ धरि वावरइ । अनोराइ स्रावक हइ दिइ ।
अथ महात्मा दरसनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिकं वेचइ ।
—पट्टीशतक

उ०—२ गुरु एकइ जि अनइ स्रावक एकइ जि छइ । पुण चैत्य देहरा
जूआ जूआ अनेरा अनेरा ना कराव्या छइ । तिहा जं द्रव्य छइ तं परस्परिइ
वेचइ । पेला देहरा नु उलिइ देहरइ, ओल्या देहरानू पेलइ देहरइ
न वेचइ । मनि भेद आणइ । —पट्टीशतक

उ०—३ तै राजा जं राज्य पालइ, तै अमात्य जं न्याय दिवाइइ,
तै कापड जं पखालिउ सूकइ, तै कारथा [जं] बुद्धि सीभइ तै तुरगम जं
वेगि पूजइ, तै द्रव्य जं सत्पात्रि वेचीइ । —व स

उ०—४ ... उन्मारगि न चालइ, गुरु उपदेस भालइ, धर-
मतहव न हालइ, नवै क्षेत्रे वेचइ धन, जिखिउ बावनु चदन इस्या
सीतल मन, इस्या कहीए स्वजन, ... । —व स

वेचणहार' हारी (हारी), वेचणियो—वि० ।

वेचिओडो, वेचियोडो, वेच्योडो—भू० का० कृ० ।

वेचीजणी, वेचीजवी—कर्म वा० ।

वेचत्र—देखो 'वेचित्र' (रू. भे.)

वेचरा, वेचराज, वेचराजी, वेचराय—देखो 'वहचराय' (रू. भे.)

उ०—वेचराजी रा चरणां कूकडा हें ज्या नू मिन्नी न मारें ।
—बा दा. ख्यात

वेचाण—देखो 'वेचाण' (रू. भे.)

वेचाक, वेचाख—देखो 'वेचाक' (रू. भे.)

उ०—रईयत सरव गई । धरती हेमा आगं वस सर्ग नही । कितरा-
हेक वरस युही धोकळ रह्यो । हिवं रावळ मालीजी कुटेवा पहिया ।
यु करता घट धरा वेचाक हुवी । —नैणसी

वेचाडणी, वेचाडवी—देखो 'वेचाणी, वेचावी' (रू. भे.)

वेचाडणहार, हारी (हारी), वेचाडणियो—वि० ।

वेचाडिओडो, वेचाडियोडो, वेचाडयोडो—भू० का० कृ० ।

वेचाडीजणी, वेचाडीजवी—कर्म वा० ।

वेचाडियोडो—देखो 'वेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेचायोडो)

वेचाणी, वेचावी—देखो 'वेचाणी, वेचावी, (रू. भे.)

वेचाणहार, हारी (हारी), वेचाणियो—वि० ।

वेचायोडो—भू० का० कृ० ।

वेचाईजणी, वेचाईजवी—कर्म वा० ।

वेचायोडो—देखो 'वेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेचायोडो)

वेचारी—देखो 'वेचारी' (रू. भे.)

वेचाळ, वेचाल—वि०—जिसका चाल चलन ठीक नहीं हो, बदचलन ।

वेचावणी, वेचाववी—देखो 'वेचाणी, वेचावी' (रू. भे.)

उ०—तत्य तेहे विविध चैत्ये ज जे जिनद्रव्य ऊपजइ ते जिनद्रव्य
देवद्रव्य परस्परइ एक चैत्यनउ द्रव्य वीजइ चैत्ये जे सुगुरु स्रावक
न वेचावइ ।
षट्टीशतक

वेचावणहार, हारी (हारी), वेचावणियो—वि० ।

वेचाविओडो, वेचावियोडो, वेचाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वेचावीजणी, वेचावीजवी—कर्म वा० ।

वेचावियोडो—देखो 'वेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वेचावियोडो)

वेचियोडो—भू० का० कृ०—१ खर्व किया हुआ, व्यय किया हुआ ।

२ देखो 'वेचियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'वेचियोडी' (रू भे)

(स्त्री वेचियोडी)

वेचिराग—देखो 'वेचिराग' (रू भे)

वेचेत, वेचेत, वेचेत—देखो 'वेचेत' (रू भे.)

वेचैन—देखो 'वेचैन' (रू भे.)

वेचैनी—देखो 'वेचैनी' (रू भे.)

वेचो—स पु—गाय भंस का दूध जमाया नही जाकर देवताओ को अर्पण करने की क्रिया ।

वि० वि०—गाय व्याहने के बाद कुछ दिनों तक उस गाय का दूध जमाने योग्य नहीं होता है । सात आठ दिनों के बाद जब दूध जमाने योग्य हो जाता है तब गाय का सूर्य पूजा जाता है और उस दिन गाय का सम्पूर्ण दूध पित्तरो वी चढा कर बाल-बच्चो को पिला दिया जाता है ।

वेच्छाल, वेच्छाल—स पु—एक प्रकार का कद विशेष ।

उ०—सिगमडी सीदूरीया, तिहा तविरिण पालि । सहसमुखी सजी-वनी, वच्छनाग वेच्छाल । —मा का प्र.

वेछराज, वेछराय—देखो 'बहचराय' (रू भे.)

वेछाड—देखो 'वेछाड' (रू भे)

उ०—१ सहस तेर' असवार, सीह सादूळ समोसर । वीस गयद वेछाड, निहस पावस गिर नीम्हर । —सू प्र.

उ०—२ वंसारें चख बोळ, छकें आया वेछाडा । चढ सयद किर चढें प्रचड कठीर पहाडा । —सू प्र

उ०—३ आका रीठ कुरीठ, वयड छोडें वेछाडा । इसा दीठ अवनानाड, पीठ लें हलें पहाडा । —सू. प्र.

वे'ज, वे'जकी—देखो 'वे'ज' (रू. भे)

वेजड—देखो 'वेजड' (रू भे)

वेजवान—देखो 'वेजवान' (रू भे)

वेजवाल—वि. [फा. वे+प्र जवाल=पतन] जिसका पतन न हो, नष्ट नहीं होने वाला ।

उ०—ईसवर निरकुस है, चाहे स करे । खुदा इरादो करे अ्रेक चीज को पैदा करे असवाव उसको । खुदा ताला री पातसाही वंजवाल है । अंतजादुल मुलक । —वा. दा. ख्यात

वेजान—देखो 'वेजान' (रू. भे.)

वेजा—स पु.—१ घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष, जिसमें घोडे के अगले पैर या चारो पैर पीडित रहते हो । (शा. हो)

२ देखो 'वेजा' (रू. भे.)

वेजार—देखो 'वेजारा' ।

वेजाताणा—स. पु—ताना बाना ।

उ०—कीडी कुंजर आद दे, सव जीन जटाणा, तु निराकार आकार मझ सरवग ममांणा । जेथी तेथी वेविर्ष, तु वेजाताणा, तुही एक तु, हु ऐता जाणा । —कैतोदास गाद्यण

वेजापता, वेजास्ता—देखो 'वेजास्ता' (रू भे)

वेजारा—देखो 'वेजारा' (रू भे)

वेजारी—वि०—१ चतुर, होशियार ।

२ देखो 'वेजारी' (रू भे)

उ०—आळा गूथण री त्वामची ऐडी के नामी म नामी वेजारा नै ई मात करे । हाथ भर लावी अर तोळी आळी । फूठरी अर भीणी गूथोडी । माय दोग खण । —फुलवाही

वेजु, वेजू—देखो 'विज्जु' (रू भे)

वेजोड़—देखो 'वेजोड़' (रू भे)

वेजो—देखो 'वेजो' (रू. भे)

वेज्ज—देखो 'वेज' (रू भे.)

वेज्यास—देखो 'वेज्यास' (रू. भे)'

उ०—दिसापाळ भूपाळ त्या छूट द्रढ, गिरणें श्रोत सेवा तरणी कोट गढ । गजे मेघ ज्यो वेग नीसाण गाजे, भया आस वेज्यास मैवास भाजे । —रा. रू

वेभ, वे'भ, वेभकी—देखो 'वे'ज' (रू भे)

उ०—इसै में कुंवरसी आप असवार हुय आय पोहती, सी महाडोळ री पाखती आई लागी । साम्ही जोवती वहे । महाडोळ री खोळी रें वेभ कर भरमल देखें छे । कोस एक पुहचाय सारो जावती दे पाछी धिरिया । सी धिर धिर पाछी देखें । —कुंवरसी साखलारी वारता

वेभड—देखो 'वेजड' (रू भे)

वेभु—देखो 'वेभो' (रू भे)

उ०—१ सक्ति अपूरव सइज ठहराणी, दुगति दूर हराणी । वाणी तेहिज वेभु वेधद, कीरति तास गवाणी रे । —वि कु.

उ०—२ तरस्या जाई गज तुरी परिहरि का प्रामाद । वेभु विण वेधिउ रहइ, उत्तर एक सवाद । —मा कां. प्र

वेठ—१ देखो 'वेठ' (रू भे)

२ देखो 'वेठ' (रू भे)

वेटीजणो, वेटीजवो—कि स—बकरी का गर्भ धारण करना ।

वेटीजियोडी—स स्त्री—गर्भ धारण की हुई बकरी ।

वेटेरिनरी अस्पताल, वेटेरिनरी सफालानो—स पु—पशुओ का चिकित्सालय ।

वेठ—स. स्त्री—१ लपेटने की क्रिया ।

२ देखो 'वेठ' (रू. भे)

उ०—१ जाणक डोकर खोलई, जिम बाघ वियायी, बाढी दीघी बेठ मा, घरतार गमायी। क्या तेरा प्रागण किया, हमका धन भाए, प्राध दिया हम वीरमा, सब घरती माए। —वी मा.

उ०—२ बसती री हुवं वाम बेठ नह काढणी, कामेती उराह मूँढ मे हुवं घणी। बाकी किण री वीह खुसी व्हे खेलणा, एता दं किर-तार फेर नह वीलणा। —भग्यात

३ देखो 'वेठ' (रू. भे)

बेठकड़ी-वि०—वेगार का कार्य करने वाला।

उ०—वेगार बेठकड़ा हासल, पान चराई न देवै। चबरी माफ चहुँ देस में, जकी विस्णोई नही देवै। —साहबराजजी

बेठणी, बेठवी—क्रि० स०—१ लपेटना।

२ घेरा डालना, घेरना।

३ निभाना।

उ०—१ काछेल वेघ वढिया कलह, ग्रहण पाल पूरी गरत। बेठिया हता 'वूँडे' विवध, आया जे 'पावू' भरय। —पा. प्र.

उ०—२ साभ मडीजे साकुरा, कमरा कसवाई, आफूगळं ऊंदा भगा भडपाई। बायोटे सह वेलिया, मनवार कराई, विध विध पानं बेठिया, म्हे खूद खिमाई। —वी. मा.

४ सहन करना, सहना।

उ०—सोधता गिली भगिभरि, आहेडीइ काडी। घिरि राखण मन तेणि कीर्ण, वेदन बेठी गाडी। —नळास्थान

५ वेगार निकालना, वेगार का कार्य करना।

६ पालन-पोषण करना।

उ०—१ वीरमदं री छोटी भाई भीमसीध किसडी हेक सिरदार। वेंडा घोडा रजपुता री बेठणहार। रजपुतवट रूपगा री रिभवार। दातार जूभार। भाइजी रं सामी आवण री तयारी कीनी। —पनां

उ०—२ बेठे वेटा जेम वीदगा, करं मीढ भड भवर कसी। चारण वरण तरण राव चापा, जग सर तारण तरण जसी।

—मेगराज भाढी

बेठणहार, हारी (हारी), बेठणियो—वि०।

बेठियोडी, बेठियोडी, बेठियोडी—भू० का० कृ०।

बेठीजणी, बेठीजवी—कर्म वा०।

बेठन-स स्त्री.—१ लपेटने की क्रिया।

२ लपेटने का वस्त्र, लपेटन।

बेठियोडी—भू० का० कृ०—१ लपेटा हुआ २ घेरा डाला हुआ, घेरा

हुआ ३ निभाया हुआ। ४ वेगार निकाला हुआ, वेगार का कार्य किया हुआ। ५ पालन-पोषण किया हुआ। ६ सहा हुआ, सहन किया हुआ।

(स्त्री. बेठियोडी)

बेठियो—देखो 'बेठियो' (रू. भे.)

बेठ-स पु.—१ वन, जगल।

उ०—सगता री लीनी सुरह, बीच चरती बेठ। कर भायी वूँडे कही, खीची ठाकुर खेड। —पा प्र.

२ कटीले पदार्यों (भाडियो) का बना हुआ मकान का अहाता, घेरा।

उ०—सरसा दळ सायर स कर्मत, मळवा छळं माडियो मेड। माभी मेर गयी दळ मुरडे, वड रहियो काटा री बेठ।

—दूदी आसियो

३ सीमा आखिरी छोर।

४ एक प्रकार का चन्दन विशेष।

५ देखो 'वेठ' (रू. भे)

६ देखो 'वैठ' (रू. भे)

रू. भे.—वेठ।

वे'ड, वे'डकी—देखो 'वैठ' (रू. भे)

बेठण-वि०—१ सहार करने वाला, नाश करने वाला।

२ तोडने वाला, विच्छेदन करने वाला, काटने वाला।

उ०—हूती जाणू सगत, गढा जड मूळ उखेलण। हूती जाणू सगत वडा भसुरा सिर बेठण। —पा प्र.

रू. भे—वेठण।

बेठणी, बेठवी—१ देखो 'बेठणी, बेठवी' (रू. भे.)

२ देखो 'बेठणी, बेठवी' (रू. भे)

बेठणहार, हारी (हारी), बेठणियो—वि०।

बेठियोडी, बेठियोडी, बेठियोडी—भू० का० कृ०।

बेठीजणी, बेठीजवी—कर्म वा०।

बेठर-वि०—निशक, निर्भय।

उ०—गिण छप्पय चा वरण लघु, त्यां मज्झं दळ टाळ। आघा कीधा ऊवर, बेठर नाम वताळ। —र. ज. प्र.

बेठली—देखो 'बेठी' (अल्पा, रू. भे.)

बेठली—देखो 'बेठली' (रू. भे.)

बेठारणी-वि०—१ दुष्ट, नीच।

२ देखो 'बिठारणी' (पु.)

३ देखो 'बेठारणी' (रू. भे.)

बेठक—१ देखो 'बेठक' (रू. भे)

२ देखो 'वेडी' (मह, रु. भे.)

उ०—१ उ तोलें ऐराफ, वोळण खळ उवावरी । वीरमदं वेडाफ,
मेळ वचन नह मानिया । —गो रु

उ०—२ चौडे खळ घूहड लाखा चाफ, वीरोळं लाख खळा वेडाफ ।
खत्री गुर वीरम घूणें खाग, चौछूटी जाणय साकळ वाग ।
—गो. रु.

वेडागर, वेडागर—देखो वेडीगारी' (मह, रु भे)

वेडागारी—देखो 'वेडीगारी' (पु.) (रु. भे)

वेडागारी—देखो 'वेडीगारी' (रु भे)

वेडागारी—देखो वेडीगारी' (रु. भे)

वेडाय—स पु —१ सूवर, सूकर ।

२ वीर, वहादुर, योद्धा ।

वेडारोटी—देखो 'वेडारोटी' (रु भे.)

वेडाळ—देखो 'वेडाळ' (रु भे)

वेडावती—वि०—१ जवरदस्त, जोरदार ।

२ वीर, वहादुर ।

वेडाहळ—स पु —मुललमान, यवन ।

वेडि, वेडिह—स. पु —१ वाग, बगीचा ।

२ वन, जगल ।

उ०—१ नयण ला मग नी उपमा किसी, हईह हारिउ वेडि जई
वसी । चरण चारिहि हस हरावती, वचनि जोणइ जीती भारती ।
—सालिसूरि

उ०—२ सूवारडह हूउ दाघ देवा, गिउ वेगि वेडिह पुण कास्ट
लेवा । इस्टिह न दीसइ दिसि धलि रोली, तु आबिली भीमइ भडिअ
मूली । —सालिसूरि

वि०—१ जगल का, जगली ।

उ०—जिहा सिवा तणा फेरकार, घूक तणा घूत्कार । व्याघ्र तणा
घूरहराट, न लाभइ घाट नइ घाट । लाघता दोहिली छइ, चीत्रा
चुरकइ, वेडि विलाउ घुरकइ । —सभा

२ देखो 'वेडी' (रु भे)

वेडियोडी—१ देखो 'वेडियोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'वेडियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री वेडियोडी)

वेडियो—स पु —जट (बकरी या ऊट के बाल) को कातने के निमित्त
उसकी बनाई हुई गेंदुरी नुमा पुनी ।

वेडी—स स्त्री —बकरी या ऊट के बालों को साफ कर कातने के निमित्त
वृत्ताकार बनाया गई गेंदुरीनुमा पुनी ।

वि०—१ मस्त, मत्त ।

२ कळहप्रिय, भगडापू ।

३ वीर, वहादुर ।

४ जवरदस्त, जोरदार ।

उ०—'केहरि' वेडी (वं) घणू, मज्जीठी मुहराइ । 'करन' 'कमी'
एकं मत्तं, वं ऊभा पडगाहि । —गू. रु व.

५ देखो 'वेडि' (रु भे.)

उ०—वेताल किलकिलइ, दावानल प्रज्वलइ । रीछ सांचरइ, वीर-
तणा यूय विस्तरइ । वेटी रा मांउ प्राहूकइ, ठामि ठामि वन रा
भइसा हूकड । —मभा

वेडीमणी—देखो 'वेडीमणी' (रु भे.)

उ०—ऊगती मोसरा दहायक भ्रमावा, सीत वरमिया क गात रा
सभ । मान रा वाळिया वचन वेडीमणा, तळा गाळिया गरव गज-
लभ । —राजुरांम वारदइ

वेडीवाही—देखो 'वेडीवाही' (रु. भे)

वेडूर—स. पु [स. वंदूर्यं] घूमिल रग का एक प्रकार का रत्न या बहु-
मूल्य पत्थर जिसे लहसुनिया भी कहते हैं ।

वेडो—सं पु —खट्टा, गड्डा ।

उ०—१ सु श्री रोज नवी-नवी जायगा वरखी खोहे सु भ्रागणा मैं
वेडा-वेडा हय रइया । ताहरा राणी एक दिन सात तवा लोह रा,
सवा-सवा मण री एक-एक तवो, कराय अर जठं सेतरांम भाय
वंसतो तठं गचमे तवा गडाय । ऊपर विछावणा विछाय ।
—नैणसी

उ०—२ ताहरा सेतराम कही—महाराज । हू वंठती तठं वरखी
गडती, सु दीसं छे आज कोई म्हारी मसकरी कीवी छ तद राजा
विछावण परहा कराय देखें तो कासूं ? सारें ही वेडा-वेडा छे ।
—नैणसी

वि.—मस्त, मत्त ।

वेडीळ—देखो 'वेडीळ' (रु. भे.)

वेडग—देखो 'वेडग' (रु भे.)

वेडगापण, वेडगापणी—देखो 'वेडगापणी' (रु. भे.)

वेडंगी—देखो 'वेडंगी' (रु भे)

वेड—स स्त्री [स वेघ] १ बुद्ध, सग्राम, लडाईं ।

उ०—१ वेड वडाई राजिया, सूरो दळ सिणगार । मेल घमका
सिर सहे, भावें जब इकतार । —अनुभववाणी

उ०—२ वळ जोघाण तणी दिस वळिया, भू लूटण टळिया सुज
मिळिया । नाहरखान नांदिया माहे, वेड कमळ लीघी खग वाहे ।
—रा. रु

उ०—३ सर थक्का बलवार विदण क्यूं वीसरं, लगा लोह लकीर नमता नीसरं । वाव फरुकं वेद वलं नह वापरं, पाणा चढिया किलम जिक्कं 'परताप' रे ।
—किसोरदान वारहठ

उ०—४ रावळ भोजदे विजंराव लाजा री वेटी लूद्रवं धणी हुवो । निपट वडो रजपूत हुवो । कहे छं वरसा १५ तथा १६ री ऊमर माहे 'पचास वेद जीती हुती ।
—नैरासी

२ घर, गृह, धाम ।

३ युद्धस्थल, रणभूमि ।

उ०—वगसर भग्ना वेद तज, सुण वग्ना नीसाण । ताप उनग्ना तेग री, अर डग्ना मारांण ।
—किसोरदान वारहठ

४ योद्धा, वीर । (हिं नां मा)

५ एक प्रकार का आभूषण विशेष । (व. स.)

उ०—वीटी वेद गाठोडा, वलि दीधा घणा घोडा । स्रावक स्राविका श्रावद्ध, मोती थाले वधावड ।
—ऐ जे का स.

६ देखो 'वेद' (रु. भे.)

रु. भे —वीढ, वेढ, वेढि, वेढी, वेढ, वेड, वेडण, वेढि, वेढी, वेड, वेढ ।

अल्पा, —वेढडी ।

वेदक—स. पु —युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—१ मिरचें 'मुहकम' मागियो, कर छळ मिळ अप्रकास । वेदक डेरें वज्जियं, पढिया सुहड पचास ।
—रा रु

उ०—२ सूरा 'अहवाळ' सुजड ह्य 'साडा', 'जंता' जगमल जंत्राई । काधिल कळिमूळ सदा कळि चालण वेरा वेदक वरदाई ।
—गु. रु व.

उ०—३ वड रावत जिक्कं वडा ग्रह वेदक, भडपे अरियण खडग भड । आया जूहार कुअर गुर आगळि, भड कमघज लख अवर-भड ।
—गु रु व.

वि —वीर, वहादुर ।

उ०—जुध दुरग दत चढिया जिता, खित पाडें मुगळा सळा । वळ साह डोहि आयो दुभल वेदक रगिया वीजळा ।
—सू. प्र

२ निशक, निर्भय ।

३ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—ऊगता भाण 'अगजीत' रा, वेदक भड अरिघड वना । सांमुहा आया भारथ सभण, एक उत्तन रा ऊपना ।
—सू. प्र

रु. भे.—वेदक, वेदक ।

अल्पा, —वेदकी, वेदकी ।

वेदकी—देखो 'वेदक' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—'कूपा' 'राम' सकज्ज, जंतधारी 'जैतावत' । वाघ फता वेदकां वीरवीराध 'विजावत' ।
—रा. रु

वेदधारी, वेदगारी—देखो 'वेदीगारी' (रु. भे.)

उ०—'वखतेस' 'खळा' सिर वेदगारी, हर काकण सी 'अमरेस' हरी । सग 'राम' 'रुवे' 'जैसिह' सही, गज रूप सर्फ रिम टेक ग्रही ।
—रा. रु.

वेदडी—देखो 'वेद' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—वडा पतिसाह करि किलग सा वेदडी, महमहण हमे पिरिणी-जिळं मेघडी । आजि रं बाधियो कडी तरगस अभिगि, प्रिथी रं धिणी ससमाथ चढियो पविगि ।
—पी. अ

वेदण—१ देखो 'वेदण' (रु. भे.)

२ देखो 'वेद' (रु. भे.)

वेदणवाई—स. स्त्री —[देश.] व्यर्थ की बातें करने वाली स्त्री ।

वेदणी, वेदनी—क्रि स १—युद्ध करना, संग्राम करना ।

२ सहार करना. नाश करना ।

३ काटना, विच्छेदन करना ।

४ युद्ध में मरना, वीरगति प्राप्त होना ।

उ०—तितरइ नाथू डोड डूगर वागडी कहइ छइ—इसउ नही ही ठाकुरे ! इसउ कीजइ—गळइ सात सइ साळिग्राम तुळसी की माळा घातिजइ, अचळेसर का आवास थइ लोहडव करता करता गोरी-राजा का गूडरहइ जाइजइ, जितरा जितरा पग दीजइ तितरा-तितरा अम्यमेघ प्याग का फळ लीजइ । इणि विधि जीवण वेदजइ तउ सूरज मडळ भेदिजइ ।
—अ वचनिका

वेदणहार, हारी (हारी), वेदणियो—वि० ।

वेदिसोडी, वेदियोडी, वेदघोडी—भू० का० कृ० ।

वेदीजणी वेदीजनी—कर्म वा० ।

वेदणी वेदनी, वीडणी, वीडनी, वेडणी, वेडनी, वेडणी, वेडनी, वेडणी, वेडनी, वेडणी, वेडनी—रु. भे. ।

वेदव—देखो 'वेदव' (रु. भे.)

वेदमण—देखो 'वेदीमणी' (मह, रु. भे.)

वेदमणी—देखो 'वेदीमणी' (रु. भे.)

वेदमल वेदमल्ल—वि०—युद्ध का उस्ताद, युद्ध में निपुण एवं दक्ष योद्धा, वीर ।

रु. भे —वेदमल, वेदमल्ल, वेदीमल वेदीमल्ल, वेदीमल, वेदीमल्ल, वेदमल, वेदमल्ल, वेदीमल, वेदीमल्ल ।

वेदमी—स. स्त्री —एक प्रकार की रोटी विशेष ।

उ०— . . . खाड माडा, पूरण माडा, कुकरा माडा, पत्र-वेदिया माडा, आकासिमा माडा, आछा माडा, खाटउ चूरिमउ,

गुलिउ चूरिमउ, प्रधान पनोली, रोटी बाटी, ठोठि अगार करि वेदमी, मरुयाडिनी पचधार लपनसी, सुदलित सुललित वरनारि परीमी ।
—व स

रू. भे —वेदिमी, वेदमी ।

वेदलो—स पु —१ स्थियो के कान के ऊपरी भाग में पहनने का आभूषण विशेष ।

२ कुत्तो के कानो मे पहनाया जाने वाला आभूषण विशेष ।

उ०—जिका री मूडहथ मोहनाळ हाथ भर नस, वड रं पान जिसा कान, ताजणासेद पूछ नाहरसा पजा वाघ सी आर, पातळी लोक जाडें आठु । इण भात रा कुत्ता । वनाती पटा, रूपे री भवरकडी रेसमी डोर, काना मे रूपे सोने रा वेदला, गर्ले मे निजर रा ताइत ।
—रा सा स

रू. भे —वेदली वेदली ।

वेदमाणो—देखो 'वेदीमणो' (रू. भे.)

उ०—विदण नमो नेठाह हथवाहा वेदीमण, रीत सराह दोग राह रीघा । वडा खळ आदरा अबक वेदामणा, करं जुध पाधरा सणक कीघा ।
—सेरसिह री गीत

वेदागार, वेदागारी, वेदागारी—देखो 'वेदीगारी' (रू. भे.)

वेदारोटी—स. स्त्री.—एक प्रकार की रोटी विशेष ।

वि वि—गेहू के कम आटे के लौदे को रोटी की तरह वेल कर उस पर गीला-गीला नमकीन पदार्थ फेला दिया जाता है और किनारी को थोडा-थोडा उलट कर चौकोर बना दिया जाता है । फिर थोडी देर सुखा कर तेल अथवा घी मे तल दी जाती है ।

रू. भे —वेदारोटी, वेदारोटी, भेदारोटी, भेदारोटी, वेदारोटी ।

वेदिगर, वेदिगरी—वि०—१ वीर बहादुर ।

२ जबरदस्त, जोरदार ।

उ०—वं तरफ भड वेदिगरा, जूटा हगामी जग रा । धस मसक धरणी कसक कूरम, ससक नासा सेस ।
—र रू

३ देखो 'वेदीगारी' (रू. भे.)

वेदि—देखो 'वेद' (रू. भे.) (ह ना मा)

उ०—१ हीडू तुरक पडड पोसाता, नित नित वेदि ऊतारइ । नितु ऊठवइ एकमना राउत रसि चड्या रसि मारइ । —का. दे. प्र

उ०—२ गुणदेव सुमति समापि गुण, भुप्रपतिअ जेम 'रतन्म' भण । पित जासु 'महेस' नरेस पर, गड वेदि लिग्री जिण देवगिर ।
—र वचनिका

उ०—३ जई प्रधानि खान वीनविया, हीडू वेदि करेसइ । खान भणइ सहइ सज थाठ, एछवा दाउ देसइ । —का. दे. प्र

वेदिमी—देखो 'वेदमी' (रू. भे.)

उ०—हासा गहु, काठा गहु, जालिया गहु, वाजिया गहु, वांसिया गहु, एतलं प्रकारं गहु ना माडा, तं किम ? खाडमाडा, पूरणमाडा, आछा माडा, करकरा माडा, आकास माडा, एतली पडमूदीना माडा । लहचूर्द पोली, खूवी रोटी, वारु वडा, वेदिमी, वडा ती केहवा छइ ?
—व स

वेदियोडो—भू० का० कृ०—१ युद्ध किया हुआ, सग्राम किया हुआ.

२ सहार किया हुआ, नाश किया हुआ ३ काटा हुआ, विच्छेदन किया हुआ. ४ वीरगति प्राप्त ।

(स्त्री वेदियोडी)

वेदी—१ देखो 'वेदि' (रू. भे.)

२ देखो 'वेडी' (रू. भे.)

३ देखो 'वेद' (रू. भे.)

वेदीगार वेदीगारी वेदीगारी—स पु.—युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—'वखती' अगळी वेदीगारा, 'जगपत' हरी तिलक जूभारा । भाटी जोधा मुहर भुजाळी, 'सकती' 'भगवानोत' सिधाळी ।
—रा रू.

वि० १ वीर, बहादुर ।

उ०—१ मछराळा मू छाळ, वेहद हद वेदीगारा । सुर भगगा लख चार, प्रथी इक छात्रप सारा ।
—मा वचनिका

उ०—२ पाजा लोप सीधू जीउ अरावा व्हे अवाजा पूर, मातगा गराजा घुर जठी साजा मोह । मारहटा सैनह मचायो ताजा जोस मार्थ, वेदीगार र'जा भोम काजा चकावोह । —हुकमीचद ग्विडियो

उ०—३ कळहळ काछिया छणकाग कडिया, नैडी धुरं नगारी । आयी पीव काळ अणचीती, 'रामडी' वेदीगारी ।
—ठा रामसिध विलाडा री गीत

२ शक्तिशाली, बलशाली ।

उ०—१ साकं नही सधीर, दिन उगं पसरा दिवै । वहे अरोडा वीर, वेदीगारी राठवड ।
—गो रू.

उ०—२ जोईया मिले जीयार, कश्न 'दळा' हूता कहै । मारं छै कायमार, वेदीगारी राठवड ।
—गो रू

रू. भे —वेदीगार, वेदीगारी, वेदंगारी, वेदागर, वेदागार, वेदागारी, वेदागारी, वेदागार, वेदागारी, वेदागारी, वेदिगार, वेदिगरी, वेदगरी, वेदगारी, वेदीगारी, वेदीगारी ।

वेदीमण, वेदीमणी, वेदेमणो—वि०—१ वीर. बहादुर ।

उ०—१ वरव्वीर 'खूमाण' वीराघवीर, कळीमूळ 'सादूळ' वैवं कठीर । भलो भीच कल्याणमल्लो भुजाळी, 'मानावत' वेदीमणी मच्छराळी ।
—गु. रू. व

२०—२ श्रेकले भुजा दह छ खड घाते अवर, दस दिमा वजे जस तगो डाकी । 'माल' हर 'बोर' हर पछे वेदीमण, 'सूर' हर तीसरो कियो साकी ।
—नरहरदास वारहठ

२०—३ चालसी जुध गयण धोम वेदीमणो, मुगला गाळसी जोम मेदीमणो । तरह लकाळ सी घाट तेदीमणो, वाळसी क्या कसर दाट वेदेमणो ।
—वदरीदास खिडियो

२ जवरदस्त ।

२०—जळचर वनचर आतगी, जळचर जळ मे जोर । वनचर अति वेदीमणो, जो कछु लाम कोर ।
—गज-उद्धार

३ शक्तिशाली, बलशाली ।

२०—विदण नमी नेठाह ह्यवाह वेदीमण, गीत सराह दोय राह रीघा । बडा खळ आदरा बबक वेदामण, करे जुध पाधरा सणक कीघा ।
—सेरसिह रो गीत

४ युद्ध करने वाला, युद्ध प्रिय, योद्धा ।

२०—बडा गहलोत मत्र मालम वसू धार चढ घोळहर जेम ढळियो । 'मुकन' रो सुधार मोत वेदीमणा, 'भीमडा' परम ची जोत मिळियो ।
—भीमा गहलोत रो गीत

रू. भे —वेदीमणो, वैदीमणो, वेदीभणो, वेदमणो, वेदामणो ।

मह.,—वेदमण, वंदमण, वेदमण, वेदमण, वेदमणो, वेदीमण, वेदीमणो ।

वेदीमल, वेदीमल्ल—देखो 'वेदमल' (रू. भे.)

वेण—स पु.—१ सूयवगो राजा प्रथु के पिता का नाम ।

२ वास का वृक्ष या वास । (ना मा., ह ना मा.)

२०—ताल साल मालिका बकुल कुवजक खरजूरी, बोलसरी माधुरी निगर भर हरी सनूरी । कुमुद ढाक कलहार वेण कचनार विराज, सोन जाय पल्लव असोक सुर धोक सु साजे ।
—रा. रू.

३ सेना, सेन्यदल ।

४ नाक मे पहनने का आभूषण विशेष नय ।

२०—आहू मजन करिध पाट पेहरें देही दळ । नयणें कजळ रेख, तिलक कुकम आळीयण । कणें कान चाटक, वेण नासा मोतीहळ । हार उर चदन विलेप, रची कावण कटि मेखळ ।
—गु रू. व.

५ देखो 'वचन' (रू. भे.)

२०—१ पीहर हवी हुंनणी, राग आलापें तेण । ढोली मारु ऊगरें, कहि समझावें वेण ।
—ढो. मा.

२०—२ ठग कामेती ठोठ गुर, चुगल न कीजे सेण । चोर न कीजे पाहरु, ब्रह्मसपती रा वेण ।
—बा दा.

२०—३ होवें सुविनीत सेणा रे । धारें गुरु वेणा रे । जैसी ढलती छाया रे । राखें प्रीत सवाया रे ।
—जयवाणी

२०—४ जीहो काया माया कारमी, जीहो जैसी सुपनी रेण । जीहो विणसता देर लागं नही, जीहो मानी सतगुरु वेण ।
—जयवाणी

२०—५ आहू अखई मोहती दूही कहै राजा वेचू नही तो ओखी खाण मिळू । पण घोडी उरकी छ । रवियाण चद, ऐराक वीजे वडवीज, प्रात गाज, सापुरस वेण, पंहिली तो लहवाय लहवाय पीछे गरवाय गरवाय ।
—हाहुल हमीर री वात

२०—६ सुदर सर असुरह दळ, जळ पीयो वेरोह । 'ऊदै' नरयद काडियो, तस नारी नयरोह ।
—उदैसी भरसी रो गीत

६ देखो 'वीण' (रू. भे.)

२०—१ उभा मोरली नाद लीधे अवर, मारी जागसी साम वादे मधूर । विकसई हसं वेण ऊचो वजायो, सपत्तं पताळे सुरगी सुणायो ।
—ना. द.

२०—२ चुटे साय जाणें अमीदार लीधो, कियो वेण नाद सजी-वन्न कीधो । विजोगी सजोगी वज वेण वायो, प्रभू आपरी जाण अम्रत पायो ।
—ना. द.

७ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

२०—नोवत तेर तूर नीघमे, वह वदिण बहु जस वहसं । वेण ताळ मिरदग वजावें, मोत नाद गुण गधव गावें ।
—रामरासी

८ देखो 'वेणी' (रू. भे.)

९ देखो 'वहण' (रू. भे.)

रू. भे —वेणु, वेणू, वैण ।

वेणका—१ देखो 'वीण' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वीणा' (अल्पा., रू. भे.)

२०— वळकुळ ईस नारद वजे वेणका, मळ अह चळचळ जोस कार्य । मूंग थाळी जुई रळें पळ महीसर, 'मान' हर मळदळ केण मायें ।
—मेगराज आढो

३ देखो 'वेणी' (अल्पा., रू. भे.)

वेणचि, वेणची—देखो 'वेणची' (रू. भे.)

वेणरावमुनि—स पु.—नारद मुनि का नाम ।

वेणसुत—देखो 'वेणसुत' (रू. भे.)

वेणा—स स्त्री.—१ भारत मे वहने वाली परांसा नामक नदी जो कृष्णा नदी मे जाकर मिलती है ।

वि० वि०—यह नदी वरुण की सभा मे रह कर उनकी उपासना करती है । इस नदी के तट पर तीन रात उपवास करने से मनुष्य

मीर एव हस युक्त विमान से स्वर्ग जाता है। इसी नदी के तटवर्ती जनपद के राजा को सहदेव ने दक्षिण दिग्विजय के समय पराजित किया था।

२ देखो 'वीण' (रू. भे)

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

वेणाट—स पु —प्राचीन कालीन भारत के दक्षिण का एक छोटा प्रदेश जो अब केरल का तिरुविताकर हिस्सा बन गया है।

वेणापाणि, वेणापाणी—देखो 'वीणापाणी' (रू. भे)

वेणि, वेणिका, वेणी—स स्त्री [स]—१ स्त्रियो के बालो की गूँधी हुई चोटी।

उ०—१ डसण बीज दाडम, वेणि वासग भुय गम। भटियाणी वर कमध, समद. गगा नदि सगम। —गु रू व

उ०—२ वर्यो भुजग रूप वेणि, मग सीस मोतिय। प्रजा लजे न छत्र पाति, जोय तास जोतिय। —सू प्र

उ०—३ सिरि वेणी सिरली असी, जाणइ वासिग नाग। वीहता मारइ वभणइ, किधु ताहूरु त्याग। —मा का प्र

उ०—४ रतन में राखडी वेणी वासग जडी, सुभरा वाहडी लहक लोडै। स्वाति नौ विदली नासिका निरमयी, आजु आल्यगन कसन कोडै। —रुकमणी मगळ

२ कलाई, मणिबध।

३ नदी का प्रवाह।

४ गगा नदी का नाम।

उ०—जळ चद्र सिळी थाई जगचख, रेणायर सासती रहे। ज्यमाल उत जाइ छाडे जुध, वेणी जळ उपराठ वहे।

—रामदास राठीड भेडतिया री गीत

५ शाकद्वीप की एक नदी का नाम।

६ देखो 'त्रिवेणी'।

७ देखो 'वीण' (रू. भे)

८ देखो 'वीणा' (रू. भे.)

उ०—१ पुण्यइ मयगल वाऋइ वारि, पुण्यवत भुज नावइ हारि। पुण्यइ हुइ नित नवला रग, पुण्यइ सुणीइ वेणि अदग।

—का. दे प्र

उ०—२ गढ ऊपरि नितु हुइ पेखणा, सुणीइ वेणि अदग। नितु उछव नितु पाउल नाचइ, नितु नितु नवला रग। —का. दे प्र

९ देखो 'वहणी' (रू. भे)

१० देखो 'वेणीस्कद'।

रू. भे.—वेण, वेणि, वेणी, वेनी, वेणी, वीणि, वीणी, वेण, वेणु, वेणु, वेनी, वेण, वेणि, वेणी।

अल्पा.—वेणका, वेणका।

वेणीडड, वेणीदड—स स्त्री —स्त्रियो के बालो की गूधी हुई चोटी।

उ०—१ च दवदन ऊपरि घटा रे, सोहँ वेणीडड रे रग। (अय) अगानयनी उपरइ रे, बाध्या जाल प्रचंड रे। —प. च. चौ.

उ०—२ वेणीडड जिसर विराजइ वासउ, पिंड उदमाद धरत पाव। व्रख ताइ वद तराइ विलागड, व्रख लइतउ घणाइ व्रख राव। —महादेव पारवती री वेलि

रू. भे —वेणीडड, वेणीदड, वेणडड, वेणदड, वेणीडड, वेणीदड।

वेणीफूल—स पु —स्त्रियो के सिर का आभूषण विशेष।

रू. भे.—वेणीफूल।

वेणीमाधव—स पु —प्रयाग में स्थित श्रीविष्णु भगवान का एक प्रसिद्ध स्थान।

उ०—सध्यावट हेटै हणुमान पीठै है, वडी मूरत है। वेणीमाधव प्रमुख चवदै माधव है प्रयागै। सरस्वती कूप री लल है प्रयागै। लोपामुद्रा दोग देवी प्रयागै। —वा. दा ह्यात

वेणीस्कद, वेणीस्कध—स पु [स वेणीस्कन्द] जन्मेजय के सर्पसत्र में दग्ध कौरुकुलोत्पन्न एक नाग।

वेणु—स पु —१ शतजित् राजा का पुत्र, एक राजा।

२ देखो 'वीण' (रू. भे)

उ०—१ एक वीणा वेणु अदग यमल सख पटह कसाल प्रमुख अगुणपचास वादिनस्वर माभलावइ मधुर, एक तिलकु वकुल असोरु चपक कूद मचकुदादि पुस्पप्रकर सपानुडइ प्रचुर, एक दीवानी परि उद्योत करइ। —व. स.

उ०—२ रली रग राग नाना विधि, सुनि-मडळ कं छार्जै। पति सू प्रीति जीति गुण दूजा, वेणु गगन में वाजै। —ह. पु वा

उ०—३ दादू रग भर खेल् पीव सौ, तह वाजै वेणु रसाल। अकल पाट पर वंठा स्वामी, प्रेम पिलावै लाल। —दादुवाणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

उ०—पटुपटह अदग करडि मरहल वेणु तलिमताल कसाल भुल्लरि भेरि मदनभेरि जयभेरि भरहमभ हडुक डक्क चुक्क व्रक्क काहल काहली बरगा प्रभ्रति वादित्र। —व. स

४ देखो 'वेण' (रू. भे)

५ देखो 'वेणी' (रू. भे)

रू. भे —वेणु, वेणु, वेणु, वेणु।

बेणुजघ—स पु. [सं] युधिष्ठिर की सभा में उपस्थित एक प्राचीन महर्षि ।
बेणुदारि—स पु [स.] अक्रूर (बभ्रू) की पत्नी का हरणकर्ता एक या-
दव जिनके पुत्र को कर्ण ने अपने दक्षिणदिग्बिजय के समय हराया
था ।

बेणुदारितक—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष ।

रू भे —बेणुविदारित ।

बेणुमडल, बेणुमडल—स पु [स वेणुमण्डल] कुण्डलीपीय एक भाग ।

बेणुमंत—देखो 'बेणुमान' ।

बेणुमती—स स्त्री. [स] पश्चिमोत्तरदेश की एक नदी । (पुराण)

बेणुमान—स पु [म वेणुमान्] १ एक वंश । (पुराण)

२ एक पर्वत का नाम । (पुराण)

बेणुवन—स पु [स] राजगृह में स्थित एक उपवन का नाम, जहाँ राजा
विषसार के समय गीतम बुद्ध ठहरे थे ।

बेणुविदारित—देखो 'बेणुदारितक' (रू भे)

बेणुवीणाधरा—स स्त्री. [स.] कुमार कार्तिकेय की एक अनुचरी ।

बेणुहय—स. पु [स] वेणु राजा का नाम ।

बेणुहोत, बेणुहोतर, बेणुहोत्र—स पु [स वेणुहोत्र] वीतिहोत्र राजा
का नाम जो घृष्टकेतु राजा का पुत्र एवं गार्ग्य का पिता था ।

बेणू—१ देखो 'बीणू' (रू भे)

२ देखो 'बीणा' (रू भे)

३ देखो 'बेणू' (रू भे)

४ देखो 'बेणी' (रू भे)

बेणी—स पु —१ सोने-चादी के आभूषणों पर खुदाई के काम में कुछ
गहरे खद्वे (छेद) करने का लोह का एक औजार विशेष ।

२ बढई का एक औजार विशेष ।

३ देखो 'बहणी' (रू. भे)

४ देखो 'बीणी' (रू. भे)

रू. भे —बेणी ।

बे'णी, बे'नी—देना 'बहणी, बहनी' (रू भे)

उ०—अलग राख आरोह, तसा कपडा बेंतोडा । खरहंड नासा
खाच, रजक प्याल अण रोडा । —पा. प्र.

बेण्या, बेण्या—स स्त्री. [स] विन्ध्य पर्वत से निकली हुई चौदह नदियों
में से एक ।

बेतड—देखो 'वितड' (रू भे.)

उ०—अर ऊभी बेतड साहण सिंगार नू आवती देखि साम्हें हा-
लियो । इण रीति दो ही गजा घाप आप रा कलावा सू आधीरणा

नू उडाय रीस में अघ होय समीप आवता ही लोयण (नेत्र) मि-
लाया ।

—व भा

बेत—स स्त्री —१ बूदी एवं चितौड के बीच के पठार से छव्नीस मील
दूर बहने वाली नदी ।

उ०—तिण बेंत नदी ऊपर बडी जगळ छै । तिण मे द्रोव, करड
री बडी ऊगम छै । तिका ठोड जोय आया । जाणियो माहुरी हसम
थाड अठ चरसी । —नैणसी

२ देखो 'बेंत' (रू. भे)

३ देखो 'बेत' (रू भे.)

उ०—१ थं किले मे सची सताव करजे । हू बेंत जागिया आयस्यू ।
—गोपाळदास गौड री वारता

उ०—२ तठे आगे वाग आयी । देखने माहे ऐठा मल फल-फूल
साया, पिए वाग में जावती घणो दीठी । तठे ती पिए हीरण
वीचारियो—जी आ जागा भली छै, मारी चारी पिए मौकळी छै,
पिए दिन रा ती बेंत लागे नहीं, अवे रात रा चरवा ने आवस्या ।

—रीसाळू री वात

उ०—३ पूरणह-मल्ल वाहा पलव, 'ईंदा' हर राखे रुकि अरव ।
वर-वीर धीर सुरताण बेंत वाखाण चीरासी वीर-खेत ।

—गु. रू व.

४ देखो 'बंत' (रू भे.)

५ देखो 'बंत' (रू भे)

बेतकल्लुफ—देखो 'वितकल्लुफ' (रू. भे)

बेतकल्लुफी—देखो 'वितकल्लुफी' (रू भे.)

बेतधर—देखो 'वितधर' (रू भे)

बेतड—देखो 'वितड' (रू भे)

बेतन—स पु [स] कुछ निश्चित समय तक प्राय एक मास तक काम
करने के बदले दिया जाने वाला धन या पारिश्रमिक, तनखाह ।

उ०—मान देई राखियो, सुपिया अस्व अनेकि । दस सहस्र बेतन
परिठयो, नि मुख्य कीधू एक ।

—नळाख्यान

बेतनभोगी—वि०—बेतन लेकर काम करने वाला ।

बेतमीज—देखो 'वदतमीज' (रू. भे.)

बेतमीजी—देखो 'वदतमीजी' (रू भे.)

बेतर—१ देखो 'वितरू' (रू भे)

२ देखो 'व्यंतर' (रू भे.)

उ०—रक रुळ दा मारकर, कोई मल कहावे, बेतर भूत आराध
कर, कोइ देव मनावे । डाकण का मत्र सीख कर, कोइ साध कहावे,
आख्या आघा होय कर कोइ वाट बतावे । —केसोदास गाडण

वेतरणी-स. स्त्री.—१ दर्जी द्वारा कपडे का माप लेने की क्रिया ।

२ देखो 'वेतरणी' (रू. भे.)

वेतरह—देखो 'वेतरह' (रू. भे.)

वेतर, वेतरह—स. स्त्री.—वह गाय, भैंस, बकरी आदि मादा पशु जो निकट भविष्य में शीघ्र प्रसव करने वाली हो ।

रू. भे.—वेतर, वेतर ।

वेतलव—देखो 'वेतलव' (रू. भे.)

वेतलवी—देखो 'वेतलवी' (रू. भे.)

वेतस—स. स्त्री [स] १ जभीरी, विजौरी ।

उ०—वालु नङ्ग वेलातर, वेळ वेतस वाणि । वघार वाहलु लीउ, वाउलीउ वखीणि । —मा. का. प्र.

२ देखो 'वेतसु' (रू. भे.)

रू. भे.—वेतस ।

वेतसधन—स पु [स] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ मृत्यु ने तपस्या की थी ।

वेतसिका—स. स्त्री [स] वह तीर्थ जिसकी सेवा ब्रह्मा ने की थी । इस की यात्रा करने से मनुष्य को अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है ।

वेतसिनी—स. स्त्री [स] एक प्राचीन नदी का नाम । (पुराण)

वेतसु—स पु [स.] एक दानव, जिसका वध इन्द्र ने किया था ।

वेता—देखो 'वेता' (रू. भे.)

वेताव—देखो 'वेताव' (रू. भे.)

वेतावी—देखो 'वेतावी' (रू. भे.)

वेतार—देखो 'वेतार' (रू. भे.)

वेताळ, वेताल—स पु [स.] १ भूत-प्रेतो की एक प्रकार की योनि विशेष । (पुराण)

उ०—वेताल भीसखाकार, मुख करता फार फेत्कार, कलातावतार मुखि मेरूहतउ फाल, हस्ति देता ताल, हस्या ऊछलिआ वेताल ।

—घ. स.

२ वह शव जिस पर भूत-प्रेतो ने अधिकार कर लिया हो ।

३ वदीजन, भाट ।

४ देव विशेष ।

५ द्वारपाल, दरवान ।

६ युद्धप्रिय देव ।

उ०—१ ग्रहमंड किनां फुट्टी वळ, घसक तळातळ आतळ । मुक्क हसि सकति महावळ, वेताळा कुळ व्याकुळ । —मा वचनिका

उ०—२ सीकोतरि सक्कणी प्रेत डक्कणी घपारा, विवध भूत वेताळ धीर पळचर विसतारां । गिरघ चील गोमायु विरक जवू

रसवाया, काक कक की गिणी घासपळ सभळ आया । भछरा न्न गार धरि ऊमही, हूरा हरखि उचारियो । महि गयणु सग वेळा मिळी, आगम जग विसारियो । —रा. रू.

उ०—३ हुए हक्क सूरुा उठी मेर हक्का, करे भूत वेताळ चडी किलक्का । करे जोर प्राहोर वेपार कुंता, दिपे जुद्ध जाणुं भगू सिभू हुता । —रा. रू.

७ छप्पय छन्द का एक भेद विशेष, जिसमें ६५ गुरु व २२ लघु, कुल ८७ वण वा १५२ मात्राएँ होती हैं ।

८ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

रू. भे.—वेताळ, वहाताळ, वेयाळ, वेयाल, वेताळ, वेताल, वेताळी ।

वेतालजननी—स. स्त्री [स] कुमार कार्तिकेय की एक मातृका ।

वेताळभट, वेतालभट, वेताळभट्ट, वेतालभट्ट—स पु —एक प्रसिद्ध ब्राह्मण पंडित ।

वेताळिक—देखो 'वेताळिक' (रू. भे.)

वेताळीस, वेतालीस—देखो 'वयाळीस' (रू. भे.)

वेताव—देखो 'वेताव' (रू. भे.)

वेतुड—देखो 'वेतुड' (रू. भे.)

वेतुकी—देखो 'वेतुकी' (रू. भे.)

(स्त्री वेतुकी)

वेत्ता—वि० [स] ज्ञाता, जानकार, तत्त्ववेत्ता । (अमरत)

स पु —पंडित, कवि ।

रू. भे.—वेता ।

वेत्रकीयधन—स. पु [स.] वह वन जहाँ भीम ने बकासुर का वध किया था ।

वेत्रकूट—सं. पु. [स] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी का नाम ।

वेत्रगंगा—सं. स्त्री [स] हिमालय से निकलने वाली एक नदी का नाम ।

वेत्रवती—स. स्त्री. [स] परियात्र नामक पर्वत से निकली चौदह नदियों में से वेतवा नामक नदी ।

उ०—विदिता जग विख्यात राज री नगरी जाता, सगळा भोग विलास पावसो प्रीत जतातां । वेत्रवती जळ पीय लहरती घण गरु जतां, ष्यं मुख भीह विलास अघर घण पान करतां । —मेघ

वेत्रहा—स पु. [स] वेत्रहन् देवराज इन्द्र का एक नाम ।

वेत्रासन—स पु. [स] वेत का बना हुआ एक प्रकार का आसन विशेष ।

वेत्रासुर—स पु [स] १ यमुना नदी में मिलने वाली वेत्रवती नदी के गर्भ से उत्पन्न सिधुद्वीप नामक राजा का पुत्र, प्राग्ज्योतिषपुर का राजा एक प्रसिद्ध असुर, जो इन्द्र के द्वारा मारा गया था । (पुराण)

२ देखो 'वेत्रासुर' (रू. भे.)

रू भे.—वैत्रासुर ।

वैत्रिक—स. पु [स.] १ प्राचीन भारतीय एक जनपद ।

२ उक्त जनपद का निवासी ।

वेयल्लियो—देखो 'वेयल्लियो' (रू भे)

वेयाग—देखो 'वेयाग' (रू. भे)

वेयी—देखो 'वेयी' (रू भे.)

उ०—कितरा एक दिन रावजी असमाधिया रहि अर वैकूठ सिधायी ।

उठै राजा भारमल पणि वैकूठ सिधायी । विहू राजविद्या दिन आठ
वेयी हुई । ओपि राजा भगवतदास नूँ टीकी हुयो । —द वि

वेदग—देखो 'वेदग्य' (रू. भे.) (ना. मा)

वेदंड—देखो 'वितुड' (रू भे.)

वेदत—१ देखो 'वेद' (रू भे)

२ देखो 'वेदात' (रू भे)

वेद—स पु [स] १ धार्मिक या आध्यात्मिक विषय अथवा किसी विषय
का सच्चा एवं वास्तविक ज्ञान ।

२ भारतीय आर्यों के सर्वमान्य वे चार ग्रन्थ जो मनुष्य रचित नहीं
हैं बल्कि ये ब्रह्मा के मुख से निकले हुए माने जाते हैं, श्रुति ।

उ०—१ वेद चव भेद खट तरक नव व्याकरण, वळ खट भाख
जीहा वखाण । भात पौराण दस आठ पिंगळ भरथ, उगत जुगता
तरण भेद आण । —र ज प्र

उ०—२ पह तिलक कीध कुकम सु पाणि, मोतिया अक्षत चाढे
प्रमाणि । जस जोतख द्विज्ज लिखत जत्र, मुख पढत महा द्विज
वेद मत्र । —सू प्र.

उ०—३ प्रथी करण थिर वेद पुराणां, करम जिका वळ हीरा
कुराणा । यों जग में रवि वस उजागर, प्रगटे भूप रूप परमेस्वर ।
—रा. रू.

३ भगवान् श्री विष्णु का नाम ।

४ ईश्वर, परमेश्वर ।

उ०—१ नमी कामणी वेद माया कुमारी, नमी सैहस नैणी प्रवोधा
सेसारी । नमी सेसकठी नमी सीळ सामा, नमी भूचरी खेचरी रुद्र
भामा । —मा वचनिका

उ०—२ लोक वेद कौ डर नहीं, रस भीना दिन राति । कामी
प्रेमी हरि भगत, नहीं सूर्भे दिन राति । —परमानंद वसियाळ
५ जय जयकार कौ ध्वनि ।

६ ज्ञान ।

उ०—१ जनहरिया ज्यु नाव धी, अन पाणी ज्यु वेद । जं कोई
न्यारी जाणिसी, जिन कुं आयी भेद । —अनुभववाणी

उ०—२ नामी धरि आया, नाच नचाया, सहचा मुख सिवरदा
है । रग रग आरभा, भया अचभा, छुछम वेद भणुंदा है ।

—अनुभववाणी

७ चार की सख्या । * (डि. को.)

उ०—भणि तेरहसो छासठि भेद, विगति मात्र सोलह धू वेद ।
आखर लुधू गुरु इगिआर, वदा सुभकर छद विचार । —ल. पि.

८ तीन की सख्या । * (डि को.)

९ छन्द ।

१० एक प्रकार का वाद्य विशेष ।

उ०—रिण तूर पयच-सब्द वेद सई, गयणाग क भवनिधि गडई ।
ढळकै गज-ढाला बूहरिय, अनडा सिरि जाणक अच्यरिय ।

—गु रू. व.

११ योग, जोड ।

१२ मागणियार मुसलमानो की एक शाखा या उक्त शाखा का
व्यक्ति । (मा म.)

१३ नाईयो की शाखा जो हजामत के धन्वे के साथ-साथ मरहम
पट्टी आदि कुछ वैद्यगी का काम भी करती है । (मा: म.)

१४ उक्त शाखा का व्यक्ति । १५ भृगु के कुल में उत्पन्न एक
मन्त्रकार । १६ सिंधुद्वीपराजा का भाई जो शिव भक्त था । १७
जनमेजय का उपाध्याय व धौम्य ऋषि का शिष्य, एक ऋषि ।

२० विवाह वेदी पर बोले जाने वाले मन्त्र ।

उ०—ताहरा छोकरथा वाघे दोळा फेरा क्यार लीया । ताहरा
वाभण एक पागुळो श्रोथ पडियो हुतो तिकं नुं वाघे कही । रे
तू वाभण छे । जं भणियो छे ती तू वेद पढ । का मारीस ।
ताहरा वाभण बीहते क्यु भणियो । —देवजी बगडावता री बात

२१ देखो 'वैद्य' (रू भे.)

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—किणहि रोगी नं वेद श्रोखध
पावा लागी कहै श्री श्रोखध पी जा रोग जाती रहसी । जद रोगी
बोल्यो—भू हडा में तो घालू नहीं । म्हारा मीरा मे कूड दी ।

—भि. द्र.

उ०—२ वाप घणो ईं समभायो, पण वो ती मान्यो ईं नीं । वेद
हकीम ईं घणो ईं पालियो ती ईं उणरं की हीर्यं वैठी नी । बेटा
रा वाद आर्ण सेठा री ती खायी पीयो ईं अग लागं नी ।

—फुलवाडी

उ०—३ अमोलक सू अमोलक हीरी कोई पेट में खावण सूं ती
रहो । आप सगळा जाणो ईं ही, काई वतावू । कुठीड पीडू अर

मुसरोजी वेद । राड कबरसा लारं सती होवण री हूठ झाल राख्यो ।

—फुलवाडी

२२ देखो 'वेघ' (रू भे.)

उ०—घमाघम वाण गोळा वीखम गाजिया, साभिया भरण खनिया घरम सँद । मडोवर तरण अदराजिया मेहर्त, वाजिया वेहू घरती तरण वेद ।
—सेरसिगजी, कौलसिहजी री गीत

रू भे —वेद, वेदत, वेय, वेह ।

वेदखण्ड—स पु [स. उदयवेद] सूरज, सूर्य । (डि. को)

वेदक—१ देखो 'वेदिक' (रू. भे.)

उ०—मतव्य मान, गतव्य ग्यान, वेदक विधान, घर धेय ध्यान ।
सुन जाग सूर, चद्राक चूर, सुख मन सचार, अमन्नत अपार ।

—ऊ का

२ देखो 'वेदक' (रू. भे.)

वेदकरता—स पु. [स वेदकर्तृ] १ वेदो की रचना करने वाला, ब्रह्मा ।

२ विष्णु का नाम ।

३ शिव शंकर ।

४ सूरज, सूर्य ।

५ वर पक्ष के वे मनुष्य जो विवाहकृत्य सम्पन्न हो जाने पर वधू के घर वर तथा वधू को प्राशीर्वाद प्रदान करने हेतु जाते हैं ।

वेदकल्प—स पु [स.] अथर्ववेद का एक भाग ।

वेदका—स स्त्री [स वेदिका] विवाह वेदी, चबरी ।

उ०—अलगो ऊमराकोट तोरणा काळमी आई, नामी वस वधाई
आरनी नरा नाथ । विप्रा गठ जोडी वाघ वेदका समीप बैठे, बनी
बनी मेहदी हाथ मिळायी विख्यात । —बादरदान दधवाडिया

वेदकार—वि० [स] वेदो के रचयिता, वेदों का रचनाकर्ता ।

वेदगगा—स स्त्री —इच्छा नदी भे मिलने वाली एक दक्षिण भारतीय नदी ।

वेदगरभ—स पु [स वेदगर्भ] १ ब्रह्मा ।

२ ब्राह्मण ।

रू भे - वेदगरभ ।

वेदगरना—स स्त्री [स. वेदगर्भा] १ मरुस्वती नदी ।

२ रेवा नदी ।

वेदगरनापुरी—स स्त्री [स वेदगर्भापुरी] एक तीर्थ विशेष ।

वेदगाय—स पु [स] एक प्राचीन ऋषि । (पुराण)

वेदगो—स स्त्री —१ होगियारी, चतुर्धाई, दक्षता, विशेषता ।

उ०—राजाजी न उरणी भोळी अर अरूभ वात सुएने हसी भाय-
गी । बोल्या—भोळा ठीकरा, हाथ जोडना में घंटी काई वेदगी ।

हैं कदे ई नी जोड्या ती ई जाणू ।

—फुलवाडी

२ देखो 'वेद्यगी' (रू भे)

वेदगुप्त—स. पु [स] १ भगवान् श्रीकृष्ण ।

२ पराशर ऋषि का पुत्र ।

वेदग्य—वि० [स वेदज्ञ] १ वेदो का ज्ञाता, वेदो का जानकार ।

२ ब्रह्मज्ञानी ।

स पु—ब्रह्मा ।

रू भे —वेदग वेदंग, वेदगर, वेद्यक, वेद्यग ।

वेदजणणी—स. स्त्री [स वेदजननी] वेदो की माता, सावित्री ।

वेदजा—स स्त्री [स जात-वेद] १ अग्नि, आग । (ता डि को)

२ द्रौपदी । (अ मा)

वि० वि० (मि जागसेनी)

रू भे.—वेदिजा, वेदीजा ।

वेदण—देखो 'वेदना' (रू भे)

उ०—ग्रहै न करिस्था कोइ, साजनिया सहू कौ करी । फिर दूणी
दुख होइ, वेदण विच्छडिया पछै । —जसराज

वेदणी, वेदनी—देखो 'वेद्यणी वेद्यनी' (रू भे)

उ०—काट वेदै घसै पथर पर, तथा तपाय कडाव तोल । सुर पूजा
सोरम गुण समरै, खंडा सचनण री खैल । —स्वरूपदास

वेदतीर्थ—स पु [स वेदतीर्थ] एक प्राचीन तीर्थ । (प्राचीन)

वेदत्रय, वेदत्रयी—स स्त्री. [स वेदत्रयी] तीन वेदो का समूह, जिसमें
ऋग्वेद यजुर्वेद एव सामवेद होते हैं । (व भा)

वेदवरस, वेदवरसन—स पु [स वेददर्श, वेददर्शन] एक प्राचीन ऋषि,
जिसने सुमन से अथर्ववेद, सहिता सीख कर अपने शिष्यों को प्रदान
की थी ।

वेदद्विस—स पु [स वेदद्विप] चेदि देशाधिपति बृहद्रथ का पुत्र ।

वेदधकी—स. पु [स वेध+रा. धकी] युद्ध करने वाला, योद्धा, वीर,
बहादुर ।

उ०—हैजमा हिलोळ हता तेगा उसा टीली हलै, साथ वीर चलै
चडी चाटीली समद । वेदधकी जगा मेळै वारगा माटीली वीध,
कंवाणा कोमकी वागा आटीली कमद । —हुकमीचद खिडियो

वेदधरम—स पु [स वेदधर्म] वेदिक धर्म ।

उ०—१ उत्तम नाम वस उजवाळो, वेदधरम ची वधव वडाळो ।
धरपति जेणिस सोस छत्रघारे, एम प्रतग्या करे उचारै । —सू प्र-

उ०—२ खरण वल विस्तरि अकडर से सशु अग, इकल निवाहो
जिहं वेदधरम नत्ताकी । आसमुद्र उरवि वासी अजज कतमन्य देत,
धन्यवाद वीर अग्रगण्य रान 'पत्ता' कौ । —वालावस पालावत

रु. भे.—वेदोधरम, वेदोघ्नम ।

वेदधुनि, वेदध्वनि—स स्त्री [स. वेदध्वनि] वैदिक मन्त्रों के उच्चारण की ध्वनि ।

उ०—१ प्रभात समउ हुउ, अघकार फीटइ, गाय तरणा गाला खूटा, तारागण विरल हुउ, चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तरणी उलि लवइ, देव तरणा बार ऊधडिया, प्रभातिक तूरथ वाजिया, राजभवनइ वंतालिक पढइ, विलोणा तरणा भरडका ऊपजइ, पथिक मारगि थया, ब्राह्मण तरणी घरि वेदध्वनि विस्तरि, धारमिक लोक प्रतिक्रमण पर हुआ । —व स

उ०—२ जिके वेद मूरति ब्राह्मण छे सु अरणी अगनि लगाडि होम करे छे । घणी गो घत न कपूर री आहूति दीजे छे । वेदध्वनि कीजे छे । दूहह नै दूहहनी सेहरा बाधिया पूरव साहमा वेसा-णिआ छे । —रा सा स

रु. भे.—वेदधुनि, वेदध्वनि, वेदोघनि, वेदोघनी, वेदोघुण, वेदोघणि, वेदोघुणी, वेदोघुन, वेदोघुनि, वेदोघुनी, वेदोघ्वनि ।

वेदन, वेदना—स स्त्री [स वेदन एव वेदना] १ पीडा, कष्ट, व्यथा ।

उ०—१ ले नै सिरचद मु हर्त नू राणीजो कहियो हूती ज्यू गुण हुवे तिम करिया । सु न का गाठि न का वेदन इउ ही उपाय करि अर बात थापी । —द वि

उ०—२ राजा उर्यो, वेग सतावमू रे राणी ऊपर न करची द्वेस रे । ऊजल करकस वेदन ऊपनी रे, राख्यो इण समता भाध विसेख रे । —जयवाणी

उ०—३ जीही वेदना नरक में सासती, जीही जरा तापसी खेद । जीही वेदना दस प्रकार नीं, जीही जिणरा न्यारा न्यारा भेद । —जयवाणी

उ०—४ पल ज्ञागे पल भी सुवे, पल मन धरै न धीर । हरिया वेदन विरह की, निस दिन भई सरीर । —अनुभववाणी

२ तकलीफ ।

३ प्रसूना स्त्रियों को प्रसव के समय होने वाली शारीरिक पीडा या व्यथा ।

उ०—घाऊ के पास प्रसूत की वेदन, भेद न जाणत मूंड भमायो । पूत कपूतन को चटसाला कि, ज्यू कुलटा सुसराळ सुणायो । —ऊ. का

४ रोग, बीमारी ।

उ०—१ ओखद करि करि जु मूवा, वेदन चडी न हाथि । जा ओखद सु ऊवरै, वाकी पडी अनाथि । —अनुभववाणी

उ०—२ धान न भावे चौंच निरोई इण वेदन मोनू खरी विगोई । ती सौं वात कहूं में कंसी, भेरे मन में वीचत जंसी । —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ विघ चुका वेद न जाण वेदन, ओखद लहे न पीड अथा-ह । रात दिवस खटकै उर 'राजी', साजी तेण नही पतसाह । —पीरदान आसियो

उ०—४ मु सारा मुलका रा वेद बुलाया, पिए नागजी चाक न हुवे । तरै राजा सहर में पाडी फेरची—नागजी नै ताजी करै, तिण नै लाखपसाव देवा । सु वंदा नै तो वेदन लाधी नही । राजा वेद बुलाय के, कुधर देवाई बाह, वंदा वेदन काळ ही, करक कलेजा माहि । —नागजी नागवती री बात

उ०—५ तारा अं भाटी कलकरण केहरीत कर्न गया । तद कल-करण आदमी हजार दोग सू कवर वीकंजी मायै भायो, अरु राव सेखे नू कहायो के थै आय म्हारे सामल हुवो ज्यू काची वेदन काट देवा । —द. दा.

५ भय एव हिंसा की पुत्री ।

रु. भे.—वेदन, वेदनि, वेदण, वेदनि, वेदना ।

वेदनाथ—स पु [स.] १ एक विश्वनाथ नामक ब्राह्मण एव कमलालया का पुत्र एक राजा ।

वि० वि०—इसे ब्राह्मण का साग या द्रव्य चुराने के कारण पुन-जन्म में वानरयोनि प्राप्त हुई । अपने मित्र सिन्धुद्वीप मुनि की सलाह के अनुसार यह धनुष्कोटि तीर्थ में जाकर पापमुक्त हुआ था ।

२ महादेव, शिव ।

वेदनिदक—वि. [म] १ वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक ।

२ बौद्ध धर्म का अनुयायी ।

वेदनि—देखो वेदना' (रु. भे.)

उ०—१ वृटी परखि गाठि ग्रह बाधी, जम भव वेदनि तूटी जाहकें रोग सदा अगि रहता, वोहत होती तपनाइ । या वूटी रस घापि र पीया, जीणि वोहडी सताप न पाई । —वील्होजी

उ०—२ वेदनि विरह विथा तन माही, पडदा खोलि मिळी क्यू नांही । जन हरिदास के आस तुम्हारी, विलम कहा पति देव मु-रारी । —ह. पु. वा.

वेदनिध, वेदनिधि—स पु [स] एक प्राचीन महर्षि ।

वेदनीय—वि० [स] जो वेदना उत्पन्न करे, वेदना उत्पन्न करने वाला । (कर्म) (जैन)

वेदपाठ—स पु. [स] वेद के मन्त्रों का पाठ, वेदाध्ययन ।

उ०—नको सुचि क्रिया न की वेदपाठ, न की मुखवाणी न की मोन काठ । न की तनत्यागी न की गेहचारा, न की नवनाथुं न की पथवारा । —अनुभववाणी

वेदपाठी—वि० [स. वेद+पाठिन्] वेदों को पढ़ने वाला, वेदों का अध्य-यन करने वाला ।

उ०—१ वेदमत्र बोलत, वेदपाठी ब्राह्मण । पहरै पट्ट अघोट,
द्रव्य अर्पण घण सघग । —गु रू व.

उ०—२ तहा वेदपाठी ब्राह्मण विधिपूरवक मत्रबळ करि ब्रह्मादि
रिखीस्तर इद्र आदि देवता अडसठ तीरथ, चार वेद, आठ वसु,
अस्ट परवत, दसौ दिग्गळ आदि सँ आवाहन करि आहुती कर
पसन किया । —सिंघासण बत्तीसी

वेदपित-स पु —अग्नि, आग । (अ मा)

वेदफळ-स. पु —वैदिक कर्म करने मे प्राप्त होने वाला फल ।

वेदवाह वेदवाहु-स पु [स वेदवाहु] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

२ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

३ पुलस्त्य ऋषि का नाम ।

४ रैवत मन्वन्तर के एक ऋषि का नाम ।

वेदधीज-स पु [स] १ श्रीकृष्ण का एक नाम ।

२ ब्रह्मा ।

वेदभू वेदभूम, वेदभूमि, वेदभूमि-स स्त्री [स. वेदभू, वेदभूमि] १ वह
स्थान जहाँ वेदों का अध्ययन किया या कराया जाता है, ऋषि-
आश्रम ।

उ०—ई वेदभूम री धरम नही, ओलै सी वात बणा लेवै । आ
वात जिदगी मोत तणा, सगळा री सोच सला लेवै ।

—करणीदान वारहठ

२ वैदिक भूमि हिन्दुस्तान, भारत ।

३ देवताओं का एक गण विशेष ।

वेदमतर, वेदमत्र-स. पु [म. वेदमत्र] १ वेदों मे आये हुए मत्र ।

२ एक प्राचीन जनपद का नाम । (पुराण)

३ उक्त जनपद का निवासी ।

४ मूलमत्र ।

वेदम-देखो 'वेदम' (रू भे)

वेदमत-स पु.—वेदों में उल्लिखित मत, वैदिक मत या नियम ।

उ०—माजी माने वेदमत, सुणै सदा सुरगाह । सती प्राठमी सापरत,
दसगी स्त्रीदुरगाह । —वा दा.

वेदमाता-सँ स्त्री. [स. वेदमातृ] १ सावित्री, गायत्री ।

२ दुर्गा, शक्ति ।

३ वीणावादिनी, सरस्वती ।

४ गायत्री मत्र ।

वेदमात्रका, वेदमात्रिका—देखो 'वेदपाता' ।

वेदमालि, वेदमाली-स पु [स. वेदमालि] रैवत मन्वन्तर के एक वेदज्ञ
ब्राह्मण का नाम ।

वि० वि०—कुछ समय पश्चात् अपने परिवार के पालन-पोषण हेतु
इसने अनीति से धन कमाना शुरू किया । जावती मुनि के उपदेश
से इसे ज्ञान हुआ । परिणामस्वरूप इसने अपने दोनों पुत्रों को अपने
धन का दो भाग देकर शेष बचे धन की धर्मकार्य में लगा दिया और
स्वयं नरनारायणाश्रम बद्रीवन में जाकर तपस्या कर पापमुक्त हुआ ।

वेदमितर, वेदमित्र-स पु. [स. वेदमित्र] व्यास की ऋकशिष्य परम्परा
में से माण्डुक्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य जो स्वयं
शाकलगोत्रीय था ।

वेदमुड-स पु [स.] एक असुर का नाम ।

वेदमूरत, वेदमूरति वेदमूरती-वि० [स वेदमूर्ति] १ वेदों का पूर्ण ज्ञाता,
वेदज्ञ ।

उ०—तठा उपराति करिने राजान सिलामति नीला आला वस
केलि खभ सूना गलिआ थका काचना रा फलसा री वेह करिने
चौरी पधराया छै । हथळेवी जोडि छेहडा वाधिया छै । सु जाणि
मन वाधिया छै । जिक् वेदमूरति ब्राह्मण छै सु भरणी अगनि
लगाडि होम करै छै । —रा. सा स.

२ सूरज, सूर्य ।

वेदरद, वेदरदी—देखो 'वेदरदी' (रू भे.)

उ०—१ चालनि मोरा सइथा दुख पावै, रसरज ऐसी वेदरदी होय
रही, काहँ कू ती पनघट जावैरी आवै, —रसीलै राज रा गीत

उ०—२ चाली चाली सइथा म्हारी सावरै री लैर, प्यारी गयो कही
विरह वेदरदी. खोजत्या ने उवा रा सूषा पर ।

—रसीलै राज रा गीत

उ०—३ हेरी हेरी मा मन लै गयो, सावरी सनेही अलवेली मा । नैन
लगाय मन लै गयो वेदरदी, दिल विच छाया रयी ।

—रसीलै राज रा गीत

वेदरस-स पु [स] वृहस्पति का नाम । (अ मा)

वेदरह, वेदराह-स पु [स. वेद+अ राह] वेदों में बताया गया मार्ग
वेदमार्ग, ।

वेदल-देखो 'वेदिल' (रू भे)

उ०—१ थै नाळेर किए नै बदयो ? म्है थाने काहु कहिन भेलि-
या था ? तरै उमरावा अर पुरोहितजी पाछली वात ब्यू हुई त्यू
कही । कागद दिखायो । स्त्रीरामल जी वेदल हुवा ।

—राव रिरामल री वात

उ०—२ बळै ढाढिया नू मुख बचन समाचार मारवणी कह्या छा
सु कह्या पिण ढाढी डरै छै । ताहरा ढोलोजी बोलिया थै वेदल
(क्यू) छौ । ताहरा ढाढी बोलिया कवरजी आपनै दीठा ती घणा
राजी छा पिण मरण सु डरा छा । —ढो. मा.

३०—३ तरै पाधरी कवरजी रो हजूर आई । कवरजी डोलिये बंठा छै । तद मालवणी भाए मुजरो कीयी । जद कुवरजी हाथ पकड नै धरा आदर सु मालवणी नै डोलिये बंसाणी । पिण मालवणी वेदल घणी छै । —डो. मा

वेदवत-वि० [स] १ वेदो का ज्ञाता, वेदज्ञ ।

३०—१ कामिणी कहि काम काळ कहि केवी, नारायण कहि अवर नर । वेदारथ इम कहै वेदवत, जोग तत्त जोगेसवर । —वैलि

३०—२ जु वेदवत भला ब्राह्मण था । त्या वेद रो वेदोक्ति विचारयो । वात पणि कही चाहीजे घर मन माहै भय उपनी छै । मत वसदेवजी दुरी माने पणि जरूर हुई । ब्राह्मण जु कछु धरम्म होय कहै । —वैलि टी

२ ब्रह्मज्ञानी ।

वेदवचन-स पु [स] वेदो का मूलपाठ ।

वेदवती-स स्त्री [स] १ राजा कृषाध्वज की कन्या जो दूसरे जन्म में सीता हुई थी ।

२ द्रोपदी । (भ्र मा)

३ एक प्राचीन नदी जो परियात्र पर्वत से निकली १४ नदियों में से एक थी ।

४ एक अप्सरा का नाम ।

वेदवदन-स पु [स] १ ब्रह्मा । (डि को)

२ व्याकरण ।

वेदवधुनि, वेदवध्वनि—देखो 'वेदधुनि' (रु. भे)

३०—कुदन में थाळ द्रोव दधि कुंकम, पूरित अकखत तदुळ । इत्यादिक गीत नाद वेदवधुनि, मगळ घमळ मगळ । —गु रु व

वेदवा-वि०—जिसकी कोई दवा नहीं हो, बिना दवा का ।

३०—जाह कोई जोग न जुगति है, जाह नही वेग न तेग । हरीया दवा न वेदवा, जाह कोई पाँण न वेग । —अनुभववाणी

वेदवाधय-स पु [स] १ वेद का कोई वाक्य ।

२ पूर्ण रूप से प्रमाणित कोई बात जिसका खडन नहीं किया जा सके ।

वेदवादी-वि०—[स वेदवादिन्] १ वेदो का अच्छा ज्ञाता ।

२ वेदो में उल्लिखित मार्ग पर चलने वाला ।

वेदवावत—देखो 'दवावत' (रु भे)

वेदवाहन-स पु [स वेद+वाहनम्] सूरज, सूर्य ।

वेदवित, वेदविद—वि० [स वेदवित्] वेदो का जानकार, वेदज्ञ ।

३०—वेदोगत धरम विचारि वेदविद, कपित चित्त लागा कहण । हेकणि सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण । —वैलि

सं पु.—१, वेदविशारद ब्राह्मण ।

२ भगवान् श्रीविष्णु ।

रु भे.—वेयविभ्र, वेयवी ।

वेदविदुल, वेदविदुस-वि [स. वेदविदुप] वेदो का ज्ञाता, पंडित, विद्वान् ।

३०—सिलपी काम ह्यो सह सिद्ध, ब्रह्मा साखि रर्च जिग विधि । उचारं वेदविदुल अनेक, विचारं जिग सुविधि विभेक ।

—रामरासी

स. पु—ब्राह्मण, पंडित ।

वेदवेद्या-स स्त्री [स] वह देवी जो वेदों से जानी जाती है । उक्त देवी के निवास स्थान चिन्तामणि ग्रह के चार दरवाजे चारो वेद हैं ।

वेदव्यास-स. पु [स] १ एक प्राचीन ऋषि, जो सत्यवती एव परारार के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे । इन्होंने ही वेदो के विभाग करके प्राथुनिक रूप दिया ।

३०—१ का तन आलस करत ऊध, का फिर सूधा करत सूध । का मन भूरख विकल जास का हुय बंठ वेदव्यास ।

—अनुभववाणी

३०—२ ताह माँहि लै अधिका उतिमि, ग्यान रूप गाहैडि गहा । वारहट अनै रिलि वरावरि, वेदव्यास ईसर वहा । —पी. प्र.

२ वेदस्वत मन्वन्तर के अट्ठाईस द्वापरो में उत्पन्न होने वाले अष्टाईस वेदव्यासों का समूह । (पुराण)

रु भे—वेदव्यास

वेदवृद्ध: वेदवृध-स पु —[स वेदवृद्ध] व्यास की सामशिष्य परम्परा में से कौथुम पाराशर्य नामक आचार्य का शिष्य, एक आचार्य ।

वेदसरमन, वेदसरमा-स. पु [स वेदशर्मन् वेदशर्मा] १ एक वेदज्ञ ब्राह्मण ।

वि० वि०—इसने ब्राह्मणों को देने के लिए सकल्पित धन ब्राह्मणों को नहीं दिया । इसलिए इमे शृगाल-योनि प्राप्त हुई । यह वेदनाथ का मित्र था एव सिन्धुद्वीप मुनि के उपदेशानुसार धनुष्कोटि तीर्थ में शाप मुक्त हुआ था ।

२ विदुर का मित्र, जो विदुर के साथ कालिंजर पर्वत पर गया ।

वि० वि०—कालिंजर पर्वत के सिद्धों के उपदेशानुसार इसने सोमवती अमावस्या के दिन 'अध तीर्थ' पर स्नान करके मुक्ति प्राप्त की ।

३ शोणाश्व राजा का एक पुत्र ।

४ विष्णु भक्त शिवशर्मन के पुत्र का नाम ।

५ मुनिवर्धन नामक विष्णु भक्त के द्वारा पिशाच योनि से मुक्त हुआ एक ब्राह्मण ।

वेदसिनी—स स्त्री एक प्राचीन नदी । (पुराण)

वेदसिरस वेदसिरा—स पु [स वेदशिरस्, वेदशिरा] १ वाराह-कल्पान्तर्गत वैवस्वत मन्वन्तर मे से पन्द्रवै युगचक्र मे उत्पन्न एक शिवावतार, जो सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अंतर्भाग में स्थित वेदशीर्ष नामक स्थान पर अवतीर्ण हुआ था । इसका प्रमुख अस्त्र महावीर्य था ।

२ प्राण राजा का पुत्र, एक राजा ।

३ स्वारोचिष मन्वन्तर के विभु नामक इंद्र का पिता ।

४ रैवत मन्वन्तर के सप्तऋषियो मे से एक ।

५ एक भृगुवशीय ऋषि, जो मार्कण्डेय का पुत्र था ।

वि० वि०—इसकी माता का नाम मूर्धन्या व पत्नी का नाम पीवरी था इसके अनेक पुत्रों का साभूहिक नाम मार्कंडेय था । इसकी तपस्या शुचि नामक अप्सरा ने भग की थी, जिससे उत्पन्न कन्या का हरण यमधर्म ने करना चाहा किन्तु इसके शाप से वह काशी मे धर्म नामक नदी बना ।

६ कृशाश्व ऋषि एव धिपरा का पुत्र, एक ऋषि, जिसे पाताल में नागों से विष्णुपुराण का ज्ञान प्राप्त हुआ ।

वेदसीरस—स पु. [स. वेदशीर्ष] सरस्वती नदी के उत्तरी तट पर स्थित हिमालय के अंतर्भाग मे स्थित एक स्थान । (पुराण)

वेदस्परस—स पु [स वेदस्पर्श] कबध ऋषि का देवदर्श नामक शिष्य एक आचार्य ।

वेदस्प्रति, वेदस्प्रती—स स्त्री [स वेदस्मृति] एक प्राचीन नदी का नाम ।

वेदक्षी—स पु [स वेदश्री] रैवत मन्वन्तर का एक प्राचीन ऋषि ।

वेदस्मृत—स. पु [स. वेदश्रुत] १ वशिष्ठ के पुत्र का नाम ।

२ रैवत मन्वन्तर का एक देव ।

वेदस्मृति—सं स्त्री. [स. वेदश्रुति] एक प्राचीन नदी का नाम । (पुराण)

वेदाग—सं पु [स. वेद-अङ्ग] १ वेदों के छः अंगो मे से कोई एक अंग ।

वि० वि०—उक्त छ' अंगो के नाम निम्नलिखित हैं—

शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द ।

उ०—जमी सहावा नागेंद्र लोक उपावा विरच जाणै, धुरजटी साव ऊच भावां मेर धीग । मावा लोम रिसी राम तम्भी ज्यू दधीच हाड ऊच, सांवेद वेदागा वीरावी सभूक्षीग ।

—हुकमीचद खिडियो

२ वारह आदित्यो मे से एक आदित्य ।

३ सूरज, सूर्य ।

स स्त्री—४ छ' की संख्या । * (डि. को.)

वि०—छ । * (डि को)

वेदाणी—स स्त्री—१ दाख, द्राक्ष । (अ. मा.)

२ देखो 'वेनाणी' (रू. भे)

उ०—धका पार जोवता वार लग्गी वरणता, तडित सार अषतार अणी गुण धार अनता । वेदाणी तन मजि रजि आभीच लग्गनै, घडे सधर पुळ सज्जि धूप डवर वासन्ने । —रा. रू.

३ देखो 'विनाणी' (रू. भे)

वेदांत—स पु [स] १ चराचर विश्व को एक ब्रह्म एव अद्वैत मानने वाला एक दर्शन, जिसमे वेदो के चरम उद्देश्यो का वर्णन है ।

उ०—१ चित्तयी रामचन्द्र री ओर, चित्त म्हारी हो गयी चकोर । सब ब्रह्मग्यान, वेदांत विसारची, तन मन धन वारची ।

—गी. रा.

उ०—२ सिखा फरहरती, उतरासगी धोती, हाथि प्रवीत्रीसऊ, तूरीउ जनीइ, सिर भद्रिउं, तिलक वधारिउ, गायत्री साधनु, त्रिकाल-सध्याराधन, प्रभातस्नान, नित्यदान, वेद पढइ, वेदांत जाणइ, मिढात वखाणइ, देव तरपण, गुरुतरपण, रिखितरपण, पित्रतर-पण, इसिउ नैस्टिक ब्राह्मण ।

—व स

२ वैदिक सिद्धान्तो का निरूपण व विवेचनकर्ता शास्त्र ।

३ ७२ कलाओ मे से एक ।

रू. भे.—वेदात, विदात, विदाती, वेदत ।

वेदातसूत्र—स पु [स] वेदातशास्त्र का मूल माना जाने वाला महर्षि वादनारायण कृत सूत्र ।

वेदाती—वि० [स वेदातिन्] वेदात का श्रेष्ठ ज्ञाता, ब्रह्मवादी ।

उ०—राता विखै विकार सूं, आप सवारथी पर हती । "वील्ह" कहै एक वीनती, विसन टाळि वेदाती ।

—वील्होवी

रू. भे.—वेदाती, मदाती ।

वेदांतो—स पु.—१ एक प्रकार का अमरुद विशेष जिसमे बीज नहीं होते ।

२ एक प्रकार अनार विशेष ।

उ०—तठा उपराति करि नै राजान सिलामति किए भाति रा सरवत छाणीज छै । घणै वेदानै, दाडिम कुळी रा रस लीजै छै । सी घणी कालपी मिसरी रा भेळ सूं घणी एनची नै मिरचा रं भेळ वोह लागै थकै ऊजळा कपूर वासी गगोदक पाणी सू ऊजळै गळ्ळै भोळि भोळि फारीजै छै ।

—रा. सा स.

रू. भे —वेदाणी ।

वेदात्मा—स पु [स] १ सूरज, सूर्य ।

२ भगवान् विष्णु ।

वेदादि, वेदादिबीज—स पु प्रणव ओकार का मत्र ।

वेदाधिदेव—स पु [स] ब्राह्मण ।

वेदाधिप वेदाधिपत, वेदाधिपति, वेदाधिपती—स. पु [स वेदाधिप, वेदाधिपति] चारो वेदों के माने जाने वाले अधिपति ग्रह ।

वि० वि०—ऋग्वेद के वृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मगल और अथर्ववेद के बुध अधिपति हैं

वेदार—स पु [स. वेदार] गिरगिट (हिं को)

वेदारण—स पु [स] दक्षिण में स्थित एक तीर्थस्थान ।

उ०—दिल्लण में भीम नदी भीम सकरी कहावे । क्रस्ण वेणी क्रस्णा कहावे । दक्षिण में वेदारण तीरथ है । —वा दा स्यात् वेदासवा, वेदास्वा—स स्त्री [स वेदाश्वा] भारत की एक नदी का नाम । (प्राचीन)

वेदि—वि [स वेदि] १ पंडित, विद्वान् ।

२ देखो 'वेदी' (रू. भे)

वेदिष्ठ वेदिष्ठी—देखो 'वेदियों' (रू. भे)

उ०—१ रामा हवइ रुहु हसिइ, रुठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिठ, तू घर मज्जलि आवि । —मा का प्र.

उ०—२ रडती रहि रुहु हसइ, रुठा देव मनावि । वाटइ लागु वेदिठ, तू मदिर माहि आवि । —मा का प्र

वेदिक—देखो 'वेदिक' (रू. भे)

वेदिका—देखो 'वेदी' (अल्पा, रू. भे.)

वेदिजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदिन—वि. [स वेदिन्] १ जानने वाला, ज्ञाता ।

२ विवाह करने वाला, दुल्हा ।

३ विद्वान्, पंडित ।

स पु—१ पढाने वाला, शिक्षक ।

२ ब्राह्मण या ब्राह्मण की उपाधि ।

वेदियों—स पु.—१ वेदी का ज्ञाता वेदज्ञ, पंडित ।

उ०—वेदिया ब्राह्मण पाचसइ ए, वेद भणइ दरवारि । गछवासी जती सातसइ ए, सूफतउ ल्यइ आहारि । —स कु

२ ज्योतिष विद्या जानने वाला, ज्योतिषी ।

३ विवाह या यज्ञोपवीत संस्कार कराने वाला कर्मकाण्डी ब्राह्मण ।

उ०—१ सिद्धराव आप रँ नाव नवी वसायी, नँ पूरव सू बाभण, उदीच वेदिया १००० ठेडाइ नँ गाव ५०० सू सिद्धपुर दीयी, गाव ५०० सीहोर रा दीया । —नँणसी

उ०—२ भावइ अ्रेक अगन्योत्तरी वली वेदिया व्यास । माई मीटि आपणी, मुनि भूकइ मसवास । —मा का. प्र.

३ देखो 'बंध' (अल्पा रू. भे)

उ०—तू क्या करी है वेदिया, ओखद पाणी देह । हरीया जिन वेदन दई, सारा सोय करेह । —अनुभववाणी

रू. भे—वेदिव, वेदिमी ।

वेदिल—देखो 'वेदिल' (रू. भे)

उ०—तू गोरी मत वेदिल होय ओजी राज, इवकँ जावा जद सागँ ले चालाजी राज । झूटा ढोला झूठ न बोल ओ जी राज, सदाई जावी थँ रागँ कदँ न ले चाली जी राज । —लो. गी.

वेदिसद—स पु [म. वेदिपद] वहिपद नामक महाराजा ।

वेदी—स स्त्री [स] विवाह आदि शुभ कार्यों एव यज्ञ करने के लिए साफ करके तैयार की हुई ऊँची भूमि, मिट्टी का चतूतरा, चौकी ।

उ०—१ अथ विवाह को आरंभ भयो । ब्राह्मण विवाह करण नँ किसा आणि वँठा छँ जिसा साक्षात् मूरतिवंत वेद । वेदी छँ सु रत-न जडित छँ । नीला वास छँ । अरजन (अरण ?) कहता रूपा का कलसां की वेह छँ । —वेलि टी.

उ०—२ खट कास्टँ निरदूख खित, आहुत धिरत कपूर । धिव पडित वेदी सद्रड, सोभत अगनि सनूर । —रा. रू.

उ०—३ प्रति जुति अगनि अघूम विराजँ, रतन जडित वेदी दुति राजँ । दिव्य कास्ट खट जाति अदूखति, अगण कपूर धिरत जुत आहुति । —रा. रू.

उ०—४ ऊजळी उत्तम रेत, ओकळी सू लँ आवँ । वेदी जिगा विवाह, साज सुभकार सजावे । ग्रह रेणुका राख, दात निरमळ कर निरलँ । वासण भरतण रगड, कजळा घोरा हरखे ।

—दसदेव

२ वह अगूठी जिस पर किसी का नाम खोद कर अंकित किया हुआ हो ।

३ वीणावादिनी सरस्वती ।

४ एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

५ चतूतरा, चौकी ।

६ ब्रह्मा का नाम ।

७ रहस्य, गुप्त बात ।

८ ब्रह्मा की पत्नी ।

वि०—१ जानने वाला, ज्ञाता ।

उ०—तूँ अघ्यातम मत वेदी, तइ करमप्रकृति सहू छेदी रे । ससार तरी तु बइठउ, सिवसदिर मा जइ पइठउ रे । —वि कु.

२ विद्वान, पंडित ।

३ वेदो का, वेदो से सम्बन्धित ।

रू. भे —वेदि, वेदी, वेदि ।

अल्पा, —वेदिका ।

वेदीजा—देखो 'वेदजा' (रू. भे)

वेदीतीर्थ—स. पु [स वेदीतीर्थ] कुरुक्षेत्र का एक पुण्यक्षेत्र ।

वेदीसवद, वेदीसब्द—देखो 'वेदीसवद' (रू. भे.)

वेदू, वेदू-वि०—१ वेदज्ञ, वेदो का जानकार ।

२ विद्वान, पंडित ।

स. पु —१ ब्रह्मा, विधि ।

उ०—वेदु जटघर चबे वीणती, निरखं मधुवन तणी निवास ।

ब्रजवासी कयळास वसावो, विसन अमा दीर्ज ब्रजवास ।

—अग्यात

२ देखो 'वेद' (रू. भे)

उ०—अनत तणी नहि अत नाम लालच रिणि नाहीं, रूप रेख
निही रग कही हव का हिज काई । सास अास निहिवास धारिण नह
खाण न वेदु, अनत नाम अकाज आति नह जाति न भेदु ।

—पी प्र

वेदेह—देखो 'विदेह' (रू. भे)

वेदेही—देखो 'विदेही' (रू. भे.)

उ०—पारब्रह्म राजा वसं, नगर वेदेही माहि । ग्यान कुंवर जुग
राज पदवी, जुग जुग राज कराहि । —श्रीहरिरामजी महाराज

वेदोक्त, वेदोक्ति, वेदीकती, वेदोक्ति वेदोक्त, वेदोक्ति, वेदोक्ती—स पु
[स. वेदोक्त, वेदोक्ति] १ वेदवान्य, वेदवचन ।

२ वेदो मे कहे गये मत्र ।

३ शास्त्रोक्त वचन ।

४ वेदो मे वर्णित विधि, वैदिक विधि ।

उ०—१ कजि उदकजळि सुंज कराए, जमण सिनान कियो नप
जाए । वेदोक्त मत्रा सुखा वांणी, जळ अजळि आपी जग जाणी ।

—रा रू.

उ०—२ ज्यो रचना नप ज्याग री, कौ वरणी कविराव । वेदोक्त
सासत्र वचन, पणि पणि लगन प्रभाव ।

—रा रू

उ०—३ अठार भार वनस्पती का पत्र फूल फळ, अरुसठ तीरथ
का निरमळाचार जळ । राजा 'जैसाह' कन्यावळ को सकळप लियो
सी वेदोक्ति ससकार करि पार कियो ।

—रा रू

उ०—४ जू वेदवत भला ब्राह्मण था । त्या वेद री वेदोक्ति विचारयो
वात पणि कही चाहीजं अर मन माहे भय उपनो छे । मत वसदे-

वजी बुरी मानं पणि जरूर हुई ।

—वेलि टी.

उ०—५ ब्रह्म-कवच पजर-विसन, रक्षा-राम उचार । वेदोक्ती सू
ब्राह्मण, आसीसं अणपार ।

—रा. रू

रू. भे.—विदोगत, विदोगति, विदोगती, विदीगत, विदोगति,
विदीगती, वेदोगत, वेदोगति, वेदोगती ।

वेदोगत, वेदोगति, वेदीगती—देखो 'वेदोक्त' (रू. भे.)

उ०—१ ब्रह्मा नारद करे वेदोगत चवरी होम कटक चढियो । फिरियो
नही उवर यत फाटै, केरा कमध इसा फिरियो ।

—बसू चापावत री गीत

उ०—२ वेदोगत धरम विचारी वेदविद, कपित चित-लागा कहण ।

हेकरिणा सुत्री सरिस किम होवै, पुनह पुनह पाणिग्रहण । —वेलि

उ०—३ सेतराम सभ्रमी, इळा ऊठिये कनूजा । जगत जात रिणु-
छोड, कीध वेदोगति पूजा । चाओडो परचाड, वहै लाखो फुलाणी ।
धारा धड कतारि, चाडि राठीठा पाणी ।

—गु. रू. ब.

उ०—४ सतिया 'ग्राम' सहेत, दाग वेदोगति दीघा, केसरिया कम-
घजा, करे अत उच्छव कीघा । वड चापावत 'बसू', कमध 'भाळ'
कूपावत, अवर भीच उमराव, रोस भरिया बहु रावत । —सू. प्र.

वेदोधनि, वेदोधनी—देखो 'वेदधनि' (रू. भे)

वेदोधर—स पु [स] ब्रह्मा विधि, विरचि ।

रू. भे.—वेदोधर ।

वेदोधरम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे)

वेदोधुण, वेदोधुणि, वेदोधुणी, वेदोधुन, वेदोधुनि, वेदोधुनी—देखो वेद-
ध्वनि' (रू. भे)

उ० - १ आमना चत्र वेद ब्रह्मणाय विप्रय रुध जुज्जर साम
अथरवणाय जपय । वेदोधुनि जै जै सव्वदय वणय, गुजार रव भेर
पडसदय धणय ।

—गु. रू. ब

उ०—२ दिये रिख सग आहुति देवस, मेवा अत होमं असि सुम-
स । निधूम अगनि विप्रा मुखनाद वेदोधुनि ज्वाळा लागी वाद ।

—रामरासी

उ०—३ वधाई वाजा रा जहुमार, चत्र विध मगळ मगळचार ।
वेदोधुनि विप्र तणे चत्र विधि, सुर नर नाचें देव प्रसिधि ।

—रामरासी

वेदोध्रम—देखो 'वेदधरम' (रू. भे.)

उ०—वेदोध्रम रिख्या राम विचारि, चिप्रारं आत्म ध्रम चिप्रार ।
दया द्रुम ध्रम रघुपति देखि, पदारथ ज्यार छीया फळ पेखि ।

—रामरासी

वेदोध्वनि, वेदोध्वनी—देखो 'वेदध्वनि' (रू. भे.)

वेदोपनिषद्-स पु. [वेदोपनिषद्] एक उपनिषद् का नाम ।

वेदो—देखो 'वेदो' (रू भे)

उ०—तौ पिण्ड स्वामीजी रात्रि में वखाण वाचे जठं वावेचा ढोलक बजावें । गावें । वखाण में विघ्न पाई । जद भाया कह्यो—महाराज हूजी जायगा उत्तरो । स्वामीजी बोल्या—खेतसीजी नव दिक्षित है सी देखा परोखह खमवा किसानक सेंठा हैं । कितरायक दिना वेदो कियो पछे वावेचा लातर गया । परयूखणा में इंद्रध्वज काढयो । स्वामीजी रा मूढा आगी घणी वेला ऊमारही गावें बजावें तान करे । जद केइ स्रावक वावेचा सू वेदो करवा लाग । जद स्वामीजी कह्यो—वेदो मत करो । —भि द्र.

वेधगी—देखो 'वेधगी' (रू भे)

वेध-वि० [स] १ जो जानने के लिए हो, ज्ञातव्य ।

२ जो बताने या सिखाने के लिए हो ।

३ जो विवाह करने के लिए हो ।

स पु.—१ ग्रहों का किसी ऐसे स्थान अर्थात् नक्षत्र मे पहुँचने की क्रिया जहाँ से उसका किसी दूसरे ग्रह मे सामना होता हो । (ज्योतिष)
२ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहों नक्षत्रों, तारो आदि को देखने की क्रिया ।

३ तीव्र प्यास, बहुत तेज प्यास ।

उ०—एहरइ वेध न लागइ ए, आगइ ए अग्नि न अग्नि । ऋकै ताहरे आसि सिइ जाइ सिइ गिरिवर स गि । —जयसेखर सूरि [स वेध] ४ छेदने की क्रिया, छेदन ।

५ घाव ।

६ छेद, छिद्र ।

[स वेधस्] ७ सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा ।

८ भगवान् विष्णु ।

९ शिव शंकर, महादेव ।

१० सूरज, सूर्य ।

११ पंडित, विद्वान ।

१२ दक्ष एव प्रजापति ।

१३ अर्क, आक, मदार ।

१४ यत्रादि से ग्रह, तारा, नक्षत्रादि को देखने की क्रिया ।

१५ आकर्षण, मोहकता ।

उ०—मुक्ति रमाए जाणी करी तं ऊपरि थयू चित्त । वेध लागउ तेहनइ धणउ, नाम समरइ रे तेहनू नित कि । —नळदवदती रास १६ कळह, झगडा ।

उ०—१ कळि लागी मुग्गळा ताम हसियी जोगणपुर । वसू हुवै घर वेध, अगं विधिया पाडव-कुर । —गु. रू व.

उ०—२ वसो वधति बहुअ, अतर गति गठि वेध उतपनी । सजोगि अग्नि पतगी, प्रजळय अप मज्जेण । —गु. रू व

उ०—३ वोले इण पर खान तहव्वर, धाण-मथाण हुवण दिखी घर । पख हिंदू धम थया प्रमेसर, आदरयो घर वेध अकव्वर ।

—रा. रू

उ०—४ चिगता उखेल पखरं चरित, रक्खे मेळ प्रमेळ ख । वध वेध बळ खळ वास ज्यू, दाह जळ उर साह दुख । —रा. रू. १७ वंमनस्यता, शत्रुता ।

उ०—तिण दिन सोनगरा पिण्ड राव रिडमल मारिया छे, धणलं वसता थका । तठा पछे मडोवर पायो । सोभत राणै आपरी तरफ सु दीवी छे । तठा पछे कितराहीक दिना राणै मोकळ नं सीसोदिया चाच-भेरा वेध वाधियो । —नेणसी

१८ देखो 'वेध' (रू भे)

उ०—१ पडे वेध कूरमजदे राण छळ 'पीयली', सळा सर वीज जिम वही खवती । जागरण भडाभड छूट गीळा जठं, रूक भड डड-हड रमं खवती । —वसराम रावळ

उ०—२ वकती मुख सावळ देव वळी, कळपं चारणी गत हस कळी । लग वेध अमीणिय घेन लए, दुलहा मुण देवल साद दए ।

—पा. प्र.

उ०—३ यु करता, दोनू भाया आपस में दूदं अर भोज वढी वेध पडियो । ताहरा राव मुरजन वेटा वेळ तेडिनं कह्यो—थं मौ ऊपर फिरिया । थं म्हारी कह्यो न मानी । म्हें राज सूं कोई काम नहीं । —नेणसी

उ०—४ बीता अधूरा वार पूरा वेध सूर्रा वचए, सेलं प्रहार धार सार मार मार मचए । वग्गा खडगं दुहुं वग्गं काळरगं धीरय, अखरा उमगं दूर अगं चाव रगं चीरय । —रा. रू
रू भे.—वेधा, वेद, वेधस, वेधा, वेधि, वेधी, वेह ।

वेध, वेधय - देखो 'वेधय' (रू भे)

वेधक-वि०—१ भेदन या छेदन करने वाला ।

२ जानकार, विद्वान, पंडित ।

उ०—जं वेधक सह वाठ ना रे, गुण रस जाणइ खास । मूरख पसु जाणइ नहीं रे, सेलडी कडव मिठास ।

वि कु

स. पु. [स. वेधक] १ धनिया ।

२ कपुर ।

३ एक नरक का नाम ।

वेधकारी-वि०—१ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

उ०—पढावै कुराणा तिका पढावै काजिया पूजा, सुराणा पुराणा घेन ब्रह्माणा सेव । राजा तणी छत्रधारी खागधारी राजहस,

दाणवा सूं वेधकारी अघत्तारी देव ।

—महाराणा स्त्रीजयसिंहजी (दूसरा) री गीत

२ मारने वाला ।

३ सहार करने वाला, नाश करने वाला ।

वेधडक—देखो 'निधडक' ।

वेधणी—देखो 'वेधनी' (रू. भे.)

वेधणी—वि० [स्त्री वेधणी] १ युद्ध करने वाला, योद्धा ।

२ नाश करने वाला, सहार करने वाला ।

३ मारने वाला, वध करने वाला ।

वेधणी, वेधवी—क्रि. स [स वेधनम्] १ नाश करना, सहार करना ।

२ मारना ।

उ०—१ बडा खड्ड वेधत सावळ वाह, लिये लटियाळ तुरी कपि लाह । जुडे धज सेल पडे जवनेस, दखे रवि तामि ओका 'मुकदेस' ।

—सू. प्र

उ०—२ धानरपति विख्यात वर, वेधु जाणी वालि । सहिजइ सुप्रीव जु वरिउ, ताराइ तिखि तालि ।

—मा. का प्र.

३ चौरना, फाडना ।

४ छेद करना, छेदना, भेदना ।

उ०—१ सिलहाण अगाण वेधाण सरां, पखराण केकाण अभीच परा । अति जोण उफाण धराण घसी, जगचल्प उगाण क्रनाण जिसी ।

—सू. प्र.

उ०—२ कपि कटक हूचक कटक धैतक, उरक वेधक सरक अंतक । अतक तक भड भचक इक इक, पडि जरक मुद गरक पासक ।

—सू. प्र.

उ०—३ वे वे कवाण भूथाण वध, असमान छिवत रोसाण अघ । चख मछी रघ्न छेदे चकास, उडता विहग वेधे अकास । —वि. स

५ युद्ध करना, संग्राम करना ।

६ तोडना ।

७ ज्योतिष के ग्रहो का किसी ऐसे स्थान 'मे' पहूचना जहा से उनका किसी अन्य ग्रह मे सामना होता हो ।

उ०—१ गजरा नवग्रही प्रीचिया प्रोचे, वळे वळे विधि विधि वळित । हसत नखिअ वेधियो हिमकरि, अरध कमळ अलि आवरित ।

—वैलि

उ०—२ डूलह सधीर विच दीपियो, हीर जिहा गुण उज्जळा । रिख अ द सते किर वेधियो बीज चद्र वाघे कळा ।

—रा. रू.

८ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रो, श्रीर तारो आदि को देखना ।

वेधणहार, हारो (हारो), वेधणियो—वि० ।

वेधियोडो, वेधियोडो, वेधयोडो—भू० का० कृ० ।

वेधोजणो, वेधोजवो—कर्म वा० ।

वेधणो, वेधवो, वेदणो, वेदवो, वेहणो, वेहवो—रू. भे. ।

वेधनी—स. म्त्री. [स.] १ हाथी के कानो की वेधने का एक शीजार विशेष ।

२ मोती आदि वेधने का उपकरण विशेष ।

३ अक्रुश ।

रू. भे.—वेधणी ।

वेधय, वेधयण—देखो 'वेधेअ' (रू. भे.)

वेधरम—१ देखो 'विधरम्म' (रू. भे.)

२ देखो 'अधरम' (रू. भे.)

वेधस—स. पु [स वेधस] १ हथेली के अंगूठे की जड के पास का स्थान जिसे ब्रह्मतीर्थ भी कहते हैं ।

२ अगिराकुलोत्पन्न एक मयकार ।

३ देखो 'वेध' (रू. भे.)

रू. भे.—वेधस ।

वेधसी—स. स्त्री [स] एक प्राचीन तीर्थ का नाम ।

वेधागी—स. पु [स] योद्धा, वीर ।

रू. भे.—वेध गी ।

वेधाणी—देखो 'वेध' (१, २) (रू. भे.)

उ०—राजा भूजरि राणिया, सोहे ईही भति । किरि वेधाणी किर-तिया, चदी पूनम रति ।

—गु. रू. वं.

वेधा—स. पु [स] १ दक्ष आदि प्रजापति । २ राजा हरिश्चन्द्र का पिता । ३ अगद के एक पुत्र का नाम ।

४ देखो 'वेध' (रू. भे.) (नां मा, ह. ना मा)

वेधाता—देखो 'विधाता' (रू. भे.)

वेधातिथ वेधातिथि—स. स्त्री [स. वेधातिथि] वह तिथि, जिस दिन सूर्यादि नक्षत्रों एव लग्न का नक्षत्र एक ही रेखा अर्थात् एक ही सीध मे हो ।

वि० वि०—सूर्यादि नक्षत्रो एव लग्न के नक्षत्र के एक ही सीध मे होने पर वेध होता है इसमे विवाह वर्ज्य है ।

वेधाधि, वेधाधी—स. स्त्री —सरस्वती, भारती ।

रू. भे.—वेधाधी ।

वेधि—देखो 'वेध' (रू. भे.)

उ०—भमरडड मरिवा अणुबीहतड, पसरि पइसइ केतकिई हतड, कठिन कटक कोडि कुटीरडइ, पडिड वेधि पछइ पुणि आरडड ।

—सालिसूरि

वेधित—देखो 'वेधियोडी' ।

वेधियोडी—भू. का. कृ — १ नाश किया हुआ, सहार किया हुआ. २

मारा हुआ ३ चौरा हुआ, फाडा हुआ. ४ छेद किया हुआ, छेदा हुआ, भेदा हुआ. ५ युद्ध किया हुआ, संग्राम किया हुआ ६ तोडा हुआ ७ ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचा, हुआ होना कि जहाँ से उनका किसी अन्य ग्रह से मामना हुआ हो. ८ यत्रो आदि की सहायता से ग्रहो, नक्षत्रो, तारो आदि को देखा हुआ ।

वेधी—वि० [स वैधस्] १ पठित, विद्वान् । (ह ना मा.)

२ शत्रु, दुश्मन । (ह ना. मा)

उ०—दत्त कवि पल्ले मिले क्षित दुनिया, वेधी जल्ले जवास विध ।
वेधी खेह वल्ले छल्ल खागा, सोभा मिले अल्लाड सिव ।

—महाराजा मानसिंघ री गीत

३ सयोगी जन ।

उ०—करडा, तू मनि रुअडउ, वेध्यां करइ विछोह । अजइ कुभा-
रउ वप्पडा, नही ज कामिएण मोह । —ढो मा.

४ युद्ध करने वाला, संग्राम करने वाला ।

वेधीलौ—वि० [स वेध+रा प्र इलौ] युद्ध करने वाला, वीर वहादुर,
योद्धा ।

उ०—वागड रं काठ अहवाग भड किवाड रजपूत वेधीला छै सू
घणिया रं नै चहवागा रं रस थोडा दिन हुवै छै । तद मारवाड
रा रजपूता नू वडा वडा पटा देनै सदा वागड रं राजगान वाम राखै
छै । —नंणसी

वेधीसवद, वेधीसवद—म पु [स शब्द+वेधी] अर्जुन । (ह ना मा)

रू भे —वेधीसवद वेधीसवद ।

वेधेअ, वेधेअण, वेधेय, वेधेयण—वि [स वेधेय] मूर्ख नासमझ, वेवकूफ ।
(अ. मा.)

रू. भे —वेधेअ, वेधेअण, वेधेय वेधेयण ।

वेधी—स पु — १ शका सशय सदेह ।

उ०—हुअी राम दुजराम, अहू रं मन मा वेधी । फरसी साठी
फरसि, खरी खत्रिया सिर खेधी । —पी अं

२ देखो 'वेदी' (रू भे)

उ०—राजा ईमा री वेधी सुणे अबोलीअ रह्या । तरं सारी ही
दन उदमाद सू काट साम रं वखत सवागड आय, इमा अहु
जणा सहत दाखलै हुआ ।

—कल्याणसिंघ नागराजोत वाढेल री वात

३ देखो 'वेध' (रू भे)

उ०—वेधी दुंद न वीसरं, 'चद' तणो हरनाथ । पथ अळगो लघता,
लारालगो साथ । —रा. रू

वेध्या—स. पु [स विधाता] ब्रह्मा, विरचि ।

उ०—वेध्याइ याह्लि वदन ज रचिक, त्याहारि सार इहु नूं हरिकं ।
तर लीघी ताहा साण थई लि, मुख मनोहर करिक । —नळाख्यान

वेन—स पु [स] १ चाक्षुष मनु एव नड्वला के वंशज महाराज
अग श्रीर सुनीथा (जो कि मृत्यु अर्धम की मानस पुत्री थी) के
गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र, जो सूर्यवंशी राजा प्रथु का पिता था ।

वि० वि०—कहीं-कहीं पर इसे तेईसवा वेदव्यास एव कर्दम के पुत्र
अनग का पुत्र भी कहा गया है । इसका पालन-पोषण इसके
मातामह के घर हुआ था । यह वचपन में ही दुष्ट एव दुष्टप्रकृति
के स्वभाव वाला था अतः वचो व जानवरों का गला दवा कर
हत्याएँ खूब करता था । इसी क्रूरता के कारण इसके पिताजी
अग देश छोड़ कर चले गये । तत्पश्चात् इसे राज्यपद प्राप्त हुआ
श्रीर दुष्टता आदि में भी अत्यधिक वृद्धि हुई । इसी कारण से
ऋषियों ने कृशत्रय से इसका वध कर दिया किन्तु अनग के दूसरी
सन्तान न होने के कारण राज्य सिंहासन खाली रहता था अतः
राज्य में अतक बढ़ा । तब ऋषियों ने इसकी जाघ को मथा,
तब एक श्यामवर्ण नाटे कद का एव कुरूप व्यक्ति निकला जिसे
ऋषियों ने निपाद अर्थात् बँठने के लिए कहा इसलिए इसका नाम
निपाद ही रखा गया । फिर इसके दोनो हाथों का मथन किया
गया, जिनसे एक स्त्री एव पुरुष निकले । पुरुष को (जिसका नाम
प्रथु रखा गया था) विष्णु अवतार एव स्त्री को लक्ष्मी का अवतार
माना गया ।

२ वैवस्त मनु के दस पुत्रों में से एक ।

३ देखो 'वहन' (रू. भे)

रू. भे —वेंण, वेन, वेंण ।

वेनड, वेनडी—देखो 'वहन' (अल्पा., रू भे.)

वेनट—देखो 'वेनट' (रू भे)

वेनतनय—स पु [स वेनतेय] १ पक्षीराज गरुड । (ना. डि. को)
[स वेनतनय] २ सूर्यवंशी राजा पृथु ।

वेनतियाहल—स पु [स वेनतेय] १ पक्षीराज गरुड ।

वेनती—देखो 'वेनती' (रू भे.)

उ०—१ कुवर ती हालण नें तयार हुवो छै । अब कुंवर आप री
साथ तयार कर नें राजा सी वेनती कीवी, कही, "जो माहाराज,
मनै मेलजुं । हु साह नु पण लै आईस अर समुद्र पण देव आईस ।'
—वीजड वीजोगण री वात

उ०—२ अर हू तो वीजं काम आया छ। ताहुरा जैत कहियौ
'रावजी कही जिम थाहरी वेनती राजा सौं करा । इतरा दिन किम

कहियो नही ?' ताहरा राव कहिया, 'जु रांणी वड्ड कहायो छै, नररसध री सगाई करी तो था कने रांहणी आवै । राजा सौं आ वीनती करी ।'
—राजा नररसिध री वात

वेनवा—देखो 'वेनवा' (रु भे)

वेनसीव—देखो 'वेनसीव' (रु भे)

वेनसुत—सं पु [स] अग एव सुनीया के गर्भ से उत्पन्न वेन राजा का पुत्र एक सूर्यवशी राजा ।

रु भे—वेणसुत, वेणसुत ।

वेनांणी—१ देखो 'वेनांणी' (रु भे.)

उ०—राजद्वार कोठार, जीए साला काढीजै, जरद जरही घडै, लोह लोहे फूटीजै । वेनांणी वेगळा, वाढ घालै केवाणां, कूत बांण कीजति, अणी तीखा घुरसाणां ।
—गु रु. व.

उ०—२ रांमण ताड सराड छड अघसळा रेही, दीप दिसावरि नीपनी वेनांणी गेही । सुध गज-बेल हल्ल फळ अहिबभज नेही, 'अचळ' खान घमीडिया उणहारी ऐही ।
—माली साहू

२ देखो 'विनाणी' (रु. भे)

वेनी—देखो 'वेणी' (रु. भे.)

वेनियो—स. पु—बदल की पतली टहनियों की छाल ।

वेनीत—देखो 'वेनीत' (रु भे.)

वेनु—देखो 'वेणु' (रु भे)

वेनोई—देखो 'वहनोई' (रु भे)

वेपतरी—देखो 'वेपतरी' (रु. भे)

वेपरवा—देखो 'वेपरवाह' (रु भे)

वेपरवाई—देखो 'वेपरवाही' (रु. भे)

उ०—वेपरवाई पतसाह, मनवा मतवाळा । सतगुरु हेरदै सबद का, भर जोर पयाळा ।
—कैसीदास गाडण

वेपरवाह—देखो 'वेपरवाह' (रु. भे)

वेपरवाही—देखो 'वेपरवाही' (रु. भे.)

वेपाक—देखो 'वेपाक' (रु भे)

वेपार—१ देखो 'व्यापार' (रु भे)

२ देखो 'वेपार' (रु भे)

उ०—हुए हक सारा उठी मेर हकका, करै भूत वेताळ चढी किलकका । करै जोर प्राहार वेपार कृतां, दिर्य जुद्ध जाणै अगू सिभु दूतां ।
—रा रु

वेपारह—देखो 'वेपारह' (रु भे.)

वेपारही, वेपारियो—देखो 'वेपारियो' (रु. भे)

वेपारी—१ देखो 'दोपारी' (रु भे.)

२ देखो 'व्यापारी' (रु भे)

वेपोड, वेपोर—देख 'वेपोड' (रु भे)

उ०—किरण माया वारणै, सुख दुख सहै सरौर । जनहरिया हरि नाव धन, पाया सु वेपोर ।
—अनुभववाणी

वेपुडि वेपुडी—देखो 'वेपुडी' (रु भे.)

उ०—सु मेघ की आडग जाणै जीगणी आषी छै । रत बहता लोही बरसती वेपुडी कहता वादल की पणै वेपुडी बहै छै । सु दोवडा वादळ ग्राम्हा साम्हा हूया ।
—बेलि टी.

वेपूठ-वि०—विमुख ।

उ०—जनहरिया ससार में सुख दुख दोऊ झूठ । जब तं सुख अर दुख गिनै, तब हरि तं वेपूठ ।
—अनुभववाणी

वेपोहर—देखो 'वेपोहर' (रु भे)

वेपोहरी—देखो 'वेपोहरी' (रु भे)

वेफरवाण, वेफरवाणी—वि० [फा वे + फर्मान] विना आज्ञा, विना हुकम, विना आदेश ।

उ०—हीडू घाव करै अजीया सिर, हरि सु वेफरवाणी । खार्च स्वाद करै मुख सेती, जीव दया नही जाणी ।
—अनुभववाणी

वेफाड, वेफाड—देखो 'वेफाड' (रु भे)

उ०—करै एक एका धर्क जत्र कत्र, पडै हाथ जाणै भडै ताडपत्र । किता सीस वेफाड चीफाड केता, जपै रूप लेखै कवी श्रोप जेता ।
—रा रु

वेफार—देखो 'वेपोहर' (रु भे)

वेफारी—देखो 'वेपोहरी' (रु. भे)

वेफिकर—देखो 'वेफिकर' (रु भे.)

उ०—मन अकबर मजबूत, फूट हीदवा वेफिकर । काफर कीम कपूत, पकडू राण प्रतापसी ।
—दुरती आढी

वेफिकरी—देखो 'वेफिकरी' (रु भे)

वेफिकरी, वेफिकर—देखो 'वेफिकर' (रु भे)

वेफिकरी—देखो 'वेफिकरी' (रु भे)

वेवगत—देखो 'वेवक्त' (रु भे)

वेवस—देखो 'विवस' (रु भे)

वेवसी—देखो 'वेजमी' (रु भे)

वेवाण—देखो 'वेवाण' (रु भे)

वेवार—देखो 'व्यवहार' (रु भे)

वेवाह—१ देखो 'वेवाह' (रु. भे.)

२ देखो 'विवाह' (रु भे)

बेवुद्धि, बेवुद्धी—देखो 'बेवुद्धि' (रु भे)

बेवुनियाद—देखो 'बेवुनियाद' (रु भे)

बेभव—देखो 'बेभव' (रु भे.)

बेभू—देखो 'बेभव' (रु भे)

बेभाव—देखो 'बेभाव' (रु भे.)

बेम—स पु [स] १ वेग, जोश ।

उ०—ताहरा पछोत खोदणों वेठे नीचीत थकी खोदे छे । खोदत खोदत गली की जिसडी मैं माथी मावे । खीवी तरवार काढिन वेठे छे । माथी आघो करे माथे मैं तरवार री छुं । इण आगुली घाली करि ने जोयो । जोइन खणीतरा रे माथे हाडी देइ ने आघो कीयो । तितरे खीबं बेम भरी ने तरवार वाही सु हाडी उपरा बाजी ।

सू हाडी फूटि गई ।

—चीबोली

२ वार, दफा, मर्तवा ।

३ देखो 'बेम' (रु भे)

उ०—ताहरा सागमरावजी अमल कर घोडी ऊपर चढिया, ताहरा खुरी कीवी । घोडी हूती सु नही । ताहरा सागमरावजी विसनदास नूं कहायो । कह्यो—'घोडी व्याई । कू ड कियो ? बेम उरहो मेन्ही । ताहरा विसनदास सागमरावजी नूं कहायो—'थं वेहनेई छो तीये कारण आमगो कियो । बेम देवा नही । ताहरा सागमराव मानी नही ने लडण नूं चढियो । ताहरा आचानण सागमरावजी नूं कहियो—'जु राज ! चढीजे नहीं । घोडी रो बेम हू ले आईस ।

—नैणसी

बेम—देखो 'बेम' (रु भे)

उ०—१ आडा रे आगळ जडने वेटी होळं होळं कंवण लागी—म्हने उखरडी माथे ग्रेक मोहर चमकती दीसी । पण सामी ई वै लोग निपटने आवता हा । जे लुळने मोहर उठावूं ती वाने तुगत बेम व्हेंतो ।

—फुलवाडी

उ०—२ पण म्हारा करार रो निवळा सेठा ने काई वेगी । धरगड अळगा वगाय नोडिया में जरू करघोडी गाठही वारै काडी । बाणिया रो जात किसी चायग । कंडा पूर में हीरा-मोती लुकाय राखे । कीई बेम करे तो करे इज कीकर ।

—फुलवाडी

उ०—३ अर अठी हय-ळेवा रो वगत बीदराजा ने ओ बेम बिह्यो के हाथ रो ठोड कठेई गुलाव रो कवळी फूल तो नी आयग्यो । बीदणी रो खुली आख्या रे साम्ही सपना रो कावड घूमण लागी जकी घूमती ई गी ।

—फुलवाडी

बेमजी—देखो 'बेमजी' (रु भे)

बेमन—देखो 'बेमन' (रु भे)

बेमाणिक, बेमाणिय, बेमाणी, बेमाणीक, बेमाणीय, बेमानिक—देखो 'बेमानिक' (रु भे)

उ० १ भुवनपति वीस इद्र मित्याजी, सोलह व्यतर सार । जोड सहदस बेमाणिय जुडघाजी, चौमठ इद्र सुविचार । —वृस्त

उ० २ —अमुरादिक दस होय वाण व्यतरिया अद्र, जोइस पच बेमाणिय दुविहा मुत्तं दिद्र । पनरे भेदे सिद्ध कछ्या ए जीव प्रकार, तनुमानादिक हिव एहनी कहिमुं अधिकार । —वृस्त.

बेमाता, बेमाता—स स्त्री [स विधाता [१ विधाता, ब्रह्मा ।

[सं वृद्धिकामाता] वच्चे के जन्म के बाद छठी रात को भाग्यलेख लिखने वाली एव वच्चे को स्वरूप प्रदान करने वाली एक प्रकार की कालानिक देवी ।

उ०—१ सेठा रे वेटा री हूबोहूव आप सू उणियारी मिळीं । बमाता री कुदरत । खुद सेठ देखता ती ई ओळख नी सकता । अवे वाता करघा सावळ ठा पडगी के उणियारी ती अवस मिळीं पण आप हूजा ही ।

—फुलवाडी

न०—२ बेमाता ई माव लखणा वायरी दीम के रूप अर रीस ने अकठ वयूं करी । सगळा रूप रो जाणूं मठ मार दियो । राणीजी कना सू पग नी पकडाळ ती म्हें राजा री कवर नी । —फुलवाडी

उ०—३ अर परतव दीवणा में दम वरसा जितो लाठी । बेमाता अणू ती निकमी वेळा में अणू ता षोड-भोद मू घडयो । खार्ध रळ-कंती काळ केमा री चीकणी ऋडूली अंडी लागती जाणूं वरसां लग मकराणा री सिलाडी माथे थोट्योडी काजळ घटा वणुने लूम ।

—फुलवाडी

उ०—४ बेमाता ने रीम तो घगी ई आई । पण जोर काई करती लाचार हीयने जवाव दियो—म्हें सेठ रा वेटा रे जनम रा आक लिखण वास्ते आई हू । वेगी आगळ खोल, वेळा टळ ।

—फुलवाडी

उ० ५ बेमाता आखती पडनी थकी वीली—म्हें कोई ठाली नी भटकिया करू । छटी री रात म्हें मेठा रे वेटा रा भाग में आवर घालण माळ आई हू ।

—फुलवाडी

वि० वि०—लोक में 'बेमाता' शब्द अति प्रचलित है । जिसका प्रयोग वच्चे के जन्म का विधान करने वाली देवी तथा जन्म की छठी रात वच्चे की भाग्य-लिपि लिखने वाली एक मातृ-देवी के अर्थ में किया जाता है । इस बेमाता (रूपा०-बीमाता) शब्द की व्युत्पत्ति स 'वृद्धिकामाता' से हुई है । इस सम्बन्ध में डा० वासुदेव धरण अग्रवाल का अभिमत ज्ञातव्य है—

'आयंवती श्रीर आयंवृद्धा देवी एवही होनी चाहिए । यह देवी कौनसी थी, इसके सम्बन्ध में यह सम्भावना प्रतीत होती है कि जिसे

आज-कल लोक में 'विहाई' (वृद्धाचार्या) या 'बीमाता' (वृद्धिका-माता) कहते हैं, वही 'आर्यवृद्धा' होनी चाहिए। लोक में विद्वानों के कि बेमाता वच्चे को देखने के लिए छठी पूजन की रात में अवश्य आती है और उसके भाग्य का शुभाशुभ फल अवश्य लिख जाती है। इसी लिए उस रात जागरण आवश्यक माना जाता है। उसे ही पंठी जागरण कहते हैं। "

इससे स्पष्ट है कि 'वेमाता' (वृद्धिकामाता) और 'विहाई' (वृद्धा-चार्या) एक ही देवी के नाम हैं, जसा कि विद्वान डा० अग्रवाल ने सुझाया है। दोनों का व्युत्पत्ति क्रम इस प्रकार रहा होगा —
वेमाता = वृद्धिकामाता = विद्धिआमाता = विहिआमाता = विही-माता = विईमाता = बीमाता = वेमाता।

विहाई = वृद्धाचार्या = वृद्धाचार्यािका = विदाइया = बीधाइया = बी-हाई = विहाई। आर्य वृद्धा का उल्लेख कादम्बरी में तथा आर्या व वृद्धा के नाम से वन पर्व में भी आया है।

रू. भे. — वेमाना, वेहमाता, विहाई विहाईमाता, वेहमाता, वंमाता वंमाता, वेह।

बेमार—देखो 'बीमार' (रू. भे.)

उ०—पातसाह महमद बढी धरमातना हुवी। श्री ओम्बदा री हाट ४ मडावी, वंघ राखिया। बेमारान नूँ दाळ धरम री बीजं। रीगिया नूँ खावा नूँ दीजं धोढण विछावण दीजं। — नैरासी

बेमारो—देखो 'बीमारो' (रू. भे.)

बेमालूम—देखो 'बेमालूम' (रू. भे.)

बेमिळावट—देखो 'बेमिळावट' (रू. भे.)

बेमुख—१ देखो 'बेमुख' (रू. भे.)

२ देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया मास मसाण है, भूत राकसी खाण। सोई भलें धिनादमी, बेमुख बडा अजाण। — अनुभववाणी

उ०—२ जाग्या सोई जाणिये, हरिया हरि के हेत। हरि बेमुख सु जागिया, ता मुख पडसी रेत। — अनुभववाणी

उ०—३ गुर दरसन परमन नही, हरिया बेमुख जानि। अघा नर वेवें नही, पीपल बाधी तानि। — अनुभववाणी

उ०—४ हरीया करणी क्या करे, गुर सुं बेमुख धाय। तोरे तूटी वरत ज्ये, खयडखत की जाय। — अनुभववाणी

उ०—५ वाकु आर पार नही कोई रह्या राम सु बेमुख सोई ब्रह्म विचार भया, जन पारा, और रह्या वार का वारा।

— अनुभववाणी

बेसू—स स्त्री—वह गाय भंस आदि पशु जो प्रसव देने वाले हो।

वेय—१ देखो 'वेद' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म वेय उच्चरय, गीत तुवर गावें, रभा अयसर रमै, वीण सरसत्ती बजावें। सिव भवलोकरा करै, इद्र सिर चम्मर ठाळें। व्यास उकति वरनवें, पाठ गगा पहाळें। — अलुनाथ कवियो
२ देखो 'वेय' (रू. भे.)

वेयकाल—स पु [स वेद काल] भोगने का समय। (जैन)

वेयड्ड, वेयड्डह, वेयड्डु.—स. पु.—एक पर्वत का नाम।

उ०—१ अरजुनु बोलइ चर भडारी, पाछइ आवइ लउ उपगारि।

खेचर बोनइ सांभलि सामि, गिरि वेयड्डु सुणीइ नामि।

—सालिभद्रसूरि

उ०—२ गिरि वेयड्डह तलि गयऊ, पणमिउ नाभि मल्हार। निव मणिचूडह राजु दिइ, पडिलउ एउ उपकार। —सालिभद्रसूरि

वेयण, वेयणा, वेयणि, वेयणी—१ देखो 'वचन' (रू. भे.)

२ देखो 'वेदना' (रू. भे.)

उ०—१ दस मास समापित गरभ दीघ रित, मन व्याकुळ मधुकर मुणणति। कठिण वेयणि कोकिल मिसि कूजति, वनसपति प्रसवती वसति। —वेलि

उ०—२ ए जु भमर बोलिवा नै मगाणाट करे छे। सु मानु गरभवती व्याकुळता जणावें छे। जब वेयण लागे छे प्रसूत हुइवा की तव गरभवती कूजे छे। विलाप करे छे। सु ए कोकिला बोले। सोई मानु वनसपती नै वेयणलागी छे। भर कूजे छे। इहि सभे वनसपती वसत जायी। —वेलि टी०

उ०—३ लास जीभ जेहइ मुख माहि, नरग तरा दुख तिणि न कहाइ। नरय वेयण जो कहइ विचार, केवल नाणी न जाइ पारि। —वस्तिग

वेयरणी—देखो 'वैतरणी' (रू. भे.) (जैन)

वेयविभ्र, वेयविय, वेयवी—देखो 'वेदविद' (रू. भे.) (जैन)

वेयहद, वेयहदी—देखो 'वेहद' (रू. भे.)

उ०—न की जोग जुगता न की जत जोखा, न की सात सुख न की दसदोखा। न की मनवाचा न की स्वाल सबदी, न की हृदि माही न की वेयहदी। — अनुभववाणी

२ देखो 'वेहद' (रू. भे.)

वेयाळ, वेयाल—१ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

२ देखो 'वेताळ' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याळ' (रू. भे.)

वेयावच, वेयावच्च—वि० [स वेयावृत्य] १ वयोवृद्ध, गुणवृद्ध।

२ देखो 'वेयावच्च' (रू. भे.)

उ०—१ वेयावच दस प्रकारनी, करजो चित्त लगाय । कष्टयक रसायण ऊपजे, दुख दालिद्र दूर जाय ।
—जयवाणी

उ०—२ पीठी न करावै भ्रग, ग्रही वेयावच सग । करै करावै नहीं ए, जात न जणावै सही 'ए' ।
—जयवाणी

उ०—३ ससार तारण दु कावली, चरथी व्रत देह दस्तार रे । अ-खोड भाविल निम जाणवी, कल (इ) य वेयावच सार रे ।
—कवि कुसललाभ

उ०—४ मली साधवी यसोभद्रा, पालइ पचाचार रे । विनय वेयावच करइ वारु गिराइ गुरुणी नी कार रे ।
—स कु.

उ०—५ आपणा जाणपणा नै आपलै, गिणु न केह नै गान । विनय वेयावच नहीय विवेकना, अति मोटो अभिमान ।
—घ० व० ग्रं

वेर—स स्त्री [स. वेर] १ शरीर, वदन, देह ।

२ शत्रु, दुश्मन ।

३ विलम्ब, देर ।

उ०—१ लसकर पिण अलघी गयी, जूझण वेला जाणि । वडे वेर हम कु भई, वादल कहै ए वाणी ।
—प. च ची

उ०—२ माडा रचनै मेलियो, वीरम नै नाळेर । परणीजण आय-जियो, वीचै मत कीजी वेर ।
—बी मा.

४ देखो 'वेळा' (रु भे)

उ०—१ केइ वड पूरण काज कर, फूलै नह मन फेर । 'पातल' घोर गभीरपणा, भल रक्खण इण वेर ।
—जैतदान वारुहठ

उ०—२ वणि होळिका थंभजुघ वेरा, सिरपर वह केळू समसेरा । धार विहार अणी घट घोरग, चुल-चुल होय पडू रिण चौरग ।
—सू प्र.

उ०—३ 'वाघा' हर नाहर जेण वेर, घासाहर थाहर लीघ वेर । युव तोप सधण थवाळ ग्रीह, वहसिया चाळ वाधण अवीह ।
—वि. स.

उ०—४ इम परखै राजा आवेरी, आवै हित धर वेर अवेरी । 'अजमळ' तेड 'दुरग' 'आसाणी', कथ धारी मेटण तुरकाणी ।
—रा० रु.

५ देखो 'वीर' (रु भे)

६ देखो 'वैर' (रु. भे)

७ देखो 'वैर' (रु. भे)

उ०—तड ईह ना मौलि तणा पटउला, हेला वलउ काइ करउ अवेला । जाउ पराए सवि मू पसाइ, मारउ न वेरइ जप नइ उपाइ ।
—सालिसूरि

रु. भे.—वेर ।

वेरक—१ देखो 'वेरक' (रु. भे)

२ देखो 'वैरक' (रु. भे.)

३ देखो 'वैरक' (रु. भे)

वेरजा—वि०—विना इच्छा एव विना स्वीकृति, स्वीकृति रहित ।

उ०—सुख सुवायत करी, दुख दुवायत पासै टाळी । तेरी रजा करी सैतान की वेरजा करी. आई वलाय दफ करी ।
—नी. प्र.

वेरजौ—स. पु —चीड वृक्ष पर उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का गोंद विशेष, गधविरोजा ।
(अमरत)

वेरणी—सं. पु —वडई का लोहे, लकड़ी आदि में छेद करने का औजार विशेष ।

वि०—१ चीरने वाला, काटने वाला ।

२ देखो 'वारणी' (रु. भे)

वेरणी, वेरवी—देखो 'वैरणी, वैरवी' (रु. भे.)

उ०—वारा दरवार में ईं उणरै खोजा नीव अर वडला निजर सू ई पैला ऊचा वधग्या । राजाजी विना सोच्याई हथमारा नै हुकम दिपो कै उणरा दोनुं पग वाढ वेरा में धरकाय दी । दुस्ती करोतिया सू पग वेरण ठूका ।
—फुलघाडो

वेरणहार, हारी (हारी), वेरणिपो —वि० ।

वेरिओडो, वेरियोडो, वेरघोडो—भू० का० कृ० ।

वेरीजणी, वेरीजवी—कर्म वा० ।

वेरतन—स. पु [स. वेरीतनय] वैरी, दुश्मन, शत्रु । (व. भा)

वेरपरळय, वेरपरळ—देखो 'वेरप्रळ' (रु. भे)

वेरपरवाह—देखो 'वेरवाह' (रु. भे)

वेरपरवाही—देखो 'वेरवाही' (रु. भे)

वेरप्रळय, वेरप्रळ—सं. पु —प्रलयकाल, कल्पात ।

उ०—सारा 'चापा' 'जोध' सग, 'ऊदा' मिळिया आय । उल्लटिया अजमेर दिव, वेरप्रळ करवाय ।
—रा० रु.

वेरमण—स. पु —त्यागने की क्रिया, त्याग ।

वेरवदा—स. स्त्री.—राठीडो की प्रसिद्ध तेरह शाखाओ में से एक शाखा ।
(वा. दा स्यात)

वेरह—देखो 'विरह' (रु. भे)

उ०—तडा उपराति राजान सिलामति मरद रित रै समै री पूनिम री चद्रमा सोळै कळा लिया सपूरण निरमळी रैण री रजळी जादणी रै किरण करि नै हस नु हसणी देखै नहीं'ने हसणी हस देखै नहीं छै । मिळि सकता नहीं छै । तारा वार-वार माही माहै वोलि वोलि नै वेरह गमावता छै ।
—रा सा. स.

वेरहडी—स पु —घोडे का एक प्रकार का रोग विशेष जो घोडे के अग्रले पर की नली में होता है । (शा ही)

वेरहम—देखो 'वेरहम' (रु भे)

वेरहमी—देखो 'वेरहमी' (रु भे)

वेरहर, वेरहरि—देखो 'वेरहर' (रु भे)

उ०—आदरत मोट लल चाल अडिया अडर, दुमल खग चाल संलोट देता । वेरहर जठे पगवाळ खग वजावे, कठे खुसियाळ खुसियाळ कंता । —तिलोकदान वारहट

वेराण—१ देखो 'वीराण' (रु भे)

२ देखो 'वीरान' (रु भे)

वेराणयो—देखो 'वीरान' (मह., रु भे)

वेरान—१ देखो 'वीराण' (रु भे)

२ देखो 'वीरान' (रु भे.)

उ०—नरे राव सूजा नु लिख ने घणी विलासा दे वासियो । नरी आप वसियो तिए दिन ठोड वोहोत वेरान सु नरा री मन टिके नही । —नैणसी

वेरा—देखो 'वेळा' (रु भे)

वेराई—देखो 'वेराई' (रु भे.)

वेराग—देखो 'वेराग्य' (रु भे)

उ०—वघव ए मल अविद्या रे, सरिया वाछित काम । जाति समरण ग्यान थी रे, आयो वेराग वेळ ताम के । —जयवाणी

वेरागढ—देखो 'वेरागर' (रु भे.)

उ०—हीरा थं लाईजी वेरागढ देस रा म्हारा राज, मोती थं लाईजी बनडी रे हार जडायजी, रे तोरे आवजी । —लो गो.

वेरागर—स. पु.—१ देखो 'वेरागर' (रु भे.)

उ०—सदा हुवे मोती सागरा, हीरा वेरागर होय ।

—सरसती भडार

२ देखो 'वेरागी' (रु भे.)

वेरागी—देखो 'वेरागी' (रु भे)

उ०—सामल! हे राणी राजा नं करडा न वोलिये, निसक हुई जे नाय । इसी वेरागण अजे तू दीसे नही, तू वैठी छे राज के माय ।

—जयवाणी

(स्त्री वेरागण)

वेराग्य—देखो 'वेराग्य' (रु भे.)

उ०—वेराग्य रगिद चारित्र लीघउ, प्रतिमाइ रहिउ मुनि रे । नसरानाइ ते यती दीठु, ध्यानस्य सोभइ वनि रे । —नळदवर्दतीरास

वेराडणी, वेराडवी—देखो 'वेराणी, वेरावी' (रु भे.)

वेराडणहार, हारी (हारी), वेराडणियो—वि० ।

वेराडओडो, वेराडियोडो, वेराडचोडो—भू० का० कृ० ।

वेराडीजणी, वेराडीजवी—कर्म वा० ।

वेराडियोडो—देखो 'वेरायोडो' (रु भे)

(स्त्री वेराडियोडो)

वेराज—देखो 'वेराज' (रु भे)

वेराजी—देखो 'वेराजी' (रु भे)

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या—थं कही भीखणजी रा स्रावक दान नही देवं ती जे लेवाल ते सरव थारे इज आसी । अने थं कही ते धरम याने इज हुवे, थं वेराजी क्यू थया । थं निंदा क्यू करो ।

—भि. द्र

उ०—२ सेठ जोर री डकार लेवता बोल्या—गया महीना री वात है, बोई मामूली लंग-देण रा मामला में एक अफसर म्हारा सू वेराजी व्हेया । म्हने ई रीस आयगी के देवता-देवता ई अकड वतावं, सी आपसरी में भौड व्हेयो । —अमरचून्डी

उ०—३ नवीया नीर नही । सतीया सत नही । आहाणा वधारी नही असत्रियो रूप नही । इण तरं सराप दें, वेराजी हुय नं स्त्री सिवजी मा'राज नं चेला सकरजी कंळास पधारिया । —मारवाड री ख्यात वेराजीपण, वेराजीपणी, वेराजीपी—स. स्त्री.—वेराजी होने की अवस्था या भाव ।

उ०—जद स्वामीजी कहयो—किणहिरं गूबडो दुखतो घणो नं पछे फूट गयो तो ऊ राजी हुवे के वेराजी व्हे ? जद कहयो—राजी हुवे । ज्यू दुखदाइ छूटा वेराजीपी नही । —भि. द्र.

रु भे.—वेराजीपण, वेराजीपणी वेराजीपी

वेराट—१ देखो 'विराट' (रु भे)

२ देखो 'वेराट' (रु भे)

वेराणी, वेरावी—देखो 'वेराणी, वेरावी' (रु भे)

वेराणहार, हारी (हारी), वेराणियो—वि० ।

वेरायोडो—भू० का० कृ० ।

वेराईजणी, वेराईजवी—कर्म वा० ।

वेरायोडो—देखो 'वेरायोडो' (रु भे)

(स्त्री, वेरायोडो)

वेरावणी, वेराववी—देखो 'वेराणी, वेरावी' (रु भे.)

वेरावणहार, हारी (हारी), वेरावणियो—वि० ।

वेरावओडो, वेरावियोडो, वेरावचोडो—भू० का० कृ०

वेरावीजणी, वेरावीजवी—कर्म वा० ।

वेरावियोडो—देखो 'वेरायोडो' (रू भे)

(स्त्री. वेरावियोडी)

वेरासती—स स्त्री—वैमनस्य, मनीमालिन्य ।

उ०—तद हाजीखा कयो, जो हाथी तो म्हारें अक है और सोअन देण नू नही, नै पात्र छे सू हमारी वर है । तद ठाकुरा पाछा आय राणा नूं उतर दियो । तद इण वात ऊपर राणै रै नै हाजी रै वेरासती हुई । —द दा

वेराह—देखो 'वेराह' (रू भे.)

उ०—जग तूठी वदी जणा, लीदूलह 'अभसाह' । क्रिया सवाई माडहै, तळ दाई वेराह । —रा रू

वेरि—१ देखो 'वेरी' (रू भे)

२ देखो 'वेरी' (रू भे)

३ देखो 'वेळा' (रू भे)

उ०—अदग ढोल मगळी रवाव तार सार ली । वजति वेरि वेरिय, भाणें कि ककि भेरिय । —रा० रू०

वेरिया—देखो 'वेळा' (रू भे)

वेरियोडो—देखो 'वेरियोडो' (रू भे)

(स्त्री वेरियोडी)

वेरी—१ देखो 'वेळा' (रू भे)

२ देखो वेरी' (रू भे)

उ०—१ भेंस्या नें अणटाळ तिला री कच्चर, सोपरा रो गिर अर कुपासिया री वाटो । चरण सारू सूवा री पाख रें उनमान पराळू चीपटो पीवण मारु वेरी री साफ सुथरी ठाडो पाणी । सवार-सि-इया सातू भेंस्या नें सपाडो । —फुलवाडो

उ०—२ वसती घणी । घरती हळवा ४० छे । ऊनाळो नही । कालभर व्याव २ वीराडा री केर वाहळी गाव नजीक छे । तठे वेरिया छे । वावडी एक वाहाळं माहे छे । भाखर खुभराडियो कहीज । भाखर री खाभ वर्स । —नैणसी

३ देखो 'वेरी' (रू भे)

उ०—नीवडली वेरण ह्य रही, इण सगीवी ह्यो भूडी नही कोय के । मूल तो मिले नारकी, गति माठी में कोई फेर न जोय ।

—जयवाणी

(स्त्री. वेरण)

वेरुख—देखो 'वेरुख' (रू भे)

वेरुखी—देखो 'वेरुखी' (रू भे)

वेरुलिय—स. स्त्री.—वैदूर्यमणि, जिसका आधुनिक नाम नीलम है । (जैन)

वेरू—देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—वेगो आयो न करी वेरू, खाडं करि सू दक्खण खेर । रत्ता मुगळ नीली टोपी, ततकाळं नरवद्दा लोपी । —गु रू. व.

वेरोक—देखो 'वेरोक' (रू. भे.)

वेरोजगार—देखो 'वेरोजगार' (रू भे)

वेरोजगारी—देखो 'वेरोजगारी' (रू भे)

वेरी—स पु—१ कूभा, कूप ।

उ०—१ दुनिया में निवळा अर गरीव वणा है, इण कारण अ लोग टणकेल अर सुरवीर है । वेटी । म्हारी आ भुळावण थारे वास्ते अणूती मूधी पडैला, आ जाणता थका ई म्हें थने विखा रा ऊडा वेरा में थरकावुं. थू म्हारी इण लाचारी नै समकै है के नी । —फुलवाडो

उ०—२ मू अवं उण भोळा कमेडा नें काई जवाव देवती । उणरा विस्वास नें किया खडत करती । जिण उम्मेद री डोर माथे वी जीवं हो । उणने किया तोडती । जिण वरत रें सहारें वी वेरा में उतरियोडो ह्यो, उणने किया वाढती । —अमरचूनडो

उ०—३ उनाळा रा पाणी री तकलीफ रा दिना मे कोई आपरा सगा गिनायता रें घरें जाय जम्यो तो किराई वेरा-कोइटा करनं दिन तोड दिया पण आमाढ रा चादणा पख रा ऐ दिन जावता खारा जेर व्हे ज्यू लागता हा । —रात्वासी

२ देखो 'वेरी' (रू भे)

उ०—१ डामे आपरी वेटी वेई वर देखण नें काठी कमर बाध ली । आडसर, मूमासर, रिणी' र राजगड च्यारा कानी भंवाळी खावण नीसरथो । पर फूटरी-फररी भवरी रें वर री वेरी कठे ही नी पटथो । —दसदोख

उ०—२ जै फिरगी नें वेरी पड ज्या, पाछो वी फिर ज्याय, तोप मुंहाणी म्हाने चाई, रही कंद के माय । इतनी सुणके डंगजी, स, वील्यो कडवा वण, ई मूडे कौ घणी लोटिया । म्हाने आयो लेण ? —डूगजी, जवारजी री छावली

उ०—३ अंक वर, देवर, वागा में ले चाल, वेरी तो पाडा, श्री देवरिया, नारी-मरद कौ नारी होय तो पडचा-रिडचा फळ खाय । मरद हुवे तो तोडे फूल गुलाव री, राजा जेमल पडचा-रिडचा फळ खाय ।

लो- गी.

रू- भे.—वेरी

वेळ-वि०—१ समान, तुल्य ।

२ बहुत ज्यादा, अत्यधिक । (अ मा)

सं पु—१ समुद्र, सागर ।

उ०—गुण सागर दुस्तर अगाध, अति वाध अपारण । वेळ निजर विदुसा, असह कवि भ्रमण अकारण । —रा रू.

२ तरंग, लहर, हिलोङ । (ह ना मा)

उ०—१ उमर वरस एकादस आई, अठे सुणी नप चद्र अवाई ।
सुणता मात्र बूव अण सधियो, वेळ समुद्र जेम दळ वधियो ।

—सू प्र

उ०—२ वाणिजा वधू गो वाछ असइ घिट, चोर चक्रव विप्र
तीरथ वेळ । सूर प्रगटि एतला समपिया मिळिया विरह विरहियां
मेळ ।

—वेलि

उ०—३ जिम मधुकर नड कमलणी गगासागर वेळ लुवघा
ढोलउ मारुवी, कांम कतूहळ केळ ।

—ढी मा

उ०—४ सुत सन्नत छद खट पच नव सपूरण, भेदगर च्यार दस
बोध भाळी । अरथ जुत बोलवी हेळ वीजा 'अजा', वेळ अन्नततणा
उदध वाळी ।

—र. ज प्र

उ०—५ मिळ आवत लोढ कि वोढ मही, जमना दळ वेळ समुद्र
जही । उर माळ भणुभण ऊभरिय, पवगा तुरिय रव पाळरिय ।

—रा रू

उ०—६ जैता माम सग्राम की, जोर्व वाट कमघ । ज्या दधि दक्खे
वेळ वळ, हीण परक्खे वध ।

—रा रू

३ गले मे धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

४ अगुली में धारण करने का एक प्रकार का आभूषण विशेष ।

वि० वि०—यह सोने, चांदी या तांबे के तार से गुंथी हुई अगुली
होती है । कतिपय लोग तांबे के तार से गुंथी हुई देवजी या भैरवजी
आदि देवताओं की वेळ (अगुली) अगुलियो मे पहनते हैं ।

५ पागल ।

६ पागलपन ।

उ०—१ केई दिनां सू काली मासी घर घर बके ती ई म्हे उण री
गिनरत नी करो । जाण्यो वा कालायां करे ती छी करती । आप
उण ने इत्ती मार्य नी चाढता ती उण री काई मजाल के घर घर
यू वेळ वाता वकती फिर ।

—फुलवाडी

उ०—२ कदैई कदैई ती थू अडेी वेळ बाता करे के म्हेने ई जूळ
छूट जावे । पण भ्हरा सू ई कोगत करियां बिना थारो जीव धापे
कोनी ।

—फुलवाडी

उ०—३ वो चोर हमेसा कीं न की ऐडी वेळ वाता करती ई रंवती
उणने ढावण सारू ढूजोडी चोर अके समभदारी री वात करी—
सात पीढिया लग आ माया ती अपारं खाया नी खूटे । अवे चोरी
नी करने इज्जत सु ठायी अपडला ती सावळ । जीव अस्टपोर सुरक
सुरक करे ।

—फुलवाडी

उ०—४ ढाळू खाती वीदणी रे मूंडा माम्ही देख वीद कंवण लागी—
अडेी वेळ वात वळे कदै ई करज्यो मती । भायजी जाणे जित्ती

लोळ करेला । वं रूप त्रिचं जुगाई रे गुणा री घणी आबर करे ।
—फुलवाडी

७ आग, अग्नि ।

८ सहसा मन मे उठने वाली तरंग, उमग, भावना ।

उ०—१ ईडरिया आचार री, वीर चढे ती वेळ । हसत चढे चारण
हुवे, माया सरसत मेळ ।

—वा. दा.

उ०—२ वेळ री महण अणयाग वीर, हेतवा देण हेला हमीर ।
सेण री सैण अरु सत्रु साल, ढाविया विरुद जोघाण ढाल —पे. रू
६ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ रवि ऊर्गे साहावदी, खान इनायत वेळ । आसुर आयी
खेडिया, ज्यो सागर ऊभेळ ।

—रा ह.

उ०—२ सकं सूर असुराण दळ पूर आयी सिखर, किणी नह विर्ये
अव वेळ कीजे । वारता जिसे 'गग' कहै वीकमपुरी, 'जैतसी'
जोधपुर दुरग लीजे ।

—राव जैतसी री गीत

१० देखो 'वेळा' (रू. भे.)

उ०—विरध वधाई नांव, समूरथ साख सगाई । व्याह विनायक
वेळ महोछव मेळ विदाई । पूजा पाठ निराठ, वरं वनमाळा भोली ।
जागण रातीजगा, दसुटण दायजा चोली ।

—दसदेव

११ देखो 'वेल' (रू. भे.)

१२ देखो 'वहल' (रू. भे.)

रू भे —वेला

बेल—स पु.—१ खेत में कुए से नाली द्वारा जाने वाले पानी का बहाव ।

२ एक प्रकार का लघु काव्य ।

३ रेखा लाईन ।

उ०—मच फाग छटी रव खाग महा, कल सोर न प्राण कबाण
कहा । वधि बेल धमाधम सेल वहे, गुणि खीज कि वीज सिळाव
वहे ।

—रा. रू

४ होलिका-वहन के दस दिन बाद अर्थात् चंद्र कृष्ण दशमी को
सधवा स्त्रियो द्वारा किये जाने वाले "दसामाता" या "दसादहाडी"
के अंत के दिन सूत के दस धागो के डोरे पर दस गांठे लगाकर
गले मे धारण की जाने वाली तात ।

५ देखो 'वेल' (रू. भे.)

उ०—१ आयी फिर डेरा 'अजी' नरपत सहत निवाव । दक्खण
दूत चलाविया, तेडण बेल सिताव ।

—रा रू.

उ०—२ परत न लभं पार तिण पसरि बेल अपार । उत्तम
मध्यम अघम में, नर सुर नाग कुमार । — राठीडा री बसावळी

उ०—३ ना रे ना भोला, वीज वास्तं नी हे । थू ती लारं ईंज
पडग्यो, विना वताया पार तीं जावला । वो मतीरी इमरती बेल री

है, सी राजा न भेट देवण खातर रखाळियोडो है ।

—धमर चूनडी

उ०—४ पसरी मुकति बेल रूपहरी, गगा वहे इसी छवि गहरी ।

उठे बसाय दीजिये श्रमुर, पारकेस नामे पारकपुर । —सू. प्र.

उ०—५ भावजी रे हमने नीसर हार, बेल वधो मेरे वाप की रे । ज्यू वाली ज्यू इव, ज्यू वीडी ज्यू नाल । —लो गो

६ देखो 'बेला' (रु. भे.)

७ देखो 'बहल' (रु. भे.)

उ०—चौधरण तीई फिटक में नी आई । वा तो दूजे दिन बेल जुताय घणी सारु किणी फूठरा नाव रो सोय में पीहर रे मारग वधीर व्हेगी । —फुलवाडी

८ देखो 'बेला' (रु. भे.)

९ देखो 'बेळ' (रु. भे.)

उ०—१ चडे बेल वरियाम, सुजळ ते आगळ चचळ, गरजि नाद गभीर, रोडि रिणतूर व्रवागळ । असख फीण श्रोपत्ति, बहुन चौधा वरवका, मारवाड मरजाद, भडा अनडा मारवका । —गु. रु वं.

उ०—२ रचता इसी राजसर राणा, लेखी जगरी ववण लहे । अम सूरज वहतो आघनर, बेला पग माहतो वहे ।

—महाराणा राजासिंह रो गीत

बेलकि, बेलकी—स. स्त्री — एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन विशेष ।

बेलख, बेलखि—स पु [स बेलक] बाण का फर, पुख स्थान ।

उ०—बिलकुळियो वदन जेम वाकारयो, सग्रहि धनुख पुणच सर सधि । किसन रुकम आरध छेदण कजि. बेलखि अणी मूठि द्विठि वध । —बेलि

रु भे —बेलख, बेलखि

बेलड—१ देखो बेलड' (मह, रु. भे.)

बेलडली, बेलडि बेलडी—स स्त्री —१ एक प्रकार का मिट्टी का वर्तन विशेष ।

रु भे —बेलडली, बेलडि, बेलडी, बेलडली, बेलडि, बेलडी

२ देखो 'बेन' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—१ वरस सीम कावसग रह्यर, बेलडिए वीटाणर रे । पखी माला माडिया, सीत तावड सोखाणउ रे । —स कु

उ०—२ वाता करता पसवाडी वीत ग्यो । राजा वाळी मतीरो पाकने राणवाण व्हेग्यो । बेलडी कुम्हळीजगी अर कूपळ बळगी । चौथो दिन देखने चौधरी मतीरो लेयने राजारे दरवार कानी वहीर व्हियो । —अमरचूनडी

उ०—३ मनोहारा सार सगार रसमा, अनुभवी थया तरवरा । बेलडी वनिता ल्यइ आलिगन, भूमि भामिनी जलधरा । —वि. कु.

उ०—४ माया विसरी बेलडी, हरीया पसरी हूरि । केताई फळ कारण, रह्या विसूरि विसूरि । —अनुभववाणी

बेळच, बेलच—देखो 'बेळच' (रु. भे.)

बेळचो, बेलचो—देखो 'बेळचो' (रु. भे.)

बेलज, बेलज—देखो 'बेलज' (रु. भे.)

बेलडली, बेलडि, बेलडी—१ देखो 'बेलडली' (रु. भे.)

२ देखो 'बेल' (अल्पा, रु. भे.)

उ०—१ नै (तै) भय मिटयो जाण नै नदी उपरें वाग लगायो छै । माहीवला फूल हुवं छै । घणी बेला, घणी बेलडिया, गी (नी) लीतरी चीभडा, खरवूजा, नीला गोहु, साल, दाल घणी नीपजै छै । इसडी वाग छै । —रिसालू रो बात

उ०—२ विण तरुअर जिम बेलडि, कठ विना जिम माल । पुरुख विहूणी पदमनी, किणि परि ठेलिसि काल ? —मा. का. प्र.

उ० ३ गिरि गिरि वाघइ बेलडी, ऊपरि फूल विकास । मंडइ मोर कला घणी, विरहुणीया तन त्रास । —मा. का. प्र.

उ०—४ वेम्या विम नी बेलडी, कामी कूकम वस । वाली वाउ—लीउ करिय, लघु वयमाहि लक्ष । —मा. का. प्र.

बेलण—स. स्त्री —१ नीद में, स्वप्न में या अचेतनावस्था में बकने की क्रिया ।

२ देखो 'बेलण' (रु. भे.)

उ०—बेलण बेलीजी वाह, मिरगानेणी जी राज । मूगफळी सी घणरी आगळी, जी म्हा रा राज । —लो. गी

उ०—२ हलूइ हाथह चालइ, माहि थो धूलउ टालइ, एक लगे पाटउ, माहइ दीजइ माटउ, बेलण स्यु बेलीइ, हलूइस्यु मेल्लीइ, घत स्यु भिल्या, लोह कडाहै तल्या, सवद कल कलइ, निरधूम अगनि वलइ, .. । —व. स.

रु भे —बेलण

बेलणियो—वि०—नीद में, स्वप्न में या अचेतनावस्था में बकने वाला ।

स पु —१ रहट के घूमने वाले चक्र पर पडे लट्टे पर बेल हाकने वाले के स्थान के तीचे लगाया जाने वाला एक डडा विशेष जिसमें साकल या रसा डाल कर डैलो के जूए से जोडा जाता है ।

२ देखो 'बेलण' (अल्पा, रु. भे.)

बेलणी, बेलबो—क्रि० अ०—१ छट-पटाना, तड-फडाना ।

उ०—१ हमि जोगणि हडहड, गोळी रत गड गड, मडे खफर पत्र मिळ । तिल तिल हुइ हुकड, बेल तुरभड, मच्छक तडफड तुच्छ जळ । —गु. रु व

उ०—२ दाडी गाया निसह भरि, सुणियस सान्ह सुजाण । ओछइ । पाणी मच्छ ज्यर, बेलत थयउ विहाण । —डो मा.

२ देखो 'बेलणी, बेलवी, (रु भे)

उ०—१ बेलण बेली जी बांह, मिरगान्णी जी राज । मूगफळी सी घण री आगळी, जी म्हारा राज । —लो गी.

उ०—२माहिणी थूलउ टालइ, एक लगे पाटउ, माहइ दीजइ साटउ, बेलण स्यु बेलीइ, हल्लइस्यु मेलहीइ, प्रतस्यु मिल्या, लोह कडाहें तल्या, सवद कलकलइ निधूम अगनि बलइ, नीपना सतपुडा खाजा, तुरत कीषा ताजा, सदला नै साजा, भीटां जांणी प्रासाद ना छाजा, चिहु खुणें साखा एहवा खाजा प्रीस्या..... ।

—व. स

३ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रु. भे)

उ०—१ सेठा रें बेलणा रें सागें इणी भात सेठाणी री बेलणी चालू ही । अर बेटी दोनूं जणा री बेलणी चुपचाप सुणतो रह्यो । मा रें मूडा सू बाप रें चेतारी बात सुणने राजी व्हे जातो अर वारें सीत री बात सुणने अणूतो विलखो व्हे जातो । इण सूं आगें उणरी समझ नीही । —फुलवाडी

उ०—२ सेठाणी री काळजी अणूतो काची ही । हरख मनावण री बात सुणिया पछें तो वा वत्तो रोवण लागी । कदास सेठ सीत में बेलण तो नी लागया । अवं वा करे तो काई करे । सेवट काठी हारने वा कह्यो—थं भलाई नी मानो, म्हें तो पचा नं बुलावूं । —फुलवाडी

उ०—३ घरविद री वाता रें पछें मासी राजांजी रा समचार पृछया ती वा सुभट निसक भाव सू कह्यो कं राजाजी तो उण दिन पछें नंगी री तिथ ई नी ली । गूजरी अलोप व्हेगी तो ई हाल उणरी प्रीत वास्तें बेल । —फुलवाडी

बेलणहार, हारी (हारी), बेलणियो—वि० ।

बेलिभोडी, बेलियोडी, बेलियोडी—भू० का० कृ० ।

बेलीजणी, बेलीजवी—कर्म वा०, भाव वा० ।

बेळणी, बेलवी, बेलणी, बेलवी—रु भे

बेलदार—देखो 'बेलदार' (रु भे)

उ०—१ पंसठ हाथ रें पछें रेळी रें कारणे वेरी खुदणी दूबर व्हेगी ती म्हें अक वाजिदा सिरावा री सोय में निकळियो । वी सिरावो जात री बेलदार ही । —फुलवाडी

उ०—२ डारण तेड बेनदार भुरजालदे, रीठ घतोर्जे रीठ में चला चग अदे । रंत थली री रात दिन मन पें घडकदे, कोटडिया ध्रमका करे चौवीस भडदे । —पा प्र

बेलदारी—देखो 'बेलदारी' (रु भे)

बेलपतर, बेलपत्र, बेलपात—देखो 'बेलपत्र' (रु. भे)

, बेललाट—देखो 'बिलबिलाट' (रु. भे)

उ०—मन में घरता मरट घरट जिम-भूखें घूमै, भेलं घर गया मळ भटक मूआ पर भूमै । वेटा नै मा बाप वेचि छै जीमण वेह, रूलतां रिगता रांक करे बेललाटा केइ । —घ व. प्रं.

वेळा—स. स्त्री. [सं वेला] १' समुद्र का तट या किनारा ।

२ सीमा, हद ।

३ रात-दिन का चौबीसवा भाग, पल ।

४ काल, वक्त, समय ।

उ०—१ तथा उपरांति राजान सिलामति तोरण बाघोजे छे । घणा गज डबर पेसारा करि मडोवर महले पधगया छे । सुभ दिन सुभ घडी सुभ मुहरत सुभ धार सुभ लगन सुभ वेळा माहि आशि पाट सिंघासण विराजमान किआ छे । माथा ऊपर सेत छत्र विराजे छे । सेत चमर कुळ छे । —रा सा स

उ०—२ बेली तदि बळभद्र बापूकारे, सत्र सावती अजे लगि साथ । तूठे वाहविये आ बेला हव, जीपिस्ये जुवाहिस्यइ हाथ । —बेलि

उ०—३ लाठा लाठा भीतविर बेलाकुवेळा वही दूध री मिस लेय गूजरी रें घरें आवता सकता कोनी । काली मासी खुडकी व्हेता ईं जाग जाती । सगळा नै भीठी जवाब देती । किणी माथें छीटा नी देवती । —फुलवाडी

उ०—४ वूजी काई, वूजी रा वेटा नै ई गीगला री कितरी कोड हे । लारली वेळा छुट्टी सू रवाने व्हिया जदरी वात हे—पूणची काठी पकड लियो अर वट्ट करती कावळी वदार नाखी । —अमर चूनवी पद—वेळापूळ=समय ।

५ अवकाश, फुसंत ।

उ०—१ कवर नै खेत री रुखवाळण रा बोल याद आया । उण री देखा देख वी कट्टी—विरथा किकाळ करण री म्हने वेळा कोनी । थं सगळी वाता थारें काना सुणली हो, म्हें पाछी काई गिणावू । —फुलवाडी

उ०—२ आ री घाल्या तीन दिन व्हिया आपरें पाखती ई नी आय सकी । दिन में चार-पाच वेळा चूघाणा पडे । थोडे दिना पछे ती घाट दळियो खावणी सीख जावेला । पछे वेळा ई वेळा हे । आपने अठा ताई आवण सार अकर ई फोडा नी खावणा पडेजा । महाराणी अपूठी विरने बोली—म्हें जावूं । फेर वेळा मिळी ती आय नै मिळ लेवूला । अवारू थू आरी साळ-सभाळ कर । —फुलवाडी

६ मौका, अवसर ।

उ०—१ तव रुखमणीजी हावे पासं वंसाण्या । ज्यो विधि छे त्यो बोल वाचा ले । ज्यो कही छे त्यो करि नै विवाह पूरण कीयो ।

तिहि वेळा वेद का पठणहारा । मुंहमांगी सु नव ही निधि पाई ।
—वेलि टी.

उ०—२ जगत री रीत है आप री रची नै प्रथम मिळाय री वेळा देखलं है अने इण सूरवीर रें पाछी हटण रो पूठ लारं देखण रो प्रण है कै पाछी हटू नही पूठ लारं देखू नही । —वी. स. टी मुहा०—१ वेळा रा वाया मीती नीपजं=उचित अवसर पर काम करने से लाभ होता है ।

२ वेळा देख वरतणी=अवसरवादी होना ।

७ वार, दफा, मतवा ।

उ०—१ ताहरा कोई परभेस्वर री त्याल हुवी, जु कवाण काठ नै रावजी रें गळं माहे घालण करै । ताहरा एक वेळा तो कवाण ऊपर सँ रही गळा रें । —नैणसी

उ०—२ जुटिया 'वीर' तणी जुग जाणं, दाखव पथी देख दुयै । काळा सँ विठना कै वेळा, हारं कै हयवाह हुयै । —दूदी वारहठ

उ०—३ चौधरी तीन वेळा जभी ताई लुळ लुळ नै खम्माधणी अरज कर नै ऊनी राजा रें मूडा कानी देख्यो तो पगा नीचँ सू धरती सिरकती लागी । ओ तो सागण उण दिन खेत मे आयी जिंकोज धादमी । —अमरचूँनडी

उ०—४ दो तीन वेळा जीभ फेरनें डोकुरियो आपरो दात सभाळियो । पछें थूक गिटती कंबण लागी—तो रामजी भला दिन देवै—तीनूँ जणा हाकरता जमराज रें पाखती पूगा । —फुलवाढी

उ०—५ वेटा रें मरिया पछें नित अके वेला तो म्हनें आ चात सुणाणी ई पडै । जाणता थका ई दूजी बात सुणावण रो मन ई नी करै । —फुलवाढी

८ देर, विलम्ब ।

उ०—विठता घणी लगाई वेळां, समहर सूर सव दा । मुर प्रीया साद करै सागावत, रथी आवी रायजादा ।

—जैसिंह नरुका कछवाहा रो गीत

९ देखो 'वेळ' (रू. भे)

रू भे —बरिया, वरिया, विर, विरया, विरिया, विरिया, विलिया, विलिया, विलीया बीरिया, बीरिया, बीरीया, बीरीया, वेर, वेर', वेरिया, वेळ, वेल, वेल, वेळा, वेला, वरिया, वरीयां विरया, विरिया, वीरिया, वीरीया, विलिया, विल्या, वेर, वेरा, वेरिया, वेरी, वेरू वेला, वेलि, वेली, वेळू, वेलु वेळू, वेळू वेल्या, वेल्हा, वंळा, वंला मह, वेळी, वेली

वेला-स. पु —१ जन्म, जीवन ।

उ०—ढोर माहि जीव घणउ दुख सहइ, चारि पांणी नवि वेला सहइ । परवसि थ्या करमि घालइ घाटि, वहइ भार तै मारइ साटि । —वस्तिग

२ कपट, सकट ।

उ०—आगइ नारी तरणइ विभोग, कूबड देहि हूजड कुयोग । वेला पाढी मझ समकाल, उपगार नूँ फल हवूँ ततकाल ।

—नळदवदती रास

रू. भे—वेल्हा, वंळा, वंला

३ देखो 'वेळ' (रू. भे)

४ देखो 'वेळा' (रू. भे)

उ०—१ वाल्हा किम आवु तिहा रेली वेला विलमी जायरे सनेही । सुख चाहना जीव नइ रे ली, मत को ई लागू थाय रे सनेही ।

—वि कु.

उ०—जिके पारस्व केरी करिस्यति भक्ति, तिके धन्य वारू मनुस्या प्रसक्तिम । भली आज वेला मया वीतरागा, खुसी माहि भेळ्या नमदेव नागा । —स कु

उ०—३ सवरी स्रावक करइ पोसउ, आठ पुरहि गुरु मुखइ । उचरइ दडक त्रिण्ड वेला, सामाइक पणि तिणि रुपइ । —स कु.

उ०—४ वूडे मन आदर करे तेह सजाई लीध, दासी नै सनकारि सिपानी सगली सिधो दीध । भोजन पान सजाई करता वेला कीध, वाधी रात पढी छेँ आकुल थायो म सीध । —ध व अ.

उ०—५ इण व.ते भोनें लाज कहावे, पुत्र थकां मा दुखणी थावे । हू समभू थारं समभावे, वात कही वेला घनी थावे । —जयवाणी

वेळाइत, वेलाइत-स पु —समुद्र, सागर ।

क्रि वि —उचित समय पर ।

उ०—उठियो जगड लाग असमाणं, उर 'अजमाल' तणी व्रत आणं । उण वेळा 'लाली' मिळ आगा, वेळाइत खचाणी वागा ।

—रा० रू०

वेळाउळ, वेलाउळ—१ देखो 'विलावळ' (रू. भे) (घ. व अ)

२ देखो 'वेळागळ' (रू. भे)

उ०—१ ३० सहस्र आगर, २४ सहस्र नगर, २४ सहस्र करवड, १६ सहस्र खेड, १४ सहस्र वेलाउळ, ३६ कोडि कुल, ४८ सहस्र पत्तन, ४९ सहस्र उद्यानवन, । —व स

वेळाठळधी, वेलाउळधी—देखो 'वेळावळधी' (रू. भे.)

वेळाकूल, वेलाकूल-स पु —वन्दर, वानर ।

उ०—किसलय नीकलता गहगहइ, वेलाकूनें रा गहगहइ । मूड लक्ष धान्य नीपजइ, सकल वाछित सुख सपजइ । —नळ दवदती रास

वेलाउवर, वेलाउवर-सं पु [स वेलाउवर] वह उवर जो मृत्यु के समय होता है ।

वेलातर वेलातर-सं पु.—एक प्रकार का शाक (सब्जी) व व्यजन विशेष ।

उ०—वालु नइ बेलातर, वेळ वेतस वाणि। वधारा गहलु लीउ, वाउलीउ वखाणि। —मा का प्र

वेलाधिप, वेलाधिपत वेलाधिपति, वेलाधिपती—स पु. [स वेलाधिपति] दिनमान के आठवे भाग या वेला के अधिपति देवता।

(फलित-ज्योतिष)

वि० वि०—जिस दिन जो वार होता है उसी दिन की पहली वेला का वेलाधिपति उसी वार का ग्रह होता है।

वेलापात—देखो दिलापात' (रु. भे.)

उ०—मारवणी रो सरीर सोरभ किस्तुरी जिसी छे। उठे पीवण साप हुता जिऊं सास पी गया। तिण सु मारवणी निरजीव हुय गई। परभातं जगाई जागी नहीं। ताहरा डोलोजी दीवाधरी सखी बोलाउ। सगळाई भाणि भेळा हुवा। डोलोजी प्रति वेलापात करण ल गा। —ढो मा.

वेलापुळ वेलापूळ—स पु —अच्छा मुहुतं, शुभ समय।

उ०—नित रा धोळवा सू आती आय वा खुद केई दिना सू वादळ न मन री वात बतावणी चावती ही। आज काले करतां दिन टळता गिया। श्री अणचीत्यो जोग सजग्यो तो इण नै वयू टाळ। वेलापुळ वायोडा ईं मोती निपजं। —फुलवाडी

वेलायो—देखो वेलायो' (रु. भे.)

वेलाळ वेलाळ—स पु —१ पवन, हवा। (ना डि को)

२ समुद्र, सागर।

वेलावळ, वेलावळ—स. पु —१ समुद्र, सागर। (ना, डि. को, ह ना मा)

२ देखो 'वेलावळ' (रु. भे.)

रु. भे.—वेलाउळ वेलाउळ, वेलाकूल, वेलाकूल।

वेलावळधी, वेलावळधी—स स्त्री.—विष्णु-पत्नी लक्ष्मी। (ह ना, मा)

रु. भे.—वेलाउळधी, वेलाउळधी

वेलावसेक, वेलावसेक—स स्त्री.—बालो मे होने वाला बालग्रह नामक रोग समूह मे से कोई एक रोग विशेष।

उ०—वाळ-कन्ह्यो थोडी घणो ईं ओपरौ लखावती के मासो नै वेळा-विसेक' री वैम व्हेती तो सान वेळा अवारन लूण-मिरच करती। खुदीखुद ईं मन करै जणा भाडी वेती, हळकी हाय करती। —फुलवाडी

वेलास—१ देखो 'वेलास' (रु. भे.)

२ देखो 'विलास' (रु. भे.)

वेलाहरण, वेलाहरण—स. पु [स वेला-धाराणम्] समुद्र, सागर।

उ०—रामा अवतारि वहे रणि रावण, किसी सीख करणाकरण। ह ऊधरी त्रिकुटगढ हूती, हरि वर्ध वेलाहरण। —वेलि

वेलि—१ देखो 'वेल' (रु. भे.)

उ०—१ तेरें पासा खासा दासा, पासा वासाहि का प्यासा, मेरी आसा बेली फॅलि तुं ही इछया अभा है। —घ व प्र.

उ०—२ मुऊ आंगणि सुरतर बेलि फॅली, चिंतामणि करियल आवि मिली जमु समरणि सुर घेनु मिली, सो सेवठ जिनवर रग रली। —स कु.

उ०—३ तेल विहूण ठ दीवडु, मूल विहूणी बेलि। पाणी विहूणी दहूरी, तिम होई ति महेलि। —मा का प्र

उ०—४ रामा अवतार नाम ताइ रुडमणि, मान सरोवरि मेरुगिरि। वाळकति करि हस चौ वाळक, कनक बेलि विहु पान किरि। —वेलि

उ०—५ मूरखु कोइ छद खरउ गमार, सूकडि वाली करइ छार। जिन घरम लाघठ पाय म पेलि, सुख तरणी ऊपाडी म बेलि।

—वस्तिग

२ देखो 'वेली' (रु. भे.)

३ देखो 'वेळा' (रु. भे.)

वेलियोडी—भू. का कृ —१ तड-फढाया हुआ, छट पटायया हुआ।

२ देखो 'वेलियोडी' (रु. भे.)

३ देखो 'वेलियोडी' (रु. रु.)

(स्त्री वेलियोडी)

वेलियो—१ देखो 'वेलियो' (रु. भे.)

२ देखो 'वेल' (अल्पा, रु. भे.)

३ देखो 'वळद' (अल्पा, रु. भे.)

४ देखो 'वहलियो, (रु. भे.)

उ०—गाम रा मौजीज आदमिया आयने रावळं मुजरी अरज कियो अर जाजम ढाळ नै गाम मे अमल री हाकी करायो। घोडा नै दाणो अर बेलिया नै गुळ फटकडी दिरीजी। रोटा वास्तं आटी गूदीजियो, साग-आजी री तयारी होवण लागी अर मसाली पीसता सिला लोडी बाजण लागी। —अमरचूनडी

वेली—१ देखो 'वेली' (रु. भे.)

उ०—१ वेली तदि वळभद्र वापूकारें, सन साबती अजें लगि साथ। वूठें वाहविये आ वेळा, हल जीपिस्वें जु वाहिस्वइ हाथ। —वेलि

उ०—२ "बालो" भाली भल्लिया, रिण कालो रावत। जुध वाली वेली जिहा, 'तेजो' 'सुजावत्त'। —रा रु.

२ देखो 'वेल' (रु. भे.)

उ०—१ पीडति हेमत सिसिर रिनु पहिली, दुख दाळधी वसत हित दाखि। व्याण वेली तरणी तरुवर, साया विसतरिया वैसाखि।

—वेलि

उ०—२ मळपानिळ वाजि सुराज थिया महि, भई निसकित अरु भरि । बेली गळि तरवरा विलागी, पुहुप भार ग्रहणा पहरि ।

—वेलि

उ०—३ हरीया कडवी बेलका, कडवाई फळ किध । जब बेली तें वीछडें, होय नाव की सिध ।

—अनुभववाणी

उ०—४ त्रिगुन तें गुन ऊपजें, गुन कें त्रिगुन माहि । जनहरिया फल बेल तें, फल विन बेली नाहि ।

—अनुभववाणी

३ देखो 'बेळा' (रू भे.)

बेलीडी—देखो 'बेली' (अल्पा, रू भे)

बेळू, बेलु—१ देखो 'वाळू' (रू भे)

उ०—ठाढी बेळू की रेत, भवुकला पुंवण धणा । वरसो आजी की राति, वाल्हो का घोंस घणा ।

—समसदीन

२ देखो 'बेळू' (रू भे)

३ देखो 'व्याळू' (रू भे)

४ देखो 'बेळा' (रू भे)

बेळुका, बेलुका—देखो 'वाळू' (रू भे)

उ०—उपवन करि अति ग्रेह उसीरा, नोख गुलाव छडक घण नीरा । जळ गुलाव बेळुका जमावें, विमळ पटो सीनळ विछवावें ।

—सू. प्र.

बेळू, बेलू—वि०—१ व्याकुल, वेचैन, विह्वल ।

उ०—द्विज भयी बेळू अजामेळू, कामबेळू वाम ये । जमदूत खेळू काळ बेळू, कठ मेळू ग्राम ये । सुत हेत हेळू नाम लेळू, कर उबेळू साम ये, ऐसा गोविंदू रूपसीधू, दीन बधू राम ये । —करुणासागर

२ सहायक, मददगार ।

३ देखो 'वाळू' (रू भे)

उ०—१ बेळू घाणी पील कर, कोई तेल कढावें ।

—केशोदास गाडण

उ०—२ वली वचन कहै सूवटी, जो तिल मा तेल न होय । तो बेलू में किहा थकी, राय विचारी जोय ।

—वि कु

४ देखो 'व्याळू' (रू भे)

५ देखो 'बेळा' (रू भे)

उ०—द्विज भयी बेळू अजामेळू, कामकेळू वाम ये । जमदूत खेळू काळ बेळू कठ मेळू ग्राम ये । सुत हेत हेळू नाम लेळू कर उबेळू साम ये, ऐसा गोविंदू रूपसिधू दीनबधू राम ये । —करुणासागर

रू. भे—बेळू, बेलू, वेळू, वेळु

बेलें—स पु—आकार, आकृति ।

उ०—गुंणी री धणी ठेट काठियावांढ जायनं घोडी लायो । लाखा में टाळकी । उपरंटा री ओद री । पळकती कमेन रग । कांना तीखी । धणक ज्यू तणियोडी लावी गावड । गाळिया छोटा । अग्रगर चौडी । ठाला जैडा पृठा । लावी वाळची । केसावळी लावी । चौडा सूम । लावं बेलें । चौडी लिलाड । गळा रें सुद देवमिण ।

—फुलवाडी

बेळो, बेली—स पु—१ एक प्रकार का पक्षी विशेष ।

२ कौंच पक्षी ।

३ कण्ट, सक्कट, आपत्ति ।

४ वश ।

५ पूजा आदि का सामान रखने का साधन या उपकरण ।

उ०—यू कहनं रातरा मडोवर रया नै प्रभात रा उठ देखे तो भंरुजी री मूरत बेलें में लाधी तद साखलें नापे कवरजी लीवीकंजी नु कयो—गोरीनी आप रें सागं हालसी अरु थारी राज जाडी वधसी ।

—द दा.

६ देखो 'बेळा' (महू., रू भे)

उ०—वरुथाभरण जिणै हरया तें छूटइ इण मेली जी । आदिनाथ नी पूजा करइ ' प्रहउठी बिहु बेली जी ।

—स कु.

७ देखो 'बेळो' (रू. भे)

उ०—सामजी रामजी बूदी रा वासी । लावगी जाति रा वेद । दोनू भाई बेली रा (जोडें जनम्या) । उणीयारी सूरत एक सरीखी दीस । केलवं दीक्षा लेवा आया ।

—भि द्र.

बेल्या—१ देखो 'बेल' (अल्पा., रू भे)

२ देखो 'बेळा' (रू. भे.)

उ०—हरसा मेरा वेटा रें, होबेली साक सवेरी रें रोज । मेरा समरथ मोनी । भोजन री बेल्या रें ऊमी रोयसी । हरसा । मेरा लाल रे आबेली पर घर कंगे धीय । मेरा मोनी रे वेटा, भोली किन्या नै रें फोडा घालसी ।

—लो. गी

बल्यी—देखो 'बल' (अल्पा, रू भे)

बेल्हणी, बेल्हनी—क्रि. स—१ चीरना, फाडना । किसी दल या समूह को बीच में से दो भागों में पृथक करना, दूर करना, हटाना ।

उ०—बेल्हती गजा है थाट लाग अटळ, रीठ वागा खगा बुवै राहा । जोध जसराज पूगी भली जूजवी, सेल रोळें दुह पातिसाहा ।

—महाराज जसवतसिध री गीत

२ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रू भे)

३ देखो 'बैलणी, बैलवी' (रू. भे)

बेल्हणहार, हारो, (हारी), बेल्हणियो—वि० ।
बेल्हणोडो, बेल्हयोडो, बेल्हयोडो—भू का. कृ. ।
बेल्होजणो, बेल्होजवो—कर्म वा० ।

बेल्हा - १ देखो 'बेळा' (रू. भे.)

उ०—प्रहरं प्रहर ज ऊनरयु, दिवला साख भरेह । धण जीतो, प्रिव
हारियउ, बेल्हा मिळण करेह । हो. मा

२ देखो 'बेला' (रू. भे.)

बेल्हयोडो—भू का कृ — १ चीरा हुग्रा, फाडा हुग्रा, सहार किया हुग्रा

२ देखो 'बेलियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बेल्हयोडो)

बेध—देखो 'बेग' (रू. भे.)

उ०—१ एक अचभ्रम परखणुं, अति छति सकति अजेव । ज्यो
मनि आवं सामि कै, पाय दिखावं बेध । —रा. रू.

उ०—२ महातेज मे राजि चाजी समरथ, रहे बेध पेले खडा देव
रथ । दुनी मग राजान री सोम देखं, लखं काम री नास सी
वाधि लेखं । —रा० रू०

उ०—३ तेजी वित्तड ऊडड तेव, विख्यात राग अख्यात बेध ।
परवत पख पकखर प्रचड, एराकी पिठ खुरसाण खड ।

—गु. रू. व.

उ०—४ गुरड बेध साहस घटे, मरण सक हणवत मुडं । जग यता
थोक थावं जदं, पाल' वचन भूठा पडं । —पा प्र

बेधकूफ—देखो 'बेवकूफ' (रू. भे.)

बेधकूफी—देखो 'बेवकूफी' (रू. भे.)

बेधक्त, बेधगत—देखो 'बेवक्त' (रू. भे.)

बेधड—देखो 'बेवड' (रू. भे.)

बेधडियो—देखो 'बेवडो' (अल्पा, रू. भे.)

बेधडोचूड—'बेवडोचूड' (रू. भे.)

बेधडो—एक प्रकार का वर्तन विशेष ।

२ देखो 'बेवडो' (रू. भे.)

उ०—मसाला वेसवार लूण चरायजं छे । दही री रजवो दीजं छे ।
तरगसा माहा सीका फाडजं छे । बेधडा डीहां चाडजं छे । वीज
खीसरो भरतो दीजे छे । सू तसु बीड सीका ऊपर चाडजं छे । घाडे
हाथ डोरा घी रा दीजे छे । इण भात सूळा वणुं छे

—रा. सा स

३ देखो 'बेडो' (रू. भे.)

बेधटो—देखो 'बपटो' (रू. भे.)

बेधणी—देखो 'बेवणी' (रू. भे.)

उ०—हळदी अक खारो लेयनं सरड सरड सगळी फूस बुवार,
दियो । उखरडी सू सिलांम करनं वा आगं घहीर व्ही । आगं
जावता उखरं अक चूली सांभी धकियो । चूली कहुधी—हळदी वाई
पोडो म्हारी बेधणी साफ करदं । —फुलवाडो

बेधणो, बेधवो—देखो 'बहुणो, बहुवो' (रू. भे.)

उ०—१ रीस मे दांत पीसती बोली—खळनी लायोडी रा डीकरा
अंडा नाजोगा नी व्हेला तो किण रा व्हेला । बाप री ती नन्नी
पत्ती ई कोनी, पछे इत्ती करडावण किण वात री । पैला मा न
जाय बाप री नांव ती वूरु, पछे मारग बेवती पिणियारया सूं
रोड्या करजे । —फुलवाटी

उ०—२ पाचा री ई तेवडं ती कूटळी कर न्हाकं । पण कोई जोधा
कं सूरवीर व्हे ती लडती ई शोवं । ठगा नं तो ठगाई करनं हाय
वतावं ती साचंली जीत । मारग बेवतां परख ई व्ही । यो ती
पछे की सोच नी करघी । —फुलवाडी

२ देखो 'बेवणो, बेववो' (रू. भे.)

उ०—१ अरधीया यम बेधोखीया वजायर, वरद प्रप धारीया वात
वेंवं । दली नं मंडोवर पगा रा पखं अडग, दली नं मटोवर धका
देवं । —तेजसी विडियो

उ०—२ ऊपरलं देवलोक सरवारथ सिद्ध सीम, चिहू विसि सरखा
देवता ए । उपजद एथ मनुस्य तप समय करी, सुख भोगवं प्रम
बेवता ए । —स. कु.

बेवणहार, हारो (हारी), बेवणियो—वि० ।

बेवणोडो, बेवियोडो, बेवयोडो—भू० का० कृ० ।

बेवोजणो, बेवोजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

बेवतन—देखो 'बेवतन' (रू. भे.)

बेवना—देखो 'बेदना' (रू. भे.)

उ०—कमळा सोचती—इसी जीवणं ना तो मर जावणो ई भलो ।
वा कदं-कदं मा बाप रं दुख नं देख'र अपघात करण री सोचती । जद
धरम आडो ऊम'र आगळी हिलाय'र कंती 'अपघात घोर पाप' ।
घरवाळा वं-नं अकली की छोडता ह्या नी । पण तोई वा ती मायली
बेवना सू घुळती जावती ही । —वरसगाठ

बेवफा—देखो 'बेवफा' (रू. भे.)

बेवळ—देखो 'बेवळ' (रू. भे.)

बेवलियो, बेवलो बेवलो—देखो 'बेवलो' (रू. भे.)

बेवाण—देखो 'बिमान' (रू. भे.)

उ०—१ लपफं गं जूह लोहा कं धरा तडफफं सूर, वडककं खेचरा रभा ऋडफफं वेवाण । महा वेग वहिया गनीम अद्र तरुं म.र्यं, क्रोवगी हमीर' वाळी दांमणी वेवाण । —तेजराम आसियो

उ०—२ साट सीरभम उरम्म हुइ साहणा, घाघरट थाट घासार हाल घणा । तापडं ऊपडं तेज माही तुरा, उड्डिया जाण वेवाण आकास रा । —गु रू व

वेवा—देखो 'वेवा' (रू. भे.)

वेवाई—१ देखो 'वेवाई' (रू. भे.)

२ देखो 'विवाई' (रू. भे.)

३ देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—अहडो वचार माडा ही मलिआ । अर आय, देवी रं वर थकी अदीठ समचार वृभिआ । कोई वेवाई, कोई जमाइ, कोई वदेई सगा कह मलिआ । भाया रा नाम लं कुसल पूछिआ ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाढेल री वात

वेवाणी, वेवाबी—देखो 'वहाणी, वहावी' (रू. भे.)

वेवाणहार, हारी (हारी), वेवाणियो—वि० ।

वेवायोडी—भू० का० कु० ।

वेवाईजणी, वेवाईजवी—कर्म वा० ।

वेवायोडी—देखो 'वहायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वेवायोडी)

वेवार—देखो 'वेसवार' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

वेवाई—देखो 'विवाई' (रू. भे.)

वेवाह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

वेवाहणी, वेवाहवी—देखो 'विवाहणी, विवाहवी' (रू. भे.)

वेवाहणहार, हारी (हारी), वेवाहणियो—वि० ।

वेवाहोडी, वेवाहियोडी, वेवाहोडी—भू० का० कु० ।

वेवाहीजणी, वेवाहीजवी—कर्म वा० ।

वेवाहियोडी—देखो 'विवाहियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वेवाहियोडी)

वेवाही—देखो 'व्याई' (रू. भे.)

उ०—१ थयो सूरग बीवाह, रग सूरग रह्यो वेवाहियां ।

—जीपालरास

उ०—२ स्वजन वेवाहिय घूरइ, भूरइ निगहिय नेह । लेई अचेत ऊपाडिय, माडिय आणीय नेहि ।

—जयसेखर सूरि

वेवियोडी—१ देखो 'वहियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'वेवियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वेवियोडी)

वेसभाळ—वि० [अ वे+राज सभाळ] विना चेतना का, वेसुघ, चेतना-रहित ।

वेस—स पु. [स वेश] १ पहनने के वस्त्र, पोशाक, वेश ।

उ०—१ कोई वीर स्त्री भागल पती नं कहै छं—हे कथ । आप भली भाग नं जीवता घरं आया । अबे म्हारी वेस धारण करावी । अबे म्हनें आ चूडिया सुं लाज आवे छं सो हू तो हमें चूडिया पैलं जनम भेटसू । —वी स टी.

उ०—२ अक दिन सिद्ध्या रा घोडा मार्ये बैठी वी यू ईं, बिरया तव-डका मारतो ही कं उरणं मरवर री पाळ सू उत्तरती पिणियारघा री भूलरी साम्ही धकियो भात-भात रा सुरगा भात-भात रा रूपाळा उणियारा । रू रू भे जीवन छळकं । —फुलवाडी

उ०—३ पछे समेट खाम कर थेली भे घात कागळ प्रोहित नु पहुंचायो । थिरमो एक वेस एक जनानी अवल, रूपीया सब इतरा प्रोहित नु विदा रा मेलिया । मण एक सीरावणी मारग री मेली । —कुवरसी साखला री धारता

२ कपडे आदि पहनने या पहन कर सजने या किसी अन्य को पहना कर सजाने का ढग, तरीका ।

उ०—१ अर आप न हाली ती कन्या नू तरणी हुई जाणि चद्राउता पुरोहित री धरणी दिवाई मोनू वीद री वेस कराइ साहस थो आणियो ती भी दिल्ली रा दूत दसोर पूगा जाणि पाछी ही पलाईजे । —व भा.

उ०—२ पछे नरवद छानो घोडे-वहल वेस ने जंनारण था कोस १ अरट छं तठे रह्यो । सु सुपयिारी आथण री मजूरणी री वेस करने मार्ये घडी लं नीसरी । —नंणसी

उ०—३ आज निसह म्हे चालिस्या, वहिस्या, पथी वेस । जउ जीव्या तउ आविस्या, मुया त उणि हिज वेस । —ढो. मा.

क्रि प्र. - करणी, करणी, देणी, धारणी, पहरणी, पहरणी, वदळणी, बदळणी, लेणी ।

३ रगमच के पीछे का स्थान ।

४ भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश द्वार ।

५ वेश्याओं का मोहल्ला ।

६ वेश्या का घर ।

७ शरीर, दहन ।

उ०—१ आवइ आवासि आपणइ पणि सूहता केस । पुण्य हुई तु पामीई, वेस्या केरु बेस । —मा. कां. प्र.

उ०—२ सुदरभाल विसाल, अलक सम माळ अनोपम । हित प्रकास
अद्रु हास, अरुण वारिज मुख ओपम । क्रपा घाम नव कज, नयण
अभिराम सनेही । रुचि कपोल श्रीवा त्रिरेख, छवि वेस अछेही ।
निरखत सत सनमुखा निजर, करण पुनीत सु प्रीत कर । गुण मान
दान चाहै सु ग्रहि, कवि सुग्यान ओ ध्यान कर । —रा रु
न स्थिति, हालत, अवस्था ।

६ रूप, सौन्दर्य ।

१० रूप, स्वप्न ।

[स. वेश] ११ एक दानव जो आयु राजा की रक्षार्थ देवराज इन्द्र
के द्वारा सारा गया था ।

वि —१ विशेष, श्रेष्ठ बढिया ।

उ०—१ अँ वस्तुआ आपरं हीज लायक छँ, म्हारं लायक नही तद
रावजी राखी । घोडो एक निपट वेस थो सौ रावजी राखियो ।

—ठाकुर जंतसी री वात

उ०—२ कुतक खिदर घव काठ रा, विदर पजावण वेस । ती पिए
हाजर राखणा, घण भेसचा हमेस । —बा दा

उ०—३ दिस बनावी बहन कू. ती मुख पाऊ वेस । भिळिया
आनी भागसी; जासी सर्व अन देस । —श्रीहरिरामजी महाराज

उ०—४ सदा मनोरथ सुभ करण, वाणी अख्यर वेस । सारा
पहली समरिये, गवरी पुत्र गणेश । —पना

२ देखो 'वेसर' (रु. भे.)

उ०—मुनीर नासिका सरूप, वेस रीत राजिये । सुर गुरु र भोम
सुक, राजद्वार राजिये । मुख प्रकास हास मद, आपमा उजासय ।
उदे अरुद भाणए, मयकज प्रवासय । —सू प्र

३ देखो 'वेस्या' (रु. भे.)

उ०—मुहनठ लेई सवि समुदाय आव्यु जिहा वडठठ छइ राय । अप
आयस लही वर वेस रगगणि कीघउ प्रवेस । —हीराणद सूरि
४ देखो वेस्य' (रु. भे.)

उ०—कुण खत्री कुण ब्राह्मण, चत्र वेद चवदा । विराज विसाऊ
कुण वेस, कुण सुद्र कहदा । —केसोदास गाडण

५ देखो 'वयस' (रु. भे.)

उ०—१ आळम वाळा राजवी घर रा घर में दाह पी रोटी खाय
सूय रंगी, घर री काम परोपकार, वीरता, देस सेवा, आदि आछा
काम न करणा में ब्रथा यू ही वेस ऊमर गमावै है । —वी स टी

उ०—२ हैम वरनी हेम गिर, वाली लहुवै वेस । कथ विहुणी
कामणी साची कहि सदेस । साची कहै सदेस वेण मीठा करू, राज
मुवै पर हथ्य रग महिला धरू । —मा वचनिका

उ०—३ हमें सारी नाग नारी उचारी विहारी हुत, सवारी पधारी
बळ लेती आजें सूक । कठे था री वेस प्रमी जुद्धकारी वाता करे,
फूणाधारी दीठी न छँ भागकारी फक । —मुरारीदास बारहठ

उ०—४ संसव तनि सुखपति जीवण न जाप्रति, वेस सधि मुहिणा
सु. करि । हिव पळ पळ चढती जि हीइ सँ, प्रथम ग्यान एहवो
परि । —वेलि.

उ०—५ देवी रग नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरूप
अग । देवी बाल जूया द्रघ वेस वाळी, देवी विसर रजवाळ चीसां
भुजाळी । —देवि.

रु. भे —वेस, वंस, वेत्, वेसि, वंस ।

वेसकर—देखो 'वेसकर' (रु. भे.)

वेसकरी—देखो 'वेसकरी' (रु. भे.)

वेसकार—स पु. [स वेपकार] किसी वस्तु की सुरक्षार्थ उस पर लपेटा
हुआ कपडा ।

वेसकीमत, वेसकीमती—देखो 'वेसकीमती' (रु. भे.)

वेसजुषति वेसजुवती—देखो 'वेसजुवती' (रु. भे.)

वेसण—देखो 'वेसण' (रु. भे.)

वेसणियो—स. पु.—वेसन, नमक भिचं आदि के घोल को पका कर
बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ ।

वेसणी—देखो 'वेसणी' (रु. भे.)

वेसणी—देखो 'वेसणी' (रु. भे.)

वेसणी, वेसवी—देखो 'वेसणी, वेसवी' (रु. भे.)

उ०—काम पडिया वगतर टोप पेरवा री आखडी । केसरिया वागा
विना पेरवा री आखडी । दात रा चुडा विना बडागण राखणी
आखडी । घुडवेल वेसवा री आखडी । गाया री घासमारी लेवा री
आखडी । —रा. सा स

वेसणहार, हारी, (हारी), वेसणियो—वि० ।

वेसिघोडो वेसियोडो, वेस्योडो—भू० का० कू० ।

वेसीजणी, वेसीजवी—भाव वा० ।

वेसघर—स पु [सं वेसघर] जैने का एक सप्रदाय, छुसवेपी ।

वेसन—१ देखो 'वेसण' (रु. भे.)

२ देखो 'विरणु' (रु. भे.)

वेसनर वेसन्नर—देखो 'वेस्वानर' (रु. भे.)

उ०—१ वेसनर भी लकडी लोह पाखाण लुकाए ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ भरिया तर पुहप वहे छूटा भर, काम वाण ग्रहिय
करणि । बळि रिपुराई पसाइ वेसन्नर, जण भुरडीतो रहै जणि ।

—वेलि.

बेसनव—देखो 'बेसणव' (रू भे)

बेसवधू—देखो 'बेसवधू' (रू भे.)

बेसवर—देखो 'बेसवर' (रू, भे)

बेसवरी—देखो 'बेसवरी' (रू भे)

बेसवार—देखो 'बेसवार' (रू भे.)

उ०—तठा उपरात खरगोस होसनाक वणावें छें । मछळाद मिटा-यजं छें । नान्ही छून देगचा मे घातजं छें । माहे बेसवार हल्द घणा सठ मिरच जायफळ तज लाग घातजं छें । —रा. सा. स

बेसन्न—देखो 'बेसवर' (रू भे.)

बेसत्री—देखो 'बेसवरी' (रू भे)

बेसभूसा—सं स्त्री [स बेसभूपा] १ किसी देश, सप्रदाय, जाति आदि के द्वारा पहनी जाने वाली पोशाक २ शरीर की सजावट हेतु पहने हुए कपडे । (अ. मा, ह ना मा)

बेसम—देखो 'बेस्म' (रू भे) (ह ना. मा.)

बेसमभू—देखो 'बेसमभू' (रू. भे)

बेसमभी—देखो 'बेसमभी' (रू भे)

बेसमण—देखो 'बेसवण' (रू. भे) (जैन)

बेसयुवति, बेसयुवती—स स्त्री [स बेसयुवती] बेइया, रण्डी ।

रू भे बेसजुवति, बेसजुवती ।

बेसर, बेसर—स स्त्री [स बेसर या बेसर] १ खच्चर ।

उ०—१ अलूखानि जण साथि मोकल्या, देखाडयू मेल्हाण । घोडा हाथी ऊट पोठिया, बेसर पूठि पल्हाण । —का दे प्र

उ०—२ पाडा गाडा पोठिया, वली बेसरां वादि । भार भरिया भल सचरद, अमल चडिया रण्मादि । —मा का प्र

२ देखो 'बेसर' (रू भे)

उ०—१ आभा भळपट अग क चदै चीरिया, दरियाई धुज देह धरं डग धीरिया । लटवण फोला लेह क बेसर वकिया भरिया भूखण भार क लचकं लकिया । —र. हभीर

उ०—२ काड नाम की जातिया, सुदर बोहत सरूप । नख चख दीसं अति चतुर, वल बेसर छळ रूप । —पना

उ०—३ नाका नी नथडी लावजी, म्हारं नाका नी नथडी लाव । म्हारं बेसर फूल लगावी ही, म्हानं खेलण धी गनगौर ।

—लो. गी

उ०—४ तन मीड वाकी निजर त्रिपुरा, सलज चडिया सोहळी । सळ नाक चाढे विकट सोहे, अहर बेसर अळवळी ।

—मा वचनिका

उ०—५ सुभ नाक बेसर जडितस सौवन, असुर पास अळूकरें ।

सिणगार असुरा छळण समहर, सगति अदभुत सङ्ग ए ।

—मा वचनिका

बेसरज—देखो 'बेसरज' (रू भे.)

बेसरम—देखो 'बेसरम' (रू. भे.)

बेसरमी—देखो 'बेसरमी' (रू. भे.)

बेसलूक, बेसलूग—वि० [फा वे+सलूक] १ विना ढग का, तीर-तरीके रहित ।

२ विना सम्बन्ध या रिस्ते ।

३ अव्यवहार ।

४ वर्षेन, धवराया हुआ, उद्विग्न ।

उ०—अवं कुभी जीव री उकराळयी, ऐकल असवारी मंडोवर गयी । तरा रिणमलजी माळियं वंठा अळगा सु कुंभा नं आवती ओळखियो । तितरं आयी रिणमलजी नु मिळियो । कुभी गळगळी हुवी । तरा रिणमलजी पुछियो—अवार एकली बेसलूक सी क्यु ? खातणी वाळा विगाडी दीसं छें । —राव रिणमल री बात

बेसवण—देखो 'बेसवण' (रू. भे)

बेसवधू—देखो 'बेसवधू' (रू भे)

बेसवनिता—स स्त्री [स बेसवनिता] बेइया, रण्डी ।

बेसवा—देखो 'बेस्या' (रू भे) (जैन)

बेसवाद—देखो 'बेस्वाद' (रू. भे)

बेसवानर—देखो 'बेस्वानर' (रू. भे)

बेसवार—स. पु [स] पीमे हुए ममक, मिचं, लींग, हल्दी, घनिया, काली मिचं आदि मसालो का चूर्ण ।

उ०—१ तं मं षणो नान्ही छुनियो मास मदी भां व कढाई में तळजं छें । बेसवार मसाला घात रहा माडा मे घातजं छें ।

—रा सा स.

उ०—२ मास रवाणा देगचा बेसवार अपारा, सूळा त्यार किया सही जाजं घत झारा । आया थाळ मिठाइया पकवान जभारा, भोजन छपन छतीस भांत जीमे जुग सारा । —पा. प्र.

उ०—३ आगं समघडी हथियार खोल नं वंठी छें । ससी एकं रजपूत नु दीयो । कह्यो, 'सखरी वणावी' । उण कह्यो, "भला, जी" तठें रजपूत बेसवार ससं नू दे अर अगीठी जगायो छें ।

—पीठवं चारण री बात

उ०—४ तठा उपरात मोदियां नं हुकम हुवी छें । भुजाई सारू सारी ही वमत सीधी मीठाण बेसवार सरव लेय राती नाडी चाल-ज्यो म्हे सिंकार रम वण नाडी आवा छा । —रा. सा. स.

उ०—४ जरं जीमण नै पचधारी लापसी मोकळी मगळीक कीधी ।
घणा दाळ भात वणाया । घणा वेसवारी राधिया, सालणा वणाया ।
जीमण तयार हूवी । तरा आईदान जेतसीजी कने गयो नै कह्यो,
पधारीजे, रसोडो तयार हूवी छे । —जंतसी ऊदावत री वात
२ पहले हट्टिया अलग करके पीस कर मसाले मिला कर पकाया
हुआ भास ।

रू. भे — विसवार, वेसवार, वेवार, वेसवार, वेसवारी, वेसार ।

वेसवारियोलोच—स पु [स वेसवार+कृशर] वाजरी के साथ कुछ मोठ
कूट कर उनके छिलको को अलग कर फिर उवालेते समय नमक,
मिर्च, धनिया आदि वेसवार' एव काचरियो के छोटे-छोटे टुकड़े
मिला कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का खाद्य पदार्थ विशेष ।

रू भे — वेस्वारियोलोच, वेसवारियोलोच, वेस्वारियोलोच ।

वेसवारी—देखो 'वेसवार' (रू. भे)

उ०—वेसवारी बळाहि, साजमणी हुंता ससा । खरा न खाधा
जाहि, विस भरीया वेसूर रा । —पीठवे चारण री वात

वेसवास—स पु —१ वेस्या या रण्डी का घर ।

२ देखो 'विस्वास' (रू. भे.)

वेसस्त्री—स स्त्री —वेस्या, रण्डी ।

वेसामी, वेसामी—देखो 'विसाति' (रू. भे)

उ०—मुहम प्रकोप उदपुर मार्य, सातैइ महण थया किर सार्थ ।
लाधा जळ वेसामी लीजे, छोजे जतु प्रजा पुर छोजे । —रा रू.

वेसा—देखो 'वेस्या' (रू. भे.)

उ०—महि तु सूमडा रूपइ थई, वेसा पुजरि बइठळ जई । राज-
कृभरि द्विव अतिहि अलजई, महती आगलि कहिया गई ।

—हीराणंद सूरि

वेसाडणो, वेसाडवो—देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे)

वेसाडणहार, हारो (हारी), वेसाडणियो—वि० ।

वेसाडणोडो, वेसाडियोडो, वेसाडवोडो—भू० का० कृ० ।

वेसाडोजणो, वेसाडोजवो—कर्म वा० ।

वेसाडियोडो—देखो 'बंठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसाडियोडो)

वेसाणो, वेसावो—कि स —१ उत्पन्न करना, व्याप्त करना ।

उ०—ज्यू कोइ रं सदा वेसाणोने कहे हिवं तू गुरु कर । तब ते
कहे दोय चार जणा नै पूछ सू तथा आगला गुरु नै पूछ सू । ते
कहसी तो गुरु कर सू । जब जाणणी इणरं सदा पक्की वंठी
नही । —भि. द्र.

२ देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे)

उ०—वेडी घाली वेसाणियो रे, राह ग्रहचो जिम चद । जोरो कोई
चालियो, सिंह पडचो जिम फद । —प. च. चो

वेसाणहार, हारो, (हारी), वेसाणियो—वि० ।

वेसायोडो—भू० का० कृ० ।

वेसाईजणो, वेसाईजवो—कर्म वा० ।

वेसानर—देखो 'वेस्वानर' (रू. भे)

वेसायोडो—भू० का० कृ०—१ उत्पन्न किया हुआ, व्याप्त किया हुआ ।

२ देखो 'बंठायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वेसायोडो)

वेसार—स पु —विश्वास, भरोसा, एतवार ।

वि०—१ विना सार का, तत्वहीन ।

२ विना तलवार वाला, जिसके पास तलवार न हो ।

३ विना चर्वी का, चर्बीहीन ।

४ देखो 'वेसवार' (रू. भे)

वेसावणो, वेसाववो—देखो 'बंठाणो, बंठावो' (रू. भे)

वेसावणहार, हारो (हारी), वेसावणियो—वि० ।

वेसाविणोडो, वेसावियोडो, वेसावयोडो—भू० का० कृ० ।

वेसावोजणो, वेसावोजवो—कर्म वा० ।

वेसावियोडो—देखो 'बंठायोडो' (रू. भे)

(स्त्री वेसावियोडो)

वेसास—१ देखो 'विस्वास' (रू. भे)

उ०—मेछे वहतं मेलिया, दूत कमघा पास । साहरं रहिया आज
लग, थं म्हारं वेसास । —रा रू.

उ०—२ वळं रूखमदये कहे छे । इतना राजवस छोडिनें अहीर
सू सगाई करं । सू वूढा हुआ को वेसास को मत करो । देखो माता
पिता कितरउ चूकं छे । —वैलि टी.

उ०—३ काम सूप नह कीजिए, विदर तणी वेसास । रांणं कीधी
'राजसी', हुआ जगत में हास । —वा. दा.

उ०—४ मन री उदास वेसास न जिय री, खान पान सुख नहीं
उण धाळी । कद मिळसी रसरज सावळडो, वनमाळी गोकुळ री
ग्वाळी । —रसीलराज री गीत

२ देखो 'वेसास' (रू. भे.)

उ०—पीर न की वेपीर सो, आस न जिसी निरास । सकल न
कोई अकळ सा, सास न सा वेसास । —अनुभववाणी

वेसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे)

उ०—१ वेसासघात लं विसतरी, सळी सळी कुळ सोधिया ।
सुपनव्या वेघ कीयो सबळ, रावण राम विरोधिया ।

—सुरजनदास पूर्वियो

उ०—२ माल खायो ज्यारो त्यारो रत्ती हीर्ये नाथी मोह, कुवदी सू छाया भायी नही रमाकत । वेसासघात स काम कमायी घुराई वाळी, माजनी गमायी नीवावता र महत । —कविराज वाकीदास

वेसासडउ, वेसासडो—देखो 'विस्वास' (मल्या, रु. भे.)

उ०—करहा तुभ वेसासडे, मै विसारिया सहकाज । रखे वीच वासी करे, मारु न मेळें आज —ढो मा

वेसासणो, वेसासवो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासवो' (रु. भे.)

उ०—१ तठे कालवूत हसतणी रे फरस करि नें छिवितरी खाड माहे पडे छे । पछे लोह साकल रा प्रास नाखिनै तिके हाथी पकडीजे छे । इणो भाति रा सीधली गजराज वेसासने आणिएआ छे । तांहे नूं घणा मलीदा, वेसवार, भोगर दे दे नें पाटि आणिनै सभाया छे । —रा सा स.

उ०—२ मुजु करे अहीरा सरिस सगाई, ओलाडे राजकुळ इता । त्रिधपरण मति कोइ वेसासो, पातरिया माता इ पिता । —वेलि

उ०—३ प्रमेसूर अक तण परमाण मडे घर 'छाडा' वेध मडाण । वेसास दाखे कोल वचन, मारु राव घोह घरें वडमन । —गो. रु.

उ०—४ जळ माहे जगदोस, विठे मधकीट विभाडे वतळावे वेसासि, पछे दाणवा पछाडे । —पी अ.

उ०—५ तारा खडिया रा साथ नें परतीत आई । सगा रा नाम-ठाम ठीक पहुता, वेसास्या । तर खडिये आईदान आय सुभराज कीयी । तर जेतसीजी घोडा सू उतरिया । वाह-पसाव करिनै मिळिया । —जंतसी ऊदावत री वात

वेसासणहार, हारो (हारी), वेसासणियो—वि० ।

वेसासिओडी, वेसासियोडी, वेसास्योडी—भू० का० कृ०

वेसासीजणो, वेसासीजवो—भाव वा ।

वेसासि—देखो 'विस्वास' (रु. भे.)

उ०—१ रिणमल्ल राड कूभेण राणि, वेसासि चूकि वूहच विनाणि कूभेण कूड कौयउ कदम्म, मारियउ 'रडण' साख्यात धम्म ।

—रा. ज सी.

उ०—२ सत्रिये सपुत्रे वधवे समेत्रे सगे, न क्यो समरये न हुवे सामासि । वाट वसना पडे न की वाट वाहर चडे, ती वसती तणी किसी वेसासि । —तेजीजी चारण

वेसासियोडी—देखो 'विस्वासियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. वेसासियोडी)

वेसासो—देखो 'विस्वास' (रु. भे.)

उ०—वरसा सी जीवण की आसा, पण एक घडिय नही वेसासा । समयसुदर कहइ अथिर ससारा, जनमि जनमि जिन धम आधारा ।

—स. कु.

वेसि—१ देखो 'वयस' (रु. भे.)

२ देखो 'वेस' (रु. भे.)

उ०—अन्न उदक पय परिहरि, आभरणा ऊवेखि । वकुल त्वचा चीटि करि, तरणी तापस वेसि । —मा का प्र.

३ देखो 'वेस्या' (रु. भे.)

उ०—वेसि पभणइ वेसि पभणइ 'मत्रि सुणि वात । ए सहइ धन ताहरउ रहिय भोगवि भली परि, मत्रीसर इम सभली वचनवड रहिउ तसु धरि । —हीराणुद सूरि

४ देखो 'वेस्य' (रु. भे.)

वेसियोडी—देखो 'वंठियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. वेसियोडी)

वेसी-वि.—१ वेस धारण करने वाला या वेसधारण किया हुआ ।

२ देखो 'वेसी' (रु. भे.)

उ०—१ इण कारण इण सामाजिक रूप री मिनख नें जितो वेसी बोध होसी वो उतो ई समरथ वणसी । —फुलवाडी

उ०—२ म्हारी श्री विड विस्वास के धरती मार्ये मिनख सू वेसी की चीज कोनी । —फुलवाडी

उ०—३ केई जणा मिनकी रे प्रगट विह्या ऊदरा हडवडे च्यु कानी कानी न्हाटा । केई डावडिया नें ती डर रे कारण जाफ आयगी । विडरूपता विच ई वाने भूत री डर वेसी लागो । श्री खगडी विह्यो तो कांई विह्यो ।

—फुलवाडी

वेसुद—देखो 'वेसुध' (रु. भे.)

उ०—भली भात पहरारी किया नें दारु पावता गया । तर सारा लोटपोट वेसुध हुवा तर सड । वेउ आडा देनै लगाइ दिया । कत-राहक वळ मूवा वाकी रा फळसा रे मुहडे आया सु खीली खटका विगर मारिया और साथ डूगर रा घरा ऊपर मेलियो ।

—नैणसी

वेसुधि, वेसुधी—१ देखो 'वेसुध' (रु. भे.)

२ देखो 'वेसुधी' (रु. भे.)

वेसुमार—देखो 'वेसुमार' (रु. भे.)

उ०—कळहिया कमध आसुर सकुड, जदुवस भाण किर भाण जुड । ओळा कि अतुळ गोळा प्रपार, वरखत दहू दळ वेसुमार ।

—रा. रु.

वेसुर, वेसुरी—देखो 'वेसुर' (रु. भे.)

वेसुवाद—देखो 'वेस्वाद' (रु. भे.)

वेसूर—देखो 'वेसऊर' (रु. भे.)

उ०—धीसळदं वेसूर खाटी पण खाधी नही । कीवी घात करूर,
माया उणु में मोतिमा । —रायसिंह सादू

वेसूरत—देखो 'बदसूरत' ।

वेसू'री—देखो 'वेसऊर' (अल्पा, रू भे.)

वेसूल, वेसूली—वि०—१ निष्कटक ।

२ विना दर्द ।

उ०—वेसूल फूल-घारा विहार, भालं पडत डोलें भभार । सग्रांम
लोह वाहै सनड्ड, विपरित घाउ ऊबळा-वड्ड । —गु. रू व.

३ अपार, असीम ।

उ०—छह दरसन छिनवं पाखडा, एक न जाणुं नाव अखडा ।
केना देख पाखि नर भूला, बिखै करम करिग्या वेसूला ।

—अनुभववाणी

४ अमर्यादित ।

वेसोटी—देखो 'वेसोटी' (रू भे.)

वेसी—देखो 'वैसी' (रू भे.)

उ०—घर वेसा घरवेस कहाया, धिल घरवेस मता नहो पाया ।
हार्यं ऋडा गर्लें वागली, घरि छत्रि मागें भील आगली ।

—अनुभववाणी

वेस्टक—वि. [स वेष्टक] १ चारों ओर से ढकने या आवृत करने
वाला ।

२ घेरा डालने वाला ।

वेस्टकापथ—स. पु. [स वेष्टकापथ] एक प्राचीन शिव स्थान । (पुराण)

वेस्टण, वेस्टन—स. पु. [स. वेष्टन] १ कोई वस्तु आदि लपेटने का
कपडा ।

२ लपेटने की क्रिया या भाव ।

३ घेरने की क्रिया या भाव । (४) पगडी, साफा ।

५ नृत्य का एक प्रकार का भाव विशेष । (६) घेरा, अहाता ।

वेस्टित—वि. [स. वेष्टित] १ लपेटा हुआ २ लिपटा हुआ. ३ घेरा
हुआ ४ ढका हुआ, आच्छादित ।

उ०—जगत मात जननी जग जानी, मदिरा रुधिर छाक मन
मानी । वेस्टित अरुन उरन के अवर, तप मुख मनहु प्रात रात-
वर । —मे. म.

वेस्टितकरण—म. पु.—शृंगार में एक प्रकार का आसन विशेष ।

वेस्म—स. पु. [सं. वेस्म] घर, गृह, मकान ।

रू. भे.—वेस्म वेसम ।

वेस्य—स. पु. [म. वेस्य] १ व्यापार करने वाला, व्यापारी, बनिया ।

२ व्यापारिक समुदाय । ३ वैश्य जाति ।

४ वैश्य जाति का व्यक्ति ।

रू. भे.—बइस, बईस, वयस, विस, वंस, वइस, बईस, वेस, वेसि,
वईस, वंस, वंस्य ।

वेस्यागना—स. स्त्री [स] वेद्या वृत्ति करने वाली स्त्री ।

वेस्या—स. स्त्री. [स. वेद्या] १ वह स्त्री या स्त्रियो का वर्ग जो धन
लेकर सभोग कराने का व्यवसाय करती हैं । पातर, रण्डी, वेद्या ।

उ०—१ खेरवा में स्वामीजी कर्ने थोटी स्याल उधी अरवळी बोल्यो
थे सावक नें दियाइ पाप कही नें वेस्या नें दियाइ पाप कही छे, इण
लेखें सावक अर्ने वेस्या सरीखा गिण्या । —मि. द्र

उ०—२ सपरिकरि सध्या समइ, रथि बइसीनइ राय । वेख धरी
विवहारिया, वेस्या नइ घरि जाय । —मा का प्र.

वि० वि०—वेद्याओं के कई वर्ग होते हैं—(१) पातर (२)
भगतन (३) रामजनी (४) दुरकनी—ये हिन्दु हैं तथा (५) कचनी
(६) सावत ये मुसलमान हैं । धन लेकर सभोग कराना इन सब का
सामान्य व्यवसाय है । परन्तु इनके रहन-सहन एवं व्यवसाय करने
के कुछ अलग अलग तरीके हैं इस कारण ये वर्ग एक दूसरे से कुछ
भिन्नता रखते हैं ।

(१) पातर —इनके बाप, माई आदि जागरी होते हैं और इनकी
उत्पत्ति राजपूतो से मानी जाती है । जागरी लोग अपनी बहन-
बेटियो से सभोग का कार्य करवाते हैं । इनकी औरतें यह कार्य
नहीं करती । कवारी लडकी से व्यवसाय कराना पाप समझा जाता
है । इसलिये जिस लडकी को पातर बनाना चाहते हो उसके विवाह
की रस्म छोटी ऊत्र में ही गणेशजी के साथ पूरी कर दी जाती है
और उसके जवान होने पर ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ
इसका प्रथम सभोग करा दिया जाता है । उस रात गाना बजाना
व उत्सव मनाया जाता है उसके बाद उसका व्यवसाय चलने लगता
है । इसके अतिरिक्त ये कुछ गाना-बजाना व नाचने का कार्य भी
करती हैं । इस कार्य की तालीम इन्हें मीरासी लोग या भगत देते
हैं । किसी मुसलमान के साथ सभोग कराने का इनमें प्रतिबन्ध है ।
विधवा औरतें किसव का व्यवसाय नहीं कर सकती । इनकी पोशाक
पाजामा, और लवा अगरखा तथा सिर पर टुपट्टा है । कभी कभी
घाघरा अगरखा भी पहनती हैं । इनका धर्म शाक्तिक है । खान-पान
राजपूतो जैसा है । धोबी डोली, मोची, वाभी, महत्तर और मुसल-
मानो से ये परहेज करती हैं ।

(२) भगतन —इनकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से मानी जाती
है । इनके विवाह रस्म किसी गरीब साधु के साथ फेरे दिरवा कर
पूरी करवादी जाती है । साधु को कुछ धन देकर उससे यह बात
तय करवा ली जाती है कि वह इस लडकी का कोई दावा नहीं
करेगा । ऐसा साधु यदि न मिले तो पातरियो की तरह इनके विवाह

की रस्म भी गणेश जी साथ फेरे दिरवा कर पूरी करादी जाती है। यह 'कवारपना' उतारना होता है। कवारी लडकी से किसव करवाना इनमे भी बजित है। विवाहित श्रीरतें किसव का व्यवसाय नहीं करती। पातरियो की तरह ये भी गाना-बजाना व नाचने का कार्य करती हैं परन्तु इस कला में पातरिया ज्यादा शिक्षित होती हैं। पोशाक इनकी भी पातरियो जैसी होती हैं। सभोग कराने मे मुसलमानो से परहेज नहीं करती परन्तु उनके हाथ का खाना-पीना नहीं करती। दारू, मास, गाजर, सलजम, प्याज व लहसुन से परहेज करती हैं। धर्म इनका वैष्णव है, इष्ट हनुमानजी का रखती हैं।

इन दोनो के अलावा हिन्दुओ में रामजनी और हुरकनी नामक बेव्याओ के दो वर्ग और हैं पर उनका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

(३) कंचनी — ये मुसलमान रडिया हैं। ऐसा कहा जाता है कि पहले इनको 'कजरी' कहा जाता था, परन्तु बादशाह अकबर ने कजरी के स्थान पर कचनी नाम रख दिया। इनके भाई-बाप आदि कचन कहलाते हैं। इनका रहन-सहन मुसलमानो ढग का होता है। श्रीरतें परदा रखती हैं और लडकियों को रण्डी बनाने के लिये कलावतो से गाने-बजाने व नाचने की तालीम दिलाई जाती है। पातरियो और भगतनो की तरह इनका भी 'कुमारपना' उतारा जाता है पर कोई मजहबी या वैवाहिक रस्म पूरी नहीं की जाती। पातरियो की तरह ज्यादा से ज्यादा धन देने वाले के साथ लडकी का प्रथम सभोग करवाया जाता है। उस रात लडकी को दुलहिन बना कर उस आदमी के पास भेज दिया जाता है, सुबह अपनी विरादरी मे मिठाई बाटी जाती है।

कचनिया सिर खोल कर नाचती हैं। कभी-कभी वरातो मे नाचने भी जाती हैं। गाने-बजाने व नाचने मे ये पातरियो और भगतनियों से अधिक दक्ष होती हैं। अदाएँ दिखा कर ग्राहको को फसाना और लूटने मे चालाक होती हैं। गजल और तुमरी इनका खास गाना है। पोशाक इनकी अगिया, कुरती, पजामा और टुपट्टा है। इनका चूडा काच का होता है।

कचनी के अलावा मुसलमान बेव्याओ का एक 'सावत' वर्ग और होता है, परन्तु उसका विस्तृत विवरण उपलब्ध नहीं है।

इन सब के अतिरिक्त इमी प्रकार का व्यवसाय करने वाली एक किसवन या कसवन नामक कौम है। जो पहले हिंदू थी मगर अब मुसलमान है। ये छोकरियो को मोल लेकर पोशीदा कसव कराया करती थी। एक बार एक मुसलमान छोकरी ने इस काम के लिए मना किया एव परदे मे बैठ कर कुरान पढने लगी और दूसरी छोकरिया इसको परदा खोल कर बदनीयति से देखती थी तब इसने

बददुआ दी कि जाओ तुम्हारे कसव चौड़े आ जाये एव गर्मी हो जाय। उसी दिन से ये बाजार मे कसव कमाने के कारण कसवन या टकियाई या टकियारी कहलाने लगी।

मारवाड मे गुजरात से उस समय आई जिस समय बहा के हाकिमो के अहदी मारवाड मे आते थे। इनकी खाप चौहान, चापावत, सोढा, भाटी आदि है। ये पङ्गले रामदेवजी को मानती थी और अब खुदा आदि का नाम लेती हैं एव मुसलमानी ढग बरतती है। इनके नाम हिंदुओ जैसे होते हैं। और इनकी पोशाकें रडियो व ग्रहणियो जैसी होती हैं। ये गाना-बजाना नहीं जानती। ये शराव पीती हैं। किन्तु सूअर एव भटके का मास नहीं खाती। ये चलते फिरते आदमी को फसा लेती है। इनकी लडकियों की शादी तेलियो, घाचियो आदि की उन स्थियो के लडको से की जाती है जो मुसलमानों के घर धुम जाती है। इनकी ब्याही स्त्री कसव कमाने का काम नहीं करती और अगार करती है तो वह जाति-च्युत कर दी जाती है। जाति-च्युत श्रीरत को जाति मे लेने के लिए अजमेर भेजा जाता है। वहा उसें गुनहगारी मे पचों का हुक्का भरना पडता है।

२ स्वर्ग-लोक की अप्सराएँ।

उ०—देराणी वचन—आज भगडा ऊपर जावता भेस करियो छै। कुसम फूला री मोड अन वसण कपडा रगिया है। केसर में नेह न देह सदेव जो नेह म्हा सू यखता हा सी भी आज नहीं अरयात म्हारा सू ही सनेह छोडियोडा होव ज्यू सोह रहिया छै। इण वास्ते म्हने ती तुले है की वामीजी साहव म्हारें पती लोडी सौक वसावला अरयात जुद्ध में मारीज अपछरा वरसी हू सत करने जासूं जितरे लौडी सौक धकं मिळसे। जेठाणी कहे—हे देराणी तूं उण कुळ में उपजी है जठे थारे माता पिता रा दोनू ही पख विना दाग रा अरयात निकलक है-सौ काई मूडो सौ बेव्या ही थारी सुहाग खोस लेवें।

—बी. स टी.

रू मे —वेमा, वेम, वेसा, वेसि, बेस, बेव्या।

बेव्याकार—एक वर्ग विशेष ?

उ० ' गधिकायण दीव्यकापण सीवरणकार कास्यकार मशिकार पूमीफलतावूलिक मालिक सौत्रिक लडुककार काडुकिकार कणकार बेव्याकार चरमकार मल्लक खलक धान्यखलक वाटक वाटिका वामी पुस्करणी क्रीडातडाग सरोवर।

—व स.

बेव्यारत—वि०—बेव्याओ मे अनुरक्त, लीन, बेव्यागामी।

उ०—महाराज वीर विक्रमादित्य उज्जैन भाही राज करे। तेषी जुवारी, मासाहारी, सुरापानी, बेव्यारत, चोर, आखेटी, परदारत री नाम नहीं।

—सिधासण बत्तीसी

वेद्याहरी—स पु —वेद्याग्रो का मुहल्ला । (सभा)

वेन्नमण, वेन्नवण — देखो 'वेन्नवण' (रु. भे)

वेत्थारियोखीच — देखो 'वेत्थारियोखीच' (रु. भे.)

वेह—स. पु. [स वृद्धि] १ विवाह मण्डप (विवाह वेदी) के चारों कोणों

(चारों उपदिशाग्रो—नैर्ऋत्य, मास्त, ईसान एव आग्नेय) में हरे वासो के संरक्षण में रखे जाने वाले मटके जो १-१ की संख्या में ३६ होते हैं ।

उ०—१ दिन ऊगो, ताहरा गिणमलजी सीसोदिया रा माथा वाडि चवरी रचाय, तियां री चोवया कीवी । तिया ऊपर बरछारी वेह माडो । अर सीसोदिया री वेटिया राठोडा नू परणार्ई । च्यार पोहर दिन बीमाह किया । —नैणसी

उ०—२ तठा उपराति करि नं राजान सिलामति नीला आला बस केलि खम सूना गलिआ थका काचना रा कळसारी री वेह करि नं चोरी पघराया छे । हथळी नी जोडि छेहडा वाधिया छे । सु जाणो मन वाधिया छे । —रा सा. स.

उ०—३ विप्र मूरति वेद रतन में वेदी, बस आस अरजुनमें वेह । अरणी अग्नि अग्न मं इधण, आदृति अत घणसार अछेह ।

—वेलि

उ०—४ स्रुति वायक सुभ मत्र, तव फल दायक तोरण । पघरायो परणवा, 'अभी' आयी राय अगण । नहरत मास्त निरखि, कूण ईसान अग्न कसि, बस हरित जुत वेह, दीप रस नेह असट दिस ।

—रा. रु

उ०—५ उच लगन लखि रिखि उरधि, स्रव कूण प्राचिय सुरधि । रचि कनक वेह सुरग, औपति नव खण अग ।

—रा रु.

वि० वि०—ये मटके (कलश) राजा महाराजाओं के सोने-चादी के होते थे एव दूसरों के मिट्टी के होते हैं, जिन पर लाल कपडे लपेटे हुए होते हैं । इनमें पाजे-मगद आदि डाले जाते हैं कहीं सात सुपारिया एव कुछ मूंग डाले जाते हैं । ये कलश लडके की गादी में सात, नौ या इग्यारह होते हैं, जो 'तौरण थम' के पास रखे जाते हैं एव लडकी की गादी में छत्तीस होते हैं जो विवाह-मण्डप (विवाह वेदी) के चारों ओर नौ-नौ के चार समूहों में रखे जाते हैं, इनमें सबसे ऊपर वाले कलश को 'ब्रह्मो' कहते हैं एव हरे वासो के संरक्षण में चारों उपदिशाग्रों में रखे जाते हैं एव आठों दिशाग्रों में दीपक जलाये जाते हैं ।

२ मगल-कलश ।

३ विवाह-मण्डप, विवाह-वेदी ।

सर्व —वह, वे ।

२ देखो 'वेद' (रु. भे)

उ०—वदं ब्रह्माण चियारं वेह ।

—अ गीपुराण

३ देखो 'विधाता' (रु. भे)

उ०—१ आसक हमारा वोई, जिन रचना रची सब कोई । वेह कहिये अपरमपारा, ज्या कू क्या जाणै ससारा ।

—श्री हरिरामजी महाराज

उ०—२ हरीया लेख लिलाट में, जो वेह वाल्या अक । सुख दुख भुगती आपणा, कहा करो गैरक ।

—अनुभववाणी

उ०—३ वेह समथ वणावियो, वाघ डाच जम बत्य । जिण माअन लग जाडिया, माय जाय गज मत्य ।

—बा. दा.

४ देखो 'वयस' (रु. भे)

उ०—कायर लाखा जतन कर, वेह न विसैल पाय । सुरा समहर सहरे, जाता जुगा न जाय ।

—रेवतसिंह भाटी

५ देखो 'वेमाता' (रु. भे)

उ०—पोही अक वेह प्रमाण, मारू खोटा मडिया । सक भद चढे सिकार, सभै छला सावर सुवर ।

—गो रु.

६ देखो 'वेस' (रु. भे)

७ देखो 'वेघ' (रु. भे)

उ०—सुई तण्ड वेहि मूसल घालेवउ करइ, मूसल फूलावेवउं करइ, ऊमा पीड, कलकलता वृकइ, वफाता गिलइ, बलि वाधी कोडिया हणइ लीख तण्ड वेहि वाल प्रोड, मव घाया तेर पडइ ।

—व स

रु. भे.—वेह, वंह, वे, वंह ।

अल्पा,—वेहडली, वेहडली ।

वेहक—१ देखो 'बहक' (रु. भे.)

२ देखो 'वेहक' (रु. भे)

उ०—हका वेली हक है, वेहका वेहक । हरीया हेकै हक विन, सब दिन जाहि अन्हक ।

—अनुभववाणी

वेहकणों, वेहकवों—देखो 'बहकणों, बहकवों' (रु. भे)

वेहकणहार, हारी (हारी), वेहकणियो—वि० ।

वेहकियोडो, वेहकियोडो वेहकयोडो—भू० का० कृ० ।

वेहकीजणों, वेहकीजवों—भाव वा० ।

वेहका—देखो 'वेहका' (रु. भे.)

वेहकाणों, वेहकावों—देखो 'बहकाणों बहकावों' (रु. भे.)

वेहकाणहार, हारी (हारी), वेहकाणियो—वि० ।

वेहकायोडो—भू० का० कृ० ।

वेहकाईजणों, वेहकाईजवों—कर्म वा० ।

वेहकायोडो—देखो 'बहकायोडो' (रु. भे)

(स्त्री. बेहकायोडी)

बेहकावणी, बेहकावनी—देखो 'बहकाणी, बहकावी' (रू भे)

बेहकावणहार, हारी हारी), बेहकावणियो—वि० ।

बेहकाविप्रोडी, बेहकावियोडी, बेहकाव्योडी—भू० का० वृ० ।

बेहकावीजणी, बेहकावीजनी—कर्म वा० ।

बेहकावियोडी—देखो 'बहकायोडी' (रू भे.)

(स्त्री. बेहकावियोडी)

बेहकियोडी—देखो 'बहकियोडी' (रू. भे)

(स्त्री. बेहकियोडी)

बेहड बेहड—१ देखो 'बेहड' (रू भे)

२ देखो 'बे'डी' (मह, रू भे)

बेहडली—देखो 'बेह' (अल्पा, रू भे.)

बेहडाफोड—देखी 'बे'डाफोड' (रू भे)

बेहड्ड, बेहड्ड, बेहड्डो—१ देखो 'बे'डी' (रू भे)

उ०—१ इसँ समझ्यँ मैं भालुवा आण अरज कीवी छँ । भाखरा रा खुडा बेहडा माहा सुवर नीचा उतरिया छँ । राजाना देसोता सुवरा सामी वाग लीवी छँ । फडकडा फडवडाया जावँ छँ ।

—रा. सा स.

उ०—२ छत्रवट तूफ दसरथ नद ओप अच्छेहडा, वाढे खगा रिए दसमाथ कर घड बेहडा । बळमुग्हुँत निक्सँ वण आखर बेहडा, जुग पद घसँ मुगट सहीव सुरपत जेहडा । —र ज प्र

२ देखो 'बे'सी' (रू भे)

उ०—छत्रवट तूफ दसरथ नद ओप अच्छेहडा, वाढे खगा रिए दसरथ कर घड बेहडा । बळमुग्हुँत निक्सँ वण आखर बेहडा, जुग पद घसँ मुगट सहीव सुरपत जेहडा । —र. ज प्र.

बेहड्ड, बेहड्ड—स पु—राह भे चलनेवाले, राहगीर पथिक ।

उ०—ताहरा लोकेँ पूछियो-भाई केँ-रा उचाळा ? कहयो-जी । फोफाणद थळ री चारण छँ । घास चारण जावँ छँ सात बीस भंसया नँ वजण पडेँ छँ, सू माहरी धरती माई घास थोडा, सू महे-वची मैं घास चारण आया छँ, सू भंसया ती चरत्या-चरत्या आध्या ब्रह्मा सू म्हे मारण बेहड्ड हुवा, सू आधा जास्या ।

—फोफाणद री वात

बेहटो—देखो 'बेहटो' (रू. भे)

बेहड्ड, बेहड्ड, बेहड्ड, बेहड्डो—१ देखो 'बे'डी' (रू. भे)

उ०—१ बइरानी भोड, हई पीड, तुटई चीड, एक उतावळि दौड छँ, एक माथड बेहड्ड चरड छँ, लुगड्ड ते माथेँ ओढई छँ, बेहड्ड ते फोड छँ । एक एक नड अड छँ, घडाघड पड छँ, माहोमाह

सडड छँ हवई नानी लाडी, चीखल भी पडड आडी, बीजानी भोजइ साडी, तेँ माठेँ करइ राडी, सोक सोकनी करइ चाडी... ..

—रा. सा स.

उ०—२ तोरण श्रीकम आविया, ल्यो बेहडा वर नारि । वर बेहड्ड वंकुट्ट नायक, वदियु कर च्यारि । —रुक्रमणी मगळ

२ देखो 'बे'सी' (रू भे.)

उ०—तोरण श्रीकम आविया, ल्यो बेहडा वर नारि । वर बेहड्ड वंकुट्ट नायक, वदियु कर च्यारि । —रुक्रमणी मगळ

बेहण—स पु [स विधात्ता] विधाता, ब्रह्मा ।

उ०—नखत्रैत जोध निरेहण, वड खत्रो सारिख बेहण । एकल्ल भल्ल दुभल्ल आकल, कहि कलहि अकल । —ल पि

बेहणउ, बेहणो—वि. [म वेधनरुम्] छेदन करने वाला, वेधने वाला ।

बेहणी, बेहवी—क्रि. अ.—१ चालू होना, चालू रहना ।

उ०—नेँ जेसीजी भाडडेँ नागोर रेँ गाव गया । उठेँ कोट करायनेँ माणस राखनेँ राणा कनेँ चीतोड गया । उठेँ गाव १४० ताणी मला सोळकी वाळी दियो । तठेँ रामदास माल्हण री वाप मरियो । राणा कुंभा थका आया पछेँ श्री पटी बेहती थी । —नेँणसी

२ डरना, भयभीत होना ।

उ०—श्री कहि वेसवटो राजा बीसळदेँ पाम रह्यो छँ । ताहरा बेहती सो उठ उबो हुवो नेँ हाथ जोडिया । ताहरा राजा पूछियो, "थारिँ जिंका मन माहेँ बीनती छँ सु कहि ।" ताहरा वेसवटेँ बीनती कीबी "माहाराज सलामत, हू राजा पासँ रूँ छुँ नेँ मूळवेँ किम दुख पाय रावळो विगाडियो, ईयेँ वात हू ज जाणू ।" ताहरा राजा कहयो, "तनू किम न लागो । करसी सो पायो" —मूळवेँ सागावत री वात

३ देखो 'बे'णी, बे'वी' (रू भे)

उ०—अडिया मुजि पडिया मुह ऊधे, सहज कोय देखँ सुर-अमुर । आखती बेह कोय नह आयो, अमरा' जम राव तरुँ ज उर । —जोगीदास कवारियो

४ देखो 'बे'णी, बे'वी' (रू भे)

उ०—लुगाई रेँ नावेँ वसा आभडवा री आखडी । सरसेँ घोडेँ चडवा री आखडी । काछी घोडेँ चडवा री आखडी । पालखी चडवा री आखडी । कपुर विना पान चाववा री आखडी लुगाई सु रात मैं एक वार भोग करणी, उपरत करवारी आखडी । किस-तुरी विना रहवा री आखडी । फाटा कपडा सीवणरी आखडी । साथ नँ बल हुवा विना जीमणरी आखडी । वावडी री पाणी पीवण री आखडी । बेहती नदी री पाणी पीवण री आखडी ।

—रा. सा. स.

५ देखो 'बे'णी, बे'वी' (रू. भे.)

उ०—काया भ्रूवकद कनक जिम, सुदर, बेहे सुख । तेह सुरगा
किम हुवइ, जिण बेहा बहु दुख । —डो मा.

बेहणहार, हारी (हारी), बेहणियो—वि० ।

बेहिघोडी, बेहियोडी, बेहघोडी—भू० का० कृ० ।

बेहीजणी, बेहीजबी—भाव वा, कर्म वा. ।

बेहत—स स्त्री—एक पीण्डिक भ्रौपधि का नाम ।

बेहद, बेहदी—१ सर्वशक्तिमान्, ईश्वर ।

उ०—१ बेहद बडा गोडिया कोतिक करदा । —केसोदास गाडण

उ०—२ हरिया बेहद के घटा, नहीं हृदि की आस । ससा सोग न
ताप तन, नाव निरासा वास । जनहरिया बेहद घरा, धन अनहद
की घोर । बाजा राग अपग घुनि, एक अखडी टोर ।

—अनुभववाणी

उ०—३ हरीया हृदि का जीवडा, ता कु घका अनत । जाह गुर-
पाया बेहदी, ले निरवाण चडत ।

—अनुभववाणी

२ बेकुण्ड, स्वर्ग ।

उ०—१ हरीया हृदि आसामुखी, ताहि न करिये हेत । बेहद वास
निरास घर, ताकु तन मन देत ।

—अनुभववाणी

उ०—२ सहज नाम कु धाबि के, सुरति चढे असमान । हरिये
निज पद परसिया, बेहद का वसवान ।

—अनुभववाणी

उ०—३ हरिया हृदि कु छाडि के, बेहद पुंहता जाय । दिल दरगे
दीवान में, घका न धूमि काय ।

—अनुभववाणी

३ सत्यस्वरूप, ईश्वर ।

उ०—हृदि का रता हृदि में, बेहद का बेहद । हरिया बेहद पाय के
हृदि भई सब रद ।

—अनुभववाणी

४ सत, भक्त ।

उ०—हृदि बंठा हृदि की कहें, वेद पुराना वाचि । हरीया बेहद
वावरा, रहया राम सु राचि ।

—अनुभववाणी

५ ब्रह्म, परब्रह्म ।

उ०—१ बेहद सुख सागर भरघी, पथ न पग पारेह । हरीया
हरिजन पीवसी, हृदि सु हुय न्यारेह ।

—अनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हृदि में घणा, सुख दुख भरम सनेह । बेहद
काम न कलपना, अति आनंद अछेह ।

—अनुभववाणी

६ ब्रह्मपद ।

उ०—बेहद कु पुहचै नही, हरीया हृदि के लोक । तन तो, माटी में
मिल्यो, मन ग्यो सांसे सोक ।

—अनुभववाणी

७ ब्रह्मसुख, ब्रह्मानन्द ।

उ०—सहज का भेद सोई सत जाणै, हृदि कु जीत बेहद माणै ।
सहज का आसण महज आसा, सहज में खेलणा सहज पासा ।

—अनुभववाणी

८ अनहद नाद ।

उ०—होतव सा जीतव नही, अरथु मा न गथ । वैन न को पेहद
सा, साम न सा समरथ ।

—अनुभववाणी

९ योग, समाधि ।

उ०—सहज में साम सुख रास भ्रमं बिड्या, रूप में रूप ररकार
जागं । दास हरिराम गुहदेव परताप तं, हृदि कु जीव बेहद लागं ।

—अनुभववाणी

१० सत्य ।

उ०—हरिया हृदि का जीव कु, बेहद वी गम नाहि । कीडी केरे
नाळ ज्यु के भावं के जाहि ।

—अनुभववाणी

११ ज्ञान ।

उ०—१ वचन सुन्या बेहद का, हृदि न भावं दाप । हरिया सुन्य में
साईया, ता सु ध्यान लगाय ।

—अनुभववाणी

उ०—२ जनहरिया हम कु कल्या, सतगुरु अंसा दाव । हृदि का
पासा छाडि दे, बेहद सांहां भाव ।

—अनुभववाणी

वि.—१ जानने का इच्छुक, जिज्ञासु ।

२ ज्ञानी ।

उ०—हृदि छाडि बेहद भया, हरीया राम हजर । अलड उजाळा
गैव का, निसा न उगं सूर ।

—अनुभववाणी

३ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—कह कह थाका मेसनाग बेहद वाखाण । —केसोदास गाडण

बेहदी—देखो 'बहदी' (रू. भे.)

बेहद—देखो 'बेहद' (रू. भे.)

उ०—१ बेहद हृद वार्ग वणाव, चम्पीर हीर जामे जडाव । जगमर्ग
जोप कसवी अनूप, नीलकण्ठ मसजर लाल सूप ।

—गु. रू. व.

उ०—२ राति साभीर सारग डारणं ग्रहे, वाइ उपडिया लीण
जाणै वहे । हृद बेहद वै वेग पं हैमरा, पाघरा जाण पाहाड उहुं
परां ।

—गु. रू. व.

२ देखो 'बेहद' (रू. भे.)

बेहन—देखो 'बहन' (रू. भे.)

बेहनडी—देखो 'बहन' (अल्पा, रू. भे.)

उ०—रहि-रहि बेहनडी ! वच न तू रोई, ले लोटिका जळ मुख
धोई । फटि रे हिया ! नीवालूवा, पायरी घडियी के त्रीघट लोह ।
अरथभलियो फूटइ नही, सगुणा प्रीतम तणी विछोह ।

—बी. दे.

वेहनि, वेहनी—देखो 'वहन' (रू. भे.)

वेहनेई, वेहनीई—देखो 'वहनीई' (रू. भे.)

वेहमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

उ०—१ हरिया तन की गीरवी, कहा करे नर देख। वेहमाता दाणी दळ, श्रीरा लिखती लेख। —अनुभववाणी

उ०—२ राम सुणी मोरी वीनती, राम सुणी मोरी वीनती। मा मोरी, वेहमाता सुणी अं पुकार, कुखडली सावळ हुई, मा मोरी वेहमाता सुणी अं पुकार, कुखडली सावळ हुई। —लो गी

उ०—३ तूं तो नोज मरे, अं म्हारा री धीवडी, सूख ती सुणैला थारी वीनती। आ ती वेहमाता सुणैला पुकार, लाय दी नी भंवर, म्हानं चीणैटियो। —लो गी.

वेहर—स स्त्री—१ काटने की क्रिया या भाव, करतन।

२ भोजन करने की क्रिया या भाव।

वेहरणी, वेहरवी—देखो 'वेरणी वेरवी' (रू. भे.)

उ०—मुनिवर वेहर पाछा वल्याजी, लागी छे थोडी सी वार। वीजी सिघाडो इहा आत्रियोजी, देवकी घर वार। —जयवाणी

वेहरणहार, हारो (हारी), वेहरणियो—वि०।

वेहरिओडी, वेहरियोडी, वेहरघोडी—भू० का० कू०।

वेहरीजणो, वेहरीजवो—कर्म वा०।

वेहराणी, वेहरावो—देखो 'वेराणी, वेरावो' (रू. भे.)

उ०—मोदक थाल भरी करी जी, मंदिर माहे थो जाय। केसरी सिंह जटा जिमा जो, वेहराथा उलटं जी भाव। —जयवाणी

वेहराणहार, हारो, (हारी), वेहराणियो—वि०।

वेहरायोडी—भू० का० कू०।

वेहराईजणो, वेहराईजवो—कर्म वा०।

वेहरायोडी—देखो 'वेरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वेहरायोडी)

वेहरियोडी—देखो 'वेरियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वेहरायोडी)

वेहरी—१ देखो 'वेहरी' (रू. भे.)

२ देखो 'वहरी' (रू. भे.)

वेहरी—१ देखो 'वेहरी' (रू. भे.)

२ देखो 'वहरी' (रू. भे.)

३ देखो 'वंडी' (रू. भे.)।

वेहळ वेहल—स. स्त्री—१ होलियो की एक शाखा विशेष या उक्त शाखा का एक व्यक्ति। (मा म)

२ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

उ०—१ वरी वेहल वरण रा, दीठा जिण जिण देस। माडेचा ते मेळिया, आभयुवा 'अमरेस'। —वा दा

उ०—२ कुण वित्त व्रवं वेहळा कूपा, खेड सुपह मन खोज करे। सरवर हस विनाई सारं, सर विन हसा केम सरं।

—राव कूपा री गीत

३ देखो 'वहल' (रू. भे.)

उ०—१ इका वेहलां रहकला ऊरर वसाणजे छे। सू इका वेहला रहकला किण भ त रा छे? गुजराती, सुरती, खंभाइची, भुजनगरी, हेसारी, उजील रा, वणिया घणै सीसुरा, पीतल लोह दात रा जडिया, लाल सतहटी रा गदहरा विछया थका, चादणी ढालिया थका आण हाजर हुवा छे। —रा. सा स

उ०—२ तठा उपरात करि नै राजान मिलांमति कावली कूतरा, लाहोरीकूतरा, विलाती कूतरा, लोलभी, लोनभी जीभ रा, वलिमें पूछ रा, साण्डे कान रा, दाडमी दत रा, मिघ रा हथरा, केहरी कवरा, भाफरं रोम रा, के विना रोम रा, इण भातरा कूतरा, चीतरा, मुखमली, रेसमी, मुवा रा वणाआ, साकळिया जडिया, वेहला पालखिया ऊपरं वंठा वहे छे। —रा. सा. सं.

उ०—३ रिमफिम करती वा वीदणी वीद नी वेहल मे चढी। श्री वीद कितरी सभागियो। कितरी सुवी। भूत रा रू-रू में जाणै सुळा खुवण लागो। हीया में जाणै भट्टी चेतन व्हेयो।

—फुलवाडी

४ देखो 'विहल' (रू. भे.)

उ०—धर पीरस मेछा घणी कामणि हदी कथ्य, साभळि वंठी साप्रत महागिरिदा मथ्य। महागिरिदा मथ्य स्रवण कथ साभळी, वेहळ मदन विराम थयो तन व्याकुळी।

रू. भे.—वहळ, वीहळ, वीहल, वेहलि, वेहळ, वेहल।

वेहलि—क्रि वि.—१ शीघ्र, जल्दी।

उ०—क्रमि क्रमि जान पहुतिय, सुहदिय, 'भीमपली पुरे' गुर हरसिउ मणि। ग्रह विरि वीर जिणिदह मंदिर, मडिय वेहलि नदि सुवासरि। —ऐ. जे. का स.

२ देखो 'वहल' (रू. भे.)

३ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

४ देखो 'वेहल' (रू. भे.)

वेहलियो, वेहली—देखो 'वंल' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—वेहलियारी फुरणी वाज रही छे। जग घूघरा वाज रहया छे। सू वेहलिया किण भात रा छे? थेट काकरेच रा छे, सोरठ रा छे, हालार रा छे, सुवालव्य रा छे, देस-देसरा इकरग सपेत छे। जाहरी सपेती आगं जगला ही मगसा नजर आदं, महदी सु रगिया वनात रा मोहरा लालं सूतरी नाथा, रेमरी रास, सीगा पीतळ

री लोळी । वनाती भूला घातिया रहकला इका खडसला जूना छे ।
सू हालिया थका घोडा री माम पाडे । इसा बेहली जूता रहकला
इका खडसल आण हाजर हुवा छे । —रा सा स.

बेहली—देखो 'बेहली' (रू भे.)

बेहाण—स स्त्री.—१ वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

२ देखो 'विमान' (रू भे)

३ देखो 'विहाण' (रू भे)

उ०—ठडे नभसीस थयी तिसआण, विजाणूह होसिय केम बेहाण ।
पर्यपत वैण सलै परधान, जय मुख कायर फोट जवान ।

—पा प्र

बेहांम, बेहामी बेहामी—देखो 'विज्ञाति'

बेहा—देखो 'विघाता' (रू भे)

उ०—१ ओराकी वडा खेगू गात ओहा, वणाचै कवी कथ्य स्त्रीहथ्य
बेहा । नळी जत्र मै जासु वालाण नयख, सलट्टा कटोग वणै चत्र
अयख । —२ वचनिका

उ०—२ मोमिया होय स आपी मारै ओरचा मारण केहा ?
मोमिया होय स तुठी सांघै, मरियो दुसमण घातै बेहा ।

—समसुदीन

उ०—३ सूरकुळ मुकट अणघट अनट जीह सुज, वयण मुख
दागिया अंक बेहा, दया जन दखणा । सामरथ भभीखण रक राखै
सरणा, तसां आपण सुदत लक तेहा, रजवट्ट रकवणा ।

—र ज. प्र.

बेहार—१ काटने की क्रिया ।

उ०—वध वीर किलकक हककोहकक, घुप सवकक घमचकक, वण
वार असक वाधा रक, रुक भटकक रह चकक । वरगी खग धारा
वारु वारा, वार करारा, बेहारा, घट तूटै सारा अग अपारा, जोड
करारा जूंभारा । —रा. रू.

२ देखो 'विहार' (रू भे.)

बेहारी—१ देखो 'विहारी' (रू भे)

उ०—गांया ग्याळी कानी काळी वसी वाळी, बेहारी, जणा जांजी
प्रियो प्राजी मोटी आजी मोरारी । लका लीधी दान दीधी सोभा
कीधी सवाई, साचा साचो काचा काची वाणी वाची बमाई ।

—पि प्र

२ देखो 'व्यवहारी' (रू भे)

बेहाल—देखो 'बेहाल' (रू भे)

उ०—१ राम मिवरिया बाहिरी, खाली नर खुसियाल । हरिया
जब तै जाणियै, बेमारण बेहाल । —अनुभववाणी

उ०—२ हरिया अमनै ह्वाल मै, खलक फिरै खुसियाल । होसी
खालिक बाहिरी, हेइ तुरक बेहाल । —अनुभववाणी

उ०—३ सत दादू ब्रह्म आदू, महा निरपख चाल । दुम्ट तासू बंद
कीनी, मुवी हुय बेहाल । ती हरिलाल जी हरिलाल, हे नित भक्ति
पख हरिलाल । —भगतमाल

बेहाली—देखो 'बेहाली' (रू भे.)

बेहियोडी—भू का कू,— चालु रहा हुमा, चालु हुवा हुमा. २ डरा
हुमा, भयभीत हुवा हुमा, ३ देखो 'होयोडी' (रू भे.)

४ देखो 'बहियोडी' (रू भे)

५ देखो 'बोधयोडी' (रू भे.)

(स्त्री. बेहियोडी)

बेही—स पु —वदला, प्रतिकार, प्रतिशोध ।

उ०—सो सपूत जं पीछी राखै, दुजन हीण बदे ना भासे । बंरा
तिणा विसारै बेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा ।

—डाढाल भूर री वाच

बे—देखो 'बे' (रू भे)

उ०—महाराज, वी ठाव बरखा घणी होह पग पाणी ठहरै नही ।
तळसीर सू भी पाणी नही आवै । रुपियो वी बहीत लगायी, सब
निसफळ हुवो । ती कारण सो चितातुर ही रहै । वी नू चितित
देख बे री दोय स्त्री परम सुदरी, नव यौवना सदा चितित रहै ।

—सिधासण वत्तीसी

बंकुठ, बंकठ, बंकुठ—देखो 'बंकुठ' (रू भे)

बंक्रति, बंक्रती—स पु [स बंकुठ] १ रिक्त, खाली ।

२ विकार, विकृति, विगाड ।

रू भे—बंक्रति

बंग—स पु —१ चाल गति ।

२ पानी का बहाव ।

३ पानी के बहाव का रास्ता ।

वि०—पागल

बंगण—देखो 'बंगण' (रू भे) (अमरत)

बंगणी—देखो 'बंगणी' (रू भे.)

बंगगळ—देखो 'बंगगळ' (रू भे) (अ मा)

उ०—चढिया काज चचळ, वाळि छूट बंगगळ । हरड किहाडा
हीर, माणकें वीर हमीर ।

—गु. रू. व

बेचणी, बेचनी—देखो 'बेचणी, बेचनी' (रू भे.)

बेचणहार, हारो (हारी), बेचणियो—वि० ।
बेचियोडो, बेचियोडो, बेच्योडो—भू० का० कृ० ।
बेहीजणो, बेचीजवो—कर्म वा० ।

बेचवाडो—देखो 'बेचवाडो' (रू. भे.)

बेचाणो, बेचावो—देखो 'बेचाणो, बटावो' (रू. भे.)

बेचाणहार, हारो (हारी), बेचाणियो—वि० ।
बेचायोडो—भू० का० कृ० ।
बेचाईजणो, बेचाईजवो—कर्म वा० ।

बेचायोडो—देखो 'बेचायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेचायोडो')

बेचावणो, बेचाववो—देखो 'बटाणो, बटावो' (रू. भे.)

बेचावणहार, हारो (हारी), बेचावणियो—वि० ।
बेचावियोडो, बेचावियोडो, बेचाव्योडो—भू० का० कृ० ।
बेचावोजणो, बेचावोजवो—कर्म वा० ।

बेचावियोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेचावियोडो')

बेचियोडो—देखो 'बेचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेचियोडो')

बेछणो, बेछवो—देखो 'बेचणो, बेचवो' (रू. भे.)

बेछणहार, हारो (हारी), बेछणियो—वि० ।
बेछियोडो, बेछियोडो, बेछियोडो—भू० का० कृ० ।
बेछीजणो, बेछीजवो—कर्म वा० ।

बेछियोडो—देखो 'बेचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बेछियोडो')

बेछो—स पु.—बटवारा, हिम्सा ।

उ०—हे साह रा वेटा या पण थाहरा पिता रे वासे आवी हे । ये ईणो नै बेछो माल रो घी ।
—साहकार रो वात

बेड—१ देखो 'बेड' (रू. भे.)

२ देखो 'बेडो' (मह, रू. भे.)

बेडाक—१ देखो 'बेडाक' (रू. भे.)

उ०—हद बेडाक हजारी ।
—किसनी आढी

२ देखो 'बेडो' (रू. भे.)

बेडारण—देखो 'बेडारण' (रू. भे.)

बेडूर—देखो 'बेडूर' (रू. भे.)

बेडूरज—स पु [स. बेदूर्यं] बेदूर्यमणि ।

बेडो—वि० [स. विटुण्ड] (स्त्री. बेडो) १ दातार, उदारचित्त. मौजी ।

उ०—मन जाणो सहल दियण वित मोजा, अँ दोग पण धरिया
अमठ । बेडा रो वाता इज बेडो, बेडा रा पेडा विकट ।

—अग्यात

२ अद्भुत, अनौखा, विचित्र ।

उ०—मन जाणो सहल दियण वित मोजा, अँ दोग पण धरिया
अमठ । बेडा रो वाता इज बेडो, बेडा रा पेडा विकट ।

—अग्यात

३ देखो 'बेडो' (रू. भे.)

उ०—१ मन जाणो सहल दियण वित मोजा, अँ दोग पण धरिया
अमठ । बेडा रो वाता इज बेडो, बेडा रा पेडा विकट । —अग्यात

उ०—२ छिन-छिन मँ पग चाप सून, छिन-छिन करसू चाव ।
पातर सो तो ही परा, राजद ! बेडा राव ।

—मयाराम दरजी रो वात

उ०—३ हेमरा हीस नर लसकरा कह हई, वही सिधुर कहर समर
बेडा । आहाडा खड रज-मडळ श्रोछादयो, पहाडा अगम सर सुगम
पेडा ।

—महाराजा जसवतसिंह रो गीत

उ०—४ तरै सवानद वीरम सू पूछण लागी । कहँ-ठाकुरा काहू
वात छै । तरै अँ कहै ठाकुरा काहू कहँ । कहवा तो लाज आवँ
छै । पण ठाकुरा म्हारी वेटी नू परणिया पाछँ मूडो हर्म देखाळियो
छै । सो राते सूती मेल भाज आया छै । सो बेडा हुआ छँक ? बीजी
बहू कामण कियो छै । सो हर्म राधियो धान रहसी ही, ठाकुरे !

—कल्याणसिंघ नगराजोत वाडेल रो वात

बेण—१ देखो 'बेण' (रू. भे.)

२ देखो 'बेण' (रू. भे.)

३ देखो 'बीणा' (रू. भे.)

४ देखो 'बचन' (रू. भे.)

उ०—१ सव कू बुलाया बेण अकवर साह बोलै, मेरी निसा खातरी
है तुमारै महोलै । तुम पातसाहा के सवादी सूर तै सूर, तुमारी
सिहाय आवँ मेरै मुख नूर ।

—रा. रू.

उ०—२ नैणा राम बसो हरि बेण, सकल सुखा सुख लाघा ।
सुर तेतीस घेरि घर आया, सतगुर डोरा वाघा ; —ह. पु. वा

उ०—३ वारवधु ही हरण वित, नेह जणावे नैण । यूँ सिर लेवा
ऊवरै, बेरी मोठा बेण ।

—वा. दा.

उ०—४ सुणि जोध बेण भाखत सभ, रिणमल्ल माण आणिये
रभ । वाळा वै रूक चौरग चाडि, भाखत धूम्रलोचन श्रोनाडि ।

—मा. वचनिका

बेत—स पु.—१ रीति, उपाय, प्रकार, ढग ।

२ हिसाब-किताब ।

३ माप, नाप ।

उ०—सीमाळ पंहली कानडदेजी तीरं रहती । पछे कानडदेजी जाळोर ऊपर घर कराया तिके देखण नू सीमाळ नू भेलियो नें घूरमाळ नू साथ भेलियो, सु सीमाळ मेहलायत देख क्यू वंत मैं खोड काढी । —नैणसी

४ वनावट, रचना ।

५ वघ, कावू, नियत्रण ।

६ चिन्ता, दुख ।

उ०—सूधा वचन सुणे सगळाई, साथ घेरिया गमा सिपाई । जतन सुता रहै इम जाणी, इण दुख कंद हुवी 'आसाणी' । वंत करे नह श्रीर विचारू, मार सुता मिरजा नू मारू । —रा. रू

७ अनुकूल ।

उ०—कै सूत वंत सुभ वात कजि, सोभं दूत समद रा । आवि्यास मिळ भ्रम इद्र रं, कै इळ वंदूळ इद रा । —रा. रू

८ देखो 'वंत' (रू. भे)

९ देखो 'वेत' (रू. भे)

उ०—दाखे सकव सुणी अनदाता, अमा मिळण नह भाग इसी । सारं रसी वहे तन सिडियो, कही मिळण चौ वंत किसी । —पीठवी १० 'देखो 'वंत' (रू. भे.)

उ०—पडे रोर चहु श्रीर, कणह कणह सम कीघो । वेचि वेचि नर वंत, मोभ लाघी तहा लीघो । —कीकावती रं दान री कवित रू भे —वंत, वेत ।

वंतणी, वंतघो—देखो 'वंतणी, वंतघो' (रू. भे)

वंतरणहार, हारी (हारी), वंतरणियो—वि० ।

वंतिश्रीडो, वंतियोडो, वंतयोडो—भू० का० कृ० ।

वंतीजणी, वंतीजघो—भाव वा० ।

वंताणी, वंताघो—देखो 'वंताणी, वंताघो' (रू. भे)

वंताणहार, हारी (हारी), वंताणियो—वि० ।

वंतायोडो—भू० का० कृ० ।

वंताईजणी, वंताईजघो—कर्म वा० ।

वंतायोडो—देखो 'वंतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वंतायोडो)

वंताळीस, वंतालीस—देखो 'बयाळीस' (रू. भे)

वंतावणी, वंतावघो—देखो 'वंताणी, वंताघो' (रू. भे)

वंतावणहार, हारी (हारी), वंतावणियो—वि० ।

वंताविश्रीडो वंतावियोडो, वंतावयोडो—भू० का० कृ० ।

वंतावीजणी, वंतावीजघो—कर्म वा० ।

वंतावियोडो—देखो 'वंतायोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वंतावियोडो)

वंतियोडो—देखो 'वंतियोडो' (रू. भे)

(स्त्री. वंतियोडो)

वंन—१ देखो 'वहन' (रू. भे.)

२ देगो 'वचन' (रू. भे)

उ०—१ हरीया असली असलि वन, चवै न कमसलि वन । असली जो कमसलि चवै, ती दिन वरतें रंन । —अनुभववाणी

उ०—२ हरीया अदर ऊपजै, असा निकसै वन । मिळिया सेती मन कहे, यो दुरजन यो सन । —अनुभववाणी

३ देखो 'वीणा' (रू. भे)

वंनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे)

वंन, वं स—देखो 'वहम' (रू. भे)

उ०—१ सुनार रं क्यू दरसणा मैं ही टोटी वताईजै है ? सूरज उगाळी सुनार सामी मिळै, लोग मूढी फोरें सामें सिर सळ घालें वंन रं कारण सुभ जातरा रं वखत सुनार नें अवस टाळै । बौ-आपरी मा री ही हाचळ नी छोडें । —दसदोख

उ०—२ एकर री वात, राजी रं जापें मे पोन हवा निकळणी । वावळी वडा करण लागणी । गू ग विखरें अरं तत्ता-पत्ता सू वूही वाता करं । जकें सू घर हालानें भूतणी री वंस वड गयी है । —दसदोख

वंरागर—देखो 'वंरागर' (रू. भे.)

वंसो—देखो 'वंसो' (रू. भे)

वंह—देखो 'वे' (रू. भे)

उ०—सतजुग कें पहरें मा सोनें कौ घाट, सोनें कौ पाट, सोनें कौ कळस, सोनें कौ टकौ । पाचा कोड्या कौ मुखी गुर पहळाद कळस थाप्यो, वंह कळस जस घरम हुवै, सौ ई ह कळस हुड्यो । —जाभी

वंहचणो, वंहचघो—देखो 'वंचणी, वंचघो' (रू. भे)

उ०—१ बीजा ही सवरणिया नू पूछियो । तिया कह्यो—जिकें राणी रं प्रसूत हुसी । तियै री बेटी धरती री धणी हुसी । आप राजी हुवा । मालोजी जाया । धणी हरख हुवो । धणी वधाया वंहचो । —नैणसी

उ०—२ घोडा रजपूता नू वकस दिया । एक घोडो आप राखियो । पुकार दिल्ली गई । अहदी आयो । घोडा ल्यावो । मालेजी नू जोर पडियो । घोडा मागीजे । ताहरा मालेजी आदमी मूकिया । कह्यो—चवडा घोडा ल्याव । ताहरा कह्यो—घोडा ती वंहच दीघा । —नैणसी

उ०—३ पछे नरं रं टीकें गोयद वंठी । हमें रोज लढाया पडै । धरती वसं नही । ताहरा राव सूर्जेजी गोयद नू तेढायो । पोकरण नू तेढाया । धरती आघो-आघ वंहच दीघी । कोट नरं रं साथ साटै कियो । उवं जाळ सों सीम पडै । —नैणसी

वंहचणहार हारी (हारी), वंहचणियो—वि० ।

वंहचिश्रीडो, वंहचियोडो, वंहचयोडो—भू० का० कृ० ।

वंहचोजणी, वंहचोजघो—कर्म वा० ।

बहुवाणी, बहुवावी—देखो 'बटाणी बटावी' (रू. भे.)

उ०—ग्रह वीरमजी रा कामेती दाख ऊपर बैस राति री हँसी
बहुवाइ दे । कदे सरव गोलक मेल आवे । कहै—ये सवार लेज्यो ।
जे नाहर बकरी मारें तो एक बकरी री इग्यारह बकरी ले । कहै
नाहर तो जोईया री छे । —नंगसी

बहुवाणहार, हारो (हारो), बहुवाणियो—वि० ।

बहुवायोडो—भू० का० कु० ।

बहुवाइजणी बहुवाइजवी—कर्म वा० ।

बहुवायोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बहुवायोडो)

बहुवावणी, बहुवाववी—देखो 'बटाणी, बटावी' (रू. भे.)

बहुवावणहार, हारो (हारो) बहुवावणियो—वि० ।

बहुवाविओडो, बहुवावियोडो, बहुवाव्योडो—भू० का० कु० ।

बहुवावीजणी, बहुवावीजवी—कर्म वा० ।

बहुवावियोडो—देखो 'बटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बहुवावियोडो)

बै-स पु—१ श्री कृष्ण का एक नाम । (एका.)

२ स्वर्गलोक । (एका.)

३ पति, खाविद ।

४ मालिक, स्वामी ।

५ एक प्रकार का भ्रम्य विशेष जो निश्चय या स्वीकारोक्ति के अर्थ में काम लिया जाता है । किन्तु अधिक्रायत इसका प्रयोग पाद पूर्ति हेतु भी होता है ।

क्रि० वि०—१ निश्चय ही ।

उ०—रिमां माण भूकं नही वै रण गी बढत्ताह, धण भूकं रण
भोम ही चढियां चाखडियाह । चढे रण चाखडी सामही चालियो,
भूकते भली रावसिंह ते भालियो । —हा. भा.

२ ही ।

३ भी ।

४ देखो 'वयस' (रू. भे.)

उ०—सिसु वै मितो त्रिती, उदयो पीगड मड सिगारी । ज्यो ब्र दा
रक तरय, प्रामे डाळ सगि पत्तेणम —रा. रू.

५ देखो 'वे' (रू. भे.)

उ०—१ माया जब तव ही बुरी, हरिया आदि' र अत । बडे बडे
मुनजन छळे, वै रहते एकत । —अनुभववाणी

उ०—२ ए बाढी, ए सर-केरी पाळ । वै साजण वै दीहडा, रही
सभाळ सभाळ । —डो. मा.

उ०—३ नित सवार सिभ्या वै री वै चीजा देखतां देखतां दो
री ठोड हजार आख्या व्हेती तो ई आती भाय जानी । नित वै री
वै सागं चीजा देखणा विचं ती आख्या भीच अघारी करणी उण
नं आछी लागती । —फुलवाडी

उ०—४ पण सेठा री मन तो सेठा रं वसू हो, वै ती उण दिन
सूं ई कोडया होय सील-अत धारण कर लियो । सोच्यो कं वेमाता
अर जमराज आपरै हिसाब सूं चाले तो सेठ ई आपरै हिसाब सूं
चालेला ।

—फुलवाडी

रू. भे.—वै ।

वैअखरी वैअखरी—देखो 'वैअखरी' (रू. भे.)

वैअजयत—देखो 'वैजयत' (रू. भे.)

वैअजयतिक—देखो 'वैजयतिक' (रू. भे.)

वैअजयतिका—देखो 'वैजयती' (रू. भे.)

वैअजयती—देखो 'वैजयतीमाळा' ।

वैअस—देखो 'वैस्य' (रू. भे.)

उ०—वाभन खत्री कीन है, कुन सुदर कुं वैअस । हरीया आतम
हेक है, दूजा कोय न दीस । —अनुभववाणी

वैकंठ—देखो 'वैकूठ' (रू. भे.)

उ०—वैकंठ विलासि अपुन्य प्रकासि अपार अघार अप्रम पर, निर-
कार नर मधुकटक मारण त्रिधन विडारण केवल रूप वराह करं ।
घर दाढ घर करि दैत कण कण दे, पण रामण लक लई दधि सोप
लज, अविगति अज 'हमीर' समरि हरत्रा सि निरतर, ग्रह वैहज
ग्रहि गजधज पख धज । —पि. प्र.

वैकंठनाथ—देखो 'वैकूठनाथ' (रू. भे.)

वैकंठवासी—देखो 'वैकूठवासी' (रू. भे.)

वैकक्ष, वैकक्षक, वैकक्षिक—स स्त्री. [स] जनेऊ की तरह पहनी जाने
वाली माला ।

वैकटिक—स. पु [स] रत्नों की पारख बरने वाला, जीहरी ।

वैकण—देखो 'वैकण' (रू. भे.)

वै'कणी, वै'कवी—देखो 'वहकणी, वहकवी' (रू. भे.)

वै'कणहार, हारो (हारो), वै'कणियो—वि० ।

वै'कियोडो, वै'कियोडो, वै'कियोडो—भू० का० कु० ।

वै'कीजणी, वै'कीजवी—भाव वा० ।

वैकरण—स पु [स वैकण] १ वात्स्ययुनि ।

२ एक प्राचीन जनपद ।

वैकरतन—स पु [स. वैकतन] १ कुन्ती पुत्र कर्ण का नाम ।

२ सुयं पुत्र का नाम ।

३ सुग्रीव के एक पूर्वज का नाम ।
वैकरणिक, वैकरणि—स पु [स. वैकरणिक] १ राज्य कर्मचारी विशेष ।

२ कश्यपकुलोत्पन्न वैकरणिक नामक एक गोत्रकार ।

रू भे.—वयगरणी, वयगरणु, वयगरणी ।

वैकल—देवो 'विकल' (रू भे)

वैकल्प—देवो 'विकल्प' (रू भे)

वैकल्पिक—वि [स] १ ऐच्छिक ।

२ सदिग्ध ।

वैकल्प—स पु [स] १ न्यूनता, कमी ।

२ विकलांग, लगडा ।

३ घबडाहट, व्याकुलता ।

४ अनिश्चरत्व ।

वैकाणो, वैकाणो—देखो 'वहकाणो, वहकावो' (रू. भे)

वैकाणहार, हारो (हारी), वैकाणियो—वि० ।

वैकायोडो—भू० का० कृ० ।

वैकाईजणी, वैकाईजवो—कर्म वा० ।

वैकायोडो देखो 'वहकायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैकायोडी)

वैकाळ—स पु [स वैकाल] मध्यान के बाद का समय, सध्याकाल ।

वैकावणो, वैकाववो—देखो 'वहकावणो, वहकावो' (रू. भे)

वैकावणहार, हारो (हारी), वैकावणियो—वि० ।

वैकावयोडो, वैकावयोडो, वैकावयोडो—भू० का० कृ० ।

वैकावीजणी, वैकावीजवो—कर्म वा० ।

वैकावियोडो—देखो 'वहकावियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैकावियोडी)

वैकियोडो—देवो 'वहकियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैकियोडी)

वैकुट—देवो 'वैकुठ' (रू. भे)

वैकुटनाथ—देखो 'वैकुठनाथ' (रू. भे)

वैकुट्टु—देखो 'वैकुठ' (रू. भे)

वैकुट्टुनाथ—देखो 'वैकुठनाथ' (रू. भे.)

वैकुट्टुनाथक—देखो 'वैकुठनाथक' (रू. भे)

उ०—तोरणं श्रीकम आविद्या ल्यो वेहडां वर नारि । वर वेहडु

वैकुट्टुनाथक, वदियु कर च्यारि ।

—रुमणी मगळ

वैकुठ—स पु. [स] १ भगवान् श्रीविष्णु का एक नाम ।

उ०—छिप मेघ सोभा इमो भाळ छार्जे, रवो पत हें कुंडळं क्रांति

राजे । मजे मुकुट सोभा सवा कूण भाखें, रहे मान तें ध्यानं वैकुठ

राखें ।

—रा रु

२ भगवान् विष्णु के रहने का स्थान, स्वर्ग ।—

उ०—१ राजा असभाधियो हतो । तिके राजा नू वरस १०० पूरा
हुवा । ताहरा तुरक नू जासूस जाय खबर दीनी, राजा मैहा तो श्री
प्रकार हुवो, वैकुठ प्राप्त हुवो । —राजा नरसिंह री बात

उ०—२ वैकुठ वेडो विसन डोयो, सचियार साल्हिया लेविसी ।
पारगिराय पुहुचाय भाभराय, वास निहचळ देविसी ।

—ऊदोजी नंग

उ०—३ दिज मूरत देहरा, पडे जसराज पडता, घरा गढा सिर
ढाक, चडे वैकुठ चडता । अज्या मेल इकठा, चरे सो सिध भुजाळा,
सोह लोग ससार आज ती वाज दुखाळा । —सुरजनदास पूनिथो

उ०—४ हिक सिवड पडे त्रण वारहट, सो पडिया वका सुहड ।
वैकुठ गयो 'वोठल्ल' री, अजवसाह' राखे अचड । —रा. रु.

३ देवराज ईन्द्र का नाम । ४ तुलसी का नाम । ५ रेवत मन्वन्तर
एव चाक्षुक मन्वन्तर का एक देवगण ।

रू भे —वईकुंठ, वयकुट, वयकुठ, वयकुट, वैकुठ, वैकुठ, वैकुट,
वैकुठ, वैकुठ वैकुट, वैकुठ, वईकुंठ, वयकुंठ, विकुंठ, वैकुठ,
वैकुठ, वैकुठ वैकुठ वैकुट्टु, वैकुट्टु, वैकुट्टु, वैकुट्टु, वैकुट्टु, वैकुट्टु ।

वैकुंठचतुरदसी, वैकुंठचवदस—स- स्त्री. [स वैकुंठचतुर्दशी] क्रांतिक
शुक्ल चतुर्दशी ।

वैकुठनाथ—स पु [स] १ भगवान् विष्णु ।

उ०—वैकुठ पधारी । तिरिण वेळा राजा रतन वैकुठनाथ महाराज
सू अरज करि कहिथी । महाराज आज री वेढ रा घणी राठीड ।
राठीडा माहे हू इज । मुदे मो नू कहिथी इज चाहीजे । मो साथे
वडा वडा गढपति छत्रपति कामि आया । हाडा मुकुंठमिध सारीखा ।
गौड अरजन सारीखा । मोसोत्रिआ सुजाणमिध सारीखा । भाला
दळथम सारीखा । और छत्रीस वस हिंदू सरजोत कीजे । वैकुंठवास
दीजे ।

—र वचनिका

२ देवराज इन्द्र ।

रू भे —वैकुठनाथ वैकुठनाथ, वैकुठनाथ, वैकुठनाथ ।

वैकुठनाथक—स पु [स] भगवान् श्रीविष्णु का नाम ।

रू भे —वैकुठनाथक वैकुठनाथक वैकुठनाथक, वैकुठनाथक ।

वैकुठलोक—स पु —स्वर्गलोक विष्णुलोक ।

वैकुठवास—स पु [स] १ विष्णु का एक नाम ।

उ०—अठवासी सहस रिख करे आस, वखाणें सकी वैकुंठवास ।
पाच तस महा तत रहे पास, सवारें तना प्रभु सास सास ।

—पी. प्र.

२ स्वर्ग ।

उ०—वैकुठ पधारी । तिरिण वेळा राजा रतन वैकुठनाथ महाराज
सू अरज करि कहिथी । महाराज आज री वेढ रा घणी राठीड ।
राठीडा माहे हू इज । मुदे मो नू कहिथी इज चाहीजे । मो साथे

बडा बडा गढपति छत्रपति कामि आया । हाडा मुकुटसिध सारीखा ।
गोड भरजन सारीखा । सोसोदिआ सुजाणसिध सारीखा । भाला
दळयभ सारीखा । और ही छत्रीस वस हिंदू सरजीत कीजं । बंकु ठ-
वास दीजं —र. वचनिका

मुहा.—बंकु ठवास होणी —स्वर्गवास होना, मृत्यु को प्राप्त होना ।
रू भे —बंकु टवास, बंकु ठवास ।

बंकुठवासी—स पु [स] विष्णु का एक नाम ।

रू भे —बंकुठवासी, बंकुठवासी, बंकुठवासी ।

बंकुठविलासी—स पु [स.] १ विष्णु का एक नाम ।

२ ईश्वर ।

रू भे —बंकुटविलासी, बंकुटविलासी, बंकुठविलासी ।

बंकुठि, बंकुठी—स स्त्री [स बंकुठ+रा प्र ई] १ पालकीनुमा रथी,
जिसे सजा कर उसमे शव को बँठा कर श्मशान भूमि में ले जाते
हैं ।

२ देखो 'बंकुठ' (रू भे.)

उ०—साम्ही सारि दखिण घड साम्ही, निवहि मुहरि चालियो
निराट । सादूळो बंकुठि गो सुधी, बंकुठ तणी न भूलो वाट ।

—खेतसी लाळम

रू भे.—बंकुंटी बंकुंठी, बंकुंटी, बंकुंटी, बंकुंठी ।

बंकुट—देखो 'बंकुंठ' (रू. भे.)

बंकुटनाथ—देखो 'बंकुटनाथ' (रू भे.)

बंकुटनायक देखो 'बंकुटनायक' (रू भे.)

बंकुटवास देखो 'बंकुटवास' (रू भे.)

बंकुटविलासी—देखो 'बंकुठविलासी' (रू. भे.) (ना मा)

बंकुंटी—देखो 'बंकुंठी' (रू भे.)

बंकुठ—देखो 'बंकुठ' (रू भे.)

उ०—१ अम्मरा बघायो लोक सरायो बंकुठ वाळो, सूरु थोक
थायो वेद रचायो सरव । आवा काम परा हूत पठी घोडे चाल
आयो, पायो 'जालमेस' हुता सवायो परब । —प्रभूदान मोतीसर

उ०—२ त्रीहा न बोले भूठ, लवणा भूठ न साभळ । वरजं कुण
बंकुठ, माघव दरगह मोतिया । —रायसिंह सादू

उ०—३ काल किसी सारै नहीं मारै सुलटी मूठ । हरीया हरि-
जन ऊवरै, उलटि चडै बंकुठ । —अनुभववाणी

उ०—४ जळ चादरु की घरहर तमासै का विसतार । सो कंसी,
बंकुठ सँ छूटी जाणि गगा हजार धार । छछोहे भाव गहर फौहारा
छूटे । जमी सँ मेव जाणि असमान सँ जुटे । —सू प्र.

बंकुंठनाथ—देखो 'बंकुटनाथ' (रू भे.)

बंकुठनायक—देखो 'बंकुठनायक' (रू भे.)

बंकुठवास—देखो 'बंकुंठवास' (रू. भे.)

बंकुठवासी—देखो 'बंकुठवासी' (रू. भे.)

बंकुठविलासी—देखो 'बंकुठविलासी' (रू भे.)

बंकुंठी—देखो 'बंकुंठी' (रू. भे.)

बंकुठ—देखो 'बंकुठ' (रू भे.)

उ०—मह आदसर सुण वचन मोह, तारें न उचित अब क्रोध
तोह । करनला' कयो सुणियो न कान, बंकुठ भेरव मुख चोळ-
वान । —रामदान लाळस

बंकुयसरीर—देखो 'बंकुयसरीर' (रू. भे.) (जैन)

बंकुठ—देखो 'बंकुठ' (रू. भे.)

बंकुठमणि, बंकुठमणी, बंकुठमिण—स स्त्री [स बंकुठमणि]
एक प्रकार का रत्न विशेष ।

बंकुठ—स, पु स — वह जिस में छोटे, बड़े, एक अनेकादि रूप बनाने
की शक्ति हो (जैन)

बंकुठ-लव्धि—स स्त्री [स] वह लव्धि जिस के प्रभाव से छोटे बड़े
आदि विविध रूप बनाये जा सके । (जैन)

उ०—आंमोसहि, विष्पोसहि, खेलोसहि, सब्बोसहिलव्धि बंकुठ-
लव्धि । —व स.

वि वि मनुष्य और तियंचो फो यह लव्धि तप आदि, क आचरण
करने से प्राप्त होती है ।

बंकुठसरीर—स पु [स. बंकुठसरीर] १ देव और नारकी जीवो का
शरीर । (जैन)

२ वह शरीर जिसमें हाड, मांस, लोही आदि न हो और मृत्यु के
पश्चात कपूर की तरह बिखर जाता हो । (जैन)

बंखरी—स स्त्री [स] — १ चार प्रकार के नाद (स्वर) में एक प्रकार
का नाद जो कठ से उच्चरित माना जाता है ।

उ०—१ पराचित चितवन करे, पस्यती मनन मनार । मध्यमा
लखत व्यवहार कृ बंखरी ऊग्रहकार । —सीहरिरामजी महाराज

उ०—२ मूळधार मे परा नाद है जाणिये, स्वाधिस्थान मे पस्यती
पहचानिये हृदय स्थान मध्यमा, वदन मे बंखरी । —साधक सुधा

२ वाक्शक्ति ।

३ वाग्देवी, सरस्वती ।

४ बोलने की शक्ति ।

बंखानस, बंखानसि—स पु [स बंखानस] १ दानप्रस्य आश्रम का
व्यक्ति ।

२ वराह रूपी भगवात् श्रीकिष्णु का नाम । यह रूप पातालवासी
हिरण्यक्ष के वव के लिए धारण किया था ।

३ चणक नगरी का राजा, जिसने अपने पिता के उद्धार के लिए
उन्हें मार्गशीर्ष शुक्ल द्वयारस के व्रत का पुण्य दिया था ।

२ एक प्रकार के ब्रह्मचारी या तपस्वी ।

रू. भे.—विलानस ।

वैग—देखो 'वैग' (रू. भे.)

उ०—१ जल जाई जल ऊपनी, जल तेरा विसराम । हरिया जम लै जावसी, वैग सिवरिये राम । —अनुभववाणी

उ०—२ सांभिक सभ स्वार क्या करत नर वावरा, वैग भजि वैग हरि दाव आई । दास हरिराम तन खाक मिळ जाहिगै, चूक सब जाणि जुग चतुराई । —अनुभववाणी

वैगरणी—देखो 'वैगरणी' (रू. भे.)

वैगरणी—वि०—प्रबन्ध करने वाला, प्रबन्धक ।

उ०—वैगरणां वैगरणा मुहुता, साद फरई सुआर । दोमी दल की सक्या आणइ, माहइ चक्र-तलार । —रुकमणी मगळ

२ देखो 'वैगरणी' (रू. भे.)

वैगलेय—स. पु [स] भूतो.का एक गण विशेष । (पुराण)

वैगाण—देखो 'वैग' (रू. भे.)

उ०—गुटकाण सीदाण विमाण पराछक तणी गत, नाव तीराण देधाण षणै । पुखराण वैगाण प्रमाण पराछक, वात वसे विडगाण भणै । —किसनजी दघवाडियो

वैगागळ, वैगागळी—देखो 'वैगागळ' (रू. भे.)

उ०—राठोडा सींह बधी, बधी सोह हिंदुसथाना, वरकरार नव कोट, हसम राखिया खजाना । दिल्लीवे सुरताण, वाज वका वैगागळ, सूटी लै भेलिह्या, जूह मद वहता मंगळ । —गु. रू. व

वैगायन—स. पु [स] भुगु के कुल में उत्पन्न एक गोत्रकार ।

वैगार—देखो 'वैगार' (रू. भे.)

वैगाळ, वैगाळी—१ देखो 'वैगाळ' (रू. भे.) (अ. मा.)

२ देखो 'वैगाळ' (रू. भे.)

वैगौ—देखो 'वैगौ' (रू. भे.)

उ०—१ मा कह्यो—वेटा महाराज उतावळ करै छै । सतावी करि घरे हाली । ताहरा कुंवर कह्यो—माजी वैगा ही हालस्या । आडी कभी वाता करि ठठियो । आपरे जनाने गयो । घोळ गुवा आणि मुजरी कियो । राग-रग हुवा, हसिया, खेलिया, पीडिया ।

—पलक दरियाव री वात

उ०—२ एक वीर स्त्री आप रा पती ने कह रही है—हे पती आज आपरो वैगौ रात्री वदीत हुवा विना ही जागणी और चर (चरवादार) घोडा ने वैगौ कसियो तिणसू म्हनें उनमाने होवे कै है थारा कोई पाहुणा मिळिया है ।

—वी. स. टी.

वैग्यानिक—वि० [स. वैज्ञानिक]—१ विज्ञान का ज्ञाता । २ विज्ञान का,

विज्ञान सस्त्रन्धी । ३ प्रयोगों द्वारा नये ज्ञान सूत्र की खोज करने वाला ।

वैङ्, वैङ्, वैङ्की, वैङ्की—देखो 'वैङ्' (रू. भे.)

वैङ्डी, वैङ्डी—१ देखो 'वैङ्डी' (रू. भे.)

२ देखो 'वैङ्डी' (रू. भे.)

३ देखो 'वैङ्डी' (रू. भे.)

उ०—१ राजा बळ समभाय कहाँ—वेटा, थारी मसा परवाण वैङ्डी राजकवरी रा तौ. कठे ई वावडी ई नी चिह्या । अवे थूँ के ज्युँ करू । म्हारो कैणी मान अर व्याव सारू हुकारो भर दे ।

—फुलवाडी

उ०—२ उणियारी वतावण सारू सिरदार सुभट नटग्या । कहाँ कै. वैङ्डी दुस्ती रो तो मूडी देत्या ई पाप लागे भेटका व्हेता ई भटकी । दोय ढोल नी करा जित्त चैन नी पडै । —फुलवाडी (स्त्री वैङ्डी)

वैचणी, वैचवी—देखो 'वैचणी, वैचवी' (रू. भे.)

वैचणहार, हारी (हारी), वैचणियो—वि० ।

वैचियोडो, वैचियोडो, वैचियोडो—भू० का० कृ० ।

वैचौजणी, वैचौजवी—कर्म वा० ।

वैचवाडो—देखो 'वैचवाडो' (रू. भे.)

वैचाणी, वैचावी—देखो 'वटाणी, वटावी' (रू. भे.)

वैचाणहार, हारी (हारी), वैचाणियो—वि० ।

वैचायोडो—भू० का० कृ० ।

वैचाईजणी, वैचाईजवी—कर्म वा० ।

वैचायोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैचायोडो)

वैचावणी, वैचाववी—देखो 'वटाणी, वटावी' (रू. भे.)

उ०—थारा बीरोसा कागद मेहलियो । आध (ए) वैचावण घरे आवी श्री जूभारजी. ऋणडे किये विघ जूजिया ।

—जूभारजी रो गीत

वैचावणहार, हारी (हारी), वैचावणियो—वि० ।

वैचाविओडो, वैचावियोडो, वैचावयोडो—भू० का० कृ० ।

वैचावीजणी, वैचावीजवी—कर्म वा० ।

वैचावियोडो—देखो 'वटायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैचावियोडो)

वैचियोडो—देखो 'वैचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वैचियोडो)

वैद्यग—वि०—चपल, चचल, उछू खल ।

उ०—उभै सहस अठसठ घुज उतग, घोस सहस, हैमर घुज-वैद्यग ।

निज पीसाक सु केसरि नीखा, जबहर अतर भ्रिगमद जीखा ।

—सू प्र

बंदरा, बंदराय—देखो 'बहुराय' (रू भे.)

बंदराड—देखो 'बंदराड' (रू भे.)

बंदराणी, बंदराचो—देखो 'बंदराणी, बंदराचो' (रू भे.)

बंदराणहार, हारो (हारी), बंदराणियो—वि० ।

बंदरायोडो—भू० का० कृ० ।

बंदराईजणो, बंदराईजचो—कर्म वा० ।

बंदरायोडो—देखो 'बंदरायोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बंदरायोडो)

बंदरावणो, बंदरावचो—देखो 'बंदरावणो, बंदरावचो' (रू. भे.)

बंदरावणहार, हारो (हारी) बंदरावणियो—वि० ।

बंदराविमोडो, बंदरावियोडो, बंदरावियोडो—भू० का० कृ० ।

बंदरावोजणो, बंदरावोजचो—कर्म वा० ।

बंदरावियोडो—देखो 'बंदरावियोडो' (रू भे.)

(स्त्री. बंदरावियोडो)

बंजत—देखो 'बंजयत' (रू भे.)

बंजती—१ देखो 'बंजयती' (रू भे.)

२ देखो 'बंजयतीमाळा' (रू भे.)

बंजतीमाळ, बंजतीमाळा—देखो 'बंजयतीमाळा' (रू. भे.)

उ०—१ चक्र सामि सख सामि पदम पति अना गदापति, प्रीतवर पगरण भला फाविति इसी मति । महि कट भेखळ कहै कानि मकराइ कि कुंडळ, उरि बंजतीमाळ रिदै कुस्टामिणि कमळ ।

—पी प्र

उ०—२ सख चक्र पदम रू गदा, उर बंजतीमाळ । मोर मुकुट कट काछनी, प्राचो सुदर लाल ।

—गजउद्धार

उ०—३ बंज तीमाळा, अधिक विसाळा, कौस्तभ मणि सोहदा हे ।

अगुलता छाजं, विविध विराजं, प्रति ही रूप अनदा हे ।

—गज-उद्धार

बंज—देखो 'बंज' (रू. भे.)

बंजणती—१ देखो 'बंजयती' (रू. भे.)

२ देख 'बंजय तीमाळा' (रू भे.)

बंजनाथ—देखो 'बंजनाथ' (रू भे.)

उ०—राठीड कू पी महिरजोत बन्ही दातार, आखाडसिध रजपूत सीबंजनाथ महादेव रौ अतार, वरस ३५ में काम आयी । इतरा प्रवाडा ती प्रसिद्ध कू पाजी रा छै । —राव मालदे री वात

बंजभत—स. पु. [स बंजभूत] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।

बंजयंत—स. पु. [स.] १ देवराज इन्द्र ।

२ देवराज इन्द्र का राजभवन ।

३ इन्द्र का झंडा, पताका ।

४ झण्डा, पताका ।

५ तिमिध्वज की राजधानी का नाम ।

६ घर मकान ।

७ क्षीरसागर के मध्य का पर्वत ।

रू भं.—बंजयत, बंजयंत, बंजंत ।

बंजयतिक—सं. पु. [स] ध्वजा या पताका को उठाकर चलने वाला ।

रू भे.—बंजयतिक ।

बंजयतिका—१ देखो 'बंजयती' (रू भे.)

२ देखो 'बंजयतीमाळा' (रू. भे.)

बंजयती—य स्त्री [स] १ ध्वजा, पताका, झण्डा ।

२ चिन्ह, लक्षण ।

३ एक प्रकार का पीघा विशेष, जिसके हाथ-हाथ भर लम्बे एव चार-पाच अंगुल चौड़े पत्ते एव कई बलो के फूल होते हैं ।

४ देखो 'बंजयतीमाळा' (रू भे.)

रू भे—बंजती, बंजयती, बंजयती, बंजयतिका, बंजयती बंजती ।

बंजयतीमाळ, बंजयतीमाळा—स स्त्री [स बंजयतीमाला] १ मोतियो आदि का हार ।

२ पाच रंगों की छुटको तक लटकती हुई एक प्रकार की माला, जिसे कृष्ण भगवान् पहनते थे ।

३ भगवान् श्रीविष्णु की माला ।

उ०—ब्रह्मा विसन महेश इद्र सुर साथे विराजमान हुआ छै ।

आप विसन चत्रभुजस्व धारि । वागा वणाउ करि । सख चक्र गदा पदम धारि । बंजयतीमाळा मोर मुकुट कुडळ विसाल मदन

सोहन कमळलोचन स्यामसुदर ठाकुर विराजमान हुआ छै ।

—र. वचनिका

रू भे—बंजती, बंजतीमाळ, बंजतीमाळा, बंजयती, बंजयतीमाळ, बंजयतीमाळा, बंजयती बंजयती, बंजतीमाळ, बंजतीमाळा, बंजयती ।

बंजयिकी-विद्यान्याय-स पु [स बंजयिकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४ प्रकार की बलाओं में से एक प्रकार की कला विशेष ।

बंजो—स पु—घोड़ों का एक प्रकार का रोग विशेष, जो मुरचो 'पर होता है ।

(घा हो.)

बंड—देखो 'वेड' (रू. भे.)

उ०—परभोम लई समदा लगै, राठीडा साका रहे । गळहत्य बस गोहिला तणीं, बंड खड्ग गहि सप्रहे ।

—गु रू व.

बंडणी, बंडचो—देखो 'बंडणी, बंडचो' (रू भं.)

उ०—पाडवा नीली पलाण, असी घोडे राव आण । वंदते उमे
विकास, आंग्ति जिसे उचास । —गु. रु. ब

वंडणहार, हारी (हारी), वंडणियो—वि० ।

वंडियोडो, वंडियोडो, वंडयोडो—भू० का० कृ० ।

वंडोजणो, वंडोजवो—कर्म वा० ।

वंडव—स पु [स] वसिष्ठ ऋषि का पंतुक नाम ।

वंडाक—१ देखो 'वंडाक' (रु भे)

२ देखो 'वंडी' (रु. भे)

वंडाळव्रत—स पु [स विहालव्रत] एक प्रकार का ढोग विशेष, जिसमे
दिवावे के लिए माधु (सज्जन) बनकर छुपे रूप मे पाप व कुकर्म
किये जाते हैं ।

वंडाळव्रति, वंडाळव्रती—वि० [स. विहालव्रती] १ पाप एव कुकर्म करते
हए भी साधु बना रहने वाला ।

२ ढोग रचनेवाला, ढोगी ।

वंडियोडो—देखो 'वेडियोडो' (रु भे.)

(स्त्री वंडियोडो)

वंड्यो—स पु —खराब कलिन्दा ।

वंडूरधपरवत—स. पु [स वंडूर्यपवंत] एक पवंत जो गोकर्ण तीर्थके
समीप स्थित ।

वंडूरध वंडूरधमणि, वंडूरधमणी—देखो 'वंडूरधमणि' (रु भे.)

उ०—मरकत करकेतन पद्मराग पुस्पराग वज्र वंडूरध सूरचकात
चद्रकात नील महानील इद्रलील सवकर विभकर ज्वरहर रोगहर
सूलहर विरहर हरिन्मणि चूनडी लोहीताक्ष मसारगल्ल हसगरन्म
पुलक अक अन्न अरिस्ट चिंतामणि । —व स

वंटीच्योडे—वि —घबराया हुआ, विचलित हुआ हुआ ।

उ०—पेमजी बोल्या—भाया तणी भीड, भायिला भाजे नही ।
लोग वृडी कंवे' ... बीच मे ही दलाल बोल उठयो—आपणी
वडाई पछे कराला, पैली रिपिया ल्यावो, काम पक्की घणावा ।
पेमजी वंटीच्योडे राज री रकम रा आयोडा ढाई हजार रिपिया
री थेली भरियोडो मेल दी, दलाल देवता रे भागी वगा नाथी घर
कंयो—की चता ले जाची सा । —दसदोस

वंड—देखो 'वेड' (रु भे)

उ०—हाथी लक्षमन हेत, वळियो वंड लगायकं । चित उत धरियो
चंत, मिळवा नामण माणवा । —गज-उद्वार

वंडक—देखो 'वेडक' (रु भे)

उ०—कर्म होत जो ऊंठे 'अजमाल' वंडक अकळ, लडण तेडक
गळा दळा लाही । साजती नही अमपेल 'अडतीह' नु, हामटे सेल
ऊंठेल हाही । —बद्रीवास खिडियो

वंडगरी, वंडगारी—देखो 'वेडीगारी' (रु भे)

वंडणी, वंडवी—देखो 'वेडणी, वेडवी' (रु भे.)

वंडणहार, हारी (हारी) वंडणियो—वि० ।

वंडियोडो, वंडियोडो, वंडयोडो—भू० का० कृ० ।

वंडोजणो, वंडोजवो—कर्म वा० ।

वंडमण, वंडमणी—देखो 'वेडीमणी' (रु भे)

वंडमल, वंडमल्ल—देखो 'वेडमल' (रु. भे.)

वंडमी—देखो 'वेडमी' (रु भे)

वंडली—देखो 'वेडली' (रु.)

वंडियोडो—देखो 'वेडियोडो' (रु भे.)

(स्त्री वंडियोडो)

वंडीणार—देखो 'वेडीगारी' (रु. भे.)

वंडीमण, वंडीमणी—देखो 'वेडीमणी' (रु. भे)

उ०—मूखा रा वळाका दीघा सीसोद गनीमा मार्ये, धूर हास
तमासे मुनिद्र रीघा धीर । म्यान हू उखेलताई कीघा खाग तेडीमण,
वंडीमण मेलताई कीघा महावीर । बद्रीवास खिडियो

वंडीमल, वंडीमल्ल—देखो 'वेडमल' (रु भे)

वंण—स पु [स. वचन] १ स्तुति, वन्दना ।

उ०—राघव रयणायर रसा, सेस महेस्वर वंण । सुरणे वधायी गिरि-
सुता, सी ह्वी सी मुख वंण । —वा दा.

२ देखो 'वेण' (रु. भे) (अ. मा.)

३ देखो 'वीण' (रु भे)

उ०—रति रयण सुदि नर नारी रामति, गाळि प्रमदति गावही ।
मुख गान दिन निस स्वाम मगळ, वंण चग वजावही । —रा. रु.

४ देखो 'वीणा' (रु भे)

उ०—१ तिसा वंण स्त्रीमडळ जत्र ताल, सहनाय वसी अन सीस
ढाल । सुधा कुंडळी खजरी चग सोहे, वजे चंग मिरदग सोभा
विमोहे । —रा रु

उ०—२ घूघरा तणा भरणाट हय घमाघम, वंण रा तत्र तरणाट
वाजे । नकीवा वोल हरणाट हय नोवता, गयणाघर मवद गरणाट
गाजे । —खेतसी वारहठ

५ देखो 'वेणी' (रु भे)

६ देखो 'वहन' (रु भे)

७ देखो 'वचन' (रु. भे)

उ०—१ उदियागर उगियो. इदु राका अवरिचा, रग कुरग रहणी,
पाव वाधी अरचा । कोल सेम भूतेस, वंण सुर वचन चवीजे, विद्या-
वत बुधवत, कह्यो तुम तुम्हा कहीजे । —कोल्हजी चारण

उ०—२ या विचार वंण वोल, तेज सूं समसेर तोल । मूळ कं
रोम व्योम कू उट्टे, रान कं आए जम रान से रुट्टे । —रा. रु.

उ०—३ करण अखियात चढियो भला कालमी, निवाहण वैण भुज वाधिया नेन । पवारा सदन वर-माळ सू पूजियो, लळा किर-माळ सू पूजियो खेत ।
—वाकीदास आसियो

उ०—४ रज पळटें दिन ही घटे, सूर पळट्टें छाह । सूर हवा वोलिया, वैण पळट्टें नाह ।
—राव रिणमल री वात

उ०—५ चित वडपण सुभ चितवण वजर लीक सम वैण । गाढ स्यामघ्नम धरण गह, रहण 'पती' दिन रेण । —जंतदान वारहूठ

उ०—६ तू मोटी महमाड, धरम धरि ऊपरि धरणी । वध वाणी दे व्रण, कृपा करि हे कुडळणी ।
—पी प्र

उ०—७ सुरग न देखू अपणा नेणा, ती न पतीजूं गुर का वैणा । सुरग दिखळ तेरे ताई, सुरग गयी मन फेरें नाही । —वीलहोजी

वैण्डव, वैण्डव-स पु [स वैणी-दण्ड] १ एक प्रकार का सर्प विशेष ।

उ०—गढा भूखियो कामरी हाम गाढी, दिनी मूख वळ पाण सत्ताण दाढी । पौरस्सै तरस्सै उसस्सै प्रचड, विकस्सै हुसै ऊप्रसे वैण्डव ।
—गु रु व.

२ देखो वैणीदः (रु. भे)

वैणन-स पु. [म वैणन.] श्वान, कुत्ता । (ह ना मा)

वैणव-वि [स] वास का, वास सम्बन्धी ।

स पु [स वैणव] १ वास का बीज या फल ।
२ विश्वामित्र के वंशज एक गोत्रकार ऋषि का नाम ।
[स वैणव] ३ वास का डडा विशेष, जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है ।
रु. भे —वैणव ।

वैणवी-स स्त्री [स] १ वंशलोचन ।

[स वैणविन्] २ वंशी वजाने वाला व्यक्ति ।

३ शिव, महादेव ।

वैणसगाई—देखो 'वयणसगाई' (रु. भे)

उ०—वैणसगाई वरशिया, अगण दधखर खैर । थई सगाई जेण थळ, वळे न रहियो वैर ।
—र ज प्र.

वैणा—देखो 'वैणा' (रु. भे)

उ०—वैणा पुस्तक धारिणी, काममीर कदरि वसति, गीत नाद गुण गाह, दिवण देखि कवियण दिवति । —अ वचनिका

वैणार्चणी—देखो 'वोलचाल' ।

उ०—तद इण कही, और ती मुऊ कु कोई न राखे, पिएण एक देपाळ राखेगा । तद पातसाह कही, ती भला जाई । तद पातसाह ती और हुरम पासै गयी । तद राते आ सुखपाळ चढ नै देपाळ रे गई । आई नै कही, देपाळ नुं कहायो, मै पातसाह सुं वैणावैणी

हुई तै पगा हू अठे तोनु तक नै आई छु । जं रजपूतपणी डावै छै ती मोनुं राख ।
—देपाळघघ री वात

वैण, वैणी—१ देखो 'वैणी' (रु. भे)

उ०—१ वैण माग उतवग गूथ वैणी मोताहळ मिळ मङ्गए । सिणगार असुरा छळण समहर, सगति अदभुत सङ्गए ।
—मा वचनिका

उ०—२ विक-वाण जाण वैणी पनग, हिरणाखी हुंसा-गमणि । रग-महल सिध राजान सुर, रमति राज-पुत्री रमणि ।
—गु. रु. वं.

उ०—३ लोयण चचळ चपळ, अचळ घू जिस मन धारण । कडि मयद मुख इद्र, दीरघ वैणी अहि वारण ।
—गु. रु. वं.

उ०—४ केहरि जिम कडि क्रिस्त, लगति चालती गजिद्रह । सोभति वैणी सरप, हरे धीरज्ज खगिद्रह ।
—गु. रु. व.

२ देखो 'वहणी' (रु. भे)

वैणीडव, वैणीदव—देखो 'वैणीडव' (रु. भे)

वैणी-स पु —१ वढई का एक प्रकार का शोजार विशेष ।

२ देखो 'वैणी' (रु. भे)

वैणी—देखो 'वहणी' (रु. भे.)

वैणी, वैणी—१ देखो 'वहणी, वहणी' (रु. भे.)

उ०—अरु नरसिध पण वीकैजी मार्ये आयो, नै तरवार कवरजी नूं वाही सू वगतर कटने खंवे रे भरपट सी लागी । समचे वीकैजी कयी, 'नरसिध, तरवार यूं वंहे ।' इसी कहने तरवार वाही सू नरसिध रा दोय घड हुवा ।
—द. दा

२ देखो 'होणी, होणी' (रु. भे)

वैणी, वैणी—१ देखो 'वहणी, वहणी' (रु. भे)

२ देखो 'होणी, होणी' (रु. भे.)

वैण्ड-स पु —१ अष्ट वसुओं में आपका एक पुत्र ।

२ देखो 'वैण्ड' (रु. भे)

वैण्डी-स. पु [स वैण्डी] एक प्राचीन ऋषि । (पुराण)

वैण्ड्य-स पु [स वैण्ड्य] धायु राजा का एक पुत्र, राजा ।

वैण्ड-स पु —१ सवारी, वाहन ।

२ ऊट ।

उ०—मारवाड रा माणस च्यारसी मारिया गया । नै असवाव वैतां वगेरे सारी लूटियो । अरु रावली री आण फेरी । इण तरें दिन १५ तथा २० मारवाडा रा थाणा सरव मार चढाया । नै कई भाज गड में पैठा ।
—द. दा.

४ वह गद्य-पद्य रचना, जिसमें अनुप्रासो व समासो की अधिकता हो ।

उ०—सू लिखियो नही तद आलमगीर पाखी वध करघो । पात-साहजी तिसा भरता री ज्यान कवज होखी लागी । तद साजिहांन जी कथी, 'लावो भाई रजुनामा लिख दें ।' जब दवात-कलम हाजर किया । पीछे पातसाहजी कलम हाथ लेकर कागज में आ वंत लिखी ।
—द. दा.

५ नियम, प्रण, प्रतिज्ञा ।

६ दाव, पेच ।

७ गुरुमत्र ।

८ लता, वेल ।

९ देखो 'वंत' (रू. भे.)

१० देखो 'वेत' (रू. भे.)

११ देखो 'वंत' (रू. भे.)

उ०—१ जब राजा कह्यो, 'तू सोमवार रँ दिन थारी वंटी री स्थयवर कर । खरं गळं माहै हयणी फूला री माळा घाते, तँनू परणाय दे ।' तद आ वात मुहूर्त पण कबूल कीवो । कही 'बीवाह ईयं ही ज वंत करसां ।
—हसराज बछराज री वात

उ०—२ भेलि परवांन मान महाराज कीघा मन्हें, लोपियो हुकम करतूत लहसी । हुई सहकी कहे हाक में हाकमी, रेत वर वंत दुस्ट दूर रहसी ।
—घ व. प्र.

रू. भे.—वंत, भेत, भंत, वंत, वेत ।

वंतड़—देखो 'वंतड' (रू. भे.)

वंतरणी, वंतबी—देखो वंतरणी, वंतबी (रू. भे.)

वंतरणहार, हारो (हारी), वंताणयो—वि० ।

वंतिभोडो, वंतियोडो, वंतघोडो—भू० का० कृ० ।

वंतीजणो, वंतीजवो—कर्म वा० ।

वंतनिक—स पु. [स वेतन+इक प्रत्य] वेतन लेकर कार्य करने वाला व्यक्ति, नोकर ।

वंतर—१ देखो 'वेतर' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यतर' (रू. भे.)

उ०—१ हेकठा हुमा बळितणै हेत, पळहारी वंतर भूत प्रेत । खेचरा भूचरा खंत पाळ, काळिका पुत्र भैरव ककाळ ।
—गु रू. ब.

उ०—२ भूत प्रेत पेसाच, बहत चेडा वह वंतर । वीर सिद्ध वंताळ निसाचर भूचर खेचर ।
—गु रू. ब.

वंतरणि, वंतरणी—स. स्त्री. [स] १ उडीसा प्रान्त मे बहने वाली एक पवित्र नदी ।

२ पितृलोक से बहते समय गंगा नदी का नाम । (पुराण)

३ बमराज के द्वार पर (नरक पे) बहने वाली एक नदी ।

(गरुड पुराण)

उ०—घवळ न अटकें घुर वहे, कासू पांणी कोच । इण री जननी तारही, वंतरणो रँ वीच ।
—वां. दा.

वि० वि०—कहा जाता है कि उक्त नदी मे जल की जगह गर्म लोह, अस्थि, मज्जा आदि तेज प्रवाह से बहता है । यह नदी मरने के बाद जीवात्मा को पार करनी पडती है । इसमे से ग्राहण को गो-दान करने वाला धर्मात्मा ही पार हो सकता है एव पापी को इसे पार करने में कठिनाई होती है और दुख भोगना पडता है । यह नदी सती के वियोग से जो अश्रुधारा शिव के नेत्रों मे बही उसी से बनी थी । इसका विस्तार दो योजन है ।

४ दान मे दो गई वे वस्तुए जो परलोक मे उन्हीं वस्तुओं को प्राप्त करने की अभिलाषा से दी जाती हैं ।

५ देखो 'वेतरणी' ।

रू. भे —वेतरणी, वंतरणी, वेनरणी, वेयरणी ।

वंतरणीग्यारम, वेतरणीएकादसी, वेतरणीग्यारस—स स्त्री [स. वं-तरणी एकादशी] मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी ।

वंतरणी, वंतरबी—देखो वंतरणी, वंतबी (रू. भे.)

वेतरणहार, हारो (हारी), वंतरणियो—वि० ।

वंतरिभोडो, वंतरियोडो, वंतरघोडो—भू० का० कृ० ।

वंतरीजणो, वंतरीजवो—कर्म वा० ।

वंतरियोडो—देखो 'वंतियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. वंतरियोडो)

वंतवार—वि०—मूर्ख, नासमझ । (अ मा)

वंतांडारूपा—स. स्त्री —विकृत रूप धारण करने वाली देवी ।

उ०—सीकोतर सोमया तु सुधीर, वंतांडारूपा विकट वीर । सीव-रघां सीघा धातु सभेव अहिमुखा मुगट फंसाजु भेव ।
—रामदांन साळस

वंताढच, वंताढचगिरि—सं. पु —एक पवंत का नाम ।

उ०—व्रत दीरघ वंताढच, वीस सत्तरसी आढच सत्तर मडा नदी ए पच चूला सदीए ।
—वृस्त

वंताणो, वंताबी—देखो 'वंताणी, वंताबी' (रू. भे.)

वंताणहार, हारो (हारी), वंताणियो—वि० ।

वंतायोडो—भू० का० कृ० ।

वंताईजणो, वंताईजवो—कर्म वा० ।

वंतायोडो—देखो 'वंतायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वंतायोडो)

वंताळ, वंताल—स. पु. [स.] १ व्यास की ऋकशिष्य परंपरा में से जातु-कर्ण आचार्य का शिष्य ।

२ देखो 'वैताल' (रू. भे.)

उ०—१ ग्रहके तूर प्रवाल, चड कळिचाळ कृहकके । वके वीर
वैताल, ग्रीध वैताल गहकके । —सू. प्र.

उ०—२ वीग्मं वैताल, खिले खेतपाळ । कटक्का कसस्सं, सुभट्ट
सनस्सं । —गु. रू. द.

उ०—३ भूत प्रेत पेसाच, बहुत चेडा वह वेतर । वीर सिद्ध वैताल
निसाचर भूचर छेचर । —गु. रू. व

उ०—४ वंताल वीर मिळिया विहद, सीकीतरि साफणि महा सद् ।
मिळ समळ ग्रीध आमख भक्क, जबक्क रीछ चड्ढाक जक्क ।
—गु. रू. व.

वैतालरस, वैतालरस—स पु [स] गृधक, मिर्च श्रीर हरताल के योग
से बनने वाला एक प्रकार का रस विशेष । (वैद्यक)

वैतालिक, वैतालिक—स पु [स वैतालिक] १ राजाश्रो भादि की उनकी
कीर्तिगान करके जगाने वाला व्यक्ति भाट, बन्दीजन ।

उ०—प्रभात समठ हुच, अघकार फीटद, गाय तणा गाला खूटा,
तारागण विरल हुच चद्रमा विच्छाय थिउ, कूकडा तणो उलि लवद,
देव तणा वार ऊघडिया, प्रभातिक तूरथ वाजिया, राजभवनइ
वैतालिक पढद, विलोणा तणा भरडका ऊपजइ, पथिक मारणि
थया, ग्राहाण तणं घरि वेदध्वनि विस्तरि, धारमिक लोक प्रतिक्रमण
पर हुप्रा । —व स.

वि० वि०—ये लोग राजाश्रो को किसी विशेष घटना, बात आदि
की सूचना देने का कार्य करते थे ।

२ व्य स की ऋकशिष्परपरा में से शाकधुग्नि नामक आचार्य का
एक शिष्य

रू. भे —वैतालिक, वैतालिक, वैतालिक ।

वैतालिकीविद्याग्यान—स स्त्री. [स. वैतालिकीविद्याज्ञान] ६४ कलाश्रो मे
से एक ।

वैताली—स पु [स. वैताली] १ स्वामी कार्तिकेय का एक अनुचर ।

२ देखो 'वैताल' (रू. भे.)

उ०—काज माळी, कमाळी, उताळी फिरे माहाकाळी, नचे, आळी
जाळी वीर वैताळी निसक । ताळी वाज अरावा सावात जाळी
नराताळी, लाघडे, प्रजाळी जाणुं हेकं साथ लक ।
—किसनजी आढी

वैतालीस, वैतालीस—देखो 'वंयाळीस' (रू. भे.)

उ०—पनरसं वैतालीस कोडीरे, अडमन्न लख अघिके जोडी ।

छत्तीस सहस अघिक-कही रे, प्रतिमा सगली सरद हीर्य रे ।
—वृस्त

वैतियाण—वि —समथुं, सामथ्यवान् शक्तिशाली, बलवान् ।

रू. भे.—वहतीवाण, वैहतीवाण ।

वैतियोडी—देखो 'वैतियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. वैतियोडी)

वैतुड—देखो 'वितड' (रू. भे.)

वैतुल—स. पु —घोडा, अश्व । (ना. डि. को.)

वैत्रासुर—१ देखो 'वैत्रासुर' (रू. भे.)

२ देखो 'वैत्रासुर' (रू. भे.)

वैत्रासुरतडळ, वैत्रासुरतडळ—स पु —वृत्रासुर नामक राक्षक का वध
करने वाला, इन्द्र । (ना. डि. को.)

वैथी—देखो 'वैथी' (रू. भे.)

उ०—जोर कियी सारं वैथी भागं नही, रुमाल लपेट के पांय परं
है । खाडी बगस जद मेडती दीनी, दूदो जभेसर नाव घरे है ।
—सेवादास

वैदग—स. पु.—१ आयुर्वेद, वैद्यक, चिकित्सा ।

२ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैदगर—१ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—नाडी निरख भया वैदगर, अनत भोखदी कीन्हा । सारी
घात रसायन करि करि, आतम एक न चीन्हा । —अनुभववाणी
२ देखो 'वेदग्य' ।

वैदगी—१ देखो 'वैदग' (रू. भे.)

२ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रू. भे.)

वैद—स. पु [स] १ विद ऋषि के एक पुत्र का नाम ।

२ विद ऋषि के वंशज ।

३ देखो 'वैद्य' (रू. भे.)

उ०—१ हरीया पीर परापती, तन तं दई लगाय । वैद विचारा
भया करे, विन भुगत्या नही जाय । —अनुभववाणी

उ०—२ ज्योतिषी वैद पौराणिक जोगी, सगीती तारकिक सहि ।
चारण साठ सुकवि भाखा विच, करि एकठा ती अरथ कहि ।
—वैल.

उ०—३ वैद किए ही रो आर्या रो कारी, कीधी । आख ठीक
हुवां वैद बघाई मागे । जद कहै पचा नै पूछ सू । पच कहसी सूक
तो हुवां तो बघाड देमू । जद वैद वोल्या—तीने काइ दीसे है ?
—भि. ड्र.

वैदक—वि०—जानकार, ज्ञाता ।

उ०—ध्याकरण वेद, वैदक, विविध, भला उदर, सहकु भरी ।
धरमसीह रतन बहुला धरणी, कोई गरब रखे करी । —ध. व अं.

२ देखो 'वैदिक' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्म ग्यान रसायण सुर धुन वेद तथा जोतिस, व्याकरण
व धनुरधर जलनर मन्नाक्षर वैदक । —रा. सा स'

३ देखो 'वैद्यक' (रू. भे)

४ देखो 'वैद्य' (रू. भे.) (अ मा)

वंदगी—देखो 'वंदगी' (रू. भे)

वंदयिन—स पु. [स] विद ऋषि कुलोत्पन्न ऋजिष्वन नामक आचार्य ।

वंदरभ, वंदरभ—स. पु. [स वंदर्भ] १ रुक्मणी के पिता का नाम ।

२ दमयती के पिता का नाम ।

३ धातुनिक वरार प्रदेश का नाम, विदभंदेश । (य स)

उ० मलय सिंगल कोसल नद मध्य, स्त्री परशत द्वाविड नद वध्य ।

वंरोट तापी लाजी धार, स्त्री वंदरभ पाटल प्रति सार ।

—नलदवदतीरास

४ उक्त प्रदेश के राजा भीम का नाम ।

वंदरभि, वंदरभी—स पु [स वंदर्भी] १ भगस्त्व ऋषि की पत्नी लोपा-
मुद्रा के पिता का नाम ।

२ विदर्भ नरेश के वंशज भार्गव नामक आचार्य का नाम ।

३ विदर्भ देवाधिपति भीष्मक की राजकुमारी रुक्मणी का नाम ।

४ विदर्भ नरेश की राजकुमारी और नल राजा की पत्नी का नाम ।

५ कुश नामक राजा की पत्नी एव कुशाम्ब, कुशनाभ आदि की
माता का नाम ।

६ सगर महाराजा की पत्नी का नाम, जिसके साठ हजार पुत्र
कपिल महर्षि की क्रोधाग्नि में भस्म हुए थे ।

७ मलयध्वज की पत्नी का नाम ।

८ काव्य रचना की एक प्रकार की शैली विशेष, जिसमें मधुर वणों
से मधुर रचना की जाती है । यह कल्या, श्रु गारादि रसों के लिए
अधिक उपयुक्त है । (साहित्य)

वि० वि०—साठी, पाचाली एव गौडी इसके अन्य तीन प्रकार
होते हैं ।

वंदराज—देखो 'वंदराज' (रू. भे)

उ०—भगवत एक व्याकरण, वीर इस्ट के करे, तरक नीति सास-
त्राणि, एक मुख उच्चरे । भारत एक सब्ब घात, केळवे रसायण,
भगवध वंदराज राज श्रीखदी विचारण । —गु रू व

वंदल—स. पु [स] १ परावटा नामक खाद्य पदार्थ २ दाल का अनाज

३ भिखारी के भोख भांगने का पात्र ।

वंदही—देखो 'वंदही' (रू. भे.) (ना मा)

वंदाणी, वंदानी—देखो 'वंदाणी' (रू. भे.)

उ०—तीतर लठवा घाटवड, वंदानी घुगलाह । लखे पखीवण रहा,
घाह वाह जो वाह । । गज-उद्धार

वैदिक—वि० [स] १ वेदों में वर्णित, वेदोक्त ।

उ०—विद्या वेदां में वैदिक विधि चरणी, प्रपणी करणी सू जग-
पार उत्तरणी । निरभय नीयता यता नरनारी, करता विस्वमर
भरता सुतकारी । —ऊ का

२ वेदोक्त कृत्य करने वाला ।

३ वेदों का ज्ञाता, पठित ।

४ वेदों का, वेदों से सम्बन्धित ।

रू. भे—वैदिक, वेदक, वेदक, वैदक ।

वंदूरय, वंदूरयमणि, वंदूरयमणी—स पु. [स वंदूरयमणि] १ हरे रग के
रत्न ।

२ लहनुनिया नामक रत्न विशेष । (य. स.)

रू. भे,—वंदूरय, वंदूरयमणि, वंदूरयमणी ।

वंदेह—स पु [स] १ विदेहराज जनक ।

२ विदेह का निवासी ।

३ वैश्य या व्यापारी ।

४ ब्राह्मणी के गर्भ से उत्पन्न वैश्यपुत्र ।

५ महाराजा निमि के पुत्र तथा बजाजों के लिए प्रयुक्त किया जाने
वाला सम्बोधनसूचक शब्द ।

६ विदेह देश के राजा के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला सम्बोधन
सूचक शब्द ।

वंदेहरात—स पु [स] एक प्राचीन ऋषिगण जो विद्वामित्र के कुल से
उत्पन्न हुए थे ।

वंदेही—स स्त्री. [स] १ विदेह राजा जनक की पत्नी सीता, जानकी ।

२ जनमेजय पुत्र क्षान्तीक को पत्नी का नाम ।

३ विदेह कुलोत्पन्न ।

४ पिप्पली । (घ. मा)

रू. भे—वंदई, वंदही ।

वंद्य—वि [स] १ वेद का, वेद सम्बन्धी ।

२ औपधि का, चिकित्सा सम्बन्धी ।

३ चिकित्सा करने वाला, चिकित्सक ।

स. पु [स. वंद्य] १ आयुर्वेद का ज्ञाता एव उसी के अनुसार
चिकित्सा करने वाला व्यक्ति, आयुर्वेदाचार्य ।

उ०—१ जद स्वामीजी बोल्या कोइ नै आख्या न सुके तिण
पूछघी सहर मे नागा किता अने ढकिया किता ? जद वंद्य बोल्पी
—आख्या में श्रीखध घाल नै सुभती ती हू कर देऊ अने नागा
ढकिया तू देखले । —भि द्र

उ०—२ हकीम वंद्य सरब पचि हारषा, दीनी बहुत दवाई । जाण
असाध्य व्याध जगदवा, अवा वारि आई । —भे म

२ विद्वान, शास्त्राचार्य ।

३ वंद्य नामक जाति का व्यक्ति जो वैश्य माता, व ब्राह्मण पिता के
ससों से उत्पन्न होता है ।

४ सब विद्याओं का ज्ञाता, विष्णु भगवान् ।

५ सुख देवी मे से एक ।

६ वरुण एवं सुनादेवी के पुत्र का नाम, जो घृणि एव मुनि का पिता था ।

रु, भे—वेद, वेद, वइदउ, वयद, वेज्ज, वेदंग, वेदगर. वेदगी वेद, वेदक, वेदक ।

अल्पा,—वेदियो ।

बैराग—स पु.—१ रोगो के निदान एवं चिकित्सा आदि के विवेचन का शास्त्र ।

२ पुरुष की ७२ कलाओं में से एक । (य स.)

३ देखो 'वेद्य' (रु. भे.)

४ देखो 'वेदग्य' (रु. भे.)

उ०—व्यापारी सङ्ग वाणिज्या, जोसी वेद्यक व्यास । मागण पणि मिलिया वह, सङ्ग नी पूगइ आम । —मा का प्र.

रु. भे—वेदक, वेदई, वेदक, वेदणी, वेदिक, वेदक, वेद्यग, वेद्यक ।

वेद्यकक्रिया—स स्त्री.—स्त्रियो की ६४ कलाओं में से एक कला का नाम । (व स)

वेद्यग—म-पु—१ अगिरसकुलोत्पन्न एक मन्त्रकार ।

२ देखो 'वेद्यक' (रु. भे.)

३ देखो 'वेदग्य' (रु. भे.)

वेद्यगी—स पु—वेद्य का कार्य चिकित्सा ।

रु. भे—वेदगी, वेदगी, वेदगी ।

वेद्यनाथ—स पु [स] १ वगाल का एक प्रसिद्ध तीर्थ ।

२ मण्डोर का एक प्रसिद्ध स्थान ।

३ धन्वन्तरि ।

४ शिव, महादेव का एक अवतार जो चिताभूमि में से रावण की प्रार्थना पर हुआ था ।

५ महादेव के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक ।

रु. भे.—वेद्यनाथ, वेद्यनाथ, वेद्यनाथ ।

वेद्यराज—स पु [स] वह वेद्य जो चिकित्सा करने में अति दक्ष हो ।

रु. भे—वइदराज, वइदराज, वेदराज, वेदराज ।

वेद्यिक—देखो 'वेद्यक' (रु. भे.)

उ०—वेद्यिक ज्योतिस निमित्त नै ए, भाखै परिग्रह के काज के ।
जिकै तज निकल्या ए, धन मीटा भूमिराज के । —जयवाणी

वेद्युतगिर, वेद्युतगिरि—स पु [स] वेद्युतगिरि एक पर्वत का नाम ।

(पुराण)

वेद्यभा, वेद्यबा—देखो 'वेदरभा' (रु. भे.)

उ०—१ काई भूला भमई गज थाटन रे, वाटन रे बळती न लहई
वेद्यभा रे । डोनी घाल्या दाणव आवइ रे, काइ पावइ रे कीर्तुं
कुवघी आपणउ रे । —रु. भे.

उ०—२ वेग वाल्या हथ रे रे, रथ सुं रथ वांघ्यी रळी । गज
थाट मोगर वहइ उवट वेद्यबा थई वेगळी । —रु. भे.

वेद्यनाथ—देखो 'वेद्यनाथ' (रु. भे.)

वेद्यव, वेद्यव्य—सं पु [सं. वेद्यव्य] विद्यवा होने की अवस्था, विद्यवापन
रु. भे—वेद्यव ।

वेद्यस—स पु [स] वेद्यस के वंशज हरिश्चन्द्र का एक नाम ।

वेद्यी—स. पु [सं. वेद्यिन] दुग्धमन, क्षत्रु । (अ. मा.)

वेद्यीकरण—स पु—कृती पुत्र अर्जुन । (अ. मा.)

वेद्यी—देखो 'वेद्यी' (रु. भे.)

वेद्यत, वेद्यति, वेद्यती वेद्यत, वेद्यति, वेद्यती—स-पु [सं. वेद्यति]

१ फलित ज्योतिष शास्त्र के २७ योगों में से सत्ताईसवें योग का नाम जिसमें शुभ कार्य करना निषिद्ध है ।

उ०—व्यतीपात वेद्यति बली, सूरिजनी सक्राति । आह्यण हूंतु
आह्यणी, नवि आवइ श्रेवाति । —मा का. प्र

२ तामस मन्वन्तर का देवगण या देवगणों की माता ।

३ धर्मसावर्णि मन्वन्तर के धर्ममेतु नामक अवतार की माता ।

४ ग्यारवें मन्वन्तर धर्मसावर्णि के इन्द्र का एक नाम ।

५ विद्युति के पुत्रों का सामूहिक नाम ।

वेद्यन—सं पु [सं] व्यास की सामगिष्य परम्परा के अन्तर्गत शृंगी पुत्र नामक आचार्य का शिष्य ।

२ देखो 'वहन' (रु. भे.)

उ०—१ अरु वेद्यन श्रेक रिढमल री निकी पाटण तवरा नूं परणायी
ही । सू आ विद्यवा हुई, तद इण नू खडेलै लाया । पीछे रावजी
खडेली सूटियो । तद इण प्राणकवर नू पकडी अरु रावजी
सीवीकैजी आपरी ठकुगणी करी नै वल वेसाणी । —द. दा.

उ०—२ जी साहिवा छोटी ननद थाकी वेद्यन, वाईसा कर मानती
जी म्हारा राज । जी साहिवा वाने लगाई अत्ती देर किसूर म्हारी
नायजी म्हारा रा'ज । —गणगोर रो गीत

३ देखो 'वचन' (रु. भे.)

उ०—थर हर कर्प नेढां थका रे अलगा पावै चैन । मोरा री
कुणसी चले रे, न माने माइता रा चैन —जयवाणी

वेद्यन—देखो 'वहन' (मह, रु. भे.)

उ०—१ हरसा भाई म्हारा रे, वेद्यन भाई री गाढी नेह ।

—जीणमाता री गीत

उ०—२ जीण मेरी बाई ये ऊची तो घालू ये थाने बैसरणू, बैनङ्ग
भाई जीमा साथ । जामण की ये जाई, विच विच वदळा ये वाल्हा
गासिया । —जीणमाता री गीत

बैनङ्गली, बैनङ्गी—देखो 'बहन' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—हू ती जीमण बेट' र हेली जी मारू', आय परोसे म्हारी
बैनङ्गी, वीरे रे आंगण आबो मोरियो । —लो गी.

बैनतीय बैनतेय—स. पु [स बैनतेय] विनता का पुत्र, पक्षी-
राज गरुड । (प्र मा, ना मा.)

उ०—१ लेवती ठेकाण बाजी सेस घू पयाळ लावी, बैनतेय खसे
वेग वणै न विचार । क्रामनी मपूती लीघा कोळमूड क्रीत काज,
भोपे करा परावरी बुध री आचार । —वादरदान दधवाडियो

उ०—२ तीयधी मूनिद्र पाण वचै व्याळ बैनतेय, दूठ भद्र वचै घाण
जुम्राण दधीच । बरुथा सर्था चा बाधा चद रायासाळ बीजे, वीर
खागा खाधा जेन लाधा भीम बीच । —हुकमीचद खिडियो

२ गरुड की प्रपूव सतानों में से एक सतान का नाम ।
रू. भे —बैनतीय, बैनतेय ।

बैनहोत, बैनहोतर, बैनहोत्र—स पु [स बैनहोत्र] १ धीतिहोत्र नामक
राजा का नामान्तर जो घृष्टकेतु राजा का पुत्र था ।

बैनानी—१ देखो 'दिनाणी' (रू. भे)

२ देखो 'बैनाणी' (रू. भे)

बैनायकीविद्यागान—स. पु [म] बैनायकीविद्याज्ञान] स्त्रियों की ६४
कलाओं में से एक ।

बैनासिक—स पु. [स. बैनासिक] १ जन्म नक्षत्र से तेरहवां नक्षत्र ।
(फलित ज्योतिष)

२ जन्म नक्षत्र से सातवा, दसवा एव अठाहरवा नक्षत्र ।

वि० वि०—उक्त तीनों नक्षत्र शुभ माने जाते हैं । इन्हें निधन-
तारा भी कहते हैं । इन में यात्रा एव शुभ कार्य नहीं किये जाते हैं ।

बैनीत—१ देखो 'बैनीत' (रू. भे)

उ०—कळह हली बळ बेल सु बैनीत वधारी, जाट कह वायक जोर रा
फुरमास न धारी । लिया बळघह जाटदा तद कीध तयारी, जान
चडता जोईया वाजा वजवारी । —वी. मा,

२ देखो 'दिनीत' (रू. भे)

बैनु—देखो 'बैनु' (रू. भे.)

बैनोई—देखो 'बहनोई' (रू. भे.)

बैन्य—सं पु. [स.] १ भृगुकुलोत्पन्न एक भद्रकार का नाम ।

२ राजा पृथु का नामान्तर ।

३ राजपि पृथि का नाम ।

४ राजपि पृथी का नाम ।

५ अत्रि ऋषि का नाम ।

बैपस्चित—स पु. [स बैपस्चित] विपस्चित ऋषि कुलोत्पन्न ताक्ष्य नामक
ऋषि का नाम ।

बैपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे)

उ०—१ पर घरनी छासि, कठ विहणी रासि, अवसर विना भास,
कुकुळ नो दास । फूस नो आग जमाड नो भाग, काची ताग, पाणी
नो साग गदीवा नो तेज दुरजन नो हेज । उघारा नो बैपार, रांड ना
सिणगार । पावइयानी प्यार । रा. सा स

उ०—२ उर भुकुमा असपत्त सू तुकमा लेवण त्यार । पाछा करण
'प्रताप' ज्यु, वेढ अपत बैपार । —किसोरदान बारहठ

बैपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—दुनिया साळी कैवै कै पुलिस वेईमान है, म्हु पूछूं कै आज रे
जमाना में कुण वेईमान नी है ? ए ब्लेक करणिया बैपारी. ए
रिस्वता ठोकणिया मोटा-मोटा अफसर, ए ठेका परमित देवणिया
नेता, सगळाइ तो म्हारा भाईवद है । पछे म्हाने इज क्ये बदनाम
किया जावै ? —धमर चूतडी

बैपुर—स पु —गगन, आकाश । (ना हि. की)

बैफुल, बैफुली—देखो 'बहुफुली' (रू. भे)

उ०—पोह पसे सेवत्री पाडला, जोख वणी गुलजार । बैफुल वादी
ऊपरै, रहिया भवर गुजार । —पना

बैभव—स पु. [स] १ विभव, ऐश्वर्य ।

उ०—चळ बैभव, सपत सुचळ, चळ जोवण, चळ देह । चलाचली
के खेल में, भलाभली कर लेह । —अग्यात

२ धन, दौलत, सम्पत्ति, द्रव्य ।

उ०—प्रभ्रिति इद्र प्रताप पाक पिड तेज प्रभा-कर । क्रोध जम्म
बैभव कुमेर, विड मेर गिरव्वर । —गु. रू. ब.

३ बहुनायत, आधिक्य ।

४ महिमा महस्व ।

५ सामर्थ्य, शक्ति ।

६ कार्य, धन्धा, व्यवसाय ।

रू. भे —वभौ, विभौ, विभव विभौ, वैभव, वैभव, भंभौ, विभ,
विभव, विभाव, विभौ, विहव, वीभव, श्रीभौ, वैभू, वैभव ।

बैभवता—स पु. [सं. वैभव+ता प्र] वैभव होने की अवस्था या
भाव ।

रू. भे —विभवता, वीभवता ।

बैभववान्—वि० [स वैभव+वान्] १ विभववान्, ऐश्वर्यवान् ।

२ धनवान्, सम्पत्ति वाला, दौलत वाला ।

३ महस्वपूर्ण, महिमा वाला ।

४ व्यवसायी ।

५ सामर्थ्यवान, शक्तिशाली ।

रू. भे — विभववान, वीभववान ।

वंभाडक, वंभाडुकि, वंभाडिक—स पु. [स] पूरांभद्र नामक आचार्य जो गोत्र प्रवर्तक भी कहे जाते हैं ।

वंभवसाळी, वंभवसाली—वि० [स. वंभवसाली] १ वंभववान, ऐश्वर्यवान ।

२ जिसके पास अत्यधिक धन-दौलत हो ।

रू. भे — विभवसाळी, विभवसाली, वीभवसाळी, वीभवसाली ।

वंभाखण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

उ०—उवं वार वंभीखणी चालि आयी, लखें तें हणूमान पावा लागायी । प्रणामेस वंभाखणा भूप येनू जपें आव लकेस स्त्रीराम जेनू । —सू प्र.

वंभार—स पु.—वंहार नामक पर्वत जो राजगृह के पास स्थित है ।

उ०—जिन आदेस लेइ करी जी, चढिया मुनि गिरि वंभार । सिल उपरी जइ करी जी, दोय मुनि अणसण लीघउ सार । —सं. कु.

रू. भे — वंहार ।

वंभीखण—देखो 'विभीसण' (रू भे)

वंभीत—१ देखो 'भंभीत', (रू भे)

२ देखो 'भयभीत' (रू भे.)

वंभीसण, वंभीसणि, वंभीसणी—स. पु [स. वंभीपण] १ मणि कुडल नामक वैश्य को शाप मुक्त करने वाला विभीषण का पुत्र ।

२ देखो 'विभीसण' (रू भे)

वंभोज—स पु. [स] द्रष्टु के वंशज एक प्राचीन जाति ।

वंभ्राज—स पु. [स] १ सुमेरू पर्वत के पश्चिम में स्थित सुपाश्वं नामक पर्वत पर स्थित एक जंगल का नाम । पुराण)

२ पांचालनरेश का नाम जो ब्रह्मदत्त का पिता था ।

३ एक लोक विशेष का नाम ।

वंम, वंम—स पु — १ सम्बन्ध, लगाव, गरज ।

उ०—वूढी भोळी डोकरधा न आपरा वेटा वेगा सा छुडा ल्यावण रा वसती घमड दिखाले है । भुवाळी खावती फिरै । घर-घर गेडा काटे । मिनखां में रिरावे, लीलडी काढे । गव्हाया री गरज करे, वकीला सूं वंम राखे । —दसदोख

२ देखो 'वहम' (रू. भे)

उ०—१ पटवारी है क, तंसीलदार ? किसनजी की कृत नी सकयी । सौखीनाई अर खरच-वरच री चीजा-घसतुवा सूं खूव राजी हुयी ।

वूढापे हाला ओखदां मार्ये वंम ही नी गयी । ओसप्या ही तीस-पंतीस ताई री अकल में आई । —दसदोख

उ०—२ एकर री वात, राजी रे जापे में पीन-हवा निकळगी । वावळी वडा करण लागगी । गूग विखरें अर तत्ता-पत्ता सूं वूही वाता करे । जके स घर हाला न भूतणी री वंम वड गयी है ?

—दसदोख

उ०—३ पण राजी ती दवटी पढी ही टीली मारें । जके सूं सें भूतणी री वंम करे है, सनीपात नें कुण समझे ? कोई जिद घतावं, कोई चूडावण री नाव लेवे है । कोई ओपरी छाया कढावण री उतावळ करे, कोई पलीत नें पाणी दुलावणी वतावं । —दसदोख

उ०—४ उदास मन सूं वाने कियाई ठिरहती-ठिरहती मोटर मे आय नें वंठयी ती वंठता पोण एक जोर रा हचीडा सागे वा स्टारट व्हेगी । जाणे वणने वंम ही कें म्हूं आळाणी नीं कर दूं अर पाछी रवाने नी व्हे जाळ । —अमर-चूंनडी

वंमनस्य—स पु [स] १ वंर, दुदमनी, शयुता ।

२ मानसिक शीथलता, उदासी ।

वंमर—देखो 'विवर' (रू भे)

उ०—तैण समे आप रा घणी री कही हकीकत धारि, मूरत उठाअ, मूरत नीचे वंमर थी, तठे होअे घर दीसी चाली ।

—कल्याणसिध नगराजोत वाढेल री वात

वंमाणिक—देखो 'वंमानिक' (रू भे)

वंमाणिकदेव—देखो 'वंमानिकदेव' (रू भे)

वंमाणी, वंमाणीक, वंमाणीय, वंमानिक—वि० [सं. वंमानिक] १

विमान सम्बन्धी, विमान का ।

२ आकाश में विचरण करने वाला ।

स पु — १ हवाईजहाज पर सवार होने वाला ।

२ हवाईजहाज चलाने वाला ।

३ एक प्राचीन तीर्थ जहाँ स्नान करने से स्वर्गलोक प्राप्त होता है तथा वह विमानों में चाहे वही घूम सकता है ।

४ देखो 'वंमानिकदेव' (रू भे)

उ०—पचेंद्रि तिरजच नें मानव, एह थया इकवीस जी । वितर जोतिसी नें वंमानिक इम दडक चौवीस जी । —घ व प्र.

रू भे.—विमाणिक, विमाणी, विमाणीक, विमाणीय, विमानिक, वेमाणिक, वेमाणिय, वेमाणी, वेमाणीक, वेमाणीय, वेमानिक, वंमाणिक ।

वंमानिकदेव—स पु [स वंमानिकदेव] स्वच्छ, निर्मल एव रत्नजडित विमानों में विचरण करने वाले देव । (जैन)

उ०—ति चउरिद्री गरभज वली, नर तिरयच कह्या केवली । भवण जोतिल वंमानिकदेव, चउवीस दडक ए नित मेव । —सं. कु

वि० वि०—ये देव दो प्रकार के होते हैं—(१) कल्पोपपन्न देव —

वे देव जिनमें छोटे-बड़े आदि का व्यवहार होता है। ये वारह प्रकार के होते हैं।

(२) कल्पातीत देव—वे देव जो अहमिद्र होते हैं अर्थात् जिनमें छोटे-बड़े आदि का भाव या व्यवहार नहीं होता है। इनके दो भेद हैं।

१ अवेयक एव २ अनुत्तरोपपातिक।

लोक पुरुषाकार है जो चौदह राजू परिमाण है। नीचे तेहरवें राजू का काफी हिस्सा छोड़ कर ऊपर के हिस्से में ग्रीवा के स्थान में रहने वाले देव अवेयक देव कहलाते हैं। जो नौ प्रकार के होते हैं। जिन देवों की स्थिति, प्रभाव, सुख, द्युति (कांति), लक्ष्म्या आदि अनुत्तर प्रधान है या स्थिति, प्रभाव आदि में जिन से बढकर कोई दूसरे देव नहीं है वे अनुत्तरोपपातिक देव कहलाते हैं। ये देव पाच प्रकार के होते हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर छद्मोस प्रकार के वैमानिक देव होते हैं।

रू. भे.—विमाणिकदेव, विमानिकदेव, वंमाणिकदेव।

वंमाता, वंमाता—देखो 'वेमाता' (रू. भे.)

वंमार—देखो 'वीमार' (रू. भे.)

उ०—सु जंत प्रभात री सिकार चढियो हतो। वंसाख जंत रं लूवा रा दिन हंता। सु जंत ताहरा ही ज सिकार रम नै लू री ऋकोळियो थकी घरी तावडे सी वंमार थकी आय नै खसखानं माहे आय पोढियो। सु खसखानं वाहरा घणीरी छडकाव कीयो।

—जंतमाल पुमार री वात्त

वंमितरा, वंमित्रा—स. पु [स वंमित्रा] १ स्कन्द की अनुचरी एक

मातृका का नाम। २ सात शिशु माताओं में से एक।

वंमी, वंमी—देखो 'वहमी' (रू. भे.)

वंमुख—देखो 'विमुख' (रू. भे.)

उ०—गोतम सुता तास सुत नागर, धीरज सुचितां ध्यावं। प्रभु वंमुख जिणरी रिपु प्राणी, ताह न कदै सतावं। —र. रू

वंन्नग, वंन्नग—स पु [स वंमृग] कश्यप एव दनु का एक पुत्र दानव।

वंयकी—देखो 'वंयकी' (रू. भे.)

वंयमक—स. पु [स] एक प्राचीन जाति।

वंयर—१ देखो 'वंर' (रू. भे.)

२ देखो 'वंर' (रू. भे.)

वंयस्व—स. पु. [स वंयस्व] व्यस्व का वंशज विश्वमनस् नामक एक आचार्य।

वंयाध्रपथ—स पु. [स.] युधिष्ठिर द्वारा अज्ञातवास काल में धारित नाम।

वंयायिक—स पु. [स.] १ दर्शन सिद्धान्त। (बीड)

२ सर्वश्रेष्ठ एव धार्मिक कर्मों में विघ्नकर्ता एक क्रूर देव।

वंयार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

उ०—लियो जनम नर ससार, लागी जगत वंयार। जै नर विसा हरि सू कोल, भूली ग्रभ का सब बोल। —उदोजी नेण

वंयालिस, वंयालीस—देखो 'वयालीस' (रू. भे.)

वंयावच, वंयावच्च, वंयावत्त, वंयावत्त—स. पु. [म. वंयावत्त] एक

प्रकार का व्रत या तप विशेष जिसमें आचार्य आदि बड़े एव आदरणीय पुरुषों की दस प्रकार से सेवा की जाती है। (जैन)

वि० वि०—उक्त व्रत या तप में आचार्य, उपाध्याय, शिष्य, गलानी (रोगी), तपस्वी, स्वविर, स्वधर्म, कुल (गृह भ्राता), गण (सम्प्रदाय के साधु) श्रीर सध (दीर्घ) को आहार, वस्त्र, पात्र, श्रौचोपचार आदि दिये जाते हैं तथा पाद, पीठादि की चम्पी की जाती है।

रू. भे.—वेयावच, वेयावच्च।

वं'योडी, वंयोडी—१ देखो 'वहियोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'व्होयोडी' (रू. भे.)

(स्त्री वं'योडी, वंयोडी)

वंयो—देखो 'वहयो' (रू. भे.)

वंरग, वंरगौ—१ देखो 'विरग' (रू. भे.)

उ०—भग मुहगी करतै भु अतर, वनचर ऊसर थया वंरग। निस दिन अरज करै निसासं, सस आगळ ऊभौ सारंग। —रूधो मुहती २ देखो 'वंरग' (रू. भे.)

वंरडेय—स पु. [स] एक गोरकार प्राचीन ऋषि।

वंर—स पु [स वंर] १ प्रतिकार, बदला।

उ०—१ तठा उपराति करि नै राजान सिलामति इणि भांत सूं राजान री वात्त सुणनं अजमेर रं थारुं री हकीकत सामळनं आदि वंर उगराह नू असूराग तुरकाग रा दळ राजान ऊपरं विदा हूया सी किरा भात रा कहीजं छं। —रा. सा. स

उ०—२ तरं रंवारिया कही, 'साहिबी कुंवरसी साखले री छं। तिण कही, म्हारी रजपूत था पल्लू मे मारियो। तरं वंरमे लं जावा छा, अर थानू मारा छा।' तद अं भेटियार था, सतावी खड कोसा पाचा-साता आय पोहता। —कुंवरसी साखला री वारता

उ०—३ एक वार घणा सूर रा चाचरां री खाज भेटा। कण कण करा। धकवाळा करि कामणी भेटा। क्रीति उवारां। आगला जाळ घर महाजोधार सारिखा रा वंर कळिया काढा। असमासुर रा विरोध माहे इद्रादिक देवता वाढा। —मा वचनिका

उ०—४ केसरीसिध अचळदासोत। समत १६६० डाभडी ओईसा री पटे। सु दरदास रं वंर सोढा मारियो। सु दरदास सुरताणोत।

जोषपुर मेवरो पटे । पछे लवेरा री साडा सोढे ली, नठे वाहर
आपड सोढा सूं वेढ हुई, काम आयी । —नेणसी

२ शत्रुता, दुश्मनी, विरोध ।

उ०—१ गाम मे उणा री भौ ढग ही के नी किणी सू बोस्ती अर
नी किणी सूं वैर । मारण आवणी अर मारण जावणी । खडी
खाणी न कोई पढी उठावणी । पोता री मौज मे मस्त रैवणी ।

—अमरचून्डी

उ०—२ हठियो सिर हिंदुवा, माड मेलें खूमाणा, आदि वैर
सभरें, सरस दिल्ली सुरताणा, राजा सूरजसिध, जोध गजसिंह जम-
ज्जड, किसनसिध करमेत, 'करन' सपेख महाभड । —गु. रू व

उ०—३ सी जोडी तीन सोने ग, चोकडो एक मोतिया री, सोने
रा हथियार आदमिया कुवरकी कने राखिया । तद कुवर फह्यो,
केई ती सिरदार था, वैर तो वडो पडियो । इव जाणा हा, ततो
पूठी कर वाकी रा काहि नू जावण देवा हा चात पण नीवडो ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—४ ताहरा नरसघ सोघळा रै पण नाळेर पकडियो अर
कहियो, 'दिन ५ तथा ६ माहे साही मेलजी तो आसा, नही तो
म्हाहरें काम छे । म्हारें मार्ये वैर छे ।' ताहरा सीवळा पण तुरत
साही दीनी । —राजा नरसिध री बात

क्रि प्र.—उगराणी, उगराहणी, करणी, घातणी, पडणी, वाधणी,
भागणी, लैणी, वाळणी, होणी ।

३ फसल । (इंगरपुर-भील)

४ शत्रु, दुश्मन ।

५ देखो वैर' (रू भे)

उ०—१ जनावरा ने कैरें नाच घाती छी सु कही । ताहरा कृशर
कही बरा ना साच कहीज नही । ताहरा रागो कही तो हू थाहरी
अरध सरीरी किसी विध छु अर में थारें पगा राखस नें मराथो
अरथे मना साच कही नही तो थाहरें प्यार किसी । —चोवोली

उ०—२ रह्यो ते माहे माळिये वाळी घर अटांणी मारियो । मार
अर मरव चुकाय दीया । पण देवाळी काडियो नही । वैरा रें
कपडो गहणें सुधी सरव चुकाय दीयो । आप पुराणें घरें जाय
रह्यो । हर्म परची जेही वाणीत पासा मागें, सु दस रुपिया रें
काम आवें । —ठकुरें माह री बात

रू भे—वडअर, वडयर, वडर, वईअर, वईयर, वईर, वयर, वैर,
वंगर, वडअर, वडयर, वडर, वडरि, वडरी, वईअर, वईयर, वईर,
वयर, वैर, वैरता ।

अल्पा, —वैरडी ।

मह, —वैरी ।

वैरक, वैरकक, वैरख—स पु [स वैर, वैरम्] १ शरीर, वदन ।

२ हाथी, हस्ती । (अ मा)

३ वैरी, शत्रु, दुश्मन ।

४ देखो 'वैरक' (रू भे)

उ०—पाना मुख वाजित्र हिले वाना वैरकका मेघ रग मातग
वीढ ऊढग कटकका । पली जेभ सादळां हिली फौजा धमसाणा,
व्योम रजो वित्थरी धमस वरजी केकाणा । —रा. रू

रू भे—वैरक, वैरक ।

वैरडी—देखो 'वैर' (अल्पा, रू भे.)

वैरडी—१ दोगला, वर्णसकर ।

२ वैर का बदला लेने वाला ।

उ०—रामसिध तिन पाट रहे सेवे तुरकाणी, लावणसी घर छाड
हुयो नाहूली राणी । सेवा कीध सकत, वधे वरदान वडाई । व्याती
गढ वधनोर, हुयो सवाइ चहुं भाई । चहुवाण वस रूपक वडो, रावा
गजन वैरडो । वरदान आस लीधी वडे, सुरासाण ऊपर खडो ।

—माली आसियो

३ देखो 'वैर' (अल्पा, रू भे)

४ देखो 'वैरडी' (रू. भे)

वैरण, वैरण, वैरणी—शत्रु दुश्मन, वैरी । (म्त्री)

उ०—१ पवन तू वैरण, धीमी धीमी चाल, उडती दीम भवरजी
री पामडो । कोयल वैरण, मधरी मधरी बोल, ज्यू चित आवे
भवरजी नें गोरडी । —लो गी

उ०—२ कोयल अं कोयल वैरण, पिहु-पिहु बोल, हा अं वैरण,
पिहु-पिहु बोल, चढती बाई नें ये सबद मुणाह्यो । —लो. गी

उ०—३ लाभ लेइजे लोयणा, मजन राखे सखरी । उलस देखण
न होयो, वैरण लाज वुरी । —पना

उ०—४ ससनेही सज्जण मित्या, रयण रही रस लाइ । चिहू
पहूरें चटकठ कियठ, वैरण गई विहाइ । —ढो मा

उ०—५ नारी वैरण पुरूख की, पुरूखा वैरी नारि । अतकाळ
दोनों मुये दादू देखि विचारि । —दादूबाणी

उ०—६ त्रिहि अह्यारी वैरणी, पेला भवनी होय । सज्जल-सिउ
सुख माणीड, निलवटि निलख्या जोय । —मा का प्र.

रू भे.—वैरण, वैरणि, वैरणी ।

वैरणी, वैरवी—देखो 'वैरणी, वैरवी' (रू भे)

उ०—आपरो पौरस सीह वाजणा री नही—हाथळ (भुजा रा)
जोर सू हाथिया नें भाजे अरथात जिंका री तरवार सू हाथिया रा
असुड (सोस) वैरीजे वे भड सिध वाजे । —वी स टी

वैरणहार, हारी (हारी), वैरिणीयो—वि० ।
वैरिओडो, वैरियोडो, वैरघोडो—भू० का० कृ० ।
वैरीजणी, वैरीजवी—कर्म वा० ।

वैरत—स पु [स] एक प्राचीन जाति । (पुराण)
वैरता—देखो 'वैर' (रू भे.)

उ०—१ नही हिंदू सू वैरता, नही मुसलमान मू प्रीति । सब कुछ करि सब तै अगम, या साहिव की रीति । —ह पु वा.

उ०—२ ना काहू सू वैरता, मोहन बाघे साध । जन हरिदास भाठीं पहर, भजिए राम अगघ । —ह. पु. वा

उ०—३ तामस गुण रस वैरता, राजस रस अभिमान । स्वातिग रस गुण लुडखडी, तहा जीव तोडे तान । —ह पु वा.

वैरदेय—स पु. [स] वैदिक काल का एक असुर ।

वैरभाव—स. पु —मनमुटाव, विरोधभाव, शत्रुता, वैमनस्यता ।

रू भे —वैरभाव ।

वैरभावना—स स्त्री —मनमुटाव, विरोधभाव, वैमनस्यता, शत्रुता ।

रू भे —वैरभावना ।

वैरघाट—स पु —विरोध, शत्रुता ।

उ०—ताहरा कह्यो—माहरें घोडो सखरो कोई हतो नही, तिकण पगा मांग लियो छे । तै आगे ऊमरकोट सोढां रें बडा-बडा घोडा छे । तै भामंजी कना मांग लियो छे । ताहरा कह्यो—इतरें ऊटे सिलह क्यु छे ? ताहरां कहियो—म्हारें वैरघाट छे । राजा छ्वा, साथे सिलह चाहीजें हीज ; —नैरामी

वैर वृत्रासुर—स पु. [स. वृत्रासुर वैरी] वृत्रासुर राक्षस का दुश्मन, देवराज इन्द्र । (ना डि को)

वैरस-वि०—विना रस का, नीरस, सारहीन ।

वैरसुध—स स्त्री —बदला, प्रतिकार ।

रू भे.—वैरसुध ।

वैरहर, वैरहरण, वैरहरि—स पु —शत्रु का वधज, शत्रु ।

(अ मा, ह ना, म)

उ०—१ सरणाई चरण बखारुं, सरणुं, मन जोगी जेहा अमर । 'रामा' वदन बखारुं रामा, हात बखारुं वैरहर । —पदमा साहू

उ०—२ दौड वरस लग रहिया दोळा, रोळा कर कर थाका रहे । चकर अदोठ 'विजे' चक्रवत रा, वैरहरां ऊपरा वहे ।

—ऊमेदासिंह साहू

उ०—३ सिर सपत सगहे निहसें नित प्रत, करिमर नीप सहीयें करि । रेवत पूठि वसें जइ रणमल, वास म गिण तई वैरहरि ।

—राव रिडमल रो गीत

वि०—शत्रुता मिटाने वाला, दुश्मनी खत्म करने वाला ।

रू भे—वैरहर, वैरहर, वैरहरण, वैरीहर, वैरहर, वैरहरि, वैरीहर ।

वैरागर—देखो 'वैरागर' (रू भे)

वैराण, वैरान—१ देखो 'वैराण' (रू. भे)

२ देखो 'वैरान' (रू भे.)

उ०—१ अर जिणा दिना में साखली नापी चीतीड सू जागळ आयो, सूं श्री पण जोधपुर हाजर है । पीछे इण वीकंजी नू कयो कै जगाळू री पडगनी वैरान हुय रयो है, सू थं हालो तो ठिकाणो बाधा ।

—द. दा.

उ०—२ श्री भरथनेर भरथजी दसरथजी रें वेटा बसायो कदोम छे । नै कई वार वैरान हुवी अर कई वार आवाद हुवी । पण हजार वरस री वात है । जोइयां इणनू आवाद कियो । पण आपस रें असरचें में वळें वैरान कियो ।

—द दा

वैराम—स स्त्री. [स वैराम] एक प्राचीन जाति ।

वैराई—देखो 'वैराई' (रू. भे)

उ०—१ कसि वांक वाळा काढि, वैराईया सिर वाढि । हैकप भौ महलार, त्या दीध द्रव्य तोखार । —रा रू

उ०—२ वाहूवा हुए न को वैराई, घण बहस केकाणा घुया । पोह फुटन सभी दे परभूय, 'सलख' लिया ताय सलख हुआ ।

—राव सलखा री गीत

वैराक—स पु —एक प्रकार का बढिया शराब जो चौथी बार निकाला हुआ तथा तेज होता है ।

उ०—१ तठा उपराति करिन राजान सिलामति दारू री पाणीगी मडिओ छे । सो किए भाति री दारू । उलटे री पलटे, पलटे री अँराक, अँराक री वैराक, वैराक री सदली, सदली री कदली, कदली री कहर, कहर री जहर, जहर री कटाव, कटाव री नेस, नेस री जेस, जेस री मोद मोद री कमीद कमीद, री हूल ।

—रा. सा स.

उ०—२ तठा उपरायत दारू रा घडा मगायजे छे । सू दारू किए भात री छे ? अँराक री वैराक सदली री कदली फूल री अतर वाती बरुं घुवाधोर तिबारा री काढियो, बोदी वाड में नाखिया जग उठे । बाप री पियो वेटी छिकं, असवार गे पियो प्यादो छिकं । राजा पीवं परजा छिकं ।

—रा, सा स

वैराग—देखो 'वैराग्य' (रू भे.)

उ०—पछे थोडा दिना पछे नाथजी दुवारें में खेतसीजी स्वामी घणा वैराग मू घणा महोच्छव सू रगूजी नै खेतसीजी स्वामी एक दिन दिक्षा लीधी । जिन मारग री उद्योत घणो ययो । —भि. द्र

उ०—२ ठाकुर जी री श्री परसाद नी दँणो सता रें हाथ हौ । वी मिंदर रा ठाकुरजी नै छोड सीधी सता रें जाय पगा पढियो ।

कह्यो-बापजी, म्हनें तीं वैराग सूक्तियो । म्हारी भुगती अर्बे अप रं हाथ है । म्हारे हीये अण्णचीत्यो वैराग री गोटी ऊठियो-अर्बे अपरं सरणी हू । —फुलवाडी

उ०—३ विरह न की वैराग सा, रव सा ना कोई रग । हरख न सा हासा नहीं, सत सा ना कोई सग । —अनुभववाणी

वैराग्य—देखो 'वैराग्य' ।

उ०—सिरदार वनाजी, हीरा ये लाईज्यो हे वैराग्य देस रा, उमराव वनाजी, मोती ये लाईज्यो हे समदर पार रा, सिरदार वनाजी, सेवरिये भूतके श्री आभा वीजळी । —लो. गी

वैराग्य-सं. स्त्री.—१ वैरागी स्त्री ।

उ०—१ अग्रणी गिरधर कारण, भीरा वैराग्य हो गई रे । —भीरा

उ०—२ दोठ कुळ छोड भई वैराग्य, हरि सों टेर दई रे ।

—भीरा

उ०—३ राजा सवाई जैसिधजी वैराग्यिया नु परणाय मथुरा में, ब्रंदावन में वैराग्यपुरी वसायो । —वा दा ख्यात

१ वैरागी की स्त्री या कन्या ।

३ सन्यासियों का एक प्रकार का छोटा काण्ड का उपकरण विशेष, जो तपस्या या भजन करते समय रात्रि में वक्षस्थल के अग्र भाग तथा बाहुमूल में सहारे के रूप में लगाया जाता है ।

रू. भे —वैराग्य, वैराग्य ।

वैराग्यी, वैराग्यी—क्रि० अ० १ सासारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त होना ।

२ सन्यास लेना ।

३ ईश्वर भजन में लीन होना, ईश्वर के प्रति आसक्त होना ।

४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना ।

क्रि. स —५ सासारिक क्रियाओं व वस्तुओं से मन हटना ।

६ त्यागना । ७ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटना ।

वैराग्यहोर, हारो (हारी), वैराग्यियो—वि० ।

वैराग्योडी, वैराग्योडी, वैराग्योडी—भू० का० कृ० ।

वैराग्यज्यो, वैराग्यज्यो—भाव वा० कर्म वा० ।

वैराग्य-वि०—१ बहुत गहरा ।

२ खाली रिक्त ।

स पु—१ खाली भूमि ।

२ गहरा कूआ ।

३ हीरो की खान ।

उ०—हीरा वैराग्य हुवे, सीप समदरा थाय । नग लाखीखा नीपजे, 'माल' तणी घर माय ।

धी. मा.

४ एक पर्वत का नाम जहा हीरो की खान है ।

५ एक देश का नाम

उ०—ककण दामण सघण काछ पचाळ निरतर, सेतवघ रामेस लागी नव दीपां सायर भाडखड मेवाड खड गुज्जर वैराग्य, वागड महियड सहित खेड पावट पारक्कर । —नैणसी

६ एक प्रकार का कपडा विशेष ।

७ एक प्रकार का रत्न विशेष ।

उ०—१ बाघ घरे श्रौपत वैराग्य, ताम्र गळियो न घाय तन । दूजे 'रतन' भाज घड दीठी, रण अहरण भूरी रतन ।

—राव सत्रुसाल हाडा री गीत

उ०—२ वर सफर वागली, सार चक्र समसेरा । वाधी गाठ वदूक, डक वक हक डेरा । खेह धूणी खेरवे, चक नू ज वैराग्य । अग वभूत भूरी जटा, जरद कथा जोगेतर ।

सुरजनदास पूनियो

८ हीरा नामक रत्न विशेष ।

उ०—रथ मातंग तुरग अग प्रति अग सिगारे, जगमगति नव जोति साजि माणक सुघारे । सोमि जान सिरदार रूप अण्णपार विराजे, रतन निकरि किरि रचिर भोमि वैराग्य भ्राजे ।

—रा. रू

रू. भे —वइराग्य, वयराग्य, वैराग्य, वैराग्य, वइराग्य, वइराग्य, वयराग्य, वयराग्य, वैराग्य, वैराग्य, वैराग्य, वैराग्य ।

वैराग्य—देखो 'वैरागी' (रू. भे.)

वैराग्योडी—भू० का० कृ०—१ सासारिक क्रियाओं व वस्तुओं से विरक्त हुवा हुआ ; २ सन्यास लिया हुआ । ३ ईश्वर भजन में लीन हुवा हुआ, ईश्वर के प्रति आसक्त हुवा हुआ । ४ किसी कार्य या वस्तु पर से मन हटा हुआ । ५ सासारिक क्रियाओं व वस्तुओं पर से मन हटाया हुआ । ६ त्याग हुआ । ७ किसी कार्य या वस्तु का त्याग हुआ । (स्त्री वैराग्योडी)

वैराग्यी—१ देखो 'वैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ एक सगण प्रीतम तणो, वेले बीजी व्रत धार रे । तीजी तपसी वैराग्यो, राणी करुणा न करि लिंगार रे । —जयवाणी

उ०—२ परिसदा सुण पाछो गई, वलिया ऋण नरेस । गज सुकुमार वैराग्यो, लागी धरम नी रेस । —जयववाणी

२ देखो 'वैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

वैराग्य, वैराग्य—१ देखो 'वैराग्य' (रू. भे.)

वैरागी—स पु [सं] (स्त्री वैराग्य) १ व्यक्ति, जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो, विरक्त, वैराग्यवान् ।

उ०—१ दुख सुख का कारण मन जीता, सी जन है वैरागी । कहै सुखराम सुणो भाई साधी, और सवी है रागी ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

७०—२ बालपणं भारमलजी स्वामी ने आखी उत्तराध्ययन उभा-
उभा चितारणी इसी आग्या स्वामीजी दीधी । जद भारमलजी
स्वामी बोल्या—स्वामीनाथ कदाचित नीद में हूँतो पड जाउ तो ।
जद स्वामीजी पाछो फरमायो पूजनं खूणें उभा रही । इण रीत
आखी उत्तराध्ययन री सफाय अनेक वार कीधी । इसा बैरागी
पुरुख । —भि. द्र

२ सन्यासी, साधु ।

७०—१ सतगुरु सवद हिरदं धर लीया, अखड प्रेम रस पीया ।
हरिराम बैरागी बोले, सदा अमर जुग जीया ।

—श्रीहरिरामजी महाराज

७०—२ अपनो मोज चलै अरु वेंठें आस्रम वरण उलागी । एका
एकी विचरें ऐसैं, जग वन सिध बैरागी ।

—श्रीसुखरामजी महाराज

७०—३ बैरागी वन में बसैं, घरवारी घर माहि । राम निराळा
रह गया, दाहू इनमे नाहि ।

—दाहूवाणी

७०—४ रसी उधीर पख ठहराणें उठें प्रणाम करै रिख आणें ।
आतम ग्यान समुद्र अथागी, रमता परमहस बैरागी ।

—सू. प्र.

३ त्यागी पुरुष ।

७०—१ बैरागी विरक्त भली, जुग सु न्यारा मन । हरिया गिरही
सौ भली, सब सु दासा तन ।

—अनुभववाणी

७०—२ इतलै स्वामीजी गोचरी करने पाछा पधारया । जद...
.....ए कहया—भीखणजी । थै बैरागी वाजो नै इण मोहला
में नुखतो थयो त्रिण रा घर सू पकवान लाया । ति वारें भीखणजी
स्वामी बोल्या—इण री दोख काइ ? जद ए कहयो थै
बैरागी वाजो नै इसा काम करौ ।

—भि. द्र

७०—३ अय (ती) हरि नाम ली लागी । सब जग की यह माखन
चोरयो, नाम घरयो बैरागी । कित छोडी वह मोहन मुरळी, कित
छोडी सब टोपी । मूड मुडाइ डोरी कटि बाधी, माथे मोहन टोपी ।

—मीरां

४ उदासीन वैष्णव सम्प्रदाय ।

वि० वि०—यह विरक्त साधुओं की तरह का एक सम्प्रदाय है ।
इनके व सन्यासियों के मत में अन्तर है । विष्णु को अपना इष्ट
मानते हैं तथा विष्णुअवतार राम, कृष्णादि को पूजते हैं अतः
वैष्णव कहलाये । ये लहसन, प्याज, सलगम, गाजरदि नहीं खाते
तथा गाजा, चरस, धाराब आदि नहीं पीते । प्यारस, जन्माष्टमी,
नुसिदावतार आदि के दिन व्रत रक्ते हैं व उत्सव मनाते हैं । गीता,
शामायण, महाभारत आदि इनकी धर्मपुस्तकें हैं । इनमें चार सम्प्र
दाय हैं जिनमें भाव भक्ति के नियम अलग अलग हैं ।

१ रामानुज सम्प्रदाय—जिसे श्री सम्प्रदाय भी कहते हैं तथा रामा-
नुजाचार्य ने चलाया था । इस सम्प्रदाय का उन्होंने सेवकों को
शास्त्रार्थ में जीत कर चलाया था । इनकी पाटगादी मद्रास में
गादीघर, आचार्य कहलाते हैं । ये शादी नहीं करते । गादी पर
विद्वान ब्राह्मण ही बैठता है जो इनका पाटवो चेला होता है । इन
के चेलो के दोनो भुजाओं पर यज्ञ, पूजादि के वाद चादी की तप्त-
मुद्रा से शख, चक्र, गदा पद्म आदि के चिन्ह लगाये जाते हैं ।
बालको के केसर की छाप लगाते हैं जिसे शीतलमुद्रा कहते हैं ।
ये तुलसी की माला पहनते हैं व शिर पर सफेद मिट्टी का अर्द्धपूड
(तिलक) लगाते हैं । इनके मन्दिरों में शेषशाई, वेनीगोपाल व जुगल
मूर्ति राधाकृष्ण व सीताराम आदि की रहती है । ये आरती के
वक्त तबि का शक वजाते हैं एव असली शक को हाड का
मानते हैं ।

२ विष्णुस्वमी द्वारा चलाया हुआ शिव सम्प्रदाय जिसे रौद्र सम्प्र-
दाय वा विष्णु स्वामी सम्प्रदाय भी कहते हैं । इस सम्प्रदाय का
सिद्धान्त है कि शुद्धाद्वैत ईश्वर कृष्ण रूप एक ही है । ये भी तुलसी
की माला पहनते हैं तथा अर्द्धपूड तिलक लगाते हैं ।

३ ब्रह्म सम्प्रदाय, जिसे माध्य, गौड व महाप्रभु सम्प्रदाय भी
कहते हैं । इसे ब्रह्माजी ने चलाया था व माध्वाचार्य ने प्रसिद्ध किया
था । ये कृष्ण को इष्टरूप में मानते हैं । मन्दिरों में जुगल मूर्ति
राधाकृष्ण की होती हैं । ये विष्णु कहलाते हैं तथा हथियार भी
बाधते हैं ।

४ सनकादिक सम्प्रदाय या निम्माक सम्प्रदाय जिसे सनकादिक ने
चलाया था तथा अरुणकृति के पुत्र निम्माक स्वामी ने फैलाया था ।
इस सम्प्रदाय का सिद्धान्त द्वैताद्वैत है अर्थात् ईश्वर माया से
अलग नहीं है । कृष्ण ही इनका इष्ट है । राधाकृष्ण की जुगल
मूर्ति की पूजा व उपासना करते हैं । ये निहंग व गृहस्थी भी हो
सकते हैं ।

रू भे —घडरागी, वयरगी, विरागी, बैरागी, वैरागी, वडरागी,
वयरगी, विरागी, वैरागी, बैरागी ।

अल्पा,—वयरगियों, वैरागियों, वैरागियों, वैरागीयों ।

बैरागीयों—१ देखो 'बैरागी' (अल्पा., रू. भे.)

७०—अप हुवी बैरागीयो रे, जीता विसय कलाय, खटकी जेहना
रे मन थो टल्यो रे । सेठ सहित सयम लीयो रे, सद्गुरु पातें
जाय ।

—वि. कु.

२ देखो 'बैराग्य' (अल्पा., रू. भे.)

बैराग्य—सं पु [स] १ ससार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होने की
मन की एक प्रवृत्ति विशेष, जिससे लोग सासारिक रुझत छोड कर
एकांत में रहते हुए ईश्वर-भजन करते हैं ।

२ असन्तोष, अप्रसन्नता ।

३ घृणा, ग्लानि, अरुचि ।

५ किसी के प्रति राग-भाव न होने की अवस्था या भाव ।

उ०—ससार असार, दुखनु भडार, जिसिउ पीपल नूं पान, जिस्यु गजेंद्र नु कान, जिस्यु वीज नु भ्रुकु, पोइणिनिइ पाणी तणउ टवकु, जिस्यु बहुबोलनी जीभ नु लोलु, जिस्यु काग नु डोली, जिस्यु धज नु अचल, तिसिउ संसार चचल, वैराग्य । —व. स

रू भे —वइराग, वयराग, विराग वैराग, वैराग, वैराग्य, वइराग, वयराग, विराग विरागीय, विरागी, वैराग, वैराग्य, वैराग ।

अल्पा, —वयरागियो, वैरागियो, वैरागियो, वैरागियो ।

वैराडी—स स्त्री —एक प्रकार को रागिनी विशेष ।

रू भे —वइराडी, वयराडी ।

वैराज—स. पु [स] १ विरजस् नामक प्रजापति के सात पुत्रों में से एक जो पितर कहे जाते हैं ।

२ देखो 'वैराज' (रू भे)

वैराजी—देखो वैराजी' (रू भे.)

उ०—१ वू दी में सवाईराम भोसवाल चरचा करतां भिक्कु कहयो—गाय भंस रा मुहडा भागे घणो चारो नाख्या भोगालो करे । जब तेहू कहै—मोनें ढाढो कहयो—वैराजी थयो तव स्वामीजी कहयो—यें ढाढा थया म्हारो ग्यान चारो थाय । इम कहयां राजी थयो । —भि. द्र.

उ०—२ देसूरी नां नाथ साधु स्त्री बेटी मा छोड दिक्षा लीधी, पिण प्रकति करडी, आछी तरह आगया में चाले नही । तीन वरस आसरं टोला में रहयो । पछें टोला वारं निकल गयो । कनं हुंता त्या साधा स्वामीजी नें आय कहयो—नाथी छूट गयो । जद स्वामी जी कहयो—किणहिरं गूवडो दुखतो घणी नें पछें फूट गयो तो ऊ राजी हुवं के वैराजी ? —भि. द्र.

उ०—३ जद तं राजी होय बोल्या—म्हारं काल को गराक आयो । रुपियो हाथ में लेई देखे ती खोटी । माहें तावी नें ऊपर रूपी । भलगो न्हाखनं बोल्यो—प्रभातं खोटा नाणा री वरसन हुआ । जद ऊ बोल्यो—साहजी वैराजी बयूं हुआ । परसूं तो म्हें पइसी आण्यो सी तावी नाणी बायो । —भि. द्र.

वैराजीपण, वैराजीपणी, वैराजीपी—देखो 'वैराजीपी' ।

वैराट—स पु. [स वैराटः] १ इन्द्रगोपक कीट, वीर-वहूटी ।

२ घृतराष्ट्र के साँ पुत्रों में से एक जो भीम द्वारा मारा गया था ।

३ राजा विराट का उत्तर नामक पुत्र ।

वि० १ विराट का, विराट सम्बन्धी ।

२ लस्वा-चौडा, विस्तृत, फैला हुआ, बडा ।

उ०—घटयदा वैराट घाट, केता निरवहा । —केसीदास गाडण

३ आकार की दृष्टि से महान्, बडा, विशाल ।

उ०—१ ब्रह्म नमो छुब ब्रह्म, ब्रह्म कहिजे ब्रह्मचारी । ब्रह्म नान्ही वैराट, क्रम अक्रम कूडा री । —पी. ग्र

उ०—२ करतार मेह करति, व्रम चिहूँ रसा वरसति । परमेस पार अपार, वैराट घट विसथार । —पी. ग्र.

उ०—३ दास तन भजन विन सो सबी दासरथ, थिरू बस कोड वातें न थावें । देवपत रूप वैराट थारो दुगम, अणु मन सेवगा सुगम आवें । —र ज प्र

उ०—४ पयपे पूरण आदि पुरुख, उपर्ष ब्रह्मा ईस अलख । थया तिया रूप सरूप सुषट्ट घटें घठघाट वैराट सुषट्ट । —रा. बसावली ४ भयकर, भयावह ।

उ०—१ अइडाट नाव वैराट अज, घट्ट जाणि डूजो घडे । वरमाळ ऋळ गौळा वहनि, प्रळकाळ छौळा पडे । —सू प्र

उ०—२ इतरं मलग गंबी मरद उठीयो, सठि नें हाक मारं छें । तिकें रे पकी वारह माण लोह री साकळ पग माहै नवगजो जोधो, वडो माथो । सिर ऊपर घणो वावरी छें, ऊपर उधो तबली । सवा मण री कुतकी हाथ माहै छें, वडो भुजाडड । वैराट रूप धारिया थका निरवाणी योगिद्र हुवी तिसडो । कनं कपडो नही, दिगबर आडवर धारिया थका । —तिमरालिग पातसाह री वात

६ देखो 'वैराट' (रू भे) (सभा)

उ०—१ घणी ग्राह ना मारिवा भलो धायो, हरि तूभ अवतार वेदें हुलायो । निमो वामणा राम वैराट ब्रह्म, अधिक् रीजियो इदि ऊपरि अग्रमु । —पी ग्र.

उ०—२ देस सहू में दीपतो रे, वारू देस वैराट । सहू को लोक सुखी सदा रे, वरतं निज कुल वाट । —ध. व. ग्र

उ०—३ मगध कोसल अग वग कलिग कामी कुच देस, सोरठ कछ विदेह जागल कुसावत कहेस । भग लोबीर वैराट मलय साडिल सूरसेन, वरण पचाल दसारण कुणाल देस में चैन । —वृस्त ७ देखो 'ब्रह्मरघ्न' ।

उ०—१ चख सूरिज नें चद्रमा, घणनामी घट घाट । पिंडी मोटी मोटी प्रभु, वप छोटी वैराट । —पी ग्र

उ०—२ लगी चोट सत सबद की, खुलहा ब्रह्म कपाट । मेवासा सब जीत के, वस्या नगर वैराट । —अनुभववाणी

उ०—३ वाटि विगट वैराट की, पुंहचंगा कोई सूर । हरीया कायर थकि रहया, दरगाह रहीया दूर । —अनुभववाणी

रू भे —वराट, विराट, वैराट, वैराट, वइराट, वयराट, विराड, वैराट ।

वैराटरूप—स पु [स] परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप ।

वैराणी, वैरावी—देखो वैराणी, वैरावी' (रू भे.)

२ सूर्य के एक पुत्र का नाम ।

३ अग्नि के एक पुत्र का नाम ।

४ देखो 'विरोचन' (रू. भे.)

उ०—१ प्रथम राजा आदि, पुत्र भरत, पुत्र सूर्यजिसा, पुत्र ईशवाक । अठे ईलाग वम थाप्यो । इलाग पुत्र समुद्र, पुत्र चद्रमा, पुत्र बुध पुत्र पुनदैत्य, पुत्र विद्याधर, पुत्र मुचकुंद, पुत्र हिरण्यकुस, पुत्र पहिलाद, पुत्र बंदोचन, पुत्र बळिराजा, तिवी चकवे हुवी ।

—रा वसावळी

उ०—२ बंदोचन तन बहरियो, विप्र छुडाय बाळ । तिए पुन्यधी पुत्र पामियो, बलिराजा विरदाळ ।

—रा वसावळी

उ०—३ भली हुइ जे नही वळी बंदोचन रे सत्य । मौ देखता मडियो, हरि बळि आगळि हृत्य ।

—रा. वसावळी

रू भे —बंदोचन ।

बंदोचनि, बंदोचनी—स. स्त्री [स] विरोचनमुता एव त्वष्टृपत्नी यशो-धरा का नाम ।

बंदोचि, बंदोची—स. पु [स बंगेचि] पातालनरेश बलि का ज्येष्ठ पुत्र बाण नाम असुर जो अनिरुद्ध की पत्नी ऊपा का पिता था तथा शिव के वरदान से देवताओं पर शासन करता था ।

बंदोट—देखो 'बिराट' (रू. भे.)

उ०—मनय सिंगल कोसल नइ अव्य स्त्री परवत द्राविड नइ वध्य । बंदोट तापी लाजी धार, स्त्रीवदरभ पाटल अति सार ।

—नळदवदतीरास

बंदो—१ देखो 'बेरी' (रू. भे.)

२ देखो 'बेरी' (रू. भे.)

उ०—बंदे बंस न भरविये मन में रही सधीर । हरीया साहिव सा धणी, पारि उतारे तीर ।

—अनुभववाणी

३ देखो 'बंद' (रू. भे.)

उ०—बहाला नइ बइरी विचइ, नवि करवड बंदो । पद ना अव-गुण देखि नइ, नवि करवड चेरी ।

—स. कृ

बंदो—देखो 'बहरो' (रू. भे.)

बंल—१ देखो 'बंल' (रू. भे.)

२ देखो 'बौहळियो' (रू. भे.)

३ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—अरु बंन अक रिडमल री तिकी पाटण तवरा नूं परणायी ही । सू आ विघशा हुई, तद इण नूं खडेलं लाया । पीछे रावजी खडेली लूटियो । तद इण प्राणकवर नूं पकडी अरु रावजी स्त्री-कंजी आररी ठकुगणी करी । नें बंल वंसाणी ।

—द दा

बंलडली, बंलडी,—१ देखो 'बेल' (अल्पा, रू. भे.)

२ देखो 'बहल' (अल्पा, रू. भे.)

बंलण—१ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

२ देखो 'बेलण' (रू. भे.)

बंलणी, बंलवी—१ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रू. भे.)

२ देखो 'बंलणी, बंलवी' (रू. भे.)

उ०—अक दिन बसी नें बराबर बुखार बणियो रयी । रात नें बुखार १०४ डिगरी हुयग्यी, जकें रे जोर सू बंलण लाग्यी । रे-रे र कंवती मा गोमती । तू कठं हे ? हाय ! म्हारे जीता-जी तने दूसरे री द्वारी देखणी पडियो ।

—बरसगाठ

३ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रू. भे.)

बंलणहार, हारी (हारी), बंलणियो—वि० ।

बंलणोडो, बंलियोडो, बंलणोडो—भू० का० कृ० ।

बंलोजणी, बंलोजवी—भाव वा०

बंलणी, बंलवी—१ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रू. भे.)

२ देखो 'बंलणी बंलवी' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलणी, बेलवी' (रू. भे.)

बंलणहार, हारी (हारी), बंलणियो—वि० ।

बंलणोडो, बंलियोडो, बंलणोडो—भू० का० कृ० ।

बंलीजणी, बंलीजवी—कर्म वा० ।

बंलवान—स पु—रथ को हाकने वाला व्यक्ति सारथी ।

उ०—भोजास गाव अरु जात गोदारी, सेढी नाम जम का प्यारी । रथ की बंलवान बड भारी, धामन कीनेऊ ताहि विचारी ।

—मेहोजी गोदारी थापन

बंला, बंला—१ देखो 'बेला' (रू. भे.)

२ देखो 'बेला' (रू. भे.)

बंलियोडो, बंलियोडो—१ देखो 'बंलियोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बंलियोडो' (रू. भे.)

३ देखो 'बेलियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बंलियोडो, बंलियोडो)

बंली—क वि—१ उस ओर, उस तरफ ।

उ०—दाहू सेख मुसायख श्रीलिया, पंगवर सब पीर । दरसन सी परसन नही, अजहू बंली तीर ।

—दाहूवाणी

२ देखो 'बहल' (रू. भे.)

३ देखो 'बेली' (रू. भे.)

बंल—देखो 'बेल' (रू. भे.)

उ०—सुरह गाय री ग्रीवा इण गाय सू लाजी हुवे । बंल ही लावी छे सुरह गाय इण गाय सू । १३ लाख चमर प्रमुख देसा सू हिंद में आवे है ।

—वा दां ह्यात

बेळी बेली—देखो बेली' (रू भे)

बेळी—देखो 'बेळ' (भ्रूपा, रू भे)

बेळ—स पु. [स.] विल्व नामक बेळ का पत्ता या फल ।

बेध—देखो 'बेध' (रू भे)

बेवणी—देखो 'बेवणी' (रू भे)

बेवणी—देखो 'बेवणी' (रू भे)

बेवणी, बेवणी—१ देखो 'बेवणी, बेवणी' (रू भे)

२ देखो 'बेवणी, बेवणी' (रू भे)

बेवणहार, हारो (हारो), बेवणियाँ—वि० ।

बेवणोडी, बेवणोडी, बेवणोडी—भू० का० कु० ।

बेवणोडी, बेवणोडी—कर्म वा०, भाव वा० ।

बेवतन—देखो 'बेवतन' (रू भे)

उ०—तिका भाई राजा नु इम कहै, "पठाण दुसमण नैडा राखजै नहीं।" राजा रे मोहल माहे सुदराणी दहड तिका पदमणी कहै, "राजा, दुसमण नेडा राखीया तिका घकी खाधी। फीजा कर साथ भेळी कर पाहड माहा सो ईहा नू खेद काढी, बेवतन करी।
—राजा नरसिंघ री वात

बेवस—१ देखो 'बेवस' (रू भे.)

२ देखो 'बेवस' (रू भे)

बेवसरणमनु—स पु. [स] ब्रह्मा के चौदह मनुष्यो मे से एक, बेवसस्त ।

बेवसस्त, बेवसस्त—स पु. [स.] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम ।

२ एक रुद्र का नाम ।

३ शनिचर जी महाराज ।

४ ब्रह्मा के चौदह पुत्रो (मनु) मे से एक, जो मनुष्यो के मूल पुरुष माने जाते हैं ।

५ एक प्रकार का तीर्थ विशेष जिसमे स्नान करने वाला स्वयं तीर्थरूप हो जाता है ।

६ वर्तमान भवन्तर का नाम । (पुराण)

७ यम, घर्मराज ।

रू. भे —बेवस, बेवसस्त, बेवसस्त, बेवस ।

बेवसती—स. स्त्री —यमुना नदी का नाम ।

बेवार—१ देखो 'बेवार' (रू. भे.)

उ०—रमेश बोलियो—होई चोर हू जकी बीजै री जमानत घताऊ ? थं आज ई काम पडियो र आज ई भूलग्या । बाणियो री काई प्रीत । सेठ कयो इयें में चिगण री तो वात ई कोयनी, आ तो बेवार री वात है । खैर, अवार तो सिधावी, काल सोच' र कवाय देसू ।
—वरसगाठ

२ देखो 'बेवार' (रू भे)

देखो 'बेवारिक' (रू भे)

बेवारियो—देखो 'बेवारियो' (भ्रूपा, रू भे)

बेवियोडी—१ देखो 'बेवियोडी' (रू भे.)

२ देखो 'बेवियोडी' (रू भे.)

(स्त्री बेवियोडी)

बेसदर—देखो 'बेसदर' (रू. भे.)

उ०—१ बेसदर लकड पाखाण, जिम लोह लुकाया ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ साखि दिव्यं श्रीराम, कुवर ती अर्जुं कवारी । कय सुणी एक कानि, वीर मनि वात बिचारो । बिखै रहा बनवासि, जानकी भली भेल्यो । बेसदर रं पासि, धिरत रहे किम रेल्यो ।

—सुरजनदास पुनिनी

उ०—३ उया माहि मिळै जेसाह' आय, बेसदर जाणिक भोल वाय ।

—सू प्र

बेसधि, बेसधि—देखो 'बेसधि' (रू भे.)

उ०—सु इह ती न वाळक अवस्था माहे सूत्रं छै । नै यौवण आयं जागं छै । इहि विधि की सधि सु वयसधि कहावै । जैसे सुपिनी । न सोवै न जागे छै । आयं पल पल चढती होती । पिणि हिंव बेसधि की इसी प्रथम रयान ताकी इसी परिछै । —बैलि टी.

बेसनर—देखो 'बेसनर' (रू भे) (ह ना मा)

उ०—जळै सहर पुर जास, निसा श्रीजास निहारै । साह प्रळै सपेलि, सोच मद मोच सभारै । खडीवन समरत्थ, पत्थ निज हत्थ जळायी । कना लक विण सक, हणू बेसनर लायो । —रा. रू

बेसपा, बेसपायन—स पु. [स बेसपायन] १ वेदव्यास के एक शिष्य, एक प्रसिद्ध ऋषि जो यजुर्वेद के प्रवर्तक थे तथा हरिवंश के प्रचारक थे । इन्होंने जनमेजय को महाभारत सुनाया था ।

उ०—बेसपा एम ओचरं, जनमेजं सवर्णं धरं । विस्तरं बाणीइ गुण पाडय तणा रे । पाडव ना गुण विस्तारी नै साभल तुं, भूपाल, जेने पोता ना करी जाणै स्वामी श्रीदीनदयाल ।

—नट्टास्यान

२ एक ऋषि जो युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे उपस्थित था ।

३ शौनक ऋषि से तत्वज्ञान पर सवांदकर्ता एक ऋषि ।

रू भे —बेसपायन ।

बेस—१ देखो 'बेस' (रू भे.)

२ देखो 'बेस' (रू. भे)

३ देखो 'बेस्य' (रू भे)

४ देखो 'बेस्य' (रू भे)

उ०—रस सचं माखी जुही, कीडी ज्य कणरास । धरं भेस जिम जीरवं, बेस दकाना बास ।

—वा. दा.

५ देखो 'बेस' (रू भे)

उ०—१ चढती बंस नेंए अणियादरे, तूं घरि घरि मत डोल ।
मीरा कै प्रभु हरि अविनासी, चेरि भई विन मोल । —मीरा

उ०—२ दुहू वाद माती कहर साह वं देखवें, भार पडियी कहर
गजा भारा । बंस कह, 'बोठळा', हालि घर दिसि वजा, सरम कह,
'बोठळा', वाजि सारा । —लिखमीदास व्यास

उ०—३ अमग मछरीक इण भाति सू ऊचरे मूदी माहरी खरो
काम माथे । बंस हूता कछी, राजि अपछर वरो सरम, थं हुवो
इदलोक साथे । —लिखमीदास व्यास

बंसक—स. स्त्री [स. वेशक] १ वेदया, रडी ।

उ०—व्रतभगी हूँ अरथ खग, नाहा भय रस नास । कुकवी बंसक
तुल्य कर, वरणं सुकवि विमास । —वा दा.

२ देखो 'बंसक' (रू. भे.)

३ देखो 'बंसक' (रू. भे.)

बंसण—देखो 'बंसण' (रू. भे.)

बंसणव—देखो 'बंसणव' (रू. भे.)

बंसणी—स. स्त्री.—१ चार प्रकार की गाथाओं में से एक प्रकार की
गाथा विशेष, जिसमें २७ लघु वर्ण होते हैं । (र. ज. प्र.)

उ०—रूपा भरण बंसणी राजत, सुद्रणि पीतळ भूखण साजत ।
ऊजळ तिलक विप्रणी श्रोपत तिलक सुद्रणी लाल श्रोपत ।

—र. ज. प्र.

२ वंश्य की स्त्री ।

बंसणू—१ देखो 'बंसणव' (रू. भे.)

उ०—कट्टर गी-भक्त-गाया कसाई लेवें है, विये सू ऊपर कोई बोली
की देवें नी, इत्ता डागरां री १५०) मुकार्त बोली दी है, कूई थैई
वधी नी, तिलक काछण नै है, दीखी ती बंसणू धरम में ही ।

—वरसगाठ

२ देखो 'बंसणू' (रू. भे.)

३ देखो 'बंसणी' (रू. भे.)

उ०—जीण मेरी वाई ये ऊचो सौ घालू ये थाने बंसणू, बंनड
भाई जीमा साथ, जामण की ये जाई, विच विच बडळा ये वाह्हा
गोसिया । —जीणमाता री गीत

बंसणी—देखो 'बंसणो' (रू. भे.)

उ०—१ जीण म्हारी वाई अँ ऊचो सौ घालू तमें बंसणी ।

जीणमाता री गीत

उ०—२ छाडें छतर बंसणी, भूपति छाडें देस । हरिया सेभ
सराय में, काळ क्रिया परवेस । —अनुभववाणी

उ०—३ चनण चौकी कडेरी धारी बंसणी, तुळछो री माळा थारं
हाथ । आयो हलकारी श्रीभगवान री ।

बंसणी, बंसवो—देखो 'बंसणी, बंसवो' (रू. भे.)

उ०—१ जूजर वेरें बंसता, जळ में जोखा होय । हरिया हरि
सिवरन विना, पारि न पृहता कोय । —अनुभववाणी

उ०—२ लावक लाविका फारवा लाग । बंसतें चौमासं ती ए द्रस्टात
दीवो । तिण सू अमरसिंहजी वाला ती राजी रह्या । मित्रवाला
नं समझावा लाग । पद्यें उतरतें चौमासं फतेचदजी गोटावत
वोल्या—भीखणजी मित्रवाला नं इज निखेधो पिण पुन्य वाला
नेडा वेटा त्याने क्यूं नही निखेधो । —मि. द्र

उ०—३ श्री राती भोजन बहरावें, आः बंस छोनं चमकावें । आप
अधारे श्रीरा चदणा, दुनिया धरम लाभ गुरवदणा ।

—अनुभववाणी

उ०—४ मन कै मड है तत वाधी तणी, पेम परतीत की लाव
पीठी सुधि अर बुधि का बंस विनायका, रस कै डोरडें गाठि
गीठी । —अनुभववाणी

उ०—५ ताहरा दोलजी कछी ऊभा रह्या ती सभै कोई नही । थारे
काम छे ती ऊट भेकाह छु तुं वासं चढि बंस कागळ लिख मोनें देख्यें
तू परी उतरें । ताहरा विवऊरियो ऊट ऊपर बंसि कागळ लिखण
लागो । —डो. मा

बंसणहार, हारो (हारो), बंसणियो—वि० ।

बंसिओडी, बंसियोडी, बंस्योडी—भू० का० कृ० ।

बंसोजणी, बंसोजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

बंसन—देखो 'बंसणू' (रू. भे.)

उ०—भोपना सकति सेव, बंसना श्रोतार ध्यावें, वभना कै बंद
पाठ, चतुराई चालि में । परवाई पखी में लोक, निरापेखी जन
कोई, हरिये कै राम एक, नहीं लाल पाल में । —अनुभववाणी

बंसनर—देखो 'बंसवानर' (रू. भे.)

उ०—खड ई धण पाणी बंसनर, सरव थोक सग्रह करे । जाळोर
नाम करवा जरू, चढि पठाण नह ऊतरें । —गु. रू. व

बंसनव, बंसनो—देखो 'बंसणव' (रू. भे.)

उ०—१ हैदरावाद मे गुजरातिया री पुगे करवान कहावें । कैई
गुजराती वणिक जंनो, कैई बंसनव है । केसोमद नूं फोडीमल बगेरें
ठावा आदमी हुता । —वा. दा ख्यात

उ०—२ क्या गिरही क्या बंसनो, राम सिवरि भें पारि । जन-
हरिग सिवरन विना, वाकु मार न पार । —अनुभववाणी

उ०—३ भगति बंसना नवध्या करिहै, दसधा की कुछि खवरि न
परि है । छापा तिलक वनावें वाना, इनतें साहिब रहिया छाना ।

—अनुभववाणी

बंसनर—देखो 'बंसवानर' (रू. भे.)

उ०—१ महादुरग अजमेर, 'सूर' जीती रिण चाचर। चळियो जोगरापुरी, वाइ जाणें वेंसन्नर। पाखरिजं गज थट्ट, खान सुरताण मिळं दळ। कटक वध अनिमध्य, हुएं फौजा हीलीहळ।

—गु. रू. व.

उ०—१ भोम भारभर हार कर्प हर, कोम क्रोड डर, ही-पुरं पत्यर। उहु वेंसन्नर, सामठा सधर, सुवमटा भूलर, फौज धासाहर।

—गु. रू. व

वसन्तपायन—देखो 'वसन्तपायन' (रू. भे.) (भा. म.)

वसन्तपाक—वि० [स. वसन्तपाक] १ किसी पदार्थ का या पदार्थ सम्बन्धी।
२ विषयी, लपट।

वसन्तलीए वसन्तलीन—स. पु. [अ. वेस्तिन] मरहम की तरह का एक प्रकार का चिकना पदार्थ विशेष, जिसका चमड़ी पर कोमल एव चिकनी बनाने के लिए लेपन किया जाता है।

उ०—आळा अर आलमारचा में ताकत वेगी लायोडी वग-सिला-जीत री सीस्या जचाई पडी है। किरीम-गारडर दिजाव, वसन्तलीन रा भरयोडा भाडिया, जै, मार्यं जेळमाळा यणाया भिल्लै है। तेल-फुलेल, अतर-सेंट रा कटर अर सावण—सोडं रा गोडें-गोडें सूर्या सिद्धत राजा-मा' राजा रा सा पडघा दीखें। पटवारी है क, तैसील-दार ? किसनजी की कृत नी सवथी। —दसदीख

वसन्तवारिणीलीच—देखो 'वसन्तवारिणीलीच' (रू. भे.)

वसन्तारणी, वसन्तारणी—क्रि. स.—१ दफनाना, गाडना।

उ०—मैं तो इण नू मूहडा स बहन कही जिकी कोई म्हारें काम नही। तद राजा भीमसेण ईसी सुण पडिता नू बुनाय वृभियो राजा नळ मोनूं दोस लगायो। ईण री अबे कासु करा, तद पडिता वेद मरजाद बहघी, राणी दमंती थारें घर वेटी कर राखी, पछे दमंती नें धरती खोदि माहें वसन्तारणी ऊर हळ री चाव कढावो पछे वारें काढी, इतरें नवो जन्म हूवो। —ढो. मा

२ अधिकार मे करवाना, हुकुमत देना।

उ०—गाव मारियो, चळियो, लूटियो। दिन दो महोर रहा। आमोज सुदि १५ घोसळपुर डेगे कीयो, दिन ७ रहा। पछे राव राम नू सोम्न वसन्तारणे कटक परा गया। तठा पछे वळे राव राम जाय फौज लायो। —मारवाड री रयात

उ देखो 'वसन्तारणी, वसन्तारणी' (रू. भे.)

उ०—१ राजा की रांशी नू गरम मास सात की थो। तद सगळा मत्री प्रधान मिळ राणी री पेट परनाळियो। पेट मा थो पुत्र नीसरियो। ती सतमामिया नू राज दीन्ही। राज सू दान पुण्य धरि सिधासण वसन्तारणियो। —सिधासण वत्तीसी

उ०—२ सुधो लगावसी, तबोल खाण नें देसी, अर घोसळ कोठा मडळ माडसी, त्यां माहें धानु वसन्तारणी। —पंचदडी री वारता

उ०—३ अर वैन अके रिडमल री तिकी पाटण तंवरानू परणायो ही। सू आ विधवा हुई, तद इणनूं खडेले लाया। पीछे रावजी खडेली लूटियो। तद इण प्राणकवर नूं पकडी अर रावजी नी वीकंजी आपरी ठकुराणी करी। नें वेल वसन्तारणी। —द. दा

उ०—४ पछे अचळी रिणमलोन मुलताण जाय तुरका री कटक आण जगमाल नू मराय नें वडा भाई गोपा नू विकूपुर रें पाट वसन्तारणियो नें जगमाल रा वेटा नू परी काडियो। —नैणसी

उ०—५ तद जगदेव दरवार आयो, तिकी,वी साटुक री वागो पहिरणें छे, रपिया १) री पाघ माथे थें काना हाथा माहें कडा सु इर्स सलूक सू मुजरी कियो। राजा छाती सू लगाय मिळियो, कने वसन्तारणियो नें पोसाख देखि नें कहयो, 'वेटा इसा कपडा वयू।' —जगदेव पवार री वात

वसन्तारणहार, हारो (हारो), वसन्तारणियो—वि०।

वसन्तारणियोडो, वसन्तारणियोडो वसन्तारणियोडो—भू० का० कृ०।

वसन्तारणजणी, वसन्तारणजणी—कर्म वा०।

वसन्तारणियोडो—भू० का० कृ० —१ गाडा हुआ, दफनाया हुआ। २ अधिकार मे करवाया हुआ, हुकुमत मे दिया हुआ। ३ देखो 'वसन्तारणियोडो' (रू. भे.) (स्थो वसन्तारणियोडो)

वसन्तारण—देखो 'वसन्तारण' (रू. भे.)

वसन्तारण—स. पु. [स. वसन्तारण] १ चंद्रमास के बाद एव ज्येष्ठ मास के पहले आने वाला एक महीना, जिसकी पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र मे पडती है।

उ०—१ लागने वसन्तारण री, वीज अरो अळबड। राम कियो मिळ 'केहगे' करी जिही सतखड। —रा. रू.

उ०—२ मासोत्तम वसन्तारण में, गढ जाळ धर हूँत। राणी पधरावी महुर, सार्यं कुवर सपूत। —रा. रू.

२ वाण चलाने की एक मुद्रा विशेष।

३ घोडा का एक रोग विशेष, किसमे उसका शरीर भारी हो जाता है। (शा. हो.)

४ मथदण्ड।

रू. भे.—विसाख, वसन्तारण, वडमाख वडसाड, वयसाख, विसाख, वैशाख, वसन्तारणी।

मह, —वसन्तारणी।

वसन्तारणनदन, वसन्तारणनदन—स. पु. [स. वसन्तारणनदन] गर्दभ, गधा।

वसन्तारणी—देखो 'वसन्तारणी' (रू. भे.) (अ. मा.)

वसन्तारणी, वसन्तारणी—वि० [स. वसन्तारणी] वसन्तारण मासकी, वसन्तारण मास से सम्बन्धित।

उ०—तकण समं कासी माहै वरस दन माहै, हेकण दन वंशाखी पूरणमामी करवत देअै । तठै करवत रा लॅरार सारा बीजा ही कोही हुंता तै पण आण मिळिआ । पूछ पूछ करवत देण लागौ ।

—कहणाणिप नगराजोत वाटेल री वात

स. स्त्री—१ वंशाख मास की पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र से युक्त होती है । इस दिन लोग जलाशयो पर जाकर स्नान करते है ।

२ वंशाख मास की शुक्ल पक्ष की तृतीया, अक्षयतृतीया ।

३ सौर मास की सक्रान्ति को मनाया जाने वाला उत्सव ।

४ लगडं आदमी के बगल मे रखने की एक प्रकार की लकड़ी ।

५ वसुदेव की एक पत्नी । (पुराण)

६ देखो 'वंसाख' (रू भे.)

उ०—पीडति हैमत सिसिर रितु पहिली दुख टाल्यो वसत हित दाखि । व्याए वेली तणि तरुवरा सा । बिससगिया वंसाखि

—वेलि

रू. भे—वंसाखि वंसाखी, व्याएसाही ।

वंशाखीअसटमी, वंशाखीअस्टमी, वंशाखीआटम-स स्त्री [स वंशाखी-अष्टमी] वंशाख शुक्ला अष्टमी को किया जाने वाला अपराजिता देवी का व्रत एव पूजा । इस दिन देवी को उशीर और जटामासी के जल से स्नान कराने से समस्त तीर्थों मे स्नान करने के समान फल होता है ।

वंशाखीवरत, वंशाखीव्रत-स पु [स वंशाखीव्रत] वंशाखामास की पूर्णिमा को किये जाने वाला व्रत ।

वंसाखी—देखो 'वंसाख' (मह, रू भे)

उ०—तासु उयरि प्रभु अचतरथा, मुदि वारस वंसाखी जी । चवद स्वप्न राणी लहथा, सुपन पठिक सुत दावी जी । —स कु.

वंसाडणो वंसाडवो—देखो 'वंठाणी, वंठावो' (रू भे)

उ०—देही कण इगार जू तपे, राजर माथ भयठ उगतउ भाण । माघ पडित ईम उचरई, चउरी कुवर वंसाडो छई आणि ।

—वी. दे

वंसाडणहार, हारी (हारी), वंसाडणियो—वि० ।

वंसाडिओडो वंसाडियोडो, वंसाडयोडो—भू० का० कृ० ।

वंसाडोचणो, वंसाडोचवो—कर्म वा० ।

वंसाडियोडो—देखो 'वंठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वंसाडिोडो)

वंसाणो, वंसावो—देखो 'वंठाणी, वंठावो' (रू. भे)

वंसाणहार, हारी (हारी), वंसाणियो—वि० ।

वंसायोडो—भू० का० कृ० ।

वंसाईजणो, वंसाईजवो—कर्म वा० ।

वंसानर—देखो 'वंम्बानर' (रू भे)

उ०—१ पुहप छै सु काम रा वारा छै । सु काम आपणा वारा हाथ लीया । रितिराइ कहता वसत तै कै पसाइ करि जन मनुस्य आगि सौं सपरस करता था सु तै दुख तै रहता हुआ । समस्त नर जगत्र वंसानर परसतौ रहींयो । —वेलि टी

उ०—२ ग्रह भाळा गरजत, ववै लोळा वंसानर । नर पुर जन हरि नाम, उचरि समरत अगोचर । सती अग पति सग, उलसि रग पावक अकित । रोम अस्त पळ चरम, होम वपु नाडि सामि हित ।

—रा रू

वंसारण—देखो 'वंसारिण' (रू. भे.) (अ मा, ह ना. मा)

वंसारणी, वंसारवो—देखो 'वंठाणी, वंठावो' (रू भे)

वंसारणहार हारी (हारी), वंसारणियो—वि० ।

वंसारिओडो वंसारियोडो, वंसारयोडो—भू० का० कृ० ।

वंसारीजणो, वंसारीजवो—कर्म वा० ।

वंसारद—देखो 'वंसारद' (रू भे)

वंसारिण-स स्त्री [स.] मछली ।

रू भे—वंसारिण, वंसारण ।

वंसारियोडो—देखो 'वंठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वंमारियोडो)

वंसारु—देखो 'वंसारु' (रू भे)

वंसाल-स स्त्री [स वंशाल] १ विशाल नामक राजा के द्वारा बसाया हुआ एक नगर । २ एक प्राचीन ऋषि ।

वंसालि—देखो 'वंसाली' (रू भे.)

वंसालिनी-स. स्त्री. [स वंशालिनी] विशाल राजा की पुत्री जो अवि-क्षित राजा की पत्नी एव मरुत आविहित राजा की माता थी ।

वि० वि०—इसके स्वयंवर के समय अवीक्षित राजा ने इसे वल-पूर्वक पकड लिया था किन्तु उपस्थित राजाओं ने अवीक्षित को पराजित कर पुन स्वयंवर करने की माग विशाल राजा से की किन्तु अवीक्षित के पिता वरधम ने स्वयंवर मे उपस्थित सभी राजाओं को परास्त कर अपने पुत्र को वन्धन मुक्त कर इसका हरण किया एव अवीक्षित के साथ इसका पाणिग्रहण सस्कार किया ।

वंसाली-स स्त्री [स वंशाली] २ एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसायी थी एव, जहाँ का लिच्छवी राजवश इति-हास प्रसिद्ध है तथा महावीर वर्द्धमान का जन्म इसी नगरी मे हुआ था ।

स पु,—२ अगिराकुल मे उत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

रू भे.—वंसालि ।

वंशालेय-स-पु [स वंशालय] विशाल का वंशज, तक्षक नामक एक आचार्य ।

वंसावणो वंसावणो—देखो 'वंठाणो, वंठावो' (रू भे.)

वंसावणहार, हारो (हारी), वंसावणियो—वि० ।

वंसाविओडो, वंसावियोडो, वंसाव्योडो—भू० का० कृ० ।

वंसावीजणो, वंसावीजणो—कर्म वा० ।

वंसावियोडो—देखो 'वंठायोडो' (रू भे)

(स्त्री वंसावियोडी)

वंसास—देखो 'विस्वास' (रू भे)

उ०—१ विरच जाय स्वारथ विना, स्वारथ जितरै सैण । वणक तणो वंसास की, वणक तणो की वण । —वा. दा.

उ०—२ तो दिन्न मेवाड, तो वियप्प कापिय सीसं । ना ऊ रयण वहीजं, वंसास कुभकरण कतधन । —नैणसी

उ०—३ माहाराजा नेडो तो कोइ गाम न्हो । असतरी कठा सुं ल्यावु । तरं तामस करनं वहुथो । तरं पथर री पूतळी री कहथो । तरं कान्हवदेजी कहथो । उरी लं श्राव । माहरी छाती ऊपर मेल दे । मन वंसास छं । —वीरसदं सोनीगरा री वात

उ०—४ तद भरमल री मा कहथो, "जो राज पूछियो कदं नही । अर विना पूछिया कहू, सो इसी कोई हरख आपरं न थो । अर वंसास पिए कोई न थो । तंसु कही नही ।" तद राणं कहथो— किसी जायगा राखिया, सो ठोड दिखावो ।

—कुंवरसी साखला री वारता

वंसासघात—देखो 'विस्वासघात' (रू. भे)

वंसासणो, वंसासवो—देखो 'विस्वासणो, विस्वासवो' (रू भे.)

उ०—१ तुरी सपताम तूल, फाटकियो नाखी भूल । वंसासये दीन्ही वाच, डावहियं लगाण डाच । —गु रू. व

उ०—२ इण भात हालतो देख नं गोढवाड पाखती सोनगरा री ठकुराई सु सोनगरा नू अमावा हुवा जु ए पाखती भुडो, इण नंडा थका म्हाणु विगाड, तरं राव रिणमल नूं परणाय नं वंसासिया, आधोजाव हुई । तरं सोनगरां मिळ नं वेटी नू कहथो—बाईं म्हे थारा माटी घागं रह सका नही, तु वंसाससे तो म्हे रिणमल नूं मारा । —राव रिणमल री वात

वंसासणहार, हारो (हारी), वंसासणियो—वि० ।

वंसासिओडो, वंसासियोडो, वंसास्योडो—भू० का० कृ० ।

वंसासीजणो, वंसासीजणो—कर्म वा० ।

वंसासि—देखो 'विस्वास' (रू भे)

वंसासियोडो—देखो 'विस्वासियोडो' (रू भे)

(स्त्री वंसासियोडी)

वंसिक—स पु [स वंसिक] वेद्याओं के साथ भोग विलास करने वाला एक प्रकार का नायक । (साहित्य)

वंसियोडो—देखो 'वंठियोडो' (रू भे)

(स्त्री वंसिघोडी)

वंसी—स स्त्री.—१ वेद्य की स्त्री ।

२ चार प्रकार की गायामो मे से एक, जिसमे २७ लघु वर्ण होते हैं ।

उ०—१ विप्रो तेरह लघुव दीजं, लघु यकवीस खित्रणी लीजं । सतावीस लघु वंसी सोई, हे लघु अधिक सुद्रणी होई ।

—र. ज. प्र

उ०—२ विप्रो लुघ तेरह री वणाउ, इकवीस लुघू खत्रिणि उपाठ । लुघ सतावीस वंसी लखाइ, सहि सेख सुद्रणि मभाइ ।

—ल पि

वंसेसिक—स पु. [स वंसेपिक] छ' दर्शनों मे से एक कणाद कृत दर्शन,

जिसमे पदार्थों का विचार एव द्रव्यों का निरूपण है ।

वंसी—वि०—१ किसी की नकल का या किसी के अनुरूप ।

२ उस प्रकार का ।

रू भे—वेसो, वेहडु, वेहडी वेहडु, रेहडूं, वेहडी, वं'डी, वंडो ।

वंस्णव—वि [स वंष्णव] (स्त्री वंस्णवी) विष्णु का, विष्णु सम्बन्धी ।

स पु—विष्णु का उपासक, भक्त ।

उ०—चहुधा चरित्र वंस्णव विचित्र, त्रैलोक तत्र, वह मिळत अत्र । परिग्रह पूरण, तत मग्न तूरण, परमात्मा प्राप्त, वह पुरुख आत ।

—ऊ का

२ हिन्दुओं में, विष्णु की उपासना करने वाला एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय ।

३ इस सम्प्रदाय का अनुयायी व्यक्ति ।

रू भे—वेसनव, वेसनव्व, वंसनव, वंसनव्व, वइसनव, वेसनव, वंसणव, वंसणू, वंसनव, वंसनी, वंस्णवु ।

वंस्णवचाप—स. पु [स वंष्णवचाप] विश्वकर्मा द्वारा निर्मित सारंग नामक धनुष ।

वंस्णवी—स स्त्री. [स वंष्णवी] ? विष्णु की शक्ति ।

उ०—तावदिद सकल जगजीवति ईस्वरै विस्वकरत्रित्व मा मनति मनीसिण, एकिसार नी स्रस्टि ईस्वर हुती कहई, एकि ब्रह्मा, एकि वंस्णवी, एकि सावमाया, एकि सक्तितउ कहइ, पणि लक्ष्मीकृत रुसिठ मानोइ ।

—व. स.

२ देवी, दुर्गा ।

उ०—देवी वंस्णवी महेशो ब्रह्ममांणी, देवी ई द्राणी चद्राणी रमा-राणी । देवी नारसिंधी बराही विख्याता, देवी इळा आघार आसुर हाता ।

—देवि.

३ गंगा ।

४ लक्ष्मी ।

५ तुलसी ।

६ वैष्णव सम्प्रदाय की स्त्री ।

उ०—खाली एक अजोत घोती मे आपरा सरीर ने आमहच्छट सूं वचावण गी फिजूल कोसीस करती दरसण री भूखी वैष्णवियां, ढीली घोती अर नेहरू जाकेट पैरघोडा व्यापारी, दस गज री साडी ने गैलाई सू लपेटने माथे पर फूमा अर साग-भाजी रा ओडा ऊवायोडी मराठणिया, ऊजळा दही व्हे जिंसा कपडा में फूटरी-फूटरी गुजरातणिया अर हाथा में थैलिया लियोडा ग्राहक सव एक साथ ईज बाडा मायने सूं वकरिया निकळी व्हे ज्यू परमात में ईज निकलग्या हा । —रातवासी

वैष्णव—देखो 'वैष्णव' (रु. भे.)

उ०—वैष्णव राति चाण्ड पुडुर जागइ । —उ र

वैश्य—देखो 'वैश्य' (रु. भे.)

वैस्या—देखो 'वैस्या' (रु. भे.)

वैस्येस्वर, वैस्येसुवर, वैस्येस्वर—स पु. [सं वैस्येस्वर] महानदा के उद्धारार्थं अवत्तीर्णं हुआ एक शिवावतार ।

वैस्यप—स पु [स वैस्यप] कश्यप एव दनु का एक पुत्र दानव ।

वैस्यवण—स पु [स वैस्यवणः] १ धनपति, कुपेर । (अ मा,

ना मा ह ना मा.)

२ लकापति रावण ।

३ शिव, महादेव ।

रु. भे.—वैस्यवरण, वैस्यवण, वैस्यमण, वैस्यवण, वैस्यमण, वैस्यवण ।

वैस्याराण्य, वैस्यारण्य—स पु [स वैस्यारण्य] १ कुबेर के रहने का स्थान ।

२ वट वृक्ष । (अ मा, ना मा., ह ना मा)

वैस्ययुग—देखो 'वैस्ययुग' (रु. भे.)

वैस्यदेव—स पु [स वैस्यदेव] १ विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ ।

२ विश्वदेव को दिया गया उपहार ।

वैस्यदेवत—स पु. [स वैस्यदेवत] सत्ताईस नक्षत्रों में से उत्तरापादा नामक नक्षत्र ।

वैस्ययुग—स. पु. [स वैस्ययुग] वृहस्पति के शोभद्वत, शुभद्वत, क्रोधी, विश्वासु और पराभाव नामक पाच सवत्सरों का युग या समूह । (फलित ज्योतिष)

रु. भे.—वैस्ययुग ।

वैस्यानर—स. पु [स वैस्यानर] १ अग्नि की उपाधि । २ इन्द्र सभा का एक महर्षि । ३ भानुनाम अग्नि के प्रथम पुत्र का नाम ।

३ वह अग्नि जो अन्न पचाती है ।

कश्यप एव दनु के एक पुत्र दानव का नाम, जिसके, उपदानवी, हयशीरा, पुलोमा एव कालका नाम की चार कन्याएँ थी ।

६ वेदांत में चेतन शक्ति ।

७ परमात्मा, ईश्वर ।

८ भाग, अग्नि ।

उ०—जळ वैस्वानर ताडळ थाइ, पस्चिम ऊगइ दीस । नारायण टलतड कान्हव्दे, कहि न नामड सीस । —का. दे. प्र.

९ अग्नि देवता ।

रु. भे.—वसदर, वेसदर, वेसानर, वैसदर, वैसानर, वासदर, विसनर, विसन्नर, विस्वानर, वीसनर, वेसनर, देसनर, वेसवानर, वेसानर, वैसदर, वैसनर, वैसनर, वैसन्नर, वैसानर, वैसानर ।

वैस्वानरचूरण—स पु [स वैस्वानरचूरण] सेंधानमक, अजवायन और हरे आदि से बनाया जाने वाला एक प्रकार का पाचक चूर्ण विशेष । (वैद्यक)

वैस्वानरि, वैस्वानरी—स पु [स वैस्वानरि] भृगुकुलोत्पन्न एक गोत्रकार ऋषि ।

वैस्वामित्र—स. पु. [स वैस्वामित्र] विश्वामित्र के वंशज ।

वैवारियोलीच—देखो 'वैवारियोलीच' (रु. भे.)

वैहग—देखो 'वैहग' (रु. भे.)

उ०—सोभत मद सीतळ समीर, कौकला कुहक कृत सथर कीर । वाणी अनेक कुजत वैहग, नाचत मयूर आनद अग ।

—मयारांस दरजी री वाच

वैहचणी, वैहचबी—देखो 'वैचणी, वैचबी' (रु. भे.)

उ०—यूं करता, दोनू भायां रे आपस में दूदें अर भोज रे वडी वैघ पडियो । ताहरो राव सुरजन वेटा वेऊ तेडिनं कह्यो—यें मी ऊपर फिरिया । थं म्हारो कह्यो न मानो । म्हें राज सू कोई काम नही । थं धरती वैहच ल्यो । —नंगसी

वैहचणहार, हारो (हारी), वैहचणियो—वि० ।

वैहचिओडो, वैहचियोडो, वैहच्योडो—भू० का० कृ० ।

वैहचोजणो, वैहचोजवो—कर्म वा० ।

वैहचियोडो—देखो 'वैचियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री वैहचियोडी)

वैहडणो, वैहडवो—देखो 'वैहडणो, वैहडवो' (रु. भे.)

उ०—भागीरथी तणें तट भारथ, सत्र वैहडिया वचाई सार । रिम रेवग भेळाकर रचिया, सिव घर घर सिवपुरी सिगार ।

—चतुरी मोतीसर

वैहडणहार, हारो (हारी), वैहडणियो—वि० ।

वैहडिओडो, वैहडियोडो, वैहड्योडो—भू० का० कृ० ।

वैहडोजणो, वैहडोजवो—कर्म वा० ।

बंहरडियोडी—देखो 'बिहडियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बंहरडियोडी)

बंहर—१ देखो 'बयस' (रू. भे.)

उ०—छापर तवल ज वजिजवा, हुइ मरदा हल्ल । लाज कहै मर ज्यावणी, बंहर कहै धर चल्ल । —सिर्वासिध बागला री गीत

२ देखो 'बिघाता' (रू. भे.)

३ देखो 'बे'माता' (रू. भे.)

उ०—पमगा छाड पागडा वात ब्रेषडा बिचारी, आगे तूट आपणी बैर 'सारग' बढारी । होसी होवण हार बंहर लिखियो जिम ह्वे सँ, इग अपार धन देख कही डर जावा कैसँ । पा. प्र.

४ देखो 'बेह' (रू. भे.)

बंहरणी, बंहरनी—देखो 'बहणी, बहनी' (रू. भे.)

उ०—बळी आधा चलाया । सु घरती कोस एक आय रही । सासरँ सो नंडी गयो । इतरँ एक बडी पाकेट ऊठ पाहड हुवँ तिसडी बडी विपरीत तिकी आडी आय फिरियो । सु घोडे नू आधी बंहरण देवँ नहीं । —माडणसी कूपावत री वात

बंहरणहार, हारी (हारी), बंहरणियो—वि० ।

बंहरिओडी, बंहरियोडी, बंहरयोडी—भू० का० कृ० ।

बंहरिजणी, बंहरिजनी—भाव वा० ।

बंहरतीवाण—१ देखो 'बंतिवाण' (रू. भे.)

२ देखो 'बहतीवाण' (रू. भे.)

उ०—६०००) गाव रँ हासल रा घड कसाल पाटो । ५०००) च मारण बंहरतीवाण सु समत १७१६ पातसाह । —नंणसी

बंहरणी, बंहरनी—देखो 'बंरणी, बंरनी' (रू. भे.)

उ०—जिसो जोध बळि भद्र पळव दाणव महारिये । जिसो वीर नरसिध, हरिणकस्सिप बंहरिये । —गु रू. ब

बंहरणहार, हारी (हारी), बंहरणियो—वि० ।

बंहरिओडी, बंहरियोडी, बंहरयोडी—भू० का० कृ० ।

बंहरिजणी, बंहरिजनी—कर्म वा० ।

बंहराडणी, बंहराडनी—देखो 'बंराणी, बंरानी' (रू. भे.)

बंहराडणहार, हारी (हारी), बंहराडणियो—वि० ।

बंहराडिओडी, बंहराडियोडी, बंहराडयोडी—भू० का० कृ० ।

बंहराडिजणी, बंरानीजनी—कर्म वा० ।

बंराडियोडी—देखो 'बंरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बंराडियोडी)

बंहराणी, बंहरानी—देखो 'बंराणी, बंरानी' (रू. भे.)

बंहराणहार, हारी (हारी), बंहराणियो—वि० ।

बंहरायोडी—भू० का० कृ० ।

बंहराईजणी, बंहराईजनी—कर्म वा० ।

बंहरायोडी—देखो 'बंरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बंहरायोडी)

बंहरावणी, बंहरावनी—देखो 'बंराणी, बंरानी' (रू. भे.)

बंहरावणहार, हारी (हारी), बंहरावणियो—वि० ।

बंहराविओडी, बंहरावियोडी, बंहरावयोडी—भू० का० कृ० ।

बंहराविजणी, बंहराविजनी—कर्म वा० ।

बंहरावियोडी—देखो 'बंरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बंहरावियोडी)

बंहरियोडी—देखो 'बंरियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बंहरियोडी)

बंहरल, बंहरल—वि०—१ विना हल का, हलरहित ।

२ देखो 'बेहल' (रू. भे.)

३ देखो 'बेहल' (रू. भे.)

४ देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—१ पछे सचियायजी आय सुपने में हुकम दियो, वासँ हाथ दिया नँ कहची—काळी वागँ, काळी टोपी, बंहरल रँ काळी खोली, काळा बळद जोतरिया, जिदा रँ रूप किया साम्हा मिळसी । श्री गंचद छे, तू मत चूकँ, कूट मारँ । —नंणसी

उ०—२ तद आसधानजी वोलिया—जु वेटी थारी परणाय, म्हे जाणु । तद ब्राह्मण वेटी परणाई, फेरा लिया । पछे कानँ रा आदमी ब्राह्मण री वेटी नँ बंहरल बँसाण लँ हालिया । —नंणसी

उ०—३ इतरँ महाडोल मगायी । भरमल नुँ असवार कीनी । महाडोल रँ पुठे रथ बंहरल लगाई, पुठे उठ, घोडा सारा आगँ पाछे । इलँ में कुवरसी आप असवार हुय आय गेहती सौ महाडोल री पाखती आड लागी । —कुवरसी सांखला री वारता

उ०—४ सागला कही, बंहरल छोड देवो, आर्फ चनी आसी । तद खरळा बहलवान नु उतार रथ ऊपर सहेली नू चाढि बहीर कीवी । बहला भारवरदारी सारी रथ रँ पुठे लगाय दीया । ऊभा देखण लाग । —कुवरसी सांखला री वारता

बंहरलणी, बंहरलनी—कि अ, बुझना ।

उ०—अरिसेन बहू जत एक हियू भव वाहर पाल' हुते तइयू । मुझ वाधव 'पाल' जिसो न मिळ', वस दीपक आज परी बंहरल ।

—पा. प्र

बंहरलणहार, हारी (हारी), बंहरलणियो—वि० ।

बंहरलिओडी, बंहरलियोडी, बंहरलयोडी—भू० का० कृ० ।

बंहरलीजणी, बंहरलीजनी—भाव वा० ।

बंहरलि, बंहरली—देखो 'बहल' (रू. भे.)

उ०—कहची—मोहरत री वेळा टळी जाय छँ । प्रोळ खोली । सेजवाळा वारणँ ऊभा छँ । तरँ उणँ प्रोळ खोली । सेजवाळा सोह

माहे आया । तरं रावळा बंहली माहि था कूद-कूद जीनसालिया
उतरिया । दहिया रा जिंक कोट माहे हुता सु सीह कूट मारिया ।
—नैणसी

बंहलियोडो—भू० का० कृ०—बुझा हुआ ।

(स्त्री बंहलियोडी)

बंहली, बंहलो—वि० (स्त्री, बंहली बंहली) १ दुखी, घ्यथित, व्याकुल ।
उ०—तिरसी निवण तायं ग्रहे तट, बंहली जाब थिया पीहर
बट । जग कवियण थावं दुखीं जाम, तद ग्रहे छत्रिया सरण ताम ।
—रामदान लाळस

२ मस्त, डन्मत ।

३ शीघ्र, प्रतिशीघ्र, जल्दी ।

उ०—१ चुअ थाणाय चारण हीण सकं, धवलं दन कौळुअ गाम
धकं । कमघां घर राज किंसूं कहला, वत वाहर बीर चढौ
बंहला । —पा. प्र.

उ०—२ घल जाघड टाकेय जूझ घणौ, तिम खूर वंधं संहै बार
तणौ, । पुड जूफुहे 'पाल' हुतं पंहला, विङगा पर भीण न्हखी
बंहला । —पा प्र

रू भे—बेहनी, बंहली ।

बंहवार—देखो 'व्यवहार' (रू भे.)

उ०—जं ऊपर री तभर सुपर बंहवार, जिण थूआ ऊपरी फाठ
फडक्क फाडती । जिण समचं सोवन्न, जेण वदरा वधावं । जिण
सोभावं हट, जेण लाख्या लूटावं ।

—कमरसी खीवी सूरौत आसिया

बंहवारियो—देखो 'व्यवहारी' (भ्रत्पा., रू भे.)

बंहवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू भे.)

बंहायस—स पु [स] १ पातालनरेश बलि का एक विमान जिसे मय
ने बनाया था तथा यह शस्त्रास्त्रों से सुसज्जित एव अनेक आयुधों
से युक्त था ।

२ एक प्रसिद्ध एीथं कण्ड जो नरनारायणाश्रम के पास स्थित है ।

त्रि०—आकाश का, आकाश सम्बन्धी ।

बंहार—१ देखो 'व्यवहार' (रू भे)

उ०—नयन तं आसू खेरिया, कब रूँ भेटस्या सांभरघा-राव ।
जीवन घडोय तं नाव रहई, जिण सू कागली हुवा बंहार ।

—वी दे.

२ देखो 'बंभार' (रू भे)

बंहारियो—देखो 'व्यवहारी' (भ्रत्पा, रू भे)

बंहसक, बंरासिक—वि० [स. बंहसिक] हसी-मजाक करने वाला,
मसखरा, विद्वपक ।

बंहियोडी—देखो 'बंहियोडी' (रू भे)

(स्त्री, बंहियोडी)

बंहिलो—देखो 'बंहली' (रू भे.)

उ०—मघ कीटग वं भार, हार देवता हुई हरि । आहि आहि सुर
तवं, किसन बंहिलो ऊपर करि । —पी. प्र.

बंहूं, बंहू, बंहू—देखो 'बेऊ' (रू भे)

उ०—खीवी, विजी घाढावी बडा दोडा बडा चोर । विजी
सोभित वसं । खीवी नाडौल वसं । बंहूं रा भोसाप वडा । ऊ उण
री नाम जाणूं । ऊ उण री नाम जाणूं । पिण मिळिया फदे
नही । —बावीली

बंहकणौ बंहकवी—देखो 'विसूकणौ, विसूकवी' (रू भे.)

बंहकणहार, हारौ (हारौ), बंहकणियो—वि० ।

बंहकिभोडो, बंहकियोडो बंहकयोडो—भू० का० कृ० ।

बंहकीजणौ, बंहकीजवौ—भाव वा० ।

बंहकियोडी—देखो 'विसूकियोडी' (रू भे)

बंहकियोडो—देखो 'विसूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री बंहकियोडी)

बंहगणौ, बंहगवौ—देखो 'विसूकणौ, विसूकवी' (रू भे.)

बंहगणहार, हारौ (हारौ), बंहगणियो—वि० ।

बंहगिभोडो, बंहगियोडो, बंहगयोडो—भू० का० कृ० ।

बंहगीजणौ, बंहगीजवौ—भाव वा० ।

बंहगियोडी—देखो 'विसूकियोडी' (रू भे)

बंहगियोडो—देखो 'विसूकियोडो' (रू भे)

(स्त्री बंहगियोडी)

बोंकार—देखो 'बोंकार' (रू भे)

बोंयं—देखो 'बासं' (रू भे.)

बोंसली बोंसूली—देखो 'बसूली' (रू भे)

बो—स पु —१ विनय, प्रार्थना । (एका)

२ सातस्वर, सप्तस्वर । (एका)

३ समय, काल, वक्त । (एका)

४ पेड वृक्ष । (एका)

५ रथ हाकने वाला, सारथि । (एका)

६ देखो 'वौ' (रू भे)

बोअणौ, बोअवौ—देखो 'बोवणौ, बोववौ' (रू भे.)

बोअणहार, हारौ (हारौ), बोअणियो—वि० ।

बोअभोडो, बाइयोडो बोयोडो—भू० का० कृ० ।

बोईजणौ बोईजवौ—कर्म वा० ।

बोइयोडो—देखो 'बोवियोडो' (रू भे)

(स्त्री बोइयोडी)

बोई—देखो 'बही' ।

अबं वोन्गू मांमा—भाएँज रं आख्या में जाँएँ भेरू खिबं । हायां रं वटका भरं । म्हारं एवढ में सूँ इज वकरी लेय गया ? पर वोई जोर रं जरकं ? वाघ रं गळं वाडला नै हाय नाखियो ।

—अमरचूनडी

उ०—२ जाकं सिर मोर मुकंट मेरं पति वोई, सप अफ गदा पथ कठ माला सोई । झाई में भक्त जाण जगत देल मोई, अमुवन जळ सीच सीच प्रेम बेल वोई ।

—मीरा

घोड़खीचडी वोळखीचडी—देखो 'वहुलीचडी' (रू. भे.)

वोक—१ देखो 'वोक' (रू. भे.)

२ देखो 'वूक' (रू. भे.)

वोकह, वोकडु, वोकडो, वोकडु, वोकडो—देखो 'वोकडो' (रू. भे.)

वोकणी, वोकवो—देखो 'वोकणी, वोकवो' (रू. भे.)

वोकणहार, हारो (हारो), वोकणियो—वि० ।

वोकियोडो, वोकियोडो, वोकियोडो—भू० का० कृ० ।

वोकीजणी, वोकीजवो—कर्म वा० ।

वोकारणी, वोकारवो—देखो 'वाकारणी, वाकारवो' (रू. भे.)

उ०—सुखीजं स्यारा री सरणाट, भाडकां तीतर तोला बोल ।

वोकारं बसनीडी सूयाड, प्राणणी प्रापो राखं तोल । —साभू

वोकारणहार, हारो (हारो), वोकारणियो—वि० ।

वोकारियोडो, वोकारियोडो, वोकारियोडो—भू० का० कृ० ।

वोकारीजणी, वोकारीजवो—कर्म वा० ।

वोकारियोडो—देखो 'वाकारियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वोकारियोडो)

वोफियो—१ देखो 'वोखी' (अल्पा., रू. भे.)

२ देखो 'वूफियो' (रू. भे.)

वोकी—देखो 'वोखी' (रू. भे.)

(स्त्री वोकी)

वोखद, वोखदि, वोखदी, वोखध—देखो 'वोखध' (रू. भे.)

उ०—करक कळजं भारी वोखद न लागं कारी, तुम घर जावो वंद मेरं पीर भारी हे । विरहिन विरह बाढची तातं दुख भयो गाढो, विरह के वाण लं लं विरहिनी मारी हे । —मीरां

वोखलो, वोखियो—देखो 'वोखी' (अल्पा., रू. भे.)

(स्त्री वोखली)

वोखी—देखो 'वोखी' (रू. भे.)

(स्त्री वोखी)

वोडणी, वोडवो—देखो 'वोडणी वोडवो' (रू. भे.)

वोडणहार हारो (हारो), वोडणियो—वि० ।

वोडियोडो, वोडियोडो वोडियोडो—भू० का० कृ० ।

वोडीजणी, वोडीजवो—कर्म वा० ।

वोडणी, वोडवो—देखो 'वोडणी, वोडवो' (रू. भे.)

वोडणहार, हारो (हारो), वोडणियो—वि० ।

वोडियोडो—भू० का० कृ० ।

वोडाईजणी, वोडाईजवो—कर्म वा० ।

वोडियोडो—देखो 'वोडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वोडियोडो)

वोडियोडो—देखो 'वोडियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वोडियोडो)

वोडियो—देखो 'वोडियो' (रू. भे.)

वो'डो—देखो 'वोरडो' (रू. भे.)

वोचणी, वोचवो—देखो 'वोचणी, वोचवो' (रू. भे.)

वोचणहार, हारो (हारो), वोचणियो—वि० ।

वोचियोडो, वोचियोडो, वोचियोडो—भू० वा० कृ० ।

वोचोजणी, वोचोजवो—कर्म वा० ।

वोचियोडो—देखो 'वोचियोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वोचियोडो)

वोछी—देखो 'वोछी' (रू. भे.)

उ०—१ त्रिवेणी तटि वाम तहा वयु ना जाइयै, ए पास ए डाव सीस लं चाइयै । वोछै पांणी पैमि समद वयु छटिण, हरिहा जन हरिदास भजि अलग निरजननाय तहा मिळि लाइए ।

—हं. पु. बां.

उ०—२ वोछा करं गुमान बडा कं नाहि रे, भाडू वरमं मेह नदी घर राहि रे । दरिया उभळं नाहि ता माहि समाहि रे, हरिहा जन हरिदास यं साधि देखि जग माहि रे ।

—हं. पु. वां.

वोज—स पु —१ साट की की बुनावट ।

२ देखो 'वोभू' (रू. भे.)

वोजनीळो—स पु —शुभ रग का एक प्रकार का घोडा विशेष ।

(सा हो)

वोजलखी—स पु - शुभ रग का एक प्रकार का घोडा विशेष ।

(सा हो)

वोभाडो—स. पु —१ भटका ।

२ प्रहार, चोट ।

वि०—प्रहार करने वाला ।

घोट—१ देखो 'घोट' (रू. भे.)

उ०—१ जग सू प्रीति कहा ली कोजं, सकळ काळ की चोट । उलटी खोल अनळ का सुत ली, पकडि राम की घोट ।

—हं. पु. वा.

उ०—२ भडा हांक भंकमप तीर गौली बडे, सुभटन ताकं घोट चोट सन्मुख सहे । ग्यान खडग लं हथि न फिरि पूठा फिरि, हरिहा जन हरिदास सूरवीर अरिजीत सहृदिका होय रहे । —हं. पु. वा.

उ०—३ जन हरिदास हरि सुमरता, हूरि भान सब बोट । राग
बोख हिरदं नही, करसू करं न चोट । —ह. पु. वां.

उ०—४ तथा कथ का छेद, भान नर बोट न छूटं । दस दरवाजा
रोकि, काळ काया गढ लूटं । —ह. पु. वां.

उ०—५ भान बोट ऊमा भजू, सकं तो पडदा डालि । साहिव
के पडदा नही, तू अपणी बोट सभाळि । —ह. पु. नां.

२ देखो बोट' (रु. भे.)

उ०—पूना घर बीघी सर पाघर हेदळ गंदळ सबळ हीचि ।
पडची नह सेवी प्राय पावा बोट भारतो समद बीचि ।

—राजा जैसिध कछत्राहा प्रामेर रो गीत

बोटणी, बोटबी—देखो बोटणी बोटबी' (रु. भे.)

उ०—१ नमी नर नाह ह्यवाह 'पदमा' निडर, बोट घरियाट
भमुरां सवाही । साहिया खडग 'करणेश' रा छावडा, मालिघी
भलो भवखास माही । —पदमसिध रो गीत

उ०—२ सालळी सीधुघी राग सरणाइया, भलाई आज भारत
करी भाइया । मेह मेहा सरिसि घाचि जूटा मोहरि, बांग वाणां
सरिसि बोडिया बहादरि । —पी. घं.

बोटणहार, हारो (हारो), बोटणियो—वि० ।

बोटियोडो, बोटियोडो, बोटियोडो—भू० का० कृ० ।

बोटोजणी, बोटोजबी—कर्म वा० ।

बोटर—स. पु. [अ] बोट देने वाला या बोट देने का अधिकार रखने
वाला व्यक्ति ।

बोटरलिस्ट, बोटरलिस्ट—सं. स्त्री. [अं बोटरलिस्ट] वह सूची जिसमें
बोट देने वाले या बोट देने का अधिकार रखने वाले व्यक्ति का
नाम दर्ज हो ।

बोटियोडो—देखो 'बोटियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. बोटियोडो)

बोटविलाव, बोटविलाव, बोटविलावर—देखो 'बोटविलाव' (रु. भे.)

बोट—सं. पु.—१ युद्ध, लड़ाई ।

२ देखो 'बोट' (रु. भे.)

बोटण—स. स्त्री—१ सर्प की कचुकी ।

उ०—३ रणां रचि मांही रस पाया, पोवन छवया सहजि घरि
प्राया । ग्रहि बोटण ज्यूं तजि गुणकाया, मेदी जाह भभेद समाया ।

—ह. पु. वा.

२ ओढ़ने का वस्त्र, चादर आदि ।

उ०—जाहि भयोगति अघ, पयानं, भालस 'उरि' लागी । 'त्रिबधि'
अघारं वैसि, ग्यान बोदण नहि नागी । —ह. पु. वा.

बोटणियो, बोटणी—देखो 'बोटणी' (रु. भे.)

बोटणी, बोटबी—देखो 'बोटणी, बोटबी' (रु. भे.)

उ०—सामंद हुवह सुजळ सायर, रंण सुत जळनघ रंणायर । सुजळ
गोडीरव सायर, महण घण महरांण । सुतर 'सुरज' सुजळ सारं
धरि मोहाळें उतारं । मारका सत्र बोद मारं जुई 'गंजण'
जुवान । —महाराजा गर्जासिह रो गीत

बोटणहार, हारो (हारो), बोटणियो—वि० ।

बोटियोडो, बोटियोडो, बोटियोडो—भू० का० कृ० ।

बोटोजणी, बोटोजबी—कर्म वा० ।

बोटा—देखो 'बोटा' (रु. भे.)

बोटियोडो—देखो 'बोटियोडो' (रु. भे.)

(स्त्री. बोटियोडो)

बोटो—वि.—छोटा, कनिष्ठ ।

उ०—ताहरा पावूजी कह्यो—बाई ! हू तोनूं दोदं सुंमरं रो सांढां
रा वरय आण देईस । ताहरां गोपोजी हसिया कही—भाजं
दोदी सुमरो बोदो रावण कहीजं । तंरो सांढां किसीमात लें
भावसी ? ताहरां पावूजी बोलिया—साढा लें भाईस । —नैणसी
बोदो—देखो 'बोदो' (रु. भे.)

उ०—पीसणियां पीसं, रांघणिया रांघं, वखतसर न्हावी-धोवी
अर सिद्ध्यां सोख रो वाता साधं । लंगर में बंठ'र जीमें, कतार में
कासण भाजं, नूवा डरता रंवे, बोदा रो भी भाजं । अफसर रं
हुकमा हालं यकी भीज सुं मालं । —दसदोख

बोपणी, बोपबी—देखो 'बोपणी, बो.बी' (रु. भे.)

उ०—दमक छटा छविहड पताका देखिया, पटा हाट व्योपार जुहारां
पेलिया । प्राभुवण नर नारि ईसी विघ बोपिया, जाण क सुरपुर
लोक इधक छवि जोपिया । —वगसीराम प्रोहित रो वात

बोपणहोर, हारो (हारो), बोपणियो—वि० ।

बोपियोडो, बोपियोडो, बोपियोडो—भू० का० कृ० ।

बोपोजणी, बोपोजबी—कर्म वा० ।

बोपार—देखो 'ब्यापार' (रु. भे.)

उ०—१ दुनिया रो बोपार है, सूका देख-देख छोडें अर हूरपा
देख-देख'र चरं । उकं अर सूं भोकळो खायो-कमायो अर मोटा
मोटा कारज सारचा बी. अर री ही आज श्हायो अर गिलर करं
है ।

—दसदोख

उ०—२ सुत की दुख दिल मांहे दहै, साह सहरि एक विली है ।
अरं गरय लखमी अतार सोदी सूत बढी बोपार । —भीराज

उ०—३ उण देस वाली जठं प्राणा रो बोपार जिए सिरदार
रं हम तम होवें, कठे ई सनुवा ऊपर चढें है कठा सू ई दुसमणां
रो फौज ऊपर आय गई है इण तरं प्राणां रो बोपार होवें जठें लं
चालं ।

—वी. स. टी.

उ०—४ वणक कहे बोपार विघ, सीखी गुरु सूं सोळ । उंठ मुभां
नहि अोरसी, कापड उपर बोळ ।

—वां. दा.

बोपारी—देखो 'ब्यापारी' (रू. भे.)

उ०—दे बोपारी करि दिल दकनारी, पापा धीर सभाळी । श्रीदरि कौळ कियो मन मेरा, उदग्यो दसवद टाळी । —भीवराज

बोपारी—देखो 'ब्यापार' (मह., रू. भे.)

उ०—अला हम विलजारा पूरे साह पा, विलज करण बोपारी । अला खोटा खोटा विलज न वोहरा, माणिका दापो वारी । —दीनमुदरदी

बोपियोडी—देखो 'बोपियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. बोपियोडी)

बोपार-सं पु—१ कन्या का सम्बन्ध निदिपत करते समय दामाद या दामाद के सम्बन्धियों द्वारा कन्या के पिता या सरदारों को दिया जाने वाला धन ।

२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोभर—देखो 'बोभर' (रू. भे.)

उ०—१ मौकी पडपां करणें नै चेत करी ही, नीं तो करणो जापो वाढ्योडा तिला मी । मोठ री छया चैथ्यो मजा करी । हतो कं परीर करणें बोभर वासतें री हांडी भर'र मगाई । हांरी रं वासतें मी एक धोवो बूट्योडी मिरचा नगाई । अचेत परी राजी रो मूठी जगती मिरचां री हांडी माधं मेलायो । —दसदोग

उ०—२ बडे अघजूडी सी एक परपिरांगी, लाल लुक रियो घोटवां चूर्ल कने वंठी काचर छोलें हे । पाळो लागे उद बोभर मी हाप तप वें, कणा ही सै साथे लकड़ी ही अरैल देवें हे । —दसदोग

बोभरियो—१ देखो 'बोभरियो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोभरी' (पल्पा, रू. भे.)

बोभरी—देखो 'बोभरी' (रू. भे.)

बोभगी—देखो 'बोभगी' (रू. भे.)

बोभ—देखो 'ब्योभ' (रू. भे.) (अ मा, ह. ना मा)

उ०—१ रत छाळ रळ तळ पालर प्रगळ, होहू हूळ पट्ट हुवें । वळकत विजुजळ बीजक वडळ, ढोल त्रिमगळ बोभ धुवें ।

—गु रू व

उ०—२ बोभ डभर हुम्रे बोभ गाहीत्रिये, अत रं बोभ गर दोभ धागा । सोन रा ऊपडे धोभ रा सकुडे, गयण गजगाह दळ रह लागा । —कल्याणदास महद्द

उ०—३ बोभ अरावे गाजिये, ढोल हुया सय ठोड । धायो रुपी 'रांम' तण, हाम घणी राठोड । —रा रू.

उ०—४ अरोहें हणू राम भेद अनुज, घरा बोभ धुजें तिरा लरु धुज । अडीखभ जोधा पदम्भ अठारा, पिले घाट नीसाण पावें अठारा । —सू प्र

उ०—५ बोभ मयचुड मगीया वडे, देजर मग्गिा हाहिया । निगगं पलां मोहिया नरंद, मोवळ वडे गाहिया । —गी प्र.

बोभवेत, बोभदेती—देखो 'ब्योभवेत' (रू. भे.) (अ. मा, ना. मा, ह. ना. मा)

बोभमंगा—देखो 'बोभमंगा' (रू. भे.)

उ०—देवी नागे तावि जग्गा बरिया, देखी खोटा मयमज बोभ मुगीया । देखी बोभमगा देखी बोभमंगा, देखी मुत मंगा मुपोभर घणा । —देवि.

बोभगांभी—देखो 'बोभगी' (रू. भे.)

बोभचरी—देखो 'बोभचरी' (रू. भे.)

बोभततक, बोभतितक—देखो 'बोभततक' (रू. भे.)

बोभदेव-सं पु [म. यामदेव] निव, महादेव । (ना. मा.)

बोभपट, बोभपाट-स पु [म. योभ+पट] साधारणार्थः ।

उ०—ममु उपरें बमशंवि पडेन रिपटा काठी बोभपटी माडे । गाल धरमा बांजाय । खोडी अग पाळे दाव दमद यजय अडे, 'हटा' बाळें जाटा पडां भोभिया टैराय । —दंगराय तिडिपो

बोभशाण, बोभशांसी-स स्त्री [म. योभ+शांसी] साधारणार्थः, दववाली ।

उ०—देखी रीर ग्गा घगां मध्व निदि, देखी नाचडा अक्कळा अक्क निदि । देखी अजत्र दिमोहणी बोभशांसी, देखी तोडमा गुगता वसिशांसी । —देवि

बोभि—देखो 'ब्योभ' (रू. भे.)

उ०—१ 'बोभ'हर राठ सामळि वचन, रोनाइ निया राता रतन । ऊगसिय बोभि लागड मबोह, सांनळिअं वदिनें अदगतीह ।

—रो ज. सी.

उ०—बादिएठ सजाणइ वळह वल्लि, तिरि बाळ सोह हारद न हल्लि । रोवडुठ मुकरि साहियद सांगि, साखीकि चर्दनड बोभि लगि ।

—रा. ज. सी.

बोर—देखो 'भोर' (रू. भे.)

उ०—बाथळी तणा पहा ज्यू बरतें, पापा जतन न कीतो काज । दिली भीन बोर ती दूजो, रात्तण हाइ न घडियो राज ।

—राजा'माधोविह वडगाहा रो गीठ

बोरगत—देखो 'बोगत' (रू. भे.)

बोरणी, बोरबी—क्रि स—१ दूबोना, तर-वतर करता ।

उ०—दिगता लीं दोरें मचल मन मोरें मुदमुदी, विदाती ऊमोरें विसय विस बोरें बु'बुदी । पछारें पावों को त्रिपत मण तावों मुटि तलें, मिलावें मेघा को विधि विधि निसेघा वत मलें ।

—ऊ व

- २ देखो 'बुहारणी, बुहारवी' (रू. भे.)
 ३ देखो 'बोडणी, बोडवी' (रू. भे.)
 बोरणहार, हारी (हारी), बोरणियो—वि०।
 बोरिओडो, बोरियोडो, बोरघोडो—भू० का० कृ०।
 बोरोजणी, बोरोजवी—कर्म वा०।
- बोराणी बोरावी—१ देखो 'बुहराणी, बुहरावी' (रू. भे.)
 २ देखो 'बोराणी, बोरावी' (रू. भे.)
 बोराणहार हारी (हारी), बोराणियो—वि०।
 बोरायोडो—भू० का० कृ०।
 बोराईजणी, बोराईजवी—कर्म वा०।
- बोरायोडो—१ देखो 'बुहरायोडो' (रू. भे.)
 २ देखो 'बोरायोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री बोरायोडी)
- बोरियोडो—भू० का० कृ०—१ डुवोया हुआ, तर-वतर किया हुआ।
 २ देखो 'बुहरायोडो' (रू. भे.) ३ देखो 'बोडियोडो' (रू. भे.)
 (स्त्री. बोरियोडी)
- बोरु—देखो 'बोर' (रू. भे.)
 बोरो, बो रो—देखो 'बो'रो' (रू. भे.)
- उ०—१ लळकत जांभळिया वाजण न लागी, भूखा मरतोडी खळ-
 कत पड भागी। बो'रा थळ विहुणा तिल खळकत तरळ, वूडी
 चेली न साधु ज्यो वरजं। —रू का.
- उ०—२ कदं ती पडयो काळ भभागो, गिण-गिण काढयो दोरो।
 कदं ती ठाकर लाटो लाट्यो, कदं लाटयो बो'रो। —चेतमानखो
- बोळणी, बोळवी—१ देखो 'बोळणी, बोळवी' (रू. भे.)
 २ देखो 'बोळणी, बोळवी' (रू. भे.)
- उ०—१ नारायण री नाम ज्या, नह लीधी निरणाह। वा जम-
 वारो बोळियो, ज्यु ज गळ हिरणाह। —ह. र.
- उ०—२ उतोलं अंराक, बोळण खळ उववरा। वीरमदं वंडाक,
 मेळ वचन नह मानिया। —गो रू
- उ०—३ लख वेरें पंदास लख वीरप सुख बोळं, हेवर दोय ह्या-
 रिया, सोहडा थट चौळं। सहस दसाही साढिया, टीकायत टोळं,
 क पण कीधी अकठी, गोरख इक गोळं। —वी मा.
- उ०—४ महल चौमार भदवा तणा माळिया, दिनं बोळीजतं जुरा
 दहसी। मडळ घू सथिर अहराव सिर मेदणी, राव गागो कहं,
 त्या गीत रहसी। —राव गागो
- बोळणहार, हारी (हारी), बोळणियो—वि०।
 बोळिओडो, बोळियोडो, बोळघोडो—भू० का० कृ०।
 बोळीजणी, बोळीजवी—कर्म वा०, भाव वा०।
 बोलणी, बोलवी—१ देखो 'बोळणी, बोळवी' (रू. भे.)

- २ देखो 'बोलणी, बोलवी' (रू. भे.)
 ३ देखो 'बोळणी, बोळवी' (रू. भे.)
- उ०—१ वावडी री पाणी पीवण री आखडी। वेहती नदी री
 पाणी पीवण री आखडी। भूखा री मुहडो देखण री आखडी।
 हूध को बोलण री आखडी। मारण हालता टळ वा री आखडी
 अकत री धन लेवा री आखडी। —रा. सा. स.
- उ०—२ वरस पाव बोळ्या पछी, तिसडे मेह न वुठ। खड पाखें
 सह एकठा, हुआ माणस मन मठ। —डो. मा.
- बोलणहार, हारी (हारी), बोलणियो—वि०।
 बोलिओडो, बोलियोडो, बोलघोडो—भू० का० कृ०।
 बोलीजणी, बोलीजवी—कर्म वा०, भाव वा०।
- बोळाई—देखो 'बोळाई' (रू. भे.)
 बोलाई—देखो 'बोलाई' (रू. भे.)
 बोळाऊ, बोलाऊ—देखो 'बोळावी' (रू. भे.)
- उ०—१ मात न तात न भ्रात सुत, सगा न सुदरि साथि। हरीया
 जासं हेकली, करि बोलाऊ हाथि। —अनुभववाणी
- उ०—२ बोलाऊ कहण लागा कवरजी दुख मती करी। मारु
 नं दाग घी। थं पाछा चाली। भारवणजी री तीजी वहन चपा
 थानं परणास्यां। —डो. मा
- उ०—३ साचो घणी विपत में सामी, तेव्या भावं तीजी ताळ।
 विखमी वाट तणी बोळाऊ, साई तू काळा तणी सुगाळ।
 —श्रीपी आढी
- उ०—४ सु रूम-सुम रं पातसाह इणा पीरजादा नूं तेरं कोड
 रुपिया री माल दियो नं विदा किया, सु पाछा वळता जेसळमेर
 भाय उतरिया। असवार २०० पातसाह रा सेखरं साथे बोळाऊ, सू
 भूळराज रसनवी उणा नू मारनं वित सोह लियो। —नं एसी
- उ०—५ अलग राख आरोह तसा कपडा वेतोडा, खरहड नासा
 खाच रजक प्यालं अल रोडा। क्रमी क्रमाल कतार अठी आधी
 निस ऊपर, बोळाऊ वीटिया धुरज चौवड कस धपर। —पा. प्र.
- बोळणी, बोळावी—देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रू. भे.)
- उ०—१ पायक अस रथ पथ अगारा, हाथी पाखरवत हजार।
 वहतं सीतकाळ बोळायो, श्री वंसाख अजगढ आयो। —रा. रू.
- उ०—२ रूतिया दोय होवदिया इक काळ बोळाई।
 —केसोदास गाडण
- उ०—३ होळं सीक बोल्या—हाकी मत कर। मतं मतं लोग
 कूकला जको हाथं आई चीज पाणी माय सूं काळ लं जावेला। म्हं
 कंवू ती थू किसी साच मानला कं श्री सगळो धन-माल म्हारी इज
 है। म्हारं साथं इज श्री छळ विह्यो। भोळी सेठायी धोखा में
 भाय सगळी माया बोळाय दी। —फुलवाडी

४०—४ सेठ अटकता अटकता बोल्या—कालं सूं ईं आपरी वणियारी देत्या पछें आंख्या साम्ही वीजळिया खिबें । माया रा लोम में म्हें ती रूप री कदं गिनरत ई नी करी । अर गिनरत करं जंडी रूप धकं ई नी आयी । पोहरी देवण री भलाई में माया तो सगळी बोळाईजणी । फगत सोना रा अं पारसनाथजी वच्या ।

—फुलवाडी

४०—५ तरं सोढी कहै—पाहरे डील री पछेंवडी ? मोनूं दीजें इण पछेंवडा री दरसण करीस नें मोहल में वंठी रहीस । नें अक धो मनभोळियो डूंम अठें राखी । भो मोहल नीचं ऊभी थाहरी जस गावसी, सु सुणीस नें वंठी दिन बोळाइस ।

—नैणसी

बोळाणहार, हारी (हारी), बोळाणियो—वि० ।

बोळायोडी—भू० का० कृ० ।

बोळाईजणी बोळाईजवी—कर्म वा० ।

बोलाणी, बोलावी—१ देखो 'बोलाणी, बोलावी' (रु. भे.)

२ देखो 'बुलाणी, बुलवी' (रु. भे.)

४०—साह गयी दरगाह सूं, निज रहवासि अनेह । हितकर बोलाया हित्तु, गीसळ अतर गेह ।

—रा रु

बोलाणहार, हारी (हारी), बोलाणियो—वि० ।

बोलायोडी—भू० का० कृ० ।

बोलाईजणी, बोलाईजवी—कर्म वा० ।

बोळायोडी—देखो 'बोळायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री बोळायोडी)

बोलायोडी—देखो 'बोलायोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बुलायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोलायोडी)

बोळावणी, बोळाववी—देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रु. भे.)

४०—१ एकण जीम करि क्रितरा हेक गुण कहा जाय । वळं मारवणी रें सातवीसी सहेल्या छें तिकें पिण माहा सुघड छें, त्या सु मारवणी वात विगत करनं दिन बोळावें छें ।

—डो. मा.

४०—२ सू किमा-भेक सरदार जुवान छें ? पाकां पाका वरियांमा नू, अजरायलां नू, खीवरा नू, डाणहुला डाकियां नू, फरडदता नू, लोह पडा लाह पर डाहलां नू, लोकी देता, कटारी उगराइ खाता, पचासां बोळावियां आधें आध वाठ उतरियां, जियारा पांच-पाच हजार दाम पाटा-चघाई रा पाटेंदार खाय चुका छें ।

—रा. सा. स.

४०—३ सजण बोळावें हें वळी, ऊभी मदिर पूठ । हिवडो काचा तार ज्यू, गयो लडगां तूट ।

—अग्यात

बोळावणहार, हारी (हारी), बोळावणियो—वि० ।

बोळाविओडी, बोळावियोडी, बोळाव्योडी—भू० का० कृ० ।

बोळावीजणी, बोळावीजवी—कर्म वा० ।

बोलावणी, बोलाववी—१ देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रु. भे.)

२ देखो 'बुलाणी, बुलावी' (रु. भे.)

४०—मदिर हूता ऊतरघड, रवि ऊगतइ चार । मागणहार बोलाविया, पूछण तास विचार ।

—डो. मा.

बोलावणहार, हारी (हारी), बोलावणियो—वि० ।

बोलाविओडी, बोलावियोडी, बोलाव्योडी—भू० का० कृ० ।

बोलावीजणी, बोलावीजवी—कर्म वा० ।

बोळावियोडी—देखो 'बोळायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोळावियोडी)

बोलावियोडी—१ देखो 'बोळायोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बुलायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री बोलावियोडी)

बोळावी, बोळावू, बोळावी—देखो 'बोळावी' (रु. भे.)

४०—१ बोळावू वळता कहै, बोला पाछी आय । मारू सु लहूडी वहन, तो परणास्यांजाय ।

—डो. मा.

४०—२ बोळावू वेदल मनं, पुगळ पुहुता जास । मारवणी दीवा-धरी, रहिया बोला पास ।

—डो. मा.

बोलाह—१ देखो 'बोलाह' (रु. भे.)

२ देखो 'बोलाह' (रु. भे.)

बोळियोडी—१ देखो 'बोळियोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोळियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोळियोडी)

बोलियोडी—१ देखो 'बोळियोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोलियोडी' (रु. भे.)

३ देखो 'बोळियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोलियोडी)

बोलीट, बोलीठ—देखो 'बोलीट' (रु. भे.)

बोलीठियो, बोलीठियो—देखो 'बोलीठ' (मल्या., रु. भे.)

बोळी बोळी, बोळयू-बोळयू—देखो 'भोळी-बोळी' (रु. भे.)

४०—यण प्रकार हीरां सहेलियां में सखव करं छें । गवर के बोळी-बोळी घुमर दे दे फिरं छें । गोरिका गीत कोयलस्वर गावें छें, जोड का जवान की सगत पाळ भो वर चावें छें । हीरा की रूप देख सुरद मन में जाणें छें । धन्य छें ऊ पुस्त नू इ नारि नें महल में माणें छें ।

—बगसीराम प्रोहित री बात

बोलाह—सं पु. [स.] १ वह घोडा जिसके दुम और भयाल के बाल पीले हो । (शा. हो.)

२ देखो 'बोलाह' (रु. भे.)

बोवडणी, बोवडवी—क्रि. ध.—बरसना ।

उ०—१ फुणाटा भाट बीजडा भडा ऊफणा, खुणाटा बोवड़ें पाट खेदी । वादगीरा हदा साद घट बीचतँ, भीम मुगळा मिळं नाद भेदी ।
—राव भीमसिध हाडा रो गीत

उ०—२ घटा उमडें अपार सेन बोवड़ें विकट घाट, गीळा सरा मार घूमं त्रमागळां लाग़ा गाज । व्रजनाथ इद्र आगं राखी व्रज धार वूठा, सार वागा कोटी 'धेवं' राखियो सकाज ।
—महाराज देवासिध हाडा रो गीत

बोवडणहार, हारो (हारी), बोवडणियो—वि० ।
बोवडिओडी, बोवडियोडी, बोवडचोडी—भू० का० कृ० ।
बोवडीजणो, बोवडीजवो—भाव वा० ।

बोवडियोडी—भू का. कृ.—वरसा हुआ ।
(स्त्री बोवडियोडी)

बोवार—१ देखो 'व्यापार' (रू. भे.)
२ देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोवो—स. पु —करघे में नीचे की ओर' का वह उपकरण जिसे कपडे का वाना ठीक बैठाने के लिए पैर रखकर ऊपर-नीचे करते रहते हैं ।

बोसरणी, बोसरवो—क्रि० सं० [स. व्युत् + सृज्] १ छोडना, त्यागना ।
२ देखो 'विसरणी विसरवो' (रू. भे.)

बोसरणहार, हारो (हारी), बोसरणियो—वि० ।
बोसरिओडी, बोसरियोडी, बोसरचोडी—भू० का० कृ० ।
बोसरीजणो, बोसरीजवो—भाव वा० ।

बोसराणो, बोसरावो—क्रि० सं० [स. व्युत् + सृज्] त्याग कराना, छुडाना ।

उ०—जव एक जणें सो मण चणां मिखारया नें लूटाय दिया । हुजें सो मण रा भूगडा सेकाय दिया । तीजें सो मण चणा नीं घूगरी रघाय खुवाइ । चौथें सो मण चणा रो रोठ्या कराय पाखती खाटी करायनें जीमाया । पाच में सो मण चणा बोसराय नें हाथ जगवा रा त्याग किया ।
—मि द्र.

२ देखो 'विसराणो, विसरावो' (रू. भे.)

बोसराणहार, हारो (हारी), बोसराणियो—वि० ।
बोसरायोडी—भू० का० कृ० ।
बोसराईजणो, बोसराईजवो—कर्म वा० ।

बोसरायोडी—भू का कृ —१ त्याग कराय़ा हुआ, छुडाय़ा हुआ ।
२ देखो 'विसरायोडी' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरायोडी)

बोसरावणो, बोसराववो—१ देखो 'बोसराणो, बोसरावो' (रू. भे.)
२ देखो 'विसराणो, विसरावो' (रू. भे.)

बोसरावणहार, हारो (हारी), बोसरावणियो—वि० ।
बोसराविओडी, बोसरावियोडी, बोसराव्योडी—भू० का० कृ० ।
बोसरावोजणो, बोसरावोजवो—कर्म वा० ।

बोसरावियोडी—देखो 'बोसरायोडी' (रू. भे.)
२ देखो 'विसरायोडी' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरावियोडी)

बोसरियोडी—भू. का. कृ —१ त्याग हुआ, छोडा हुआ ।
२ देखो 'विसरायोडी' (रू. भे.)
(स्त्री बोसरियोडी)

बोसरु—सं पु. [सं. व्युत् + ससर्गं] त्याग, परित्याग ।

उ०—१ भव अनत भमता थकां, कीया देह सवघ । त्रिविध त्रिविध करी बोसरु, तिरा सु प्रतिवघ । —स. कु.

उ०—२ इण परि इण भवि परभवइ, कीघा पाप अखत्र । त्रिविध त्रिविध करि बोसरु, करु जनम पवित्र । —स. कु

बोह—देखो 'बोह' (रू. भे.)

उ०—हुवं मगळ घमळ दमगळ बीर-हकं, रग तूठी कमघ जग रूठी । सधण वूठी कुसुम बोह जिण मोड सिर, विखम उण मोड सिर लोह वूठी ।
—बांकीदास प्रासियो

३ देखो 'बोघ' (रू. भे.)

बोहडणो, बोहडवो—देखो 'बोहडणो, बोहडवो' (रू. भे.)

बोहडणहार, हारो (हारी), बोहडणियो—वि० ।
बोहडिओडी, बोहडियोडी, बोहडचोडी—भू० का० कृ० ।
बोहडीजणो, बोहडीजवो—कर्म वा० ।

बोहडाणो, बोहडावो—देखो 'बोहडाणो, बोहडावो' (रू. भे.)

बोहडाणहार, हारो (हारी), बोहडाणियो—वि० ।
बोहडायोडी—भू० का० कृ० ।
बोहडाईजणो, बोहडाईजवो—कर्म वा० ।

बोहडायोडी—देखो 'बोहडायोडी' (रू. भे.)
(स्त्री बोहडायोडी)

बोहडियोडी—देखो 'बोहडियोडी' (रू. भे.)
(स्त्री बोहडियोडी)

बोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

उ०—१ छद कहा त बोहता भावें, खरतर को पतियायो । हिव की वेळा हिव न आग्यो, सकि रहघो कदरायो । —घ. व. प्र.

उ०—२ भमैपुरा जेवत सूर. वागल नरेसर, अहरराव राठोइ करत करहा दानेसुर । जलखेडिया कमघज सध चदेख सोहु. वारिया, वरे सुमत बोहत सूरमा अ-लिखत पारक बीर कपाळिया ।

—रा. व. वि.

बोहतपत, बोहतपति, बोहतपती—स. पु —पाण्डु पुत्र अर्जुन का नाम ।

उ०—पुस्तक नाखे परा, पंडित सोय वेद पुराणा । भारथ भज्जे
भीम, बोहतपत चूके वाणां । —बोध बोहू

बोहतर—देखो 'बयोत्तर' (रु. भे.)

बोहदीपी—देखो 'बोहदीपी' (रु. भे.)

बोहनामी—देखो 'बहुनामी' (रु. भे.)

उ०—आयी गुर जंभ अचम अजोनी, धरम घुराळ दाखवियो ।
सभरायळ सामी अतरजांभी, बोहनामी हरि हेत कियो ।
—गोकळजी

बोहरगी—देखो 'बहुरगी' (रु. भे.)

बोहरगत—देखो 'बोरगत' (रु. भे.)

बोहराळ—देखो 'बोहराळ' (रु. भे.)

बोहरूपी—१ देखो 'बहुरूपी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोहरूपी' (रु. भे.)

बोहरी—देखो 'बोरी' (रु. भे.)

उ०—आ गाथा सुण नं भोजीरामजी बोहरी बोल्थी—अरं जसू
उरही आव रे घर तो लूट लियो नं मार्ये वलं डड करं । ज्यू
भीखणजी महान्त तो पारुं ई परहा भगा कहे । अने वलं
चौमासी रो डड कहे छं । —भि. ड.

बोहळणी, बोहळवी—१ देखो 'बोळणी, बोळवी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोहळणी, बोहळवी' (रु. भे.)

३ देखो 'बोळणी, बोळवी' ।

बोहळणहार, हारी (हारी), बोहळणियो—वि० ।

बोहळियोडी, बोहळियोडी, बोहळियोडी—भू० का० क० ।

बोहळीजणी, बोहळीजवी—कर्म वा० ।

बोहळाणी, बोहळावी—१ देखो 'बोहळाणी, बोहळावी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोहळाणी, बोहळावी' (रु. भे.)

बोहळाणहार, हारी (हारी), बोहळाणियो—वि० ।

बोहळायोडी—भू० का० क० ।

बोहळाईजणी, बोहळाईजवी—कर्म वा० ।

बोहळायोडी—१ देखो 'बोहळायोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोहळायोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोहळायोडी)

बोहळियोडी—१ देखो 'बोहळियोडी' (रु. भे.)

२ देखो 'बोहळियोडी' (रु. भे.)

३ देखो 'बोहळियोडी' (रु. भे.)

(स्त्री. बोहळियोडी)

बोहळी—देखो 'बोळी' (रु. भे.)

उ०—कही (है) बाट, राजा सुणी, दीठा बोहळा देस । रामत
ख्याल विनोद रस, नारी निरूपम वेस । —डो. मा.

बोहार - देखो 'व्यवहार' (रु. भे.)

उ०—उपज्या विणम्या भी मुवा, श्री जग की बोहार । सतगुर
जाणि पिछाणियो, मरं न दूनी वार । —परमानंद वणियाळ

बोहि, बोहित, बोहित, बोहित्य, बोहिथ—१ देखो 'बोहित्य' (रु. भे.)
(ह. नां. मा.)

२ देखो 'बहुत' (रु. भे.)

बोही—देखो 'बही' (रु. भे.)

उ०—१ सोभा सदा सुहावणी, उत विराजणी घाप । बोही बगळी
घणखावणी, तो विण घणी 'प्रताप' । —जंतदान वारहड

उ०—२ सीतळ छांय कदम वी छोडी, घूप सहा अति भार ।
भीरां कं प्रभु गिरघरनागर, बोही प्राण वियारा । —भीरां

बोहोत—देखो 'बहुत' (रु. भे.)

बोहोनामी—देखो 'बहुनामी' (रु. भे.)

बोहोळी—देखो 'बोळी' (रु. भे.)

बोही—देखो 'बहुत' (रु. भे.)

बो—स. पु.—१ पत्ता, पान । (एका)

२ तलवार, खड्ग । (")

३ पुत्र, बेटा । (")

४ जुलाहे का एक प्रकार का औजार विशेष जिससे ताने का तागा
ऊपर नीचे उठाते और गिराते हैं । यह दो नरसलो का होता है
जिसके ऊपर नीचे तागे बंधे रहते हैं और जिनके बीच में तागे एक
एक करके निकलते रहते हैं ।

सर्व.—१ वह ।

उ०—१ मुल्क रो उतरादी काकड मार्ये, गोडा-गोडां लग वरफ
में ऊर्भे, उणै श्री कागद पढ्यी ती उणरी छाती फुलीजगी । बो
सोचण लागीं—राजा फून जिसी कोमळ अर वज्जर जिसी कठोर,
चाद जिसी फूटरी अर चडिका सी विकराळ । अठे उणरं सागं वा
ई बहूक लिया ऊर्भे व्हेती ती किशोक नामी रंवती ।

—अमर-चूनडी

उ०—२ जाणै बो न जायी जमदूत जाडें, पुराणै अठारं कियो
वूम पाडें । रस्समे समर्थे कही सन्नमस्त्रे, समवाद गाता ग्रहे
पार सरुखे । —ना. द.

उ०—३ अबरा नें सुख आपरी, बो सुख मानें घाप । वानं इण
घारण वहे, तै छाने न 'प्रताप' । —जंतदान वारहड

२ उर ।

उ०—मारग-में भगतणियां रा डेरा आया। भेक रूपाळी भगतण
सूं चार-पाचे क मोठ्यार बोछरडाया करता हा। जौधरण रं-सागं
सागडी ही। बो वा मोठ्यारा न वरजिया के किली मली जुगाई
सूं छेडछाड करणी वेजा वात है। —फुलवाडी

रू. भे.—धो, वीव।

बौगर, बौघर—सं. पु.—बाघ के शरीर की गध।

बौडणी, बौडवी—क्रि० श०—१ निवृत्त होना।

उ०—जिसं दखणी भिडे ताई आय वागा। तिरा री मा'राज सूं
मालम हुई सेवा सूं-बोडतां। पीछे मा'राज पोसाक करी अरू पाघ
सदा जूडे सूं बांधता सूं रणदिन ऊतावळ में बाघ सकिया नही,
यू हीज पाघ मस्तक ऊपर देय कमर बाधी। —द. बा.

२-देखो 'बोडणी, बोडवी' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोडणी, बहोडवी' (रू. भे.)

बौडणहार, हारो (हारी), बौडणियो—वि०।

बौडिओडी, बौडियोडी, बौडयोडी—भू० का० कृ०।

बौडीजणो, बौडीजवी—भाम वा०।

बौडाणो, बौडावी—क्रि० सं०—१ निवृत्त करना।

२ देखो 'बोडाणी, बोडावी' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोडाणी, बहोडावी' (रू. भे.)

बौडाणहार, हारो (हारी), बौडाणियो—वि०।

बौडायोडी—भू० का० कृ०।

बौडाईजणो, बौडाईजवी—कर्म वा०।

बौडायोडी—भू० का० कृ०—१ निवृत्त किया हुआ।

२ देखो 'बौडायोडी' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोडायोडी' (रू. भे.)

। (स्त्री बौडायोडी)

बौडियोडी—भू० का० कृ०—१ निवृत्त हुआ हुआ।

२ देखो 'बौडियोडी' (रू. भे.)

३ देखो 'बहोडियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री बौडियोडी)

बौछाङ्ग, बौछार, बौछाळ—देखो 'बौछाड' (रू. भे.)

बौडडर, बौडपुर, बौडपुरी—स पु—नल राजा के द्वारा विजित एक
नगर का नाम।

उ०—महाराष्ट्र कामाक्ष आभीर, कच पापातिक निरमदा नीर।

बौडडर अनइ भलू श्रीमाल, दक्षणेसि जीपिमा भूपाल।

—नळद्वदंती रास

बौत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बौपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

उ०—१ जनहरिया हरि नाव की, पूजी विन घोपार। खाई कव
खूटे नही, पाई बसत अपार। —अनुभववाणी

उ०—२ बापडा नासतिक मिनख साची कैया करे है कै—दायजो
देयर वेटी री मौत मोल लेवणी है। धन रा ठोकाकड लोभो लोग
मरज-मादगी रं सम भी बहू री, हीडी क्युं करे? वारी तो श्री
घोपार है कै—मोकळी बहुवा मारं अर मोकळी धन कसावें।

—दसदोख

उ०—३ हीरा री कीमत ती जमी सूं वारं निकळिया पछे व्है।
म्हारें साथे घोपार में इणरी थोडो घणी सीर राख देवूला। खासी
भली पूजो भेळी व्हिया न्यारी दुकान मडाय देवूला। आज ती थूं
सेठा रं चिणायोडी प्याळ साथे बंठी पगार लेवें, पछे थूं खुद गाव
गाव प्याळ लगावण जोग वण जावेंला। —फुलवाडी

उ०—४ पड गहणा लिये दिये नह पाचा, सत्र खत नह दाखें
ग्रह सार। सोड तणा वापार सरखी, वळ माडिवी 'अखें' घोपार।

—दुरसो आढो

बौपारी—देखो 'व्यपारी' (रू. भे.)

उ०—१ अंसो संगति साध की, ज्यु बौपारी हाट। जनहरिया
जव गाहकु, सबद भिळावें साट। —अनुभववाणी

उ०—२ तद खाफरी राजारं दरवार वडे लाजमें पोसाख सूं जाय
मुजरी कियो। राजा पूछिया—तू कुण छे? अरज कीबी-बौपारी
छू, रामवाजार में दुकान छे, हजार दस वरस दिन में जगात रा
भरू छूं, राजा फुरमावी किसं कारज आया छी सू कहो।

—राजा भोज अर खाफरं चोर री वात

उ०—३ तद राजा पूछी—साह! थारी अरज कहि, खाफरं
अरज करी—जीव री अमा पाळ, कवल पाळ तो अरज करू।
राजा फुरमायो—तू तो बौपारी छे तं—में इसी जीव री किसी
तकसीर छे? काई जगात री चोरी आयी छे तो तकसीर माफ छे,
म्हा री कवल छे। —राजा भोज अर खाफरं चोर री वात

बौम—देखो 'व्योम' (रू. भे.)

उ०—१ नमो रूपनदा सवहा रसीली, नमो लच्छि रभा नमो
घोम लीली। नमो मोहणी कमळा सुख मूंनी, नमो घोम घुतारणी
सम घूंनी।

—मा. वचनिका

ऊ०—२ वणं जेथ तेथा तोहि जोति वासी, प्रियो बौम सामद्र
तुंही प्रकामी। नही ठीड तू जेथ तं दाख नेसं, अखें इद ऊमा
आदेस आदेस।

—मा वचनिका

बौर—स. स्त्री—विल्ली या चकरी का ऋतुमति होने की क्रिया।

बौरणी, बौरवी—देखो 'बुहारणी, बुहारवी' (रू. भे.)

बौरणहार, हारो (हारी), बौरणियो—वि०।

बौरिओडी, बौरियोडी, बौरयोडी—भू० का० कृ०।

बौरोजणो, बौरोजवी—कर्म वा०।

धीराणो, धीरावो—क्रि० अ०—१ विल्ली या बकरी का संभारण के लिए ऋतुमति होना ।

२ देखो 'बुहारणो, बुहारवो' (रू. भे.) ३ देखो 'धीराणो, धीरावो' (रू. भे.)

धीराणहार, हारी (हारी), धीराणियो—वि० ।

धीरायोडी—भू० का० कृ० ।

धीराईजणी, धीराईजवो—कर्म वा० ।

धीरायोडी—स. स्त्री.—ऋतुमति हुवी हुई बकरी या विल्ली ।

धीरायोडी—१ देखो 'बुहारायोडी' (रू. भे.) २ देखो 'धीरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. धीरायोडी)

धीरावणो, धीराववो—१ देखो 'बुहाराणो, बुहारावो' (रू. भे.)

२ देखो 'धीराणो, धीरावो' (रू. भे.)

धीरावणहार, हारी (हारी), धीरावणियो—वि० ।

धीरावियोडी, धीरावियोडी, धीरावियोडी—भू० का० कृ० ।

धीरावीजणो, धीरावीजवो—कर्म वा० ।

धीरावियोडी—१ देखो 'बुहारायोडी' (रू. भे.)

२ देखो 'धीरायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. धीरावियोडी)

धीरियोडी—देखो 'बुहारियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. धीरियोडी)

धीळणो, धीळवो—क्रि० अ०—१ पहुँचना ।

२ भेजना ।

३ उस पार जाना ४ लाघना, पार करना ।

५ विदा होना ।

६ व्यतीत होना, बीतना ।

उ०—फूल कथ रँ कोट में राज करे छै । घणा दिन धीळिया । राज जमियो । फूल कहुण लागी, 'म्हारे बाप रो बँर, धरणि नु मैं मारणी ।' ताहरा प्रधान बोलियो—राज, थाहरें घोडा नहीं । तो कहियो—घोडा ल्यो । —लाखें फुलाणी रो बात

७ खोना, गबाना, गुमाना ।

८ ठगा जाना व अन्य को ठगना ।

क्रि० स०—९ उपभोग करना, भ्रान्त्य छूटना ।

१० सहार करना, मारना ।

११ नाश करना, नष्ट करना ।

१२ व्यतीत करना, बीताना ।

उ०—१ दत्त देता धन माणता, जमि सुणता जसबास । बसुधा इण पर धीळिया, नवकोटी खट-भास । —गु. रू. ब.

उ०—२ मार सार मारकां इळा हुवं भापाणी, मुहि लग्गा हँ पुरां, जेह रक्खी तँ माणो । वर केता धीळिया, फळह केताई कुनारी, पुरख न परणी किण्ह, भाद जुग्गादि कुमारी ।

—गु. रू. ब.

१३ मृत प्राणी के क्षय को दफनाना ।

१४ रक्षा करना, हिफाजत करना ।

१५ देखो 'धीळणो, धीळवो' (रू. भे.)

धीळणहार, हारी (हारी), धीळणियो—वि० ।

धीळियोडी, धीळियोडी, धीळियोडी—भू० का० कृ० ।

धीळीजणो, धीळीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो, धीळणो, धीळवो—रू. भे. ।

धीळणो, धीळवो—देखो 'धीळणो, धीळवो' (रू. भे.)

उ०—भी वरला रित धीळवी धीती सरद भदुंद । हिम रत भाधी धीचच्यो, फेर प्रगट्यो फद । —रा. रू.

धीळणहार, हारी (हारी), धीळणियो—वि० ।

धीळियोडी, धीळियोडी, धीळियोडी—भू० का० कृ० ।

धीळीजणो, धीळीजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

धीळियोडी—देखो 'धीळियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. धीळियोडी)

धीळाळ—देखो 'धीळावो' (रू. भे.)

धीळाणो, धीळावो—क्रि० स० (धीळणो, धीळवो क्रिया का प्रे. रू.) १ बिताना, गुजारना ।

उ०—१ वरसाळो इण पर धीळावो, नीर न को वरसात जणायो । उठी सरद सीतरित भाई, सकळ दळ विणि सोंक सभाई ।

—रा. रू.

उ०—२ वात हुई शीखम धीळाई, ऊपर धुर वरखा रत भाई । असतखान डर थयो भविती, विचित्रा तणो सोच सुण धीतो ।

—रा. रू.

२ पहुँचाना ।

३ विदा देना, विदा करना ।

उ०—१ नर जाणँ दिन जात है, दिन जाणँ नर जाय । गई धीळावणहारियां, गणगौर धीळाय धीळाय । —भग्यात

उ०—२ दळकार हठें दखणाध रा, दिल्ली फोजा निरबही । किरि जाण भपूठा बाहुडे, जान धीळाए माडही । —गु. रू. ब.

४ भिखवाना, भेजना ।

५ पीछा करना या कराना, अनुगमन करना या कराना ।

६ खोना, गुमाना ।

रू. भे.—बोळाळ, बोळावी, बोळावू, बोळावी, बोळायत; बोळाकं, वरळावू, वळावी, बोळवी, बोळावू, बोळावी, बोल्हावी ।

बोळियोडो-भू. का कृ.—१ पहुँचा हुआ । २ भेजा हुआ । ३ उस पार गया हुआ । ४ लाधा हुआ, पार किया हुआ । ५. विदा हुआ हुआ । ६ व्यतीत हुआ हुआ, बीता हुआ । ७ खोया हुआ, गवाया हुआ । ८ गुमाया हुआ । ९ ठगया हुआ या अन्य को ठगा हुआ । १० उपभोग किया हुआ, आनन्द लूटा हुआ । १० सहार किया हुआ, मारा हुआ । ११ नाश किया हुआ, नष्ट किया हुआ । १२ व्यतीत किया हुआ, वित्ताया हुआ । १३ मृत प्राणी के शव को दफनाया हुआ । १४ रखा किया हुआ, हिफाजत किया हुआ । १५ देखो 'बोलियोडो' (रू. भे.) (स्त्री बोळियोडी)

बो'ळो—देखो 'बो'ळी' (रू. भे.)

बोळहाणो, बोळहावी—१ देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रू. भे.)

उ०—कोई वीर बालक आपरें पिता री वीर लेण सारू सकियो सो उण बालक वीर नें समझावें कि वरख पांच तो बोळहाया घने छठी जाण री भवें जेऊ नही इण छट्टी वरख पछें सातमी वरख लागसी तद थू घोडें असवार हो जासी जद थारा पिता री वीर लेजें ।
—वी स. टी.

३ देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रू. भे.)

बोळहाणहार, हारो (हारी), बोळहाणियो—वि० ।

बोळहायोडो—भू० का० कृ० ।

बोळहाईजणो, बोळहाईजवो—कर्म वा० ।

बोल्हाणी, बोल्हावी—देखो 'बुलाणी, बुलावी' (रू. भे.)

बोल्हाणहार, हारो (हारी), बोल्हाणियो—वि० ।

बोल्हायोडो—भू० का० कृ० ।

बोल्हाईजणो, बोल्हाईजवो—कर्म वा० ।

बोळहायोडो—१ देखो 'बोळायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बोळहायोडी)

बोल्हायोडो—देखो 'बुलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बोल्हायोडी (रू. भे.)

बोळहावणो—देखो 'बोळावणो' (रू. भे.)

बोळहावणो, बोळहाववो—१ देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळाणी, बोळावी' (रू. भे.)

बोळहावणहार, हारो (हारी), बोळहावणियो—वि० ।

बोळहावणोडो, बोळहावियोडो, बोळहावयोडो—भू० का० कृ० ।

बोळहावीजणो, बोळहावीजवो—कर्म वा० ।

बोल्हावणो, बोल्हाववो—देखो 'बुलाणी, बुलावी' (रू. भे.)

बोल्हावणहार, हारो (हारी), बोल्हावणियो—वि० ।

बोल्हावणोडो, बोल्हावियोडो, बोल्हावयोडो—भू० का० कृ०

बोल्हावीजणो, बोल्हावीजवो—कर्म वा० ।

बोळहावियोडो—१ देखो 'बोळायोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'बोळायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री बोळहावियोडी)

बोल्हावियोडो—देखो 'बुलायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोल्हावियोडी)

बोल्हाववो—१ देखो 'बोळावी' (रू. भे.)

२ देखो 'बुलावी' (रू. भे.)

बोल्हावो—देखो 'बुलावी' (रू. भे.)

बोव—देखो 'बो' (५) (रू. भे.)

बोवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे.)

बोवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे.)

बोवारी—देखो 'व्यवहारी' (रू. भे.)

बोह—१ देखो 'बोह' (रू. भे.)

उ०—मुख तें मीठा बोलणा, अंदर भरिया खार । बाकं कपट का, हरिया बोह बोहवार ।
—अनुभ

२ देखो 'बोह' (रू. भे.)

बोहत—देखो 'बहुत' (रू. भे.)

बोहनामी—देखो 'बहुनामी' (रू. भे.)

बोहरणो, बोहरवी—क्रि० अ०—१ घूमना, फिरना ।

२ देखो 'बुहारणी, बुहारवी' (रू. भे.)

उ०—माया सौदें मानवी, केता बोहरें हाट । हरीया हां तणी, ताहि न जाणें साट ।
—अनुभववाणी

३ देखो 'व्यवहारणी, व्यवहारवी' (रू. भे.)

बोहरणहार, हारो (हारी), बोहरणियो—वि० ।

बोहरियोडो, बोहरियोडो, बोहरयोडो—भू० का० कृ० ।

बोहरोजणो, बोहरोजवो—कर्म वा०, भाव वा० ।

बोहराणी बोहरावो—देखो 'बुहराणी, बुहरावी' (रू. भे.)

बोहराणहार, हारो (हारी), बोहराणियो—वि० ।

बोहरायोडो—भू० का० कृ० ।

बोहराईजणो, बोहराईजवो—कर्म वा० ।

बोहरायोडो—देखो 'बुहरायोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. बोहरायोडी)

बोहरावणो, बोहराववो—देखो 'बुहराणी, बुहरावी' (रू. भे.)

बोहरावणहार, हारो (हारी), बोहरावणियो—वि० ।

बोहरावियोडो, बोहरावियोडो, बोहरावयोडो—भू० का० कृ० ।

बोहरावीजणो, बोहरावीजवो—कर्म वा० ।

बौहारावियोडो—देखो 'बुहारायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री बौहारावियोडो)

बौहारी—देखो 'बौ'री' (रु. भे.)

उ०—१ अला हम् विणाजारा पूरं साह का, विणज करण वोपारी ।
अला खेटा खेटा विणज बौहरं, भाणिका दावी पारी ।

—दीन सुदरदी

उ०—२ साच सिदक जमले बौहारी, विसनी विसन जपाय ।
विसन जप्या सुख सापजं, जम गजण ना छुटाय । —वील्होजी

बौह्लाणो, बौह्लावो—१ देखो 'बौह्लाणो, बौह्लावो' (रु. भे.)

२ देखो 'बौह्लाणो, बौह्लावो' (रु. भे.)

बौह्लाणहार, हारो (हारी), बौह्लाणिवो—वि० ।

बौह्लायोडो—भू० का० कृ० ।

बौह्लाईजणो, बौह्लाईजवो—कर्म वा० ।

बौह्लायोडो—देखो 'बौह्लायोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'बौह्लायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री बौह्लायोडो)

बौह्लावणो, बौह्लाववो—१ देखो 'बौह्लाणो, बौह्लावो' (रु. भे.)

२ देखो 'बौह्लाणो, बौह्लावो' (रु. भे.)

बौह्लावणहार, हारो (हारी), बौह्लावणियो—वि० ।

बौह्लाविओडो, बौह्लावियोडो, बौह्लाव्योडो—भू० का० कृ० ।

बौह्लावीजणो, बौह्लावीजवो—कर्म वा० ।

बौह्लावियोडो—१ देखो 'बौह्लायोडो' (रु. भे.)

२ देखो 'बौह्लायोडो' (रु. भे.)

(स्त्री बौह्लावियोडो)

बौह्लावो—देखो 'बौ'लो' (रु. भे.)

बौह्लावो—देखो 'व्यवहार' (रु. भे.)

उ०—१ मुव तं मीठा बोलण, अदर भरिया खार । वाकं कूह'र
कपट का, हरिया बौह बौहवार । —अनुभववाणी

उ०—२ हरिया अंसा को मिळ, साहिव का सचियार । भूठ न
वाकं कपट की, रच नही बौहवार । —अनुभववाणी

बौहवारियो—देखो 'व्यवहारी' (अलग, रु. भे.)

बौहवारी, बौहारी—देखो 'व्यवहारी' (रु. भे.)

बौहिव, बौहित, बौहिति बौहिव्य, बौहिव्य—देखो 'बौहित' (रु. भे.)

बौहरी—देखो 'बौ'री' (रु. भे.)

बौहोवार—देखो 'व्यवहार' (रु. भे.)

उ०—बाजं हाक वीर घुन वेदा, चवं महारिख मंगळाचार । घड
मड बेहड आडिये धारं, वर लाडिये हुप्रो बौहोवार ।

—डूदा नगराजोत री गीत

व्यंग, व्यग्य—स. पु. [स. व्यग्य] १ कोई लगती हुई बात. ताना,
चुटकी ।

२ व्यजना शक्ति से प्रकट होने वाला साधारण अर्थ से कुछ
विशिष्ट अर्थ ।

रु. भे.—विंग, व्यंग ।

व्यंगुल, व्यंगुल—सं. पु. [स. व्यंगुल] एक अंगुल का साठवां भाग ।

व्यजक—वि० [सं.] प्रकट करने वाला, जाहिरकर्त्ता ।

स. पु [स. व्यजक] १ नाटकीय हाव भाव द्वारा आन्तरिक भावों
का प्रकटन ।

२ सकेत, चिन्ह, निशान ।

व्यजण, व्यंजन—स. पु. [स. व्यंजन] १ व्यक्त होने, या प्रकट करने
का भाव या क्रिया ।

२ छप्पन प्रकार के भोजन ।

उ०—१ अर वरात रा प्रार्थणाका नू महानस में बुलाय खटरस मय
नाना व्यजनां री रात पूरण त्रिभि चखावियो । —व भा.

उ०—२ दादू आदर भाव का, मीठा लागे मीठ । विण आदर
व्यजण बुरा, जीमण घाळा ठोठ । —दादूवाणी

उ०—३ अति व्यंजन पळ अन्न, रचं जीमण वखित रस । आसव
छकि आपान, वणं जदुवस जया वस । —व भा.

३ अच्छा भोजन, बढ़िया खाद्य पदार्थ ।

उ०—रावल भगति भोजन तणी दे, सहज कराई सक । रुडी
व्यंजन रसवती दे, आरोगण आलिम कज्ज दे । —प च. धौ.

४ स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण, अक्षर ।

५ अंग, अवयव ।

रु. भे.—वजण, विजण, विज्ज, व्यंजन, व्यजन, वंजण, विजण,
विजन, व्यिजण, व्यिजन ।

व्यंजनदवादसी, व्यंजनद्वादसी—सं. स्त्री. [स. व्यंजनद्वादसी] मार्गशीर्ष
शुक्ला द्वादशी को किया जाने वाला व्रत विशेष, इस दिन विष्णु
की पूजा कर अन्नकूट की तरह ही व्यंजन बना कर विष्णु को
भोग लगाया जाता है ।

व्यंजनहारिका—स. स्त्री. [सं.] एक अमंगलकारी शक्ति जो नव वधुओं
के द्वारा बनाये गये भोजन उठा ले जाती है । (पुराण)

व्यजना—स. स्त्री. [स.] १ प्रकट करने की क्रिया या भाव ।

२ शब्द शक्ति के तीन भेदों में से वह शब्द शक्ति जो मुख्यार्थ एवं
लक्ष्यार्थ के अतिरिक्त मूल में छिपे हुए अकथित अर्थ की द्योतित
करती है अर्थात् अभिधा व लक्षणा शक्तियों द्वारा अपने-अपने अर्थ
को प्रकट करने के बाद व्यंग्यार्थ का बोध कराने वाली शक्ति ।

रु. भे.—व्यंजना ।

व्यंतर—सं. पु.—१ भूत-प्रेत योनि विशेष या उक्त योनि के भूत ।

२ एक देवयोनि विशेष या सक्त योनि के देव ।

उ०—१ भवनपति व्यतर न जोतसी, भेद त्रिमासिक पावे । सुर
वर तं मिलनं सगला, नाम निर्माणु भावे । —जयबाणी

उ०—२ भुवनपति वीस इद्रे मिलाजी, सोलह व्यतर सार । जोइ
सह दस वेमाणिय जुठघा जी, चौसठ इद्र सुविचार । —वृस्त.

उ०—३ वावन घोर किये अपनं वस, चौसठि योगिनी पाय लगाइ ।
हाइण साइणि व्यतर, खेचर, भूत परेत पिताच पुलाइ ।

—घ. व. ग.

रू. भे.—वितर, वेतर, वंतर, ।

अल्पा,—वितरियो, व्यतरियो ।

व्यतरियो—देखो 'व्यतर' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—असुरादिक दस होय बाण व्यतरिया अट्ट, जोइस पच वेमा-
णिय दुविहा सुत्तं दिट्ट । पनरं भेदं सिद्ध कया ए जीव प्रकार,
तनुमानादिक हिष एहती कहिसु अधिकार । —वृस्त.

व्यद-स. [स. विदु] १ वीर्य, वीज ।

उ०—भूमि परेखी ही नरीं, कहा परेखी व्यद । भुय विन भला न
नीपजै, कण प्रण तुरी, नरिद । —जखडा मुखडा भाटी री वात

२ देखो 'वीद' (रू. भे.)

उ०—रीभ्रै हुसं रिखेस, देखवें रजं दिनेस । धमि लोह धार इद,
धारगा वरंत व्यद । —सू. प्र.

व्यदु—देखो 'विदु' (रू. भे.)

व्यध्य—देखो 'विध्य' (रू. भे.)

उ०—अथ मदावर लोह नी साफल शोडि, आलानस्तम मोडि,
हस्तिसाल भाजि, पउतार गाजइ, कमाड फाडइ, मठ मदिर पाडिइ
हस्ति नी यूथ स्मरइ, व्यध्य मनमाहि धरइ, धन माहि सांचरइ ।

—व. स.

व्यव—देखो 'विद' (रू. भे.)

उ०—विचं नासिका अग्र मोती विराजै, मनू राजकं द्वार सुक
समाजै । वणै होट नीके सुरग विसाळ, लसं विद्रभी कोमळ व्यद
लाल । —वगसीराम प्रोहित री वात

व्यस-स. पु. [स. व्यस] १ सिहिका एव विप्रचिति के ससर्ग से उत्पन्न
एक पुत्र ।

२ इन्द्र-पुत्र, एक दानव ।

व्यउ—देखो 'विवाइ' (रू. भे.) (अमरत)

व्यक्त-वि. [स.] १ प्रकट किया हुआ, जाहिर किया हुआ, प्रकटित ।

उ०—मिथ्याद्रस्टि तखी उस्थापक, व्यक्त गुणै सुविलासी । वलि
विरक्त मोहादिक भावै, एक युक्ति अभ्यासी । —वि. कु

२. साफ, स्पष्ट ।

उ०—.....इतिठ श्रीगीतमम्यामि रिगि तपनठ निर्धान,
त्रिपानउ अंडार, गुणनठ परमावधि, ककणा नठ निधि, यात्सल्य
नठ समुद्र, नस.जाल व्यक्ता दीसइ, अरिचवय हीला दलहलता
जिसा गानटि अजाणि सुप्रधारि वास्ट मेसिउ सालसचउ ठगठगतउ
भेलीउ हुठ जितिउ । —व. स.

रू. भे.—व्यगत ।

व्यक्ति, व्यक्ती-स. स्त्री. [स. व्यक्ति] १ व्यक्त, स्पष्ट या प्रकट होने
या करने की क्रिया या भाव ।

सं. पु.—२ अनुप्य, आदमी ।

उ०—गुनाली गळु मं पुनि न पिछताळ पय परुं, कुपय्यादी
बाहू धरम पय बाहू गय धरुं । प्रनिग्या लेता ह पुदरु अह्य वेता
खुत पयूं, भगा सती वक्ती पिमुनछळ व्यक्ती हुत भयूं ।

—क. का.

३ पिठ, धारीर ।

रू. भे.—व्यगति, व्यगती ।

व्यग्र-वि. [स.] १ ध्याकुल, उद्विग्न, परेधान, दुःखी ।

उ०—गोवर के गननायन वी गुन, गाय करी सु प्रया गुनगारपी ।
गायन व्यग्र प्रलाप गह्यो जनु, ऊठ कं अग्र प्रताप उचारपी ।

—क. का.

२ मयभीत, डरा हुआ, चकराया हुआ ।

३ किसी कार्य में लान, आसक्त, मान ।

व्यग्रता-स. स्त्री. [स. व्यग्र + ता प्र.] व्यग्र होने की अवस्था या
भाव ।

व्यजण, व्यजणक, व्यजन-स. पु. [स. व्यजन] १ पंता । (दि. को)

२ पले आदि से हवा खाने की क्रिया ।

व्यतिकर, व्यतिकार-स. पु. [स.] १ समिश्रण, मिलावट ।

२ सम्बन्ध, संसर्ग, लगाव ।

३ आघात, चोट ।

४ घटना ।

५ अचसर, भौका ।

६ पारस्परिक सम्बन्ध ।

७ आपसी लेन-देन, अदल-बदल ।

व्यतिक्रम, व्यतिक्रमण-सं. पु. [स. व्यतिक्रम] १ क्रम में होने वाला
उलट-फेर, क्रम का विपर्यय ।

२ अत भग की इच्छा, अतिक्रम । (जैन)

३ अत भग की साधनभूत वस्तुओं को ग्रहण करने की क्रिया ।

(जैन)

उ०—अतिक्रम इच्छा जाणियै, व्यतिक्रम वस्तु-प्रसंग । अतिकार
देस भग है, अनाचार सब भग ।

—जयबाणी

- ४ प्रापत्ति, सकट, तकलीफ ।
 ५ पापकर्म, असत्यकर्म ।
 ६ जुर्म, अपराध ।
 ७ उल्लघन, अवहेलना ।
 ८ लापरवाही ।
 ९ विपरीत होने की अवस्था; वैपरीत्य ।
 रू. भे.—वितिक्रम ।

व्यतिक्रमी-वि —व्यतिक्रम करने वाला ।

रू. भे.—वितिक्रमी ।

व्यतिक्रमणी, व्यतिक्रमणी—क्रि० स०—व्यतिक्रमण करना ।

उ०—सउ सागरोम व्यतिक्रम्या, दहवीरज थो जिवारो जो ।
 ईसानेद्र करावियउ, ए श्रीजउ उदारी जो । —स. कु

व्यतिक्रमणहार, हारी (हारी), व्यतिक्रमणियो—वि० ।

व्यतिक्रमिणोडो, व्यतिक्रमियोडो, व्यतिक्रम्योडो—भू० का० कृ० ।

व्यतिक्रमीजणी, व्यतिक्रमीजवी—कर्म वा० ।

व्यतिक्रमियोडो—भू. का कृ.—व्यतिक्रमण किया हुआ ।

(स्त्री. व्यतिक्रमियोडो)

व्यतिपात-स. पु [स. व्यतीपात] १ सम्पूर्ण रीति से प्रस्थान या सम्पूर्णत. विच्छेद ।

२ बड़ा भारी प्राकृतिक उत्पात या उपद्रव ।

३ असम्मान, अपमान ।

४ विक्रम आदि सत्ताइस योगों में से सत्रहवा योग, जिसमें शुभ कार्य एवं यात्रादि निषिद्ध है । ५ भारी सकट-सूचक अपशकुन ।

६ अभावस्था के दिन रविवार, स्रवण घनिष्ठा, आर्द्रा, अश्लेषा, या मृगशिरा नक्षत्र होने पर होने वाला एक प्रकार का योग विशेष, जिस दिन गंगा-स्नान का बड़ा फल होता है ।

रू. भे.—वितिपात, वितीपात व्यतीपात ।

व्यतिरेक-स. पु.—१ अंतर, भेद, फर्क ।

उ०—बाबल रं पुर हूत बहू, वर-पुर में व्यतिरेक । विषया भो
 पीहर बहव, है न सासरं हेक । —रवतसिंह भाटी

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें उपमेय में उत्कर्ष या उपमान में अपकर्ष दिखाकर उपमेय की विशेषता का वर्णन हो ।

व्यतीत-वि. [स] १ मरा हुआ, मृत ।

२ त्यागा हुआ, परित्यक्त ।

३ तिरस्कृत, उपेक्षित ।

४ गुजरा हुआ, गया हुआ, समाप्त ।

उ०—१ भादरवं ले घूड, मोखवा गोगा मांडो, । पेची पीऊ साज,
 चढावा खीर र खांडा । पाऊस हुआ व्यतीत, टिकं ना टोब ठिकारुं ।
 दत-गत भाग दौड, हेड रमवा हल मांणुं । —दसदेव

उ०—२ घोड़ी मांणुस जै धकं चढियो सो ही गुड मेळो हुवो ।
 इसी इसी वाता कही सो रावजी सुण कर बहूत नाराज हुमा । रात
 तो फिकर करतां भाज-घड करतां करता व्यतीत कीवी । परभात
 पोह पीळो री नकारो हुवो । —हाढाळा सूर री वात

उ०—३ बोलइ तं प्रागलि वानर कूदतो रे, आवी मन ना मानीता
 मीत रे । प्रागति स्वागति करिस्त्यु थाहरी रे, रजनी माहरं प्यारि
 करी व्यतीत रे । —वि. कु.

उ०—४ यू करता बारह वरस व्यतीत हुवा । अंक फकीर प्राया
 रोजीना अवाज करै छै । जै साईं री पलक में खलक वसै छै ।
 सो अंक दिन कधार री वादसाह थो सो इण फकीर री वात सुण
 मन में विचारी अर भिस्ती नूं कही—जै थारै वादसाह नूं जाय
 अरज कर—हमकी वरस बारह व्यतीत हुवं, अर नया हुकम है ?
 इण भाति भिस्ती नू कई वार कही पण भिस्ती कहै—मोसर नहीं ।
 और अरज करणी अप चाहै नहीं । —साईं री पलक मे खलक
 रू. भे.—वितोत, वीतीत, व्यतीत, वतीत, वदीत, वदीतउ, वदीतं,
 वदीतो, वितोत, वितोति ।

व्यतीतणी, व्यतीतवी—क्रि. अ.—१ मरना, मृत्यु को प्राप्त होना ।

२ त्यागना, छोड़ना ।

३ तिरस्कृत होना, उपेक्षित होना ।

४ गुजरना, समाप्त होना ।

क्रि० स०—५ मारना, सहार करना ।

६ त्याग करने को प्रवृत्त करना, छुड़ाना ।

७ गुजारना, समाप्त करना ।

८ तिरस्कार करना, उपेक्षा करना ।

व्यतीतणहार, हारी (हारी), व्यतीतणियो—वि० ।

व्यतीतिणोडो, व्यतीतियोडो व्यतीत्योडो—भू० का० कृ० ।

व्यतीतीजणी, व्यतीतीजवी—भाव वा०, कर्म वा० ।

व्यतीतणी, व्यतीतवी, वतीतणी, वतीतवी—रू. भे. ।

व्यतीतियोडो—भू. का कृ —१ मरा हुआ, मृत्यु को प्राप्त हुआ हुआ ।

२ त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ । ३ तिरस्कृत हुआ हुआ, उपेक्षित
 हुआ हुआ । ४ गुजरा हुआ, समाप्त हुआ हुआ । ५ मारा हुआ,
 सहार किया हुआ । ६ त्याग करने के लिए प्रवृत्त किया हुआ,
 छुड़ाया हुआ । ७ गुजारा हुआ, समाप्त किया हुआ । ८ तिरस्कार
 किया हुआ, उपेक्षा किया हुआ ।

(स्त्री. व्यतीतियोडो)

व्यतीपात—देखो 'व्यतिपात' (रू. भे.)

उ०—व्यतीपात वेधति बली, सूरजनी सफाति । ब्राह्मण हुँतु
 ब्राह्मणी, नवि भावइ भोकाति । —मा. कां. प्र.

व्यतीपातघ्नत-स. पु. [स.] किसी शुभदिन के व्यतीपात को स्वर्णं निर्मित सूर्य व चन्द्रमा की मूर्ति की पूजन क्रिया ।

वि० वि०—ज्योतिष शास्त्रानुसार व्यतीपात के प्रारम्भ व समाप्ति सूर्य व चन्द्रमा के गणित से होती है । सूर्य के क्रोधावश पृथ्वी पर गिरे आसुओं से व्यतीपात की उत्पत्ति हुई । शुभ कार्यों में इसका त्याग व लोकोपकार कार्यों में इसका ग्रहण होता है ।

व्यतीपाति, व्यतीपाती-वि.—१ उपद्रव करने वाला ।

२ प्रस्थान किया हुआ ।

३ अपमान किया हुआ, असम्मान किया हुआ ।

रू भे.—वितीपाती ।

व्यथा-स स्त्री [स.] १ रोग, बीमारी । (ह. नां. मा.)

२ भय, डर ।

३ चिन्ता, दुख ।

४ कष्ट, दुःख ।

उ०—१ आखरी लाख मानें न श्री, खाक करी मम खाल रो ।

कुण सुएँ साल मोटी कथा, हाय व्यथा मो हाल रो । —ऊ. का

उ०—२ कहती सकू मन व्यथा, दिन कहिया तन ताप । मो जोवन मेमत हुवो, विरहण करै विलाप । —अग्यात

उ०—३ नहिं सही जाय जद हूँ निडर, कही जाय मोटी कथा । वय बखत अमोलक हूँ ब्रथा, विमल हियँ खोटी व्यथा ।

—ऊ का

५ विकलता, व्याकुलता, परेशानी ।

६ पीडा, वेदना, दर्द ।

उ०—१ दादू सिर करवत बहे, अग परस नहिं होइ । माहि कलेजा काटिये, यह व्यथा न जाएँ कोइ । —दादूवाणी

उ०—२ सखी सुहागिनि सब कहँ, पिव सौँ परस न होइ । निस वासर दुख पाइये, यह व्यथा न जाएँ कोइ । —दादूवाणी

रू. भे.—विथा, व्यथा, विथ, विथा ।

व्यथित-वि० [स.] १ विकल, व्याकुल, परेशान ।

२ डरा हुआ, भयभीत ।

३ दुःखी, पीड़ित, कष्टमय ।

४ रोगी, विमार ।

रू. भे.—विथित, व्यथित, विथित ।

व्यधाघर, व्यधाधारी—देखो 'विद्याघर' (रू. भे.) (नां. मा.)

व्यभचार, व्यभिचार, व्यभीचार-स पु. [स. व्यभिचार, व्यभीचार]

१ दूषित आचरण, बदचलनी ।

२ रति क्रीडा, सभोग, भोग ।

उ०—मि वरियु वीरसेन सुत आदि, हस तएँ वचन उल्लादि । देव तह्यो पित नि ठारि, पुत्री साथि सु व्यभचार । —नळाह्यांन
३ सती न होने की स्थिति या भाव, असतीत्व ।

४ स्त्री का पर-पुरुष से व पुरुष का पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध ।

उ०—दादू भरणा खूब है, निपट पूरा व्यभिचार । दादू पति को छोड कर, आन भजै भरतार । —दादूवाणी

५ कामपिपासा को अनुचित रूप से शान्त करने की क्रिया या भाव ।

६ अनियमितता, अपवाद ।

७ अपराध, दोष । ८ असत्य, झूठ ।

रू. भे.—विभचार, वीभचार, विभचार, वीभचार ।

व्यभिचारी-वि० [स. व्यभिचारिन्] (स्त्री. व्यभिचारण, व्यभिचारणी, व्यभिचारिण, व्यभिचारिणी) १ व्यभिचार करने वाला, पतित ।

उ०—जन्म लगेँ व्यभिचारणी, नख सिख मरी कळंक । पलक एक सन्मुख जळी, दादू धोर्यँ अक । —दादूवाणी

२ पथभ्रष्ट, कुपथ-गामी ।

३ दोषी अपराधी ।

४ परस्त्री-गामी ।

उ०—छत्री घरम छोडियी छेला, चौडे ह्य व्यभिचारी रे । पर-ण्योडी रँ पास न पीडे, पातर लागेँ प्यारी रे । —ऊ. का

५ रतिक्रीडा करने वाला सभोग करने वाला, भोगी ।

६ असत्य, झूठा ।

स. पु.—१ वह स्त्री या पुरुष जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से अनुचित सम्बन्ध रखता हो ।

२ बदचलन, दूषित आचरण ।

रू. भे.—विभचारी, भिभचारी, विभचारी ।

व्यभ्यास-स पु. [स. वि=विशेष+अभ्यास] विशेष अभ्यास ।

उ०—प्रमान सास्त्र मात्र की स्वपंडित स्वयम् पढे, गुनीन अग मन्य हूँ व्यभ्यास अन्य में बडे । प्रकाड पाठ पाठ के विकरमकाड को करे, तनें त्रई उपासना ब्रह्मांड ग्यान ते तरं । —ऊ. का

व्यय-स पु. [स. व्यय] १ उपभोग के कारण वस्तु में जाने वाला ह्रास, घटाती ।

२ निर्माण में होने वाला खर्च, लागत ।

३ नाश, बरबादी ।

४ मद विशेष का खर्च ।

५ लग्न से ग्यारहवा स्थान । (फलित ज्योतिष)

६ वृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या सवत्सर ।

७ एक नाग का नामान्तर ।

व्ययकरण, व्ययकरण, व्ययकरणिक, व्ययकरिण, व्ययकरिण, व्यय-
करिणिक-स. पु [स. व्यय-कर्णिक] व्यय या भुगतान अधिकारी ।

उ०—१ राजा युवराजकुमार राजेस्वर महामंडलेस्वर सामंत लघु
सामंत तलवर तंत्रपाल चतुरभीतिक ताडरूपनि मन्त्रि महामन्त्रि
ग्रहवाहक स्त्रीकरणिक व्ययकरिण राजकार घरमाधिक सोवरणक
देवक मडलक गह्वरक उस्टक इस्टिकाक घोडकाक यमक पुरोहित
दडनायिक । —व. स

उ०—२ स्त्रीकरणिक व्ययकरिणिक राजकरिणिक घरमा-
धिकरणिक सोवरणकरिणिक देवकरिणिक मडलकरिणिक उस्ट-
करिणिक इष्टिकारिणिक यमकरिणिक पुरोहितकरिणिक
दडनायिक सेनापति पञ्चतार आरोहक प्रतीकारभारिक भाडागारिक
माणिक्यभाडागारिक । —व. स.

रू. भे.—वयगरणो, वयगरणीक, वयगरणु, वयगरणो ।

व्यरथ-वि. [स व्यर्थ] १ फलूल, फालतू, योंही ।

२ अर्थ रहित, मतलब रहित, निरर्थक ।

३ लाभविहीन ।

रू भे—विरथ, विरथ ।

व्यरथता-सं स्त्री. [स. व्यर्थता] व्यर्थ होने की स्थिति या भाव ।

व्यलागणी, व्यलागनी—देखो 'लागणी, लागनी' (रू. भे.)

उ०—सत्र सामंत व्यलागनी सारं, तळ छळि घण लाल भत ग ।
पाव प्यळोभ घसि जगि वसियो, नागणि नं डरि कहै हम, नाग ।

—चतुरा रामावत राठीड री गीत

व्यलागणहार, हारी (हारी), व्यलागणियो—वि० ।

व्यलागियोडी, व्यलागियोडी, व्यलागियोडी—भू० का० कू० ।

व्यलागिजणी, व्यलागिजनी—भाव वा० ।

व्यलागियोडी—देखो लागियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री व्यलागियोडी)

व्यलीक, व्यलीक-वि [स व्यलीक] १ झूठा, असत्य ।

२ अप्रिय, अप्रोतिकर ।

स पु [स. व्यलीक] १ कारण, जिससे दुख हो ।

२ जुर्म, अपराध, दोष ।

३ कपट, धोखा ।

४ असत्यता, झूठाई ।

[स व्यलीक] ५ लपट या कामी पुरुष ।

६ वह पुरुष जो गुदा मैथुन कराने का आदि हो ।

व्यवधान-स. पु [स. व्यवधान] १ बीच में आधी आकर आड करने
वाली वस्तु ।

२ रोक, रुकावट ।

३ भेद, रहस्य ।

४ छिपाव, दुराव ।

व्यवसाइ, व्यवसाई—१ देखो 'व्यवसाय' (रू. भे.)

२ देखो 'व्यवसायी' (रू. भे.)

व्यवसाइयो, व्यवसाईयो—देखो 'व्यवसायी' (अल्पा., रू. भे.)

उ०—१ सुभट नै आयुधि, सेवक नी स्वांभिभक्ति, कलावत नी
कला, व्यवसाईया नी व्यवसायि, प्रथ्वीपति नी न्यायि, भाग्यवत
नइ भाग्योदयि, एतला प्रदेस माहरी वासभूमि..... ।

—व. स.

उ०—२ भोई सोई भरथिया, सोनी नइ सूतार । व्यवसाईया महु
जातिना, जै जोईइ तिणी वारि । —मा का प्र.

व्यवसाय-स पु. [स. व्यवसाय] १ जीविका, पेशा ।

२ उद्योग, प्रयत्न, कोशिश ।

३ कार्य, धन्वा ।

४ व्यापार ।

५ अभिप्राय, मतलब ।

६ कार्य का सम्पादन । ७ विष्णु का नामान्तर । ८ शिव का
नाम ।

रू. भे.—विवसाइ, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाय, व्योसाय, विव-
साइ, विवसाई, विवसाय, व्यवसाइ, व्यवसाई ।

व्यवसायि, व्यवसायी-सं. पु. [स. व्यवसायिन्] १ व्यवसाय करने
वाला व्यक्ति ।

२ वह व्यक्ति जो पेशेवर हो ।

३ उद्यम या प्रयत्नशील व्यक्ति ।

४ व्यापार करने वाला, व्यापारी ।

५ किसी कार्य का अनुष्ठानकर्ता व्यक्ति ।

६ व्यवसाय करने की क्रिया ।

रू. भे - विवसाइ, विवसाई, विवसाइ, विवसाई, विवसायी, व्यव-
साइ, व्यवसाई ।

अल्पा,—विवसाइयो, विवसाईयो, विवसायी, व्यवसाइयो, व्यव-
साईयो ।

व्यवस्था-स स्त्री [स] १ किसी निर्धारित कार्य की शास्त्रोक्त विधि ।

२ चीजों वस्तुओं की सजाकर अलग-अलग रखने की क्रिया ।

३ स्थिति, हालत, दशा ।

४ किसी कार्य के लिए पूर्वनिर्धारित योजना ।

५ कार्यकलाप, प्रवन्ध, इन्तजाम ।

रू. भे.—विवस्था, व्यवस्था, विवस्था ।

व्यवस्थापक-स पु [स.] व्यवस्था करने वाला, प्रवन्धक ।

व्यवस्थापण, व्यवस्थापन-स. पु. [स. व्यवस्थत्त्वं] व्यवस्था या प्रवन्ध
करने की क्रिया या भाव ।

व्यवस्थापित-वि० [स.] १ व्यवस्थित, नियमानुसार ।

२ निर्धारित, निश्चित ।

३ सुसज्जित । (वस्तुए)

व्यवस्थित-वि. [स.] १ जिसकी व्यवस्था की गई हो ।

१ क्रम से चलने वाला ।

३ सजाया हुआ, सुसज्जित ।

४ निर्धारित किया हुआ, निश्चित ।

व्यवहारिक—देखो 'व्यवहारीक' (रु. भे.)

उ०—.....वधवत ते जे स्नेहवत, व्यवहारिक ते जे नयावत, धरणि ते जे सीलवति, छद्मल ते जे कलावत, वेस्या ते जे रूपवति, वस्त्र ते जे पखालसार, द्रव्य ते जे भोगसार, धान्य ते जे साहारवत, साधु ते जे क्षांतिवत, करह ते जे विंगवत, सुरंग ते जे वेगवत, हस्ति ते जे भद्रजातीय, मश्रि ते जे बुद्धिमत, कर ते जे बीरघवत, राय ते जे प्रसस्य जातिवत । —व स

व्यवहार-स. पु. [स.] १ आचरण, चाल-चलन । (दि. को.)

२ पेशा, धन्धा ।

३ व्याज-बट्टे या लेन-देन का धन्धा ।

४ व्यापार, व्यवसाय ।

५ रीति, रस्म, रिवाज ।

६ सम्बन्ध, रिश्ता ।

७ मुकदमा या मुकदमा की जांच-पड़ताल करने वाला ।

८ अधिकार, हक ।

उ०—कहिवा उचरत्ये जिक्, जाणां छां निरधार । पिण इण वधसर नारी नं, कहिवा नी व्यवहार । —जयवांणी

९ शास्त्रोक्त-विधि, नियम ।

१० धर्तव्य, आचार, सलूक ।

उ०—जं किणी घरगोडिया राजपूत रं सामे उणरो व्याव व्हयो व्हेतो तो नी वा इत्ता दिन मंसा परवाण लापत रं पाती मर नी इण भात लापतं रह्यां पछे पाछी गाव मं पग धर सकती । सास-रिया कं मुद पीवरिया नाक फांन वाठ नं चिगदियो कर न्हाकता । मूडा मं प्रावे ज्यूं जणी जणी मरळ-विरळ गाळिया काढनी । माजनी गमतो । पण वाप ती दिबावटी अंडी व्यवहार करयो जाणं की भजोगती वात नी व्दी । —फुलवाडी

११ भेद, अन्तर, फर्क ।

उ०—सरगुण निरगुण परळ कं, इनकं लखे व्यवहार । धगम निगम अनुभव लखे, कर कर हंस विचार ।

—सीहरिरामजी महाराज

१२ छ सुत्रो मे से एक सूत्र का नाम । (जैन)

उ०—व्यवहार सूत्र छ सं भुविचार, दयाश्रुग स्वयं सत प्रद्वार । पंचकल्प ते पचम छेद, सवा दग्यारखे संगत्या वेद । —छ व. सं. रु. भे.—व्यवहार, वपार, विवहार, धिवहार, विवार, बुझार, वेजार, वेवार, बीवार, बीहार, व्यवहार, व्यवहार, व्योहार, ववहार, वापार, विवहार, विवहार, विवार, विवहार, विविहार, वुझार, वेवार, वेवार, वेवार, वेवहार, वेवार, वेहार, वोवार, वोवार, बीवार, बीहार, बीहार, बीहोवार, व्यवहार, व्यवहार, व्योहार ।

व्यवहारणो, व्यवहारयो—क्रि० स०—१ आचरण करना ।

२ पेशा या धन्धा करना ।

३ व्याज-बट्टे पर दरयों का लेन-देन करना ।

४ व्यापार करना, व्यवसाय करना ।

५ रीति-रिवाजों का पालन करना ।

६ मुकदमे की जांच-पड़ताल करना ।

७ अधिकार करना हक जमाना ।

८ शास्त्रोक्त विधियों या नियमों का पालन करना ।

९ अन्तर करना, तुलना करना ।

१० धर्तव्य करना, सलूक करना ।

व्यवहारणहार, हारो (हारी), व्यवहारनियो—वि० ।

व्यवहारिशी, व्यवहारियोशी, व्यवहारपोड़ी—भू० का० क० ।

व्यवहारीजणो व्यवहारीजवो—फर्म वा० ।

पुहरणो, पुहरयो, योहरणी, योहरयो—रु० भे० ।

व्यवहारिओ—देखो 'व्यवहारियो' (रु० भे०.)

उ०—१ गढ गढ मंदिर पोलि प्राकार वावि सरोवर मूमा पाइ भाराम यनलड विमुंडमा विनुंडमा प्रावास, चउरासो चहुटी, तिहा व्यवहारिओ नी गजघटा, सीमाली पोरमाड भोसवाल मूबर कहीन वाइडा हुंउड मोड, लाहुमा सीमाली, मडालमा । —व. स.

उ०—२ व्यवहारिओ महरदिक वसइ, प्राप हेठा कहिनइ नवि यसइ । जेह तणी छइ प्रसन्न ट्रेठि, इत्या तिहां छइ न्यायवत सेठि । —नलदबदी राठ

व्यवहारिक-वि —१ व्यवहार से सम्बन्धित ।

२ व्यवहार के उपयुक्त या व्यवहार करने योग्य ।

३ व्यापार या व्यवसाय से सम्बन्धित, व्यापारिक ।

रु. भे वेवारिक, व्यवहारिक, व्यवहारिक, व्यावहारीक ।

व्यवहारियोशी-भू का क० —१ आचरण किया हुआ । २ पेशा या धन्धा किया हुआ । ३ व्याज-बट्टे पर दरयों का लेन-देन किया हुआ । ४ व्यापार किया हुआ, व्यवसाय किया हुआ । ५ रीति-रिवाजों का पालन किया हुआ । ६ मुकदमें की जांच-पड़ताल किया हुआ । ७ अधिकार किया हुआ, हक जमाना हुआ ।

शास्त्रोक्त विधियो व नियमो का पालन किया हुआ। ९ अन्तर किया हुआ, तुलना किया हुआ। १० वर्त्तव किया हुआ, सलूक किया हुआ।

(स्त्री व्यवहारियोडी)

व्यवहारियो—देखो 'व्यवहारी' (अल्पा., रू. भे)

उ०—१ * * * काला पीला नीला घउला इस्या पटोला, सूक—डि न समूह, कपूर ना पूर, घणा केसर ना अलवेसरपणा, अग्रर ना भर, सुगधपणपूरी इसी कस्तूरी, मनोहर माणिक्य, मनोग्य रुडा रत्न, अनेकि विदेशी वस्तु, इसिउ व्यवहारिया तणउ भवन।

—व स.

उ०—२ लेता तो राजी होय ए, पिण दुस्मण जिम जोय ए। गुरे कहै च्यारां माय ए, कुण व्यवहारियो कहवाय ए।

—जयवाणी

उ०—३ जिणइ ठाकुरि प्रवेशक महोत्सव कराव्या, तणिया तोरण वधाव्या, वदरवाळि ठाम-ठाम सोहाव्या, व्यवहारिया साम्हा इणि परि वादिवा आव्या कुणही जो तस्या वहिल ई कल्होडा, कुण ही पलाण्या आसण होडा, केई करहि चडी चड दह दिसि द्रोडा, केइ मुखि माणइ तबोल-जवग डोडा। —रा सा स

व्यवहारी, व्यवहारीठ—वि [स व्यवहारिन्] उत्तम आचरण वाला।

व्यवहारीश्री, व्यवहारि—स पु—१ व्यापार करने वाला, व्यवहारी।

उ०—किहा सुखासण किहा डोली ? किर्हा व्यवहारू नइ कोली रे ? किहा दीपोच्छव किहा डोली ? किहा जव रोटी गहू पोली रे ?

—नळदयदती रास

२ व्यवसाय करने वाला, व्यवसायी।

३ वैश्य, बनिया।

उ०—वभण भाट भला वसइ, व्यवहारिआ विसेख। राजकुळी रुडी तिहा, छयल छत्रीसे रेख। —मा का प्र

४ सम्बन्धी, रिश्तेदार।

५ व्याज-वट्टे पर रुपये का लेन-देन का कार्य करने वाला, साहूकार।

रू. भे.—ववहारी, ववारी, ववहारी, व्यवहारी, ववहारी, विवहारी विहारी, वेहारी, वेहारी, वोवारी, वोहारी, वोवारी, वोहारी, वोहारी, व्यवहारी, व्यवहारी, व्यारी, व्यारीठ।

अल्पा,—ववहारियो, ववारियो, ववहारियो, व्यवहारियो, विवहारिउ, विवहारिओ, विवहारियो, विवहारीउ, विवहारीओ, विवहारीयो, विहारियो, वेवारियो, वेवहारियो, व्यवहारियो, वोहारियो, वोवारियो, वोवहारियो, व्यवहारिओ, व्यवहारियो, व्यवहारियो, व्यवहारियो।

व्यवार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

व्यवारियो—देखी 'व्यवहारी' (अल्पा, रू. भे)

व्यवारी—देखी 'व्यवहारी' (रू. भे)

व्यसन—स पु [सं.] १ अशुभ वात, अमंगलिक वात।

२ निरर्थक कार्य या प्रयत्न।

३ किसी कार्य या वात के लिए मन की एक प्रवृत्ति या रुचि, जिससे मनुष्य उसी कार्य में सलग्न रहता है।

४ दूषित मनोविकारो के कारण भोगविलास या अन्य बुरे कार्यों के लिए होने वाली आसक्ति, जिसके विना रहना कठिन हो, बुरी आदत।

उ०—१ तीन लोक की मोल जाय तन सुकवि जगावें, हीरो लागी हाथ पुनरभव फेर न पावें। ठाला भूला ठोठ कुबुध नहि छोडै काल्हा, पुण्य गया परवार व्यसन जद लागा वाल्हा। —ऊ का

उ०—२ हेमजी स्वामी दीक्षा लेवा त्यार थया जद किण ही ग्रहस्य स्वामीजी नै कह्यो—महाराज हेमजी दीक्षा लेवा त्यार थया पिण तमाखू रो व्यसन है। जव स्वामीजी वौल्या—काचरिया रो अटक्यो किसी विवाह रहे। —भि. द्र.

५ असमर्थता, असामर्थ्य।

६ कष्ट, दुःख।

७ विपत्ति, सकट।

रू. भे.—विरसन, विसन, विसन्न, विसन, विसन्न, व्यसन, विसन, विमन्न विसिन, विस्न, वीसण, वीसन, व्यस्न।

व्यसनी—सं पु [स. व्यसनिन्] वह व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का व्यसन हो।

रू. भे.—विसनी, व्यसनी भिमरिण भिसणी, भिसणी, विसनी, विसनीउ, विसिनि, विसिनी, विस्नी, व्यस्नी।

व्यस्टि, व्यस्टी—पु [स व्यष्टि] १ समूह या समाज से अलग किया हुआ।

उ०—निकाई छाई तें प्रकट प्रभुताई सिख नखा, समस्टी व्यस्टी तें सजन दिव द्रस्टी रिखि सखा। धरे तूं धारै तूं परज प्रत पाटें धन धनी, सभी की सहारै प्रळय लय धारै करसनी। —ऊ. का.

२ सनाक नामक आचार्य का शिष्य व विप्रचित्ति का आचार्य।

व्यस्त—वि. [स] १ आकुल, व्याकुल, चवराया हुआ।

२ काम में लगा हुआ, कार्य में फसा हुआ।

३ इधर-उधर, आगे पीछे, ऊपर नीचे हुवा हुआ।

४ फैला हुआ, व्याप्त।

व्यस्तार—स पु [स] १ हाथी की कनपट्टियो से मद के चूने की क्रिया या भाव।

२ देखो 'विस्तार' (रू. भे.)

व्यसन—देखो 'व्यसन' (रू. भे.)

व्यसनी—देखो 'व्यसनी' (रू. भे.)

व्यस्य—स पु [स व्यस्य] १ यम का उपासक एक राजा ।

२ ऋग्वेद के कुछ मन्त्रों के द्रष्टा एवं भद्रिवनों के कृपापात्रों में से एक प्राचीन ऋषि ।

व्यह्वार—देखो 'व्यह्वार' (रू. भे.)

व्यह्वारियों—देखो 'व्यह्वारी' (अल्पा, रू. भे.)

व्यह्वारी—देखो 'व्यह्वारी' (रू. भे.)

व्यह्, व्यह्—देखो 'व्यह्' (रू. भे.) (उ. र.)

व्यां—सर्व—वह का बहुवचन, उन ।

किं वि—१ ऐसे, इस तरह ।

२ वैसे, उस तरह ।

व्याण—सं. स्त्री—१ समधी की स्त्री ।

२ वह स्त्री जो किसी जागीरदार की सड़की के दहेज में दी जाती है और उसे भी वरपक्ष के किसी दास को उसी दिन विवाह दी जाती है ।

रू. भे.—त्रिवायण, विवाहण, विवाहिण, विवाहिणी, वेवाण, व्याण, व्याहणी, वियाण, व्यायण, व्यावण ।

व्यांशु, व्यांशू—सं. पु [स वि+श्रणु] श्रणु से बड़ा, विशेष श्रणु ।

उ०—श्रणु तं व्यांशू तं ब्रह्मदत्तं विभूतं प्रति विभू, तुजं ना जानं की सुहृद स्वसु जानं भल प्रभू । कहँ क्या ध्यावं धी कहन नहिं भावं कुलकुळ, मदाधी मायावी तुम रु हम भावी सम तुजं ।

—रू. का.

व्यांन—उ. पु [स. व्यान] शरीर में रहने वाली दश प्रकार के वायु में से एक प्रकार का वायु जो शरीर में संचार करता है तथा इसके द्वारा शरीर में रस पहुँचना, शरीर से पसीना निकलना, घून का चलना व अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती हैं ।

रू. भे.—व्यान, वियान ।

व्यांनदा—स. स्त्री. [स व्यानदा] शरीर में 'व्यान' वायु प्रदान करने वाली शक्ति ।

व्यांम—स. पु [स व्याम] दोनों भुजाओं को दोनों शरीर फैलाने के बाद एक हाथ की अंगुलियों के सिरे में दूसरे हाथ की अंगुलियों के सिरे तक की लम्बाई का नाप ।

व्यांमोह—देखो 'व्यांमोह' (रू. भे.)

व्यांथ—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ जलमी रा दे जाया सार ज करती छिन-छिन धीय री, हरसा वीर म्हारँ राव गढा रे करती व्याव ।

—जीणुमाता री गीत

उ०—२ पेठा तिहँ पागती पांणी, नेमजी माँह उद्याल्यो पांणी । मान्यो मान्यो जाणो जाणी, व्यांथ मनाय लियो माटांणी जी ।

—जयवाणी

उ०—३ कटँ है कुरीती ? पिता-पूरवी रीन पर चालणी काँई कुरीती है ? अजार रूपचद रँ घरँ वेटी री व्यांथ ही जणो गूळ री लंगटी रांधियो तो बियनी ? माईता री रीत मरजाद घर प्राप रँ सरूप नँ देवणी पढँ है ।

—वरमगाठ

उ०—४ माची है पछे विनय कभाचँ यवों है ? व्यांन-सगाई, शोसर-मोसर, रीत-रजाना श्री ईज ती नांमा-कांमा करण नँ । म्हारी प्रापरी वंन कँवँ है कं म्हारँ ती श्री ईज छेराटना व्यांथ है

—वरसगाठ

व्याही व्याई—स. पु. (स्त्री. व्यांण, व्यायण) सगा, समधी ।

उ०—थै य्यू डरपो रँ भाई पोळिया म्हे छां म्हारी वंनड रा लेवाळ । वीरो तो प्रायो संया अयाइया, व्याई जी नँ सटक जुहार । मेलो तो मेलो व्याईजी वंन नँ, प्रायो वाई रँ पँसँ मावण री तीज । म्हांनँ तो ठीक नही भोळा व्याईजी, पूछो चारी व्यायणजी नँ वात ।

—तो गो

रू. भे.—विवाई, विवाही विवाई, विवाही, वेवाई, वेगाही, वेवाई, वेवाही, व्याई, व्यांथी, व्यांही, वियाई, वेवाई, वेवाही, व्याही ।

व्याळ—१ देखो 'विवाई' (उ. र.)

२ देखो 'व्यांण' (रू. भे.)

व्याकरण—स. पु [स] १ एक प्रकार का शास्त्र विद्वेष, जो वेदों के छ श्रणों में से एक माना जाता है । (डि को)

उ०—१ स्वामीजी कर्नँ एक ब्राह्मण प्रायनँ पूछयो साधा व्याकरण भण्या हो । स्वामीजी बोल्या—म्हे तो व्याकरण कोइ भण्या नही । जद ब्राह्मण बोत्यो—व्याकरण भण्या बिना साम्य ना भरण हुवं नडो ।

—मि. द्र

उ०—२ मड ही एत सास्त्र कहियँ, सड ही नव व्याकरण । सड ही सस्कृत पण कहियँ, सड ही पड उच्चारण ।

—सोहरिरामजी महाराज

उ०—३ कोई कहसी खलमणीजी श्रीकृष्णजी सों अनुगण हुअर सु विश देग्या कयो करि हुयो । तिकी जवाव देई छँ । रूपमणीजी व्याकरण पढ्या पुराण पढ्या । ईतना सबही माळ ऐक हीकी अधिकार पायो ।

—धेलि टी

वि० वि०—उक्त शास्त्र में, बोलचाल एवं साहित्यिक भाषा के स्वरूप, गठन, अवयवों, प्रकारों, पारस्परिक सम्बन्धों, रचनाविधान व रूप परिवर्तन पर विचार होता है ।

२ भाषा सम्बन्धी नियमों के सकलन की पुस्तक ।

३ व्याख्या, विवेचन ।

४ निर्माण, रचना ।

५ ७२ कलाओं में से एक कला ।

६ स्त्रियों की चौसठ कलाओं में से एक कला । (घ. स)

७ आठ की संख्या । * (डि. को.)

रू भे—व्याकरण, व्याकरण, व्याकरण ।

व्याकरण—स पु [स, व्याकरण] व्याकरण का ज्ञाता पंडित ।

व्याकळ—देखो 'व्याकुळ' (रू भे)

व्याकुळ, व्याकुल—वि. [स व्याकुल] १ धवराया हुआ, बेचैन, दुःखी ।

उ०—१ वरमाळा लं कठि वणावें, पलक खुली तदि त्रिया न पावें । उण दुख हूत जीव व्याकुळ अति, पडें न जक सोचें नित भूपति । —सू. प्र.

उ०—२ मनुष्य जु गरमी करि व्याकुळ हुवें छे । अर रूखा की छाह वाछे छे । सु ये वात री न्याउ छे । इसी गरमी हुई छे । जु सूरज पणि हेमाचळ की सरणी पकडें छे । अर सूरज ही बलि आया छे । —वेलि टी.

२ उदास, खिन्नचित्त ।

उ०—आप बिना गोपिन सब बज की, व्याकुळ भई निराट । मीरा के प्रभु दरसण दीज्यो, करज्यो आनद टाट । —मीरा

३ भयभीत, डरा हुआ, विह्वल ।

उ०—व्याकुळ तार्तें भई तनु देही, सिर पर जम का घेरा । मीरा के प्रभु गिरधरनागर, तापत तन बहुनेरा । —मीरा

४ क्षीभयुक्त ।

उ०—पाच पचीसी वस किये, मेरा पला न पकडें कोय । मीरा व्याकुळ विरहणी रे, कोई आन मिळावें भोय । —मीरा

५ उदास, चंचलता रहित ।

उ०—आवें सवेग आकळ्या, वदन्न नैण व्याकुळा । पवंग छाड पाधरा, असस्त रोम ऊधरा । —मा वचनिका

६ उत्कण्ठित, उत्सुक ।

स पु.—समुद्र, सागर । (ना. डि को)

रू भे.—व्याकुळ, व्याकुळी, वकळ ।

व्याकुळणी व्याकुळवो—क्रि अ.—१ धवराणा, व्याकुल होना, बेचैन होना ।

उ०—हळा-वोळ चोरग दळा वीच मूजें हरण, गजा कुळट्या कुळत हुअं घर गाह । व्याकुळत भमग रव वळत धुळी रवण, 'सूर' री चढे तिणवार 'गजसाह' । —कल्याणदास महह

२ उदास होना, खिन्नचित्त होना ।

३ भयभीत होना, डरना, ।

उ०—ब्रह्मड किना फुट्टी वळें, धमक तळातळ आतळें । मुखें हसे सकति महाबळ, वेताळा कुळ व्याकुळें । —मा वचनिका

४ उतावला होना, आतुर होना ।

५ कम्पकम्पाना, धुंजना ।

व्याकुळणहार, हारों (हारी), व्याकुळणियो—वि० ।

व्याकुळिओडो, व्याकुळियोडो, व्याकुळ्योडो—भू० का० कृ० ।

व्याकुळीजणी, व्याकुळीजवो—भाव वा० ।

व्याकुळता, व्याकुलता—स. स्त्री. [स. व्याकुलता] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव ।

२ खिन्नचित्त होने की अवस्था, उदासी ।

३ भय, डर ।

रू भे.—वेकळी, वेकळी ।

व्याकुळियोडो—भू. का. कृ —१ धवराया हुआ, व्याकुल हुआ हुआ, बेचैन हुआ हुआ २ उदाम हुआ हुआ, खिन्नचित्त हुआ हुआ ३ भयभीत हुआ हुआ डरा हुआ हुआ, विह्वल हुआ हुआ ४ उतावला हुआ हुआ, आतुर हुआ हुआ ५ कम्पकम्पाना हुआ हुआ, धुंजा हुआ हुआ । (स्त्री व्याकुळियोडो)

व्याकुळी—वि.—भयभीत, बेचैन, व्याकुल ।

उ०—सळसळी चापळी चळी सिर 'सेख' रे, बीजळी तणी वपु देण विवा । व्याकुळी गिरा आरत सुणें वचाडें, आकुळा लिड कर भाल अवा । —बालावल्स वारहठ

रू भे—वेकळी, वेकळी ।

व्याकोस—वि. [स व्याकोप] १ बढ़ाया हुआ, फुलाया हुआ ।

२ खिला हुआ, विकसित ।

३ वृद्धि को प्राप्त, वृद्धिमान ।

व्याकृति—देखो 'विकृति' (रू भे)

उ०—सूक्ष्म सरौर, व्याकृति बहीर, भीनातिभीन चित विदित चीन । पद परम पुन्य सकल्प सून्य, निरवाण नित्य अतर अनित्य ।

—ऊ का

व्याखान, व्याख्यान—स पु [स. व्याख्यान] १ व्याख्या करने की क्रिया २ भाषण, वक्तृता ।

रू भे.—व्याखान, व्याख्यान ।

व्याखानसद, व्याख्यानसद—वि. [स. व्याख्यानसद] १ व्याख्या करने वाला, टीकाकार ।

२ भाषण देने वाला, वक्ता ।

रू भे—बखानसद, व्याख्यानसद बखानसद, ।

व्याख्यानसाला व्याख्यानसाला—सं. पु. [स व्याख्यानशाला] व्याख्यान देने का स्थान ।

व्याख्या—स. स्त्री [स.] समझाने के लिए किसी बात या विषय का किया जाने वाला विस्तृत रूप से स्पष्टीकरण व उसकी टीका ।

व्याघात—स. पु. [स.] १ आघात, प्रहार, चोट ।

२ विघ्न, बाधा, अडचन, रुकावट ।

उ०—रिखिजी कहे पुत्र दो ए हुसी, पिण ये मानी एक वात रे लाला । ब्रत लेसी बालापण, जी नवि करी ध्याघात रे लाला ।

—जयवाणी

३ ज्योतिष शास्त्र के सत्ताईस योगों में से तेरहवा योग ।

वि वि —किसी शुभ कार्य करने में इस योग की ती घटि अशुभ मानी है, जिसमें कोई शुभ कार्य करना वर्जित है ।

४ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें एक ही साधन द्वारा दो विरोधी बातों के होने का वर्णन होता है ।

ध्यात्र-सं पु [स] सिंह, शेर ।

२ यातुघान नामक राक्षस का पुत्र व निरानंद नामक राक्षस का पिता एक राक्षस ।

३ भाद्रपद माह में सूर्य के साथ घूमने वाला एक यक्ष ।

वि —१ सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ ।

२ मुख्य, प्रधान ।

ध्यात्रकेतु-स पु. [स] १ पांचाल राजकुमार जो कौरव पक्ष में था एवं सात्यकि के द्वारा मारा गया था ।

२ पांचाल योद्धा जो कर्ण के द्वारा मारा गया था ।

ध्यात्रग्रीव-स पु [स.] एक प्राचीन देश । (पुराण)

ध्यात्रचरम, ध्यात्रचरम्म ध्यात्रचाम-स. स्त्री. [स ध्यात्रचर्म] शेर की खाल जिस पर सन्यासी बैठते हैं एवं शोभा या सजावट के लिए कमरों में लटकाई जाती है ।

ध्यात्रवत्त-सं पु [स] १ पांडवपक्षीय एक राजा जो श्रेष्ठ रथियों में से एक था ।

२ मगध राजकुमार जो कौरव पक्ष की ओर से लड़ते हुए सात्यकि के द्वारा मारा गया था ।

३ अश्वथामा द्वारा मारा गया एक पांडव पक्षीय राजा ।

४ द्रोण के द्वारा मारा गया एक पांडवपक्षीय पांचाल का योद्धा ।

ध्यात्रनख—देखो 'वाघनख' (रू. भे.)

ध्यात्रनखी—देखो 'वाघनखी' (रू. भे.)

ध्यात्रनाखून—देखो 'वाघनख'

ध्यात्रनाइक, ध्यात्रनायक-स. पु [स ध्यात्रनायक] गीदड़, शृंगल ।

ध्यात्रपद, ध्यात्रपाद-स पु. [स] वसिष्ठ ऋषि का पुत्र एवं उपमन्यु के पिता एक प्राचीन ऋषि ।

ध्यात्रमुख-स पु [स] १ एक देश का नाम ।

२ एक पर्वत का नाम ।

ध्यात्रहन-स. पु [स.] उर्व्वष्टी नामक एक राक्षस का पुत्र एवं शरभ का पिता, एक राक्षस ।

ध्यात्राक्ष-स पु [स.] १ स्वामी कार्तिकेय का एक अनुचर ।

२ एक राक्षस का नाम । (पुराण)

ध्यात्री-स. स्त्री. [स] वसिष्ठ की पत्नी का नाम ।

ध्याडि—देखो 'व्याडि' (रू. भे.)

ध्याज-स पु [स.] १ कपट, छल, धोखा । (अ. मा., ह ना. मा.)

२ बाधा, विघ्न, अडचन ।

३ विलम्ब, देरी ।

४ वहाना, मिस ।

उ०—गणदेव रं क्षुरासाण खेत री अति वेग वाजी सुणियो जिसदो ही तुरग सज्ज कराइ कुमार एकल ही असवार आखेट री व्याज करि बवादवा सू ईसान दिसा री अटवी में वूदी तीं पाच कोस परं लग जाइ सिकार रा रमणा में पाच ही दिन बिताइ एक भइद दोइ थाराह गाढां घलाइ चाह करि सायकाळ रं समय वूंदी आयी ।

—व. भा.

५ ऋण की राशि पर लिया जाने वाला अतिरिक्त धन, सूद ।

उ०—१ पिण साहूकार दीवाल्यो री खबर ती माग्या पडे । साहूकार तो व्याज सहित देवं अने दिवाल्यो मूल ही में तोटी घालं । ज्यू भगवते सूत्र भास्या तिम प्रमाणे चाले ते साधू अने पाचमी आरा नीं नाम लेइ सूत्र प्रमाणे न चाले ते असोध ।

—मि. द्र.

उ०—२ नाकी राखण जीव कसें घणा रे, काढे करडे रुपये ध्याज रे । घोसर-भोसर ढोल बजाय दे रे, चतुर सुघारें सगला काज रे ।

—जयवाणी

६ व्याज पर दी जाने वाली राशि, ऋण ।

उ०—गांम चलता सुकन गिणीज, हणती विण किय ही न हणीज । विण ग्रहणें दीजें मत ध्याज, निस्वें वरंस नी राखे नाज ।

—ध व. प्र

रू. भे.—विभाज, वियाज, व्याज, विभाज, वियाज, वीयाज ।

ध्याजउक्ति—देखो 'व्याजोक्ति' (रू. भे.)

ध्याजद्विधो-सं पु—व्याज पर रुपया देने वाला व्यक्ति ।

ध्याजनिंदा-स स्त्री. [स.] १ छल, कपट या वहाने से की जाने वाली निन्दा, जो ऊपर से देखने में स्पष्ट निन्दा जान न पड़े ।

२ एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें इस प्रकार निन्दा की जाय ।

ध्याजबदो-स. पु—वह व्यवसाय जिसमें ऋण देने व व्याज वसूल करने का कार्य किया जाता है ।

ध्याजस्तुति-स स्त्री [स.] १ स्तुति के शब्दों में निन्दा व निन्दा के शब्दों में स्तुति करने की एक प्रकार की क्रिया विशेष ।

२ एक प्रकार का अर्थालंकार विशेष, जिसमें इस प्रकार से निन्दा या स्तुति की जाय ।

रु. भे.—विभाजस्तुति, वियाजस्तुति, व्याजस्तुति, व्याजस्तुति, व्याजस्तुती ।

व्याजु—सं. पु.—वह रकम जो व्याज के रद्दक्ष्य से लेन-देन की जाती है ।

रु. भे.—वियाजू, व्याजू, वाजू, वियाजू, वीयाजू, व्याजू ।

व्याजोक्ति—स. स्त्री [स.] १ कपटयुक्त बात ।

२ किसी गुप्त बात के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए किया जाने वाला बहाना ।

३ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी गुप्त बान के प्रकट हो जाने पर उसे छिपाने के लिए बहाना युक्त कथन किया जाय ।

रु. भे — व्याजोक्ती, व्याजोक्ति ।

व्याज्यु—देखो 'व्याजू' (रु. भे.)

व्याड—स. पु. [सं.] १ सर्प, साप ।

२ देवराज इन्द्र ।

३ दुष्ट हाथी ।

४ मांसभक्षी जीव ।

५ गुण्डा, दुष्ट ।

व्याडि—स. पु. [स.] एक प्रसिद्ध व्याकरणकर्ता का नाम ।

रु. भे — व्याडि ।

व्याणी—वि स्त्री.—प्रसन्न देने वाला मादा पशु ।

व्याणी—सं. स्त्री.—जन्म देने की क्रिया ।

व्याणी, व्यावी—देखो 'व्याणी, व्यावी' (रु. भे.)

उ०—१ पीडति हेमंत तिसिर रितु पहिली, दुख टाळ्यो वसत हित दाखि । व्याए वेली तणी तरवरां, साखा विसतरिया वैसाखि ।

—वेलि

उ०—२ तरै मीया नै समाचार हुवा तरै मीयां फोज रो घमसाण करनै रामदासजी ऊपर चढिया । रामदासजी नै भाखडी छे खेह दीठा खिसणी नही । साढ पिण एक व्याइ सी साढ ऊमी छीडनै जाण रो भाखडी । तरै तीडिया नै पखाळ नै सांड ऊपरै घाल लियो नै भागी खडीया ।

—रा सा. स.

उ०—३ ज्यू एक साहूकार जिहाज में बंस समुद्र पार व्यापार करवा गयी । पाछी भावता कपडे रो मजूस में एक गरभवती ऊदरी भाइ सी व्याई । साहूकार देखिनै बोल्थो इण नै समुद्र में नही न्हाखणी । जावता करै ।

—मि. द.

उ०—४ कोट मुलक लिडिया के खंड, व्याइ वसूहक फाटी ब्रह्म-मड । बडा बडा भावै वरियां, 'अबर' भावै करै सलाम ।

—गु. रु. व.

२ देखो 'विवाहणी, विवाहवी' (रु. भे.)

व्याति—स. पु.—एक तारा जो मृग के नीचे रहता है । इसको संस्कृत में लुब्धक कहते हैं ।

व्याध—स. पु [स] १ शिकार करने वाला, शिकारी ।

उ०—तळ खर्चें वाणू दुसटी पाणू, रटें नराणू रळिभाणू । अह व्याध डसाणू चूके वाणू बघ सीचाणू वळ सतू । —भगतमाळ

२ प्राचीन काल की एक शिकारी जाति, किरात, बहेलिया ।

३ दुष्ट नीच आदमी ।

४ देखो 'व्याधि' (रु. भे.) (अ. मा. , ह ना. मा.)

उ०—१ फीहै जी विधि कहू बलाणि, गुणम रोग पिण सी विधि वाण । पेट सूळ जो होइ अगाध, सून डम नै नासै व्याध ।

—ध व. ध.

उ०—२ कळू मे प्रभती व्याध प्रेत सूं उवारै केता, तेरासै तेईस जीता भूलोक ताठीड । प्रथा गुसा गीतां साख येळा में कीरती गाबै, रेणवा रुखाळी पावू अगजी राठीड ।

—वादरदान दधवाडियो

उ०—३ हही करै हित हाण, कमी तन व्याध जगावै । घघी राज भय धरै, ररी धन नास करावै ।

—र. रु.

रु. भे.—व्याध, व्याधि ।

व्याधि—स. स्त्री. [स] १ रोग, बीमारी । (व. स.)

उ०—१ लियां नाम मुख लाभ, व्याधि दुख आधि न व्यापै । कृळ सज्जण थिर करै, अरी वडपण ऊथापै ।

—र. रु.

उ०—२ व्याधि जरा रहि वेगली, अलीअ लक्षण होइ जेह । देदि जे विधि विरतरी, सबिकी पालइ तेह ।

—मा कां प्र

२ कष्ट दुख, पीडा । (डि. को.)

उ०—१ रीत आद जदुवस वराणै, जगा विधन जिगन सम जाणुं । 'जीवण' हरताथेत सजोषी, आसुर व्याधि हरण किर घोसी ।

—रा. रु.

उ०—२ आधि व्याधि बिता सहू चुरइ, वदरी कर न सकइ की चुरवरी, सुदर रूप मनोहर मूरती, हार हियइ मस्तकि सेहरउरी ।

—स. कु.

३ कुष्ठ या कोढ नामक रोग ।

४ अगडा, बखेडा. टटा ।

५ साहित्य में तंतीसवा सचारी भाव ।

७ मृत्यु की एक पुत्री का नाम ।

रु. भे.—वियाधि, व्याध व्याधि, वाही, व्याध, व्याधिय, व्याधी, मह.,—वियाधी ।

व्याधित—वि [स] रोगी, बीमार ।

व्याधिय, व्याधी—देखो 'व्याधि' (रु. भे.)

उ०—बुध व्याधिय आधि उपाधिय में, सुघ लाधिय सुन्य समाधिय में । निरभै तन रोग वियोग नहीं, सुपन मन ससय सोग नहीं ।

—ऊ. का.

व्याप—१ देखो 'व्याप्य' (रू. भे.)

उ०—ब्रह्माड व्यास, परधी प्रकास, अति व्याप एस, व्यापक विसेश । वंराट ब्रह्म, सानद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट ।

—ऊ का

२ देखो व्यापक' (रू. भे.)

व्यापक—वि [स.] १ चारो ओर फैलाया हुआ, सर्वत्र व्याप्त, सर्वत्र विद्यमान ।

उ०—१ ब्रह्माड व्यास, परधी प्रकास, अति व्याप एस व्यापक विसेश । वंराट ब्रह्म, सानद सिद्ध, घट बढन घाट, नूतन निराट ।

—ऊ का.

उ०—२ तूं जाह ताह व्यापक रहै, कठे अव्यापक नाहि । तुम्कि कु किसका डर नहीं, जनहरिया मुम्कि माहि । —अनुभववाणी

उ०—३ ज्यु घायल उर साले पीरा, त्यु त्यु व्यापक राम सरीरा । घायल की घायल सौ जानै, परगट कहि दिखलाउ छानै ।

—अनुभववाणी

उ०—४ भै निद्रा आसा इधक ना तिस व्यापक सुधा ।

—केसीदास गाडण

उ०—५ अठोत्तर पुत्री जाति अनूप, भलासुत दोइ हजार सरूप । उपना एकण पिढ अनेक, हूवा ससार व्यापक हेक ।

—रा. वभावळी

उ०—६ सुपहा दर चचळ वाळ सरू, घट व्यापक गोरखनाथ गरू । तुडताण जिसी चडवाण तर्पे, कर वेढ सिवाड में वास कर्पे ।

—पा प्र.

२ छाया हुआ ।

३ सामान्य, साधारण ।

४ ढकने या घेरने वाला ।

रू. भे.—वियाप, वियापक, व्यापक, वापक, विभापक, वियापक, बीभापक, वीयापक, व्याप ।

व्यापण—स स्त्री [स व्यापन] फैलाव, विस्तार ।

व्यापणी, व्यापणी—क्रि अ [स वि +आप्लृ] १ चारो ओर फैलना, व्यापक होना, व्याप्त होना ।

उ०—१ विकट जडी मुहरा धरया, काम भुजग डस लीन । विख व्याप्यो, उतरै नहीं, परस्यां विना प्रवीण । —अग्यात

उ०—२ देवी नीर रं रूप तूं आग ठारै, देवी तेज रं रूप तूं नीर हारै । देवी ग्यान रं रूप तूं जगत व्यापी, देवी जगत रं रूप तूं धरम थापी । —देवि.

उ०—३ निज यस दिसि दिसि व्यापए, थापए चउ विह सध । सूरब तेहज सामिय, धामिय कामिय रग । —जयसेखर सूरि

२ विद्यमान होना, उपस्थित होना ।

उ०—१ तुमही कही अरधगा हमारी, हम हू लगया कारा । कोटि ब्रह्माड मे व्यापि रह्यो है, सो निज वर है हमारा । —मीरा

उ०—२ नमो खाग हृथी नमो खप्पराळी, नमो काळिका काळ-रात्री ककाळी । नमो स्रव व्यापी नमो सुख दाता, नमो गौरी पारवती ग्यान गाता । —मा. बचनिका

३ समाना, प्रविष्ट होना ।

४ छाना, फैलना ।

५ घेरना, ढकना ।

६ उत्पन्न होना, पैदा होना ।

उ०—१ में निकल्या कदाग्रही छड ए, ए रिखीस्वरौ नो दंड ए । परसन पूछै तूं बांकडा ए, ए क्षोघ व्यापण रा टाकडा ए ।

—जयवाणी

उ०—२ जा घट विरह न व्यापही, भयै अव्यापक तन । जनहरिया घट विरह विन, जाणि अलूणी अन । —अनुभववाणी

उ०—३ लिया नाम मुख लाभ, व्याधि दूख आधि न व्यापे । कुळ सज्जण धिर करै, अरी बडपण ऊथापे । —रा. रू.

उ०—४ अहुँ आगि ता तन वसे, व्यापे विघन करोडि । जन-हरीया पद स्वात कू, जाता लेह वहोडि । —अनुभववाणी

उ०—५ नाव परताप जळ जोगणी चडका, भैरवा भूत छळ छेद नाही । नाव परताप तं विघन व्यापे नहीं, नाव परताप तिह लोक माही । —अनुभववाणी

७ होना ।

उ०—१ प्यारी पीढी पीव सग, कोऊ न व्यापे वीह ।

—कुंवरसी साखला री वारता

उ०—२ पदम पराग कदम रज पावन, पाग धरत छत्रपत्ती । प्रापत होत भोत सुख सपत्ति, व्यापत नाहि विपत्ती । —मे. म

उ०—३ जे मन राखै रामजी, अपने अग लगाइ । दाहू कुछ व्यापे नहीं, जे कोटि काळ भख जाइ । —दाहूवाणी

८ विचार उत्पन्न होना ।

उ०—हियै तहव्वर खान रे, व्यापी थो विपरीत । दाहू अकव्वर भोग्यो, नीरग साह नचोत । —रा. रू.

९ असर होना, प्रभाव पडना ।

उ०—परिचय पीवै राम रस, राता सिरजनहार । दाहू कुछ व्यापे नहीं, तं छूटै ससार । —दाहूवाणी

१० उत्पन्न होना ।

८०—राजा घणी चतुराईं सु झारि भरि रखीस्वरा रं हाथ दीनी । तरं स्त्रीगोतमजी स्त्रीपरमेस्वरजी रा नाव री कळवाणी करि दीनी । जावो राण्या नें पावज्यो, महाराज रं पुत्र होसी । तरं राजाजी घरं पधारिया । उण राति राजाजी व्रतीक ध्या तियं सुख में पीळ्या छं । आधी राति रं समं महाराज ने ब्रखा घणी व्यापी, तरं खवास कना सु जळ मगायी । तरं खवास असमभ थकें मत्री झारी हाजर कीनी । —रा. वसावळी

११ पहुचना ।

८०—पच पडवि वनतरि विमासिउ, तेरिभूं वरस केमि गभेसिउ बुद्धि नारव महारिसि आपी, मध्यदेस रहियो तुम्हि व्यापी ।

—सालिसूरि

व्यापणहार, हारो (हारो), व्यापणियो—वि० ।

व्यापियोडो, व्यापियोडो, व्यापियोडो—भू० का० कृ० ।

व्यापीजणो, व्यापीजवो—भाव वा० ।

विभापणो, विभापवो, वियापणो, वियापवो, व्यापणो, व्यापवो, वापणो, वापवो, विभापणो, विभापवो, वियापणो, वियापवो, बीभापणो, बीभापवो—रू भे ।

व्यापत—देखो 'व्याप्त' (रू. भे.)

व्यापति, व्यापती—देखो 'व्याप्ति' (रू. भे.)

८०—भावइ सकल कलापति, व्यापति मांडइ कोनि । बइठा स्व—जन सुखासनि, वासणि धन दिइ कोनि । —जयसेखर सूरि

व्यापार—स पु. [स.] १ व्यवहार, सम्बन्ध ।

८०—जाहुरा उवं नु राजा पासं ले गया, ताहरा मारगि में जावतां हटवाणिये री देणी हुती तिकी वोलियो, रजपूत, म्हारो लहणी दीर्य जाह । तोनु राजा मारिसी । ओ छार्डं नही । ताहरा वडें, व्यापारी सु व्यापार हुतो, तिके आया । भाइने कही, ठकुराळा, टकी-पईसी खरचतो अपूठी मत जोए । म्हे खरच पूरवस्यां । अर छोटे व्यापारी री करज दीयो । —वाप री सीख री वात

२ कर्म, कार्य, काम ।

३ घषा, व्यवसाय, क्रय-विक्रय का पेशा ।

४ उद्योग, उद्यम ।

५ आचरण, चारित्रिक, व्यवहार ।

६ विषय के साथ होने वाला इन्द्रियों का संयोग । (न्याय)

रू. भे —वेपार, बेपार, बोपार, व्यापार, व्योपार, व्यौपार, वापार, बेपार, बेवार, बेपार, बेवार, बोपार, बोवार, व्योपार, व्यौपार । मह.,—वेपारी, बोपारी ।

व्यापारिक—वि. [स.] व्यापार का, व्यापार से सम्बन्धित ।

व्यापारी—स. पु. [स. व्यापारिन्] १ व्यापार करने वाला, क्रय-विक्रय करने वाला, सीदागर ।

८०—५ सांभ परी गई, गुदडी परी थइ, दीवइ जोति भई । चोहटइ भीड मिटी, व्यापारी नी महिमा घटी, हाटइ ताला जडइ । आप आप रं घर आया, कूची लाया । स्त्री सोलह सिंगार सर्ज, गणिका जार नें भजें । —रा. सा. स

८०—२ ताहरा वडें व्यापारी सं व्यापार हुतो, तिके आया । भाइने कही, ठकुराळा, टकी-पईसी खरचतो अपूठी मत जोए । म्हे खरच पूरवस्यां । अर छोटे व्यापारी री करज दीयो । युं करता राजा गुनह माफ कीयो । —वाप री सीख री वात

८०—३ पाटण सहर, तठे अजपाळ साह व्यापारी रहे । वडो धनेस्वरी । तिणरं देवीदास नामो भ्रोक-भ्रोक वेटी । सो वरसा पनरह माहें हुवो, तिकी बडी सपूत । नार्म-लेखे विणज व्यापार माहें बहोत खबरदार । —पलक दरियाव री वात

८०—४ व्यापारी सहू बाणिभा, जोसी वैद्यक व्यास । मागण पणि मिळिया बहु, सहूनी पूगइ भास । —मा. का प्र.

२ वेद्य, बनिया ।

८०—१ कही महाजन भावें जिया नें पइसा लेइ रोटिया कर घालवो कर । महाजन भावें ज्याने मेर तें ब्राह्मणी नी घर बताय देवे । कंतलं एक काले च्यार व्यापारी घणा कोसा रा थाका आया । मेरा नें कही उत्तम घर बतायो जद ब्राह्मणी री घर बतायो । —भि. द्र

८०—२ तिम हिज जेठमलजी कही थं जास्यो तो श्रीर व्यापारी आण वसासा पिय साधा नें काढा इसो अन्याय म्हे करां नही । जद वावेचा कूचिया लेइ आप आप रं घर गया । —भि. द्र

३ व्यवसाय, कार्य-घन्धा या पेशा करने वाला व्यक्ति ।

रू. भे —वेपारी, बेपारी, बोपारी, व्योपारी, व्यौपारी, वापारी, बेपारी, बेपारी, बोपारी, बोपारी, व्योपारी, व्यौपारी ।

व्यापियोडो—भू. का. कृ.—१ चारों ओर फैला हुआ, व्यापक हुआ हुआ, व्याप्त हुआ हुआ । २ विद्यमान हुआ हुआ, उपस्थित हुआ हुआ । ३ समाया हुआ हुआ, प्रविष्ट हुआ हुआ । ४ छाया हुआ हुआ, फैला हुआ हुआ । ५ घेरा हुआ हुआ, ढका हुआ हुआ । ६ उत्पन्न हुआ हुआ, पैदा हुआ हुआ । ७ हुवा हुआ हुआ । ८ विचार उत्पन्न हुआ हुआ । ९ प्रसर हुआ हुआ, प्रभाव पडा हुआ हुआ । १० उत्पन्न हुआ हुआ । ११ पहुँचा हुआ हुआ ।

(स्त्री. व्यापियोडी)

व्यापी—वि. [स. व्यापिन्] १ व्याप्त या व्यापक होने वाला या हुआ हुआ ।

२ सर्वत्र फैलने वाला या फैला हुआ हुआ ।

३ आच्छादित या आच्छादने करने वाला ।

स. पु —विष्णु भगवान का नाम ।

रू. भे.—ब्रिघ्वापी, ब्रियापी, विघ्वापी, व्रियापी ।

व्याप्त-वि [स] १ फँला हुआ, पसरा हुआ. २ भरा हुआ, परिपूर्ण
३ सम्मिलित, शामिल. ४ समाया हुआ, प्रविष्ट हुआ हुआ.
५ आच्छादित ।

रू. भे —वियाप, व्यापत ।

व्याप्ति, व्याप्ती-स स्त्री [स] १ व्याप्त होने की क्रिया या भाव ।

२ आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक ।

३ नियम या सिद्धान्त जो सर्वत्र लागू होने वाला हो ।

४ फँलाव, विस्तार ।

५ परिपूर्ण होने की अवस्था, परिपूर्णता ।

रू. भे.—व्यापति, व्यापती ।

व्याप्तिग्यान-स. पु. [स. व्यतिगान] साध्य को देख कर, साध्यवान् के
या साध्यवान को देख कर साध्य के अस्तित्व के सम्बन्ध में होने
वाला ज्ञान । (न्याय)

व्याप्य-वि. [स] वह जो व्याप्त करने योग्य या व्यापनीय हो ।

रू. भे.—व्याप ।

व्यप्रत्त-सं. पु [स. व्यापृत्त] १ सचिव, मंत्री । (डि. को)

२ कामदार । (डि. को.)

४ नौका, नाव ।

वि — १ किसी कार्य में लीन या सलग्न ।

व्याप्रति-स पु [स. व्यापृति] १ कार्य, धन्धा ।

२ कार्य, फर्म ।

३ उद्योग, परिश्रम ।

४ पेशा, धन्धा ।

व्यामोह-स. पु [स. व्यामोह] १ मोह, अज्ञान ।

उ०—व्यामोहे वर वीर, घर घर सत देखि घण्ट, घायउ राह हर
आप रद, समहरि 'अचळ' सधीर । —म वचनिका

२ व्याकुलता, परेशानी ।

रू. भे.—व्यामोह ।

व्यामण-देखो 'व्याण' (रू. भे)

उ०—मेली तो मेली व्याईजी वैन नै, आयी वाई रै पलै सावण
री तीज । म्हानै तो ठीक नही भोळा व्याईजी, पूछी थारी व्यामण
जी नै वात । —लो गी

व्यायाम-स. पु [स. व्यायाम] १ शरीर, को मजबूत एवं पुष्ट बनाने
के लिए किया जाने वाला शारीरिक श्रम, कसरत ।

२ परिश्रम, महनत ।

३ थकावट ।

४ रति-क्रिया के बाद होने वाली थकावट ।

५ कोशिश, प्रयत्न, प्रयास ।

व्यायामताल, व्यायामताल, व्यायामताळा, व्यायामताला-म. स्त्री.

[स. व्यायामताल] वह स्थान जहाँ व्यायाम किया जाय ।

उ०—जिनमदिर धवलमदिर राजपुल देवपुत्र मट्टाल प्रातादनाल
तापनाल वीमघनाल रचमाल हम्तिनाल, तुरंगमाल व्यायामनाल
टकासाल आस्थानमभा श्रीगरणमभा व्यवकरणमभा..... ।

—व. ग.

व्यायामो-वि.—व्यायाम करने वाला ।

व्यायोग-स पु. [म] एक प्रकार का रूपक विधेय । (साहित्य)

व्यायोही-स स्त्री —मादा पशु जो प्रगुना हो गई हो, धवाई हुई,
जिम्ने बच्चा प्रसव किया हो ।

व्यायोही-देगी 'विवाहियोही' (रू. भे)

(स्त्री. ध्यायोही)

व्यारण-देगी 'वारण' (रू. भे.) (घ. मा.)

व्यारी, व्यारीउ-देशो 'व्ययहारी' (रू. भे) (उ. र.)

व्याळ, व्याल-स पु. [स. व्याल] १ दुष्ट व्यक्ति, निर्दयी व्यक्ति ।

(अनेका.)

२ मीत का दिन, मृत्युकाल ।

(")

३ सर्प, साँप ।

(")

उ०—१ माघव ! कीघड मरु सव्यो, घै की अग्निपु व्याल ।
फणि फाटी मद जग्निपु, आगइ जेम मडाल । —मा का. प्र.

उ०—२ तोयधी मुनिद्र पाए वचें व्याळ वैननेय, दूठ अद्र वचें
पाए जुमाण दधीव । वरुथा मथा चा चाघा चद रायातान वीकें
वीर रागा गाघा जे न लाघा मोम वीच । —दुकमीचद लिडियो

उ०—व्याळ नू जगायी सीर थिदूजा चलायी वच्य, सीपली अघायो
कं सुणायो वीर साद । घुरजटी जटा हूँ अघायो वीरनद आयो,
देव दळा ऊपरां यं आयो मेघनाद । —जोरावरमिघ

उ०—४ उरमाळ मुड नि छाल राग की, छाल केसरि जूसणं ।
धपु भस्म लेपं स्मसान राजित, व्याळ पाणि विभूषण । —ला. रा
४ हस्ती, हाथी । (अ. मा., अनेका)

उ०—१ अटवी-अथा अटवी वरणन । अनेकोदकट प्रज्ञ गहन ।
विनिध व्याळ सारदूळ । गाल ककाल । वेताल । क्षेत्रपाल ।
साकिनी । डाकिनी । योगिनी । यक्ष । राक्षस । गधरव विद्याघर ।
खेचर । भूत । प्रेत । पिशाच । क्रीडादिक कारि ।

—सभा

उ०—२ मदमसत हळवळ, हालि मंगळ, विमळ स्यामळ घटा
वट्टळ, जाणिए रद बग पत उज्जळ, व्याळ माळ विसाळ । हीस हँमर
कळळ हँकळ, दुकळ सुकळां सीर दमगळ, बीज पळकत सेल वळवळ
अन्नळें हळ भूषाळ । —महाराव हणुतसिध सेलावत री गीत
५-वैपनाम ।

उ०—नही तू काळ नही तू क्रम्म, नही तू ध्याळ नही तू
ब्रह्म । नही तू देव नही तू देत, नही तू भेव नही तू भेत ।

—ह. र

६ दुष्ट हाथी ।

७ बुरा या उपद्रवी व्यक्ति ।

८ पवन, हवा, वायु ।

उ०—दी आग्या दूसरा, भेळ कीर्ज ग्रह मगळ । उणूसमय दिस आठ,
काठ जग्न दावानळ । भेळि भाळ तण भुवण, करं मजण दोनूं
कर । परि फूर्न जळ पाणि, सकत किरि माण सरोवर । रव अगनि
व्याळ ध्वा रवण, सौर ज्वाळ इळ समिळ । सुज सती होम करता
सु वणि, मिळि घोम नभ मडळे ।

—रा. रू.

९ शिकारी या हिंसक जन्तु ।

१० भगवान् विष्णु का एक नाम ।

११ राजा, नृप ।

१२ सिंह, शेर ।

१३ बाघ, चीता ।

१४ दण्डक छन्द का एक भेद विशेष ।

रू भे.—विभ्राळ वियाळ, व्याळ, व्याल, वयाळ, विभ्राळ वियाळ,
वीभ्राळ, वीयाळ, वेयाळ ।

व्यालखल-स. पु. [स. व्यालखल] १ मोर, मयूर । (ना. मा)

२ पक्षिराज गरुड ।

३ सिंह, शेर ।

व्यालप्राही-स. पु [स व्यालप्राहिन्] सापो को पकडने वाला, सपेरा ।

व्यालप्रीव, व्यालप्रीव-स. पु [स व्यालप्रीव] एक देश का नाम ।

व्यालधीस व्यालधीस-स. पु [स व्यालधीश] १ शेषनाग ।

२ ऐरावत हाथी ।

व्यालपाल-स. पु [स. व्यालपाल] चन्दन । (ना मा.)

व्यालरेस-स पु —सर्पों का समूह ।

व्यालसूदन-स. पु [स. व्यालसूदन] १ पक्षिराज गरुड ।

२ मोर, मयूर ।

३ सिंह, शेर ।

व्यालारि-सं. पु [स व्याल+अरि] १ सर्प-शत्रु गरुड । (अ मा)

२ मोर, मयूर ।

३ सिंह, शेर ।

व्यालिक-सं पु [स] सपेरा ।

व्याली, व्याली-स. पु [स व्याली] १ शिव शकर, महादेव ।

२ मोरनी ।

३ सिंह की स्त्री, शेरनी ।

व्याळू-स पु [स. विकालिक] १ रात्रि का भोजन, सायकालीन
भोजन ।

उ०—१ अलख तू हिज आळसिया उदम, पाळग तू हिज न पाळा
पाळ । वाटण तू ही न व्याळा व्याळू, गोविद तू हिज न ग्वाळा
ग्वाळ ।

—श्रीपी आढी

उ०—२ पूनम री घट्ट चादणी रात । वं दोनूं जणा धानपुर पूगा
जितरं व्याळू वेळा व्हेगी । गाम रा गोर में छोरा कव्वडी रमता हा
अर चावटं वंठ्या लोग-वाग वाता करता हा । —अमरचूनडी
रू भे —वियाळू, वेळू, व्याळू, वियाळू, वियाळू, वेळू, वेळू,
वेळू, वेळू ।

व्याव—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

उ०—१ एम गुणसठें साठी आयी, राव सहंसमल व्याव रचायी ।
घरपति 'अजी' मोड सिर घारे, परणीजण साचोर पघारे ।

—रा. रू.

उ०—अप्र माइता व्याव की होस कीनी छे । रामेसुर ब्राह्मण नें
आग्या दीनी छे । रामेसुर अठा सुं गुजरात नें व्यायी छे । अहमदा-
वाद नगर में आयी छे । तदि कपूरचंद सेठ सुणि पायी छे । सेठ
आपका आदमी खिनार्ये रामेसुर नें बुलायी छे ।

—वगसीराम प्रोहित री घात

उ०—२ रजपूता नें उपदेस पसू चारी खाण वाळें ही सामघरम
पाळियो ती हे । राजपूता थें नरदेह ही, अन धणी री खावो दुख में
सहायता धणी सु ली व्याव सावा आदि में ईजत राखें हे अंडा
धणा कारण हे सी थें राजपूती री राह चालणी चाही नें तंहीरो
उदार चाहो तो धणी री बुरी नें आपरी न्यूनता जाणी ।

—धी स टी

उ०—४ हरसा वीर मेरा रे, राव गढा रें, करती व्याव । मेरी
मा का रे जाया, घुडला तो हसती रे देती घूमता ।

—जीणमाता री गीत

व्यावडी—देखो 'विवाह' (अल्पा., रू भे)

उ०—ओसर मोमर माय, व्यावडा आढी आवें । चारं पारं मिळा,
करवला भोज मणावें । कूतरडी रें भेळ, गिणीजे नीरी माडी ।
पण घिटाळं टळं, नरा अपजस भवाडी ।

—दसदेव

व्यावट-स पु. [स व्यावर्त्त] दोप महादोप ।

उ०—हरजीमल सेठ रागी थयी, जद रुचनाथजी सं उरजोजी सावु
मोटी श्रीलियो लेई वाचवा लागी । भोखणजी उठें अमकडिये गाम
काची पाणी लीधी, अमकडिये गाम कवाड जडनें सूता, अमकडिये
नित्य पिड लीधी, इत्यादिक अनेक दोख पांना सू वाचवा लागी ।
जद सेठजी बोल्या—जोधपुर जाओ राजा कनें पुकारी । आ ती
व्यावट है । श्री भगडो म्हा सू नही मिटे ।

—भि. द्र

व्यावण, व्यावणी—देखो 'व्यावण' (रू. भे)

व्यावणू—देखो 'व्यावणू' (रू भे)

व्यासणी, व्यासणी—१ देखो 'व्यासी, व्यासी' (रू. भे.)

उ०—पारचिया में स्वामीजी पधारया। एक वार्ड कस्ती स्वामीजी म्हाट्टे भंस व्यास जब पधारो तो लाहो लेवू। तं किम भंस व्यास एक महिना तांछ दूध दही धावर देवें पिए बिलोवें नही। तं देवी रं टांखें पधारज्यो। —भि. द्र

२ देखो 'विवाहणी, विवाहणी' (रू. भे.)

व्यावणहार. हारी (हारी), व्यावणियो—वि०।

व्यावियोही, व्यावियोही, व्यावियोही—मू० का० कू०।

व्यावीजणी, व्यावीजणी—भाव वा०, कर्म वा०।

व्यावर—स स्त्री—१ गाय भंस आदि की जिनेद्रिय या योनि।

२ प्रसव देने की क्रिया।

उ०—दूही दुपटी दाम, जोडघा सो ही जाणसी। व्यावर तखो विराम, धांफ न जांखें धीफरा। —धीफरा अहीर री वात

व्यावली—देखो 'विवाहली' (रू. भे.)

व्यावहारिक, व्यावहारिक—देखो 'व्यवहारिक' (रू. भे.)

व्यावियोही—वि. स्त्री—१ जिसका विवाह हो गया हो।

२ जिसने बच्चे को जन्म दिया हो, प्रसूता।

व्यावियोही—देखो 'विवाहियोही' (रू. भे.)

(स्त्री. व्यावियोही)

व्यासू—स. पु. [अनु.] कुत्ते के भौंकने की धावाज।

उ०—पण मोठ्यार वेटा उणरं कंणा री कीं गिनरत करे नी। वो घडी घडी वारं मायं घसळां करतो कुत्ता री गळाई भुसं। सांकडं आया पूछ हिलावें। घाठ पीर कळळ करतो वो कुत्ता री मात व्यासू व्यासू करतो रेंवें। मोठ्यार काटी वेटा उण रें भुसणा री की वारं करे नीं। —फुलवाडी

व्यास—स. पु. [स] १ वेदों का सग्रह, विभाग व सम्पादन द्वारा पुन-रचना करने वाले एक महर्षि, जो पाराशर ऋषि व धीवर कन्या सत्यवती (मत्स्यगन्धा) के संसर्ग से उत्पन्न हुए थे।

उ०—१ सावतरी सामि रा करे वालांण कितार्ई, रुखमांगद हृद्वि-रीक साध नारद सवाई। पारासुर पँहळाद सेस गगेव महिसुर, अरिजण नं अकरर व्यास रिखि वारट ईसर। —पी. प्र

उ०—२ सहज कळा जागी सर्वे, तन मन वचनां सास। जनररिया इदर कथा, वेद न जांखें व्यास। —अनुभववाणी

उ०—३ देवी वालमिक व्यास रूपं तुं क्रत, देवी रामायण पुरांणी भागवत। देवी काबा रें रूप तू पाय झूटं, देवी पाय रें रूप भाराय झूटं। —देवि

वि० वि०—इन्होंने पुराण, भागवत, महाभारत व वेदांतसूत्र आदि की रचना की थी। ये नदी के बीच टापु पर उत्पन्न होने के

कारण द्वैपायन व रग कान्ता होने के कारण कृष्ण कहलाये। इनका जन्म सत्यवती की बीमारागवत्या में वंदाग्य पूर्णिमा के दिन हुआ था। इनकी भागा सत्यवती का विवाह भीष्म पितामह के पिता महाराज शान्तनु ने हुआ था। जिनमें उसे विचित्र वीर्य व चित्रागद नामक दो पुत्र उत्पन्न हुए थे। इन दोनों पुत्रों की मृत्यु निःसन्तान होने के कारण ब्रह्म की स्थापना के लिए इन्हें सत्यवती ने नियोग की आज्ञा दी। अतः दोनों की पत्नियों प्रम्विका व प्रम्वानिका से नियोग कर क्रमशः धूम्रगर्भ व पाण्डु की जन्म दिया एवं प्रम्विका की दामो में बिदुर की जन्म दिया। इन्होंने सजय को दिव्यदृष्टि दी थी। विभिन्न मन्त्रन्तर में जन्म लेकर वेदों के विभाग, सग्रह व सम्पादन करने वाले ऋद्धाईस महर्षियों में इनका अन्तिम नाम है। सभी ऋद्धाईस महर्षियों को व्यास कहते हैं जिनके नाम निम्नलिखित हैं—

स्वयभू, मनु, उदना, बृहस्पति, गविता, मृत्यु, इन्द्र, ऋषिष्ठ, सारस्वत, त्रियामा, ऋषभ, सुनेजा, अन्तरिक्ष, मुषधु, त्रय्यारणि, धनञ्जय, कृतञ्जय, ऋतञ्जय, भरद्वाज, गौतम, ह्यारिमन, वाचश्रवा, वृणविन्दु, ऋष, पात्ति, परादार, जासूर्यर्षी और कृष्णद्वैपायन।

२ ब्राह्मण जो कथावाचक व ज्योतिषी होने हैं।

उ०—१ विये 'गजन' फिर वृक्षिया, 'अजन' घटा समराव। प्रोहित व्यासां वारठां, पूछे रीत प्रभाव। —रा. क

उ०—२ व्यापारी महू वागिपा, जोती वंदक व्यास। मांगप पण मितिया यहू, सहनी पूगइ पास। —मा. कां प्र.

१ गोल वृत्त में स एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी निकल जाने वाली रेखा। (रेखा गणित)

४ फैलाव, विस्तार।

रू. भे.—वियाम, वीयास, व्यास, विषास, वियास, व्यासि, व्यासी।

व्यासगीता—स. स्त्री. [सं] एक उपनिषद का नाम।

व्यासगुफा—स. स्त्री [स] बद्रिकाश्रम के पास की एक गुफा जहाँ व्यासजी द्वारा पुराणों की रचना की गई थी।

व्यासगीर्य—स. पु. [स व्यासतीर्थ] एक प्रसिद्ध तीर्थ। (पुराण)

व्यासपूजना, व्यासपूरणिमा—स. स्त्री. [स व्यासपूर्णिमा] माघाठ की पूर्णिमा जिसे गुफ पूर्णिमा भी कहते हैं।

व्यासवन—स. पु. [स] कुशलेन में स्थित एक वन जिसमें एक पुष्य तीर्थ है।

व्यासस्थल, व्यासस्थली—स. पु. [स.] कुशलेन में एक तीर्थ, जहाँ व्यास ने अपने पुत्र वियोग से सतत हो शरीर त्याग देने का निश्चय किया था।

व्याससूत्र, व्याससूत्र—स. पु. [स. व्याससूत्र] वेदासूत्र।

व्यासि, व्यासी—देखो 'व्यास' (रू. भे.)

व्याह—देखो 'विवाह' (रू. भे.)

३०—१ नव नव खेल वसत नित तिर आयी मधुमास । परणा-
वण 'जैमाह' नूँ, आगम व्याह प्रकास । —रा रू

३०—च्यार चक चमरी वेव छुछम पढे, अरघ अर उरघ के वीच
फेरा । दास हरिराम कहै व्याह अंसा रच्या, आय नही जाय वळ
फेर घेरा । —अनुभववाणी

३०—पछे रूण साखला रे पधारिया । साखला नाळेर ले रावजी रे
साम्हा प्राया । साखला टीकायत रावत कहावती त्रिण री वेटी
रावजी नू परणाई । अर रावजी पण सरा मेहरवान हुय व्याह
क्रिया । —नैणसी

३०—४ रग विण व्याह, वेस विण रामति, सुदरि विण ग्रिह-वास
जिसी । सुरताण कहै कलियाण समोभ्रम, त्याग पखे फुळ जलम
तिसी । —त्याग प्रससा री गीत

व्याहक-वि —विवाह करने वाला, दुल्हा ।

३०—हेरान हुमा हिदू सुरक, आया लोह न आडडे । गजगाह
'भीम' 'गाभी' हुमा, व्याहक लाडी लाडडे । —गु. रू. व.

व्याहणी, व्याहवी—१ देखो 'व्याणी, व्यावी' (रू. भे.)

३०—१ इतर फकीर पाखती घोडा बधिया छे जिका रे साम्ही
खोवणी लागियो । सो पायगा नाही बधी च वरढाल नजर चढी ।
अक सुरेजी री सवारी री घोडी भंवर आग्नी बडी सी कीमत री ।
चवरढालती सूं व्याही छे सो अक तो बछेरी वरस अढाई री
हुवी । अक बछेरी महिना नी री हुई सो दोनू पाखती बधिया
खडा छे । —सूर खीवे काघळोत री बात

३०—२ ताहरा खान जाय घोडी सभाळी । घोडी रा पगा माही
सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी । ताहरा खान मन में कहण
लागियो—जे अम दोय वार व्याही छे पण गट्टी नू ती तोड
नाखसी । यूँ जाण घोडी नू कायजी देय, गट्टी सुहा बाहर
काढी । —सूर खीवे काघळोत री बात

३०—३ आ कुत्ती एक बाळद री सार्ग थी व्याभण थी सो ई
ठाव व्याही । —साह रामदत्त री वारता

२ देखो 'विवाहणी, विवाहवी' (रू. भे.)

३०—१ सोमपाल री सु कन्या, जयमाळा तसु नाम । प्रप विक्रम
सग व्याहई, नगर सोपारं गाम । —पचदडी री वारता

३०—२ सुरजन सुत वूदी सदन, सग्या दुरजणसाल । व्याहण हू
वळमद्र नू, हुवी सहायक हाल । —व. भा.

व्याहणहार, हारी (हारी), व्याहणियो—वि० ।

व्याहणीडी, व्याहियोडी, व्याह्योडी—भू० का० कृ० ।

व्याहीजणी, व्याहीजवी—कर्म वा०, भाव वा० ।

व्याहति, व्याहती—देखो 'व्याहति' (रू. भे.)

व्याहदापी—स. पु —१ विवाह के अवसर पर लिया जाने वाली एक
सरकारी कर विशेष ।

२ देखो 'दापी' ।

व्याहलो—स. पु —१ डिगल का एक (छंद) गीत विशेष ।

२ देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

३०—गुफ गोविंद के सरणं प्रायो, कुळ की लज्या पेली । क्रष्ण
क्रपा तं कर्म व्यावलो, भरणं पदमयी तेली । —रुक्मणी मगळ

व्याहार—स पु [म] १ वकृता, भाषण । २ ध्वनि, नाद, उच्चारण ।

व्याहियोडी—देखो 'व्यायोडी' (रू. भे.)

व्याहियोडी—देखो 'विवाहियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. व्याहियोडी)

व्याहिली—देखो 'विवाहली' (रू. भे.)

व्याही—देखो 'व्याई' (रू. भे.)

व्याहलो—देखो 'विवाहलो' (रू. भे.)

व्याहत्त-वि. [स व्याहत्त] बोला हुमा, भाषण दिया हुमा, उच्चरित
क्रिया हुमा ।

व्याहति, व्याहती—स स्त्री [स. व्याहति] १ भाषण, वक्तृता ।

२ वयान ।

३ भू, भुव., स्व. आदि मन्त्र जो गायत्री मन्त्र के साथ जपे जाते
हैं ।

३०—व्याहती गायत्री, व्रती, धारत नही धरम धनी, सुती श्री
स्मृति सरव धूर में घसाता । वकती मे बाद बाद, वृक्त करती
विवाद, सीतळमसाद सरव जात को जीमाता । —ऊ का.

रू. भे. —व्याहति, व्याहती ।

व्यिजण, धियजन—स. स्त्री. [स वीजन] १ हवा वायु ।

३०—गल्या पीतल रताजणी सणा पखावज धींकार करइ छइ ।
त्रत्यकी पात्र त्रत्य करइ छइ । ततवितत धन सुखिर पचवरण
वाजिन वाजइ छइ । पचवरण छत्र धारिया छइ । चामर व्यिजन
विहु पति हुइ छइ । —का. दे प्र

२ देखो 'व्यजन' (रू. भे.)

व्युत्क्रस्ट—स. पु [स व्युत्कृष्ट] व्यक्त पदाक्षर को स्पष्ट ध्वनि के साथ
उच्च से उच्चतर बोलने की क्रिया या भाव । (सगीत)

व्युत्थितास्व, व्युत्थितास्व—स. पु [स. व्युत्थितास्व] इक्ष्वाकुवंशीय एक
राजा का नाम ।

व्युत्पत्ति—स. स्त्री. [स.] १ मूल उद्गम या उत्पत्ति स्थान ।

२ शब्द का मूल रूप ।

३ किसी विज्ञान या शास्त्र का अछ्छा ज्ञान ।

व्युत्पन्न—वि. [स] निकला हुमा, निकसित ।

२ किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान ।

व्युत्पत्तिसूत्र—स पु. [स व्युत्पत्तिसूत्र] पुरुवशीय एक राजा का नाम जो राजा कक्षीवान् की पुत्री भद्रा का पति था ।

वि. वि.—इसकी पत्नी भद्रा अत्यन्त सुन्दर होने के कारण यह अति कामासक्त रहता था अतः इसकी असामयिक मृत्यु हुई । मृत्युरान्त इसके शव से भद्रा को सात पुत्र उत्पन्न हुए थे ।

व्युष्ट—स पु [स. व्युष्ट] १ पुण्याणं एव दोषा के पुत्रो मे से एक, जो पुष्करिणी का पति एव सर्वतेजस् का पिता था ।

२ विभावसु एव उषा के पुत्रो मे से एक पुत्र, वसु ।

व्यूधर—स. पु [स व्योमधर] देवराज इन्द्र । (अ. मा)

व्यूढ—(व. पु] स] १ पूर्ण, भरा हुआ, पूरा ।

२ विवाह किया हुआ, विवाहित ।

३ सेना की आकृति ।

उ०—धौर की उबेल आनी पूरी पन भेल भेल, खेलबी पसद कीनी बाहनी धनी की तँ । नाम परतापसिह प्यार की पितु तँ पायो, ब्यूढ वरदान बडा धन्वप धनीकी तँ । —ऊ. का.

व्यूढोरस, व्यूढोरु—स पु [स] घृतराष्ट्र के सौ पुत्रो मे से एक जो भीम के द्वारा मारा गया था ।

व्यूह—सं. पु. [सं व्यूह] १ समूह, कुण्ड । (अ. मा., ह. ना. मा) २ सेना, फौज ।

३ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष रूप से खड़ा करने का ढंग, सेना-विन्यास ।

उ०—१ सुत 'भ्राण्य' 'महेस', खगं पडवेस धरुच्छं । पिड बाजे पडिहार, ब्यूह चक्राकन अरुच्छं । —रा. रू.

उ०—२ डगा घीसता सांकळा सूत डोरा, धरा यूं खणै ज्यू वणै खेत धोरा । भला बूह वै बेरिया ब्यूह भेदी, बिजै मित्र जै चित्र समाम वेदी । —व. भा

४ शरीर, देह ।

उ०—बभीछन कूँ पाट दैठाए, सीता सहन भवघपुर आए । मरथ सत्रघन लछमन रामा, पूरण विरुण ब्यूह भभरामा ।

—ऊदीजी बडीग

५ तर्क-वितर्क ।

६ निर्माण, रचना ।

७ चक्र ।

८ भ्रमरकाण्ड ।

रू. भे.—व्यूह ।

व्यूहन—स पु. [स. व्यूहन] १ युद्ध के समय सेना को किसी विशेष ढंग से खड़ा करने की क्रिया ।

२ निर्माण करने की क्रिया ।

व्योत—देखो 'वैत' (रू. भे.)

व्योतणी, व्योतयो 'वैतणी, वैतयो' (रू. भे.)

व्योतणहार, हारो (हारो), व्योतणियो—वि० ।

व्योतियोडी, व्योतियोडी व्योतियोडी—भू० का० क० ।

व्योतीजणी, व्योतीजयो—व मं वा० ।

व्योताणी व्योतायो—देखो 'वैताणी, वैतायो' (रू. भे.)

व्योताणहार, हारो (हारो), व्योताणियो—वि० ।

व्योतायोडी—भू० का० क० ।

व्योताईजणी, व्योताईजयो—व मं वा० ।

व्योतायोडी—देखो 'वैनायोडी' (रू. भे.)

(स्त्री व्योनायोडी)

व्योतियोडी—देखो 'वैतियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री व्योतियोडी)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू. भे.)

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे.)

उ०—अदर भक्ति, मी मन परिलो ए, तूँ ती पहला व्योपारी सोरिलो ए । जड कल्यां राजा खेदं भरयो ए, पियु इतरी कल्यां ठाडी पडयो ए । —जयबाणी

व्योम—स पु [स व्योमन्] १ आकाश, आसमान । (दि. नां मा)

उ०—१ प्रपंच पच तत्व को तुही उपावनी, क्षमाप वहि वायु व्योम तू खपावनी । ब्रह्म को तुही रजा भुजा बलदनी, नमामि 'इदरा' 'समद' नदनी । —मे. म.

उ०—२ पत्र सुघारं जोगणो, माल सुघारं रभ थम चलेवी सोम रवि, पेखें व्योम अचम । —रा. रू.

२ जल, पानी ।

३ भोडल, अन्नक ।

४ सूर्य का मंदिर ।

५ बादल, मेघ ।

६ शून्य ।

६ विष्णु का नाम ।

७ पवन, वायु, हवा ।

८ नीला, आसमानी । * (दि. को)

१० यदुवशीय राजा दशार्ह के पुत्र जो जीमूत का पिता था ।

रू. भे.—वोम. वीम, व्योम, वयोम, वोम, वोमि, वीम ।

व्योमकेस, व्योमकेसी—सं पु [स व्योमकेस, व्योमकेसिन्] शिव, महादेव ।

उ०—उरमाल मुड नि छाल अग की खाल केसरि जूसण । वपु भ्रम लेप स्वसान राजित, व्याळ पाणि विभूषण । गण भूतेस पिसाच कीतुरु, अत तनु जटा जुटी । जय व्योमकेस महेश अचक, भीम भूतप धुरजटी । —सा. रा.

व्योमगंगा—स स्त्री. [स.] आकाशगंगा ।

उ०—भवानी नमो कच्छपी स्वान भासा, भवानी नमो ऐन ईसान
आसा । भवानी नमो श्योमगंगा वलच्छा, भवानी नमो चेतना दें
दच्छा । —मे. म.

रू. भे —वोमगंगा, व्योमगंगा, वोमगंगा ।

व्योमगमन—स स्त्री [स] आकाश मे उडने या विचरण करने की
क्रिया ।

व्योमगमनी—वि. [स] आकाश मे उडने या विचरण करने वाला ।

स. स्त्री —आकाश मे उडने या विचरण करने की विद्या ।

व्योमचर, व्योमचारी—स. पु [स व्योमचर, व्योमचारिन्] १ आकाश
मे विचरण करने वाला, देवता ।

२ सूर्य, सूरज । ३ चान्द, चन्द्रमा ।

४ आकाश में उडने वाले पक्षी । ५ गन्धर्व ।

वि.—आकाश मे विचरण करने वाला ।

व्योममडल—स पु. [सं व्योममण्डल] आकाश ।

व्योममृग—स. पु [स. व्योममृग] चन्द्रमा के दसवें घोडे का नाम ।

व्योमयान—स पु [सं व्योमयान] एक प्रकार का वह यान जिसमे बैठ
कर आकाश में उडा जा सकता है ।

व्योमवल्ली, व्योमवल्ली—सं स्त्री [स. व्योमवल्ली] अमरवेल नामक
लता विशेष ।

व्योमसरिता—स स्त्री. [स] आकाश मे बहने वाली नदी, आकाशगंगा ।

व्योमारि—स पु [स] एक विश्वदेव का नाम ।

व्योमाळ—स पु [स व्योम] आकाश । (हि ना. भा.)

व्योमसुर—स. पु. [सं] मायासुर का पुत्र एव कस का अनुगामी एक
असुर । कृष्णवध के लिए यह गोकुल गया था जहा इसका वध
कृष्ण ने किया था ।

व्योरो—स पु.—१ भेद, रहस्य ।

२ कारण ।

उ०—तिसै समिये माहे भाणोज मानघाता आइ मुजरी कीयो ।
राण्या कहे छै भाणोज एकै समिये थारे मामोजी नु तूं पूछे खुसि-
याळ करि कवळ अर पूछे माहाराजा मोहल माहे पघारी छी ताहारा
नीसासा क्यु नाखी छी, इतरी व्योरो म्हा नु ले देई । —चौवली

३ विवरण, वृत्तांत, हाल ।

४ ज्ञान, समझ, बुद्धि, विचार ।

५ व्याख्या, टीका ।

६ सक्षिप्त जानकारी, परिचय ।

७ बयान ।

रू भे —व्योरो ।

व्योहार—देखो 'व्यवहार' (रू. भे)

उ०—यू हम छाड्या जग व्योहार, सुख थोडा दुख अनत अपार ।
माता पूत पिता नही कोय, स्वारथि आय मित्या पख दोय ।

—ह पु वा.

व्योची—स स्त्री —एक प्रकार का रक्त विकार का रोग विशेष ।

(अमरत)

व्योपार—देखो 'व्यापार' (रू भे)

उ०—दमक छटा छविडड पताका देखिया, पटा हाथ व्योपार
जुहारा पेखिया । आभुखण नर नारि ईसी विघ्न बोपिया, जाणक
सुरपुर लोक, इधक छवि जोपिया । —अगसीराम प्रोहित री वात

व्योपारी—देखो 'व्यापारी' (रू. भे)

उ०—आपणी आपणी वाणी राजवसी राजावा कै रूपक
सुणाए, सूरवीर सामत ताकू अनत सुहाए । एतं कवि वीरता कै
अप्रकारी, श्रीमहाराज कै सुभचितक विद्या जस कै व्योपारी ।

—रा. रू

व्रंग—देखो 'व्रग' (रू भे)

उ०—अ ग हुवै भोपाळ वसती गढ कोट उजाडे व्र ग हुवै नर नारि
सूरवीरा पति पाडे । व्र ग हुवै राज्यद्र, राज ले वधव मारै, व्र ग
गोई गोठिया, दाव दोरु में सारै । व्र ग न कीजे भाइयो व्र ग की
की छीजे, विसन भगत 'उदी' कहै, जाणता व्र ग न कीजे ।

—ऊदीजी नैण

व्रद—स. पु [सं वृद] १ समूह, भुण्ड । (प्र. मा.)

उ०—१ आपगा वळण गोखम जळण आहीटे, विसै खटचलण
कळिया कदम व्रद । वारवाहा करी आठ मासा वळण, नह करी
वळण कू जसोमत नद ।

—वा. दा.

उ०—वणै रूप व्रदावन ओप वाधू सदा सेवत देवत व्रद साधू ।
तरा भार अड्डार नू भार तैसी, अनेका विराजे व्रला रूप अंसी ।

—रा. रू.

उ०—३ डाक चमु वजाडे ग्रीघा गळ डळा, बीजुजळा भुजावळां
भाजे खळा व्रद । अछरा अरजा करे आटीला बीवाण आवी, अग-
होमा कहे उभी आवी पुरा इद ।

—वनजी खिडियो

उ०—४ सखि फीज तुग लडग, ऊवग किर दधि अग । वणि
सुरथ पायक व्रद, जग जाण दळ जयचद ।

—रा. रू.

२ डेर, समुच्चय ।

उ०—भवानी नमो सत्य आलाप बाळा, भवानी नमो व्रद विद्या
विसाळा । भवानी नमो देव हेरभ माता, भवानी नमो तन्नमी सत
श्राता ।

—मे. म.

३ गले मे होने वाला अर्द्ध ।

४ एक प्रसिद्ध कवि का नाम ।

५ फलित ज्योतिष के अनुसार एक शुभ मुहूर्त ।

रू. भे.—ब्रं. द्विद ।

श्रद्धा-स. स्त्री. [स. वृन्दा] १ तुलसी ।

२ गोकुल के सभीपस्त घन ।

३ कृष्ण की प्रेमिका राधिका का नाम ।

४ जालधर नाम दैत्य की पत्नी श्री कालनेमि की कन्या का नाम ।

रू. भे.—त्रिदा ।

श्रद्धारक-स पु. [स. वृन्दारक] देवता । (ना. मा.)

उ०—घट धाव बजै तठ आठ घडी, पर आरण ज्यां घण रीठ पडी । यिर चूर हुवा कर सूर थके, छळ पेख श्रद्धारक ज्योम छके ।

—रा. रू.

वि.—१ मनोहर, सुन्दर । २ उत्तम, श्रेष्ठ । ३ अत्यधिक, बहुत ।

रू. भे.—श्रद्धारक, श्रद्धारक, त्रिदारक ।

श्रद्धारकतरय, श्रद्धारकतरु-स पु. [स. वृ. श्रद्धारकतरु] देव वृक्ष, कल्पवृक्ष ।

उ०—सिसु वै मिस्ती विस्ती, उदमी पीगड मह सिगारी । ज्यो श्रद्धारकतरय, प्रांमै डाल सगि पत्तेणम ।

—रा. रू.

श्रद्धारिका-स पु [स. वृ. श्रद्धारक] १ देवता । (श्र. मा.)

२ देखो 'श्रद्धारिका' (रू. भे.)

श्रद्धारिका-स. स्त्री [स. वृ. श्रद्धारिका] श्रद्धारिका ।

रू. भे.—श्रद्धारिका ।

श्रद्धावन-सं पु [स. वृन्दावन] १ वह स्थान या चवूतरा जिस पर तुलसी का पीघा उगा हुआ हो ।

२ मथुरा से ६-७ मील दूर एक प्रसिद्ध तीर्थ जो भगवान् श्रीकृष्ण का क्रीडाक्षेत्र माना जाता है । (ह. ना. मा.)

उ०—१ परणीजै मधुपुरी, 'श्रद्धा' श्रद्धावन आयी, पेखि घाम सुख परम, भडा तीरय मन भायी । परखि निगम द्रुम पुज, हेक सुख कुञ्ज निहारै, हेक पुळिण हित करै, हेक जळ जमण विहारै ।

—रा. रू.

उ०—२ वणै रूप श्रद्धावन श्रोप वाधू, सदा सेवत देवत श्रद्ध साधू । तरां भार भङ्गार नू भार तैसा, अनेका विरार्जै व्रत्ता रूप श्रद्धा ।

—रा. रू.

रू. भे.—वनरावन, बिद्रावन, बिद्रायन, श्रद्धावन, त्रिदावन, वन-रावन, विदरावन, विदावन, विनरावन, विनराधिन, वीदावन ।

श्रद्धावनपति, श्रद्धावनपति, श्रद्धावनपती-स पु [स. वृन्दावन+पति]

१ श्रीकृष्ण ।

२ ईश्वर । (ना. मा.)

श्रद्धावनराज, श्रद्धावनराय, श्रद्धावनराय-स. पु. [स. वृन्दावन+राज] श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—श्रद्धावनराज, श्रद्धावनराय, श्रद्धावनराय ।

श्रद्धावनवासि, श्रद्धावनवासी-सं पु. [स. वृ. श्रद्धावन+वासिन्] १ श्रद्धा-वन में वास करने वाले, श्रद्धावन निवासी ।

२ श्रीकृष्ण ।

३ विष्णु ।

४ ईश्वर. परमेश्वर । (ह. ना. मा.)

रू. भे.—श्रद्धावनवासी ।

श्रद्धावनेस, श्रद्धावनेसर, श्रद्धावनेसुर, श्रद्धावनेस्वर-स. पु. [स. वृ. श्रद्धा-वनेस्वर] श्रीकृष्ण ।

श्रद्धावनेसरी, श्रद्धावनेसुरी, श्रद्धावनेस्वरी-स. स्त्री. [स. वृ. श्रद्धावनेस्वरी] राधिका ।

श्रद्धावचार-देवो 'श्रद्धावचार' (रू. भे.)

उ०—भीवर छोड्यो जाळ, भूछ छोड्यो वावरियं । पापी भीरै छाणि जुलम, करता मुँह छुगियं । करद कसाई हट मुटा श्रद्धावचार तांही लीयो, बांभण गतरी वाणिया श्रद्धावचार पलमू तांही कीयो ।

—ऊदीजी नैण

श्रद्धावचारी-देवो 'श्रद्धावचारी' (रू. भे.)

उ०—कृष्ण हीरू कृष्ण तुरक, कृष्ण काजी श्रद्धावचारी । कृष्ण मुला दरवेस, जती जोगी जटघारी । कृष्ण बाळक कुंज श्रद्धा, कुंज राजा कृष्ण पगजा । सूर धीर का काम और का नही श्रद्धा ।

—श्रद्धावचारी कवियो

श्रद्धाभा-देवो 'श्रद्धाभा' (रू. भे.)

उ०—सुर नर कोडि तेतीस, दद श्रद्धाभा सकर सही । जान श्रद्धावन भीव, पांचू वीर इकायती ।

—ऊदीजी नैण

श्रद्धाभ-१ देखो 'श्रद्धा' (रू. भे.)

२ देखो 'श्रद्धा' (रू. भे.)

श्रद्धाभयान-देवो 'श्रद्धाभयान' (रू. भे.)

उ०—दयावान नर दाखजे वई नम विदवान । दीरध ई कं नाम दख गणी एक श्रद्धाभयान ।

—एका

श्रद्धाभयानी-देवो 'श्रद्धाभयानी' (रू. भे.)

श्रद्धावचारी-देवो 'श्रद्धावचारी' (रू. भे.)

श्रद्धावरूप-स पु [स. श्रद्धावरूप] १ वेद । (श्र. मा.)

२ देखो 'श्रद्धावरूप' (रू. भे.)

श्रद्धावधन-स पु [स. श्रद्धावधन+वधन] ताञ्ज ताम्बा । (श्र. मा.)

श्रद्धाभा-देवो 'श्रद्धाभा' (रू. भे.) (एका)

श्रद्धाभ, श्रद्धाभ-१ देखो 'श्रद्धा' (रू. भे.)

२ देखो 'श्रद्धा' (रू. भे.)

२०—निराकार निरवाण, जोगेश्वरा दुलभ जाग तेजोमय । रूप
विस्तु रहमाण, पकज नाभ ब्रह्म उतपद्मी । —सू प्र

२०—२ जिण ब्रह्म तर्णं मारीच जाणि, मारीच तर्णं कासिप
प्रमाणि । सुत कासिप सूरज तप असाधि, बह्वस्तु सूर सुत तेज
वाधि । —सू प्र

ब्रह्मा ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

ब्रक-स पु. [स वृक] १ भेडिया ।

२०—गोमायू जरख धक गूधुवा, मिस क सवद आवत सुणी । मुख
रयण लग्न अतस मही, आज धरू उदियामणी । —पा प्र

२ श्वान, कुत्ता । (अ. मा)

३ शू गाल, सियार, गोदड ।

४ कौआ, काक ।

५ उल्लू ।

६ उदर मे स्थित एक प्रकार की अग्नि विशेष ।

७ ढाकू, लुटेरा ।

८ सूर्यवशी राजा रूक का एक पुत्र ।

२०—सभ्रम सुदेव त्रप विजयमूर पुत्र जास रूक तप तेज पूर ।
सुत रूक हुवा धक पोह सधीर ब्रक सुतण वाहु घीरावीवीर ।

—सू प्र

९ कृष्ण एव सत्या का एक पुत्र । १९ हरति राजा का नाम ।

११ सृष्टि एव छाया का एक पुत्र । १२ रोहित राजा का नाम ।

१३ पाडव पक्षीय एक राजा जो द्रोणाचार्य के द्वारा मारा गया था ।

१४ एक राजा, जिसने जीवनभर मास-भक्षण नहीं किया ।

१५ श्रीकृष्ण एव मित्रविदा के ससर्ग से उत्पन्न एक पुत्र ।

१६ द्रोपदी के स्वयंवर में उपस्थित एक राजा, जो महाभारत युद्ध
में कौरवों की ओर से युद्ध करते हुए मारा गया था ।

१७ शिष्ट एव सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा ।

१८ भरुक राजा का पुत्र एव वाहुक राजा का पिता एक राजा ।

१९ सूर एव मारिपा का पुत्र, दुर्वाक्षी का पति एव तक्ष तथा
पुष्कर का पिता एक राजा ।

२० वृथु वैन्य एव अचिण्मती के पुत्र का नाम ।

२१ वत्सक यादव एव मिश्रकेशी नामक अप्सरा के पुत्रों में से एक

२१ शकुनि नामक राक्षस का पुत्र ।

वि० वि०—इसने शिव की आराधना कर यह वरदान प्राप्त किया
कि वह जिसके मस्तक पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जायेगा या
मर जायेगा । इस वरदान का प्रयोग इसने पार्वती को प्राप्त करने
हेतु शिव पर ही करने को उद्यत हुआ । तब शिव भाग कर विष्णु
के पास गये । विष्णु ने ब्रह्मचारिन् का रूप धारण कर इसे अपने
स्वयं के मस्तक पर ही हाथ रखने को प्रेरित करके भस्म किया ।

वि.—शूर श्रोधिला । (डि. को)

रू भे—ब्रक, ब्रकक, वीरक, वीरकक, ब्रकक, ब्रख, ब्रख, ब्रिख, ब्रिख, ब्रिख ।

ब्रककरमा—स पु. [स. वृककर्मा] एक असुर का नाम ।

ब्रकखड—सं पु [स वृकखण्ड] एक ऋषि का नाम ।

ब्रकग्राह—स पु. [स. वृकग्राह] एक ऋषि का नाम ।

ब्रकजभ—स पु [स. वृकजंभ] एक ऋषि का नाम ।

ब्रकदत्त—स. पु. [सं वृकदन्त] पुराणानुसार एक राक्षस का नाम जिसकी
सानदिनी नामक पुत्री लकापति रावण के भाई कुम्भकर्ण को व्याही
गई थी ।

२०—बाणामुग बोटियो, माघ चेतियो सदा सिवि । दळ दैत
अयदत, खळा ऊपरा हिम खिवि । —पी. ग्रं.

ब्रकदस—सं. पु [स वृकदश] कुत्ता, श्वान ।

ब्रकदीप्ति—स. स्त्री [स. वृकदीप्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

(पुराण)

ब्रकदेव—स पु [स. वृकदेव] वसुदेव के एक पुत्र का नाम । (पुराण)

ब्रकदेवा—स. स्त्री [स. वृकदेवा] वसुदेव की पत्नी और देवक की कन्या
जिसका दूसरा नाम देवकी था, कृष्ण, अर्जुनाहक, नदक आदि की
माता ।

ब्रकनिवृत्ति—स. पु. [सं वृकनिवृत्ति] श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम ।

(पुराण)

दकरथ—स. पु [सं वृकरथ] दानवीर कर्ण के एक भाई का नाम ।

दकल—स. पु [स. स. वृकल] १ शिल्पि के एक पुत्र का नाम ।

(पुराण)

२ वृक नामक राजा का नाम ।

३ अकूर के एक पुत्र का नाम ।

ब्रकासुर—स पु [स वृकासुर] कोक एव विकोक का पिता एक राक्षस ।

ब्रकास्य ब्रकास्व—स. पु [स वृकास्व] एक प्राचीन ऋषि ।

ब्रकुट अकुटक, अकुटि, अकुटी, अकुट्टी—देखो 'अकुटि' (रू. भे.)

ब्रकोदर, अकोदर—स पु. [स. वृकोदर] १ भेडिया ।

२ भीमसेन । (अ. मा)

२०—रूठ इसी दे रैस, ऊठ महाभड ऊठ अय । कूट गहै छै केस,
दूठ अकोदर देख रे । —रामनाथ कवियो

३ किसी प्रसिद्ध भीमनामक योद्धा हेतु किया जाने वाला सम्बन्धन
सूचक शब्द ।

४ ब्रह्म ।

रू. भे.—ब्रकोदर, ब्रकोदर, ब्रकोदर, ब्रकोदर, ब्रकोदर, ब्रकोदर ।

ब्रकोदरी—स. स्त्री. [स. वृकोदरी] पूतना राक्षसी की एक बहन का
नाम ।

८०—२ उर्वे पाहड उपर नूत री ब्रह्म हतो। तैरा हाथी रै जितरा फळ। सु फळ नीचा पडे। तद फळ री पाणी नीसर अर परी सोनी हवे। तद श्री उठे फळ सेधा हवे सु खार्वे अर उहा पाखा री सोनी हवे तैरी ईटा कर भेळी करे। —ठकुरै साह री वात

८०—३ तिण वनि गहण विचाळइ पथी, आविया गग सनान क्रियठ। चडस्या किम करता चीतवणी, अख एकण विसराम लियठ। —महादेव पारवती री वेलि

८०—४ तद योगी राजा नू वन माही लेय गयो। वी ठाव एक सीसम री ब्रह्म। ती पर एक मुरदी बधियो छे। जोगी कही—ई मुरदे नू पेड पर सू छोडि आणी। जोगी आप पूरव दिसा जाय मत्र साधे। —सिधासण बत्तीसी

३० देखो 'वरस' (रू भे)

८०—१ उण खग नाम खेत जुध आवर, हुय पुर रचे चद्री चद्रा—वर। सामद तट करि राज समाजा, रिधू तर्पे तेरह ब्रह्म राजा।

—सू प्र.

८०—२ धरणी पधारै धाम, सुजस खाटे जगसारै, राज क्रियो बड रीते, गिणै अख संस डग्यारै। रह्या जितै रघुराव, धरम मरजादा धारै, आप पधारत ओक, अवधपुर जीव उधारै।

—र. रू.

३१ देखो 'ब्रह्म' (अ मा., ना मा, ह न. मा)

३२ देखो विस' (रू भे.)

८०—१ पाताळ अनड (अ) अतलोक आदीपुरि, हेकाहेक मनड सह हार। ब्रह्मघारी आखियठ विसभर, दसमउ ब्रह्म राखियठ दुवार। —महादेव पारवती री वेलि

८०—२ वेणी डड जिसठ विराजइ वासठ, पिंड उदमाद धरती पाव। ब्रह्म ताइ चद तणइ विलागठ, ब्रह्म लइतउ घणाइ ब्रह्मराव। —महादेव पारवती री वेलि

रू भे —वीरख, अकख, ब्रह्म, वस, वस, त्रिवख, त्रिख, त्रिख।

ब्रह्मक—स पु [स. वृषक] १ साण्ड, वैल। २ गान्धार के राजा सुवल का पुत्र जो द्रोणदी स्वयंवर में शामिल था तथा महाभारत युद्ध में अर्जुन के द्वारा मारा गया था।

३ मोर, मयूर। (अ मा)

४ एक कलिग देशाधिपति का नाम।

रू भे —ब्रह्मक।

ब्रह्मकरमा—स पु. [स. वृषकर्मा] भगवान् श्रीविष्णु का नाम।

ब्रह्मकेतु—स पु [स. वृषकेतु] १ शिव, महादेव। २ कलिग देश का एक राजकुमार।

३ कामदेव। (अ मा.)

४ युधिष्ठिर के अश्वमेधीय यज्ञ में अश्वरक्षक अग्राज कर्ण के पुत्रों में से एक जो बभ्रुवाहन के द्वारा मारा गया था।

रू. भे —ब्रह्मकेतु।

ब्रह्मकाथ—स पु. [स. वृषकाथः] द्रोणनिर्मित गरुडब्यूह के हृदय स्थान में खडा कौरव पक्षीय यादव।

ब्रह्मचक्र, अखचकर, ब्रह्मचक्र—स पु [स. वृषचक्र] मुहूर्त्तशास्त्र का एक योग विशेष जिसकी गणना सम्बन्धित मास की सूर्य सक्रान्ति से की जाती है।

वि० वि०—गृहारम्भ के समय सूर्य सक्रान्ति से गणना करके श्रेष्ठ-नेष्ट समय का निर्णय किया जाता है। फलितार्थ है कि सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की नक्षत्र तक गिनती के प्रथम ७ नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ, ८ से १८ तक के ११ नक्षत्रों का गृहनिर्माण शुभ और १९ से २८ तक के १० नक्षत्रों का गृहनिर्माण अशुभ होता है। वास्तव में सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा की सख्या जब ८ से १८ तक ही तभी गृहनिर्माण का कार्यारम्भ शुभ एवं शेष में अशुभ होता है। (मृहूर्त्त चिन्तामणि)

रू भे —ब्रह्मचक्र, ब्रह्मचकर, ब्रह्मचक्र।

ब्रह्मण—स पु [सं वृषण] १ देवराज इन्द्र।

२ दानवीर कर्ण।

३ घोडा, अश्व।

४ भगवान् श्रीविष्णु। ५ साण्ड, वैल।

६ वृक्ष, पेड। ७ अण्डकोश। ८ वृषभराशि।

९ सहस्रार्जुन राजा का पुत्र एक राजा।

रू भे —ब्रह्मण।

ब्रह्मणकच्छ, अखणकच्छु—स पु [स. वृषणकच्छु] एक प्रकार का वह रोग जिसमें पसीने, मूँल आदि के कारण अण्डकोश के पास छोटी-छोटी फु सिया हो जाती हैं।

ब्रह्मणस्व, अखणास्व—स पु [स. वृषण+अश्व] इन्द्र के घोडे का नाम।

ब्रह्मदस—स पु [स. वृषदश] मदराचल के निकट का एक पर्वत।

ब्रह्मदरभ—स पु [स. वृषदर्भ] १ श्रीकृष्ण का एक नाम।

२ रक्षीनर देशाधिपति शिवि राजा का नाम, जिसने कयूतर की रक्षार्थ अपने शरीर का मांस दिया था।

३ श्रीविष्णु भगवान का नाम।

४ एक राजा जिसने प्रण एव गुप्त नियम बनाया था कि ब्राह्मणों को सिर्फ सोना-चाँदी, धी आदि दान में दिया जाय।

रू भे —ब्रह्मदरभ।

ब्रह्मदेवा—स पु [स. वृषदेवा] १ विष्णु भगवान्।

स स्त्री —२ वसुदेव की एक स्त्री का नाम।

रु. भे.—ब्रसदेवा ।

ब्रह्मदीप—स. पु [स वृषदीप] एक दीप का नाम ।

रु. भे.—ब्रसदीप ।

ब्रह्मधार, ब्रह्मधारिण, ब्रह्मधारी—स. पु. [स. विप+धारिन्] १ सर्प, साप ।

२ जहरीला जानवर ।

३ शिव, महादेव ।

उ०—पाताळ अनइ (अ) अतलोक आदीपुरि, हेकाहेक मनइ सह हार । ब्रह्मधारी आखियठ विसभर, दसमठ ब्रह्म राखियठ दुवार ।

—महादेव पारवती री वेलि

रु. भे.—ब्रसधार, ब्रसधारिण, ब्रसधारी ।

ब्रह्मधुज; ब्रह्मध्वज—स. पु. [स वृषध्वज] १ शिव, महादेव ।

२ वृष-इन्द्र युद्ध में वृष पक्षीय एक असुर ।

३ गणेश, विनायक ।

४ कर्ण के एक पुत्र का नाम ।

५ एक पर्वत का नाम । (पुराण)

६ प्रवीरवशीय राजा जिसने अपने स्वजनों का नाश किया था ।

७ रथध्वज के पिता एक जनकवशीय राजा ।

रु. भे.—ब्रसधुज, ब्रसध्वज ।

ब्रह्मध्वजा—स. स्त्री [स वृषध्वजा] देवी, दुर्गा ।

रु. भे.—ब्रसध्वजा ।

ब्रह्मपत, ब्रह्मपति, ब्रह्मपती—सं पु [स वृषपति] शिव, महादेव ।

रु. भे.—ब्रसपत, ब्रसपति, ब्रसपती ।

ब्रह्मपश्चा—स. पु [स वृषपश्चन्] १ आंगिरा कुलोत्पन्न एक महर्षि ।

२ वृष अनुयायी एक असुर ।

३ एक ऋषि जो गन्धमादन पर्वत के पास स्थित अपने आश्रम में रहता था यहीं पर इसने वनवास-काल में पाण्डवों को उपदेश दिया था । ४ शिव का एक नाम ।

५ कश्यप एवं दनु के पुत्रों में से एक जो असुरों का राजा था ।

वि. वि.—इसके राजपुरोहित शुक्राचार्य थे । इन्द्र-वृष युद्ध में इन्द्र ने धृष्टकेतु युद्ध में अश्विनो से इसने युद्ध किया था । इसके धर्मिष्ठा, चन्द्रा व सुन्दरी नामक तीन कन्याएँ थीं । एक बार धर्मिष्ठा के द्वारा शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का अपमान किया गया तब शुक्राचार्य ने इसका राज्य छोड़ जाने का निश्चय किया विन्तु इसने उनसे बहरी रहने की प्रार्थना की और अपनी पुत्री धर्मिष्ठा को जन्मभर के लिए देवयानी की दासी बना कर रखा ।

ब्रह्मभ—स. पु [म. वृषभ] १ साष्ट, बँल । (अ मा., टि नां मा., ह. नां मा.)

उ०—१ तू उपजइ न खपइ नहु आइस, कुळ न कहिइ कहियउ उकळीण । भीनउ नादि विनोद महाभडि, ब्रह्मभ चढई तइ वावइ वीण ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ वाघ ब्रह्मभ एकठां बहता, करइ नही मन सका काइ । भेट सकइ न कौ मरजादा, हालइ सकौ मरजादा माहि ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रथ गज ब्रह्मभ तुरग रथ, वन अनमिति सत दास । सुसा विदा किय नेम सू, पूरण प्रेम प्रकास ।

—रा. रू.

उ०—४ जँ जँ सद् उचार डाक डमरु कर वार्ज, मोर हस भ्रगराज चढी खगराज गरज्जँ । एक हस्ति आरूही ब्रह्मभ अस वस्ट्र विगती, सरभ चील सादूळ रीछ वदर तर रती ।

—रा. रू.

२ शखिनी जाति की स्त्री के लिए चार प्रकार के पुरुषों में से श्रेष्ठ पुरुष । (कामशास्त्र)

३ कुशाग्र राजा का पुत्र व पुण्यवत् राजा का पिता एक राजा ।

४ हैहयवशीय कार्तवीर्य सहस्रार्जुन राजा का एक पुत्र ।

५ एक प्राचीन तीर्थ । ६ भीम के द्वारा मारा गया कर्लिगनरेश का भाई ।

७ राम सेना का एक यूथपति बन्दर । ८ काशिराज की कन्या जयती का पति व अनमित्र राजा का पुत्र ।

९ सूर्य वीथी का एक नाम ।

१० एक प्रकार की औषधि । ११ गान्धार राजा के पुत्र का नाम ।

१२ चौबीस प्रकार के भवतारों में से एक । (अ. मा.)

१३ ज्योतिष की बारह राशियों में से दूसरी राशि ।

१४ फलित ज्योतिष में बारह प्रकार के लगनों में से दूसरा लगन ।

१५ सृष्टि व छाया का पुत्र एक राजा । १६ एक असुर जो कृष्ण के द्वारा मारा गया ।

रु. भे.—ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म, ब्रह्म ।

ब्रह्मभकेतु—स. पु [स वृषभकेतु] शिव, महादेव ।

रु. भे.—ब्रसभकेतु ।

ब्रह्मभगत, ब्रह्मभगति, ब्रह्मभगती—स. पु [स वृषभगति] शिव, महादेव ।

रु. भे.—ब्रसभगत, ब्रसभगति, ब्रसभगती ।

ब्रह्मभचकर, ब्रह्मभचक्र—देवों ब्रह्मचक्र' ।

ब्रह्मभधज, ब्रह्मभधुज, ब्रह्मभधुजी, ब्रह्मभध्वज—स. पु [स वृषभध्वज]

१ शिव, महादेव । (अ मा. कु कु बो., नां. मा.)

उ०—ऊठिया विसन अनइ ब्रह्मादिक, जिगन न होवइ राव अजाण । धुर ताइ करइ प्रणाम ब्रह्मभध्वज, कथ ब्रह्म तउ वेद पुराण ।

—महादेव पारवती री वेलि

२ यम, धर्मराज । (ना मा.)

रु. भे.—ब्रह्मवज्र, ब्रह्मभुज, विखभधुज, विखभ्रधुज, ब्रह्मभधज, ब्रह्मभध्वज, ब्रह्मभधुज, ब्रह्मभध्वज ।

ब्रह्मभरासि, ब्रह्मभरासी—सं. स्त्री [स वृषभरासि] ज्योतिष की बारह राशियों में से एक ।

ब्रह्मभवाहन, ब्रह्मभवाहन—स. पु. [स वृषभवाहन] शिव, महादेव ।
(क. कु. वी.)

ब्रह्मभाक—स. पु. [स. वृषभाक] शिव, महादेव ।
रु. भे.—ब्रह्मभाक ।

ब्रह्मभाण, ब्रह्मभाणु ब्रह्मभांन ब्रह्मभानु—देखो 'ब्रह्मभानु' (रु. भे.)
उ०—वेली तरळा तरा विलूवी, वण हरियाळी वीसवसा । अप ब्रह्मभाण तरा हर नागर, उपवन जोदण जोग इसा ।—वा दा.

ब्रह्मभानुजा—स. स्त्री. [स वृषभानुजा] कृष्ण की प्रेमिका राधिका ।
उ०—नद सुतन ब्रह्मभानुजा, जुग जुग अविचळ जोर । उर मे वसं 'अजीत' कै, जय जय जुगळकिसोर । —गजरद्वार

ब्रह्मभानुनदणी, ब्रह्मभानुनदणी, ब्रह्मभानुनदिनी—स. स्त्री. [स वृषभानुनदिनी] कृष्ण-प्रेमिका राधिका ।
रु. भे.—ब्रह्मभानुनदणी, ब्रह्मभानुनदिणी, ब्रह्मभानुनदिनी ।

ब्रह्मभानुसुता—स. स्त्री. [सं. वृषभानुसुता] कृष्ण-प्रेमिका राधिका ।
रु. भे.—ब्रह्मभानुसुता ।

ब्रह्मभा—स. स्त्री [स वृषभा] भारत की एक नदी का नाम ।
ब्रह्मभासा—स. स्त्री [स वृषभापा] इन्द्रपुरी अमरावती का एक नाम ।
ब्रह्मभेक्षण—स. पु [स वृषभेक्षण] श्रीकृष्ण का एक नाम ।
ब्रह्मराज, ब्रह्मराय, ब्रह्मराव—म. पु [स वृषराज] १ शिव, महादेव ।
२ सर्प, साँप ।
[स वृषराज] ३ कल्पवृक्ष । ४ बटवृक्ष ।
उ०—ब्रह्मराव तिसा गिरराव विराजइ, अति साखा सवळकता अग । सिसहर तरा पाखती सोहइ, ग्रह जाण लाग गयणग ।
—महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मरासि, ब्रह्मरासी—देखो 'ब्रह्मभरासि'
उ०—इसी गरमी हुई छै । जु सूथ णि हेमाचळ की सरणी पकडे छै । अर सूरज ही ब्रह्मि आया छै । और ती सव मनुस्य ती रुखे आवे ही आवे । भानु सूरज ब्रह्मरासि नहीं आयी छै । ब्रह्म कहता रुख की छाह आयी छै । —वेलि टी

ब्रह्मरूढ—स. पु [स वृषरूढ] रथ । (हि. ना मा)
ब्रह्मल—स. पु [स वृषल] १ शूद्र ।
२ घोडा, अश्व ।
३ जातिच्युत व्यक्ति ।
रु. भे.—ब्रह्मल, ब्रह्मल ।
ब्रह्मलाक्षण, ब्रह्मलाक्षण—स. पु [स वृषलाक्षण] शिव, महादेव ।

रु. भे.—ब्रह्मलाक्षण, ब्रह्मलाक्षण ।

ब्रह्मली—स. स्त्री [स वृषली] १ वह कन्या जो विवाह के पहले रज-स्वला हो गई हो ।
२ वह स्त्री जो रजस्वला हो ।
३ वाक् स्त्री ।
४ वह स्त्री जिसने मृग वच्चे को जन्म दिया हो ।
५ वह स्त्री जो अपने पति को छोड़कर पर पुरुष से प्रेम करती है ।
रु. भे.—ब्रह्मली ।

ब्रह्मलीपत, ब्रह्मलीपति, ब्रह्मलीपती—स. पु [स वृषलीपति] १ वह पुरुष जिसका विवाह ऐसी कन्या ने हुआ हो जो विवाह के पहले रजस्वला हुई हो ।
२ २ रजस्वला स्त्री का पति ।
३ मृत वच्चे को जन्म देने वाली स्त्री का पति ।
४ वाक् स्त्री का पति ।
५ दुष्चरित्रा स्त्री का पति ।
रु. भे.—ब्रह्मलीपत, ब्रह्मलीपति, ब्रह्मलीपती ।

ब्रह्मव—देखो 'ब्रह्म' (रु. भे.)
उ०—आ पुगळ री उपनी, श्री सुरत री साहा । आ पदमण श्री ब्रह्मव गण, नार इण जीगी नाह । —पर्ना

ब्रह्मवात—स. पु. [स वृषवात] वन, जंगल ।
रु. भे.—ब्रह्मवात ।

ब्रह्मवाहन, ब्रह्मवाहन—स. पु [सं वृषवाहन] १ शिव, महादेव ।
२ ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र का नाम ।
रु. भे.—ब्रह्मवाहन, ब्रह्मवाहन ।

ब्रह्मसकरात, ब्रह्मसकराति, ब्रह्मसकराती, ब्रह्मसक्रांत, ब्रह्मसक्राति, ब्रह्मसक्राती—स. स्त्री [स वृषसक्राति] वृषभ राशि में सूर्य के प्रवेश करने का दिन एव उक्त दिन मनाया जाने वाला पर्व ।
उ०—जेठ मास लागी छै । सूरिज ब्रह्मसक्राति आयी छै । सु जाणी जे छै । सूरिज ब्रह्मा ने दरखता रा भौली ताके छै । ती बीजा लोका री कौण बात । सूरजजी उत्तराध सांमा वहे छै । सु जाणीजे छै । हेमाचळ री सरणी लिश्रं छै । —वेलि टी.

ब्रह्मसानं—देखो 'ब्रह्मसेन' (रु. भे) (प्र. मा)

ब्रह्मसार—स. पु [स वृषसार] श्रेष्ठ वेल, साण्ड । (प्र. मा.)
ब्रह्मसेण, ब्रह्मसेन—स. पु [स वृषसेन] १ दानवीर कर्ण का एक पुत्र जिसकी पत्नी का नाम भद्रावती था यह अर्जुन द्वारा मारा गया था ।
२ यमसभा में उपस्थित एक राजा । ३ ब्रह्मसावर्णि के पुत्रों में से एक ।
रु. भे.—ब्रह्मसान, ब्रह्मसेण, ब्रह्मसेन, ब्रह्मसेण, ब्रह्मसेन, ब्रह्मसेण, ब्रह्मसेन ।

[स वृषसूनु] ४ बिल, साण्ड । (अ मा.)

५ इन्द्र का पुत्र । ६ कार्तवीर्य अर्जुन का एक पुत्र ।

७ अर्जुन । (अ मा, ह ना मा.)

रू भे — ब्रह्मसान, ब्रह्मसेन, ब्रह्मसेन ।

ब्रह्मस्कध—स. पु [स वृषस्कध] शिव, महादेव । (डि. को.)

रू भे — ब्रह्मस्कध ।

ब्रह्माक—स पु. [स वृषाक] शिव, महादेव ।

रू भे — ब्रह्माक ।

ब्रह्माङ्क—स पु [स वृषाङ्क] एक असुर का नाम ।

ब्रह्माणुगुण—स पु [स वृषाणु गुण] भोजन । (अ. मा)

ब्रह्मा—स. पु [स. वृषा] १ इन्द्र का एक नाम । (ना. डि को ह. ना मा.)

२ देखो 'वरसा' (रू भे.)

उ०—१ सीत धाम दुख ब्रह्मा सहाय, अनि तजि कदमूल खरिण खार्ये । दुख अनेक इम तन भक्ति दार्ढ्य, सुख आगिला जनम कजि सार्ढ्य । —सू प्र

उ०—२ सजल सलहर, सपत्र, सतप, सुरस्र ग ससीतल । प्रात, पुनिम, मधु, जेठ, ब्रह्मा, विग्रह, राका मिळ । —र ज प्र

ब्रह्माकप, ब्रह्माकप—देखो 'ब्रह्माकपि' (रू भे.) (अ मा)

ब्रह्माकपायी—स स्त्री [स वृषाकपायी] १ लक्ष्मी ।

२ गौरी ।

३ इन्द्र-पत्नी शची ।

४ अग्नि-पत्नी स्वाहा ।

५ सूर्यपत्नी ।

ब्रह्माकपि, ब्रह्माकपी—स पु [स वृषाकपि] १ सूरज, सूर्य ।

२ शिव, महादेव ।

३ रुद्र का एक नाम ।

४ देवराज इन्द्र ।

५ विष्णु भगवान ।

६ एक महर्षि जो देवताओं के यज्ञ में उपस्थित थे ।

७ अग्नि, आग ।

८ श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

९ ईश्वर, परमात्मा ।

रू भे — ब्रह्माकप, ब्रह्माका, ब्रह्माकप ।

ब्रह्माकृति; ब्रह्माकृती—स पु [स वृषाकृति] १ विष्णु । २ सूर्य, सूरज । ३ आग, अग्नि । ४ देवराज इन्द्र ।

ब्रह्मागिरि, ब्रह्मागिरि, ब्रह्मागिरी—स पु [स. वृषागिरि] एक प्राचीन महर्षि ।

ब्रह्मावरभ, ब्रह्मावरभि—स पु [स वृषावरभि] काशीनरेश अनुवदीय शिवि का पुत्र ।

ब्रह्मामित्र—प पु [स वृषामित्र] एक महर्षि जिसने पाण्डवों को वन-वास काल में उपदेश दिया था ।

ब्रह्मासन, ब्रह्मासन—स. स्त्री [स वृषा-आसन] शिव, महादेव ।

उ०—कवहू नहिं मगत और पिया, तजि संगत गौर ब्रह्मासन की ।

रघुनाथ जु राव रै दासन के चित आसन भान उपासन की ।

—र ज. प्र.

ब्रह्मासुर—स पु [स वृषासुर] भस्मासुर नामक दैत्य ।

रू भे — ब्रह्मासुर ।

ब्रह्मि, ब्रह्मी—स. पु [स वृषिन्] १ इन्द्र, देवराज ।

(अ मा, ना मा., ह ना मा)

उ०—गोत्रप्राव गिरपत गिरद, धर नग धराधर धार । गिरधारी गिरधर धरै, ब्रह्मी कोप जिण धार । —अ मा.

२ मंगल ग्रह । (अ मा)

३ वृक्ष, पेड़ ।

४ वृषभ राशि ।

उ०—इसी गरमी हुई छै । जु सूरज परि हेमाचल की सरणी पकडे छै । अर सूरज ही ब्रह्मि आया छै । और ती सब मनुष्य ती रूखें आवें ही आवें । मानूं सूरज ब्रह्म राशि नही आयी छै ब्रह्म कहता रूख की छाह आयी छै । —बेलि टी.

रू भे — ब्रह्मि ।

ब्रह्मोत्सर्ग—स. पु [स वृषोत्सर्ग] एक विशेष प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसके अनुसार किसी मृत व्यक्ति के पीछे उसकी स्मृति में किसी बछड़े को दाग कर साड़ बना दिया जाना है । (पुराण)

रू भे — ब्रह्मोत्सर्ग ।

ब्रह्मोदर—देखो 'ब्रह्मोदर' (रू. भे)

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

२ देखो 'ब्रह्म' (रू भे.)

३ देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

उ०—देवी कौमारी चामुडा विजैकारी, देवी कुवेरी भैरवी क्षेम-कारी । देवी अगस ब्रह्म हस्ती मयखै, देवी पख केकी गड धिरेट पखै । —देवि

ब्रह्मद, ब्रह्मद, ब्रह्मदि, ब्रह्मदी, ब्रह्मदी—देखो 'ब्रह्मद' (रू भे)

उ०—निरत रत सुर रिखराज अहनाण में, चख भवर ब्रह्मद फट कमळ पहिचाण मे । मिळ कीयी विधाता 'मान' 'पुरताण' मे, महा-रिण नर समद समद जोधाण मे ।

—ठाकुर सुरताणसीग री गीत

ब्रह्म—देखो 'ब्रह्म' (रू भे)

वचित्र—देखो 'वचित्र' (रू. भे.)

वच्छ—देखो 'वक्ष' (रू. भे.)

उ०—उड विहग इच्छ, विलाम वच्छ, जिह छाह जीव-सुख हूँ
सदीव । तह नहिं तमाम, घन सीत घाम, फल फूल फार, अडवग
उदार । —ऊ का

उ०—२ सुध्यावत हूँ मातहू वेंग अकलै, भएमात भौमी फळा वीण
भकलै । सिया छाह राखिया अच्छ सूधा, अनै रास कोरा लिया
वच्छ ऊधा । —सू प्र.

वच्छिक—देखो 'वस्विक' (रू. भे.)

वछ—देखो 'वस' (रू. भे.)

उ०—१ वएण वाग अतही विहद, ता मै *कुवाय । आधी-
फर अवर लगै, अछ रहै ठहराय । —गजउद्वार

उ०—२ पुळियो जस माग वहै अक पथी, पाछै वर छलडो वण
पात । ताकव येम पूछियो तरवर, अछ करवर रहियो कण बात ।
—एगनाथ भाऊ सिधोत रो गीत

वच्छिक—देखो 'वस्विक' (रू. भे.)

वज—स. पु. [स] १ मथुरा और वृंदावन के चारो ओर का प्रदेश
या भूभाग जहाँ श्रीकृष्ण ने बाल-क्रीडा की थी ।

उ०—१ कुहक वाण भडवाण भयकर, औसर इद्र जाणिए अज
ऊपर । हूँ घण रूप जगत छत्र हट्टै, पौरस गिरहर चद परट्टै ।
—सू. प्र.

उ०—२ इद्र धरा अज ऊपरै, ज्या पेलै जळ जाळ । धर हिंदू पुर
पीडवा, आया चामरआळ । —रा रू.

उ०—३ आखि पलव करसाख आगळी, उधरियो तिणि सिर
अनड । अज राखियो विगोयी वासव, वडो अवर कुण विसन बड ।
—ह. ना. मा

२ समूह, भुण्ड । (ह नां. मा)

३ व्रज-भापा ।

४ हविर्घनि एव विपणा का पुत्र, जो स्वयंभुव मनु का वंशज था ।

५ देखो 'वज्र' (रू. भे.)

उ०—कमधज भुन निमज सकज सुसुपह कज, राखै रज रिणतूर
रुडै । दम्पामा गरज वहै अज दोमज, गज पाताडक भुरज गुडै ।
—गु रू व

६ देखो 'वज्या' (रू. भे.)

रू. भे.—विरज, व्रज, व्रज्ज, व्रज्ज, व्रिज, व्रिज्ज ।

व्रजइद, व्रजइदु—देखो 'व्रजयद' (रू. भे.)

व्रजचद—स पु [स. व्रजचद्र] १ श्रीकृष्ण भगवान । (अ मा)

२ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा.)

रू. भे.—व्रजचद ।

व्रजणी, व्रजवी—क्रि अ —१ जाना, गमन करना ।

क्रि स.—२ मना करना, रोकना ।

३ टालना ।

व्रजणहार, हारी (हारी), व्रजणियो—वि० ।

व्रजिओडो, व्रजियोडो, व्रज्योडो—भू० का० कृ० ।

१ व्रजीजणो, व्रजीजयो—कर्म वा०, भाव वा० ।

व्रजदेव—स पु. [स] श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—व्रजदेव ।

व्रजदेश—स पु [स व्रजदेश] व्रजभूमि ।

रू. भे.—व्रजदेश ।

व्रजनद—स पु [स] श्रीकृष्ण ।

व्रजन—स. पु. [स व्रजन, व्रजिन] १ पाप । (ह ना. मा)

२ कष्ट, दुख, तकलीफ । (अ मा)

३ अजमीड एव कैशनी के ससर्ग से उत्पन्न तीम पुत्रो मे से एक
पुत्र का नाम ।

व्रजनाइक—देखो 'व्रजनायक' (रू. भे.)

उ०—नाथण नाग नगर व्रजनाइक, आवण महर आगणै । पावन
पुरखि नाम पुरखोत्तम, भूधर चरित भागणै । —पि प्र

व्रजनाथ—स पु [स] श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—व्रजनाथ ।

व्रजनायक—स पु [स] १ श्रीकृष्ण ।

उ०—सुतन जसोमति साम सरीर, वजावण वंस वळिभद्र वीर ।
नमो व्रजनायक कतिम नाम, प्रमेसर पार अहम प्रणाम ।
—पि प्र.

२ विष्णु । (डि को.)

रू. भे.—व्रजनाइक, व्रजनायक, व्रजनाइक ।

व्रजपत्त, व्रजपति, व्रजपती, व्रजपत्त, व्रजपत्ति, व्रजपत्ती—स पु. [स
व्रजपति] श्रीकृष्ण का एक नाम । (ना मा)

उ०—कमळ नयण कळि अणकळ, वहि न्निद लियण अतुळ वळ ।

व्रजपत्ति सति रूपमणि वर, घन हरि नरहर गिरधर । —पि प्र.

रू. भे.—व्रजपत्त, व्रजपति, व्रजपती ।

व्रजवाळ—स पु [स व्रजवाल] व्रज के बालक श्रीकृष्ण ।

रू. भे.—व्रजवाळ ।

व्रजवासी—स पु.—१ रामावत साधुओ का एक भेद विशेष ।

(मा. म)

२ देखो 'व्रजवासी' (रू. भे.)

व्रजभाखा, व्रजभासा—स स्त्री [स व्रजभापा] मथुरा के आसपास के
व्रज प्रदेशो में बोली जाने वाली वह भाषा जिसकी उत्पत्ति शौरसेनी
प्राकृत से हुई है । यह भाषा अत्यन्त कर्णमधुर मानी जाती है ।

उ०—अज्ञभाखा मुरधर विमळ, आदि करे उच्चार । देस देस
भाखा डवर, वरणू करि विस्तार । —सू प्र

अजभूखण, अजभूसण—स पु [स व्रजभूषण] १ श्रीकृष्ण । (अ मा)

उ०—चौर चोरि तर ऊपर चढियो, गोपगना तथा गोपाळ ।
भरज करे ऊभो जळ अतर, दे अजभूखण दीनदयाळ ।

—ह. ना मा

२ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा., ह. नां मा.)

रू. भे.—व्रजभूखण, व्रजभूसण ।

अजभूप—स. पु. [स] श्रीकृष्ण ।

उ०—दिविदु दिवान दिवस वासुर दिन, अह इगियारसि दिविसि
अनूप । कीजे वरत भजन पिणि कीर्त्त, भगतवच्छ रीभे अजभूप ।

—ह ना मा

व्रजमडळ—स पु. [स. व्रजमडल] व्रज और उसके आस-पास के प्रदेश
जो कि तीर्थ माने जाते हैं ।

उ०—विखय मुलक रासट उपवरतन, जनपद नीव्रति देस जनात ।
मडळ नको अहेडो अजमंडळ, भवतरिया हरि करण अख्यात ।

—ह. ना. मा

रू. भे —व्रजमडळ, विरजमडळ ।

व्रजमोहन—सं. पु [स] श्रीकृष्ण ।

व्रजयद—स पु [स. व्रजेंद्र] श्रीकृष्ण । (अ मा.)

रू. भे.—व्रजइद, व्रजइदु, व्रजयद, व्रजइद, व्रजइदु ।

व्रजराज, अजराय, अजराव—स. पु [स व्रजराज] १ श्रीकृष्ण का नाम ।

उ०—१ राज धनखधर रामजी, चक्रधर अजराज । सदा सुधारे
सत के, केई विकटे काज । —गजवद्वार

उ०—२ नरनाथ जाण राखे निजर, वाण वखाणा विसतर ।
अजराज लाज मोरी वरण, काज सिद्ध मोटा वर । —रा. रू

उ०—३ हुवो घटियो कळू अघट 'वीका' हरो, भलो सोभाग ससार
भासे । राज हिदवाण री लाज जिम रहावी, राज री लाज अजराज
राखे । —भासियो भोपत

२ वसुदेव ।

उ०—करग मसले उरज तोडे अगिया कसा, चित चले अलौकिक
करे चाळी । वेख नट तणे खडो वनवेयिया, वटपडो कुवर अजराज
वाळी । —दा. वा.

रू. भे —व्रजराज, विजराज ।

व्रजरेणू—स. स्त्री [स] व्रज भूमि की धूलि ।

उ०—कर विधान करवत ले कासी, ले अजरेणू लेटे । पग्यो न
दिल प्रभु रे पद पकज, मिसल न त्यातिक भेटे । —७ रू

व्रजलाल—स. पु. [स] श्रीकृष्ण का नाम ।

व्रजवणता, अजवनता, अजवनिता—स. स्त्री. [सं. व्रजवनिता] व्रज में
निवास करने वाली स्त्रियाँ, गोपिकाएँ ।

रू. भे —व्रजवणता व्रजवनिता ।

व्रजवल्लभ—स. पु [स] व्रज के प्रिय, श्रीकृष्ण ।

व्रजवासी—स पु [स] (स्त्री. व्रजवासण, व्रजवासणी) १ श्रीकृष्ण ।

उ०—वसीधारी अजवासी विहारी, पूरी जैरी प्रीति राधा पिमारी ।
काळी लीला खेलियो काज काळी, गाए ध्याए देव गाया गुम्राळी ।

—पि प्र.

२ व्रज में निवास करने वाला व्यक्ति ।

उ०—जद त्या कही—गहूँ भोखणजी स्वामी रा टोला री । जद
तं बोली—हे राडा । थं पेलकेई म्हारी रोटी ले गई । उरही दो
म्हारी घट । इम कहि घाट लेवा लागी । जद एक अजवासीणी
वरजे—हे कीकी ! अतीत नै दियो पाछी मत लं । जद तं बोली—
कुता नै म्हाख देवू पिण इणा कना सू ती उरहो लेसू । —भि. द्र.

३ वेणव संप्रदाय की एक शाखा ।

४ ईश्वर, परमेश्वर । (ह ना मा.)

रू. भे —व्रजवासी, व्रजवासी, व्रजवासी, व्रजवासी ।

व्रजविलास—स. पु. [स.] श्रीकृष्ण का नाम ।

व्रजविहार, अजविहारी—स पु —श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

व्रजवेकुठविहारी—स पु —श्रीकृष्ण । (अ. मा.)

व्रजस्पति अजस्पती—स पु —श्रीकृष्ण का नाम ।

व्रजाग्ना—स स्त्री —व्रज की स्त्री, गोपिका ।

व्रजाग, अजाक, अजाग, व्रजागनि, व्रजागनी, व्रजागि व्रजागि—स पु
[स वज्र+प्रग] १ अस्त्र-शस्त्र ।

उ०—वाजिन्न जेम पइ ठवइ वेस, दोमजा अस्सि ओपमा वेस ।
माणिक लियउ भोदइइ मागि, वहरिया सिरें वाहण अजागि ।

—रा ज. सी

२ देखो 'वजरग' (रू. भे)

उ०—वाहरू सीत जाण अजागि, लसकर कपि मिळिया वेध
लागि । जेचद दळावळ देखि जाण, तोले खग बोले एम ताम ।

—सू प्र.

३ देखो 'वजराक' (रू. भे)

उ०—१ घडछइ धार विदूक हुवइ घड, खाग अजाग वाव रण
सेत्र । गण आठे वाजिया विसम गति, निलवट सुर वाघियो नेत्र ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ भाग्यि भागि व्रजागि महाभद, जोध जडाग वडा छळ
जागे । मेर व्रजाद देस दस मालिय, मुगळा कळू पेसकस मागे ।

—स. पि.

उ०—३ दस दिसा एम फुरमाण क्षीध, लायका भडां सिर चाढ लीध । जुध सराजाम सन्नि सन्नि धजागि, लौहर्म सरसि भुज उरसि लागि ।
—सू. प्र

उ०—४ 'तीड' री 'सळख' कुळ चाढ तोड, दन खगां विरद अजवाळ दोड । 'वीरम' 'सळखावत' खगा वाग, जोड्या वाडि विडियो धजाग ।
—सू. प्र

उ०—५ इणि भाति रा घोडा असवार आगि धजागि माहे अडि पडे । सिर पडिमे लडे । हाथिभा रे दात चडे । हिंदू मुसळमाण । नरसमद खुरसाण । च्यारि चकू नव खड प्रिथी रा जगजैठ जोधार जमदूत राजिद्र जोगिद्र रूप करि उजेणि खेति नर हँवर धेधिंगर चौदत हूआ ।
—र. वचनिका

उ०—६ हथनाळ हवाई हूकळत, गजनाळा गोळा गडिअडंत । बळ्नी धजागि उहुँ बहंत, आरावी छूटी आवरंत । —गु. रू. व.

उ०—७ हुय हूकप कापियो हजरति, लागुभा परे नीसरी लाग । वहमड 'अमर' भूजाडड वहुती, वाढाळी जळहळी धजाग ।
—केसोदास गाडण

वृजिन-स पु [सं वृजिन] १ पाप, कुकर्म (अ. मा.)

२ कष्ट, दुःख, पीडा । (ना. मा.)

रू. भे.—वृजिन ।

वृजियोडी-भू. का. कृ.—१ गया हुआ, गमन किया हुआ । २ मना किया हुआ, रोका हुआ । ३ टाला हुआ ।

(स्त्री. वृजियोडी)

वृजेत्र-स पु [सं. वृज+इन्द्र] श्रीकृष्ण ।

वृजन-देखो 'वृजन' (रू. भे.)

वृजेश्वर-स पु [स वृज+ईश्वर] श्रीकृष्ण ।

वृज्ज-१ देखो 'वृज' (रू. भे.)

उ०—१ देवी गौर रूपा अक्षां नव्व-निद्रि, देवी सक्कळां अक्कळां सव्व सिद्धि । देवी अज्ज विमोहणी वीमवाणी, देवी तोतला शंगला कतियाणी ।
—देवि.

उ०—२ भरै माग मिदूर मारग भाळ, वहे सामळी अज्ज सेरी विचाळ । वहे लारल वार पिडार वाळ, नवा नेहू सू देह गोपी निहाल ।
—ना. द.

२ देखो 'वृज' (रू. भे.)

उ०—घडहडध धरा पड मगरधज्ज, वेगवस जेम गइणागि अज्ज । जुधि दियइ साखि ससार जास, दोनाळी चडियउ किसनदास ।
—रा. ज. सी.

वृज्जवासी-देखो 'वृजवासी' (रू. भे.)

उ०—वृत्री काहे को कस रे हेत वासी, विचे वाट माथे वहे अज्जवासी । घरे कस रे पु बळी तात घाठी, तदा ताहरी केय खत्रोट ताठी ।
—ना. द

वृज्या-स. स्त्री. [सं] वेदोक्त विधानं, रीति, मार्ग ।

उ०—अर बार बार सिराहि भोगा में आसक्त आळसी और अव-नीसा रा आसय में सूती वीररस जगायो । उठे ही सुपुत्र री बनायो बापी समेत आपरा अभिधान करि अक्रित ईश्वरी री अगार ईडि अजान हू उतरि वेद री वृज्या करि वगेम्बरी री अरचन कियो ।
—व. भा.

रू. भे.—वरज्या, व्रज ।

वृज-सं पु [स] १ जन्म, धाव ।

उ०—कठमाला गडु गुबड सबला, धण कुरम रोग टलड सगला । पीडा न करइ कुण गलि फोडक, नित नांम जपड श्रीनाकठड ।
—म. कु.

उ०—२ पगहाण पडे नस माथ पखे, लग चाव सुरा रव दाव लखे । अंग एक धके तडके असुरा, सिर चीर नरा अण सेल सरा ।
—रा. रू.

२ फोडा-फुन्सी, बालतोड ।

३ चेचक का दाग ।

४ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—१ वपा अण चोळ वणे तिणवार, जोधापति हूत सभेम जुहार । सके रवि सेस महेस सराह, अखे अण वार 'अभेमल' वाह ।
—सू. प्र.

उ०—२ सिन्नान घात मधि सधियास, उचरत मत्र गायत्रि अभ्यास । आलम चत्र अर चत्र णधर उदार, कृत करत दान खोडस प्रकार ।
—सू. प्र.

५ देखो 'वरण' (रू. भे.)

उ०—कसि आवध हल्ले, कमध धालू अण अगो । मुख सुरज वारह मडे, भीह मूछ मिडगो ।
—सू. प्र

रू. भे.—वण, व्रण, व्रन, व्रन्न. वण, व्रन ।

वृणसोय, वृणसोस-स. स्त्री. [सं वृणसोय] फोडे, धाव आदि पर होने वाली सूजन । (अमरत)

वृतत, वृतति, वृतती, वृततु, वृततू—देखो 'वृतात' (रू. भे.)

उ०—१ मयी आप सुर भूप को, आतम कदन अनत । अपछर 'आणुद' रे धके, वरण्यो सव अतत ।
—पा. प्र

उ०—२ सइ मुखि डोलइ पूछिया, मारू तणा अतति । डोलठ नइ भाक, विन्हुइ वेसारी एकति ।
—डो. भा.

उ०—३ निसुणीउ वयणु गभेलठ बोलइ, कोइ न तिहुयणि जी तुफ तोलइ । निसुणउ हिव इह कन्न अततू, एह रहडं होइ सतणु कतू ।
—सालिभद्र भूरि

वृत-स पु [स] संकल्प, प्रतिज्ञा ।

उ०—१ एती एक न आदरी, जेती अक्खी साह । कमधज्जा नव कोट रा, श्रोट लियो व्रत चाह ।
—रा. रू.

८०—२ जगनाथ का हेमराज राज काज पूरा, 'अजमाल' के अत काज सूर्य तं सूर। अखैराज प्रोहित को हित मापे कूण, 'दलपत' का द्रोणगुर जैसे जोर दूणा। —रा. रू.

८०—३ 'जैती' 'सूर' तणी जत्राई, भुज तिएण जोड 'समेळी' भाई। 'पीथी' 'भुकन' बिन्है अत पूरा, साथे दलरामोत सनूरा। —रा. रू.

८०—४ वारगना रही धारे अत, व्रत स्यांमावत तणी उमाह। पिडि खुरसाणें बीद परखियो, बळि कुढाणें हुवा विमाह। —उदेभाण राठीड री गीत

२ नियम।

८०—१ केइक पुण्यवत प्राणिया रे, चैत कियो धरम सार। साधु स्रावक अत सप्रह्या, समकित सेंठी धार रे। —जयवाणी

८०—२ बलता गुरु बोलिया तरें ए, तू पहला ब्योगारी की परें ए। तें बाका प्रस्न वाता कही ए, पिएण जाणू छूं अत लेसी सही ए। —जयवाणी

८०—३ जोग जिग अत धरत नेम, अनत महमा गरत पेम। सिर सहत निसविन घोम सीत, मन पच इद्री दवन जीत। —अनुभववाणी

३ धर्म, कर्त्तव्य।

८०—वडें वस ऊपनी वडी रांणी भटियाणी, बोली राजा हूत जिका पूरें अत जांणी। ती पूठें वरजाग साख जैसांण सुभत्ती, पहू चोरी परणतां चढे नहू की चक्रवती। —रा. रू.

८०—२ सुज कत अत प्रमरा सुपुर्, चौग्रीडी हरि ऊचरें। छत्रपती सनेह 'चडू' छडी, सेखावत व्रत समरें। —रा. रू.

४ आराधना, भक्ति।

८०—१ बिल भौ ग्यान त्रकाळग्य दरसी, वीरचद्र राजा इण वरसी। अर्ब सिव सीस चडासी आचां, सिव रीऊसी देखि व्रत साचा। —सू प्र.

८०—चालो चालो चपावाडी, सातू मिळ सहेली हे। नखंड म्हाारी। ईसर गौरजां री व्रत करस्या, और रभसां खेलस्या सारी। —रसील राज रा गीत

५ पुण्य प्राप्ति हेतु पुण्य तिथि को नियमपूर्वक किया जाने वाला उपवास।

६ अनुष्ठान करने की पद्धति, विधि।

७ अनुष्ठान करने की क्रिया या कार्य।

८ यज्ञ, हुवन, होम।

९ देव, राष्ट्र। (अ मा)

१० फुएँ से मोट (चरस) निकालने का मोटा रस्ता।

११ अभूतरजस् देवों मे से एक।

१२ चाक्षुष मनु एव नडूबला के पुत्रों में से एक।

१३ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

१४ देखो 'व्रतांत' (रू. भे.)

८०—'अजन' करायो एक, डेरें अत जैसी। रूप सोम तारीक, भोप मुर चोम अनैसी। —रा. रू.

रू. भे.—वरत, व्रत, व्रत्त, वरत, वरत्त, विरत, व्रतु, व्रित।

व्रतउपवास—स. पु. [स.] किसी प्रतिज्ञा या कार्य सिद्धि हेतु किया जाने वाला उपवास।

व्रतघण—स. पु. [स. वृत्रघ्न] इन्द्र का नाम।

व्रतचरथा—स. स्त्री. [स व्रतचर्या] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने की क्रिया।

व्रतचारी—स. पु [स व्रतचारिन्] व्रत करने वाला।

व्रतणी, व्रतबी—देखो 'वरतणी, वरतबी' (रू. भे.)

८०—वाहि तेग समाहि आसी, हहकारी अतियो। धन्य तेरी ध्यान करमणि, सीझनी साकी कियो। —वीरहीजी

व्रतणहार, हारी (हारी), व्रतरिणी—वि०।

व्रतिशोडी, अतियोडी, अत्योडी—भू० का० कृ०।

व्रतीजणी, व्रतीजबी—कर्म वा०।

व्रतद्वयीपूतम, व्रतद्वयीपूरणिमा—स. स्त्री. [स व्रतद्वयीपूणिमा] फाल्गुन शुक्ला पूणिमा को किया जाने वाला नक्तव्रत तथा सूर्योदय पर सूर्य का एव चन्द्रोदय पर चन्द्रमा का पूजन।

वि० वि०—उक्त पूजन नक्तव्रत करने का कारण है कि उक्त दिन कश्यपऋषि के अौरस अौर अदिति के गर्भ से अर्यमा (आदित्य) एव अनसूया के गर्भ से चन्द्रमा उत्पन्न हुए थे।

व्रतधार, व्रतधारी—वि. [स व्रतधारिन्] व्रत धारण करने वाला।

८०—व्रतधारी स्रावक, हुवा ए, राजादिक बहु लोग। पुष तणें परसाद थी ए, थायें सगला थोक। —ध. व प्र

८०—२ 'सागी' 'साहिव' तणी सिधाळी, वाकमि वीद 'लवेरें' वाळी। धारण मेर 'पती' व्रतधारी, 'ई दावत' कळि लियण उधारी। —रा. रू.

८०—३ 'केहरि' तण पण लडण अकूणो, लीघां वरत 'जगपती' 'लूणो'। अ कूपा साथे अहकारी, धणी तण जतना व्रतधारी। —रा. रू.

८०—४ तरसि पधार हुमा तय्यारी, 'धीर' तणी आयी व्रतधारी। राणी जळती 'ऊदें' राखी, सुख नव कोट किया जग सासी। —रा. रू.

व्रतपारणा—स. पु [स.] व्रत की समाप्ति जो प्राय तुलसी या भगवान् को अर्पित पदार्थ से की जाती है।

व्रतभंग, व्रतभंगी—स. पु [स व्रत-भंग] १ व्रत या नियमों को भंग करने वाला व्यक्ति ।

२ काव्य रचना का एक दोष ।

उ०—व्रतभंगी हूँ अरथ स्वयं, नाहा भय रस नास । कुकवी वैसक तुल्य कर, वरणा सुकवि विमास । —वा. दा.

व्रतभिक्षा, व्रतभोख—मं पु. [स. व्रतभिक्षा य भिक्षाव्रत] यज्ञोपवीत के समय बालक द्वारा मागी जाने वाली भिक्षा ।

व्रतमाण, व्रतमान—देखो 'व्रतमाण' (रू. भे.)

उ०—माह मास व्रतमान, अरक वैठी उत्तराङ्गि । सुकल पर्य रिति सिसिर, महासुभ जोग सिरोमणि । —ल. पि.

व्रतवैरी—स. पु [सं वृत्र + वैरी] इन्द्र, सुरपति ।

व्रतसग्रह—स. पु [स] यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाने वाली दोक्षा । व्रतहा—देखो 'व्रतहा' (रू. भे.) (अ मा. ह ना मा)

व्रतात, व्रताति—स पु [स वृत्तात] १ किसी बीती हुई घटना, बात विषय या स्थिति से सम्बन्धित विवरण ।

उ०—उत्तमकुमर किहा अछै, आगलि कहि व्रताति । जीवै छै किवा मूअो, भाजि भाजि मन भ्रात । —वि. कु.

२ समाचार, खबर ।

उ०—आ बात जाणि सलखराज प्रमार बाई तरफ टङ्कि नागीर आयी अर संवघ रो व्रतात अजमेर कहायो । —व. भा

३ विषय, प्रसंग ।

४ दशा, हालत ।

रू. भे.—विरतत, विरतति, विरतात, व्रत, व्रतात, विरतत, विरतति, विरतात, व्रतत, व्रतति, व्रतंती, व्रततु, व्रतत्, व्रत, व्रत्त, व्रत्तात, व्रत्तात् ।

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रतारि' (रू. भे.)

व्रतासुर—देखो 'व्रतासुर' (रू. भे.)

उ०—सुरनाथ व्रतासुर साम्बियात, प्रगटे कि सस्त्र रव वज्रपात । सिव त्रिपुर समर प्रगटे सवेव, देवेस कि मिथ्या वासुदेव । —रा. रू.

व्रति—स श्त्री [स. वृत्ति] १ चक्कर, घुमाव ।

२ परिधि, व्यास ।

उ०—वृत्ति जुति अग्नि अष्टम विराज, रतन जडित वेदी दुति राजे । दिव्य कास्ट खट जाति अद्भुतती, अग्नर कपूर घिरत जुत आहुति । —रा. रू.

३ वृत्त या पहिये का व्यास या घेरा ।

४ चित्त, मन आदि की क्रियाएँ या व्यापार ।

५ चित्त, मन आदि की स्थितियाँ ।

उ०—व्रति आदि सस्त्र विद्या वरण, उच्छ्व वादि अघट्टिया । परकास उरध रवि पेखिया, किरि मधु मास पलट्टिया । —रा. रू. वि० वि०—ये स्थितियाँ पाँच प्रकार की होती हैं जैसे—क्षिप्त, मूढ, विकसित, एकाग्र, विरुद्ध आदि ।

५ इच्छा, चाह, अभिलाषा ।

उ०—वर्षे भक्ती लद्धा भवन नर स्पर्धा प्रति वर्षे, वसें वी जिर-यासा अगम गम आसा व्रति वर्षे । अश्यासी वेराग्य प्रनत अनुराग्य व्रति वर्षे । वर्षे वेरघा लमी तव चरन लमी प्रति वर्षे । —ऊ. का.

७ क्रिया, कर्म या विधान, जिसके करने से कुछ होता है ।

उ०—तु ही करत्ता घरत्ता भुवन त्रिय भरत्ता हित तुं ही, तुं ही नाही भरत्ता अमय भयहरत्ता नित तुं ही । तु हीं ग्याता ग्येय प्रकृति वनि ग्याता पद तु हीं । तु हीं ध्याता ध्येय व्रति मति विख्याता प्रत तु ही । —ऊ. का.

८ प्रकृति, स्वभाव, आदत ।

९ वर्तमान में होने की अवस्था स्थित अस्तित्व ।

१० हालत, दशा, परिस्थिति ।

११ परिस्थिति, स्थिति ।

उ०—सहनाथ सुर विचि सोह, व्रति अछर लेत विमोह । सब सस्त्र सजुन सूर, पयदात झुड सपूर । —रा. रू.

१२ याचना कार्य, भिक्षा वृत्ति ।

१३ गति ।

उ०—आगं सेरविलद सेन सनमुख चलायो, दळ जादव ऊपरां जाण नाळव दरसायो । कुहक बाण हयनाळ विसल वरखे तिण-वारा, व्रति सामण वहुळा जाण घण मत्तो धारा । —रा. रू.

१४ तौर, तरीका, ढग, रीति ।

उ०—तनि ओप करण कवि वरण तास, प्रति नवल जलद विद्वति प्रकास । व्रति चलति सुगति दुति अमित विद्व, पदमणिय हस किरि गुरु प्रसिद्ध । —रा. रू.

१५ आचरण, चालचलण, चरित्र ।

१६ धन्धा, पेशा ।

१७ जीविका, रोजी ।

१८ मजदूरी, पारिश्रमिक ।

१९ किसी जनसमूह, समुदाय या जाति के लोगों द्वारा किसी अन्य जाति या जनसमूह के लोगों के घर पर जीविकोपार्जन के लिए किसी भवसर पर या साधारण समय में नियमपूर्वक सेवा के रूप में किया जाने वाला कार्य ।

२० नीयत ।

२१ किसी दीन, विधवा, छात्र आदि को लगातार निश्चित समय पर सहायतार्थ दिया जाने वाला कुछ धन ।

२२ मनु नामक ऋद्ध की पत्नी ।

२३ प्रमिताभ देवों में से एक ।

२४ व्याख्या, टीका ।

२५ शब्दार्थ बतलाने वाली शब्द शक्ति ।

२६ वाक्य की रचना करने की शैली ।

वि. वि.—संस्कृत भाषा में ये शैलियाँ चार प्रकार की मानी जाती हैं जैसे —

१ कौशिकी (कौशिकी) वृत्ति—इसके द्वारा शृंगार रस का वर्णन किया जाता है ।

२ सात्वती वृत्ति—इसके द्वारा वीर रस का वर्णन किया जाता है ।

३ आरमटी वृत्ति—इसके द्वारा रौद्र व वीभत्स रसों का वर्णन किया जाता है ।

४ भारती वृत्ति—इसके द्वारा श्रवण रसों का वर्णन किया जाता है ।

२७ गीत तथा वाद्य के प्रयोग-वैचित्र्य का प्रदर्शन । (सगीत)

वि —गोलाकार, गोल ।

उ०—सिर चमर चौसर सोह, अति सूर किरण विमोह । परिवेस सुभट सप्रीत, गड भाविथी 'अगजीत' । —रा. रू.

रू. भे.—वरती, विरत, विरति, विरती, विरती, वीरत, व्रित, वरत, विरत, विरति, विरती, विरत्त, विरत्ति, विरती, वीरत, वीरति, वीरती, व्रती, व्रति, व्रती, व्रित, व्रिती, व्रित्ति, व्रिती ।

प्रतिन—स. पु. [स] वर्तमान वैवस्वत मन्वन्तर का अठारहवाँ व्यास ।

प्रतियोद्यो—देखो 'वरतियोद्यो' (रू. भे.)

(स्त्री. व्रतियोद्यो)

प्रती, अतीक—स. पु. [स. व्रतिन्] १ व्रत धारण करने वाला व्यक्ति ।

उ०—१ आदू धेर छे ग्राहण अतियो रे, मूस मजारी जेम । वलै सगपण सांकडो रे दूध रुद्र मेल जेम के । —जयवाणी

उ०—२ राजा घणी चतुराई सु आरी भरि रखीस्वरा रे हाथ दीनी । तरं स्त्रीगोतमजी स्त्रीपरमेस्वरजी रा नांव री कळवाणी करि दीनी, जावी राण्यां नै पावज्यो, महाराज रे पुत्र होसी । तरं राजाजी धरे पधारिया । उण राति राजाजी अतीक थ्या तिकी सुख में पोढ्या छे । —रा. वसावळी

२ देखो 'व्रति' (रू. भे.)

रू. भे.—वरत, वरती ।

अतु—देखो 'व्रत' (रू. भे.)

उ०—१ अतु लेउ विदुह गयठ वन माहि, कन्ह वली द्वारावती जाइ । विदुह पखि चालइ दल सांमही, विदुह पखि आवइ मड गह—गही । —सालिभद्र सूरि

उ०—२ सांमीय गणहर पासि पांचह ए हरिखिहि अतु लिइ ए । साभली बलिभद्र वात नियभन्न ए पूठए पूछइ प्रभु कन्ह ए ।

—सालिभद्र सूरि

उ०—३ सुगुरु यतोधर पासि हरिखिहि ए पांच ए अतु धरए । कणगावलि तपु एकु वीजळ ए करई रयणावली ए ।

—सालिभद्र सूरि

अतियु—स. पु. [स] राजा रौद्राश्च एव घृताची के दस पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

अतेसर, अतेसरी, अतेसुर, अतेसुरी, अतेस्वर, अतेस्वरी—स. पु. [सं. वृत्ति +ईस्वर+ई] वह व्यक्ति या जनसमुदाय जो किसी अन्य व्यक्ति या जनसमुदाय के घर विशेष अवसर पर या साधारण समय में नियमित रूप से सेवा के रूप में जीविकोपार्जन हेतु कार्य करता है । (भा. म.)

उ०—गोडा रे कुळदेवी नारायणी केळ में विराजे है । केळा गोड न खाव । केळा रा पान रा दोनां में जीमं नही । लाखण गोड भाट हुवो जिण रे वस रा लाखणोत भाट गोडा रा अतेसरी ।

—बा. दा. श्यात

रू. भे.—वरतेसरी, विरतेसर, विरतेसरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी, वरतेसर, विरतेसर, विरतेसरी, विरतेसुर, विरतेसुरी, विरतेस्वर, विरतेस्वरी ।

अत्त—स. पु. [स वृत्] १ जीविका का साधन ।

२ चरित्र, चालचलन ।

३ कश्यप एव कद्रू के पुत्रों में से एक पुत्र का नाम ।

४ वह गोल रेखा जिसका प्रत्येक बिन्दु उसके अन्दर के मध्यबिन्दु से समान अन्तर पर हो ।

५ वह छन्द जिसके प्रत्येक पद में अक्षरों की संख्या और लघु-गुरु के क्रम का नियम हो ।

६ शिष्ट एव सुच्छाया के पुत्रों में से एक पुत्र राजा ।

७ एक प्रकार का छन्द विशेष जिसमें रगण, जगण, रगण, जगण, रगण, जगण एव अत में गुरु एव लघु हो ।

वि—१ जीवित जिन्दा ।

२ घटित हुवा हुआ ।

३ मरा हुआ, मृत ।

४ टूट, मजबूत ।

५ बीता हुआ, गुजरा हुआ ।

६ देखो 'व्रत' (रू. भे.)

७ देखो 'व्रतात' (रू. भे.)

उ०—१ आय निकट बूदीस सों सब अत्त कहाया । —व. भा.

उ०—२ रहै कुमार तिहां सुख सेती, फल साधन ए राखै । जेह अत्त जिन पक्षी वाधक, तेह कदापि नवि भाखै । —वि कु.
उ०—वलतू मयणा वीनवै रे, तात । सुणी मुझ अत्त । तुमनै पिय करमै किया, होजी राजन । राज निमित्त । —स्त्रीपाळरास
रू. भे.—व्रित ।

व्रतात, व्रतात्—देखो 'व्रतात' (रू. भे.)

उ०—१ स्वजन देवाहिय धूरईं भूरइ निगहिय नेह, लेई अचेत ऊपाडिय माडिय आणीय गेहि । भूतलि भमर भोलिय डोलिय जिम न चडत, विलवइ कुमरि विलक्खिय देखिय तै व्रतात ।

—जयसेखर सूरि

उ०—२ पाणी राजोर कर पाच कोस परा जाय नीसरिया । कराई लागिया । जाय राजा सू मिळिया । रतन पांच भूहोडा साम्हे भेलिया । मगळी व्रतांत कहि सुणाइयो । राजा कही—सावास धानू, अपणा घणो री आग्या पाळी । इतरी कहि पाच करोड इनाम दीन्हा ।

—सिंघासण वत्तीसी

३०—३ सेठ उज्जेण आय राजा नू सकळ यात्रा रा व्रतात कहि त्या स्त्री-पुरस री वारता कही । रात्रा कही—मोनू लेय हाल । सेठ कही—वहुत दूर । तद राजा वीं नू गुटकी देय तत्काळ दोनू जाय पहुँचिया ।

—सिंघासण वत्तीसी

उ०—४ भाऊ दिली निगमबोध रा घाट ऊपर गय करायी । देवी री आग्या हुई—हमै भाऊ पाछी दिखण नू परी जावै, दूजै महीनै आय साह सू जग करै तो भाऊ री फतै हुवै । विरामणा श्री व्रतात्त भाऊ नू सुणायी । भाऊ न मानियो ।

—वा दा त्यात

व्रतारि, व्रतारी—देखो 'व्रतारि' (रू. भे.)

व्रतासुर—देखो 'व्रतासुर' (रू. भे.)

व्रत्ति—देखो 'व्रत्ति' (रू. भे.)

व्रत्तिकार—वि. [स वृत्तिकार] १ वृत्ति करने वाला ।

२ टीका करने वाला, टीकाकार ।

व्रत्ती—देखो 'व्रत्ति' (रू. भे.)

उ०—१ आ अत्ती किम आदरू, कु वर कोमळ आकती । पिय हर अरि पालणी, कुसळ राखणी धरती । —रा रू.

उ०—२ अत्ती तीन चीन मन मेरा, निरभय पद ली सरना । निरभय पद सुखराम निजानद, अपना आप अमरना ।

—स्त्रीसुखरामजी महाराज

व्रतनुप्रास—स. पु [स. वृत्ति+अनुप्रास] एक प्रकार का अनुप्रास विशेष जिसमें एक या अनेक व्यंजन-वर्ण भिन्न-भिन्न रूपों में बार-बार आते हैं ।

व्रत-स. पु [स. वृत्तः] १ अन्धेरा, अन्धकार ।

२ पर्वत, पहाड़ ।

३ बादल ।

४ शत्रु दुश्मन ।

५ देखो 'व्रतासुर' (रू. भे.)

रू. भे.—व्रत ।

व्रत्रघन, व्रत्रघ्न—स. पु [स वृत्रघ्न] वृत्रासुर का शत्रु इन्द्र ।

व्रत्रहा—स. पु. [स वृत्रहा] देवराज इन्द्र । (नां मा)

रू. भे—व्रतहा ।

व्रत्रारि, व्रत्रारी—स. पु [स वृत्र+अरि] वृत्रासुर का दुश्मन, इन्द्र ।

रू. भे—व्रतारी, व्रत्रारी, वरतारी, व्रतारी, वरत्रारि व्रतारि, व्रतारी व्रतारि, व्रतारी ।

व्रत्रासुर—स. पु. [स वृत्रासुर] त्वष्टा का पुत्र एक राक्षस जो देवराज इन्द्र के द्वारा मारा गया था ।

वि० वि०—इसकी माता का नाम दानु था । यह पूर्वजन्म में पाण्ड्य देश का राजा चित्रकेतु था जो सम्पूर्ण विद्याधरो का राजा था, किन्तु पार्वती के शाप के कारण असुरयोनि में जन्म लिया । एक बार इन्द्र ने विष्वक्का नामक ब्राह्मण को मार डाला अतः उसके पिता त्वष्टा ने इन्द्र से बदला लेने वाले पुत्र की प्राप्ति हेतु यज्ञ में आहुतिया दी एवं इसे उत्पन्न किया । इसके भ्रातृक से भयभीत होकर इन्द्र, गन्धर्व, किन्नर आदि भगवान् विष्णु की शरण में गये । विष्णु की राय से इन्द्र ने दधीचि ऋषि की हड्डियों (जो कि नारायण कवच मन्त्राभ्यास के कारण अत्यधिक दलवान् हो गई थी) से वज्र बनाकर उसी वज्र से इसका वध किया ।

रू. भे.—व्रतो, वित्रा, वित्रासुर, वेत्रासुर, वंत्रासुर, व्रतासुर, व्रत्रासुर, व्रत्र ।

व्रथ, व्रथा—वि. [स वृथा] १ निष्प्रयोजन, व्यर्थ, फिजूल ।

उ०—१ सुक पिक लगे सवाद, भल थोडी ही भाखणी । व्रथा करे वकवाद, भेक लवै ज्यू भरिया ।

—महाराजा बळवतसिंघ रतलाम

उ०—२ पण म्हारै श्री पण छे—सगे री नाळेर आयी पाछी न मेलु । सी माजी, म्हारी वचन गया, जमवारी व्रथा जासी । तिय सु थै राजी हुय मनै फुरमावो, ज्यू म्हारी भली हुवै, अर थाहरे सत तपस्या सु माहरो कुही न वीगडे ।

—कृंवरसी साखला री वारता

उ०—३ आळस वाळा राजवी घर रा घर में दारू पी रोटी खाय सुय रंणी घर री काम, परोपकार, बीरता, देससेवा आदि आछा काम न करणा में व्रथा यू ही वेस ऊमर गमावै है ।

—वी स डी.

उ०—४ मुंघा हालरा उगेर व्रथा पालणें हलाया माता, पोखें केण कारणें जिवाया थानें पीव । लोक लाज धारणें फिरगी हुंता आट लेता, जैर खाय वणी रै वारणें देता जीव ।

—दलजी महडू.

२ असत्य, झूठ । (श्र. मा. , ह. ना. मा.)

रू. भे.—विरथा, त्रया, विरथा, त्रिया ।

ब्रह्म—देखो 'विरुद्ध' (रू. भे.)

उ०—'अमर' आगरं अखिआत उवारी, भड जीपण अद भारी ।

पच हजारी मुगळ पाडियो, कमधज तणी कटारी । —रूधो मुहती

उ०—२ खानाण खडं खडण वळ खाधी, लाधी श्री अद आज सलाह । काबल कहै, रुधियां केहर, साथ किसी ताइ किसी सनाह ।

—राय काघळ रो गीत

उ०—३ लहै ब्रह्म-अग्या अदा मेघ लीधी, दसकध आगं हणु आणि दीधी । वदं राण नू कोण कै दात वारा, किसै वर तै थाट मारै कवारा ।

—सू प्र

ब्रह्मधारी—देखो 'विरुद्धधारी' (रू भे)

उ०—तू मोटी दातार भगतवचळ अदधारी, 'जगो' कहै कर जोड धरज हरि सुखी हमारी । काया नगर मभार पच तसकर पाधीजं, काम क्रोध मद मखर कुबुध ममता काढीजं ।

—ज खि

ब्रह्मपूर—देखो 'विरुद्धधारी'

उ०—१ जोघा भड एह पटायत जाणि, वधै जुध सूर 'उमेद' वखाणि । सभे खळ थाट खगा फट सूर, 'पती' 'महराण' तणी अदपूर ।

—सू प्र

उ०—२ कळायण वीच लडत करूर, 'पती' इद्रभाण तणी अदपूर । 'नाथी' 'अमरावत' खाग उनाग, 'जगावत' जूटत सूर ब्रजाणि ।

—सू प्र

ब्रह्मराज—देखो 'विरुद्धधारी'

उ०—रिणवट वाध जीप जुध राणा, लड ग्रह मुर सुरताण लिया । खित चित कोट जिसा खूमाणा, दूसासण अदराज दिया ।

—हरिदास केहरियो

ब्रह्मदाळ—देखो 'विरुद्धाळी' (मह, रू. भे.)

ब्रह्मदाळी—१ देखो 'विरुद्धावळी' (रू भे.)

२ देवो 'विरुद्धाळी' (रू भे)

ब्रह्मदाळी—देखो 'विरुद्धाळी' (रू भे.)

ब्रह्म—देखो 'विरुद्ध' (रू भे)

उ०—जिक वस दाता हुवा सूर जेता, तिक अह बोले सुणे भूप तेता । उभे वात रो पात दाखे अहाचो, खत्रीध्रम छाडो क धानख खाचो ।

—सू प्र

उ०—२ वणें सूरदाता उभे अह वका, लिया हूत पैली दिवी दान लका । दुवें छेह सामद्र वाधी वघारं, उतारेस पार पदम अठार ।

—सू प्र

ब्रह्म—स. पु [सं. वृद्ध] (रत्री ब्रह्मा) १ युवा एव प्रोढावस्था के बाद आने वाली मनुष्य की एक अवस्था, बुढापा ।

२ उक्त अवस्था को प्राप्त व्यक्ति, बुढा ।

उ०—तिम त्रिलोचना नै धरे, आवी ब्रह्मा नारि । में पूछचो ए कुण अछै, मुभ प्रिया तिण वारि ।

—वि कु.

वि.—१ पूर्ण रूप से वृद्धि को प्राप्त ।

२ बुद्धिमान, पण्डित ।

३ बड़ी उम्र का ।

रू. भे.—विरध, विरिध, ब्रध, ब्रध, विरध विरिध, विरिधि, ब्रध, वधु, ब्रध, त्रिद, त्रिद्ध, त्रिध ।

ब्रह्मकन्या—स. स्त्री. [स वृद्धकन्या] कुण्डिगर्गं महर्षि की बालब्रह्मचारिणी पुत्री ।

वि० वि०—नारद के उपदेश से इसने गालव ऋषि के शिष्य शृगवत ऋषि से विवाह किया एव अपन तप का आधा पुण्य उसे दिया । एक रात उसके साथ रह कर पुन घोर तपस्या में लीन हो गई । स्वर्ग लोक जाते समय अपने आश्रम को तीर्थ स्थान बना दिया ।

ब्रह्मकेसव—म पु [स. वृद्धकेसव] सूर्य की एक मूर्ति । (पुराण)

ब्रह्मक्षत्र—स पु. [स. वृद्धक्षत्र] १ सिन्धु नरेश जयद्रथ का पिता ।

२ पुरुवशीय एक राजा जो भारतीय युद्ध में पांडव पक्षीय था एवं अश्वथामा के द्वारा मारा गया था ।

ब्रह्मक्षेम—स. पु. [स. वृद्धक्षेम] १ त्रिगर्तनरेश सुशर्मा के पिता का नाम ।

२ वृष्णिवशीय राजा जो पांडव पक्ष में लड़ता हुआ बाल्हिक द्वारा मारा गया था ।

ब्रह्मगरग—स पु. [स वृद्धगर्ग] दुश्मन्हे की उत्पत्ति के बारे में अत्रि ऋषि की ज्ञान देने वाला एक आचार्य ।

ब्रह्मगारग्य—स पु. [स वृद्धगारग्य] वह महर्षि, जिमने नीलवृषभ छोडने, अमावस्या के दिन तिलमिश्रित जल से तर्पण करने व वर्षाशुद्ध में दीपदान करने के बारे में पितरो से पूछा था ।

ब्रह्मता—स स्त्री. [स. वृद्धता] १ वृद्ध होने की अवस्था, बुढापा ।

२ दुख, कष्ट । (डि को)

रू भे—विरघाई, विरघापण, विरघापणी, ब्रह्मता, ब्रह्मता, ब्रघपण, ब्रघपणी, ब्रघपण, ब्रघपणी ।

ब्रह्मपूनम, ब्रह्मपूरणिमा—देखो 'ब्रह्मपूनम' (रू भे)

ब्रह्मवयस, ब्रह्मवैस—स पु [स वृद्धवयस] वृद्धावस्था, बुढापा ।

रू भे—ब्रघवयस, ब्रघवैस ।

ब्रह्मसरमा—स पु [स वृद्धसर्मन्] १ आयु. एव स्वर्मानु के ससर्ग से उत्पन्न पाच पुत्रो में से एक ।

२ वसुदेव की बहन श्रुतदेवा का पति व दन्तवक्र का पिता कश्यप देशीय राजा ।

ब्रह्मसरवा, ब्रह्मस्रवा—स पु. [स वृद्धश्रवस्] देवराज इन्द्र ।

रु. भे—ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा ।

ब्रह्मसेना—स स्त्री. [स वृद्धसेना] सुमति राजा की पत्नी एवं देवता-
जित राजा की माता का नाम ।

ब्रह्माचल—स. पु [स वृद्धाचल] मद्रास में स्थित एक तीर्थस्थान ।

ब्रह्मानि, ब्रह्मात्री—स. पु [स वृद्धानि] एक प्राचीन ऋषि ।

ब्रह्मात्म—स पु. [सं वृद्धात्म] वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

ब्रद्धि—स स्त्री. [स वृद्धि] १ बढने की अवस्था, बढोतरी ।

उ०—ऊरध अकास, पाताळ पास, सब ठोर सिद्ध, परिकर प्रसिद्ध ।
वंराग ब्रद्धि, सुख बळ सन्नद्धि, निरभय निसानं, निरधन निधान ।

—ऊ का

२ वृद्ध होने की अवस्था, बुढ़ापा ।

३ व्याज, सूद । ४ लाभ ।

५ प्रगति, विकास ।

६ बच्चा उत्पन्न होने पर घर में होने वाला सूतक ।

७ देखो 'ब्रद्धियोग' ।

रु. भे.—विरधि, विरधी, विरिधि, ब्रधि, ब्रधी, त्रिदि, त्रिदी त्रिद्धि
त्रिद्धी, त्रिधि, त्रिधी ।

ब्रद्धिका—स. स्त्री. [स. वृद्धिका] वृक्षों पर गिरे हुए शिव-वीर्य से उत्पन्न
स्त्रिया जो मनुष्य का मास भी भक्षण कर लेती हैं ।

ब्रद्धतिथि, ब्रद्धतिथि, ब्रद्धतिथी—स स्त्री [स वृद्धतिथि] किसी मास
या पक्ष में दो तिथि या क्षयतिथि के अतिरिक्त वह तिथि जो
घडियों में पूर्ण हो ।

ब्रद्धियोग—स पु [स वृद्धियोग] सत्ताईस प्रकार के योगों में से एक
योग विशेष ।

ब्रद्धिसराद्ध, ब्रद्धिसराध, ब्रद्धिस्राद्ध, ब्रद्धिस्राध—स पु [स वृद्धिस्राद्ध]
विवाहादि मांगलिक अवसरों पर पितरों आदि के लिये नान्दीमुख
नामक श्राद्ध ।

ब्रध—देखो 'ब्रद्ध' (रु. भे)

उ०—१ आलम का ब्रह्मसाल, ईखें गूडर आसना । गढ का गा
गढपति कन्हूद, ब्रध अर तरणा वाल । —अ वचनिका

उ०—२ देवी रत नीलमणी सीत रग, देवी रूप अवार वीरुप
अग । देवी बाल जूवा ब्रध वेस बाली, देवी विस्व रखवाळ वीसा
भुजाळी । —देवि,

उ०—३ सू अकवर वा जिहानगीर तथा साहिजान अं तीन पीढी
तो राजावा नू भूसलमान करण री उपाय में रया पण तावं प्रायी
नही । साजिहानजी सू ती सादलेखा अरज इण वात री करी थी ।
तद हजरत इसी कही, मैं तो अरब ब्रध हो गया सू कोई इस जगा
वंठागा जिसकू भारी है । —द दा

२ देखो 'ब्रध' (रु. भे)

ब्रधपण, ब्रधपणी—देखो 'ब्रद्धता' ।

ब्रधवयस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रु. भे)

ब्रधवा—देखो 'विधवा' (रु. भे)

ब्रधवापण, ब्रधवापणी—देखो 'विधवापणी' (रु. भे)

ब्रधवेस—देखो 'ब्रद्धवेस' (रु. भे.)

ब्रधसरवा, ब्रधस्रवा—देखो 'ब्रह्मस्रवा' (रु. भे)

ब्रधाराज, ब्रधाराय, ब्रधाराव—स पु. [स वृद्धराज] ब्रह्मा ।

उ०—सिधाराव रं गणैस ब्रधाराव रं दिनेस सोहे, जौध बळी राव
रं लकेस री हे जेम । ब्रलोकराव रं मककेत तायजादी तेम, ऊमेद
राव रं 'अजौ' रायजादी येम ।

—रावराजा अजीतसिंहजी री गीत

ब्रघा—देखो 'ब्रद्ध' (रु. भे)

उ०—ताहरा आनी वाघेली भोळें राजा भीम नूं कहै, राज, प्रथी-
राज नायी छै । थं पण मता चढी । मनु विदा करी और उमराव
मोहती विदा करी । ताहरा राजा कहै छै, अनाजी ब्रघा हुवा ।
सूणसाह तो काम मेलियो छै । था वाहरो तो अठे सरं नही ।

—हाहुल हमीर री बात

ब्रधि, ब्रधी—१ देखो 'ब्रध' (रु. भे)

उ०—ब्रधि किया बळ ब्र द ।

—रामरासी

२ देखो 'ब्रद्धि' (रु. भे)

उ०—'बाका' हरख न ब्रधि सू, हाण हुवा नह सोक । हरि सतोख
दियो हिर्यं तिए नू दीध त्रिलोक ।

—बा. दा

ब्रधु-वि. [स. वृद्ध] वीधं, वृहद, विशाल । (अ मा)

२ देखो 'ब्रद्ध' (रु. भे)

ब्रध्व—स पु—१ एक सूर्यवंशी राजा ।

२ देखो 'ब्रद्ध' (रु. भे)

ब्रध्वपण, ब्रध्वपणी—देखो 'ब्रद्धता' ।

उ०—बाळापणं धोळा भया, तरणापणं भया लाल । ब्रध्वपणं
काळा भया, कारण कोण जमाल ।

—जमाल

ब्रध्वेचा—स स्त्री—चौहान वंश की एक शाखा ।

ब्रध्वेचौ—स पु—उक्त शाखा का व्यक्ति ।

ब्रध्न—देखो 'व्रण' (रु. भे)

२ देखो 'व्रण' (रु. भे)

उ०—१ भाळ ब्रध्न हुई अरखास विच भाळहळें, मार हेका वियां
हिर्यं मिलती । 'अमर' ची भगवती खुरम मुह आगाळी, गळ ब्रज
ऊग्रजं मीर गळती ।

—केसोदास गाडण

उ०—२ मी सजन चालतडा, रोय रोय गम रतन्न । पडिया विस
रा चौसरा, आसु मोती वन ।

—ढो. मा.

३०—३ तन घण घटा तराज, धरर धर बाज तिलक धन । पत दत बक पाज, वरुँ सोभाज सेत धन । —सू. प्र.

३०—४ मिळि माह तणी माहूटि सूँ मसि धन, तपि आसाढ तणी तपन । जन श्रीजन परिण अधिक जाणयो, मध्यरात्रि प्रति मध्याहन । —वेलि

३०—५ कळी सेत धन पोळटें, पडें जोखिम फळस, खसं खुभी, हुवं मडप खागो । भीतडा भाजि ढहि जाइ धरती भिळें, गीतडा नह जाय, कहै 'गागी' । —गागी

३०—६ गढवाडाय जीवत कोण गर्जे, धन पाल गवा घव पाल वर्जे । जग माभू अमां घट प्राण जितें, इह गावत हेरण कोण मत्तें । —पा. प्र

धनश्रुतार—स. पु —१ अति उदार या दातार व्यक्ति ।

२ प्रजा समूह ।

धनखट—देखो 'खटदरसण' (२) (रू. भे.)

धनखो, धनखी—देखो 'वरणखो, वरणखी' (रू. भे.)

धनखणहार, हारो (हारी), धनखणयो—वि० ।

धनखोडो, धनखोडो, धनखोडो—भू० का० कृ० ।

धनखोणो, धनखोणो—कर्म वा० ।

धनखणो धनखो—देखो 'वरणखो, वरणखी' (रू. भे.)

३०—१ दस जोयण लगे जिये री देही, धनवतां जोवता विस्तार । इउ हिज वार तणा ऊपरइ, इसडा वल वाधिया उदार । —महादेव पारवती री वेलि

३०—२ धनवजइ काम रूप रउ वणतउ, हेभा सरस हजूर हुअउ । कहइ स भूट वाळियउ कद्रप, मयण सही अउळजे भूअउ । —महादेव पारवती री वेलि

धनवणहार, हारो (हारी), धनवणयो—वि० ।

धनविखोडो, धनविखोडो, धनविखोडो—भू० का० कृ० ।

धनवीजणो, धनवीजणो—कर्म वा० ।

धनविखोडो—देखो 'वरणखोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. धनविखोडो)

धनविखोडो—देखो 'वरणखोडो' (रू. भे.)

(स्त्री. धनविखोडो)

धन—१ देखो 'वण' (रू. भे.)

२ देखो 'वरण' (रू. भे.)

३०—१ देवी जखणो भखणो देव जोगी, देवी वम्मळा भोज भोगी निरोगी । देवी मात जानेसुरी वन्न मेहा, देवी देव चामुड सख्याति देहा । —देवि.

३०—२ महल्ल गौल सोभ मान, कूदनी कळस्य ए, पणत काच नील वन्न, आरिखें अरस्स ए । पर्व गिरा पगार पीळि, लोहमें

कपाट ए, (जु) त्रिगमेर सीस जाणि, भोपियत आट ए ।

—गु. रू. व

३०—३ काटल आवध भूक कर, मन मदाण वन्न । आवध रागं ऊजळा, मैला ज्यां रा मन्न । —वा दा.

अप—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

३०—१ करतार घणू तासू कहां, वटा देव वामण वपा । केसवा रणे कुमया करे, किसन हिमें करिजी क्रिया । —पी प्र

३०—२ हरि हरि करि उदरें, वडी सेवग वमीखण, हरि हरि करि उदरें, गजह सामद धू अजगण । हरि हरि करि उदरें, दखि अप वडो सुदामा, हरि हरि करि उदरें, मेस सकर सिव ग्रहमा । —ज. लि.

अमड—देखो 'ब्रह्माड' (रू. भे.)

३०—रिखण ची साम जगत ची तारण, आधारण अमड अकवीस । जण जण कना काहा तु जाचें, जाच येऊ दाता जगदीस । —भोपी भाडो

अम—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.) (ना मा)

३०—अकालग्यान दरसी निज अम कूं पहिचारुं । भूत, भवस्त, धरतमान जुगति सों जाणुं । च्यार वेद नी व्याकरण खट सासत्रूं कें विनाण । पिडत विद्या में पारावार जाणुं नवदूण पुराण । —सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

अमआखर—देखो 'ब्रह्माखर' (रू. भे.)

अमकुड—देखो 'ब्रह्मकुंड' (रू. भे.)

अमखाड—देखो 'ब्रह्मखाड' (रू. भे.)

अमग्य—देखो 'ब्रह्मग्य' (रू. भे.)

अमग्यान—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे.)

अमग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

अमचरच—देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

अमचार—१ देखो 'ब्रह्मचरच' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

अमचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

अमभोग—देखो 'ब्रह्मभोग' (रू. भे.)

अमतीरथ—देखो 'ब्रह्मतीरथ' (रू. भे.)

अमदड—देखो 'ब्रह्मदड' (रू. भे.)

अमदवार—देखो 'ब्रह्मदवार' (रू. भे.)

अमदान—देखो 'ब्रह्मदान' (रू. भे.)

अमदिन—देखो 'ब्रह्मदिन' (रू. भे.)

अमदेत, अमवेत, अमवेत्य—देखो 'ब्रह्मदेत्य' (रू. भे.)

अमदोख, अमदोस—देखो 'ब्रह्मदोस' (रू. भे.)

ब्रह्मब्रह्म—देखो 'ब्रह्मब्रह्म' (रु भे)
 ब्रह्मनाम—देखो 'ब्रह्मनाम' (रु भे)
 ब्रह्मनिस्त—देखो 'ब्रह्मनिस्त' (रु भे.)
 ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रु भे.)
 ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रु भे.)
 ब्रह्मपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रु भे.)
 ब्रह्मपुत्रि, ब्रह्मपुत्रिणी—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रु भे)
 ब्रह्मपुत्रि, ब्रह्मपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रु भे)
 ब्रह्मपुत्रि, ब्रह्मपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रु भे)
 ब्रह्ममोज—देखो 'ब्रह्ममोज' (रु भे)
 ब्रह्ममूरत—देखो 'ब्रह्ममूरत' (रु भे)
 ब्रह्मरघ्न—देखो 'ब्रह्मरघ्न' (रु भे.)
 ब्रह्मरात, ब्रह्मरात्रि—देखो 'ब्रह्मरात' (रु भे)
 ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रु भे)
 ब्रह्मवादिनी—देखो 'ब्रह्मवादिनी' (रु भे.)
 ब्रह्मविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रु भे)
 ब्रह्मवेत्ता ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रु भे)
 ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रु भे)
 ब्रह्मसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रु भे)
 ब्रह्मसूत, ब्रह्मसूत्र—देखो 'ब्रह्मसूत' (रु भे)

उ०—तीरथ-राउ प्रयागि, राव कमधज पधारि, ब्रह्मसूत निय पहरि करगि भंजलि कुस धारि । करि मजन वधि सहित, कीध तरपण गगा तड, विवह दान दे विा, अकमाळी अक्खे वड ।

—गु. रु व

ब्रह्महत्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रु भे)
 ब्रह्मणी—देखो 'ब्रह्मणी' (रु भे)

उ०—नाचं तिम नट्ट थई जिम नाच, महीदधि मरु कूदें सुज माछ । सपेखें सभ निसभ सधीर, ब्रह्मणी ताम धई वर वीर ।

—मा वचनिका

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रु भे)
 ब्रह्म — १ देखो 'ब्रह्म' (रु भे)
 २ देखो 'ब्रह्मा' (रु भे)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी, ब्रह्मधीया - देखो 'ब्रह्मधीया' (रु भे.)

उ०—'करण' सुजाव बधे नी करणा. लळ हूता गम अगम कीया । चाहें धूमढळ चीतोडा, धू धारक जिम ब्रह्मधीया ।

—राणा जगतसिध रो गीत

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रु भे.)

उ०—देखो विस्णु रं रूप जघा वधारं, देवी मुकुंद रं रूप मधुकौट भारं । देवी सावित्री गायत्री प्रभु ब्रह्मा, देवी साच तण भेलिया जोग सम्मा ।

—देवि.

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रु भे)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रु भे.)

ब्रह्म, ब्रह्म—देखो 'ब्रह्म' (रु भे.)

ब्रह्म—देखो 'ब्रह्म' (रु भे)

ब्रह्मण-स पु.—दान, पुण्य । (अ मा, ह. ना मा)

उ०—पवन चदन रव हर पनग पूरण दळत्री प्रेत । विध अगन भूख अरण दौरघ ऊ कहि देत ।

—एका.

वि—दातार, दानी, उदार ।

उ०—कुभर किरणाळ सुपहू सपखाळ, विरदि उजुआळ सकज घजवध । प्रसिधि वधि पाज अक्षण गज वाज, मदति ब्रजराज मरद अममध ।

—ल. पि

रु. भे.—ब्रह्मण ।

ब्रह्मणलोकेस, ब्रह्मणलोकेसु, ब्रह्मणलोकेसु—स पु—ईश्वर, परमात्मा ।

(ना मा)

ब्रह्मणी, ब्रह्मणी—क्रि. स — १ दान देना ।

उ०—१ मन महाराण धिनी गंवाडा, दाखें घाडा दसु दिसा । राजा अम वादें रजवाडा, तु गडवाडा ब्रह्में तिसा ।

—राणा भीमसींग रो गीत

उ०—२ ब्रह्मतार उदार लाखी इसी, जगा जेठ दातार 'जैहें' जिसी । धरा-थम जाडेंज धूमें घडे, अवं वाज जेहा ज गीता वडे ।

—ल. पि.

उ०—३ जग जाणुं रं जग जाणुं, जिण लक अवी जग जाणुं । श्रीमुख दाख सुकठ सहोदर, राख प्रभाव धराणुं ।

—र. ज. प्र

उ०—१ ताम सूभं न की ठाप धवळह तणा, घणा अम राइया रुख राखें घणा । अवं काय रम रथ जूथ जाणुं सुवर, पडे कवि पखियां 'जसी' धू कळपतर ।

—हा का.

उ०—२ अवंती ब्रह्म रीक फडी मं कळवछ, सोभा समद भडी मं साद । जिम चितराण जीव फडी मं, आवें घडी घडी मं याद ।

—राणा सिमुसिध रो गीत

उ०—३ अदवा खं जाइस ज्या अणजस, चक्रवत अवं न जाणुं चीज । राजा अमर करं ले रूपग, मंगळ वेगागळ दें मोज ।

—किसनी आढी

उ०—४ धर प्रीत पूछें गहर भूधर कहें विध कवि राव । उर वधत हरख भ्रमाप सुण सुण अवं कीडपसाव ।

—र. रु

३ वित्तीणं करना, वितरित करना, वाटना ।

उ०—राजा कमधज सुतण पदारथि, उण सुत गणपति भूप अरण अथि । तोगनाथ जिण सुतण भूप तवि, कीरति पार जेण न लहे कवि ।

—सू. प्र.

४ त्यागना, छोडना ।

५ अर्पण करना ।

६ बोलना, कहना ।

उ०—अविद्यो सिध आराध वडाळी, असठी अक्षर मत्र जप अ वाळी ।
अजमावण कजि मत्र त्रप अक्खै, दुगम पहाड फोडि इम दपखै ।

—सू. प्र

अवरणहार, हारो (हारो), अर्थाणयो—वि० ।

अधिभ्रोडो, अधिगोडो, अध्योडो—भू० का० कृ० ।

अवीजणो, अवीजवो—कर्म वा० ।

अघणो, अघवो—रू० भे० ।

अस—१ देखो 'अख' (रू. भे.)

२ देखो 'अखभ' (रू. भे.)

३ देखो 'अस' (रू. भे.)

४ देखो 'अस' (रू. भे.)

५ देखो 'अक्ष' (रू. भे.)

उ०—नना नदधा परहरी, पर नदधा न करेह । सोभ नही ससार
मां, पळतें पत्र गहि लेह । पळतें पत्र गहि लेह, अस देखो नर सोई ।
श्रीर पाप कू नफी, निदन नफी न कोई । —वील्हीजी

असक—देखो 'अखक' (रू. भे.)

असकेतु—देखो 'अखकेतु' (रू. भे.)

असचक, असचकर, असचक्र—स पु [स वृश्चिक] १ वृश्चिक राशि
का नाम । (अ. मा.)

२ देखो 'अखचक्र' (रू. भे.)

असण—देखो 'अखण' (रू. भे.)

असणकच्छ, असणकच्छु, असणकच्छ—देखो 'अखणकच्छ' (रू. भे.)

(अमरत)

असदरभ—देखो 'अखदरभ' (रू. भे.)

उ०—महाराजा मोरध्वज री व राजा असदरभ री जिण भूळी
आत्मा हित आपरें वेटा नू चीर सिंह नू खुवायी सो मोरध्वज
अक्षय पुण्य पायी ।
—साह रामदत्त री वारता

असदेवा—देखो 'अखदेवा' (रू. भे.)

असद्वीप—देखो 'अखद्वीप' (रू. भे.)

असधार, असधारिण, असधारी—देखो 'अखधारी' (रू. भे.)

असधुज, असध्वज—देखो 'अखध्वज' (रू. भे.)

असध्वजा—देखो 'अखध्वजा' (रू. भे.)

असपत, असपति, असपती—१ देखो 'अखपति' (रू. भे.)

२ देखो 'अहस्पति' (रू. भे.) (अ. मा.)

उ०—श्री असपत दसमं ग्रह प्रायी, विदुष्य तिरां दुण लाम वतायी ।
कुळ त्रप उग्र थयी हं कोई, सुतन प्रताप चोगुणो सोई ।

—रा ॠ

असभ—देखो 'असभ' (रू. भे.)

असभकेतु—देखो 'अखभकेतु' (रू. भे.)

'असभगत, असभगति, असभगती—देखो 'अखभगति' (रू. भे.)

असभधज, असभधुज, असभध्वज—देखो 'अखभध्वज' (रू. भे.)

असभाक—देखो 'अखभाक' (रू. भे.)

असभाण, असभाणु, असभांन, असभांनु—म. पु. [सं वृपभानु] कृष्ण—
प्रेमिका राधा के पिता का नाम ।

रू. भे. — व्रपभान, विरगभान, विरगभाणु, विरगभांन, विरग-
भानु, व्रखभाण व्रखभाणु व्रपभान, व्रपभानु ।

असभानुनदणी, असभानुनदिणी, असभानुनदिनी—देखो 'अखभानुनदिनी'
(रू. भे.)

असभानुसुता—देखो 'अखभानुसुता' (रू. भे.)

असल—देखो 'अखल' (रू. भे.)

असलांछन, असलांछन—देखो 'अखलांछन' (रू. भे.)

असली—देखो 'अखली' (रू. भे.)

असलीपत, असलीपति, असलीपती—देखो 'अखलीपति' (रू. भे.)

असवाहण, असवाहन—देखो 'अखवाहण' (रू. भे.)

अससेण, अससेन—देखो 'अखसेन' (रू. भे.)

असस्कध—देखो 'अखस्कध' (रू. भे.)

असाक—देखो 'अखाक' (रू. भे.)

असासुर—देखो 'अखासुर' (रू. भे.)

असोत्सरग—देखो 'अखोत्सरग' (रू. भे.)

अस्चक—देखो 'अश्चिक' (रू. भे.)

उ०—रचि मीन रासि सनि करक राह, अरु मकररासि केतह
अथाह । कहि अस्चक भाण सुघ बुध प्रकास, तन लगन मियुन सुभ
अनत तास ।

—सू. प्र.

अस्चकसकरात, अस्चकसकराति, अस्चकसकराती, अस्चकसकरायत,
अस्चकसक्रांत, अस्चकसक्राति, अस्चकसक्राती, अस्चकसक्रायत, अस्चकस-
क्राति—देखो 'अश्चिकसक्राति' (रू. भे.)

उ०—अस्चकसक्रात दिन खट वित्तीस, ससि सुक्र रासि तुल वर
सधोस । राजें तदि मगळ कुभ रासि, कहि मीन व्रहस्पति बळ
प्रकासि ।

—सू. प्र.

अश्चिक—उ. पु. [स वृश्चिक] (स्त्री अश्चिकणी, अश्चिकनी) १ विच्छू ।

उ०—अळठ फोडि घटि अम्ह तणह, रोम सरुपी राय । तें पीळ
पाखइ मूंहनइ, अश्चिकनी परी थाइ ।

—मा का प्र

२ वारह राशियो में से आठवी राशि । (ज्योतिष)

३ वारह लगनों में से आठवा लगन । (फलित ज्योतिष)

रु. भे - वृद्धिक, वृद्धिक, वृद्धिक ।

अस्त्रिकपत्रिका—स स्त्री [स वृद्धिकपत्रिका] पोई नामक साग ।

अस्त्रिकप्रिया—सं स्त्री. [स. वृद्धिकप्रिया] पोई नामक साग ।

अस्त्रिकसकरांत, अस्त्रिकसकराति, अस्त्रिकसकराती, अस्त्रिकसकरायंत, अस्त्रिकसकरात, अस्त्रिकसकराति, अस्त्रिकसकराती, अस्त्रिकसकरायत—स स्त्री [म वृद्धिकसकराति] वृद्धिक राशि में सूर्य का प्रवेश एवं इस दिन मनाया जाने वाला पर्व ।

रु. भे - वृद्धिकसकरात, वृद्धिकसकराति, वृद्धिकसकराती, वृद्धिकसकरायत वृद्धिकसकरात वृद्धिकसकराति, वृद्धिकसकरायत ।

अस्त्रिकाली—स स्त्री. [स वृद्धिकाली] प्रायः सारे भारत में पाई जाने वाली विच्छू नामक लता ।

वृष्टर—देखो 'विष्टर' (रु. भे) (ना मा)

वृष्टरसव, वृष्टरसवा, वृष्टरस्रव, वृष्टरस्रवा—स पु. [स विष्टरश्रवस्]

१ ईश्वर, परमात्मा । (ना मा)

२ श्रीकृष्ण । (अ. मा) ३ विष्णु भगवान का नाम ।

वृष्टि, वृष्टी—सं. स्त्री. [स. वृष्टि] १ वर्षा, मेह ।

उ०—वीरथकर नई पारण, कुण करसई मुझ होडि । वृष्टि करु सोवन तणी, सादी वारह कोडि । —स. कु

२ बहुत सी चीजों को एक साथ ऊपर से गिराने की क्रिया ।

३ एक ही क्रिया को लगातार बार बार करने की क्रिया ।

रु. भे—वृष्टी, वृष्टी, वृष्टि, वृष्टी ।

वृष्टि, वृष्टी—सं. पु. [स. वृष्टि] १ बादल, मेघ ।

२ यादव वंश ।

३ श्रीकृष्ण ।

४ देवराज इन्द्र ।

वृष्टिकगरभ, वृष्टिकगरभ—सं. पु. [स वृष्टिकगरभ] श्रीकृष्ण ।

वृष्टमड—देखो 'वृष्टमड' (रु. भे)

उ०—१ दखे माख ज्यारा जती वस दीता, सकी कत त्रिलोक ती नाथ सीता । वृष्टमड कोडेक भाजे वणावे, इसी राम माता कठे कामि आवे । —सू. प्र

उ०—२ भएक चली कोमडा तूर भेरी, फवे सख सहनाय आनेक फेरी । विखम्भी सुरा सिद्धवा हाक वागी, वृष्टमड हवकीसमें हाक वागी । —सू. प्र

वृष्टम—१ देखो 'वृष्टम' (रु. भे.)

उ०—जोग पथ जाणो नही, माया रूपी कान्ह । जादम वस छुडाय करि, दीयो वृष्टम निदान । —सुरजनदास पूनियो

२ देखो 'वृष्टम' (रु. भे)

वृष्टमण, वृष्टमाण, वृष्टमाणय—१ देखो 'वृष्टमण' (रु. भे.)

उ०—१ वेद मत्र पाठी चत्र वेदह, जाणो जोतिख भेद सुभेदह । होम विर्ये वृष्टमण हुतासण, तेडे ताम इसा वृष्टमण । —गु. रु. व

उ०—२ भामना चत्र वेद वृष्टमाणय विप्रय, रुध जुज्जर सांम अथरवणय जपय । वेदीधुनि जे जे सव्वदय वणय, गुजार रव भेर पडसदय वणय । —गु. रु. व.

२ देखो 'वृष्टम' (रु. भे.)

वृष्टमणी—देखो 'वृष्टमणी' (रु. भे)

उ०—देवी वंस्णवी महेशी वृष्टमणी, देवी इद्रायणी चद्रायणी रना-राणी । देवी नारसिंधी वराही वित्यात्ता, देवी इळा आधार आसूर हाता । —देवि.

वृष्टमि, वृष्टमी—देखो 'वृष्टमि' (रु. भे)

वृष्ट, वृष्टत, वृष्टती—वि [स. वृष्ट] १ आकार की दृष्टि से अत्यन्त बड़ा, विशाल ।

२ विस्तार की दृष्टि से बहुत लम्बा-चौड़ा ।

३ अपार, बहुत ।

स. पु.—१ वेद ।

२ वृष्ट ।

३ प्रत्येक चरण में नौ अक्षरों वाला वर्णवृत्त ।

रु. भे—वृष्ट, वृष्टत, वृष्टती, वृष्टद, वृष्टद, वृष्टत, वृष्टद ।

वृष्टकल्प—सं. पु. [स वृष्टकल्प] एक सूत्र विशेष ।

उ०—छ छेदे महानिसीय निसीय, पाच सहस गिण्णिजे इवीय । वृष्टकल्प चीजो बाखण, च्यारसें चिहृतर सख्या जाण ।

—ध. व. प्र

वृष्टवग—सं. पु. [स वृष्टवग] हाथी, हस्ती ।

वृष्टदवळ—सं. पु. —वृष्टदव नाभक एक सूर्यवशी राजा जो विश्रुतवान का पुत्र था ।

उ०—अपति प्रसेनजीत ते नदण, खुनक प्रसेन सुतरण खळ खण । वळवत खुनक सुजाव वृष्टदवळ, दुम्ल हुवो हरवळ करेव दळ ।

—सू. प्र.

वृष्टवमवन वृष्टवमाण, वृष्टवमाण, वृष्टवमान, वृष्टवमानु—सं. पु. [स. वृष्टवमानु] १ आग, अग्नि । (ह. ना. मा)

२ चित्रक ।

३ मूरज, सूर्य ।

४ सत्यभामा के पुत्रों में से एक ।

रु. भे.—वृष्टवमाण, वृष्टवमानु, वृष्टवमाण, वृष्टवमाणु वृष्टवमान, वृष्टवमानु ।

वृष्टभोज—सं. पु.—पुराणोक्त वृष्टराज नामक एक सूर्यवशी राजा ।

२०—जे सुत ग्रहदभोज जगजाहर, ग्रहदभोज सुत वहन्य क्रीतवर ।
जिण त्रप वहनि सुजाव कृतजय, जेण सुजाव नरेस रणजय ।

—सू. प्र.

ग्रहवळ, ग्रहवळ—वि. [स. वृहवळ] अत्यधिक वडा, बहुत वडा ।

२०—अणू ते व्याणू ते ग्रहवळ विभूतं अतिविभू, तुर्जना जांने
को सुहृद स्वसु जाने भल त्रभू । कहें क्या व्यावेधी कहन नहिं आवें
कुल कुलें, मदाघी मायावी तुम रु हम भावी तुलें । —ऊ. का
ग्रहदस्व—स. पु [स वृहदस्व] एक सूर्यवशी राजा का नाम ।

२०—१ काह जिण सुतण वीर त्रप केही, जग जस प्रगट भगीरथ
जेही । जे सुत ग्रहदस्व भूप करण जय, ते सुत मानुमानु तेचोमय ।

—सू. प्र.

२०—२ आरद्र जेगसुत वसप्रोम, जे सुत जवनासव ग्रह जोप ।
सभ्रम जवनासव हुवी स्राव, ग्रहदस्व जेण सुत तप वधाव ।

—सू. प्र.

ग्रहनट, ग्रहन्नट, ग्रहन्नड—स. पु [स वृहन्नट] अर्जुन । (अ. मा)

२०—मूफइ रडइ भुहि पडइ मनि कप थाइ, देखी जतू कटक
उत्तर सून्य थाइ । पाछउ हव वलि ग्रहन्नड मइ म मारि, खूटा
पखइ कहि न भूलठ का विचारि । —सालिभद्र सूरि

रू. भे.—ग्रिहनट, ग्रिहन्नट, ग्रिहन्नड ।

ग्रहन्नळा—स. स्त्री. [सं वृहन्नळा] १ वनवास काल के बाद एक वर्ष
के अज्ञातवास काल मे राजा विराट के महा स्त्री वेप मे रहते
समय अर्जुन का नाम ।

२ अर्जुन ।

ग्रहमड, ग्रहमडक—देखो 'ग्रहाड' (रू. भे)

२०—१ भिडे मुख मूछ अणी भुवहार, धरे ह्य'रीळवियी चव-
घार । वरां मुख चीळ छिबं ग्रहमड, 'पत' अस हाकलियो परचड ।

—सू. प्र.

२०—२ कोट मुलक खिडिया केताइ खड, व्याइ वसूहक फाटी
ग्रहमड । वडा वडा आत्रे वरियाम, 'अवर' आगे करे सलाम ।

—गु. रू. व.

२०—३ ग्रहमड किनां फुटी वळें, घसक तळातळ आतळें । मुलें
हसें सकति महावळ, वेताळा कुळ भ्याकुळें । —मा वचनिका

२०—४ घट में तारा चद रिख, घट मांहि ग्रहमड । हरिया घट
में राम है, वाकी जोति अखड । —अनुभववाणी

२०—५ भूकारा आवघ भळहळ्ये, ग्रहमडक वीजां वळवळ्ये ।
संफळी वाजियो सामताह, भेलियो लोह मुह रावताह ।

—गु. रू. व

ग्रहमंडी—१ देखी ग्रहा डी' (रू. भे)

२०—सिव सकती सम भुगती, सिव मन्नि सकति सकति सिध
सभें । आतम सकति सकति सिद्धी, सिव सकति पिट ग्रहमंडी ।

—गु. रू. व.

२ देखो 'ग्रहाडी' (रू. भे.)

ग्रहम—स पु —१ एक प्रकार का मायिक छन्द विशेष जिसके प्रत्येक
चरण मे २१ मात्राये होती है ।

२०—दस एकादस मात्र दे, एकाणि पाये एम ग्रहम छंद वाखा-
णिएजे, गुण लवपति निगेम । —ल पि

२ देखो 'ग्रहा' (रू. भे.)

२०—ग्रहमग्यानी सो वडा ग्रहम विचारें । —केसोदास गाडण
३ देखो 'ग्रहा' (रू. भे)

२०—१ दसरत्य विभे इम नजर दीघ, कामना पुत्र धरि जिगन
कीघ । आविद्या नाग नर सुर अनाप, आविद्या ग्रहम सिव विसन
आप । —सू. प्र.

२०—२ सिव ग्रहम विसन निज पुर तिघाय, प्रिय भूप जिगन
व्रत सगि पाय । त्रिय भूप घरम थित गरम ताम, कामना सकळ
त्रप ज्याग काम । —सू. प्र.

२०—३ रगतामुर अं रीत, सूर उदै जसण सभें । माहव ग्रहम
महेस मु, गावें आडा गीत । —मा वचनिका

२०—४ सालउ दइ हाप तपें तप संक, ग्रहम तियइ रउ करइ
विचार । वीजी दुनी राखडी वाघइ, सभूनाथ अचळ ससार ।

—महादेव पारवती री वेलि

ग्रहमकपाळ—देखो 'ग्रहकपाळ' (रू. भे.)

ग्रहमकरम—देखो 'ग्रहकरम' (रू. भे)

ग्रहमकवच—देखो 'ग्रहकवच' (रू. भे)

ग्रहमकाड—देखो 'ग्रहकाड' (रू. भे.)

ग्रहमकूड—देखो 'ग्रहकूड' (रू. भे)

ग्रहमकूरच—देखो 'ग्रहकूरच' (रू. भे)

ग्रहमक्षत्र, ग्रहमक्षत्री ग्रहमखत्री—देखो 'ग्रहक्षत्र' (रू. भे)

ग्रहमग्य—देखो 'ग्रहग्य' (रू. भे)

ग्रहमग्यान—देखो 'ग्रहग्यान' (रू. भे.)

२०—ज्या नदिया मजन करे, धरे सदा हरि ध्यान । उर निरोध
हर आसरे, विसरे नह ग्रहमग्यान । —अ मा.

ग्रहमग्यानी—देखो 'ग्रहग्यानी' (रू. भे.)

२०—ग्रहमग्यानी सो वडा ग्रहम विचारें । —केसोदास गाडण

ग्रहमघातक, ग्रहमघातकी—देखो 'ग्रहघातक' (रू. भे)

ग्रहमघातणी—देखो 'ग्रहघातणी' (रू. भे.)

ग्रहमघातिक, ग्रहमघातिकी—देखो 'ग्रहघातिक' (रू. भे)

उ०—स्त्रीनाथ रुद्र गणपति सकल, भासकर मिळ पच ए । इण माहि भेद जाणै जिकी, ब्रह्मघातिकी मान ए । —मा वचनिका

ब्रह्मघातिणी—देखो 'ब्रह्मघातिणी' (रु भे)

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज ब्रह्मचरघ—देखो 'ब्रह्मचरघ' (रु भे)

उ०—सौ घण स्त्री कहे इण हीज घड सूं एकरा घण री पती अरघात ब्रह्मचरघ व्रत वाळो एकरा हीज घरा री पती घाप री चेंर लें नें पडसी । —नी स टी

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रु भे.)

ब्रह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रु भे)

ब्रह्मपुराण—देखो 'ब्रह्मपुराण' (रु भे)

उ०—तवता कुराण काजी तडें, ब्रह्मपुराण वचाविया । आसुरा धरम मेट्टें 'अर्ज', सुरा धरम दरमाविया । —सू प्र

ब्रह्मपुरी—देखो 'ब्रह्मपुरी' (रु. भे)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रु भे)

ब्रह्मभोज—'ब्रह्मभोज' (रु. भे)

ब्रह्ममुहुरत, ब्रह्ममूहुरत—देखो 'ब्रह्ममुहुरत' (रु भे)

ब्रह्मयोनि—देखो 'ब्रह्मयोनि' (रु भे)

ब्रह्मरघ—देखो 'ब्रह्मरघ' (रु भे)

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रु भे)

ब्रह्मळा—वि —१ विमल, पवित्र ।

उ०—सकून ब्रह्म कें भिनान, केक ब्रह्मण करै, धरत केक न्यास ध्यान, चडि पाठ उच्वरे । जपत गायत्रीस जाप, वेद मय ब्रह्मळा, करत पूज नी प्रकार, केक कत कम्मळा । —सू प्र

ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रु. भे)

ब्रह्मवाणी—देखो 'ब्रह्मवाणी' (रु भे)

ब्रह्मवाचा—देखो 'ब्रह्मवाचा' (रु भे)

उ०—देवपति सभ्रम दमण ऊदम अगम गम हीदुर्मा ओपम, सरम-धारी करण सुधरम ब्रह्मवाचा दानि विक्रम । जस करन समदि थण जगम दीपित्री बिरदाळ, ताई भूपाळ जी भूपाळ । —ल पि

ब्रह्माड—देखो 'ब्रह्माड' (मह., रु. भे.)

उ०—नमी आदि नाराइणी, ब्रह्माणी ब्रह्माड । रुद्राणी जाणी रिधू, अतुळित तेज अखड । —मा. वचनिका

ब्रह्माण—१ देखो 'ब्रह्मा' (मह., रु. भे.)

उ०—१ ओ खी हूं आज चूकू अवसाण, चकं नह वेद मुखा ब्रह्माण । जावें वित कमा मूकू जोयार, घरा नह छोळ दिर्यें इंद्रघार । —गो रु.

उ०—२ मानें ब्रह्माण पठें पुराण, वदें वखाण रिखेसवर । गुण भणें जगत्त गुर सकी असुर सुर, तेम अठारह भार तर । —रु प्र.

२ देखो 'ब्रह्माणी' (रु भे.)

उ०—हुय चौप कोड चमंड हुय, कर कोड नवें कनियाण कथ । खट कोड लखें ब्रह्माण खडी, तव लाखइ लोवळियाळ लडी ।

—पा. प्र.

३ देखो 'ब्राह्मण' (रु भे)

उ०—पढावें कुराणा तिका पढावें काजिया पूजा, सुराणा पुराणा घेन ब्रह्माणा सेव । 'राजा' तणी छत्रधारी खागधारी राजहम, दाणावा सूं वेधकारी अवतारी देव ।

—महाराणा जयसिंह (दूसरा) री गीत

ब्रह्माणी—१ देखो 'ब्रह्माणी' (रु भे)

उ०—१ नमी आदि नाराइणी, ब्रह्माणी ब्रह्माड । रुद्राणी जाणी रिधू, अतुळित तेज अखड । —मा. वचनिका

उ०—२ पचम नाम प्रसिद्ध, सकदमाता सुरराणी । ब्रह्माणी काळि रखि, कहा तिम काश्यपाणी । —मा वचनिका

२ देखो 'ब्राह्मणी' (रु. भे)

उ०—चौथी राणी विनीता ब्रह्माणी । तिणरें पुत्र-पहिली नव-नाटक, बीजी चंद्रमा, तीजी कोरम । —रा वसावळी

ब्रह्मान—१ देखो 'ब्रह्म' (मह, रु भे)

२ देखो 'ब्रह्मा' (मह; रु भे)

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रु. भे)

उ०—१ 'भगवत' सुतण हुअी ब्रह्म भुवणें, घण बीहा लग नाम धणी । ब्रह्मा विमन महेश वदीती, तप तुगिम जस तूकू तणी । —गोपाळ भीसण

उ०—२ नमी मात घ्याता नमी रग जाणी, नमी वाळ घ्याती ब्रह्मा बखाणी । नमी राखि सघा नमी छांह रूपी, नमी उमया चौभुजी द्रग औपी । —मा. वचनिका

उ०—३ नाव परताप सव सत महमा करे, विसन सिव सेस ब्रह्मादि सारा । दास हरिराम निज नाव परताप ते, होय जुग माहि नर निसतारा । —अनुभववाणी

उ०—४ कमध कहै कर रुक कळासी, आत्म जोघ विद्या अभि-यासी । वात रहै ब्रह्मा वरसासी, हुयसी जुद्ध नही एं हासी । —गु. रु. व.

ब्रह्मि—देखो 'ब्रह्मा' (रु भे)

उ०—नरिदि चौथी प्रभु नारसीव नाहरू, विळें परमेस वेदा तणी वाहरू । ब्रह्मि पीषा निही वेद चत्र वाळिया, अधिकि वारण तणा वचन अजूआळिया । —पी. प्र'

२ देखो 'ब्रह्म' (अल्पा, रु भे)

ब्रह्मिण—देखो 'ब्राह्मण' (रु भे.)

ब्रह्मो—देखो 'ब्रह्मा' (मह, रु भे.)

ब्रह्मम्ह—देखो 'ब्रह्माड' (रु भे)

उ०—ब्रह्मम्ह कोटेक जो रोम बास, स ती जोवता जेणि केती सर'स । एकी राम री दास जोरं अपारं, धरा सात दीपावती सेस धारं ।
—सू. प्र.

ब्रह्ममा—देखो ब्रह्मा' (रु भे)

उ०—१ देवी सम्मया खम्मया ईसनारी, देवी धारणी मुड त्रिभुवन्न धारी । देवी सब्बदां रूप श्री रूप सीमा, देवी वेद पारखल धरणी ब्रह्ममा ।
—देवि

उ०—२ देवी सप्तमी अठमी नोम नूजा, देवी चौथ चौदस पूनम्म पूजा । देवी सरसती लख्खभी महाकाळी, देवी कन्न विग्गु ब्रह्ममा कमाळी ।
—देवि

ब्रह्मवह, ब्रह्मवह—स स्त्री—युद्ध स्थल में वीरो द्वारा की जाने वाली जोशीली आवाज ।

उ०—१ कतियाणी क्रहकह नारद डहडह, हेका टहटह वीर हसं । वड रावत ब्रह्मवह पोरसि प्रहप्रह, डूडी ठहठह होठ डसं ।
—गु रू व

उ०—२ टहटह रभ ब्रह्मवह वीर, मिलं रणताळि कमधज भीर । निहट्टा निग्रहि बाध्थी नेत्र, खरा खुरसाण मरुधर खेत्र ।
—राउ खंनसी री रासी

ब्रह्मसपत, ब्रह्मसपति, ब्रह्मसपती, ब्रह्मस्पत, ब्रह्मस्पति, ब्रह्मस्पती—स पु [स. बृहस्पतिः] १ वह व्यक्ति जो महाविद्वान एव पंडित हो ।

२ बुधवार के बाद व शुक्रवार के पहले आने वाला दिन ।

३ एक प्रसिद्ध वैदिक देवता जो अगिरस के पुत्र एव देवताओं के गुरु माने जाते हैं । (अ मा.)

उ०—श्री गुरन पति ब्रह्मसपति कहै, देवन पति गोविद । देवन पति ब्रह्मा वदं, साखन पति पति अब ।
—अग्रयात

वि वि —इनकी पत्नी तारा को सोम हरण कर ले गया तब इनका सोम के साथ युद्ध हुआ । ब्रह्मा आदि देवताओं ने इनकी पत्नी तो वापिस दिलवादी किन्तु इनकी पत्नी व सोम के समागम से बुध की उत्पत्ति हुई ।

४ सौर जगत का पांचवा ग्रह ।

उ०—१ तेजमें रूप वह पुत्र ताच, सोभा अपार गुण एह साच । ब्रह्मसपति भवन दसमें ववाणि, जिण हीज भवन रविनद जाणि ।
—सू प्र.

उ०—२ सुग्रही अने के इद्र सार, इण रीत ब्रह्मसपति गुण उदार । अब कह सनीसर गुण अनेक, अनेक तणी तत वचन एक ।
—सू प्र.

उ०—३ ब्रह्मकसक्रांत दिन खट वित्तीस, ससि सुक रासि तुल वर सधीस । राजं तदि मगळ कुभ रासि, कहि भीन ब्रह्मसपति वळ प्रकासि ।
—सू प्र

५ नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, व्याकरणशास्त्र आदि की रचना करने वाले एक ऋषि ।

उ०—ठग कामिनी ठोठ गुर, चुगल न कीजे संण । चोर न कीजे पाहरू, ब्रह्मसपति रा वंण ।
—बां दा.

६ युद्ध, यज्ञ, बुद्धि आदि के अधिष्ठाता देव ।

७ वैशाली के मरुत आविहित मरुत राजा का पुरोहित एक अगिराकुलोत्पन्न ऋषि ।

त्रि० वि०—इसने अपने बड़े भाई उत्तथ की गर्भवती पत्नी ममता से सभोग किया था । गर्भस्त बालक के द्वारा उक्त क्रिया करने में अत्यधिक अडचन पैदा किये जाने पर इसने उसे जन्मांध होने का शाप दिया । ममता एव इसके ससर्ग से भरद्वाज नामक पुत्र उत्पन्न हुआ था ।

८ सोलहवें द्वापर के भगवदवनार गोकर्ण के चार पुत्रों में से एक ।

९ चौथे द्वापर के एक वेदव्यास का नाम ।

रू. भे —ब्रह्मतीपति, ब्रह्मपत, ब्रह्मसपति, ब्रह्मसपती, ब्रह्मसत, ब्रह्मस्पति, ब्रह्मस्पती, ब्रिहसपत, ब्रिसपत, विरसपति, विरसपती, विरस्पत, विरस्पति, विरस्पती, विसपत, विसपत, विसपति, विसपती, ब्रमपत, ब्रसपति, ब्रमपती ।

ब्रह्मसपतवार, ब्रह्मसपतिवार, ब्रह्मसपतीवार, ब्रह्मस्पतवार, ब्रह्मस्पतिवार, ब्रह्मस्पतीवार—देखो 'ब्रह्मसपति' (२)

ब्रह्ममण—देखो 'ब्रह्मण' (रू. भे)

उ०—उदं अरवक ऊहूत, माळ लखल मडही । सौवत साह लाखपति, कवि फोड दी घुही । वियास भट्ट के महूत, जोतिकी ब्रह्ममण । कथा पुराण भागवत, भारथ रामाइण ।
—गु रू व

उ०—२ माड नव तरही नव प्रह मांडिया, ब्रह्ममण फरं नारद वचाळं । रोद्रणी वीदणी छेह सर राळिया, रवर तवोळ मुख हूत राळं ।
—दुरसी आढी

ब्रह्मस ब्रह्मसि—स पु —अश्व, घोडा । (ना डि को)

उ०—१ ब्रह्मगळ घ्रीह ब्रह्मवह तूर, 'कलावत' जग करत कहर । वहै असवार अनेक ब्रह्मस, दिये खग ऋटक गोयददास' ।
—सू प्र.

उ०—२ विडं महता जुधि और ब्रह्मस, दिये खग ऋटक गोकळ-दास । वरीहर बाळत वीजळ वाह, 'गोपाळ' कराळ करं गजगाह ।
—सू प्र

उ०—३ लूणकन समोभ्रम आइ लास, विलहणा हूणइ छूटइ ब्रह्मस । अति तेजि अचपळ तुरी आपि, तरणि रथ जेम निळ ब्रह्मइ आपि ।
—रा ज. सी.

उ०—४ फरहरइ फउरि फरि अफरि फूल, ऊचास अस्सि आरिखि अमून । वणवीर चडिय तेवहि ब्रह्मसि, अहिकार थंभ आडइ अयासि ।
—रा, ज सी

उ०—५ नाठं ससउ पिगळ आवासि, वासाइ राजा चढ्यइ
अहासि। घरि सुना छइ राणी सही, नळ राजा किरिण लखियउ
नही। —ढो मा

बर्हिमंड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

बर्हिमि—देखो 'ब्रह्मा' (अल्पा, रू. भे.)

ब्रह्मांड—देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—१ सोना रा कळम घणू ताइ सुदर. खण मांडिया इकवीस
अखड। जडिया कुदण तणी जेवढी, वास जिर्कं लागा अह्यड।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सातें ही अह्यड सकिया, पुड सातें सकिया पयाळ।
वाजियो लीह रहक सिर वाजद, लागा युध करिवा लकाळ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—३ रहिस्ये जुग बोल जितें धर अवर, सायर सिला तिरावण
हार। इकवीसूं अह्यड उपावै, नांव तभीणीं सूं निसतार।

—परमानद वणियाळ

ब्रह्म—१ देखो 'ब्रह्म' (रू. भे.)

उ०—१ रोमच अग धोम रूप, अह्य तेज में वणै, जटास छमटा
जडागि, आग नेत्र ऊफण। वसिष्ठ आय जेण वार, न्यान कीध
धूमती, दर्ईव सेग तुभ नद, भै न बोइ भुवती। —सू. प्र.

उ०—२ सीचै अत्रत अंग अति सजम, जोवन लगं विकार जरा
जम। परमहस आणद में प्राणी, अह्य अकासि हुई तदि वाणी।

—सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—आरद्र जेयसुत वस ओप, जें सुत जवनासव अह्य जोप।
सभ्रम जवनासव हुवी स्राव, ब्रह्मदस्व जेण सुत तप वधाव।

—सू. प्र.

३ देखो 'ब्रह्मांड' (रू. भे.)

उ०—बहणइ कर दीध प्रगट राजादिक, ब्रह्मा आगा तें कीध विचार।
ईसर तू जगदीस तणउ अस, सह अह्य मांडियउ ससार।

—महादेव पारवती री वेलि

४ देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—सभ्त अह्य के सिनान केक प्रप्पण करे, धरत केक न्यास
व्यान, चडि पाठ उच्चरै। जपत गायत्रीस जाप, वेद मत्र ब्रह्मळा,
करत पूज नी प्रकार, केक कत कम्मळा। —सू. प्र.

ब्रह्मगिनान, ब्रह्मग्यान—देखो 'ब्रह्मग्यान' (रू. भे.)

उ०—लछ भरतार लील लहरी रव ताप पाप भी टाळें। 'ईसर'
तणी रमें ती आतम, अह्यगिनान विचाळें। —ईसरदास वारहठ
ब्रह्मग्यानी—देखो 'ब्रह्मग्यानी' (रू. भे.)

उ०—सारस बतक मुरगावी बक खेल सजें। हरख नचत तीर
खजन कुमार हजें। छह रिति जिन्हू के तट परि ब्रह्मग्यानी सिध
मुनिराज छावें। मानसरोवर के भीळें भूल अनेक (क) लीलग
आवें। —सू. प्र.

ब्रह्मचरज, ब्रह्मचरज्ज, ब्रह्मचरय्य, ब्रह्मचरघ—देखो 'ब्रह्मचरघ'
(रू. भे.)

उ०—सौ घण स्त्री कहै इण हीज घड सू एकण घण री पती
अरताथ ब्रह्मचरघ व्रतथळी एकणहीज घण री वर लेने पडसी।
अरताथ ज्यारो ब्रह्मचरय्य व्रत निस्ट हुवीडो है और पर स्त्री
गमण आदि कळ का सू पूरित है तिके विना सिर तरवार वाह
नही सकसी। —वी स टी

ब्रह्मचारिणी—देखो 'ब्रह्मचारिणी' (रू. भे.)

ब्रह्मचारी—देखो 'ब्रह्मचारी' (रू. भे.)

ब्रह्मजळ—देखो 'ब्रह्मजळ' (रू. भे.)

ब्रह्मजोग—देखो 'ब्रह्मजोग' (रू. भे.)

ब्रह्मदेव—स पु—१ देखो 'ब्रह्मा'।

उ०—सुर मिळें कीध मसलति सकाज, आखां प्रभु आगळ अरज
आज। सुरिद्र मिळें अह्यदेव साथ, हरि अग रहै सह जोडि हाय।
—सू. प्र.

२ देखो 'ब्रह्मदेव' (रू. भे.)

ब्रह्मद्वार—देखो 'ब्रह्मद्वार' (रू. भे.)

ब्रह्मधिया, ब्रह्मधी—देखो 'ब्रह्मधीया' (रू. भे.)

ब्रह्मपद—देखो 'ब्रह्मपद' (रू. भे.)

ब्रह्मपास—देखो 'ब्रह्मपास' (रू. भे.)

ब्रह्मपुतर, ब्रह्मपुत्र—देखो 'ब्रह्मपुत्र' (रू. भे.)

ब्रह्मपुत्री—देखो 'ब्रह्मपुत्री' (रू. भे.)

ब्रह्मपुराण—देखो 'ब्रह्मपुराण' (रू. भे.)

ब्रह्मभोज—देखो 'ब्रह्मभोज' (रू. भे.)

ब्रह्ममुहरत, ब्रह्ममूहरत—देखो 'ब्रह्ममुहरत' (रू. भे.)

ब्रह्मयोग—देखो 'ब्रह्मयोग' (रू. भे.)

ब्रह्मरघ्न—देखो 'ब्रह्मरघ्न' (रू. भे.)

ब्रह्मरिसी—देखो 'ब्रह्मरिसी' (रू. भे.)

ब्रह्मरूप—देखो 'ब्रह्मरूप' (रू. भे.)

उ०—सोडस आवर पय सखर, सहि गुर एकण साथि। अह्यरूप
गुण वाचिया, न्याइ एणि अहीनाथि। —वि. प्र.

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—देखो 'ब्रह्मलेख' (रू. भे.)

ब्रह्मलोक—देखो 'ब्रह्मलोक' (रू. भे.)

ब्रह्मविद्या—देखो 'ब्रह्मविद्या' (रू. भे.)

ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मवेत्ता—देखो 'ब्रह्मवेत्ता' (रू. भे.)

ब्रह्मसिद्ध—देखो 'ब्रह्मसिद्ध' (रू. भे.)

ब्रह्मसुतन—देखो 'ब्रह्मसुतन' (रू. भे.)

ब्रह्मसुता—देखो 'ब्रह्मसुता' (रू. भे.)

ब्रह्मसू—देखो 'ब्रह्मसू' (रू. भे.)

उ०—१ चतुरमुख चतुरवरण चतुरात्मक, विद्युच्चतुर जुग विधायक ।
सरवजीव विस्वकृत ब्रह्मसू, नरवर हस देहनायक । —वेलि

उ०—२ ए अनिरुधबी का नाम । चतुरमुख । चतुरवरण । चतु-
रात्मभाषिण्य । चतुरजुग विधायक । सरवजीव विस्वकेत । ब्रह्मसू
नरवर हस देहनायक । —वेलि टी

ब्रह्महत्या, ब्रह्महित्या—देखो 'ब्रह्महत्या' (रू. भे.)

ब्रह्माड, ब्रह्माडि—देखो 'ब्रह्माड' (रू. भे.)

ब्रह्माण—देखो 'ब्रह्म' (मह., रू. भे.)

ब्रह्मणी—देखो 'ब्रह्मणी' (रू. भे.)

ब्रह्मा—देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—१ कूकतडी मेरुही चिहूँ कनारी, नीधसजइ भागळि नीसाण ।
ब्रह्मा विश्णु पधारउ वहिला, जोगेसर तेडीया जांण ।

—महादेव पारवती री वेलि

उ०—२ सिव ब्रह्मा विसनर कहें, सत भरै सव साखि । रांम नांम
एकी भला, हरीया हिरदै राखि । —अनुभववाणी

उ०—३ विवध सासत्र रा जाणणहार त्रिकाळदरसी इसा सी
ब्रह्माजी कर्न सिधाइजै दरद सुगाईजै, कहै तिका विध कीजै असुर
विहडीजै, क्रीत्त कानं सुणीजै । —मा. वचनिका

उ०—४ हेला तउ महेश्वर तणी रुस्टि ब्रह्मा तणी, प्रग्या ब्रह्म-
स्पति तणी, प्रतिग्या फरुसराम तणी, मरघादा समुद्र तणी, दान
वलि तणउ, अश्वस्तभ मेघ तणउ गरुडई गगन तणी, तेज तु सूरच
तणउ, क्षमा धरणि तणी, " । —व स.

ब्रह्माव—१ देखो 'ब्रह्माव' (रू. भे.)

२ देखो 'ब्रह्मा' (रू. भे.)

उ०—तिण मात वदइ अन्य बीजा भूपति, अति ही गति दाखवइ
असउ । ए ब्रह्माव उपाव आखियउ, रिख तीरइ वाघउ रेंवत ।

—महादेव पारवती री वेलि

ब्रह्मावत - देखो 'ब्रह्मावत' (रू. भे.)

ब्रह्मावरत—देखो 'ब्रह्मावरत' (रू. भे.)

उ०—" रत्नपुर कामरू ओडियाण जालघर सिधु आरव
' वगाल त्रिहूण भोट महाभोट चीण महाचीण सिवस्थान पुरासन
मूलथाण मद्र अद्र अजरवेध विराट करहइ वाइव हैव आरधावरत्त
ब्रह्मावरत्त त्रिगरत्त प्रभुति देसा । —व स

ब्रह्मावरि—देखो 'ब्रह्मावरि' (रू. भे.)

ब्रह्मासन—देखो 'ब्रह्मासन' (रू. भे.)

ब्रह्मास्त्र—देखो 'ब्रह्मास्त्र' (रू. भे.)

ब्रामण—देखो 'ब्रामण' (रू. भे.)

उ०—कनवज पारस्व महोरगढ राज करता, तिण आपरी गुरुगी-
आचार बीसारथी, महापुन्यवत तिण एक ब्रामण देरासर पूजिवा
भणी रास्यी, तिणने घणां गाय सांसण दीना । ब्रामणा री वस
वधारथी । —रा. वमावळी

ब्रास, ब्रासि, ब्रासु—१ देखो 'ब्रास' (रू. भे.)

उ०—उडे खग चोट घडा सू अत, भडाचा सीम दडाची गत ।
अणी मर फूटं कूत अभास, उधार वपं किरि वाजं ब्रास ।

—गु रू व.

२ देखो 'भरोसी' (रू. भे.)

उ०—ब्रासि परधन की नवि यहि तिहा चुयु युग नी विधि रहि ?
गी ब्रह्मण नी पूजा घणी, वात सी तै युग तणी ? —नक्राम्यान

ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रू. भे.)

उ०—बळें लिखी आ वात विमळ मलिनाय ब्राह्मण । श्रीसुर
मगळ सवद आदि कहिया नह अवगुण । —सू प्र

ब्राह्मण—स स्त्री —अपत्र श भापा का एक भेद विशेष जो आठवीं से
ग्यारहवीं शताब्दी तक सिंध प्रांत में व्यवहार में आता था ।

ब्राजणी, ब्राजवी—देखो 'विराजणी, विराजवी' (रू. भे.)

उ०—चडि एण विध चक्रवत्ति, तदि आजियोस तखति । चीसरा
चमर सचार, वणि ऋषट वारंवार । —सू प्र.

ब्राजणहार, हारो (हारो), ब्राजणियो—वि० ।

ब्राजियोडी, ब्राजियोडीं ब्राजियोडी—भू० का० कू० ।

ब्राजोजणी, ब्राजोजवी—भाव वा० ।

ब्राजियोडी—देखो 'विराजियोडी' (रू. भे.)

(स्त्री. ब्राजियोडी)

ब्रात—स स्त्री [स ब्रात] समूह, झुण्ड ।

उ०—अर बरात रा प्राघुणका नू महानम में बुनाय खटरस मय
नाना व्यजना री ब्रात पूरण त्रिप्ति चत्वावियो । —व भा

रू. भे.—ब्रात ।

ब्रात्य—वि. [स ब्रात्य] ब्रात का, ब्रात से सम्बन्धित ।

स पु—१ नीच या कमीना पुरुष ।

२ शूद्र पिता एव क्षत्रियाणी माता के ससर्ग से उत्पन्न वर्णसकर ।

३ वह ब्राह्मण जिसका समय पर यज्ञोपवीत सस्कार न होने के
कारण पतन हो गया हो ।

४ सेना में रहने वाला, सैनिक ।

उ०—नरैस देस देस के निदेस मानतें नही, थिरान थान थान के
जवान जानतें नही । धरा अमात्य ब्रात्य माक माक माधरें नही,

करोर हा अतादि आ खमा खमा करे नही । —ऊ का

वाळ-स. स्त्री — १ अग्नि शिखा, भाग की लपट ।

उ०—खळ हळा चल रळतळा खळ, बीजळा भळ्ळा बीमळ्ळा थाळ ।
गूळळा गळ्ळा गूयळा गड्ड, सिघळा कळ्ळा साकळा सह ।

—गु रु. द.

२ वाष्प, भाप ।

ब्राह्म—देखो 'ब्रह्म' (रु. भे.)

उ०—अलख जिखावे सौ जणें, न चाजो श्रीरा कही । जाहू कं दळ
वळ एतळा 'उदा', ब्राह्म सोधयो ही लाघो नही । —ऊदोनैण

ब्राह्मण, ब्राह्मण, ब्राह्मण, ब्राह्मण—देखो 'ब्राह्मण' (रु. भे.)

उ०—१ ब्राह्मण लखण रोमाञ्चित आसू, वाचत गदगद कठ न वणें ।
कागळ करि दीघी करुणाकरि, तिणि तिणि हीज ब्राह्मण तणें ।

—वेलि

उ०—२ वेदमत्र बोलत, वेद पाठी ब्राह्मण । पहरें पट्ट अघोट,
द्रव्य आपें घण सघण । —गु रु. ब

उ०—३ विकमाईत नाम ब्राह्मण, वूर्भं मत्र कुमत्रो वभण ।
अतह करण दुरभमति आई, वहे खुरभमह जेठो भाई ।

—गु रु. व

उ०—४ ब्रह्मादिक सारीखा ब्राह्मण, घवग्रह कन्हइ अनाथा
नाथ । वेई जोडी देखता वरावर, हयलेवइ लै दीघघ हाथ ।

—महादेव पारवती री वेलि

ब्राह्मणी—देखो 'ब्राह्मणी' (रु. भे.)

ब्राह्मी—देखो 'ब्राह्मी' (रु. भे.)

ब्रिद—देखो 'ब्रिद' (रु. भे.)

उ०—सिध थया रिखि काज सहि, वघ किमा खळ शिद ।

—रामरासो

ब्रिदा—देखो 'ब्रिदा' (रु. भे.)

ब्रिदारक—देखो 'ब्रिदारक' (रु. भे.)

ब्रिकोदर—देखो 'ब्रिकोदर' (रु. भे.)

ब्रिख, ब्रिख—स पु — १ जल, वारि ।

२ देखो 'ब्रिक' (रु. भे.)

३ देखो 'ब्रिख' (रु. भे.)

उ०—१ ऐहा जोध बहसिया आया, काजळ मसि (क) वरनी
काया । माथें छत्रस ऊजळ दीठा, बळियें शिखल किरि हस वयठा ।

—गु रु. व

उ०—२ जड ऊवड शिखल पडत जुआ, है पाए पहाड मसट्ट हुआ ।
पतिसाह पयाण पुर किय, असमानक अस्सणि ऊलटिय ।

—गु रु. व.

उ०—३ दळ सिणगार कहै 'गोदाउत', थिर जस अथिर कळू
थावत । शिख छाया आचारि खत्री वस, पातां सू सोभा पावत ।

—हरिराम राठीड ऊहड री गीत

उ०—आकुळ थ्या लोक केहवो अचिरज, वञ्चित छाया ए विहित ।
सरण हेम दिसि लीघी सूरिज, सूरिज ही शिख आसरि । —वेलि

४ देखो 'ब्रख' (रु. भे.)

५ देखो 'ब्रखम' (रु. भे.)

६ देखो 'वरस' (रु. भे.)

७ देखो 'विस' (रु. भे.)

ब्रिखम—देखो 'ब्रिखम' (रु. भे.)

उ०—वाणिज विण साह महर हाटा विण, जळ विण गाव वसं
जेहडी । विण गाया ब्रिखम, सभा पडित विण, महमा तीरथ
तेहडी । —त्याग-प्रससा री गीत

उ०—२ काइरं भंस वीभच्छरस किआ । सुरें सातरस अदभुतरस
किआ । दूणिआ करुणारस किआ । वैकुठ सूं लिखमी सहित आप
विसन गुरड चडि आया । कविळास सू सिघवाहणो चडो सहित
ईसर शिखम चडि आया । —र वचनिका

ब्रिखवात—देखो 'ब्रिखवात' (रु. भे.) (प्र. मा.)

ब्रिखसेण, ब्रिखसेन—देखो 'ब्रिखसेण' (रु. भे.)

ब्रिख—१ देखो 'ब्रिक' (रु. भे.)

२ देखो 'ब्रिख' (रु. भे.)

३ देखो 'ब्रिख' (रु. भे.)

४ देखो 'वरस' (रु. भे.)

५ देखो 'विस' (रु. भे.)

ब्रिज, ब्रिज्ज—देखो 'ब्रिज' (रु. भे.)

उ०—अगम पथ इण इसक री, निभं ठाकुरें नाहि । डंग स्वाळणिया
डोलियो, मुरपुरपत शिज माहि । —र. हमीर

ब्रित—१ देखो 'ब्रित' (रु. भे.)

२ देखो 'ब्रित' (रु. भे.)

ब्रिति, ब्रिती, ब्रित्ति, ब्रिती—देखो 'ब्रिति' (रु. भे.)

ब्रिथा—देखो 'ब्रिथा' (रु. भे.)

उ०—वकं वयण लकेस विभीखण, म्है ती भुजवळ मिता । वांणी
ब्रिथा हुवं रे वीरा, चित अघकाणी चिता । —र. रु

ब्रिद—१ देखो 'ब्रिद' (रु. भे.)

उ०—गुण जाणग लाखी खत्रीआ गुर, असि दातार अभिनमी
आमुर । धरती पछिमी करामति-धारी, भूपा रूप लियं ब्रिद भारी ।

—ल वि

२ देखो 'ब्रिद' (रु. भे.)

ब्रिदि, ब्रिदी—१ देखो 'ब्रिद' (रु. भे.)

उ०—तूं सा ब्रह्म विसन ही तरिया, तें उर ऊपरि माणस धरिया ।
तें पावइ वडा ब्रिदि पाया, तें जगदीस जिसा नर जाया । —पी. प्र.

३ देखो 'ब्रिदि' (रु. भे.)

ब्रिद—देखो 'ब्रिद' (रु. भे.)

उ०—सिरोमणि साख लिभे भिद्द 'साख', लहे खट भाग वणी वधि लाज । प्रिधी परमाण विसेख वसाण, तपे तुटिताण पट्टा सिरताज ।
—ल वि

विद्दी—स स्त्री [स. वृद्धि] एक प्रकार की प्रसिद्ध सता विशेष जो अष्टवर्ग की औपधियो में गिनी जाती है । (प्रमरत)

विद्ध—देखो 'वद्ध' (रू. भे.)

विद्धि, विद्धी—१ देखो 'वद्धि' (रू. भे.)

२ देखो 'वद्धियोष' ।

विध—देखो 'वद्ध' (रू. भे.)

उ०—१ नमी मोह माया नको काम जोध । नकी विध तरणा, नकी वाळ बोध । —अनुभववाणी

उ०—चीवीसमां अक्षतार वेदव्यास जैसे । सी कर्म बाळ वय विद्या बुधि सनकादिकूं जैसे । सुखदेव से तरण विध सो वेदव्यास जैसे ।
—सू प्र

उ०—३ विध जूनां दीठी मोहत, कने राजि इण पाज । देवां सुख अनुहा दमण, उकति दतावी राज । —मा वचनिका

उ०—४ तठां उत्रांत सुर, रिण जलय, गधप माहे विध, जूनी मोहर घणी दीठी । विवध सासत्र रा जाणणहार प्रिवाळदरसो इसा श्रीवहाजी कने सिघाईजे दरद सुणाईजे, वहे, तिका विध कीजे असुर विहडोजे, कीत काने गुणीजे । —मा वचनिका

विधप, विधपरण, विधपणी—स. पु.—वृद्धावस्था, बुढ़ापा ।

उ०—सुजु करे अहीरां सरिस सगाई, श्रीळाई राजकुळ इता । विधपरणे मति कोई वेसासी, पांतरिया माता इ पिता । —वेनि

विधि विधी—देखो 'वद्धि' (रू. भे.)

उ०—पत्र अक्खर दळ हाळा जस परिमळ, नव रस तस विधि अहीनिसि । मधुकर रसिक सु भगति मजरी, मुगति फूल फळ भुगति मिसि । —वेनि

विप, विप्प—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

उ०—रोम तणी रुधनाय पार सिव सकति न प्रामे । नरहर रे नास मे जोनि ब्रह्मा विप जामे । —पी प्र

विप्पि, विप्पी—देखो 'विप्रि' (रू. भे.)

उ०—विप्पी लुघ तेरह री वणाठ, एकवीस लुघू खत्रिया उपाठ । लुघ सतावीस वेंसी लखाइ, सहि सेख लेख सुद्रणि सभाइ ।
—रा पि

विप्र—देखो 'विप्र' (रू. भे.)

विप्रि विप्रि—देखो 'विप्रि' (रू. भे.)

विसपत, विसपति, विसपती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

उ०—कहिजे कासु सुकवि धोड गुण नावे धातां, धाप अगम जग ईस वेद नह जाणै धाता । तत पांच गुण तीन कोम डिगपाळ कमावो सोम राह छिनि सूर क्रेत विसपति कोलाळी । —पी. प्र

विसरोण, विसमेन—देखो 'प्रममेण' (रू. भे.)

विरिट, विरटी—देखो 'प्रग्नी' (रू. भे.)

उ०—व्याग भण्ट मथनद उपाय, विरिणी वरिट हृणद । माहि । गठ ऊपरि गठ रोहा समद, गूटा देव दिगम चउदमद ।
—का. दे.

विस्पत, विस्पति, विस्पती—देखो 'ब्रहस्पति' (रू. भे.)

विहू—देखो 'विरह' (रू. भे.)

उ०—विह की मारी विरहनी, त मन वंटी धारि । का ही द सोतल करी, का ली ली तन जारि । —अनुभववाणी

उ०—२ व्हि की मारी विरहनी, देह सु भई वदेह । उनरि किन सु करे, गाई गिता मनेह । —अनुभववाणी

उ०—३ वन यत मूज वु गिरवर मोयां मोया नर नरीया । रगराज उण गावरे विन उठ रहो, विहू जोवनिया री नें ।
—रमीने राज उ म

विरत, विहव—देखो 'वद्ध' (रू. भे.)

विहवनाण, विहवनाणु विहवमान, विहवमानु—देखो 'वद्धमानु' (रू. भे.)

विहनट, विहप्रट विहप्रट—देखो 'वद्धप्रट' (रू. भे.)

वील—देखो 'वील' (रू. भे.)

उ०—हरीया नगी राम हे, का सतगुर की सीग । जे वंटे वुि चने, भर न एकी वील । —अनुभववाणी

उ०—२ बाळापरा तरणा गयो, बट दूडापो पाय । हरीया सिर कपिया, वील भरी नही जाय । —अनुभववाणी

उ०—३ सला जु सीया चाये छे । तांहा का हाप चांचि सा उभा रहे छे । ज्यो मदिवहनी हायी वील दोय चलै । भर व मुरड ने ऊमी रहे । एवो यतममणीजी ऊमा रहता जाय छे ।
—वेनि

वीलणी, वीलणी—१ देखो 'वीलणी, वीलणी' (रू. भे.)

२ देखो 'वेगणी, वेगणी' (रू. भे.)

वीलणहार, हारी (हारी), वीलणियो—वि० ।

वीलणोडो, वीलणोडो, वीलणोडो—भू० का० वृ० ।

वीलणोनी, वीलणोनी—भाव वा० ।

वीलणोडो—१ देखो 'वीलणोडो' (रू. भे.)

२ देखो 'वेगणोडो' (रू. भे.)

(स्त्री वीलणोडो)

वीड, वीडा—स. स्त्री [स] लज्जा, धर्म । (अ मा, एका नां मा रू. भे.—वीड, वीडा ।

वीडित—वि.—वामिन्दा, लज्जित, सकुचित ।

उ०—सुसमित सुनमित निज वदन सु वीडित, पुउरीकाम प्रसन । प्रथम भप्रज आदेस पाळिवा, मिरिगाखी राखिवा मन ।

श्रीवणी, श्रीवनी—देखो 'श्रीवणी, श्रीवनी' (रू भे)

श्रीवणहार, हारो (हारी), श्रीवणियाँ—वि० ।

श्रीविघ्नोडी श्रीविघ्नोडी श्रीविघ्नोडी—भू० का० कृ० ।

श्रीवीजणी, श्रीवीजनी—भाव वा० ।

श्रीविघ्नोडी - देखो 'श्रीविघ्नोडी' (रू भे)

(स्त्री. श्रीविघ्नोडी)

शोध, शोध—देखो 'विरोध' (रू. भे)

उ०—पहें अभावड शोध छतरधर फिरग पालटें, आटधर क्रोध भुज गयरा सडिया । सोध अगरेज हिंदुवाण आया सरद, जोध सिर सेस रें कदम जुडिया । —कोठारिया रावत जोधसिध री गीत

श्रीहाळ—देखो 'श्रू' (मह, रू भे.)

उ०—भालाळ क्रोधाळ म्युं वण भरुं, मिळ मूळ श्रीहाळ रीसाळ मुणुं । वाड्या मत कावळ वण वकी, धुर श्राध हुसी मोय हूँत धकी । —पा, प्र.

श्रियो—देखो 'वडियो' (रू भे)

श्रा—देखो 'वा' (रू भे)

श्राणी—देखो 'श्राणी' (रू भे.)

श्रा—१ देखो 'वा' (रू भे.)

२ देखो 'वाह' (रू भे.)

उ०—१ महाराणी भिभकनं लारं जोयो । पछें खिलखिल हसी । बोली—श्रा श्रं काली मासी व्हा ! यू ठेट अठा ताई खुर रगढती कितें सुरग रें लीभ सू आई । सिझ्या रा धरें ई मिळ जावती ।

—फुलवाडी

उ०—२ पण थूं ती म्हारे सूं ई वीस गुणी वत्ती काली निकळी । कूकरियां रें अंठा हाचळा नें धोवण ती देण हा । व्हा श्रं काली बीकरी व्हा । कोई देख लिया ती म्हारी ती कीं कोनी, थारी भकल बसाराणला ।

—फुलवाडी

उ०—पच माय रा माय हसिया । श्री राईकी ती साव अरुळ डळी । श्रं साच बोल जाता ती पछें घादी ई काई वात री हीं । श्रा, व्हेणो इणरें हाथा न्याव ? अंढी न्याव निवेडण जोग भकल व्हेती ती तडी लिया सरडिया रें लारें दरर-दरर करती क्यू रवढती ।

—फुलवाडी

श्रा—१ देखो 'वाहर' (रू. भे.)

२ देखो 'बाहर' (रू भे)

श्राळी—देखो 'वाळी' (अल्पा, रू. भे.)

श्राळी—देखो 'वाळी' (रू. भे.)

श्राळी—देखो 'वाली' (रू भे)

उ०—१ भावकि पड्ठी झाळि, सुदरि दीठी सास विण । जिमि श्राला विच बाळ, प्रिच जोई मारु नही । —डो. मा.

उ०—२ राणी माड्या ढपला नें सोगी रे, माहरें व्हालां की पडे वियोगी । हा हा करु हिव कासू रे, माहरें हिवडो फटे मा भू ।

—जयवाणी

उ०—३ माहरें आया-पोथी हुती, दी थी तमारें हाथी जो । जिम जाणी तिम राखजी, व्हाली माहरी आयी जी । —जयवाणी

उ०—४ क्रोधी काम विगाडदें, रीस किया देही छीजें रे । श्राला पण वेरी हुवं, ऐसी काम किम कीजें रे । —जयवाणी

उ०—५ लुगाया रें कोई री टावर घोडियें में सूती ती कोई री वारें रमण नें गयोडो, ती कोई रें चूल्हे पर घाट हिलाया विना श्रोदी व्हे ही पण सगळा नें आप आप री जीव व्हालो । —रातवासी

व्हेणी, व्हेवी—१ देखो 'होणी, होवी' (रू. भे)

उ०—१ काई भरोसी रीसा वळती अक्कं लोठी लेयनं म्हारा माथा में नी ठरकाय दें । पण इसी कोई वात नीं व्ही । काम उणरी मरजी रें माफक होवण सूं वी वाता करण लाग्यो ।

—अमरचूनडी

उ०—२ अन्नदाता आप महीनी भर श्रियो नित रोज किला में पधारी । घात व्हेणी व्हेती ती कदई व्हे जाती । धनजी-भीमजी माथें आपरी विस्वास है जिकी चोखी इज है, पण काई ए दो श्रादभी दरवार सूं ई वत्ता सामरथ है ।

—अमरचूनडी

उ०—३ ज्युं त्युं करनं दिन ळगी । मिनख दिसा फराखती जावण ल ग्या ती मसाण कानी गिरजडा भमता निगं आया । देखण वाळा नें वहम व्हियो । जाय नें देखें ती वाटका रें श्रोळें लागू रें छोकरा री लास पडी ।

—अमरचूनडी

उ०—४ आगें ई हाथ अर लारें ई हाथ, रक्षा करं गोरखनाथ । चूवी सी क भाख्यां भारत री नकवी व्हे जिसो चे'री, जावडा दोनुं कानी वंठोडा, जाणें एक कानी हिंदमहासागर अर दूजें कानी, बंगाळ री खाडी ।

—अमरचूनडी

उ०—५ ठीक ती थूं उणारी वाप है । वडी खतरनाक छोरी है । उण माथें तीन सी दो पुरी लागू श्रैण्यो है, वचणी मुसकल है ।

—अमरचूनडी

उ०—६ सिरिमानजी श्री तीन सी दो री मामली है, आपनं ध्यान व्हेणी चाहिजें । तीन हजार सूं एक पाई कम नीं चालें ।

—अमरचूनडी

उ०—७ उणनं दाग दिया नें दो दिन व्हियां पछें ईं धणी-लुगाई दोन्यु जणा मूंडा मे अन्न री दाणी तकात नीं घाल्यो ।

—अमरचूनडी

उ०—८ भूपति इम भाखियो, हमें सुमडा किम व्हीजें । बोल्या भड धजवज, कमधपति सोच न कीजें । —मे. म.

उ०—६ बेरो नन्ही होवण लाग्यो अर ठाकर धार करे उण
पेलीज प्रतापसिंह री तलवार बुई सो ठाकर री माथी वाढ
नाह्यो । दुस्मिया रे मन चीती व्ही । —अमरचूनडी

उ०—१० जिण दिन सूनू म्हूँ द्दणरी मा नै खापे चढायने प्रायो हूँ,
उण दिन सूनू लगायने आज दिन ताई श्री नितरोज मोटर माथे
जावे अर उणरे प्रावण री वाट उढीके । मोटर पाच-दस मिनट
लेट भलाई व्ही । एण द्दणरे जावण में जेज नी म्हूँ ।

—अमरचूनडी

उ०—११ तनक सुधा लिय अमर तन, पारस अय परसत । हूँ
कचण इण दुत हरण, द्रग 'प्रताप' दरसत । —जैतदान वारहठ

उ०—१२ इण उपरांत हूँ हसन बोल्या—वो रोज गावो जिको
चाकरी वाळो गीत तो एकर सुणाय दी नी लाहू । घाज तो दू
साचाणी चाकरी माथे पहिर दिह्यो हूँ ।

—अमरचूनडी

उ०—१३ सिद्ध भडां हूँ कंजमा, मुदि पागर गजघट्ट । सूनू वाघी
दतणादि दळ, राठोडे, रिणघट्ट । —गु. रु. व.

उ०—१४ म्हूँ तो ह्याम ताई भरोमी नी दू नै श्री धपनी हूँ के
साच हे म्हारी सादल बेटी धूँ दुद्दण गी चिन्ता मत करज्ये ।
राजावां रा ती मं पाट दिव्या नरे । —कुमवाडी

उ०—१५ बाली—१५ तो दत्ता चरग जागती के म्हारा सूनू वनी
विठरूप उगियारो दण दुनिया में भवे ई कोई दू-या । पग प्राज
म्हारी भरम मिटयो । श्रीनी मुषी तो प्राज वंली बिरणी र्पाळा
सूनू र्पाळा राजावर ने ई नी श्री दूली । —कुमवाडी

२ देगो 'उदगी, यहवो' (रु. ने)

दूणहार, हारी (हारी), दूनिया—(२०) ।

दूयोडी, दूयोडी—भू० वा० कू० ।

दूईजणी, दूईजवो—भाव वा० ।

दूयोडी—१ देगो 'दायोडी' (रु. ने)

२ देगो 'यहयोडी' (रु. ने)

(स्त्री दूयोडी)

